


## भाग १ लो.

जिनवचनामृतमहोदधिजन्य

**धुरंधर सुविहित गीतार्थज्ञ पूर्वाचार्य वचन तरंग बिंदुरूप**

**विविध विषयक प्रकरणाख्य ग्रंथोनो यत्किंचित् संग्रह करीने**

श्री मुंबापुरीमध्ये

**शा. भीमसिंह माणक नामाख्य श्रावके**

स्वामित्व विरहित

**ज्ञानवृद्ध्यर्थ**

मुंबई:-" निर्णयसागर " मुद्रायंत्रमां

**आ पुस्तक छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे.**

शाके १८२४ संवत् १९५९ सन १९०३

# प्रस्तावना.

आ जगत्मां आत्महित पमाडनार कोइ मार्ग होय तो ते परम पवित्र वीतराग पुरुषोनो धर्म छे. ए मार्ग स्याद्वाद छे; अविरोधी छे. एनी खात्री ए मार्गने अनुसरनारा पूर्वे थइ गयेला एवा महान् आचार्योनां वचनो छे. ए पूर्व पुरुषोए जे जे अपूर्व ग्रंथो रच्या छे, ते ते पवित्र दर्शनना महिमानी अने तेमनां ज्ञाननी साक्षी पुरेछे. आवा सत्पुरुषोए रचेल अपूर्व, अमृतमय ज्ञान पुस्तकोने देखी, वांची, विचारी क्यो आत्मानंदी जीव उल्लास नहिं पामे ?

एवो आनंद आत्महितैषियो प्राप्त करे, तत्त्व पामे, पूर्व महापुरुषोनापगले चाली तेना जेवा थाय, अने ए पूर्व महापुरुषोनी कृतिउं अविछिन्न जलवाइ रहे, ए आदि हेतुथी, स्वपर हित बुद्धिथी, निर्जरानां कारणथी अमे एवा महापुरुषोना प्रकरण ग्रंथो प्रसिद्धकरवा प्रयास कर्यो छे. ए प्रयासना अंगे अमारा तरफथी श्री प्रकरण रत्नाकरना चार भागआदि अनेक ग्रंथो बहार पडी चूक्या छे.ए बधानी खपती, अने *एथी जाग्रत थएली जैनभाइयोनी ज्ञानरुचि ए ग्रंथो तथा तेमनां कर्त्तापुरुषोनुं महा*त्म्य प्रगट करेछे; तथा एवा बहु बहु ग्रंथो प्रसिद्धिमां आववानी आवश्यक्ता सूचवे छे.

आ प्रकरण रत्नाकरनो प्रथम भाग एकवार छपाइ गयो हतो; ए खपी जवाथी फरी आवृत्ति सुधारा वधारा साथे छपावी छे. तेमां प्रथम ग्रंथ, न्याय विशारद महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी रचित विहरमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामिनी स्तुति गर्भित साडी त्रणसो गाथानुं अति अद्भुत स्तवन छे. ते ग्रंथमां सूत्रथी विरुद्ध आचारे चालनारा अने प्ररूपणा करनारा इत्यादिकोने प्रथम ढालमां सिद्धांत अनुसारे यथाविधि प्रवर्त्तवा उपदेश आपेलो छे अने ते नेवाज उत्तम विषयो संबंधी सत्तर ढालमां स्तवननी रचना करेली छे. स्याद्वाद शैलीवाली नयगर्भित वाणीना शिखरने टोच उपर पहोंचेला आ विद्वाननी हरेक कृति वांचता मनमां सानंदाश्चर्य थायछे.

बीजोग्रंथ श्रीदेवचंद्रजी कृत आगमसार *ग्रंथ छे. आ ग्रंथमां यथाप्रवृत्ति* प्रमुख त्रण करणनुं, सात नयनुं, चार निक्षेपानुं, प्रमाणोनुं तथा सप्तभंगीनुं स्वरुप संक्षेपथी दर्शावेलुं छे. आ ग्रंथ वांचतां सिद्धांतनो सामान्यसार उपलब्ध थायछे. जे पद्धतिथी ग्रंथ लखवामां आवेलोछे, ते पद्धति प्राचिन छे, परंतु रसिक छे.

त्रीजो श्रीदेवचंद्रजी माहाराजनो रचेलो श्रीनयचक्रसार ग्रंथछे. आग्रंथमां सप्तनय तथा सप्तभंगोनुं स्वरूप एवुं उत्तम प्रकारे रचेलुंछे, के जेने यथास्थित रीते अभ्या-

करतां जैनदर्शननुं सूक्ष्म स्वरूप सारीरीते समजी शकाय. तेशिवाय षट्द्रं पदार्थनुं पण संक्षेपथी स्वरूप दर्शाव्युंछे.

चोथो ग्रंथ श्रीआनंदघनजी माहाराज कृत चोवीशीनोछे; अने ते बालावबोध सहितछे. अध्यात्मज्ञानना शिखर उपर बिराजमान थयेला श्रीआनंदघनजी माहाराज अने तेमनी चोवीसी जगप्रसिद्धछे. तेमना अध्यात्म ज्ञान विषे अत्रेविशेष लखवानी कांइपण आवश्यकता नथी. वली साक्षर पुरुषो ज्यारे तेमनी चोवीसी वांचेछे तथा तेनुं अध्ययन करेछे, त्यारे तरत तेमना अंतःकरणमां अध्यात्म ज्ञाननो विलास प्रगट थायछे. चोवीसी उपरनो बालावबोध प्राचीन गुजराती जाषामां लखायेलो होवाथी, तेने आधुनिक गुजराती जाषामां सुधरावी अमे आग्रंथमां छापेलोछे. कारणके तेप्रमाणे करवानी सूचना अमने अनेक अज्यासीउं तरफथी थयेलीहती. ते सूचना अमने वास्तविक लागवाथी उपकारनो हेतु जाणी तेम करेलछे अने तेप्रमाणे करतां बालावबोध कर्त्ताए बतावेलो आशय लेशमात्र पण दूरकरवामां आवेलो नथी. जेथी आ चोवीसीना अज्यासीउंने हवे ज्ञाननो उत्तम प्रकारे लाज थवानो संजवछे.

पांचमो ग्रंथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायजी रचित श्रीद्रव्यगुणपर्यायनो रासछे. आ रासनो ग्रंथ उपाध्यायजी माहाराजे गुजराती जाषामां रचेलोछे अने तेनी पद्यरचना उपर बालावबोध पण ते उपकारी महात्माएज करेलोछे. आग्रंथनो विषय अतिगहनछे, आग्रंथने गुजराती जाषामां रचवानो ग्रंथकर्त्तानो हेतु चमत्कार उपजावे तेवोछे. परंतु दंतकथा रूप होवाथी ते अत्रे दर्शाव्यो नथी. गुजराती पद्यरचना अने तेना उपरनो स्वकृत बालावबोध छतां सामान्य वाचक वर्गने बोध न थइ शके तेनुं कारण ग्रंथनो विषय अतिशय कठिन अर्थात् द्रव्य, गुण अने पर्याय[illegible] अतिसूक्ष्म [illegible]नथी जरपूर छे ते छे.

[illegible]छो "योगदृष्टि समु[illegible] [illegible] सझाय" नामनो ग्रंथछे. आ मूलपद्य बद्ध छे; तेनो गुजराती बालावबोध सा[illegible] [illegible]थ छे. श्री हरिजद्राचार्ये मूल संस्कृतमां "श्रीयोगदृष्टि समुच्चय" नामनो [illegible] श्लोकबद्ध एक अपूर्व ग्रंथ लख्यो छे, तेनाज जाषांतर रुपे (संस्कृत श्लोकमांथी [गु]जराती पद्य) श्रीमद् उपाध्यायजीए संस्कृतथी अजाण एवा आ कालना घणा जीवोनां हित हेते परम उपकार बुद्धिथी आ सझाय रची छे. जवजीरु, आत्महितेषिने पोतानी दशानुं माप करवाने, अर्थात् पोते ज्ञानदशानी, सम्यक्त्वनी, गुणस्थानकनी केटली हदमां छे, ए जाणवामाटे आ सझाय (thermometer) मापकरणयंत्र छे; [ए]म कहिये तो चाले. मित्रादि आठ दृष्टिउं जे गुणश्रेणि बतावे छे, ते पैकी कइ दृ[ष्टि]मां ( दृष्टि–बोध; आत्मबोध ) पोते वर्त्ते छे, ते आ दृष्टिउंने मनन पूर्वक अज्या-

सनारने बराबर मालम पकेछे, मालम पडेछे एटलुंज नहिं, पण अमुक दृष्टिए वर्त्तनारनां लक्षण अमुक गुणो छे,ए वगेरे हकीकत जणाववाथी पोतामां ते गुणो होय तो ते वृद्धिंगत करी, अने नहोय तो मेलवी अथवा मेलववा प्रयास करी आगल दृष्टि पामवानुं, गुणश्रेणि वधवानुं निमित्त थाय छे. आम ए सझाय बहु उपकारी छे; आत्मार्थीउंए ए बहु मनन करवा योग्य छे.

सातमो विषय "अध्यात्मसार" ए नामनो ग्रंथ छे. ए ग्रंथना संबंधमां अमे आ पुस्तकना पृष्ठ (५५६–७) उपर सूचना रुपे कांइक लख्युं छे,ते वांचवा योग्य छे. आ ग्रंथ अध्यात्मनो सारज छे; अर्थात् आत्माने उद्देशीने,आत्म हितनी जे जे वातो होय,– तेनो सार छे. हेय (छांडवायोग्य) छांडी देवाना, उपादेय ( ग्रहण करवायोग्य ) ग्रहण करवाना बोधरुपे छे. आ ग्रंथना सात प्रबंध पाड्या छे; तेना बधामली एकविश अधिकार छे. ते अद्भुत संकलनाबद्ध छे, जे अनुक्रमणिकाथी समजाशे. आ ग्रंथ बहु उपकारी छे.

आठमो विषय " समाधिशतक " नामे ( १०२ ) पदनो हिंदी भाषानोग्रंथ छे. संसारथी उद्विग्न थएला जीवोने आ पदो बहु बहु शांतिनुं निमित्त थायछे, तथा बाह्य प्रवृत्तिमां तणाता जीवो जो एकवार आ पदोने शांतिथी वांचे, तो तेउने तत्काल तो स्तब्ध करी दिये एम छे. मुमुक्षुउंए आ पदो विचारवा योग्य छे.

नवमो विषय पण उपला जेवोज समता उपजावे एवो " समता शतक " नामे पद्यबद्ध हिंदी भाषानो ग्रंथ छे.

दशमो विषय दिगंबरोने कदाग्रह छोडवारुपे हित बुद्धिथी अपाएल उपदेशयुक्त " दिक्पट चोराशी बोल " नामे पद्यबद्ध हिंदी भाषानो ग्रंथ छे.

अग्यारमो विषय "श्री चिंतामणि पार्श्वजीननां" बे स्तोत्रो संस्कृतमां छे. एमांनो बीजो कोइक श्रावक मल्लुकचंद वीरचंदे रच्यो लागेछे. परम शांत वीतराग एवा प्रभुनी स्तुतिरुपे ए स्तोत्रो स्मरण–पठन करवा योग्य छे.

बारमो श्री समयसार ग्रंथछे. एना कर्त्ता कवि बनारसीदास छे. ए पुरुषनो सविगत इतिहास आपणने मल्यो नथी; तथापि आ ग्रंथमांथी एउना विषे आपणने घणुं जाणवानुं मली आवे छे. एनी पंडिताइ, विद्वता अने आत्मनिष्ठानी आ ग्रंथ आपणने प्रतीति करावे छे. आ ग्रंथ हिंदी भाषानां पदमांछे; साथे गुजराती टीका छे. प्रधान पणे एमां द्रव्यानुयोगनो अधिकारछे. नाम प्रमाणेज ए ग्रंथ "समय" ना,–'आगम" ना साररूप, तत्त्व रूप छे. स्याद्वाद शैलिना जाण पुरुषोए निश्चय अने व्यवहार ए बेरूपे धर्मनुं निरूपण कर्युं छे; तेमां आ ग्रंथ प्रधानपणे निश्चयधर्म प्ररूपतो होवाथी एकांत वादिने रोगीने अपथ्यनी जेम अहित रूप थाय. एकांतवादीने तो बधुं अहित रूप थवा योग्य छे; पण व्यवहार

लक्ष्मां राखी, तेनी जाणे–अजाणे उपेक्षा कर्याविना अपेक्षा पूर्वक वांचनार, विचार नारा आत्मार्थीउने आ ग्रंथ बहु उपकारनुं कारण छे. निश्चय लक्ष्मां राखी व्यवहारे विचरवुं ए आत्मार्थीनुं कर्त्तव्य छे; ए निश्चय शुं छे,–ए जाणीने लक्ष्मां राखवानुं आ ग्रंथ उत्तम साधन छे. वस्तुनुं सापेक्षपणुं विचारनारने आ अने आवा ग्रंथो बहु ला भरूप छे. द्रव्यनां स्वरूपना जिज्ञासुउने आ ग्रंथ परमाणंदनुं कारणछे. ज्ञेय, हेय, आदेय, तत्त्व, द्रव्य, गुणश्रेणि–ए वगेरेनुं वस्तुना मूल धर्मने अवलंबीने कर्त्ता पुरुषे एवुं मनहर अने असरकारक निरूपण कर्युं छे, के तत्त्वरुचिजीवो आनंदमां गरकाव थइ रहे छे. छंद पण शूरातन उपजावे, आत्माने जाग्रत राखे एवा मोटे भागे सवैया एकतीसा अने तेइसा राख्या छे. ए ग्रंथ केवी पद्धतिए योजायलो छे, तेनुं कंइक सूचवन अनुक्रमणिकाथी थइ शकशे. आ नामनो मूल ग्रंथ प्राकृत भाषामां श्री कुंदकुंदाचार्ये रच्यो छे, ते परथी संस्कृतमां श्री अमृतचंद्राचार्यें योज्योछे; अने ते परथी संस्कृत–प्राकृतना अजाण एवा आ कालना जीवोनाउपकार अर्थे श्री बनारसी दासे हिंदी भाषामां योज्यो छे.

आ भागमां उपर दर्शाव्या प्रमाणेना जे जे ग्रंथो प्रसिद्ध करवामां आवेलाछे तेनुं यथार्थ ज्ञान मेलववामां मात्र वांचीजवुं ते पुरतुं नथी. अध्ययननी खास जरूर छे अने तेपण सारीरीते जेउंए आ ग्रंथोनुं अध्ययन करेलुं होय तेवा साक्षर पुरुषोनी पासे अध्ययन करवानी जरूरछे. ज्यांसुधी तेवीरीते अध्ययन करवामां न आवे त्यां सुधी ग्रंथना विषयने, मात्र वांचनार उत्तमप्रकारे पामीशकतो नथी. मात्र वांचवाथी ग्रंथना विषयनुं उपरचोटीयुं ज्ञान थायछे, परंतु अभ्यास करवामां आवे त्यारेज ते ज्ञाननुं पाचन थायछे. अने ज्यारे निरंतर अभ्यास करवानी पद्धति थइजाय, त्यारेज आवा ग्रंथोना अध्ययनथी जैनदर्शननी शैली समजी शकायछे.

अंग्रेजी केलवणी लीधेला अने लेनारा आपणा जैनबंधुउ वारंवार एवी दलीलो करेछे के, जैनदर्शनमां उतरवा सारू अर्थात् जैनदर्शननुं ज्ञान सेहेलाइथी मलीशके एवीरीतनी अध्ययन करवानीहाल पद्धति नथी. आवी तेमनी दलीलो अमूक अा-पेक्षाए वास्तविक लागे तेवीछे, परंतु एवीदलीलो करी धर्मना ज्ञान पाछल बिलकुल प्रयास नहि लेता मात्र नहि अभ्यास करवाना बाहाना वाली दलीलो करवी ते वास्तविक नथी. तेमना अनुभवमां आवेलुंज हशे के अंग्रेजी भाषानो, तेमज बीजा अनेक विषयोसंबंधी, अभ्यास करवामां अध्यापकोनी केटली आवश्यकताछे. मास्त-रोनी मददशिवाय तेउपण भाषासंबंधी तथा विषयो संबंधीबोध प्राप्त करी शक्यानथी. एवीरीते ज्यारे सांसारिक सामान्य ज्ञानसारू पण मास्तरोनी मदद लेवी पडेछे, त्यारे

धर्मनुं उत्तम ज्ञान मेलववासारू अध्यापकोनी मदद शिवाय ते ज्ञान केवीरीते मलीशके ते सेहेज समजाइ शकाय तेमछे. तेथी आत्मकल्याणना अर्थी आत्मार्थीए उत्तम गुरुउंनी पर्युपासना करी आवा अपूर्व ग्रंथोनो अभ्यास करवानी जरूरछे. किं बहुना ?

ज्ञाननी वृद्धि ज्ञानीउं उपर आधार राखेछे अने ज्ञानीउंनी वृद्धि ज्ञान उपर आधार राखेछे. ज्ञान अने ज्ञानीउंनो परस्पर कार्य कारणभाव संबंध छे. ज्यारे ज्ञानीथी ज्ञाननो प्रसार थायछे त्यारे ज्ञानी ज्ञाननुं कारण छे अने ज्ञान ज्ञानीनुं कार्य छे अने ज्यारे ज्ञानना प्रसारथी ज्ञानीउंनी वृद्धि थायछे, त्यारे ज्ञान ज्ञानीउंनुं कारण छे अने ज्ञानी ज्ञाननुं कार्यछे. यद्यपि ज्ञान अने ज्ञानीनो गुण गुणी संबंध होवाथी भेद स्वरुपवाला कार्य कारणभावमां शंका उत्पन्न थाय, कारणके ज्ञान अने ज्ञानीनो कार्य कारण संबंध अभेद स्वरुपवालो छे, छतांपि कर्म सहित जीवने ज्ञानरुप गुण उत्पन्न थायछे तेथी भेद स्वरुपवाली कार्यता संभवेछे अने ज्ञानीने कारणता संभवे छे. तेज प्रमाणे ज्ञानथी ज्ञानीपणुं प्राप्त थायछे तेथी ज्ञानी कार्य छे अने ज्ञान कारण छे.

वस्तुउंनी सिद्धि सारु साधनोनी संपूर्ण आवश्यकता छे. ज्ञान प्राप्त करवानी अभिलाषावालाने तेनां साधनो, व्याकरण, काव्य, कोष, ज्योतिष, न्याय अने धर्मना अनेक शास्त्रो, तेते शास्त्रोना अध्यापको अने अध्ययनना विधि अने श्रवण, मननादिकनी आवश्यकता छे.

प्राचिन कालमां विद्वानोनी स्मरण शक्ति अतिप्रबल होवाथी हरेक विषयनी प्रक्रिया तेउं श्रेणिबंध कंठाग्र राखी शकता हता, अर्थात् द्वादशांगी सुधी तेउं मुखपाठ करी शकता हता. ते समये देवनागरी प्रमुख लीपीउं विद्यमान हती, छतां स्मरण शक्तिनी उत्कृष्टता होवाथी ग्रंथो लखी राखवानी तेउंने जरुर पडती नही. कालानुसारे मनुष्योनी स्मरण शक्तिमां मंदता थवाथी ज्ञाननी न्यूनता थवा लागी तेथी पूज्यपाद श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमा श्रमण प्रमुख विद्वानोए एकत्र थइ ग्रंथो लखवा, लखववानो प्रारंभ कर्यो, ते समयथी उत्तम पुरुषोए अनेक ग्रंथो लखावीने ज्ञानना अनेक भंडारो कराव्याछे, जे अद्यापि विद्यमान छे.

प्रथम तालपत्र उपर ग्रंथो लखी राखता हता अने तेवा तालपत्र उपरना ग्रंथो जोइने मनमां घणुंज आश्चर्य उत्पन्न थायछे कारणके तालपत्र उपर ग्रंथ लखता बहुज मेहेनत लागेछे. ज्यारथी कागलनी कला प्रसिद्ध थइ त्यारथी कागलो उपर ग्रंथो लखवानुं काम शरु थयुं अने तेवा कागलो उपर लखेला लाखो ग्रंथो अद्यापि विद्यमान छे.

कागल उपर लखेला ग्रंथोथी ज्ञानवृद्धि थायछे ते सत्य छे. परंतु ज्ञाननो अति विस्तारथी प्रचार करवो होयतो मुद्रायंत्र कला ज्ञान वृद्धिनुं सर्वोत्कृष्ट साधन छे. लखेला

ग्रंथने दशांशमे भागे बलके तेनाथी पण ओछे खरचे मुद्रित ग्रंथ प्राप्त थइ शकेछे. तेथी ज्ञान वृद्धिना आ उत्तम साधनने अनेक रीते उपयोगमां लेवानी पुरी जरुर छे.

दुनीआना अनेक विद्वानो जैनदर्शनना तत्वज्ञानने उत्तम प्रकारें सेहेलाइथी जाणीशके तेवा ग्रंथो मुद्रित करावी प्रसिद्धिमां लाववानी संपूर्ण आवश्यकता छे. ज्यांसुधी अपूर्व तत्त्वज्ञानना ग्रंथो अंधारामां राखी तेनो उपयोग थाय तेवी साधनोनी योजना करवानो प्रयास करशुं नही त्यां सुधी जैनदर्शनपण अतिविस्तार पामशे नही अने जे टुंकी हदमां अत्यारें प्रवर्त्ते छे, तेनाथीपण टुंकी हद थवानो संभव छे, तेथी बुद्धिवान पुरुषोए आ बाबतमां ध्यान आपवानी पुरी जरुर छे. जैनाचार्योंए रचेला ग्रंथ वांचवाथी तथा अध्ययन करवोथी जैनदर्शनना अपूर्व ज्ञाननो बोध थायछे. उत्तम प्रकारनो बोध प्राप्त कराववा सारु ते महान उपकारी महात्माउ ए अतीशय परिश्रम लइने ग्रंथोनी रचना करेलीछे. ते ग्रंथो जनसमुदायनी प्रसिद्धिमां आवेछे, त्यारेज तेवा उपकारी पुरुषोनी कृतिउनी साफल्यता थायछे.

सुज्ञ बंधुउने आवा ग्रंथोने उपर मुजब स्वपरहित रुप जाणी मदद आपवा विनंति छे.

आ प्रकरण रत्नाकर ग्रंथना प्रथम भागनी प्रथमआवृत्तिमां तत्वानुबोध ग्रंथ अने उपमितिभव प्रपंच हता पण ए जुदा छपायेला होवाथी ते बंने बाद करी अमे "श्रीसमयसार" ग्रंथ दाखल कर्यो छे. जैन बंधुउमां ज्ञान वृद्धि थाय, एउनुं आथी आत्महित थाय एवी अर्हत् प्रभु पामे प्रार्थना करी अमे अत्रे विरमिये छिये. इतिशं.

श्री मुंबइ—कार्त्तिकी पूर्णिमा १९६०. लां॰ प्रसिद्धकर्त्ता.

| नंबर. | विषय. | पृष्ट. १–१३० |
|---|---|---|

श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय कृत श्रीसीमंधर स्वामिने विनतिरुप स्तवन तेना स्थूल

विषयोनी अनुक्रमणिका.

२ श्रीदेवचंद्रजीकृत आगमसार



३ श्रीदेवचंद्रजीकृत नयचक्रसार



॥ श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

॥ अथ ॥

# श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत साडात्रणसोगाथानुं स्तवन अर्थसहित प्रारंभः



॥ प्रथम अर्थ कर्तानुं मंगलाचरण ॥

पार्श्वनाथपदद्वंद्वं, नत्वा सीमंधरप्रभुम् ॥
स्तवस्य वार्त्तिकं कुर्वे, स्वपरानुग्रहाय वै ॥ १ ॥

॥ हवे अर्थकर्तानी सूचना ॥

ए स्तवन मांहेली गाथाउना अर्थ अन्वये करी कहीशुं पण पाधरो नही कहेवाय माटे पद आगल पाछल जोडीने पोतानी बुद्धीयें विचारी जोशो तो खरो अर्थ बेसशे.

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ एछडिकिहांराखी ॥ ए देशी ॥

श्रीसीमंधरसाहिबआगें ॥ विनतडीएककीजें ॥
मारगशुद्धमयाकरीमुझने ॥ मोहनमूरतिदीजेंरे ॥
जिनजी, वीनतडीअवधारो ॥ १ ॥ एआंकणी ॥

अर्थ ॥ श्री के० चोत्रीशअतिशय अनेआठ प्रातिहार्यादिक बाह्यलक्ष्मी तथा केवल ज्ञानादिक अभ्यंतरलक्ष्मी तेणेकरीयुक्त एहवा सीमंधरनामेसाहिब तेआगलएकज शुद्ध मार्ग उलखवारूप अद्वितीयवीनतिकरीयें ते माहरा उपर मया के० कृपाकरीने शुद्ध मार्गजे रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग अथवा अनेकदर्शनी वितत्थसंवादी तथा विपरीतभाषणकरनारा स्वदर्शनीने साचामानवा ते अशुद्धमार्गकहीयें ते सर्वउवेखीने स्याद्वादसेलीयें जैनमार्ग उलखवोते शुद्धमार्गकहीयेंतेशुद्धमार्गसेवी अनेकभव्यजीव स्वसंपदाभोगीथया एहवो शुद्धमार्गते हे मोहनमूरति के० वल्लभमूरति! मुझनेदीजे के० मुझने द्यो आपो एवीनती करीयेंछेयें माटे हे रागद्वेषनाजीतणहार जिनजी! तेअमारीवीनतीअवधारो के० केवलज्ञानेकरीजाणो ॥ १ ॥

चालेसूत्रविरुध्धाचारें ॥ जाषेसूत्रविरुध्द ॥ एककहेंअमे
मारगराखूं ॥ तेकेममानूंशुध्धरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइकप्राणीसूत्रथी विरुद्धआचारेंचालेछे, तथा जाषेके० परुपणाकरेछे तें-पणसूत्रविरुद्ध; वलीलोकनेकहेशेजे अमेमार्गराखीयेछैयें, जोअमेछैयेंतोमार्गचालेछे एह्वुंबोलेछे माटेहेप्रजु तेवातने अमेंशुद्ध केमकरीमानियें. इहांसूत्रतेशुं तेलखेछेः– ११ अंग, १२ उपांग, १० पयन्ना, ६ छेद, ४ मूलसूत्र, १ नंदी, १ अनुयोगद्वार, एवं ४५ आगम जाणवा. यतः 'एक्कारसतहबारस ॥ अंगुवंगाणिदसपयन्नाणी ॥ छछेयाचउमूला ॥ नंदीअणुउंगपणयाला ॥ १ ॥ तथा तेनी जाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति, वृत्ति अने मूलसूत्र ए पंचांगीने सम्मतजे पूर्वाचार्यप्रणीत धर्मरत्नादि प्रकरण तथा जे नंदीसूत्रगतपयन्ना अने हरीजद्रसूरि उमास्वातिवाचक प्रमुखकृतग्रंथादिक ते सर्वसूत्रमांहेजआवे; केमके डुर्जिक्षपड्यातेकालें सूत्रविसरयाहता ते मांहे जेटला सांजरया ते सूत्र लख्या अने जे अर्थ सांजरया तेहना प्रकरण प्रमुखबांध्या तेपणसूत्रानुजायी होवाथी सूत्रज कहीयें तो तेथीविरुद्धकरेछे तथा बोले छे तेवाने शुद्धकेममानुं ॥ २ ॥

आलंबनकूडांदेखाडी ॥ मुगधलोकनेपाडे ॥ आणाजंग
तिलकतेकालूं ॥ थापेआपनिलाडेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे ते विपरीतचालतां कोईककहेशे जे आंमकांचालोछो तेहने पाछोजवाब आपतां कूडां के० खोटांआलंबनदेखाडे जे आपंचमकालें संघयणधृतिप्रमुखपूर्व पुरुषजेहवाकिहांछे एमकहिने मुगध के० मूर्खलोकने पाडे के० अज्ञानमार्गेपाडेछे एहवापुरुष ते आणा के० जिनाज्ञा तेहनोजेजंग तद्रूपजेकालुंतिलक तेपोतानेंकपालें थापेछे एटले जिनाज्ञालोपेछे. तेवारेकोइकबोल्यो जे आज्ञाजंगनुंदूषणदीधुंतेखरुं पण सर्वथा विधितो कोई करीशके नही ॥ ३ ॥

विधिजोतांकलियुगमांहोवे ॥ तिरथनोउच्छेद ॥ जिमचाले
तिमचलवेजइयें ॥ एहधरेमतिजेदरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेविधिजोतांतो कलियुग के० पांचमोआरो जेने अन्यतिर्थीकलीयुगकहेछे अने जैन पांचमोआरोकहेछे ते कलियुगमांतीर्थनोउच्छेदथाय केमके तमे अविधिनीतोनाकहोछोअने विधियेंतोथायनही तेथी तीर्थविछेदजाय माटेजेमचाले तेम चलाव्याजैयें एटलेफाफीचापाचिपीकरीयेंनही नरमगरमचलावियें एरीते कोइक पोतानी मतिनोजेदधरेछे ॥४॥

इमभाषितेमारगलोपे ॥ सूत्रक्रियासविपीसी ॥ आचरणासू
धीआचरियें ॥ जोइयोगनीवीसीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एहवांवचनबोलीने जेविधिमार्गनेलोपेछे तेप्राणीयेंसूत्रक्रियासर्वे पीसी के० द लीनाखी तेमाटे आचरणाके० क्रियातेशुद्धआदरीयें तेश्रीहरीभद्रसूरीयें योगनीवीसवी सीकरेलीछे तेमांहेली सत्तरमीवीसीमांहेकह्युंछे. यतः ॥ तिछस्सुछेआइ ॥ विणालंबणंज स्सएमेव ॥ सुत्तकिरियाइनासो ॥ एसोअसमंजस्सविहाणो ॥ १ ॥ ५ ॥

पंचमेंआरेजिमविषमारे ॥ अविधिदोषतिमलागे ॥ इमउपदेश
पदादिकदेखी ॥ विधिरसिउजनजागेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पांचमाआरामांहेजेमविषमारेछे तेमपांचमाआरामांहे अविधिदोषपणलागेछे एटलेएभावजे पांचमाआरामांपांचविषकह्याछे तेपणजीवने असत्यप्रवृत्तिनाहेतुछे. यतः ॥ १ दुस्सम २ हुंडा सप्पिणि ॥ ३ दाहिणपासंमि ४ भासगहजोउ ॥ ५ तहकण्हपक्की जीवा ॥ पंचविसंपंचमेअरए ॥ १ ॥ एगाथासूयणासीत्तरीनीछे एजिमपांचविषकह्यां ते मारेछे तिमपांचमेंआरे जेअविधि दोषलागे तेपणमारेजछे अथवा चोथेआरे जिमविष खाधुंमारे तेम पांचमेआरेपण विषखाधुंमारे; तेमजअविधिदोषपण जेम चोथाआरामांहे लागे तेमपांचमेंआरेपणलागे. यतः " मारेइविसंजुत्तं ॥ जहाचउछारएतहादुसमंमि ॥ तहअविहिदोषजणीउ ॥ धम्मोवियदुग्गइहेउ ॥१॥ इतिहितोपदेशमालायां" एमउ- पदेशपदादिकग्रंथमांहेपाठदेखीने विधिनोरसियो जनके० लोकहोयते जागेके० विधि करवानेसावधानथाय ॥ ६ ॥

कोइकहेजिमबहुजनचाले ॥ तिमचलियेंसीचर्चा ॥ मारगमहा
जनचालेभाष्यो ॥ तेहमांलहीयेंअर्चारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाकतोएमकहेछे के जेमबहुजनके० घणालोकचाले तेरीतेचालीयें केमके जेघणाकरताहसे तेरुडुंजकरताहसे तोझाझीचर्चासीकरोछो अमेंपोतानीमतियें करताहश्ये तोभलेचर्चाकरो कारणके मार्गतोतेहनेजकहीयें के जेमार्गे महाजनके० म- होटालोकना समुदायचालेछे तेहनीचाले चालीए तेनेमार्गकहीयें इम भाष्योके० ग्रंथमांहें कह्योछे. यतः ॥ महाजनोयेनगतः सपंथाइति ॥ तोतेमहाजननीचालेंचालतांथकां लहीये के० पामीयें अर्चाके० पूजा इति ॥ ७ ॥

एपणबोलमृषामनधरीयें ॥ बहुजनमतआदरतां ॥ छेहनआवे
बहुलअनारय ॥ मिथ्यामतमांफिरतांरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥८॥

अर्थ ॥ हवेउत्तरआपेछे के एबोलजेकह्यो तेपणमृषाके० जूठो चित्तमांहेंधारीयें ते हनोहेतुकहेछे एटले बहुजनमतआदरतांके० घणालोकनोमतआदरतां तो बहुलअनारयके० घणाजनतोअनार्यछे तेहनो छेहके० पारपामीयेंनही मिथ्यामतमांहे फिरतांके० अनार्यछे तेसर्वेमिथ्यामतिछे माटे तेमांहेजमतांपारनपामीयें इतिभाव ॥ ८ ॥

थोडाआर्यअनारयजनथी ॥ जैनआर्यमांथोडा ॥ तेमांपणपरि
णतजनथोडा ॥ श्रमणअलपबहुमोडारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ए॥

अर्थ ॥ थोडाआर्यअनारयजनथीके० अनार्यलोकथी आर्यलोकथोडाछे केमके बत्रीसहजारदेशमांहें आर्यदेशतोसाडीपचवीसजछे तेवलीआर्यदेशमांपण जैननामधरावे एहवालोकथोडाछे वलीजैननामधरावे तेमांहेपण परिणतके० जैनवासनायेंपरिणम्याहोय एहवाश्रद्धावंत स्याद्वादसैलीनाजाणथोडा वलीतेपरिणतजनमांहेपण श्रमणके० मुनीराज तेअलपके० घणाथोडा अने बहुमोडाके० मात्र मस्तकमुंडनकराव्युं पण गुणविनाना एहवालोक बहुजाणवा ॥ ए ॥

भद्रबाहुगुरुवदनवचनए ॥ आवश्यकमांलहियें ॥ आणाशु
द्धमहाजनजाणी ॥ तेहनीसंगेरहियेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ भद्रबाहुस्वामीनामुखतुं एवक्ष्यमाणवचनछे ते आवश्यकसूत्रमांहेंकह्युंछे तिहांथी लहियेंके० पामीयें जे आज्ञाशुद्धतेहिज महाजन एटलें जिनाज्ञापालेतेहिज संघएहवुंजाणीनें तेवा महाजननीपासें वसीयें. गाथा ॥ "एगोयसाहुएगो, यसाहुणीसावउंवसङ्ढीवा; आणाजुत्तोसंघो, सेसोपुणअट्ठिसंघाउ" ॥ १ ॥ इतिआवश्यक वचनात् १०

अज्ञानीनविहोवेमहाजन ॥ जोपणचलवेटोलुं ॥ धर्मदासग
णिवचनविचारी ॥ मननविकीजेभोलुंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥११॥

अर्थ ॥ पणजेअज्ञानीनोसमुदायहोय अने जो ते टोलुं के० गछनेचलावे तोहेपण तेहने महाजन न कहीयें एहवुं धर्मदासगणीनुं वचनविचारीने मनने भोलूंनकरीयें एटले अज्ञाने धमाधम न करीयें. यतः "जंजयईअगीयछो" इतिवचनात् ॥ ११ ॥

अज्ञानीनिजछंदेचाले ॥ तसनिश्रायेंविहारी ॥ अज्ञानीजो
गछनेचलवे ॥ तेतोअनंतसंसारीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेअज्ञानीपुरुष ते निजछंदेके० पोताना अभिप्रायेंचाले तथा ते अज्ञानीनी निश्रायें जे विहारीके० विचरे तेपण अज्ञानीजहोय तो एहवो अज्ञानी अगीतार्थ थको

जे गछनेचलावे तेतोअनंतसंसारी जाणवो. यतः॥जंजयइअग्गियछो॥ जंच अग्गियछं निस्सियोजयई, वट्टावेइयगछं, अणंतसंसारउंहोई ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ १२ ॥

खंमखंमपंमितजेहोवे ॥ तेनविकहीयेनाणी ॥ निश्चितसमय
लहेतेनाणी ॥ संमतिनीसहिनाणीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जे खंमखंमपंमितके० ग्रंथग्रंथमांहेथी थोमीथोमी वातसीखीने पंमितपणुंजेहनेहोय तेपुरुषनेज्ञानीनकहीयें, यतः "जोसुत्तमछमुत्तयं,समहीजंतेगुरुकम्मविहिणो ॥ नोजन्नईसोनाणी; अछमयछाणमूढमणो" ॥१॥ इति आवश्यकमाहात्म्ये माटे निश्चितसमय के० निश्चेंसिद्धांतनीवातने लहे के० जाणे ते नाणी के० ज्ञानीकहीयें एटले गुरुक्रमागत निश्चयव्यवहारसहीत स्याद्वादसैलीयें ज्ञानथयुं होय ते सिद्धांत निश्चित ज्ञानकहियें एवात संमतिनीके० संमतितर्कशास्त्रनी सहिनाणी के० नीसानी छे. गाथा॥ "जोनिछयसमयन्नू ॥ सववहारसमयमासज्ज ॥ गुरुपारतंतलछठ; नयनि उणोगाहणाकुसलो" इति ॥१३॥

जिमजिमबहुश्रुतबहुजनसंमत ॥ बहुशिष्येंपरवरिउ ॥ तिमतिम
जिनशासननोवयरी ॥ जोनविनिश्चयदरीउरे॥ जिन० ॥ वी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जिमजिम बहुश्रुतके० घणोत्नण्यो अने बहुजनसंमतके० घणालोकने मानवायोग्यथयो वलीबहुशिष्येंपरवरिउके० घणाचेलाचांटिकस्यां तिमतिम जिनशासननो वयरीके० सिद्धांतनोशत्रुजाणवो जो निश्चयज्ञाननो दरिउ के० समुद्रनहोय तो. अने जे निश्चेंज्ञानीहोय तेहनेतोसर्वलेखेछे. यडुक्तं ॥ जहजहबहुसुअसमउ ॥ सीसगुणसंपरिवुडोय ॥ अविणीछिउअसमए ॥ तहतहसिद्धंतपमिणीउ ॥ इत्युपदेशमालायां तथा पंचवस्तुकेपिच ॥ १४ ॥

कोईकहेलोचादिककष्टें ॥ मारगभिक्षावृत्ति ॥ तेमिथ्यानवि
मारगहोवे ॥ जनमननीअनुवृत्तिरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ केटलाएकतोएमजकहेछे जे लोचादिककष्टेके० लोचकरावववा उघाडेपगे तथा उघाडेमाथें हिंडवुं इत्यादिककष्टकरवेकरीने मारगके० मुनीमारगजाणवो वली भिक्षायें वृत्तिके० आजीविकाकरवी ते मार्गछे एहवुंजेकहेछे तेमिथ्याके० खोटुंकहेछे एरीते मार्गनहोय केमके आत्मार्थविना जनमननीअनुवृत्तिके० लोकनामननीअनुजायीयें प्रवर्त्ततांमार्गनहोय इतिन्नाव. गाथा॥ "कछंकरेइतिवं ॥ धम्मंधारेइज्जाणाणुवित्तीए ॥ सोपवयणमग्गस्स ॥ वेरीचूउअहाछंदो " ॥ १ ॥ १५ ॥

जोकष्टेमुनिमारगपावे ॥ बलदथाएतोसारो ॥ नारवहेजेता वडेनमतो ॥ खमतोगाढप्रहारोरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोएरीते प्रनुनीआज्ञाविना कष्टकरतां मुनीनोमारग पामे तो तीर्यंच बलद तथा उपलक्षणथी बीजा ढोर पण लक्ष्यें तेढोरज साराके० नलाथाय केमके बलदऊ पर जेटलोनार नरीयें तेटलो सुखेडुखेपणवहे निरवाहकरे वली तावडेके० तडकेनम तोथको गाढके० आकरा कोरडा प्रोंणा प्रमुखनाप्रहारने खमतोके० सहनकरेछे ॥ १६ ॥

लहेपापअनुबंधीपापें ॥ बलहरणीजननिक्षा ॥ पूरवनवव्र तखंडनफलए ॥ पंचवस्तुनीशिक्षारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेतेप्राणी वर्त्तमानकालेंपण अशुन अनेअनागतकालेपणअशुन तेपापा नुबंधीपापकहीयें तेणेकरीने लहेके० पामे बलहरणीके० वीर्यनेहणे एहवी जननिक्षा के० लोकनीनिक्षापामे एटलेसंयमयोगसाधीनशके तेबलहरणीनिक्षाकहीयें एपूरवन वके० पाछलानवें व्रतखंडनकर्याहोय तेहनांफलछे तेपापानुबंधीपापें बलहरणीनिक्षा पामें एमपंचवस्तुग्रंथ श्रीहरीनद्रसूरीकृतछे तेमांहेकह्युंछे. गाथा ॥ “चारित्तविहि णस्स ॥ अनसंगयस्सअकलुसनावस्स ॥ आणाणिणोयजापुण ॥ सापडिसिद्धाजिनव रेहिं” ॥ १ ॥ “निरकंअडंतिआरं ॥ नंसंगयाअपरिसुद्धपरिणामा ॥ दीणा संसारफलं ॥ पावाउक्कुत्तमेयंतु” ॥ २ ॥ इसिकाउणसुहणी ॥ वाडीयाजेहिंडुक्क गहणंमि ॥ मायाएकेइपाणी ॥ तेसिंपयारिसंचहोई ॥ ३ ॥ चेइऊणघरवासं ॥ तस्स फलंचेवमहापरतंता ॥ नगिहिनयपवइया ॥ संसारपवहगानणिया ॥ ४ ॥ १७ ॥

कोइकहे अमें लिंगे तरसुं ॥ जैनलिंगछे वारु ॥ तेमिथ्यानविगु णविणुं तरियें ॥ नुजविण न तरे तारुरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे कोईकहेशेजे ड्रव्यलिंगतेहिजप्रमाणछे एटले लिंगजेउंगोमुहपत्तितेथी तरीसंसार पारपामीसुं केमकेजैननोलिंगते वारु के० सुंदरछे तेनेगुरुउत्तरकहेछेके तेमि थ्या के० खोटुंछे कारणके गुणविना एकलुंमात्रलिंगधारणकरेथी तरायनही तेहनोदृ- ष्टांतः– जेम तारुपुरुषतेनुजाविनानदिप्रमुखतरीशकेनही ॥ यडुक्तं ॥ वंदनावश्यके ॥ शिष्यवचनं ॥ “सुविहियडुविहीयंवा ॥ नाहंजाणामियंखुछउमछो ॥ लिंगंतुपूययामि ॥ तिगरण सुद्धेण नावेण” ॥ १ ॥ प्रत्युत्तर ॥ माइफइतेलिंगपमाण ॥ वंदाहि निन्हएतुमे- सवे ॥ एअवंदमाणस्स ॥ लिंगमविअप्पमाणंते ॥ इत्यादि ॥ १८ ॥

कुटलिंग जिमप्रगट विडंबक ॥ जाणीनमतांदोष ॥ निद्धंद्धसजा
णीनेनमतां ॥ तिमज कह्यो तसपोषरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेम विडंबकजे नाटकीआ प्रमुख तेहनो जे कुटलिंगके० खोटोवेश तेप्रगटपणेंजाणीनें एटले कोइक नाटकीयो साधुनो वेषलाव्यो तेखोटो वेशछे एम जाणतां थकां जोतेहने नमीयेंतो दोषलागे तथा लोकहांसी प्रमुख पणकरे तेमाटे निद्धंद्धसजे प्रवचनोपघातक निरपेक्षक केवल लिंगधारी पासत्थादिक जाणीने तेहने नमीयें तो तिमजके० ते पूर्वोक्त नाटकीया साधुनीपरे तसपोषके० ते दोषनोपोष कह्योछे यदुक्तं ॥ "जहवेलंबुगलिंग ॥ जाणंतस्सनमउहवइदोसो ॥ निद्धंद्धसुत्तिनाउणं ॥ वंदमाणे धुवोदोसो" ॥ १ ॥ इति वंदनावश्यके ॥ एरीते आचार्यें लिंग अप्रमाण कह्युं ॥ १९ ॥

शिष्यकहे जिमजिन प्रतिमाने ॥ जिनवर थापी नमियें ॥ साधुवेस
थापी अतिसुंदर ॥ तिम असाधुने नमियेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेवारें शिष्यबोल्यो जे जिमजिनेश्वरनी प्रतिमामांहे ज्ञानादिक गुणनथी अने तेहने तीर्थंकरनी बुद्धीयें नमस्कार करतां महोटो लाभ थायछे महोटी निर्ज्जरा थायछे. यथा आवश्यके शिष्यवचनं:–॥ तित्थयरगुणा पडिमा ॥ सुनत्थि निस्संसयं वियाणंतो तित्थयरुत्तिनमंतो ॥ सोपावईनिज्जरंवीउलं ॥ १ ॥ इति ॥ तेम अतिसुंदर एहवो साधुवेस थापी असाधुने पण नमियें एटले गुणविनानी जिमजिन प्रतिमा छे तेहने नमतां निर्ज्जरा थाय तेम पासत्थादिकमां जो साधुनो गुणनथी तोपण साधुनो वेषतो छे माटे जो पोतानुं मनशुद्ध छे तो तेहवाने नमतां लाभ थाय कारणके लाभ अथवा खोट तेतो पोताना अध्यवसाय आश्रीछे. उक्तंच ॥ लिंगंजिणपन्नत्तं, एवनमंतस्सनिज्जरा विउला ॥ जइविगुणविप्पहिणं, वंदइअप्पसोहिए ॥ १ ॥ इति शिष्यवचनं ॥ २० ॥

भद्रबाहु गुरु बोले प्रतिमा ॥ गुणवंति नहीदुष्ट ॥ लिंगमांहेबे
वानांदीसे ॥ तेतोमानि अदुष्टरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवे आचार्य उत्तर आपेछे जे श्रीभद्रबाहुगुरु आवश्यकमां एम कहेछे के प्रतिमा गुणवंति नथी तेम दुष्टपण नथी माटे तेहने गुणवंति मानियें एटले अदुष्टपणानो आरोप करियेंतो थाय अने लिंगमांहेतो गुण तथा दोष एबेवानां देखायछे ते तुं हे अदुष्ट के० गुणवंत शिष्यमान. इति गाथार्थ। हवे एनो भावार्थ कहेछे जे जिनप्रतिमा मांहे गुण नथी तेम दोषपण नथी माटे पोताना अध्यवसायनी शुद्धीयें नमतां लाभ थाय इहांकोइ कहेशेजे परिणामे लाभ थाय छे तेवारें प्रतिमानुं शुं काम छे तेहने कहीयेंजे

शुद्ध परिणामनो हेतु ते प्रतिमाज छे तेवारे ते कहेशे जे साधुनो वेष ते पण शुद्ध परिणामनो हेतुछे तेहने कहेवुंजे साधुवेष पुरुषपणुं ते प्रतिमाने बराबर नथाय केमके प्रतिमा हजारो गमे जोइयें पण सर्व एकाकार छे सावद्यक्रिया नथी करती तेम निरवद्य क्रिया पण नथी करती अने साधुलिंग तो कोइक स्थानकें सावद्य कर्म करतो देखीयें तथा कोइक स्थानकें निरवद्य शुद्ध चारित्र पालतो देखीयें माटे बराबर नथाय अने जिनप्रतिमामांहे जिन गुणनो आरोप करीने परिणाम करतां निर्जरा थाय पण पासत्थादिकने वंदनाकरतां कोना गुणशंभारीश तेवारे ते बोल्यो जे बीजा रुडा साधुना गुण आरोप करीने प्रणाम करिशुंतेहने कहेछे जे निरगुणीने विषे गुणनो आरोप थाय नही अने जो गुणनो आरोप करीयें तो विपर्यास थाय अने जे विपर्यास ते तो कर्मबंधनो हेतुछे तेमाटे जिहां गुण तथा दोष नहोय तिहां आरोप थाय पण अन्यथा आरोप नथाय यडुक्तं वंदनावश्यके ॥ संतातिछयरगुणा ॥ तिछयरेतेसिमंतुअप्पं ॥ नयसावद्याकिरिया ॥ इयरेसुधुवास मणुमन्ना ॥१॥चो०॥"जहसावद्याकिरिया ॥ नछिडपडिमासुएवमियरावि ॥ तयजावे नछीफलं ॥ अहहोईअहेजयहोई" ॥२॥ आचा० कार्मजजयाजावो ॥ तह विफलंअछिमणविसुद्धीए ॥ तिपुणमणविसुद्धीए ॥ कारणंहुंतिपडिमाउ ॥ ३ ॥ जइवीयपडिमाउंगुणा ॥ मुणीगुणसंकप्पकारणंलिंगं ॥ उन्नयमविअछिलिंगे । नयपडिमासूज़यंअछि ॥ ४ ॥ नियमाजिणेसुअगुणा ॥ पडिमाउदिस्सजेमणेकुणइ ॥ अगुणोउवियाणंतो ॥ कंनमउंमणेगुणेकाउं ॥ ५ ॥ इत्यादि वली एहनो विचार वृहत्वृत्तिथी विचारजो ॥ २१ ॥

कोइकहेजिनआगेमांगी ॥ मुक्तिमारगअमेलेसुं ॥ निरगुणनेप
णसाहेबतारे ॥ तसजक्तेगहगहिसुंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ हवे कोइक एम कहेछे जे जिनेश्वर आगलें मुक्तीमार्ग अमे मागी लेशुं केमके निरगुणने पण साहेब तारशे तथा तेहनी जक्तिमां गहगहिंसुं के० हरष पामिशुं इति गाथार्थ. जावार्थ तो एम छे जे केटलाक एम कहेछे आ जवमांतो शक्ति नथी पण जन्मांतरे बोधिबीजनी सामग्री पामीशुं त्यारे करिशुं एहवुं प्रजुपासे मागी लइयें छीयें. इति जावः ॥ २२ ॥

पामीबोधनपालेमूरख ॥ मांगेबोधविचालें ॥ लहियेंतेहकहो
कुणमूले ॥ बोल्युंउपदेशमालेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तेहने उत्तर कहेछे जे आ जवमां बोध के० बोधिबीजनी सामग्री पामीने पण जे मूरख के० अज्ञानी संयम अनुष्ठान तो पालतो नथी अने विचालें के० विचमां बोध मांगे जे आगल पालिसुं तो तेह के० ते बोधिबीज कहो कुणमूले के० शेंमूले लहि-

यें के० पामीयें एटले ए जाव जे कोइक वस्तु लेवा जइयें ते वस्तु जो पासे ड्रव्य होय तो जडे अने ड्रव्य न होय तो स्यामूलेजडे, तेम आजवमांहेजो संयमादिक पाल्या होय तो आ वतेजवें पण बोधिबीजनी सामग्री मले पण न पाल्या होय तो शेमूले पामे अर्थात् बोधि सामग्री नज पामे, एम उपदेशमाला मध्ये कह्युं ठे. यतः ॥ "लद्धिल्लियंचबोहिं ॥ अकरि तोणागयंचपडिंतो ॥ अन्नंदाइंबोहिं ॥ लप्नहिसिकयरेणमुल्लेण" ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां आवश्यकनिर्युक्तौ तथा चतुर्विंशतिस्तवाध्ययनेपिच ॥ २३ ॥

आणापालेसाहेबतूसे ॥ सकलआपदाकापे ॥ आणाकारी
जेजनमागे ॥ तसजसलीलाआपेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ ते माटे आज्ञा पालतां थकां साहेब के० परमेश्वर तूष्टमान थाय अने समस्त आपदाने कापे, माटे आज्ञाकारी जे जन के० लोक ते मागे एटले आ जवमांहे प्रजुआज्ञा पाले ने ते प्राणी जे मागे तस के० ते प्राणीने जशनी लीला आपे एटले प्रजु आज्ञाथी जशलीला पामें ॥ २४ ॥ ए प्रथम ढालमांहे एम कह्युं जे अमे निर्गुणी थकां प्रजुपासेथी मांगी लेइसुं एवुं बोलनारने शिखामण दीधी ॥ २४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

कोइकहेअमेगुरुथीतरसुं ॥ जिमनावाथीलोहारे ॥ तेमि
थ्यानलहेसहवासें ॥ काचपाचनीसोहारे ॥ १ ॥ श्रीसी
मंधरसाहेबसुणजो ॥ जरतखेत्रनीवातोरे ॥ लहुंदेवके
वलरतिइणेयुगें ॥ हुंतोतुजगुणरातोरे ॥ श्रीसी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजी ढालमां जे एम कहेठे के अमे निर्गुणी थकाज गुरुथीतरीशुं तेमने शिखामण देवा संबंधी आवी बीजी ढाल ते कहेठे. कोइक तो एम कहेठे जे अमारामां तो गुण नथी पण अमारा गुरु गुणवंत ठे तो तेथीज संसार समुद्रतरी पारपामिशुं जेम नावा के० जिहाज तरेठे ते मांहे लोहा के० लोखंडना खीला जड्या होय ते पण तरेठे ए दृष्टांते तरिशुं. यतः "संचंजंपेइजणो ॥ उत्तमसंगेणउत्तमोहोइ ॥ लोहोकठविलग्गो ॥ संजोगे सायरं तरई" ॥१॥ इति पाठात् ॥ तेहने उत्तर जे ए रीतना बोलनारा ते पण मिथ्या के० खोटुं कहेठे केमके सारा गुरुने सहवासे के० मात्र जेला वसवाथीज न लहे के० न पामे, जेम काच ते पाच के० पानानी सोजा पामे नही. उक्तंच ॥ मणिर्लुठतिपादाग्रे ॥ काचः शिरसिधार्यते ॥ परीक्षककरेप्राप्ते ॥ काचः काचो मणिर्मणिः ॥ १ ॥ तथा जघनि-

युंत्कावपि ॥ सुचिरंपि अछमाणो ॥ वेरुलिउं कायमणीयउं ॥ मीसोनउवेइकाय भावं ॥ पाहाण गुणेण नियएणं ॥ १ ॥ माटे हे श्रीसीमंधर साहेब ! आ भरतखेत्रनी वातो के० चरित्र ते सुणजो के० सांभलजो. हे देव हे आत्मगुणरमणि इणेयुगें के० आविषमकाल पंचमआरो हुंडावसर्पिणीनें विषे केवल के० निःकेवल जेहुं रतिलहुं के० साता पामुंहुं ते तुज गुणरातो के० तमारा गुणने विषे तत्पर थको एटले तमारा गुणनो रंग छे एटलीज शाता छे, बाकी मतभेद कदाग्रहदेखी तो कांइंपण शातानुं कारण नथी. इति भावः ॥ २ ॥

कोइकहेजेगछथीनटल्या ॥ तेनिरगुणपणसाधोरे ॥ नातिमांहे
निरगुणपणगणीयें ॥ जशनहींनातिबाधोरे ॥ श्रीसी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे केटलाएक एम कहेछे के जे गछथी बाहिर निकल्या नथी अने आचार्यना संघाडामांहे रह्या छे ते जो निर्गुण छे तो पण ते गछमां रह्या माटे साधो के० साधु कहियें. तेहनुं दृष्टांत कहेछे; जेम न्यातिना सर्वलोक उत्तम होय अने ते मांहे कोइक निर्गुण होय पण तेहने जिहांलगें न्याति बाहर कर्यो न होय तिहां लगे ते न्याति मांहेज गणाय छे; जश के० जे गुणरहितपुरुषनो नाति बाधो के० नातीनो बाध नही के० नथी एटले ते पुरुषनो जिम नातिमांहे बाध नथी, तेम साधु पण गछमांहे छे माटे रुडो जाणवो ॥ ३ ॥

गुणअवगुणइमसरिखाकरतो ॥ तेजिनशासनवैरीरे ॥ निर
गुणजोनिजछंदेचाले ॥ तोगछथाएस्वैरीरे ॥ श्रीसी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वोक्त कहेनारने शिखामण आपेछे के जे ए रीते गुण अने अवगुणने सरखा करे ते जिन शासननो वैरी जाणवो. तेहनो हेतु देखाडे छे के, ते गछमांहे रह्यो जे निर्गुण पुरुष ते जो निज के० पोताने छंदेचाले तो गछ थाय स्वैरी के० ते सर्व गछ स्वेछाचारी थाय, केमके एकने हीणो देखीने बीजा पण हीणाचारी थाय ॥ इतिभावः ॥ ४ ॥

निरगुणनोगुरुपक्षकरेजे ॥ तसगछत्यजवोदाख्योरे ॥ तेजि
नवरमारगनोघातक ॥ गछ[illegible]दाख्योरे ॥ श्रीसी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली जे निर्गुण होय तेनो पक्षपात जे गुरु करे तो ते गुरुनो गछ बीजा साधुयें त्यजवो के० छांडवो एम दाख्यो के० कह्योछे एटले ते गछमां रहेवुं नही अने ते गुरु जिनेश्वरना मार्गनो घात करनार जाणवो. ए रीतेगछाचारपयन्नामध्ये कह्युं छे. यतः ॥ जहिंन छी गुणाणपरको ॥ गणीकुसीलो कुसील पक्कधरो ॥ सोय अगछोगछो ॥ संजमकांम-

हिं मुत्तवो ॥ १ ॥ जहिंनछी सारणा वारणाय ॥ चोयणायसगछंमि ॥ सोय अगछो गछो ॥ संयमकामीहिंमुत्तवो ॥ २ ॥ इति गछाचारे ॥ ५ ॥

विषमकालमांनिरगुणगछें ॥ कारणथीजोवसीयेंरे ॥ द्रव्य
थकीव्यवहारेंचलीयें ॥ भावेंनविउल्लसीयेंरे ॥ श्रीसी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि विषमकालमां एटले पांचमा आरामां पोतानी मनोबल शक्तिने अभावें निरगुणगछे एटले गुणरहित गछनेविषे जो कोइ कारणे वसवुं पडे तो द्रव्य थकी एटले बाह्यथी तो ते गछने व्यवहारें चलियें के० प्रवृत्तियें पण भावथकी उल्लास पामियें नही एटले अंतरथी हरषीयें नही पण जो शुद्धाचारीनी संगतमले तो निर्गुण गछने तुरत छोडी आपियें. यतः ॥ गीयछो गुणयुत्तो ॥ निग्गुणगछंमिसंवसिजाय ॥ नोनिग्गुणाणपरकं ॥ कुणसोगणहरसरिछो ॥ इत्युपदेशपदे ॥ ६ ॥

जिमकुवृष्टिथीनगरलोकने ॥ घहेलादेखीराजारे ॥ मंत्रिसहि
तघहेलाहोईबेठा ॥ पणमनमांहेंताजारे ॥ श्रीसी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम घहेलापणानी करनारी कुवृष्टि थइ ते कुवृष्टीनुं पाणी ते नगरना सर्वे लोक पान करीने घहेला थया मात्र एक राजा अने प्रधान ए बेजणे पाणी पीधुं नही माटे डाह्या रह्या. पछी ते बेहुने विष सहशाचारी घहेला लोकोए मारवानो उपाय कर्यो तेवारें राजा पोताना जीववाना उपायने माटे प्रधान सहित पोते घहेला थइ बेठा, पण मनमां तो ताजा के० डाह्या छे एम जाणे छे जे सारी वृष्टी थाय तो सहु डाह्या थइयें एम ए दृष्टांतें इहां पण जाणवुं जे नीर्गुण गछमां वसे तथा तेहनी पेठें चाले तो पण मनमां तो एम जाणे जे सुविहितमले तो तेहने संगे रहुं अने शुद्धाचारी थाउं इतिभाव॥७॥

इमउपदेशपदेएभाष्युं ॥ तिहांमारगअनुसारिरे ॥ जाणीने
भावेंआदरीयें ॥ कल्पभाष्यनिरधारिरे ॥ श्रीसी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ ए रीते श्रीहरीभद्रसूरिकृत उपदेशपदनामाग्रंथमां भाष्युं छे गीयछो गुणयुत्तो इत्यादि पूर्वोक्त गाथा जाणवी तथा एम कह्युं जे द्रव्यथकी व्यवहारे चालीयें पण भावथी उल्लास पामीयें नही तो पण तिहां के० ते गछमां जो कदाचित सर्व क्रिया व्यवहारमां सावधान न होय पण जो मार्गानुसारी शुद्धपरुपक होय अने गुण पक्षपाति होय तेवा मार्गानुसारी जाणीने तेहने भावथी पण अंगीकार करीयें एहवुं वृहत्कल्पभाष्यमांकह्युं छे. यतः ॥ सिढिलोअणायारकउ ॥ चोयणपडिचोयणाइ गुणहीणो ॥ गुणपरककरोगछो ॥ सीलेयवो विभावेण ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥

ज्ञानादिकगुणवंतपरस्पर ॥ उपगारेंआदरवोरे ॥ पंचवस्तु
मांगछसुगुणने ॥ अवरकह्योछेत्यजवोरे ॥ श्रीसी० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली परस्पर कें० माहोमांहे ज्ञानादिकगुणवंत के० ज्ञान दर्शन चारित्र गुणवंत होय वली उपगारे के० उपकारी होय एटले मांहोमांहे कोइनो ज्ञान उपकार कोइनो दर्शन उपकार इत्यादिक उपकारवंत होय तो आदरवो एम श्रीहरिजद्रसूरिकृत पंचवस्तुग्रंथमां कह्युं छे. यतः ॥ मुत्तुणमिहुवयारं ॥ अन्नुन्नगुणादिजाव संबंधं ॥ उत्तमछउत्तुल्लो ॥ वासोउणगछवासोति ॥१॥ ते माटे सुगुण जे गुणवंत होय तेणे पूर्वोक्त ज्ञानादिकना उपकारी गछविना अवर के० बीजो जे गछ ते त्यजवो कह्यो छे ॥ए॥

जेनिरगुणगुणरत्नाकरने ॥ आपसरिखादाखेरे ॥ समकित
साररहिततेजाणो ॥ धर्मदासगणीजाखेरे ॥ श्रीसी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली जे पोते निर्गुणछतां बीजा जे गुणना रत्नाकरके० समुद्र होय तेहने आपके० पोतासरीखा दाखेके० कहे एटले एम कहेजे अमारामां तथा एहुमां शो फेरछे एम गुणी अवगुणीने सरिखाकरे तो ते प्राणी सारके० प्रधान एहवो जे समकित तेथी रहित जाणवो. एरीतें उपदेशमाला मध्ये धर्मदासगणियें कह्युं छे. यतः ॥ गुणहीणोगुणरयणा ॥ यरेसुजोकुणईतुल्लमप्पाणं ॥ सुत्तवस्सीणोयंहीलई ॥ सम्मत्तं कोमलंतस्स ॥ १ ॥ १० ॥

कोइ कहे जे बकुस कुशीला ॥ मूलोत्तर पडिसेवीरे ॥ जगवई
अंगेजाख्या तेथी ॥ अंतवातनविलेवीरे ॥ श्रीसी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एरीतें ग्रंथकारना कहेवा प्रमाणे सर्वथा गुणवंत होय तोज आदरवो एम उख्युं तेउपर शिष्य प्रश्न करेछे के, कोईक एम कहे छे जे बकुस कुशीला के० बकुस चारित्रीया तथा कुशील चारित्रीया ए मूलउत्तरगुणना प्रतिसेवी कह्या छे. पडीसेवी के० प्रतिकूलपणे सेववुं दोष लगाडवो एटले ए जावजे १ पुलाक २ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनातक ए पांच निग्रंथ कह्याछे तेमां बकुस चारित्रीया ते उत्तरगुणना एटले मात्र दशविध पच्चखाणनाज प्रतिसेवी होय तथा कुशील चारित्रीया ते मूलगुणना तथा उत्तरगुणना प्रतिसेवि होय, यद्यपि मूलुत्तर पडिसेवी इहां सामान्ये कह्या तो पण अर्थ पूर्वोक्त रीते करवो केमके पंचनिग्रंथी प्रकरण तथा जगवतीसूत्रमां एरीते छे तेरीते अमें पण अर्थ लख्योछे. यदुक्तं पंचनिग्रंथी प्रकरणे ॥ यतः ॥ मूलुत्तरगुणविसया ॥ पडिसेवासेवएकुशीलोय ॥ उत्तरगुणेसुबउसो ॥ सेसापडिसेवणारहिया ॥ १ ॥ वली जगवती अंगे जाख्या के० कह्याछे तथाच तत्पाठः ॥ बउसेणं पुछा गोयमा पडिसेवएहोक्षा, णो अप्पडिसेवए

होज्ञा यदि पडिसेवएहोज्ञा किंमूलगुणपडिसेवएहोज्ञा उत्तर पुछा ॥ गोयमानोमूलगुणपडिसेवए होज्ञा उत्तरगुण पडिसेवएहोज्ञा इत्यादि तथा पडिसेवणा कुशीलेजहापुलाए एटले पुलाकनेमूलगुण पडिसेवएहोज्ञा उत्तरगुणपडिसेवए होज्ञा एम कह्युंछे माटे कुशील पण मूलोत्तर गुणना पडिसेवी थया इति जगवति सूत्रे सतक (२५) में उद्देसे ६ ठे कह्युं छे तेथी एम ठेखुं जे मूलगुणना प्रतिसेवी थाय तिहां लगे चारित्रीया कह्यां तेथी अमने दोष लागतां छतां पण अमारुं चारित्र कांई जतुं नथी माटे वातनो अंतखेवो नही जाकुं अमने बोलावी अंतशुंछ्योछो इति शिष्य वचनं ॥ ११ ॥

तेमिथ्या निःकारणसेवा ॥ चरणघातीनी जाषीरे ॥ मुनीनेते
हने संजव मात्रें ॥ सत्तमठाणु साखीरे ॥ श्रीसी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे गुरु कहेछे के एम जगवति सूत्रनी साख आपीने जेम तेम प्रतिकुल सेवावालाने जे चारित्र ठरावेछे ते मिथ्या के० खोटुं कहेछे केमके निःकारणसेवा के० कारण विना जे प्रतिकुलपणे सेवा अपवादरूप तेहने मुख्य करीने जे प्रतिसेवा करे ते प्रतिसेवा तो चरणघातीनीजाषी के० चारित्रने घात करनारी कहीछे. यतः ॥ संवरणंमि असुद्धं ॥ दोएहवि गिएहंतदिंत्तगाएहियं ॥ आउरदिठं तेणं तंचेवहियं असंथरणे ॥१॥ इति बृहत्कल्प जाष्ये ॥ ते प्रतिसेवा मुनीने तेहने के० ते मुनीने संजवमात्रें के० लागवा रूप संजव पण उपयोग पूर्वक प्रतिसेवा करे नही कदाचित उपयोग पूर्वक करे तो ते अपवादें करे पण उत्सर्गे नही करे एपण संजवज कहीयें तिहां सत्तमठाणु साखीके० ठाणानामा प्रकरणमां सातमे ठाणे कह्युंछे ते ठाणा प्रकरण माराहाथमां प्राप्त थयुं नथी पण मारा गुरुने वचने जाणुंछुं के ठाणाप्रकरण छे अन्यथा इहां कोइक ठाणांगसूत्र कहेछे पण ते ठाणांग मध्ये ए पाठ जडतो नथी ते माटे गुरुवचन सत्य. इति ज्ञेयं ॥ १२ ॥

पडिसेवा वचने ते जाणो ॥ अतिचार बहुलाईरे ॥ जावबहु
लतायें ते टाले ॥ पंचवस्तु मुनिध्याईरे ॥ श्रीसी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे तिहां पंचवस्तुनी साख लखियेंछेयें गाथा ॥ तेउपडिसेवणाए ॥ अणुलोमाहोतिविअडणाए ॥ अपडिसेवणाविअडणाए ॥ इच्चउरोजवेजंगो ॥ १ ॥ व्याख्या तेतु दोषाः प्रतिसेवनया आसेवनारूपया अनुलोमा जवंत्यनुकूला जवंति विकटनयालोचनयाच प्रतिसेवनायां आलोचनायां च पदद्वये चत्वारो जंगा जवंति तद्यथा प्रतिसेवनया अनुलोमा विकटनया च १ तथा प्रतिसेवनया न विकटनया २ तथा न प्रतिसेवनया विकटनया ३ तथा न प्रतिसेवनया न विकटनयेति ४ गाथार्थ॥ ते चेवतत्थनवरं ॥ पायछित्तंति आहसमयंए ॥ जम्हासइसुहजोगो ॥ कम्मक्खय कारणं जणीउं ॥

॥ २ ॥ व्याख्या ते एवनवरं केवलं समुदानिका अतिचारांश्चिंत्यमानाः संतः तत्र-कायिका दीर्घपथिकायां प्रायश्चित्तमित्येवमाहुः समयज्ञाः सिद्धांतविधः किमिति अ-स्मात्सदासर्वकालमेवसुभयोगः कुसलव्यापारः कर्मक्षयकारणं भणीतस्तीर्थंकरगणध-रैरिति गाथार्थः ॥ ततः किमित्याह गाथा ॥ सुहजोगोयअयंजं ॥ चरणाराहण निमित्तमणु-अंपि ॥ माहोज्जकिंचिखलियं ॥ पेहेइतउवउत्तोवी ॥ ३ ॥ व्याख्या सुभयोगश्चायं सामुदानिकातिचारचिंतनरूपःकथमित्याह यद्यस्माच्चरणाराधननिमित्तं स्खलितं चारित्रपालनार्थं मणुअंपि सुक्ष्ममपिमाभूत् किंतत्स्खलितं प्रेक्ष्यते पर्यालोचयतिततः उपयुक्तोपि भिक्षाग्रहणकाले ॥ इतिगाथार्थ. आ ठेकाणें एज अर्थनी सूचक गाथा ज्ञान-विमलसूरियें टबामां लखी छे ते कहेछे. गाथा ॥ सव्वावियपडिसेवा ॥ उकड्डभावेण होइ सासिढिला ॥ अइयार बाहूलत्तं ॥ पडिसेवा बियपयसेढी ॥१॥ एगाथा पण रुडीछे ए ठेकाणे एहवी गाथा जोइयें पण ए गाथा पंचवस्तु ग्रंथमां जडी नही माटे अमे लखी नही तथा मूलगुण उत्तरगुणना प्रतिकूलपणे सेवी होय ते पडिसेवा वचने के० प्रतिसेवा शब्दें करी जाणो के० जाणवी; एटले मूलगुणमां तथा उत्तरगुणमां अति-चार घणा लागे ते अतिचार भावनी तीव्रतायें करीनें टाले एम पंचवस्तु ग्रंथमां मुनी-ध्यायी के० मुनीराजे अतिचारनी बहुलता ध्यायी भावी छे ॥ १३ ॥

सहसादोषलागेतेबुटे ॥ संयतनेततकालेंरे ॥ पछितेंआ
कुट्टियेंकीधुं ॥ प्रथमअंगनीभालेंरे ॥ श्रीसी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ सहसा के० सहसात्कारें अनाभोग थकी जे दोष लागे ते बुटे, एटले तद्-भव वेदवायोग्य कर्म बांध्युं होय ते बुटे, संयतने के० मुनिराजने ततकालें के० तेज भवमां बुटे इतिभाव. श्री आचारांगे पंचमाध्ययने चतुर्थोद्देशके गाथा ॥ एगयागुणस-मिति ॥ स्सरीयतोकायसंफासमणुचिन्नं ॥ एगतया पाणा उद्दायंति ॥ इहलोग वेद-णवेज्जावडीअ ॥ अस्यार्थ लेशः कदाचित् गुणसमित्त के० गुणसहित अप्रमत मुनिने चालतां थकां काय संफास के० कायस्पर्श थयाथी कोइ जीव हणाणो ॥ तेवारे इहलोके वेदनानो जे वेद्य के० अनुभव तेहने आवडिअं के० पाम्युं एटले आभवें भोगववा योग्य कर्म बंधाय तथा आकुट्टियें के० विना प्रयोजने कारण विना पापकर्म कर्युं ते कर्म पछिते के० दश प्रकारनुं प्रायश्चित्त छे तेमां हरकोइ प्रायश्चित्त आवे एम प्रथम अंगनी भालें के० आचारांगनी भलामण छे. पांचमा अध्ययनना चोथा उद्देशामां जंआ-उट्टीकयं कम्मं ॥ तंपरिन्नाय विवेगमेति इति एतद्वृत्यैकदेशः जंआउट्टि इत्यादियत्तु पुनः कर्माकुट्याकृतसागमोक्तकारणमंतरेणोपेत्यप्राणुपमर्द्दनेन विहितं तत् परिज्ञाय ज्ञा-

परिज्ञया विवेकमेति विविच्यते अनेनेति विवेकः प्रायश्चित्तं दशविधं तस्यान्यतरं भेद-मुपैति तद्विवेकं वा अनावाख्यमुपैतीतितत् करोतियेन कर्मणो अजावो जवतीति ते-कारण माटे पाप जाणीने सेववुं तेहनो महादोष छे इतिजावः ॥-१४ ॥

पायछित्तादिकजावनराखे ॥ दोषकरिनिःसूको रे ॥ निद्धं
धससेढीथीहेठो ॥ तेमारगथीचूको रे ॥श्रीसी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ माटे ते अतिचार सेवीने पण पायछित्तादिक के० विशुद्ध थाय तेवुं गुरु आ-दिक पासेंथी प्रायश्चित्त प्रमुख लेवानो अजिप्राय राखेज नही तो ते प्राणी दोष क-रीने पण निःसूको के० निर्दयी जाणवो. यतः ॥ जोचयइउत्तरगुणे ॥ मूलगुणेविअचिरे णसोचयई ॥ जहजहकुणइपमायं ॥ पीलीजइतहतहकसाएहिं ॥ १ ॥ इत्युपदेश मालायां तथा ते प्राणी निद्धंधस के० गतधर्मा छे एटले प्रवचनरूप धर्मनी हाणी थाय तेहनी अपेक्षा राखे नही ते जीव सेढीथी हेठो के० गुणश्रेणी थकी अधोवर्त्ति अथवा संयमश्रेणी थकी हेठो जाणवो. वली ते प्राणी साधुना मार्गथी चूक्यो एम जाणवुं. यतः अइयारंजोनिसेवि ॥ तापायछित्तंनगिएहए ॥ अणुजुउंयतजावो ॥ निधम्मोसोगणी-यासु ॥ १ ॥ इति श्रीहरिजद्रसूरीकृत संबोधप्रकरणे ॥ १५ ॥

कोईकहेजेपातिककीधां ॥ पडिकमतांछूटीजें रे ॥ तेमिथ्याफ
लपडिकमणानुं ॥ अपुणकरणथीलीजें रे ॥ श्रीसी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वली केटलाक एम कहेछे के जे पाप कस्यां होय ते सर्व पापथी पडिकमतां के० पडिकमणुं करतां छुटीयें ॥ यतः आणाएउंकयं पावं ॥ पडिकमणाउविसुज्झइ ॥ इति वचनात् ॥ पडिकमणं पापहरणं इति लोकोक्तिः एम कहेछे ते मिथ्या के० खोटुं कहेछे केमके फल पडिकमणानुं के० पडिकमणानुं जे फल ते तो अपुणकरणथी लीजे के० फरी अण करवाथी पामीयें एटले पापने पडिकमीने फरी पाप नही करे तोज पडिकमणानुं फलपामे इतिजाव ॥ यतः पुणपावस्सअकरणे ॥ पडिकमणंहोइ जावसारंच ॥ पुणपावाणं करणं ॥ नहुबदवं पडिकमई ॥ १ ॥ इति वचनात् ॥ १६ ॥

मिथ्याडुक्कडदेईपातिक ॥ तेजावेजेसेवे रे ॥ आवश्य
कसांखेतेपरगट ॥ मायामोसनेसेवे रे ॥श्रीसी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटे जे मिथ्या डुक्कड के० मिछामी डुक्कडं देइने वली तेहिज पाप जावें करीने सेवेछे ते प्राणी प्रत्यक्षपणें आवश्यकनी साखे माया मृषाने सेवेछे. शामाटे जे गुरु आदि कने राजी करवाने अर्थें मिछामि डुक्कडंदिए छे पण परमार्थें सुन्य छे ॥ यतः जंडुक्कडंति-

मिन्ना ॥ तंचेवनिसेवेईपुणोपावं पच्चक्कमुसावाइं ॥ मायानियडी पसंगोय ॥१॥ इत्यावश्यके

मूलपदेंपम्किमणुंन्नाख्युं ॥ पापतणुंअणकरवुंरे ॥ सक्ति
न्नावतणेअन्यासे ॥ तेजसअर्थेंवरवुंरे ॥ श्रीसी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ मूलपदें के० उत्सर्गमार्गें अथवा प्रथमथी पडिकमणुं न्नाख्युं के० कह्युं ठे केम कह्युं ठे ते कहेठे के जे पापतणुं अणकरवुं के० पापनुं जे न करवुं तेनुं नाम पडिकमणुं कहीयें. यतः जइयपडिक्कमियवं ॥ अवस्सकाउणपावयं कम्मं ॥ तंचेवन कायवं ॥ तो होइपएपडिकंतो ॥१॥ इति आवश्यके पए के० उत्सर्गपदें अथवा पए के० प्रथमथी पडिकम्या इति ते माटे सक्ति के० शक्तिमाफक न्नावेकरीने अन्यास करे एटले शक्तिन्नावथी अन्यास करे ते पण जश के० जेहने अर्थें पाप अणकरवाने अर्थें वरवुं के० आदरवुं एटले शक्ति अन्यास करे ते पण पठे पाप न करे इति न्नावः अथवा परमार्थें जश ते मोक्ष तेने अर्थें वरवुं के० आदरवुं अने कर्तानुं नाम पण जशविजय ठे ते पण सुचव्युं ॥ १७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ तुंगीयागिरि शिखरसोहे ॥ ए देशी ॥

देवतुऊसिन्धांतमीठो ॥ एकमनेधरिएं ॥ दुष्टआलं
बननिहाली ॥ कहोकेमतरिएं ॥ देवतुऊ० ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥ हवे त्रीजी ढाल कहेठे एने बीजी ढाल सार्थें ए संबंध ठे जे बीजी ढालमां एम कह्युं के पाप न करवुं ते पडिकमणुं. माटे त्रीजी ढालमां कहेठे के पाप शी रीतें न थाय. जो हीणा आलंबन न होय तो पाप न थाय ते कहेठे जे हे देव, हे परमानंद विलासी, तुऊसिद्धांत के० ताहारुंजे आगम स्याद्वादसैलीरूप ते मुऊने अत्यंत मीठुं लागे ठे इतिन्नाव ॥ ते एक मने धरिएं के० एकाग्र चित्तें करी धरी राखीयें अने दुष्ट जे हिणा आलंबन ते निहाली के० जोइने एटले कोइकें कोइ कारणे कांइ विपरीत अंगीकार कर्युं होय ते पोते धारी राखे तो ते धारीने हे सज्जन पुरुषो तमे कहो जे केम के० केवी रीतें संसारसमुद्र तरीयें ॥ १ ॥

दुष्टआलंबनधरेजे ॥ न्नग्नपरिणामि ॥ तेहआव
श्यकेंन्नाख्या ॥ त्यजेमुनीनामि ॥ देवतुऊ० ॥ २ ॥

॥ अर्थ ॥ माटे दुष्ट के० दूषणसहित जे अपवादें साधन होय ते जे कोइ चित्तमां धरे तेतो न्नग्नपरिणामि के० संयम क्रियाथी नाग्या ठे परिणाम जेहना एहवा जे लिं-

गीहोय तेहने आवश्यकने विषे नाख्या के० कह्या छे केवा कह्या छे के मुनिनामि के० मुनि नामना धणी एटले जे मुनीश्वर होय ते तेवा लिंगीने त्यजे के० छांमे ॥२॥

नियतवासविहारचेईय ॥ नक्तिनोधंधो ॥ मूढ अ
ज्जालान्नथापे ॥ विगयपमिबंधो ॥ देव० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे दुष्टआलंबन देखाडवामाटे द्वारबांधेछे ते एक नियतवास विहार के० नित्यवासेविचरवुं एटलेनित्यवासकल्पइतिनाव एकस्थानके रहेवुं एमकेइकस्थापेछे,बीजो चेइयनक्तिनोधंधो एटले चैत्यजेदेरुं तथा जिनप्रतिमा तेनी नक्तिनो धंधो जेकार्य व्यग्रता ते साधुनेकरवो एटलेजिनपूजादिक करवी इतिनाव; वलीत्रीजो मूढ के० मूर्ख ते अज्जालान्नथापेके० आर्यानोलान्नथापेछे एटले साध्वीवोहोरीलावे ते साधुने खपे एमथापेछे; चोथो विगयजे दुधदहीप्रमुख अने कडाविगयनेविषे पडिबंधो के० प्रतिबंध आसंग एटलेविगयनालोलपि तेएमकहेछे के विगयखातां दोषनथी. यतः॥ नीआवासविहारं॥ चेइयनत्तिंचअज्जीयालानं॥ विगईसुअपडिबद्धं॥ निद्दोसंचोइयाबिंत्ति

कहेउग्रविहारनागा ॥ संगमआयरिउ ॥ नियतवा
सन्नजेबहुश्रुत ॥ सुणिउगुणदरिउ ॥ देव० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउग्रविहाररूप द्वार दृष्टांतेकरी देखाडेछे जेकोईक एमकहेछे के उग्रविहारथी थाक्यांथकां संगमआयरिउ के० संगमाचार्य नियतवासनजेके० नित्यवासीपणुंनज्युंछे, तेसंगमाचार्य बहुश्रुतके० ज्ञानी पुरुषहता एवुंअमे सुणिउके० आगममांहेसांनल्युंछे एटले गुणसमुद्र तथाबहुश्रुत एवासंगमाचार्ये नित्यवासकबुलकर्यो तेथी अमे पण जाणीयें छेयें जे एकठामेरहेतांदोष देखातो नथी एमकहीने नित्यवास थापे छे. यतः ॥संगमथेरायरिउ ॥ सुट्ठुतवस्सीतहेवगीयत्थो ॥ पेहित्तागुणदोसं ॥ निंयावासंपवन्नोऊ ॥ १ ॥ इतिवंदनकनिर्युक्तौ ॥ ४ ॥

नजाणेतेखीणजंघा ॥ बलथिविरतेहो ॥ गोचरी
नानागकल्पी ॥ बहुरह्योजेहो ॥ देव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एरीतेजेकहेछे तेनेउत्तर करेछे के जे एमकहेछे तेपुरुषनजाणेके० नथीजाणता एटले नथी गणता जे खीणके० उछुंथयुंहतुं जंघाबलके० जंघानुंबल एटले हिंडवानी शक्ति हतीनही वली थिविरके० घडपणहतुंएवा तेहोके० तेसंगमाचार्यहता तथा उपलक्षणथी दुर्निक्षहतो शिष्यनेविहारकराव्योहतो वलीतेअप्रतिबंधपणे रह्याह

ता, तेपणगौचरीना भाग गाममांकल्पीनेरह्याहता, एटले एकघरेआहारनलेता एवोथ-कोबहु रह्योके० घणुं एकगामे रह्यो जेह्योके० जेसंगमाचार्य ॥यतः॥ उमेसीसपवासं ॥ अप्प-डिबंधअजंगमत्तं च ॥ नगणंतिएगाखित्ते ॥ गणंतिवासंनिययवासी ॥१॥ एटले नित्यवास नकरवो इतिभाव. तेसंगमाचार्यनुं कथानक आवश्यकसूत्रथी जाणवुं ॥ ५ ॥

चैत्यपूजामुक्ति मारग ॥ साधुनेकरवी ॥ जिणे
कीधी वयरमुनिवर ॥ चैत्यवास ठवी ॥ देव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे चैत्यपूजा के० प्रभुपूजा ते मोक्षनोमार्गछे तेमाटे साधुने करवी केमके अमे नकरीयें तो एदेरासरनी संभालकोणकरे, जोमूकीदइयें तोविछेदजाय तेमाटे अमे असंयमअंगीकारकर्युंछे तेउपरदृष्टांतदेखाडेछे के जिणेके० जेकारणमाटे श्रीवयरस्वा-मीआचार्यें पूजाभक्तिकरीछे चैत्यवासके० देहरानेविषे पुष्पादिक ठवीके० थापीने प्र-भुभक्तिकरीछे माटे निर्दोषछे इतिभाव. यतः॥ चइयपूयाकिंवयर ॥ सामीणा मुणियपुव्व-सारेणं ॥ नकयापुरियाइतया ॥ तउमुरकंगसाहुणं ॥१॥ इत्यावश्यके ॥ एक पुष्पादिक लाव्या एटलूंजदेखेछे पण आवांकारणहतां ते देखतानथी ॥ ६ ॥

तीर्थउन्नतिअन्यशासन ॥ मलिनताटाणे ॥ पूर्वअ
विचितपुष्पमहिमा ॥ तेहनविजाणे ॥ देव० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे तिहांतो तीर्थके० जिनशासननी उन्नतिथतिहती वली अन्यशासनके० अन्यतीर्थिनी मलिनताके० मेलाशकरवाने टाणेके० अवसरे तेपण पूर्वअविचितके० पूर्वेपुष्पभक्तारीभेलाकर्यांहतां एवां फूलहतां तेहनो महिमाके० महात्म्यहतुंते नवी-जाणेके० एहवीवातनी जेने खबरनथी तेभूलेछे, एवयरस्वामीनुंचरित्रआवश्यकथीजा-णवुं. यतः ॥ उहावणापरेसिं ॥ सतित्थउज्भावणंचवछलं ॥ नगणंतिगणेमाणा ॥ पुव्व-च्चियपुप्फमहिमंच ॥ ५ ॥ इत्यावश्यके ॥ ७ ॥

चैत्यपूजाकरतसंयत ॥ देवभोईकह्यो ॥ शुभमनेप
णमार्गनाशि ॥ महानिशीथेंलह्यो ॥ देव० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ चैत्यके० जिनप्रतिमातेनीपूजाकरतांथकां संयतके० द्रव्यलिंगीसाधुते देव-भोइके० देवनाद्रव्यनोभोगवनारो कह्योछे, एटलेसंयतनेपूजाकरतां देवद्रव्यनीशंकार-हेनही माटेदेवद्रव्यनोभोगीकहीयें जिनपूजाकरुं, एवापरिणामते शुभमनकहीयें, पण एवीकरणीकरतोथको मार्ग जे जैनमार्गतेनोनाशकरेछे एटलेउन्मार्गे प्रवर्त्तेछे; एरीतेम-हानिशीथसूत्रमां कह्युंछे. तथाचतत्सूत्रं ॥ एवंचणं गोयमा केइअमूणियस समयसभावे

उसन्नविहारीणीयवासीणो अहिपरलोगपच्चवायंसमयती इड्ढीरससायगारवाइसुच्चिपरा-गदोसमोहाहंकारसमीकाराइसुपडीबद्धोकसिण संयमसधम्मंपरम्मुहे निद्दयनित्तिंसनि-ग्घिणअकलुणनिक्किवे पावायरणेक्कनिविठबुद्धी एगंतेणंअइचंदरोद्दकूराभिग्गहिउमिछ-दिठीणो कयसव्वसावज्जजोगपच्चक्खाण विप्पमुक्कासेससमारंभ परिग्गहे तिविहेणंपडि-पुन्न सामाइएयदवताए नभावत्ताएनाम मेतमुंडे अणगारे महव्वयधारी समयाणविभत्ताणं एवंमन्नमाणेसवहाउमग्गं पवत्तंतितहाकिल अम्हे अरहंताणं जगवंताणं गंधमल्लयं दीवसमज्जणोवलेवणे विचित्तवत्थवल्लीधूवाइ एहिं पूयासक्कारेहिं अणुदीय अमज्जवणं पकुवाणा तित्थुन्नपणंकरेमो तंचणोणं तहति गोयम्मासमणुजाणेज्जा सेजयवंकेणं-अठेणं एवंवुच्चइजहाणं तंचणोणं तहतिसमणुजाणिज्जा गोयमानियत्ताणुसारेणं असं-यमबाहुल्लेणं चथूलंकंमासयं थूलंकंमासवाओय अज्जवसायं पडुच्चाथूलोयरसूहासूह कम्मपयडिबंधोसवसावद्यविरयाणंचवयभंगो वएभंगेणंच आणाईक्कम्मो आणाईक-म्मेणंतु उमग्गगामित्तं उमग्गगामितेणंच समग्गपल्लोयणं उमग्गीपवत्तणं समग्गीविप्प-लोयणेणंच मईणंमहतिआसायणा तउअणंत संसारोहिंडणंएएणं अठेणंगोयम्माणो-णंतं तहतिसमणुजाणिज्जा ॥ इत्यादिकमहानिशीथेतृतीयाध्ययने अथवा महानिशी-थेपंचमाध्ययनेपणपाठछे ॥यथा॥ सेजयवंजेणंकेई साहुवा साहूणीवा निग्गंथे अणगारे दव्वत्थयंकुज्जासेणंकिमालाविज्जा गोयम्मा जेणं केईसाहूवासाहूणीवा निग्गंथे अणगारे दव्वत्थयंकुव्वासेणं अजएवा देवजोएइवादेवच्चगेईवाजावण उमग्गपयईएवापुरुज्जियसी-लेईवाकुसीलेईवाआलवेज्जा ॥ इत्यादि ॥ ८ ॥

पुष्टकारणविनामुनिनवि ॥ द्रव्यअधिकारी ॥ चैत्य
पूजायेंनपामे ॥ फलअनधिकारी ॥ देव० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ माटे कोइशासननोउद्योतप्रमुख मोहोटापुष्टकारणविना मुनीश्वरते द्रव्यअ-धिकारीके० द्रव्यस्तवनाअधिकारी नविके० नहोय जेकारणमाटे चैत्यपूजाकरतांसर्वफ-लनपामे केमके अनधिकारीके० जेहनोजेहनेअधिकारनही अनेते करेतो तेहनुं फल नपामे अन्यथा अधिकारीतोफलपामे. यतः ॥ अकसिणपवत्तगाणं ॥ विरयाविरयाणएस-खलुजुत्तो ॥ संसारपयणुकरणे ॥ दव्वत्थएकूवदिठंतो ॥१॥ इतिवचनात् ॥ तेमाटेमुनिने नकरवी ॥ कसीणसंयमविउंपुप्फाइयंनइछति ॥ इतिवचनात् ॥ अनेवयरस्वामीतो कारणे प्रवर्त्या माटे तेने तो पूजा फलवंतजछे ॥ ए ॥

मार्गअखियपुत्तअजा ॥ लाजथीलागा ॥ कहे
निजलाजेंअतृप्ता ॥ गोचरीजागा ॥ देव०॥१०॥

अर्थ ॥ कोइकप्राणी निजलाभेंअतृप्ताके० पोतानेलाभे अतृप्तथका तथा अज्ञा लाभथीलागाके० आर्याने लाभें लग्नछेगृद्धछे वली गोचरीभागाके० गोचरीनाआल- सुछे तेहने कोइकप्रेरणाकरेजे आर्यानोआण्यो आहारकिमकरोछो ते वारे एमकहेजे मार्गेअन्नियपुत्तके० अर्णिकापुत्रनेमार्गें एटले ए भावजे अर्णिकापुत्रेंसाध्वीनोआण्यो आहारलीधोछे तेमार्गें अमेपणलइयेंछेयें; जोदोषहोयतो तेअरणीकापुत्रकेमलीये, माटे आर्यानो आण्योआहारनिर्दोषछे, परवचनंआवश्यके ॥यतः॥ अज्झियलाभेगिद्धा ॥ सए- णलाभेणजेअसंतुट्ठाः ॥ भिक्खायरियाभग्गा ॥ अन्नियपुत्तंचवइसंति ॥ १ ॥ १० ॥

नजाणेगतशिष्यअवमे ॥ थिविरबलहीणो ॥ सुगुण
परिचितसंयतिकृत ॥ पिंडविधिलीणो ॥ देव०॥११॥

अर्थ ॥ हवेजेएमकहेछे तेहनेउपकोदेतांसद्गुनेउपदेशदेछे के जे अरणीकापुत्रनो दृष्टांत आपेछेते नजाणेके० नथीजाणता जे तेअरणीकापुत्र आर्यानोआण्योआहारलेता पण केवाहता जे गतशिष्यके० शिष्यनोसमुदायपासेनहतो वली अवमेके० डुकाल- हतो एटले एभावजें डुकाल जाणी शिष्यनेविहार कराव्यो हतो वली पोतानीपण थिविरके० वृद्धावस्थाहती तथा बलहीणोके० शक्तिहीणहता, गोचरीयेंफरवाने अस- मर्थहता तथाआर्याजेपुष्पचूलानामेसाध्वी तेपण भलागुणनीपरिचयवानहती तेसंय- तिके० साध्वी तेणेकृतके० कर्यो एटले आण्यो एवोजे पिंडके० आहारतेवली विधिके० विधिसहित लीणोके० लीधोछे, तेकारणतोकोइगणतानथी अने केवल आर्यालाभ गवेषे- छे. यतः ॥ अन्नियपुत्तायरिउ ॥ भत्तंपाणंचपुप्फचूलाए ॥ उवणियंभुजतो तेणेवभवेणअंत- घडो ॥१॥ गयसीसगणउमे भिक्खायरियाअपच्चलेथेरं नगणंतिसहाविसढा अज्झियलाभं गवेसंतो ॥२॥ तो सहाविके० सखाइशिष्यादिकछतांपण शठमूर्ख एमकहेछे इतिभाव ११

विगयलेवीनित्यसूजे ॥ लष्टपुष्टभणे ॥ अन्यथा
किमदोषएहनो ॥ उदायननगणे ॥ देव० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे केइक एमकहेछे जे विगयवावरवी निरंतरकल्पे एमपोते लष्टपुष्टथका भणेके० कहेछे, एटले निरंतरविगय वावरतांदोषनथी एवुंबोलनारने कोइक रूडा- साधु उपको आपे के भाई विगयतो साधुने निरंतरलेवीकल्पेनही. यतः ॥ विगई विग- इभीयो ॥ विगईगयंजोउभुंजईसाहु ॥ विगतीविगतीसहावा ॥ विगतीवीगतीबला- नेई ॥ ॥ इतिवचनात्॥ एमकहे तेहनेपाछो आवीरीतेउत्तरआपे जे अन्यथाके० जो विगयवावरतां दोषहोयतो तेउदायनराजऋषीयें केमगण्योनही एटलेएभाव जे विग-

यलेतांदोषहोयतो उदायनरूषियें केमवावरीहती. यतः॥ जत्तंवापाणंवा सुतूणंलावलवि यमविसुद्धं ॥ तोअवज्ञापडिवन्नं ॥ उदायनरिसिववईसंति ॥१॥ इत्यावश्यके ॥ १२ ॥

उदायनराजर्षितनुनवि ॥ सीतलुक्खसहे ॥ तेह
व्रजमांविगयसेवे ॥ सूतेनलहे ॥ देव० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उत्तरकहेछे जे उदायनराजरूषीना तनुके० शरीरनेविषे शीतके० टाढुं अने लुक्खके० लुखुं तेनविके० नथी सहेवातुं एटले राजवीथकां दिक्षालीधीछे अने रोगीष्टशरीरछे तेमाटे सहननथीथातुं इतिजाव. माटे उदायनरूषियें व्रजमांके० श्रीगोकुलमां विगयवावरीछे एहवुं विगयवावरवानुंकारणते मूढ नलहेके० शुंनथी जाणता ए के कोइकारणेविगयवावरी एटले ते ओठुंलेइने पोते वावरनार उजमालथायछे. यतः॥ सीयललुक्खाणुचीयं ॥ वएसुविगईगएणजावित्तं ॥ हठाविन्नणंतिसढा ॥ किमासिउद्दायणोनमुणी ॥ एकथाउंसर्वं आवश्यकवृहत्वृत्तियें वंदनावश्यकेछे ॥ १३ ॥

लोकआलंबनेजरिउं ॥ जनअसंयतने ॥ तेह
जगमांकांइदेखे ॥ धरेतेहमने ॥ देव० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एम लोकके० मनुष्यलोकतो आलंबनेजर्योछे. बाल, वृद्ध, सूत्र, अर्थ, द्रव्यादिक आपद प्रमुख आलंबनकरे. जेमहुंबालकछुं, अथवावृद्धछुं तेमज सूत्रजणुंछुं, अर्थजणुंछुं, आद्रव्यदोहिलुंछे अथवाआक्षेत्रनानुंछे हमणादुर्भिक्षादिकछे तथाहुं आजारीछुं इत्यादिकनिआपदकरीने पडेआलंबनखोले. यतः ॥ सुत्तछबालवुछे असहुंदवाइआवइओय ॥ निस्साणपयंकाउं ॥ संथरमाणाविसीयंति ॥ १ ॥ इत्यावश्यकेएमअसंयतने आलंबनेजेजर्योछे तेहवाअयत्नायेंचालवानीइछाकरनारजननेआलंबनघणाछे तेप्राणी जगतमां जेकांइ नियतवासादिकदेखेते मनेके०मनमांहे धरेके० धारीराखे, अनेकोइपुछे त्यारे तेहदृष्टांतदेखाडे इतिजावः॥यतः॥ आलंबणाणलोगो॥जरिओजीवस्सअज्ञाउकामस्स ॥जंजंपिछईलोए ॥ तंतंआलंबणंकुणइ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ १४ ॥

शिथिलआलंबनगहेमुनी ॥ मंदसंवेगी ॥ संयता
लंबनसुजसगुण ॥ तीव्रसंवेगी ॥ देव० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेजे मंदसंवेगीके० अल्पसंवेगवंतमुनिहोय तेशिथिलविहारीना ओठां लेछे जेममथुरामां मंगुआचार्य सुगालमां पण एकठामेरह्या प्रतिबंधतज्योनही पासत्थाथया तेमाटे एमकरतांपण प्रजुयेंधर्मदीठो एमजणायछे ॥ गाथा ॥ जेजछजयाजइया बहुसुआचरणं करपन्नठा॥ जंतेसमायरंति।आलंबणं मंदसद्धाणं॥इत्यावश्यके तथा तीव्रसंवेगी

के० आकारावैराग्यवंततेतो संयतालंबनके० संयतमुनिराज तेमनुं आलंबनकरे जे अमुक मुनिराजे भिक्षुकप्रतिमावही तथाअमुकमुनिराजे उपसर्गपरिसहसहनकस्या तोहुंपणते-वा सहनकरुं अथवातपकरुं एवीरीतेकरतां सुजसगुणके० भलाजसनोगुणवधारे ॥ गाथा ॥ जेजगजयाजश्या ॥ बहुसुआचरणकरणमाउत्ता ॥ जंतेसमायरंती ॥ आलंबणतीवस-ह्लाणं ॥ १ ॥ इत्यावश्यके एढालमांघणोवंदनकनिर्युक्तिनोअधिकारछे एत्रीजीढालमां एमकह्युंजे हीणाआलंबनलेइने पोतेहीणाचारीथाय पछेजेपोतेहीणाचारीहोय तेशुद्धा-चारीनां छिद्रकाढे तेवातचोथीढालमांकहेछे ॥ १५ ॥

॥ ढालचोथी ॥

प्रभुपार्श्वनुं मुखडुंजोतां ॥ नवनवनांपातिकखोतां ॥ एदेशी ॥

सुणजोसीमंधरस्वामी ॥ वलीएककहुंसिरनामी ॥
मारगकरतानेप्रेरे ॥ दूर्जनजेदूषणदेरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे हेश्रीमंधरसाहेबतुमे सुणजोके० अवधारजो वलीके० पूर्वेकही तेथी बीजीवात ए कहुंछुं सिरनामीके० मस्तकवडेतमने नमस्कारकरीने जेशुद्धमार्गना कर-ताके० पालता एवाने प्रेरेके० उदीरे एवाजे दुर्जनके० खलपुरुषछिद्रान्वेषीछे ते दूष-णदेरेके० पारका अछता दूषणजूए ॥ १ ॥

कहेनिजसाखेव्रतपालो ॥ पिणधर्मदेशनाटालो ॥
जनमेल्यानुंसुंकाम ॥ बहुबोल्युंनिंदाठाम ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेएमकहेछे जेपोतानीसाखेव्रतपालो अनेधर्मकरो पण लोकभेलाकरीने धर्मदेशना आपवानुंशुंकामछे माटे एवातनेटालो एमउपदेशकरी लोकभेलाकस्यानुं शुंकामछे केमके घणुं बोलतां कोइअवसरे निंदानुं स्थानक पणथाय ॥ २ ॥

एमकहेतांमारगगोपे ॥ खोटुंदूषणआरोपे ॥
जेनिर्भयमारगबोले ॥ तेकह्योद्वीपनेतोले ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एवीरीतना बोलनाराते मार्गगोपेके० शुद्धमार्गने उलवेछे खोटुंदूषणके० खो-टादूषणनोआरोपकरेछे केमके जेप्राणी निर्भयके० कोइनोभयनराखे अनेशुद्धमा-र्गभाषे ते द्वीपनेतोले शास्त्रमां कह्योछे ॥ उक्तंच ॥ जोसम्मंजिणमग्गं ॥ पयासएनिप्प-एणिरासंसो ॥ सोभवाणजणाणं ॥ दीवसमोभवस्ससमुद्दंमि ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥

अज्ञानीगारवरसिया ॥ जेजनछेकुमतेंग्रसीया ॥
तेहनोकुणटालणहार ॥ विणधर्मदेशनासार ॥४॥

अर्थ ॥ जे अज्ञानिके० मिथ्याज्ञानीहोय अथवा गारवरसियाके० ऋद्धिगारव, रस गारव, शातागारवमांहे मग्नथयाहोय वली जेप्राणी कुमतेंग्रसियाके० कदाग्रहेंकुग्रह्मायें ग्रसायीरह्याछे एटलेअन्यअन्यदर्शनना आग्रहवंतछे इत्यादिकनी कुमति ते सारके० प्रधानएहवीजे धर्मदेशना तेदीधाविनातेओनी कुमतीने बीजो कोणटालणहारछे अने सारधर्मदेशनाविना कुमार्गसुमार्गनी शीखबरपडे ॥ ४ ॥

गीतारथजयणावंत ॥ नवजीरुजेहमहंत ॥ तस
वयणेलोकेंतरीयें ॥ जेमप्रवहणथीजरदरीयें ॥५॥

अर्थ ॥ हवे ते देशनाकेवापुरुषआपे तेकहेछे जे गीतार्थहोय ॥ गाथा॥ गीयंजण इसुत्तं ॥ अछोतस्सेवहोश्वखाणं ॥ उजएणयसंजुत्तो ॥ सोगीयछोमुणेयव्वो ॥ १ ॥ तथाजयणावंत एटले छकायनारक्षकहोय वली नवजीरुके० संसारनीबीकराखनारहोय के रखेखोटुंबोलीजवाय, खोटुंबोलीयेतो संसारवधे अने महंतके० महोटाहोय एटले गुणेगिरुआहोय तेवाउत्तमपुरुषोनांवचनथकी लोकमांथीतरीयें जेमजरसमुद्रमां प्रवहणके० जहाजथी पारपामीयें तेमगीतार्थनी देशनायें संसारसमुद्रथीतरीयें ॥ ५ ॥

बीजोतोबोलीबोले ॥ सुंकीजेनिर्गुणटोले ॥ जा
षाकुशीलनोलेखो ॥ जनमहानिशीथेंदेखो ॥ ६ ॥

अर्थ॥हवे जे गीतार्थविनाडाहीडाहीवातोकरेछे तेने शीखामण आपेछेके गीतार्थविना जेबीजो तेतोबोलीनेके० देशनाप्रमुखआपीने श्रोतानेसंसारसमुद्रमां बोले के० बुडाडेछे माटेएवा निर्गुणटोलानेशुंकरीयें गीतार्थविनाघणुंटोलुंमल्युंहोय पणतेशाकामनुं? केमके जेअगीतार्थछे तेघणुंबोले उन्मार्गप्ररुपेतोतेहने जाषाकुशीलने लेखेजाणवा. जनके० हेजन हेलोक (एमलोकीकजाषाछेतेथीएकवचनछेमाटेएमकहेवुंजे) हेलोको एवात महानिशीथसूत्रमां देखोके० जुर्छ॥यथा॥ कुसीलोसन्नपासछो॥सछंदेसबले तहादिठी ॥ एवइमेपंच ॥ गोयमाननिरिक्कए ॥ १ ॥ पंचेएसुमहापावे ॥ जोनवजीङ्गगोयमा ॥ संलावाइकुसीलेहिं ॥ जमीहिसोसुमईजहा ॥ इतिमहानिशीथे ॥ एमां एम कह्युंजे पासछादिकपांचनेजेनवरजे तेमां. संलापकुशीलादिकदोषआवे अनेतेदोषथीसुमतिनीपरेंसंसारजमे ॥ तथा ॥ तहाजिणाकुसीले सेणं अणेगहा तित्त कडुअ कसाय महुराई लवणाई रसाई आसायंते अदिठासुयाई इयपरलोगोजयविरुद्धाई सदोसाई मयारजयारुच्चारणाई अवसंप्पखाणं संताणिछेगाई वाजयंते असमयन्नुधम्मदेसणावत्तणाणय

जिण्णा कुसीलेणेए सेजयवं किंजासाए विजासाए कुसीलत्तंजवइ गोयमाजवइसेजयवं जइएवं ताधम्मदेसणंनकायव्वं गोयमा सावज्जाणंच ज्ञाणं वयणाणंजोनजाणइ विसेसं वुत्तुपि तस्सनखमंकिमंगपुणदेशणंकाऊ इतिमहानिशीथे ॥ ६ ॥

जनमेलननीनहीईहा ॥ मुनिजाषेमारगनीरीहा ॥
जोबहुजनसुणवाआवे ॥ तोलाजधर्मनोपावे ॥७॥

अर्थ ॥ जनमेलनके० लोकनेलाकरवानी नहीईहाके० इछातोनथी पणधर्मनी प्राप्ति जाणीने लोकआवीबेसेछे तेनेमुनीश्वर जैनमार्गजाषे पणनिरीहाके० आशारहितथकाक हे पणकोडीमात्रनीआशानराखे अनेयशतथा माननी इछानराखे. एरीतेंधर्मदेशनादेतां कदाचित् घणा लोक सांजलवाआवे तोधर्मनोलाजघणोथाय घणालोक धर्मपामे संसारतरे ॥ ७ ॥

तेहनेजोमारगनजाषे ॥ तोअंतरायफलचाखे ॥
मुनिशक्तिछतीनविगोपे ॥ वारेतेहनेश्रुतकोपे ॥८॥

अर्थ ॥ तथा जेलोकधर्मसांजलवाआव्या तेहनेधर्ममारग नजाषेके० नसंजलावे तो ते मुनियें ज्ञाननोअंतरायकस्यो तथा विघ्न कर्युं तेहनांफल चाखेके० जोगवे एटले ज्ञानावरणीकर्मबांधे॥ गाथा ॥ अन्नाणीवस्काणंकरेइ ॥ जोतस्सहोइपावफलं ॥ नाणीविजोनजासइ ॥ सोलहइनाणविग्धंखु ॥ १ ॥ इतिहितोपदेशमालायां ॥ तेमाटे मुनिमां जोदेशनाआपवानी छतिशक्तिहोय तोगोपवेनही अथवा देशनाआपतोथको थाके नही तथा धर्मदेशनादेतायकाने जे वारेछे नाकहेछे तेप्राणीने श्रुतकोपेके० जवांतरे ज्ञानावरणीबांध्युंहोय ते उदयथाय अज्ञानपणुंआवे एटले श्रुतकोप्युं ॥ ८ ॥

नविनिंदामारगकहेतां ॥ समपरिणामेंगहगहतां ॥
मुनिअद्दचरितमनरंगे ॥ जोईबीजेंबीजेअंगे ॥९॥

अर्थ ॥ एटलेशुद्धमार्गकहेतांनिंदानथी केमके देशनातेज्ञाननोहेतुछे समपरिणामेंके० रागद्वेषरहितपणे एटलेकोइऊपररागद्वेषनकरे अनेकोइनुं नामलेइ तेनाअवरणवाद नबोले एरीते गहगहतांके० हर्षपामीजाषें एमआर्द्रकुमारनुंचरित्र बीजुंअंगश्रीसुयडांगसूत्रना बीजाश्रुतस्कंदे छठाअध्ययने जोइलेजो ॥ यथा ॥ इमंवयंतंतुमं पाउकुव्वं।पावाईणो गरिहसिसव्वमेव ॥ पावाईणो पुढोपुढो किट्टयंता॥सयंसयंदिठी करे-

तिपाउं ॥ १ ॥ तथ्यन्नमन्नस्सगरहमाणा ॥ अरकंतिउसमणामाहणाय ॥ सतोय अत्थी-असतो अनत्थी ॥ गरहामोदिठ्ठीनगरहामो किंचि ॥ २ ॥ नकिंचि रूवेणमचिधार-यामो॥सदिठ्ठिमग्गंतुकरेमिपाउं इत्यादिकअधिकार मननेरंगेकरीनेजोजो ॥ ए ॥

कोईजाषेंनवीसमजावो ॥ श्रावकनेगूढाभावो ॥
तेजुठकह्यालध्ठा ॥ श्रावकसूत्रेंगहियठा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीकोइकएमकहेछे जे श्रावकने गूढाभावोके० सूक्ष्मअर्थशुंसमजावो छो एनहीसमजावो जोतमेसमजावशोतो सर्वनेपूछताफरशे सामाआपणांछिद्रजोशे एवी रीते जेकहेछे तेजुठुंकहेछे केमके श्रावकनेतो श्रीभगवतिसूत्रमध्येलद्धठा, गहियठा, पुछीयठा, अभिगयठा, विणिछियठा इत्यादिकपाठकह्योछे माटेजोश्रावकनेगूढअर्थन-समजाव्याहोय तोएपाठकेमकह्योछे इतिभाव ॥ १० ॥

कहेकोईनवीसिजोमी ॥ श्रुतमांनहीकाईखोमी ॥ तेमि
थ्याउध्दतभावा ॥ श्रुतजलधिप्रवेशेंनावा ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाक असमंजस एमबोलेछे के नवीसीजोडीके० नवाग्रंथ अथवा स्तवन सझाय जोडवानुं शुंकामछे केमके श्रुतके० सिद्धांतमांतोकांइखोडनथी एटले सिद्धांतमांछे तेकरतांतमे अधिकशुंकहेशो एवुंकहेछे तेपण मिथ्याके० खोटुं कहेछे कारणके सिद्धांतमांथी उद्धरीनेजेग्रंथकर्याछे तेभावछे ते श्रुतजलधिके० श्रुतरूपस-मुद्रमां प्रवेशकरवाने नावासरिखाछे एटलेसमुद्रमां जोनावाहोय तोप्रवेशथाय तेमज सिद्धांतरूपसमुद्रमांपण जो एग्रंथप्रकरणरूपीनावडांहोय तोजप्रवेशथाय ॥ ११ ॥

पूरवसूरीयेंकीधी ॥ तेणेजोनविकरवीसिध्धी ॥
तोसर्वेकीधोधर्म ॥ नवीकरवोजोयोमर्म ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एवुंसांभली वली प्रतिवादीबोल्याके तो पूर्वाचार्येंजे जोडीकीधीछे तेहज भणो तेणेके० तेमाटे जोनवीकरवीसिद्धिके० नवीजोडीनकरवी एमवातसिद्धथई एटलेनवाप्रकरणप्रमुखजोडवानही एमसिद्धथयुं एवुंबोलनारने उत्तरकहेछेके तो पू-र्वेसर्वेउत्तमजीवोथया तेणेसर्वेधर्मकर्याछे तेमाटे तमेवलीधर्म शुंकरवाकरोछो, तमने पणनकरवो केमके पूर्वाचार्येंजोडीकरीछे माटेआपणेनकरवी तोपूर्वेधर्मपणघणाजी-वेंकर्योछे माटेआपणेनकरवो ए मर्मके० एभाव ॥ १२ ॥

पूरवबुधनेबहुमाने ॥ निजशक्तिमारगग्याने ॥ गुरु
कुलवासीनेजोडी ॥ युगतिएहमांनहीखोडी ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ माटे जोग्रंथनोजोडनार आवोथइनेनवाग्रंथजोडे तोतेमांकांइदोषनथी पूरवबुधनेबहुमानेके० पूर्वपंडितगीतार्थथया तेहनुंबहुमानकरेजेपूर्वाचार्यआगलेंहुंते शाहीसाबमांहुं पणतेनुंवचनखंडेनहीतथापोतानी शक्तिप्रमाणेयोजनाकरे पण अधिकयोजनानकरे जोअधिकयोजनाकरे तोकोइकठेकाणेखोटुंआवीजाय माटे शक्तिप्रमाणे जोडे वलीमार्गग्यानेके० जैनमार्गनुंज्ञानचोखुंनिर्मलहोयतोजोडे वली गुरुकुलवासीहोय तेसंप्रदायशुद्धजाणे तेवारेंयथार्थजोडाय एवापुरुषेजोडवुं युक्त घटमानछे एहमांकांइखोडीके० हाणीनथी ॥ १३ ॥

एमश्रुतनोनहीउछेद ॥ एतो एकदेशनोभेद ॥
एअर्थसुणिउल्लासें ॥ जविवरतेश्रुतअभ्यासें ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीते नवीजोडीकरतां श्रुतज्ञाननो उछेदनथीथातो पणश्रुतवृद्धिथायछे एतोएकदेशेंभेदछे एटले ग्रंथनामेभेदछे पण आत्यंतिकभेदनथी वली एग्रंथनोजे अर्थके० भावते उल्लासेंके० हर्षे सांभलीने भव्यप्राणीते श्रुतज्ञानभणवाना अभ्यासमां वर्त्ते केमके तेहनामनमांहे एमउपजेके आग्रंथमां आटलीवातकहीछे तो सिद्धांतमां तोघणासूक्ष्मभावकह्याहशे तेसारुवधारेभणवानो अभ्यासकरे माटेनवीजोडीकरवी ते सिद्धांतनीवृद्धिकरेछे पण उछेदकरतीनथी इतिभावः ॥ १४ ॥

इहांदूषणएककहाय ॥ जेखलनेपीडाथाय ॥ तोपण
एनवीछोडीजें ॥ जोसज्जनसुखदीजें ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांएकदूषणकहेवायछे तेआवीरीतेके पंडितलोकजेग्रंथकरेछे तेथीपंडितनो यशवादबोलायछे तेजेखललोकहोयतेथीखमातुंनथी माटे ते खललोकोने पीडा थायछे तोपणएनवीजोडीकरवी ते नवीछोडीजेके० नमूकीयें जोसज्जनपुरुषने सुखआपीयें तोनवाग्रंथजोडताजजइयें पणथाकियेंनहीइत्यादिभावः ॥ १५ ॥

तेपुण्येहोसेतोष ॥ तेहनेपणइमनहीदोष ॥ उज
मतांहीयडेहीसी ॥ जोइलीजेंपेहेलीवीसी ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ते नवाग्रंथजोडतां पुण्यथाशे तेपुण्येकरीने सज्जनलोकोने संतोषउपजशे इहां सज्जनपदवहारथीलइयें तथा तेहनेपणके० तेखललोकोनेपण एमदोषनथी एटलेतेने पणपीडानथाय. केवीरीतेनथायके जो उजमतांके०उद्यमकरीने हीयडेहीसीके०हृदयमां हर्षपामीने एअर्थ प्रथमवीसीमां हरिभद्रसूरियेंकह्युंछे तेजोइ लेजो॥यतः॥इक्कोपुण्णहोइ-

दोसो॥जंजायइखलजणस्सपिडत्ति ॥ तह्विपयट्टोइह्नं॥दिहुंसुयणाणअइत्तोसं॥१॥तत्तोचि यजंकुसलं ॥ तत्तोतिसिंपिहोइनहुपीडा ॥ सुद्धासयापवित्ति ॥ सबेनिदोसियाजणिया ॥२॥

कहेकोईकजूदीरीतें ॥ मुनिभिक्षा...तें ॥ तेजू
ठुंशुभमतिईहे ॥ मुनिअंतरायथीबीहे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वलीकोईकतो जूदीजरीतेंकहेछे जे देशनादेवानीनाकहीयेंछेयें तेहनोआ शय एछे जेमुनीदेशनादेतां अमारीभीक्षाजांगोछे कारणकेतमे एवोमार्गप्ररुपोजेथकी अ- मनेभिक्षाकोइआपेनही ते भीतीकेंबीकनेमाटे देशनादेवानी नाकहीयेंछेयें तेजुठुंके॰ एमबोलनारापण खोटुंकहेछे केमके जेयथार्थदेशनाआपनारमुनिछे तेशुभमतिने ईहेके॰ वांछेछे एटले उत्तरोत्तर शुभ अध्यवसायराखनाराछे तो ते एह्वा मुनिराज तो अंत- रायथीबीहेछे के जोकोईने अंतरायपाडीशुं तोपोतानेअंतरायकर्मबंधाशे तो एवामुनि बीजानी भिक्षाकेमभांजे ॥ इतिभावः ॥ १७ ॥

जेजनछेअतिपरिणामी ॥ वलीजेहनहीपरणामी ॥
तेहनेनितेंसमजावे ॥ गुरुकल्पवचनमनभावे ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ माटे जे लोक अतिपरणामीछे एटले एकनिश्चेंमार्गज आदर्योछे ते पोतेज आ स्तवनमां आगलकेहेशे जे–भेदलवजाणतांकेइमारगतजे ॥ होयअतिपरिणतिपर- समयथितिभजे ॥ वली केटलाकलोकते नहीपरणामीकें॰केवल व्यवहारनेज आदरेछे तेक्रियाव्यवहारमांराता पणनिश्चेंमार्गजाणताजनथी तेपण पोतेजआस्तवनमांआगल- कहेशे केइनवीभेदजाणेअपरिणतमती ॥शुद्धनयअतिहिगंभीरछेतेवती॥ एवचनथीतो एमजाणीयेंछेयेंजे अतिपरिणतिते निश्चयवादी अने अपारणतिते व्यवहारवादी तथा विशेषावश्यकमध्ये तो वृत्तिकारेंएमलख्युंछे जे इहशिष्यास्त्रिविधास्तद्यथा अपरिणामा अतिपरिणामाः परिणामाश्चेति तत्राऽविपुलमतयोऽगीतार्था अपरिणतजिनमतरहस्या अपरिणामाः अतिपरिणामा अतिव्याप्तापवाददृष्टयोऽतिपरिणामाःसम्यक्परिणतजिन- वचनास्तुमध्यस्थवृत्तयःपरिणामाः तत्रयेअपरिणामास्तेनयानांयः स्वस्वआत्मीयआत्मी- यविषयो ज्ञानमेवश्रेयः क्रियावाश्रेय इत्यादिकस्तमश्रद्धानाः येत्वतिपरिणामाः तेपि- यदेवैकेननये क्रियादिकं वस्तुप्रोक्तं तदेतन्मात्रं प्रमाणतया गृह्णंत इत्यादिकलख्युंछे इहांतो पूर्वोक्तअर्थपणलागेछे तथा महाभाष्योक्तअर्थ पणलागेछे वलीविशेषें बहुश्रुत- कहेतेखरूं इतिभावः एहवाअतिपरिणामी तथा नही परिणामी जे लोकछे तेहने नि- तेंके॰न्यायमार्गे स्याद्वादमार्गेदेखाडी गुरुसमजावेछे अथवा नितेके॰निरंतरदेशनायेंक-

रीसमजावेछे तेकोणसमजावेछे गुरूके०गुरूसमजावेछे एमबृहत्कल्पभाष्यमांवचनछे ते मनमांभावीनेंकहेछे ॥यतः॥ अइपरिणइअपरिणई॥ दुण्हंविमग्गंजणोपणासंति ॥ तं-ह्मादेसणमाइरकई ॥ सुहगुरूमग्गरक्कठा ॥ १ ॥ १८ ॥

खलवयणगणोकुणसूरा ॥ जेकाढेपयमांपूरा ॥ तुज
सेवामांजोरहीयें ॥ तोप्रभुजशलीलालहीयें ॥ १९ ॥

अर्थ॥तेमाटे देशनान देवी विगेरे खललोकनां वचनने कोणशूरवीरपुरुष गणेके०कोण-खात्रमांआणे एटलेशूरवीरतेंनेगणतीमांआणताजनथी.जे खलपुरुषछे तेपयके०दूधमांथी पण पूराकाढेछे माटेजेदेशनागुणकारीछे तेहनेअहितकारी कहेछे तो हे प्रभुजी तेहनां वचन लेखामांगणीयेंनही अने तुजसेवामांरहीयेंके० तमारीआज्ञापालीयें एटलेतमारी आज्ञाएवीरीतेंछे जे देशनाआपतां लाभजथायछे माटेदेशनाआपवीए आज्ञा पालनरूप तमारीसेवाछे तेसेवामांजोरहियें तो जशलीलापामीयें. प्रभुपद संबोधनकरी आगलसंबं धकर्योछे अथवा प्रभुतानोयशतेहनीलीलापामीयें इतिभावः ॥१९॥ एचोथीढालनेविषे खललोके गुणवंतनेदूषणदीधा तेहनासमाधानकर्या. हवे पांचमीढालमां खललोकनिर्गु-णीछतां पोतानाआत्माने गुणकारीमानेछे तेनेदोष दीयेछे तेसंबंधेपांचमीढालकहेछे ॥१९॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ रागरामग्री ॥ मंत्रीकहेएकराजसभामां॥ एदेशी ॥
विषमकालनेजोरेंकेई ॥ उठ्याजडमलधारीरे ॥ गुरुगछछोमी
मारगलोपी ॥ कहेअमेंउग्रविहारीरे ॥ १ ॥ श्रीजिनतुंआलं
बनजगने ॥ तुजविणकवणआधारोरे ॥ भगतलोकनेकुम
तिजलधिथी ॥ बांहिग्रहिनेतारोरे ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ॥विषमकालनेजोरेंके०पांचमोआरो तथा हुंडाअवसर्प्पिणीकालनेजोरे केटलाए-क उठ्याके०प्रगटथया जडके०मूर्ख वली मलधारीके०बाह्यशरीरेपणमेला अनेअंतरंगपाप-मेलेकरी मलीनथयेला माटेमेलनाधरनाराकह्या एटलेएभावजे एढालप्राएढुंढीआ लुंका-आश्रीछे पडीबीजाजीवोनेपण शिखामणदाखलछे.हवेते ढुंढीआओने माथेगुरुनथी माटे एमकह्युंजेउठ्याजडमलधारी॥ उक्तंचवंगचूलिकायां॥श्रुतहीलनाअध्ययने विक्रमकाला-उपन्नरसय ॥ पणहत्तरीवासेसुगएसुकोइंडी ॥ अपरिग्गहिवंतरी यहावाउभारहेवासे॥१॥ सूयहीलणा जिणपडिमा॥भत्तिनिसहे कारयासछंदाचारा ॥ इमेहा मलिणाडुग्गइगमि-णि॥ बहवेभिरकायरासमुप्पजिहितित्ति ॥ एटले गुरुने तथागछनेछांडी मारगलोपीके०

उन्मार्गप्ररूपीने तथा तेमने कोइपुछे तेनेएमउत्तरआपे जे अमे उग्रविहारना करनारछीए तथा अमेअद्भुतमार्गपाम्याछैयें माटे श्रीजिनके०बाह्यअभ्यंतरलक्ष्मीयुक्त एहवाहेजिनराज तुंज जगतने आलंबनके०आधारछे पण हे प्रभुतमाराविना बीजोकोणआधारछे तमेतमाराभक्तिनाकरनारा जे भक्तलोकछे तेहने कुमतिरूप जलधिके०समुद्र तेथकी बांहिग्रहीने तारोके०पारऊतारो एटले नवनवाकदाग्रहउपजतावारो ॥ २ ॥

गीतारथविणभूलाभमता ॥ कष्टकरेअभिमानेरे ॥ प्रायें
गंठीलगेंनवीआव्या ॥ तेखूताअज्ञानेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेते मूर्खलोक गीतार्थविनाभूलाजभमेछे अहंकारेंकरीजेपोतानोएकमत पकड्यो तेहनाअभिमानेकरी लोच,भिक्षा, उघाडुंमाथुं, उघाडापग इत्यादिककष्टकरता फरेछे, पणप्रायें एमजाणीयेंछैयेंजे तेलोक गंठीलगेंपणआव्यानथी एटलेगंठीभेदपणनथीकर्यो तोसमकितनीवाततोवेगलीछे तेप्राणीअज्ञानने विषेजखूता छे केमके गुरुआणाविनाछेमाटेइतिभावः ॥ ३ ॥

तेहकहेगुरुगछगीतारथ ॥ प्रतिबंधेशुंकीजेंरे ॥ दर्शन
ज्ञानचरितआदरियें ॥ आपेंआपतरीजेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीते पोतानुंएकाकीपणुं थापवामाटे एमकहेछे जे गुरुनोप्रतिबंध गीतार्थनोप्रतिबंध तथागछनोप्रतिबंध राखी तेप्रतिबंधेशुंकरियें केमके प्रतिबंधतेतो दुःखनोहेतुछे माटेप्रतिबंधकोइसाथेनकरवो मात्र दर्शन ज्ञान चारित्र ए रत्नत्रयी आदरीयें बीजोकोइकोइने तारणहारनथी आपेआपतरीजेके०पोतेपोतानीमेलेतरीयें ॥यतः॥ अप्पानईवेयरणी ॥ अप्पामेकुडसामलि ॥ इतिवचनात् ॥ ४ ॥

नवीजाणेतेप्रथमअंगमां ॥ आदिगुरुकुलवासोरे ॥ कह्यो
नतेविणचरणविचारो ॥ पंचाशकनयखासोरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेएनेउत्तरआपेछे के ते एमनथी जाणताजे प्रथमअंगमां श्रीआचारांग सूत्रनी आदिके०धुरें गुरुकुलवासोके०गुरुकुलवासकह्योछे ॥ यतः ॥ सूयंमेआऊसंतेणं ॥ भगवयाएवमरकायं एमएसूत्रमांहेकह्युंजे सूयंके०सांभल्युं मेके०सुधर्मास्वामी जंबूप्रतें कहेछे के में एम सांभल्युंछे साक्षात् पणकरणाघाटेनही आऊसंतेणंके०आमृशता भगवान वीरना चरणउंलासताथकां सांभल्युं एवचनेकरीने सुधर्मास्वामीयें एमबताव्युं जे गुरुकुलवासेंवसवुं इतिभाव नके०नही तेविणके०तेगुरुकुलवासविना चरणके०चारित्र एम

विचारोके०चिंतनकरो एटलेएभावजे गुरुकुलवासविनाचारित्रनहोय एमपंचाशकमांहे श्रीहरिभद्रसूरियें खासोके०उत्तम नयके०न्यायकह्योछे ॥यतः॥दंसणनाणचरित्तं ॥ गुरुकुलवासंमिसंगयंभणियं ॥ अगुरुकुलवासियाणं ॥ दुप्पडिलंभंखुत्तिएवमवि ॥१॥ तथा सिद्धांतमांपणपिंडविशुद्धें चारित्रनी शुद्धिकहेवायछे तेपिंडविशुद्धितो जो गुरुकुलवासहोय तोथाय तेमाटे गुरुकुलवासविना चारित्रनहीं ॥ यतः ॥ पिंडंअसोहयंतो ॥ अचरित्तीइ-छसंसउनत्थी ॥ चारित्तंमिअसंते ॥ सव्वादिक्खानिरछिया ॥ ११ ॥ इति ॥ ५ ॥

नित्येंगुरुकुलवासेंवसवुं ॥ उत्तराध्ययनेभाख्युंरे ॥ तेहनेअप
मानेवलीतेहमां ॥ पापश्रमणपणुंदाख्युंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली निरंतरगुरुकुलवासें वसवुं एम श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनाअग्यारमाअध्ययनेकह्युं छे यतः वसेगुरुकुलेनिच्चं ॥ जोगवउवहाणवं ॥ पियंकरेपियंवाई ॥ सेसिक्खंलद्धुमरीहई ॥१॥ इति वली तेहनेके०तेगुरुनेअपमानेके०अवज्ञाकरेतोतेहनेवलीतेहमांके०तेउत्तराध्ययनना सत्तरमापापश्रमणियअध्ययनमध्येज पापश्रमणपणुंदेखाड्युंछे एटलेगुरुआदिकनी निंदाकरतोहोयतो तेहनेपापश्रमणकहीयें ॥यतः॥ आयरियउवज्झायाणं ॥ सम्मंनपडितप्पई ॥ अप्पडिपूयंएथडे ॥ पावसमणित्तिवुच्चई ॥ १ ॥ तेमाटेगुरुकुलेरहेवुं

दसवैकालिकगुरुशुश्रूषा ॥ तसनिंदाफलदाख्यारे ॥ आवंतिमां
द्रहसमसदगुरु ॥ मुनिकुलमछसमभाख्यारे ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीदशवैकालिकसूत्रनेविषे नवमाध्ययने गुरुनी शुश्रूषाके०सेवाकरवी तेसेवानां फल घणांकह्यांछे ॥ काव्य ॥ आयरियग्गिमिवाहियग्गी ॥ सुस्सूसमाणोपडिजागरेज्जा ॥ आलोइयंगीयमेवनच्चा ॥ जोछंदमाराहयइसपुज्जो ॥१॥ इत्यादिक आखो त्रीजोउद्देशोजाणवो वली तसनिंदाके०तेगुरुनी निंदानां फलपण तेदसवैकालिकमांहेज नवमाध्ययनना पहेलाउद्देशामां कह्यांछे॥काव्यं ॥ आसीविसोआविपरसुयडो॥ किंजीवनासाउपरंतुकुज्जा ॥ आयरियपायापुणअप्पसन्ना ॥ अबोहिआसायणनत्थि मोक्खो॥१॥ इत्यादिकसंपूर्ण प्रथमउदेशोइहांजाणवो वली आवंतिमांके०आचारांगमां पांचमाअध्ययनना पांचमाउद्देशामध्ये सदगुरुनेद्रहसमानकह्याछे तथा मुनिनाकुलके०समूह ते मछसमानकह्याछे तथाचतत्सूत्रं सेबेमि तंजहा अविहरएपडीपुन्नेचिठंति समंसिभोमे उवसंतरएसारक्खमाणे सेचिठंति इत्यादिक एनी वृत्तिनो वच्चेथीएकदेशलखीयेंछैयें इहपुनः प्रथमभंगपतितेनोभयसज्ञाविनाधिकारस्तथाभूतस्यैवायंहृददृष्टांतः सचहृदोनिर्मलजलस्यप्रतिपूर्णोजलजैः सर्वर्त्तुजेरूपशोभितःसमे भूभागे विद्यमानोदकनिर्गमप्रवेशो नित्यमेवतिष्ठति नकदाचिच्छोषमुपयातिसुखोत्तारावतारसमन्वितउपशांतमपगतरजः

कालुष्यापादकं यस्य स तथानानाविधांस्तुयादशान् गणान्सहवायादौगणैरात्मानमा. रक्षयन्प्रतिपालयन्सारक्षन् तिष्ठत्येषांक्रियाप्रकृतैवयथावासो ह्रदस्तथाचार्येपीति द-र्शयतिसेचिठइ इत्यादिसआचार्यः प्रथमजंगपतितःपंचविधाचारसमन्वितो अष्टवि-धाचारसंपडुपेतःषट्त्रिंशद्गुणगणाधारो ह्रदकल्पोनिर्मलज्ञानप्रतिपूर्णः समेजूनागइति-संसक्तादिदोषरहिते सुखविहारक्षेत्रेसमोवा ज्ञानदर्शनचारित्राख्योमोक्षमार्गे उपशम-वतांतत्रतिष्ठतिसमध्यास्तेकिंजूत उपशांतमोहनीयइतिकिंकुर्वन् जीवनिकायान् रक्षन् स्वतः परतश्चसडुपदेशदानतोनरकादिपाता रक्षतिस्रोतोमध्यग इत्यनेन प्रथमजंगपतितं स्थविराचार्यमाहतस्यहिश्रुतार्थदानग्रहणसद्भावात्स्रोतोमध्यगतत्वं सचकिंजूतःस्यादि-त्याह इत्यादि ॥ ७ ॥

गुरुदष्टिअनुसारेंरहेता ॥ लहेप्रवादप्रवादेंरे ॥ एपणअर्थ
तिहांमनधरियें ॥ बहुगुणसुगुरुप्रसादेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीगुरुदष्टिके०गुरुनामुखआगल रहेतां तथा अनुसारेंके०गुरुनेअनुजायी रहेतां लहेप्रवादप्रवादेंके०प्रकृष्टजेवाद तेनेप्रवादकहियें तेप्रवादेंकरीने प्रवाद जाणे एटलेप्रवादतेआचार्यपरंपरानोउपदेश तद्रूपप्रवादेंकरीने सर्वज्ञउपदेशरूपप्रवादनेजाणे अथवा प्रवादजे सर्वज्ञवाक्य तेणेकरीने अथवा प्रवादजे अन्यतीर्थिउना वाक्य तेप्र-तेपरिक्षाकरीनेजाणे एरीतेगुरुपासेरहेतांज्ञान अंगीकारकरे इत्यादिक एअर्थ. पणति-हांके०तेआचारांगना पाचमाअध्ययनना छठाउद्देशामां कह्युंछे तेमनमां धरियें तत्सू-त्रं अणाणाए एगे सोवठाणे अणाणाए एगे ॥ निरूवठाणे एयं ॥ तेमाहोउएयंकुस-लस्सदंसणं॥तद्दिठिए तमोत्तीए तप्पूरकारें तस्सन्नितन्निवेसणे अन्निजूय अदकू अण-न्निजूए पहू निरालंबणयाए जे महंअबहिमणे पवायेणपवायंजाणेज्जा सहसंमुइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वाअंतिएसोच्चा निदेसं नातिवत्तेज्जा मेहावी सुपडीलेहिय सव-तोसवआएसममेव समन्निजाणीज्जाइत्यादिक एहनोअर्थटीकामांतोबहुछे पणआहिं श-ब्दार्थमात्रलिखीयें छैयें अणाणाएके०प्रजुआज्ञारहित एगेके०केटलाक सोवठाणेके० धर्मेमांसदाउद्यमवंतथया तथा केटलाक अणाणाएके०अनाज्ञायें निरूवठाणेके०सदअ-नुष्ठाननाउद्यमरहीत एयंके०एवेकुमार्गने सद्मार्गनाउद्यमनुंआलसजाणवुं हवेफरिगुरु-शिष्यनेकहेछे तुजने ए वे मांहेजो एवंकुसलस्सदंसणंके०एतीर्थंकरनोदर्शनअन्निप्रा-यछे तद्दिठिएके०विनितशिष्यें तेआचार्यनीदृष्टीयें वर्तवुं तमोत्तिएके०तेआचार्यनीमुक्ति-यैंवर्तवुं तप्पुरकारेके०तेआचार्यनी आज्ञा आगलकरीनेवर्ते तस्सन्निके०तेओनीसंज्ञा-जाणे चित्तनोअन्निप्रायजाणे तन्निवेसणे के०सदागुरुकुलवासेंवसे एहवोशिष्यकेवागुण-

नेपामे तेकहेले अनिनूयके०परिसहउपसर्गनेजीतीने अदक्खूके०घातिकर्मनेउबेदे हे शिष्यवली अणनिनूएके०परिसहोपसर्गनेअणजित्योथको पहुके०समर्थहोय निरालं-बणयाएके०मातापितासज्ञनादिकना आलंबनरहितपणे विचरवानेकोणसमर्थहोय तेकहेले जेके०जेकोइपुरुष महंके०माहराअभिप्रायथकी अबहिमणेके०मनबाहेरनथी निकल्युंजेहनुं एटले सर्वज्ञउपदेशेवर्तेले इतिभावः तेसर्वज्ञउपदेशकेमजाणीयेंतेउपरें-कहेले पवाएणंपवायं जाणेज्जा एअर्थ 'लहेप्रवादप्रवादें'एमकह्युंतिहांकह्योले तेजाणवुं हवेपूर्वोक्तजेप्रवादते त्रणप्रकारेजाणे तेकहेले सहसंमुइयाएके०पोतानीमतिअवध्यादि-कमते अथवा परवागरणेणंके०सिद्धांतेकरीने वाके०अथवा अनेसिंके०अन्यआचार्या-दिकतेहने वाअंतिएसोच्चाके०समीपेंसांभलीने यथार्थजाणीने निद्देसंनातिवत्तेज्जाके० तीर्थंकरना उपदेशनेउलंगेनही केमकेजे मेहावीके०पंमीत सुपडिलेहियके०भलेप्रकारें जोइने सव्वतोसव्वआएके०सर्वप्रकारें द्रव्यक्षेत्रेंकालभावें सर्वपणे स्वदर्शन परदर्शनप्रतें सममेवके०सम्यक्रीते समभिजाणीज्जाके०जाणीनेनिराकरणकरे इत्यादिकबहुअधि-कारले तेमाटे बहुगुणसुगुरुप्रसादेके०गुरुआदिकनापसायथी घणागुणथाय ॥ पुज्जाजस्स पसियंति ॥ संबुद्धापुव्वसंथुया ॥ पसन्नालाभइस्संति ॥ विउलंअठियंसुयं ॥ १ ॥ इत्युत्त-राध्ययनेप्रथमाध्ययने इहांसूत्रआलावोविषमछतोमाटेअर्थकह्योले ॥ ८ ॥

विनयवधेगुरुपासेंवसतां ॥ जेजिनशासनमूलोरे ॥ दर्शन
निर्मलउचितप्रवृत्ति ॥ शुभरागेंअनुकूलोरे ॥ श्रीजिन० ॥ ९ ॥

अर्थ॥वली गुरुपासेवसतां विनयवधे अने जेविनयते जिनशासननुं मूल ले॥यतः॥एवं-धम्मस्स विनउमूलंपरमोसेमोरकोइति दसवैकालिक नवमाध्ययनना बीजा उद्देशकेंकह्यो तथा विनयफलंशुश्रूषा, गुरुशुश्रूषाफलंश्रुतज्ञानं॥ ज्ञानस्यफलंविरति, विरतिफलंचाश्रव-निरोधः॥१॥ आश्रवनिरोधाद्भवसं, ततिक्षयः संततिक्षयान्मोक्षः॥ तस्मात्कल्याणानां, स-र्वेषांभाजनंविनयः॥२॥इतिप्रशमरतौ वली गुरुकुलवासेंदर्शनश्रद्धानिर्मलथाय उक्तंच सव्व-गुणमूलभूउ ॥ भणीउआयारपढमसूत्तेजं ॥ गुरुकुलवासोवस्सं ॥ वसिज्जाउतबचरणही ॥१॥ इतिधर्मरत्नवचनात् वलीगुरुकुलवासें दर्शनश्रद्धानिर्मलथाय. तथा उचित के०योग्यप्र-वृत्तिथाय तेपणशुभरागेंके०भलारागसहितप्रवृत्तिकरे तेपण अनुकूल के०सन्मुखभावप-णेकरे पणवेठनीपेठेनकरे ॥ ९ ॥

वैयावच्चेंपातिकत्रूटे ॥ खंतादिकगुणशक्तीरे ॥ हितोपदेशें
सुविहितसंगे ॥ ब्रह्मचर्यनीगुप्तिरे ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ गुरुनोवैयावच्चकरतांथकां पातिकके० पापकर्मत्रूटे यतः॥ वैयावच्चेणंजंते जीवे किंजणश्वेयावच्चेणंतित्थयरनाम गोयं कम्मंनिबंधश् इतिउत्तराध्ययने उंगणत्रीसमाध्ययनेकह्युं वलीगुरुआदिकपासेरहेतां खंतादिकके०क्षमाप्रमुखगुणनीशक्तिवधे तथा गुरुपासेंरहेतोथको हितोपदेशसांजले तेणेकरी तथा सुविहितनासंगेकरीने ब्रह्मचर्यनीगुप्तिके०नववाडोजलीरीतेंपाले तेगुप्तिपणवाधे ॥ १० ॥

मनवाधेमृडुबुद्धीकेरा ॥ मारगजेदनहोवेरे ॥ बहुगुणजाणे
एअधिकारें ॥ धर्मरयणजेजोवेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥तथा मृडुबुद्धीकेराके०जे ऋजुमतिनाधणीहोयतेहना मनवाधेके०चित्त मांहे उल्लासवधे कारणके जेजोलालोकहोयतेगुरुसाथेदेखीने हर्षपामे अने गुरुथी जूदादेखीने जडकीजाय तथा मारगनोजेदनथाय अने जे एकाकीमार्गप्ररुपे तेघणो अपवादप्ररुपे अने गीतार्थघणोउत्सर्गप्ररुपे एवीरीते जूदीजूदी प्ररुपणा सांजलीने लोकपणजिन्नमार्गसमजे तेथीधर्ममार्गनोजेदथाय अनेगुरुसाथे जेलारहेतायकांनथाय. इत्यादिक गुरुकुलवासमांहे बहुके०घणागुणजाणे एअधिकारेंके०एगुरुकुलवासना अधिकारनेविषेधर्मरत्नग्रंथजेप्राणीजुए तेजाणे एटले एग्रंथमांगुरुकुलवासेंरहेतां घणागुणछेतेविस्तारेंकह्युंछे इतिजावः॥११॥

नाणतणोसंजागीहोवे ॥ थिरमनदर्शनचरित्तेंरे ॥ नत्यजे
गुरुकहियेंएबुधजाष्युं ॥ आवश्यकनिर्युक्तेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली तेजीव गुरुपासेथीज्ञानजणे माटे नाणके०ज्ञाननोसंविजागीथाय तेमज दर्शनननेविषे तथाचरित्तेके०चारित्रनेविषेपण तेहनुंमनथिररहे तेप्राणीगुरुके०गुरुआदिकने कहियेंके०कोइकाले नत्यजेके०नछांडे एरीते बुधजाष्युंके०पंडितलोकेंकह्युं एटले जद्रबाहुस्वामी चउदपूर्वधर तेणेआवश्यकनिर्युक्तिनेविषे एमकह्युंछे यतःनाणस्सहोइजागी ॥ थिरयरउंदंसणेचरित्तेय ॥ धन्नाआवकहाए ॥ गुरुकुलवासंनमुंचंति ॥१॥ इति ॥ १२ ॥

जौतप्रतेंजेमबाणेहणता ॥ [illegible]सबरारे ॥ गुरुछांडि
आहारतणोखप ॥ करतातेमसुनिनिवरारे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ तथा जौतके०बौधप्रतेंजेम पिछुंलेवानेमाटे बाणेकरीनेहणता पण पग अणफरसीने एटले पगफरसतांपापलागे तेमाटेसबराके०सबरानामेराजानीपेठे जे गुरुकुलवासछांडीने आहारनोखपकरता एटले शुद्धमानआहारखोलताजेमुनि तेहने निवराजाणवा एटले नकामाजाणवा इतिगाथार्थ. जावार्थतोकथाथीजाणीयें तद्यथा कोइकसन्निवेशनेविषे सबरनामेराजा तेबौधनोजक्तिवंतहतो तेनाघरेंबौधनोगुरुआव्यो तेणेपो-

तानामाथाऊपर अति अद्भुत शोन्नावंत मोरनापीछनुंछत्रधारणकर्युंहतुं राजायेंघणो आदरसत्कारआपी आसनेबेसाड्यो पछीतेनुंछत्र मोरनाचंद्रकरीऊगऊगाट करतुं राजानीराणीयेंदीठुं पछीकुतूहलपामतीथकी राणीयेंतेछत्रमांग्युं केमके तेदेशमां मोरनहता तेथी तेनवाइजेवुं हतुं माटे तेछत्रवौधनागुरुयेंआप्युंनही अने उठीनेपोतानेठेकाणेजतोरह्यो पछीराणीयेंन्नोजनकीधुंनही तेवारेराजायेंपुछ्युंके शावास्तेन्नोजनकरतीनथी राणीबोलीके एछत्रआवेतोन्नोजनकरुं त्यारेराजायें तेछत्रगुरुपासेमांग्युं पण गुरुयें आप्युंनही फरीवारंवारमांग्युं पणगुरुआपेनही पछेस्नेहरागअतिदुर्धरछे माटेराणीना स्नेहें राजायें पोताना सुन्नटोनेहुकमकर्यो जे बलात्कारेंपण एपीछनुंछत्र लेइआवो तेवारें सुन्नटोबोल्याजे ए पोतेजीवतांतोछत्रआपशेनही माटेतमारोहुकमहोयतो कोइक प्रहारकरी बलात्कारेंलावियें तेवारेंराजाबोल्योजे गुरुनीआशातनानथाय माटे गुरुनापादस्पर्शकरशोनही पण दूरउन्नारहिबाणनाखीने चेष्टारहितकरीछत्रलेइआवो पणपादस्पर्शकरशोतो गुरुनीअवज्ञाथशे तेनुंमोहोटुंपापलागशे एदृष्टांते जेमशबरराजा गुरुनोनाशकरतो पण पादस्पर्शकरतांवारतोहतो एहवोजविवेकगुरुकुलवास तजीने जेशुद्धआहारगवेषेछे तेहनेपण जाणवो. यतः ॥ सुद्धंछाईसुजुत्तो ॥ गुरुकुलवागाइणोहविन्नेउ ॥ सवरससरक्खपिछ॥ छ-घायपायाछिवणतुल्लो ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्ने ॥ १३ ॥

गुरुकुलवासेंज्ञानादिकगुण ॥ वाचंयमनेवाधेरे ॥ तोआहार
तणोपणदूषण ॥ खपकरतांनविबाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली गुरुकुलवासेंवसतांथकां ज्ञानदर्शनचारित्रना गुण ते दिनदिनप्रतेंवधे वाचना पृछनादिकेकरी वाचंयमनेके० मुनिराजने वाधे हवेपाछलावेपदनोअर्थअन्वय करीकहीयेंछेयें तेज्ञानादिकगुणनी वृद्धीथायतो आहारनोखपकरतांपण दूषण न बाधे इत्यन्वयः एटले ज्ञानध्याननी लेहेरमांबेठाथकां कोइकद्रव्यानुयोगमां अत्यंतमग्नथयाछे एवामां गोचरीयेंनिकल्याथकां कोइकस्थानकें सूक्ष्मदोषदेखीने चिंतवन करे जे ध्याननीलेहेर हजीचित्तमां अंतरवासनायेंछे अनेघणाघेरफरवाजइशतो ते लेहेरफरी आवशेनही एहवुंविचारी कांइकदूषणसहित आहारलीये तोपणतेहनेबाध न करे एटलेकर्मबंधनोहेतुनथाय. यतः अहागडाइत्तुंजंता ॥ अन्नमन्नेणकम्मुणो ॥ उवलित्तेवियाणिज्जा ॥ अणुवलित्तेतिवापुणो ॥ १ ॥ इत्यादिकसुयगडांगसूत्रेअध्ययन २१ मांमध्ये कह्युंछे तथा गुरुकुलवासवसतां मुणीणोवट्टंतीनाणपमुहेहिं ॥ जइएसणाइंदोसस्स ॥ लवमविमन्निजएसुगुणं ॥ १ ॥ इतिन्नावः तथाअपवादें गाढग्लानादिकनाकार्यें अणसरते गछमांरह्या गुरुआणावर्त्तिने असठन्नावेंवर्त्ततानेआतुरदृष्टांते आधाकर्मादिक आ-

हारतेपण निर्दोषजाणवो तथाचागमः संथरणंमिअसुद्धं ॥ दुन्हविगिन्हंतयाण-हियं ॥ आउरदिठंतेणं ॥ तंचेवहीयंअसंथरणे ॥ १ ॥ तद्यथा ॥ जाजयमाणस्सनवे॥ विराहणासुत्तविहिसमग्गस्स ॥ साहोइनिज्जरफला ॥ अजन्नविसाहिजुत्तस्सत्ति ॥ २ ॥ उत्तराध्ययनने एरीतेदूषणसहितआहारतेपणबाधनकरे ॥ १४ ॥

धर्मरतनउपदेशपदादिक ॥ जाणीगुरुआदरवोरे ॥ गच्छक
ह्योतेहनोपरिवारो ॥ तेपणनितअनुसरवोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ तथाधर्मरत्न अनेउपदेशपद प्रमुखग्रंथजोइने एग्रंथोमांगुरुकुलवासना अधिकारघणाछे माटे तेमांथीजाणीने गुरुआदरवो वली गछ ते कोने कहीयें तेकहेछे तेहनोपरिवारोके० एहवासुविहितसाधुनो परिवारतेहनेगछकहीयें यतः ॥ गुरुपरिवा-रोगछो इत्यादिकपंचवस्तुवचनात् माटेतेगछपण निरंतरअंगीकारकरवो अनुसरवो इति यतः गुरुगुणजुत्तोगछो ॥ गछोसंविग्गयासाढुसमवाउ ॥ मुक्खमग्गछिणासोय ॥ अणु सरियव्वोपयत्तेण ॥ इत्यादि ॥ १५ ॥

सारणवारणप्रमुखलहीने ॥ मुक्तिमारगआराधेरे ॥ सुजवीरय
तिहांसुविहितकिरिया ॥ देखादेखेंवाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वलीसारणके० विसरयुंहोयते संजारीआपे अनेवारणके० पापकरणीकरता-नेवारे तथाप्रमुखशब्देंकरीचोयणा प्रतिचोयणापणलेवी तेपणजेगछमांरहे तेहनेथाय पछीतेतेसारणादिक लहीनेके० पामीने मुक्तिमारगआराधेके० मोक्षमार्गसाधे यतः गुरु-परिवारोगछो ॥ तछवसंताणनिज्जराविउला ॥ विणयाउतहासारण ॥ माइहिंनदोस-पडिपत्ति ॥ १ ॥ इतिपंचवस्तुके तथाश्रीधर्मरत्नप्रकरणनीवृत्तिमध्येकह्युंछेके सुजवीर-यके० जलोवीर्योल्लासवाधे वलीसुविहितकिरियाके० आत्मार्थिगीतार्थनी क्रियाव्य-वहार तेदेखादेखीयें वधे एटले साधुउनासमूहने क्रियातपजपादिक करतांदेखीने पोतानेपण करवानुंमनथाय तेहथीवधारोथाय ॥ १६ ॥

जलधीतणोसंखोजअसहता ॥ जेमनीकलतामीनोरे॥ गछसार
णादिकअणसहता ॥ तिमगुनीडुखियादीनोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जेमजलधीके० समुद्रनो संखोजके० कल्लोलप्रमुखनीजे क्षोजना तेहने असहताके० जेवारेंसहीशकेनही तेवारें जेम मीनके० मछहोयतेसमुद्रमांथीबाहारनी-कले तोडुःखीथाय तेमगछमांरहेताथका गुरुआदिकजेसारणादिककरे तेसहनकरवी पडे, अनेजेवारें नसहवाय तेवारेंगछथीबाहारनिकले तोतेसमुद्रमांथीनिकलेला मछ-

नीपेठेडुःखीथाय दीनथाय केमके गत्यंतरेडुर्गतियेंजाय मादेडुःखीदीनजथाय इति नावः यतः ॥ जइजलनिहिकल्लोल ॥ रकोजमसइंतायवाहिरंपत्ता ॥ मीणाअमुणियमू-णीणो ॥ सारणपमुहाइअसहंता ॥ १ ॥ इतिआचारांगपंचमाध्ययनेचतुर्थोद्देशकवृत्तौ पुनर्यथा ॥ जहसायरंमिमीणा ॥ संखोहंसायरस्सअसहंता ॥ णिंतिंतर्उसुहकामी ॥ णि-ग्गयमित्ताविणस्संति ॥ १ ॥ एवंगन्नसमुद्दे ॥ सारणवीईहिंचोइयासंता ॥ णिंतितर्उसु-हकामी ॥ मीणावजहाविणस्संति ॥ १ ॥ इत्यादिकर्उघनिर्युक्तिवचनात् ॥१७॥

काकनर्मदातटजेममूकी ॥ मृगतृष्णाजलेंजातारे ॥ डुखपा
म्यातेमगन्नतजीने ॥ आपमतिमुनीथातारे ॥ श्रीजिन० ॥१८॥

अर्थ ॥ वलीदृष्टांतकहेंछे जेमनर्मदानदीना किनाराऊपररहेनारा काकपक्षीजेंका-गडा ते तटके० नदीनोकांठोमूकीने तेनदीनाकांठाथीदूरपाणीजेवीझाकलदेखाय पण पाणीहोयनही तेन्नांतिरूपपाणी तेनेमृगतृष्णाजलकहीयें तेजलनीभ्रांतियेंदोडताएवाजे कागडा तेजेमडुःखपामे तेवीरीते सुविहितना समुदायनोगन्नतजीने जेमुनि आपमतिके० स्वेछाचारी थवाजाय तेकागडानीपेठेडुःखपामे ॥ १८ ॥

पालविनाजेमपाणीनरहे ॥ जीवविनाजेमकायारे ॥ गीता
रथविणतेमसुनीनरहे ॥ जूठकष्टनीमायारे ॥ श्रीजिन० ॥१९ ॥

अर्थ ॥ माटे जेम सरोवरादिकनुंपाणी ते पाल बांध्याविना रहेनही तथा जेम जीवविना काया नरहे तेम जेमुनिराजछे तेगीतार्थविना रहेनही. गीयछस्सविहारो ॥ बीर्उगीयछमीसिर्उनणीर्ड ॥ इत्यादिवचनात् माटेजे गीतार्थविना जेटला कष्टकरे ते सर्व अज्ञानमां नले अने जेअज्ञान तेमिथ्यात्वछे ते मायाके० कपटविना होयनही ॥ १९ ॥

अंधप्रतेंजेमनिर्मललोचन ॥ मारगमांलेईजायरे ॥ तेमगीता
रथमूरखमुनिने ॥ दृढआलंबनथायरे ॥ श्रीजिन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली दृष्टांत कहेछे जेम आंधलाने निर्मलआंखनो धणी ते कांटा प्रमुखें रहित एहवा उत्तममार्गें लेइजइने स्थानकें पोहोचाडे तेम गीतार्थ जेछे ते जो कदा-चित् मूर्खमुनि होयतो तेने पण दृढके० जबरदस्तआधारनूतथायछे ॥ २० ॥

समनाषीगीतारथनाणी ॥ आगममांहेंलहियेंरे ॥ आतमअरथी
शुनमतिसजन ॥ कहोतेविणकेमरहियेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली समनाषीके० स्याद्वादवचनना नाषीहोय अथवा समनाषीके० गरी-

बने तथा मातबरने रागद्वेषरहितपणे देशना आपे तथा गीतार्थ होय नाणीके० सम्यग्ज्ञानीहोय आगममांहेथी एहवा गीतार्थ लहियेंके० पामीयेंछैये वली आतमअरथीके० पोतानुं आत्मस्वरूप साधवाने उजमालथया तथा शुभमतिके० भलीमतिना धणी एटले जेमांकुमति कदाग्रहहोयनही वली सज्जनके० उत्तमगुणवंत भलीशिखामणना आपनारा एहवा गीतार्थविना इहां सर्वपदसंबोधने बोलावीयें हे आत्मार्थि हेशुभमति हेसज्जन तमे कहोके ते एहवा गुरुगीतार्थ पुरुषविना केम रहीयें के० शीरीतेरहीशकीयें ॥ २१ ॥

लोचनआलंबनजिनशासन ॥ गीतारथबेमेढीरे ॥ तेविणमु
नीचढतीसंयमनी ॥ आरोहेकेमसेढीरे ॥ श्रीजिन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वली गीतार्थ ते ज्ञानरूप लोचनना आपनारा माटे गीतार्थने जिनशासननेविषे लोचन कहियें तथा दुर्गतिनेविषे पडता प्राणीने आधार थाय माटे गीतार्थने जिनशासननेविषे आलंबनकहीयें वली गीतार्थते मेढीबराबरछे एटले जे खेतर खलाना वचमां स्तंभरोपीनेअन्नउपर फेरवेछे तेने मेढीकहीयें उपलक्षणथी स्तंभभूत कहीयें जेहने आधारें घरमालप्रमुख रहेछे तथा यानकहीये जेहने आधारे महाअटवीनो बिहामणोमार्ग होय तोपणपारपामीयें यतः मेढीआलंबणंखंभं ॥ दिट्ठि जाणंसुउत्तमं ॥ गीयछंगुरुगुणाइणं ॥ सम्मंजाणसुगोयमा ॥ १ ॥ माटेते गीतार्थविना मुनिराज ते संयमनी सेढीके०श्रेणी केम आरोहे एटलेकेमचढे अने उत्तरोत्तर शुभाध्यवसायें केमवधे एसंयमश्रेणीनो अधिकारते संयमश्रेणीनुंस्तवन अमारागुरुश्रीउत्तमविजयजीकृतछे तेथी विस्तारेंजाणवुं तथापंचसंग्रहथीजाणवुं. ॥ २२ ॥

गीतारथनेंमारगपूछी ॥ छंडीजेंउन्मादोरे ॥ पालेकिरिया
तेतुजभक्ति ॥ पामेजगजशवादोरे ॥ श्रीजिन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तेगीतार्थनें मार्ग पूछीने उन्माद जेस्वेछाचारीनुं मदोन्मत्तपणुं तेछांडवुं एरीते तमारीआणासहितचाले तेजतमारीभक्तिजाणवी तेतमारीभक्तिकरीने जे क्रिया पाले एटले एभावके तमारीएआज्ञाछे जेज्ञानसहित क्रियापाले तेप्राणीजगतनेविषे जशवादपामे

॥ ढाल७ठी ॥

॥ रासुडानीदेशी अथवा हितशिक्षाछत्रीशीनीदेशी ॥

प्रथमज्ञाननेपछेंअहिंसा ॥ दसवैकालिकसाखिरे ॥ ज्ञानवंतते
कारणभजियें ॥ तुजआणामनराखिरे ॥ साहेबसुणजोरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे आगली ढालमां ज्ञानसहितक्रियाकरता संयमश्रेणीआरोहे एमकह्युं तेमांज्ञानपूर्वकक्रियाकरे तो लेखेछे माटे आढालमांज्ञानवर्णवेछे जेप्रथमज्ञान होयतो पछी अहिंसाके०दयापलीशकेछे एमश्रीदशवैकालिकसूत्रमां कह्युंछे यतः पढमंनाणंतउ-दया एवंचिठ्ठइसवसंजए तेकारणेज्ञानवंतने भजीयेंके०सेवीयें पणहेपरमेश्वर तमारी आज्ञा ते मनराखिके०चित्तमांराखीने एटलेएभावजे ज्ञानवंतने भजीयें पण साध्यमां एमराखीयेंजे ज्ञानक्रियाभ्यांमोक्षः नाणक्रियाहिमुक्खोइतिभाष्यवचनात् माटे स्याद्वा-दहष्टीयें ज्ञाननीसेवाकरीयें हेसाहेबसुणजोके०सांभल्यानी पेरेसांभलजो अन्यथा पर-मेश्वर केवलज्ञानीछे तेतो सर्व जगतना भाव देखीरह्याछे तेहनेशुंसांभलवुंछे पणभक्तिवंत प्राणीउपचारेकहेछे के हे साहेब सांभलजो ॥१॥

द्रव्यखेत्रनेकालनजाणे ॥ भावपुरुषपडिसेवरे ॥ नविउ
त्सर्गलहेअपवादह ॥ अगीतारथनितमेवरे ॥ सा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीजे अगीतार्थछे ते १ द्रव्यनजाणे २ क्षेत्र नजाणे ३ कालनजाणे अने ४ भावपण नजाणे तथा ५ योग्यछेके अयोग्यछे एहवा पुरुषने पण नजाणे तथा ६ पडिसेवके० पापनीसेवनाने नजाणे जे एणेस्ववशें पापकर्युं अथवा एणे परवशें पापकर्युं तेअगीतार्थ नजाणे वली ७ छतिशक्तियें जेमसिद्धांतमां मार्गकह्यो तेमज करवुं तेहनेउत्सर्गमार्गकहीयें तेपण नजाणे तथा ८रोगादिक कारणे अल्प दोष सेवे ते अपवादमार्गनेपण नजाणे ए (८) वातो नितमेवके०निरंतरपणे जेअगीतार्थछे तेंनजाणे यतः उपदेशमालायां ॥ दवंखि-त्तंकालं ॥ भावंपुरीसपडिसेवणाउय ॥ नवि जाणइअगीउ ॥ स्सग्गववाइयंतंचेव ॥ १ ॥ २ ॥

सचित्तअचित्तमिश्रनवीजाणे ॥ कल्पअकल्पविचाररे ॥ योग्य
नजाणेनिजनिजठामें ॥ द्रव्ययथास्थितसाररे ॥ सा० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेप्रथमगाथाविस्तारतां एहिज द्वारमांप्रथम द्रव्यद्वार कहेछे तेमांद्रव्यथी अगीतार्थ शुं नजाणे तेकहेछे सचित्तवस्तु तथा अचित्तवस्तु तथामिश्रवस्तुने जाणे नही वलीकल्पनीखबरनपडे जे आवस्तुकल्पेछे वा नथी कल्पति अकल्पछे तेविचार अ-गीतार्थ नजाणे वलीयोग्यतानी खबरनपडे निजनिजठामेके०पोतपोताने स्थानकें यो-ग्यता नजाणे जे आबालने योग्य के ग्लाननेयोग्य इत्यादिक नजाणे एरीतें यथास्थि-तके०जेद्रव्य जेमहोयतेवीजरीते तेहनी अगीतार्थनेखबरपडेनही यथास्थितद्रव्य के-वुंछे सारके०प्रधानछे यदुक्तं ॥ जहठियदवंनयाणइ ॥ सचित्ताचित्त मीसगंचेव ॥ क-प्पाकप्पंचतहा ॥ जोग्गंवाजस्सजंहोई ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ३ ॥

खेत्रनजाणेतेह्यथास्थित ॥ जनपदअध्वविशेषरे ॥ सुनि
क्षडर्निक्षकल्पनजाणे ॥ कालविचारअशेषरे ॥ सा० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेक्षेत्रद्वार कहेछेअगीतार्थ यथास्थितके० जेवुंक्षेत्रहोय तेहवुंक्षेत्रनसमजे के आनक्ककक्षेत्रछे के अनक्ककछे इति तथा जनपदके०लोकेव्याप्त देशनेविषे विहार करतां आवीविधियें करवुं अथवा मगधादिकदेशें आवीविधियेंकरवुं इत्यादिक नजाणे वलीअध्वविशेषके०दूरदेशेअटवीप्रमुखें आवीरीते विहारकरवो इत्यादिक वातो अगीतार्थ नजाणे हवेकालद्वारकहेछे जे सुनिक्षमां कल्पनजाणेके० योग्यनजाणे एटले सुनिक्षमां आरीतेविरचवुं वलीडुर्निक्षमां पणकल्पके० योग्यनजाणे जेडुर्निक्षमांआवीवस्तु होय तोज लेवाय इत्यादिक वातो कालना विचारनीते अशेषके०समस्तप्रकारें अगीतार्थ नजाणे इतिनावः यतः जइठियंखित्तंनजाणई ॥ अद्धाणेजणवएयजंनणीयं ॥ कालंपियनविजाणइ ॥ सुनिक्खडुनिक्खजंकप्पं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ४ ॥

नावहिठगिलाणनजाणे ॥ गाढअगाढहकल्परे ॥ खमतो
अखमतोजननलहे ॥ वस्तुअवस्तुअनल्परे ॥ सा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेनावद्वारकहेछे जे नावके०नावना विचारनेविषे हिठके०निरोगीने तथा गिलाणके०रोगाक्रांतने नजाणे एटले निरोगीने आदेवुं तथा रोगीने आवस्तुदेवी ते वातो अगीतार्थनजाणे अने गाढकल्पके०आकरेकारणेंआरीतें करवुं तथा अगाढकल्पके०स्वनावेसेहेजरीतेंतो आप्रमाणे वर्त्तवुं एअगीतार्थनजाणे हवेपुरुषद्वार कहेछे खमतोके० आपुरुषसामर्थ्यवानशरीरें कठोरछेमाटेखमी शकशे तथाअखमतोके० आपुरुषनुं सुकुमारशरीरछे ते नहीखमीशके एहवा जनके०प्राणीने ते अगीतार्थ ओलखेनही वली वस्तुके०आचार्यादिक अवस्तुके०सामान्यसाधुने ते अगीतार्थ नओलखे जेपदस्थनेआमघटे तथा सामान्यनेआमघटे माटे अनल्पके०इत्यादिकबहुप्रकार ते न जाणे यतः नावेहिठगिलाणं ॥ नविजाणइगाढगाढकप्पंच ॥ सहुअसहुपुरिसवहु ॥ वहुमवहुचनविजाणइ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ५ ॥

जेआकुट्टीप्रमादेंदर्पें ॥ पडिसेवावलिकल्परे ॥ नविजाणे
तेतासयथास्थित ॥ पायछित्तविकल्परे ॥ सा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रतिसेवानामेंद्वार कहेछे जे निषेधआचरण तेहने प्रतिसेवा कहीयें तेहना चारप्रकारछे तेमां प्रथम आकुट्टीके०जाणीने पापसेववुं तेपण कारणविना सेववुं बीजो कंदर्प्पादिकने वशथका जेपापसेवे तेप्रमाद कहियें त्रीजो धावनवलनादिके

करीजे पापलाग्युं तेदर्प्पंकहीयें चोथो आगमोक्तकारणेकरीनिषेधाचरण कर्खुं तेकल्प कहीयें एचारेभेद पडिसेवाना जाणवा ॥ यतः पडिसेवणाचउरूा ॥ आउट्टिपमायद-प्पकप्पेसु ॥ नविजाणइअग्गिउ ॥ पछित्तंचेवजंतछ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायांतल्लक्षण-गाथा आउट्टिआउविच्चा ॥ दप्पोपुणहोइवग्गणाईउ ॥ कंदप्पाइयपमाउ ॥ कप्पोपुणका-रणेजणिउ ॥ १ ॥ इत्याचारांगवृत्तौ एगाथानोअर्थकहेछे आउट्टि तेजाणीनेपापकवुं दर्प्पतेधावनवलनादिक सोत्कर्षपणेंनिपजे कंदर्प्पते प्रमादवशें जाणवुं अने जे ज्ञाना-दिकने आलंबनहेतेआचरवुंतेकारणे जाणवुं एचारप्रकारनुं जेपाप तेपापनुं यथास्थि-तके०जेहने जेवुंघटे तेवुं प्रायश्चित्तनुं विकल्प जे आ प्रायश्चित्तवालाने आवुं तपदेवुं इ-त्यादिक वातो ते अगीतार्थ नजाणे ॥ ६ ॥

नयणरहितजेमअनिपुणदेशें ॥ पंथनठजेमसत्थरे ॥ जा
णेहुंठामेपोंचावुं ॥ पणनहीतेहसमत्थरे ॥ सा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम कोइकनयणरहितके०अंधपुरुषहोय अनेवली अनिपुणदेशेंके०मार्गनो अजाणछे ते अंधपुरुष एवामार्गनेविषे पंथनठजेमसछके० जेममार्गमां कोइकसाथनष्ट एटलेभूलोपड्योहोय ते साथने आंधलोजाणे जेहुं ठेकाणे पोंचाडुं पणपोचाडवाने स-मर्थनथाय यतः जहनामकोपुरिसो ॥ नयणविहुणोअदेसकुलोय ॥ कंताराडविज्ञीमे ॥ मग्गयणठसत्थस्स ॥ १ ॥ इछइयदेसियत्तं ॥ किंसोउसम्मत्तुउदेसियतस्स ॥ दुग्गईय-याणंतो ॥ नयणविहुणोकहंदेसे ॥ २ ॥ ३ ॥

अगीतार्थतेमजाणेगरवें ॥ हुंचलवुंसविगछरे ॥ पणतस
पासेगुणगणग्रासे ॥ होईगलागलमछरे ॥ सा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्तअंधपुरुषनीरीतें अगीतार्थ पण तेमगर्वेंके० अहंकारेकरी एम जाणेजे हुं बधोगछचलावुंछुं पण तेनीपासे रहेताथकां गुणगणके० गुणनाजेसमूह ते ग्रासेके० घसाइजाय एटलें अगीतार्थने संगें गुणनो नाशथाय यतः एवमगीयछोविहु ॥ जिण-वयणपईवचक्खुपरिहीणो ॥ दव्वाइअयाणंतो ॥ उस्सग्गववाइयंचेव ॥१॥ कहसोजयउ-अगीउ ॥ कहवाकुणउअगीयनिस्साए ॥ कहवाकरेउगछं ॥ सबालवुड्ढाउलंसोउ ॥२॥ इत्युपदेशमालायां अगीतार्थने पासे वसतां मछगलागलथायके०मोटोटामछ नानाम-छनेगलीजाय एम धींगामस्तिनी वातथाय पणमार्गनीरीतनरहे ॥ ८ ॥

पछित्तेअतिमात्रदिएजे ॥ अपछित्तेपछित्तरे ॥ आसाय
णातससूत्रेबोली ॥ आसायणमिछत्तरे ॥ सा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली अगीतार्थहोयतेवगरसमजणे पछित्तेंके०प्रायश्चित्त जेटलुं आवेते करतां उलटो अतिमात्रके० अधिकुं दिएके०आपे अने जेहने अपछित्तेके०प्रायश्चित्त नआवतुंहोय तेहने पछित्तके०प्रायश्चित्तआपे एटलेथोडाप्रायश्चित्तवालाने घणुंआपे अने मूलगुंजेने प्रायश्चित्तलागतुंजनहोय तेने कहेशे जे तमने प्रायश्चित्त लाग्युं इत्यादिक असमंजसकरे एम करनारने सूत्रनेविषे आसायणबोलीके०जिनाज्ञानीविराधनाकरी माटे. विराधक कह्योछे अनेआसायणके०जिनाज्ञानीविराधना तेहिज मिछत्तके० मिथ्यात्व जाणवुं तथा तेमिथ्यात्वनिमितिउं संसार वधारे यतः सुत्तेयइमंजणियं ॥ अपछित्तेयदेइपछित्तं ॥ पछितेअइमत्तं ॥ आसायणतस्समहइउं ॥१॥आसायणमिछत्तं॥ आसायणवज्जणायसम्मत्तं ॥ आसायणानिमित्तं ॥ कुवईदीहंचसंसारं ॥२॥ इत्युपदेशमालायां॥९॥

तवसीअबहुश्रुतविचरंतो ॥ करीदोषनीश्रेणिरे ॥ नवि
जाणेतेकारणतेहने ॥ केमवाधेगुणश्रेणिरे ॥ सा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तवसीके०तपश्चर्याकरतो तथा अबहुश्रुतके० अगीतार्थथको विचरंतोके० विहारकरतोथको करीदोषनीश्रेणिके०अनेकदोषनी श्रेणीनेकरतो एटले अनेक अपराधपद करतोथको पण नविजाणेके०नजाणे एटले पोताना दोषनी पोताने खबर न पडे तेकारणके०ते हेतुयें तेअगीतार्थ कष्ट करताने गुण श्रेणीनीवृद्धि केमथाय अर्थात् न थाय तेटलीज रहे यडुक्तं अबहुस्सउतवस्सी ॥ विहरिउंकामोअ जाणिउणपहं ॥ अवराहपयसयाइ ॥ काऊणोविज्जोनयाणेइ ॥१॥ देसियराइयसोहिं ॥ वयाइयारेउजोनयाणेइ ॥ अविसुद्धस्सनवड्ढई ॥ गुणसेढीतत्तिआठाइ ॥२॥ इत्युपदेशमालायां ॥ १० ॥

मार्गमात्रजाणेजेमपंथी ॥ अलहीतासविसेसरे ॥ लिंगा
चारमात्रतेजाणे ॥ पामेमूढकलेशरे ॥ सा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम कोइक पंथीहोय तेहने कोइनाह्योपुरुष मार्ग बतावे तोपण विशेष मार्गनी तेने खबरनपडे केमके पोतेडाह्योनथी माटे डाबोजमणो मार्गजेमन जाणे एकसामान्यप्रकारें मार्गमात्रजाणे तासके०तेमार्गनीडाबीजमणी बाजु ते अलहीके०अजाणतो क्लेशपामे तेमज लिंगके०साधुवेष ने आचारके०साधुनी क्रिया ते लिंगाचारमात्र जाणे एटलेमात्र एकसूत्रनाज अक्षरमान्यकरी क्रियादिक करतो पण मार्गनेअजाणतो एहवोजे मूढके० मूर्ख अगीतार्थ तेक्लेशनेपामे संसार वधारे. यतः जहदायंमिविपहे ॥ तस्सविसेसेपहस्सयाणंतो ॥ पहिउंकिलिस्सइच्चिय ॥ तह लिंगायारसुअमित्तो॥१॥ इत्युपदेशमालायां ॥११॥

जेदलह्याविणनानापरिणति ॥ मुनीमननीगतबोधरे ॥ खिण
राताखिणताताथाता ॥ अंतेंउपाईविरोधरे ॥ सा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ गतबोधके०गयुंछे बोधज्ञान जेथकी एटले मूर्ख जेहोयते मुनीश्वरोना मननी नानापरिणतिके०विचित्रप्रकारनी परिणतिउंना जे नेदकें०प्रकार ते लह्याविणके० जाण्याविना एटलेजेमूर्खमुनिउंहोयते बीजामुनिउंनी विचित्रपरिणति अजाणताथका क्षणेकमां राताथाय एटले अंतःकरणमां क्रोधदीप्तथाय तथा क्षणेकमां ताता थाय एटले बाह्यपणे क्रोधदीप्त थाय एवा मूर्खोने एमथातांथकां अथवाराताके०रागीथाय परस्परें क्रीडाकरे तथा ताताके०तपीजाय कषायमयीथईजाय अने अंतेके० छेवटे विरोधने उपाईके०उपजावे एटले तेमूर्ख मांहोमांहे वढीमरे, पणसमाधि नउपजावे॥१२॥

पथ्थरसमपामरआदरतां ॥ मणिसमबुधजनछोमिरे ॥ नेद
लह्याविणआगमथितिनो ॥ तेपामेंबहुखोडिरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ मणिरत्नसमान जेबुधजनके०पंडितलोक तेहने छांडीने पछरसमके० पथरासमान जे पामरके०मूर्खजन तेहनेज आदरतांके०अंगीकारकरे तेप्राणी ते मूर्खपासेरहेताथकां आगमनीजे उत्सर्ग अपवादादिरूप थितिके०मर्यादा तेनो नेदके०प्रकार ते अणलेहताथका तेआदरनारापुरुष घणी खोडपामे एटलेसंयमरूपशरीर आखुं न रहे जरूरखंडितथाय इतिनावः ॥ १३ ॥

ज्ञाननक्तिनांजीअणलहेतां ॥ ज्ञानतणोउपचाररे ॥ आरा
सारेंमारगलोपे ॥ चरणकरणनोसाररे ॥ सा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एवा जे मूर्खहोयते ज्ञाननी नक्तिनेतो नांजे एटलेखंकितकरे तथा अणलहेताके०अणआराधता ज्ञानतणोके०ज्ञाननोजे उपचारके०विनय तेनेअणजाणता ते प्राणी आरासारेके०जेपांचमोआरो तेनेअनुसारें मारगलोपेके०नलामार्गने लोपेछे एटले मूर्खनेआदरतां ज्ञाननक्तिने नांजता ज्ञाननो उपचार अणलहेता जे पुरुष होय तेपांचमा आराप्रमाणे चारित्रने पाले कांतो एकलाजउत्सर्ग मार्गें चाले अथवाकाल दोषकाढी उत्सर्गमार्गबीलकुल मूकीज दे, पण सारके०प्रधान एवोजे चरणसित्तरि तथा करणसित्तरिनोमार्गतेनेपांचमाआराने अनुसारे तेमूर्ख लोपेछे एरीतेअमनेनास्यो तेरीते लख्योछे वलीएगाथानो अर्थ पंडितलोकोने सुजेतेखरो ॥ १४ ॥

उत्कर्षितेहनेयेशिक्षा ॥ उदासीनजेसाररे ॥ परुषवचन
तेहनेतेबोले ॥ अंगकहेआचाररे ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ वली उत्कर्षिके०उत्कृष्टाचारित्रियाहोय तथा उदासीनके०बेपरवाह होय सारके०उत्तमहोय तेवा साधु जो तेउंने प्रमादस्खलितादिकदेखी शिक्षाआपे तेवारेंते जे

एकाकीगछथी निकळ्या होय तेपाछो शिक्षा आपनारसाधुने परुषवचनके०कठोरवचन कहे जेमुजने सर्व लोकमां केम तिरस्कार कर्यो मेंशुंमातुंकर्युं छे बीजातो एरीते करे-जछे तोधिक्कारपरूो माराजीवितने इत्यादिकबोले. एमश्रीआचारांगमध्ये कह्युंछे तथाच तत्पाठः॥ वयसाविएगेचु॥ इयाकुप्पंतिमाणवाउ॥ णयमाणेयनवरे॥ महयामोहेणमुचइ॥१ इति एमवचनमात्रेंज गछनेछांडि एकला रही अकार्य सेवे इतिनावः ॥ १५ ॥

अमसरिखाहोजोतुमेजाणो ॥ नहीतोस्यातुमबोलरे ॥
एमभाषीजात्यादिकदूषण ॥ काढेतेहनिटोलरे ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ पछी ते मूर्खमुनि शिक्षा आपनारने पाछा एवाजवाब आपे के जो अम सरिखा तमे होत तोजाणत एटलेएनावजे अमारे गोचरीपाणीप्रमुख लाववां पडे तेतमनेकरवुं पडतुंहोयतो तमेजाणो नहीतो बेठा मोटाई करो एटलुंज तमारामांछे पणकांइ जलिवारनथी जोअमारी पेठे चालो तोतमेजे अमने शिक्षाआपोते खरी नहीतो तमारा बोलशा एटले तमारुं बोलवुं सर्व फोकटछे एमनाषीके०एम कहीने जात्यादिकना दूषणकाढे एटले एम कहेजे तमे हीणिजातिना उपज्याछो तमारुं कुलकेवुंछे इत्यादिक बोले तेहनिटोलके०तेपुरुषने निटोलजाणवा पण ते सज्जनउत्तमपुरुषमां नगणाय ॥ १६ ॥

पासत्थादिकदूषणकाढी ॥ हिलेज्ञानीतेहरे ॥ यथाछं
दताविणगुरुआणा ॥ नविजाणेनिजरेहरे ॥ सा० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली ते मूर्खप्राणी शिखामणना आपनारने उलटा पासत्थादिक दूषण काढीने हिलेके०हिलनाकरे एटलेएम कहेजे तमारामां शा गुणछे तमे पासत्थाउसन्ना छो एम कहीने ज्ञानीके०पंडितगीतार्थनी हिलनाकरे एवेपदनोएकठोअर्थछे एमविणगुरु आणाके०गुरुआज्ञा पाल्याविना यथाछंदताके०आपछंदे आचरणकरवानी एवी जे निजके०पोतानी रेहाके०रेखाछे एटले हीणाआचरणनी मर्यादापोतानी छे तेनी पोताने ज नजाणेके०खबरनपडे एटले ज्ञानीना अछता दूषण काढे अने पोताना छतादूषण होय ते उवेखे इतिनावः ॥ १७ ॥

ज्ञानीथीतेमअलगारहेता ॥ हंसथकीजेमकाकरे ॥ नेदविन
यनावावननाख्या ॥ नलहेतसपरिपाकरे ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानीके०जे गीतार्थ गुरुआदिक तेथकीअलगा रहेताथका केवा देखाय जेमराजहंसथकी कागडो जूदो देखाय तेवोतेसाधु देखाय तथा विनयना बा-

वनभेद शास्त्रमां कह्याछे तथाहि १ अरिहंत २ सिद्ध ३ नागेंद्रचंद्रादिक तेकुल ४ कोटिकादिक ते गण ५ चतुर्विधसंघ ६ क्रियातेअस्तिवादरूप ७ खंत्यादिकधर्म ८ मत्यादिकज्ञान ए मत्यादिकज्ञानवंत ते ज्ञानी १० आचार्य ११ स्थविर ते सिदातासाधुनेथिरकरे १२ उपाध्याय १३ केटलाकसाधुना समुदायनाअधिपतितेगणी ए तेरनो चारचारभेदे विनयकरवो १ अनाशातना तेजात्यादिक दूषणकाढीने हीलनानकरे २ भक्तितेउचितउपचाररूप ३ बहुमानते अंतरप्रीतिप्रतिबंधरूप ४ वर्ण संज्वलनाते यश बोलवा एरीतेतेरनेचारेगुणतां बावनभेदथाय इतिप्रवचन सारोद्धारे पांसठमेद्वारे ए अधिकारजोजो उपलक्षणथी बावनकह्या तेमज ए१ भेद समवायांगे तथा पिस्तालीस भेद तथा दशभेद इत्यादिक अनेकभेद ग्रंथांतरथी जाणवा. तेसर्वभेदनुं शीखवुं तथा ते रीतेप्रवर्त्तवुं तेने परिपाक कहीयें तेपरिपाकने नलहेके०एकाकी साधुनपासे केमके एकाकीविहारकरनार कोनापासेथीशिखे तथा केनोविनयकरे ॥ इतिभावः ॥ १८ ॥

सर्वउद्यमेंपणतसबहुफल ॥ पडेकष्टअन्नाणरे ॥ सूत्रअ
भिन्नतणेअनुसारें ॥ उपदेशमालावाणिरे ॥ सा० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ सर्वक्रियाअनुष्ठाननोउद्यम तेनुंजे बहुफलके०घणुंफल स्वर्गादिक ते पडेकष्टअन्नाणरेके०अज्ञानकष्टमांपडे एटलेनिर्जरानथाय संसारपरित न थाय कोनेनथाय तेकहेछे जे अविवृतार्थ विशिष्टव्याख्यानरहित एहवुंजेसूत्र तेहनेअभिन्न सूत्रकहीयें तेअभिन्नसूत्रनेअनुसारें क्रियाप्रमुख अनुष्ठानकरे तेअज्ञानकष्टमांपडे इति योगः जे टीकाप्रमुखविनाविशेषप्रतिपत्तिकेम थाय? अन्यथाअनुयोगनुंकथननिरर्थकथाय ए उपदेशमालानीवाणीछे. यदुक्तंतत्सूत्रे॥ अपरिछियसुयणिहसस्स ॥ केवलमभिन्नसुत्तचारित्तस्स ॥ सवुज्जमेणविकयं ॥ अन्नाणतवेबहुपडइ ॥ १ ॥ अर्थ ॥ अपरिछियके०नथी जाण्यो सुयणिहसस्सके०श्रुतरहस्यजेणे शेषंसुगमं ॥ १ए ॥

तेतोऋजुभावेएकाकी ॥ चालेतेहनेजुत्तरे ॥ वाम्यकुवा
सनजेअकुवासन ॥ देशाराधकउत्तरे ॥ सा० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवे ज्ञानीथी अलगा क्यारे थवुं तथा शा कारणे एकाकी रहेवुंपडे ते असिवादिककारण घणांछे. यतः असिवेउंमोयरिए॥ रायभएछाभियउत्तमठेय॥ फिडियगिलाणेअइसे ॥ सदेवयाविवआयरिए ॥ १ ॥ एमकारणोनाअर्थविस्तारेंलख्याछे पण अहींलखतांग्रंथवधे माटेलखतानथी पणएक अशिवकारणलखीयेंछेयें जे साधु बारवर्ष आगलथी ज्ञानादिक अतिशयेंकरी खबरराखे जेअमुकवर्षेअशिवथशे अने कदाचित

बारवर्ष अगाउ उपयोगनरह्यो होयतो ह्यारे, ते नही तो दशवर्ष अगाउ, एमयावत् एकवर्षअगाउपण उपयोगराखे. तेपणउपयोगनरह्योहोयतो ज्यारें अशिवजाणेतेवारे साधुस्यांथीविहारकरे तेमांकोइक ग्लानसाधु होय तेविहारकरीशकेनही तेवारे एवाकारणेएकला ज्ञानीविना पणहोय तेमांपण १ साधुजद्रक अने गृहस्थप्रांत २ तथा साधु प्रांतअनेगृहस्थजद्रक ३ तथासाधुजद्रकअनेगृहस्थपणजद्रक ४ तथासाधुप्रांतअनेगृहस्थपणप्रांत एमचोजंगीथाय इत्यादिकसर्वेउंघनिर्युक्तिमांविस्तारछे तेजोजो हवेअक्षरार्थलखेछे जेसाधुरुजुजावेके० जद्रकथकां पूर्वोक्तरीते एकाकीचालेके० रह्याहोय तेहने जुत्तके० कोइकपूर्वोक्तरीते एकाकीपणुंयुक्तछे पणअन्यथानही इतिजावः वलीबेप्रकारनाघटचाल्याछे एकजावित अने बीजोअजावित तेमांअजावितते नवाघट अनेजावितना बेजेद एकशुजद्रव्येंजावित बीजाअशुजद्रव्येंजावित तेवलीएकेकनाबेबेजेद एकवाम्य बीजो अवाम्य. जेवाम्यतेवासनाटालीशकीयें अने जे अवाम्यतेवासनाटालीनशकीयें तेमांकुवासनावमवायोग्यहोयतेरुडाजाणवा एवाम्यकुवासन एटलापदनोअर्थथयो अने जे अकुवासनाके०कुवासनायेंवास्याजनथी एवानवा घटके०घडाछे तेपणरुडा एमविशेषावश्यकमांछे अथवा वाम्य अवाम्य घटनीजावना नंदिसूत्रनी वृत्तिथी जाणवी. उक्तंच पयइहिंजद्दजावा ॥ कुवासणावासियाविनोडुठा ॥ उज्जुमइणोसुकंखा ॥ तेदेसाराहगाउत्ता ॥१॥ एवादेशाराधकयुक्तहोयते पूर्वोक्तकारणेंएकाकीपणे गीतार्थविनारहे इतिजावः ॥ २० ॥

अज्ञानीगुरुतणेनियोगें ॥ अथवाशुजपरिणामरे ॥ कम्म
पयमीसांखेसुदृष्टि ॥ कहियेंएहनोठामरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली अज्ञानी अगीतार्थने गुरुतणेनियोगें आज्ञा परवशें थकां पण रुजु मार्गेवर्त्ते छे अथवा शुजपरिणामवंतछे गुणनो रुचीवंतछे तो कम्मपयडीनीसांखे तेने सुदृष्टीवंत कहियें एनो स्थानक सम्यक्दृष्टीगुणठाणो जाणवो ॥ २१ ॥ एगाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिना करेला टबा उपरथी लख्योछे ॥ २१ ॥

जेतोहठथीगुरुनेछांमि ॥ जम्नचरणपरिणामरे ॥ सर्वउद्य
मेंपणतसनिश्चय ॥ कांइनआवेठामरे ॥ सा० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेतोके० जेवली जम्नचरणपरिणामके० जेहना चारित्रना परिणाम जांग्याछे एहवोथको हठकदाग्रहथकी गुरुने छांडीने सर्वप्रकारें निन्हवादिकनीपेठे उद्यमेंके० कष्टउद्यमकरेछे पण तसके० तेना कष्टप्रमुखसर्व निश्चयकरीनेकोइनआवेठामके० कांइ लेखे नलागे यतः आणाए तवो आणाइ ॥ संजमोतहयदाणमाणाए ॥ आणारहिउंधम्मो ॥ पलालपुलुवपडिहाइ ॥ १ ॥ इतिसंबोधसित्तरीमध्येकह्युंछे ॥ २२ ॥

आणारुचीविणचरणनिषेधें ॥ पंचाशकेंहरिजद्दरे ॥ व्यव
हारेंतोथोडुंलेखे ॥ जेहसकारेंसद्दरे ॥ सा० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ जेने परमेश्वरनी आज्ञानीज रुचीछे तेतोचारित्रनेयोग्यछे पण एवीआज्ञा रुचीविना चरणनिषेधेंके० चारित्रनीनाकहीछे शामाटे जे आज्ञारुचीनथी तोबीजोकष्टअनुष्ठानकोनी आज्ञायेंकरेछे यतः आणारुइस्सचरणं ॥ तप्रंगेजाणकिंनजग्गंति ॥ आणंचअइक्कंतो ॥ कस्सायसाकुणइसेसं ॥१॥ इति ते जेआज्ञासहितकरेछे तेचारित्र अने आज्ञाविना पंचाशकनेविषे हरिजद्रसूरिचारित्रने निषेधेछे व्यवहारेंतोके०शुद्धसमाचारीसहीत व्यवहारपालेतो पोतानी शक्तिप्रमाणें थोडुंकरे तोपण लेखामांछे एटले आज्ञासहित थोडुंकरे तेलेखेछेशामाटे जेथोडुंपणअनुष्ठानते सकारेंके०सत्यकरे अने सद्दके० शब्दते आगमकहियें केमके चारप्रमाण कह्यांछे तेमां आगमप्रमाणने शब्दप्रमाणकरी बोलाव्युंछे माटे आगम सत्कारेतोथोडो व्यवहार पण प्रमाणछे अनेबीजुघणुंकष्ट तेनिष्फलछे ॥ २३ ॥

शिष्यकहेजोगुरुअज्ञानी ॥ जजतांगुणनिधिजाणीरे ॥ जोसु
वासनातोकिमत्यजतां ॥ तेनेअवगुणजाणीरे ॥ सा० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवेइहांशिष्यकहेछे के जोगुरुअज्ञानीछे तोपणतेहने जजतांके० सेवतांथकांगुणनिधिजाणवो जोसुवासनाछे तोकेवाप्रकारे तेहने अवगुणीजाणीनेत्यजीयें ॥२४॥ एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिना टबामांथी लख्योछे ॥

गुरुबोलेशुजवासनकहियें ॥ पन्नवणिजसुजावरे ॥ तेआ
यत्तपणेछेआद्यें ॥ जशमनेजद्रकजावरे ॥ सा० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ गुरु कहे हे शिष्य जे शुजवासना ते पन्नवणिज्ज स्वजावछे एटले जे समजाव्योसमजे एवो जेनो स्वजावछे तो एवोजेहोय तेतो आद्येंके० प्रथम गुरुने आयत्त पणेके० वशवर्तियें होय वली जशमनेके० जेहना मननेविषे जद्रकजावछे ते शिष्य आज्ञारुची जाणीयें ॥ २५ ॥ एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाऊपरथी लख्योछे ॥

सूधुंमानीसूधुंथातां ॥ चउजंगीआचाररे ॥ गुरुकहणेंते
दमांफलजाणी ॥ लहीयेंसुजशअपाररे ॥ सा० ॥ २६ ॥

अर्थ॥ एक सूधुंमाने अने सूधुंकरे, बीजो सूधुंमाने अने असूधुंकरे, त्रीजो असूधुंमाने अने असूधुंकरे, चोथो असूधुंमाने अने सूधुंकरे इत्यादिक शब्दें चउजंगी आचारांगादिक सूत्रमां कहीछे तेमांअशुद्धनावेजांगा त्याज्यछे अने शुद्धनावेजांगा ते

आह्यछे ते आंगामां फलहोय एम जाणीने गुरुसेवामां रहीयें तो अपारके० घणोसुजश लहीयें ॥ १६ ॥ एगाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाऊपरथीलख्योछे ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ राजगीतानीदेशी अथवा सुरतिमहिनानी ॥

कोइकहेगुरुगच्छगीतारथसारथशुद्ध ॥ मानुपणनविदि
सेजोतांकोईविबुद्ध ॥ निपुणसहायविनाकह्योसूत्रेएक
विहार ॥ तेहथीएकाकीरहेतांनहीदोषलगार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पूर्वढालमां गीतार्थ वर्णव्या हवे एवा गीतार्थ गुरुपासे वसवुं ते आ ढालमांकहेछे कोइक आगमना रहस्यने अजाणतोथको आगमअनुंशरणकरी बोलेछे जे गुरुके० गुरुआदिक गछके० सुविहितनोसमुदाय वली गीतार्थनो सारथके० समुदाय संघसार्थौतुदेहिनां इतिसामान्यकांडवचनात् एवा शुद्धके० पवित्र ते गुरु,गछ,गीतार्थ सर्वने मानुके० अंगीकारकरुंछुं पण ते जोतांथका कोइविबुद्धके० कोइडाह्यापंडित नविदिसेके० देखातानथी अमारी नजरमां कोइ आवतानथी निपुणसहायके० डाह्यानीसखाइनमले तोतेविना सूत्रेंके० उत्तराध्ययनसूत्रनेविषे कह्युंछे जे एकविहारके० एकलाविहारकरीयें उक्तंचकाव्ये ॥ नवालभिज्जानिउणंसहायं ॥ गुणाहियंवागुणउसमंवा ॥ इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जाकामेसुअसज्जमाणो ॥ १ ॥ एम तेसूत्रमां एकाकीविहारनी आज्ञाछे माटे एकाकीरहेतांथकांलगारदोषनथी ॥ १ ॥

अणदेखंताआपमांतेसविगुणनोयोग ॥ किमजाणेपरमां
व्रतगुणनोमूलवियोग ॥ छेददोषतांईनवीकह्याप्रवचनेसु
निकुशील ॥ दोषलवेंपणथिरपरिणामीबकुसकुशील ॥२॥

अर्थ ॥ हवे तेने उत्तर आपेछे जे एमकहेछे तेप्राणी आपमांके० पोतामां सर्व गुणनो योगके० संयोगने अणदेखतोथको एटले एन्नावजे पोते सर्वगुणीतो थयोनथी तो पोते दोषवंतथको केवीरीते परमांके० बीजामां व्रतगुणनोमूलवियोगके० व्रतनो गुण मूलथी नथी एमशीरीतेंजाण्युं केमके गुरुआदिकमांतो कांइक गुण हशेज तोदोषनोलेश देखीने गुरुने मूकाय नही गाथा ॥ इयत्ताविपरिमङ्गा ॥ मज्जताणियगुरुनमुंचंति ॥ सवगुणसंपउंगं ॥ अप्पाणंमिविअपिछंता ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे तथा छेददोषतांइके०दसप्रकारना प्रायश्चित्तमां सातमो छेददोषलागे तिहां लगें प्रवचनेके०सिद्धांतनेविषे मुनिने कुशीलके०कुशीलिया हीणानथीकह्या यतः छेयस्सजावदाणं ॥ तायंमेगंपिनोअइक्कमइ॥

एगंअइक्कमंतो ॥ अइक्कमेपंचमूलेणं ॥ १ ॥ इतिवचनात् अने थोडो दोष देखीने गुरुने नही आदरे तो सर्वनो त्यागकरवो पडशे तेकहेछे. जे पांचप्रकारना निर्ग्रंथ अने चउदप्रकारनी अभ्यंतरगंठी तथा नवप्रकारनी बाह्यगंठी तेथी मूकाणा ते निर्ग्रंथ कहीयें यतः गंठोमिछत्ताई ॥ घणाईउअंतरोयववओय ॥ डुविहाउतउजे ॥ निग्गंठंतितेहुंतिनिग्गंथा ॥१॥ मिछंत्तंवेयतियं ॥ हासाइछक्कयंचनायवं ॥ कोहोईणचउक्कं ॥ चउदसअभिंतरागंथी ॥ २ ॥ धणधन्नखित्तकुवयं ॥ वछु डुपय कणय रूप चउचरणा ॥ नववाहिरयागंथी ॥ एवंतेहुंतिपुणपंच ॥३॥ सुगमं नवरं चउचरणाके०चतुष्पदइति १ पुलाग २ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनातक एनांलक्षण जगवतिसूत्रनां शतक २५ में उद्देशेछठेजोजो एपांच कह्या तेमां १ पुलाग २ निग्रंथ ३ सनातक एत्रणतो प्रतिसेवा रहित जाणवा अने बकुस तथा कुशील ए बेहुने प्रतिसेवाछे गाथा ॥ मूलुत्तरगुणविषया ॥ पडिसेवासेवएकुशिलोय ॥ उत्तरगुणेसुबहुसो ॥ सेसापडिसेवणारहिया ॥ ४ ॥ तेमांपणनिग्रंथ तथा सनातकतो श्रेणीविछेदगइ तेमांगया तथा पुलागलब्धिपणविछेदगइ तेमाटे एत्रण जंबुस्वामी साथे विछेदगयां तेहेतुयें बकुस तथा कुशील एबेहुथी तीर्थ चालेछे यतः निग्गंथ सिणायाणं ॥ पुलागसहियाणतिएहवुछेउ ॥ समणाबसकुशीला ॥ जातिछंतावहो हिंति ॥५॥ जेमाटेते छठासातमा गुणठाणावंतहोय ते अंतरमुहूर्त्ते अवश्यपरावर्त्तथाय तेवारे छठेगुणठाणेआवे तिहांअवश्य प्रमत्तदोषनो लवमात्र देखीने गुरुनो त्याग केम थाय अने ते त्यागकरीशतो जगतमां आजनाकालेंनिर्दोषकोइ नहीलाजे तेमाटे लवमात्र दोषलागते पण बकुस तथा कुशील एबेहु जातिनामुनि ते थिरपरिणामी एटलेतेहना परिणाम अतिउन्मार्गें नथी चालता अथवा थिरपरिणामीके०एवेमुनि थिरपरिणामेछे एटले पंचमआरानाछेकालगे एहिजछे माटे न छंडाए इतिजावः एहनोविस्तार धर्मरत्नग्रंथनीवृत्तिथीजाणवो ॥ २ ॥

ज्ञानादिकगुणपणगुरुवादिकमांहेजोय ॥ सर्वप्रकारें
निर्गुणनविआदरवोहोय ॥ तेछंडेगीतारथजेजाणेवि
धिसर्व ॥ ग्लानौषधदृष्टांतेमूढधरेमनगर्व ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानादिकके०ज्ञानदर्शनचारित्रमांहेलोहरकोइ उत्कृष्टगुण पण गुरु आदिकमां जोइयें पण सर्वप्रकारेंके०सर्वथा निर्गुणहोयतो न आदरीयें माटेजेगीतार्थ होय तथा जे प्राणी उत्सर्गअपवादप्रमुखनी सर्वविधि जाणता होयते छांडेके० गछने पण निर्गुण जाणीने छांडे तेउपरदृष्टांत कहेछे ग्लानौषधके०जेमरोगीनेऔषध तेजिहांलगें रोग तिहांलगें औषध तेमजिहांलगे अगीतार्थ तिहांलगें औषधसदृशगछ अने

ज्यारेनिरोगीसदृशगीतार्थ थयो त्यारे औषधरूपगछनुं कामनही तेमाटे मूढके०जेमूर्खछे तेअहंकारमनमांधरीने गछबाहिरनिकलेछे इहांकोइबीजीरीते ए दृष्टांत जोडे छे, जेमग्लाननेऔषधआपे अनेआहारनआपे माटेरोगीनेछांड्योनकहेवाय पण सामो रोगीने उपकारकर्यो कहेवाय तेमजगीतार्थगछछांडे तेछांड्योनकहीयें पणउलटोगछने उपकारकर्यो एमकहीयें यतः नाणाइगुणविउत्तं ॥ जोचयइगुरुगणंचगीयछो ॥ अणुकंपेइतमेवय ॥ आउरमेसज्जमिवत्तीए ॥ १ ॥ इतिवचनात् एवेव्याख्याछे माटेजेगीतार्थनी दृष्टीमां ठरे ते खरुं इतिभावः ॥ ३ ॥

तेकारणगीतारथनेछेएकविहार ॥ अगीतार्थनेसर्व
प्रकारेंतेनहीसार ॥ पापवरजतोकामअसजतोभां
ख्योजेह ॥ उत्तराध्ययनेगीतारथएकाकीतेह ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेकारणके०पूर्वेकह्युंतेकारणे गीतार्थनेज एकाकी विहारनी आज्ञाछे यतः गीयछोयविहारो ॥ बीउगीयछनिस्सिउभणिउ ॥ इत्तोतइयविहारो ॥ नाणुन्नाउजिणंदेहिं ॥१॥ इतिआवश्यकनिर्युक्तौ अने अगीतारथके० मूर्खने सर्वथा जे एकलो विहार करवोते सारके०प्रधान नथी रुडोनथी इतिभावः तथा पापनेवर्जतो कामने असजतो एटले कामक्रीडामां जे तत्परनही भांख्योजेहके०उत्तराध्ययननामेंसिद्धांतमां जेभांख्योछे के गीतार्थहोय गुणीहोय तेएकाकीरहे तेकाव्यपूर्वेलख्युंछे " नवालभिज्जानिउणं सहायं " इत्यादिक विचारीजोजो ॥ ४ ॥

पापतणोपरिवर्जननेवलिकामअसंग ॥ अज्ञानीनेन
वीहुएतेनविजाणेभंग ॥ अज्ञानीशुंकरशेशुंलहशेशुभ
पाप ॥ दशवैकालिकवयणेपंचाशकआलाप ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेएकाकी होयते पापनुंवर्जन केमकरे?वलीकामके०कंदर्पनासंगनो जे त्याग करवो ते एकाकी मूर्खने केमहोय? माटे एविचार अज्ञानीने नहोय तेअज्ञानीने तेना भांगानी खबरनपडे के आ अवसरे शुद्धजलेवुं के आअवसरे अशुद्धआहार होय तोपणलइयें इत्यादि भांगानी खबरनपडे वली अज्ञानीपुरुषहशे तेजीवअजीवादिक जाण्याविनाशुंकरशे एटलेसंयमानुष्ठानशुंकरशे तथा शुभपापके०पुण्य अने पाप ते प्रते अज्ञानीशुंजाणशे ते दशवैकालिकवयणेके०दशवैकालकिसूत्रनावचनथकी यदुक्तं॥तत्र अन्नाणीकिंकाहि किंवानाहीछेयपावगं इत्यादिचतुर्थाध्ययने तथा पंचाशकग्रंथमांपण एवोज आलापके०आलावोछे एटले वचन छे ॥ ५ ॥

७

एकविहारेदेखोआचारेंसंवाद ॥ बहुक्रोधादिकदूषण
वलीअज्ञानप्रमाद ॥ वलियविशे[illegible] क
विहार ॥ पंखीपोतदृष्टांतेजाणोप्रवचनसार ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीएकाकी विहारकरे तेहनो आचारेंके०आचारांगनेविषे संवादके०वचनछे तेकहेछे जे तेआचारांगनापांचमाअध्ययनना प्रथम उद्देशानेविषे देखोके०जुउ एकविहारीने बहुक्रोधआदिशब्दें मान प्रमुखपणलेवा. यथा ॥ इहमेगेसिंएगचरिया जवति बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोजे बहुरते बहुनडे बहुसठे बहुसंकप्पे आसवसक्कीपलिउंवछन्ने एमांविषमपदनोअर्थलखियेंछेयें बहुरतेके०बहुपाप बहुनडेके० नाटकियानीपेठे जोगनेअर्थें बहुवेषनाकरनारा तथा बहुसठेके०अनेक प्रकारेंशठ तथा बहुसंकल्प उपजे आसवके०आश्रवजेहिंसाप्रमुख तेहनो सक्किके०सक्त एटलेसंगी अने पलिउंवछन्नेके०पलितएटलेकर्मेंकरीअवछन्न एटले ढांक्योइति. वलीबीजादोषकहेछे अज्ञानप्रमादथाय एटलेएजावजे एजआलावेपदछे उठियवादंपवयमाणे मामेकेइअदक्खु अन्नाणपमायदोसेणं इति उठियवादंपवयमाणेके०अमें संयमचारित्रमां उजमालथयाछेयें एमवोलता मामेकेइअदक्खुके०आश्रवमांप्रवर्त्ततांथकांजाणेमुफनेकोइदेखतुंनथी एम अन्नाणपमायदोसेणंके०अज्ञानप्रमाददोषे सहितप्रवर्त्ते तेनेवलीविशेषेंकरीने आचारांगमां अव्यक्तविहारवार्योछे अव्यक्तके०वयपणपूरीनही अनेश्रुतपणपूरुंनही तेहनेअव्यक्त कहीयें आचारांगपंचमाध्ययननेउद्देशेचोथेकह्युंछे यथा ॥ गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स दुज्जातं दुपरक्कं तंजवति अवियत्तस्सजिक्कुणो एहनोअर्थ ॥ गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स के०एकगामथी वीजेगाम एकाकी विचरताने दुज्जातंके०दुष्टगमनछे अर्हन्नकमुनिनीपेठे दुपरक्कंतंके०दुष्टपरआक्रांतछे थुलिजद्रनाईर्षावंतसिंहगुफावासिमुनिने जेमकोश्यायेंआक्रम्या तेम सर्वमुनिने नहोय तेमाटे विशेषणकरेछे अवियत्तस्सजिक्कुणोके०अव्यक्तजिक्कुने एटलेअव्यक्तजिक्कु बेप्रकारनाछे एकश्रुतअव्यक्त बीजोवयअव्यक्त जेआचारप्रकल्प न जण्याहोय अनेगछमांरह्याहोय तेश्रुतअव्यक्तकहीयें तथागछथीनिकल्या ते नवमांपूर्वनी त्रीजीवस्तुनजण्याहोयतेगछनिरगतअव्यक्तकहीयें गछमां रह्याथका सोलवर्षनाथाय तिहांलगें वयअव्यक्त कहीयें अनेजे गछनिरगतते त्रीसवर्षनाथाय त्यांलगे वयअव्यक्तकहीयेंइतिइहांचोजंगी छे १ श्रुतअव्यक्त अने वयअव्यक्तहोय तेतोएकाकी विहारकरेज नही केमके संयमात्म विराधनाथाय माटे नकरे २ श्रुतअव्यक्त अनेवयव्यक्त तेपणअगीतार्थ माटे संयमात्मविराधनाथाय माटेतेमनेएकाकी विहार नकल्पे ३ श्रुतव्यक्त अनेवयथीअव्यक्त तेहनेपण नकल्पे बालपणाथकीकुलिंगी तथागृहस्थने पराजवनुंस्थानकहोयते

माटे ४ श्रुतव्यक्ततथावयव्यक्त तेहनेपणएकलमल्लप्रतिमाप्रमुखकारणें एकाकीपणेविचरवानी आज्ञा छे पणकारणविना नही इत्यादिक बहुवातछे तेआचारांगवृत्तिथीजाणवी एटलाजमाटे आस्तवननी मूलगाथामां विशेषपदमूक्युंछे माटे अव्यक्तने तोविशेषेंकरी सर्वथावार्यो तथाव्यक्तनेपणकारणविनावार्योछे तोअव्यक्तनेवार्योतेतुंशुंकहेवुं तेपंखीपोतदृष्टांतेंकरीजाणवुं जेमपंखीनो पोतके०बालक तेने पांखआवीनहोय अने उडवाजाय तो बीजा ढंकप्रमुख जनावर तेने उपद्रवकरे तेम अव्यक्तअगीतार्थ बालक होय तेहने परदर्शनी उपद्रवकरे जाणोप्रवचनसारके०एजैनागमनो सार जाणवो यतः काव्यं जहादियापोयमपक्खजायं ॥ सवासयापविउमणं मणागं ॥ तमचाइयातरुणपमत्तजाइं ॥ ढंकाइअवत्तगमंहरेज्जा ॥ १ ॥ माटे जेमपंखीपोताना बालकने सूंना मूकता नथी तेम मूर्खनेगीतार्थ एकलानमूके इतिभावः ॥ ६ ॥

एकाकिनेस्त्रीरिपुश्वानतणोउपघात ॥ भिक्षानिनविशु
द्धिमहाव्रतनोपणघात ॥ एकाकिसछंदपणेनविपामे
धर्म ॥ नविपामेपृछादिकविणतेप्रवचनमर्म ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे एकाकीविहारकरे तेने स्त्रीनो तथा रिपुके०शत्रुनो अने श्वानके०कुतरानो उपघातथाय तथा भिक्षा पण दोषसहित लीयेतो तेनेकोणनिषेधकरे माटे भिक्षानी शुद्धि पण नरहे तथा महाव्रतनो पण अनुक्रमें घातथाय गाथा ॥ डुठपसुसाणसावय ॥ इछिभिक्खाइदोसडुल्लिउं ॥ वयगाइधम्ममाइ ॥ तम्मारम्मोनएगागी ॥१॥ इतिपिंडनिर्युक्तौ तथा एगाणियस्सदोसा ॥ इछिसाणेतहेवपडिणीएय ॥ भिक्खविसोहिमहव्वय ॥ तम्हासबिइज्जएगमणं ॥२॥ इतिधर्मरत्नवृत्तौ जेएकाकी विहारकरे तेस्वछंदपणेविचरे पोतानेमते ऊपज्युं ते खरुं पण गुरुआज्ञानीअपेक्षा नरहे तेमाटेजे स्वमति कल्पनावंत ते धर्म नपामे यतः इक्कस्सकउधम्मो॥ सछंदमइगईपयारस्स ॥ इत्युपदेशमालायां तथा जे एकाकीहोयते पृछाके०वांचनापृछनादिकतेपण गुरुविनानपामे अने तेविना प्रवचनके० सिद्धांत तेनो मर्म जे रहस्यते केमपामे ॥ यतः ॥ कत्तोसूत्तछागम ॥ पडिपुछणचोयणावइक्कस्स ॥ विणउवेयावच्चं ॥ आराहणावमरणंते ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ७ ॥

सुमतिगुपतिपणनधरेएकाकीनिःशंक ॥ भावपराव
र्तेआलंबनधरेसपंक ॥ जुदाजुदाथातांथविरकल्प
नोभेद ॥ मोटा[illegible]लोकनाथाएधर्मउछेद ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सुमतिके०इर्यासमितिप्रमुखपांचसमिति तथामनादित्रणगुप्ति तेपण नधरेके०

नपामीशके केमके जेएकाकी विहार करनारहोयतेनिःशंकहोय कोइनीशंकानराखे एट लेअकार्य करवानुंचित्तथायतो कोइनीशंका नधरे सुखेअकार्यकरे गाथा ॥ पिल्लिज्जेस-णमिक्को ॥ पइन्नपमयाजणार्जनिच्चजयं ॥ कार्जमणोविअकज्जं ॥ नतरइकाऊणबहुमज्झे ॥ इत्युपदेशमालायां तथा चित्तनाअन्निप्रायतेन्नावकहीयें तेन्नावनुंजे परावर्त्तके०पलटाववुं तेणेकरीजेवापोतानाअन्निप्रायथाय तेवुंकांइक आलंबनपामीने तत्काल तेआलंबन ध-रेके०अंगीकारकरे तेआलंबन केवुंहोयतेकहेछे सपंकके०मेलुंहोय एटलेएन्नावजे चित्त-नाअध्यवसायतो क्षणेक्षणेपलटायछे तेचित्तना अन्निप्राय कोइक अवसरें हीणाथाय अने निमित्तपणतेवुंज मले तेवारें पोतेपणतेवोजथाय यतः एगयिवसेणबहुआ ॥ सुहा-यअसुहायजीवपरिणामा ॥ इक्कोयसुहपरिणर्ज॥चइज्जआलंबणंलहुं ॥ १ ॥ आलंबनहिण पामीने चइज्जके०संयमनेछांमे इत्युपदेशमालायां वली एकजणेएकलो विहारकीधो एटले बीजाने पणएकला विचरवानुंमनथाय तेमज त्रीजो तथा चोथो इत्यादिक जूदा जूदाथातां एटलेअवस्था नरहे तथा थिविरकल्पनोन्नेदथाय एटले आपमतें कोइक क्रिया एकरीतेकरे कोइकबीजीरीतेंकरे एमन्निन्नन्निन्नथाय तेथीलोकनांमन मोलाय जे अमुकसाधुकरेछेतेखरुंछे के अमुकसाधुकरेछेतेखरुंछे इत्यादिकविकल्प लोकने उपजे तेथी धर्मनो उच्छेदथाय कोइकपरप्रतित रहेनही तेवारें लोकमूलगोधर्ममूकीआपे गाथा ॥ सवजिणपडिकुठं ॥ अणवज्ञाथेरकप्पन्नेर्जय ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

टोलेपणजोन्नोलेंअंधप्रवाहनिपांत ॥ आणाविणनविसं
घछेअस्थितणोसंघात ॥ तोगीतारथउध्दरेजेमहरीजल
थीवेद ॥ अगीतारथनविजाणेतेसविविधिनोन्नेद ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली टोले पण जोन्नोलेंके०कदाचित टोलुंहोय नेजोन्नोलुंहोय तेमां कोइ गीतार्थनहोय तो तेटोलामां वसवुंतेपण अंधप्रवाहनिपांतके०आंधलानीज श्रेणीमांपमवुं थयुं एमजाणवुं कारणके आणाविनासंघनकहीयें पण अस्थितणो संघातके०हा-मकानो समूहजाणवो यतः एगोसाहुएगोय ॥ साहुणीसावर्जवसड्ढीवा ॥ आणाजुत्तो संघो ॥ सेसोपुणअठिसंघार्ज ॥१॥ एमसंबोधसित्तरीमांकह्युंछे ते माटेजेगीतार्थहोय ते-जसंसारसमुद्रमांथी नव्यजीवने उध्दरेके०उध्दारकरे जेम हरीजलथीवेदके०जेरीते श्री-कृष्णेसमुद्रमांथी वेदउध्दस्या एदृष्टांते तेनी कथाकहेछे शंखनामे दैत्यउपज्यो ते ब्रह्मा पासे वेदन्नणवाचेगो एवामां ब्रह्माने बगासुंआव्युं ते बगासुं उमहीनेपुरुंथयुं त्यारें ब्रह्मानुं मुखमोकलुंदेखी शंखदेत्यें विचास्युं जे वेदन्नणतां क्यारे पारपामीशुं माटे ब्रह्माना पेटमांप्रवेशकरी वेदलेइजाउं एमविचारी पेटमांपेसीने वेद लेइगयो नेसमुद्रमां

पातालमां जइपेठो पछी श्रीकृष्णप्रमुखें विचार्युं जे ब्रह्मा तो जूतसरिखा केम देखायछे एम विचार करतां श्रीकृष्णेजाण्युं जे शंखदेत्य चारेवेद लइगयोछे हवेहुं लेइआवुं एम विचारकरी मत्स्यावतारधरी शंखासुरना जवनमांगयो त्यांबालकनुंरूपधरी तेनीस्त्रीपासे बेठो तेस्त्रीयेंजाएयुंजे आपणे मनोहर बालक पाम्या पछीतेनेरमाडवाबेठी एटलामां शंखासुरनापेटमां चारेवेद वातोकरवा लाग्याजे आपणीवाहारकरवा ठाकोरजीआव्याछे तेवात सांजली शंखासुरे जाएयुंजे अनर्थथयो पछीस्त्रीने कह्युंजे बालकमूकीद्यो पणस्त्रीयेंनमूक्युं त्यारेंबालकने मारवादोड्यो तेथीस्त्रीयेंबालकनेमूकीदीधुं पछीतेबालकें तेदैत्य सायेयुद्धकरीमछरूपेंथइ दैत्यने मारी तेनापेटमांथी चारेवेद लइ श्रीकृष्णपाणीमांथी बहारआव्या तेमाटे प्रथम मछावतारलीधो एअधिकार शिवमार्गनाशासने दशावतारग्रंथमध्येकह्युंछे इहांदृष्टांते लख्युंछे वलीजे अगीतार्थ होयते उत्सर्ग अपवादादिक सर्व विधिउना जेदनजाणे माटे अगीतार्थनेएकलो विहारनहोय ॥ इतिजावः ॥ ए ॥

कारणथीएकाकीपणुंपणजाष्युंतास ॥ विषमकालमांतो
पणरुमोजेलोवास ॥ पंचकल्पजाष्येंजएयुंआतमरक्
णएम ॥ शालिएरंमतणेएमजांगेलहिएखेम ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली कोइ कहेशेजे श्रीउत्तराध्ययनमध्ये एकाकीपणानी हा केम कही यथा इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जकामेसुअसज्जमाणो ॥ इतिवचनात् ॥ तेने उत्तर जेगीतार्थहोय तासके० तेने कोइक कारणथी एकाकीपणुं पण जाष्युंके० कह्युंछे यथा तिहांज काव्य नवालजिज्जा निउणंसहायं ॥ गुणाहियंवागुण उसमंवा ॥ इतिवचनात् तोपणविषमकालमांके० आपांचमाआरामां हुंडाअवसर्प्पिणी कालमां रुमोजेलोवासके० जेलावसवुंतेजरुडुं पणएकाकी वसवुं रुडुं नहीं एमपंचकल्प जाष्यनेविषेकह्युंछे आतमरक्षणएमके० जेसंयमरूपआत्मा तेनी रक्षातेएमजथाय अथवा आत्मानेशरीर अजेदछेमाटे आतमके०शरीरनी रक्षापण एमके०एमजजेलावसतांथकां होय इहां शालितथाएरंडनीचोजंगीछे १ शालिनोवृक्षअनेशालिनीवाडी २ शालिनो वृक्षअनेएरंडनीवाडी ३ एरंडनोवृक्षअनेशालिनीवाडी ४ एरंडनोवृक्षअने एरंडनीवाडी एचोजंगीमांथी शालितथाएरंडना त्रणजांगे वसतांतो खेमके०कल्याणछे इतिअक्षरार्थ ॥ जावार्थतोएछेजे शालि सरिखागीतार्थ एटले आचार्य अने एरंडसरिखा मूर्ख तेनी चोजंगीदेखाडेछे १ गीतार्थआचार्य अने जे गीतार्थनो परिवारते वाडी पणगीतार्थनी २ गीतार्थआचार्य अने मूर्खपरिवारनीवाडी३ मूर्खआचार्यअने गीतार्थनापरिवारनीवाडी एत्रणजांगालगेकोइरीते आज्ञाछे पणमूर्खआचार्य अनेमूर्खपरिवारएजांगोतो सर्वथाज

निषेधछे यतःजन्नयपंचकुशीला ॥ गणीवायगयविरपवत्तनिग्गंथा ॥ तेणएरंडसमाणं ॥ चउज्ञ्नंगीएनायव्वो ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

एकाकीपासत्थोसछंदोगतयोग ॥ ठाणवासीउसन्नो
बहुदूषणसंयोग ॥ गछवासीअणुजंगीगुरुसेवीवलि
होय ॥ अनियतवासीआउतोबहुगुणएमजोय ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ १ एकाकी केवलधर्मबंधुरहित ते पासछो २ ज्ञानादिकपार्श्ववर्त्तिस्वछंदो ३ गुरुआज्ञाविकल एटलामाटे गतयोगकहिये ४ ठाणवासीकेंस्थानकवासी तदेकत्रविहार नित्यवासीत्यर्थः ५ अवसन्न तेआवश्यकादिकें शिथिलमनपरिणामी तेउसन्नो ए पांचपद ते बहुदूषणसंयोगीहोय ते क्यारे कोइकने एकपद क्यारे बेपद क्यारे त्रण पद क्यारे चारपद अथवा पांचपदना संयोगीथाय जेमएकपदस्थानक वधे तेमदोष वृद्धिपण जाणवी एवं २६ जेदथाय इत्यादिकअनेकप्रकारेंदोषवृद्धिथाय यतः एगागी पासछो ॥ सछंदो ठाणावासीयउसन्नो ॥ ज़ुगमाइसंयोगा ॥ जह बहुआतहगुरुहुंति ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां एनाद्धिकादिसंयोगकरतां २६ जेदथाय तेमांद्धिकसंयोगी १० तथात्रिकसंयोगी १० चतुःसंयोगी ५ पंचसंयोगी १ एवं २६ जांगादोषवृद्धिनाजाणवा तेमज २६ गुणवृद्धिना जाणवा ते देखाडेछे १ गछगत २ अणुयोगी ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आयुक्त एहनापणएमज छवीसजेद गुणवृद्धिनाथाय जेमजेमगुणवधे तेमतेमविशेष आराधकथाय अनेदोषवृद्धियें विराधकपणुंवधे तथागुणवृद्धियें आराधकपणुंवधे तेमां दोषवृद्धिना २६ जांगालखियेंछैयें.

द्धिकसंयोगी १० जांगा १ एकाकी—पासत्थो २ एकाकी—सछंदो ३ एकाकी—ठाणवासी ४ एकाकी—उसन्नो ५ पासत्थो—सछंदो ६ पासत्थो—ठाणवासी ७ पासत्थो—उसन्नो ८ सछंदो—ठाणवासी ए सछंदो—उसन्नो १० ठाणवासी—उसन्नोः

त्रिकसंयोगीजांगा १० लखेछे १ एकाकी—पासत्थो—सछंदो २ एकाकी—पासत्थो—ठाणवासी ३ एकाकी—पासत्थो—उसन्नो ४ एकाकी—सछंदो—ठाणवासी ५ एकाकी—सछंदो—उसन्नो ६ एकाकी—ठाणवासी—उसन्नो ७ पासत्थो—सछंदो—ठाणवासी ८ पासत्थो—सछंदो—उसन्नो ए पासत्थो—ठाणवासी—उसन्नो १० सछंदो—ठाणवासी—उसन्नो

चतुसंयोगीजांगा ५ लखेछे १ एकाकी—पासत्थो—सछंदो—ठाणवासी २ एकाकी—पासत्थो—सछंदो—उसन्नो ३ एकाकी—पासत्थो—ठाणवासी—उसन्नो ४ एकाकी—सछंदो—ठाणवासी—उसन्नो ५ पासत्थो—सछंदो—ठाणवासी—उसन्नो

तथापंचसंयोगी १ जांगोथयो एवं २६ थाय ते द्धिकसंयोगीथी त्रिकसंयोगीदूषणे

चारी तेथीचतुःसंयोगीदूषणेचारी चतुःसंयोगीथीपंचसंयोगीदूषणेचारी हवेदोषनेव्यतिरेके गुणवृद्धिपणोदेखाडेछे १ गछवासीके०गछमांवसे २ अणुउंगीके०अर्थधारे ३ गुरुसेवीके०गुरुआदिकनीसेवाकरे ४ अनियतवासीके०उग्रविहारी ५ आयुक्तते आउत्तोके० उपयोगीहोय एपांचपदमां जेमजेमएकेकापदनीवृद्धिथाय तेमतेम बहुगुणहोय अने विशेषआराधकथाय यतः १ गछगउ२ अणुउंगी ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आउत्तो॥ संजोएणपयाणं ॥ संयमआराहगाजणिया ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ११ ॥

दोषहाणीगुणवृद्धिजयणाभाषेंसूरि ॥ तेशुभपरिवारेंहुये विघनटलेसविदूरि ॥ देवफलेजोआंगणेतुजकरुणासुर वेलि ॥ शुभपरिवारेंलहियेंतोसुखजसरंगरेलि ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एम दोषनी हाणीथाय तथागुणनीवृद्धिथाय अनेजयणाके०जतनाथाय एटले बहुलाभ अल्पदोपेंप्रवृत्तिथाय तेएहवागुण क्यारेंआवे तेहनोउत्तर भाषेसूरिके०आचार्यभाषेछे के ते शुभपरिवारेंहुयेके०एवागुणतोपरिवारशुभहोय तिवारे आवे तथा विघ्नसर्वेदूरटले तेमाटेहेदेव तुजके०तमारीकरुणारूपजे सुरवेलीके०कल्पवृक्षनीवेलडी ते आंगणे फलेके०माराआत्मरूपजेआंगणुं तिहांजोसफलीथाय तोतेशुभपरिवारपामियें एटलाजमाटे उपदेशमालाना कर्तायेंकह्युंछे यतः सीहगुरुसुसिस्साणं ॥ भद्दंगुरुवयणसद्दहंताणं॥वयरोकिरदाहीवा ॥ यणत्तिनविकोवियंवयणं ॥१॥ ते माटेशुभपरिवारपामवोदुष्करछे तेशुभपरिवारेंकरी सुखयशनी रंगरेलपामियें एटले सेहेजानंदस्वरूपनारंगनीरेल तेहनोप्रवाहपामीयें एसातमीढालमां कह्युंजेहेदेव तमारीकरुणारूप सुरवेलीजोफलेतो सुखयश पामियें तेमाटे हवे आठमीढालमां करुणा विशेष जे दया तेहनुं स्वरूप कहेछे ॥१२॥

॥ ढालआठमी ॥

॥ प्रभुचित्तधरीनेअवधारोमुजवात ॥ एदेशी ॥

कोइकहेसिद्धांतमांजी ॥ धर्म अहिंसासार ॥ आदरियेंतेएकलीजी ॥ त्यजीयेंबहुउपचार ॥ मनमोहनजिनजी ॥ तुजवयणेमुजरंग ॥ १ ॥

अर्थ॥वलीकोइकएमकहेछेके सिद्धांतसूत्रनेविषेएमकह्युंछे जे धर्मअहिंसाके०दयाधर्म तेजसारके०प्रधानछे नह्निअहिंसासमोधम्मोइतिवचनात् माटेएकलीअहिंसाजआदरीयें बीजा बहुके०अनेक उपचारके०उपायने त्यजीयेंके०मूकीदइयें एमकहेछे माटे हे मनमोहनजिनजी अथवामननेमोहनाउपजावणहार एवाजेजिनेश्वरतेनोसंबोधनकरियें जे हेमनमोहनजिनजी तुजवयणेके०तमारावचननेविषेमुजनेरंगछेरीजछे ॥ १ ॥

नविजाणेतेसर्वत्यजीने ॥ एकअहिंसारंग ॥ केवल
लौकिकनीतिहोवे ॥ लोकोत्तरपंथभंग ॥ मन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरआपेछे के तेअज्ञानीनथीजाणता नथीसमजता जे सर्वपूजा प्रभावना सामिवत्सलप्रमुखकरणीत्यजीने मात्रएकअहिंसानेविषेज रंगके०रीझकरेछे तेथी केवल लौकिकके०व्यवहारनीतिकरीने एटलेलौकिकव्यवहारमां एक दया दया पोकारे तेसारीलागे पण लोकोत्तरमार्ग जे जिनमार्गतेहनोभंगथायछे एटले एकलीदयामांजिनशासननथी पणजिनआज्ञामांशासनप्रवर्त्तेछे एकलीदयायेंतो पडिक्कमणापोसहप्रमुख पणनकरीशके तोपूजाप्रभावनानीवाततो वेगलीरही इतिभावः ॥ २ ॥

वनमांवसतांबालतपस्वी ॥ गुरुनिश्राविणसाध ॥ एक
अहिंसायेंतेराचे ॥ नलहेमर्मअगाध ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एकतोबालतपस्वी जे अज्ञानतपस्वीतेपणवनमांवसतो एटले घोरकष्टनोकरणहार तथा बीजो गुरुनिश्राविणके०गुरुआणाविना एवेहु एकअहिंसायेंतेराचेके०एक अहिंसामुखेकहे एटलेबाह्यजीवनीरक्षाकरवी एटलामांजरीझछे पणतेअहिंसानो अगाधके०ऊंडोमर्मछे तेमूढ नजाणे एटलेस्वआत्माहणायतेहिंसा अनेस्वआत्मानहणायतेअहिंसा एहवामर्मनीतेनेखबरनथी ॥ ३ ॥

जीवादिकजेमबालतपस्वी ॥ अणजाणंतोमूढ ॥ गुरुलघुभा
वतथाअणलहेतो ॥ गुरुवर्जितमुनिगूढ ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेकोइकदेशेजे बालतपस्वी तथासाधुएबेबराबरकेमथाय तेनेकहेछे के जेमबालतपस्वी तेजीवअजीवपुन्यपापप्रमुखनुंयथार्थ स्वरूपतेमूढ अणजाणंतोके०अणसमजतोथको जेमतेहोय तथाके०तेमज गुरुलघुभावअणलहेतोके०हलकाभारे लाभखोटने अणजाणतोजे आवुंप्रायश्चित्तकरशुं तेकरतांबीजीकरणीमांयद्यपिप्रायश्चित्तछे तोपण लाभघणोछे इत्यादिकवातोथीअणसमजुछे जेमाटेगुरुवर्जितमुनिके०गुरुयेंकरीरहित एहवाजेमुनिते गूढके०गुप्तरहस्यजेहोय तेवागुरुअनेलघुभावने न लहे इतिभावःएरीतेंगूढ शब्दगुरुलघुभावनेजोडीयें ॥ ४ ॥

भावमोचकपरिणामसरिखो ॥ तेहनोशुभउदेश ॥ आ
णारहितपणेजाणीजे ॥ जोइपदउपदेश ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ भावमोचकपरिणामके०बौद्धादिकनापरिणामसरिखोछे एटलेबौद्धादिक एम मानेछे के जेदुःखीहोयतेनेमारीयें तोदोषनलागे कारणके तेनेमारतांनथी पण उलटोदुः-

खथीमूकाविर्येंछेयें एरीतेमाछुंकृत्यकरीने तेनेरुडुंमानेछे तेसरिखो तेहनोके०ते ढुंढकादिक अज्ञानीनो शुंजतछे शके०शुद्धप्रवर्तनजाणवो एटलेयद्यपितेओनीअहिं साद्धव्यथीछे पण परिणामे हिंसाजजाणवी तिहां हेतुकहेछे जे आणारहितपणेजाणीजे एटले आज्ञारहितमाटे यतः आणाएतवोआणाए॥संयमोतहयदाणमाणाए॥आणारहिउंधम्मो॥पलाल पुलुवपडिहाइ॥१॥ इतिवचनात् ए अर्थउपदेशपदग्रंथमांजोइने जाणीजेके०जाणीयें यतः जंअन्नाणीमूढो॥जंचअगीयत्थनिस्सिउंविहरे॥सोसुग्गयकम्मसरिसोपावयबंधेविलिप्पंति

एकवचनफालीनेवांफे ॥ बीजालौकिकनीति ॥ सकल
वचननिजठामेजोडे ॥ एलोकोत्तरनीति ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एगाथानोअन्वयकरीअर्थ करेछे जेएकलौकिकवचनफालीने बीजासर्व नीतिनांवचनछांडेछे इत्यन्वयः तेलौकिकवचनएजेकोइनेनहणवो तेऊपरआगमनापाठदेखाडेछेजे सव्वेपाणा सव्वेभूआ सव्वेजीवा सव्वेसत्ता नहंतव्वा इत्यादिकआगमनुंएहवुं वचनछे अनेयद्यपिलोकपणप्रौढमार्गेएम कहेछे जे कोइनेनमारवो तेमाटे एवचननेलौकिकवचन कहीयें तेलौकिकवचनपकडीने बीजांसर्वे नीतिवचनके०लौकिकथीबीजां जे लोकोत्तरवचन दानदेवपूजासाहमीवत्सलप्रमुख ते नीतिवचन कहीयें ते सर्वछांडिदेछे पणतेसर्वखोटुंकरेछे केमके जे सकलवचननिजठामेजोडेके०समस्तसिद्धांतनांवचनजेछे तेने ठेकाणेजोडे तेलोकोत्तरनीतिजाणवी सकलवचनएपदबीजीवारजोडवुं एटलेएभाव जे गुणठाणामाफक सहुसहुनीहदप्रमाणे समस्तसिद्धांतनांवचनजोडे जे आवचनते मुनिराजनेजआश्रीछे अनेआवचनतेगृहस्थनेआश्रीछे तेअपेक्षाउंजैनशासनमांघणीछे ते पोतपोतानीअपेक्षाप्रमाणेजोडे एलोकोत्तरनीति तेजिनशासननी नीतिछे ॥ ६ ॥

जिनशासनछेएकक्रियामां ॥ अन्यक्रियासंबंध ॥ जेमजा
णीजेत्रिविधअहिंसा ॥ हेतुस्वरूपअनुबंध ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तथाजिनशासनते एकक्रियामां अन्यक्रियासंबंधछे जेमाटे जेहिंसातेज अहिंसा अने जेअहिंसातेजहिंसा अनेजेतपस्या तेज जो निस्पृहिपणुंनथी तोअतपस्याछे भोगीछे अनेभोगीछतांनिस्पृहिपणुंछे तो तेतपस्वीछे इत्यादिकजिनशासनमां एकांतनथी स्याद्वादछे यतः अविद्धायापिहियाहिंसा॥हिंसाफलभाजनंभवत्येकः॥कृत्वाप्यपरोहिंसां॥ हिंसाफलभाजनं नस्यात् ॥ १ ॥ इतिअहिंसाष्टकवचनात् ॥ ते वलीहिंसातथाअहिंसा अनेकभेदें आगलीगाथामांदेखाडेछे जेमजाणीजेके०जिनशासनमांकही जेत्रिविधेअहिंसाके०त्रणप्रकारनीअहिंसा तेदेखाडेछे १ हेतुअहिंसा २ स्वरूपअहिंसा ३ अनुबंधअहिंसा एविवरीनेदेखाडेछे ॥७॥

हेतुअहिंसाजयणारूपें ॥ जंतुअघातस्वरूप ॥ फलरू
पेजेतेहपरिणमे ॥ तेअनुबंधस्वरूप ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमांपहेलीहेतुअहिंसाते यतनाकरवी केमके जे जीवयतनाकरवीतेअहिंसा-नोहेतुछे माटेहेतुअहिंसाकहीयें, बीजी जे जंतुअघातके०जीवनेमारवोनही प्राणवियो-गनकरवो तेहनुं नाम स्वरूपअहिंसाकहीयें, त्रीजी स्वर्गापवर्गादिकफलरूपेंजे अहिंसा परिणमे तेअनुबंधअहिंसानुंस्वरूपजाणवुं ॥ ८ ॥

हेतुस्वरूपअहिंसाआपे ॥ शुभफलविणअनुबंध ॥ दृढ
अज्ञानथकीतेआपे ॥ हिंसानोअनुबंध ॥ मन० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रणेअहिंसानांफलकहेछे. जेहेतुअहिंसातथास्वरूपअहिंसा एबेअहिंस-ते शुभफलके० पुण्यफलआपे विणअनुबंधके० अनुबंधविना एटलेहेतुतथास्वरूप आ हिंसाथीपुण्यबंधाय ते देवताप्रमुखनोभवपामे पण आगलेंसंलग्न पुण्यपरंपरानचाले मा-टेपापानुबंधीपुण्यबंधाय जेम अहिंसानात्रणभेद तेम हिंसानापणत्रणभेदछे ते कहेछे १ हेतुहिंसा २ स्वरूपहिंसा ३ अनुबंधहिंसा एत्रणमां हिंसानुं अनुबंधके० फलतेपणजे हिंसानुंजआपे तेनोहेतुकहेछेके दृढअज्ञानथकीके० आकरेअज्ञानेकरीने एटलेएभा-वजेहेतुथीजोइयेंतोअहिंसा तथास्वरूपथीजोइयेंतोपणअहिंसा अने अनुबंधेजोइयेंतो हिंसाछे तोतेहिंसाथीपण संसारवधे अने अज्ञानअहिंसाथीपणसंसारवधे तेमाटेजेमां अनुबंधअहिंसाहोयते आदरवी इतिभावः ॥ ९ ॥

निन्हवप्रमुखतणीजेमकिरिया ॥ जेहअहिंसारूप ॥ सुर
दुरगतिदेइतेपाडे ॥ दुत्तरभवजलकूप ॥ मन० ॥१०॥

अर्थ ॥ जेम जमालीप्रमुखनिन्हव सर्वेजैनलिंगेहता तथाक्रियापणजैननीकरताहता तेश्रीभगवतिमांजमालीनुंमहासंयमवखाण्युं पणजे अहिंसारूपके० तेक्रियासर्व हेतु-अहिंसा तथास्वरूपअहिंसारूपहती पणते सुरदुरगतिदेइके० देवतानीदुर्गति एटले किल्विषियाप्रमुखदेवतानीदुर्गतिआपीने पछी पाडेके० नाखे दुत्तरभवजलकूपके० दुः-खेंतरायएवोसंसाररूपजलनोकुवो तेमांनाखे इति ॥ १० ॥

दुर्बलनग्नमासउपवासी ॥ जोछेमायारंग ॥ तोपण
गरभअनंतालेशे ॥ बोलेबीजुंअंग ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेऊपर साख देखाडेछे जेम कोइक शरीरेंदुर्बल थयोहोय तथानग्नके० नागोरहेतोहोय अनेमासखमणनोपारणुंकरतोहोय एवोहोय अनेमायारंगके० माया-

वंतहोय एटलेअज्ञानकष्टकरेछे एवोछे तोपण अनंतिवारगर्जमांउपजशे एटलेअनंता जवकरशे एमबीजुंअंगजेसुयगडांगसूत्रतेबोलेछे यतः जइवियणिगिणेकिसे ॥ चरेजइ-विजुंजियमासमंतसो ॥ जेइहमायातिमज्जुति ॥ आगंतागप्रायणंतसो ॥ १ ॥ इति द्वितीयाध्ययने एटले एनीदया कोइलेखामां न आवे ॥ ११ ॥

निंदितआचारेंजिनशासन ॥ जेहनेहीलेलोक ॥ मायापे
हेलीतसअज्ञाने ॥ सर्वअहिंसाफोक ॥ मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ते निंदितआचारें लोक जिनशासन हीले एटले जे एकलीदयामानेछे अने अज्ञानकष्टकरेछे तेप्राणीनेपूर्वाचार्यना जीतनीखबरनथी केजितव्यवहारें लोकनिंदा न करे अनेपोतानीमतियेंप्रवर्त्ते तेनाआचरणनी लोकनिंदाकरे तेवारेजिनशासननीपण निंदाथाय के जुउआवालोक जिनशासनमांछे माटे जिनशासनपण डुगंछाकरवायो-ग्यछे त्यारेजिनशासननी हिनतानुं कारणथाय माटे तसके० तेप्राणीने अज्ञानथयुं ते अज्ञानेकरीने मायापहेलीके० प्रथममायाथयीज अनेज्यांमायाठेरी त्यांसर्वअहिंसाते फोकर्के० खोटीनिःफलजाणवी जेमाटे अज्ञानीनीदयाते हिंसाजजाणवी यतः मासे मासेयजोबालो ॥ कुसग्गेणंतुजुंजएनसो ॥ सुअरकायस्सधमस्स ॥ कलिंअग्घइसोल-सिं ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

स्वरूपथीनिरवद्यतथाजे ॥ छेकिरियासावद्य ॥ ज्ञानश
क्तिथीतेहअहिंसा ॥ दिएअनुबंधेसद्य ॥ मन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आगलीगाथामां दयापाले ने फलहिंसानुं आपे एम कह्युं हवे जेकथंचित् हिंसाथाय तेपण अहिंसानुंफलआपे तेकहेछे जे स्वरूपथीके० परमार्थेतोनिरवद्यछे निःपापछे अनेक्रियासावद्यके०क्रिया देखीतियद्यपिसावद्यछे तोपण तेजेस्वरूपथी हिंसाछे ते ज्ञानशक्तियेंकरी दिएअनुबंधेके० अनुबंधेआपे अहिंसाके० दया सद्यके० तत्काल एटलेएजावजेस्वरूपहिंसाजे दानविहारप्रमुख तेमुनिप्रमुखनीछे तेअनुबंधेअहिंसानुंज फलआपे यतः जगवत्यां अणगारस्सणंजंतेजावि अप्पाणोपुरउडुहउजुगमायाएपेहा एरीयरीयमाणस्स पायस्सअहेकुकुडपोएवावट्टपोतेवाकुलिंगछाएवा परियावज्जेज्जा ॥ तस्सणंजंतेकिंइरियावहियाकिरियाकज्जइसंपराइयाजावकज्जत्ति गोयमाणोसंपराइया जावकज्जति इरियावहिया जावकज्जइ सेकेणं जावबुचइ जहासत्तमसएसंवुडुदेसए जावअट्ठोनिक्खित्तो ॥ इतिअढारमाशतकनाआवमाउद्देशामांछे ॥ १३ ॥

जिनपूजाअपवादपदादिक ॥ शीलव्रतादिकजेम ॥ पुण्यअनु
त्तरमुनिनेआपी ॥ दिएशिवपदबहुखेम ॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वळीजेमपूर्वेमुनिनेहिंसा स्वरूपथी हती तेअनुबंधेअहिंसाकही तेमजजिन पूजा तथाअपवादपदादिकें वर्त्ततामुनि वळीशीलव्रतादिक जेममुनिने अनुत्तरके० उत्कृष्टपुण्यआपीने एटलेएजिनपूजादिकरणी यद्यपिकिंचितमात्र स्वरूपथीसावद्यछे अने शीलव्रतादिकते स्वरूपथीनिरवद्यछे पणएबेन्नेदवालाने अनुबंधे अहिंसातुंज फल आपे तेमाटे एमकह्युंजे अनुत्तरपुण्यआपीने दिएके० आपे शिवपदके० मोक्षपद जे बहुखेमके० घणुंक्षेमछे जिहां एटलेपरंपरायें सर्वसिद्धतुं देनारछे ॥ १४ ॥

एहन्नेदविणएकअहिंसा ॥ नविहोवे थिरथंन्न ॥ यावत
योगक्रियाछेतावत ॥ बोल्योछेआरंन्न ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारे १ हेतु २ स्वरूप ३ अनुबंध एत्रणन्नेदेहिंसा तथाएत्रणन्नेदे अहिंसा ते जाण्याविना एकलीजअहिंसासामान्यप्रकारें माने ते नविहोवेके० नहोयथिरथंन्नके० थिरन्नावे एटलेएकलीअहिंसाछेरेनही शामाटेके यावतयोगक्रियाछेके० ज्यांलगे मन वचन कायानायोगनीक्रियातेचलनक्रियाछे तावतके० तिहां लगें बोल्योछेके० कह्योछे आरंन्नके० कर्मबंध एटलेपोतपोताना गुणठाणानीमर्यादा माफक तेरमा गुणठाणालगें कर्मबंधछे अन्यथाइरियापथिकाबंध बेसमयनी स्थितिनो केमकह्योछे तेमाटे एकली अहिंसाकहेवीतेकाम न आवे पणतेनान्नेदसमजे तो सर्वछेकाणेजोडे ॥ १५ ॥

लागेपणलगवेनहिंहिंसा ॥ मुनिएमायावाणि ॥ शुन्नकि
रियालागीजेआवे ॥ तेमांतोनहीहाणि ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एम कहेछे जे मुनिके० मुनिराजने विहारादिक करतां हिंसा लागेछे पण लगावेनहीएटले हाथेकरी जाणीने हिंसाकरेनही एमजेकहेछे ते माया वाणिके० कपटनुं वचनछे एटलेमारीमातावंध्या तेनीपरे मायागालीवातबोलेछे पण शुन्नक्रिया जे विहारपडिलेहण नदीउतरवी इत्यादिक करतां जे हिंसा लागी आवे छे तेपोतानीमेलेज लागेछे एमकेम कहेवाय केमके जे नदीउतरवी विहारकरवो ते अजाण्योथतो नथी तेतो पोतेजाणेजछे जे नदीप्रमुख उतरतां हिंसाथशे तोपण उतरेछे प्रन्नुनी आज्ञाछे तेमाटे जेहिंसा शुन्नक्रियाकरतां लागीआवेछे तेमां हाणीके० दोष लागतो नथी ॥ १५ ॥

हिंसामात्रविनाजोमुनिने ॥ होए अहिंसकन्नाव ॥ सू
क्ष्मएकेंद्रिनेंहोवे ॥ तोतेशुद्धस्वन्नाव ॥ मन० ॥१७॥

अर्थ ॥ हिंसामात्रविनाके० एक हिंसाज देखीति न करी एटले देखीतो कोइ

जीव न मार्‍यो एटला मात्रथीज जो मुनिनेके॰ साधुने होयअहिंसकभावके॰ अहिं-सकपणुं थायतो सूक्ष्मएकेंद्रिनेके॰ लोकव्यापी पांचथावरनासूक्ष्मएकेंद्रिजीवोनेपण शुद्धस्वभाव होवो जोइयें केमके सूक्ष्मएकेंद्रिय जीवतेहिंसानाममात्र पण नथीकरता माटे तेतमारे लेखे अहिंसक थया अने जे अहिंसकभावेंपरिणम्यो तेतो शुद्धस्वभाव निरावर्णथाय पण तेएकेंद्रितो कोइए निरावर्णथता देखातानथी तेमाटे मात्रहिंसानेअणकरवेज अहिंसकनथाय जमालीनीपरें अविशुद्धायापिहियोहिंसां ॥ हिंसाफलभाजनंभवत्येकइतिअहिंसाष्टकवचनात् ॥ १७ ॥

भावेंजेहअहिंसामाने ॥ तेसविजोम्हेठाम ॥ उत्सर्गेअ
पवादेंवाणी ॥ जिननीजाणेजाम ॥ मन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे जेप्राणी द्रव्यभावप्रमुख भेदेकरी अनेक प्रकारनी अहिंसाछे ते मांपण भावेंके॰परिणामें जेप्राणी अहिंसामाने तेके॰तेप्राणी सविजोडेठामके॰सर्वे जिनवाणी पोतपोताने ठेकाणेजोडे तेप्राणीथी आगमवचन एकपण दुषायनहीं ते भावथी अहिंसामानीने सर्वेआलावाठेकाणे क्यारे जोडे ज्यारे उत्सर्गेंअपवादेंवाणीके॰उत्सर्गवचन तथा अपवादवचन एवेहुयेंकरीने जिनेश्वरनी वाणीजाणे एटले एभावजे उत्सर्गमार्गें अहिंसा मुनिराजनें कही आचारांगप्रमुखनेविषे तथासाध्वी प्रमुख पाणीमां वहेती जाणेतो काढे तथा एकमहिना मध्ये बेनदीउतरवी इत्यादिक अपवाद आज्ञा पण प्रभुयेंकरीछे तोए सर्वउत्सर्ग अपवाद भावजाणे तेसर्व वचन ठामेजोडे पण मूर्ख शुंजाणे ॥ १८ ॥

कोइकहेउत्सर्गेंआणा ॥ छांदोछेअपवाद ॥ तेमिथ्या
अणपामेंअर्थें ॥ साधारणविधिवाद ॥ मन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एमकहेछेजे उत्सर्गमार्गेंचालवुं तेज आज्ञाछे पण अपवाद ते छांदोछे एटलेपोतानीमतिकल्पनाछे पणजिनाज्ञा नथी एमकहेछे ते मिथ्याके॰खोटुंछे अणपामेंअर्थेंके॰अर्थजाण्याविना एमकहेछे तेनुं कारण के जे विधिवाद होयते साधारणजहोय एटले एमजाणवुंजे उत्सर्ग ने अपवाद एबंने विधिवादछे ते सर्वजीवने साधारणछे पण एकजीवआश्रयीनथीकह्युं, तेमाटे अपवाद पण आज्ञाछे पणछांदो एटले स्वमतिकल्पनानथी ॥ १९ ॥

मुख्यपणेजेमभावेआणा ॥ तेमतसकारणतेह ॥ कार्यइ
छतोकारणइच्छे ॥ एछेशुभमतिरेह ॥ मन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली एजकहेछेके जंबूद्वीपपन्नतिनीवृत्तिमध्ये एमकह्युंछे के जेअपवाद तेका-

रण अने उत्सर्ग तेकार्य तेमाटे कहेछेजे मुख्यपणे जेमभावेआणाके०उत्सर्गें आज्ञाछे एटले भावते कार्यकहीयें अने जे कार्य तेउत्सर्गकहीयें तेमाटे जेम उत्सर्गें आज्ञाछे ते-मतसकारणतेहके०तेमजते उत्सर्गनुंजेकारण तेअपवादछे तेनीपणआज्ञाछे केमके का-र्यने छतोथको कारणपण छे अनेजो कारणछेरेतो कार्यपणछेरें जोकारणनहीतो कार्य किहांथीआवे एरीतेमाने तेजशुभमतिनी रेखा जाणवी ॥ अथवाएगाथानोअर्थवीजी रीतेकरीयेंछेयें जे इहांढुंढकलोकएमकहेछे जेअमारेतोभावनिक्षेपतेवंदनाकरवायोग्यछे पण नामतथास्थापनाअनेद्रव्य ए त्रणनिक्षेपावंदनायोग्यनथी एमकहेछे तेनेशीखामण देछे जेमुख्यपणे जेमभावेआणाके०भाव निक्षेपे आज्ञाछे एटले भाव निक्षेपो वांदवायोग्य-छे,तेम तस कारणके०तेमज ते भावनां कारणजेनामादित्रण निक्षेपातेपण वांदवायोग्यछे केमके जेकार्यनेइछशे तेकारणने इछशे अनेकारण मान्याविना कार्यनेपामशे नही एज शुभमतिनी रेखाछे एटले जे भाव निक्षेपोमानशेतेने नामस्थापनादिकपण मानवाजोइयें जोनामादिकनहीमाने तोभावनिक्षेपोपण नहीमनायो एमथयुं ॥ २० ॥

कल्पेंवचनकह्युंअपवादें ॥ तेआणानुंमूल ॥ मिश्रप
क्षतोमुनिनेनघटे ॥ तेहनहीअनुकूल ॥ मन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ पंचकल्पमांहे एहवुंवचनकह्युंछे के अपवादमार्गेते जिनाज्ञानुंमूलछे यतः अववाउववहारो ॥ आणामूलंजउजवेतिछं ॥ इतिवचनात् माटे मुनिनेतो ते मिश्र प-क्षघटेनही रुडोनथी तेअनुकूलनथी केमके गुणस्थानादिक क्रियायेंमिश्रपक्षतानथी ते-हिजआगलीगाथामांदेखाडेछे ॥ २१ ॥

अपुनर्बंधकथी मांडिनें ॥ जावचरमगुणठाण ॥ भावअ
पेक्षायेंजिनआणा ॥ मारगभाषेजाण ॥ मन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ फरीबंधनथी फरवो तेने अपुनर्बंधककहीयेते अपुनर्बंधकजेचोथुंगुणठाणुं तिहांथी मांडिने जावचरमके०छेल्लाअयोगीकेवली चउदमा गुणठाणालगें इहांअपु नर्बंधकशब्दें चोथुंगुणठाणुं जाणीयेंछेयें जेकारणे अंतःकोडाकोडनी स्थितिकरीने कदा पिफरी मिथ्यात्वगुणठाणेआवेतोपण सितेरकोडाकोडीनीस्थितिफरी नबांधे तेमाटे अ-पुनर्बंधककहीयें तथा उपाध्यायजीयेंपण सवासोगाथाना स्तवनमध्ये एवीगाथाकही छेके, जेजेअंशेरेनिरूपाधिकपणुं ॥ तेतेजाणोरेधर्म ॥ सम्यक्दृष्टीरेगुणठाणाथकी ॥ जाव लहेशिवशर्म ॥१॥ एगाथाने अनुमानेपण एमजजणायछे पछीतो अपुनर्बंधकनो अर्थ बहुश्रुतकहे तेप्रमाण तथा उपाध्यायजीयेंस्वकृतअध्यात्मसारग्रंथमांपण कह्युंछे जे अपुन-

बंधकायावत् गुणस्थानंचतुर्दशं ॥ इत्यादिथी स्पष्टजणायछे केचोथागुणठाणाथी चउद-मालगें जिनआणाके०जिनेश्वरनी आज्ञाछे अने जाणपुरुषते एनेज मार्ग कहेछे तेस-र्वेजाव जावनीअपेक्षायें जाणवा अन्यथाचोथागुणठाणाप्रमुखनेविषे तोमहाविजाव-मांबेगोछे पण जावनीअपेक्षायें जिनआणाछे इतिजावः ॥ २२ ॥

एकअहिंसामांजेआणा ॥ जाषेपूरवसूरि ॥ तेएकांतम
तिनविग्रहियें ॥ तिहांनयविधिछेजूरि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तथाशास्त्रमां एकली अहिंसामां आज्ञाछे जेम सवेजीवानहंतवाइतिआ चारांगादिकवचनथी एमपूर्वाचार्य यद्यपिकहेछे तथापि एपाठ एकांतमतिके०एकांतपक्षे नविग्रहियेंके०अंगीकारनकरीयें तेमजतेअहिंसापण स्याद्वादमतें अंगीकार करीयें जेम मुनिराज नवकोटीपच्चरकाण करीने नदीउतरेछे अनेपच्चरकाण करती वखते नदीमो-कलीतो राखीनथी तोते पच्चरकाण स्याद्वादेछेपणएकांते नथी एम जाणवुं तेमाटे इहां नयविधिछेजूरिके०तेअहिंसानेविषे नयनोविधिघणोछे तेतो जेनयनीवात समजे तेजाणे एटलेअहिंसाते अनेकप्रकारनीछे ॥ २३ ॥

आतमजावहिंसनथीहिंसा ॥ सघलाएपापस्थान ॥ तेहथ
कीविपरीतअहिंसा ॥ तासविरहनुंध्यान ॥ मन० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेजवात देखाडेछे आतमजावहिंसनथीके०जेकरणीकरतां पोतानोआ-त्मजाव हणाणो तो तेमां हिंसाके०हिंसालागे तथाआत्मजावहणातांथकांअढारे पा-पस्थानकलागे अने तेहथकीके०ते आत्मजावहणायाथकी विपरीतके०आत्मजावजिहां नहणाय ते अहिंसाके०दयाकहीयें तासके०तेपापस्थानकना विरहनुंध्यानएवीएजाव-अहिंसाछे एपदअहिंसानुंविशेषणछे ॥ २४ ॥

तसउपायजेजेआगममां ॥ बहुविधछेव्यवहार ॥ तेनिःशे
षअहिंसाकहियें ॥ कारणफलउपचार ॥ मन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तसके०तेआत्मजाव नहणवाना उपायके०प्रकार जे जे आगममां के०सि-द्धांतमां कह्याछे एवाव्यवहारते बहुविधछेके०अनेकप्रकारनाछे दान देवपूजा पडिक्कमणा पोसहइत्यादिकअनेकछे अने जोकपरनी मूलगाथानोपाठ बिहुविधहोयतो एमअर्थक-रीये जे उत्सर्ग तथा अपवाद एबेप्रकाररूप व्यवहारछे तेनिःशेष के०समस्त जेटला आत्मानहणाववाना प्रकारछेतेअहिंसाकहियें एटलेएजावजे अपवादपणआत्मा नह-णाववानुंकारणछे तथादान देवपूजाप्रमुखपण आत्मानहणाववानाकारणछे तेने अहिं-

साकहीयें एमस्तवनकरनारे ठेराव्युं तेवारे अपवादने छांदोछे अनेउत्सर्ग तेआज्ञाछे एरी-तेपूर्वें प्रतिवादियें कह्युंहतुं तेदूरकर्युंइतिभावः॥ इहांकोइकहेशेजे एअपवादप्रमुख अने-कआत्माने नहणवानाकारणने अहिंसा केवीरीतें कहीयें तेने कहेछे के कारणनेविषे फ-लउपचारके०कार्यनोउपचार करीयें छेयें यथातंडुलान् वर्षतिपर्जन्यइतिन्यायात् ॥२५॥

जीवअजीवविषयछेहिंसा ॥ नैगमनयमतजुत्त ॥ संग्रह
व्यवहारेंषटकायें ॥ प्रतिजीवेंरुजूसूत्त ॥ मन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वें कह्युंहतुंजे अहिंसामां नयनाप्रकार घणाछे तेदेखाडेछे तेमां प्रथम नैगमनयआश्रीजीवनेविषे तथा अजीवनेविषे हिंसाकहेछे ते नैगमनय एमकहेछेजे जेमलोकमां अमुके जीव हण्यो तेमज अमुके अजीवघटनेहण्यो घटनोविनाशकर्यो इत्यादिकहिंसाशब्द सघले प्रवर्त्तेछे तथा संग्रहनय अनेव्यवहारनयएबेहुनयनेमते छकायनेविषे हिंसामाने पणजे अजीवनीहिंसा तेने हिंसामानतानथी इहांसंग्रहनय नाबेभेदछे एकदेशग्राहीसंग्रह बीजोसर्वग्राहीसंग्रह तेमांसर्वग्राहीसंग्रहतो नैगमन यमां भळ्यो माटे देशग्राहीसंग्रह इहांलीधोछे हिंसाशब्द अजीवमां प्रवर्त्ततो लीधो नथी तेमाटे देशग्राहीसंग्रह तथा व्यवहारनय तो जेरीतें लोकमाने तेरीतें एबेनयपण माने माटे लोकपण छकायने हिंसामानेछे तेमएबेनयवादी पणकहेछे तथा रुजुसूत्र नयवालो प्रतिजीवेंके० जीवजीवप्रतें भिन्नभिन्न हिंसामानेछे एमउंघनिर्युक्तिनीवृत्ति मध्येकह्युंछे तेआगलएज गाथामां कहेछे तथाच तद्देशःतत्रनैगमस्य जीवेष्वजीवेषुहिंसा तथावक्तारोलोकेदृष्टाः यदुतजीवोनेनहिंसितोविनाशितस्तथा घटोनेनहिंसितोवि-नाशितः ततश्चसर्वत्रहिंसाशब्दनुवर्तनात् जीवेष्वजीवेषुचाहिंसानैगमस्यआहिंसाप्येवमे-वेति संग्रहव्यवहारयोःषट्सुजीवनिकायेषु हिंसासंग्रहश्चात्रदेशग्राहीद्रष्टव्यःसामान्य-रूपश्चनैगमातंर्भावि व्यवहारश्चस्थूलविशेषग्राही लोकव्यवहारणशीलश्चायंतथा चलो-कोबाहुल्लेनषट्स्वेवजीवनिकायेषुहिंसासंग्रहश्चात्रदेशग्राहीछतीतिरुजुसूत्रश्च प्रत्येकंप्र-त्येकं जीवेजीवेहिंसां व्यतिरिक्तामिछतीति हवेशब्दार्थलखीयेंछेयेंजीव अजीवनेविषे नैगमनयने मतेहिंसाकहेवी एजुत्तके०युक्तछे अनेसंग्रहतथा व्यवहारनयनेमते छकायने विषेज हिंसामानेछे तथारुजुसूत्रनेमते जीवजीवप्रतेंहिंसाजूदीजुदीमानवी ॥ २६ ॥

आतमरूपशब्दनयतिने ॥ मानेएमअहिंस ॥ उंघवृत्ति
जोइनेलहियें ॥ सुखजशलीलप्रसंस ॥ मन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ आतमरूपके०आत्मातेजखरूपछे माटे हिंसाअथवाअहिंसाते आत्मारूपमा-

नेछे शब्दनयतिनेके०शब्दछेप्रधान जेने एवात्रणनय१शब्द२समभिरूढ ३ एवंभूत एत्रण नयमानेछे जेपोतानो आत्मा प्रमादीथयो त्यारे आत्मातेहिंसा अने तेजआत्मा जेवारे अप्रमादीथयो तेवारें आत्मा तेज अहिंसा यतः आयाचेवअहिंसा ॥ आयाहिंसतिनिछउएसो ॥ जोहोइअप्पमत्तो ॥ हिंसउअहिंसउइयरो ॥१॥ इतिउघनिर्युक्तिवचनात् पाछलात्रणनयनिश्चयना घरनाछे माटे उघनिर्युक्तिनीवृत्तिनोपाठपणएमछे यथा ॥ शब्दसमभिरूढैवंभूताश्चनयाआत्मैवहिंसामिछंतीतिए जेमहिंसा सातनये फलावी तेमज अहिंसाके०अहिंसापण फलावियें अहिंसाप्येवमेवेतिउघनिर्युक्तिवृत्तिवचनात् ए हिंसाना तथाअहिंसानासातप्रकार ते उघनिर्युक्तिनीवृत्ति जोइने सुख जशनीलीलातथा रुडीप्रशंसाते लहियेंके०पामिये एटलेयथार्थ जाणवाथीएटलावानां पामियें ॥ २७ ॥

॥ ढालनवमी ॥

॥ चैत्रीपुनमअनुक्रमे ॥ एदेशी ॥

कोइकसूत्रजआदरे ॥ अर्थनमानेसार ॥ जिनजी ॥ आपमतिअ वलुंकरे ॥ भूलातेढगमार ॥ जिनजी ॥ तुझवयणेंमनराखीयें ॥१॥

अर्थ ॥ आठमीढालने अंतेसातनयेंकरी हिंसाफलावी तेनयेंकरी हिंसातो तेवारे समजाय जेवारे सूत्रनी टीका चूर्णितथाभाष्य अनेनिर्युक्ति मानीये तो समजायपण केवलसूत्रनो मूलपाठ वांचवाथी नसमजाय केमके जेसूत्रहोय तेसूचनामात्रहोय माटेजे अर्थनेनथीमानता तेने शिक्षादेवा सारु नवमीढालनेआठमीढालसाथेंसंबंधकरी कहेछे जे कोइकके०जेढूंढक लुंपाक नामनदेवायोग्य माटेकोइक एवुं नामकह्युं ते सूत्रजआदरेके०केवलसूत्रजमानेछे इहां एकवारते वृत्त्यादिकनिषेधवाचकछे तथाअर्थके० टीकाप्रमुखतेनथीमानता जिनजीके०हेरागद्वेषनाजीतणहारहेवीतराग तेकेवाछे आपमतिके०स्वछंदेंचालणहारछे पणआगमानुयायी चालतानथी अवलुंकरेके०जेटलुंकार्य करेतेटलुं अवलुंकरेछे माटे तेमूर्खगमार भूलाभमेछे कारणके सूत्रतोगणधरनारच्या अने अर्थतो तीर्थंकरनोकह्यो ॥ यतः ॥ अछंभासइअरहा ॥ सुत्तंगंछंति गणहरानिउणं ॥ इतिवचनात् तेमाटे अर्थनी ना कहेतां तीर्थंकरनीआशातनाकरेछे माटे अवलुंकरेछे माटे हेप्रभुतमारेवचने मनराखीयें ॥ १ ॥

प्रतिमालोपेपापीआ ॥ योगअनेउपधान ॥ जि० ॥ गुरुनो वासनसिरधरे ॥ मायाविअज्ञान ॥ जि० ॥ तुझ० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली तेलोक प्रतिमाने लोपेछे एटले प्रतिमाउथापेछे पणकेवाछे जेपापी-

आके०पापीछे शामाटे जेश्रीसमवायांग तथाजगवति तथाज्ञाता अनेउपासक रायपश्रे णी जीवाजिगम जंबुद्वीपपन्नति प्रमुखनेविषेसाक्षात्प्रतिमाकहीछे तेनेलोपीउत्सूत्रबोलेछे अनेजे उत्सूत्रबोलवुं तेश्रीजगवतिसूत्रमां पापकही बोलाव्युंछे तेमाटे पापीया कह्या तेप्रतिमानोअधिकारतो उपाध्यायजीयें ढुंढीना स्तवनमध्ये कह्योछे माटे इहां नथीकह्यो वली योगवहेवा तेने लोपेछे कारणके श्रीनंदिसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्र अनेउत्तराध्ययन ठाणांगप्रमुखसूत्रनेविषे योगपणकह्याछे तेपणउत्सूत्रबोलीलोपेछे उपलक्षणथी श्रावकने सूत्रजणावे तेपण निशीथ तथा ठाणांग सुयगडांग व्यवहार उपासकप्रमुखमां नाकहीछे ते वातो पण ढुंढिनास्तवनमां आणीछे तेथीअहींनथी कहेता माटे पापीछे वली उपधानलोपेछे केमके श्रीमहानिशीथप्रमुखसूत्रमां उपधानकह्याछे तेलोप्यामाटे पापीकह्या वली गुरुनोवास मस्तकनेविषे नधरे एटलेए जावजे समवायांगसूत्र तथाश्री अनुयोगद्वारसूत्रप्रमुखनेलेखे तथा आवश्यकनिर्युक्तिप्रमाणछे तेमां गुरुनोवास कह्योछे तेलोप्यो माटेपापीकहियें वलीमायावीछे कपटे करी लोकने जरममांनाखेछे अक्षरार्थ मरउवो तेवक्रता अनेजे वक्रताते माया वली अज्ञाने जर्याछे केमके व्याकरणादिकजण्याविना सूत्रवांचेछे तेनघटे यतः अहकेरिसकंपुणाइं॥सच्चंतुजासियवंजंतंदवेहिं॥पज्जावेहिंयगुणेहिं॥कम्मेहिंवहुविहेहिं॥ सिप्पेहिं आगमेहिंयनामरकायनिवाउवसग्गतद्धियसमाससंधिपद हेउ जोनिय उणादिकिरियाविहाण धातु सरविजत्ति वन्नजुत्तं तेकल्लंदशविहंपिसच्चं जहजणियं तहय कमुणाहोइ डुवालसविहायहोइजासावयणंपियहोइसोलसविहं इत्यादि प्रश्नव्याकरण सूत्रमध्येपाठछे माटेजेजाणेतेज्ञानी अन्यथा अज्ञानीकहियें ॥ २ ॥

आचरणातेहनीनवी ॥ केतिकहीयेंदेव ॥ जि० ॥ नित
त्रुटेछेसांधता ॥ गुरुविणातेहनीटेव ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेढुंढीआनी आचरणाजे बाह्यक्रिया तेसर्व नवीजछे मुखबांधीबाहेरनिकलवुं कांडो राखवोजनही वीपाकसूत्रने विरोधी तथा जगवति दशवैकालकि प्रश्न व्याकरणादिकसूत्रथकी विरोधी आचरणा तेहनीकेतिके०केटलीकहीयें एटले घणीछे माटेहेदेव हेआत्माराम हेपरमानंदविलासी वलीतेने निरंतर सांधतांथकांत्रुटेछे एटले लोक उखाणोछे जे नवसांधे ने तेरत्रुटे तेउखाणो एनेघरेंछे वलीपूजामां हिंसावतावे अने पोतें मरे तेवारेशुंकरीयें तथा पोतानेवांदवा आवे तथादीक्षामहोत्सवकरे तेमां हिंसाथायके नथाय इत्यादिक बहुअधिकारछे पणकेटलोलखाय एमएकवात सांधवा गयो एटले ठामठामथी त्रुटीगयुं जेमाटे गुरुविना तेनीखराबटेवपडीगयीछे जोगुरुपरं-

परागत होयतो कांइअटकेनही क्यारें खलायनही संप्रदायविना ठामठामअटकेछे ए-टले एजावजे नगुराछे मायेकोइनिकल्यो त्यारेपणगुरुनहतो ॥ ३ ॥

वृत्तिप्रमुखजोइकरी ॥ जाषेआगमआप ॥ जि० ॥ तेहज
मूढाउंलवे ॥ जेमकुपुत्रनिजबाप ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वृत्तिके०टीका अने प्रमुखशब्दें चूर्णिनिर्युक्ति आदिलेवा तेजोइकरीने आपके०पोतेआगमने जाषे एटले वृत्तिप्रमुखढानीराखी तेना जावजोइ आगमनोअर्थ ठीकबेसाडे पढीलोकआगल एकलुं सूत्रवांचे एमतेअज्ञानी टीकाप्रमुखनेउंलवे कोइ पूछे जेटीकानिर्युक्तिमानोछो तेवारें कहेशेजेनथी मानता जेम कुपुत्रहोयते पोताना बापने उंलवे एटले बापहोएसादो अनेपोतेहोए छेल पढीकोइपुछेजे आ तमारा शा सगा छे तेवारें आडोअवलोजवाबआपे तेमटीकाप्रमुखनो उपकार अनेतेनेज न माने ॥४॥

वृत्त्यादिकअणमानता ॥ सूत्रविराधेदीन ॥ जि० ॥ सूत्रअरथ
तछुजयथकी ॥ प्रत्यनीककह्यातीन ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली वृत्यादिकके०वृत्तिचूर्णिजाष्यने अनुसारें प्रकरणचरित्रादिकनेअणमानताथका तेदीनके०जावदयाकरवायोग्य सूत्रनेज विराधेछे सूत्रनीज आशातनाकरेछे श्रीसमवायांगसूत्रें तथानंदिसूत्रेंकह्युंछे आयरेणंपरित्तावायणासंखिज्जाअणुउगाथारासंखेज्जावेढासंखेज्जा सिलोगासंखेज्जाउ निज्जुत्तीउंसंखेज्जाउं पडिवत्तिउंसंखेज्जाउं संघेयणीउं इत्यादिककह्यांछे तेमानेनही तेवारें सूत्रनेविराधेजछे वली १ सूत्रप्रत्यनीक २ अर्थप्रत्यनीक ३ तछुजयप्रत्यनीक एश्रीठाणांगसूत्रेंकह्याछे यतः सुयंपऊच्चतउ पडिणीयायतंसुत्तपडिणीए अत्नपडिणिए तछुजयपडिणीए एत्रीजाठाणाना चोथाउद्देशेंकह्युंछे एमज जगवतिसूत्रना आठमाशतकना आठमाउद्देशामांकह्युंछे तो अर्थप्रत्यनीकतेनिर्युक्त्यादिकजेनथीमानता तेनेकहीयें तेशिवायअर्थप्रत्यनीक तथातछुजय प्रत्यनीक तेबीजाकोनेकहीयें ते बतावो ॥ ५ ॥

अक्षरअर्थजएकलो ॥ जोआदरताखेम ॥ जि० ॥ जगव
इअंगेजाषिउं ॥ त्रिविधअर्थतोकेम ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोकेवल एकलो अक्षरार्थ मानीयें एटले जेटलुं सूत्र तेटलोज शब्दार्थ आदरीयें मानीयें अनेतेम मानता तमने खेमके०कुशलछे तोजगवतिसूत्रमांत्रिविधके० त्रणप्रकारें व्याख्यान अर्थ कहेवो कह्योछे तेकेमघटे तथा अनुयोगद्वारें बे प्रकारें अनुगमकह्योछे सत्ताणुगमेय निज्जुत्तिअणुगमेय तथानिज्जुत्तिअणुगमेतिविहेपन्नतेउवगाय

निजुत्ति अनुगमेइत्यादिक तथाउद्देसे निद्देसे निग्गमे खेत्तकालपुरिसेय एगाथाअनु-योगद्वारमांहे तेनाअर्थकेमकरशोइतिभावः ॥ ६ ॥

सूत्रअरथपहेलोबीजो ॥ निज्जुत्तीयेमीस ॥ जि० ॥ निरवि
शेषत्रीजोवली ॥ इमभाषेजगदीश ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजत्रणप्रकारनुं व्याख्यानदेखाडेछे प्रथम सूत्रनो शब्दार्थ शिष्यनेदेवो जेम नमोके०नमस्कारथाउ अरिहंताणंके०अरिहंत रागद्वेषरूपशत्रुहण्या माटे ते शब्दार्थअवलिरीते आवव्यो तेवारें बीजोके०बीजीवार अर्थकहे ते निज्जुत्तियेंमीसके० निर्युक्तिसहित अर्थ कहे हेशिष्य ते अरिहंतचारप्रकारना छे नाम, स्थापना, द्रव्य, अनेभाव भेदें यतःनामजिणाजिणनामा ॥ ठवणजिणापुणजिणंदपडिमाउ ॥ दवजिणाजिणजीवा ॥ भावजिणासमवसरणत्था ॥१॥ इत्यादिक एम बीजीवार अर्थआवव्यो पछी त्रीजीवार फरी एजपदनो अर्थ निरविशेषके०समस्तरीतें कहे एटलेसंगेप्रसंगे सर्वकहे नैगमादिकनयपण शक्तिहोय तोफलावे तेना साधनकहे उदाहरण जे अरिहंतने नमस्कारनुं फलकहे इत्यादिक एटले एभावजे प्रथम अर्थमां टीकाचूर्णि अने बीजाअर्थमां निर्युक्ति तथात्रीजाअर्थमां भाष्यआव्युं एम हेजगदीशतुं भाषेके०भगवतिनाशतक २५ माना त्रीजा उद्देशामां कहेछे सुत्तथोखलुपढमो॥बीउनिज्जुत्तिमीसउभणीउ ॥ तइउयनिरविसेसो ॥ एसविहिहोइअणुउगो ॥ १ ॥ एगाथा नंदिसूत्रमध्येपणछे तेमाटेअर्थप्रमाणकरेतो खेमथाय ॥ ७ ॥

छायानरचालेंचले ॥ रहेथितितसजेम ॥ जि० ॥ सूत्रअ
रथचालेचले ॥ रहेथितितसतेम ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमनरके०पुरुषनीछाया तेजेवारें पुरुष चाले तेवारे तेनो छांयडो पण चाले अने रहेके०पुरुषउभोरहे तेवारे तसके०तेछायानीपण स्थितिके०रहेवुं थाय जेम ए तेम सूत्रअने अर्थमांपण एमज भाववुं सूत्रनीचाले अर्थ चलेके०चाले रहे के०सूत्ररहे तेवारें तसके०ते अर्थनुं पण थितिके०रहेवुंथाय ॥ ८ ॥

अर्थकहेविधिवारणा ॥ उभयसूत्रजेमठाण ॥ जि० ॥ तेम
प्रमाणसामान्यथी ॥ नविप्रमाणअप्रमाण ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके०टीकाप्रमुखहोय तेजसमजावे अनेविधिके०विधिवाद तथा वारणाके०निषेधसूत्र तथा उभयसूत्रके०विधिसूत्र तथानिषेधसूत्र एबेहु सूत्रजेमठाणके०ठाणांगसूत्रमध्येकह्यांछे यथा॥नोकप्पइनिग्गंथाणवानिग्गंथिणवाइमाउ ॥ उद्दिठाउ

गणियाश्च उचितजितार्उपंचमहव्वार्उमहानदिर्उ अंतोमासस्स डुखुत्तोवा तिखुत्तोवाउ-त्तरिए संतरित्तए वा तं गंगाजऊणासरसइ एरावतिमही इति एरीते निषेधकरीने वली लगताज सूत्रमांश्राज्ञाकरी यथा पंचविहिंठाणेकप्पंतितंजयंसिवाडुभिखंशिवापवहे जं च णंकोइतिदजग्घंसिवाएज्जमाणंसिमहतावायणारितेहिइति एबे सूत्रकह्यां एकविधिनुं एकनिषेधनुं एबेमांकयुंसूत्रप्रमाणकरियें अनेकयुंसूत्र अप्रमाणकरिये इहां एके अप्रमाण नथायइतिजावः हवे पठवाडानां बेपदनो अर्थकहेछे तेमके० तेरीतेजेम ठाणांग मध्ये बेहुसूत्र देखाड्या तेम सामान्यप्रमाण जेसूत्रछे ते सूत्रथी नविप्रमाणअप्रमाणके० इहांसामान्यपदछे तेमाटेजाणियेंछेयें जेविशेषपद बाहारथीलावीयें तेवारेएम अर्थथाय जेविशेषप्रमाण तेटीकाप्रमुख तेनविअप्रमाणके०अप्रमाणनथी एटलेएजावजे प्रमाण बे प्रकारना एकसामान्यप्रमाण बीजुं विशेषप्रमाण तेमां सामान्यप्रमाण तेसूत्रकहीयें जेमां सामान्यपणे सूचनामात्रें कह्युं होय अने विशेषप्रमाणते अर्थटीकाप्रमुखनेकहीयें जेमां विस्तारीनेकह्युंछे एबेप्रमाणछे तेमां सामान्यप्रमाणखरुं अने विशेषप्रमाणखोटुं एम नकहेवाय सामान्यप्रमाणथी विशेषप्रमाण तेअप्रमाण केमथाय इतिजावः ॥९॥

अंधपंगुजेमबेमले ॥ चालेइछितठाण ॥ जि० ॥ सूत्रअरथ
तेमजाणीयें ॥ कल्पजाष्यनीवाण ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम अंध लोचनहीन अनेपंगुके०चरणहीन एबेमलीने चालेइछितठाणके० वांछितस्थानकनेविषे चाले तेमसूत्र तथाअर्थजे टीकाप्रमुख मलीने यथार्थ स्थानके अर्थ जोडीशकीयें एमकल्पजाष्यनीवाणीछे ॥ १० ॥

विधिउद्यमजयवर्णना ॥ उत्सर्गहअपवाद ॥ जि० ॥ तदुजय
अर्थेजाणीयें ॥ सूत्रजेदअविवाद ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली १ विधिसूत्र २ उद्यमसूत्र ३ जयसूत्र ४ वर्णवसूत्र ५ उत्सर्गसूत्र ६ अपवादसूत्र ७ तदुजयसूत्र एसर्वसूत्रनाजेदनीखबर अर्थथीजणाय नहीतो शीखबर पडेजे आसूत्रते शीअपेक्षानुंछे यथा ॥ संपत्तेजिक्खुकालंमि ॥ असंजंतोअ मुछिउ ॥ इम्मेणकम्मजोगेणं ॥ जत्तंपाणंगवेसए ॥१॥ एदशवैकालिकनापांचमाअध्ययने कह्युं इत्यादिकविधिसूत्रकहीयें तथा डुमपत्तयपंडुयए ॥जहानिवडइरायगणाणअच्चए ॥ एवंमणुआणजीवियं ॥ समयगोयमामापमायए ॥ इत्युत्तराध्ययननेदशमाध्ययनेकह्युं इत्यादिकउद्यमसूत्रकहीयें अने नरकनेविषे मांसरुधिरादिकवर्णवीकहेवा यथा ॥ उत्तराध्ययनेमृगापुत्रअध्ययनमां तथा सुयगडांगना नरकविजत्तिअध्ययनमां तेपरमार्थेमांसादिक नथी पणजयसूत्रछे यतः नरएसुमंसरुहिराइ ॥ वजंपसिद्धिमित्तेणं ॥ जयहेउ-

इहरतेसिं ॥ विउब्वियपावउंनतयं ॥१॥ इत्यादिक नयसूत्र यथा इढिमिय समिढाइ-त्यादिकउववाइ ज्ञाताधर्मकथाप्रमुखनेविषे प्रायेंसूत्रछे तेवर्णवसूत्रछे वली इच्चेसिंबन्ह-जीवनिकायाणं मेवसयंदंमसमारंभेज्जा इत्यादिक छजीवनिकायना रक्षक प्रमुखआचा-रांगादिकसूत्रनेविषे तेउत्सर्गसूत्रजाणवा तथाछेदग्रंथतेप्रायें अपवादसूत्रछे अथवा न-वालभिज्जा निउणंसहायं॥ गुणाहियं वागुणउंसमंवा॥ इकोविपावाइविवज्जयंते॥ विहरि-ज्जकम्मेसुसज्जमाणो॥ इत्यादिक अपवादसूत्रजाणवा तथा जेमां उत्सर्ग अने अपवाद साथेकहेवाय तेतदुभयसूत्रकहीयें जेम अट्टझाणाभावे समंअहिआसियवउंवाहि ॥ तप्पावंमिउविहिणा ॥ पमियारपवत्तणंनेयं ॥१॥ इत्यादिकअनेकप्रकारना स्वसमय पर-समय निश्चय व्यवहार ज्ञानक्रियादिक नानाप्रकारें नयमतनाप्रकाशक सूत्रनाजेभेद तेअविवादपणेके०जेमांझगडोनथछे एरीते स्वस्थानकें अर्थथीजोमाय ॥ ११ ॥

एहभेदजाणयाविना ॥ कंखामोहलहंत ॥ जि० ॥ भंगंतर
प्रमुखेकरी ॥ भाष्युंभगवइतंत ॥ जि० ॥ तुम० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तोएपूर्वोक्तभेद जाणाविना भंगंतरप्रमुखेकरीने कंखामोहके०मिथ्यात्वमो हनीने लहंतके०वेदे एमभगवतिसूत्रमां तंतके०निश्चेंभाष्युंछे एटले एभावजेसूत्रतो विविध आशयनाहोय तेआशयनीजेवारेंमालमपडे तेवारें मनमां शंकाउपजेकेआखरुं के आखरुंएवीशंकाथाय अनेजेशंका तेमिथ्यात्वमोहनीथाय तथाचोक्तंभगवत्यंगे प्रथम-शतके तृतीयउद्देशके अत्थिणंभंतेसमणाविनिग्गंथाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेति हंताअ-त्थिकहणंभंतेसमणाविणिग्गंथा कंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेतिगोयमा तेहिंतेहिंनाणंतरेहिं दंसणंतरेहिं चरित्तंतरेहिं लिंगंतरेहिं पवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पंतरेहिंमग्गंतरेहिं मतंतरेहिं भंगंतरेहिं णयंतरेहिं णियमंतरेहिं पमाहिणंतरेहिं संकिया कंखिया विति-गिछता भेयसमावन्ना कलुसमावणा एवंखलुसमणा निग्गंथाकंखामोहणिज्जं कम्मंवे-देतिइति एनासमाधान भगवतिनीवृत्तिथी जोइलेजो तेमाटेटीकाप्रमुख अर्थ जाण्याथीज सर्वेसमाधानथाय आम्नायपामियें पण केवल सूत्रेंज नपामियें इहां भंगंतरप्रमुखेकह्युं ते मध्यग्रहणेआद्यंतयोर्ग्रहणमितिन्यायात् णाणंतरेहिं पदपणलेवा ॥ १२ ॥

परिवासितवारीकरी ॥ लेपनअशनअशेष ॥ जि० ॥ कारण
थीअतिआदस्या ॥ पंचकल्पउपदेश ॥ जि० ॥ तुम० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ परिवासितके०रात्रें वासीराखवुं तेवारीकरीके०वारीने एटले मुनिने संनि-धिमात्रे पणराखवुं ते रात्रें नघटे एहवुं शुंतेकहेछे लेपनके०विलेपन अथवा कुसुमवा-सिततेलप्रमुख अने अशनके०आहारतथाअशेषशब्देंप्रमुख लेवा तेवारीने वली कार-

णथी अतिके०अत्यंतकारणे आदस्यांके०तेमुनियेंअंगीकारकस्यां एटले वासीराखवानी मुनिने आज्ञाकरी तेपंचकल्पग्रंथनो उपदेशछे उपलक्षणथी निशीथनेविषे पण कह्युंछे यतः ननुउंषधादिसंनिधिःक्रियतेनवा उच्यते उत्सर्गेणनकल्पते कारणेतुजवत्यपि तथाहिवोछिन्नमंरूबनांमयछडुजोयणब्भंतरउंगामघोसाइनछितछतुरिएकजेनलप्रइअउतछछिन्नमंरूवेउंसहगणोपरिवासिज्जइइतिनिशीथे तेमाटे एकारणादिक प्रकार तेटीकाप्रमुखविना जणायनहीं ॥ १३ ॥

वर्षागमननिवारीउं ॥ कारणेंजाष्युतेह ॥ जि० ॥ ठाणंगे
श्रमणीतणुं ॥ अवलंबादिकजेह ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वर्षागमनके०चोमासानेकाले विहारकरवानुं निवास्युंछे श्रीठाणांगना बीजाउदेशामध्ये यतः णोकप्पतिनिग्गंछाणंवानिग्गंछीणंवा पढमपाउसंमिगामाणुगामंडुत्तिजित्तएइति तथा कारणेजाष्युंतेहके०तेजवर्षाकालमां कारणथी विहारकरवानी आज्ञा करी तेपणठाणांगसूत्रना पांचमा ठाणाना बीजा उद्देशामांकह्युंछे यतः पंचहिठाणेहिंकप्पंतितंजयंसिवा डुजिक्खंवा जावमहतावाआणारिएहिं इतितथातत्रैववासावासंपज्जोसवियाणं नोकप्पइ निग्गंथाणंवा निग्गंथीणवागामाणुगामंडुइज्जितंएवंपंचहिठाणेहिं कप्पतितं णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए आयरिय उवज्झाएवा संविसुजेज्जा आयरियउवज्झायाणवा वहिता वैयावच्चकरणयाएइति वलीएजश्रीठाणांगनेविषे श्रमणीके०साध्वीने अवलंबनके०आलंबेतो प्रजुनी आज्ञा अतिक्रमेनहीं यतः पंचहिठाणेहिंसमणेनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमठतंनिग्गंथिचणं अन्नयरे पसुजातितेवा पक्खिजातिएवा उऋातेज्जातत्थनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइनिग्गंथे निग्गंथि डुग्गंसिवा विसमंसिवा पक्खलमाणिंवा पवडमाणिंवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइनिग्गंथे निग्गंथि सेयंसिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उकुमाणिवा उवुज्जमाणिवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमइ निग्गंथे निग्गंथि णावआरुहमाणेवा उरुंजमाणेवा जावणातिक्कम निक्खत्तइत्तं जक्खतिछंजावजत्तपाणपडियाइक्खितं निग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवाणातिक्कमइ इत्यादि एउपलक्षणथी साधुसाध्वी एकस्थानके जेलावसे एवापणआलावा श्रीठाणांगमध्येछे तेकेटलाक लखाय अने वलीनवमेठाणे ब्रह्मचेराकह्या तेमांस्त्रीनाअंगोपांग जोवानहीं तथा जीतने आंतरे वसवुंनहीं एमकह्युं तेवाततो प्रसिद्ध छे माटे प्रतिपक्षीआलावो उपाध्यायजीयें संजास्योनहीं तेथी अमे लख्यो पण नहीं तो वृत्यादिकविना केम बंधबेसेइतिजावः ॥ १४ ॥

आधाकर्मादिकनही ॥ बंधतणोएकंत ॥ जिन० ॥ सुयगडे
तेकेमघटे ॥ विणवृत्त्यादिकतंत ॥ जिन० ॥ तुम० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ आधाकर्मी आहारकरवो ते नहीके०नथीकह्यो बंधतणोएकंतके०कर्मबंधनो एकांतनथी एटले एजावजे श्रीसुयगडांगसूत्रमध्ये आधाकर्मी आहारकरतां कर्मबंधाय पणखरुं अने वली नबंधाय एम पण कह्युं तेकेमघटे यतः आहागडाइभुंजंति ॥ अणमणेसकम्मुणा ॥ उवलित्तेवियाणिज्जा ॥ अणुवलित्तेतिवापुणो ॥१॥ एतेहिंदोहिंगणेहिं ववहारोणविज्जइ ॥ एतेहिंदोहिंगणेहिं ॥ आणायारं तुजाणए ॥ २ ॥ एसुयगडांगना २१ माअध्ययनेछे माटेएवीवातोते टीकाप्रमुखविना सूत्रकेमस्पष्टथाय ॥१५॥

विहरमानगणधरपिता ॥ जिनजनकादिकजेह ॥ जिन० ॥ क्रम
वलीआवश्यकतणो ॥ सूत्रमात्रनहीतेह ॥ जिन० ॥ तुम० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वली विहरमानके०विचरता वीसतीर्थंकर तथा तेओनागणधर अने तेओना पिता उपलक्षणथी माता लंछन नगरी विजय परिवार केवलीप्रमुख तेसूत्रमां जडेनही अथवा जेम वीस विहरमानना गणधर तेमज उपलक्षणथी ऋषभादिकना गणधरपण सर्वसूत्रमां नथी तथागणधरोना पिताप्रमुख सूत्रमात्रेनथी तथा जिनके० चोवीसतीर्थंकरना जनकादिके० मातापिता उपलक्षणथी बीजोपणपरिवार तेसर्व सूत्रमां नथी ते आवश्यकादिक माने तोज जडे वली आवश्यकजे उभयटंक पडिक्कमणुंकरवुं तेहनोजे क्रमके०अनुक्रम ते जे अमुक पछी अमुक कहेवुं इत्यादिक सूत्रमात्रनहीके० मात्रएकलासूत्रमां नलाने एवी घणीवातोछे तेकेटलीलखाय पण प्रकरण निर्युक्त्यादिक माने तोपारपडे नहीतो गोथांज खाय ॥ १६ ॥

अर्थविनाकेमपामियें ॥ भावसकलअनिबद्ध ॥ जि० ॥ गुरु
मुखवाणीधारतां ॥ होवेसर्वसुबद्ध ॥ जि० ॥ तुम०॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके०टीकाप्रमुखविना केमपामियें सकलके०समस्त अनिबद्धके० अणबंध तेधुरथी ते छेहालगें सर्ववात केमजडे सूत्रमांतोलगारेक नाम मात्र कहे संपूर्णतो टीकाप्रमुखमां लाभे अथवा अनिबद्धके०सूत्रमांनथी बंधाणा एवा भावतो घणा रह्याछे अत्यंत थावरमांथी आवीजेम मरुदेवाजी मोक्षेंगयां इत्यादिक वगर बांध्या पांचसो आदेशछे तेसर्व केवल सूत्रेज केवीरीते गम्यमान थाय तेमाटे गुरुआदिकना मुखनी वाणी सांभलीयें जे संप्रदायिक होय तेधारतांथकां होवेसर्वसुबद्धके० सर्वसुबद्धथाय सुयुक्तिवंतथाय ॥ १७ ॥

पुस्तकअर्थपरंपरा ॥ सघलीजेहनेहाथ ॥ जि० ॥ तेसुवि
हितअणमानतां ॥ केमरहेसेनिजआथ ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ पुस्तक जेअंगोपांगादिक अक्षरन्यासरूप अर्थटीकाप्रमुख ... परंपरा तेसर्वजेने हाथेछे एवाजे सुविहित शुद्धमार्गना प्ररुपनार ... एटले अंगीकार कर्याविना केम रहेशे? निजआथके०पोतानी... लक्ष्मी तेशीरीते रहेशे ॥ १८ ॥

सद्गुरुपासेशिखतां ॥ अर्थमांहेनविरोध ॥ जि० ॥ हेतुवाद
आगमप्रतें ॥ जाणेजेहसुबोध ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १९ ॥

॥ तेमाटे स्वछंदपणुं टालीने सद्गुरुपासे विनयादिकेंकरीने सूत्रना अर्थ जे प्रमुख तेधारवां तेमां कांइविरोधनथी पण तेमूर्खलोक एमजाणेछेजे सूत्रमां विरो ! अने अर्थमां विरोधछे ते खोटुंछे. गुरुमुखे शीखतांथकां कांइ विरोध छेजनही तथा एरीते गुरुपासें धारतां हेतुवाद कहेतां कारणनिमित्तवाद एहवो आगमजे सिद्धांत तेनेजाणे जेथकीसुबोधके०भलोबोधथाय ॥ १९ ॥

अर्थेमतभेदादिकें ॥ जेहविरोधगणंत ॥ जि० ॥ तेसूत्रे
पणदेखशे ॥ जोजोशेएकंत ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली अर्थेके०टीकाप्रमुखनेविषे मतभेदादिकेंके०कोइमतभेदें कोइ वाचनांतरभेदे भेदपणुं देखीने जे विरोध गणेछे अने कहेछेजे टीकाप्रमुख विरोधीछे मलती नथी तोकेम मानीयें तेहने कहेछेके जेप्राणी टीकाप्रमुखमां विरोधपणुं जोशे तेसूत्रमांपण विरोधपणुं देखशे जोएकांते निश्चेकरी जोशे तो सूत्रमां पणघणो विरोधछे तेकेम नथीजोता इतिभावः ॥ २० ॥

संहरताजाणेनही ॥ वीरकहेएमकल्प ॥ जि० ॥ संहरतां
पणनाणनो ॥ प्रथमअंगछेजल्प ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवे तेज सूत्रना विरोधिपणाने देखाडेछे जे देवानंदानी कुखथी लेइने त्रिसलादेवीने कुखे संहरताके०संहर्या तेसंहरतां वीरस्वामीयें जाण्युंनही एमश्रीकल्पसूत्रमां कह्युंछे यथा ॥ साहरिज्जिस्सामित्तिजाणइ ॥ साहरिज्जमाणेनजाणइ ॥ साहरिएमित्तिजाणइ इतिपाठात् तथा वीरस्वामीने हरणगमेषीये संहर्या तेअवसरे प्रथम अंगजे श्रीआचारांगतेमां ज्ञाननो जल्पके०शब्दछे एटले एभावजे संहरतां थकां प्रभुयेंजाण्युं एमकह्युंछे तथाचतत्सूत्रं साहरिज्जिस्सामित्तिजाणइ साहरिमित्तिजाणइ साहरिज्जमाणेविजाणइ सेसमणाउसोइतिपंचदशेभावनाध्ययने इतिविरोधः ॥ २१ ॥

ऋषभकूटअमजोयणो ॥ जंबूपन्नत्तिसार ॥ जि० ॥ बारव
लीपाठांतरें ॥ मूलकहेविस्तार ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वली ऋषभकूटनुं आठयोजन मूलविस्तारछे एमजंबूद्वीपपन्नत्तिसूत्रमां कह्युंछे यतः एलणंउसजकूडेनागकूरेपन्नते अठजोयणाइंउद्धं उच्चत्तेणं दोजोयणाइं उवेहेणंमूले अठजोयणाइंविरकंत्नेणंमझ्मेठजोयणाइंविरकंत्नेणं उवरिंचत्तारिजोयणाइं विरकंत्नेणंइत्यादिक जंबूद्वीपपन्नत्तिनोपाठछे सारके०प्रधान एहवी जंबूद्वीपपन्नत्तिकहेछे गाथानोअर्थअन्वयकरी करियें एटले एकपाठतो ए कह्यो वली एज जंबूद्वीपपन्नत्तिमां पाठांतरे बीजोपाठछे तेमां बारजोजन मूलेंविस्तार कह्योछे तेकेम मले एकज सूत्रमां बेपाठशा? सर्वज्ञना ज्ञानमांफेरनथी तोसंदिग्धवचन केमहोय इति भावः तथाचतत्पाठः मूलेबारजोयणाइंविरकंत्नेणं मझ्मेअठजोयणाइंविरकंत्नेणं उप्पिंचत्तारिजोयणाइंविरकंत्नेणंइत्यादिकपाठजोजो केवलसूत्र मेलवी आपजो ॥ २२ ॥

सत्तावनसयमल्लिनें ॥ मणनाणीसमवाय ॥जि०॥ आठ
सयाज्ञाताकहे ॥ एतोअवरउपाय ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ श्रीमल्लिनाथस्वामीनें सत्तावनसो मनपर्यवज्ञानी श्रीसमवायांगसूत्रमध्ये कह्याछे यतः मल्लिस्सणंअरहंतोसत्तावन्नंमणपज्जवन्नाणीसयाहोत्थाइति ॥ तथा श्रीज्ञातासूत्रमध्ये मल्लिनाथस्वामीनेज आठसो मनपर्यवज्ञानी कह्याछे यथा अठसयामणपज्जवनाणीणं एम श्रीसमवायांगसूत्र तथाज्ञातासूत्र मल्युंनहीएविरोध एतो अवरउपायके०एमेलववानो उपायतो अन्यजछे तेतो गीतार्थज्ञानीजाणे ॥ २३ ॥

उत्तराध्ययनेस्थितिकही ॥ अंतरमुहूर्त्तजघन्य ॥ जि० ॥ वेदनी
यनीबारते ॥ पन्नवणामांअन्य ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तथा श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्ये वेदनी कर्मनी स्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त कहीछे यतः उदहिसरिनामाणं तीसइकोमाकोमिउ उक्कोसियाठिइहोइ ॥ अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१॥ आवरणिज्जाणडुण्हंपि ॥ वेयणिज्जेतहेवय ॥ अंतराएयकम्मंमि ॥ ठिइएसाविआहिया ॥२॥ इत्युत्तराध्ययनअध्ययन ३३ मामध्ये कह्युंछे. वली तेजवेदनी कर्मनी बारमुहूर्त्तजघन्यस्थिति श्रीपन्नवणासूत्रमध्येकहीछे यथा ॥ सायावेयणिज्जस्स ॥ इरियावहियबंधगंपडुच्च ॥ जहन्नंमणुक्कोसेणं ॥ दोसमयासंपराइय ॥ बंधगंपडुच्चजहन्नेणं ॥ बारसमुहुत्ताउक्कोसेणं ॥ पणरससागरो ॥ वमकोमाकोमिउ ॥ इत्यादिपन्नवणामध्येकह्युं तो तेउत्तराध्ययननीसाथेमल्युंनही माटे विरोध तेतोअन्यके०जुदीजवातछे ॥ २४ ॥

अनुजोगद्वारेकह्या ॥ जघननिखेपाचार ॥ जि० ॥ जीवा
दिकतोनविघटे ॥ द्रव्यभेदआधार ॥ जि० ॥ तुक० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ वली श्रीअनुयोगद्वारसूत्रनेविषे एम कह्युंछे के जेवस्तुना जेटला निखेपा करवानी तारीबुद्धिथाय तेवस्तुना तेटला निखेपा तुं तिहांकरजे पण कदाचित घणा निखेपा तुं नजाणे तिहांपण चारनिखेपातो अवश्यकरजे एटले एमआव्युंजे जघन्यथी चारनिखेपातो सर्वत्रकरवा पणचारथीओछातोहोयजनही १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव एचार अवश्यकरवा यतः जत्थयजंजाणिज्जा निक्खेवं निक्खेवेनिरवसेसं ॥ जत्थवियन-जाणिज्जा ॥ चउक्कयंनिक्खेवेतत्थ ॥ १ ॥ इत्यनुयोगद्वारसूत्रे तेवारे जीवादिकशब्दना निखेपा नविघटेके०घटेनही शामाटे जे द्रव्यनिखेपो भेदआधारके०भिन्न आधारेंथाय केमके जेभावनुंकारण तेद्रव्य तेवारे जीवनो द्रव्यनिक्षेपो केमथायजेभावजीवथवानुं कारणहोय तेद्रव्यजीव कहेवाय तेतोज्ञानादिक गुणेहीणतो जीवहोयनही दव्वंपज्ज-वविउयं ॥ दव्वविउयायपज्जवानत्थि ॥ इतिवचनात् तेमाटे मंडूकनी जटाना भारनी पेठे समस्तधर्मरहित कोइपदार्थजनथी तोएद्रव्यनिक्षेप जीवादिकमां शून्यछे आदि शब्दथी बीजापणजीवादिकलीजीयें जेम द्रव्यदेवमुनिराजनेकहियेंतेमद्रव्यजीवकोने कहेशोतेनासमाधानतोपंचांगीप्रमुखथीनीकले अत्रार्थेतत्त्वार्थवृत्तिजोजो ॥ २५ ॥

एमबहुवचननयंतरें ॥ कोइवाचनाभेद ॥ जि० ॥ एमअर्थें
पणजाणीयें ॥ नविधरीयेंमनखेद ॥ जि० ॥ तुक० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ एरीते बहुके०घणा सइकमोगमेवचनविरोध अल्पबुद्धिवालाने लागे एवा पाठ सूत्रमध्येछे तेकोइ स्थानकें नयभेदभेदेंव्याख्याहोय अने कोइस्थानकें वाचनाभे-दके०वल्लभी तथा मथुरी एबे वाचना थइ तेथीभेदथयो एमउपलक्षणथीमतांतर प्र-मुख लिपिदोष पणलइये एवीरीते जेमसूत्रमांभेदछे तेमज अर्थेके०टीकाप्रमुखनेविषे पण नयांतरेकरी वाचनांतरेकरी कोइस्थानके भेदआवे तेमाटे टीकाप्रमुख देखीने मनमांखेदनधरीयें सूत्रतथाअर्थबराबरछे ॥ २६ ॥

अर्थकारथीआजना ॥ अधिकाशुभमतिकोण ॥ जि० ॥ तोले
अमियतणेनहि ॥ आवेकहियेंलूण ॥ जि० ॥ तुक० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ अर्थकारके०जेनिर्युक्तिकार टीकाकार तेथकी आजनाजेआधुनिकमां अ-धिकाशुभमतिनाधणी कोणथया एटले एभावजे समुद्रजेवीबुद्धिनाधणी टीकाकारतथा चौदपूर्वनाधणीनिर्युक्तिकार तेथी शुभमतिकोणथया एटले शुभमतिनहीज थयाइति

भावः लोकमांछखाणोछे जे खांडना खानार तेरीतना पशुभमतिजाणवा पण कोइकाले लूणजेनीमक तेअमृतने तोले आवेनही ॥ २३ ॥

राजासरिखुंसूत्रछे ॥ मंत्रीसरिखोअर्थ ॥ जि० ॥ एमांएके
हेलीजे ॥ दियेसंसारअनर्थ ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे राजासरिखुंके०चक्रवर्ति बराबरसूत्रछे अने मंत्रीसरिखो अर्थछे एटले राजानोआशय मंत्री जाणे तेम सूत्रनोआशय अर्थकारकहे बीजो कोइसूत्रनो आशय जाणेनही एमांके०एबेहुमांथी एकेहेलीजेके०एकने निंदतांथकां दियेसंसार अनर्थके०संसारनोअनर्थआपे भवपरंपरावधारे ॥ २८ ॥

जेसमतोलेंआचरे ॥ सूत्रअर्थसुंप्रीति ॥ जि० ॥ तेतुऊक
रुणायेंवरे ॥ सुखजशनिर्मलनीति ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २९ ॥

अर्थ ॥ माटेजेआत्मार्थिप्राणीते सूत्र तथाअर्थ बेहुने समतोलें सरिखीरीतें अंगीकारकरे प्रीतिराखे अवज्ञानकरे तन्मयकरीजाणेतेप्राणीहेप्रभुतमारीकरुणाके०दयायें करीने सुखतेनिराबाधपणुं अनेजशकीर्ति तथानिर्मलजे नीतिके०न्याय ते वरेके०पामे ॥ २९ ॥ हवे दशमी ढालकहेछे तेने नवमी ढालसाथेए संबंधछे जेपूर्वेढालमां सूत्र तथाअर्थमां एकनी हीलनाकरेतो तेनेसंसार वधेएम कह्युं तेसूत्रतथाअर्थ तो ज्ञान स्वरूपछे वास्तेएदशमीढालमांज्ञाननुंवर्णनकरेछे ॥

॥ ढालदशमी ॥

॥ आपछंदेछबीलाछलवरे ॥ एदेशी ॥

ज्ञानविनाजेजीवनेरे ॥ क्रियामांछेदोषरे ॥ कर्मबंधछेतेहथी
रे ॥ नहिसमसुखसंतोषरे ॥ १ ॥ प्रभुतुऊवाणीमीठडीरे ॥
मुऊमनसंदेहजसुहायरे ॥ अमीयसमीमनधारतारे ॥ पाप
तापसविजायरे ॥ प्रभुतुऊवाणीमीठडीरे ॥ २ ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ ज्ञानविना जेजीव केवलक्रियारुचिछे तेमां घणादोषनी उत्पत्तिछे तेअज्ञानक्रियाथी कर्मबंधजथायछे पणसमसुखसंतोषके०समतानासुख जेमां परभावनी ईहा नही एहवो जेसंतोषते अज्ञानी क्रियाकरतोहोय तेहने थतो नथी यतः नाणगुणेहिं विहिणा ॥ किरियासंसारवड्ढणीभणिया ॥ धम्मरुइपहवमित्ता ॥ नाणसमेयासयाडुज्जा ॥ १ ॥ एयोगनी वीसीमध्ये कह्युछेमाटे हेस्वामी तमारीवाणी घणीज मीठीलागेछे मा-

रामनमांसेहेज सोहायछे पणकोइना बलात्कारथीनही तेअमृतसरिखीतमारीवाणीने मनमांधारतांथकां पापरूप तापके०जस्रता तेसवैमटीजायनेशीतलताथाय ॥ २ ॥

लोकपंतिकिरियाकेरेरे ॥ मनमेलेअन्नाणरे ॥ नवइछानाजो
रथीरे ॥ विणशिवसुखविन्नाणरे ॥ प्रजु० ॥ मुझ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ लोकपंतिके०लोकनी हारमां लोकानुजायी क्रियाकरे मनमेलेके०शुद्ध अध्यवसायविना अन्नाणके०अज्ञानीजीवते नवजे संसार तेनीइछाना जोर थकी एटले बहुलसंसारीजीवछे शिवसुखना विज्ञानविना एटले जेक्रियाकरे तेपण ज्ञानविना जशमानप्रतिष्ठानेअर्थेकरे ॥ ३ ॥

कामकुंनसमधर्मनुंरे ॥ मूलकरीएमतुछरे ॥ जनरंजनकेवल
लहेरे ॥ नलहेशिवतरुगुछरे ॥ प्रजु० ॥ मुझ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कामकुंज सरिखो मोक्षसुखनोआपनार एवोजेधर्म तेनुंयशमानादिक तुछ मूलकरीने तेप्राणीकेवल जनरंजनके०लोक रीझे एटलुंज फलपामे पणअज्ञानक्रियाथी मोक्षरूपजेवृक्ष तेनो गुछके०गुछो उपलक्षणथी फललइयें तेनपामे ॥ ४ ॥

करुणानकरेहीननीरे ॥ विणपणिहाणसनेहरे ॥ द्वेषधरं
तांतेहसुंरे ॥ हेठाआवेतेहरे ॥ प्रजु० ॥ मुझ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे षोडशकमां पांचगुण आशयविशेष देखाड्याछे यथातृतीयषोडशके १ प्रणिधि २ प्रवृत्ति ३ विघ्नजय ४ सिद्धि ५ विनियोग नेदतःप्रायःधर्मज्ञैराख्यातःशुनाशयःपंचधा त्रिविधौ एपांचन्नेद अन्वयरीतें श्रीहरिनद्रसूरियें देखाड्याछे ते श्रीजशोविजयउपाध्यायजी व्यतिरेकें देखाडेछे तेमां प्रथमप्रणिधाननामाआशयकहेछे जेहीनके० पोतायकी हीणगुणीछे एटले हीणगुणठाणेवर्ते तेहनी करुणानकरे विणपणिहाणसनेहके०प्रणिधाननामाआशयविशेषना सनेहविना हीननीकरुणानकरे वलीहीनगुणी उपरद्वेषकरतांथकां जेएमांशागुणछे इत्यादिक द्वेषधरतां तेपोतेज हेठाआवे ॥ ५ ॥

एककाजमांनविधरेरे ॥ विणप्रवृत्तिथिरनावरे ॥ जिहांतिहांमो
होडुंघालतांरे ॥ धारेढोरस्वनावरे ॥ प्रजु० ॥ मुझ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रवृत्तिनामाआशय वखाणेछे विणप्रवृत्तिके०प्रवृत्तिनामागुणविना एक काजमांके०एकजेधर्मकार्यमांड्युं तेमां नविधरेके०नराखे थिरनावके०थिरतानाव एटलेएककाजमां थिरनही अने प्रारंनितकार्यमां तेवोप्रयत्ननही एमपण समजवुं जिहां तिहां मुखघालतो एटले जेधर्मस्थानक मांड्युंछे तेमूकीने अकालें फलवांछे अनेअका-

लेंफल वांछवुंते तत्वथीआर्त्तध्यानछे तेवारे जिहांतिहां मोहोडुं घालतां ढोरनोस्वजा-वधरेछे जे खावा मूक्युंहोय तेमूकीने बीजामां मुखघाले ॥ ६ ॥

विनाविघनजयसाधुनेरे ॥ नविअविछिन्नप्रयाणरे ॥ किरियाथी
शिवपुरीहोयरे ॥ केमजाणेअन्नाणरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजो विघ्नजय बतावेछे विघनके०अंतराय तेनो जयके०जीतवुं तेविघ्न-जयनामागुणविना साधुने मात्रक्रियायेंकरी अविछिन्नप्रयाणकेमथाय एटले मोक्षमार्ग अविछिन्नपणे केमसधाये माटेविघ्नजयविना साधुनेक्रियाथी अविछिन्नप्रयाणे शीवपुर नहोय ए वातो अज्ञानी केमजाणे हवेविघ्न तथाविघ्ननोजयदेखाडेछे ॥ ७ ॥

शीततापमुखविघनछेरे ॥ बाह्यरअंतरव्याधिरे ॥ मिथ्यादर्श
नएहनीरे ॥ मात्रामृडमध्याधिरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेविघ्नना भेदत्रणछे १ हीनविघ्न २ मध्यमविघ्न ३ उत्कृष्टुंविघ्न एमां ही नविघ्नते जेमधर्मकरतां शीतके०टाढवाए तथातापके०तरूकोलागे तेधर्ममां विघ्नछे तथा बाह्यव्याधिके० रोगज्वरकासश्वासप्रमुख जे शरीरना रोगते मध्यमविघ्नकहियें जे माटे टाहाड तथातडका करतां शरीरना रोगतेविशेषविघ्नकरे तथात्रीजुंउत्कृष्टुंविघ्न तेअंतरव्याधि मिथ्यादर्शनके० मिथ्यात्वमोहनीय ए उत्कृष्टुं धर्ममां विघ्नछे जेमाटे ध-र्मकरतां जो मिथ्यादर्शननो उदयथइ जायतो धर्ममां महोटुंविघ्नथाय ए विघ्नपूर्वे जे बेविघ्नकह्यां तेकरतांएआकरुं विघ्नछे माटे उत्कृष्टुंविघ्नकह्युं जेममार्गमां चालतां जघ-न्यमध्यम अनेउत्कृष्टुं एत्रणविघ्नछे मार्गमांकांटालागेते जघन्यविघ्न, मार्गमां ज्वरप्रमु-खतेमध्यमविघ्न, मार्गमां दिग्मूढथायतेउत्कृष्टुंविघ्न तेमधर्ममांपण पूर्वोक्तत्रणविघ्नजा-णवां तेनीमात्राके० प्रमाणकहेछे मृडुके० हीन मध्यके० मध्यम अनेअधिके० उत्कृष्टुं एमअनुक्रमे जोरूवां ॥ एतोविघ्नदेखाड्यां हवेविघ्नजय अनुक्रमेंदेखाडेछे ॥ ८ ॥

आसनअशनजयादिकेंरे ॥ गुरुयोगेंजयतासरे ॥ विघनजो
रएनविटलेरे ॥ वगरज्ञानअभ्यासरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ए॥

अर्थ ॥ आसनके० वीरासनादिकेकरी पूर्वोक्त शीततापादिक विघ्ननो जयकरे तथा अशनएटले आहारेंकरी पूर्वोक्त ज्वरप्रमुखविघ्ननोजयकरे तथा गुरुयोगेंकरी पूर्वोक्त मिथ्यादर्शनरूपविघ्ननो जयकरे केमके गुरुयोगें समकितपामेज एविघ्ननुंजोर तेज्ञाना-भ्यासविना टलेनही माटेज्ञानाभ्यासें परिणाम दृढराखे शीततापप्रमुखमां चलेनही अनेज्वरप्रमुखमां कृतकर्मअहियासे एटले एमजाणे जेमारांउदयेंआव्यां कर्मभोगवुंछुं तथा मिथ्यात्वनुंजोरछते ज्ञानेसम्यक्जिनवचनभावे ॥ ए ॥

विनयअधिकगुणसाधुनोरे ॥ मध्यमनोउपगाररे ॥ सिद्धिवि
नाहोवेनहीरे ॥ कृपाहीननीसाररे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवे सिद्धिनामाआशय वखाणेछे जेपोताथकी अधिकगुणवंतासाधुनो विनय तेसिद्धिनामाआशयविशेष आव्याविना होयनही तथा मध्यमके० मध्यमगुणवंताहोय तेने उपकारकरे तेपण सिद्धियोगविना होयनही अने हीननीके० पोताथी हीनगुणी तेनी सारके० प्रधान कृपाके० दयातेपण सिद्धियोगविनानहोय ॥ १० ॥

विणविनियोगनसंभवेरे ॥ परनेधर्मेयोगरे ॥ तेहविनाज
नमांतररे ॥ नहिसंततिसंयोगरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ०॥११॥

अर्थ ॥ हवे विनियोगनामापांचमोआशयवखाणेछे विनियोगनामागुणविना परजीवने जेधर्मेजोडवुं तेयोग नसंभवेके० नहोय तेविनाके० तेहविनियोगविना जनमांतरेके० परभवनेविषे संततिके० परंपरानो संयोगते नहीके० नहोय एटले सिद्धुंकार्य तेविनियोगछे तेयावत् सर्वसंवरथाय तिहांलगे धर्मपरंपरात्रूटेनही अनेजोविनियोग नामागुण नथयोहोय तोत्रूटीजाय एसर्वेगुणतेज्ञानविनानहोय ॥ ११ ॥

किरियामांखेदेकरीरे ॥ दृढतामननीनाहिरे ॥ मुख्यहेतुतेधर्म
नोरे ॥ जेमपाणीकृषिमांहिरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे परमेश्वरनी वाणीमीठीछे तेवाणी स्तवनाद्वारें प्रभुनी स्तवनाकरे तेप्रभुनी स्तवनातो प्रभुजीनुं ध्यानकरियें एटलेते वीतरागनी स्तवनाजथइ तेप्रभुनुंध्यान बेभेदेछे एकसालंबन बीजुंनिरालंबन तेमां सालंबनते चक्षुप्रमुखेंकरी जिनप्रतिमादिकनुंआलंबनकरीने समवसरणस्थजिनस्वरूपनुं ध्यानकरवुं ते तथा वीतरागना शुद्धनिरावर्ण आत्मप्रदेश समुदायने केवलज्ञानादिकस्वभावनुं ध्यानकरवुं तेनिरालंबनध्यान कहियें शुद्धपरमात्मगुणध्यानंनिरालंबनं इतिवचनात् हवेइहांतो सालंबनध्याननी वातछे सालंबन केम थायतेकहेछे जेजूदाजूदा जीवनी अपेक्षायें आठचित्तनो त्यागकरे थके ध्यानथाय तेआठचित्तनानामकहेछे यदुक्तं चतुर्दशेषोडशके १ खेदो २ द्वेग ३ क्षेपो ४ त्थान ५ भ्रांत्य ६ न्यमु ७ द्रुगा ८ संगैः ॥ युक्तानिहि चित्तानिप्रबंधतोवर्जयेन्मतिमान् ॥१॥ ए आठचित्तने दोषेकरीने ध्यानकरीशकेनही तेमां प्रथम खेदनामा दोषकहेछे खेदके०थाक जेम पंथेहिंडतांथाके तेनीपेरे खेददोषेकरी क्रियामां मननी दृढताके० एकाग्रपणुं तेनहोय एटले क्रियामां प्रणिधाननरहे अनेजे प्रणिधान ते धर्मनोमुख्यहेतुछे जेम करशण (खेती)मां पाणीते मुख्यहेतुछे तेमक्रियामां प्रणिधानते मुख्यहेतुछे ॥ १२ ॥

बेठापणजेऊपजेरे ॥ किरियामांउद्वेगरे ॥ योगद्वेषथीते
क्रियारे ॥ राजवेठसमवेगरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उद्वेगनामा बीजो दोषवखाणेछे खेदविनापण बेठांथकां उद्वेगथाय तेनीपेरे उद्वेगदोषमां पणजाणवुं बेठांथकां पणजेक्रिया करे तेमां उद्वेगऊपजेतो ते क्रियाकरतां तेप्राणीने सुखजेचित्तनीप्रसन्नता तेकेमउपजे जेवारे क्रियामां उद्वेगथयो तेवारे द्वेषउपनो तेद्वेषथी राजानी वेठनीपेठे कथंचित्क्रियाकरे वेगके० उतावलो करे एवीरीतें राजवेठनी पेठे करे तेने जन्मांतरे योगीनाकुलने विषेजन्मपण नहोय एअर्थषोडशकमांजोइलेवो ॥ १३ ॥

भ्रमथीजेहनसांभरेरे ॥ कांइअकृतकृतकाजरे ॥ तेहथीशुभ
किरियाथकीरे ॥ अर्थविरोधिअकाजरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे यद्यपि षोडशकमां भ्रांतिनामा पांचमो दोषकह्योछे तथापि उपाध्यायजीयेंइहांत्रीजोभ्रांतिनामा दोषवर्णव्योछे एमअनानुपूर्वीपण व्याख्यानतुंअंगछे हवे भ्रांतिनो अर्थकहेछे भ्रांतिके०वस्तु अन्यहोय तिहांअन्यजाणे जेम शुक्तिका(शीप)नेविषे रजतनी भ्रांतिथाय तद्वत् भ्रमेकरी जेवस्तु सांभरेनही जेमेंधर्मकृत्यकर्खुं अथवा नथीकर्खुं उपलक्षणथी मेंपाठउच्चर्यो के नथीउच्चर्यो इत्यादि तेशुभक्रियाथकी पण अर्थविरोधि एवुंजे अकाजके०इष्टफलरूपजेकार्य ते नथाय तेनेअकाजकहियें ॥ १४ ॥

शांतवाहिताविणहोवेरे ॥ जेयोगेउत्थानरे ॥ त्यागयोगछे
तेहथीरे ॥ अणछंमातुंध्यानरे ॥ प्रभु० ॥ मुऊ० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे उत्थाननामाचोथो दोषवर्णवेछे उत्थानके०चित्तनी अप्रशांतता तथा मनप्रमुखनी उत्सुकताथकी जेम कोइक पुरुष मदिराप्रमुखेंकरी मदावष्टब्धथयो होय तेनीपेठे जेयोगने उत्थानदोषेकरीने शांतवाहिताविणहोयके०शांतवाहिता न होय एटले जेक्रियाकरे तेमांउद्वेगरहे पण ठरणनहोय तेक्रियाकेवीछे के त्यागयोग के०त्यागवायोग्यछे पणतेहथीके०तेत्यागयोगक्रियाथी अणछंमातुं ध्यानके०छंमातुं तजातुंनथी एवुं ध्यानछे जेम कोइक प्राणीयें दीक्षालीधीहोय अने सर्वथामूलोत्तरगुण निर्वाहकरवा असमर्थछे तेप्राणीनेविधिपूर्वक जेमश्रावकाचार ग्रहवानोउपदेशआपीयें ते लिंग त्यजवायोग्यछे पणलोकनी निंदाप्रमुखेअणछंमातुंछे उक्तंचउपदेशमालायां ॥ जइनतरसिधारेउं ॥ मूलगुणभरंउत्तरगुणंच ॥ मोत्तूणंतोतिभूमिं ॥ सुसावगत्तंवरतरागं ॥ १ ॥ १५ ॥

विचेविचेबीजाकाजमांरे ॥ जाएमनतेखेपरे ॥ ऊखणतांजि
मशालिनुंरे ॥ फलनहीतिहांनिर्लेपरे ॥ प्रजु० ॥ मुऊ० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे पांचमो क्षेपनामादोषकहेछे जेक्रियामांमीहोय तेक्रियामां वच्चेवच्चे बीजाकार्यमां मनजाय तेखेपकहियें ऊखणतांके०वारंवार उपामेलीउपामेली एवीजे शालितेनुं निर्लेपके०चोखुंफल नहीके०नथाय एटले एजावजे एकवार शालि उखेमीने वावेतो फलथाय पणवारंवारउखेमीने वावेतो फलनथाय तेमइहांवारंवार प्रारंजित क्रियामूकीने अन्यक्रियामांमनजाय तेफलनपामे ॥ १६ ॥

एकजठामेंरंगथीरे ॥ किरियामांआसंगरे ॥ तेहजगुणठा
णेथितिरे ॥ तेहथीफलनहीचंगरे ॥ प्रजु० ॥ मुऊ० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे आसंगनामाछठो दोषकहेछे आसंगके०जेक्रियाकरतोहोय तेमां इदमेवसुंदरं एहवो जेरंग तेआसंगनामादोषकहीयें जोपणतेअनुष्ठानशास्त्रोक्तछे तोपण तेमां रंगनुंजे घरछे तेदोषरूपछे तेहजगुणठाणेथितिके० तेवेनेतेवेजगुणठाणेरहे पण आगल गुणठाणो वधेनही जेमश्रीमहावीरऊपर गौतमस्वामीने जक्तिरागहतो तेथीतेजगुणठाणे स्थितिरही पणमोहनीकर्मनुंउन्मूलनकरीने केवलज्ञानरूपजेफलते चंगके०मनोहर नथयुं माटे आसंगते दोषता जाणवी एअर्थषोमशकवृत्तिमांजोजो ॥ १७ ॥

मांमीकिरियाअवगणीरे ॥ बीजेठामेहर्षरे ॥ इष्टअर्थमां
जाणीयेंरे ॥ अंगारानोवर्षरे ॥ प्रजु० ॥ मुऊ० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे अन्यमुद्नामा सातमो दोषकहेछे जेप्रारंजितकार्यथकी अन्यस्थानकें हर्ष तेअन्यमुद्दोष जेमांमीकिरियाके०जेक्रियाकरेछे ते अवगणीके०तेनो आदरमूकीने बीजेठामेंहर्षके०बीजीक्रियामां हर्षराखे एटले चैत्यवंदनकरतोहोयने सामायकमां हर्षकरे तेप्राणीने इष्टअर्थके०वांछितअर्थमां अंगारानोवर्षके०अंगारानो वरसादवरसेछे एटलेमांमेलीक्रियामांजे अनादरछे तेसर्वदोषनुंमूलछे ॥ १८ ॥

रोगहोएसमजणविनारे ॥ पीमाजंगसुरूपरे ॥ शुद्धक्रिया
उछेदथीरे ॥ तेहवंध्यफलरूपरे ॥ प्रजु० ॥ मुऊ० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवे आठमो रोगनामादोष कहेछे तेपीडाजंगसुरूपके०पीडासुरूप अथवा जंगसुरूप एमसमजणविनाजेपदछे तेशुद्धक्रियाने जोडीयें तेवारेएवो अर्थथायजे समजणविनाशुद्धक्रियानो उछेदकरे पण अशुद्धक्रियाकरेखरो तेवारे शुद्धक्रियाने पीमा थयी अथवा शुद्धक्रियानोजंगथयो एवे अर्थरोगनाथया एटले रोग दोषथके शुद्ध

क्रियानो उछेद ते विनाशकरे तेवंध्यफलके०तेअशुद्धक्रिया वांझियाफलरूपथाय ॥१९॥

मानहानीथीदुःखदिएरे ॥ अंगविनाजेमज्ञोगरे ॥ शांतोदात्त
पणाविनारे ॥ तेमकिरियानोयोगरे ॥ प्रज्ञु० ॥ मुऊ० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ एऊपर कह्याआठेदोष रहित जेहोय तेने शांतादिकगुणआवे माटे एक शांतबीजोउदात्त एबेगुणवखाणेछे तेमानीपुरुषने जेममाननी हाणीथाय एटले दुःख उपजे तथाअंगविनाके० अंगोपांगेहीन होय अनेज्ञोगनी सामग्रीस्त्रीप्रमुख मली होय ते जेम चित्तने दुःखआपे अथवाजेम ज्ञोगनी सामग्री मलीहोय तोपण मान हानी-थीके० प्रमाणहीन अधिका उछा ज्ञोगवे तो दुःखआपे तथाअंगविना पण दुःखथाय तेम शांतअनेउदात्त एबेगुण आव्याविना क्रियानो योगपणएवो जाणवो ॥ २० ॥

शांततेकषायअज्ञावथीरे ॥ जेउदात्ततेगंज्ञीररे ॥ किरियादोष
त्यजीलहेरे ॥ तेसुखजशज्ञरधीररे ॥ प्रज्ञु० ॥ मुऊ० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ शांततेकहियेंजे कषायनोअज्ञाव अनेउदात्ततेगंज्ञीरहोय एवाप्राणी जेहो-यते क्रियामां लागता दोषत्यजीने लहेके०पामे ते धीरके०धीरपुरुष सुखनोअने यशनो ज्ञरके०समूहपामे ॥ २१ ॥ हवेएढालमांशांत तथा उदात्तगुणवखाण्या तेशांत उदात्त गुणतो धर्मरूपछे तेधर्मरूपरत्ननी योग्यताकोनेहोय तेदुहामांकहेछे ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ दोहा ॥

एकवीस गुण परिणमे ॥ जास चित्त नितमेव ॥
धरमरतननी योग्यता ॥ तास कहे तूं देव ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेनाचित्तमां नितमेवके०निरंतर एकवीसगुणपरिणम्याहोय तेजीवने धर्मजे देशविरति सर्वविरतिरूपरत्न तेनी योग्यताहोय एम हेदेव तमेकह्योछो ए एकवीसगुण द्रव्यश्रावकनाछे तेसंक्षेपेकहेछे ॥ विस्तारेंआगलकहेशे ॥

१ खुद्दनही २ रूवरूपनिधि ॥ ३ सोम्म ४ जनप्रियजधन्य ॥
५ क्रूरनही ६ ज्ञीरुवली ॥ ७ असठ ८ सार दखिन्न ॥ २ ॥

अर्थ ॥ १ क्षुद्रमतिनहोय एटले गंज्ञीरहोय २ रूपनोनिधानहोय एटले पंचेंद्रिय स्पष्ट होय ३ सोम्म एटले सौम्य होय तेस्वज्ञावेंअपापकर्मिहोय ४ जनप्रियजके०लोकने वल्लज्ञ होय ते सदासर्वदासदाचारीहोय धन्यके०एप्रशंसाकरवायोग्यछे ५ क्रूरनही के०अक्लिष्ट

चित्तहोय एटलेसंक्लेशपरिणामीनहोय ६ आलोकपरलोकनाअपायथी जीरुके०बीहीतो रहे७ असठ एटलेपरनेठगेनही ८ सारके०प्रधान दखिन्नके०दाक्षिण्यगुणवंतहोय एटले परनीप्रार्थनानोजंगनकरे ॥ २ ॥

ए लज्जालुउं १० दयालुउं ॥ ११ सोमदिठिमज्झथ्थ ॥ १२ गुण
रागी १३ सतकथ १४ सुपख्ख ॥ १५ दीरघदरशिअथ्थ ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ए लज्जालुउंके०स्वकुलादिकनी लज्जावंत एटलेअकार्यवर्जक १० दयालुउं-के०प्राणीमात्रनी अनुकंपावंत ११ सोम्यदृष्टिते यथावस्थितविचारनी दृष्टिछेअने दूरदोषत्यागीते सौम्यदृष्टिकहियेंतेज मज्झछके०मध्यस्थ राग द्वेष रहित एटले सौम्यदृष्टि अने मध्यस्थ एपदे एकज गुण कहियें १२ गुणरागी तेगुणीजीवनो पक्षपाती होय १३ सतकथ ते जली कथानो कहेनार एटले धर्मकथावाहालीछे जेने १४ सुपक्कके०सुशील अनुकूल परिवारयुक्त होय १५ दीरघदरसीके०अनागतकाल विचारीने परिणामे सुंदरकार्यकारी होय अन्नके०ए अर्थछे ॥ ३ ॥

१६ विशेषज्ञ १७ वृध्धानुगत ॥ १८ विनयवंत १९ कृतजाण ॥
२० परहितकारी २१ लब्धलख्ख ॥ गुणएकवीसप्रमाण ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ १६ विशेषज्ञके०पक्षपातरहितपणे गुणदोषविशेषनो जाण १७ वृद्धानुगतके० परिणतमतिपुरुषने सेवनारोहोय १८ विनयवंतके०गुणाधिक पुरुषनेविषे गौरवकर्त्ता १९ कृतजाणके०कस्यागुणनोजाण २० परहितकारीके०निर्लोजी थको परोपकारकरे एटले जेदाक्षिण्यगुण तेपरनो प्राथ्यों उपकारकरे अने परहितकारी तेपोताथी उपकारकरे एटलुं आठमा गुणथी वीसमा गुणमां विशेषजाणवुं २१ लब्धलक्षगुणते धर्माधिकारी तेहनोजावार्थ लब्धइवप्राप्तइवलक्ष्योलक्षणीयोधर्मानुष्ठानव्यवहारोयेनसलब्धलक्ष्यःसुशिक्षःसुशिक्षणीयइति एएकवीसगुणसंपन्न जेजीव तेधर्मरत्नने योग्यहोय ॥४॥

खुद नही ते जेह मने ॥ अति गंजीर उदार ॥ न
करे जन उतावलो ॥ निज परनो उपगार ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेए एकवीसगुण अर्थ विस्तारें कहेछे खुद्दनहीतेके०अक्षुद्रतेनेकहियें जेनुं मन अतिगंजीरहोय उदारहोय तुछ न होय केमकेजे उतावलो मनुष्यहोय ते पोताने तथा परने उपकार करीशकेनही एटले गंजीर होयते पोताने तथा परने उपकार करे पण उतावलो होयते नकरीशके एप्रथमअक्षुद्रगुण ॥ ५ ॥

शुन्न संघयणी रूपनिधि ॥ पुरण अंग उपंग ॥
ते समरथ सेजें धरे ॥ धर्म प्रजावन चंग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ शुभके॰उत्तम संघयणवंतहोय रूपनुं निधानहोय संपूर्ण अंगोपांगहोय पंचेंद्रिय परवडांहोय ते धर्मकरणी करवाने सेहेजे समर्थहोय ते धर्मनी प्रभावनाकरे इहां नंदिखेण तथा हरीकेशीप्रमुख साथेविरोध न गणवो केमके तेपणसंपूर्ण अवयववंतहता तथा भावचनते प्रायिकछे जोशेषबीजागुणयुक्तहोयतोरूपनुंप्रयोजन नथी॥६॥

पाप कर्म वरते नही ॥ प्रकृति सोम्य जगमित्त ॥
सेवनीक होवे सुखे ॥ परने प्रशम निमित्त ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ पापकर्म तेआक्रोश वध हिंसा चोरीप्रमुखनेविषेनप्रवर्ते आजीविका प्रमुख कारण टालीने सेहेजे सोम्यभाव अबीहामणो सर्वजगतनेविषे मित्रताहोयएवापुरुषने सुखेलोक सेवीशके परने प्रशमके॰समतानुं कारणहोय एत्रीजो गुणथयो ॥ ७ ॥

जन विरुद्ध सेवे नही ॥ जन प्रिय धर्मसूर ॥ मलिन
भाव मनथी तजी ॥ करी शके अक्रूर ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जनशब्देंलोककहियें तेलोकमांइहलोक तथा परलोक अने उभयलोक पण आवे एटले एभावजे इहलोक विरुद्ध नसेवे यदुक्तं सव्वस्सचेवनिंदा ॥ विसेसउतहय गुणसमिद्धाणं ॥ उज्जुधम्मकरणहसणं ॥ रीढाजणपूयणिज्जाणं ॥ १ ॥ बहुजणविरुद्धसंगो ॥ देसाचारलंघणंतहय ॥ उवणभोगोयतहा ॥ दाणाइविपयडमनेउ ॥२॥ साहुवसणंमित्तो ॥ सोसइसामडंमिअपडिआरोअ ॥ एमाइयाइउं ॥ लोगविरुद्धाइंनियाणंति ॥३॥ तथा परलोकविरुद्धजेखरकर्मादि तेपन्नरकर्मादिकतथा उभयलोकविरुद्ध द्यूतादिक सात व्यसन नसेवे तोज जनप्रियके॰लोकने प्रिय तथा धर्मे सूरके॰ धर्मनोअधिकारीहोय ए चोथो गुणकह्यो मलिनभाव मनथी तजीने धर्मकरीशके एटलुं धर्मपद बाहारथी लेवुं तेअक्रूर कहियें केमके लोकप्रिय तथा अक्रूरगुणनुं लक्षण धर्मरत्नप्रकरणमध्ये एमज वखाण्युंछे यथा ॥ इहपरलोयविरुद्धं ॥ नसेवए दाणविणय शीलङ्को ॥ लोयप्पिउजणाणं ॥ जणेइधम्मंमिबहुमाणं ॥ १ ॥ कूरोकिलिठभावो ॥ सम्मंधम्मंनसाहिउंत्तरइ ॥ इयसोनइत्थजोगो ॥ जोगोपुणहोइअक्रूरो ॥ २ ॥ एगाथाने अनुसारें अर्थकस्योछे वली बुद्धिअविरुद्धपणे सुजेतोविशेषकरजोएपांचमोगुण ॥ ८ ॥

इह परलोक अपायथी ॥ बीहे भीरुक जेह ॥ अप
यशथी वली धर्मनो ॥ अधिकारी छे तेह ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ आलोक तथा परलोकना अपायथीके॰कष्टथी बीहे तथा अपयशथी बीहे तेभीरुककहियें तेपुरुष धर्मनो अधिकारीजाणवो एछठो गुणकह्यो ॥ ९ ॥

असठ न वंचे परप्रतें ॥ लहे किर्त्ति विश्वास ॥ ज्ञाव
सार उद्यम करे ॥ धर्म ठाम ते खास ॥ १० ॥

अर्थ ॥ असठके०मायावी नही एवो गुणवंत तेपरने वंचेके०ठगेनही तिवारे लोकमां कीर्त्तिपामे प्रशंसवायोग्यहोय अने लोकपण तेनो विश्वासकरे वली ज्ञाव सारके० पोतानुंचित्त रीऊवे पण परनुं चित्तरिऊववामाटे उद्यमनकरे तथाचोक्तं ज्ञूयांसो ज्ञूरिलोके स्युः ॥ चमत्कारकरानराः ॥ रंजयंतिस्वचित्तं ये ॥ ज्ञूतलेतेतुपंचषाः ॥ १ ॥ इत्यादिक तथा धर्मठामनेविषे खासके०रुमो उद्यमकरे ॥ एसातमोगुण ॥ १० ॥

निज कारय गंमी करी ॥ करे अन्य उपकार ॥
सुदखिन्न जन सर्वने ॥ उपादेय व्यवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली जेपोतानुं कार्य गंमी एटले पमतुंमूकीने पण परउपकारकरे जेजे इहलोक परलोकनेविषे हितकारीछे तेवाउपकारकरे पण पापहेतुयें नप्रवर्त्ते ते सुदाक्षिण्यनामाआठमोगुण कहियें तेजन सर्वलोकने उपादेयव्यवहारके०आदेयवाक्य ( जेनुं कहेवुं बधामाने एवो ) होय व्यवहारते वाक्यव्यवहार ॥ ११ ॥

अंगीकृत न त्यजे त्यजे ॥ लज्जालुउ अकाज ॥
धरे दयालु धर्मनी ॥ दयामूलनी लाज ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ धर्मकार्य जेअंगीकारकर्युं होय तेनत्यजे अने अकाजके०जेअकार्यहोय ते त्यजे तेने लज्जालु नामेंनवमोगुण कहियेंतथा दसमोदयालु तेने कहियेंजे दयामूल धर्मछे तेनी लाज धरे एटले दयामूलधर्मनलोपे ॥ १२ ॥

धर्म मर्म अवितत्र लहे ॥ सोमदिठि मज्ञ्रत्र ॥ गु
णसंयोग करे सदा ॥ वरजे दोष अणत्र ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे मध्यस्थ सोमदृष्टिनामा अग्यारमो गुणवखाणेछे मध्यस्थते कोइ दर्शनउपर पक्षपातनथी तथा सोमदिठीके०द्वेषरहित दृष्टिदर्शन छेजेने ते मध्यस्थ सोमदृष्टिकहियें तथा धर्मनो जेमर्म तेअवित्तत्रके०यथार्थ लहे जाणे एटले सगुण निर्गुण अल्पगुण बहुगुण तथासर्व पांखंमीनिरुपित जेधर्म ते कनक परिक्षक पुरुषनीपेठे जाणे अनेजेज्ञानादिकगुण तेनो सदासंबंधकरतोरहे तथाअनर्थनाकरनारादोष तेसर्वेवर्जे तेअग्यारमोगुण ॥ १३ ॥

गुणरागी गुण संग्रहे ॥ दूसे न गुण अनंत ॥ उ
वेखे निर्गुण सदा ॥ बहुमाने गुणवंत ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ गुणनो रागीहोय धर्मऊपर रागधरे तथा गुणनो संग्रहकरे नवागुण अंगे-आणे गुणअनंतके०घणागुणवंतने दूसेनके०डुःखवेनही एटले एनावजे गुणघणाहोय अने कदाचित् कोइक दोषहोय तोपण तेने डुःखवेनही यतः नूरिगुणाविरलविय ॥ इक्कगुणेविहुजणोनसवत्र ॥ निद्दोसोणेविनद्दं ॥ पसंसिमोथेवदोसेवि ॥ १ इत्यादि तथा निर्गुणने उवेखेके०डुखवेनही तेमजस्तवे पणनही अनेगुणवंत जे देशविरतिसर्वविरतिवंत तेनो बहुमानकरे जे धन्यए धन्य एनो अवतार इत्यादिक गुणरागीनामा वारमोगुणथयो

अशुन कथा कलुषित मति ॥ नासे रतन विवेक ॥
धर्म्मार्थि सतकथा हुए ॥ धर्मनिदानविवेक ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ अशुनकथाजे स्त्रियादिकनीकथा तेणेकरीने कलुषितमति थयीछे जेहनी तेप्राणीने विवेकरूपरत्न सदसद्वस्तुनुं जेपरिज्ञान तद्रूपरत्न नासे तेमाटे धर्मार्थिथको सत्कथकहोय तीर्थंकर गणधर महर्षिप्रमुखनाचरित्रकहे जेधर्मार्थि तेधर्मनो अर्थिथको ए सत्कथाजधर्मनुंनिदानछे विवेकके०विनागछे जेअशुनकथानो त्याग अने शुनकथाकरवी एतेरमोगुण ॥ १५ ॥

धर्मशील अनूकूल यश ॥ सदाचार परिवार ॥
धर्म सुपख्ख विघने रहित ॥ करी शके ते सार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे सुपक्षयुक्तनामा चउदमोगुणकहेछे ते जेनोपरिवारते धर्मशील के० धर्मकरवाना आचारवालोछे अनुकूलके०धर्ममांविघ्न न करे तेवो तथा यशवंत अने सदाचारीपरिवारहोय एवो सुपख्क० के सुपक्षगुणवंत विघ्नरहितहोय ते पुरुष सारके०प्रधानएवोजे धर्मते प्रतेकरीशके ॥ १६ ॥

मांडे सवि परिणाम हित ॥ दीरघदर्शी काम ॥
लहे दोष गुण वस्तुना ॥ विशेषज्ञ गुणधाम ॥१७॥

अर्थ ॥ हवे दीर्घदर्शिनामा पन्नरमो गुणकहेछे ते जे कामके०कार्यमांडे तेपरिणामे हितकारीजहोय उपलक्षणथी तेमां लानघणोहोय अनेक्लेश अल्पहोय बहु लोकने प्रशंसनीकहोय यतः आढवइदीहदंसी ॥ सयलंपरिणामसुंदरंकज्जं ॥ बहुलानमप्पकेसं ॥ सलाहणिज्जंबहुजणाणं ॥१॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे हवेविशेषज्ञ नामा सोलमोगुणवखाणेछे जे लहेके०जाणेवस्तुना गुणदोष एटले एअर्थजेपक्षपातविना वस्तुना गुणदोष सर्वने जाणे जोपक्षपातहोय तोगुणमां दोषकाढे अनेदोषमां गुण काढे पण मध्यस्थबुद्धिने यथास्थितनासे एवोविशेषज्ञ तेगुणनुं धामके०घरहोय ॥ १७ ॥

वृद्धानुगत सुसंग ते ॥ होवे परिणत बुद्धि ॥ विनय
वंत नियमां करे ॥ ज्ञानादिकनी शुद्धि ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे वृद्धानुगतनामा सत्तरमो गुणकहेछे ते जे परिणतबुद्धिवान परिपक्क बुद्धिनो धणीहोय तेपापना आचारनेविषे नजप्रवृत्ते अनेगुणवंतजे वृद्ध होयतेने अनुगतके०अनुजायीयें प्रवर्ते एटले वृद्धनी संगतकरवी तेसुसंगतकहियें तेसुसंगते करी पोते पण परिणतबुद्धिवालो थाय परिपक्कबुद्धिवानथाय यतः वुड्ढोपरिणयबुद्धी ॥ पावायारेपवत्तइनेव ॥ वुड्ढाणुगोविएवं ॥ संसग्गिकयागुणाजेण इति हवेविनयनामा अढारमो गुणकहेछे तेविनयवंतप्राणी नियमांके०निश्चेंज्ञानादिकनीशुद्धिकरे एटले एज्ञावजे सर्वज्ञानादिकगुणनुं तथा मोक्षनुंमूलतेविनयछे माटेविनयगुणजोइये यतः विणउंसवगुणाणं ॥ मूलंसन्नाणदंसणाईणं ॥ मुक्खस्सयतेमूले ॥ तेणविणीउंइहपसछो ॥ १८ ॥

गुण जोडे गुरु आदरें ॥ तत्वबुद्धि कृतजाण ॥ पर
हितकारी परप्रतें ॥ थापे मार्ग सुजाण ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवेकृतज्ञनामाओगणीसमोगुणकहेछे तेजेगुणनेविषे तथा धर्मने विषे बीजानेजोडे तथा धर्मगुरुऊपर घणोआदरकरे तथा जेने तत्व ग्रहवानी बुद्धिहोय तेने कृतजाणके०कृतज्ञ कहियें हवे वीसमो परहितकारीनामा गुणकहेछे जे परप्रतें धर्ममागेंथापे अने सुजाणके०डाह्याहोय वलीजेणेधर्ममार्गजाण्योछे एटले गीतार्थछे केमके जोअगीतार्थहोयअनेतेपरनेहितकरवा चाहे तोपण अहितथाय यतः किंसत्तोकठयरं ॥ जंसंममनायसमयसप्पावो ॥ अन्नंतुदेसणाए ॥ कठंयरागंमिपाडेइ ॥१ ॥ १९ ॥

शीखे लखे सुखें सकल ॥ लब्धलक्ष शुभकाज ॥ एम
एकवीस गुणे वर्यो ॥ लहे धर्मनुं राज ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवे लब्धलक्षनामा एकवीसमो गुणकहेछे तेजे शीखेके०थोडाकालमां आगमादिक भणे तथा लखेके०जाणे सुखेंके०अनायासें वगरप्रयासें सकलके०समस्त शुभकाजजे धर्मनाकार्य तेने लब्धलक्षकहियें यतः लक्खेइलद्धलक्खो ॥ सुहेणसयलंपिधम्मकरणिज्जं ॥ दक्खोसुसासणिज्जो ॥ तुरियंचसुसिक्खिउंहोइ ॥ इतिधर्म रत्नप्रकरणे एरीते एकवीसगुणे करीविराजित होयते धर्मनुंराज्य लहेके०पामेइति ॥

पूरण गुण उत्तम कह्यो ॥ मध्यम पादें हीन ॥ अर्द्ध
हीन जघन्य जन ॥ अपर दरिद्री दीन ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एपूर्णएकवीसगुणे सहितहोय तेउत्तमकहियें अने पादेंके०चोथेभागेंहीन

होय तेमध्यम कहियें तथा अर्द्धगुणेहीनहोय तेजघन्यकहियें अपरके०एअर्द्धथकी हीनगुणी होयते दरिद्री दीनजाणवा केमके दरिद्री होयते पोतानाउदरजरवानी चिंतायें व्याकुलपणेकरी रत्नना क्रयविक्रयनी चिंतानकरीशके तेम हीनगुणीते धर्मरत्ननोमनोरथ पणनकरीशके यतःपायऊगुणविहिणा ॥ एएसिंमझिमावरानेया ॥ इत्तोपरेणहीणा ॥ दरिद्दपायामुणेयवा ॥ १ ॥ २१ ॥

अरजे वरजी पापने ॥ एह धर्म सामान्य ॥ प्रभु
तुझ भक्ति जश लहे ॥ तेह होए जन मान्य ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जे पापने वर्जिने एसामान्यधर्म जेश्रावकधर्म तेने अरजेके०उपार्जे ते प्राणी हेप्रभु तारी भक्तिकरीने जशलहेके०जशप्रतिष्ठापामे एटले एवागुणवंतहोय तेतारी भक्तिकरेज तथा तेप्राणी सर्वलोकने मान्यहोय ॥ २२ ॥ ए एकवीस गुणेसहितहोयते भावश्रावकपणुंपामे माटे भावश्रावकना गुणवर्णवानेबारमीढालकहेछे ॥

॥ ढालबारमी ॥

॥ चोपाइनीदेशी ॥

एकवीसगुणजेणेलह्या ॥ जेनिजमर्यादामांरह्या ॥ तेह
भावश्रावकनावहे ॥ तसलक्षणएतुंप्रभुकहे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ ए एकवीसगुणने जेपाम्याहोय वलीजे पोतानी मर्यादामां रह्याहोय आचारशीलमांरह्याहोय तेजप्राणीभावश्रावकपणुंपामे एटले एभावजे पूर्वे द्रव्यश्रावक थयीनेउत्तरकालें भावश्रावकथाय ते भावश्रावकना लक्षण एप्रमाणेहेप्रभुवीतराग परमेश्वर तमेकह्यांछे तेप्रमाणे आगल कहियेछैयें ॥ १ ॥

कृतव्रतकर्माशीलाधार ॥ गुणवंतोनेऋजुव्यवहार ॥ गु
रुसेवीनेप्रवचनदक्ष ॥ श्रावकभावेंएप्रत्यक्ष ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इहां मार्गानुसारीना पांत्रीस गुण ज्ञानविमलसूरीयें लख्याछे पण विशेष शब्दार्थादिकमां प्रयोजननथी तथाएनुंमूल धर्मरत्नप्रकरणकह्युंछे तेमांपणनथीकह्या माटे अमेलख्यानथी १ कर्युंछे व्रतरूपकार्यजेणे तेकृतव्रतकर्माकहियें २ शीलवंतहोय ३ विवक्षितगुणवंतहोय ४ ऋजुव्यवहार एटले सरलमनहोय ५ गुरुनीशुश्रूषा एटले सेवाकरे ६ प्रवचनके० आगममांकुशलहोय डाह्योहोय एछलक्षण जेमां होय तेप्रत्यक्षपणे भावश्रावक कहियें यतः कयवयकम्मोतहय ॥ शीलवंचगुणवंच ऋजुववहारी ॥ गुरुसुस्सूसोपवयण ॥ कुसलोखलुसावगोभावे ॥ १ ॥ २ ॥

श्रवणजाणणाग्रहणउदार ॥ पडिसेवाएचारप्रकार ॥ प्रथ
मभेदनामनधारीयें ॥ अर्थतासइमअवतारीयें ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे उपरना ठ लक्षणमांथी प्रथमकृतव्रतकर्मानामें लक्षणना चारभेद ठे १ श्रवणके०सांभलवुं २ जाणणाके०जाणवुं ३ ग्रहणके०अंगीकारकरवुं उदारके०विस्तार-पणे ४ पडिसेवाके०सम्यक्पालवुं एचारभेदकह्या एप्रथमभेदजेकृतव्रतकर्मानामे तेना अवधारीयें तासके० तेनाअर्थ एम अवतारीयेंके०उतारीयें ॥ ३ ॥

बहुमानेनिसुणेगियच ॥ पासेभंगादिकबहुअछ ॥
जाणगुरुपासेंव्रतग्रहे ॥ पालेउपसर्गादिकसहे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ इहां बहुमान कह्युं पण विनयतथाबहुमान बंने लेवां यतः विणयबहु णसारं ॥ गीयछाउकरेइवयसवणं ॥ इतिवचनात्. गीयछपासेके०गीतार्थपासेथीजेनिसु-णेके०सांभले तेविनय तथाबहुमानसहित सांभले इहांचोभंगीकहेठे १ कोइकधूर्तमां वंदनादिक बाह्य विनयतोहोय पणगुरुकर्माके०भारीकर्मिमाटेबहुमान अंतरप्रीति नहोय२ कोइकमां बहुमानहोय पण विनयकरवानी शक्तिनहोयतेग्लानादिक जाणवा ३ कोइक आसन्नसिद्धियाजीवमां विनय तथा बहुमान बेहु होय ४ कोइकआकरापापकर्मीमां विनय तथा बहुमान एके नहोय इहां व्रतसांभलवाने कह्युं पण उपलक्षणथी सर्व शास्त्र सांभले सूत्रतेगीत अने तेनुं व्याख्यानतेअर्थ अने जेअर्थसहित तेगीतार्थ यतः गीयंभन्नइसुत्तं ॥ अछोतस्सेवहोइवरकाणं ॥ गीएणयअछेणय ॥ संजुत्तोहोइगीयछो ॥१॥ एटले गीतार्थपासे सांभलीने एपहेलोभेद भंगादिक बहु अर्थ जाणेके०व्रतनाभांगा प्रमुखबहुअर्थसमजे जेम पच्चरकाणना ४९ भांगाने त्रिकालनागणियें तेवारे१४७ भांगा थाय वली व्रतआश्रीगणियें तेवारे एकव्रते ६ बेव्रते ४० त्रणव्रते ३४२ इत्यादिक या-वत्बारव्रते १३८४१२८७२०० भांगाथाय अत्रगाथा ॥ तेरसकोडीसयाइं ॥ चुलसीकोडी-ठबारसयलरका ॥ सगसीइसहसदोसय ॥ सवग्गंठक्कभंगीए ॥१॥ नवभंगीयेंएकव्रते ९ बेव्रते ९९ यावत्बारव्रते ९९९९९९९९९९९९ अने एकवीसभंगीकरियेंतेवारें बारेव्रते १२८५५००२६३१०४९२१५ थाय ४९ भंगेबारेव्रते २५४१४०६२४९९९९९९९९९९९९ भां-गाथायें १४७ भांगायेंबारेव्रते ११०४४३६०७७१९६११५३३५६९५७६९५ भांगाथाय सर्वअक्षरसंचारणायें जाणवा. इत्यादिक भांगानुं ज्ञानकरे, आदिशब्दें व्रतनाअतिचार जाणे, एबीजो भेदविस्तारे धर्मरत्नप्रकरणथी जाणवो. पढीगुरुपासेथी व्रतअंगीकारकरे. आणंदादिकश्रावकनीपेठे इत्वर तेचोमासाप्रमुखना अथवा थावत्कथिकते जावजीवना

एत्रीजोभेदथयो, अने पालेके॰सम्यक्पाले तथा उपसर्गादिक जेआवे तेसर्वे कामदेव श्रावकनीपेठेंसहे, एचोथोभेद कह्यो. एकृतव्रतकर्माना चारभेदवखाण्या ॥ ४ ॥

सेवेआयतणाउदेश ॥ परगृहतजेअणुभडवेस ॥ वचन
विकारत्यजेशिशुलील ॥ मधुरभणेएषटविधशील ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेवीजाशीलवंतनामालक्षणना उभेदकहेछे. सेवेआयतणाके॰साधर्मिकने मलवानुं स्थान सेवे. यतः ॥ जच्छसाहम्मियाबहवे ॥ शीलवंताबहुसुया ॥ चरित्तायारसंपन्ना ॥ आययणंतंवियाणाहि ॥१॥ तेवो उद्देशके॰स्थानक सेवे पण भिल्लनी पालीप्रमुखसेवेनही, एपहेलोभेद. वली परगृहतजेके॰पारका घरमांपेसतो नफरे, केमके कांइवस्तु खोवाय त्यारेतेनाउपर शंकाआवे पण कारणे कोइना घरमांजाय तेवात जूदीछे, एवीजोभेद. तथा अणुभडवेसके॰उद्भटवेषनपहेरे जेथकी लांठीआ छोलीआ आदमीमां गणाय तेनकरे, एत्रीजो भेद. वली वचनविकार त्यजेके॰जेथकी रागद्वेष वधे एवा विकारनां वचनबोलेनही, एचोथो भेद. अनेशिशुलीलके॰बालक्रीडा, जुगटुं रमवुं इत्यादिक त्यजे, एपांचमोभेद. वली मधुरभणेके॰मीठुंबोले गमेतेवुं कार्यपडे तोपण हे सौम्य, हेसुंदर, आकामकरशो एमकहे ए छ भेद शीलवंतनामागुणना जाणवा ॥५॥ हवे एज छ भेद विस्तारीदेखाडेछे ॥

आयतनेसेवेगुणपोष ॥ परगृहगमनेवाधेदोष ॥ उद्भट
वेषनशोभालाग ॥ वचनविकारेंजागेराग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आयतनके॰जेसाधर्मिनां स्थानक तेसेवतांथकां गुणनी पुष्टिथाय गाथा ॥ आययणसेवणाउ ॥ दोसाजिवंतीवड्ढइगुणोइतिवचनात् ॥ वली परगृहगमनेके॰पारकेघेरजातां वाधेदोषके॰दोषवधे यतः परगिहगमणंपिकलंकपंकमूलंसुशीलाणंइतिवचनात् ॥ वली उद्भटवेषतेशोभालायकनही गाथा ॥ सहइपसंतोधम्मी ॥ उप्भडवेसोनसुंदरेतस्सइतिवचनात् ॥ सहइके॰शोभेपसंतधम्मीके॰प्रशांतधर्मिंउद्भटवेषतेने सुंदर नथीइति तथा वचनना विकारेकरीने रागजागे माटे विकारनां वचन कहेनही यतः सवियारजंपियाइं ॥ मूण मूइरंतिरागग्गि इतिवाक्यात्तेमाटेनकहे यतः जंसुणमाणस्सकहंसुहुयरंजलइमाणसे मयणो ॥ समणेणसावयेणविनसाकहाहोइकहियवा ॥ इतिवचनात् ॥६॥

मोहतणोशिशुलीलालिंग ॥ अनर्थदंडअछेएचंग ॥ क
ठिणवचननुंजल्पनजेह ॥ धर्मिनेनहिसम्मततेह ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे शिशुलीलाके॰वालक्रीडा ते मोहतणोके॰मोहनुंलिंगछे वली केवीछे अ-

नर्थदंडछे तेजीवने चंगके०मनोहर लागेछे यतः बालिसजणकिलाविहु ॥ मूलंमोहस्सणछदंकाउं ॥ इतिवचनात् हवे छठोभेद कहेछे ते कठिणवचननुं जे बोलवुं ते धर्म्मिजीवने सम्मतके०मान्यनही यतः परुसवयणाभियोगो ॥ नसम्मउंसुऊधम्मिणंइतिवचनात् एछभेदेकरी बीजो शीलवंतनामाभेद संपूर्णथयो ॥ ७ ॥

उद्यमकरेसदासश्याय ॥ करणविनयमांसर्वउपाय ॥ अनभिनिवेशीरुचिजिनआण ॥ धरेपंचगुणएहप्रमाण ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे गुणवंतनामाभावश्रावकनुं त्रीजुं लक्षणकहेछे तेमां यद्यपि औदार्य धैर्य गांभीर्य प्रियबोलवुं इत्यादिक अनेक गुणछे तोपण पांचगुणेकरी गुणवंत गीतार्थकह्याछे १ सझायके०भणवा वांचवा पूछनादिकनो उद्यमकरे २ करणके०अनुष्ठानक्रियाकरे ३ विनयमांके०गुरुआदिक आवे अभ्युछानादिककरे सदाउजमालथको जेजेविनयनाप्रकारछे तेते सर्वकरे ४ अनभिनिवेशीके०कदाग्रहीनहोय इहलोक साधवामां कदाग्रहनकरे ५ रुचिके०आकरी श्रद्धा जिनआणके०जैनागमनेविषे होय एपांचगुण धरे तेगुणवंतकहियें ते प्रमाणके०मान्यछे ॥ ८ ॥

सझायेंधरेवैराग ॥ तपनियमादिककरणेराग ॥ विनयप्रयुंजेगुणनिधितणो ॥ जेममनवाधेआदरघणो ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवे एपांचेनां फलकहेछे. प्रथम सझायकरतां जीवने वैरागवधे तथा अनुष्ठानमां सावधानथको जीव तप तथा नियममां उद्यमवंतहोय. जेतपते बारभेदे प्रसिद्धछे अने नियमते साधुने विश्रामण उत्तरपारणालोचकराव्योहोय तेने घृतप्रमुखनुं दानदेवुं. यतः पहसंतगिलाणेसुय ॥ आगमगाहिसुतहयकयलोए ॥ उत्तरपारणगंमिय ॥ दाणेसुबहुफलंहोइ ॥ १ ॥ इति तथा गुरुवंदना चैत्यवंदना पूजा प्रमुखपण ए गुणमां लेवां३तथा गुणनो निधानजेपुरुषतेनोविनय प्रयुंजेके०करे. गुणवंत आवे तेवारे उभोथाय. सामोजाय, मस्तके अंजलीकरे, आसनआपे, गुरुबेठापछी बेसे, सेवाकरे, जायत्यारे वोलावाजाय इत्यादिक विनयकरे तेविनयवंत देखीने तेनाउपर गुरुनो घणो आदरवधे आम्नायादिकगुरुतेनेआपे ॥ ए ॥

अनभिनिवेशीअवितछगणे ॥ गीतारथभाषीतजेसुणे ॥ सदहणायेंसुणवाचाह ॥ समकितनोमोटोउछाह ॥ १० ॥

अर्थ ॥ अनभिनिवेशीजेहोय तेने अवितछके०यथार्थ माने अनेगीतार्थ जेबोले गीतार्थकहेतेयथार्थजाणे तथा गीतार्थपासे सांभले श्रद्धापूर्वक सांभलवाने वांछे उप-

लक्षणथी श्रद्धायेंइछापूर्वकअनुष्ठानकरे एवी श्रद्धाविनासमकितनी शुद्धिक्यांथी थाय यतः सवणकरणेसुइछा॥ होइरुइसदहाणसंजुत्ता ॥एइएविणाकत्तो॥सुद्धिसम्मत्तरयणस्स ॥ १ ॥ इतिएसमकेतनो मोहोटो उवाहकेंहर्षछे ॥ १० ॥

अवितथकथनअवंचकक्रिया ॥ पातिकप्रकटनमैत्रीप्रिया ॥
बोधबीजसद्भावेंसार ॥ चारनेदएरुजुविवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे नावश्रावकनुं चोथुंरुजुव्यवहारनामा लक्षण चारनेदेकरी कहेछे १ अवितथकथनते यथार्थबोले धर्म व्यवहारमां परने ठगवाने माटे धर्मने अधर्मनकहे अधर्मने धर्मनकहे क्रयविक्रयव्यवहारमां लेवेदेवे जूठुं नबोले तथा साक्षीव्यवहारमां राजदरबारे पण खोटीसाहेदी नपूरे तथा धर्मनी हांसीथाय एवुं पणनबोले ए प्रथमनेद २ अवंचकक्रियाकेंबीजाने कष्टउपजे एवीक्रिया नकरे सारीवस्तुमांखराबवस्तुनेलीनआपे अथवा ताकडीप्रमुखतोलमां अधिकुंओछुं आपीलेइने परने ठगेनही तथा आजवमां पणवंचनक्रियाते केवलपापजछेएमदेखतो परने ठगवाथी निवर्ते यद्यपिअवंचकक्रियाते पोतानो आत्माठगायनही ईहां योगअवंचक क्रियाअवंचक फलअवंचक इत्यादिकपूर्वेना टबामां अर्थलख्योछे पण धर्मरत्नग्रंथमां एरीतेनथी माटे अमे नथीलख्यो ३ कोइक पापकरतोहोय तेने प्रकटनकेंअपाय कही देखाडे जे हे नद्र पापकरतां अनर्थथाय इत्यादिक कहे पणतेने उवेखेनही ४ मैत्रीप्रियाकेंनिष्कपटपणे मित्राइकरे ते साचेनावेकरे पण खोटेनावे नकरे माटे एमकह्युंजेसारबोधबीजपामे एचारनेदेंकरी रुजुकेंसरलतानो व्यवहारकहियें अने एचारेबोलथी विपरीतकरे तोबोधबीजजाय एम धर्मरत्नप्रकरणमांकह्युं छे ॥ ११ ॥

गुरुसेवीचउविहसेवना ॥ कारणसंपादननावना ॥ से
वेअवसरेगुरुनेतेह ॥ ध्यानयोगनोनकरेछेह ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे नावश्रावकनुं पांचमुं लक्षण गुरुशुश्रूषानामेकहेछे ते गुरुसेवा चउविहकेंचारप्रकारेछे १ गुरुनीसेवनाकरे २ कारणकेंबीजापासे गुरुनी सेवाकरावे ३ संपादनकेंगुर्वादिकने औषधादिकनुं देवुंकरे ४ नावनाकेंगुर्वादिकनो बहुमानकरे तथा गुरुना परिवारनो बहुमानकरे इहां गुरुतेधर्मगुरुलेवा पणमातापितादिकगुरुनलेवा यतः धर्मज्ञोधर्मकर्त्ताच सदाधर्मप्रवर्त्तकः ॥ सत्वेभ्योधर्मशास्त्राणां देशकोगुरुरुच्यते ॥ हवे एचारेनेदनो अर्थकहेछे १ अवसरपामीने गुरुनीसेवाकरे पणवगरअवसरें नकरे तेकहेछे जे ध्यानकेंधर्मध्यानादिकयोग तेप्रत्युपेक्षणा आवश्यकादिक तेनो न करेछेहकें छेद नकरे एटले जीर्णशेठनीपेठे व्याघातनकरे ॥ १२ ॥

तिहांप्रवर्त्तावेपरप्रतें ॥ गुरुगुणन्नाषेनिजपरबतें ॥ संपादे
औषधमुखवली ॥ गुरुन्नावेंचालेअविचली ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ वली ते परप्रतेंके०बीजाने गुरुसेवानेविषे प्रवर्त्तावे तेनाआगल गुरुगुण न्नाषीके०वर्णनकरीने एटले एन्नावजे पोते गुर्वादिकना गुण वर्णनकरे तेथी प्रमादी होय ते पणगुरुसेवामां प्रवर्त्तेइतिन्नावः ३ तथा निजके०पोताथी अने परबतें के०परथकीसंपादेके० आपेअपावे औषधमुखवलीके० औषधप्रमुख तेमां एकद्रव्यते औषध अथवा बाह्यउपयोगीतेऔषध अने अनेक द्रव्यसंयोग अथवा शरीरमां न्नोगववा योग्य तेन्नैषज वली प्रमुखशब्दें जेसंयमोपकारिवस्तु जोइये ते आपे अथवा अपावे ४ गुरुन्नावेंचालेके०गुरुने अन्निप्रायें चाले गुरुनो बहुमानकरे तथा गुरुने अनुजायीचाले अविचलीके०अविचलथको

सूत्रअर्थउस्सग्गववाय ॥ न्नावेंव्यवहारेंसोपाय ॥ निपुणपणुंपाम्योबेजेह ॥ प्रवचनदक्षकहिजेतेह ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे न्नावश्रावकनुं प्रवचनदक्षनामा बहुंलक्षण वखाणेबे ते बन्नेदेबे ते माटे श्रावकपण बन्नेदे जाणवो तेकहेबे १ सूत्रनेविषेकुशल २ अर्थनेविषे कुशल ३ उत्सर्गनेविषे तेसामान्यसूत्रनेविषे कुशल ४ ववायके०अपवाद एटले विशेषसूत्रनेविषे कुशल ५ न्नावेंके०विधिपूर्वक धर्मानुष्ठाननेविषे कुशल ६ व्यवहारेंके०गीतार्थनीआचरणारूपजेजितव्यवहार तेनेविषे कुशल सोपायके०उद्यमसहित निपूणपणुंके०कुशलपणुंपाम्योबे एवो जे पुरुष तेनेप्रवचनदक्षकहियें ॥ १४ ॥

उचितसूत्रगुरुपासेंन्नणे ॥ अर्थसुतीर्थेतेहनोसुणे ॥ विषयविन्नागलहेअविवाद ॥ वलीउत्सर्गतथाअपवाद ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे एबन्नेद विस्तारीकहेबे १ उचितसूत्रके०श्रावकने योग्यसूत्र चौसरणादिक प्रवचनमाताथी मांडीने बजीवणीयाअध्ययनपर्यंतन्नणे उक्तंच ॥ पवयणमाइबजीवणियंताउन्नयवियरस्स ॥ अस्यार्थः ग्रहणशिक्षा तत्रप्रकृता उन्नयतः सूत्रतो अर्थतश्चेतरस्यश्रावकस्येति एरीते सूत्रन्नणेउपलक्षणथी पंचसंग्रह कम्मपयडीप्रमुख ग्रंथनासमूह तेपोतानीबुद्धिनेअनुसारेन्नणे २ अर्थके०तेसूत्रनोअर्थ ते सुतीर्थे के०संविज्ञ गुरुपासेथी सांन्नले ३–४ हवेउत्सर्गतथाअपवाद एबेन्नेदसाथेकहेबे अविवादके०विवादरहितपणे विषयविन्नागलहेके०पोतपोतानेठेकाणेजाणे उत्सर्गनेउत्सर्गठामेजाणे अपवादने अपवादठामे जाणे, पण एकलो उत्सर्गज न आलंबे अथवा एकलो अपवादज नआलंबे जेअवसरें जेकरवुंघटे तेअवसरें ते करे एटले लान्नालान्न जोइ कार्यकरे एसर्वेचारन्नेद कह्या ॥ १५ ॥

पक्षपातविधिमांहेधरे ॥ देशकालप्रमुखजेमअनुसरे ॥ जाणे
गीतारथव्यवहार ॥ तेमसविप्रवचनकुशलउदार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ५ देववंदनादिक विधिनेविषे पक्षपातके०बहुमानहोय तथा बीजो कोइ विधिकरतोहोय तेहनोपण बहुमानकरे विधिसामग्रीना अभावें पण विधिआराधवानो मनोरथ मूकेनही इत्यादिक उपलक्षणथी जाणवुं ६ हवे व्यवहारकुशलनामा छठो भेदवखाणेछे तेजेम देशकालप्रमुखहोय तेने अनुसरे एटले एभाव जे देशतेसुस्थित दुस्थितादि तथाकालते सुकाल दुष्कालादिक प्रमुखशब्दें द्रव्यसुलभ दुर्लभादि भावथी हृष्ट ग्लानादिक तेसर्वने पोतपोतानीहदेजाणे गीतार्थनो व्यवहार सर्वपोतेजाणे एटले एभावजे उत्सर्गअपवादना जाणजेगीतार्थ तेणे आचर्योजे व्यवहार ते पोतानी मते दुषवेनही पण तेसर्वव्यवहार तेमज अंगीकारकरे एछप्रकारनो प्रवचनकुशल ते उदारके०प्रधानकहियें ए छलक्षण भावश्रावकनां जाणवां ॥ १६ ॥

किरियागतएषटविधलिंग ॥ भाषेतुंजिनराजअभंग ॥
एविधिश्रावकजेआचरे ॥ सुखजशलीलातेआदरे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ षटविधलिंगके०एछप्रकारना लिंग ते किरियागतके०क्रियाथी उंलखाय जेम धूम्रथी अग्निउंलखाय तेनीपेठे एम हेजिनराज सामान्यकेवलीमां राजासरिखा तुं भाषेके०कहेछे अभंगके०समस्तपणे एविधि जे श्रावक आचरे ते सुख तथायश तेनी जे लीला तेने आदरेके०पामे ॥ १७ ॥ इहांशिष्यप्रश्न पूछेछे जेहेस्वामी बीजा वली कांइ लिंगछे के तमेएछलिंगक्रियागत कह्यां तेटलांजछे तेने गुरुउत्तरआपेछे जेभावगतलिंग जूदांछे ते तेरमी ढालमां कहेछे एसंबंधेआवी ढालतेकहेछे ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ छठीभावनामनधरो ॥ एदेशी ॥

भावश्रावकनाभावियें ॥ हवेसत्तरभावगततेहोरे ॥
तेहोरे ॥ प्रभुतुजवचनेअविचलहोजोए ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे भावश्रावकनालिंग गणत्रीयें सत्तरछे तेभावगतछे तेकहियेंछैयें माटे हेप्रभु हेस्वयंबुद्ध तारा वचननेविषे चलेनही एवो मुजने नेहहोजो ॥ १ ॥

इत्रीचंचलचित्तथी ॥ जेवाटनरकनीमोटी
रे ॥ खोटीरे ॥ छंडेएगुणधुरेंगुणोए ॥ २ ॥

अर्थ ॥ यतः १ इत्थि २ दिय ३-४ संसारछ ५ विषय ६ आरंभ ७ गेह ८ दंस-

णउं ॥ ए गरुरिगाइंपवाहे ॥ १० पुरस्सरंआगमपविति ॥ १ ॥ ११ दाणाईजेहासत्ति॥ पवत्तणा १२ विहर १३ रत्नडुठेय ॥ १४ मज्झव १५ संबद्धे ॥ १६ परछकामोवन्नो-गीव ॥ २॥ १७ विसाइवगिहवासं पालइसत्तरसपयंनिबद्धंतु॥ नावगयनावसावग ॥ ल-खणमेयंसमासेणं ॥ ३ ॥ एसत्तरगुणकह्या तेमां पहेलुं लक्षणकहेठे इहां इबाचंचल चित्तथी एवुं लिपिदोषे घणीप्रतोमां लखायुंठे तेथी पूर्वेटबाकारें इबा एवो अ-र्थकर्योठे पण तेनिर्मूलठे माटेउवेर्योठे अत्रार्थे धर्मरत्नग्रंथजोइनेनिश्चयकरवो इबी के० स्त्री केवीठे जेचित्तथी चंचलके०चपलठे एटले अन्यअन्य पुरुषनी इबाकरनारीठे व-लीवाट नरकनी मोटीके०मोटीनरकनी वाटठे एटले नरकेजवानोमार्गठे तेखोटीरेके० हीणी वाटठे माटेस्त्रीने एवीजाणीने मूके एगुणधूरेंगुणोके०पहेलोसंख्यामांगणो ॥ २ ॥

इंद्रियचपलतुरंगने ॥ जेरूंधेज्ञाननीराशिरे ॥
पासेंरे ॥ तेवीजोगुणश्रावकधरेए ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे इंद्रिय जे पांच शास्त्रोक्तस्वरूप तद्रूपजे चपलके० शीघ्रगामीपणामाटे डुर्गतिने सन्मुखचालता एहवाजे तुरंगके०घोडा तेने जे ज्ञानरूप राशिके०राशडीयें करीने रूंधेके०रोकीराखे एवीजोगुणते श्रावकपोतापासेधरे ॥ यतः इंदियचवलतुरंगे ॥ डुग्गइमग्गाणुंधाविरेनिच्चं ॥ नावियनवस्सरूवो ॥ रुंनइसन्नाणरस्सीहिं ॥ १ ॥ ३ ॥

क्लेशतणुंकारणघणुं ॥ जेअर्थअसारजजाणे
रे ॥ आणेरे॥तेत्रीजोगुणनिजसंनिधिए॥४॥

अर्थ ॥ जे घणुंके०अत्यंत क्लेशनुंकारण एवोजे अर्थके०द्रव्य तेने असारजजाणे एत्रीजोगुण निजसंनिधिके०पोतानीपासे आणेके०लावे ॥ ४ ॥

नवविडंबनामयअठे ॥ वलीडुःखरूपीडुःखदेतो
रे ॥ चेतोरे ॥ एमचोथोगुणअंगीकरेए ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ नवके०जेसंसार तेकवोठे जे विटंबनामयीठे वली जन्म, जरा, मरण, रोग, शोकादिक डुःखरूपीठे वली जन्मांतरे नरकादिक डुःखनोहेतुठे एम डुःखनीज परं-पराआपे तेचेतोके०जाणो एचोथोगुणश्रावकअंगीकारकरे ॥ ५ ॥

खीणसुखविषयविषोपमा ॥ एमजाणीनवीबहुइ
हेरे ॥ बीहेरे ॥ तेथीपंचमगुणवरयोए ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे विषयकेवाठे जे क्षणिकमात्र सुखठे तेपण विषोपमाके०कालकूटस-

रिखाछे परिणामे दारुणछे एवाविषयजाणीने तेने बहुके०अत्यंतपणे नवीइहेके०नवांछे अनेतेविषयने असारजाणेछे माटे तेथी बीहेके० वीतोरहे एपंचमगुणनेवस्योथको शोजे॥

तीव्रारंजतजेसदा ॥ गुणछठ्ठानोसंजागीरे ॥
रागीरे ॥ निरारंजजननोघणुंए ॥ ७ ॥

अर्थ॥ हवे तीव्रारंजके०घणाप्राणीने पीडाकारीजे खरकर्मादिक व्यापार तेने सदा तजे कदाचित्करे तोसशोकथकोकरे पण निःशोकथको नकरे तेछठ्ठागुणनो संजागी-के०जजनारोथाय यद्यपिअणचालतेकांइकआरंज पोतेसशोक थकोकरेछे पणरागीतो निरारंजके०आरंजरहितजे जनके०लोकतेमुनिराजनोहोयघणोके०अत्यंतहोय ॥

मानेसत्तमगुणवरयो ॥ जनपाससदृशगृहवासो
रे ॥ अज्यासोरे ॥ मोहजितवानोकरेए ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे सातमो गेहनामा गुणवखाणेछेते सातमो गुणवस्योथको मानेके०जा-णे ते जनके०प्राणी घरवासने पाससदृशके०बंधनसरिखो माने जेम पक्षी पासमां पड्यो उडीनशके अने पोताना आत्माने डुःखीमाने एम गृहमातापितादिकसंबंधेदी-क्षा लेइनशके पण डुःखमाने अनेतेप्राणी अज्यासतो मोहने जीतवानोज करे ॥ ८ ॥

अठमदंसणगुणजस्यो ॥ बहुजांतेंकरेगुरुजक्ति
रे ॥ शक्तिरे ॥ निजसद्दहणानीफोरवेए ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आठमो दर्शननामा गुणेजस्योथको गुरुजेधर्माचार्य जेनाथी समकित पा म्योतेगुरुनी जक्ति बहुजांतेंकरे अने पोतानी श्रद्धानी शक्तिफोरवे एटले एजावजे आ-स्तिक्यजावसहितअने अतिचाररहित दर्शननेधरतो शक्तियेंप्रजावना तथा वर्णवाद बुद्धिवंतकरे यतः अहिकजावकहिर्ज॥ पजावणावन्नवायमाइहिं ॥ गुरुजत्तिजुर्जधीमं ॥ धरेइश्यदंसणंविमलं ॥ १ ॥ ए ॥

लोकसन्नाहविपरिहरे ॥ जाणेगाडरिर्जपरवाहो
रे ॥ लाहोरे ॥ एमनवमागुणनोसंपजेए॥१०॥

अर्थ॥ हवे गाडरीकप्रवाहनामानवमोजेदवखाणेछे लोकसन्नाहके०लोकअविचारित रमणीकतेने परिहरेके०त्यजे अने लोकनीचाल तेगाडरीयाप्रवाहजेवीछे जेम एकगाड-रनीपठवाडे वीजुंगाडर चाले उपलक्षणथकी कीडीनो मंकोडानो प्रवाहपण कहेवोतेजेम अविचारितछे तेम लोकप्रवाहपण तेवोछे तेमाटे वर्जे एम नवमागुणनोलाहोनीपजे ॥१०॥

आगमनेंआगलकरे ॥ तेविणकुणमारगसाखीरे ॥
ज्ञाषीरे ॥ एमकिरियादशमागुणथकीए ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेदशमो आगमनामाभेद वखाणेछे जेकार्यकरेते आगमने आगलकरी-नेकरे एम विचारेजे आगमविना जेपरलोकसाधवानोमार्ग तेनो कोणसाखी एटले वीतरागनाआगममांज एवामार्ग होय ज्ञाषीके०एवुं कहीने एरीतनी क्रिया करे एटले एज्ञावजे देववंदन गुरुवंदन प्रत्याख्यान प्रतिक्रमणादिरूपक्रिया जिनागमतथ्य जाणीने आगमोक्तक्रियाकरे एदेववंदनादिक क्रियानोविस्तारधर्मरत्नमां जोइलेजो एद-शमागुणथकी क्रियापामे ॥ ११ ॥

आपअबाधायेंकरे ॥ दानादिकचारशक्तिरे ॥
व्यक्तिरे ॥ एमआवेगुणइग्यारमोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे दानादिक यथाशक्तियेंकरे एअग्यारमोभेदकहेछे आपअबाधायेंके० पोताने पीडा नऊपजेतेम दानादिकचारेकरे जोद्रव्यपात्रहोय तो देतोथको थाकेज नही अने जोअल्पद्रव्यवानहोय तो अतिउदार न थाय उक्तंच ॥ लाज्ञोचियदाणे ॥ लाज्ञोचियज्ञोयणे ॥ लाज्ञोचियपरिज्ञावे ॥ लाज्ञोचियनिधिकरेसिया इत्यादि एमथोडे कालेघणुंआपीशके तेमज शील तप ज्ञावनानेविषेपण यथाशक्तिप्रवर्ते एमव्यक्तिके० प्रगटपणेअग्यारमोगुण श्रावकनेआवे ॥ १२ ॥

चिंतामणिसरिखोलही ॥ नविमुग्धहस्योपणलाजे
रे ॥ गाजेरे ॥ निजधर्मेंएगुणबारमोए ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे विद्दिकनामाबारमोगुणकहेछे चिंतामणिरत्न सरिखो पोतानोधर्म ल-हीके०पामीने जे मुग्धके०मूर्खलोक तेणे हस्योथको पण नविलाजेके०नलाजे एटले धर्मकरणी करतो लाजेनही गाजेरेके०उत्सुकहोय हर्षवंतहोय निजधर्मेंके०पोतानाध-र्मनेविषे एबारमो गुणजाणवो यद्यपि धर्मरत्नग्रंथमांचिंतामणिरत्नसरिखी क्रियाकर-तोनलाजे एमकह्युंछे तोइहांचिंतामणिरत्नसरिखोधर्मकह्यो तेमांकांइविरुद्धनथीकेमके क्रियाने धर्मकांइजूदांनथी ॥ १३ ॥

धनज्ञवनादिकज्ञावमां ॥ जेनविरागीनविद्वेषी
रे ॥ समपेषीरे ॥ तेविलसेगुणतेरमेए ॥१४॥

अर्थ ॥ हवे तेरमोअरक्तद्विष्टनामाभेद वखाणेछे शरीरनीस्थिति हेतुछे धनज्ञवन

आदिशब्दथी स्वजन आहार घर क्षेत्र कलत्र वस्त्र शस्त्र यान वाहन इत्यादिक लेवां. तेपदार्थमां रहेतोथको पण नविरागी नविद्वेषीके० रागद्वेषरहितनीपेठे होय एटले मंदआदरहोय अन्यथारागद्वेषरहिततो उपलेगुणठाणे होय ते इहांकेमघटे अने समपेषीके०मध्यजावनो जोनारो होय जेमाटे जावश्रावक एमजावे यतः नेयइक्कोइ सयणो ॥ नसरीरंनेयजोगउवजोगा ॥ जीवोअन्नजवगइ ॥गछइसवंपिमोत्तूणंइत्यादिअविनितलोक उपरद्वेषपण नकरे तेश्रावक तेरमागुणने विलसे ॥ १४ ॥

रागद्वेषमध्यस्थनो ॥ समगुणचउदमेनबाधेरे ॥
साधेरे ॥ तेहठगंडीमारगजलोए ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे चउदमो मध्यस्थनामागुण वखाणेछे रागद्वेषमध्यस्थनोके० रागद्वेषमां तणायनही तेमां मध्यस्थपणुंराखे एरागद्वेषमध्यस्थनो समगुणकहियें एटले एजावजे परमार्थविचारकरे जे मैंमतलीधोतेकेम मूकुं अथवा अमुक मारो मत खंडेछे तेने खंडुंएवो रागद्वेषनकरे तेप्राणी चौदमागुणनेविषे बाधानपामे एटले समगुणीपीडाथ नही तेप्राणीपोतानो हठके०कदाग्रहठगंडीने जलोमार्गसाधे एटले परने तथा पोताने हितवांछकथको कदाग्रहमूकी मध्यस्थगीतार्थगुरुने वचने प्रदेशी राजानीपेठे प्रवर्त्ते एटले तेरमागुणमां धनजवनादिकमां मंदआदरहोय अनेचौदमागुणमां धर्ममां कदाग्रहमूके सम्यक्अंगीकार करे ॥ १५ ॥

क्षणजंगुरताजावतो ॥ गुणपन्नरमेसेवंतोरे ॥
संतोरे ॥ नधनादिसंगतिकरेए ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे असंबंधनामापन्नरमो जेदवखाणेछे क्षणजंगुरताजावतोके०सर्वपदार्थ क्षणजंगुरछे अनित्यछे तन धन स्वजन जीवित ड्व्यप्रमुख एसर्वेअनित्यछे एम विचारतो पन्नरमा गुणने विषे संतोके० सज्जनपुरुषोने सेवंतोके०सेवे नधनादिसंगतिकरेके०धनप्रमुखनी संगतनकरे एमविचारे यतः विज्जुपयंचउप्पयंच ॥ खित्तंगीहंधणधन्नंचसवं ॥ सकम्मप्पवीउंअवसोपयाइं ॥ परंजवंसुंदरपावगंवा ॥ १ ॥ १६ ॥

जावविरतिसेवेमनें ॥ जोगादिकपरअनुरोधेरे ॥
बोधेरे ॥ एमउल्लसेगुणसोलमेंए ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे सोलमो परार्थकामोपजोगीनामा जेदकहेछे जव जेसंसारनेविषे विरक्तमनथको जोगादिकने सेवे तेपण परअनुरोधेके० परनादाक्षिण्यादिकेंसेवे बोधेरेके० एवाउदासीनज्ञानेकरी सोलमोगुणउल्लासपामे ॥ १७ ॥

आजकालएछांमिसु ॥ एमवेश्यापरेंनिसनेहोरे ॥
गेहोरे ॥ परमानेगुणसत्तरमेंए ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे सत्तरमो वेश्यानीपेठे घरवासपाले एन्नेदवखाणेछे जेए घरवासछेते आज छांमिशुं अथवा काले छांमिशुं एम वेश्यानीपेठे निस्नेहीरहे जेमवेश्यानिर्धन देखी विचारे जे हवे आज अथवा काले छांडुंछुं एमविचारे तेम गृहस्थपण आस्थाप्रमुख विना घरमांवसे पणघरने परकरीमाने एसत्तरमेगुणे देशविरतिना अनेक न्नेदछे माटे नानान्निप्रायवंतहोय तेमाटे पुनरुक्तदोषकोई न्नेदमांनजाणवो ॥ १८ ॥

एगुणवृंदेजेन्नख्या ॥ तेश्रावककहियेंन्नावेंरे ॥
पावेरे ॥ सुजशपूरतुऊन्नक्तिथीए ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एगुणना वृंदके०समूह तेणेकरी जेन्नख्याछे ते न्नावेंके०न्नावथी श्रावककहियें यतः इयसत्तरसगुणजुत्तो ॥ जिणागमेन्नावसावगोन्नणीयो ॥ इति वचनात् ते पावेके० पामे सुजशपूरके०न्नलाजशनो पूरपामे तुऊन्नक्तिथीके०हेवीतराग हेचिदानंदस्वरूपी तारी न्नक्तिथकी पामे एटले तारीआज्ञायें न्नावश्रावकपणुंपालवुं तेतारी न्नक्तिजछे ॥ १९ ॥ एतेरमीढालमध्ये न्नावश्रावकनुं लक्षणकह्युं ते न्नावश्रावकजे होय ते द्रव्य-साधु कहियें अनेजेद्रव्यसाधु होयते न्नाव साधुपणुंपामे तेमाटे हवे न्नावसाधुनांल-क्षण चउदमी ढालमां कहेछे ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

तेन्नावसाधुपणुंलहे ॥ जेन्नावश्रावकसार ॥ तेहनांलक्षणसातछे ॥
सविजाणेहोतुंगुणन्नंडार ॥ साहेबजीसाचीताहरीवाणी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेसारके०प्रधानन्नावश्रावकपूर्वेंकह्या तेन्नावसाधुपणुंपामे तेनांवली सातलक्ष-णछे ते हेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्य सुखदान लान्नन्नोग उपन्नोगादिक गुणनान्नंकार एवा हेपरमेश्वर तमेसर्व जाणोछो केवलज्ञान केवलदर्शनेकरी षट्द्रव्यनुं न्नासन थायछे ते माटे हेसाहेबजी तमारी वाणीते साचीछे सत्यछे एटले एन्नावजे आचार्यपरंपरा तथा जि-तआचार तथाप्रकरणादिकमां जेन्नावकह्याछे तेतमारीज वाणीछे पणकोइनी कल्पित नथी

किरियामारगअनुसारणी ॥ अश्रप्रवरअविवाद ॥ ऋजुन्नावे
पन्नवणिजाता ॥ किरियामांहोनित्येंअप्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे सातलक्षणकहेछे सर्वक्रिया प्रत्युपेक्षणादि तेमार्गानुसारणी जे मोक्ष-

मार्गने अनुजायीचेष्टाहोय तेप्रथमलक्षण तथाधर्मनेविषे श्रद्धाके०करवानीइछा प्रवरके० प्रधान अविवादके०विवादरहित तेवीजुंलक्षण अनेपन्नवणिज्जताके०प्रज्ञापनीयपणुं एटले परुपणाकरवी ते ऋजुनावेंके०सरलनावें एटले तेनी परुपणा तेअसदनिनिवेश कदाग्रहेंनहोय एत्रीजुंलक्षण वली क्रियाजे शुनहितअनुष्ठान तेनेविषे निरंतर अप्रमादीहोय पणशिथिलनहोय एचोथुंलक्षण ॥ २ ॥

निजशक्तिसारुकाजनो ॥ आरंनगुणअनुराग ॥ आराध
नागुरुआणनी ॥ जेहथीलहियेंहोनवजलताग ॥ सा० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तथा पोतानी शक्तिप्रमाणें तपसंयमादिक कार्यनो प्रारंनकरे पणशक्तिने उलंघी तपस्याप्रमुख नकरे एपांचमुं लक्षण अने गुणअनुरागके०गुणीनो पक्षपातहोय एबहुंलक्षण तथा गुरुआज्ञानुं आराधवुं तथा गुरुना आदेशें वर्त्तवुं गुरुनीआणाथी संसारसमुद्रनो पारलहियेंके०पामियें एसातमुं लक्षण ॥ ३ ॥

मार्गसमयनीथितितथा ॥ संविग्नबुधनीनीति ॥ एदोई
अनुसारेक्रिया ॥ जेपालेहोतेनलहेनीति ॥ सा० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे ऊपरकहेला सातनेदमांथी मार्गानुसारणीक्रिया नामें प्रथमनेदवखाणेडे मार्गके०समयनीस्थिति एटले आगमनी मर्यादा तेआगम केने कहियें उक्तंच आगमोह्याप्तवचनमाप्तंदोषक्षयाद्विडुः ॥ वीतरागोनृतंवाक्यं नब्रूयाद्धेतसंनवात् ते आगमनी स्थिति उत्सर्गअपवादरूप शुद्ध संयमनो उपाय तेमार्ग कहियें अथवाजे संविग्नबुधनीनीतिके०संविग्न जेमोक्षानिलाषी अने बुध तेगीतार्थ इहां बहुपदअधिकुं कहियें तेवारे एमकहेवुंजे संविग्न बहुगीतार्थनी नीतिके०जेआचरण क्रियारूप तेने पण मार्गकहियें एदोईके०बेअर्थ मार्गनाकह्या तेबामार्गने अनुसारणीजेक्रिया आगमनी अवाधायें संविग्न व्यवहाररूप तेमार्गानुसारणीक्रिया कहियेंएवी क्रियाजेपालेते नीतिके०संसारनीवीक नलहेके०कदापि नपामे इतिगाथार्थ हवे संविग्न गीतार्थनी नीति एनापदछेदकरियेंछैयें संविग्नपदकह्युं तेअसंविग्नपणुं टालवामाटेकह्युं तोतेघणा असंविग्नमलीने जेआचस्योहोय तोपण प्रमाण नथाय यछ्यवहारः जंजीयमसोहिकरं ॥ पासत्थपमत्तसंजयाईहिं ॥ बहुएहिंविआयरियं ॥ नपमाणंसुद्धचरणाणं ॥ १ ॥ इहां बहुगीतार्थपदमूक्युं तेनुं कारण एजे एकगीतार्थें आचस्युंहोय तेकदाचित् अनानोगें अनवबोधादिककारणे विपरीतपणे आचस्युं होय तेपण प्रमाण नथाय तेमाटे बहुगीतार्थपद मूक्युं तोते बहुगीतार्थ जेआचरेते अवितथहोय इहांकोइ प्रश्नकरे जेआगम मार्ग कहेवो तेतोयुक्तछे पण बहुजनाचरणकहेवुं युक्तनथी केमके घणालोकोये तो

लौकिकमार्ग आचस्योहोय माटे आगमतेतोप्रमाण पण घणालोकोनुं आचरण प्रमाण नही वली आगमते ज्येष्ठछे अने बहुजनआचरणते अनुज्येष्ठछे अने लौकिकमां पण ज्येष्ठनेमूकी अनुज्येष्ठनुं पूजन युक्तनथी तेमज आगमतो केवलीपण अप्रमाण नकरे यतः अहोसुर्उवउत्तो ॥ सुअनाणीजइविगिण्हइअसुद्धं ॥ तंकेवलिविभुंजई ॥ अपमाणंसुअंजवेइहर ॥ १ ॥ तथा आगमछतां जोआचरणा प्रमाणकरियेंतो आगमनीलघुता थाय हवे गुरुउत्तर कहेछे जे संविज्ञगीतार्थछे तेआगमनी अपेक्षाविना आचरेजनही तेशुंआचरे नही तथाशुंआचरे तेकहेछे यतः दोसाजेणनिरुज्झंति ॥ जेणखिज्जंतिपुव्वकम्माइं ॥ सोसोमुक्खोवार्ज ॥ रोगावत्थासुसमणंच ॥ १ ॥ इत्यादिक आगमवचनसंज्ञारी द्रव्य खेत्र काल जाव पुरुषादिकउचितजोइ संयमने वृद्धिकारीज आचरे तेबीजासंविज्ञगीतार्थ पणअंगीकारकरे तेमार्गकहियें अने बीजा बहुलोके आचस्युं तेतो असंविज्ञ अगीतार्थमाटे अप्रमाणछे वलीआचरणा प्रमाणकरतां आगमतो अत्यंत प्रतिष्ठा पामेछे श्रीठाणांगसूत्रमां पांचप्रकारना व्यवहारप्ररूप्याछे उक्तंच पंचविहे ववहारे पन्नते तंजहा आगमववहारे सुयववहारे आणाववहारे धारणाववहारे जियववहारे इहां जितअने आचरणा तेएकजअर्थछे तेमाटेआचरणा मानतां अत्यंतपणे आगममान्युं तो आगमअविरोध जेआचरणा तेप्रमाणजछे ॥ ४ ॥

सूत्रेजण्युंपणअन्यथा ॥ जुडुंजबहुगुणजाण ॥ संविज्ञविबुधेआचस्युं ॥ कांइदिसेहोकालादिप्रमाण ॥ सा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली एज वातकहेछे सूत्रेजण्युंके०आगमनेविषे कह्युंछे तोपण अन्यथाके० हेरफेरकरीने बहुगुणजाणके०तेमां घणोगुणजाणीने संविज्ञगीतार्थलोके जे आचरण कस्युं तेवी केटलीकवातो दीसेछे पणतेशुंजाणी आचस्युं तेकहेछेजे कालादि प्रमाणके० दुःखमादिकालप्रमुखनुं प्रमाण विचारीने आचस्युं ॥ ५ ॥

कल्पनुंधरवुंझोलिका ॥ जाजनेदवरकदान ॥ तिथिपजूसणनीपालटी ॥ जोजनविधिहोइत्यादिप्रमाण ॥ सा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली तेज देखाडेछे कल्पनुंधरवुंके०पूर्वेकल्पजेकपडोतेकारणे उढता तथा गोचरीप्रमुखनेविषे वालीने खंधेमूकी चालता एआगमनो आचारहतो अने हवेतो गोचरीप्रमुखनेविषे पांगरीनेजावुं तथा चोलपट्टप्रमुख पणसमजवा पूर्वे कुणीयेंराखता हमणांकंदोरे राखियेंछैयें तथापूर्वेझोलिकाके०झोली मुठीयेंझाली ग्रंथी कुणीयें ढुंकमी बांधता अने हमणां हाथमां झालियेंछैयें उपलक्षणथी उपग्रहिक कटासणुं संथारीउं दंडासणादिकलेवां तथा तरपणीप्रमुखनेविषे दोरादेवा एम सीकी दोरानी झोलीना आ-

धारविशेष इत्यादिक वली पात्रेलेपदेवा तथा पजूसणनी तिथिजे पांचम तेनीचोथकरी उपलक्षणथी चोमासांपुनमनांटाली चउदशनांकस्यां तथा भोजनविधिप्रमुख शास्त्रोक्तविनापण आचरितप्रमाणछे भोजनविधिते मांडलीयेंबेसवुं वेंचीदेवुंइत्यादिक तथा चव्यवहारभाष्ये ॥ सत्थपरिणाछकाय ॥ संयमोपिंडउत्तरज्जाए ॥ रुक्खेवसहेगीवे ॥ जोहे-साहीयपुक्करिणी ॥ १ ॥ एनोलेशथी अर्थकरे छे जेपूर्वें शास्त्रपरिज्ञाअध्ययन सूत्रार्थ भणे के साधुने उठामणकरताहता अने हमणां दशवैकालिकनुं चोथुंअध्ययन भणेथके उठावणाथायछे तथा पूर्वें पिंडेषणाध्ययनभण्यापछी उतराध्ययन भणावता हमणां व-गरभणेपण भणावियेंछेयें तिहांदृष्टांतकहेछे पूर्वेंकल्पवृक्षहता हमणा आंबाप्रमुखें का-मचालेछे पूर्वें अतुल्यबलधवल वृषभहता हमणां धुसरेंज कामचालेछे पूर्वें गोपजे कर-षणी तेचक्रवर्त्तिने तेजदिवसे धान्य नीपजावीदेताहता आजतेविनापणकामचालेछे तथापूर्वें सहस्त्रयोधीहता हमणा अल्पपराक्रमीसुभटोथी पणशत्रूनोपराजयकरी राज्य पालेछे तेम साधुहमणां जितव्यवहारेपण संयमपालेछे तथा षटमासनुं प्रायश्चित्तहोय तेने हमणां पांच उपवासकह्याछे तथापूर्वेंमहोटी पुष्करणीउंहती हमणां नानीछे तेथी कामचालेछे इत्यादिकदृष्टांते जितव्यवहारपण जाणवो अथवा किंबहुना जंसबहान ॥ सुत्ते पडिसिद्धंतेयजीयववहे ॥ उत्तंसवंपिपमाणं ॥ चारित्तधणाणभणियंच ॥१॥ अवलं-बिऊणकज्जं ॥ जंकिंचिसमायरंतिगीयत्था ॥ थोवावराहबहुगुणं ॥ सव्वेसिंतंपमाणंतु ॥२॥ इत्यादिक जेम आर्यरक्षितजीयें आचर्युं तेडुर्बलिकापुष्पमित्रजीये अंगीकारकर्युं ते मज सुविहीते जेआचर्युं ते सर्वेकबूलकरे ॥ ६ ॥

व्यवहारपांचेभाषीया ॥ अनुक्रमेंजेहप्रधान ॥ आजतो
तेमांजीतछे ॥ तेतजियेंहोकेमविगरनिदान ॥ सा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेज कहेछे जे पांचव्यवहार कह्याछे तथा अनुक्रमें जे प्रधानहोय ते आ-दरवो यदुक्तं कत्तिविहेणंभंतेववहारेपण्णत्ते गोयमा पंचविहे ववहारेपन्नते तंजहा आगमे सुए आणाधारणाजीए जहासेतछआगमेसिया आगमेणंववहारंपठवेज्जाणोय-सेतछआगमेसिया जहासेतछसुएसिया सुएंववहारंपठवेज्जा २ णोयसेतछसुएसिया जहासेतछआणासिया आणाएववहारंपठवेज्जा ३ णोयसेतछआणासिया जहासेतछ-धारणासिया धारणाएववहारंपठवेज्जा ४ णोयसेतछधारणासिया जहासेतछजीएसिया जीएणंववहारंपठवेज्जा ५ इच्चेतेहिंपंचहिंववहारंपठवेज्जा तं आगमेणंसुएणं आणाए धारणाए जीएणं जहाजहासेआगमेसुएआणाधारणाजीएतहातहाववहारंपठवेज्जा सेकिं माहुभंतेआगमबलियासमणानिग्गंथाइच्चेयंपंचविहंववहारं जदाजदाजहिंजहिंतहातहा

तहिंतहिं अणस्सितोवस्सयंसमंववहारमाणे णिग्गंथे आणाए आराहएत्नवइ इतिनग-वतिसूत्रेशतकआठमे उद्देशेआठमेकह्युंछे आजतो तेपांचव्यवहारमां जितव्यवहारमु-ख्यछे जितव्यवहारेज कामचालेछे तेजितव्यवहार विगरनिदानकेᵒकोइपणकारणवि-नाकेमत्यजियें एटले जितव्यवहार जेआचार्येबांध्यो तेप्रमाणछे ॥ ७ ॥

श्रावकममत्वअशुध्धवली ॥ उपकरणवसतिआहार ॥ सुखशी-
लजेजनआचरे ॥ नविधरियेंहोतेचित्तलगार ॥ सा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेएवीआचरणातेअप्रमाणछे केमकेᵒसिद्धांतमां नाकहीछे जे श्रावकनुं ममत्वनकरवुं यतः गामेवा कुलेवा नगरेवा देशेवा ममत्वन्नावंनकरेचिकुज्जा इत्यादि श्रावकनुं ममत्वकरे तेअप्रमाणछे तथा अशुद्धमान उपगरण वसति आहारप्रमुख लेवानी आगममां नाकहीछे अने जो लीयेतो तेआचार अप्रमाणछे यतः आगमे पिं-डसिज्जंचवछंच ॥ चउछंपायमेवय ॥ अकप्पियंनइछिज्जा ॥पडिगाहेज्जकप्पियं ॥१॥ इति उपलक्षणथी वस्त्रपात्रादिकपण एमजाणवांमाटे सुखशील लोकें जेआचर्युं एटले पो-ताना शरीरनी शोन्नानेअर्थे जेआचर्या तेअप्रमाण बाकी दुर्भिक्षादिक कारणे तो कांइ अशुद्ध लीयें तोपण निर्दोषछे यतः पिंडनिर्युक्तौ ॥ एसोआहारविहि ॥ जहन्नणी उसवन्नावदंसीही ॥ धम्मावस्सगजोगा ॥ जेणनहायंतितंकुज्जा ॥१॥ तथा कारणपडिसे-वापुण ॥ न्नावेअणासेवणत्तिदवठा ॥ आणाइतिइन्नावे ॥ सोसुद्धोमुस्कहेउत्ति ॥२॥ इत्यादि वलीउववाइसूत्रें शुद्धेसणीए एवा अन्निग्रह मुनियेंकर्या तेथी जाणियेंछैयेंजे पूर्वे अ-शुद्धपणकोइक कारणे लेतादीसेछे एअपवादतो प्रमाणछे पणसुखशीललोकेजे आचर्युं ते चित्तमां लगार पणनधरियें एटलेए न्नाव जे डुप्पसहआचार्यलगें तो चारित्रसिद्धां-तमां सांन्नलियेंछैये अनेजो मार्गानुसारीक्रिया कहि तेरीतेयत्नकरताहोयतेनेचारित्री-या न मानियें तो एथी बीजा चारित्रीया तोदेखातानथी तेवारे चारित्रविछेदगयो एम ठेर्युं तोतेचारित्रविना तीर्थपण विछेदगयुं एमठेर्युं एम करतांतो आगम विरुद्ध थायछे यतः व्यवहारन्नाष्ये जोन्नणइनछिधम्मो ॥ नयसामाइयं नचेवयवयाइं ॥ सोस-मणसंघबज्झो ॥ कायव्वोसमणसंघेण ॥ १ ॥ इत्यादिवचने तोमार्गानुसारीक्रियानो कर-नार तेन्नावसाधुछे एम ठर्युं एप्रथमक्रियानामान्नेदथयो ॥ ८ ॥

विधिसेवनाअवितृप्तिशुन्न ॥ देशनाखलितविशुध्धि ॥ श्रध्धा
धर्मइछाघणी ॥ चउन्नेदेंहोएमजाणोसुबुध्धि ॥ सा० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजुंलिंग श्रद्धाप्रवरनामाकहेछे तेना न्नेदचारछे तेकहेछे १ विधिसे-वना २ अवितृप्तिकेᵒअतृप्ति ३ शुन्नदेशनाकेᵒशुद्धदेशना ४ खलित परिशुद्धिनामा

चोथुलिंग ते श्रद्धाप्रवरनोअर्थकहेछे श्रद्धाके० धर्मनीइछा घणीके० अत्यंतहोय पण बालकने रत्नग्रहवानी अभिलाषानी पेठे सामान्यपणे विषयप्रतिभास मात्रनहोयते एम ऊपरकहेला चारभेदेएलिंगहोय ते सुबुद्धिके०बुद्धिवंतहोय तेजाणे ॥ ए ॥

दृढरागछेशुभभोज्यमां ॥ जेमसेवतायेंविरुद्ध ॥ आपदा
मांरसजाणने ॥ तेममुनीनेहोचरणेतेशुद्धि ॥ सा० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवे एश्रद्धाप्रवरनाचारभेदमां प्रथम विधिसेवनानामेभेदओलखावेछे जे शक्तिवंतहोयतेश्रद्धावंतथको विधिप्रधानशक्तिवंतप्रत्युपेक्षणादिक क्रियाकरे अने जे शक्तिरहित होयते द्रव्य क्षेत्र काल तथा भावेकरी जो तादृशक्रियाकरी न शके तो पण प्रतिबंध ते विधिअनुष्ठाननेविषेज होय यतः विहिसारंचियसेवइ ॥ सद्धालूसत्तिमं अणुठाणं ॥ दवाइदोसनिहर्ठवि ॥ पक्कवायंवहइतंमि ॥ १ ॥ इहां कोइपुछेजे शक्तिरहितजे होय तेअनुष्ठान न करे अनेविधिअनुष्ठानमां पक्षपातिकेमहोय तेनेअन्वयसहित गाथानाअर्थेथीकहेछे जेमकोइक पुरुषहोय तेदुकाल अथवादरिद्रपणुंपाम्यो तो तेपुरुष गवार अरणीपत्र तथावृक्षनीछालप्रमुखखाइने दिवसव्यतिक्रमे पणतेवा भोजनमां लपटायनही केमके पोते उत्तम आहारनो स्वादजाणेछे तेथी तेनोराग तो उत्तमभोजनमांज होयछे जे उत्तमभोजन क्यारे मलशे तेमलेतो वावरियें एवो अत्यंतरागहोय हवे अक्षरार्थ कहेछे जे शुभभोज्यमां दृढरागछे तथा रसनो जाणते केम जे पूर्वेंषटरस वावस्याछे तेस्वादनो जाणछे तेआपदामांके०दुकालादिक आपदामां विरुद्धसेवतो एटले कुधान्य खातोथको पण तेनोराग सुधान्यमां होय एदृष्टांते मुनिनेपण चारित्रनी शुद्धि जाणवी एटले यद्यपिद्रव्यखेत्रादिक कारणपामीने विरुद्ध सेवे तोपण शुद्धचारित्रनो रसीउंछे तेथी भावचारित्रने उलंगेनहीतेनेभावथी चारित्रीयाज संगमाचार्यनी पेठे कहियें इत्यादिक बहुवक्तव्यताछे इतिप्रथमभेदः ॥ १० ॥

जेमतृप्तिजगपामेनही ॥ धनहीनलेतोरत्न ॥ तपविनय
वेयावचप्रमुख ॥ तेमकरतोहोमुनिवरबहुयत्न ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे अतृप्तिनामा बीजुं लक्षणकहेछे जेम धनहीनके०दरिद्रीहोय तेने रत्नो ढगलोमल्यो तेवारें तेरत्नलेतां जगतमां तृप्तिके०संतोषपामेज नही तेम मुनिपण तप विनय वैयावच्च तथा प्रमुखशब्दें ज्ञानचारित्र तेहनेविषे घणोयत्नकरे यत्नकरतो थाकेजनही तृप्तिपामेजनही तेमां तपकरतांथकांतो निर्जराथाय तथाशासनदीपे तेप्रसिद्धछे तथा विनयनो अधिकार उत्तराध्ययनना पहेलाअध्ययनथी जाणवो अने वैयावच्चपण निर्जराने अर्थें अनेकप्रकारनुंकरे तेप्रश्नव्याकरणसूत्रथी जोजो तथा ज्ञा-

नजाणतांपण नवनवोवैरागउपजे यतः जहजहसुयमवगाहइ ॥ अइसयरसपसरसंजुयमउवं ॥ तहतहपल्हाइमुणी ॥नवनवसंवेगसद्धाइ ॥१॥ इत्यादि तथा चारित्रमांपण विशुद्ध विशुद्धतर संयमस्थानक पामवानेसर्वेअनुष्ठानकरे उत्तरोत्तरसंयमकंडकआरोहतां अप्रमादपणे केवल ज्ञाननालाज्ञ जणीथायज यतः जोगेजोगेजिणसासणंमि॥ डुक्खकयापउज्जंति ॥ इक्किकंमिअणंता ॥ वट्टंताकेवलीजाया ॥२॥ इत्यादिवीजोज्ञेदकह्यो ॥ ११ ॥

गुरुनीअनुज्ञालेइने ॥ जाणतोपात्रकुपात्र ॥ तेमदेशनाशुद्धिदिए ॥ जेमदीपेहोनिजसंयमगात्र ॥सा०॥१२॥

अर्थ ॥ हवे शुद्धदेशनानामा त्रीजुंलक्षण कहेछे गुरुनी अनुज्ञाके० आज्ञालेइ तेमज शुद्धिदेशनाआपे तेपण पात्रकुपात्रने जाणतोथको जेमसंयमरूप गात्रके०शरीर ते दीपेके०शोन्ने निजके०पोतानुं संयमरूपगात्र शोन्नेइत्यक्षरार्थ एटले एन्नावजे सद्गुरुपासेथी सिद्धांतनो सारजाणी गीतार्थथयोहोय तोपण गुरुनी आज्ञालेइने पण पोतानीमेलेनही पोतेधन्यथको मध्यस्थपणे सद्भूतदेशनाआपे पणपात्रकुपात्रउलखीने देशनाआपे तेपात्रना त्रणन्नेदछे १ बाल २ मध्यम ३ बुद्ध यतः बालःपश्यतिलिंगं ॥ मध्यमबुद्धिर्विचारयेत्वृत्तं ॥ आगमतत्वंतुबुद्धः ॥ परीक्षतेसर्वयत्नेन ॥ १ ॥ इत्यादिक तेनीदेशनानीविधि वीजाषोडशकथकी जाणवी इहां विस्तारथाय माटे नथी लखता तेमाटे जेपात्रने जेमउपगारथाय तेमतेपात्रने देशनाआपे अन्यथा संसारवधारे इत्यादिक त्रीजुंलक्षण एत्रीजालक्षणमां पात्रापात्रविचार प्रमुखनी चर्चाघणीछे तेधर्मरत्नग्रंथथी जोजो जेम पोतानुसंयमगात्रशोन्ने ॥ १२ ॥

जेकदाचितलागेव्रतें ॥ अतिचारपंककलंक ॥ आलोयणें तेशोधतां ॥ मुनिधरेहोश्रद्धानिःशंक ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे खलितपरिशुद्धिनामा चोथुंलक्षणकहेछे ते जे कदाचित व्रतपालतां थकां कोइअतिचाररूप पंकके० कचरो तद्रूपकलंक जो व्रतने विषे अनान्नोगे करी अतिचारलागे ते पण १ प्रमाद २ दर्प्प ३ कल्प एत्रण रीते लागे अने चोथो आकुट्टियेतोप्रायेंचारित्रीयाने संन्नवेजनही तेआकुट्टिप्रमुखनुं स्वरूपकहेछे यतः आउट्टिया उविञ्चा ॥ दप्पोपुणहोइवग्गणाइउ ॥ विगहाइउपमाउ ॥ कप्पोपुणकारणेकरणं ॥१॥ उपलक्षणथी अनेकप्रकारनी प्रतिसेवाछे तेसर्वेएमांसमाय तेप्रायश्चित्तादिकलेइने शुद्धथाय एरीते करतोमुनिराज निःशंकपणेश्रद्धाधारे एचोथोन्नेदथयो ॥ १३ ॥

श्रद्धायकीजेसर्वलहे ॥ गंन्नीरआगमन्नाव ॥ गुरुवचनेपन्नवणिज्जते ॥ आराधकहोहोवेसरलस्वन्नाव ॥ सा० ॥१४॥

अर्थ ॥ हवे बीजालक्षणनो उपसंहारकरतांत्रीजुंलक्षण कहेछे आखीगाथानोअर्थ ज्ञेलोलखियेंछेयें १ विधि २ उद्यम ३ भय ४ वर्णव ५ उत्सर्ग ६ अपवाद ७ तदुभय इत्यादिक आगमना जेगंभीरभावछे तेश्रद्धाथकी सर्व जाणे जोएसर्वभाव नजाणेतो जमालीनीपेठेमिथ्यात्वी थइजाय एवीजालक्षणनो उपसंहारथयो हवे त्रीजुंलक्षणक-हेछे जेएवा भावनाजाणहोय तेगुरुनेवचने पन्नवणिज्जाके०प्रज्ञापनीय एटले परुपवा योग्य पदार्थनो सरलस्वभावे उपदेश करतोथको आराधकहोय एत्रीजुंलक्षण ॥ १४ ॥

षटकायघातप्रमत्तने ॥ पडिलेहणादिकयोग ॥ जाणीप्रमादी
नविहोए ॥ किरियामांहोमुनिशुभसंयोग ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेक्रियानेविषेअप्रमादनामा चोथुंलक्षणकहेछे प्रमत्तके०प्रमादीने पडि-लेहणादिकयोगवंतनेपृथिव्यादिक छकायनो घातथायछे एटलेएभावजे उपयोगविना प्रमादीथको पडिलेहणादिककरतो छकायनो विराधकथाय अनेउपयोगेकरेतो आरा-धकथाय यतः पडिलेहणंकुणंतो ॥ मिहोकहंकुणइजणवयकहंवा ॥ देइयपच्चक्खाणं ॥वाए-सयपडीछइवा ॥ १ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ॥ पडिलेहणापमत्तो ॥ छन्हंपिविराहउहोइ ॥ २ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊवणसइतस्साणं ॥ पडिलेहणा आउत्तो ॥ छन्हंपिआराहउहोइ ॥३॥ इत्युत्तराध्ययनना छवीसमेंअध्ययने. माटे एवुंजाणी पडिलेहणादिकयोगमांप्रमादी नहोय प्रमादकरतां जैनदिक्षावंत पण आर्यमंगुनीपेठे संसारभमे माटे क्रियामां मुनिराजतेशुभसंयोगके०भलायोगवंत होय भलीक्रियानो सं-योगकरे आगममां अनेकप्रकारनी क्रियाकहीछे तेसर्वभलीरीतेकरे एचोथुंलिंग ॥१५॥

जेमगुरुआर्यमहागिरी ॥ तेमउजमेबलवंत ॥ बलअविषय
नवीउजमें ॥ शिवभूतिहोजेमगुरुद्दीवंत ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे शक्तिअनुष्ठाननामा पांचमुंलक्षणकहेछे तेजेम गुरुश्रीआर्यमहागिरि-जीये उद्यमकर्यो तेमबलवंतथको उजमेके०उजमालथाय एटले एभावजे संघयणी धृतिप्रमाणे निरवाहीशके तेक्रियानेजसुसाधुप्रारंभे पणप्रतिज्ञाभंगथाय तेवुंप्रारंभेन-ही बलअविषयके०जेक्रियामांपोतानुं बलनचाले तेमांउद्यमनकरे अने करेतोउलटीखो-टआवे यतः सोहुतवोकायव्वो ॥ जेणमणोमंगुलंनचिंतेइ ॥ जेणनइंदियहाणी ॥ जेणयजो-गानहायंति ॥ १ ॥ इति जेमशिवभूतियें शक्तिउल्लंघनकरी गुरुवचन लोपीने गुरुनी निंदाकरवालाग्यो तेरीतेउत्तमसाधुनकरे इहांआर्यमहागिरी तथाशिवभूतिनो अधि-कार धर्मरत्नग्रंथमांलख्योछे तेथीजाणवो ॥ १६ ॥

गुणवंतनीसंगतिकरे ॥ चित्तधरतगुणअनुराग ॥ गुणलेश
पणपरनुंथुणे ॥ निजदेखेहोअवगुणवडभाग ॥सा०॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे छठुंगुणानुरागनामा भावसाधुनुं लिंग कहेछे जे एवा चारित्रीयाहोय तेगुणवंतनीज संगतकरे अने पोताना चित्तनेविषे गुणनोज अनुरागके०रागधरे यतः वयसमणधम्मसंयम ॥वेयावच्चंबंभगुत्तीउ ॥ नाणाइतियंतव ॥ कोहाइनिग्गहाचरणमेयं ॥ १ ॥ एचरणसित्तरीकही तथा पिंडविसोहिसमइ ॥ भावणपडिमाउइंदियनिरोहो ॥ पडिलेहणागुत्तिउ ॥ अभिग्गहाचेवकरणंतु ॥१॥ एकरणसित्तरी इत्यादिक गुणनोराग धरे अने श्रीकृष्णे जेम कालाकुतराना दांतवखाण्या तेनीपेठे बीजामां गुणनो लेश होय तेपण स्तवे तथा निजके०पोतानाअवगुण देखे वडभागके०मोहोटा भागनोधणी जेमवेश्रावककालादेहरामां पेठा तेम पोताना अवगुणदेखे ॥ १७ ॥

गुरुचरणसेवारत्तहोइ ॥ आराधतोगुरुआण ॥ आचार
सर्वनामूलगुरु ॥ तेजाणेहोचतुरसुजाण ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेगुरुआणाआराधननामा सातमुंलक्षणकहेछे इहांकोइपुछेजे भावसाधुनांलिंग शास्त्रांतरमांतोछकह्यांछे यतः मग्गाणुसारीसड्ढो॥पन्नवणिज्जोकिरियावरोचेव ॥ गुणरागी सक्कारंभ ॥ संगउतहयचारित्ती ॥ १॥ एरीते छगुणकह्याछे तोतमे सातमोगुण क्यांथी कहोछो तेनेउत्तरकहेछेजे चौदसेंचुमालीस प्रकरणरूप प्रसादनेविषे सूत्रधारसरिखा श्रीहरिभद्रसूरि तेणेउपदेशपदनामा ग्रंथनेविषे सातमुंलिंगपणकह्युंछे तथा चतत्सूत्रं एयंचअत्थिलक्खणं ॥ मिमस्सनिसेसमेवधन्नस्स ॥ गुरुतहगुरुआणासं ॥ पाडणांचगमाभिहलिंगं ॥ इत्यलंविस्तरेण माटे सातकहियेंछैयें हवेसातमालक्षणनुं स्वरूप कहेछे गुरुजेछत्रीसछत्रीसीगुणे विराजमान तेनाचरणनी सेवानेविषे रक्तहोय तथा गुरुआदिकनी आज्ञाआराधतोथको वलीते साधुएम जाणेजे सर्वआचारनुं मूलतेगुरुछे गुरुथीसर्व प्रगटथाय तेचतुरसुजाण एमजाणे एसातमोगुणकह्यो ॥ १८ ॥

एसातगुणलक्षणवर्‍यो ॥ जेभावसाधुउदार ॥ तेवरेसुख-
जशसंपदा ॥ तुजचरणेहोजशभक्तिअपार ॥ सा० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एसातलक्षणनेगुणेकरीवर्‍योथको एवोजेभावसाधु उदारके०प्रधान ते सुखजशनी संपदानेवरेके०पामे एटले उत्कृष्टजे मोक्षसुखतेनेतो तेवरेजेहेसर्वज्ञ केवलज्ञानभास्कर तमारा चरणनेविषे जशके०जेने अपारभक्तिहोय तेवरे ॥ १९ ॥ एढालमां प्रथमथीमांडीने जेटली वात टबामां लखीछे तेसर्वधर्मरत्नसूत्रवृत्तिथीलखीछे पण तेग्रं-

अर्थ ॥ हवे बीजालक्षणनो उपसंहारकरतांत्रीजुंलक्षण कहेछे आखीगाथानोअर्थ जेलोलखियेंछेयें १ विधि २ उद्यम ३ जय ४ वर्णव ५ उत्सर्ग ६ अपवाद ७ तदुजय इत्यादिक आगमना जेगंजीरजावछे तेश्रद्धाथकी सर्वे जाणे जोएसर्वजाव नजाणेतो जमालीनीपेठेमिथ्यात्वी थइजाय एबीजालक्षणनो उपसंहारथयो हवे त्रीजुंलक्षणकहेछे जेएवा जावनाजाणहोय तेगुरुनेवचने पन्नवणिज्जकेण्प्रज्ञापनीय एटले परुपवा योग्य पदार्थनो सरलस्वजावे उपदेश करतोथको आराधकहोय एत्रीजुंलक्षण ॥ १४ ॥

षटकार[illegible] ॥ पमिलेहणादिकयोग ॥ जाणीप्रमादी
नविहोए ॥ किरियामांहोमुनिशुजसंयोग ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेक्रियानेविषेअप्रमादनामा चोथुंलक्षणकहेछे प्रमत्तकेण्प्रमादीने पमिलेहणादिकयोगवंतनेपृथिव्यादिक छकायनो घातथायछे एटलेएजावजे उपयोगविना प्रमादीथको पमिलेहणादिककरतो छकायनो विराधकथाय अनेउपयोगेकरेतो आराधकथाय यतः पमिलेहणंकुणंतो ॥ मिहोकहंकुणइजणवयकहंवा ॥ देइयपच्चरकाणं ॥वाएसयपडीछइवा ॥ १ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ॥ पमिलेहणापमत्तो ॥ छन्हंपिविराहउहोइ ॥ २ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊवणसइतस्साणं ॥ पमिलेहणा आउत्तो ॥ छन्हंपिआराहउहोइ ॥३॥ इत्युत्तराध्ययनना छवीसमेंअध्ययने. माटे एवुंजाणी पमिलेहणादिकयोगमांप्रमादी नहोय प्रमादकरतां जैनदिक्षावंत पण आर्यमंगुनीपेठे संसारजमे माटे क्रियामां मुनिराजतेशुजसंयोगकेण्जलायोगवंत होय जलीक्रियानो संयोगकरे आगममां अनेकप्रकारनी क्रियाकहीछे तेसर्वजलीरीतेकरे एचोथुंलिंग ॥१५॥

जेमगुरुआर्यमहागिरी ॥ तेमउजमेबलवंत ॥ बलअविषय
नवीउजमें ॥ शिवजूतिहोजेमगुरुहीलंत ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे शक्तिअनुष्ठाननामा पांचमुंलक्षणकहेछे तेजेम गुरुश्रीआर्यमहागिरिजीये उद्यमकस्यो तेमबलवंतथको उजमेकेण्उजमालथाय एटले एजावजे संघयणी धृतिप्रमाणे निरवाहीशके तेक्रियानेजसुसाधुप्रारंजे पणप्रतिज्ञाजंगथाय तेवुंप्रारंजेनही बलअविषयकेण्जेक्रियामांपोतानुं बलनचाले तेमांउद्यमनकरे अने करेतोउलटीखोटआवे यतः सोडुतवोकायव्वो ॥ जेणमणोमंगुलंनचिंतेइ ॥ जेणनइंदियहाणी ॥ जेणयजोगानहायंति ॥ १ ॥ इति जेमशिवजूतियें शक्तिउल्लंघनकरी गुरुवचन लोपीने गुरुनी निंदाकरवालाग्यो तेरीतेउत्तमसाधुनकरे इहांआर्यमहागिरी तथाशिवजूतिनो अधि-
. धर्मरत्नग्रंथमांलख्योछे तेथीजाणवो ॥ १६ ॥

गुणवंतनीसंगतिकरे ॥ चित्तधरतगुणअनुराग ॥ गुणलेश
पणपरनुंथुणे ॥ निजदेखेहोअवगुणवडजाग ॥सा०॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे छठुंगुणानुरागनामा जावसाधुनुं लिंग कहेछे जे एवा चारित्रीयाहोय तेगुणवंतनीज संगतकरे अने पोताना चित्तनेविषे गुणनोज अनुरागके०रागधरे यतः वयसमणधम्मसंयम ॥वेयावच्चंबंजगुत्तीउ ॥ नाणाइतियंतव ॥ कोहाइनिग्गहाचरणमेयं ॥ १ ॥ एचरणसित्तरीकही तथा पिंडविसोहिसमइ ॥ जावणपडिमाउइंदियनिरोहो ॥ पडिलेहणागुत्तिउ ॥ अभिग्गहाचेवकरणंतु ॥१॥ एकरणसित्तरी इत्यादिक गुणनोराग धरे अने श्रीकृष्णे जेम कालाकुतराना दांतवखाण्या तेनीपेठे बीजामां गुणनो लेश होय तेपण स्तवे तथानिजके०पोतानाअवगुण देखे वडजागके०मोहोटा जागनोधणी जेमवेश्रावककालादेहरामां पेठा तेम पोताना अवगुणदेखे ॥ १७ ॥

गुरुचरणसेवारत्तहोइ ॥ आराधतोगुरुआण ॥ आचार
सर्वनामूलगुरु ॥ तेजाणेहोचतुरसुजाण ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेगुरुआणाआराधननामा सातमुंलक्षणकहेछे इहांकोइपुछेजे जावसाधुनांलिंग शास्त्रांतरमांतोछकह्यांछे यतः मग्गाणुसारीसड्ढो॥पन्नवणिज्जोकिरियावरोचेव ॥ गुणरागी सक्कारंज ॥संगउतहयचारित्ती ॥ १॥ एरीते छगुणकह्याछे तोतमे सातमोगुण क्यांथी कहोछो तेनेउत्तरकहेछेजे चौदसेंचुमालीस प्रकरणरूप प्रसादनेविषे सूत्रधारसरिखा श्रीहरिजद्रसूरि तेणेउपदेशपदनामा ग्रंथनेविषे सातमुंलिंगपणकह्युंछे तथा चतत्सूत्रं एयंचअव्विलक्खणं ॥ मिमस्सनिसेसमेवधन्नस्स ॥ गुरुतइगुरुआणासं ॥ पाडणंचगमामिहलिंगं ॥ इत्यलंविस्तरेण माटे सातकहियेंछैयें हवेसातमालक्षणनुं स्वरूप कहेछे गुरुजेछत्रीसछत्रीसीगुणे विराजमान तेनाचरणनी सेवानेविषे रक्तहोय तथा गुरुआदिकनी आज्ञाआराधतोथको वलीते साधुएम जाणेजे सर्वआचारनुं मूलतेगुरुछे गुरुथीसर्व प्रगटथाय तेचतुरसुजाण एमजाणे एसातमोगुणकह्यो ॥ १८ ॥

एसातगुणलक्षणवस्यो ॥ जेजावसाधुउदार ॥ तेवरेसुख-
जशसंपदा ॥ तुजचरणेहोजशजक्तिअपार ॥ सा० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एसातलक्षणनेगुणेकरीवस्योथको एवोजेजावसाधु उदारके०प्रधान ते सुखजशनी संपदानेवरेके०पामे एटले उत्कृष्टजे मोक्षसुखतेनेतो तेवरेजेहेसर्वज्ञ केवलज्ञानजास्कर तमारा चरणनेविषे जशके०जेने अपारजक्तिहोय तेवरे ॥ १९ ॥ एढालमां प्रथमथीमांडीने जेटली वात टबामां लखीछे तेसर्वेधर्मरत्नसूत्रवृत्तिथीलखीछे पण तेग्रं-

थमां विस्तारघणोछे तेजोइलेजो एचउदमी ढालमां साधुनां लक्षण कह्यां तेलक्षण कहेतां मुनिराजऊपर बहुमानउपनुं तेबहुमानना हर्षेकरी पन्नरमी ढालमध्ये साधुना गुण वर्णन करेछे एसंबंधेपन्नरमीढालकहेछे ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ आजमारे एकादशीरे, नणदलमौनकरीमुखरहीयें ॥ एदेशी ॥

धन्यतेमुनिवरारे ॥ जेचालेसमभावें ॥ भवसायर
लीलाएउतरे ॥ संयमकिरियानावें ॥ धन्य० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जे मुनिमांप्रधानसरिखा समभावे चालनारा रागद्वेषरहितपणेविचरे ते मुनिराजनेधन्यछे तेमुनिसंयम जेचारित्र तेनी जेक्रियातद्रूप नावेंके०नावायेंकरीने भवसायरके०संसारसमुद्रनो लीलायेंके०सेहेजमां पारउतरेछे ॥ १ ॥

भोगपंकतजीऊपरबेठा ॥ पंकजपरेंजेन्यारा ॥ सिंहपरें
निजविक्रमशूरा ॥ त्रिभुवनजनआधारा ॥ धन्य० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ भोग जेपंचेंद्रीना विषय तद्रूपजे पंकके०कचरो तेतजीने ऊपरबेठाके०अलगारह्या अने पंकजके०कमलनीपेठे जेन्याराछे एटलेकमल तेकचराथी उपनो अने कचराथी न्यारोरहे तेम मुनिराजपण भोगरूप कचरामांउपना अने तेभोगछांडीने अलगा रह्या इतिभावः वली सिंहनीपेठें पोतानो विक्रमके०पराक्रम फोरववाने शूरवीरछे वलीस्वर्ग मृत्युने पातालरूप जेत्रणभुवननालोकने आधाररूपछे ॥ २ ॥

ज्ञानवंतज्ञानीसुंमलता ॥ तनमनवचनेसाचा ॥ द्रव्यभा
वसुधाजेभाषे ॥ साचीजिननीवाचा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे स्याद्वादशैली देखाडतांथकां मुनिराजनुं वर्णनकरेछे पोतेज्ञानवंतछे तथा ज्ञानीपुरुषसाथे मलीरहेछे पणखेदधरतानथी वली तनके०काया अने मन तथा वचनेकरीसाचाछे पण जूठीप्रवृत्तिनथी वली जेमुनिद्रव्यथी तथा भावथी सूधाभाषेके०सत्यबोले एटले द्रव्यते षट्द्रव्यादिक अने भावते तेनापर्याय अथवा द्रव्यथी बाह्यवस्तु अने भावथी अभ्यंतरवस्तु तेसत्यकहे इत्यादिक अनेकप्रकारेते जिनेश्वरनी वाणीकहियें तेनेसाचीकहे एटले शुद्ध परुपकहोय इतिभावः ॥ ३ ॥

मूलउत्तरगुणसंग्रहकरता ॥ त्यजताभिक्षादोषो ॥ पग
पगव्रतदूषणपरिहरता ॥ करतासंयमपोषो ॥ धन्य० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ मूलगुणजे पंचमहाव्रतादिक अने उत्तरगुणपिंडविशुद्ध्यादिक तेनो संग्रह

करताके०राखता वली भिक्षा जेगोचरी तेना बेंतालीसदोष तेने त्यजताके०छांमता पगपगके०क्षणेक्षणे व्रतनां दूषणजे अतिचार तेने परिहरताथका एरीते संयमने पोषेके०पुष्टकरतारहेछे ॥ ४ ॥

मोहप्रतेंहणतानितआगम ॥ भणतासदगुरुपासें ॥ दूषम
कालेंपणगुणवंता ॥ वरतेशुभअभ्यासें ॥ धन्य० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथा शुभअध्यवसायेंकरी मोहरूप शत्रूने हणता तथा नितके०निरंतर आगमके०सिद्धांतने सद्गुरु पासेथीभणता एवाविषमकालें पंचमआरेपण गुणवंता पुरुषछे ते रुडेअभ्यासेवर्त्तेछे एटले पूर्वार्द्धमांज्ञानकह्युं अनेपश्चिमार्द्धमांक्रियाकही ॥ ५ ॥

छठुंगुणठाणुंभवअटवी ॥ उलंघणजेणेलहिउं ॥ तससो-
भागसकलमुखएके ॥ केमकरिजाएकहिउं ॥ धन्य० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ प्रमत्तनामा छठुंगुणठाणुं ते केवुंछे जे भवअटवी उलंघणके०संसाररूपअटवीनो पारपमाडनारुंछे ते जेणे लहिउंके०जेपुरुषेपाम्युं यतः भवाटवीलंघनतुल्यमेतत् । प्रमत्तनामक्रिययासमेत ॥ गुणगुणस्थानमसंख्यवृद्ध्या प्रमादहानेः प्रवरंप्रभाप्त्या ॥ १॥ तेमुनिराजनुं समस्तसौभाग्य तेएकेमुखे शीरीते कह्युंजाय ॥ ६ ॥

गुणठाणानीपरिणतिजेहनी ॥ नवीपेभवजंजाले ॥ रहे
शेलडीढांकीराखी ॥ केतोकालपरालें ॥ धन्य० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेपुरुषने गुणठाणानी परिणतिथयीहोय एटलेगुणठाणुंपरणम्युंहोय तेनी परिणति भवजंजालेके०संसारविटंबनामां छीपेनहीके०छानीरहेनही तेपुरुष संसारमां रह्योथको पण उदासीनज देखाय केनीपेठे जेमशेलडीने पराले करीढांकीराखी होय ते केटलोकालरहे आगलजातां अंकुराफूटे त्यारे प्रगटथाय पण छानीनरहे ॥ ७ ॥

तेहवागुणधरवाअणधीरा ॥ जोपणसूधुंभाषी ॥ जिनशा-
सनशोभावेतेपण ॥ सुधासंवेगपाखी ॥ धन्य० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमुनिराजना पूर्वोक्तगुण धरवाने जेअणधीराके०असमर्थहोय एटले एहवा गुणजेसाधुधरीशकेनही तोपणजे सूधुंभाषीके०शुद्धपरुपकहोय अनेदेशना प्रमुखगुणे करीने जिनशासनने शोभावे तेनेपण सुधाके०शुद्धसंवेगपक्षीकहियें यतः संविग्गपक्खियाणं ॥ लक्खणमेयंसमासउभणियं ॥ उसन्नचरणकरणावि जेणकम्मंविसोहंति ॥१॥ सुद्धसुसाहुधम्मं ॥ कहेइनिंदइयनियमायारं ॥ सुतवस्सियाण पुरउ ॥ होइउसव्वोमराइणिउ ॥ २ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

सद्दहणाअनुमोदनकारण ॥ गुणथीसंयमकिरिया ॥ व्यव-
हारेंरहियातेफरसे ॥ जेनिश्चयनयदरिया ॥ धन्य० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ सद्दहणाके०तत्वश्रद्धा अनुमोदनके०गुणवंतनी प्रशंसाकरवी तथा कारणके० मोक्षसाध्यनांसाधन इत्यादिक गुणथीके०पूर्वोक्त गुणेकरीने जे व्यवहार मार्गेरह्या एवाजेपुरुष तेणे फरसेके०संयमक्रिया फरसीज एमजाणवुं केमकेते निश्चय नयरूपमतना समुद्रछे यतःसद्दहणाजाणणसु॥ मोयणकारणगुणापरेशिंजे ॥ णिछयववहारविऊ॥ तेसिंकिरियाभवेभावा ॥ १ ॥ इतिसंमतिवृत्तौ ॥ ए ॥

डुःकरकारथकीपणअधिका ॥ ज्ञानगुणेंइमतेहो ॥ धर्मदा
सगणीवचनेलहियें ॥ जेहनेप्रवचननेहो ॥ धन्य० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ डुःकरकारथकीके०डुखथाय एवा कष्टना करनाराहोय अने अल्पआगमना धणीहोय तो शाकामआवे तथा कष्टादिक थोडुंछुंहोय अने ज्ञानीपुरुषहोय तोतेज्ञानगुणेकरी कष्टनाकरनारथी अधिकाकह्याछे एम धर्मदासगणीयें उपदेशमालामध्ये कह्युंछे यतःनाणाहिउवरतरं॥ हीणोविहुपवयणंपभावंतो ॥नयडुक्करंकरंतो ॥सुठुविअप्पागमोपुरिसो इतिवचनात् तेधर्मदासगणी केवाछे जेने प्रवचनके० आगमनेविषे घणोस्नेहहतो ॥ १० ॥

सुविहितगछकिरियानोधोरी ॥ श्रीहरिभद्रकहाय ॥ एह
भावधरतोतेकारण ॥ मुझमनतेहसुहाय ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ सुविहितके०भलाआचारवंत गछछेजेहनो तथा वली क्रियावंतमां धोरी समान एवा श्रीहरिभद्रसूरि १४४४ ग्रंथनाकर्त्ता शास्त्रकारेकह्याछेते एहभावके०एसंवेगपक्षीना भावने धरनारहता तेकारणे माराचित्तमांपण तेसुहायछे गमेछे एटले ते संवेगपक्षी शुद्धपरुपक यथाशक्तियें क्रियावंतहतामाटेमारा मनमांते घणागमेछे ॥११

संयमठाणविचारीजोतां ॥ जोनलहेनिजसाखें ॥ तोजू
ठुंबोलीनेडुरमती ॥ शुंसाधेगुणपाखे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली संयमठाणके०संयमनांस्थानक असंख्याताछे तेविजारीजोतांके०विचारतां जोपोतानी साखें नलहेके०नदेखे संयमनीवाततो मोहोटीछे तेआगमनेमेलेजुएतो पोतामां क्यांथीदेखे तो जूठुंबोलीने संयमविना संयमीनाम धरावीने डुरमतिके०हेडुष्टमतीनाधणी गुणपाखेके०गुणविना शुंसाधेछे ठालीमहेनतक्यांकरेछे यतःअसंजएसंजमक्षमाणे ॥ पावसमणेत्तिवुच्चइ इत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

विमायाधर्मेनविकहेवुं ॥ परजननीअनुवृत्ति ॥ धर्मवचनआ-
गममांकहियें ॥ कपटरहितमनवृत्ति ॥ धन्य० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ नविमायाधर्मेके०धर्मनेविषे मायानथी एटले मायाकरतां धर्मनहोय वली परजननी अनुवृत्तिके०परनाअनुजायीपणे अथवा परने आवर्जनअर्थें नविकहेवुंके० धर्मदेशनाप्रमुख धर्मवचन नकहेवुं एम आगमजेउपदेशमाला तेमांकहियेंके०वक्रोक्तियेंकहियेंछेयें एटले कह्युंछे यतः धम्मंमिनछिमाया ॥ नयकवडंअणुअत्तियंचेव ॥ कुडपागरूमकंरूछिं ॥ धम्मवयणमुज्जुयंजाणं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तेधर्मवचनकेवुंछे जे कपटरहित सरलमननीवृत्तिहोय एरीते धर्मवचनकहे ॥ १३ ॥

संयमविणसंयतताथापे ॥ पापश्रमणतेजाख्यो ॥ उ[illegible]
यनेसरलस्वजावे ॥ शुद्धपरुपकदाख्यो ॥ धन्य० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली पोतामांसंयम नहोय अने संयतताथापे एटले साधुपणुं ठेरावेजे तेमुनिने पापसाधु कह्योछे तेमाटे सरलके०ऋजुस्वजावनोधणी तेऋजुने शुद्धपरुपक कह्योछे एटलेसरलस्वजावीहोय तेशुद्धकहे माटे होय तेवुंज यतः समइमाणिपाणाणि ॥बीयाणीहरियाणिय ॥ असंजएसंजयमन्नमाणे ॥पावच्चइ ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनेसतरमेअध्ययने ॥ १४ ॥

एकबालपणकिरियानयेंते ॥ ज्ञाननयेंनविबाला ॥ सेवायो-
ग्यसुसंयतनेते ॥ बोलेउपदेशमाला ॥ धन्य० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एकबालके०कोइक बालछे पणकिरियानयेंके०क्रियामां शिथिलछे एटले क्रियानयेबालछे पणज्ञाननयनी अपेक्षायेतो बालनथीके०गीतार्थशुद्धजाषीछे तेगीतार्थ सुसंयतके०जलाक्रियावंतसाधुनेपण सेववायोग्यछे एटले क्रियावंतमुनि तेक्रियारहितगीतार्थनो वैयावच्चकरे एमउपदेशमालामध्येकह्युंछे यतः हीणस्सविसुद्ध परुवगस्स ॥ नाणाहियस्सकायवं ॥ जणचित्तगाहणत्थं ॥ करिंतिलिंगावसेसेवि ॥ १ ॥ १५ ॥

किरियानयेंपणएकबालते ॥ जेलिंगीमुनिरागी ॥ ज्ञानयो-
गमांजसमनवरते ॥ तेकिरियासोजागी ॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेक्रियानयनीअपेक्षायें बालछे एटले क्रियावंतनथी शिथिलक्रियावंतछे एवाजे लिंगीके०केवलसाधुनुंलिंगमात्र राखेछे पणजो मुनिरागीके० गुणवंतमुनिना रागीछे एटले पोते गुणवंतनथी पण गुणीनारागीछे तेपोतेपणज्ञानीथाय तेमाटे

कहेछे जे ज्ञानयोगमां जसमनवरतेके०एरीते जेनुंमन ज्ञानयोगमां वर्त्तेछे तेनी अल्प क्रियापण सोनागीके०सोनाग्यवंतजाणवी इहां अल्पक्रिया एवो अर्थकरियें तोपूर्वा- परसंबंधमले एटले एनावजे पोते अल्पक्रियावंत होय पणमुनिनो रागीछे तोएरीते ज्ञानयोगमांवर्त्ततां अल्पक्रियापणसोनाग्यवंती जाणवी ॥ १६ ॥

बालादिकअनुकूलक्रियाथी ॥ आपेंइछायोगी ॥ अध्यात्म
मुखयोगअन्यासें ॥ केमनविकहियेंयोगी ॥ धन्य० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ आपेंके०पोते इछायोगीथकोरहे एटले योगत्रणप्रकारना कह्याछे १ इछा योग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्ययोग तथापुनः श्रद्धानाविकलो २ वाक्याविकलं ३ श- क्त्यतिक्रम इतियोगनिर्णये एत्रण योगमां प्रथम इछायोगते श्रद्धाअविकलथकां आ- पेंके०पोते श्रद्धावंत अने क्रियावंतहोय तो तेक्रियाथी बालादिकअनुकूलके०बालजीव मार्गेना रागीथाय एटलामांएवमोगुणछे तो अध्यात्ममुखके०अध्यात्मप्रमुख योगसा- धननाग्रंथोनो अन्यासकरे एटले अहोरात्री अध्यात्ममां मग्नरहे तेपुरुषने योगीश्वर केम न कहियें एटले श्रद्धावंतथकोक्रियाकरतो बालजीवने उपकारीथायछे अनेसाधु कहेवायछे तोअध्यात्ममां मग्नरहेतां साधुमुनिनेयोगी केम नकहियें ॥ १७ ॥

उचितक्रियानिजशक्तिछांमि ॥ जेअतिवेगेचढतो ॥ तेनवथि-
तिपरिपाकथयाविण ॥ जगमांदिसेपमतो ॥ धन्य० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ वली अध्यात्ममार्गे पणपोतानी उचितशक्तियें क्रियाकरतो साधे अने य- थाशक्ति क्रियामूकीने शक्तिउल्लंघनकरे तोतेने गुण नथाय माटे जेटली पोतानी श- क्तिहोय तेटलीज क्रियाकरवी एनुंनाम उचितक्रियाकहियें तेरीतेनकरे अनेजे अति- वेगेचढतोके०शक्तिथी अधिककरे एटले एनावजे शक्तिने अनावें उपवास छठप्रमुख करे अथवा आतापना लेवाजाय इत्यादिक कामकरतो तेप्राणीपण नवस्थिति परिपाक थयाविना जगतमां पमतादेखियेंछैयें एटले एनावजे शक्तिउल्लंघनकरीने अधिककर- वाजाय अने नवस्थिति पाकीनथी तेथी तेने शुकमालिकाप्रमुखनीपेठे परिणाम टकेजनही परिणाम पमताजहोय इतिनावः ॥ १८ ॥

माचेमोटाईमांजेमुनी ॥ चलवेमाकमाला ॥ शुद्धपरुपणगु-
णविणनघटे ॥ तसनवअरहटमाला ॥ धन्य० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीजे मुनि पोतानी मोटाइमां माचेके०रीऊपामे एटले थोमीक्रियाप्रमुख आवमीहोय तेमां मग्नरहे जेअमे समजुछैयें तथा माकमालचलावे एटलेलोकमां

आडंबरघणोदेखाडे पणशुद्ध परुपकगुणविना तेनी ञवके०संसाररूपअरहटनी माला ते घटेनही ठंठीथायनही एटलेशुद्धपरुपकगुणविनासंसार ठंठोनथाय ॥ १९ ॥

निजगणसंचेमननविखंचे ॥ ग्रंथञणीजनवंचे ॥ लुंचेके
शनमुंचेमाया ॥ तोव्रतनरहेपंचे ॥ धन्य० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ निजगणके०पोतानोजे गछसमुदाय तेने संचेके०ञेलाकरे जेअमारा श्रावकश्राविका साधुसाध्वी इत्यादिक ऊपर ममत्वकरे मन नवीखंचेके०पोतानुं मन ही-णीप्रवृत्तिथी खेंचीराखेज नही ग्रंथञणीके०द्रव्यनेअर्थे जनवंचेके०लोकनेठगे अथवा ग्रंथके०सिद्धांतशास्त्र ञणीके०अध्ययनकरीने लोकनेठगे उत्सूत्रपरुपणाकरीलोकने दुर्गतियेंलेइजाय एरीते जे लुंचेकेशके०मस्तकेकेशनुं लोचकरे अने नमुंचेमायाके०माया-कपट मूकेनही तोतेप्राणीना पांचमहाव्रतमां एके नरहे ॥ २० ॥

योगग्रंथनाञावनजाणे ॥ जाणेतोनप्रकाशे ॥ फोकट
मोटाइमनराखे ॥ तसगुणदूरेंनासे ॥ धन्य० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेथकी आत्मस्वरूपसधाय एवाजे योगग्रंथके०परमार्थनाशास्त्र तेना ञावके० रहस्यने नजाणेके०ठलखेनही समजेनही अनेकदाचितजाणे तोप्रकाशेनही ञव्यजीवने तेग्रंथोनीवातो कहेनही कारणकेजो तेवीवातोकहे तोपोताने तेमज करवुंपडे वली फोकट मोटाइके०मिथ्याअञिमानराखे जेअमेमोटाठैयें अमारा जेवोकोइनथी एवो अहंकारराखे तसगुणके०तेप्राणीमां जोकोइगुणहोयतो तेपणदूरनासीजाय एम ठतागुणपणजायतो अणठतानुंकहेवुंजशुं ॥ २१ ॥

मेलेवेशेंमहियलम्हाले ॥ बकपरेंनीचोचाले ॥ ज्ञानविना
जगधंधेघाले ॥ तेकेममारगचाले ॥ धन्य० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ मेलेवेशेंके०वस्त्रादिकमलीनराखे अने महियलके०पृथ्वीनेविषे म्हालेके०मलपतांफरे वली बगलानीपेठे नीचुंजोइनेचाले जेथी लोकजाणे ईर्याजूयेठे एवाहोय अनेजो ज्ञानीहोयतो सर्वेलेखेठे पणज्ञानविना एटले अज्ञानीथका जगतने धंधेके०क्लेशमां घालताफरे एटले एवीकष्टक्रियाकरनारनांवचन लोकमाने अनेते पोतेतो ज्ञान विनानोठे माटेअशुद्धपरुपे तेवारे लोकनेपण अज्ञानउपदेशलागेमाटे जगतने कदाग्रहरूपक्लेशमां नाख्युंज इतिञाव तो एवा अज्ञानीथकी जैनमार्ग केम चाले यतः-मासेमासेयजोबालो ॥ कुसंगेणंतुञुंजए नसो ॥ सुअरकायस्सधम्मस्स ॥ कलिं अग्घइसोलसिं ॥ १ ॥ तथाअन्नाणीकिंकाहि इत्यादिवचनात् ॥२२॥

परपरिणतिपोतानीमाने ॥ वरतेआरतध्याने ॥ बंधमोक्ष
कारणनपीछाने ॥ तेपहिलेगुणठाणे ॥ धन्य० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ परपरिणतिके०पारकी समजणते पोतानीकरी माने एटले परअज्ञानीनी मतेचाले अथवा परपरिणतिके०पुद्गलशरीर वस्त्रपात्रादिकनाजे परिणमन ते अज्ञाने करीने तन्मयपणेपरिणमतो सर्वेपोतानीज परिणतिमाने अथवा परजे स्वव्यतिरिक्त लोकनांघर तेनाजे परिणमनके०घरव्यापारनुं चिंतववुं तेपोतानुं करी माने अनेतेथी आर्तध्याननोविकल्पकरे यतः सयंगेहंपरियज्ज ॥ परगेहंसिवावरे इत्युत्तराध्ययनवचनात् माटेपोतानुंघर मुकी परघरनी चिंताकरेतो पापश्रमणकह्योछे इतिभावः अने बंधमोक्षकारणके०बंधनांकारणजे मिथ्यात्व अविरतिकषाययोगप्रमादप्रमुखजेबंधना हेतु ते नपीछानेके०नजाणे मोक्षनांकारण जे कषायादिकनो अभाव अथवा ज्ञानक्रियाप्रमुख एटले नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिवचनात् ॥ इत्यादिकमोक्षना हेतुछे तेपण नपीछानेके० नजाणे एवाअज्ञानीप्राणी तेगमेतेटला कष्टादिककरो तोपण अज्ञानीछेमाटे पहेलेगुणठाणेजाणवा यदुक्तं ॥ नाणेणविणाचरणं ॥ पढमगुणठाणपुट्ठीकरं इत्युपदेशमालावृत्तौ॥

किरियालवपणजेज्ञानिनो ॥ दृष्टिथिरादिकलागे ॥ तेथी
सुजशलहिजेंसाहिब ॥ सीमंधरतुजरागे ॥ धन्य० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानिनोके०ज्ञानवंतनो क्रियानोलवके०एकअंशमात्र पण जे पांचमी थिरानामादृष्टि तिहांलागतोहोय एटले सम्यक्तसहितहोय आदिशब्दथी कांता प्रभा परा एत्रणदृष्टिलइयें तेथीके०तेज्ञानसहित क्रियानाअंशथी हेसाहेब सुजश लहिजेके० भलोजशपामियें मोक्षरूपउत्कृष्टोजशपामियें पणते हेश्रीमंधरपरमात्मा तुजरागेके० तारे स्नेहेकरीने पामियें ॥ २४ ॥ एपन्नरमीढालनी कोइकगाथामां ज्ञाननीमुख्यताकरी कोइकगाथामां चारित्रनी मुख्यताकरी तथा कोइक गाथामां बेहुनो स्याद्वादकह्यो तेसांभली कोइकशिष्यने व्यामोहउपजे जेतेवारेस्थितपक्षते शोहशे तेशंका टालवाने सोलमी ढालमां स्याद्वादमार्गनो स्थितपक्ष देखाडेछे ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ सफलसंसारअवतारएहुंगणुं ॥ एदेशी ॥

स्वामीसीमंधरातुंभलेध्याइयें ॥ आपणोआतमाजे
मप्रकटपाईयें ॥ द्रव्यगुणपजवातुजयथानिर्मला ॥
तेमसुजशक्तिथीजईविभवसामला ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेसीमंधरसाहेब तुजने मनमांध्यायियें एज नलेके०नलुंछे जेम तमारा ध्यानथी आपणोके०पोतानो आत्मातेप्रगटपामियें तमारा ध्यानथी ज्ञानीथयीये ते ने पोतानो आत्मा आवरणरहित थयो तेवारे आत्मनाव पाम्याज इतिनावः ते-यथाके०जेम १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय ते तुजके०तमारानिर्मलछे एत्रणनां लक्-हेछे यथा गुणाणमासर्ज्जदव्वं॥ एगदव्वसियागुणा॥लक्खणंपज्जवाणंतु ॥ नजर्जनिस्सि-तवे ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययने मोक्षमार्गाध्ययने २७ मे अथवा गुणपर्यायनुं नाजन द्रव्य सहनाविधर्म तेगुण क्रमनावी तेपर्याय इत्यादिक व्याख्यान ग्रंथांतरथी जा-णवुं एरीते जेमतमारुंआत्मद्रव्य असंख्यातप्रदेशरूप तथा तमारा ज्ञान दर्शनचारि-त्रादिक अनंतगुण तथा तेमांसमयसमय उत्पादव्ययपणानुं परणमवुं तथा अनंतअ-गुरुलघुप्रमुख जेपर्याय तेसर्वेनिर्मल थया निरावरणथया तेरीते मारे पण शक्तिथीके० (यद्यपि व्यक्तिथीनथी तोपण)शक्तियेछेते जइविके०यद्यपि नवके०संसारनेविषे साम-लाके०मेलाछे एटले आवरणसहितछे एटलोफेरछे ॥ १ ॥

चारछेचेतनानीदशाअवितथा ॥ बहुशयनशय
नजागरणचोथीतथा ॥ मिछअविरत्तसुयततेरमें
तेहनी ॥ आदिगुणठाणेनयचक्रमांहेंमुणी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे चेतनानीअवस्था वर्णवेछे चेतनानी अवितथाके० साचीदशा चार छे तेदेखाडेछे १ बहुशयनके०घोरनिद्रारूपतेपहेली २ शयनके०चक्षुमिचवारूपबीजी ३ जागरणके०कांइक जागवारूपत्रीजी ४ चोथीतथाके०पूर्वेकही तेमज एटले बहुजाग-रणरूप इतिनावः हवेएचारअवस्थानेगुणठाणे फलावेछे आदिगुणठाणेएपद सर्वत्रजो-डियें एटले बहुशयननी आदि मिछके०मिथ्यात्वगुणठाणो अनेबीजीशयनअवस्थानी आदि तेअविरतिसम्यक्दृष्टीगुणठाणो तथात्रीजी जागरणअवस्थानी आदि तेसुय-तके०अप्रमत्तसातमो गुणठाणो ४ बहुजागरणअवस्थानीआदि तेसंयोगीकेवलीनामा तेरमोगुणठाणोछे तेहनीके०तेअवस्थाना आदिगुणठाणते प्रथम धुरगुणठाणा एरीते जोडजो एटले एअर्थ जेबहुशयनदशाते १–२–३ गुणठाणे कहेवी अने शयनदशाते ४–५–६ एत्रण गुणठाणेकहेवी अने जागरणदशाते ७–८–९–१०–११–१२ एछ गु-णठाणेकहेवी अने बहुजागरणते १३–१४ एबे गुणठाणे कहेवी एरीते अमने सुज्यो तेवोअर्थलख्यो वलीजे बहुश्रुतहोय तेणे नय चक्रग्रंथजोयी यथार्थकरवुं स्तवनकर्तायें तो नयचक्रमांमुणीके०नयचक्रमांगुणठाणानीआदिजाणीएमकह्युं तेनयचक्रग्रंथहमणां अमारीपासेनथी माटे विचारजो ॥ २ ॥

भावसंयोगजाकर्मउदयागता ॥ करमनविजीवन
विमूलतेनविछता ॥ खडीयथीभितिमांजेमहोएश्वे
तता ॥ भीतिनवीखमीयनवीतेह्भ्रमसंगता ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ भावपदार्थजे संयोगसंबंधथीउपना कर्मनेउदयेआव्यातेभाव कर्मनथी जीवनथी मूलथी तेछतापणेनथी जेम भीतिके०भींतमांहे खडीयके० खमीथी श्वेतताके०धवलताथायछे तो तेधवलतामां भींतनथी अनेखडीपणनथी अन्योन्ये भिन्नछे पण भ्रमेकरी संगति ऐक्यतामलतिथायछे ॥ ३ ॥ आगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाऊपरथी लख्योछे ॥ ३ ॥

देहनविवचननविजीवनविचित्तछे ॥ कर्मनविरा
गनविद्वेष न विचित्तछे ॥ पुद्गलिभावपुद्गलपणेप
रिणमें ॥ द्रव्यनदिजूउंजूउएकतोदेकिमे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ देहके०शरीरनथी ऐक्यतापणे वचनकायिकवाचिकयोगनथी जीवनथी चित्तनथी कर्मनथी रागनथी द्वेषनथी विचित्तछेके०विचित्रताअनेकजातिछे एसर्व पुद्गलिकभावछे तेपुद्गलपणेपरिणमे केमके पुद्गलनुं अनेकप्रकारे परिणमनधर्मछे पूरणगलणधर्माणः पुद्गलनुंएलक्षणछे तेमाटे जीवादिकजेद्रव्यछे तेसर्वेथकीजूदोजूदो छे तेएककेमहोयनही उपचारेएककहियें ॥ ४ ॥ आगाथानोअर्थ ज्ञानवि० टबाथी लख्योछे॥

पंथीजनलुंटतांचोरनेजेमभणे ॥ वाटेंकोलुंटि
येंतेमजमूढोगिणे ॥ एकक्षेत्रेमल्याअणुतणी
देखतो ॥ विकृतिएजीवनीप्रकृतिउवेषतो ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम पंथीलोकने लुंटतांथकां चोरने कोके०कोइक पुरुषएमकहे जे वाटेलुंटेछे पणतेचोर वाटनेलुंटतानथीपण वाटेंके०वाटजे मार्गतेने विषेरह्याजेलोक तेलुंटायछे पण लक्षणे एमकहेछेजे वाटलुंटी तेमज मूढोके०मूर्खतेशरीर आत्माप्रमुखने एककरी गणेछे शामाटेजे एकक्षेत्रेमल्याके०जेक्षेत्रे आत्मा तेजआकाशप्रदेशेमल्या परस्परसंबंध थयो एवाजे अणुतणीके०परमाणुनी विकृतिके०विकारने देखतोके०देखीने मूर्ख एम गणेछे अने जीवनीप्रकृतिजेस्वभाव तेने उवेषतोके०लेखामां अणगणतो थको जीवते शरीरादिकने एकपणेगणेछे पणएम जाणतोनथीजे पुद्गलतेजरूछे अचेतनछे अनेआत्मातो ज्ञानस्वरूपीछे तेएक केमथायइतिभावः ॥ ५ ॥

देहकर्मादिसविकाजपुद्गलतणां ॥ जीवनातेव्यव
हारमानेघणां ॥ सयलगुणठाणजीअठाणसंयोग
थी ॥ शुद्धपरिणामविणजीवकारयनथी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे देहके०शरीर तथा ज्ञानावरणादिकर्म अने आदिशब्दथी घरबार प्रमुख एसर्व पुद्गलनांकार्यछे पुद्गलथी नीपनांछे तेपुद्गलनांकार्यने जीवनांकार्यकहीबोलावेछे तेव्यवहारमानेघणांके०तेव्यवहारनयथी जीवनांकार्यकहियें पणनिश्चयनये तो सर्व पुद्गलस्वरूपछे सयलगुणठाणके०समस्तमिथ्यात्वादिकगुणस्थानक तथा जीअठाणके०समस्तएकेंद्रियादिकजीवस्थानक इत्यादिक सर्वप्रकारते संयोगथीके०पुद्गलकर्मादिकना संयोगथीजाणवा पणएआत्मस्वरूपनही केमके शुद्धपरिणामके०समस्त उपाधिरहित जेनाप्रदेशनेविषे एक अणुमात्रपण भेलनथी एवुंजे शुद्धस्वरूप तेविना जीवकारयनथीके०जीवरूपकार्यनथी ॥ ६ ॥

नाणदंसणचरणशुद्धपरिणामजे ॥ तंतजोतानछे
जीवथीभिन्नते ॥ रत्नजेमज्योतिथीकाजकारण
पणे ॥ रहितएमएकतासहजनाणीभणे ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानदर्शन तथा चारित्र इत्यादिक अनंतजे शुद्धआत्मानापरिणाम छे ते तंतके०नियतपणाथीजोइयेंतो कांइजीवथकी भिन्ननथी केमके ज्ञानादिक गुण जो भिन्नहोय तो आत्मानिर्गुणजरूपणे मानवोजोइयें तेतो नथी माटेजीवथी ज्ञानादिक गुणभिन्ननथी जेम स्फाटिकरत्नप्रमुख पोतानी ज्योतिथी भिन्ननथी शामाटे जे काजकारणपणे कहेतां कांइपूरवनुंनथी केमके जो रत्नथीज्योतिथयी एमकहियें तो ज्योति विना रत्नहतुंजनही माटेरत्नथी ज्योतिथयी एम कहेवायनही तथा ज्योतिथी रत्नथयुंएमपण नकहेवाय केमके रत्नविनाज्योतिपण किहांहती तेमाटे कार्य कारणपणेरहितछे एमके०एरीते आत्मा तथाआत्मगुण ते भिन्ननथी सहजस्वभावेजअभेदछे ऐक्यताछे एवात नाणीभणेके०जेज्ञानीहोयतेजाणे पणमूर्ख समजेनही ॥ ७ ॥

अंशपणनविघटेपूरणद्रव्यना ॥ द्रव्यपणकेमकहुं
द्रव्यनागुणविना ॥ अकलनेअलखएमजीवअति
तंतथी ॥ प्रथमअंगेवदिउअपदनेपदनथी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ संपूर्णद्रव्यना जेअंश कहेवा तेपणयुक्तनथी केमके जेवारेंअंशकहीयेतेवारें द्रव्यपणशानुं एगंनिच्चंनिरवयवं॥अक्रियंसवगंचसामन्नं॥इतिमहाभाष्यवचनात् जेद्रव्य

ते सामान्यबे अने जेसामान्यते निरवयवबे तथा द्रव्यपणकेम कहुं द्रव्यनागुणविना के०द्रव्यसंबंधी जेगुणतेविना द्रव्यपण केमकहेवाय कारणके गुणाणमासउंदव्वंश्त्युत्तरा ध्ययने २८ मे अध्ययने द्रव्यलक्षणंतथागुणपर्यायवद्द्रव्यं इतितत्वार्थवचनात् तथा पयार्यनयवालानीयुक्तियेंतो द्रव्यबेजनही परमार्थे पर्यायजस्वतंत्रबे यथाउत्फणवि- फण कुंमलितादि अवस्थाथी जिन्न सर्पद्रव्यते शीवस्तुबे जोद्रव्य बेरेतो उत्फण- विफणादिक द्रव्यनाकहेवाय तेमाटे द्रव्यनथीतो द्रव्यना गुण क्यांथी होय जेम गाम नहोय तोतेगामनी सीमक्यांथी इत्यादिवत् महाजाष्यमांजोजो एटले एजा वजे अंशपण नकहुं अनेद्रव्यपण नकहेवाय युक्तियेंतोएम आव्युं अने आगममांतो अंशसहित पणद्रव्यकहिये एमबे गुणपर्यायवत्द्रव्यं एवचन सुचवेबे ते माटे अ- कलके०कल्योनजाय अनेअलखके०लख्योनजाय एरीतनो जीवके०आत्मा ते अतितं- तथीके०अत्यंतपणे निश्चयथकीजाणवो एटले कांइकहेवायनही यतः वरकातरएसवे ॥ सराणीयहंतितक्काजत्तनविज्जाति ॥ मतितत्नगहेयाउएअपइठाणस्ससेयन्ने सेणदीहेण- हस्सेनवट्टेनतंसेनचउरंसेनपरिमंफलेनकिन्हेननीलेनलोहिएनहालिद्देनसुकिल्लेनसुरजि गंधे नडुरजिगंधे नतित्ते नकमुवे नकसाये नआंबिले नमहुरे नकरकडे नमउए नगु- रुए नलहुए नसीए नउन्हे ननिन्द्धे नलुरके नकाउ नरूहें नसंग नइत्थी नपुरिसे नअन्नहा परिन्ने सन्नेउवमानिविज्जाये अरूवीसत्ताअपयस्सपयंनत्थि ॥ इत्यादिकआ- चारांगपंचमाध्ययने उद्देशेबठेकह्युंबे तेमांहेलाविषमपदोनो अर्थकरियेंबेयें वरकातके० मोक्षतेनेविषे रएके०राता सव्वसराके०तेमोक्षस्वरूपकेवुंबे तेकहेबे सर्वेस्वर निवृत्याबे एटले कोइशब्देंवाच्यनथी तक्काके० विचारजे आमहशे केआमहशे ते कहेवाय नही मतिजे उत्पातकीप्रमुख तेनो ग्राहजेनेविषेनथी तेपण उएके० एकलुं बे पणकर्मकलं- कसहित नथी अपइठाणस्सके०उदारिकादिकशरीरनुंप्रतिष्ठाननथी तथाखेअन्नेके० लोकालोकनुंज्ञायकबे तथा नकाउके०कायनथी नरूहेके०संसारमांउगवुंनथी अन्नहा के०नपुंसकनथी परिन्नेके०समस्तप्रकारेजाणबे सन्नेके०सम्यक्जाणेबे तथा अपयस्सप- यंनत्थिके०अवस्थाविशेषजे पदतेनथी जेने तेअपदकहिये एटले अपदते सिद्धनेपद के०जेअजिधानतेनथी एटले सिद्धनेकोइनामेंकहीबोलावीयें तेनथीइतिजावः ॥ ८ ॥

शुद्धताध्यानएमनिश्चयेंआपनुं ॥ तुऊसमापत्ति
उषधसकलपापनुं ॥ द्रव्यअनुयोगसंमतिप्रमु
खथीलही ॥ जक्तिवैराग्यनेज्ञानधरियेंसही ॥९॥

अर्थ ॥ शुद्धताके०शुद्धस्वरूपनुंजे ध्यानतेहिजपोतानुंनिश्चयरूपेंजाणवुं माटे हेप्रजु

सर्वपापनुंसमापत्तिऔषध सर्वदोषनाशनरसायन ते एकहिजछे जे शुद्धउपयोगलक्षणते अने षटद्रव्यनीविचारणारूप अनुयोग संमतिमहातर्कादिग्रंथथकीजाणीने साहिब-नीविधिसेवापूर्वक निराशंसतारूपजक्ति वैरागके०विषयविमुखता ज्ञानते शुद्धउपयोग निश्चयथकीएहीजचित्तमांधरियें कार्यसाधकताएहिजछे एटले जक्तिदशा वैराग्यदशा ज्ञानदशा एत्रणकार्यसाधकताछे तिहांचोथोगुणठाणोजक्तिमुख्ये पांचमो छठोगुणठाणो वैराग्यदशामुख्ये क्षीणमोहादिकगुणठाणो ज्ञानदशामुख्ये इत्यादिद्रव्यजावेंसर्वजाणवी मुख्यता गुणतायें एकेंत्रणेएकइत्यादिव्यक्तता ग्रंथांतरथीजाणवी ॥ ९ ॥ आ-गाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाउपरथीलख्योछे.

जेहअहंकारममकारनुंबंधनं ॥ शुद्धनयतेदहेदहनजेमइंधनं ॥ शुद्धन
यदीपिकामुक्तिमारगजणी ॥ शुद्धनयआथिछेसाधुनेआपणी ॥१०॥

अर्थ ॥ जेअहंकारके०मान ममकारके०ममत्व तेनुं बंधनंके०कारण एटलेअहंकार तथा ममकारनुंमूलरागद्वेषछे तेरागद्वेषथी अहंकार तथा ममकारहोय तेरागद्वेषने दहनजेमइंधनंके०जेमअग्नि लाकडांने बालीनाखे तेनीपेठें शुद्धनयके०आत्मतत्वचिंत-नरूपध्यानते दहेके०बाले एटले शुद्धध्यानथी रागद्वेषबली जस्मथाय शुद्धनयके० निश्चयनयतेमोक्षमार्गेनोदीवोछे केमके मोक्षमार्गेगमनकरतां अजवालुंकरे माटेजे शुद्ध नयतेज साधुने आपणीके०पोतानी आथिके०संपत्तिछे यतः दीपिकाखलुनिर्वाणेनिर्वाण-पथदर्शिनि ॥ शुद्धात्मचेतनायाच साधूनामक्षयोनिधिः ॥ १ ॥ इतियोगनिर्णये ॥ १० ॥

सकलगणिपिटकनंसारजेणेलह्युं ॥ तेहनेपणपर
मसारएहजकह्युं ॥ उंघनिर्युक्तिमांएहविणनवि
मिटे ॥ दुःखसविवचनएप्रथमअंगेंघटे ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ गणिके०आचार्य तेनासकलके०समग्रगुणरूपरत्ननी पिटकके०पेटीएटले द्वा-दशांगीरूपजेगणिनीपेटी तेनो सारके०प्राधान्यपणुं तेजेणे लह्युंके०जाण्युंछे एहवा समस्त द्वादशांगीनाजाणने पण परमसारके०प्रधानरहस्यपरमसारतेएजशुद्धनयपरि-णमनरूपकह्युंछे एद्वादशांगीना जाणनेपण निश्चयनयज सारकह्युंछे तोबीजानीशीवात एमश्रीउंघनिर्युक्तिमध्येकह्युंछे यतः परमरहस्समिसीणंसम्मत्तगणिपिडगझरियग्गराणं॥ परिणामियंपमाणंनिछयमवलंबमाणाणं ॥ १ ॥ इति तोएहविणके०एनिश्चयनयसमज्या विना दुःखके०पापते नविमिटेके०नटले तथा कोइकप्रतमां एहविणनघटे एमलख्युंछे तेनविघटेके०दुःखउंछुं नथाय माटे बेहुनो जावार्थएकजछे एसर्ववचन प्रथमअंगेघ-

टेके० श्रीआचारांगसूत्रमां घटमानछे शुक्तछे जेएगंजाणइसेसव्वंजाणइ जेसव्वंजाणइ सेएगं जाणइ इत्यादिपाठात् ॥ ११ ॥

शुद्धनयध्यानतेहनेसदापरिणमें॥ जेहनेशुद्धव्यव
हारहीयडेरमे ॥ मलिनवस्त्रेयथारागकुंकुमतणो ॥
हीनव्यवहारचित्तएहथीनविगुणो ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एटलीवार शुद्धनयनीमुख्यतायेंवातकही हवेकोइक एमसांजलीनेएकांतनिश्चयनयजअंगीकारकरे अनेव्यवहारनय लेखामांगणेजनही तेने शिक्षाकरेछे जे पूर्वोक्तप्रकारें शुद्धनयनुंजे ध्यान तेतो तेप्राणीनेसदानिरंतरपरिणमे जेप्राणीनेशुद्धव्यवहारसंयमानुष्ठानप्रवृत्तिरूप हीयडेरमेके०हृदयनेविषेरमे तेनाऊपरदृष्टांत कहेछे जेम मेलांवस्त्रनेविषे कंकुनोअथवा केसरनोरंग नलागे तेमज हीणाव्यवहारवंतनाचित्तने नविगुणोके०गुणनहोय एटले व्यवहारविनानिश्चयपरिणमेनही ॥ १२ ॥

जेहव्यवहारसेढीप्रथमछंडता ॥ एकएआदरे
आपमतमांडतां ॥ तासऊतावलेनविटलेआ
पदा ॥ क्षुधितइछायेंऊंबरनपाचेकदा ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी व्यवहारश्रेणीरूपजेअनुक्रम तेतोप्रथमछांडेछे तथा एकएआदरे के०एकलोएनिश्चय नयज आदरेछे आपमतमांडतांके०पोतानुं मतदृढकरतां एक अवस्थितिऊपर दृढथयाछे पणउद्यम करतानथी तोतेनीउतावले आपदाटलेनही एटले एकलोनिश्चय पोकारवाथी संसारपरिभ्रमणरूप आपदा टलेनही जेमक्षुधितके०नूख्यानीइछायें ऊंबरनाफलकदापि नपाके एटले ऊंबरफल ते जलसेकादिकक्रियायेपाके पणइछामात्रेंनपाकेइतिनावः ॥ १३ ॥

नावलवजेहव्यवहारगुणथीनले ॥ शुद्धनयना
वनातेहथीनविचले ॥ शुद्धव्यवहारगुरुयोगपरिण
तपणुं ॥ तेहविणशुद्धनयमांनहितेघणुं ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ नावके०रुडाअध्यवसायनो लवके०अंशतेपण व्यवहारपडिनालिकारूप गुणथी नलतोहोय एटले व्यवहारसहितहोय तो शुद्धनयनावनाके०शुनअध्यवसायनीजेनावना घोलना तेतेप्राणीथी नविचलेके०खसेनही एटले शुद्धनयनीनावना तेतो तेवारे स्थिरथायके जो व्यवहारयुक्तहोयतो; अन्यथा हणतोलो हणमासोथाय ते-

शुद्धव्यवहारतो गुरुयोगके०गुरुनासंयोगे एटले गुरुकुलवासें निर्मलव्यवहारथाय तेशुद्ध-व्यवहारथी परिणतपणुंके०परिपक्वपणुंहोय एटले शुद्धनयमां परिपक्व तोजेशुद्धव्यवहार-वंतहोय तेहजथाय अन्यथाशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयठेरीशकेनही अने तेहविणके०ते गुरुयोगशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयमांके०अध्यात्ममां नहीते घणुंके० तेजे परिणतपणुं ते घणुं न होय एटले गुरुकुलवासे शुद्धव्यवहार अनेशुद्धव्यवहारेपरिपक्वपणुं निश्चयमां नि-श्चलपणुंहोयइति एटले जोगुरुयोगव्यवहारशुद्धहोयतो शुद्धनयमांपरिपक्वताहोय ॥१४॥

केइनविभेदजाणेअपरिणतमती ॥ शुद्धनयअति
हिगंभीरछेतेवती ॥ भेदलवजाणतांकेइमारगतजे ॥
होयअतिपरिणतीपरसमयस्थितिभजे ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एरीते केटलाकप्राणी अपरिणतमतीके०अपरिणामीतेने नविभेदजाणे के० अनेकप्रकारनी खबरनपडे इहां भेदते अपवाद उत्सर्ग निश्चयव्यवहारप्रमुख जाणवा तेनजाणे अपरिणतमतीशब्दे व्यवहारनयवालालीजियें तेकेमनजाणे जे शुद्धनयअति-हिगंभीरछेके०उपलानयतेअत्यंतगंभीरछे एटले एभावजे आगला १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनय यद्यपि अपरिणतमतीजाणे पणनिश्चयनय तो अतिगंभीर उपयो-गरूपनयमांखबरनपडे इति भाव एटलेजे व्यवहारनय एकलोमाने तेनेउपकोदीधो हवे एकलोनिश्चयनय मानेतेने उपकोदेछे केटलाकप्राणी भेदलवजाणतांके०भेदनो अं-शमात्रजाणतांमार्गने तजेके०छांडीदे एटले अंशमात्र कांइकशिख्युंसांभल्युंछे तेव-चनजाणे तेथी महा अहंकारधरता एमजाणेजे निश्चयस्वरूपनी वातो आपणे जाणिये छैये एवी बीजोकोणजाणेछे अने आपणे आतमस्वरूपजाणयुं एटले क्रियानुं शुंकामछे क्रियातो ज्ञाननीदासीछे इत्यादिकवचन बोलीक्रियानकरे अनेमार्ग छांडे एवीरीते जे अतिपरिणामिथाय तेशुंकरे तेकहेछे जे समय जेसिद्धांत तेनी परके०उत्कृष्टस्थिति तेमर्यादा तेनेभजे एटले सिद्धांतमां उत्कृष्टी स्थिति जेनिश्चयनीवातोकरवी तेभजेके० करे अथवा परसमयस्थितिभजेके०अन्यदर्शननीस्थितिभजे एटले एकांतनिश्चयनय-वादी दिगंबरादिक तेपरदर्शनीकहियें तेवारेपणपरदर्शनिनीस्थितिभजी इतिभावः ॥१५॥

तेहकारणथकीसर्वनयनविकह्या ॥ कालिकश्रुतमां
हेंतीनप्रायेंलह्या ॥ देखीआवश्यकेंशुद्धनयधुरें
भणी ॥ जाणियेंउलटीरीतिबोटिकतणी ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेकारणथकी निश्चयपरिणामी तेएकली परिणामनी वातोकरीने मार्ग उपा-डीनाखशे एवुंजाणीने १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समभि-रूढ ७ एवंभूत ए सर्वनयनथीकह्या किहां नथीकह्यातेकहेछे कालिकश्रुतमांहेंके०आ-

चारांगादिक कालिकश्रुतनेविषे तीनप्रायेंलह्याके०बहुलतायें १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनयलह्याछे एवात ग्रंथकार शिष्यनेकहेछे जेदेखी आवश्यकेके०आवश्यकनिर्युक्तिमां देखजो एटलेकालिकश्रुतमां प्रायेत्रणनयकह्याछे एम आवश्यकनिर्युक्तिमां कह्युंछे यतः एएहिं दिठिवाए ॥ परुवणासुत्तअच्छकहणाय॥ इहपुणअणब्भुवगमो॥ अहिगारोती हिंउसन्नं॥१॥पायसंववहारं॥ तेहिंतेहिंउजलोएतेणं॥परिकम्मणउंकालिय ॥सुत्तेतदहिगारो ॥२॥ इत्यावश्यके एरीततोश्वेतांबरपक्षेछे जे पूर्वेंव्यवहार समजावीने पछे निश्चयनीवात समजावेइति तथाहवेदिगंबरनीप्रक्रिया दूखवेछे जेशुद्धनयधूरेंके०निश्चयनयधूरेछे तेमाटे बोटिकके०दिगंबरनीरीती तेउलटीके०विपरीत जाणीये जेमाटे पहेलांथी निश्चयनय समजावे एटले व्यवहारमां दृष्टिठरेजनही माटे विपरीतकहिइतिजावः॥१६॥

शुद्धव्यवहारछेगछकिरियाथिति ॥ डुप्पसहजाव
तीरथकह्युंछेनीति ॥ तेहसंविज्ञगीतार्थथीसंज्ञ
वे ॥ अवरएरंडसमकोणजगलेखवे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे व्यवहार तेप्रधानछे तेशुद्धव्यवहारतो सुविहितगछजे साधुसमुदाय तेनी क्रियानी जेस्थिति तेमांछे एटले शुद्धव्यवहारते सुविहितगछमां होय डुःप्रसहनामा आचार्यजेपांचमाआराने छेडेथशे जावके०तिहांलगें नीतिके०निरंतर तीर्थकह्युंछे यतः इयसवोदययुगपवरा॥सूरिणोचरणसंजुएवंदे ॥ चउरुत्तरडुसहस्स ॥डुप्पसहतेसुहम्माइ ॥ इतिडुसमसंघस्तोत्रे तथा वासाणवीससहसा॥नवसयतिमासपंचदिणपहरा ॥ इक्कायडियादोपल ॥अक्करइगुआलजिणधम्मो॥ इतिदीपालीकल्पे ॥ तेतीर्थतो गीतारथसंविज्ञहोयतेथीज संज्ञवे एटले नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिजाष्यवचनात् एटलेज्ञानक्रियाथी मोक्ष तेज्ञानक्रिया तोगुणछे अने जेगुणछे तेगुणीथी अन्नेदरूपछे तेमाटेसंविज्ञशब्दे क्रियावंतश्राव्या अने गीतार्थशब्दे ज्ञानवंतश्राव्या तेसंविज्ञ गीतार्थथीजे बीजा तेएरंडासरिखाजाणवा तेने जगतनेविषे कोणलेखामांगणेछे ॥ १७ ॥

शास्त्रअनुसारजेनविहछेताणियें ॥ नीतितपगछनी
तेन्नलीजाणियें ॥ जीतदाखेजिहांसमयसारू
बुधा ॥ नामनेठामकुमतेनहीजसमुधा ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेसंविज्ञगीतार्थ परमार्थेतोतेने कहियेजे शास्त्रने अनुसारें हठेंताणेनही शास्त्रना अक्षरदेखे एटले पोतानोकदाग्रहमूकीआपे एवीरीती तोतपगछनी जलीके० घणीउत्तमछे एटले तपगछमां पंचांगीप्रकरणादिकजे सुविहितना कस्याग्रंथ तेसर्वप्रमाणछे एमजाणियें इतिज्ञावः जिहांके० जेतपगछनेविषे बुधाके० पंडितलोक तेसमय-

सारूकेॱसिद्धांतप्रमाणे जीतदाखेकेॱवर्त्तमानकालनोजीतदेखाडेछे जेतपगछनां नाम अने ठामकेॱस्थानक तेकुमतेकेॱकदाग्रहे मुधाकेॱफोकट जसकेॱजेना नही केॱनथी एटले एतपगछनांजेनामठामतेसर्वगुणनिष्पन्नछे ॥ १८ ॥

नामनिर्ग्रंथछेप्रथमएहनुंकह्युं ॥ प्रथमअडपाट
लगेंगुरुगुणेसंग्रह्युं ॥ मंत्रकोटीजपीनवमपाटेय
दा ॥ तेहकारणथयुंनामकोटिकतदा ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवे तपगछनां नामधुरथकी अनुक्रमे निष्पन्नछे तेकहेछे प्रथमश्रीसुधर्मा स्वामीथी निर्ग्रंथएहवुं नामप्रथमकह्युं तेप्रथमना आठपाटलगें गुरुगुणेकेॱमोहोटेगुणे निःस्पृहतारूपगुणेकरी संग्रह्युंकेॱग्रह्युंछे पछे नवमेपाटे सुस्थित सुप्रतिबद्धआचार्यें कोटीवार सूरिमंत्रजपीनेरह्याबीजाआचार्यंते चारलाख तथा सवालाखमंत्रजपे एटलेसूरिमंत्रपुरोथयो अने एबेआचार्यें कोटीवारजप्यो तेकारणकेॱतेहेतुये तेवारे कोटीकनाम कहेवाणुं एटलेएनामपणगुणनिष्पन्नछेपणकोइमतकदाग्रहेनथी ॥ १९ ॥

पंनरमेपाटेंश्रीचंद्रसूरेंकर्युं ॥ चंद्रगछनामनिर्म
लपणेंविस्तर्युं ॥ सोलमेपाटवनवासनिर्मम
मति ॥ नामवनवासीसामंतभद्रोयति ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेकोटिकगछ चउदपाटलगेंचाल्युं तेवारपछ पंनरमेपाटेंश्रीवज्रसेनाचार्यना शिष्य चारथया तेलक्षमूलनी हांडी व्यवहारीयाने घरेचडी तेवारेबीजे दीनेसुकालथशे एमकही जीवाड्या तेव्यवहारीये तथा तेना चारपुत्रे उपकारजाणी चारित्र लीधुं तेचार शिष्यनांनाम १ नागेंद्र २ चंद्र ३ विद्याधर ४ निवृत्ति एचार थया तेचारे आचार्यपदपाम्या तेमां चंद्रनामाआचार्यपन्नरमे पाटेथया तेहथी त्रीजोचंद्रगछ एवुंनाम निर्मलपणे विस्तार पाम्युं तेपण गुणनिष्पन्नथयुं पण मतकदाग्रहे थयुंनथी पछेसोलमेपाटे वनमां वस्या ममत्वरहित जेनीमतिहति एवाआचार्यथया माटे वनवासीनाम चोथुकहेवाणुं तेआचार्यनुंनामसामंतभद्र यतिकेॱजितेंद्रियहतुं ॥ २० ॥

पाटछत्रीशमेसर्वदेवाभिधा ॥ सूरिवडगछतिहां
नामश्रवणेसुधा ॥ वडतलेंसूरिपदआपीउंतेव
ती ॥ वलीयतसबहुगुणेजेहवाध्यायती ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तथा छत्रीशमे पाटेसर्वदेवाभिधनामेसूरियकी वडनाझाडतलें सूरिपद आप्युं माटे वडगछ बिरुदथयुं तेश्रवणनेविषे सुधाकेॱअमृतसमान जाणवुं एटले वडनाझाडहेठें आचार्यपदआप्युं माटे वडगछ अने वलीते आचार्यने गुणवंतयतिनो समुदाय

बहुवृद्धिपाम्यो एटले साधुनोसमुदाय तेवडनीपेठेविस्तारपाम्यो तेथीवडगछ कहेवाणो एनाम पणगुणनिष्पन्नछे तेमाटेवडगछनामथयुं ॥ २१ ॥

सूरिजगचंदजगसमरसचंद्रमा ॥ जेहगुरुपाटेचउअ
धिकचालीसमां ॥ तेहपाम्युंतपानामबहुतपकरी ॥
प्रगटआघाटपुरीविजयकमलावरी ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ पछे जगतचंद्रसूरिजे जगतनेविषे उपशमरसेकरी चंद्रमासरिखाथया एटले चंद्रमाअमृतरसेनर्यो तेमआचार्य ते समतारसेनरेला मोटापाटनाधणी चउअधिक चालीसमांके०चुम्मालीसमेपाटेथया तेणे श्रीआंबिलवर्द्धमानादिकबहु तप करीने प्रगटपणें आघाटके०उदयापुरनेविषे राणोजी हस्तीउपर चडीआवताहता तेवारें श्रीजगचंद्रसूरि वर्द्धमानतपलागटकरता दुर्बल शरीरनाधणी सन्मुखआवताहता त्यारे राणें प्रधानने पूछ्युंजे एकोण आवेछे प्रधानेकह्युं हेमहाराज घणामोहोटा तपनाकरनार आचार्यआवेछे त्यारे राणोजी हस्तिउपरथी हेठाउतरी नमस्कारकरीने महातपा एवुंबिरुददीधुं त्यारे प्रधानेकह्युं महाराज महापद काढीनाखो नहीतरलोक महातपाने ठेकाणेमहात्माकहेशे तेमाटे महापद मकहो तेसांजली राणाजीयें तपानामदीधुं एपण गुणनिष्पन्न उहुंनामथयुं पणतपाएवुंनामकदाग्रहथीथयुंनथी तथा विजयकमलावरीके०राणाजीनी सनामां चोरयासी वादीयोने जीतीने जयलक्ष्मीवर्या त्यारे राणे हीरलाजगचंद्रसूरिकहीबोलाव्या ॥ २२ ॥

एहषटनामगुणठामतपगणतणा ॥ शुद्धसदहणगु
णरयणएहमांघणा ॥ एहअनुगतपरंपरनणीसेव
ता ॥ ज्ञानयोगिविबुधप्रगटजगदेवता ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ एषटनामके०एपूर्वोक्तछनाम तेकेवांछे जे गुणनां स्थानकछे ते तप गणतणाके०तपगछना जाणवा शुद्धसदहणाके०शुद्धश्रद्धावंत गुणरयणके०गुणरूपरत्न तेए तपगछमां घणाछे एटले श्रद्धावंत गुणवंतघणाछे एअनुगतपरंपरके०स्वतंत्रपरंपरा आवी एटले जेनीपरंपरामां त्रुटपडीनथी तेनुंनाम अनुगतपरंपराकहियें तेनणीके०तेमाटे सेवताके०सेवाकरता एवाकोणछे जे ज्ञानयोगिविबुधके०ज्ञानसंयोगवंतापंडित अनुगतपरंपरानीसेवाकरेछे इतियोगः प्रगटजगदेवताके०ए जगतनेविषे प्रगटपणे देवताजछे एटलेपंडितलोकशुद्धपरंपरानीजसेवाकरे ॥ २३ ॥

कोइकहेमुक्तिछेवीणतांचीअरां ॥ कोइकहेसहजजमतांघरदहिथरां ॥
मूढएदोयतसन्नेदजाणेनही ॥ ज्ञानयोगेंक्रियासाधतांतेसही ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवे सर्वअधिकारकहीने बेऊ निश्चयतथा व्यवहारनयफलाववातेफलावे छे कोइकव्यवहारनयवादिकहेछे जेविणतांचिथरांकेपडिलेहणा पडिक्कमणादिक तथा फाटांतुटांवस्त्रादिकपहेरतां इत्यादिक कष्टकरतां मुक्तिछेकेमुक्तिपामियें तथा कोइ-कनिश्चयवादीएमकहेछे जे सेहेजरीतेघरनेविषे दहिंथरांजमतां उपलक्षणथी घवरमो-दकप्रमुखलेवा एटले निश्चयनयवालाकहेछे जेकष्टकरेशुंथाय खुबखावुंपीवुं पण तत्व-ज्ञानथयु एटलेसिद्धिजाणवी एवीजूदीजूदीरीतना बोलनाराते बेहु मूढकेमूर्खछे ए-टले तेमोक्षसाधवानो नेदकेप्रकारजाणतानथी केमके ज्ञानने संयोगेक्रियासाधतां सहीकेतेमुक्तिसत्यछे यतः नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिनाष्यवचनात् तथा हयंनाणंकि-याहिणं ॥ हयाअन्नाणउक्रिया ॥ पासंतोपंगुलोदड्ढो ॥धावमाणोअअंधउ ॥१॥ एवंसव्वे-विनया ॥मिच्छदिठ्ठिसपक्खपडिबद्धा ॥ अन्नोन्ननिस्सियाऊण ॥हवंतिते चेवसम्मत्तं॥२॥ इत्यादिक आवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥ २४ ॥

सरलनावेंप्रनोशुद्धएमजाणतां ॥ हुंलहुंसुजशतुझ
वचनमनआणतां ॥ पूर्वसुविहिततणाग्रंथजाणीकरी ॥
मुझहोजोतुझकृपानवपयोनिधितरी ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ माटेहे प्रनो एमकेएरीते सरलस्वनावें करीबेहुनयेसिद्धिछे एरीतेजाणतां पणकपटेनही जेकहे एक अने चित्तमां बीजुंहोय एम कपटसहित नही तथा तुझ-वचन मनआणतांकेपूर्वें ज्ञानक्रियान्यांमोक्षः एमजाणतां तथा मनआणतांकेप्रति-तकरतां थकां सुजशकेनलोजे जशतेहुंपामुं एटले मुनिराजप्रमुख सुविहितलोक न-लोजशबोले एवीस्याद्वाददृष्टि केमथयीतेकहेछे जे पूर्वसुविहिततणा केपूर्वाचार्य श्री-हरिनद्रसूरि तथाधर्मदासगणी नाष्यकारजी उमास्वातिवाचकप्रमुखना जेग्रंथते जा-णीकरीने सम्यक्ज्ञानेकरी स्याद्वाददृष्टिथयी तेएवीदृष्टितो प्रनुकृपाथी थाय तेमाटेप्र-नुपासे प्रार्थनाकरेछें जेनवपयोनिधिकेजेसंसारसमुद्र तेनेविषे तुझकृपाकेतमारीदया तद्रूप तरीकेजहाज तेमुझहोजोकेमारेथाजो एटलेसंसारसमुद्रमां तमारी कृपारूप-जहाज मारेथाजो एसोलमीढालनेअंतेस्याद्वाददृष्टिनी सिद्धिकही एवीदृष्टि पोतानी थयी तेथीउपनोजेहर्ष तेहर्षेंकरीसतरमीढालमां बोलेछे ॥ २५ ॥

॥ ढाल सतरमी ॥

॥ कडखानीदेशी ॥

आजजिनराजमुजकाजसिद्धांसवे ॥ वीनतीमाह
रीचित्तधारी ॥ मार्गजोमेंलह्योतुझकृपारसथकी ॥
तोहुइसंपदाप्रगटसारी ॥ आज० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे जिनराज आजके० जेदिवसें स्याद्वादद्दष्टियें उंलखाणथयुं तेदिवसें कवीश्वरनुं वर्त्तमानछे तेमाटेआजकहियें तेआजे मारां जेकार्यतेसर्वेसिद्धथयां शामाटे जेमारीवीनती चित्तमांपरमेश्वरेधारी यद्यपि परमेश्वरतो वीतरागछे कोइनी वीनती चित्तमांधरतानथी तोपण परमेश्वरनीभक्तिजनितकार्य भक्तलोकने थयुं माटेकारणे कार्योपचारकरीनेकहेछेके जोतुझकृपारूपरसथकी मेंमार्गलह्योके०हुंमार्गपाम्यो अने तेमार्गरूप सारीके० मनोहर संपदा माहरेप्रगटथयी ॥ १ ॥

वेगलोमतहुजेदेवमुझमनथकी ॥ कमलनावन
थकीजेमपरागो ॥ चमकपाषाणजेमलोहनेखेंच
से ॥ मुक्तिनेसेहेजतुझभक्तिरागो ॥ आज० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटे मारामनथकी वेगला मतथाजो एटले घटमांरहेजो जेम कमलना वनथकी परागोके० वासना दूररहेतीनथी एटले जेमकमलनीवासना तेकमलना वनमांरहे तेम तमेमाराचित्तमां रहेजो चमकजातीनो कोइपथ्थर विशेष ते जेम लोहने खेंचसेके० जेम लोढानखेंचे एटले एपथ्थरनो एवो सेहेजस्वभावछे जे लोढुं वेगलुंहोय तोपण तिहांथीपोतानी मेले आवीने पथ्थरनेवलगे तेरीते तमाराउपर माहरोजेभक्तिरागछे तेस्वभावेजमुक्तिनेखेंचशे ॥ २ ॥

तुंवसेजोप्रभोहर्षभरहीयडले ॥ तोसकलपापनाबंधत्रूटे ॥ उगते
गगनसूरयतणेमंडले ॥ दहदिशिजेमतिमिरपडलफूटे ॥ आ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हेप्रभो हर्षभर्युं जेमारुंहीयुं तेनेविषे जोतुंवसे तोसमस्तजेभवांतरे पापनाबंधकर्याछे तेत्रुटीजाय तिहांदृष्टांत कहेछे जे गगनके० आकाशनेविषे सूर्यनाविमाननुं मंडल तेउगेथके दहदिशिके० दशेदिशानेविषे जेम तिमिरके० अंधकारनु पडलजे समूहते फूटेके० नाशपामे तद्वत् पापपडल त्रूटे ॥ ३ ॥

सींचजेतुंसदाविपुलकरुणारसें ॥ मुझमनेशुद्धमतिकल्पवेली ॥ नाण
दंसणकुसुमचरणवरमंजरी ॥ मुक्तिफलआपशेतेएकेली ॥ आ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ विपुलकरुणारसेंके० विस्तारवान करुणारूपरसेंकरीने माहारामननेविषे शुद्धमतिरूप कल्पवृक्षनीवेलीते हेस्वामीतुंसिंचजे इतिभावः तेसिंच्यांथकां ज्ञानदर्शनरूपतो फूलआवशे तथा प्रधानचारित्ररूप मंजरीके० मांजरलागशे तेवारपछे मुक्तिरूपफलने आपशे तेएकेलीके० तेशुद्धमतिरूपकल्पवेलडी एकलीआपशे ॥ ४ ॥

लोकसन्नाथकीलोकबहुवाउलो ॥ राउलोदासतेसविउवेखे ॥ एकतु
झआणसुंजेहरातारहे ॥ तेहनेएहनिजमित्रदेखे ॥ आज० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ लोकसंज्ञा जेगाडरियोप्रवाह तेथकी लोकवहुवाळलोके० घणोलोक घेलो थयोछे पणराउलोदासके० राजानोदास एटले तमारोदास एवोजेहुं ते सर्वगाडरिया प्रवाहनेछवेखुंछुं एटले खात्रमां आणतोनथी मात्र एक अद्वितीय तुझआणसुं- जेरातारहेके० तमारी आज्ञाथी जे रंगाणाछे तेने ए मारो आत्मा ते पोतानो मित्र करीजाणेछे एटले तमारीआणाथीजे बाह्यछे तेने छवेखुंछुं पण तमारी आज्ञा- वंतने साधर्मिकसंबंधपणामाटे मित्रकरीजाणुंछुं इतिभावः ॥ ५ ॥

आणजिनभाणतुझएकहुंशिरधरुं ॥ अवरनीवाणीनविकानेसुणियें ॥
सर्वदर्शनतणुंमूलतुझशासनं ॥ तेणतेएकसुविवेकथुणियें ॥ आज० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेजिनके० सामान्यकेवलीमां भाणके० सूर्यसरिखातारी एक अद्वितीय आज्ञाते हुं मस्तकेंधरुं अने अवरके० वीजानीवाणीते कानेसांभलियेंनही एटले वीतरागनी आज्ञा आदरीयें पण अवर जे रागीद्वेषी तेनां वचन काने न धरियें इति भावः सर्वदर्शनके० सम्यक्त केमके सकलनयश्रद्धायें सम्यक्त यदुक्तं महाभाष्ये यावइयावयणपहा ॥ तावइयानयाविस कमया॥ चेवहुंतिनयवाया॥सम्मतंसमुदियासवे ॥ इतिवचनात् तेमाटे समकितनुंमूलते तुझशासनके० तमारी आज्ञाछे अथवा षट- दर्शननुंमूलते तुझशासनछे एटले सर्वदर्शन तेतमाराजदर्शननाअंशछे तेमाटे त- मारी आज्ञातेज एक अद्वितीय भलाविवेकेकरी स्तवियेंछेयें एटले सर्वदर्शननुं मूल छांडी अवरनीस्तवना कोणकरे इतिभावः ॥ ६ ॥

तुझवचनरागसुखसागरेहुंगणुं ॥ सकलसुरमनुजसुखएकबिंदू ॥ सा
रकरजोसदादेवसेवकतणी ॥ तुंसुमतिकमलिनीवनदिणंदू ॥ आज०॥७ ॥

अर्थ ॥ तमारा वचनऊपर जेराग एटले जैनागमनोजेराग तद्रूपजे सुखसमुद्रना समूह तेआगल समस्तदेवता तथासमस्तमनुष्य चक्रवर्त्यादिकनांसुख तेएकबिंदुस- मान हुंगणुंके० हुंमानुंछुं तेमाटे हेदेव सदासर्वदा तमारो हुंसेवकछुं तेनी सारके० संभालकरजो एटले तमारासरिखो करजो तमे सुमतिरूपजे कमलिनी तेनुं जेवन तेनेविषे दिणंदके० सूर्यसरिखाछो एटले सूर्यजेम कमलिनीने विकस्वरकरे तेम सुम- तिरूपकमलिनीने तमे विकस्वरकरो एटले तमाराथी सुमतिआवे इतिभावः ॥ ७ ॥

ज्ञानयोगेंधरीतृप्तिनविलाजियें ॥ गाजियेंएकतुझवचनरागें ॥ शक्तिउ
ल्लासअधिकोहुसेतुझथकी ॥ तुंसदासकलसुखहेतजागें ॥ आज० ॥८॥

अर्थ ॥ ज्ञानयोगमां तृप्तिधरीने एटले ज्ञानमां मग्नरहीने क्रियानुष्ठान करतां

लाजियेंनहीं पण सावधानथयीने एकतमारा वचननेरागेंकरीगाजियें एटले कोइक ज्ञानधादिक्रियानुष्ठान उथापतोहोय तेने आगमवचनेकरी गाजीनेजवाबआपियें ए रीतें प्रवर्त्ततां तुजथकीके० तमारा वचनथकी एटले तमारीआज्ञाथकी शक्तिनोउ ल्लास पणअधिकोथशे पणगलियांथयीने बेशीरहेतां वीर्योल्लासनहिवाधे उलटुंश्रा लसवधसे इतिभावः एवीरीते प्रवर्त्तनकरतां कारणद्वारे कर्त्ताने फलदेखाडेछे तुंसदा सकलके० तमे सदानिरंतर समस्तसुख जेसिद्धिनांसुख तेनो हेतुके० कारणते भागे के० भागतोछे एटले ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः एप्रभुनुं वचनछे तेवचनथकी भव्यप्राणी अजरामरसुखनुं भाजनथाय तेमाटे सिद्धिनोहेतु पणतुंहिजथयो इतिभावः ॥ ८ ॥

वडतपागछनंदनवनेसुरतरु ॥ हीरविजयोजयोसूरिराया ॥ तास
पाटेविजयसेनसूरिसरू ॥ नितनमेनरपतिजासपाया॥आज० ॥ ए ॥

॥ अर्थ ॥ श्रीजगच्चंद्रसूरियें तपाविरुदधराव्युं एमोहोटोतपगछतद्रूप नंदनवनने विषे सुरतरुके० कल्पवृक्षसमान श्रीहीरविजयसूरि जयोके० जयवंतोवर्तो सूरिराया-के० बीजाआचार्यमां राजासरिखाथया तेहनेपाटें श्रीविजयसेनसूरि सर्वआचार्योमां ईश्वरतुल्यथया जेमनांचरणकमलने नरपतिके० पादशाह तेनिरंतर नमस्कारकरताह-ता एटले एभावजेपादशाहजहांगीरे षटदर्शनपरिक्षानेअर्थें सर्वदर्शनीनेतेडाव्या तेमां जैनदर्शनमांहेला श्रीविजयसेनसूरिगयाहता तेमणेसर्वदर्शननोपराजयकस्यो तेवारें पा-दपादशाहेकह्युंजे श्रीहीरविजयतेगुरु अने तमे सवाइ गुरुथया इतिभावः॥ए॥

तासपाटेंविजयदेवसूरिसरू ॥ पाटतसगुरुविजयसिंह-
धोरी ॥ जासहितसीखथीमार्गएअनुसस्यो ॥
जेहथीसविटलीकुमतिचोरी ॥ आज० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीतेनेपाटें श्रीविजयदेवसूरिथया तथा तेमनापाटें श्रीविजयसिंहसूरि तेगछनो भारवेहेवाने वृषभसमानधोरीथया जेमनी हितसीखके० आज्ञापामीने में एसंवेगमार्ग आदस्यो एटलेएभावजे श्रीजशोविजयजीउपाध्यायें पण एउनी आज्ञा पामीने क्रियाउद्धारकस्यो तथा श्रीविजयसिंहसूरिना शिष्य अनेक हता तेमां सत्तर शिष्य सरस्वतीविरुदधारीहता तेसर्वमां मोहोटा शिष्य पंडितश्रीसत्यविजयगणीहता तेमणे श्रीपूज्यनी आज्ञापामी क्रियाउद्धारकीधो तेमाटे एमकह्युंजे मार्ग एअनुसस्योके० एसंवेगमार्गआदस्यो जेआदरवाथकी तीर्थंकरअदत्त गुरुअदत्त इत्यादिक कुमतिकदा ग्रहरूप चोरीटलीगयी एश्रीतपगछना आचार्योनी परंपरा कही ॥१०॥

हीरगुरुशीसअवतंसमोटोहुउं ॥ वाचकांराजकल्या
णविजयो ॥ हेमगुरुसमवर्णशब्दअनुशासने ॥
शीसतसविबुधवरलाभविजयो ॥ आज० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे उपाध्यायजी पोतानी परंपराकहेछे तेपूर्वे कह्याश्रीविजयसिंहसूरितेना शिष्यसमुदायमां अवतंसके० मुकुटसमान महोटाथया वाचकांराजके० उपाध्यायोमां राजासरिखा एवा श्रीकल्याणविजय उपाध्यायथया ते शब्दअनुशासनेके० व्याकरण शास्त्रमांतो हेमगुरुसमवर्णके० श्रीहेमाचार्य सरिखाथया वली तेमना शिष्य विबुधवर-के० सर्वपंडितमां शिरोमणी एवा श्रीलाभविजयगणीथया ॥ ११ ॥

शीसतसजितविजयोजयोविबुधवर ॥ नयविजयविबु
धतससुगुरुभाया ॥ रहिअकाशीमठेंजेहथीमेंभलें ॥
न्यायदर्शनविपुलभावपाया ॥ आज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली तेमना शिष्य एकश्रीजितविजयजीजयवंता पंडितोमां प्रधानसरि-खा तथा बीजाश्रीनयविजयजी पंडितप्रधानथया तेश्रीजितविजयजीनागुरुभाइ-जथया जेहथीके० तेवेहुगुरुनापसायथी हुं रहिअकाशीमठेके० काशीना मठने विषे रहीने भलीरीते न्यायदर्शनके० न्यायशास्त्रना भावते विपुलके० विस्तारपणेपाम्यो.

जेहथीशुद्धलहियेंसकलनयनिपुण॥ सिद्धसेनादि
कृतशास्त्रभावा ॥ तेहएसुगुरुकरुणाप्रभोतुझसुगु
ण ॥ वयणरयणायरीमुझनावा ॥ आज० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेगुरुनाप्रसादथकी श्रीसिद्धसेनदिवाकर तथा आदिशब्दथी हरिभद्रसूरि उमास्वातिवाचकप्रमुख पंडितोनां करेलां जे शास्त्र तेमांकह्याजेभाव तेनाशुद्धलहियेंके० शुद्ध रहस्यपामियें तेभावकेवाछे जे सकलनयनिपुणके० समस्त जे न्याय तेमां निपुण अथवा समस्तजेनैगमादिकनय तेमां निपुण एवा जे संमति तत्वार्थ, षड्दर्शनसमुच्चय, नयचक्रसार, धर्मसंग्रहणी, अनेकांतजयपताका प्रमुखग्रंथोनाभाव तेना शुद्धरहस्यने हुं पाम्यो माटे एगुर्वादिकनी जे करुणा के० कृपा ते केवीछे जे हे प्रभो तुझ के० तमारुं जे सुगुणवयणके० गुणवंतजेवचन तद्रूप रयणायरीके० समुद्रनेविषे नावा के० जहाजसरिखीछे एटले एभावजे जो गुर्वादिकनी करुणारूपनावा होयतोतमारा वचन-रूपसमुद्रनो पार तेपामिये, तेमारागुरुनी कृपारूपनावा मारे थयी ॥ १३ ॥

॥ कलस ॥

इमसकलसुखकरडुरितजयहरस्वामीश्रीमंधरतणी ॥ एवीन
तिजेसुणेजावेंतेलहेलीलाघणी ॥ श्रीनयविजयबुधचरणसे
वकजशविजयबुधआपणी ॥ रुचिशक्तिसारुंप्रगटकीधीशा
स्त्रमर्यादाजणी ॥ १ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनविज्ञप्तिःसंपूर्णा॥

अर्थ ॥ हवे जेमनवोप्रासादकरावे तेनेमाथे कलशचढावे तेवारे संपूर्णथाय तेम आस्तवनरूपप्रासादनीपनुंतेसंपूर्णकरवामाटे कलशकहेछे एरीते सकलसुखना करनारा तथाडुरितके० पापनुं जेजयतेना हरवावाला एवा स्वामीके० नायक श्रीसीमंधरप्रजुनी अमेविनतीकही तेजेप्राणीजक्तिजावेंकरी सांजले तेप्राणी घणीसुखलीलापामे एरीते श्रीनयविजयजीपंमितना चरणकमलनी सेवानाकरनार श्रीयशोविजयजीपंमित तेमणे पोतानी शक्तिप्रमाणे श्रद्धाजावनीजे रुचिहती एटले स्याद्वादमार्गनी रुचिजेपोताना चित्तमांहतीते शास्त्रनीमर्यादायेप्रगटकरी कहि देखामी इति ॥ १ ॥

॥ इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनटबार्थःसमाप्तः ॥

केदंकर्तुंवचःशस्तं । नानाशास्त्रार्थगर्जितं ॥ कर्मेऽल्पविषयाप्रज्ञा । मुसलाग्रोपमाखलु ॥ १ ॥ यदत्रवितथंप्रोक्तं । मंदबुद्ध्यादिहेतुना ॥ तद्धीधनैःकृपांकृत्वा । मयिशोध्यममत्सरैः ॥२॥ श्रीमद्विजयसिंहाव्हः सूरिरासीद्विजितेंद्रियः॥तस्यांतेवासीसत्यादि।विजयःसान्वयःसुधीः ॥३॥ कर्पूरविजयस्तस्य । शिष्योगुणगणैर्युतः॥ तस्यापिक्षमयायुक्तः । क्षमाविजय इत्यजूत् ॥४॥ जिनादिविजयस्तस्य । शिष्योजूद्भूरिशिष्यकः ॥ शास्त्रज्ञःसज्जनोधीमान् । कर्मठोधर्मकर्मणि ॥५॥ उत्तमादिजयस्तस्य । शिष्यःशिष्यौघसत्तमः ॥ सर्वोत्तमगुणैर्व्याप्तः। कर्मशास्त्रकुशाग्रधीः ॥ ६ ॥ तस्यांह्रिपंकजेपद्म । विजयोजूमरोपमः ॥ नजाग्निवसुचंद्रेब्दे १८३० । तेनेदंवार्तिकंकृतं ॥ ७ ॥

इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनकवियशोविजयजीकृत
सार्द्धत्रिशतगाथाप्रबंधेतस्यकविपद्मविज
यकृतबालावबोधःसमाप्तः

॥ ॐश्रीसर्वज्ञायनमः ॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्रीपंम्तिदेवचंद्रजीकृत आगमसार ॥

भव्यजीवनेप्रतिबोधवानिमित्तेमोक्षमार्गनीवचनिकाकहेछे. तिहांप्रथम जीवअनादिकालनो मिथ्यात्वीहतो तेकाललब्धिपामीने त्रणकरणकरेछे. तेनांनाम-पहेलुं यथाप्रवृत्तिकरण, बीजुं अपूर्वकरण अने त्रीजुं अनिवृत्तिकरण.

तेमांपहेलुं यथाप्रवृत्तिकरणकहेछे. १ ज्ञानावरणी, २ दर्शनावरणी, ३ वेदनी, ४ अंतराय, एचारकर्मनी त्रीसकोमाकोमीसागरोपमनीस्थितिछे, तेमांथी ओगणत्रीस कोमाकोमीखपावे अने एककोमाकोमीबाकीराखे; तथा १ नामकर्म, २ गोत्रकर्म, ए बे कर्मनी वीसकोमाकोमीसागरोपमनी स्थितिछे, तेमांथी ओगणीसखपावे अने एककोमाकोमी राखे, अने मोहनीयकर्मनी सितेरकोमाकोमीसागरोपमनी स्थितिछे, तेमांथी अगणोत्तेरखपावे बाकीएककोमाकोमीराखे एवीरीते एकआयुकर्मवर्जीने बाकीसातेकर्मनी एकपल्योपमना असंख्यातमाभागेन्यून एककोमाकोमीसागरोपमनीस्थितिराखे, एवुं जे वैरागरूप उदासिपरिणाम ते यथाप्रवृत्तिकरणकहिये. ए पहेलुंकरण सर्व संज्ञीपंचेंद्री जीव अनंतिवार करेछे.

हवे बीजुंअपूर्वकरणकहेछे. तेएककोमाकोमीसागरोपमनी स्थितिमांथी एकमूहुर्त्त अनेअनादिमिथ्यात्व जे अनंतानुबंधीआनीचोकमी ते खपाववाने अज्ञान हेय तेछांमवुं अने ज्ञानउपादेय एटले आदरवुं, ए वांछारूप अपूर्वकहेतां पहेलांक्यारे नाव्यो एवो जे परिणाम ते अपूर्वकरणकहिये, एबीजुंकरणते समकितयोग्यजीवनेथाय.

हवेत्रीजुंअनिवृत्तिकरणकहेछे. तेमुहुर्त्तरूपस्थितिखपावीने निर्मलशुद्धसमकेतपामे मिथ्यात्वनो उदयमटे त्यारे जीव उपशमसमकेतपामे, एवोजेपरिणामते अनिवृत्तिकरणकहिये. एकरणकीधाथी गंठीभेदथयोकहिये उक्तंच आवश्यकनिर्युक्तौ "जागंठी तापढमं । गंठीसमयछेउभवेबीउ ॥ अनिअट्टिकरणंपुण । समत्तपुरक्खडेजीवे" ॥ १॥ ऊसरदेसंदढुल्लिअंच । विज्झाइवणदवोयप्पप्पइय ॥ मिछत्तस्सअणुदए । उवसमसम्मंलहइ जीवो ॥ २ ॥ एमभिथ्यात्वनोउदयमट्याथी जीवसमकितपामे, तेसमकितनी सद्दहणा नावेभेदछे, एक व्यवहारसमकितसद्दहणा, बीजी निश्चयसमकितसद्दहणा.

देवश्रीअरिहंत देवाधिदेव अने गुरुसुसाधु जे सूधोअर्थकहेते तथा धर्मकेवलीनो परुप्यो जे आगममां सातनय तथा एकप्रत्यक्ष बीजुंपरोक्ष एवेप्रमाण अने चार निक्षेपेकरीसद्दहे, एवी सद्दहणा ते व्यवहारसमकितकहिये. एपुण्यनुं कारण तथा धर्म प्रगटकरवानुंकारणछे एवीरुचि ज्ञानविनापण घणाजीवोने उपजे.

बीजुंनिश्चयसमकित तेआवीरीतेजे निश्चयदेवते आपणोजआत्मा जीवनिष्पन्न स्वरूपी सिद्ध ते संग्रहनयनीसत्तागवेषतां तथा निश्चयगुरुतेपण आपणोआत्माज तत्वरमणी अने निश्चयधर्मते आपणाजीवनोस्वभावजछे एवीसदहणा ते मोक्षनुंकारण छे केमके जीवस्वरूपछलख्याविनाकर्मखपेनही एवी शुद्धसदहणा तेनिश्चयसमकित.

हवेज्ञाननुंस्वरूपकहेछे तेज्ञाननाबेभेदछे एकव्यवहारज्ञान बीजुंनिश्चयज्ञान तेमांजे अन्यमतिनांसर्वशास्त्रजाणवां अथवा जैनागममध्ये कह्याजे एकगणितानुयोग तेक्षेत्रमान बीजो चरणकरणानुयोग तेक्रियाविधि त्रीजोधर्मकथानुयोग एत्रणअनुयोगनुं जाणवापणुं तेसर्वव्यवहारज्ञानछे अथवा अंतरउपयोगविनाजेसूत्रना अर्थ करवा ते पण व्यवहारज्ञानकहियें.

हवेनिश्चयज्ञान ते छद्रव्य तथा तेनागुण अनेपर्याय सर्वनेजाणे तेमां पांचअजीवद्रव्यछे तेहेयके० छांडवायोग्यजाणीछांडवा अने एकजीवद्रव्यतेनिश्चयकरी सिद्धसमान मोक्षमयी मोक्षनोजाणनार मोक्षनुंकारण मोक्षनोजावावालो मोक्षमांजरहेछे एहवो आपणोजीव अनंतगुणीअरूपीछे तेनेजध्यावे तेनिश्चयज्ञानकहियें.

हवे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय चोथोपुद्गलास्तिकाय पांचमोजीवास्तिकाय अनेछठोकाल एछद्रव्यशाश्वताछे तेनुंज्ञानकहेछे एछ द्रव्यमध्ये पांचअजीवद्रव्य छे अनेएकजीवद्रव्य ते चेतनालक्षणवंतछे उपादेयछे.

हवेएछद्रव्यनागुणकहेछे पहेलोधर्मास्तिकायनाचारगुण एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोगतिसहायगुण; अनेबीजोअधर्मास्तिकायनापण चारगुणछे एक अरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोस्थितिसहायगुण; अने त्रीजो आकाशास्तिकायद्रव्यनाचारगुणछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोअवगाहना दानगुण; हवेकालद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोनवापुराण वर्त्तनालक्षण; हवेपुद्गलद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकरूपी बीजो अचेतन त्रीजो सक्रिय चोथोमिलणविखरणरूपपूरणगलनगुण; हवेजीवद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअनंतज्ञान बीजोअनंतदर्शन त्रीजो अनंतचारित्र चोथोअनंतवीर्य एछद्रव्यना गुण कह्या तेनित्यध्रुवछे ॥

हवेछद्रव्यनापर्यायकहेछे धर्मास्तिकायनाचारपर्यायछे एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथो अगुरुलघु; अधर्मास्तिकायनाचारपर्याय एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथो अगुरुलघु; पुद्गलद्रव्यनाचारपर्याय एकवरण बीजोगंध त्रीजोरस चोथोस्पर्श अगुरुलघुसहित; तथाआकाशास्तिकायनाचारपर्याय एकखंध बीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथोअगुरुलघु; कालद्रव्यनाचारपर्याय एकअतीतकाल बीजोअनागतकाल त्रीजोवर्त्तमा-

नकाल चोथोअगुरुलघु; अनेजीवद्रव्यनाचारपर्याय एकअव्याबाध बीजो अनवगाह त्रीजोअमूर्त्तिक चोथोअगुरुलघु. एछद्रव्यनापर्यायकह्या.

हवेछद्रव्यनागुणपर्यायनुंसाधर्मपणुंकहेछे अगुरुलघुपर्यायसर्वेद्रव्यमांसरिखोछे अने अरूपीगुणपांचद्रव्यमांछे एकपुद्गलद्रव्यमांनथी; तथाअचेतनगुणपांचद्रव्यमांछे,एकजीव्यद्रव्यमांनथी;अनेसक्रियगुणजीव तथापुद्गलएबेद्रव्यमांछे,बाकी चारद्रव्यमांनथी;तथा चलणसहायगुणएकधर्मास्तिकायमांछे,बीजापांचद्रव्यमांनथी; वलीस्थिरसहायगुण एक अधर्मास्तिकायमांछे,बीजापांचद्रव्यमांनथी; तथाअवगाहनागुणतेएकआकाशद्रव्यमांछे, बीजापांचद्रव्यमांनथी; अने वर्त्तनागुणतेएककालद्रव्यमांजछे, बीजापांचद्रव्यमांनथी; तेमज मिलणविखरणगुणतेपुद्गलमांछे, बीजाद्रव्यमांनथी. तथाज्ञानचेतनागुण ते एक जीवद्रव्यमांछे, पणबीजाद्रव्यमांनथी. एमूलगुण कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मिलेनही. एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश एत्रणद्रव्यना त्रणगुण तथा चारपर्यायसरिखाछे अनेत्रण गुणेकरीतो कालद्रव्यपणएसमानछे.

हवेवलीअग्यारबोलेकरीछद्रव्यनागुणजाणवानेगाथाकहेछे " परिणामजीवमुत्ता ॥ सपएसाएगखित्तकिरिआय ॥ निच्चंकारणकत्ता ॥ सव्वगदइयरअप्पवेसा ॥१॥अर्थ॥ निश्चयनयथीआपआपणा स्वभावेंछएद्रव्यपरिणामिछे अनेव्यवहारनयथी जीव तथापुद्गल एबेद्रव्यपरिणामीछे तथाएकधर्म बीजो अधर्म त्रीजोआकाश अनेचोथोकाल एचारद्रव्यअपरिणामीछे तथाछद्रव्यमां एकजीवद्रव्यतेजीवछे बीजापांचद्रव्यअजीवछे तथाछ द्रव्यमांएकपुद्गलमूर्त्तिवंतअरूपीछे अनेपांचद्रव्य अमूर्त्तिवंत अरूपीछे. छद्रव्यमां पांच द्रव्यसप्रदेशीछे, अने एककालद्रव्यअप्रदेशीछे तेमां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकायएबेद्रव्यअसंख्यातप्रदेशीछे अने एकआकाशद्रव्यअनंतप्रदेशीछे जीवद्रव्यअसंख्यातप्रदेशीछे, पुद्गलपरमाणुअनंतप्रदेशीछे; परमाणुआअनंताछे, एमपांचद्रव्य सप्रदेशीछे अनेछठोकालअप्रदेशीछे.

छद्रव्यमां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय एत्रणते एकेकद्रव्यछे, तथाएकजीवद्रव्य बीजोपुद्गलद्रव्य त्रीजोकालद्रव्य एत्रणद्रव्यअनेकअनेकछे, छद्रव्यमां एकआकाशद्रव्यक्षेत्रछे, अनेबीजापांचद्रव्यक्षेत्रीछे;निश्चयनयथीछद्रव्यपोतपोतानाकार्यैंसदाप्रवर्त्तेछे माटेसक्रियछे; अनेव्यवहारनयथी जीवतथापुद्गल एबे द्रव्यसक्रियछे, तेमांपणपुद्गलसदासक्रियछे, अनेजीवद्रव्यतो संसारीथकोसक्रियछे; पण सिद्धअवस्थायेंथकोसंसारीक्रियाकरवाने अक्रियछे, तथाबाकीनाचारद्रव्यतोअक्रियछे; निश्चयनयथी छद्रव्यनित्यछे ध्रुवछे; अनेउत्पादव्ययेंकरी अनित्यपणेपणछे तथाव्यवहार नये जीवअनेपुद्गलएबेद्रव्यअनित्यछे, बाकीनाचारद्रव्यनित्यछेयद्यपिउत्पादव्यय ध्रुवप-

णेसर्वपदार्थपरिणमेछे तोपण एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश चोथोकाल एचार द्रव्य सदाअवस्थितछे तेमाटेनित्यकह्यां ॥

छद्रव्यमां एकजीवद्रव्यअकारणछे अनेपांचद्रव्यकारणछे केमके पांचेद्रव्यजीवने भोगमांआवेछे माटेकारणकहियें केमके धर्मास्तिकाय चालवानोसाह्यआपेछे अधर्मास्तिकायथिररहेवानोसाह्यआपेछे आकाशास्तिकायअवकाशआपेछे पुद्गलास्तिकायजीवनेमधुरादि सुरभिगंधादिक तथासकोमलस्पर्शादिक भोगपणेथायछे तथाकालद्रव्यते जीवने जरा बाल तारुण्यअवस्थादेछे तथाअनादिसंसारीजीव भवस्थिति परिपाक छतां एकअंतरमुहूर्त्तकालमां सकलकर्मनिर्जरीमोक्षपहोचेतिहांसिद्धअवस्थायें अनंतोकालपर्यंतजीवअनंतासुखनेविलसे माटेकालद्रव्यपण जीवनेभोगथायछे पणएकजीवद्रव्यकोइनेभोगआवतोनथी माटे अकारणकह्युं अनेपांचद्रव्यभोगआवे माटेकारण कह्यां तथाघणीप्रतोमांतोसंक्षेपेएटलुंछेजे छद्रव्यमां एकजीवद्रव्यकारण छे पांचद्रव्य अकारणछे एपणवातघणीरीतेमलतीछे माटेजेबहुश्रुतकहेतेखरुं मारी धारणाप्रमाणे जीवद्रव्यकारण अने पांचद्रव्यअकारणएमसंभवेछे निश्चयनयथी छए द्रव्यकर्त्ताछे अने व्यवहारनये एकजीवद्रव्यकर्त्ताछे बाकीपांचद्रव्यअकर्त्ताछे छद्रव्यमां एकआकाशद्रव्य सर्वव्यापीछे अनेपांचद्रव्यलोकव्यापीछे छएद्रव्यएकखेत्रमांएकठांरह्यांछे पणएकबीजासाथेमलीजायनही एछद्रव्यनोविचारकह्यो.

हवेएकेकाद्रव्यमां एकनित्य बीजोअनित्य त्रीजोएक चोथोअनेक पांचमोसत् छट्ठो असत् सातमोवक्तव्य आठमोअवक्तव्य एआठआठपक्षकहेछे.

धर्मास्तिकायनाचारगुणनित्यछे तथापर्यायमांधर्मास्तिकायनोएकखंधनित्यछे बाकीनादेशप्रदेश तथा अगुरुलघुपर्यायअनित्यछे अधर्मास्तिकायनाचारगुण तथाएकलोकप्रमाणखंधनित्यछे अने एकदेश बीजोप्रदेश त्रीजोअगुरुलघु एत्रणपर्यायअनित्य छे तथा आकाशास्तिकायनाचारगुण तथालोकालोकप्रमाणखंधनित्यछे अनेएकदेश बीजो प्रदेशत्रीजोअगुरुलघु एत्रणपर्यायअनित्यछे तथाकालद्रव्यनाचारगुण नित्यछे अनेचार पर्यायअनित्यछे पुद्गलद्रव्यनाचारगुणनित्यछे अनेचारपर्यायअनित्यछे जीवद्रव्यनाचार गुण तथा त्रणपर्यायनित्यछे अनेएकअगुरुलघुपर्यायअनित्यछे एरीतेनित्यानित्यपक्षकह्यो.

हवेएकअनेकपक्षकहेछे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय एबेद्रव्यनोखंधलोकाकाशप्रमाणएकछे अनेगुणअनंताछे पर्यायअनंताछे प्रदेशअसंख्याताछे तेणेकरी अनेकछे आकाशद्रव्यनोलोकालोकप्रमाणखंधएकछे अनेगुणअनंताछे पर्यायअनंताछे प्रदेशअनंताछे माटेअनेकछे कालद्रव्यनोवर्त्तनारूपगुणएकछे अनेगुणअनंताछे पर्याय अनंताछे समयअनंताछे केमकेअतीतकालेअनंतासमयगया अने अनागतकाले अनंता-

समयआवशे तथावर्त्तमानकालेसमयएकछे माटेअनेकपणछे पुद्गलद्रव्यनापरमाणुअनंताछे ते एकेकपरमाणुमां अनंतागुणपर्यायछे तेअनेकपणुंछे अनेसर्वपरमाणुमां पुद्गलपणुंतेएकजछे माटेएकछे.

जीवद्रव्यअनंताछेएकेकाजीवमां प्रदेशअसंख्याताछे तथागुणअनंताछे पर्यायअनंताछे तेअनेकपणुंछे पणजीवितव्यपणुंसर्वजीवोनुं एकसरिखुंछे माटे एकपणुंछे इहांशिष्यपूछेछे जेसर्वजीवएकसरिखाछे तोमोक्षनाजीव सिद्धपरमानंदमयीदेखायछे अनेसंसारीजीवकर्मवशपड्याडुःखीदेखायछे अनेतेसर्वेजूदाजूदादेखायछे तेकेम? तेहनेगुरुउत्तर कहे छे के निश्चयनयेतोसर्वजीव सिद्धसमानछे माटेजसर्वजीवकर्मखपावीनेसिद्धथायछे तेथीसर्वजीवनीसत्ताएकछे.

फरिशिष्यपूछेछेके जोसर्वजीव सिद्धसमानकह्योछो तोअभव्यजीवपण सिद्धसमानछे एमछेसुं अनेतेतोमोक्षजतानथी तेहनेउत्तर जे अभव्यनेकर्मचीकणाछे अनेअभव्यमां परावर्त्तधर्मनथी तेथीसिद्ध थतानथी माटेतेनोएहवोज स्वभावछे जेमोक्षजवुंज नथी अनेभव्यजीवमांपरावर्त्तधर्मछे माटेकारणसामग्रीमिले पलटणपामे गुणश्रेणीचढी मोक्षकरीसिद्ध थाय पणजीवनामुख्यआठरुचकप्रदेशजेछे तेनिश्चयनयथी भव्य तथाअभव्य सर्वनासिद्धसमानछे माटे सर्वजीवनीसत्ताएकसरिखीछे केमकेएआठप्रदेशने बिलकुल कर्मलागता नथी तेश्रीआचारांगसूत्रनी श्रीसिलंगाचार्यकृतटीकानालोकविजयाध्ययने प्रथमोद्देशकेसाखछे तिहांथीसविस्तरपणेजोवुं.

हवेसत्तथाअसत्पक्षकहेछे एछद्रव्य तेस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल अने स्वभावपणे सत्एटलेछताछे अने परद्रव्य परक्षेत्र परकाल तथा परभावपणे असत् एटले अछताछे तेनीरीतछतावछतानेअर्थे छएद्रव्यनो द्रव्य क्षेत्र काल भाव कहियें छैयें.

धर्मास्तिकायनोमूलगुण चलणसहायपणो ते स्वद्रव्य अधर्मास्तिकायनोमूलगुण स्थितिसहायपणो ते स्वद्रव्य आकाशास्तिकायनोमूलगुण अवगाहपणो तेस्वद्रव्य कालद्रव्यनोमूलगुण वर्त्तनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य तथा पुद्गलनोमूलगुण पुरणगलनपणो तेस्वद्रव्य अने जीवद्रव्यनोमूलगुणज्ञानादिकचेतनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य एछ द्रव्यनो स्वद्रव्यपणोकह्यो.

हवे स्वक्षेत्र ते द्रव्यनोप्रदेशपणोछे ते देखाडेछे तिहां एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय एबेद्रव्यनो स्वक्षेत्र असंख्यातप्रदेशछे अने आकाशद्रव्यनो स्वक्षेत्र अनंतप्रदेशछे कालद्रव्यनो स्वक्षेत्रसमयछे पुद्गलद्रव्यनो स्वक्षेत्रएकपरमाणुछे तेपरमाणुअनंताछे जीवद्रव्यनो स्वक्षेत्र एकजीवनाअसंख्याताप्रदेशछे.

हवे स्वकालते छएद्रव्यमां अगुरुलघुनोजछे अने एछद्रव्यनापोतपोताना गुणपर्या-

थते सर्वद्रव्यनो स्वभावजाणवो एटले धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र काल भावछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी तथा अधर्मास्तिकायद्रव्यमध्ये पण स्वद्रव्यादिक चारछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी एमज आकाशास्तिकायनेविषे आकाशनाज स्वद्रव्यादिकचारछे पणबीजापांचद्रव्यनानथी कालद्रव्यमां कालनाद्रव्यादिकचारछे बीजा पांचद्रव्यनानथी अने पुद्गलनाद्रव्यादिकचार ते पुद्गलमांजछे पणबीजापांचद्रव्यनानथी तथा जीवद्रव्यना स्वद्रव्यादिकचार ते जीवमांछे पणबीजा पांचद्रव्यनानथी.

जेद्रव्यतेगुणपर्यायवंत द्रव्यथीअन्नेदपर्यायहोयतेद्रव्यकहियें तथास्वधर्मनोआधारवंतपणो ते क्षेत्रकहियें अने उत्पादव्ययनीवर्त्तना तेकालकहियें तथाविशेषगुणपरिणति स्वभावपरिणति पर्यायप्रमुख ते स्वभावकहियें.

इहां १ भेदस्वभाव २ अभेदस्वभाव ३ भव्यस्वभाव ४अभव्यस्वभाव ५ परमस्वभाव एपांचस्वभावकहेवा तेमांद्रव्यनासर्वधर्मने पोतपोतानास्वस्वकार्यने करवेकरी भेदस्वभावछे अने अवस्थानपणेअभेदस्वभावछे अणपलटणस्वभावें अभव्यस्वभावछे तथा पलटणस्वभावें भव्यस्वभावछे अने द्रव्यनासर्वधर्म तेविशेषधर्मनेअनुजायीजपरिणमे तेमाटे ते परमस्वभावकहियें एसामान्यस्वभावजाणवा एरीतेछएद्रव्यस्वगुणे सत्छे अनेपरगुणे असत्छे.

हवे वक्तव्य तथा अवक्तव्यपक्षकहेछे एछद्रव्यमां अनंतागुणपर्यायते वक्तव्यएटले वचनेकहेवायोग्यछे अने अनंतागुणपर्यायतेअवक्तव्य एटले वचनेकह्याजायनही एवा छे तिहांकेवलीभगवंते समस्तभावदीठा तेने अनंतमेभागे जे वक्तव्य एटलेकहेवायोग्य हता ते कह्या वलीतेनोपणअनंतमोभाग श्रीगणधरदेवे सूत्रमां गुंथ्यो तेसूत्रमांगुंथ्या तेनेअसंख्यातमेभागे हमणांआगमरह्याछे ए छद्रव्यमांआठपक्षकह्या.

हवेनित्यतथाअनित्यपक्षथीचोभंगीउपनीतेकहेछे एक जेनीआदिनथी अने अंतपणनथी तेअनादिअनंत पहेलोभांगो अनेजेनी आदिनथी पणअंतछे तेअनादिसांतबीजोभांगो तथाजेनीआदिपणछे अनेअंतएटले छेहेडोपणछे तेसादिसांतत्रीजो भांगो वलीजेहनीआदिछे पणअंतनथी तेसादिअनंतनामेचोथोभांगो जाणवो.

हवेएचारभांगाछद्रव्यमांफलावीदेखाडेछे जीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणतेअनादिअनंतछे नित्यछे अनेभव्यजीवनेकर्मसाथेसंबंध तथा संसारीपणानीआदिनथी पणसिद्ध थाय तेवारे अंतआव्यो तेथीए अनादिसांत भांगोछे अने देवता तथा नारकीप्रमुखना भवकरवाते सादिसांतभांगोछे अने जेजीवकर्मखपावी मोक्षगया तेनी सिद्धपणे आदिछे अने पाछोसंसारमां कोइकालेंआववुंनथी माटेअंतनथी तेथीएसादिअनंतभां-

गोछे एजीवद्रव्यमांचोभंगीकही जीवद्रव्यनाचारगुणअनादिअनंतछे जीवनेकर्मसाथें संयोगतेअनादिसांतछे केमकेकेवारेपणकर्मतूटेछे.

हवेधर्मास्तिकायमांचारगुण तथाखंधपणो ते अनादिअनंतछे अने अनादिसांतभां-गोनथी तथा १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु एसादिसांतभांगोछे तथासिद्धनाजीवमां धर्मास्तिकायनाजेप्रदेशरह्याछे तेप्रदेशआश्रयीने सादिअनंतभांगोछे एवीजरीतें अधर्मास्तिकायमांपण चौभंगीजाणवी अनेआकाशद्रव्यमां गुणतथाखंधअनादिअनंतछे बीजो भांगोनथी अने १ देश २ प्रदेश तथा ३ अगुरुलघुसादिसांतछे तथासिद्धना जीवनी साथे संबंधतेसादिअनंतछे.

पु[illegible]लद्रव्यमांगुणअनादिअनंतछे जीवपुद्गलनोसंबंध अभव्यने अनादिअनंतछे भव्यजीवनेअनादिसांतछे पुद्गलनाखंधसर्वेसादिसांतछे जेखंधबांध्यातेस्थितिप्रमाणे रही खरेछे वलीनवाबंधायछे माटेसादिअनंतभांगोपुद्गलमांनथी.

कालद्रव्यमां गुणचारअनादिअनंतछे पर्यायमां अतीतकालअनादिसांतछे अनेवर्त्तमानकालसादिसांतछे अनागतकालसादिअनंतछे एकालनुंस्वरूपते सर्वेउपचारथीछे ए रीतेंकालद्रव्यमां चौभंगीकही.

हवे द्रव्यक्षेत्रकालतथा भावमांचौभंगीकहेछे जीवद्रव्यमां स्वद्रव्यथीज्ञानादिकगुणते अनादिअनंतछे स्वखेत्रेंजीवनाप्रदेशअसंख्याताछे तेसादिसांतछे ततोद्वर्त्तनापणे फरेछे तेमाटे. अथवा अवगाहनामाटेसादिसांतछे पणछतिपणेतो अनादिअनंतछे स्वकाल अगुरुलघुनेगुणे अनादिअनंतछे अनेअगुरुलघुगुणनो उपजवो तथाविणशवोतेसादिसांतछे तथा स्वभावगुणपर्याय तेअनादिअनंतछे अनेभेदांतरेअगुरुलघु तेसादिसांतछे.

धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्यजेचलणसहायगुण तेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रअसंख्यात प्रदेशलोकप्रमाणछे ते अवगाहनापणे सादिसांतछे स्वकालतेअगुरुलघुगुणेकरी अनादिअनंतछे अने उत्पादव्ययतेसादिसांतछे स्वभावते चारगुणअगुरुलघुअनादिअनंतछे १ खंध २ देश ३ प्रदेशतेअवगाहनानेप्रमाणे सादिसांतछे एमअधर्मास्तिकायनापण द्रव्यादिचारभांगाजाणवा तथाआकाशास्तिकायमां स्वद्रव्यअवगाहनादानगुणतेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रलोकालोकप्रमाणअनंतप्रदेशते अनादिअनंतछे स्वकालते अगुरुलघुगुणसर्वथापणेअनादिअनंतछे अनेउपजवे तथाविणसवेसादिसांतछे स्वभाव ते चारगुण तथा खंधअने अगुरुलघुते अनादिअनंतछे तथादेशप्रदेशते सादिसांतछे ते आकाशद्रव्यना बेभेदछे एकचौदराजलोकनो खंध लोकाकाश तेसादिसांतछे बीजो अलोकाकाशनो खंध तेसादिअनंतछे.

कालद्रव्यमां स्वद्रव्यजे नवपुराणवर्त्तनागुण तेअनादिअनंतछे स्वखेत्रसमयकालते

सादिसांतछे केमके वर्त्तमानसमयएकछेतेमाटे. तथा स्वकालतेअनादिअनंतछे स्वभाव तेगुणचार अनेअगुरुलघु अनादिअनंतछे अतीतकालअनादिसांतछे अनेवर्त्तमानकाल सादिसांतछे अनागतकाल सादिअनंतछे.

पुद्गलद्रव्यमां स्वद्रव्यते द्रव्यपणे जेपूर्णगलनधर्मतेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रपरमाणुते सादिसांतछे स्वकालस्थिति अगुरुलघुगुणते अनादिअनंतछे अगुरुलघुनोउपजवोविणशवोते सादिसांतछे स्वभावतेगुणचार अनादिअनंतछे वर्णादिपर्यायचार एटले वर्ण गंध रस स्पर्श तेसादिसांतछे एद्रव्यादिचारमां चौभंगीकही.

हवे छद्रव्यनासंबंधआश्रीचौभंगीकहेछे तिहांप्रथमआकाशद्रव्यछे तेमांअलोकाकाशमांकोइद्रव्यनथी अनेलोकाकाशमां छद्रव्यछे तिहांलोकाकाशद्रव्य तथाबीजुंधर्मास्तिकायद्रव्य अनेत्रीजुंअधर्मास्तिकायद्रव्य ते अनादिअनंतसंबंधीछे जेलोकाकाशना एकेकप्रदेशमांधर्मद्रव्य तथाअधर्मद्रव्यनोएकेकप्रदेशरह्योछे तेपण किवारे विछडसेनही माटेअनादिअनंतसंबंधीछे आकाशखेत्रलोकसर्व अनेजीवद्रव्यनोअनादिअनंतसंबंधछे अनेसंसारीजीवकर्मसहित तथा लोकनाप्रदेशनोसादिसांतसंबंधछे लोकांतसिद्धखेत्रनासिद्धजीवोनो आकाशप्रदेशसाथेंसादिअनंतसंबंधछे लोकाकाशअनेपुद्गलद्रव्यनोअनादिअनंतसंबंधछे आकाशप्रदेशनीसाथें पुद्गलपरमाणुनो सादिसांतसंबंधछेएमआकाशद्रव्यनीपरेधर्मास्तिकाय तथाअधर्मास्तिकायनोपण सर्वसंबंधजाणवो जीवअने पुद्गलनासंबंधमां अभव्यजीवनेपुद्गलनोअनादिअनंतसंबंधछे केमके अभव्यजीवनाकर्मकिवारें खपशेनहीमाटे अने भव्यजीवनेकर्मनुंलागवुंअनादिकालनुंछे पणते किवारेकबुटशे माटेभव्यजीवनेपुद्गलसंबंधअनादिसांतछे तथानिश्चेनयकरीछद्रव्यस्वभावपरिणामपरिणम्याछे तेपरिणामीपणोसदाशाश्वतोछे तेमाटेअनादिअनंतछे अने जीवतथापुद्गलबेहुद्रव्यमलिसंबंधभावपामेछे तेपरपरिणामीपणोछे तेपरपरिणामिपणोअभव्यजीवनेअनादिअनंतछे अनेभव्यजीवनेअनादिसांतछे अनेपुद्गलनोपरिणामीपणो तेसत्तायें अनादिअनंतछे अनेपुद्गलनोमिलवो विछरुवोतेसादिसांतछे एटलेजीवद्रव्यपुद्गल साथे मिल्योसक्रियछे अनेपुद्गलकर्मथीरहितथाय तेवारेंजीवद्रव्यअक्रियछे अनेपुद्गल द्रव्यसदासक्रियछे.

हवेएकअनेकपक्षथी निश्चेंज्ञानकहेवाने नयकहेछे. सर्वद्रव्यमांअनेकस्वभावछे तेएकवचनथीकह्याजायनही माटेमांहोमांहेंनयकरीसंक्षेपपणेकहेछे. तिहांमूलनयनाबेभेदछे एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक तेमांउत्पादव्ययपर्यायगौणपणे अनेप्रधानपणे द्रव्यनोगुणसत्तानेग्रहेतेद्रव्यार्थिकनयकहियें तेनादशभेदछे. १ सर्वद्रव्यनित्यछ तेनित्यद्रव्यार्थिक २ अगुरुलघु अनेखेत्रनीअपेक्षानकरे मूलगुणने पिंडपणेग्रहे तेएकद्रव्यार्थिक ३

ज्ञानादिकगुणेसर्वजीव एकसरिखाछे माटेसर्वनेएकजीवकहे स्वद्रव्यादिकनेग्रहे तेसत् द्रव्यार्थिक जेमसतुलक्षणंद्रव्यं ४ द्रव्यमांकहेवायोग्यगुण अंगीकारकरे तेवक्तव्यद्रव्यार्थिक ५ आत्मानेअज्ञानीकहेवुं तेअशुद्धद्रव्यार्थिक ६ सर्वद्रव्यगुणपर्याय सहितछे एमकहेवुं तेअन्वयद्रव्यार्थिक ७ सर्वजीवद्रव्यनीमूलसत्ताएकछे तेपरमद्रव्यार्थिकनय ८ सर्वजीवना आठप्रदेशनिर्मलछे तेशुद्धद्रव्यार्थिकनय ९ सर्व जीवनाअसंख्यातप्रदेश एकसरिखाछे तेसत्ताद्रव्यार्थिकनय १० गुणगुणीद्रव्य तेएकछे तेपरमभावग्राहकद्रव्यार्थिक जेमआत्माज्ञानरूपछेइत्यादिक एद्रव्यार्थिकनयनादशभेदकह्या.

हवे पर्यायार्थिकनयनाछभेदकहेछे. जेपर्यायनेग्रहेतेपर्यायार्थिकनयकहियें,तेनाछभेद छे. १ द्रव्यपर्यायतेजीवनेभव्यपणुं तथासिद्धपणुंकेहेवुं २ द्रव्यव्यंजनपर्याय तेद्रव्यनुंप्रदेशमान ३ गुणपर्यायजेएकगुणथीअनेकताथाय जेमधर्माधर्मादिद्रव्य पोताना चलणसहकारादिगुणथी अनेकजीवतथापुद्गलने सहायकरे ४ गुणव्यंजनपर्यायजे एकगुणनाघणाभेदछे ५ स्वभावपर्यायतेअगुरुलघुपर्यायथीजाणवुं एपांचपर्यायसर्वद्रव्यमांछे अनेछठोविभावपर्यायतेजीवपुद्गलएवेद्रव्यमांछे तिहांजीवजेचारगतिना नवानवाभवकरे ते जीवमांविभावपर्याय तथापुद्गलमां खंधपणुंतेविभावपर्यायजाणवो.

हवेपर्यायनाबीजाछभेदकहेछे. १ अनादिनित्यपर्याय तेजेमपुद्गलद्रव्यनोमेरुप्रमुख २ सादिनित्यपर्यायतेजीवद्रव्यनुंसिद्धपणुं ३ अनित्यपर्यायतेसमयसमयमांद्रव्यउपजेविणशेछे ४ अशुद्ध अनित्यपर्यायते जन्ममरणथायछे तेणेकरीकहेवुं ५ उपाधिपर्यायतेकर्मसंबंध ६ शुद्धपर्यायजेमूलपर्यायसर्वद्रव्यनाएकसरिखाछे. एपर्यायार्थिकनुंस्वरूपकह्युं.

हवेसातनयकहेछे.१ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभूत एसातनयनानामजाणवां तेमां पहेलोनैगमनयकहेछे नथीएकगमोतेनैगम कहियें गुणनोएकअंशउपनोहोयतो नैगमनयकहियें. दृष्टांत—जेमकोइकमनुष्यने पायलीलाववानोमनथयो तेवारेंजंगलमां लाकडुंलेवाचाल्यो रस्तामांकोइकमनुष्यमल्यो तेणें पुछ्युं तुंक्यांजायछे तेवारें तेणेंकह्युं जे पायलीलेवाजाउंछुं तेपायलीतोहजीघडीनथी पणमनमांचिंतवी तेथइएमगएयुं तेमनैगमनय सर्वजीवनेसिद्धसमानकहे केमके सर्व जीवनाआठरुचकप्रदेशनिर्मलसिद्धरूपछे तेथीएकअंशेंसिद्धछे ते माटे सिद्धसमानसर्व जीवकह्या तेनैगमनयनात्रणभेदछे १ अतीतनैगम २ अनागतनैगम ३ वर्त्तमाननैगम ए नैगमनय कह्यो.

हवेसंग्रहनयकहेछे. सत्ताग्रहेतेसंग्रह जेएकनामलीधाथी सर्वगुणपर्यायपरिवारसहितआवे तेसंग्रहनयजाणवो. तेनोदृष्टांत—जेमकोइकमनुष्ये प्रभातें दातणकरवानेअर्थें पोतानाघरनाबारणेबेशीने चाकरपुरुषने कह्युं जे दातणलइआवो तेवारेतेचाकरमनुष्यपा-

थीनोलोटो तथारुमालअनेदातण एमसर्वचीजलइआव्यो. हवेशेठेंतोएकदातण नामल-इनेमंगाव्युंहतुं पणसर्वनोसंग्रहकरीचाकरलेइआव्यो तेमज द्रव्यएवुंनामकह्युं तोद्रव्य-नागुणपर्यायसर्वआव्या. एसंग्रहनयनाबेभेदछे एकजेद्रव्यपणोसामान्यपणेबोलताजीव तथाअजीवद्रव्यनोभेदपड्योनही तेपहेलोसामान्यसंग्रह तथाबीजोविशेषताने अंगी-कारकरेछे जेजीवद्रव्य एमकह्युंतो अजीवसर्वटल्या तेविशेषसंग्रह.

हवे व्यवहारनयकहेछे जेबाह्यस्वरूपदेखीनेभेदनीवेहेचणकरे अनेजेबाहेरदेखाता गुणनेज माने पण अंतरंगसत्तानमाने एटलेएनयमां आचारक्रियामुख्यछे अंतरंगप-रिणामनोउपयोगनथी केमके नैगमतथासंग्रहनयतेज्ञानरूपध्याननापरिणामविना अं-शतथासत्ताग्राहीछे तेमइहांकरणीमुख्यछे तेव्यवहारनयपणे जीवनी व्यवस्थाअनेकप्र-कारेंछे तिहां नैगम तथासंग्रहनयकरी सर्वजीवसत्तायें एकरूपछे पणव्यवहारनयथी जीवना बेभेदछे एकसिद्ध बीजासंसारी तेवलीसंसारी जीवनाबेभेदछे एकअयोगीचौ-दमा गुणठाणावाला तथाबीजासयोगी तेसयोगीनाबेभेद एककेवली बीजो छद्मस्थ, छ-द्मस्थनाबेभेद एक क्षीणमोही बारमागुणठाणेवर्त्तता मोहनीयकर्मखपाव्युंते बीजाउ-पशांतमोह ते उपशांत मोहनावली बेभेद एकअकषायी इग्यारमा गुणठाणा-नाजीव बीजासकषायी तेसकषायीनाबेभेदछे एक सूक्ष्म कषायी दशमा गुणठाणना-जीव बीजाबादरकषायी ते बादरकषायीना वलीबेभेदछे एकश्रेणीप्रतिपन्न बी-जाश्रेणीरहित तेश्रेणीरहितनाबेभेद एकअप्रमादी बीजाप्रमादी तेप्रमादीनाबेभेद एकसर्वविरति बीजादेशविरति देशविरतिनाबेभेद एकव्रतिपरिणामि बीजाअ-व्रतिपरिणामि अव्रतिनाबेभेद एकअव्रतिसमकेति बीजाअव्रतिमिथ्यात्वी तेमिथ्यात्वी नाबेभेद एकभव्य बीजाअभव्य तेभव्यनाबेभेद एकग्रंथीभेदी बीजाग्रंथीअभेदी एवी रीतेजेजीव जेवोदेखाय तेनेतेवोमाने एव्यवहारनयछे एमजपुद्गलनाभेदकरवा तेकहेछे पुद्गलद्रव्यनाबेभेदछे एकपरमाणु बीजोखंध खंधनाबेभेद एकजीवनेलागा तेजीवसहित बीजाजीवरहित ते घटोप्रमुखअजीवनोखंध हवेजीवसहितखंधना बेभेदछे एकसू-क्ष्मखंध बीजोबादरखंध.

इहां वर्गणानोविचारलखीयेछेयें तिहां पुद्गलनीवर्गणाआठछे १ उदारिकवर्गणा २ वैक्रियवर्गणा ३ आहारकवर्गणा ४ तेजसवर्गणा ५ भाषावर्गणा ६ उसासवर्गणा ७ मनो-वर्गणा ८ कार्मणवर्गणा एआठवर्गणानांनामकह्यां बेपरमाणुभेलाथाय त्यारे द्व्यणुकखंध कहेवाय त्रणपरमाणुभेलाथाय तेवारे त्र्यणुकखंधथाय एमसंख्यातापरमाणुमिले संख्या-ताणुकखंधथाय तेमजअसंख्याते असंख्याताणुकखंधथाय तथाअनंतापरमाणुमिले अ-

नंताणुकखंधथाय एखंधतेसर्वजीवने अग्रहणयोग्यछे अने जेवारें अन्नव्यथी अनंतगुण अधिकपरमाणुन्नेलाथाय तेवारें उदारिकशरीरने लेवायोग्यवर्गणाथाय.

एमजउदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणामां दलन्नेलाथाय तेवारेंवैक्रियवर्गणा थाय वली वैक्रियथकीअनंतगुणापरमाणुमिले तेवारेंआहारकवर्गणाथाय एमसर्ववर्गणानाएकेकथी अनंतगुणाअधिकपरमाणुमिले तेवारेंतेवर्गणाथाय एटलेपहेलीथी बीजीवर्गणा बीजीथीत्रीजी एमसातमीमनोवर्गणाथी आठमीकार्मणवर्गणामांअनंत गुणपरमाणुअधिकछे इहां १ उदारिक २ वैक्रिय ३ आहारक ४ तेजस एचारवर्गणाबादरछे तेमांपांचवर्ण बेगंध पांचरस आठस्पर्श एवीसगुणछे तथा १ न्नाषा २ उसास ३ मन ४ कार्मण एचारवर्गणासूक्ष्मछे एमांपांचवर्ण बेगंध पांचरस चारस्पर्श एसोलगुणछे अनेएक परमाणुमां एकवर्ण एकगंध एकरस बेस्पर्श एपांचगुणछे एमपुद्गलखंधनाअनेकन्नेदछे.

एव्यवहारनयनाछन्नेदछे १ शुद्धव्यवहार तेआगलागुणठाणानुं छोमवुं अनेउपरना गुणठाणानुं ग्रहणकरवुं अथवाज्ञानदर्शनचारित्रगुणते निश्चयनयएकरूपछे पणते शिष्यनेसमजाववाने जूदाजूदान्नेद कहेवा तेशुद्धव्यवहारछे २ जीवमां अज्ञानरागद्वेषलाग्या छे तेअशुद्धपणुंछे माटेअशुद्धव्यवहार ३ जे पुण्यनीक्रियाकरवी तेशुन्नव्यवहार ४ जेथकीजीवपापरूपअशुन्नकर्मकरेतेअशुन्नव्यवहार ५ धन घर कुटुंब प्रत्यक्ष सर्व आपणाथी जूदाजूदाछे पणजीवेंअज्ञानपणे आपणाकरीजाण्याछे ते उपचरितव्यवहार ६ शरीरादिकपरवस्तुयद्यपिजीवथीजुदीछे तोपणपरिणामिकन्नाव लोलीपणेएकठा मिलीरह्याछे तेनेजीवआपणाकरीजाणेछेते अनुपचरित व्यवहारजाणवो एव्यवहारनयकह्यो.

हवेरुजुसूत्रनयनो विचारकहेछे जेअतीतकालअनेअनागतकालनीअपेक्षानकरे पण वर्त्तमानकालें जेवस्तुजेवागुणेंपरिणमे वर्त्ते तेवस्तुने तेवेजपरिणामेमाने माटे एनयपरिणामग्राहीछे जेमकोइकजीवग्रहस्थछे पण अंतरंग साधुसमानपरिणामछे तो ते जीवने साधुकहे अनेकोइकजीव साधुनेवेषेछे पणमननापरिणाम विषयान्निलाषसहितछे तो तेजीव अव्रतीजछे एमरुजुसूत्रनुंमानवुंछे तेरुजुसूत्रनाबेन्नेदछे एकसूक्ष्मरुजुसूत्र ते एम कहेजे सदाकालसर्ववस्तुमां एकवर्त्तमानसमयवर्त्तेछे एटले जे जीवगयाकालें अज्ञानी हतो अनेअनागतकालें अज्ञानीन्नावेंअज्ञानीथशे एमबेहुकालनीअपेक्षानकरे पणएक वर्त्तमानसमये जेजेवोतेनेतेवोकहे तेसूक्ष्मरुजुसूत्रकहियें अनेमहोटा बाह्यपरिणामग्रहे तेस्थूलरुजुसूत्रनयजाणवो एटलेरुजुसूत्रनयकह्यो.

हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुगुणवंत अथवानिर्गुण तेवस्तुनेनामकहीबोलावियें जेन्नाषावर्गणाथी शब्दपणेंवचनगोचरथाय तेशब्दनय जे कारणेअरूपीद्रव्यवचनथीग्रह्या जायनही पणवचनथी कहेवातेशब्दनयकहियें इहांजेशब्दनोअर्थहोय तेपणोजे वस्तुमां

वस्तुपणेपामियें तेवारें तेवस्तुशब्दनयकहियें जेमघटनीचेष्टानेकरतोहोयतेघट एशब्द-नयमां व्याकरणथीनीपना अनेबीजापणसर्वेशब्दलीधा तेशब्दनयनाचारभेदछे १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव अने चारनिक्षेपानापणएहिजनामछे.

१ पहेलोनामनिक्षेपो ते आकार तथा गुणरहितवस्तुने नामकरीबोलाववो जेम ए-कलाकडीनो कटकोलेइने कोइके तेहनेजीवएवुंनामकह्युं तेनामजीवजाणवुं जेमका-लीदोरीने सापनीबुद्धियेंकरीधावइणे तेहनेसापनीहिंसालागे एनामसर्पथयुं एवीज रीते नामतप अथवानामसिद्ध जेमवरुप्रमुखने सिद्धवरु एमकहीबोलावेछे ते नाम निक्षेपोकहियें एसूत्रसाखेंछे

२ स्थापनानिक्षेपोकहेछे जेकोइकवस्तुमां कोइकवस्तुनोआकारदेखीने तेहनेतेवस्तु कहे जेमचित्राम अथवाकाष्टपाषाणनीमूर्त्ति तेनेघोडाहाथीनोआकारछे तोतेघोडाहा-थीकहेवाय तेस्थापनाजाणवी एस्थापनानिक्षेपो नामनिक्षेपेंसहितहोय जेमस्थापना-सिद्धजिनप्रतिमाप्रमुख तेसद्भावस्थापनापणहोय अनेअसद्भावस्थापनापण होय अ-कृत्रिमजिनप्रतिमाते नंदीश्वर द्वीपप्रमुखनेविषे अनेजेहशंनीजिनप्रतिमाते कृत्रिम ते सर्वेस्थापनाजाणवी जेम चित्रामनीस्त्रीजिहांमांडीहोय तिहांसाधुरहेनही कारणके स्थापनास्त्रीछे तेस्त्रीतुल्यजाणवी तेमजजिनप्रतिमा जिनसमानजाणवी इहां कोइक अज्ञानीजीवकहेछे जे स्थापनामांज्ञानादिगुणनथी तेथी स्थापनानेमानवी पूजवीनही तेने उत्तरकहेछे के स्थापनारूपस्त्रीमां स्त्रीपणानागुणनथी तोपणतेविकारनुं कारणथायछे तेमज जिनप्रतिमापणध्याननुंकारणछे अनेजेएमपुछेके हिंसाथायछे अनेभगवंतेतोदयाने धर्मकह्योछे तेहनेएमकहेवुंजे परदेशीराजाकेसीगुरुने वांदवाने अर्थें बीजेदीवसें महोटा आडंबरथीआव्यो तेवंदनामां हिंसाथयी पणलाभकारण गणतांत्रोटोनथयो बीजोमल्लि-नाथजीयेंछमित्रप्रतिबोधवाने पुतलीनोदृष्टांतकह्यो ते हिंसातोघणीथयी पणतेलाभना कारणमांगणीछे एमभावशुद्धहोय तिहांहिंसालागती नथी अथवा कोइकएमकहेछे जे अमेआपणेस्थानकेबेठानमोथुणंकहिसुं अमनेलाभथासेतेखरो पणभगवतीसूत्रमां भग-वानने वंदनाने अधिकारें तोतिहांजइवंदनाकरवानुंफलमहोटुंकह्युंछे तथानिक्षेपाने अधिकारें एम कह्युंजे भावनिक्षेपोएकलोथाय नही पण नामस्थापना तथाद्रव्य एत्रण मिल्याभावनिक्षेपोथाय माटेस्थापनाअवश्यमानवी. हवेजेस्थापनानमाने तेनेकहियें जे चित्रामनीमूर्त्तिनेहिंसानापरिणामथीफाडे तेहनेहिंसालागेछे तेमज जिनवरनाध्याने जिनप्रतिमा पूजतांलाभथायछे एमयुक्ति करतां तथाआगमनीसाखेपणजिनप्रतिमानेजि-नसमानमाने तेआराधक अनेजेजिनप्रतिमानेनमाने तेणेस्थापनानिक्षेपोउथाप्यो अने स्थापनाउथापीतो द्रव्यतथाभावनिक्षेपो थापनाविनाथायनही माटेद्रव्यतथाभावपण

उथाप्यो एम त्रणनिक्षेपाउथाप्या तेवारें सिद्धांतउथाप्याज माटे जे जिनप्रतिमाने नही माने ते विराधक जाणवो तेस्थापना इत्तर अने यावत्कथिक एवे जे दें छे.

३ द्रव्यनिक्षेपो कहे छे. जेनो नामपण होय तथा आकारथापनागुणपण होय अने लक्षण होय पण आत्मोपयोग न मिले ते द्रव्यनिक्षेपो जाणवो एटले अज्ञानी जीव ते जीवस्वरूपना उपयोग विना द्रव्यजीव छे अणुवउगो दव्वं इति अनुयोगद्वारवचनात् वली कह्युं छे जे सिद्धांत वांचतां पुछतां पदअक्षरमात्रा शुद्ध अर्थ करे छे अने गुरुमुखे सद्दहे छे ते पण शुद्ध निश्चें पोतानी सत्ता उलख्या विना सर्व द्रव्यनिक्षेपामां छे जे भाव विना द्रव्यपणो छे ते पुण्यबंधनुं कारण छे पण मोक्षनुं कारण नथी एटले जे करणीरूप कष्टतपस्या करे छे अने जीव अजीवपदार्थनी सत्ता उलखी नथी तेने भगवतीसूत्रमां अव्रती तथा अपच्चखाणी कह्या छे तथा जे एकली बाह्यकरणी करे छे अने पोते साधु कहेवाय छे ते मृषावादी छे एम उत्तराध्ययनसूत्रमां कह्युं छे नमुणीरन्नवासेणं एवचनें नाणेणयमुणीहोइ ॥ एवचनथी जे ज्ञानवान ते मुनि छे अने जे अज्ञानी ते मिथ्यात्वी छे तथा कोइक गणितानुयोगना नरकदेवतानाबोल अथवा यतिश्रावकनो आचार जाणीने कहे जे अमे ज्ञानी छैयें ते पण ज्ञानी नथी पण जे द्रव्यगुणपर्याय जाणे तेने ज्ञानी कहियें श्रीउत्तराध्ययने मोक्षमार्गें कह्यो छे गाथा एयंपंचविहंणाणं दव्वाणयगुणाणय ॥ पज्जवाणसव्वेसिं नाणंनाणीहिंदंसियं ॥ १ ॥ माटे वस्तुसत्ता जाण्याविना ज्ञानी समजवुं नही अने नवतत्त्व उलखे ते समकेति अने एहवा ज्ञानदर्शन विना जे कहे के अमे चारित्रिआ छैयें ते पण मृषावादी छे कारण के श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्ये कह्युं छे जे नाणंदंसण नाणं नाणेणविनान हुंतिचरणगुणा ॥ एवचन छे ते माटे आज केटलाक ज्ञानहीन क्रियानो आडंबर देखाडे छे ते ठग छे तेहनो संग करवो नही एबाह्यकरणी अभव्यजीवने पण आवे माटे एबाह्य करणी ऊपर राचवुं नही अने आत्मानुं स्वरूप उलख्या विना सामायक पडिकमणा पच्चखाण करवां ते सर्व द्रव्यनिक्षेपामां पुण्याश्रय छे पण संवर नथी श्रीभगवतीसूत्रमध्ये कह्युं छे आयाखलुसामाइयं ॥ एआलावाथी जाणजो तथा जीवस्वरूप जाण्या विना तपसंयम पुण्यप्रकृति ते देवतानाभवनुं कारण छे पुव्वतवेणंपुव्वसंयमेणंदेवलोएउववज्जंतिनो चेवणंआयत्ताभावबत्तवयाए एआलावो भगवतीमां कह्यो छे तथा जे क्रियालोपी आचारहीन छे अने ज्ञानहीन छे मात्र गछनी लाजें सिद्धांत भणे वांचे छे व्रतपच्चखाण करे छे ते पण द्रव्यनिक्षेपो जाणवो एम श्रीअनुयोगद्वारमां कह्युं छे इमेसमणगुणमुक्क योगीछकायनिरणुकंपा ॥ हयाइवउद्दामा ॥ गयाइवनिरंकुसा ॥ घट्ठामट्ठातुप्पोट्ठा ॥ पंडुं रयाउरगणाजिणाणं ॥ आणाएसछंदा ॥ विहरिऊणउभउकालंआवस्सगस्सउवट्ठंतितं ॥ लोगुत्तरियंदव्वावस्सयं ॥ अर्थ ॥ जेने छकायनी दया नथी घोडानी पेरें उन्मद छे हाथीनी पेरें निरंकुश छे पोताना शरीरने धोवता मसलता उजले कपडे शिणगार करी गछनाममृत्वभा-

वेंमाचतां स्वेछाचारी वीतरागनीआज्ञाजांजता जेतपक्रियाकरेछे तेपण ऊव्यनिक्षेपा-मांछे अथवाज्योतिषवैद्यककरेछे अनेपोताने आचार्य उपाध्यायकहेवरावीने लोकपासेंम-हिमाकरेछे तेपत्रीबंधखोटारूपैयाजेवाछे घणाजवजमसे माटेअवंदनिकछे एसाखउत्त-राध्ययनमध्ये अनाथीमुनिना अध्ययनथकीजाणवी अनेसूत्रनाअर्थगुरुमुखेसिख्याविना तथानयप्रमाणजाण्याविना निश्चेंआत्मानुंस्वरूप उंलख्याविना निर्युक्तिविनाउपदेशआपेछे तेपोतेतोसंसारमांबुम्याछे पणजे तेमनीपासेवेसेछे तेमनेपण संसारमांबुमावेछे एमप्रश्नव्याकरणसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्रमांकह्युंछे अज्ञछचेवसोलसमंइत्यादि अनेजगवतीसूत्रमांपणकह्युंछे सुतछोखलुपढमो बीउनिर्युत्तिमिसउंजणिउं ॥ इच्चोतईयणुउंगो नाणुन्नाउजिणवरेहिं ॥ अनेकेटलाकएमकहेछेजे अमेसूत्रऊपरअर्थकरियेछैयें तो निर्युक्ति तथाटीकाप्रमुखनुं शुंकामछे तेपणमृषावादछे केमकेश्रीप्रश्नव्याकरणमां वयणतियंलिंगतियं इत्यादिकजाण्याविना अनेनयनिक्षेप जाण्याविना जेउपदेशआपे तेमृषावादछे एमअनेकसूत्रमां कह्युंछे माटेबहुश्रुतपासेउपदेशसांजलवो श्रीउत्तराध्ययनमध्ये बहुश्रुतने मेरुनीतथासमुद्रनी अने कल्पवृक्षादिसोलउपमादीधीछेएऊव्यनिक्षेपोकह्यो.

४ जावनिक्षेपोकहेछे. जे नाम स्थापना अने ऊव्य एत्रणनिक्षेपाते एकजावनिक्षेपा विनाअशुद्धछे जे नामतथाआकार लक्षण गुणसहित वस्तु ते जावनिक्षेपोजाणवो उवउंगोजावइतिवचनात् एटले पूजा दान शील तप क्रिया ज्ञान एसर्वे जावनिक्षेपेसहितलाजनुंकारणछे इहांकोइकहेशेजे मननापरिणामदृढकरीनेजेकरियें तेनेजावकहियें एमकहेछे तेजूगछे एतोसुखनीवांछायें मिथ्यात्वीपणघणाकरेछे तेगणवुंनही इहांसूत्रनी साखे वीतरागनी आज्ञाहेयउपादेयनीपरीक्षाकरी अजीवतत्व तथा आश्रवतत्व अने बंधतत्व ऊपर हेयके० त्यागजाव अने जीवनाखगुणजे संवरनिर्जरा तथामोक्षतत्वऊपरेंउपादेय परिणामतेजावकहियें एटले रूपीगुणतेऊव्यनिक्षेपछे अनेअरूपीगुणते जावनिक्षेपछे एटले मनवचनकाया लेश्यादिकसर्वेऊव्यनिक्षेपामांछे अनेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्यध्यानप्रमुखसर्वेगुण जावनिक्षेपामांछे एजावनिक्षेपो ते नामस्थापनातथाऊव्य सहितहोय एटलेचारनिक्षेपाकह्या.

हवेचारनिक्षेपापदार्थऊपरलगामीदेखामेछे नामजीवतेचेतना अथवा मांचाने एकवाणने जीवकहीबोलावेछे तेनामनिक्षेपेजीवमूर्तिप्रमुखथापियें तेस्थापनाजीव एकेंद्रीथीपंचेंद्रीपर्यंत सर्वेजीवछे पणउपयोगमिलेनहीतेऊव्यजीव अनेमूर्तिमांजीवस्वरूपउंलखीसमकितनाउपयोगमांछे तेजावजीवएमधर्मास्तिकायादिकऊव्यमांपण जाणवुं नामथीधर्मास्तिकायकहीबोलाववो तेनामधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायएहवाअक्षरलखवा अथवादृष्टांतकारणे कांइकवस्तुथापवी ते स्थापनाधर्मास्तिकाय तथा धर्मास्तिकाय जे

असंख्यातप्रदेशी धर्मद्रव्यछे तेद्रव्यधर्मास्तिकाय एधर्मास्तिकायनेजेवारें चलणसहाय-गुणनी अपेक्षासहितळलखियें तेजावधर्मास्तिकाय.

हवे कोइकनोसाधुएहवोनामछे तेनामसाधु अनेस्थापनाकरियेंतेस्थापनासाधु तथा जे पंचमहाव्रतपाले क्रियाअनुष्ठानकरे सुजतोआहारलीये पणज्ञानध्याननोजेवो उपयो-गजोइये तेवोउपयोगनहोय तेद्रव्यसाधु जेजावसंवरमोक्षनोसाधकथइ जाव साधुनी करणीकरे तेजावनिक्षेपेसाधुकहियें.

कोइकनोअरिहंतनामछे तेनामअरिहंत अनेअरिहंतनीप्रतिमाते थापनाअरिहंत जेटलासुधीछद्मस्थअवस्थाछे द्रव्यअरिहंत अनेकेवलज्ञानपाम्यापछे लोकालोकनो जावजाणेदेखे तेजावअरिहंत एमसिद्धमांपणकहेवो.

कोइजीवनोज्ञानएहवोनाम अथवाजावेंअजीवनोनाम तेनामज्ञान तथाजेज्ञानपु-स्तकमांलख्युंछे तेस्थापनाज्ञान जेउपयोगविनासिद्धांतनोजणवो अथवाअन्यमतिना सर्व शास्त्रजणवा तथाज्ञशरीरादिकतेसर्वेद्रव्यज्ञान जेनवतत्वनुंजाणवुं तेजावज्ञान.

तथाकोइकनुंतपएहवुंनाम ते नामतप तथापुस्तकमां तपनीविधीनुंलखन ते थाप-नातप अने पुण्यरूपमासखमणादिककरवोतेद्रव्यतप जेपरवस्तुऊपरत्यागनोपरिणामते जावतप एमसंवरादिकसर्वेमांचारचारनिक्षेपाजाणवा तथाश्रीअनुयोगद्वारमध्येकह्युंछे यतः जत्थयजंजाणिज्जा निक्खेवंनिक्खिवेनिरवसेसं ॥ जत्थवीयनजाणिज्जा चोकयंनिक्ख वेतत्थ ॥ १ ॥ एचारनिक्षेपाकह्या एटलेशब्दनयकह्यो.

हवे छट्ठोसमभिरूढनयकहेछे जेवस्तुनाकेटलाकगुणप्रगट्याछे अनेकेटलाकगुण प्रग-ट्यानथी पणअवश्यप्रगटशे एहवीवस्तुनेवस्तुकहे तेवस्तुनालामांतरएककरीजाणे जेम जीव चेतन तथाआत्मा एहनोएकअर्थकहे ते समभिरूढनयकहियें एनयएकअंशऊ-णीवस्तुनेपूरेपूरीवस्तुकहे जेमतेरमागुणठाणेकेवलीहोय तेहनेसिद्धकहे ए नयनाजेद बिलकुलनथी एसमभिरूढनयकह्यो.

हवेएवंभूतनयकहेछे जेवस्तुपोतानेगुणेसंपूर्णछे अनेपोतानीक्रियाकरेछे तेने ते वस्तु कहीबोलावे जेममोक्षस्थानकें जेजीवपहोतो तेने सिद्धकहे जेमपाणीथीजरेलो स्त्रीना माथाऊपरआवतो जलधरणक्रियाकरतो तेने घमोकहेएएवंभूतनयकह्यो.

हवेसातनयनादृष्टांत श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथी लखियेंछैयें. जेमकोइकपुरुषेकोइकबी-जापुरुषनेपुछ्युं जेतमेकिहांवसोछो तेवारेंतेपुरुषेकह्युं हुंलोकमांवसुंछुं तेवारेंअशुद्ध नैग-मवालेपुछ्युं जेलोकनात्रणजेदछे १ अधोलोक २ त्रिछालोक ३ ऊर्ध्वलोक तेमांतुं किहां रहेछे तेवारेंशुद्धनैगमेंकह्युंजे त्रिछालोकमांरहुंछुं वलीपुछ्युंजे त्रिछालोकमांअसंख्याता द्वीपसमुद्रछे तेमांतुंकयाद्वीपमांरहेछे तेवारें विशुद्धनैगमेंकह्युंजे जंबुद्वीपमांरहुंछुं तेजं-

बुद्वीपमांखेत्रघणाछे तेमांतुंकयाखेत्रमांरहेछे तेवारें अतिशुद्धनैगमबोल्यो जे जरतक्षेत्रमांरहुंछुं तेजरतखेत्रनाछखंमछे तेमांहेलाकयाखंममांरहेछे तेवारेंकह्युंजेमध्यखंममांरहुंछुं एमक्रमेपूछतां छेल्लेकह्युंजेआपणादेशमांरहुंछुं तेवारेंफरीपुछ्युंजे देशमांतोनगरग्रामघणा छे तोतुंकिहांरहेछे तेवारेंकह्युंजे हुंअमुकगाममांरहुंछुं तेगाममांवलीअमुकपामो तथा अमुकघरबताव्युं तिहांसुधीनैगमनयजाणवो.

अनेसंग्रहनयवालोबोल्योजे मारापोतानाशरीरमां वसुंछुं तथाव्यवहारनयवालो बोल्योजे संथारेबेठोछुंतेटलाजबिछानामांरहुंछुं अनेरुजुसूत्रनयवालेकह्युंजे माराआत्माना असंख्याताप्रदेशमांरहुंछुं वलीशब्दनयकहेजे मारास्वजावमांरहुंछुं तेमजसमजिरूढनयकहेजे हुंमारागुणमां रहुंछुं अने एवंजूतनयवादीकहेजे ज्ञानदर्शन गुणमां वसुंछुं एदृष्टांतकह्यो तेमसर्ववस्तुमांकहेवुं.

तथाकोइके प्रदेशमात्रखेत्रअंगीकारकरी पुछ्युंजे एप्रदेशकयाद्रव्यनोछे तेवारेंनैगमनयबोल्योजेछएद्रव्यनोप्रदेशछे केमके एकआकाशप्रदेशमध्येछद्रव्यजेलाछे तेवारेंसंग्रहनयबोल्यो जे कालद्रव्यतोअप्रदेशीछे तेमाटे सर्वलोकमां एकसमयसरिखोछे पण ते एक आकाशद्रव्यनाप्रदेशमां जूदोनथी माटे कालविनापांचद्रव्यनो प्रदेशछे तेवारेंव्यवहारनयबोल्योके जेद्रव्यमुख्यदेखायछे तेहनोप्रदेशछे तेवारेंरुजूसूत्रनय बोल्योके जे द्रव्यनोउपयोगदेइपुछियें तेद्रव्यनोप्रदेशछे जोधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइ पुछियें तो धर्मास्तिकायनोप्रदेशछे जोअधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइपुछियें तोअधर्मास्तिकायनो प्रदेशछे तेवारेंशब्दनयबोल्योके जे द्रव्यनोनामलइपुछियें तेद्रव्यनोप्रदेशछे हवे समजिरूढनयबोल्योजे एकआकाशप्रदेशमध्येधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशछे अधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशछे अनेजीवनाअनंताप्रदेशछे पुफलनापणअनंताप्रदेशछे तेवारेंएवंजूतनय बोल्यो के प्रदेशनेजेद्रव्यनी क्रियागुणपर्यायअंगीकारकरी देखियें तेसमयते प्रदेश ते द्रव्यनोगणियें एप्रदेशमांसातनयकह्या.

हवेजीवमां सातनयकहेछे प्रथमनैगमनयनी मते जेगुणपर्यायवंत शरीरसहित ते जीव एटलेशरीरमांजेबीजा पुफल तथाधर्मास्तिकायादिकद्रव्यछे तेसर्वजीवमांजगण्या तेवारेंसंग्रहनयबोल्यो जेअसंख्यातप्रदेशी तेजीव एटलेएकआकाशना प्रदेशटल्या बीजासर्वद्रव्यएमांगणाणा तेवारेंव्यवहारनयबोल्यो जेविषयलेयी कामवातसंजारे तेजीव इहांधर्मास्ति अधर्मास्तिकाय आकाश तथाबीजापुफलसर्वेटल्या पणपांचेइंद्री तथा मन अनेलेश्याएपुफलछे तेजीवमांगणाणा कारणके विषयादिकतोइंद्रियोलेछे तेजीवथीन्याराछेपणइहांव्यवहारनयमते जीवजेलालीधाछे तेवारें रुजुसूत्रनयबोल्यो जेउपयोगवंत तेजीव इहांइंद्रियादिकसर्वेटल्या पणअज्ञान तथा ज्ञाननाजेदटल्यानही हवेशब्दन-

यबोल्यो जे नामजीव स्थापनाजीव द्रव्यजीव भावजीव इहांजीवमां गुणनिर्गुणनोभेद पड्योनही तेवारें समभिरूढनयबोल्यो जे ज्ञानादिगुणवंततेजीव तेवारें मतिज्ञानश्रुतज्ञान इत्यादिकसाधकअवस्थानागुण तेसर्वेजीवस्वरूपमां आव्या हवेएवंभूतनयबोल्यो जे अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र शुद्धसत्तावंत तेजीवएनयेजेसिद्धअवस्थामां गुणहता तेजग्रह्या एसातनयेजीवद्रव्यकह्यो.

हवेसातनयेंधर्मकहेछे नैगमनयबोल्योजे सर्वधर्मछे केमकेसर्वप्राणीधर्मनेचाहेछे एनयअंशरूपधर्मने धर्मएहवुंनामकहे हवेसंग्रहनयबोल्यो जे वडेरायेंआदर्यो तेधर्म एणेअनाचारछोड्यो पणकुलाचारनेधर्मकह्यो व्यवहारनयबोल्योजे सुखनुंकारणतेधर्म एणे पुण्यकरणीनेधर्मकरीमान्यो ऋजुसूत्रनयमते जेउपयोगसहित वैरागरूपपरिणामते धर्मकहियें एनयमां यथाप्रवृत्तिकरणनापरिणामप्रमुखसर्वेधर्ममांगण्या तेमिथ्यात्वीनेपणहोय हवेशब्दनयबोल्यो जे धर्मनुंमूलसमकितछे माटेसमकिततेजधर्म तेवारेंसमभिरूढनय बोल्यो जे जीव अजीव नवतत्व तथाछद्रव्यनेउंलखीने जीवसत्ताध्यावे अजीवनोत्याग करे एहवोज्ञानदर्शन चारित्रनोशुद्धनिश्चय परिणामतेधर्म एनये साधकसिद्धनापरिणामतेधर्मपणेलीधा एवंभूतनयबोल्यो जे शुक्लध्यान रूपातीतनापरिणाम क्षपकश्रेणीकर्मक्षयना कारणतेधर्म जेजीवनोमूलस्वभाव तेवस्तुधर्म जेमोक्षरूपकार्यनेकरे तेधर्म एसातेनयें धर्म कह्यो.

हवे सातनयें सिद्धपणोकहेछे नैगमनयनीमतेसर्वजीवसिद्धछे केमके सर्वजीवना आठरुचकप्रदेश सिद्धसमाननिर्मलछे माटे संग्रहनयकहेजे सर्वजीवनीसत्ता सिद्धसमानछे एणेपर्यायार्थिकनयेंकरी कर्मसहितअवस्थातेटालीने द्रव्यार्थिकनयेंकरी अवस्थाअंगीकारकरी तेवारेंव्यवहारनयबोल्यो जे विद्या लब्धिप्रमुखगुणेकरी सिद्धथयोतेसिद्ध एनयेबाह्यतपप्रमुख अंगीकारकर्या हवेऋजुसूत्रनयबोल्यो केजेणे पोतानाआत्मानीसिद्धपणानी सत्ताउंलखी अने ध्याननोउपयोगपणतेजवर्त्तेछे तेसमयें तेजीवसिद्धजाणवो एनयेसमकेतिजीवसिद्धसमानछे एमकह्युं हवेशब्दनयबोल्यो जेशुद्धशुक्लध्यान परिणाम नामादिकनिक्षेपेंतेसिद्ध तेवारेंसमभिरूढनयबोल्यो जे केवलज्ञान केवलदर्शन यथाख्यातचारित्र एगुणेसहित तेसिद्धजाणवा एनयें तेरमाचउदमागुणठाणाना केवलीने सिद्धकह्याअनेएवंभूतनयकहेछेकेजेना सकलकर्मक्षयथया लोकनेअंतेविराजमान अष्टगुण संपन्नतेसिद्धजाणवा एरीतेसिद्धपदेंसातनयकह्या एमसातनयमिल्यासमकेतिछे अनेजे एकनयनेग्रहणकरेतेमिथ्यात्वीछे एसातेनयसिद्धतेवचनप्रमाणछे अने एसात नयमां कोइपणनयने उथापेतेनुंवचनअप्रमाणछे.

हवेप्रमाणनोविचारकहेछे प्रमाणनाबेभेदछे एकप्रत्यक्षप्रमाण बीजुंपरोक्षप्रमाण

तेमां जेजीवपोतानाउपयोगथीद्रव्यनेजाणे तेप्रत्यक्षप्रमाणकहियें जेमकेवली छद्रव्य प्रत्यक्षप्रमाणेजाणे तथादेखे तेमाटेकेवलज्ञानतेसर्वथीप्रत्यक्षज्ञानछे अनेमनपर्यवज्ञान तेमनोवर्गणाप्रत्यक्षजाणे तथाअवधिज्ञानतेपुद्गलद्रव्यनेप्रत्यक्षजाणे माटे एबेज्ञानदेश-प्रत्यक्षछे बीजुंछद्मस्थज्ञानतेसर्वेपरोक्षप्रमाणछे.

हवे परोक्षप्रमाणकहेछे मतिज्ञाननो अनेश्रुतज्ञाननो उपयोगपरोक्षप्रमाणछे केमके जेशास्त्रनाबलथीजाणे तेपरोक्षप्रमाणकहियें तेपरोक्षप्रमाणनात्रणभेदछे १ अनुमानप्र-माण २ आगमप्रमाण ३ उपमानप्रमाण तेमां अनुमान एटले कोइक सहिनाणदेखीने जेज्ञानथाय जेम धुमाडोदेखीने अग्निनुंअनुमानथाय अनेआगमएटले शास्त्रनीसाख-थीजेवातजाणियें जेम देवलोकतथानरक निगोदविगेरेनोविचारआगमथी जाणियेंछे-यें तेआगमप्रमाण अने कोइकवस्तुनोदृष्टांतआपीने वस्तुनेउलखाववी तेउपमानप्रमा-णजाणवो एप्रमाणकह्या हवेसत्असत्पक्षथीसप्तभंगीकहेछे.

१ स्यात्के० अनेकांतपणे सर्वअपेक्षालेइ जीवद्रव्यमां आपणोद्रव्य आपणोखेत्र आपणोकाल आपणोभाव एमआपणेगुणपर्यायेंजीवछे तेमसर्वद्रव्यआपणेगुणपर्यायेंछे तेस्यात्अस्तिनामापहेलोभांगो थयो.

२ जेजीवमां बीजापांचद्रव्यना१ द्रव्य २ खेत्र ३ काल ४ भाव तेपरद्रव्यनागुणपर्याय जी-वमांथी एटलेपरद्रव्यनागुणनोनास्तिपणोसर्वद्रव्यमांछे एस्यात्नास्तिबीजोभांगोथयो.

३ द्रव्य स्वगुणेअस्ति अनेपरगुणेनास्ति एबेभांगाएकसमयेद्रव्यमांछे जेम जेसमये शुद्धस्वगुणनीअस्तिछे तेजसमयें परगुणनीनास्तिपणछे माटेअस्तिनास्ति एबेहुभांगाभे-ळाछे तेस्यात्अस्तिनास्तित्रीजोभांगो थयो.

४ अस्ति अनेनास्ति एबेहुभांगा एकसमयमांछे तो वचनेकरीअस्तिएटलोबोलतां असंख्यातासमयलागे तेथीनास्तिभांगो तेजवखतेकहेवाणोनही अने जोनास्तिभांगो कह्यो तोअस्तिपणोनाव्यो माटेएकजअस्तिकहेतांथकां नास्तिपणोतेजसमयेद्रव्यमांछे तेनहीकहेवाणो माटेमृषावादलागे तेमजनास्तिकहेतां अस्तिनोमृषावादलागे माटेवच-नेअगोचरछे एकसमयमांबेहुवचनबोल्याजायनही केमकेएकअक्षरबोलतां असंख्याता समयलागेछे माटे वचनथीअगोचरछे तेस्यात्अवक्तव्य एचोथोभांगोकह्यो.

५ तेअवक्तव्यपणो वस्तुमांअस्तिधर्मनोपणछे माटेस्यात्अस्तिअवक्तव्यपांचमोभंगोकह्यो.

६ तेमजनास्तिधर्मनोपणअवक्तव्यपणोवस्तुमध्येछे माटेस्यात्नास्तिअवक्तव्यछ-ठोभंगोजाणवो.

७ तेअस्तिपणोतथानास्तिपणोबेहुधर्मएकसमयेवस्तुमध्येछे पण वचनथी अवक्तव्यछे माटेस्यात्अस्तिनास्तियुगपत्अवक्तव्य एसातमोभंगोकह्यो.

हवे एसातभंगा नित्य तथाअनित्यपणामांलगाकेछे १ स्यात्‌नित्यं २ स्यात्‌अनित्यं ३ स्यात्‌नित्यानित्यं ४ स्यात् अवक्तव्यं ५ स्यात् नित्यअवक्तव्यं ६ स्यात्‌अनित्यअवक्तव्यं ७ स्यात्‌नित्यानित्यंयुगपत्‌अवक्तव्यं एमज एकअनेकनासातभंगाकहेवा तथा गुणपर्यायमां पणकहेवा केमकेसिद्धमध्येनयनथी तोपणसप्तभंगीतोसिद्धमांछे.

हवेसत्ताओलखाववानेत्रिभंगीयोकहेछे १ मिथ्यात्वदशा तेबाधकदशा २ समकेत गुणठाणाथीमांडीने अयोगीकेवली गुणठाणासुधीसाधक दशाजाणवी ३ सर्वेकर्मथी रहिततेसिद्धदशा १ ज्ञाननोजाणपणोतेजीवनोगुण २ तेनोज्ञातातेजीव ३ ज्ञेयतेसर्वद्रव्य १ ध्यानतेजीवनास्वरूपनो २ तेध्याननोध्याताजीव ३ ध्येयआत्मानोस्वरूप १ कर्त्तातेजीव २ कर्मतेएकमोहवीजोबंध ३ क्रियातेएकसंवरबीजीआश्रव १ कर्मतेचेतना नेकर्मबंधनापरिणाम २ कर्मनुंफलतेचेतनानेजे कर्मउदयनापरिणाम ३ ज्ञानचेतनाते जीवनोस्वगुण तेआत्मानात्रणभेदछे १ अज्ञानीजीव शरीरादिकपरवस्तुनेआत्मबुद्धीयें करीमाने तेपहेलोबहिरात्मा २ जेदेहसहितजीवछे तेपणनिश्चेसत्तागुणसिद्धसमानछे एटलेपोतानाजीवने सिद्धसमानकरीध्यावे तेबीजोअंतरआत्माजाणवो ३ कर्मखपावीकेवलज्ञानपाम्याते अरिहंत तथासिद्ध सर्वेपरमात्माजाणवा एत्रिभंगीनोविचारकह्यो एटले आठपक्षनोविचारकह्यो.

हवेएकद्रव्यमध्ये छसामान्यगुणछेतेकहेछे पहेलोअस्तित्वते जेछद्रव्यआपणागुणपर्यायप्रदेशेकरीअस्तिछे तेमां धर्म अधर्म आकाश अने जीव एचारद्रव्यनो असंख्याता प्रदेशमिल्या खंधथायछे अनेपुद्गलमांखंधथवानीशक्तिछे माटेएपांचद्रव्यअस्तिकायछे अनेछठोकालद्रव्यनोसमय कोइकोइथीमिलतोनथी केमके एकसमयविणस्यापछे बीजो समयआवेछे माटेकालअस्तिकायनथी एद्रव्यमांअस्तित्वपणोकह्यो.

२ वस्तुत्वके० वस्तुपणो कहेछे तेद्रव्यछएएकठाएकखेत्रमध्येरह्याछे एकआकाशप्रदेशमांधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशरह्योछे तथाअधर्मास्तिकायनोपण एकप्रदेशरह्योछे अने जीवअनंताना अनंताप्रदेशरह्याछे पुद्गलपरमाणुअनंतारह्याछे तेसर्वेपोतानीसत्तालीधाथकारह्याछे पणकोइद्रव्यकोइद्रव्यसाथेमिलीजातोनथी तेवस्तुपणो.

३ द्रव्यत्वके० द्रव्यपणोते सर्वेद्रव्यपोतपोतानीक्रियाकरे एटलेधर्मास्तिकायमांचलणगुणते सर्वेप्रदेशमध्येछे सदाकालेंपुद्गल तथाजीवने चलाववारूपक्रियाकरेछे इहांकोइ पुछेजे लोकांतसिद्धखेत्रमांधर्मास्तिकायछे तेसिद्धनाजीवने चलाववापणोकरतीनथी ते केम? तेनेउत्तरकहेछेजेसिद्धनाजीवअक्रियछे म[illegible]नथी पणतेखेत्रमांजेसूक्ष्मनिगोदनाजीव तथापुद्गलछे तेहनेधर्मास्तिकायचलावेछे माटेपोतानीक्रियाकरेछे तेमजअधर्मास्तिकायजीवतथापुद्गलने स्थिरराखवानीक्रियाकरेछे तथाआकाशद्रव्य ते सर्वेद्रव्य-

नेअवगाहनारूपकार्यकरेछे इहांकोइपुछेजे अलोकाकाशमांतो बीजुंकोइद्रव्यनथी तो अलोकाकाश कयाद्रव्यनेअवगाहदानआपेछे तेनेउत्तरकहेछे जेअलोकाकाशमां अवगाहकरवानीशक्तितो लोकाकाश जेवी ज छे परंतु तिहां अवगाहनो दान लेनार द्रव्य कोइनथी माटे अवगाहदानकरतोनथी अनेपुद्गलद्रव्य मिलवाविखरवारूपक्रियाकरे छे तथा कालद्रव्यवर्तनारूपक्रियाकरेछे अनेजीवद्रव्यज्ञानलक्षणउपयोगरूपक्रियाकरेछे एमसर्वद्रव्यपोतानेपरिणामीस्वसत्तानीक्रियाकरेछे एद्रव्यत्वपणोकह्यो.

४ प्रमेयत्वंके० प्रमेयपणो जे छद्रव्यमांप्रमेयपणोछे तेनोप्रमाण केवलीपोतानाज्ञानथीकरेछे जेधर्मास्तिकायतथाअधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय एकेकद्रव्यछे अने जीवद्रव्यअनंताछे तेहनीगणतिकहेछे संज्ञीमनुष्यसंख्याताछे असंज्ञीमनुष्य असंख्याताछे नारकीअसंख्याताछे देवताअसंख्याताछे तिर्यचपंचेंद्रीअसंख्याताछे बेंद्रीअसंख्याताछे तेंद्रीअसंख्याताछे चौरेंद्रीअसंख्याताछे तेथकीपृथ्वीकायअसंख्याता अपकायअसंख्याता तेउकायअसंख्याता वायुकायअसंख्याता प्रत्येकवनस्पतिजीवअसंख्याता तेथकी सिद्धना जीवअनंता तेथकीबादरनिगोदनाजीवअनंतगुणा एटलेबादरनिगोदतेकंदमूल आदु सूरण प्रमुख एहने सुइने अग्रभागें अनंताजीवछे तेसिद्धना जीवथी अनंतगुणाछे अनेसूक्ष्मनिगोद सर्वेथीअनंतगुणाछे तेसूक्ष्मनिगोदनोविचार कहेछे जेटला लोकाकाशना प्रदेशछे तेटला गोलाछे तेएकेक गोलामां असंख्यातानिगोदछे निगोद शब्दनो अर्थएछे जे अनंताजीवनो पिंडभूतएकशरीर तेहने निगोदकहियें तेएकेकी निगोदमध्ये अनंताजीवछे तेअतीतकालना सर्वसमय तथाअनागतकालनासर्वसमय अनेवर्त्तमानकालनोएकसमयतेनेभेलाकरी अनंतगुणाकरियें एटला एकनिगोदमांजीवछे एटले अनंताजीवछे एसंसारीजीवएकेकानाअसंख्याताप्रदेशछे अने एकेकाप्रदेशे अनंतिकर्मवर्गणालागीछे ते एकेकवर्गणामध्येअनंतापुद्गलपरमाणुछे एमअनंतापरमाणु जीवसाथेलाग्याछे तेथकीअनंतगुणापुद्गलपरमाणुजीवथीरहितछुटाछे गाथा ॥ गोलायअसंखिज्जाअसंखनिगोयउ हवइगोलो ॥ इक्किक्कमिनिगोए अनंतजीवामुणेयव्वा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ लोकमांहेअसंख्यातागोलाछे एकेकागोलामध्येअसंख्यातिनिगोदछे एकेकनिगोदमांअनंताजीवछे गाथा ॥ सत्तरससमहिआ । किरइगाणुपाणमिहुंतिखुड्डभवा ॥ सगतिससयतिहुत्तर । पाणुंपुणईगमुहुत्तंमि ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदियाजीवतेमनुष्यनाएक उसासमां सत्तरभवजाजेराकरेछे अनेसकत्रीससोतिहुंतेर श्वासोश्वासएकमुहूर्त्तमांथाय गाथा पणसठिसहस्सपणसय ॥ छत्तिसाइगमुहुत्तखुड्डभवा ॥ आवलियाणंदोसय ॥ छप्पन्नाएगखुड्डभवे ॥ १ ॥ अर्थ निगोदनाजीवएकमुहूर्तमां ६५५३६ भवकरे अनेनिगोदनोएकभव २५६ आवलीनोछे क्षुल्लकभवनोएप्रमाणछे ॥ गाथा ॥ अत्थिअनंताजी-

वा जेहिंनपत्तोतसाइपरिणामो ॥ उवज्जंतिचयंतिय पुणोवितछेवतछेव ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदमांअनंताजीवएहवाछे जेजीवत्रसपणोपहेलाकिवारेपाम्यानथीअनंतोकालपूर्वेगशो अनेअनंतोकालजाशे पणतेजीववारंवारतिहांजउपजेछे अने तिहांजचवेछे एमएक निगोदमांअनंताजीवछे तेनिगोदनाबेभेदछे एकव्यवहारराशीनिगोद अनेबीजो अव्यवहारराशीनिगोद तेमांजेबादरएकेंद्रीपणो जावेंत्रसपणोपामिनेपाछानिगोदमांजाइ पड्याछे तेनिगोदियाजीवने व्यवहारराशीयाकहियें अनेजेजीवकोइपणकालेनिगोदमांथीनिकल्यानथी तेजीवअव्यवहाररासीयाकहियें अनेइहांमनुष्यपणाथीजेटलाजीवकर्मखपावीने एकसमयमांमोक्षजायछे तेटलाजीवतेजसमये अव्यवहारराशी सूक्ष्मनिगोदमांथीनिकलीनेउचांआवेछे जोदशजीवमोक्षजायतो दशजीवनिकले कोइकवेलाएजव्यजीव उछानिकलेतो तेछेकाणेएकवेअजव्यनिकले पणव्यवहारराशीमांजीवकोइवधेघटे नही एवा निगोदनाअसंख्यातालोकमांहेलागोलाते छदिशीनाआव्यापुद्गलने आहारादिपणेलेछे तेसकलगोलाकहेवाय अने लोकअंतना प्रदेशेजे निगोदनागोलारह्याछे तेने त्रणदिशीनाआहारनीफरशनाछे माटेविकलगोलाकहियें एसूक्ष्मनिगोदमां पांच थावरनासूक्ष्मजीव तेसर्वलोकमांकाजलनीकुंपलीनीपरे जस्याथकाव्यापीरह्याछे अनेसाधारणपणोते मात्रएकवनस्पतिमांजछे पणचारथावरमांनथी एसूक्ष्मनिगोदमांअनंतुदुःख छे तेनुंउदाहरणकहेछे सातमीनरकनुंआउष्य तेत्रीससागरोपमनुंछे तेत्रीससागरोपमनाजेटलासमयथाय तेटलावखतसातमीनरकमां उत्कृष्टोतेत्रीससागरोपमनेआयुषेकोइकजीवउपजे तेटलाजवमांजेटलुंछेदन भेदननुंदुःखथाय तेसर्वेएकठुंकरियें तेथीअनंतगुणुंदुःखनिगोदनाजीव एकसमयमांजोगवेछे दृष्टांत जेमकोइकमनुष्यनेसाढात्रणक्रोड लोढानीसुइनेअग्निथीतपावीने कोइकदेवतासमकालेचोभे तेनेजेवेदनाथाय तेथीअनंत गुणीवेदनानिगोदमध्येछेअनेजव्यजीवनेनिगोदनुंकारण तेअज्ञानदशाछे माटेतेहनो त्यागकरो एनिगोदनोविचारकह्यो एसर्वप्रमेयनोप्रमाताआत्मा पोतानाज्ञानगुणेकरी प्रमेयनोप्रमाणकरेएप्रमेयत्वपणोकह्यो.

५ सत्वपणो तेछद्रव्यएकसमयमांउपजे विणशेछे अनेस्थिरपणछे उत्पादव्यय ध्रुवपणोतेहिजसत्पणो उत्पादव्ययध्रुवयुक्तसत् इतितत्वार्थवचनात् तेविस्तारथी कहिदेखारुंछे जे धर्मास्तिकायनाअसंख्याताप्रदेशछे तिहांएकप्रदेशमां अगुरुलघुअसंख्यातोछे अनेबीजाप्रदेशमांअनंतो अगुरुलघुछे त्रीजाप्रदेशमां संख्यातोअगुरुलघुछे एमअसंख्याताप्रदेशमां अगुरुलघुपर्यायघटतो वधतोरहेछे तेअगुरुलघुपर्यायचलछे तेजेप्रदेशमां असंख्यातोछे तेप्रदेशमां अनंतोथायछे अने अनंताने ठेकाणे असंख्यातोथायछे एमलोकप्रमाणअसंख्यातप्रदेशमां सरिखोसमकालें अगुरुलघुपर्यायफिरेछे तेजेप्रदेशमांअसंख्यातो

फिटीने अनंतोथायछे तेप्रदेशमांअसंख्यातपणानोविनाशछे अनेअनंतपणानोउपजवोछे अनेअगुरुलघुपणे गुणध्रुवछे एम उपजवो विणसवो अने ध्रुव एत्रणेपरिणामछे.

अधर्मास्तिकायमां पणएत्रणेपरिणाम असंख्यातप्रदेशेंसदासमयसमयमां परिणमी रह्याछे तेमांपण उपजे विणशे अनेथिररहेछे एमआकाशनाअनंताप्रदेशमां पण एक समयेंत्रणपरिणामपरिणमेछे अनेजीवनाअसंख्याताप्रदेशछे तेमध्येपणउपजे विणशे थिररहे तथापुद्गलपरमाणुमांपणसमयसमयथायछे अने कालनोवर्त्तमानसमयफिटीनेअतीतकालथायछे तो तेसमयमां वर्त्तमानपणानोविनाशछे अनेअतीतपणानोउपजवोछे कालपणेध्रुवछे एथुलथकीउत्पादव्ययध्रुवपणोकह्यो अनेवस्तुगते मूलपणे ज्ञेयनेपलटवे ज्ञाननोपणतेजासनपणेपरिणमवोथाय तेपूर्वपर्यायनाजासननोव्यय अनेअजिनवज्ञेयनापर्यायजासननोउत्पाद तथाज्ञानपणानोध्रुव एरीतेसर्वगुणना धर्मनीप्रवृत्तिरूप पर्यायनोउत्पादव्यय श्रीसिद्धजगवंतमांपणथइरह्योछे एमजधर्मास्तिकायनाप्रदेशें जेखेत्रगतअसंख्यातापुद्गलतथाजीवनें पहेलेसमय चलणसहायीपणोपरिणमतोहतो अनेबीजे समय अनंतपरमाणु तथाअनंताजीवप्रदेशने चलणसहायीथयो तेवारें असंख्याताचलणसहायनोव्यय अनेअनंताचलणसहायनोउपजवो अनेगुणपणेध्रुव एमधर्मद्रव्यमध्ये उत्पादव्ययथयीरह्योछे तेमजअधर्मादिकद्रव्यनेविषेपणजाववुं तथावलीकार्यकारणपणे उत्पादव्यय तथा अगुरुलघुनाचलणनोउत्पादव्यय पंचास्तिकायनेविषे कहेवुं तथाकालद्रव्यतेउपचारछे तेनुंस्वरूपसर्वउपचारथीजकहेवुं एरीते सर्वद्रव्यमांसत्पणोछे जो अगुरुलघुनोजेद न थाय तोपछेप्रदेशनोमांहोमांहेजेदकहेवोथाय तेमाटेअगुरुलघुनोजेद सर्वमांछे अने जेनोउत्पादव्ययरूपसत्पणोएकछे तेद्रव्यएकछे तथा जेनोउत्पादव्ययसत्पणो जूदो तेद्रव्यपणजूदोछे एटलेसत्के० सत्वपणो कह्यो.

६ अगुरुलघुत्वपणोकहेछे जेद्रव्यनोअगुरुलघुपर्यायछे तेछप्रकारनीहानिवृद्धिकरे तेमांछप्रकारनीवृद्धिछे १ अनंतजागवृद्धि २ असंख्यातजागवृद्धि ३ संख्यातजागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि हवेछप्रकारनीहानि कहेछे १ अनंतजागहानि २ असंख्यातजागहानि ३ संख्यातजागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एरीतेछप्रकारनीवृद्धि तथा छप्रकारनीहानि तेसर्वद्रव्यमांसदासमयसमयथयीरहीछे वृद्धितेउपजवोअनेहानितेव्ययकहियें एअगुरुलघुपणोकह्यो. नहीगुरुतथानहीलघु ते अगुरुलघुस्वजावकहियें एसर्वद्रव्यमध्येछे तेश्रीजगवतीसूत्रें सवदवा सवगुणा सवपएसा सवपज्जवा सवद्धाअगुरुलहुआए अगुरुलघुस्वजावनेआवरणनथी. तथाआत्मामध्येजेअगुरुलघुगुण तेआत्मानासर्वप्रदेशेंक्षायकजावथके

सर्वगुण सामान्यपणेपरिणमे पणअधिकाउंछापरिणमेनही तेअगुरुलघुगुणनुंप्रवर्तनजाणवुं तेअगुरुलघुगुणने गोत्रकर्म रोकेछे एअगुरुलघुस्वभावतेसर्वद्रव्यमांछे.

हवेगुणनीभावनाकहेछे तिहांजेटलाछएद्रव्यमां सरिखागुणछे तेसामान्यगुणकहियें अनेजेगुणएकद्रव्यमांछे अनेबीजाद्रव्यमांनथी तेविशेषगुणकहियें जेगुणकोइकद्रव्यमांछे अनेकोइकद्रव्यमांनथी तेसाधारणअसाधारणगुणकहियें एमएछद्रव्यमां अनंतगुण अनंतपर्याय अनंतस्वभावसदाशाश्वताछे जेमश्रीकेवलीभगवंतेंपरूप्या तेसर्वजेरीतेंछे तेरीतेंसद्दहणापूर्वकयथार्थउपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथीयथार्थपणेजाणवासद्दहवा एनिश्चेंज्ञानतेमोक्षनुंकारणछे जेजीव ज्ञानपाम्यो तेजीवविरतिकरेछे तेचारित्रकहियें ज्ञाननुंफल विरतिपणोछे तेमोक्षनुंतत्कालकारणछे.

हवेनिश्चेंचारित्र अनेव्यवहारचारित्रनोविचारकहेछे तेमांप्रथमव्यवहारचारित्रते जेप्राणातिपातविरमण प्रमुख पंचमहाव्रतरूप तेसर्वविरतिकहियेंअने स्थुलप्राणातिपात विरमणव्रतादिकश्रावकना बारव्रत तेदेशविरतिचारित्रजाणवुं एव्यवहारचारित्र सुखनुंकारणछे एवीकरणीरूपश्रावकनाबारव्रत अनेयतिनांपांचमहाव्रत तेअभव्यनेपण आवेतेथी देवतानीगतिपामे पणसकामनिर्जरानुं कारणनथाय इहांकोइ पुछेके मोक्षनुंकारणनथीतो एटलुंकष्ट शावास्तेकरियें तेने उत्तर जे त्यागबुद्धी निश्चेंज्ञानसहित चारित्र तेमोक्षनुंकारणछे माटेनिश्चेंचारित्रसहित व्यवहारचारित्रपालवुं तेनिश्चेंचारित्रकहेछे शरीर इंद्रिय विषय कषाय योग एसर्वेपरवस्तुजाणीछांडवा तथाआहार ते पुद्गलवस्तुजाणीछांडवो आत्माअणाहारीछे तेमाटेमुजने आहारकरवोघटेनही आहारतेपुद्गलछे आत्माअपुद्गलीछे तेमाटेत्यागकरवो तद्रूपजेतप तेतप निश्चेंचारित्रमांजाणवुं चारित्रकहेतांचंचलतारहित थिरतानापरिणाम अनेआत्मस्वरूपनेविषे एकत्वपणेरमणतन्मयतास्वरूपविश्रांति तत्वानुभवतेचारित्रकहियें तेचारित्रनाबेभेदछे एकदेशविरति बीजीसर्वविरति तिहांदेशविरतिके०श्रावकनाबारव्रत ते बारव्रतनिश्चेंतथा व्यवहारथीकहेछे.

१ प्राणातिपातविरमणव्रत ते परजीवने आपणाजीवसरिखोजाणी सर्वजीवनी रक्षा करे तेव्यवहारदयाथयी माटे व्यवहारप्राणातिपात विरमणव्रतजाणवुं अनेजे आपणोजीव कर्मवशपड्योदुःखीथायछे तेआपणाजीवनेकर्मबंधनथीमूकाववुं अने आत्मगुणरक्षाकरीगुणवृद्धिकरवी तेस्वदया बंधहेतुपरिणतिनिवारी स्वरूपगुणनेप्रगटपणेकरवा जेगुणप्रगटथयोतेराखवो एटलेज्ञानेकरी मिथ्यात्वटाली आपणाजीवनेनिर्मलकरे तेनिश्चेंथी प्राणातिपात विरमणव्रतकहियें.

२ मृषावादविरमणव्रतकहेछे. जूठुंवचनबिलकुलबोलवुंनही ते व्यवहारमृषावादविरमणव्रत अने जे परपुद्गलादिकवस्तुनेआपणीकहेवी तेमृषावादवचनछे अनेजीवनेअ-

जीवकहे तथाअजीवनेजीवकहे इत्यादिकअज्ञानभाव ते सर्वनिश्चेंमृषावादछे अथवा सिद्धांतनाअर्थ खोटाकहे एमृषावादजेणेछांड्यो तेनिश्चेंमृषावादविरमणव्रतकहियें एट-लेबीजाअदत्तादानादिक व्रतजोभांजे तोतेनोमात्रचारित्रभंगथाय पणज्ञानदर्शननोभं-गनथाय अनेजेणेनिश्चेंमृषावादनो भंगकस्यो तेणे समकेततथाज्ञानअने चारित्रएत्रणे-नोभंगकस्यो तथाआगममां एमकह्युंछेजे एकसाधुयेंचोथोव्रतभंगकस्यो अनेएकसाधुयें बीजोमृषावादव्रतभंगकस्यो तोजेणेचोथोव्रतभंगकस्यो तेआलोवणलेइशुद्धथायपणजे सिद्धांतनाअर्थनोमृषाउपदेशआपे तेआलोवणलीधे पणशुद्धथायनहि.

३ अदत्तादानविरमणव्रतकहेछे जेपारकुं धन वस्तु छुपावे चोरीकरे ठगबाजीकरी लीये तेचोरीछे एटलेपारकीवस्तुधणीनादिधाविनालेवीनहि एव्यवहारथी अदत्तादान विरमणव्रतजाणवुं अने जेपांचइंद्रियना त्रेवीसविषय आठकर्मवर्गणाइत्यादिक परवस्तु लेवीनहि तथा तेनीवांछानकरवी तेआत्मानेअग्राह्यछे माटे तेनिश्चेंथीअदत्तादानविरम-णव्रतकहियें इहांकोइपुछेजे विषयनी अनेकर्मनीवांछाकोणकरेछे तेनेउत्तरजे पुण्यनेभ-लोलेवायोग्यछे ते जीवकर्मनीवांछाकरेछे जेपुण्यना ४२ भेदछे तेचारकर्मनीशुभप्र-कृतिछे एटलेजे व्यवहार अदत्तादानतोनथीलेता पण अंतरंगपुण्यादिकनीवांछाछे तेने निश्चेंअदत्तादानलागेछे.

४ मैथुनविरमणव्रतकहेछे. जेपुरुषपरस्त्रीनोपरिहारकरे तथा जेस्त्रीपुरुषनोपरिहारकरे इहां साधुनेस्त्रीनोसर्वथात्यागछे अनेगृहस्थनेपरणेलीस्त्रीमोकलीछे परस्त्रीनोपच्चखाणछे ते-व्यवहारथीमैथुननुंविरमणकहियें अने जेविषयनाअभिलाषनुं तथाममतातृष्णानोत्याग परभाववर्णादिक परद्रव्यनास्वामित्वादिक तेनोअभोगीपणो आत्मास्वगुणज्ञानादिक-नोभोगीछे अनेएपुद्गलखंध ते अनंताजीवनीएठछे तेनेकेमभोगवे एरीतेत्यागतेनि-श्चेंथी मैथुन विरमणकहियें जेणेबाह्यविषयछांड्योछे अनेअंतरंगलालचछुटीनथीतो तेहनेतेमैथुननाकर्मलागेछे.

५ परिग्रहपरिमाणव्रतकहेछे. परिग्रह धन धान्य दास दासी चौपद जमीन वस्त्र आभरणनोत्याग तेमांसाधुनेतोसर्वथापरिग्रहनोत्यागछे तथाश्रावकनेइछापरिमाणछे जेटलीइछाहोय तेटलो परिग्रहमोकळोराखे बीजानीव्रतिकरे एव्यवहारथीकह्यो अने जेकर्मरागद्वेष अज्ञानद्रव्यज्ञानावरणीप्रमुखआठकर्म अनेशरीर इंद्रियनो परिहार एटलेकर्मने परजाणीछांडवो तेनिश्चेंथीपरिग्रहनोत्याग एटलेपरवस्तुनीमूर्छाछांडवी जेणे मूर्छाछोडी तेणेपरिग्रहछोड्योजछे एमजाणवुं.

६ दिशिपरिमाणव्रतकहेछे. तिहांतिरछिचारदिशी पांचमीअधो छठीऊर्ध्व एछदिशी-नाखेत्रनो मानकरीमोकलोराखे तेव्यवहारथीदिशीपरिमाणकहियें अनेचारगतिमां

जटकवुंतेकर्मनुंफलछे एमजाणी तेथीउदासीपणो अनेसिद्धअवस्थाशुंउपादेयपणो ते निश्चेंदिशिपरिमाणव्रतकहियें.

७ जोगोपजोग परिमाणव्रतकहेछे. जेएकवारजोगववुंतेजोग अनेजेवारंवार जोगववुं तेउपजोग तेनोपरिमाणकरे ते व्यवहारजोगोपजोगव्रतकहियें अने जेव्यवहारनयें कर्मनोकर्त्ताजोक्ताजीवछे अने निश्चयनयेतोकर्मनोकर्त्ता कर्मछे आत्माअनादिनोपरजा-वजोगीथयोछे तेथीपरजावग्राहक अनेपरजावरक्षकथयो एटले आत्मानी ज्ञायकता ग्राहकता जोग्यता रक्षकता बीगडे कर्त्तापणोबीगड्यो तेवारेंपरजाव कर्त्ताथयो तेपणप-रजावरंगीपणें आठकर्मनोकर्त्ताथयोछे पणसत्तायेंतोस्वजावनोकर्त्ताछे पणउपगरण अवराणा तेथीस्वकार्यकरीशकतोनथी विजावनेकरेछे अज्ञानपणे जीवनोउपयोगजळ्यो छे पणन्यारोछे पोताना ज्ञानादिकगुणनोकर्त्ताजोक्ताछे एहवोस्वरूपानुयायीपरिणामते निश्चें जोगोपजोगव्रत स्यागजाणवो.

८ अनर्थदंडविरमणव्रतकहेछे. जेकामविनाजीवनोविधकरवो पारकावास्ते आरंज प्र-मुखकरवानी आज्ञाप्रमुखआपवी तेव्यवहारअनर्थदंडअनेशुजाशुजकर्मतेमिथ्यात्व अविरति कषाय योगथी बंधायछे तेनेजीवआपणाकरीजाणे एनिश्चेंथी अनर्थदंड.

९ सामायकव्रतकहेछे. जे मनवचनकायाना आरंजटालीने तेनेनिरारंजपणेवर्त्तावे तेव्यवहार सामायकजाणवो अनेजेजीवना ज्ञान दर्शन चारित्रगुणविचारे सर्व जीव-नागुणनीसत्ता एकसमानजाणी सर्वजीवसाथे समतापरिणामेंवर्त्ते ते निश्चेंथी सम-तारूपसामायक कहियें.

१० देशावगाशीकव्रतकहेछे. जेमनवचनकायानायोग एकठोरकरी एकस्थानकेंबेसी धर्मध्यानकरवो तेव्यवहारदेशावगाशीककहियें अनेजेश्रुतज्ञानेकरीछद्रव्य उलखीने पांचद्रव्यनोत्यागकरे अनेज्ञानवंतजीवनेध्यावे तेनिश्चें देशावगाशीकव्रतकहियें.

११ पोशहव्रतकहेछे. जेचारपहोर अथवाआठपहोरसुधीसमतापरिणामे सावद्य छोडी निरारंजपणे सिझायध्यानमांप्रवर्त्ते तेव्यवहारपोशहकहियें अनेपोतानाजीव-नेज्ञानध्यानथीपोषीनेपुष्टकरे तेनिश्चेंथीपोशहव्रतकहियें जीवनेपोतानास्वगुणेकरी पो-षीजे तेने पोशहकहियें.

१२ अतिथिसंविजागव्रतकहेछे. जेपोशहनेपारणे अथवा सदासर्वदासाधुने तथाजै-नधर्मिश्रावकने पोतानीशक्तिप्रमाणे दानदेवुं तेव्यवहारअतिथिसंविजागकहियें अने पोताना जीवने अथवा शिष्यनेज्ञाननुंदानते जणवुं जणाववुं सुणवुं सुणाववुं तेनि-श्चेंथी अतिथिसंविजागव्रतकहियें एटले श्रावकनाबारव्रतकह्यां ते समकितसहित जेनिश्चेंतथाव्यवहारथीबारव्रतधारे तेजीवनेंपांचमेगुणठाणे देशविरति श्रावककहियें

देशके० देशथकी थोडीशीव्रतिपणोछेमाटे अनेयतिनेसर्वथीव्रतिपणोछे तेथीपांचमहा-व्रतजछे साधुनेपांचमहाव्रतमांसर्वव्रतआव्यां एनिश्चेंत्यागरूपज्ञानध्यान संवरनिर्जरामां थिरतानापरिणाम तेनिश्चेंचारित्रना एकउत्सर्ग बीजोअपवाद एवेमार्गछे तेमांजेउत्कृष्ट तीक्ष्णपरिणाम तेउत्सर्ग अनेजेउत्सर्गेराखवाने कारणरूप तेअपवाद उक्तंच॥ संघरणं-मिअसुद्धं दुन्नविगिन्हतदेतयाणहियं ॥ आउरदिठ्ठंतेणंते चेवहीयंअसंघरणे ॥ १ ॥ एटले ज्यांसुधीसाधकजावने बाधकनपडे त्यांसुधी जेहनीनाकही तेआदरवोनही अनेजोसाधकपरिणाम रहेतानदीठा तेवारेंजेहनीना ते आचरे तेनेअपवादमार्गकहियें जेआत्मगुणराखवाने करवो तेअपवाद अनेगुणीनेरागे जक्तियेंकरवो तेप्रशस्त एवेतो साधनछे अनेजेउदेकनेअखमवाथीकरवुं तेअतिचारछे तथासवलो अने उदेकमाटे अश-क्तपणेकरवुं तेपडिवाइछे तेमध्ये अपवादमार्गते परिणामदृढरहे तेमआज्ञायेंकरवो.

हवेचारध्यानकहेछे. १ आर्त्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान. तिहां पहेलावेध्यानतेअशुजकहियें अनेपाछलावेध्यानतेशुद्धछे तिहांमनमां आहटदोहटना परिणामते आर्त्तध्यानकहियें तेनाचारपायाछे १ जाइ मित्र सज्जन माता पिता स्त्री पुत्र धन प्रमुखइष्टवस्तुनोवियोगथयाथी विलापकरे तेपहेलो इष्टवियोगनामा आर्त्तध्यान तथा २ अनिष्टजेदुःखनांकारण दुश्मन दरिद्रीपणो तथा कुपुत्रादिमलवाथी मनमां दुःख चिंताउपजे तेअनिष्टसंयोग नामाआर्त्तध्यान ३ शरीरमांरोगउपनाथका दुःखकरे चिं-ताघणीकरे तेरोगचिंतानामाआर्त्तध्यान ४ मनमांआगलनावखतनोसोचकरे जेआवर्षमां आकामकरशुं आवतावर्षमांअमुककामकरशुंतोअमुकलाजथशेअथवा दान शील तपनुं फलमांगे जे आजवमांतपकीधोछे माटे आवतेजवें इंद्रचक्रवर्त्तिनी पदविमले एहवी आग-लाजवनी वांछाछे तेअग्रशोच आर्त्तध्याननो चोथो पायोजाणवो.एआर्त्तध्याननाचारजेदक ह्या एतिर्यंचगतिनाकारणछे एध्याननापरिणामतेपांचमाअथवाछठ्ठागुणठाणासुधीहोय.

२ जेकठोरपरिणामनुंचिंतवनतेरौद्रध्यान तेनाचारजेदछे १ जीवहिंसाकरीने हर्षे पामे अथवा बीजोकोइहिंसाकरतोहोय तेनेदेखी खुशीथाय अथवा गुरूनी अनुमोद-नाकरे तेहिंसानुवंधी रौद्रध्यान २ जूठुं बोलीनेमनमां हर्षपामे के जुओ में केवोकप-टकेलव्यो माराजूठापणानी खबरकोइनेपडीनही एवोमृषावादरूप परिणाम तेमृषानु-वंधीरौद्रध्यान ३ चोरीकरी अथवाठगाइकरी मनमां खुशीथाय के माराजेवो जोरावर कोणछे हुंपारकोमालखाउंछुं एवोपरिणामते चोरानुबंधि रौद्रध्यान ४ परिग्रह धनधान्य परिवार घणोवधवानी लालचहोय तेधनअथवा कुटुंबनेमाटे गमेतेवुंपापकरे अथवा घणो परिग्रहमिल्याथीअहंकारकरे तेपरिग्रहरक्षणानुबंधी रौद्रध्यान एरौद्रध्याननाचारजेद-

कह्या एध्यान नरकगतिपमाम्वानुं कारणछे महाअशुन्नकर्मनुं कारणछे एपांचमा गुणठा-णासुधीछेअने छठेगुणठाणेपण एकहिंसानुबंधी रौद्रध्याननापरिणाम कोइकजीवनेहोय.

हवेधर्मध्यानकहेछे. जेव्यवहारक्रियारूप कारणतेधर्म तथाश्रुतज्ञान अनेचारित्र ए उपादानपणेसाधनधर्म तथारत्नत्रयी न्नेदपणे तेउपादानशुद्धव्यवहार उत्सर्गानुयायी ते अपवादधर्मजाणवो अने अन्नेदरत्नत्रयी तेसाधनशुद्ध निश्चेनयें उत्सर्ग धर्म अने धम्मो वत्थुसहावो जेवस्तुनोसत्तागम शुद्धपरिणामिक स्वगुणप्रवृत्ति कर्त्रादिक अनंतानंदरूप सिद्धावस्थायेंरह्यो तेएवंन्नूत उत्सर्गउपादान शुद्धधर्म तेधर्मनुं न्नासन रमण एका-ग्रतापणे चिंतन तन्मयतानो उपयोग एकत्वनोचिंतववो तेधर्मध्यानकहियें तेना-पायाचारछे तेकहेछे.

१ आज्ञाविचयधर्मध्यानते जेवीतरागदेवनीआज्ञा साचीकरीसद्दहे एटलेन्नगवंते छद्रव्यनुंस्वरूप नयप्रमाणे निक्षेपासहीत सिद्धस्वरूप निगोदस्वरूप जेमकह्या तेमसद्दहे वीतरागनीआज्ञा नित्यअनित्य स्याद्वादपणे निश्चेव्यवहारपणे माने सद्दहे ते आज्ञा प्रमाणे यथार्थउपयोग न्नासनथयो तेनेहर्षेकरी तेउपयोगमध्ये निरधार न्नासन रमण अनुन्नवता एकता तन्मयपणो तेआज्ञावीचयधर्मध्यानकहियें.

२ अपायविचयधर्मध्यान तेजीवमां अशुद्धपणे कर्मनायोगथी संसारीअवस्थामां अनेक अपायके० दूषणछे तेअज्ञान राग द्वेष कषाय आश्रव एमारानथी हुं एथकी न्यारोछुं हुंअनंतज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यमयी शुद्ध बुद्ध अविनाशीछुं अजअनादि अनंत अक्षय अक्षर अनक्षर अचल अकल अमल अगम्य अनमी अरूपी अकर्मा अबंधक अनुदय अनुदीरक अयोगी अन्नोगी अरोगी अन्नेदी अवेदी अछेदी अखेदी अकषायी असखाइ अलेशी अशरीरी अणाहारी अव्याबाध अनवगाही अगुरुलघुप-रिणामी अतेंद्री अप्राणी अयोनी असंसारी अमर अपर अपरंपर अव्यापी अनाश्रित अकंप अविरुद्ध अनाश्रव अलख अशोकी असंगी अनारक लोकालोकज्ञायक एवो शुद्धचिदानंद मारोजीवछे एहवो एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचयधर्मध्यानजाणवो.

३ विपाकविचयधर्मध्यानकहेछे. जे एहवोजीवछे तोपण कर्मवशेंदुःखीछे तेकर्मनो विपाकचिंतवे जे जीवनोज्ञानगुण तेज्ञानावरणीकर्मेंदाब्योछे अनेदर्शनावरणीकर्मेंदर्शन गुणदाब्योछे एमआठकर्मे जीवना आठगुणदाब्याछे एटलेआसंसारमांन्नमतांथकां जी-वने जेसुखदुःखछे तेसर्वकर्मनांकीधांछे माटेसुखउपनेराचवुंनही अनेदुःखउपने दिल-गीरथवुंनही कर्मस्वरूपनीप्रकृति स्थिति रस अनेप्रदेशनो बंध उदय उदीरणा तथा सत्ता चिंतववानुं एकाग्रतापरिणाम तेविपाकविचयधर्मध्यान.

४ संस्थानविचयधर्मध्यानकहेछे. ते चउदराजमानलोकनुं स्वरूपविचारे जेएलोकते

चउदराजऊंचोछे तेमध्ये सातराजअधोलोकछे विचमां अढारसोयोजन मनुष्य खेत्र त्रिछोलोकछे तेऊपर कांइकउणो सातराज ऊर्ध्वलोकछे तेमांसर्व वैमानिक देवतावसेछे अनेऊपरें सिद्धशिलासिद्धखेत्रछे एरीतेंलोकनुंप्रमाणछे एलोकनुंसंस्थान वैशाखछे अनंतोकाल आपणाजीवें संसारमां भमतां सर्वलोकने जन्ममरणकरी फरस्योछे एवुंजेलोकस्वरूप तथालोकनेविषे पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथापरिणमन द्रव्यमध्ये गुणपर्यायनुं अवस्थान तेनो जे एकाग्रताये तन्मयचिंतवणपरिणाम एहवुंजेध्यान तेसंस्थानविचयधर्मध्यानकहियें एधर्मध्यानना चारपायाकह्या. एधर्मध्यान चोथागुणठाणाथी मांडीने सातमा गुणठाणासुधीछे.

हवेशुक्लध्यानकहेछे. शुक्लके० निर्मलशुद्ध परआलंबनविना आत्मानास्वरूपने तन्मयपणेध्यावे एहवुंध्यान तेनेशुक्लध्यानकहियें तेहनापायाचारछे तेकहेछे.

१ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार ते पृथक्त्वके० जीवथी अजीवजूदाकरवा स्वभाव विभाव तेनेजूदापृथक्पणे वहेंचणकरवी स्वरूपनेविषेपण द्रव्य तथापर्यायनो पृथक्पणे ध्यानकरी पर्यायतेगुणमां संक्रमावे अनेगुणते पर्यायमांसंक्रमणकरे एरीतेस्वधर्मनेविषे धर्मांतरभेद तेपृथक्त्वकहियें अनेतेनो वितर्क ते जेश्रुतज्ञाने स्थितउपयोग अनेसप्रविचार ते सविकल्पोपयोग एटलेएकचिंतव्यापछि बीजोचिंतववो तेने विचारकहियें एटलेनिर्मलविकल्पसहित पोतानीसत्तानेध्यावे तेपृथक्त्ववितर्कसप्रविचार पेहेलो पायो. एआठमागुणठाणाथीमांडी इग्यारमा गुणठाणासुधीछे.

२ एकत्ववितर्कअप्रविचारनामा बीजोपायोकहेछे. जेजीव आपणागुणपर्यायनीएकताकरी ध्यावे तेआवीरीतेके जीवनागुणपर्याय अने जीवते एकजछे अने माहारोजीव सिद्धस्वरूपएकजछे एवोएकत्वस्वरूप तन्मयपणेअनंता आत्मधर्मनोएकत्वपणेध्यान वितर्कके० श्रुतज्ञानावलंबीपणे अनेअप्रविचारके० विकल्परहित दर्शनज्ञाननो समयांतरें कारणताविना रत्नत्रयीनो एकसमयी कारणकार्यतापणेजेध्यान वीर्यउपयोगनीएकाग्रता तेएकत्ववितर्क अप्रविचारजाणवो. एपायोबारमागुणठाणेध्यावे एबेहुपायामां श्रुतज्ञानावलंबनीपणोछे पण अवधि मनपर्यव ज्ञानोपयोगेंवर्त्ततोजीव कोइध्यान करीसकेनही एबेज्ञान परानुयायीछे माटे. एध्यानथी घनघातीया चारकर्मखपावे निर्मलकेवलज्ञानपामे पछेतेरमेंगुणठाणे ध्यानंतरीकापणेछे तेरमानाअंते अनेचउदमे गुणठाणे एबेपायाध्यावे.

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिपायोकहेछे तेसूक्ष्म मन वचन कायानायोगरुंधे शैलेशीकरणकरी अयोगीथाय तेजेअप्रतिपातिनिर्मलवीर्य अचलतारूपपरिणाम तेसूक्ष्मक्रिया अप्रतिपातिध्यानजाणवुं इहांसत्ताये ८५ प्रकृतिरहीहती तेमध्ये ७२ खपावे.

४ उछिन्नक्रियानुवृत्तिपायोकहेछे. जेयोग निरुंधकीधापछे तेरप्रकृतिखपावे अकर्मी थाय सर्वक्रियाथीरहितथाय तेसमुछिन्नक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यानकहियें एध्यानध्यावतां शेषदलखरण रूपक्रियाउछेदे अवगाहनादेहमानमांथी त्रीजोन्नागघटाके शरीरमूकी इहांथी सातराजऊपर लोकनेअंतेजाय सिद्धथाय इहांशिष्यपूछेजे चौदमेगुणठाणेतो अक्रियछे तोसातराजऊंचोगयो एक्रियाकेमकरेछे तेनेउत्तर जे सिद्धतोअक्रियछे परंतु पूर्वप्रेरणायें तुंबीनेदृष्टांते जीवमांचालवानोगुणछे धर्मास्तिकायमध्ये प्रेरणागुणछे तेथीकर्मरहितजीव मोक्षेजता लोकनेअंतेजायीरहे इहांकोइपुछेजे आगलऊंचोअलोकछे तिहांकिमजातोनथी तेनेउत्तर जेआगलधर्मास्तिकायनथी माटेनजाय वलीकोइ पुछेजे तोअधोगतियें अथवातिरछीगतियें केमनथीजातो तेनेउत्तर जे कर्मनान्नारथी रहितथयो हलुवोथयो माटेनिचो तथाडाबो जिमणोनजाय कारणके प्रेरककोइनथी तथाकंपेनही केमकेअक्रियछेमाटे तथाकोइपुछेजे सिद्धनेकर्मकेमलागतानथी तेनेकहेछे जे कर्मतोजीवनेअज्ञानथी तथायोगथीलागेछे तेसिद्धनाजीवने अज्ञान तथायोग नथी माटेकर्मलागेनही एचारध्याननोअधिकारकह्यो.

हवेवलीबीजाचारध्यानकहेछे. १ पदस्थ २ पिंडस्थ ३ रूपस्थ ४ रूपातीत. तेमां पहेलुं पदस्थध्यानकहेछे जेअरिहंतादिक पांचपरमेष्ठीना गुणसंन्नारे तेनोचित्तमां ध्यानकरे ते पदस्थध्यान. २ पिंडके० शरीरमांरह्योजे आपणोजीव तेमां अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय अनेसाधुपणानागुण सर्वछे एहवोजेध्यानतेपिंडस्थध्यान अथवा गुणीनागुणमध्ये एकत्वताउपयोगकरवोतेपिंडस्थध्यान. ३ रूपमांरह्योथको पणएमारोजीव अरूपी अनंतगुणीछे जेवस्तुनोस्वरूप अतिशयावलंबीथयापछे आत्मानुं रूपएकतापणो एहवो जेध्यान तेरूपस्थध्यान एत्रणध्यानधर्मध्यानमांगणवा. ४ निरंजन निर्मल संकल्पविकल्परहित अन्नेद एकशुद्धत्तारूप चिदानंद तत्वामृत असंग अखंड अनंतगुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुंध्यानते रूपातीतध्यानजाणवुं इहांमार्गणागुणठाणा नयप्रमाण मतिआदिकज्ञान क्षयोपशमन्नाव सर्वछांडवायोग्यथया एकसिद्धनामूलगुणनेध्यावे ते रूपातीतध्यानजाणवो एटलेमोक्षनुंकारणजेध्यान तेकह्युं.

हवेन्नावनाकहेछे.तेमांधर्मध्याननी चारन्नावनाकहेछे—१ मैत्रीन्नावनाते सर्वजीव साथें मित्रतानोन्नावचिंतववो सर्वनुंन्नलुंचाहवुं पणकोइनुं मातुंचिंतववुंनही सर्वजीवऊपरहितबुद्धिराखवी ते मैत्रीन्नावना २ गुणवंत अने ज्ञानादिकगुणऊपरें रागते बीजीप्रमोदन्नावना ३ जेधर्मवंतऊपर राग अनेमिथ्यात्वीऊपर रागनही तेम द्वेषपण नही कारणके हिंसकउपरेंपण उत्तमजीवने करुणाऊपजे जोउपदेशथकी सारामार्गेआवेतो तेने शुद्धमार्गेआणवो कदाचितमार्गेनआवे तोपणद्वेषनराखवो केमके ते अजाणछे

एमसमजवुं एहवाजेपरिणाम तेमध्यस्थभावना ४ सर्वजीवने पोतानेतुल्यजाणी दया-पाले कोइनेहणेनही तथाजेदुःखी अथवाधर्महीन तेहनाऊपरकरुणा तेनादुःखटा-ळवानोपरिणाम तथाधर्महीन जीवदेखीने एवोचिंतवेजे एजीवकिवारें धर्मपामशे यथार्थआत्मसाधन पामीस्वरूपधर्मने किवारेंअवलंबशे एवो परिणाम ते चोथी करु-णाके० दयाभावना. एचारभावनाकही.

१ हवेबारभावनाकहेछे. शरीर कुटुंब धन परिवार सर्वविनाशीछे जीवनोमूलधर्म अविनाशीछे एम चिंतववुंतेपहेलीअनित्यभावना २ संसारमां मरणसमये जीवनेशरण राखनारकोइनथी एकधर्मनोशरणछे एवुंचिंतववुंते बीजीअशरणभावना ३ माराजीवे संसारमां भमतां सर्वेभवकीधाछे एसंसारथी हुंकेवारेंछुटीश एसंसारमारोनथी हुंमो-क्षमयीछुं एमविचारवुं तेत्रीजीसंसारभावना ४ एमाहरोजीवएकलोछे एकलो आव्यो एकलोजशे पोतानाकरेलांकर्म एकलोभोगवशे एमचिंतववुंते चोथी एकत्वभावना ५ आसंसारमां कोइकोइनोनथी एमचिंतववुंतेपांचमीअन्यत्वभावना ६ आशरीर अपवित्र मलमूत्रनीखाणछे रोगजराथीभर्योछे एशरीरथी हुं न्यारोछुं एमचिंतववो ते छठ्ठीअशु-चिभावना ७ रागद्वेषअज्ञान मिथ्यात्वप्रमुख सर्वेआश्रवछे एमचिंतववुं तेसातमी आ-श्रवभावना ८ ज्ञानध्यानमां वर्त्ततोजीव नवाकर्मबांधेनही ते आठमी संवरभावना ९ ज्ञानसहित क्रियातेनिर्ज्जरानुंकारणछे तेनवमीनिर्ज्जराभावना १० चउदराजलोकनुं स्वरूपविचारवुंते दशमी लोकस्वरूप भावना ११ संसारमांभमताजीवने समकितज्ञा-ननीप्राप्तिपामवीदुर्लभछे अथवा समकेतपाम्योपण चारित्र सर्व विरतिपरिणामरूप धर्म पामवोदुर्लभछे तेइग्यारमी बोधदुर्लभभावना.

१२ धर्मनाकहेणहारगुरु तथाशुद्धआगमनुं सांभलवुं एहवीजोगवाइ मलविदोहेली-छे तेबारमीधर्मदुर्लभभावना एटलेबारभावनाकही एचारित्रनुंस्वरूप संपूर्णकर्ह्युं.

एवोसमकितसहित ज्ञानचारित्र तेमोक्षनुंकारणछे तेनाऊपर भव्यप्राणीयें विशेषें उद्यमकरवो अनेजोतेवुं ज्ञानचारित्रनहीपले तोपण श्रेणीकराजानीपेरें सद्दहणा शुद्ध राखजो जोसमकेतशुद्धछे तोमोक्षनजीकछे समकेतविना ज्ञानध्यान क्रियासर्वे निःफ-लछे एमआगममांकह्योछे ॥ गाथा ॥ जंसक्केतंकिरइ अहवानसक्केइतहयसद्दहइ ॥ सद्द-हमाणोजीवो पावइअयरामरंठाणं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ रेजीवतुंकरीशके तोकर अनेजो न करीशके तोपण जेवोवीतरागेंधर्मकह्यो तेरीतेसद्दहजे सद्दहणाशुद्ध राखनारजीव अ-जरामर स्थानक तेमोक्षपदवीपामे.

हवेसमकितनो मार्गकहेछे १ जीव २ अजीव ३ पुण्य ४ पाप ५ आश्रव ६ संवर ७ निर्ज्जरा ८ बंध ९ मोक्ष एनवतत्वछे तेमांमोक्षनुंकारणजीवछे अनेसंवर तथानिर्ज्जरा

एवेगुणछे एटले जीव संवर निर्जरा मोक्ष एचारउपादेयछे अनेबीजा पांचहेयछे एहवो परिणामतेने समकेतज्ञानकहियें तेसमकेतज्ञानजलोजथाय तिहां अनुयोगद्वारमांकह्योछे ॥ गाथा ॥ नायम्मिगिन्हियवे अगिन्हियवेअछअह्ममि ॥ जइवमेवइयजो सोउवएसोनउताम ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानथीद्रव्यजाणीने लेवायोग्यहोयतेले अनेछांरूवायोग्यछांमे एवोजेउपदेश तेनयउपदेशजाणवो हवेसमकेतनी दशरुचिकहेछे.

१ निसर्गरुचि तेनिश्चयनयकरी जीवादिनवतत्वजाणे आश्रवत्यागे संवरआदरे वीतरागनाकह्याभाव जेद्रव्य तेद्रव्य खेत्र काल भावसहितजाणे नामादिचारनिक्षेपा पोतानी बुद्धिथीजाणे सद्दहे वीतरागनाभाष्याभाव तेसत्यछे एवीसद्दहणाहोय.

२ उपदेशरुचि नवतत्व तथाछद्रव्यने गुरुउपदेशथीजाणीसद्दहेते उपदेशरुचि.

३ आज्ञारुचि ते रागद्वेषमोहजेमनागयाछे अज्ञानमिथ्युंछे एहवाअरिहंतदेव तेणेजे आज्ञाकही तेनेमानेसद्दहे तेआज्ञारुचि.

४ सूत्ररुचि ते १ आचारांग २ सुयगडांग ३ ठाणांग ४ समवायांग ५ भगवती ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशांग ८ अंतगडदशांग ९ अनुत्तरोववाइदशांग १० प्रश्नव्याकरण ११ विपाक एइग्यारअंग तथा बारमुंअंगदृष्टीवाद जेमांचउदपूर्वहता तेहमणाविछेदगयाछे तथा १ उववाइ २ रायपश्रेणी ३ जीवाभिगम ४ पन्नवणा ५ जंबुद्वीपपन्नति ६ चंदपन्नति ७ सुरपन्नति ८ कप्पीआ ९ कप्पविडंसिया १० पुप्फिआ ११ पुप्फचुलीआ १२ वन्हिदिशा एबारउपांगजाणवा अने १ व्यवहारसूत्र २ बृहत्कल्प ३ दशाश्रुतस्कंध ४ निशीथ ५ महानिशीथ ६ जितकल्प एछछेद ग्रंथ तथा १ चौसरण २ संथारापयन्नो ३ तंडुलवेयालीया ४ चंदाविजय ५ गणिविजय ६ देविंदथुओ ७ वीरथुओ ८ गछाचार ९ जोतिकरंड १० आयुःपच्चखाण एदशपयन्नानानाम तथा १ आवश्यक २ दशवैकालिक ३ उत्तराध्ययन ४ उघनिर्युक्ति एचारमूलसूत्र तथा १ नंदि २ अनुयोगद्वार एपीस्तालीसआगम तेमूलसूत्र तथा २ निर्युक्ति ३ भाष्य ४ चूर्णि ५ टीका एपंचांगीनावचन जेजीवमाने तथाआगमसांभलवानी तथा भणवानीजेनेघणीचाहनाहोय तेसूत्ररुचिजाणवी.

५ जेजीवगुरुमुखथी एकपदनोअर्थसांभलीने अनेकपदसद्दहे ते बीजरुचि.

६ अभिगमरुचि ते जेसूत्रसिद्धांत अर्थसहितजाणे अनेअर्थविचार सांभलवानी घणीचाहनाहोय ते अभिगमरुचि.

७ जे द्रव्यनागुणपर्यायने चारप्रमाण तथासातनये करीजाणे ते विस्ताररुचि.

८ क्रियारुचि ते दर्शन ज्ञान चारित्र तप विनय सुमति गुप्ति बाह्यक्रिया सहित आत्मधर्मसाथे जेनेरुचिघणीहोय तेक्रियारुचि.

ए संक्षेपरुचि ते जे अर्थनेज्ञानमां थोमोकहेथके घणो जाणीने कुमतिमां पमेनही जिनमतमांप्रतितमाने तेसंक्षेपरुचि.

१० जेपांचअस्तिकायनुंस्वरूपजाणे श्रुतज्ञाननोस्वजाव अंतरंगसत्तासद्दहेतेधर्मरुचि-

हवेसमकेतनाआठगुणकहेछे १ निसंका ते जिनागममध्येसूक्ष्मअर्थकह्या तेसाचा सद्दहे तेमांसंदेहआणेनही तथासातजयथीपणमरेनही २ निकंषागुण ते पुण्यरूपफलनीचाहनानराखे केमके जिहांइछा तिहांकर्मनोबंधछे माटे ३ निविचिगिछागुण ते शुजअशुजपुजल एकसरिखाछे तेमां पुण्यनाउदयथी शुजयोग मिल्याखुशीथइअहंकारनकरवो तथापापनाउदयथी डुःखसंयोगमिल्यादिलगीरथावुंनही ४ अमूढदृष्टीगुण ते जे आगममां सूक्ष्मनिगोदना तथाछद्रव्यना सूक्ष्मविचारकह्याछे तेसांजलतोथकोमुजायनही जेपोतानी धारणामांआवेतेधारीराखे अनेजेधारणामां नआवे तेनेसद्दहे ५ अवबुहगुण जे एआपणाजीवमां अनंतज्ञानादिकगुणछे तेछुपाववा नही शुद्धसत्ताजेवीछे तेवीकहेवी रागदेष अज्ञानतेकर्मनीउपाधिछे जीवएउपाधीथीन्यारोछे ६ स्थिरिकरणगुण ते आपणापरिणाम ज्ञानमांस्थिरकरवा मगाववा नही अथवाकोइजव्यप्राणीधर्मथीपमतोहोय तेने साह्यदेइउपदेशआपीस्थिरकरवो ७ वात्सल्यतागुण ते जेनीसाथें ज्ञान ध्यान तप पमिकमणो जेलोकरता होइये अनेसद्दहणापणएकजहोय तेआपणोसाधर्मिजाइछे तेनीजक्तिकरवी अथवा सर्वजीवनाज्ञानादिगुण आपणासमानछे माटे सर्वजीवउपरदयाकरवी अथवाबीजाजीवनापण आपणातुल्यज्ञानादिगुणछे तेजीवने पोषवायोग्यज्ञानध्याननोघणोअज्यास करावे ८ प्रजावकगुण ते जगवंतनाधर्मनीप्रजावनामहिमाकरवी अथवा पोतानेज्ञानादिणवधारवा दान शील तप जाव पूजा करीघणीमहिमाकरवी एसमकितनाआठगुण.

हवेसमकेतनापांचजूषणकहेछे १ उपशमजावजूषण ते विवेकीप्राणीप्रायेंकषाय नकरे अनेजोकदाचित्कषायकरेतोपण तरतमननेपाछोवाले २ आस्ताजूषण तेजगवंतना वचनउपरशुद्धप्रतितराखें जगवंतेंजेमआगममां आज्ञाकरीतेमसद्दहे ३ दयाजावजूषण ते सर्वजीव पोतानासरिखाजाणीदयापालवी ४ संवेगजूषण जे संसारथी तथाधनथी शरीरथी उदासीपणोराखवो ५ निरवेद्यजूषण ते इंद्रियना सुखजीवेंअनंतिवारजोगव्या पणतेडुःखनाकारणछे एकचिदानंदमोक्षमयी अतींद्रियसुखनेआपणाकरीजाणे ए समकेतनापांचजूषणकह्या.

हवेछआयतनकहेछे १ निश्चयकुगुरुतेजगवंतनावचननाखोटाअर्थकरे खोटीपरुपणाकरे २ व्यवहारकुगुरु ते योगी संन्यासी ब्राह्मण अने आचारहीन वेषधारी यति तेपणछोरुवा ३ निश्चयकुदेव ते जिणेश्रीवीतरागदेवनुंस्वरूपनथीजाण्युं ४ व्यवहार

कुदेव ते जेसरागीदेव कृष्ण माहादेव खेत्रपाल देवी पितरप्रमुख तेपणछोडवा ५ निश्चे-थीकुधर्मते जेएकांतमार्ग बाह्यकरणीउपरराच्याछे अंतरंगज्ञाननथीउलख्योते ६ व्यव-हारकुधर्म ते पारकाअन्यदर्शनीनामतसर्वछांडवा एटले कुदेव कुगुरु तथा कुधर्मने छोडी शुद्धदेव गुरुतथाधर्मसद्दहे तेसमकेतनी सद्दहणाजाणवी समकेतनालक्षण पन्नवणासूत्रथी कहेछे गाथा ॥ परमछसंथवोवा सुदिठपरछसेवणावावि ॥ वावन्नकुदंसणा वज्जणायसमी त्तसद्दहणा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ परमार्थ छद्रव्य नवतत्वनागुणपर्याय मोक्षनुंस्वरूप एटले जे परमार्थसूक्ष्मअर्थछे तेजाणवानोघणोपरचोकरे अथवाजाणवानीघणीचाहनाराखे अने सुदिठके० भलीरीतेदीठाजाण्याछे परमार्थछद्रव्यमोक्षमार्गजेणे एहवागुरुनीसेवाकरे एटलेज्ञानीगुरुधारवा अने वावन्नके० जिनमतियतिनामधरावीने जेखेत्रपालप्रमुखने समकितविनामाने एवागुरुनोसंगवर्जे अनेकुदर्शनी जेअन्यमतितेनोसंगनकरे एवाजेप-रिणामतेसमकितनीसद्दहणाजाणवी विरयासासज्जाउ कषायहीणामहव्वयधरावि ॥ स-म्मदिठिविहुणा कयाविमुक्खंनपावंति ॥२॥ अर्थ ॥ जेसावद्यआरंभथीविरम्याछेक्रोधादि आचारकषायजीत्याछे अनेशुद्धपांचमहाव्रतपालेछेपणसमकेतविनाछेतेजीवमोक्षपामेनही

हवेसमकिततेसीवस्तुछे तेविषेगाथाकहेछे गाथा ॥नयभंगपमाणेहिं जो अप्पासा-यवायभावेणं ॥ जाणइमोक्खसरूवं सम्मादिठिउसोनेउ ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ नय तथा भंगेकरी तथाप्रमाणेकरी जेपोतानाआत्मानेजाणे उलखे स्याद्वादआठपक्षेजाणे अने एमस्याद्वादपणेमोक्षनिकर्मावस्थानेपणजाणे परवस्तुने हेयजाणे जीवगुणउपादेयजा-णे तेने समकेति जाणवो.

हवेजीवस्वरूपध्यानकरवाने गाथाकहेछे ॥ अहंमिक्कोखलुसुद्धो निम्ममउनाणदंसण समग्गो ॥ तम्मिदिठउतच्चित्तो सव्वेएएखयंनेमि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानीजीव एहवुं ध्या-नकरे के हुंएकछुं परपुद्गलथीन्यारोछुं निश्चेनयकरीशुद्धछुं अज्ञानमलथीन्यारोछुं निर्म-लछुं ममताथीरहितछुं ज्ञानदर्शनथीभर्योछुं हुंमाराज्ञानस्वभावसहितछुं हुंमारागुण-मांरह्योछुं चेतनागुणतेमाहारीसत्ताछे हुंमाराआत्मस्वरूपनेध्यावतो सर्वकर्मक्षयकरुंछुं ॥ गाथा ॥ निरंजणंनिकलअयल देवअणाइअणइअणात्तं ॥ चेयणलक्खणसिद्धसम प-रमप्पासिवसंतं ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ कर्मअंजनथीरहित निरंजनछुं कलंकरहितछुं अयल के० पोतानास्वरूपथीकिवारेचलायमानथाउंनही परमदेवछुं जेनीआदिनथी तथा जेनो अंतनथी चेतनालक्षणछुं सिद्धसमानछुं संतसत्तामयीछुं गाथा॥ जीवादिसद्दहणं सम्म-त्तंएसअधिगमोनाणं ॥ तथेवसयारमणं चरणंएसोडुमुक्खपहो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जीवादिकछद्रव्यजेवाछे तेवासद्दहवा तेसमकेत अनेछद्रव्यजेवाछे तेहवा गु-णपर्याय सहितजाणे तेज्ञानजाणवुं तेछद्रव्यजाणीनेछांडे अजीवनेछांडे अने जीवना

स्वगुणमां स्थिरथयीनेरमे तेचारित्रकहियें एज्ञानदर्शनचारित्र शुद्धरत्नत्रयी तेमोक्षनो मार्गछे माटे एज्ञानदर्शनचारित्रनो घणोयत्नकरवो एरत्नत्रयीपामीनेप्रमादकरवोनही तिहांनिश्चयवव्यहारनीगाथा ॥ नच्छियमग्गोमुक्खो ववहारोपुन्नकारणोवुत्तो॥ पढमोसंवररूवो आसवहेऊतउबीउ ॥ ७ ॥

अर्थ निश्चेंनयनोमार्ग ज्ञानसत्तारूप ते मोक्षनुंकारणछे एटलेमोक्षछे अनेव्यवहार क्रियानय ते पुण्यनुंकारणकह्यो पहेलो निश्चेंनयसंवरछे अनेनिश्चेंसंवरनिश्चेंनय तेएकजछे जूदानथी वीजोव्यवहारनय तेआश्रव नवाकर्मलेवानोहेतुछे एटलेशुजपुण्यकर्मनो आश्रवथायछे अनेअशुजव्यवहारें अशुजकर्म्मनोआश्रवथायछे कोइ पुछेजे व्यवहारनय आश्रवनुंकारणछे तो अमेव्यवहारनहीआदरसुं एकनिश्चेंमार्ग आदरसुं तेनेउत्तर कहेछे ॥ गाथा ॥ जइजिणमयंपवजाह तामाववहारनथ्थिएसुयह ॥ एकेणविणातिथ्थं छिज्जाईअन्नेणउतच्च ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ अहोजव्यप्राणी जोतमनेजिनमतनी चाहनाछे अनेजो तुमेजिनमतने इछोछो मोक्षनेचाहोछो तोनिश्चेंनय अनेव्यवहारनय छांमशोनही एटलेबेहुनयमानजो व्यवहारनयचालजो अनेनिश्चेंनयलहइजो जोतुमेव्यवहारनयउथापशो तोजिनशासनना तीर्थनोउछेदथाशे जेणेव्यवहारनय नमान्यो तेणे गुरुवंदना जिनजक्ति तप पच्चरकाण सर्वनमान्या एम जेणेआचारउथाप्यो तेणे निमित्तकारणउथाप्योअनेनिमित्तकारणविना एकलो उपादानकारण तेसिद्धनथाय माटे निमित्तकारणरूप व्यवहारनय जरुरमानवुं अनेजो एकलोव्यवहारनय मानियें तोनिश्चेंनय उलख्याविना तत्वनुंस्वरूप जाणुंजायनही मादेतत्वमार्ग अनेमोक्षमार्ग तेनिश्चेंनयविना पामियेंनही अनेतत्वज्ञानविना मोक्षनथी एटलेनिश्चेंविना व्यवहारनिःफलछे अनेनिश्चेंसहित व्यवहार ते प्रमाणछे तेनोदृष्टांत जेमसोनानाआभूषणमां उपधातु अथवाकिणजोमिल्योहोय तेपण उंचासोनानेजावेंलेइ राखियेंछैयें अनेजोतेकिणजो तथासोनुजूठुंकरियें तो सहुकोइसोनानेले पण कोइकिणजो जेकुधातु तेलीयेनही तेम निश्चेंनय सोनासमानछे माटेनिश्चेंनयसहित सर्वजलाछे अनेनिश्चेंनयविना सर्वअलेखेछे माटेआगममां निश्चेंव्यवहार रूप मोक्षमार्गछे तेकह्यो.

वलीशरीरउपर मोहकरेनही तेविषे ॥ गाथा ॥ छिज्जोजिज्जोजायखउ जोईहमेहुशरीर ॥ अप्पाजावेनिम्मलो जंपावंजवतीरं ॥ ए ॥ अर्थ ॥ जव्यप्राणीएमचिंतवेजे एशरीर छीजजाउ जिजजाउ क्षयथइजाउ विणशीजाउ एमाहारुं शरीरपुफलीक छे परवस्तुछे तेएकदीवसेंमूकवुंछे माटे रेप्राणी तुंआपणीआत्मानेनिर्मलपणेध्यावतो संसारथी तरीनेकांठोपामीश ॥ गाथा ॥ एहिजअप्पासोपरमप्पा कम्मविसेसोईजायोजप्पा ॥

इयमेदेवजाजुसोपरमप्पा वहुतुह्मेअप्पोअप्पा ॥ १० ॥ अर्थ ॥ अहोजव्यजीव एहीज आपणोआत्माछे तेशुद्धब्रह्मछे पणकर्मनेवशपड्यो जन्ममरणकरेछे पणएशरीरमां जेजीवछे तेदेवछे परमात्माछे माटेतुमे आपणोआत्माध्यावो तरणतारणजिहाज एआपणो आत्माजछे एमश्रीहेमाचार्यें वीतरागस्तोत्रमांकह्याछे यःपरात्मापरंज्योतिः परमःपरमेष्टिनां ॥ आदित्यवर्णोतमसःपरस्तादामनंतियं ॥ १ ॥ सर्वेयेनोदमूल्यंत समूलाःक्लेशपादपाइत्यादि ॥ अर्थ ॥ परमात्माछे परमज्योतिछे पंचपरमेष्टीथी पणअधिकपूज्यछे केमकेपंचपरमेष्टीतो मोक्षमार्गनादेखाडनाराछे पणमोक्षमांजवावालोतो आपणोजीवछे अज्ञाननो मिटावनारछे सर्वकर्म्मक्लेशनो खपावनारछे एवो आत्माध्यावो एहिजपरम श्रेयनुंकारणछे शुद्धछेपरमनिर्मलछे एहवोआत्माउपादेय जाणीसद्दहे अनेजेवोपोताथी निरवाहथाय तेवोत्यागवैरागमांप्रवर्त्ते एटले धन तेपरवस्तुजाणी सुपात्रनेदानआपे अनेइंद्रियनाविकारते कर्मबंधनाकारणजाणीपरिहरे शीलपाले जेआहारछे तेपुद्गलीक परवस्तुछे शरीरपुष्टीनुंकारणछे अनेशरीरपुष्टकीधाथी इंद्रियोनाविषयनोपोषथाय माटे तेपरस्वजावछे अज्ञान संसारनुंकारणछे माटेआहारनोत्यागकरवो तेनेतपकहियें तथा पूजाते जेश्रीअरिहंतदेवें मोक्षमार्गउपदेश्यो तेआपणेजाण्यो माटेआपणाउपकारीछे तेउपकारीनी बहुमानसहित जक्तिकरियें माटेश्रीअरिहंत देवाधिदेवनी पूजाकरवी एम दान शील तप पूजा सर्व जीव अजीवनुंस्वरूप उलख्याविनाजेकरवुं तेपुण्यरूप इंद्रियसुखनुंकारणछे अनेजे जीवनेउपादेयकरी वांछाविनाकरणीकरेछे तेनिर्ज्जरानुंकारणछे एमदयापण श्रीजगवतीसूत्रमां सातावेदनीकर्मनुं कारणछे एटले सम्यक्ज्ञानीने सर्वेकरणीतेनिर्ज्जरारूपछे अनेज्ञानविना सर्वेकरणी बंधनुंकारणछे माटेज्ञाननो घणोअभ्यासकरजो एजगवंतेंसीखामणदीधीछे.

तथाज्ञाननुंकारण श्रुतज्ञानछे तेनोघणोजावराखजो श्रीठाणांगमां तथा उत्तराध्ययनमां तथाजगवतीमां १ वाचना २ पूछना ३ परावर्त्तना ४ अनुप्रेक्षा ५ धर्मकथा ए सिज्झाय जणवा गुणवानुंफल मोक्षकह्योछे सिज्झायकरवाथी ज्ञानावरणी कर्मखपावे केमके वाचनाथी तीर्थधर्मप्रवर्त्ते महानिर्ज्जराथाय पुछवाथी सूत्रतथा अर्थशुद्धथाय मिथ्यात्वमोहनीयखपावे तेजेमजेम अर्थविचारपूछे तेमतेमसमकितनिर्मलथायअने अनुप्रेक्षाते अर्थविचारतां सातकर्मनीस्थितिना रसपातलाकरे अनंतो संसारखपावीने पातलोकरे तथा श्रुतज्ञाननी आराधनाथी अज्ञानमिटे एवाफल कह्याछे.

माटे वांचवा तथा जणवानो घणोउद्यमकरवो केमके आजपांचमाआरामां कोइ केवलीनथी तथा मनपर्यवज्ञानी अनेअवधिज्ञानीपणनथी एकमात्रश्रुतज्ञान तेहिजआगमनो आराधकछे यतः कब्रअम्हारिसापाणी डुसमादोसदूसिया॥ हायणाहाकहंहुंता

नहुंतोजइजिणागमो ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हेभगवंत अमसरिखाप्राणीनी शीगतिथात जे अमेंआडुसमपंचमकालमां अवतारलीधो हाइतिखेदे अमेअनाथ बुं जो जिनराजना कहेला आगमनहोत तोआजसुंथात एटले आजआगमनोजआधारबे माटेआगम अने आगमधर जे बहुश्रुत तेनोघणोविनयकरवो आगममांविनयनुंफल तेसांभलवुं अनेसांभलवानुं फलज्ञानबे ज्ञाननुंफलमोक्षबे एमआगम सांभलीलेवायोग्यलेजो अयोग्यढांकजो सद्दहणाशुद्धराखजो सद्दहणाते मोक्षनुंमूलबे एइंद्रियसुखतोआजीवें अनंतिवारपाम्याबे एहवी जाति जन्म योनी कोइरही नथी जेआपणाजीवेनहीकरीहोय एजीवने संसारमांभमतां अनंतापुजल परावर्त्तनथया पणधर्मनी जोगवाईमलीनही तोहवेमनुष्यभव श्रावककुल निरोगशरीर पंचेंद्रीप्रगट बुद्धिनिर्मल एटलासंयोगमल्या वलीश्रीवीतरागनीवाणीनाकेहेनारा शुद्ध गुरुनी जोगवाइपामीने अहोभव्यलोको तुमेधर्मनेविषे विशेषउद्यमकरजो फिरिथीएवीजोगवाइ मिलवीदुर्लभबे माटेप्रमादकरशोनही एशरीर धन कुटुंब आयुष्य सर्व चंचलबे क्षणक्षणबीजेबे माटे पांचसमवायकारणमल्या मोक्षरूपकार्य सिद्धकरवुं तेपंचसमवायनानामकहेबे १ काल २ स्वभाव ३ नियत ४ पूर्वकृत ५ पुरुषाकार एपांचसमवायमाने तेसमकेतिबे एमांएकसमवाय उथापे तेहनेमिथ्यात्वीकहियें एम सम्मतिसूत्रमां कह्योबे गाथा ॥ कालोसहावनियइ पुव्वकयंपुरिषकारणेपंच ॥ समवाएसमत्तं एगंतेहोयमिछत्त ॥ १ ॥

अर्थ ॥ काललब्धिविना मोक्षरूपकार्य सिद्धथायनही एटलेकालसर्वेनुंकारणबे जे कालें जेकार्यथवानोहोय तेकार्यतेकालेंथाय एकालसमवाय अंगीकारकरीकह्यो इहां कोइपुबेजे अभव्यजीव मोक्षकेमजतानथी तेनेउत्तरजे अभव्यनेकालमले पण अभव्यमांस्वभावनथी तेथीमोक्षजायनही केमके कालस्वभाव एबेकारणजोइये तेवारेंफरिपुब्युंजे भव्यजीवमांतो मोक्षेजवानोस्वभावबे तोसर्वेभव्य केममोक्षजतानथी तेने उत्तर जे नियतके० निश्चेंसमकितगुणजागे तेवारेंमोक्षपामे एटलेकाल स्वभाव नियतए त्रणकारणमान्या तेवारेंफरिपुब्युं जे समकितआदिकारणतो श्रेणीकराजानेहता तो मोक्षकेमनथयो तेनेउत्तर जे पूर्वकृतकर्मघणाहता अथवापुरुषाकार तेउद्यमकस्योनही फरीपुब्युंजे शालीभद्रप्रमुखें तो उद्यमघणोकीधो तेनुंउत्तरजे तेमनापूर्वकृत शुभकर्म खप्यानहता माटेपांचसमवाय मिल्याकार्यनीसिद्धिथाय तेवारेंफरिपुब्युंजे मरुदेवामाताने तोचारकारणमिल्या पणपांचमो पुरुषाकारउद्यम कांइकीधोनही तेनेउत्तर जे क्षपकश्रेणी चढवानो शुक्लध्यानरूप उद्यमकीधोबे माटे पांचसमवायमील्या मोक्षरूपकार्य सिद्धथाय.

जेवारें केवलज्ञानेकरीसर्वेद्रव्य जेमरह्याबे तेमदेखे एटले आकाशद्रव्य लोकालोकप्रमाणबे तेमांअलोकमां बीजुंद्रव्यकोइनथी लोकाकाशनाएकेकप्रदेशे धर्मास्तिकाय

अधर्मास्तिकायनो एकेकप्रदेशरह्याछे तथाअनंताजीवना अनंताप्रदेशरह्याछे अनंतापुद्गलपरमाणुरह्याछे कालनोसमय सर्वत्रवर्त्तेछे.

हवे छद्रव्यनीफरशनाकहेछे धर्मास्तिकायना एक प्रदेशे धर्मास्तिकायना छप्रदेश फरस्याछे तेआवीरीते के चारदिशीनाचार अनेपांचमोनीचे छठोऊपर एछप्रदेशफरस्याछे तथा एकमूलपोतेंप्रदेश एमसातप्रदेशनो संबंधछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदेशने आकाशद्रव्य तथा अधर्मास्तिकायना सातसातप्रदेश फरशेछे तेएकमूलनाप्रदेशने बीजाद्रव्यनो मूलनोप्रदेशफरशे माटे सातप्रदेशनीफरशनाछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदेशें जीवपुद्गलना अनंताप्रदेशनी फरसनाछे अनेलोकनेअंतेजे धर्मास्तिकायना प्रदेशछे तेने आकाशनीफरसनातो छएदिशीनीछे अनेएकमूलप्रदेशसुद्धां सातप्रदेशनी फरसनाछे अनेबीजाद्रव्यनी त्रणदिशीनीफरसनाछे एमसर्वद्रव्यनीफरशनाछे अने आकाशथी धर्म अधर्मनीअवगाहना सूक्ष्मछे धर्मअधर्मद्रव्यथीजीवनीअवगाहना सूक्ष्म छे जीवथी पुद्गलनी अवगाहना सूक्ष्म छे.

एमछद्रव्यना गुणपर्याय सामान्यस्वभाव ११ छे अनेविशेषस्वभावदशछे तेश्रीकेवली भगवंत ज्ञानथीजाणे दर्शनथीदेखे तेइग्यारसामान्यस्वभावकहेछे १ अस्तिस्वभाव २ नास्तिस्वभाव ३ नित्यस्वभाव ४ अनित्यस्वभाव ५ एकस्वभाव ६ अनेकस्वभाव ७ भेदस्वभाव ८ अभेदस्वभाव ९ भव्यस्वभाव १० अभव्यस्वभाव ११ परमस्वभाव एइग्यारसामान्यभाव सर्वद्रव्यमांछे एसामान्यउपयोग दर्शनगुणथीदेखे हवेदशविशेषस्वभावकहेछे १ चेतनस्वभाव २ अचेतनस्वभाव ३ मूर्तिस्वभाव ४ अमूर्तिस्वभाव ५ एकप्रदेशस्वभाव ६ अनेकप्रदेशस्वभाव ७ शुद्धस्वभाव ८ अशुद्धस्वभाव ९ विभावस्वभाव १० उपचरितस्वभाव एदशविशेषस्वभाव तेकोइकद्रव्यमांकोइकस्वभावछे कोइक द्रव्यमांकोइकस्वभावनथी एज्ञानथीजाणे एटलेसिद्धभगवानलोकालोक सर्व ज्ञानोपयोगथीजाणीरह्याछे दर्शनोपयोगथीदेखीरह्याछे एहवाअनंतगुणीअरूपी सिद्धभगवानछे तेसमान पोतानीआत्मानेजाणे उपादेयकरीध्यावे तेसमकेत जाणवो.

॥ दोहा ॥

अष्टकर्मवनदाहके ॥ भएसिद्धजिनचंद ॥ तासमजोअप्पागणे ॥ वंदेताकोइंद ॥१॥ कर्मरोगऔषधसमी ॥ ग्यानसुधारसवृष्टी ॥ शिवसुखामृतसरोवरी ॥ जयजयसम्यकदृष्टी ॥ २॥ एहिजसदगुरुशीखछे ॥ एहिजशिवपुरमाग ॥ लेजोंनिजग्यानादिगुण ॥ करजोपरगुणत्याग ॥ ३ ॥ ग्यानवृक्षसेवोभविक ॥ चारित्रसमकेतमूल ॥ अमरअगमपद फललहो ॥ जिनवरपदवीफूल ॥४॥ संवतसत्तरछिहुत्तरे ॥ मनशुद्धफागुणमास ॥ मोटे कोटमरोटमे ॥ वसतांसुखचोमास ॥ ५ ॥ सुविहितखरतरगछसुथिर ॥ युगवरजिनचं-

दसूर ॥ पुण्यप्रधानप्रधानगुण ॥ पाठकगुणेपंकूर ॥ ६ ॥ तासशिष्यपाठक प्रवर ॥ सुमतिसारगुणवंत ॥ सकलशास्त्रज्ञायकगुणी ॥ साधुरंगजसवंत ॥ ७ ॥ तासशिष्यपाठकविबुध ॥ जिनमतपरमतजाण ॥ भविककमलप्रतिबोधवा ॥ राजसागरगुरुभाण ॥ ८ ॥ ग्यानधर्मपाठकप्रवर ॥ शमदमगुणेअगाह ॥ राजहंसगुरुगुरुसक्ति ॥ सहुजगकरेसराह ॥ ९ ॥ तासशिष्यआगमरुचि ॥ जैनधर्मकोदास ॥ देवचंदआनंदमें ॥ कीनोग्रंथप्रकाश ॥ १० ॥ आगमसारोद्धारएह ॥ प्राकृतसंस्कृतरूप ॥ ग्रंथकीयोदेवचंदमुनी ॥ ग्यानामृतरसकूप ॥११॥ कस्योइहांसदायअति ॥ दुर्गदासशुभचित्त ॥ समजावननिजमित्रकुं ॥ कीनोग्रंथपवित्त ॥ १२ ॥ धर्ममित्रजिनधर्मरतन ॥ भविजनसमकितवंत ॥ शुद्धअमरपदउलखण ॥ ग्रंथकियोगुणवंत ॥ १३ ॥ तत्वग्यानमयग्रंथयह ॥ जोवेबालाबोध ॥ निजपरसत्तासबलिखे श्रोतालहेप्रबोध ॥ १४ ॥ ताकारणदेवचंद मुनी ॥ कीनोआगमग्रंथ ॥ भणसेगुणसेजेभविक॥लहेशेतेशिवपंथ ॥१५॥ कथकशुद्धश्रोतारुची मिलजोएह संयोग ॥ तत्वग्यानश्रद्धासहित ॥ वलीकायनिरोग ॥१६॥ परमागमसुंराचजो ॥ लहेसोपरमानंद ॥ धर्मरागगुरुधर्मसौं ॥ धरजोएसुखकंद ॥ १७ ॥ ग्रंथकीउमनरंगसौं ॥ सितपखफागुणमास ॥ भोमवारअरुतिजतिथि ॥ सफलफलीमनआस ॥ १८ ॥

आआगमसारमां पेज १३७ नी लेन २८ मीमध्ये चउदराजलोकनोंखंधलोकाकाश सादिसांतछे तेआवीरीतेंजे लोकनामध्यभागेंआठरुचकप्रदेशथी मांडीनेसादिछेजिहां चउदराजलोकनोअंतआवे तिहांसांत तथा चउदराजलोकनोछेलोप्रदेशमूकीनेपछेअलोकनीआदिलेवी पणअलोकनोअंतनथी माटेसादिअनंतकह्युंछे.

तथापेज १४४ नीआठमीलेनमां श्रीभगवतीसूत्रमांसुत्तत्थोखलुपढमो बीउनिज्जुत्तिमिसउभणिउ ॥ इत्तोतईयणुउगो नाणुन्नाउजिणवरेहिं ॥ एवीरीतेआगमसारनी जूदी जूदीत्रणप्रतोमां लख्युंहतुंमाटेमेंपण तेमजलख्युंछे पणबीजाघणाठेकाणे एभगवतीनी साखदीधीछे तिहांतो सुत्तत्थोखलुपढमो बीउनिज्जुत्तिमिसउभणिउ तइउयनिर विसेसो एसविहिहोइअणुउगे ॥ एवोपाठछे तेखरोजणायछे पछेबहुश्रुतकहेतेखरुं.

॥ इति श्री आगमसारोद्धारग्रंथः समाप्तः ॥

॥ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

# अथश्रीदेवचंद्रजीकृतनयचक्रसारनुंबालावबोधलिख्यते

॥ मंगलाचरण ॥

प्रणम्यपरमब्रह्मशुद्धानंदरसास्पदं ॥ वीरंसिद्धार्थराजेंद्रनंदनंलोकनंदनं ॥१॥ नत्वासुधर्मस्वाम्यादिसंघंसद्वाचकान्वरं ॥ स्वगुरून् दीपचंद्राख्यपाठकान्श्रुतपाठकान् ॥ नयचक्रस्यशब्दार्थकथनं लोकभाषया ॥ क्रियतेबालबोधार्थं सम्यङ्मार्गविशुद्धये ॥ ३ ॥

## प्रशस्ति

श्रीजिनागमनेविषे १ द्रव्यानुयोग २ चरणकरणानुयोग ३ गणितानुयोग ४ धर्मकथानुयोग एचारअनुयोगकह्याछे तेमां छद्रव्य अने नवतत्व तेनागुणपर्याय स्वभावपरिणमननेजाणवुं तेद्रव्यानुयोग एवं पंचास्तिकायनुं स्वरूपकथनरूपछे तेपंचास्तिकायमध्ये एकआत्मानामेअस्तिकायद्रव्यछे तेआत्माअनंताछे तेनामूलबेभेद छे तेमां एकसिद्धनिष्पन्न सर्वकर्मावरणदोषरहित संपूर्णकेवलज्ञान केवलदर्शनादिगुणप्रगटरूप अखंड अमल अव्याबाधानंदमयी लोकनेअंतेविराजमान स्वरूपभोगी तेसिद्धजीवकहियें ते सिद्धतासर्वआत्मानो मूलधर्मछे तेसिद्धतानीईहाकरवाने सिद्धभगवंतनो यथार्थसिद्धपणो उलखीने निष्पन्नसिद्धनोबहुमानकरवो अनेपोते पोतानीभूले अशुद्धचेतनपणे परिणमतां बांध्यां जे ज्ञानावरणादिकर्म तेटालीने पोतानी संपूर्णसिद्धतानी रुचि करवी एहीजहितशिक्षाछे.

वलीबीजोभेद संसारीजीवोनोछे तेजेणे आत्मप्रदेशें स्वकर्त्तापणे कर्मपुद्गलनेग्रह्या जेनेकर्मपुद्गलनोलोलीभावछे तेमिथ्यात्व गुणठाणाथीमांडीने अयोगीकेवली गुणठाणाना चरमसमयपर्यंत सर्वसंसारीजीवकहियें तेनावलीबेभेदछे एकअयोगी बीजासयोगी तेसयोगीनाबेभेद एकसयोगीकेवली बीजासयोगीछद्मस्थ छद्मस्थनाबेभेद एकअमोही बीजासमोही समोहीनाबेभेद एकअनुदितमोही बीजाउदितमोही उदितमोहीनाबेभेद एकसूक्ष्ममोही बीजाबादरमोही बादरमोहीनाबेभेद एकश्रेणीवंत बीजा श्रेणीरहित श्रेणीरहितनाबेभेद एक संयमीविरति बीजाअविरति अविरतीनावलीबेभेद एकसमकेति बीजामिथ्यात्वी मिथ्यात्विनाबेभेद एकग्रंथिभेदी बीजाग्रंथिअभेदि ग्रंथिअभेदिनाबेभेद एकभव्य बीजाअभव्य तेमां अभव्यजीवोनुं तो दलजएवोहोय जे

श्रुतअभ्यासपणकरे तथा द्रव्यथीपंचमहाव्रतआदरे पणआत्मधर्मनायथार्थ श्रद्धाविना पेहेलो गुणठाणो किवारे मूके नहीं माटे ए जीवो तेसिद्धपद पामवाने योग्य नही तेअभव्यचोथेअनंतेछे.

बीजाभव्य तेजेसिद्धपणानेयोग्यछे जेनेकारणयोगमिले पलटणपामे तेभव्यजीवो अभव्यथीअनंतगुणाछे तेमध्येकेइकभव्यसामग्रीयोगपामी ग्रंथिभेदकरीने समकितपामे अनेकेटलाएकभव्यतो सामग्रीनेअभावें समकितपामेजनही उक्तंचविशेषणवत्यां सामग्गीअभावाउ ववहाररासिअप्पवेसाउ ॥ भवावितेअणंता जेसिद्धसुहंनपावंति ॥ १ ॥

पणतेभव्यजीवोमां योग्यताधर्म छतोछे तेमाटे भव्यकहियें जेजीवमिथ्यात्वतजीने शुद्धयथार्थ आत्मपणेव्यापकरह्यो तेजमारोधर्म अनेजेथीते आत्मसत्तागतधर्मप्रगटे ते साधनधर्मबेभेदेंछे एकवायणापुछणादि वंदननमनादि पडिलेहणप्रमार्ज्जादि जेटलीयोगप्रवृत्तिते सर्वद्रव्यथी साधनधर्मकहियें तेभावधर्म प्रगटकरवाने जेकरे तेनेकारणरूप छे द्रव्यतेजेभावनुंकारण कारयासेदव्वं इतिआगमवचनात् ॥

अनेजेउपयोगादि पोतानाक्षयोपशमभावें प्रगट्याजे ज्ञानवीर्यादिगुण तेपुद्गलानुयायीपणाथीटालीने शुद्धगुणीजेश्रीअरिहंत सिद्धादिक तेनाशुद्धगुणने अनुयायी करवा अथवाआत्मस्वरूप अनंतगुणपर्यायरूपतेने अनुयायीकरवा तेभावथीसाधनधर्म जाणवो एआत्मानीपजाववानो उपायछे.

जिहांलगेंआत्मानुंशुद्धस्वरूप चिदानंदघन तेसाध्यमांनथी अनेपुद्गलसुखनीआशायें विष गरल अन्योन्य अनुष्ठान जेकरवुं ते संसारहेतुछे माटे साध्यसापेक्षपणेस्याद्वादश्रद्धायें साधनकरवुं एहिजमार्गछे अने एमार्गनीजे प्रतितरुचि ते सम्यक्तकहियें तेसम्यक्तग्रंथिभेदकस्योपामियें तेग्रंथिभेदतो त्रणकरणकरेतोजके तेत्रणकरणजीवकरे तेवारेंसम्यक्दर्शनपामे तेत्रणकरणमां पेहेलुंयथाप्रवृत्तिकरण बीजुंअपूर्वकरण त्रीजुंअनिवृत्तिकरण एकरणसर्व संज्ञीपचेंद्रीकरे तेमां प्रथमयथा प्रवृत्तिकरणतेभव्य तथाअभव्य पणकरे कोईकजीवअनंतिवारकरे तेयथाप्रवृत्तिकरणनुं स्वरूपलखियेंछैये.

सर्वकर्मनी उतकृष्टस्थितिना बांधनारजीवने संक्लेशघणोछेमाटे यथाप्रवृत्तिकरणकरेनही उक्तंचविशेषावश्यके उक्कोसठिनलप्रइ भयणाएएसुपुव्वलद्धाए ॥ सवजहन्नठिसुविन लप्रइंजेणपुव्वपडिवन्नो ॥ १ ॥ माटेकर्मनी उत्कृष्टस्थितिनो बांधनारजीव ते चारसाभायकनोलाभनपामेअनेजेजीवसातकर्म्मनी जघन्यस्थिति बांधे तेजीवतोगुणवंतजछे एरीतछेमाटेजेवारेंएककोडाकोडीसागरोपम पल्योपमने असंख्यातमेंभागेउणी स्थिति बांधतोहोय तेयथाप्रवृत्तिकरणकरे जेजीवकर्म्मक्षपणारूपशक्तिपाम्योनहतो तेशक्तिपाम्योतेनेयथाप्रवृत्तिकरणकहियें उक्तंचभाष्ये येनअनादिसंसिद्धप्रकारेण प्रवृत्तंकर्मक्षप-

णं क्रियते अनेनेतिकरणं जीवपरिणामएवउच्यते अनादिकालात्कर्मक्षपणप्रवृत्ताव्यवसायविशेषो यथाप्रवृत्तिकरणमित्यर्थः

क्षयोपशमीचेतनावीर्य जेसंसारनी असारताजाणे संसार दुःखरूपकरीजाणे तेथी परिग्रहशरीरथीखरे उद्वेगेंउदासीनता परिणामेकरीसातकर्मनीस्थिति अनेककोडाकोडीनाथोकडा असंख्याताजे सत्तामांहता तेखपावे ने कांइकउणी एककोडाकोडीराखे एयथाप्रवृत्तिकरण आत्माअनंतिवारकरे पणग्रंथिभेदकरीशकेनही एकरण तेगिरिनदीनेविचें आव्युं पाषाणते घंचनाघोलनारूप चालवेकरीने जेमसहेजे सुंहालो थाय अने कोइकआकारपकडे तेमजन्ममरणादिदुःखनेउद्वेगें अनाभोगथीज भववैरागें जीव यथाप्रवृत्तिकरणकरे एहिजजीवकोइकरीतें वैराग्येंविचारेजे भवभ्रमणते दुःखछे एसंयोगवियोगादि असारछे पणकांइक ज्ञानानंदादितेसारछे एहवीगवेषणाकरनारो जीव तेयथाप्रवृत्तिकरणकरीने अपूर्वकरणकरे इहांकोइपुछे जेभव्यनेतो पलटण योग्यताछे पण अभव्यजीवकेमकरे तेनुंउत्तर जेतीर्थंकरभक्तिमांजे देवतानीमहिमा तथालोकसन्मानादिकदेखीने पुण्यनीवांछायें देवत्वराज्यादिकलाभइछायें इग्यार अंग तथाबाह्यपंचमहाव्रतादिपामे पणतेनेसम्यक्तनहोय जेपुद्गलाभिलाषीछे तेनेगुणस्पर्शनथाय उक्तंचमहाभाष्ये ॥ अर्हदादिविभूतिमतिशयवतींदृष्ट्वाधर्मादेवंविधसत्कारोदेवत्वराज्यादयःप्राप्यंते इत्येवंसमुत्पन्नबुद्धेरभव्यस्यापिदेवनरेंद्रादिपदेहया निर्वाणश्रद्धारहित कष्टानुष्ठानं किंचिदंगीकुर्वतोज्ञानरूपस्यश्रुतसामायकमात्रलाभेपि सम्यक्तादिलाभःश्रुतस्यनभवत्येवेति ॥ एरीतेंधारवुं.

तथाअपूर्वकरण अनेअनिवृत्तिकरणनो अधिकार जेमआगमसारमां लख्योछे तेज प्रमाणे इहांपणजाणवो इमत्रणकरणकरीने उपशम अथवा क्षयोपशम अथवाक्षायक सम्यक्तजेपाम्यो अने आत्मप्रदेशें वर्त्तमाने सम्यक्दर्शनगुणनो रोधक एहवोमिथ्यात्वमोह प्रकृतिनाविपाकोदयने टलवेकरीने जेसम्यक्दर्शनगुणनी प्रवृत्तिथाय तेथीयथार्थपणे निर्द्धारसहितजाणपणोप्रवर्त्ततेजीवनेद्रव्यानुयोगें तत्वज्ञानप्रगटे तेथीजेआत्मगुणप्रगटे तेआत्मगुणरक्षणायेंजप्रवर्त्ते एहवीस्वरूपानुयायी आत्मगुणनीप्रवृत्ति तेहनेधर्मकरीसद्दहे तेमाटेस्याद्वादपरिणामी पंचास्तिकायछे तेस्याद्वादरूपज्ञान तेनयज्ञानेथाय माटेनयसहितज्ञानकरवुं तेनयज्ञानअतीदुर्लभछे अनेनयनीअनंतताछे उक्तंच जावइयावयणपहा तावइयाचेवहुंतिनयवाया ॥ तेजे पूर्वापरसापेक्षनही ते कुनयकहियें अने सर्वसापेक्षपणेवर्त्ते तेसुनयकहियें तेमूलसात नयछेतेनुंस्वरूपअल्पमात्रलखियेंछेयें.

नयतेज्ञानगुणनुं प्रवर्त्तनछे जेकारणेएकद्रव्यमध्येअनंताधर्मछे तेएकसमयें श्रुतोपयोगमां आवेनही स्यामाटेजेश्रुतज्ञाननोउपयोग असंख्यातसमयेंथाय अनेवस्तुमध्येतोअ-

नंताधर्म एकसमये परिणमतापामियें तेवारेंश्रुतज्ञान सत्यथायनही तेमाटेनयेंकरीजाणे तथायद्यपिकेवलीनोउपयोग एकसमयीछे तेमाटेजाणवामां नयनुंकार्यकेवलीने पडेनही पणवचनेकहेतां केवलीनेपणनयेंकरीकहेवुंपडेकारणकेवचन तोक्रमेबोलायछे अनेवस्तुधर्मेअनंताएकसमयकालेंछे तेमाटेनयेंकरीकहे वलीजिनभद्रगणीक्षमाश्रमणपूज्यकहेछेः—

जीवादिद्रव्यमांजेगुणछे तेअनंतस्वभावीछे गुणनीछति तेनुंपरिणमन तेनीप्रवृत्ति तेमांजेसमयेकारणता तेसमयेजकार्यता इत्यादि अनेकपरिणतिसहितछे तेथीकोइक रीतें सर्वेनुं भिन्नाभिन्नपणे ज्ञानथाय तेनयथीथाय माटेसमकितरुचिजीवने नयसहितज्ञानकरवुं जे एटलाधर्म सर्वद्रव्यमध्ये रह्याछे माटे प्रथमतो श्रीगुरुकृपाथी द्रव्यगुण पर्याय उलखावेछे एपीठिकाकही हवेमूलसूत्रनाअर्थनुं व्याख्यानकरेछे.

श्रीवर्द्धमानमानम्य स्वपरानुग्रहायच ॥ क्रि
यतेतत्वबोधार्थं पदार्थानुगमोमया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीके०गुणनीशोभा अतिशयशोभायेंविराजमान एहवाश्रीवर्द्धमान अरिहंत शासननानायक तेप्रतेंअत्यंतपणे नमीने नमस्कारकरीने पोतानोमानमूकी त्रण योगसमावी गुणीनेअनुजायीचेतनानुंकरवुं तेनेनमवुंकहियें तेपण स्वके०पोताने अने परजेशिष्यअथवाश्रोतादिकने अनुग्रहके०उपकारने सारु तत्वके० यथार्थवस्तुधर्मतेने बोधके०जाणवानेअर्थें पदार्थके०धर्मास्तिकायादिक छमूलद्रव्य तेनो अनुगमके०साचोपरुपवो ते क्रियतेके०करियेंछेयें.

जगतमांमतांतरीउ द्रव्यनेअनेकपणेकहेछे तिहांनैयायिक सोलपदार्थकहेछे वैशेषिक सातपदार्थकहेछे वेदांतिसांख्य एकपदार्थकहेछे मीमांसक पांचपदार्थकहेछे पणतेसर्वमिथ्याछे तेणेपदार्थनुं स्वरूपजाण्युंनथी अनेश्रीअरिहंत सर्वज्ञप्रत्यक्षज्ञानी ते एकजीवअनेपांचअजीव एरीतेंछपदार्थकहेछे इहांकोइपुछे जेनवतत्वरूप नवपदार्थकह्याछे तेकेम तेनेउत्तर जे एकजीव बीजोअजीव एबेपदार्थतोमूलछे अनेशेष साततत्वतो जीवअजीवनो साधकबाधक शुद्धअशुद्ध परिणतिनीअवस्था भिन्नउलखाववानेकह्याछे.

श्लोक ॥ द्रव्याणांचगुणानांचपर्यायाणांचलक्षणं ॥
निक्षेपनयसंयुक्ततत्वभेदैरलंकृतम्॥ तत्रतत्वभेदप
र्यायैर्व्याख्यातस्यजीवादेर्वस्तुनोभावःस्वरूपतत्वं

अर्थ ॥ द्रव्यना गुणना तथा पर्यायना लक्षण जेउलखाण तेनिक्षेपेंकरी तथा नयें करीयुक्ततत्वनाभेदेंसहितकहुंछुं तत्रके०तिहांजिनागमनेविषे तत्वजेवस्तुस्वरूप भेद तेनाजूदाजूदाभेदपर्याय तेमांरह्याजेधर्म एटलाप्रकारें व्याख्याके०अर्थनुंकहेवुं तेणेकरीने

यथार्थ व्याख्यानथाय तिहांतत्वनुंलक्षणकहेछे व्याख्यानकरवायोग्य जे जीवादिक वस्तु तेनोमूलधर्म तेवस्तुनुंस्वरूपतत्वकहियें जेमकंचननुंस्वरूप पीत गुरुस्निग्धतादि तथाएनुंकार्यआजरणादिक अने एहनुंफलते एहथीअनेकज्ञोग्यवस्तुआवे एमजीवनुं स्वरूप ज्ञानदर्शनचारित्रादिअनंतगुण तथाजीवनुंकार्यसर्वज्ञावनुंजाणवुं प्रमुखएरीतें अज्ञेदपणेंरह्याजेधर्म तेसर्ववस्तुनुंतत्वकहियें.

येनसर्वत्राविरोधेनयथार्थतयाव्याप्यव्यापकज्ञावेनलक्ष्यतेव स्तुस्वरूपंतल्लक्षणं तत्रद्रव्यज्ञेदायथाजीवाअनंताःकार्यज्ञेदे नज्ञावज्ञेदाज्नवंति क्षेत्रकालज्ञावज्ञेदानामेकसमुदायित्वंद्रव्यत्वं .

अर्थ ॥ हवेलक्षणकहेछे जेगुणेकरीसर्वद्रव्य स्वजातिमां अविरोधिपणे यथार्थपणे १ अतिव्याप्ति २ अव्याप्ति असंज्नवादिदोषरहित वस्तुजेव्याप्य तेहनेविषे व्यापकपणे लखियें जाणियें तेनेवस्तुनुंलक्षणकहियें तेलक्षणबेप्रकारनुंछे एकलिंगबाह्य आकाररूप अने बीजुं वस्तुमांरह्योजे स्वरूपते एबेज्ञेदछे तेमांलिंगथीतो गायनुंलक्षण जेशास्नसहितपणो तेवाह्यआकाररूपलक्षणछे एबाह्यलक्षणेजेउलखाणकरे तेबालचालछे अने जेवस्तुनेधर्मेंउलखाय तेस्वरूपलक्षणकहियें जेमचेतनालक्षणतेजीव तथाचेतनारहित तेअजीव इत्यादिकलक्षणें लक्षणस्वरूपजाणवो एमअनेकरीतेंजाणीलेवो ज्ञेदाश्च हवे ज्ञेदनुंस्वरूपकहेछे वक्तव्यवस्त्वंशाः के० जेवस्तुकथनकरताहोय तेहना चारज्ञेदछे तत्र द्रव्यज्ञेदाके०तिहांद्रव्यनाज्ञेदमूललक्षणे सरिखापणापिंरूपणेजूदाछे ते द्रव्यथीज्ञेदकहियें यथाके०जेम सर्वजीवजीवत्वसामान्ये सरिखाछे पणजीवजीवप्रते पोतानागुणपर्यायनो पिंरूपणोजूदोछे कोइनुंकोइमांज्निलिजातोनथी तेमाटे जीवअनंताद्रव्यज्निन्नपणे, तेमजअजीवअनंताद्रव्य ज्निन्नपणे एमपुद्गलपरमाणुपण जरूतारूपपणेसरिखा पणसर्व परमाणुआजूदाद्रव्यछे जेकालेंपूछियें तेकालें एटलानेएटलाछे कोइकालेंघटेनही तेमनवोवधेनही ए सर्वद्रव्यथी ज्ञेदजाणवो.

हवे क्षेत्रांशाः क्षेत्रथीज्ञेदते जेविस्तरेतोजूदोक्षेत्रअवगाहीनेरहे जेमजीवादि द्रव्यनाप्रदेश अवगाहनाधर्मेंजूदाछे पणद्रव्यथीजूदापडेनही संलग्नपणेरहे गुणपर्यायसर्वप्रदेशें अनंताछे तेगुणपर्याय एकप्रदेशमूकीबीजाप्रदेशमांजायनही पर्यायविज्ञागएकनो अनेप्रदेशनो अवगाहसरिखोछे पणतेपर्यायअनंताज्निन्नछे अनेजेअनंतापर्यायमलीने एककार्यकरेतेकार्यनेगुणकहेछे श्रीवीतरागसर्वज्ञएमकहेछे एक्षेत्रथीज्ञेदछे.

एकवस्तुमां उत्पादव्ययरूप पर्यायपलटवानुंमान तेसमयकहियें जेटलोउत्पादव्ययतथाअगुरुलघुनीहानिवृद्धिने परिणमतानुंमान तेसमयकहियें अनेतेथीबीजीपरिण-

मनथइ तेबीजोसमय एमजेअनंतिअतीतप्रवृत्तियइ तेवर्त्तमानप्रवृत्तिनीपरंपरारूप जाणवी अनेआगामिकथासेते कार्यरूपेंयोग्यतारूपजाणवी अतीतकालनो तथाअनागत कालनो कोइढिगलोनथीअनेपिंडरूप पंचास्तिकायनुं वर्ततोजेपरणमन तेनुंमान तेकालक हियें तेनेसमयभेदते त्रीजोकालरूपभेदकहियें ते जेपर्यायभिन्नभिन्नकार्यकरे तेकार्यभेदें भिन्नपणोछे तेमाटेचोथोभावथीभेदकहियें हवेद्रव्यनुंलक्षणकहेछे तेद्रेत्रकाल अनेभाव नाजेभेद तेसर्वनुंएकठामिलिनेपिंडपणे एकाधारपणे समुदायीपणेरहेवुं तेद्रव्यकहियें.

तत्रैकस्मिन्द्रव्येप्रतिप्रदेशे स्वस्वएककार्यकरणसामर्थ्यरू पाअनंताअविभागरूपपर्यायास्तेषांसमुदायोगुणः ॥ भिन्न कार्यकरणेसामर्थ्यरूपाभिन्नगुणस्यपर्यायाः एवंगुणाअप्य नंताः प्रतिगुणंप्रतिदेशंपर्यायाअविभागरूपाः अनंतास्तु ल्याः प्रायीइतितेचास्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंतास्ततोनंत गुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

अर्थ ॥ हवेगुणनुंलक्षणकहेछे तिहां गुणानामासवेदवं इतिवचनात् एकद्रव्यनेविषे स्वस्वके० पोतापोतानो एकजाणवाप्रमुख कार्यकरवानुं जेनेसामर्थ्यछे एवा अनंतासूक्ष्म जेनो अविभागके० बीजोछेदनथाय एवाविभागनो जेसमुदाय तेनेगुणकहियें जेमएक दोरडो सो तांतणानोकह्यो तेसोतांतणा तोअविभागपणे छतापर्यायछे तेदोरडाथीअने ककार्यथाय अनेकवस्तुबंधाय अने अनेकनेआधारथाय अनेकवेटणथाय तेनेसामर्थ्य पर्यायकहियें छतिरूपजेपर्याय तेतोवस्तुरूपछे अने सामर्थ्यपर्यायतो प्रवर्त्तनरूप कार्य रूपछे तेछतिपर्यायनो समुदाय तेनेगुणकहियें छतिपर्यायनाअविभाग तेयोगस्थान स मयस्थानमां कह्याजछे अने भिन्नके० जुदोकार्य करवानुं जेमांसामर्थ्यहोय एवाअवि भागरूप आत्माप्रदेशें वर्तता पर्याय तेभिन्नके० जुदागुणना पर्यायजाणवा जेम जेअ विभाग परिणामालंबनरूपकार्य सामर्थ्यरूप तेनोसमुदाय तेवीर्यगुण एमज जाणवारू पसामर्थ्यछे जेमां एहवाजे अविभागपर्यायछे तेनो समुदायतेज्ञानगुण तेवागुण एकद्र व्यनेविषेअनंताछेतेएकगुणना प्रदेशें प्रदेशे पर्यायअविभागरूप अनंताछे अनेसर्वप्रदे शे सरिखाछे तथापंचास्तिकायमध्ये एकअगुरुलघु पर्यायनोभेद तरतमछे तथापुद्गलपर माणुमध्ये कालभेदें अथवाद्रव्यभेदें वर्णादिकनापर्यायनो तरतमयोग ते थोडाघणाप णेछे तेपर्यायअस्तिरूपछे सदाछताछे कोइपर्यायद्रव्यांतरमां जातोनथी प्रदेशांतरमां पण जातो नथी तेछतिपर्यायथी सामर्थ्यपर्याय अनंतगुणाजाणवा तेकार्यरूपछे तथाच

महाभाष्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतएव ज्ञानपर्यायाः तेचअस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंतात-तोप्यनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

तत्रद्रव्यलक्षणं उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सत्लक्षणंद्रव्यं ए
तत्द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक उभयनयापेक्षयालक्षणं ॥
गुणपर्यायवत्द्रव्यं एतत्पर्यायनयापेक्षया अर्थक्रियाका
रिद्रव्यं एतत्लक्षणंस्वस्वशक्तिधर्मापेक्षया धर्मास्तिका
य अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय
जीवास्तिकाय कालश्चेति

अर्थ ॥ हवेवलीद्रव्यनुंमुख्यलक्षणकहेछे उत्पादके० नवापर्यायनुंउपजवुं व्ययके० पूर्वपर्यायनुंविणसवुं अनेध्रुवके० नित्यपणो एत्रीनपरिणमनपणें सर्वदाजेपरिणमे तेनेद्रव्य कहियें एटलेतेहिजगुणकारणकार्य वेधर्मेंसमकालेंपरिणमेछे कारण विना कार्यथायज नही अनेकार्यकरेनही तेकारणपणसमजवुंनही जेउपादानकारण तेहिजकार्यथायछे ते कारणतानोव्यय अनेकार्यतानुंउपजवुं समकालें थायछे वली कारणपणो समयेंनवो-नवोछे अनेकार्यपणोपण समयेंसमयेंनवोनवोछे ते माटेकारणपणानोपणउत्पादव्ययछे अनेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे अनेगुणपिंडरूपपणें द्रव्याधारपणेध्रुवछे एवीपरिणतियें परिणमे ते सत्के० छतिवंतद्रव्यजाणवो एटले एलक्षणते द्रव्यास्तिकनय तथापर्या-यास्तिकनय एवेभेलाविनेकस्योछे जे ध्रुवपणो ते द्रव्यास्तिकधर्मग्रह्योछे अनेउत्पादव्य-य तेपर्यायास्तिकधर्मग्रह्योछे तेमाटेएलक्षणसंपूर्णछे एतत्वार्थकारकनुंवाक्यछे.

तथावलीबीजुंलक्षण तत्वार्थमांजकह्युंछे एकद्रव्यमां वर्त्तमानस्वकार्यगुणेवर्त्तमानतेगुण अने पर्यायते गुणनुंकारणभूत द्रव्यनुंभिन्नभिन्न कार्यपणे परिणमे द्रव्यगुण एवेहुने स्वाश्रयीपणेपरिणमन तेवेछेजेमां तेद्रव्यकहियें एटलेगुण तथापर्यायवंत तेद्रव्यक-हियें तेद्रव्यएकनावेखंडथायजनही एमूलद्रव्यनुंलक्षणछे अनेजेघणापरमाणुना खंधने द्रव्यमान्योछे तेउपचारेंजाणवो जेनीपरिणतित्रणकालमध्येतेरूपनेत्यजेनही तेद्रव्यपो-तानीमूल जातत्यजेनही जेनेअगुरुलघुनुं षड्गुण हानिवृद्धिरूपलक्षण चक्र एकछोफिरे तेएक द्रव्य अनेजेने जूदोफिरे ते भिन्नद्रव्यकहियेंएटले धर्म अधर्मआकाश ए एक एक द्रव्यछे अनेजीव असंख्यातप्रदेशरूप एकअखंडद्रव्यछे एवा जीवसर्वलोकमध्येअनंता छे तेजीवसिद्धमांवधेछे अनेसंसारीपणामांओछाथायछे पण सर्वसंख्यामां घटता वधता नथी तथापुद्गलपरमाणु एकआकाशप्रदेशप्रमाण एकद्रव्यछे तेवापरमाणु सर्वजीवथी तथा सर्वजीवनाप्रदेशथी पण अनंतगुणाद्रव्यछे स्कंधपणे अथवा छुटा परमाणुपणे

वधे तथा घटीजाय पण परमाणुपुद्गलपणे जेसंख्याछे तेमांवधताघटता नथी ए निश्चयनयथी लक्षण कह्युं.

हवेव्यवहारनयथीलक्षणकहेछे अर्थजे द्रव्यतेनीजे क्रियाके॰ प्रवृत्तितेनेकरे तेद्रव्य कहियें तेमांजीवनीशुद्धक्रिया ते ज्ञानादिकगुणनीप्रवृत्ति जेमसकलज्ञेयजाणवामाटे ज्ञानविभागनीप्रवृत्ति एमसर्वगुणनुंजेकार्य जेमज्ञानगुणनुंकार्यविशेषधर्मनुंजाणवुं तथा दर्शनगुणनुंकार्य सकलसामान्यस्वभावनोबोध अने चारित्रगुणनुंकार्य तेस्वरूपनुंरमवुंइत्यादि अनेधर्मास्तिकायनुंकार्य गतिगुणेपरिणम्याजे जीवतथापुद्गल तेने चालवानेसहकारीथाय एमसर्वद्रव्यनीसमजणजोइलेवी एलक्षण सर्वद्रव्यनाजेगुण छे तेसर्वनास्वकार्यानुयायीप्रवृत्तितेने अर्थक्रियाकहेवी हवेतेछद्रव्यछे १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल एछद्रव्यजाणवा एथी वधारेपदार्थ कोइनथी जे नैयायिकादिक सोलपदार्थकहेछे तेमृषाछे कारणके तेप्रमाणने भिन्नपदार्थकहेछे तेतोज्ञानछे तेआत्माना प्रमेयनोगुणछे तेगुणीजेआत्मा तेमध्येरह्यो छे तेने भिन्नपदार्थ केमकहियें बीजाप्रयोजन सिद्धांतादिक तेसर्वेजीवद्रव्यनी प्रवृत्तिछे ते माटे भिन्नपदार्थकहेवायनहीं.

तथावैशेषिक १ द्रव्य २ गुण ३ कर्म ४ सामान्य ५ विशेष ६ समवाय ७ अभाव एसातपदार्थकहेछे पणतेनेकहियें जेगुणतेतो द्रव्यमांजरह्याछे तो तेनेभिन्न पदार्थकरी कहेवुं तेकेमघटे अने कर्मतेद्रव्यनुंकार्यछे तथा सामान्य अने विशेष एबेतोद्रव्यमध्ये परिणमनछे वली समवायते कारणतारूपद्रव्यनुं प्रवर्त्तनछे अने अभावतो अछताने कहेवाय ते अछताने पदार्थकहेवुंघटतुंनथी तेमाटेवैशेषिकमतपणमृषाछे तेमध्येद्रव्यनव कहेछे १ पृथ्वी २ आप ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ काल ७ दिशि ८आत्मा ए मन एनवपदार्थकहेछे तेनेउत्तर जे पृथ्वी आप तेज वायुएतोआत्माछे पणकर्मयोगें शरीर भेदें नामपड्याछे अनेदिशितोआकाशमांज मिलीगयीछे तथा मन ते आत्मानेसंसारीपणाना उपयोगप्रवर्त्तनानो द्वारछे तेनेभिन्नद्रव्यकेमकहियें.

वलीवेदांतिसांख्य तेएकआत्माअद्वैतपणे एकजद्रव्यमानेछे तेनीपणभूलछे केमके जेशरीरछे तेतोरूपीछे अने पुद्गलद्रव्यनांखंधछे तेकेमएकथाय तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाशछे तेसर्वेप्रसिद्धछे तेजूदोमान्याविना केमचाले तेमाटेअद्वैतपणो रह्यो नही.

अनेबौद्धदर्शन तेसमयसमय नवानवापणे १ आकाश २ काल ३ जीव ४ पुद्गल ए चारद्रव्यमानेछे तेनेपुछीयें जेजीवपुद्गलएकजक्षेत्रें केमरेहेतानथी तेतोचलादिभावपामेछे माटेतेना अपेक्षाकारणरूप १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकायएबेद्रव्यपण मान-

वाजोइयें तथाकेटलाक संसारस्थितिनोकर्त्ता एकपरमेश्वरनेमानेछे तेपण मृषाछे जे निर्मलरागद्वेषरहित एवो परमेश्वर तेपरनासुखदुःखनो कर्त्ताकेमथाय वली कोइक इछा वलगाडेछे तेइछातो अधूरानेछे पूरानेकेमहोय तथा केटलाक परमेश्वरनी लीला कहे छे ते लीलातो अजाण अधूरो तथा जेनेपोतानो आनंद पोतापासेनहोय तेकरे पणजे संपूर्ण चिदानंदघन तेने लीला होयजनही धर्माधर्मौविनानांगंविनांगेनमुखंकुतः ॥ मुखंविनानकर्त्तृत्वंतछास्तारः परेकथं १ अनेमीमांसादिक पांचभूतकहेछे तेमांपण चारभूततो जीवपुद्गलना संबंधेउपनाछेअनेआकाशतेलोकालोकभिन्नद्रव्यछे.

तत्रपंचानांप्रदेशपिंडत्वात् अस्तिकायत्वं कालस्यप्रदेशाभा वात् अस्तिकायतानास्ति तत्रकालउपचारतेवद्रव्यंनवस्तुवृत्त्या ॥

एरीतेअसत्यपरुपणानुंनिराकरणकरी आगमनीसाखे कार्यादिकनेअनुमाने द्रव्यठरेछे माटेतेहिजमानवा तेमां पांचद्रव्य सप्रदेशीछे तेप्रदेशनापिंडपणामाटे अस्तिकायपणो पांचद्रव्यनेछे अने छठोकालद्रव्य तेनेप्रदेशनथी तेमाटे अस्तिकायतानथी तिहांकालते मुख्यवृत्तियेंद्रव्यनथी उपचारथी द्रव्यकहेवायछे जेमवस्तुगते धर्मास्तिकायादिक द्रव्यछे तेमकालद्रव्यनथी जोएकालने पिंडरूपद्रव्यमानियेंतो एनो मानकिहांछे जोमनुष्यक्षेत्रमांकालद्रव्यमानियेंतो बाहिरनाक्षेत्रमां नवपूर्णादिक तथाउत्पादव्यय कोणकरेछे अनेजोचौदराजलोकमां व्यापीमानियेंतो असंख्यातप्रदेश मानवा जोइयें अनेप्रदेशमानवेकरी अस्तिकायथाय अनेजोरेणुक असंख्यातामानियें तोलोकप्रदेश प्रमाण रेणुकथाय तेवारें असंख्याताकालद्रव्यथाय तेतोअनंतद्रव्यमान्योछे माटेएकालने पंचास्तिकायना वर्त्तनारुपपर्यायने आरोपेंद्रव्यमानियें केमके अस्तिकायतानथी अनेसर्वेमांवर्त्तनाकरे एपक्षसत्यछे जे आगमनेविषे ठाणांगसूत्रनाआलावामांछे किंभदंते अद्धासमयेतिवुच्चत्ति गोयमा जीवाचेव अजीवाचेव एटलेकाल ते जीवतथाअजीवनो वर्त्तमानपर्यायछे तेनाउत्पादव्ययरूप वर्त्तनानेकालकह्योछे ते कालने अजीवद्रव्यमांगण्यो तेनोआशयएछे जेजीववर्त्तनाथीअजीववर्त्तनाअनंतगुणीछे तेबहुलतामाटे कालने अजीवगवेष्योछे केमके कालनीवर्त्तना अजीवउपर अनंतिछे अने जीवउपरतेथीथोडीछे माटे.

तथा विशेषावश्यकभाष्यमध्ये नपश्यतिक्षेत्रकालावसौतयोरमूर्त्तत्वात् अवधेश्चमूर्त्तिविषयत्वात् वर्त्तनारूपंतुकालंपश्यति द्रव्यपर्यायत्वात्तस्येति तथा बावीसहजारीमध्ये तथा कालस्यवर्त्तनादिरूपत्वात् पर्यायत्वात् द्रव्योपक्रमःउपचारात् तथाभगवत्यांगे १३ तेरमाशतकमध्ये इहांपुद्गलवर्त्तनानीअपेक्षायें कालनेरूपीगवेष्योछे.

तत्रगतिपरिणतानां जीवपुद्गलानां गत्युपष्टंभहेतुधर्मास्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशालोकप्रदेशपरिमाणः

अर्थ॥ हवेपंचास्तिकायनुं भिन्नभिन्नलक्षणकहेछे जेगतिपरिणामीपणेपरिणम्याजीवतथापुद्गलतेनेगतिनाउंढभानोहेतु तेधर्मास्तिकायद्रव्यकहियें तेधर्मास्तिकायअसंख्याता प्रदेशपरिमाणछे लोकमांव्यापिछे लोकमानछे लोकनाएकएकप्रदेशेधर्मास्तिकायनोएकएकप्रदेश तेअनंतसंबंधीपणेछेएधर्मादित्रणद्रव्य अचल अवस्थितअक्रियछे.

स्थितिपरिणातानां जीवपुद्गलानां स्थित्युपष्टंभहेतुः
अधर्मास्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशलोकपरिमाणः

अर्थ॥ स्थितिपणेपरिणम्या जेजीव तथापुद्गल तेने स्थितिना उंढभानोहेतु ते अधर्मास्तिकाय द्रव्यकहियें तेपणलोकपरिमाणअसंख्यप्रदेशीछे.

सर्वद्रव्याणांआधारभूतः अवगाहकस्वभावानां जीवपुद्गलानां अवगाहोपष्टंभकः आकाशास्तिकायः सचानंतप्रदेशः लोकालोकपरिमाणः यत्रजीवादयोवर्ततेसलोकः असंख्यप्रदेशप्रमाणः ततःपरमलोकःकेवलाकाशप्रदेशव्यूहरूपःसचानंतप्रदेशप्रमाणः

अर्थ॥ सर्वद्रव्यने आधारभूत अवगाहस्वभावी जे जीवतथापुद्गलने अवगाहनानोउंढभानोहेतु तेआकाशास्तिकाय द्रव्यकहियें तेनाप्रदेश अनंताछे लोक तथा अलोकरूपछे तेमांजेक्षेत्रेजीव तथा पुद्गल तथा धर्मास्तिकायअधर्मास्तिकायछे ते क्षेत्रने लोककहियेंअने केवल एकलोकमात्र आकाशजजिहांछे तेनेअलोककहियें एटले जेलोक तेजीवादिद्रव्यसहित अने जीवादिकद्रव्य जिहांनथी तेने अलोककहियें ते अलोकना प्रदेशअनंताछे अवगाहकधर्मे सर्वद्रव्य एमांसमायछे.

कारणमेवतदन्त्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः ॥ एकरसवर्णगंधोद्विस्पर्शः कार्यलिंगीच ॥ पूरणगलनस्वभावः पुद्गलास्तिकायःसचपरमाणुरूपः तेचलोके अनंताः एकरूपाः परमाणवःअनंताः द्व्यणुकाअप्यनंताः त्र्यणुकाअप्यनंताः एवंसंख्याताणुकास्कंधाअप्यनंताः असंख्याताणुकस्कंधाअप्यनंताः एकैकस्मिन्आकाशप्रदेशे एवंसर्वलोकेपिज्ञेयं एवंचत्वारोस्तिकायाः अचेतनाः

अर्थ ॥ हवेपुद्गलद्रव्यनुं स्वरूपलखियेंछेयें जेपूरणके०पूरायें वरणादिगुणेंवधे गली-जाय खरिजाय वरणादिगुणघटिजाय एवोजेमांस्वजावछे तेपुद्गलास्तिकायकहियें तेमूलद्रव्यपरमाणुरूपछे तेपरमाणुनुंलक्षणकहेछे द्व्यणुकादिक जेटलास्कंधछे तेसवेंनुं अत्यंतके०मूलकारणपरमाणुछे एटलेसर्वेस्कंधनुं परमाणुकारणछे पणएपरमाणुनुं कारण कोइनथी कोइनुंनीपजाव्योथयोनथी अनेकोइनेमिलवेपणथयोनथी सूक्ष्मछे एकआकाशप्रदेशनी अवगाहनातुल्य एकपरमाणुछे तोपणते एकआकाशप्रदेशमां अनंतपरमाणुसमायछे पणपरमाणुमध्ये वीजुंद्रव्यकोइसमायनही माटे परमाणु द्रव्य सूक्ष्मछे अने नित्य छे जेटलुं परमाणुद्रव्यछे तेखंधादिक अनेकपणेपरिणमे पणपरमाणुद्रव्य कोइ विणसीजायनही एवुंपरमाणुद्रव्यछे तेएकपरमाणुमां एकरस होय एकवर्णहोय एकगंधहोय अनेलुखोचिकणोटाढोउन्हो एचारफरसमाहेला गमे ते बेफरसहोय एवुं एकपरमाणुद्रव्यछे इहां कोइपुछेजे तेपरमाणुदेखातोनथी तोकेवीरीतेमनाय तेनेउत्तर जेघटपटशरीरादिककार्यदेखायछे ग्रहवायछे तेरूपीछेतो एहनासंबंधनुंकारण परमाणु सूक्ष्मछे माटे इंद्रियज्ञाने ग्रहेवातोनथी परंतुरूपीछे केमके अरूपीथीरूपीकार्यथायनही तेमाटेज परमाणुरूपीछे तेथीएस्कंधपणरूपीथयाछे अनेआकाशप्रदेश अरूपीछे तोतेनो अनंतप्रदेशीस्कंधपणअरूपीछे एमधारवुं तेपरमाणुना द्व्यणुकादिकस्कंध अनंताछे तथाछुटापरमाणु तेपणअनंताछे तेवलीखंधमां मिलेछे तोबीजाखंधमांहेथी छुटाथायछे एमखंधविखरीजाय ने परमाणुथाय तेनी वर्गणा अठ्यावीसप्रकारनीछे तेअठ्यावीस ज्ञेदकम्मपयडीथीजाणवा एमएकलापरमाणु तेपणअनंता तथाबेमिलीनेखंधपाम्यातेवा खंधपण अनंता एमजसंख्याताणुकनाखंध पणअनंता तेमजअसंख्यात परमाणुमिलिखंधथाय तेपणअनंता तथा अनंतपरमाणु मल्याखंधथाय तेवा खंध पणअनंता तेएजातीनाखंधतेएकआकाश प्रदेश अवगाहे आकाशांशअवगाहे एमअसंख्याताप्रदेश अवगाहेछे पणएकवर्गणानी अवगाहना अंगुलनेअसंख्यातमें ज्ञागेअवगाहे वधतिअवगाहेनही अनेअनंतिवर्गणामिले अंगुल हाथ गाउ योजनादिकने माने अवगाहना थाय एम ए १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय एचारेद्रव्यअचेतनछे अजीवछे जाणपणारहितछे.

चेतनालक्षणोजीवः चेतनाचज्ञानदर्शनोपयोगी अनंतपर्यायपरिणामिक कर्तृत्वज्ञोक्तृत्वादिलक्षणोजीवास्तिकायः

अर्थ ॥ हवेजीवद्रव्यनुंस्वरूपकहेछे चेतनाजे बोधशक्तिछे लक्षण जेनुं तेजीवकहियें जेपोतानीपरिणमन तथा परनीपरिणमन सर्वनेजाणे तेजीव तथासर्वद्रव्य तेअनंता

सामान्यस्वनाव अनेअनंताविशेषस्वनाववंतछे तेमांसर्वेद्रव्यनाअनंताविशेषधर्मनुं अवबोधक तेज्ञानगुणकहियें तथासामान्यविशेष स्वनाववंतवस्तुनेविषे जे सामान्यस्वनावनुं अवबोधक तेदर्शनगुणकहियें तेज्ञानदर्शनोपयोगी जेअनंतपर्याय तेनोपरिणामी कर्त्ता नोक्तादिक अनंतिशक्तिनुंपात्र तेजीवजाणवो उक्तंच नाणंचदंसणंचेव, चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरीयंउवउगोय, एवंजीवस्सलक्कणं ॥ १ ॥

चेतनालक्षण ज्ञानदर्शनचारित्रसुखवीर्यादिक अनंतगुणनुंपात्र स्वस्वरूपनोगी तथाअनवच्छिन्नजे स्वावस्थाप्रगटी तेनोनोक्ता अनंतास्वगुणनीजे स्वस्वकार्यशक्ति तेनो कर्त्ता नोक्ता परनावनोअकर्त्ताअनोक्ता स्वक्षेत्रव्यापी अनंतिआत्मसत्तानो ग्राहक व्यापक रमणकरनारो तेनेजीवजाणवो.

पंचास्तिकायानांपरत्वापरत्वेनवपुराणादिलिंगव्यक्तवृत्तिवर्त्तनारूपपर्यायःकालः अस्यचाप्रदेशिकत्वेनअस्तिकायत्वानावःपंचास्तिकायांतर्नूतपर्यायरूपतैवास्य एतेपंचास्तिकायाः तत्रधर्माधर्मौलोकप्रमाणासंख्येयप्रदेशिकौ लोकप्रमाणप्रदेशएवएकजीवः एतेजीवाअप्यनंताः आकाशेहि अनंतप्रदेशप्रमाणः पुजलपरमाणुः स्वयंएकोप्यनेकप्रदेशबंधहेतुनूताद्रव्ययुक्तत्वात् अस्तिकायः कालस्य उपचारेणनिन्नद्रव्यताउक्ता साचव्यवहारनयापेक्षयाआदित्यमतिपरिच्छेदपरिमाणःकालः समयक्षेत्रेएवएषव्यवहारकालः समयावलिकादिरूपइति ॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यनुंलक्षणकहेछे जेपंचास्तिकायनेपरत्वे अपरत्वे एलिंगे तथा पुजलखंधने नवपुराणपणे व्यक्तके०प्रगटछे वृत्तिके०प्रवृत्तितेनेवर्त्तनाकहियें तेवर्त्तनारूप पर्यायतेनेकालकहियें एनेप्रदेशनथीतेमाटे अस्तिकायपणोनथी एकालते पंचास्तिकायनेविषेअंतर्नूतपर्यायपरिणमनछे जातेधर्मास्तिकायादिकनोपर्यायछे एम तत्त्वार्थवृत्तिनेविषे कह्योछे तिहांधर्मास्तिकाय एकद्रव्यछे असंख्यातप्रदेशीछे लोकाकाशनाप्रदेशप्रमाणछे एमअधर्मास्तिकायपण एकद्रव्यछे लोकप्रमाण असंख्यातप्रदेशीछे अनेएकजीवद्रव्यतेपण लोकप्रमाण असंख्यातप्रदेशीछे पण स्वअवगाहना प्रमाणव्यापकछे तेजीवद्रव्यअनंताछे अकृतसदाछता अखंडद्रव्यछे सत्चिदानंदमयीछे पणपरपरिणामीथवे पुजलग्राहक पुजलनोगीथवे प्रतिसमये नवाकर्मबांधवे संसारीथयाछे तेहिज जेवारेंस्वरूपग्राहक स्व-

रूपभोगीथाय तेवारेंसर्वेकर्मेरहितथयी परमज्ञानमयी परमदर्शनमयी परमानंदमयी सिद्धबुद्ध अनाहारी अशरीरी अयोगी अलेशी अनाकारी एकांतिक आत्यंतिक निःप्रयासी अविनाशी स्वरूपसुखनोभोगी शुद्ध सिद्धथाय तेमाटेअहोचेतन एपरभावअभोग्य सर्व जगतनाजीवनीएठ तेनोभोगववापणोतजी स्वभावभोगीपणानो रसीयोथयी स्वस्वरूप निरधार स्वरूपभासन स्वरूपरमणीथयी पोतानाआनंदनेप्रगटकरीनें निर्मलथावुं.

तथाआकाशद्रव्य तेलोकालोकमिलि एकद्रव्यछे अनंतप्रदेशीछे अनेपुद्गलद्रव्यते परमाणुरूपछे केमकेपरमाणुअनंताछेमाटे अनंताद्रव्यछे इहांकोइपूछेजे प्रदेशनासंबंध विनापरमाणुद्रव्यने अस्तिकायकिमकह्योछे तेनेउत्तर जेपरमाणुतो एकप्रदेशीछेपण अनंता परमाणुथीमिलवानाजेकारण तेआद्रव्यतेणेयुक्तछे तेयोग्यतामाटे अस्तिकाय कह्योछे तथाकालद्रव्यने उपचारें भिन्नद्रव्यपणोकह्योछे तेव्यवहारनयनीअपेक्षायें जे मनुष्यक्षेत्रनेविषे सूर्यनीगतिनेपरिज्ञानेएटलेसमयावलिकादिरूप परिमाणे जेमान तेने व्यवहारथीकालकहियें इति एकालमुख्यवृत्तियें तोसमयक्षेत्रमध्येछे अने मनुष्य क्षेत्रथीबाहेर जेजीवोछे तेनाआयुष्यपणएजक्षेत्रप्रमाणे सर्वज्ञदेवेंकह्याछे तथासूर्यनोचारते पण जीवपुद्गलनुंजप्रवर्तनछे कारणके सूर्यतेपणजीवतथापुद्गलछे एटले एकालद्रव्यते कालपणे भिन्नपिंडरूपणे छेस्योनही उपचारेंजछेस्यो एमभावनो.

इहांकोइकहेजे एकएकद्रव्यनेविषे अनेकअनेकपर्यायछे ते कोइपर्यायने द्रव्यपणो नकह्यो अने एकवर्त्तनापर्यायनेविषे द्रव्यनोआरोप शामाटेकर्यो तेनेउत्तर एवर्त्तना परिणतितेसर्व पर्यायने सहकारीछे अनेसर्वद्रव्यनेछे तेथीमुख्यपर्यायछे माटे एने द्रव्यनोआरोपछे तेपणअनादिचालछे.

एतेपंचास्तिकायाः सामान्यविशेषधर्ममयाएवतत्रसामा
न्यतःस्वभावलक्षणं द्रव्यव्याप्यगुणपर्यायव्यापकत्वेन
परिणामिलक्षणंस्वभावःतत्रएकंनित्यंनिरवयवं अक्रियं
सर्वगतंचसामान्यंनित्यानित्यनिरवयवसावयवः सक्रिय
ताहेतुःदेशगतःसर्वगतंचविशेषपदार्थगुणप्रवृत्तिकारणं
विशेषः नसामान्यविशेषरहितं नविशेषःसामान्यरहितः

अर्थ ॥ हवेएपंचास्तिकायते सामान्यविशेषधर्ममयीछे ते सामान्यनुंलक्षण विशेषावश्यकेंकह्योछे तिहांप्रथमथी स्वभावनुंलक्षणकहेछे जेद्रव्यनेविषेव्यापतोहोय तथा गुणपर्यायमांपण व्यापकपणेसदापरिणमतोथकोपामियें तेनेसामान्यस्वभावकहियें ते सामान्यस्वभावजेहोय तेएकहोय तथानित्यअविनाशीहोय तथानिरवयव केंजेहने

अविजागरूप अवयवनहोय अने सर्वगतके०सर्वमांव्यापकपणेहोय ते सामान्यस्वजाव कहियें जीवादिद्रव्यनेविषे एकपणोतेपिंडरूपपणेछे तेसर्वद्रव्यनेविषेछे सर्वगुणपर्याय पोतानेरूपेंअनेकछे पणतेसमुदायपिंडपणुंमूकीने जूदाथायजनही ते माटेएरीतेंजे परिणमनहोय तेसामान्यस्वजावकहियें तेसामान्यनाबेन्नेदछे अस्तितादिकजेसर्वपदार्थनेविषेछे तेमहासामान्यकहियें एनीश्रुतज्ञानेकरी प्रतीतथाय पणप्रत्यक्षतो अवधिदर्शन केवलदर्शनेजजणाय परोक्षेंनग्रहवाय तथा वृक्ष अंब निंब जंबु प्रमुख व्यक्तिअनेकछे पणवृक्षत्वपणो सर्वमांछे एअवांतरसामान्य तेचक्षुदर्शने तथा अचक्षुदर्शनेग्रहवाय अने अस्तित्व वस्तुत्वादिसामान्य ते अवधिदर्शन तथाकेवलदर्शने ग्रहवाय अने विशेषधर्मते ज्ञानगुणेजग्रहवाय हवे विशेषनुंलक्षण कहियेंछेयें कोइकधर्मेंनित्य कोइकधर्मेंअनित्य कोइकरीतेंअवयवसहित कोइकरीतें अवयवरहित अविजागपर्यायें सावयव सामर्थ्यपर्यायें निरवयव पणसक्रियताहेतु देशगतजेगुणते गुणांतरमांव्यापतानथी तेमाटेदेशगत जेगुणहोय तेआखाद्रव्यमां व्यापकजहोय तेनेसर्वगतकहियें तोएवाजेधर्म तेसर्वविशेष जाणवा पदार्थनागुणनीप्रवृत्ति तेनाजेकारणतेविशेषस्वजाव जेकार्यकरेतेगुणनेपण विशेषधर्मेजगणवो जेसामान्यते विशेषरहितनथी अनेजेविशेषते सामान्यरहितनथी.

तेमूलसामान्यस्वजावाःषट् तेचामी १ अस्तित्वं २ वस्तुत्वं ३ द्रव्यत्वं ४ प्रमेयत्वं ५ सत्वं ६ अगुरुलघुत्वं तत्र १ नित्यत्वादीनां उत्तरसामान्यानां परिणामिकत्वादीनां विशेषस्वजावानामाधारजूतधर्मत्वं अस्तित्वं २ गुणपर्यायाधारत्वंवस्तुत्वं ३ अर्थक्रियाकारित्वंद्रव्यत्वं अथवाउत्पादव्यययोर्मध्येउत्पादपर्यायाणांजनकत्वप्रसवस्वाविर्जावलक्षणव्ययीजूतपर्यायाणांतिरोजाव्यजावरूपायाः शक्तेराधारत्वं द्रव्यत्वं ४ स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं प्रमीयतेअनेनेतिप्रमाणं तेनप्रमाणेनप्रमातुंयोग्यंप्रमेयं ज्ञानेनज्ञाय तेतद्योग्यतात्वंप्रमेयत्वं ५ उत्पादव्ययध्रुवयुक्तंसत्वं ६ षड्गुणहानिवृद्धिस्वजावा अगुरुलघुपर्यायास्तदाधारत्वंअगुरुलघुत्वंएते षट्स्वजावाः सर्वद्रव्येषुपरिणमंति तेनसामान्यस्वजावाः

अर्थ ॥ तेमूलसामान्यना जेदछे तेसर्वद्रव्यमांव्यापकपणेछे १ अस्तित्व २ वस्तुत्व ३ द्रव्यत्व ४ प्रमेयत्व ५ सत्व ६ अगुरुलघुत्व एछमूलस्वजावछे ते सर्वद्रव्य मध्ये

परिणामिकपणेपरिणमेछे एधर्मनेकोइनोसहायनथी तत्रके० तिहां १ सर्वद्रव्यनेविषे उत्तरसामान्यस्वनाव नित्यत्व अनित्यत्वादिक तथाविशेषस्वनाव तेपरिणामिकत्वादिक तेनोआधारनूतधर्म तेधर्मनेतीर्थंकरदेवसामान्यस्वनाव अस्तित्वरूपकहेछे तथा २ गुणपर्यायनो आधारवंतपदार्थ तेनेवस्तुत्वकहियें अने ३ अर्थजेद्रव्य तेनीजेक्रिया जेम धर्मास्तिकायनी चलणसहायक्रिया अधर्मास्तिकायनी थिरसहायक्रिया आकाशद्रव्यनी अवगाहरूपक्रिया जीवनी उपयोगलक्षणक्रिया तथा पुजलनी मिलवाविखरवारूप क्रियानो करवापणो एटलेजे पर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थक्रिया अनेतेअर्थक्रियानो आधारी धर्म तेनेश्रीसर्वज्ञदेवें द्रव्यत्वपणोकह्योछे.

वलीद्रव्यत्वपणानुंलक्षणांतरकहेछे उत्पादपर्यायनीजे प्रसवशक्ति एटले आविर्नाव लक्षण जेशक्ति तेनाव्ययीनूतपर्यायनो तिरोनावथयो अथवा अनावथवारूप शक्तिनो जेआधारनूतधर्म तेनेद्रव्यत्वकहियें.

४ स्वके० पोतेआत्मा अनेपरके० पुजलादिकधर्मास्तिकायादिक अन्यद्रव्यतेने यथार्थपणेजाणे तेज्ञानकहियें तेज्ञानपांचनेदेंछे तेज्ञानना उपयोगमांआवे एवीजेशक्ति तेनेप्रमेयत्वपणोकहियें तेप्रमेयपणोसर्वद्रव्यनुं मूलधर्मछे प्रमाणमांवसाव्योजेवस्तु तेने प्रमेयपणोकहियें तेसर्वद्रव्यसर्वगुणपर्यायप्रमेयछे अनेआत्मानो ज्ञानगुण तेमांप्रमाण पणो तथा प्रमेयपणो एबेधर्मछे पोतानोप्रमाणपणोते पोतेजकरेछे दर्शनगुणनोप्रमाण ज्ञानगुणकरेछे केमके दर्शनगुणते विशेषछे सावयवछे जेसावयवहोय तेविशेषजहोय अने जे विशेषहोयते ज्ञानथीजजणाय दर्शनगुणते सामान्यधर्मनो ग्राहकछे तेपण प्रमाणकहेवाय पणप्रमाणनानेदकह्याछे तिहां ज्ञानजग्रह्युंछे तेनुंकारणजेदर्शनोपयोग तेव्यक्तपक्षतोनथी तेमाटेप्रमाणमध्ये गवेष्यो नथी तेप्रमाणना मूलबेनेदछे एकप्रत्यक्ष अने बीजोपरोक्ष स्पष्टंप्रत्यक्षं परोक्षमन्यत् इतिस्याद्वादरत्नाकरवाक्यात्.

५ उत्पादके० उपजवो व्ययके० विणसवो ध्रुवके० नित्यपणो वस्तुनाएकगुणमां एकसमये एत्रणेपरिणमनें सदापरिणमेछे एवोजेपरिणामते सत्पणोकहियें अने ते सत्पणानो नाव ते सत्वपणो कहियें.

६ तथा बहो १ अनंतनागहानि २ असंख्यातनागहानि ३ संख्यातनागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एबप्रकारनीहानि तथा १ अनंतनागवृद्धि२असंख्यातनागवृद्धि३संख्यातनागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि एबवृद्धि एमबप्रकारनीहानि तथा बप्रकारनीवृद्धि तेअगुरुलघुपर्यायनी सर्वद्रव्यने सर्वप्रदेशे परिणमेछे तेकोइकप्रदेशें कोइसमये अनंतनाग हानिपणेपरिणमे अनेकोइकसमये कोइकप्रदेशें अनंतनागवृद्धिपणे परिणमेछे एवंबार

अविन्नागरूप अवयवनहोय अने सर्वगतके०सर्वमांव्यापकपणेहोय ते सामान्यस्वन्ना-वकहियें जीवादिद्रव्यनेविषे एकपणोतेपिंडपणेछे तेसर्वेद्रव्यनेविषेछे सर्वगुणपर्याय पोतानेरूपेंअनेकछे पणतेसमुदायपिंडपणुंमूकीने जूदाथायजनही ते माटेएरीतेंजे परिणमनहोय तेसामान्यस्वन्नावकहियें तेसामान्यनाबेन्नेदछे अस्तितादिकजेसर्वपदार्थनेविषेछे तेमहासामान्यकहियें एनीश्रुतज्ञानेकरी प्रतीतथाय पणप्रत्यक्षतो अवधिदर्शन केवलदर्शनेजजणाय परोक्षेनग्रहवाय तथा वृक्ष अंब निंब जंबु प्रमुख व्यक्तिअनेकछे पणवृक्षत्वपणो सर्वमांछे एअवांतरसामान्य तेचक्षुदर्शने तथा अचक्षुदर्शनेग्रहवाय अने अस्तित्व वस्तुत्वादिसामान्य ते अवधिदर्शन तथाकेवलदर्शने ग्रहवाय अने विशेषधर्मते ज्ञानगुणेजग्रहवाय हवे विशेषनुंलक्षण कहियेंछैयें कोइकधर्मेंनित्य कोइकधर्मेंअनित्य कोइकरीतेंअवयवसहित कोइकरीतें अवयवरहित अविन्नागपर्यायें सावयव सामर्थ्यपर्यायें निरवयव पणसक्रियताहेतु देशगतजेगुणते गुणांतरमांव्यापतानथी तेमाटेदेशगत जेगुणहोय तेआखाद्रव्यमां व्यापकजहोय तेनेसर्वगतकहियें तोएवाजेधर्म तेसर्वे विशेष जाणवा पदार्थनागुणनीप्रवृत्ति तेनाजेकारणतेविशेषस्वन्नाव जेकार्यकरेतेगुणनेपण विशेषधर्मजगणवो जेसामान्यते विशेषरहितनथी अनेजेविशेषते सामान्यरहितनथी.

तेमूलसामान्यस्वन्नावाःषट् तेचामी १ अस्तित्वं २ वस्तुत्वं ३ द्रव्यत्वं ४ प्रमेयत्वं ५ सत्त्वं ६ अगुरुलघुत्वं तत्र १ नित्यत्वादीनां उत्तरसामान्यानां परिणामिकत्वादीनां विशेषस्वन्नावानामाधारन्नूतधर्मत्वं अस्तित्वं २ गुणपर्यायाधारत्वंवस्तुत्वं ३ अर्थक्रियाकारित्वंद्रव्यत्वं अथवाउत्पादव्ययोर्मध्येउत्पादपर्यायाणांजनकत्वप्रसवस्वाविन्नावलक्षणव्ययीन्नूतपर्यायाणांतिरोन्नाव्यन्नावरूपायाः शक्तेराधारत्वं द्रव्यत्वं ४ स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं प्रमीयतेअनेनेतिप्रमाणं तेनप्रमाणेनप्रमातुंयोग्यंप्रमेयं ज्ञानेनज्ञाय तेतद्योग्यतात्वंप्रमेयत्वं ५ उत्पादव्ययध्रुवयुक्तंसत्वं ६ षड्गुणहानिवृद्धिस्वन्नावा अगुरुलघुपर्यायास्तदाधारत्वंअगुरुलघुत्वंएते षट्स्वन्नावाः सर्वद्रव्येषुपरिणमंति तेनसामान्यस्वन्नावाः

अर्थ ॥ तेमूलसामान्यना ठन्नेदछे तेसर्वेद्रव्यमांव्यापकपणेछे १ अस्तित्व २ वस्तुत्व ३ द्रव्यत्व ४ प्रमेयत्व ५ सत्त्व ६ अगुरुलघुत्व एठमूलस्वन्नावछे ते सर्वेद्रव्य मध्ये

परिणामिकपणेपरिणमेछे एधर्मनेकोइनोसहायनथी तत्रके० तिहां १ सर्वद्रव्यनेविषे उत्तरसामान्यस्वभाव नित्यत्व अनित्यत्वादिक तथाविशेषस्वभाव तेपरिणामिकत्वादिक तेनोआधारभूतधर्म तेधर्मनेतीर्थंकरदेवसामान्यस्वभाव अस्तित्वरूपकहेछे तथा २ गुणपर्यायनो आधारवंतपदार्थ तेनेवस्तुत्वकहियें अने ३ अर्थजेद्रव्य तेनीजेक्रिया जेम धर्मास्तिकायनी चलणसहायक्रिया अधर्मास्तिकायनी थिरसहायक्रिया आकाशद्रव्यनी अवगाहरूपक्रिया जीवनी उपयोगलक्षणक्रिया तथा पुद्गलनी मिलवाविखरवारूप क्रियानो करवापणो एटलेजे पर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थक्रिया अनेतेअर्थक्रियानो आधारी धर्म तेनेश्रीसर्वज्ञदेवें द्रव्यत्वपणोकह्योछे.

वलीद्रव्यत्वपणानुंलक्षणांतरकहेछे उत्पादपर्यायनीजे प्रसवशक्ति एटले आविर्भावलक्षण जेशक्ति तेनाव्ययीभूतपर्यायनो तिरोभावथयो अथवा अभावथवारूप शक्तिनो जेआधारभूतधर्म तेनेद्रव्यत्वकहियें.

४ स्वके० पोतेआत्मा अनेपरके० पुद्गलादिकधर्मास्तिकायादिक अन्यद्रव्यतेने यथार्थपणेजाणे तेज्ञानकहियें तेज्ञानपांचभेदेंछे तेज्ञानना उपयोगमांआवे एवीजेशक्ति तेनेप्रमेयत्वपणोकहियें तेप्रमेयपणोसर्वद्रव्यनुं मूलधर्मछे प्रमाणमांवसाव्योजेवस्तु तेने प्रमेयपणोकहियें तेसर्वद्रव्यसर्वगुणपर्यायप्रमेयछे अनेआत्मानो ज्ञानगुण तेमांप्रमाण पणो तथा प्रमेयपणो एबेधर्मछे पोतानोप्रमाणपणोते पोतेजकरेछे दर्शनगुणनोप्रमाण ज्ञानगुणकरेछे केमके दर्शनगुणते विशेषछे सावयवछे जेसावयवहोय तेविशेषजहोय अने जे विशेषहोयते ज्ञानथीजजणाय दर्शनगुणतें सामान्यधर्मनो ग्राहकछे तेपण प्रमाणकहेवाय पणप्रमाणनाभेदकह्याछे तिहां ज्ञानजग्रह्युंछे तेनुंकारणजेदर्शनोपयोग तेव्यक्तपरूतोनथी तेमाटेप्रमाणमध्ये गवेष्यो नथी तेप्रमाणना मूलबेभेदछे एकप्रत्यक्ष अने बीजोपरोक्ष स्पष्टंप्रत्यक्षं परोक्षमन्यत् इतिस्याद्वादरत्नाकरवाक्यात्.

५ उत्पादके० उपजवो व्ययके० विणसवो ध्रुवके० नित्यपणो वस्तुनाएकगुणमां एकसमये एत्रणेपरिणमनें सदापरिणमेछे एवोजेपरिणामते सत्पणोकहियें अने ते सत्पणानो भाव ते सत्वपणो कहियें.

६ तथा छहो १ अनंतभागहानि २ असंख्यातभागहानि ३ संख्यातभागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एछप्रकारनीहानि तथा १ अनंतभागवृद्धि२असंख्यातभागवृद्धि३संख्यातभागवृद्धि४संख्यातगुणवृद्धि५असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि एछवृद्धि एमछप्रकारनीहानि तथा छप्रकारनीवृद्धि तेअगुरुलघुपर्यायनी सर्वद्रव्यने सर्वप्रदेशे परिणमेछे तेकोइकप्रदेशें कोइसमये अनंतभाग हानिपणेपरिणमे अनेकोइकसमये कोइकप्रदेशें अनंतभागवृद्धिपणे परिणमेछे एवंबार

प्रकारें परिणमेडे ते अगुरुलघुपर्यायनी परिणमनशक्ति तेअगुरुलघुत्वं अगुरुलघुनोजाव जाणवो तत्वार्थटीकानेविषेपांचमाअध्यायें अलोकाकाशनेअधिकारें कह्योडे एमएड स्वजाव सर्वद्रव्यनेविषे परिणमेडे एडएद्रव्यनोमूलस्वजावडे द्रव्यनोजिन्नपणो प्रदेश-नोजिन्नपणो तेअगुरुलघुनेजेदपणे थायडे तेमाटे एडमूलसामान्यस्वजावडे एद्रव्या-स्तिकधर्मडे अने एतुंपरिणमनते पर्यायास्तिक धर्मडे केटलाकवादीएमकहेडेजे पर्याय-नोपिंमतेद्रव्यडे पणद्रव्यपणोजिन्ननथी जेम धूरी पइमा कागमो १ मागली जूंहरी प्रमुख समुदायने गामोकहियें पण सर्वअवयवथीजिन्न गामापणोकोइदेखातोनथी ते-मज ज्ञानादिकगुणथी जिन्नपणेकोइ आत्मादेखातोनथी तेने कहियें जे ज्ञानादिकगु-णनेविषे डतिएकपिंमसमुदायता सदाअवस्थितपणो अनेद्रव्यथीमिलीनजाय तथास्व-क्रियावंतपणो इत्यादिकसामान्यधर्मडे डतिअस्तित्व अर्थक्रियावंततेद्रव्यपणो एकपिं-मपणोतेवस्तुत्व इत्यादिकते सर्वद्रव्यपणोडे एटले द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक ए बे-हुमलीनेद्रव्यपणोडे उक्तंच संमतौदव्वापज्जवरहिआ नपज्जावादववउविउप्पत्ति एमूलसा-मान्यस्वजावनाडजेद कह्या.

तत्रअस्तित्वं उत्तरसामान्यस्वजावगम्यं तेचोत्तरसामान्य स्वजावाअनंताअपिवक्तव्येनत्रयोदश १ अस्तिस्वजा वः २ नास्तिस्वजावः ३ नित्यस्वजावः ४ अनित्यस्वजा वः ५ एकस्वजावः ६ अनेकस्वजावः ७ जेदस्वजावः ८ अजेदस्वजावः ९ जव्यस्वजावः १० अजव्यस्वजावः ११ वक्तव्यस्वजावः १२ अवक्तव्यस्वजावः १३ परमस्व जावः इत्येवरूपंवस्तुसामान्यानंतमयं

अर्थ ॥ तथावली अस्तित्व उत्तरसामान्यस्वजावकहेडे ते उत्तरसामान्यस्वजाववस्तुमध्ये अनंताडे पणतेरसामान्यस्वजाव अनेकांतजयपताकादिग्रंथे वखाण्याडे तेमां-थीलेशमात्र लखियेडैयें तेनानामऊपरनामूलपाठमां सुजडे माटे लिख्यानथी तथाए-ना व्याख्यानथी पणजणासे एतेर सामान्यस्वजावें परिणमंतिवस्तुहोय.

स्वद्रव्यादिचतुष्टयेनव्याप्यव्यापकादिसंबंधि स्थितानांस्वपरिणामात् परिणामांतरागमनहे तुः वस्तुनःसद्रूपतापरिणतिः अस्तिस्वजावः

अर्थ ॥ तेमां १ प्रथम अस्तिस्वजावनुं लक्षणकहेडे स्वके० पोतानाद्रव्यादिकचार

धर्मतेनोजेमां व्यापकपणोछे १ द्रव्यतेगुणपर्यायना समुदायनो आधारपणो २ क्षेत्रतेप्रदेशरूप सर्वगुणपर्यायनी अवस्थानेराखवापणो जेजेनेराखे तेतेनुंक्षेत्रजाणवुं ३ कालते उत्पादव्यय ध्रुवपणेवर्त्तना ४ भावते सर्वगुणपर्यायनो कार्यधर्म तिहांजीवद्रव्यनुं १ स्वद्रव्यप्रदेशगुणनोसमुदायद्रव्यछे तेगुणपर्यायनो जनकपणो तेस्वद्रव्य अने २ जीवनाअसंख्याताप्रदेशते स्वपर्यायनोस्वक्षेत्रपर्यायतेजाणवा एटले देखवादिकजेगुणनोपर्याय तेनुं जेक्षेत्र तेस्वक्षेत्र ३ पर्यायमध्ये कारणकार्यादिकनो जे उत्पादव्यय तेस्वकाल तथा ४ अतीतअनागत वर्त्तमाननुंपरिणमनतेस्वभाव तेकार्यादिकधर्म जेमज्ञानगुणनो पर्याय जाणंगपणो वेत्तापणो परिछेदकपणो विवेचनपणोइत्यादिक स्वभाव एमस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव जेपरिणामिकपणेपरिणमता तेनीअस्तिताकेवी एसर्वनीछतिछेतेअस्तिस्वभावछे एअस्तिस्वभावें द्रव्यछे तेपोतानोमूलधर्ममूकी अन्यधर्मपणे परिणमतो नथी परिणामांतरे आगमनछे एअस्तिस्वभावते सर्वद्रव्यमां पोतानागुणपर्यायनो जाणवो जेअस्तितेसद्रूपता छतारूपपणानी परिणतिलेवी सर्वद्रव्य पोतानेंधर्मेंजपरिणमें पणजेजीवद्रव्यते अजीवद्रव्यपणेनपरिणमे तथा एकजीव ते अन्यजीवपणे नपरिणमे वलीएकगुणते अन्यगुणपणेनपरिणमे ज्ञानगुणनेविषे दर्शनादिकगुणनीनास्तिता छे अनेज्ञाननाधर्मनीअस्तिताछे तथा एकगुणनापर्याय अनंताछे तेसर्वपर्यायधर्मेंसरिखा छे पण एकपर्यायनाधर्म बीजापर्यायमांनही अने बीजापर्यायनाधर्म पहेलापर्यायमांनही माटेसर्व पोतानेधर्मेंजअस्तिछे एरीतेंअस्ति नास्तिनुं ज्ञानसर्वत्रकरवुं एद्रव्यनेविषे प्रथमअस्तिस्वभावकह्यो.

अन्यजातीयद्रव्यादीनां स्वीयद्रव्यादिचतुष्टयतयाव्यवस्थितानांविवक्षिते परद्रव्यादिकेसर्वदैवाभावाविछिन्नानां अन्यधर्माणांव्यावृत्तिरूपोभावः नास्तिस्वभावः यथाजीवेस्वीयाः ज्ञानदर्शनादयोभावाः अस्तित्वेपरद्रव्यस्थिताः अचेतनादयोभावानास्तित्वेसाचनास्तिताद्रव्येअस्तित्वेनवर्तते घटेघटधर्माणां अस्तित्वं पटादिसर्वपरद्रव्याणांनास्तित्वंएवंसर्वत्र

अर्थ ॥ हवेबीजानास्तिस्वभावनुं स्वरूपलखियेंछेयें अन्यकेंवीजाजेद्रव्यादिक जे द्रव्यगुणपर्याय तेनापोताना जेद्रव्यक्षेत्रकालभाव तेतेहिजद्रव्यमां सदाअवष्टंभपणे परिणमेछे एटले विवक्षित द्रव्यादिकथी परजेबीजाद्रव्यादिकना जेधर्म ते तेमांसदा अभावपणे निरंतरअविछेदछे तेमाटेपरद्रव्यादिकना धर्मनीव्यावृत्तितापणानोजेपरधर्म ते विवक्षितद्रव्यमांनथी एवाद्रव्यमांजेभावछे तेनास्तिस्वभावजाणवो जेमजीवनेविषे

ज्ञानदर्शनादिक पोतानाजेभाव तेतोअस्तिपणेछे अनेपरद्रव्यमां रह्याजेअचेतनादिक भाव तेनीनास्तिताछे एटलेतेधर्मजीवद्रव्यमांनथी माटे परधर्मनी नास्तिताछे पणतेना-स्तिता तेद्रव्यमध्ये अस्तिपणेरहीछे जेमघटनाधर्मघटमांछे तेथीघटमां घटधर्मनोअ-स्तित्वपणोछे पणपटादिसर्वपरद्रव्योनो नास्तित्वपणो ते घटनेविषेरह्योछे तथाजीवमध्ये जीवज्ञानादिकगुण तेअस्तित्वपणेछे पणपुद्गलनावर्णादिक जीवमध्येनथी माटेवर्णादिक-नीनास्ति ते जीवमध्येरहिछे श्रीभगवतीसूत्रेकह्युंछे हेगौतम अछित्वं अछित्तेपरिणमयी नछित्वं नछित्तेपरिणमयी तथाठाणांगसूत्रे १ सियअत्थि २ सियनत्थि ३ सियअत्थि-नत्थी ४ सियअवत्तवं एचोभंगीकहीछे अनेश्रीविशेषावश्यकमध्येकह्युंछेके जे वस्तुनो अस्तिनास्तिपणोजाणे तेसम्यग्ज्ञानी अनेजेनजाणे अथवा अयथार्थपणेजाणे ते मि-थ्यात्वी उक्तंच सदसदविशेषणाउ भवहेउजहच्छीउवलंभाउ ॥ नाणफलाभावाउ मि-छादिठिसअन्नाणं ॥ १ ॥ एगाथानीटीकामध्ये स्याद्वादोपलक्षितवस्तुस्याद्वादअसस-भंगीपरिणामः एकैकस्मिन्द्रव्येगुणेपर्यायेचसप्तसप्तभंगाभवंत्येव अतः अनंतपर्यायपरि-णतेवस्तुनिअनंताः सप्तभंग्योभवंति इतिरत्नाकरावतारिकायां तेद्रव्यनेविषे गुणनेविषे पर्यायनेविषे स्वरूपेंसातभंगाहोय जेएसातभंगानो परिणामते स्याद्वादपणोकहियें.

तथाहि स्वपर्यायैःपरपर्यायैरुभयपर्यायैः सद्भावेनासद्भा वेनोभयेनवार्पितोविशेषतः कुंभःअकुंभः कुंभाकुंभोवा अवक्तव्योभयरूपादिभेदोभवति सप्तभंगीप्रतिपाद्यतेइत्य र्थः उष्ठग्रीवाकपोलकुक्षिबुध्नादिभिः स्वपर्यायैःसद्भावेना र्पितः विशेषतःकुंभकुंभोभण्यते सन्घटइतिप्रथमभंगोभ वति एवंजीवः स्वपर्यायैः ज्ञानादिभिः अर्पितः सन्जीवः

अर्थ ॥ एसप्तभंगी परनीअपेक्षायेंनथी तेद्रव्यादिकमध्येजछे यथास्वधर्मेपरिणमवुं एअस्तिधर्मछे अनेपरद्रव्यनाधर्मेनपरिणमवुं एनास्तिनुंफलछे तेमाटेएसप्तभंगी तेवस्तु-धर्मेछे तेविशेषावश्यकथी सप्तभंगीलखियेंछेयें एकविवक्षितवस्तु स्वके०पोतानेपर्यायें सद्भावके०छतापणेछे अनेपरपर्यायेंजे अन्यद्रव्यनेपरिणमे तेनो असद्भावके०अछतापणो परिणमेछे तथाजेछता अथवाअछतापर्याय तेनोछतापणोछे कोइकपणे अछतापणोछे माटे छताअछतापणोपण तेजकालेंछे केमके वस्तुमध्ये अनेकधर्मछे तेसर्वकेवलीने ए-कसमयें समकालेंभासेछे तेपणवचनेभंगांतरेजकहीशके अनेछद्मस्थने श्रद्धामांतोसर्व धर्म समकालेसद्दहेछे पण छद्मस्थनोउपयोग असंख्यातसमयीछे अनुक्रमेछे पूर्वापरसा-पेक्षछे तेथीसप्तभंगेभासनछे जेवस्तुमांसमकालेंछे समकेतिनी श्रद्धामां समकालेछे अने

केवलीनाभासनमां समकालेछे तेश्रुतज्ञानीनाभासनमां क्रमपूर्वकछे केमके भाषासर्वक्रमेंकहेवायछे तेथीअसत्यथाय तेनेजोस्यात्पदंपरुपियेंजाणियें तोसत्यथाय माटेस्यात्पूर्वक सप्तभंगीकहियें द्रव्यगुणपर्याय स्वभावसर्वमध्येछे तेरीतेंसद्दहवी तेदृष्टांतेकरीकहेछे उंछकेंद्रोठ गावरू कांठो कपाल तलो कुक्षिपेटो बुध्न पोहोलो इत्यादिस्वपर्यायेंकरी घटछतोछे तेघटनेस्वपर्यायें छतापणे अर्पितकरियें तेवारेंते कुंभकुंभधर्में सन्केंछतोछे पणअछतादिकधर्मनी छतिसापेक्षराखवाने स्यात्पूर्वककहेवो एटले स्यात्अस्तिघटः एप्रथमभंगोजाणवो तथाजीवादिद्रव्यनेविषे जीवनाज्ञानादिगुण तेनेपर्यायें जीवद्रव्यनेनित्यादि स्वभावेंकरीने स्यात्अस्तिजीवः एमसर्वद्रव्यनेकहेवो यद्यपि जीवतथाअजीवनो नित्यपणो सरिखोभासे पणतेएनोतेमांनही अनेतेनोएमांनही जोपणजीवसर्व एकजातीद्रव्यछे पणएकजीवमांजे ज्ञानादिगुणछे तेबीजाजीवमांनथी माटेसर्वद्रव्य स्वधर्मेंज अस्तिछे अने परधर्मेंनास्तिछे एमस्यात्अस्तिजीव एप्रथमभंगजाणवो.

तथापटादिगतैस्त्वक्त्राणादिभिः परपर्यायैरसद्भावेनार्पितः अविशेषितः अकुंभोभवति सर्वस्यापिघटस्यपरपर्यायैर सत्वविवक्षायामसन्घटः एवंजीवोपिमूर्त्तत्वादिपर्यायैः अ सत्जीव इतिद्वितीयोभंगः

अर्थ ॥ पटनेविषेरह्यात्वक्जे शरीरनीचामडीनेढांके लांबोपथराय इत्यादिपर्याय ते घटनापर्यायनथी परपर्यायछे पटनेविषेरह्याछे घटनेविषेएपर्यायनी नास्तिछे तेथी एपर्यायनो असद्भावछे तेमाटे एघटनापर्यायनथी एमसर्वपर्यायें घटनथी तेवारेंपरपर्यायना अछतापणानीविवक्षायें अछतोघटछे एमजीवपण मूर्त्तिपणादिक अचेतनादिपर्यायनो जीवमध्येअसत् अछतापणो तेथीजीवपरपर्यायेंनास्तिछे माटे स्यात्नास्ति एबीजोभांगो जाणवो केमके परपर्यायनी नास्तितानुं परिणमन द्रव्यनेविषेछे.

तथासर्वोघटःस्वपरोभयपर्यायैः सद्भावासद्भावाभ्यांसत्वास त्वाभ्यामर्पितोयुगपद्वक्तुमिष्टोऽवक्तव्योभवति स्वपरपर्या यसत्वासत्वाभ्यांएकैकेनाप्यसांकेतिकेनशब्देन सर्वस्यापि तस्यवक्तुमशक्यत्वादिति एवंजीवस्यापि सत्वासत्वाभ्यामे कसमयेनवक्तुमशक्यत्वात् स्यादवक्तव्योजीव इतितृतीयो भंगः एतेत्रयःसकलादेशाः सकलंजीवादिकंवस्तुग्रहणपरत्वात्

अर्थ ॥ सर्वघटादिवस्तुछे तेस्वपर्यायजे पोतानासद्भावपर्याय तेणेकरी छतापणे कहे-वाय तथा परनेपर्यायें अछतापणकहेवाय तेवारें स्वपर्यायनोछतापणो परपर्यायनोअछ-तापणो एबेधर्मसमकालेंछे पणएकसमयेंकहेवायनही तेमाटेएघटादिद्रव्यतेस्वद्रव्यमां स्वपर्यायनोसत्वपणो परपर्यायनोअसत्वपणो तेकोइपणएक सांकेतिकशब्दें करी कहेवा-नेसमर्थनही माटे सत्व अस्तिपणो असत्व नास्तिपणो ते एकसमयेंकहेवामां असमर्थछे तेथीवस्तुस्वन्नावनाबेधर्म तेएकसमयेंछताछे तेनोज्ञानकरवामाटे स्यात्अवक्तव्य एवच-नबोल्या केमके कोइकनेएवोबोधथाय जेसर्वथीवचने अगोचरजछे तेमाटेस्यात्पददीधो स्यात्के०कथंचितपणे कोइकरीतें एकसमयेनकहेवाय माटे स्यात्अवक्तव्यएजीवछे एम सर्वद्रव्यजाणवा एत्रीजोन्नांगोथयो एत्रणन्नंगासकलादेशीछे सर्ववस्तुने संपूर्णपणेग्रहे-वारूपछे जीवादिकजेवस्तु तेनेसंपूर्णग्रहेवावंतछे.

अथचत्वारोविकलादेशाः तत्रएकस्मिन्देशेस्वपर्यायसत्वेन
अन्यत्रतुपरपर्यायसत्वेन संश्चअसंश्चन्नवति घटोऽघटश्चएवं
जीवोपिस्वपर्यायैःसन् परपर्यायैः असन् इतिचतुर्थोन्नंगः

अर्थ ॥ हवेचारन्नांगाविकलादेशी कहेछे जेवस्तुनुंस्वरूपकहेवो तेनाएकदेशनेजग्रहे एस्वरूपछे तिहांएकदेशनेविषे स्वपर्यायनोसत्वपणो अस्तिपणोगवेषेछे तेवारेंवस्तु स-द्असत्पणेछे एटलेएघटछे अनेएघटनथी एमजीवपणस्वपर्यायेंसत् परपर्यायेंअसत् ते माटेएकसमयेंअस्तिनास्तिरूपछे पणकहेवामांअसंख्यातसमयेंछे तेमाटेस्यात्पूर्वकछे एम स्यात् अस्तिनास्ति एचोथोन्नंगोजाणवो.

तथाएकस्मिन्देशेस्वपर्यायैः सद्भावेनविवक्षितः अन्यत्र
तुदेशेस्वपरोन्नयपर्यायैः सत्वासत्वाभ्यांयुगपदसंकेतिकेनश
ब्देन वक्तुंविवक्षितः सन्अवक्तव्यरूपः पंचमोन्नंगोन्नवति
एवंजीवोपिचेतनत्वादिपर्यायैःसन्शेषैः अवक्तव्यइति

अर्थ ॥ तथा एकदेशेंपोतानेपर्यायें स्वद्रव्यादिकें छतापणेगवेषीयें अने अन्यके० बीजादेशोनेविषे स्वपरएबेपर्यायें सत्वछतापणें तथा असत्व अछतापणें समकालें अ-संकेतपणे नामनेअणकहेगवेषीयें तेवारेंसत्के०अस्तिअवक्तव्यरूप न्नांगोउपजे अने एन्नांगाछतांबीजाछन्नांगाछे तेनीगवेषणामाटे स्यात्पदजोडीयें एटलेस्यात्अस्ति अव-क्तव्य एपांचमोन्नांगोजाणवो जेमजीवनेविषे चेतनपणोसुखवीर्यगुणें अस्तिछे अनेना-स्तिपणे अस्तिनास्ति समकालपणे वचनगोचरनआवे ते स्यात्अस्तिअवक्तव्य.

तथाएकदेशेपरपर्यायैरसद्भावेनार्पितोविशेषतः अन्यै
स्तुस्वपरपर्यायैःसद्भावासद्भावाभ्यांसत्वासत्वाभ्यांयुगप
दसंकेतिकेनशब्देनवक्तुंविवक्षितकुंभोऽसन् वक्तव्यश्चभ
वति अकुंभोवक्तव्यश्चभवतीत्यर्थः देशेतस्याकुंभत्वा
देशेअवक्तव्यत्वादिति षष्ठोभंगः

अर्थ ॥ तथाएकदेशेंपरपर्याय जेनास्तिपर्याय तेने असद्भावके०अछतापणे अर्पित करीने मुख्यपणेगवेषीयें तेवारपछिअन्यके०बीजास्वपर्यायें अस्तिपणोतथापरपर्यायजे नास्तिपर्याय एबे सत्वके०छतापणे असत्वके०अछतापणे युगपत्समकालेकहियें एसंके-तिकशब्दने अभावें कहेवामांनआवे अनेतेकह्याविनाश्रोतानेज्ञानकेमथाय तेमाटेस्यात् पदते अन्यभांगानी सापेक्षतामाटे तथा सर्वधर्मनीसमकालता जणाववा माटे स्यात्-नास्तिअवक्तव्य एछठोभांगोजाणवो एटलेजीवपोताने स्वगुणेतोछतापणो सर्वपर्याय स-मकालनोअवक्तव्यपणो एस्यात्नास्तिअवक्तव्य छठोभांगोथयो.

तथाएकदेशेस्वपर्यायैःसद्भावेनार्पितः एकस्मिन्देशे परप
र्यायै रसद्भावेनार्पितः अन्यस्मिंस्तुदेशेस्वपरोभयपर्यायैः
सद्भावासद्भावाभ्यां युगपदेकेनशब्देनवक्तुं विवक्षितः
सन्असन्अवक्तव्यश्चभवतिइतिसप्तमोभंगः एतेनएक
स्मिन्वस्तुन्यर्पितानर्पितेनसप्तभंगीउक्ता ॥

अर्थ ॥ तथाएकदेशे स्वपर्यायनेछतापणे अर्पितकरियें अनेएकदेश परपर्यायने अ-छतापणेगवेषियें अनेतेसर्वपर्याय समकालेंभेलारह्याछे पणवचनेकहेवायनही एटलेअ-स्तिपणोपणछे अनेनास्तिपणोपणछे एसर्वधर्म समकालेंछे पणवचनेगोचरथायनही ए अपेक्षायें स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एरीतेंवस्तुनोपरिणमनछे एसा-तमोभांगोजाणवो एसप्तभंगी अर्पितअनर्पितपणेकही तेअर्पितएकधर्मजहोय एम एकधर्मनेविषेसप्तभंगीकही.

तत्रजीवःस्वधर्मैर्ज्ञानादिभिःअस्तित्वेनवर्त्तमानः तेनस्यात्
अस्तिरूपःप्रथमभंगः अत्रस्वधर्माअस्तिपदग्रहीताःशेषा
नास्तित्वादयोधर्माः अवक्तव्यधर्माश्चस्यात्पदेनसंग्रहीताः

अर्थ ॥ हवेस्वरूपपणेसप्तभंगीकहेछे जेएकद्रव्यनेविषे अथवाएकगुणनेविषे एक पर्यायनेविषे एकस्वभावनेविषे सातसातभांगा सदापरिणमेछे तेरीतेंसप्तभंगीकहेछे स्या-

द्रादरत्नाकरावतारिकामध्येकह्योछे एकस्मिन्जीवादौ अनंतधर्मापेक्षासप्तभंगीनामानं-
त्यं एवचनथीजाणीवेजो अभिजीवे इत्यादिगाथाथीजाणजो एसुयगडांगसूत्रेंछे हवे पेहे-
लोभांगोलखियेंछेयें तिहांजीवद्रव्यपोताने स्वद्रव्यपिंडगुणपर्यायसमुदाय आधारपणो
स्वक्षेत्रअसंख्यप्रदेश ज्ञानादिगुणनुंअवस्थान अगुरुलघुताहानिवृद्धिनोमान अनेस्वका-
ल तेगुणनीवर्त्तना उत्पादव्ययनीपरिणमननो भिन्नस्वभावतथाअनंतज्ञानअनंतदर्शन अ-
नंतचारित्र अनंतदान अनंतलाभ अनंतभोग अनंतउपभोग अनंतवीर्य अनंतअव्या-
बाध अरूपी अशरीरी परमक्षमा परममार्द्दव परमआर्जव स्वरूपभोगीप्रमुख स्वस्व-
भाव एअनंतज्ञेयज्ञायकपणे जीवद्रव्यछतोछे एमजीवनोज्ञानगुण सधर्म सकलज्ञेयज्ञा-
यकपणो स्वशक्तिधर्मे अनंतअविभागें एकएकपर्यायअविभागमां सर्वअभिलाप्य अन-
भिलाप्य स्वभावनोजाणगपणोछे इहांविस्तारेंलखियेंछेयें तिहांमतिज्ञानना पर्यायजू-
दाछे श्रुतज्ञानना अविभागजूदाछे मनपर्यायज्ञानना अविभागजूदाछे केवलज्ञानना प-
र्यायजूदाछे श्रीविशेषावश्यकें गणधरवादनेछेकेकह्योछे जोआवरवायोग्यवस्तुभिन्नछे तो-
आवरणजूदाछे तिहांक्षयोपशमनेभेदेंजाणेछे तेपरोक्ष अथवादेशथीजाणेछे सर्वथाआ-
वरणगयेथकेप्रत्यक्षजाणे पण केवलज्ञानसर्वभावनोसंपूर्ण प्रत्यक्षज्ञायक तेसंपूर्णप्रगट्यो
तेवारेंबीजाज्ञाननीप्रवृत्तिछे पणभिन्नप्रकृतिनथी माटेतेकेवलज्ञाननो जाणपणोज कहेवा-
यछे तथाकोइक ज्ञानगुणना अविभागसर्व एकजातीनाकहेछे तेअविभागमध्ये वरणादि-
कजाणवानीशक्ति अनेकप्रकारनीछे तेमांजेआवरणएटले जे शक्तिप्रगटेते शक्तिनुं मति-
ज्ञानादि भिन्ननामछे अनेसर्वआवरणगयाथी एककेवलज्ञानरह्युंछे छद्मस्थज्ञाननोभासछे
एपणव्याख्यानछे एवोज्ञानगुणपोतानास्वपर्याय ज्ञायक परिछेदक वेतृत्वादिकेंअस्तिछे
एमसर्वगुणमां स्वधर्मेनी अस्तिताकहेवी तेमजजेअविभागरूपपर्यायछे जेनासमूहनी एक
प्रवृत्तिनेगुणकहियेंछेयें तेपणस्वकार्यकारणधर्मे अस्तिछे एमछद्रव्यनुंस्वरूप स्वस्वरूपेंअ-
स्तिछे अने अन्यछे भांगापणछेएवोसापेक्षतामाटे स्यात्पददेइनेबोलवो तेस्यात्अस्तिए-
प्रथमभांगापणो थयो एटले गवेष्यो जेअस्तिधर्म तेपणनास्तिपणासहितछे एट-
ले अस्तिकहेतां थकां नास्ति प्रमुख छभांगानीछतिछे तिहांशब्दसहित उपयोगथयो
तेथीसत्यपणो थयो.

तथास्वजात्यन्यद्रव्याणां तद्धर्माणांचविजातिपरद्रव्याणां
तद्धर्माणांच जीवेसर्वथैवअभावात्नास्तित्वंतेनस्यात् ना
स्तिरूपोद्वितीयोभंगः अत्रपरधर्माणांनास्तित्वं नास्तिपदे
नगृहीतं शेषाअस्तित्वादयः स्यात्पदेगृहीताइति

अर्थ॥ हवेबीजोभांगोकहेछे जेएकजीवनुं स्वरूप उपयोगमां आण्याछे तेजीवनेविषे अन्यजे सिद्धसंसारी जीवछेते सर्वना गुणपर्याय अस्तित्वादिप्रमुख सर्वधर्मनीनास्तिछे अने अजीवद्रव्यतथातेना जडतादिकसर्वधर्मनीनास्तिछे जेम अग्निमांदाहकपणोछे तेनी पासे बीजोअग्निनोकणियुंपड्योछेतेपणदाहकछे पणतेदाहकपणोभिन्नछे एटले तेकणीयांनोदाहकपणो ते अग्निमांनथी अने तेअग्निनोदाहकपणो तेकणीयांमांनथी तेमज एकजीवमां ज्ञानादिकगुणछे तेबीजामांनथी अनेबीजाजीवमां जेज्ञानादिकगुणछेते तेमांनथी बाकी सरिखाछेतेमाटेजाणवादिककार्यसरिखाकरे तोपणसर्वमांपोतपोतानागुणछे पणकोइद्रव्यनागुणकोइद्रव्यमांआवतानथी तेमाटे स्वजाति अन्यद्रव्यपणो अन्यगुणपणो तथाअन्यधर्मपणोते सर्वनीनास्तिछे एमजगुणमांपणसर्व अन्यद्रव्यादिकनीनास्तिछे तथापर्यायना अविभागमां पण स्वजातिअविभागकार्यता कारणतानीनास्तिछे तेमाटेपरद्रव्यपणोपरक्षेत्रपणो परकालपणो परभावपणोएनी नास्तिछे एवोनास्तिपणापण तेमांजरह्योछे तेमाटे स्यात्नास्तिपणो एभांगोपणतेमांजछे एमएकज मात्रनास्तिपणोकह्यो थके अस्तिपणो तथाएककालपणोपणछे तथाजीवमांजडतागुणनीनास्तिछे एटलेजडतानीनास्तिते जीवमांजरहीछे इत्यादिकअनंताधर्मनीसापेक्षतामाटे स्यात्पदेंबोलतां सर्वधर्मनोभासन थयो एटलेसत्यता थाय तेमाटे स्यात्नास्ति एबीजोभांगोकह्यो.

केषांचिद्धर्माणां वचनगोचरत्वेन तेनस्यात्अवक्तव्य इ

तितृतीयोभंगः अवक्तव्यधर्मसापेक्षार्थंस्यात्पदग्रहणं

अर्थ ॥ हवेत्रीजोभांगोकहेछे जेवस्तुहोय तेमां केटलाकधर्मएवाछे जेवचनेकरी कहेवातानथी तेअवक्तव्यछे तेकेवलीनेज्ञानमांजणायछे पणवचनेकरीतेपणकहीशकेनही तेमाटेतेवाधर्मनीअपेक्षायें वस्तुअवक्तव्यछे एटलेकहेतांथकां वक्तव्यनीनाथयीपणकेटलाकधर्मवस्तुमध्येवक्तव्यछे तेजणाववामाटे स्यात्पदग्रहणकरीने स्यात्अवक्तव्य एत्रीजोभांगोकह्यो.

अत्रअस्तिकथने असंख्येयाः नास्तिकथनेप्यसंख्येयाः

समयावस्तुनिएकसमये अस्तिनास्तिस्वभावौ समकवर्त्त

मानौ तेनस्यात्अस्तिनास्तिरूपश्चतुर्थोभंगः

अर्थ ॥ हवेचोथोभांगोकहेछे जेअस्तिएवोशब्द उच्चारकरतांपणअसंख्यातसमयथाय तथानास्तिएशब्द उच्चारकरतांपण असंख्यातसमयथाय अनेवस्तुमांतो अस्तिधर्मनास्तिधर्मएबेहुएकसमयमांछे तेबेहुसमकालेंजणाववामाटे अनेजेअस्ति ते नास्तिनथाय तथाजेनास्ति ते अस्ति नथाय तेसापेक्षतामाटेस्यात्अस्तिनास्तिएचोथोभांगोजाणवो.

तत्रअस्तिनास्तिभावाःसर्वेवक्तव्याएवनअवक्त
व्याइतिशंकानिवारणायस्यात्अस्तिअवक्तव्य
इतिपंचमोभंगः स्यान्नास्तिअवक्तव्यइतिषष्ठः

अर्थ ॥ हवेपांचमोतथा छठोभांगोकहेछे तिहांस्यात्अवक्तव्य एमकहेवाथी द्रव्य तेमूलधर्मेंएकलो अवक्तव्यथयो तेसंदेहनिवारवाने कह्योजे स्यात्अस्तिअवक्तव्य वस्तुमांअनंताअस्तिधर्मछे पणवचनेअगोचरछे अनेअनंताधर्मवचनगोचरपणछे तेना सापेक्षताभाटे स्यात्पदयुक्तकरीने एटलेस्यात्अस्तिअवक्तव्यः एपांचमोभांगोजाणवो एमजपांचमानीरीतें स्यात्नास्तिअवक्तव्यः एछठोभांगोजाणवो.

अत्रवक्तव्याभावाः स्यात्पदेगृहीताः अत्रअस्तिभावावक्तव्या
स्तथाअवक्तव्याः तथानास्तिभावावक्तव्याअवक्तव्याःएकस्मिन्
वस्तुनिगुणेपर्यायेएकसमयेपरिणममानाइतिज्ञापनार्थं स्यात्अ
स्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोभंगः अत्र वक्तव्याभावास्तेस्या
त्पदेसंगृहीताइतिअस्तित्वेनअस्तिधर्मानास्तित्वेननास्तिधर्मा
युगपद्भयस्वभावत्वेनवक्तुमशक्यत्वात्अवक्तव्यः स्यात्पदेच
अस्त्यादीनामेवनित्यानित्याद्यनेकांतसंग्राहकं

अर्थ ॥ हवे सातमोभांगोकहेछे इहांअस्तिभावपणोवक्तव्यछे तेमजनास्तिभावपणवक्तव्यछे अने अवक्तव्यपणछे एसर्वेधर्मएकसमयमां एकवस्तुमध्ये तथाएकगुणमध्ये तथाएकपर्यायमध्ये समकालेंपरिणमेछे तेजणाववामाटे अस्तिनास्तिअवक्तव्यः एसातमोभांगो इहांअस्तितेनास्तिनथाय अने नास्तितेअस्तिनथाय तथावक्तव्यते अवक्तव्य नथाय अनेअवक्तव्यते वक्तव्यनथाय तेजणाववानेअर्थे स्यात्पदग्रह्योछे इहांअस्तिपणेजेभावछे तेअस्तिधर्म अनेनास्तिपणेजेभावछे तेनास्तिपणेग्रह्याछे बेहु समकालेछेतेमाटे एकसमय वक्तव्यकेंकहेवामांअशक्यछे असमर्थछे तेथीअवक्तव्यकेंअगोचरपणेछे अनेजेस्यात्पदछे तेअस्तिधर्म नास्तिधर्म अवक्तव्यधर्मनोनित्यपणो अनित्यपणोप्रमुख अनेकांतनोसंग्रहकरेछे जेअस्तिधर्मछे तेनित्यपणेपणछे तथाअनित्यपणेपणछे एकपणेछे अनेकपणेछे भेदपणेछे अभेदपणेछे इत्यादिक तेअस्तिधर्ममांअनेकांतताछे तेनेअर्थेछे केमके वस्तुनोएकगुण तेमांअस्तिपणोछे नास्तिपणोछे नित्यपणोछे अनित्यपणोछे भेदपणोछे अभेदपणोछे वक्तव्यपणोछे अवक्तव्यपणोछे भव्यपणोछे अभव्यपणोछे एअनेकांतपणो एहजस्याद्वादछे तेनुंसंकेतिकवाक्य तेस्यात्पदछे एरीतेजाणवो.

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीअस्तिताछे परधर्मनीनास्तिताछे स्वगुणनोपरिणमवो अ-नित्यछे अनेतेजगुणपणेनित्यछे तथाद्रव्यपिंरूपणेएकछे अनेगुणपर्यायपणेअनेक छे त-थाआत्माकारणपणे कार्यपणें समयसमयमांनवानवापणोजेपामेछे तेजवनधर्मछे तोप-णआत्मानोमूलधर्मजेपलटतोनथी तेअजवनधर्मछे इत्यादिकअनेकधर्म परिणतियुक्तछे एरीतेषद्द्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान जासनथाय तेसम्यक्ज्ञान सम्यक्दर्शनछे एजीवनीअशुद्धता तेपरकर्त्ता परजोक्ता परग्राहकता टालवानाउपा-यनुंसाधन तेसाधनकरवे आत्माआत्मापणें मूलधर्मेरहे तेसिद्धपणो तेनीरुचिउद्य-मपणोकरवो एहिजश्रेयछे.

स्यात्अस्ति स्यान्नास्ति स्यात्अवक्तव्यरूपास्त्रयः सकला देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकत्वात् मूलतः अस्तिजावाअ स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तजंगाः एवंनित्यत्व सप्तजंगी अनित्यत्वसप्तजंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तजंगी तद्यथा

अर्थ ॥ स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एत्रणजांगा वस्तुनासंपूर्ण रूप-नेग्रहे माटेसकलादेशीछे अने शेषरह्याजेचारजांगा तेविकलादेशीछे तेवस्तुनाएकदे-शनेग्रहेमाटे. तथावलीअस्तिपणानेविषेजेअस्तिपणो तेनास्तिपणेनथी अनेनास्तिप-णोनास्तिपणेछे तेमांअस्तिपणोनथी इहांकोइपुछेके वस्तुमांजेनास्तिपणोते अस्तिपणे कहोछो तोनास्तिपणामां अस्तिपणानीनाकिमकहोछो तेनेउत्तर जेनास्तिपणोतेअ-स्तिछे छतापणेछे अने अस्तिधर्मकांइनास्तिपणामांनथी माटेनाकहीछे छतिनीनाक-हीनथी तथाएमज नित्यपणानीसप्तजंगी तथा अनित्यपणानीसप्तजंगीतेमज सामान्य धर्मसर्वेनी जिन्नजिन्नसप्तजंगी तथासर्वेविशेषधर्मनीसप्तजंगी तेमजगुणपर्यायसर्वेनी जू-दीजूदी सप्तजंगी कहेवी तद्यथाके०तेकहीदेखाडेछे.

ज्ञानंज्ञानत्वेनअस्तिदर्शनादिजिः स्वजातिधर्मैः अचेत नादिजिः विजातिधर्मैः नास्ति एवंपंचास्तिकायेप्रत्यस्ति कायमनंतासप्तजंग्योजवंति अस्तित्वाजावेगुणाजावात्प दार्थेशून्यतापत्तिः नास्तित्वाजावेकदाचित् परजावत्वेन परिणमनात् सर्वसंकरतापत्तिः व्यंजकयोगेसत्तास्फु

रति तथाअसत्तायाअपिस्फुरणात्पदार्थानामनियतापतिपत्तिः तत्वार्थेतन्नावाव्ययंनित्यं ॥

अर्थ ॥ हवेगुणनीसप्तजंगीकहीदेखाकेछे जेमज्ञानगुण ज्ञायकादिकगुणेअस्तिछे अनेदर्शनादिकस्वजातिएकद्रव्यव्यापिगुण तथास्वजातिजिन्नजीवव्यापि ज्ञानादिकसर्वेगुण अनेअचेतनादिक परद्रव्यव्यापि सर्वधर्मनीनास्तिछे एमपंचास्तिकायनेविषे अस्तिकायें अनंतिसप्तजंगीउपामे एसप्तजंगी स्याद्वादपरिणामेंछे तेसर्वद्रव्यादिकमांछे.

हवे वस्तुमध्येअस्तिपणोनमानियें तोस्योदोषउपजेतेकहेछे जोवस्तुमांअस्तिपणो नमानियें तोगुणपर्यायनोअन्नावथाय अनेगुणनाअन्नावें पदार्थशून्यतापणो पामे.

तथाजोवस्तुमध्ये नास्तिपणोनमानियेंतो तेवस्तुकदाकालें परवस्तुपणें अथवा परगुणपणें परिणमिजाय तेथीकोइवारे जीवतेअजीवपणोपामे अनेअजीवतेजीवपणोपामे तोसर्वसंकरतादोषउपजे तथा व्यंजनके०प्रकटतानोहेतु तेनेयोगेंछतोधर्म तेफुरे पण जेधर्मनीसत्ताछतिनहोय तेफुरेनही जोनास्तिपणोनमानियें तोअसत्तापणेफुरे अनेजेवारेंअसत्तास्फुरे तेवारेंद्रव्यनो अनियामकके०अनिश्चयपणोथइजाय तेमाटेसर्वेन्नाव अस्तिनास्तिमयीछे व्यंजकतानोदृष्टांतकहेछे जेमकोराकुंजामांसुगंधतानीसत्ताछे तोज पाणीनेयोगेंवासनाप्रगटेछे जोवस्त्रादिकमांतेधर्मनथी तोतेमांप्रगटतोपणनथी एमसर्वेत्रजाणवो हवेत्रीजोनित्यस्वन्नावकहेछे तेजेवस्तुनान्नावतेनो अव्ययके०नहीटलवो एटलेतेमनोतेमजरहेवो तेनित्यपणोकहियें तेनाबेन्नेदछेतेकहेछे.

एकाअप्रच्युतिनित्यता द्वितीयापारंपर्यनित्यता ॥ तथा द्रव्याणांऊर्ध्वप्रचयतिर्यगूप्रचयत्वेनतदेवद्रव्यमितिध्रुवत्वेननित्यस्वन्नावःनवनवपर्यायपरिणमनादिन्निः उत्पत्तिव्ययरूपोनित्यस्वन्नावः उत्पत्तिव्ययस्वरूपमनित्यं ॥

अर्थ ॥ एकअप्रच्युतिनित्यता बीजीपारंपर्यनित्यता तिहां अप्रच्युतिनित्यतातेनेकहियें जेद्रव्यतेऊर्ध्वप्रचय तिर्यक्प्रचयनेपरिणमवे एद्रव्यतेहिज एध्रुवतारूपज्ञानथाथछे एटलेसदासर्वदा त्रणेकालेतेहिज एवुंजेज्ञानथायछे जेमूलस्वन्नावपलटेनही ते अप्रच्युतिनित्यताकहियें अनेएनित्यतामांजे ऊर्ध्वप्रचयकह्यो तेउलखावेछे जेपहेले समयें द्रव्यनीपरिणतिहती तेबीजेसमयेंनवापर्यायनेउपजवे अनेपूर्वपर्यायनेव्ययें सर्वपर्यायनी परावृत्तिथइ तोपणएद्रव्यतेनुंतेज एवुंजे ज्ञानथायते द्रव्यमांऊर्ध्वप्रचयकहियें उपरले समयेतेमाटेऊर्ध्वप्रचयकहियें.

तथाअनंताजीवसरिखाछे पणसर्वेभिन्नभिन्नछे पणसर्वेजीवजाणताए पणजीवएवो जीवत्वसत्तायेंतुल्यभिन्नजीवसत्तारूपज्ञान थाय तेतिर्यक्प्रचयकहियें.

ऊर्ध्वप्रचय ते समयांतरे अनेकउत्पादव्ययनेपलटवे पणएजीवते तेजछे एवुंज्ञान थाय एनित्यस्वभावनोधर्मजाणवो एकारणथीकार्यउपनो तेनुंज्ञानथाय तेनित्यस्वभावनोधर्मजाणवो तथाएकारणथीजेकार्यउपनो वलीज्ञानथयुं तेकारणथीबीजेकारणेबीजुं कार्यथाय एमनवेनवेकार्यउपने पणजीवतेजछे एवुंजेज्ञानथाय परंपरारूपसंततिचाली जाय तेपारंपर्यनित्यताकहियें जेमप्रथम शरीरनेकारणेरागहतो तेहिज वस्त्रधननेकारणप्रतेरागथयो तेकारणनवारागनोनवापणोपणरागरहितआत्माकेवारे नहीं एपारंपर्य एटले परंपरानित्यताकहियें बीजुंनामसंततिनित्यताजाणवी तेकारणयोगेनिमित्तेंनीपजे नवानवापर्यायनेपरिणमवे एटले पूर्वपर्यायनेव्ययथवे तथाअभिनवपर्यायनेउपजवे अनित्यस्वभावजाणवो एटलेउत्पत्तिके० उपजवो व्ययके० विणसवो एवोजेस्वभाव ते अनित्यस्वभाव जाणवो.

तत्रनित्यत्वंद्विविधं कूटस्थंप्रदेशादीनां परिणामित्वं ज्ञानादिगुणानां तत्रोत्पादव्ययावनेकप्रकारौ तथापिकिंचिल्लिख्यते विस्रसाप्रयोगजभेदात्द्विभेदोसर्वद्रव्याणांचलनसहकारादिपदार्थक्रियाकारणंभवत्येव ॥

अर्थ ॥ तिहांवलीग्रंथांतरे नित्यपणोबेप्रकारेकह्योछे एककूटस्थनित्यता बीजीपरिणामिनित्यताछे जीवनाअसंख्यातप्रदेश तेसंख्यायें तथाक्षेत्रावगाह पलटतोनथीते तथागुणनोअविभाग तेसर्वकूटस्थनित्यताछे.

ज्ञानादिकगुणएसर्व परिणामिकनित्यतायेंछे केमकेगुणनोधर्मजएछे जेसमयेंसमयेंस्वकार्यपणेपरिणमे अनेजेकार्यहोय तेपरिणामिकपणेजहोय एनीतिजछे अने जोज्ञानगुणने कूटस्थनित्यतापणेमानियें तोपेहेलेसमयेंजे ज्ञानेकरीजाण्यो तेहिज जाणपणो सदासर्वदारहे पणतेमतोनथी ज्ञेयतोनवनवीरीतें परिणमतादेखायछे तो तेज्ञेयनीनवनवी अवस्थाज्ञानजाणेनही एटलेपहेलेसमयजेरीते ज्ञानपरिणमेछे तेरीतें परिणमनजोवुंजोईयें अनेएरीतें ज्ञानयथार्थथयुं एमघटे नहीं तेमाटे ज्ञेयजे घटपटादिक तेजेमपलटेछे तेमज्ञानपणजाणे तोहिजज्ञानयथार्थथाय तेमाटेज्ञानगुण ते नवानवाज्ञेयजाणवामाटे परिणामीजाणवो अनित्यज्ञायकताशक्ति माटेनित्य एरीतें नित्यानित्यस्वभावी सर्वगुणछे सर्व द्रव्यनेविषेपोतानीक्रियानुंकारणथायजछे.

तत्रचलनसहकारित्वंकार्यंधर्मास्तिकायं ऊव्यस्यप्रतिप्रदेशस्थच लनसहकारिगुणाविनागाः उपादानकारणंकारणस्यैवकार्यपरिण मनात् तेनकारणत्वपर्यायव्ययः कार्यत्वपरिणामस्योत्पादः गुण त्वेनध्रुवत्वं प्रतिसमयंकारणस्यापि उत्पादव्ययौ कार्यस्याप्युत्पा दव्ययावित्यनेकांतजयपताकाग्रंथे एवंसर्वऊव्येषुसर्वेषांगुणा नांस्वस्वकार्यकारणताज्ञेया इतिप्रथमव्याख्यानं ॥

अर्थ ॥ तिहांजेमधर्मास्तिकायऊव्यनो चलणसहकारीपणो तेमुख्यकार्यछे अने अधर्मास्तिकायऊव्यनो स्थिरसहायी तेमुख्यकार्यछे वलीआकाशऊव्यनुंअवगाहनादान तेमुख्यकार्यछे जीवनोजाणवा देखवारूपउपयोगतेमुख्यकार्यछे पुजलनोवर्णगंधरसस्पर्शपणो तेमुख्यकार्यछे इत्यादिस्वकार्यनोथावुंछे तेजिहांथावुं तिहां नवनधर्मथयो अने जिहांनवनधर्म तेउत्पादथयो अनेउत्पादहोय तेव्ययसहितजहोय तेनवनधर्म तत्वार्थग्रंथमध्येकह्योछे हवेतेउत्पादव्ययबेप्रकारनाछे एकप्रयोगथीथाय अनेबीजो विश्रसाके० सहजेपरिणामीधर्मेथाय हवेइहांसहजनो उत्पादव्ययकहेछे तिहांधर्मास्तिकायादि छऊव्यने पोतापोताना चलणसहकारादिगुणनी प्रवृत्तिरूप अर्थक्रियानोकरवो थायज अनेचलणसहकारपणोतेकार्यं धर्मास्तिकायऊव्यने प्रतिप्रदेशें रह्यो जे चलणसहकारीगुणाविनाग तेउपादानकारणछे तेहिजकार्यपणेपरिणमेछे एटले कारणपणानोव्यय अनेकार्यपणानोउत्पाद तथा चलणसहकारीपणे ध्रुवछे एमज अधर्मास्तिकायनेविषे थिरसहायगुणनुं प्रवर्त्तनछे तथाआकाशास्तिकायनेविषेपण अवगाहनागुणनुं प्रवर्त्तन एमजछे वलीपुजलमां पूरणगलनादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे तेमजजीवऊव्यमां ज्ञानादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे अथवावली अनेकांतजयपताकाग्रंथनेविषेएमपणकह्युंछे जेप्रतिसमयें गुणनेविषे कारणपणो नवोनवोउपजेछे एटलेकारणपणानोपण उत्पादव्ययछे तेमजप्रतिसमयें कार्यपणोपण नवोनवो उपजेछे एटलेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे एमसर्वऊव्यने विषे सर्वगुणनो कार्यपणो कारणपणो उपजे विणसेछे एम उत्पादव्ययनो एक स्वरूप प्रथम नेद कह्यो.

तथाचसर्वेषांऊव्याणांपारिणामिकत्वं पूर्वपर्यायव्ययः नवप र्यायोत्पादःएवमप्युत्पादव्ययौ ऊव्यत्वेनध्रुवत्वंइतिद्वितीयः

अर्थ ॥ सर्वधर्मछेतेपरिणामिकनावेछे तिहांपूर्वपर्यायनो व्यय अनेनवापर्यायनो उत्पाद एउत्पादव्यय समयसमयेंछे अनेऊव्यपणोध्रुवछे ए बीजो नेद.

प्रतिद्रव्यंस्वकार्यकारणपरिणमनपरावृत्तिगुणप्रवृत्तिरूपापरिणतिः अनंताअतीता एकावर्त्तमाना अन्याअनागतायोग्यतारूपाः तावर्त्तमानाअतीताभवंति अनागतावर्त्तमानाभवंति शेषाअनागताकार्ययोग्यतासन्नतांलभंते इत्येवंरूपावुत्पादव्ययौ गुणत्वेनध्रुवत्वं इतितृतीयः अत्रकेचित्कालापेक्षया परप्रत्ययत्वंवदंति तदसत् कालस्यपंचास्तिकायपर्यायत्वेनैवागमेउक्तत्वात् इयंपरिणतिः स्वकालत्वेनवर्तनात्सप्रत्यक्षं एवंतथाकालस्यभिन्नद्रव्यत्वेपिकालस्यकारणताअतीतानागतवर्त्तमानभवनंतुजीवादिद्रव्यस्यैवपरिणतिरिति ॥

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यनेविषे स्वके० पोतानुंकारण परिणमन परावृत्तिके० पलटणपणेगुणनीप्रवृत्तिरूप परिणमनछे ते परिणतिअनंति अनंतजातिनी अतीतकालेंथइछे अने अनंतिजातिनी एकवर्त्तमानकालेंछे अनेबीजीअनागतयोग्यतारूपपणे अनंतिछे ते वर्त्तमानपरिणतिते अतीतथायछे एटले तेपरिणतिमध्ये वर्त्तमानपणानोव्यय अने अतीतपणानोउत्पाद तथा परिणतिपणेध्रुवछे अनेअनागतपरिणति तेवर्त्तमानथायछे तिहां अनागतपणानोव्यय वर्त्तमानपणानोउत्पाद अनेछतिपणेध्रुव अने अनागतकार्ययोग्यता तेदूरहताते आसन्नके० नजीकपणोपामे एटलेदूरतानोव्यय अने नजीकतानोउत्पाद तथाअतीतमध्ये दूरतानोउत्पाद अनेनजीकतानोव्यय एरीतेंसर्व द्रव्यनेविषेअतीतवर्त्तमान तथाअनागतपणे परिणतिछे तेपरिणमेजछे एद्रव्यनेविषेस्वकालरूप परिणमन छे एउत्पादव्ययनोत्रीजोभेद जाणवो.

इहांकेटलाककालनीअपेक्षालेइने परप्रत्ययपणोकहेछे तेखोटोछे कारणके कालद्रव्यजेछेतेपंचास्तिकायनोपर्यायछे अने परिणतितोद्रव्यनोस्वधर्मछे माटेकालतेस्वकालरूपवस्तुनोपरिणाम तेनोभेदछे अथवाकालनेभिन्नद्रव्यमानियें तोपणकालतेकारणपणे छे अनेअतीतअनागतवर्त्तमानरूपपरिणति तेतो जीवादिकद्रव्यनोधर्मछे ते माटेए उत्पादव्ययपणस्वरूपजछे एत्रीजोभेदथयो.

तथाचसिद्धात्मनिकेवलज्ञानस्ययथार्थज्ञेयज्ञायकत्वात्यथाज्ञेयाधर्मादिपदार्थाः तथाघटपटादिरूपावापरिणमंतितथैवज्ञाने भासनात् यस्मिन्समयेघटस्यप्रतिभा

सः समयांतरेघटध्वंसेकपालादिप्रतिभासः तदाज्ञानेघटा प्रतिभासध्वंसः कपालप्रतिभासस्योत्पादः ज्ञानरूपत्वे नध्रुवत्वमितितथाधर्मास्तिकायेयस्मिन्समयेसंख्येयप- रमाणूनांचलनसहकारिता अन्यसमयेअसंख्येयानां ए वंसंख्येयत्वसहकारिताव्ययः असंख्येयानंत सहका रिताउत्पादः चलनसहकारित्वेन ध्रुवत्वं एवमधर्मादि ष्वपिज्ञेयं एवंसर्वगुणप्रवृत्तिषु इतिचतुर्थः ॥

अर्थ ॥ तथाके० तेमजवलीसिद्धात्मानेविषे केवलज्ञानगुणनीसंपूर्णप्रगटताछे तेय- थार्थजेकालें जेज्ञेयजेमपरिणमे तेकालेंतेमजजाणे एहवोज्ञेयनोज्ञायक तेकेवलज्ञानछे जेमधर्मादिद्रव्य तथाघटपटादिज्ञेयपदार्थ जेरीते परिणमे तेरीतेज केवलज्ञानजाणे ते जेसमयेघटज्ञानहतुं तेसमयांतरे घटध्वंसथये कपालनुंज्ञानथाय तेवारेंघटप्रतिभासनोध्वं- सकपालप्रतिभासनोउत्पाद अनेज्ञाननोध्रुवपणो एमदर्शनादि सर्वगुणनोप्रवर्त्तनजाणवो.

तथाधर्मास्तिकायनेविषे जेसमयेसंख्यात परमाणुनो चलनसहकारिपणो हतो फ- रीसमयांतरे असंख्यात परमाणुने चलनसहारी पणोकरे तेवारें संख्याता परमाणुचल- नसहकारतानोव्यय अनेअसंख्येयपरमाणुने चलनसहकारतानो उत्पाद अनेचलनस- हकारीपणेध्रुवछे एमजअधर्मास्तिकायादिकनेविषे पण सर्व गुणनीप्रवृत्तिथायछे एरी- तेएकद्रव्यनेविषेअनंतागुणनीप्रवृत्तिछे इहांकोइपुछशे जेधर्मास्तिकायमध्ये अनंताजीव तथाअनंता परमाणु ते चलणसहकारीथाय एटलोचलनसहकारीछे तोथोडाजीव अ- नेथोडा परमाणुनें चलणसहकारकरतां बीजोगुणकयोअणप्रवर्त्यो रह्यो एमकहे तेनेउत्तर के निरावरणजेद्रव्यछे तेनोगुणअणप्रवर्त्यों रहेजनही अनेजीवपुद्गलजे आवी पहोंता तेने सहकारेंसर्व चलनसहकारीगुणना पर्यायते प्रवर्तेजछे केमकेअलोकाकाशमध्ये जोअव- गाहकजीवपुद्गलनथी तोपण अवगाहकदान गुणतोप्रवर्तेजछे तेमधर्मास्तिकायादिकमां जीवपुद्गलथोडाने पोचवे पणगुणतोबधो प्रवर्त्तेजछे एमधारवो एरीतेंगुण पर्यायनो उ- त्पादव्यय ध्रुवरूपधर्मकहेवो एचोथुंरूपकह्युं.

तथासर्वेपदार्थाः अस्तिनास्तित्वेनपरिणामिनः तत्रास्ति भावानांस्वधर्माणां परिणामिकत्वेनउत्पादव्ययौ ः नास्ति भावानांपरद्रव्यादीनांपरावृत्तौ नास्तिभावानांपरावृत्तित्वेना प्युत्पादव्ययौ ध्रुवत्वंच अस्तिनास्तिद्वयो इतिपंचमः

अर्थ ॥ तथासर्वद्रव्यमांअस्तितथानास्ति ए बे स्वभावपरिणमिरह्याछे तिहांजेअस्तिस्वभावछे तेस्वद्रव्यादिकनोछे ते जेवारेंज्ञानगुण घटजाणतोहतो तेवारें घटज्ञाननीअस्तिताहती अनेतेजघटध्वंस थये कपालज्ञानथयुं तेवारें घटज्ञाननीअस्तितानो व्यय थयो अने कपालज्ञाननी अस्तितानोउत्पादथयो एरीतेंअस्तितानोउत्पादव्ययछे तेज रीतेंनास्तितानोपणउत्पादव्ययजाणवो जेपहेलीघटनास्तिताहती तेपछेघटध्वंसेंकपालनास्तिताथयी एमपरद्रव्यनेपलटवे नास्तितापलटेछे तेस्वगुणनेपरिणामिक कार्यनेपलटवेकरीनेअस्तितापलटेछे अनेजिहांपलटवापणो तिहांउत्पादव्ययथायज एमद्रव्यमां सामान्यस्वभाव सर्वधर्मछे तेमां जेमसंभवेतेम श्रीप्रभुनीआज्ञायें उपयोगदेइने उत्पादव्ययपणोकरवो अने अस्तिनास्तिपणे ध्रुवछे एपांचमोअधिकारकह्यो.

तथापुनःअगुरुलघुपर्यायाणां षड्गुणहानिवृद्धिरूपाणांप्र
तिद्रव्यंपरिणमनात् नानाहानिव्ययेवृध्युत्पादः वृद्धिव्यये
हान्युत्पादः ध्रुवत्वंचागुरुलघुपर्यायाणां एवंसर्वद्रव्येषुज्ञेयं
तत्वार्थवृत्तौआकाशाधिकारेयत्राप्यवगाहकजीवपुद्गलादिर्ना
स्ति तत्राप्यगुरुलघुपर्यायवर्त्तनयावश्यत्वेचानित्यताभ्युपेया
तेचअन्येअन्येचभवंति अन्यथातत्रनवोत्पादव्ययौनापेक्षि
कावितिन्यूनं एवंसल्लक्षणांस्यात् इतिषष्ठः ॥

अर्थ ॥ तथाके०तेमज वलीसर्वद्रव्यतथापर्याय ते अगुरुलघुधर्में संयुक्तहोय द्रव्यनेप्रदेशें अगुरुलघुअनंतोछे तेअगुरुलघुसमयेंसमयें प्रदेशें तथापर्यायें कोइकवारेंवृद्धि पामे कोइकवारेंघटीजाय तेवधुघटुथवोछप्रकारेंछे १ अनंतभागहानि २ असंख्यातभागहानि ३ संख्यातभागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एछप्रकारेंहानि तथा १ अनंतभागवृद्धि २ असंख्यातभागवृद्धि ३ संख्यातभागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंत गुणवृद्धि एछप्रकारनीवृद्धि तेसर्वद्रव्यनासर्वप्रदेशें सर्वपर्यायमांथाय एकप्रदेशमां कोइकसमयेंवधेछे कोइकसमयें घटेछे जेम परमाणुमांवर्णादिक वधेघटेछे तेमअगुरुलघुपणोपण वधेघटेछे हानिनोव्ययछे तोवृद्धिनोउत्पादछे अथवावृद्धिनोव्ययछे तोहानिनोउत्पादछे पणअगुरुलघुध्रुवनोध्रुवछे एमसर्वद्रव्यनेविषेजाणवो तिहांतत्वार्थटीकामां आकाशद्रव्यनें अधिकारेंकह्युंछे तेलखियेंछेयें जिहांअलोकाकाशमध्ये अवगाहकजीवपुद्गलादिकद्रव्यनथीतिहांपण अगुरुलघुपर्यायवंतपणो अवश्यछे तेअगुरुलघुनीअनित्यता अवश्यअंगीकारेछे अनेतेअगुरु-

लघु तेपर्यायें तथाप्रदेशें अन्यअन्यके॰बीजोबीजोथायछे एटलेपूर्वसमयें अगुरुलघुनो व्यय अनेबीजेसमयें नवाअगुरुलघुनो उत्पादछे जोएरीतेनवोउत्पादव्यय गवेषियेनही तोअलोकाकाशनेंविषे सत्लक्षण न्यूनके॰उंछोपरे जेउत्पादव्ययध्रुवतासंयुक्ततेसत्क-ह्यियें अनेजेद्रव्यहोयतेसत्पणासंयुक्तजहोय माटेअगुरुलघुनापरिणमन सर्वद्रव्यमांस-र्वपर्यायमां सर्वप्रदेशमांछे एअगुरुलघुनो उत्पादव्ययकह्यो एछठोअधिकारथयो.

तथाभगवतीटीकायां तथाच अस्तिपर्यायतःसामर्थ्यरूपा विशेषपर्यायास्तेचानंतगुणास्तेप्रतिसमयंनिमित्तभेदेनपरावृत्तिरूपाः तत्रपूर्वविशेषपर्यायाणांनाशः अभिनवविशेषपर्यायाणामुत्पादपर्यायवत्वेध्रुवत्वं इत्यादिसर्वत्रज्ञेयं इतिसप्तमः

अर्थ ॥ तेमजवली अस्तिपर्यायथी विशेषपर्यायजे सामर्थ्यरूप तेअनंतगुणाछे एभगवतीसूत्रनीटीकामध्येकह्योछे जेअस्तिपर्याय तेज्ञानादिकगुणनाअविभागरूपपर्यायछे जेपर्यायपर्यायमांसर्वज्ञेयजाणवानुं सामर्थ्यछे तेविशेषपर्यायछे तथामहाभाष्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतोज्ञानपर्यायाः एसामर्थ्य पर्यायगवेष्याछे एसामर्थ्यपर्याय तेज्ञेयनें निमित्तेछे तेज्ञेयतोअनेकउपजेछे नेअनेकविणशेछे तेवारेंविशेषपर्यायपणपलटेछे तेप्रतिसमयें निमित्तभेदनी परावृत्तिपलटवेथी पूर्वविशेषपर्यायनाशथाय तथाअभिनवविशेषपर्यायनो उपजवोछे अनेपर्यायनीअस्तिताध्रुवछे एमगुणपर्यायनोउत्पादव्ययध्रुवपणो ते सातमोछे ए अस्तिनास्तिस्वभाव वखाण्या.

नित्यताऽभावेनिरन्वयताकार्यस्यभवति कारणाभावताच भवति अनित्यतायाअभावेज्ञायकतादिशक्तेरभावः अर्थक्रियासंभवः तथासमस्तस्वभावपर्यायाधारभूतभव्यदेशानांस्वस्वक्षेत्रभेदरूपाणामेकत्वपिंडीरूपापरत्यागः एकस्वभावः क्षेत्रकालभावानांभिन्नकार्यपरिणामानांभिन्नप्रभावरूपोनकस्वभावः एकत्वाभावेसामान्याभावः अनेकत्वाभावेविशेषधर्माभावः स्वस्वामित्वव्याप्यव्यापकताप्यभावः

अर्थ ॥ एमज सर्वद्रव्यमांनित्यता तथाअनित्यताछे एनित्य अनित्यपणाविनाद्रव्यकोइनथी जोद्रव्यमांनित्यतानहोयतो कार्यनोअन्वयकोनेहोय एटलेअमुककार्यते अमुकद्रव्यें कर्यो एमकह्योजायनही माटेद्रव्यमांनित्यतामानवाथीज अमुकद्रव्ये-अमुककार्यकर्यो एमकहेवायछे माटे जोद्रव्यनेनित्यपणेजमानियें तोगुणनुंकार्य तेद्र-

व्यनोकहेवाय अनेगुणतेद्रव्यनकहेवाय अनेजोद्रव्य नित्यहोय तोकारणपणानो अन्नाव थाय माटेद्रव्यमां नित्यतामानवी अनेजोद्रव्यमां अनित्यपणोनमानियें तो जाणंग आ देदेश्नें सर्वद्रव्यना गुणरूपकार्यनो अन्नावथइजाय अर्थक्रियासंन्नवेनही एटलेकोइक अनित्यपणोहोय तोअर्थक्रियानेकरे केमकेकरवापणोकोइकबीजापणो एटलेनवापणो निपजाववो तेपूर्वपर्यायनो ध्वंसथयेथीथाय अनेतेएकनोध्वंस अनेकोइकबीजा नवा-नोनीपजवो तेद्रव्यमांअनित्यपणोछे एटलेनित्यस्वन्नाव तथा अनित्यस्वन्नाव उंलखा-व्या हवेएकस्वन्नाव तथाअनेकस्वन्नाव उंलखावेछे.

तथाके० तेमज समस्तके० सर्वेजेस्वन्नाव अस्तित्व प्रमेयत्व अगुरुलघुआदिक समस्तपर्याय गुणाविन्नागादिक तेसर्वनुंआधारनुतक्षेत्र तेप्रदेशछे ते स्व के० पोतानाजेक्षेत्र तेसर्वन्नेदरूप जुदाजुदाछे एटलेसंख्याताप्रदेश न्निन्नछे पणतेएकपिंरूपणो किवारेंतज-तानथी सर्वप्रदेशमां अंतरालक्षेत्रपणो कोईवारेंपामतोनथी जेअनंतास्वन्नाव अनंतप-र्याय तेअसंख्यातप्रदेशरूप तेनुंप्रमाणफिरतुंनथी एवोजेद्रव्यनेविषे समुदायपिंरूपणो रहेछे तेएकस्वन्नावकहियें तेपंचास्तिकायमध्ये १ धर्म २ अधर्म ३ आकाश एत्रणद्र-व्यएकेकछे अनेजीवद्रव्यअनंताछे तेथीपुजलपरमाणु अनंतगुणाछे तेएकजीव अनेक रूपनवनवाकरे पण अंतरपडेनही तेमाटे द्रव्यमध्येएकस्वन्नावछे.

क्षेत्रअसंख्यातप्रदेश कालउत्पादव्ययरूप न्नावपर्याय गुणनाअविन्नागते पोताना न्निन्नकार्य परिणामीछे तेसर्वनोन्निन्नप्रवाहछे एटलेसर्वनो कार्यपणोन्निन्नछे तेमाटेद्र-व्यने सर्वस्वन्नावपर्यायन्नेदें विचारतांद्रव्यमां अनेकस्वन्नावपणछे. जोवस्तुमां एकपणा-नो अन्नावमानियें तोसामान्यपणोरहेनही अनेगुणनो पर्यायनो स्वामी आधारते कोण थाय अनेआधारविनागुणादिआधेयते क्यांरहे तेमाटेद्रव्यनो एकपणोछे. जोवस्तुमां अनेकप[illegible]णोनमानियें तो द्रव्यतेविशेषरहितथईजाय तेथीगुणनोअनेकपणो शीरीतेद्रव्यने विषे [illegible]मेयें माटें द्रव्यमां गुणकार्यनो अनेकपणोपणछे तथास्वस्वामिव्याप्य व्यापक-न्नाव[illegible]मतेरे जेगुणपर्याय ते स्व के० धनअनेद्रव्यतेतेनोस्वामीछे अथवा द्रव्यतेव्याप्य अ[illegible] गुणपर्यायते व्यापकछे एरीते द्रव्यमां एकस्वन्नाव तथाअनेकस्वन्नाव जाणवा.

स्वस्वकार्यन्नेदेन स्वन्नावन्नेदेन अगुरुलघुपर्यायन्नेदेनन्नेदस्व न्नावः अवस्थानाधारताद्यन्नेदेन अन्नेदस्वन्नावः न्नेदान्नावेसर्वगु णपर्यायाणां संकरदोषः गुणगुणीलक्षलक्षणः कार्यकारणताना शः अन्नेदान्नावेस्थानध्वंसः कस्यैतेगुणाःकोवागुणीइत्याद्यन्नावः

अर्थ ॥ स्वस्वके० पोतपोताना कार्यनेन्नेदेंकरी एटले जीवद्रव्यमां ज्ञानगुण तेजा-

णवानुंकार्यकरे अनेदर्शनगुण देखवानुंकार्यकरे तथाचारित्रगुण थिरतारमणतारूप कार्यकरे तथापुद्गलद्रव्य ते रूपपणोभिन्नकार्यकरे तथावर्णपणो गंधपणो रसपणो अने स्पर्शपणो सर्वकार्यभिन्नछे तथास्वभावभेदते अस्तिस्वभावछतिरूपछे नित्यस्वभाव अविनाशीपणोछे अनित्यपणोते पलटणरूपछे एकपणोतेपिंडरूपछे अनेकपणोते प्रदेशादिकछे इत्यादि स्वभावभेद तथाअगुरुलघुपर्याय प्रदेशेंगुणाविभागें जूदोजूदोछे कोईकोईनोतुल्यनथी हानिवृद्धिरूपपरिणमनछे इत्यादि प्रकारे द्रव्यमांभेदस्वभावछे.

तथा सर्वधर्मनो अवस्थानके० रहेवो तेनेआधारपणो कार्यनी तुलनाके० सरिखापणोकेवारें भिन्नपडतोनथी तेमाटेद्रव्यमां अभेदस्वभावछे.

जोद्रव्यगुणपर्यायमांभेदस्वभावनहोयतो सर्वसंकरएकपणोथाय तेवारें कार्यनो भेद केमपडे तेमाटे सर्वद्रव्यगुणपर्यायमां भेदसर्वभावछे. जीवतेचेतनालक्षणवंत अजीवते चेतनारहित एभेदछे अजीवमध्ये जेधर्मास्तिकायद्रव्यते चलणसहकारनेंकरेछे पणबीजाअजीवद्रव्यतेएकार्यकरतानथी एमअधर्मास्तिकाय थिरसहायगुणनेंकरेछे आकाशअवगाहदाननेंकरेछे पुद्गलरूपी आवरणस्कंधादिकपरिणमनकरेछे एमसर्वद्रव्यनेंभेदछे तोजभिन्नभिन्नद्रव्यकहेवायछे इहांकोइकहेशेके जीवअनंतातेतोसरिखाछे तोसर्वजीवनें एकद्रव्यशावास्तेनकह्यो तेनेउत्तरजेरूपैया सोनारूपापणे अथवा धवलापणे तोलपणे सरिखाछे पणवस्तुनापिंडपणे भिन्नछे तेमाटे सोनेपण भिन्नभिन्नकहियेंछैयें तेमजीवने पण भिन्नभिन्नकहियें वलीउत्पादव्ययनोफिरवो सर्वमां तेजरीतनोछे पणपलटण ते एकरीतनोनथी तथाअगुरुलघुनी हानिवृद्धिनो फिरवोपण सर्वद्रव्यमां पोतपोतानेछे तेथीसर्वजीव तथासर्वपरमाणुभिन्नछे एभेदस्वभाव जाणवो.

तन्मयतावस्थानाधारताद्यभेदेन अभेदस्वभावः तथातन्मयता अवस्थानतानो अभेदछे अनेआधारतानोपण अभेदपणोछे तेअभेदस्वभावछे.

तथाभेदनोजो अभावपणोमानियें एटलेवस्तुमांभेदपणो नमानियेंतो सर्वगुण तथा पर्यायनो संकरके० एकमेकपणो एदोषलागे तोगुणीकोण तथागुणकोण द्रव्यकोण एम गुणपर्यायने केइद्रव्यनो कयोपर्याय एमवेहेंचणथायनही गुण तथागुणी तथा जेउलखवायोग्यलक्षण तेनुंचिन्ह तथाकारणधर्म तथाकार्यधर्मता एबेजुदापडेनही कार्यधर्म तथाकारणधर्मनो नाशथाय माटेवस्तुमां भेदस्वभावमानवो.

तथाजोवस्तुमांअभेदपणोनमानियें तोस्थानध्वंसथायछे जेस्थान कोण अनेतेस्थानकमां रहेतेकोणछे इत्यादिकनोअभावथायछे एमविचारतां सर्वथाएकपणोमानतां कोण गुणी अनेकोणगुण एमउलखाणनथाय. एरीतेंभेदाभेदस्वभाववस्तुमां मानवा.

परिणामिकत्वेउत्तरोत्तरपर्यायपरिणामरूपोभव्यस्वभावः तथातत्वार्थवृत्तौ इहतुभावेद्रव्यंभव्यंभवनमितिगुणपर्यायाश्च भवनसमवस्थानमात्रकाएवउध्यितासीनोत्कुटकजागृतशयितपुरुषवर्त्तदेवच वृत्यंतरव्यक्तिरूपेणोपदिश्यते जायतेअस्तिविपरिणमतेवर्द्धते अपक्षीयते विनश्यतीति पिंडातिरिक्तवृत्यंतरावस्थाप्रकाशतायांतुजायतेइत्युच्यते सव्यापारैश्चभवनवृत्तिः अस्तिइत्यनेननिर्व्यापारात्मसत्ताख्यायते भवनवृत्तिरुदासीनाअस्तिशब्दस्यनिपातत्वात् विपरिणमतेइत्यनेन तिरोभूतात्मरूपस्यानुछिन्नतथावृत्तिकस्यरूपांतरेणभवनं यथाक्षीरंदधिभावेनपरिणमते विकारांतरवृत्याभवनवत्तिष्ठते वृत्यंतरव्यक्तिहेतुभाववृत्तिर्वाविपरिणामःवर्द्धतइत्यनेनतुपचयरूपःप्रवर्तते यथांकुरोवर्द्धतेउपचयवत्परिणामरूपेणभवनवृत्तिर्व्यज्यते अपक्षीयते इत्यनेनतुतस्यैवपरिणामस्यापचयवृत्तिराख्यायते दुर्बलीभवत् पुरुषवत्पुरुषवदपचयरूपभवनवृत्यंतरव्यक्तिरुच्यते विनश्यति इत्यनेनाविर्भूतभवनवृत्तिस्तिरोभवनमुच्यते यथाविनष्टोघटः प्रतिविशिष्टसमवस्थानात्मिकाभवनवृत्तिस्तिरोभूतानत्वभावस्यैवजाता कपालाद्युत्तरभवनवृत्यंतरक्रमाविछिन्नरूपत्वादित्येवमादिभिराकारैर्द्रव्याण्येवभवनलक्षणान्यपदिश्यंते त्रिकालमूलावस्थायाअपरित्यागरूपोऽभव्यस्वभावः भव्यत्वाभावविशेषगुणानामप्रवृत्तिः अभव्यत्वाभावेद्रव्यांतरापत्तिः

अर्थ ॥ हवे भव्यस्वभाव तथाअभव्यस्वभावकहेछे जीवअजीवादिक द्रव्यछे तेपरिणामिछे समयेंसमयें नवानवापरिणामें परिणमेछे तिहांपूर्वपर्यायनेविनाशे अने उत्तरोत्तर नवानवापर्यायनेप्रगटवे एवीजे द्रव्यनीपरिणति तेनुंमूलकारणते भव्यस्वभाव कहियें तिहांतत्वार्थटीकामध्येकह्योछे इहांद्रव्यानुयोगनेविषे भावधर्मनेविषे एटले गुणपर्यायनेविषे द्रव्य ते भव्यके० भवनथयो एटलेनवोनीपजवो तेभवन इतिके०

एमवस्तुना गुणपर्यायजेछे तेजवनके० नवोथवारूप समवस्थानमात्रछे एटले नवानवा थावारूपछे तिहांदृष्टांतकहेछे जेपुरुष उत्थितके० ऊठ्यो आसीनके० फरीतेहिजबेठो बेसवुंतेपद्मासनकहियें अथवाउकरूवुंतेआसनसहितसूवुं जेमइत्यादिकपर्यायेंतेपुरुषथाथछे तेम तेहजवृत्यंतरके० पूर्वपर्यायनोविनाश अनेउत्तरपर्यायनो उपजवोते वृत्यंतर कहियें वृत्यंतरव्यक्तिरूपपणेउपदेशेछे तेजवनधर्मनीप्रवृत्तिकहेछे जायतेके० नवोऊपजे अस्तिके० उतिपणेरहे विपरिणमतेके० बीजापणेपरिणमे वलीसामर्थ्यधर्मेंवधे अने अपक्षीयतेके० घटे विनश्यतिके० विनाशपामे पिंमके० समुदायपणो तेथी अतिरिक्तके० बीजीवृत्तिजे गुणनी प्रवृत्यंतरनी अवस्थाने प्रकाशयवे करीने जे जवनपणोथाय एटले ठेरीजेजवनवृत्ति तेसव्यापारछे पणनिर्व्यापारनथी.

अस्तिएवचने निर्व्यापार आत्मशक्तिछे तेकहियेंछेयें तेपण जवनवृत्तिथी उदासीनछे एटलेजवनवृत्तिनें ग्रहणकरतीनथी अस्तिशब्दने निपातपणोछे विपरिणमतेएवचने तिरोभूतके० अणप्रगटीजेवस्तु तेमांतद्रूपपणे अनुछिन्नके० विछेदगई तथावृत्तिकस्यके० तेरीतें वर्ततिआत्मशक्ति तेनोरूपांतरेथवो तेजवनकहियें तिहांदृष्टांत जेम क्षीरते दूध दधिजावेंपरिणमे विकारांतरेथवो तेरीतेंरहे एजवनधर्मकहियें जेज्ञानादिपर्यायमां अनंतज्ञेय जाणवानीशक्तिछे पणजेज्ञेय जेरीतेंपरिणमे तेरीतेंज्ञानगुणप्रवर्ते एज्ञानगुणनुं प्रवर्त्तन तेप्रतिसमयें विपरिणामपणे परिणमनछे एपणजवनधर्मछे वलीवृत्यंतरवर्तने अन्यपणे व्यक्तिनेहेतुकरणे जेजवांतरें वर्तवो तेविपरिणामकहियें तथावली वर्द्धतेके० वधेएवचने उपचयरूपपणेप्रवर्ते जेमअंकुरवधेछे तेमवर्णादिक पुद्गलना गुणउपचयपणे वधे एउपचयरूपजवनतावृत्ति व्यज्यतेके० प्रगटकरियेंछेयें.

एमगुणने कार्यांतरपणे परिणमवे द्रव्यमां जवनधर्मछे अपक्षीयते एवचनेकरीने तुके० वली तेहिजपरिणामनो ऊणोथवो अथवाटलवोकहियें दुर्बलथतापुरुषनीपरें जेमपुरुषदुर्बलथाय तेमपर्यायनेघटवे द्रव्यप्रमाणादिक तथातेसमयें अगुरुलघुपर्यायघटवे तेदुर्बलथवुं तेरूपजेजवनवृत्तिनेअंतरे व्यक्तिके० प्रगटताकहिछे तथाविनश्यति एमकहेवाथी आविर्भूतके० प्रगटथयोजेजवनधर्मनुंवर्तवो तेनो तिरोजावथयोकहियें जेम विणस्योघट जेमृत्पिंमनेविषे तेचक्रादिकारणे प्रगटथयोजेघट तेनेप्रध्वंसें विनाशकहियें एमद्रव्यनेविषे कार्यकरवारूपजेपर्याय तेने तिरोजावें अन्यपणे कार्यकरणरीते समवस्थानजेरहेवुं तेसमयेंतेजवनवृत्तिकहियें तथा तिरोजावपणानेअजावें थावुंजेकपालादिक उत्तरजवन तेपणेवर्त्तवुं एपणजवनधर्मछे एमअनुक्रमेअविछिन्न निरंतररूपेंइत्यादिकअनेकआकारें द्रव्यतेजजवनलक्षणकहियें एजव्यस्वजाव जाणवो द्रव्यनेविषे जे अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व अगुरुलघुत्वादिक धर्मतेत्रणेकालमां मूलअवस्थाने अपरि-

त्यागेके० तजतानथी तेहिजरूपपणेरहे एहवाजेटलाधर्मते अजव्यस्वजावजाणवो जेअनेक उत्पादव्ययने परिणमने फिरवेफिरे पणजीवनोजीवपणोपलटायनही तेमज अजीवनो अजीवपणो पलटायनही एसर्वेअजव्यस्वजावजाणवो.

हवे एबेस्वजाव जोद्रव्यमांनमानियें तोस्योदोषथाय तेकहेछे जोद्रव्यनेविषे जव्यपणोनमानियें तोद्रव्यनाजेविशेषगुण गतिसहकार स्थितिसहकार अवगाहदान ज्ञायकता वर्णादिजेपंचास्तिकायना विशेषगुण तेनीप्रवृत्तिनथाय अनेप्रवृत्तिविना कार्यनो करवोनथाय अनेकार्यनेअणकरवे द्रव्यनोव्यर्थपणोथाय तेमाटेजव्यस्वजावछे.

जोद्रव्यनेविषे अजवनरूप अजव्यस्वजावनहोय अनेएकलो जवनस्वजावजहोय तोनवानवापणेथवे तेद्रव्यपलटीने अन्यद्रव्यथयीजाय तेमाटे द्रव्यत्व सत्य प्रमेयत्वादि धर्मेंअजव्यपणोछे तेथीज द्रव्यपलटतोनथी तेमनोतेमजरहेछे एअजव्यस्वजावछे.

वचनगोचरायेधर्मास्तेवक्तव्या इतरेअवक्तव्याः तत्राद्यराः संख्येयाः तत्संनिपाताअसंख्येयाः तद्गोचराजावाः जावश्रुतगम्याः अनंतगुणः वक्तव्याजावेश्रुताग्रहणत्वापत्तिः अवक्तव्यजावे अतीतानागतपर्यायाणां कारणतायोग्यतारूपाणामजावः सर्वकार्याणां निराधारतापत्तिश्च सर्वेषांपदार्थानांये विशेषगुणाश्चलन स्थित्यवगाहसहकारपूर्णगलनचेतनादयस्तेपरमगुणाः शेषाः साधारणाः साधारणासाधारणगुणास्तेषां तदनुयायिप्रवृत्तिहेतुः परमस्वजावः इत्यादयः सामान्यस्वजावाः

अर्थ ॥ आत्मानो वीर्यनामागुण तेनाअविजाग जेवीर्यांतराय कर्म्मेंआवस्याछे तेज वीर्यांतरायनेक्षयोपशमें तथाक्षयथवाथी प्रगट्योजेवीर्यधर्म तेनेजाषापर्याप्ति नामकर्मनेउदयें लीधराणाजे जाषावरगणानांपुजल तेशब्दपणेपरिणमे तेशब्दपुजलखंधछे पण श्रोताजनने ज्ञाननाहेतुछे एटलेजेमांजेगुणनहोय तेगुणनुंकारणपण थायनही एमजे कहेछे तेमृषाछे केमकेजेनिमित्तकारणहोय तेमांगुणहोयकिंवानपणहोय अने उपादान कारणमां तेगुणनाकारणतापणे तथा योग्यतापणेनियामकछे तेवचनयोगेंज ग्रहवाय एवाजेवस्तुमांधर्मछे तेनेवक्तव्यधर्मकहियें अनेतेथीइतरके० जूदाजेधर्मास्तिकायद्रव्यमां अनेकधर्मछे तेवचनमांग्रहवातानथी तेवासर्वधर्म अवक्तव्यकहियें तेवक्तव्यधर्मथी अवक्तव्यधर्म अनंतगुणाछे वचनतोसंख्याताछे पणतेवचनोमां एवो सामर्थ्यछे जेअवक्तव्यधर्म

सर्वनो ज्ञायपणोथाय उक्तंच अन्निलप्पाजेन्नावा अणंतन्नागोयअणन्निलप्पाणं अन्निलप्पसाणंतो न्नागसुएनिबद्धोअ ॥ १ ॥ तत्रके० तिहां अक्षरसंख्याताछे तेअक्षरना सन्निपात संयोगीन्नाव असंख्याताछे तेअक्षरसन्निपातने ग्रहवाय एवाजे पदार्थादिकना न्नाव तेअनंतगुणाछे तेथीअवक्तव्यन्नाव अनंतगुणाछे जेमतिज्ञान श्रुतज्ञान अन्निलप्पन्नावनो परोक्षप्रमाणेग्राहकछे अवधिज्ञान तेपुजलनो प्रत्यक्षप्रमाणेजाणगछे पणएकपरमाणुना सर्वपर्यायने जाणेनही केटलाकपर्यायनेजाणे तेपण असंख्यातसमयेंजाणे अनेकेवलज्ञान एछद्रव्यनासर्वपर्यायने एकसमयमां प्रत्यक्षजाणे माटेजोद्रव्यमां वक्तव्यपणोनहोय तो श्रुतज्ञानेग्रहणथायनही अने जेग्रंथान्यासउपदेशादिक सर्वकामथायछे तेतोएमनथीमाटेद्रव्यमांवक्तव्यपणोछे.

अवक्तव्यान्नावेके० अवक्तव्यपणाने नमानियेंतो अतीतपर्याय तेवस्तुमांकारणतानी परंपरामांरह्याछे तथा अनागतापर्याय सर्वयोग्यतामांरह्याछे तेसर्वनोअन्नाव थाय तेवारें वस्तुमां वर्त्तमानपर्यायनी छतिपामियें तेथी अतीतअनागतनो ज्ञानथायनही माटे अवक्तव्यस्वन्नाव अवश्यमानवो अनेवर्त्तमान सर्वकार्य ते निराधारथइजाय अनेद्रव्यमां एकसमयमां अनंताकारणछे तेअनंताकारणना अनंताकार्यधर्मछे अनेअनंताकार्यना अनंताकारणपरंपरानुं ज्ञानतेकेवलीनेछे अनेवर्त्तमानकालें कारणधर्मतथाकार्यधर्मथी अनंतगुणा कारणकार्यनी योग्यरूपसत्ताछे तेकोइना अविन्नागनथी पण अविन्नागी जेज्ञानादिकगुण तेमां अनंता कारण धर्म अनंताकार्य धर्म उपजवानी योग्यतारूपसत्ता छे ते सर्व अवक्तव्यरूपछे.

हवेपरमस्वन्नावनुं स्वरूपकहेछे सर्वजे धर्मास्तिकायादिकपदार्थ तेनाविशेषगुण जे धर्मास्तिकायनो चलनसहकारीपणो तथाअधर्मास्तिकायनो स्थितिसहाय आकाशास्तिकायनो अवगाहक तथापुजलद्रव्यनो पूरणगलन जीवद्रव्यनो चेतनालक्षण एसर्व द्रव्यना विशेषगुणकह्या एमलक्षणरूप तथाद्रव्यांतरथी न्निन्नपाडवानुं मूलकारण ते परमप्रकृष्टगुणकहियें एप्रधानगुणने अनुयायी बीजाजे साधारणगुण ते गुण पंचास्तिकायमां पामियें तेनानाम अविनाशीपणो अखंडपणो नित्यत्वादिकधर्म एपंचास्तिकायने सरिखाछे तेमाटेसाधारणगुण तथापंचास्तिकायमां कोइक अस्तिकायमांपामियें कोइकमांनपामियें तेगुणने साधारणअसाधारणकहियें तेसर्वगुणनेविषे विशेषगुणने अनुयायिप्रवर्त्तनछे ते प्रवर्त्तननाकारण द्रव्यमां एकपरमस्वन्नावपणोछे तेपरमस्वन्नावने परिणमने द्रव्यनासर्वगुणमुख्यगुणने अनुगमेजप्रवर्त्ते तेपरमस्वन्नाव सर्वद्रव्यनेविषेछे एटले तेरसामान्यस्वन्नाव कह्या वली अनेकांतजयपताकामांकह्याछे.

तथास्तित्व नास्तित्व कर्तृत्व भोगृत्व असर्वगतत्व प्रदेशवत्वादिभावाः पुनः तत्वार्थटीकायांपुनरप्यादिग्रहणंकुर्वन्ज्ञापयत्यत्रानंतधर्मवत्वं तत्राशक्ताः प्रस्तारयंतुसर्वेधर्माः प्रतिपदंप्रवचनत्वेनपुंसायथासंभवमायोजनीयाः क्रियावत्वंपर्यायोपयोगिताप्रदेशाष्टकनिश्चलता एवंप्रकाराः संतिभूयांसः अनादिपरिणामिकाभवंतिजीवस्वभावाः धर्मादिभिस्तुसमानाइतिविशेषः

अर्थ ॥ तेमज अस्तिपणो नास्तिपणो कर्त्तापणो भोक्तापणो गुणवंतपणो असर्वव्यापिपणो प्रदेशवंतपणो इत्यादिअनंतस्वभाववंतद्रव्य छे तेमज तत्वार्थ टीकामध्ये परिणामिकभावनाभेद वखाणतांकह्योछे पुनरपिआदिशब्दना ग्रहणकरतां एमजणावेछे जे वस्तुअनंतधर्मवंतछे तेसर्वविस्तारीशकेनही तोपणद्रव्यद्रव्यनेविषे प्रवचननाजाणपुरुषें जेमसंभवेतेमधर्मजोरुवा तथाक्रियावंतपणो जेज्ञानादिकगुण तेलोकालोकजाणवाने प्रतिसमयेंप्रवर्त्तेछे श्रीभाष्यकारें ज्ञानादिगुण तेकरणअने तेजगुणनीप्रवृत्ति तेक्रियाजाणवी तथादेखवोतेकार्य एमधर्मास्तिकायादिकना सर्वेगुण तेत्रणपरिणतियें परिणामीछे तेमाटेपंचास्तिकाय तेअर्थक्रियाकरेछे तेक्रियावंतपणोजाणवो सर्वपर्यायनो उपयोगीपणो एपणजीवस्वभावछे तथाप्रदेशाष्टकनी निश्चलता एपणजीवनोस्वभावछे तिहांधर्माधर्म अने आकाश ए त्रण अस्तिकायनाप्रदेश अनादिअनंतकाल अवस्थितपणेछे पुद्गलनेचलणपणो सदासर्वदाछे पुद्गलपरमाणु तथा पुद्गलस्कंध तेसंख्यातोकाल अथवाअसंख्यातोकाल एकक्षेत्रेरहेपणपछे अवश्यचलथाय तथाजीवद्रव्यने सकर्म्मा संसारीपणे क्षेत्रथी क्षेत्रांतरगमन भवथी भवांतरगमनरूप चलताछे तेजीवने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान अने सम्यक्चारित्रने प्रगटवे सर्वपरभावभोगीपणो निवारवे आत्मस्वरूप निराधारण स्वरूपभासन स्वरूपपरिणमने करवे स्वरूपएकत्वें स्वधर्मकर्त्ता स्वधर्मभोक्तापणे सकलपरभावतजवे निरावरण निःसंग निरामय निर्द्वंद्वनिष्कलंक निर्मलस्वीय अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अरूपी अव्याबाध परमानंदमयी सिद्धात्मा सिद्धक्षेत्रेरह्या तेसादिअनंतकाल स्थिरछे सकलप्रदेशस्थिरछे अनेसंसारीजीव तेनाआठप्रदेश सदासर्वदास्थिरछे तेआठप्रदेश निरावरणे तथा आचारांगनीटीका शैलंगाचार्यकृतना लोकविजयाध्ययनने प्रथमोद्देशके तदनेन पंचदशविधेनापियोगेनात्मा अष्टौप्रदेशान्विहाय तसभाजनोदकवद्धुद्धर्त्तमानैः सर्वैरेवात्मप्रदेशैरात्मप्रदेशावष्टब्धाकाशस्थं कार्मणशरीरयोग्यं कर्मदलीकं यत्बध्नाति तत्प्रयोगकर्मेत्युच्यते.

एटले आठप्रदेशे कर्मलागतानथी इहांकोइपुछेजेआठप्रदेशनिरावरणछे तो लोकालोककेमजाणतानथी तिहांउत्तरजे आत्मद्रव्यनी जेगुणप्रवृत्ति तेसर्वप्रदेशमिले प्रवर्त्तें तोतेमां एआठप्रदेश अल्पछे तेथीआठप्रदेशमां सर्वगुणनिरावरणछे पण कार्य करीशकता नथी जेमअग्निनुंअत्यंतसूक्ष्मकणीयुंहोय तेमां दाहक पाचक प्रकाशक गुण छे पण अल्पतामाटे दाहकादिकार्य करीशकतुंनथी.

वलीकोइपुछेजे एआठप्रदेश ते निरावरण केमरहीशक्या तेनुंउत्तर जेचलप्रदेशहोय तेनेकर्मलागे पणअचलप्रदेशने कर्मलागेनही एमभगवतीसूत्रेकह्युंछे जेअइ वेअइ चलइ फंदइ घट्टइ सेबंधइ एपाठछे तेमाटे जेचलहोयतेबंधाय अनेआठप्रदेश तो अचलछे तेथी एआठप्रदेशने बंधनथी तथाकार्याभ्यासें प्रदेशभेला थाय तेथी प्रदेशनागुणपण तिहांतेकार्यकरवाने प्रवर्त्तेछे तथाजेद्रव्यनो जेगुणजेप्रदेशेंहोय तेगुणतेप्रदेशमूकी अन्यक्षेत्रेंजायनही तथाजीवना आठप्रदेश सर्वथानिरावरणछे बीजा प्रदेशे अक्षरनो अनंतमोभाग चेतनासर्वदाउघाडीछे एरीतें संतिके० छेघणाअनादिपरिणामिकभावते भवंतिके० होय अनादिपरिणामिकभावछेते जीवनाभावछे अने सप्रदेशादिक धर्मास्तिकायप्रमुखनेविषे समानछे एमजाणवो इत्यादिकशेषस्वभावछे.

भिन्नभिन्नपर्यायप्रवर्त्तनस्वकार्यकरणसहकारभूताः पर्यायानुगत परिणामविशेषस्वभावाः तेचके १ परिणामिकता २ कर्तृता ३ ज्ञायकता ४ ग्राहकता ५ भोक्तृता ६ रक्षणता ७ व्याप्यव्यापकता ८ आधाराधेयता ९ जन्यजनकता १० अगुरुलघुता ११ विभूतकारणता १२ कारकता १३ प्रभुता १४ भावुकता १५ अभावुकता १६ स्वकार्यता १७ सप्रदेशता १८ गतिस्वभावता १९ स्थितिस्वभावता २० अवगाहकस्वभावता २१ अखंडता २२ अचलता २३ असंगता २४ अक्रियता २५ सक्रियता इत्यादिस्वीयोपकरणप्रवृत्तिनैमित्तिकाः उक्तंचसंमतौ आरोपोपचारेण यद्यदपेक्षते तन्नवस्तुधर्मः उपाधिताभवनात् नचोपाधिवस्तुसत्ताइति

अर्थ ॥ हवेविशेषस्वभावकहेछे भिन्नभिन्नजेपर्यायछे तेनुंकार्यकारणपणे जेप्रवर्त्तन तेना सहकारभूत जेपर्यायानुगतपरिणामि एवाजेस्वभाव तेविशेषस्वभावकहियें तेना अनेकभेदछे ते श्रीहरिभद्रसूरिकृत वार्तिकसमुच्चयग्रंथमांकह्याछे ते कहेछे.

१ सर्वद्रव्यने पोतानागुण समयसमयमां कार्यकरवेप्रवर्त्ते ते भिन्नभिन्न परिणामे परिणमे तेसर्वपोतानागुण तेने कारणीकछे तेपरिणामिकपणोकहियें २ तत्रकर्तृत्वं जीवस्यनान्येषां तिहांआत्माकर्त्ताछे एटलेकर्त्तापणो जीवद्रव्यनेविषेछेअप्पाकत्ताविकत्ताय इति उत्तराध्ययनवचनात् ३ ज्ञायकता जाणपणानीशक्ति जीवनेविषेछे ज्ञानलक्षणजीवछे तेमाटेगिन्हईकांईएणंइतिआवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ४ ग्राहकशक्तिपणजीवनेछे गृन्हातीतिक्रियानोकर्त्ता जीवछे ५ भोक्ताशक्तिपण जीवमांछे भोकुणइ सोभुंजइ यःकर्त्ता सएवभोक्ता इतिवचनात् १ रक्षणता २ व्यापकता ३ आधाराधेयता ४ जन्यजनकता तत्वार्थवृत्तिमध्येछे तथा अगुरुलघुता विभुता करणता कार्यता कारकता ए शक्तिनीव्याख्या श्रीविशेषावश्यकेंछे भावुकता तथा अभावुकताशक्ति तेश्रीहरिभद्रसूरिकृतभावुकनामे प्रकरणमध्येकहिछे.

एमकेटलीकशक्तिजैननातर्कग्रंथोजे अनेकांतजयपताका सम्मतिप्रमुखमांछे तथाऊर्ध्वप्रचयशक्ति अनेतिर्यक्प्रचयशक्ति ओघशक्ति समुचितशक्ति एसर्वसंमतिग्रंथनेविषेछे तथाजेऋद्धिगुणीआत्मामाने तेसर्वधर्मशक्तिरूपजमानेछे तेणेदानादिकलब्धि अव्याबाध सुखप्रमुख शक्तिमानीछे इहांव्याख्यांतरे जेगुणकरणछे तेनेकर्त्तादिकपणो तेसामर्थ्यछे जाणवोदेखवो तेकार्यछे केटलीकशक्तिजीवमांजछे अनेकेटलीक पंचास्तिकायमध्येछे तथादेवसेनकृत नयचक्रमध्ये जीवनेअचेतनस्वभाव मूर्तस्वभाव तथापुद्गलपरमाणुने चेतनस्वभाव अमूर्तस्वभावकह्या तेअसत्छे एतोआरोपपणेकोइककहे तेकथनमात्रजाणवो पणएवातछतीमांनथी जेधर्मआरोपें तथाउपचारेंगवेषाय तेवस्तुनोधर्मनथी उपाधीथीथायछे तेमाटेजेउपाधि तेवस्तुनीसत्तानथी एमधारवुं.

धर्मास्तिकायेअमूर्ताचेतनाक्रियगतिसहायादयोगुणाः अधर्मास्तिकाये अमूर्त्ताचेतनाक्रियस्थितिसहकारादयोगुणाःआकाशास्तिकाये अमूर्ताचेतनाक्रियावगाहनादयोगुणाः पुद्गलास्तिकाये मूर्ताचेतनसक्रियपूर्णगलनादयोवर्णगंधरसस्पर्शादयोगुणाः जीवास्तिकायेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्या व्याबाधामूर्त्तागुरुलघुअनवगाहादयोगुणाः एवंप्रतिद्रव्यंगुणानामनंतत्वंज्ञेयं ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायना गुण चार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ गतिसहाय इत्यादिअनंतगुणछे अधर्मास्तिकायनागुण चार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ स्थितिसहाय इत्यादिअनंतगुणछे आकाशास्तिकायनागुणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अ-

क्रिय ४ अवगाहनादिक अनंतगुणछे पुद्गलास्तिकायनागुण चार छे १ रूपी २ अचेतन ३ सक्रिय ४ पूर्णगलन १ वर्ण २ गंध ३ रस ४ स्पर्श इत्यादिकगुणअनंताछे जीवास्तिकायनेविषे १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ वीर्य ५ अव्याबाध ६ अरूपी ७ अगुरुलघु ८ अनवगाहादिकअनंतगुणछे एरीतें द्रव्यनेविषे अनंतागुणजाणवा.

पर्यायाः षोढा द्रव्यपर्यायाअसंख्येयप्रदेशसिद्धत्वादयः १ द्रव्य व्यंजनपर्यायाः द्रव्याणांविशेषगुणाश्चेतनादयश्चलणसहायादय श्च २ गुणपर्यायाः गुणा विभागादयः ३ गुणव्यंजनपर्यायाज्ञा यकादयः कार्यरूपाः मतिज्ञानादयः ज्ञानस्यचक्षुर्दर्शनादयो द र्शनस्य क्षमामार्दवादयः चारित्रस्यावर्णागंधारसास्पर्शादयोमूर्त्त स्यइत्यादि ४ स्वभावपर्यायाअगुरुलघुविकाराः तेद्वादशप्र काराःषट्गुणहानिवृद्धिरूपाः अवाग्गोचराः एतेपंचपर्यायास र्वद्रव्येषु विभावपर्यायाः जीवेनरनारकादयः पुद्गलेद्व्यणुकतो नंताणुकपर्यंतास्कंधाः

अर्थ ॥ हवेनयज्ञानकरवानो अधिकारकहेछे तिहांद्रव्यास्तिकनयनामूलबेभेदछे १ शुद्धद्रव्यास्तिक २ अशुद्धद्रव्यास्तिकअनेदेवसेनकृतपद्धतीमांद्रव्यास्तिकनादशभेदकस्याछे तेसर्वएबेभेदमध्येसमायछेतथातेसामान्यस्वभावमांसमाणाछेतेमाटेइहांनवखाण्या.

हवेपर्यायना छ भेद कहेछे तिहां प्रथम १ जेद्रव्यनेविषे एकत्वपणे रह्या जे जीवादिकना असंख्याताप्रदेश तथाआकाशना अनंताप्रदेश एद्रव्यपर्यायकहियें २ सिद्धत्वादिक अखंडत्वादिक तथाद्रव्यनोव्यंजकके० प्रगटपणोजेमानेछे तेद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें.

द्रव्यनोविशेषगुण जेअन्यद्रव्यमांनथी तेनेविशेषगुणकहियें तेजीवनेचेतनादिक अने धर्मास्तिकायमांचलणसहकार तथा अधर्मास्तिकायमांथिरसहकार आकाशमां अवगाहदान पुद्गलमां पूरणगलणरूप एसर्वेस्वद्रव्यनीभिन्नताने प्रगटकरे छे तेमाटे एधर्मनेद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें.

३ एकगुणना अविभाग अनंताछे तेनोपिंडपणो तेगुणपर्यायकहिये ४ गुणव्यंजनपर्यायतेज्ञाननो जाणंगपणो तथाचारित्रनो थिरतापणो इत्यादिक अथवा ज्ञानगुणनाभेदांतर ज्ञाननाभेद जे मतिज्ञानादिक पांच तथादर्शनगुणना चक्षुदर्शनादिकभेद तथा चारित्रगुणना क्षमादिकभेद पुद्गलनोरूपीगुण तेनाभेदवर्ण गंध रस स्पर्श संस्थानादिक अरूपीगुणना अवन्ने अगंधे अरसे अफासे इत्यादिकचारजाणवा ते गुण व्यंजनपर्याय

५ स्वभावपर्याय ते वस्तुनोकोइकस्वभावज एवोछे तेअगुरुलघुपणे छे छ प्रकारनीवृद्धि तथाछप्रकारनी हानी एवीरीतें बारप्रकारें परिणमेछे इहांकोइप्रेरकनो योगनथी वस्तुनेमूलधर्मनोहेतुछे एनोस्वरूपपूरूं वचनगोचरनथी अनुभवगम्यनथी केमकेश्रीठाणांगसूत्रनी टीकामध्येश्रुतज्ञानवृद्धिना सातअंगछे तिहांप्रथम सूत्रअंग बीजुं निर्युक्तिअंग ३ भाष्यअंग ४ चूर्णिवालोसूत्रादि सर्वनाअर्थकहेछे ५ टीकाव्याख्यानिरंतर एपांचअंगतो ग्रंथरूपछे तथाछठोअंगपरंपरारूपछे तथासातमुंअंगअनुभव एसातेकारणे विनयसहित भणतां सुणतांथकांसाचाअर्थ पामिने आत्मानुंज्ञाननिर्मलथाय श्रीभगवतिसूत्रे गाथा सुत्तछोखलुपढमो वीछनियुत्तिमिसिर्उभणीर्उ तइयोअनिरवसेसो एसविहिहोइअणुर्उगे एपांच पर्यायकह्या तेसर्वेद्रव्यमध्येछे.

६ विभागपर्याय तेजीव तथापुद्गलमध्येजछे तेविभावपर्यायजीवने नरनारकीपणुं पामवुंते तथा पुद्गलनो द्व्यणुकत्र्यणुकादिकखंधनो मिलवुंअनंताणुकपर्यंत अनंतपुद्गल स्कंधरूप ते विभागपर्याय कहियें.

मेर्वाद्यनादिनित्यपर्यायाः चरमशरीरत्रिभागन्यूनावगाहनादयः सादिनित्यपर्यायाः सादिसांतपर्यायाभवशरीराध्यवसायादयः अनादिसांतपर्यायाभव्यत्वादयः तथाचनिक्षेपाः सहजरूपावस्तुनः पर्यायाःएवंचत्वारोवथ्थुपज्जायाइतिभाष्यवचनात्नामयुक्तेप्रति वस्तुनिनिक्षेपचतुष्टयंयुक्तमुक्तंचानुयोगद्वारेजथ्थयजंजाणिज्जा निरकेवंनिरकवेनिरवसेसं जथ्थयनोजाणिज्जा चउक्कयंनिरकवेतथ्थ तत्रनामनिक्षेपः स्थापनानिक्षेपः द्रव्यनिक्षेपः भावनिक्षेपः तत्रनामनिक्षेपोद्विविधः सहजः सांकेतिकश्च स्थापनाऽपिद्विविधा सहजाआरोपजाच द्रव्यनिक्षेपोद्विविधः आगमतोनोआगमतश्च तत्रआगमतः तदर्थज्ञानानुपयुक्तः नोआगमतोज्ञशरीर भव्यशरीर तद्व्यतिरिक्तभेदात्रिधाभावनिक्षेपोद्विविधः आगमतो नोआगमतश्चतदज्ञानोपयुक्तः तद्गुणमयश्च वस्तुस्वधर्मयुक्तं तत्रनिक्षेपावस्तुनः स्वपर्यायाधर्मभेदाः

अर्थ ॥ पुद्गलनुंमेरुप्रमुख तेअनादिनित्यपर्यायछेजीवनीसिद्धावस्था सिद्धावगाहनादिकतेसादिनित्यपर्यायछे तथाभावअनेशरीर तथाअध्यवसाय एत्रणप्रकारनायोगस्थानजे वीर्यनाक्षयोपशमथीऊपना तेमांकषायस्थान जेचेतनानोक्षयोपशम कषायनाउद-

यथी मिथ्या अनेसंयमस्थानजे चारित्रनो क्षयोपशमपरिणमी जेचेतनादिकगुण एसर्वे अध्यवसायस्थानक तेसादिसांतपर्यायछे तथासिद्धिगमनयोग्यताधर्म तेजव्यपणो एपर्याय तेअनादिसांतछे जेसिद्धत्वपणोप्रगटे जव्यत्वपर्यायनोविनाशछे तेमाटे अनादिकालनो छे पणअंतथवासहितछे माटेअनादिसांतपर्यायछे एमपर्यायअनेकजाणवा.

तथावस्तुमां सहजना जेचारनिक्षेपाछेतेपणवस्तुनास्वपर्यायछे तेश्री विशेषावश्यकनी जाष्यमध्येकह्योछे चत्वारोवत्थुपज्जाया एवचनछे तेमाटेस्वपर्यायकहियें वली श्रीअनुयोगद्वारसूत्रमांकह्योछे जिहांजेवस्तुना जेटलानिक्षेपाजाणियें तिहां तेवस्तुना तेटलानिक्षेपाकरियें कदाचित्बधतानिक्षेपा जासनमांनआवे तोपण १ नाम २ थापना ३ द्रव्य ४ जाव एचारनिक्षेपातो अवश्यकरवा तेमांनामनिक्षेपानाबेजेदछे.

१ सहजनाम २ सांकेतिकनाम तेकोइकनोकर्योनाम तथास्थापनानाबेजेदछे १ सहजस्थापना तेवस्तुनीअवगाहनारूप २ आरोपस्थापना ते आरोपथी थयी माटेकृत्रिमकहियें आरोपजाकहियें हवेद्रव्यनिक्षेपानाबेजेदछे तेकहेछे १ आगमथीद्रव्यनिक्षेपो ते जे जेपुरुषना स्वरूपनाजाणपणे हमणांतेउपयोगेंनथी तेआत्मद्रव्यनिक्षेपजेवस्तुतेगुणसहितछे पणहमणांतेपणेवरततानथी तेहनात्रणजेदछे १ ज्ञशरीरजेहनाहता पणमरणपाम्या तेथीतेनुंशरीर जेऋषजदेवना शरीरनीजक्ति श्रीजंबूद्वीपपन्नतीमांछे २ जव्यशरीरते हमणांतो गुणमयनथी पणगुणमयथशे जेम अयमंतामुनी एजव्यशरीरजाणवो ३ तद्व्यातिरिक्त जेतेगुणेवर्त्तेछे पणतेउपयोगें हमणांवरततानथी.

जावनिक्षेपानाबेजेद १ आगमथी जावनिक्षेपो तेआगमना अर्थनोजाण वलीतेउपयोगेंवर्तेछे २ नोआगमथी जावनिक्षेपो तेजेपणेज्ञवर्त्तेछे तेजरूपछे एरीतेंनिक्षेपाकहेवा.

एचारनिक्षेपामां पेहेलात्रणनिक्षेपा तेकारणरूपछे अनेचोथोजावनिक्षेपो तेकार्यरूपछे तेजावनिक्षेपाने निपजावतां पहेलात्रणनिक्षेपा प्रमाणछे नहीकांअप्रमाणछे पहेलात्रणनिक्षेपा द्रव्यनयछे एकजावनिक्षेपो तेजावनयछे जावनिक्षेपाने अणनिपजावतां एकलीद्रव्यनीप्रवृत्ति ते निष्फलछे एमश्री आचारांगनीटीकामां लोकविजया अध्ययने कह्युंछेतेलखीयेछैयें फलमेवगुणः फलगुणः फलंचक्रियाजवतितस्याश्चक्रियायाः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र रहितायाऐहिकामुष्मिकार्थप्रवृत्तायाः अनात्यंतिकोनैकांतिकोजवेत् फलंगुणोप्यगुणोजवति सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रक्रिया यास्त्वेकांतिकानाबाधसुखाख्यसिद्धिगुणोवाप्यते एतदुक्तंजवति सम्यक्दर्शनादिकैवक्रियासिद्धि फलगुणेनफलवत्यपरातुसांसारिकसुखफलाज्यासएवफलाध्यारोपान्निष्फलेत्यर्थः

एटलेरत्नत्रयी परिणमनविना जेक्रियाकरवी तेथकी संसारिकसुख थाय ते क्रियानिःफ-

ल छे एपाछछे माटेनावनिक्षेपाना कारणविना पेहेलात्रणेनिक्षेपा निःफलछे निक्षेपातो मूलगीवस्तुनापर्यायछे द्रव्यनोस्वधर्मजछे.

नयास्तुपदार्थज्ञानेज्ञानांशाः तत्रानंतधर्मात्मकेवस्तुन्येकधर्मोन्नयनंज्ञाननयः तथारत्नाकरे नीयतेयेनश्रुताख्यप्रमाणविषयीकृतस्यार्थस्यांशस्तदितरांशौदासीन्यतः सप्रतिपत्तुरभिप्रायविशेषोनयः स्वाभिप्रेतादंशादितरांशापलापीपुनर्नयाभासः सव्याससमासाभ्यांद्विप्रकारः व्यासतोनेकविकल्पः समासतोद्विभेदः द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकःतत्रद्रव्यार्थिकश्चतुर्धा १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्रभेदात् पर्यायार्थिकस्त्रिधा १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूतभेदात्.

अर्थ ॥ जेनयछे तेपदार्थनाज्ञानने विषे ज्ञाननाअंशछे तिहांनयनुंलक्षणकहेछे अनंतधर्मात्मक जेवस्तु एटलेजीवादिक एक पदार्थमां अनंताधर्मछे तेनोजेएकधर्मगवेष्योतोपण अन्यके० बीजाअनंताधर्म तेमांरह्याछे तेनोउछेदनही अनेग्रहणपणनही एकधर्मनीमुख्यताकरवी तेनयकहियें तेनयना व्यासके० विस्तारथी अनेकभेदछे अने समासके० संक्षेपथीबेभेदछे १ द्रव्यार्थिक २ पर्यायार्थिक तेरत्नाकरावतारिकाग्रंथथी लखियेंछेयें द्रवतिद्रोष्यति अदुद्रवत् तांस्तान्पर्यायानितिद्रव्यंतदेवार्थःसोऽस्तियस्यविषयत्वेन सद्रव्यार्थिकः

जेवर्त्तमानपर्यायनेद्रवेछे अनेआगामिककालेंद्रवसे तथा अतीतकालेंद्रवतोहतो ते द्रव्यकहियें तेजछेअर्थप्रयोजनविषयपणेजेने ते द्रव्यार्थिककहियें एटलेपर्यायतेजन्य अने द्रव्यतेजनककह्योतथाद्रव्यतेध्रुवअनेपर्यायते उत्पादविनाशरूपछे उक्तंच.

पर्येतिउत्पादविनाशौप्राप्नोतीतिपर्यायः सएवार्थः सअस्तियस्यासौपर्यायार्थिकः जे उपजवाविणशवानो परिके० नवानवापणे एतिके० पामेतेजअर्थप्रयोजन तेने पर्यायार्थिककहीयें तेद्रव्यार्थिकपर्यायार्थिक एबेधर्मने द्रव्यतथापर्यायकहियें.

इहांकोइकपुछेजे त्रीजोगुणार्थिककेमकहेतानथी तेवलीरत्नाकरावतारिकामध्ये कह्योछे गुणस्यपर्यायेएवांतर्भूतत्वात् तेनपर्यायार्थिकेनैवतत् संग्रहात्.

जेगुणतेपर्यायनेविषे अंतर्भूतछे तेपर्यायार्थिकमध्येजसंग्रह्योछे तेपर्याय बेभेदेछे एक सहभावि बीजोक्रमभावि तेमांसहभावितेगुणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भूतछे तिहांद्रव्यपर्यायथी व्यतिरिक्तसामान्यविशेष एबेधर्मछे माटेसामान्यविशेष बेनयवक्ताकेमकहेतानथी एमकोइपुछेतेनेउत्तर.

जे द्रव्यपर्यायाभ्यां व्यतिरिक्तयोः सामान्यविशेषयोरप्रसिद्धेः तथाहि द्विप्रकारं सामान्यमुक्तमूर्ध्वतासामान्यं तिर्यक्सामान्यंच तत्रोर्ध्वसामान्यंद्रव्यमेव तिर्यक्सामान्यंतु प्रतिव्यक्तिसदृशपरिणामलक्षणंव्यंजनपर्यायएव एपाठथी ऊर्ध्वसामान्यते द्रव्यनोधर्मछे अनेतिर्यक्सामान्यते पर्यायधर्मछे विशेषोपिवैसादृश्यविवर्त्तलक्षणंपर्यायएवांतर्भवतिनैताभ्यामधिकनयावकाशः

विशेषपणेअनेकरीतें वर्तवानोलक्षणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भावछे तेमाटे भिन्ननयनो अवकाशनथी एबेनयमध्येज अंतर्भावछे तेमांवली द्रव्यार्थिकना चारभेदछे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजूसूत्र तथापर्यायार्थिकना त्रणभेदछे १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूत.

विकल्पांतरेऋजुसूत्रस्यपर्यायार्थिकताप्यस्ति सनैगमस्त्रिप्रकारः आरोपांशसंकल्पभेदात् विशेषावश्यकेतूपचारस्यभिन्नग्रहणात् चतुर्विधःनएकेगमाआशयविशेषायस्यसनैगमः तत्रचतुःप्रकार आरोपः द्रव्यारोपगुणारोप कालारोपकारणाद्यारोपभेदात् तत्र गुणेद्रव्यारोपः पंचास्तिकायवर्तनागुणस्यकालस्यद्रव्यकथनं एतद्गुणेद्रव्यारोपः १ ज्ञानमेवात्मा अत्रद्रव्येगुणारोपः २ वर्त्तमानकालेअतीतकालारोपःअद्यदीपोत्सवेवीरनिर्वाणं वर्तमानेअनागतकालारोपः अद्यैवपद्मनाभे निर्वाणं एवंषट्भेदाः कारणेकार्यारोपः बाह्यक्रियायाधर्मत्वं धर्मकारणस्यधर्मत्वेनकथनं संकल्पो द्विविधः स्वपरिणामरूपः कार्यांतरपरिणामश्च अंशोपिद्विविधः भिन्नोभिन्नश्चेत्यादिशतभेदोनैगमः

अर्थ ॥ वलीविकल्पांतरे ऋजुसूत्रते पर्यायार्थिकमां पणकह्योछे केमके एविकल्परूप नयछे तेमाटे. तेमांनैगमनात्रणभेदछे १ आरोप २ अंश ३ संकल्प तथाविशेषावश्यकमां चोथोभेदपणउपचारपणेकहेछे नथीएकगमो अभिप्रायजेनो तेनैगमनयकहियें एटलेअनेकआशयीछे तेनैगमनयना चारभेदछे तेमध्ये आरोपना चारप्रकारछे १ द्रव्यारोप २ गुणारोप ३ कालारोप ४ कारणाद्यारोप.

१ तिहांगुणादिकनेविषे द्रव्यपणोमानवो तेद्रव्यारोपजेमवर्तनापरिणाम तेपंचास्तिकायनो परिणमनधर्मछे तेने कालद्रव्यकहिबोलाव्यो एकालतेभिन्नपिंडरूपद्रव्यनथी पणआरोपेंद्रव्यकह्योछे माटेद्रव्यारोप अनेद्रव्यनेविषे गुणनोआरोपकरवो जेमज्ञानगुणछे पणज्ञानीतेजआत्मा एमज्ञानने आत्माकह्यो तेगुणनोआरोपकर्यो माटेगुणारोप

तथा जेमश्रीवीरनिर्वाणथयातेने तोघणोकालगयोछे पणआजदीवालीनादीवसेंवीरनो निर्वाणछे एमकहेवुं एवर्त्तमानमां अतीतनो आरोपकस्यो अथवा आजश्रीपद्मनाभप्रभुनो निर्वाणछे एमकहेवुं तेमवर्त्तमाननेविषे अनागतकालनोआरोपछे एवीरीतें वलीअतीत-नावेभेदछे तथाएवीजरीतेअनागतनावेभेदछे अनेवर्त्तमानना बेभेदऊपरकह्या तेसर्व मली कालारोपना भभेदजाणवा.

वलीकारणविषे कार्यनोआरोपकरवो तेकारणचारछे १ उपादानकारण २ निमित्त-कारण ३ असाधारणकारण ४ अपेक्षाकारण तेमांबाह्यद्रव्यक्रिया ते साध्यसापेक्षवा-लाने धर्मनुंनिमित्तकारणछे तोपणएनेधर्मकारणकहियें तेमजश्रीतीर्थंकर मोक्षनुंकार-णछे तेथी तेने तारयाणं कह्यो तेकारणनेविषे कर्त्तापणानोआरोपकस्यो एम आरोपता अनेकप्रकारेंछे तेकारणाद्यारोप वलीसंकल्प नैगमनावेभेदछे १ स्वपरिणामरूपजेवीर्य चेतनानो जेनवोनवो क्षयोपशमतेलेवो बीजोकार्यांतरे नवेनवेकार्यें नवोनवोउपयोग थाय ते एवेभेदथया तथाअंशनैगमनापणवेभेदछे १ भिन्नांशतेजूदोअंशस्कंधादिकनो बीजो अभिन्नांश ते जे आत्मानाप्रदेश तथागुणनाअविभाग इत्यादिक एसर्वनैगम-नयनाभेदजाणवा एटलेनैगमनयकह्यो.

सामान्यवस्तुसत्तासंग्राहकसंग्रहः सद्विविधसामान्यसंग्रहोविशे षसंग्रहश्च सामान्यसंग्रहोद्विविधःमूलतउत्तरतश्चामूलतोस्तित्वा दिभेदतः षड्विधः उत्तरतोजातिसमुदायभेदरूपःजातितः गवि गोत्वं घटेघटत्वं वनस्पतौ वनस्पतित्वं समुदयतोसहकारात्मकेव नेसहकारवनं मनुष्यसमूहेमनुष्यवृंदइत्यादिसमुदायरूपः अथ वाद्रव्यमितिसामान्यसंग्रहः जीवइतिविशेषसंग्रहः तथाविशेषाव श्यके संगहणंसंगिन्हइसंगिन्हंतेवतेणजंभेया तोसंगहोसंगिहि यपिंडियत्थंवउजस्स संग्रहणंसामान्यरूपतयासर्ववस्तुनामाक्रोड नंसंग्रहःअथवासामान्यरूपतयासर्वंगृन्हातीतिसंग्रहःअथवासर्वे पिभेदाः सामान्यरूपतयासंगृह्यंतेअनेनेतिसंग्रहः अथवासंगृही तंपिंडितंतदेवार्थोभिधेयंयस्यततसंगृहीतपिंडितार्थएवंभूतंवचो यस्यसंग्रहस्येतिसंग्रहीतपिंडितं ततकिमुच्यतेइत्याह संगहीय मागहीयं संपिंडियमेगजाइमाणीयं ॥ संगहीयमणुगमोवा वइरे

गोपिंमियंत्नणियं ॥१॥ सामान्यान्निमुख्येनग्रहणंसंगृहीतसंग्रह उच्यते पिंमितंत्वेकजातिमानित मन्निधीयतेपिंमितसंग्रहः अथ सर्वव्यक्तिष्वनुगतस्यसामान्यस्यप्रतिपादनमनुगमसंग्रहोन्निधी यते व्यतिरेकस्तुतदितरधर्मनिषेधात्ग्राह्यधर्मसंग्रहकारकं व्य तिरेकसंग्रहोन्नण्यतेयथाजीवोजीवइतिनिषेधे जीवसंग्रह एवजा ताः अतः १ संग्रह २ पिंमितार्थ ३ अनुगम ४ व्यतिरेकन्नेदाच्च तुर्विधः अथवास्वसत्ताख्यंमहासामान्यंसंगृण्हाति इतरस्तुगोत्वा दिकमवांतरसामान्यंपिंमितार्थमन्निधीयते महासत्तारूपं अवांतर सत्तारूपं एगंनिच्चंनिरवयवमक्कियं सव्वगंचसामन्नं एतत्माहासा मान्यं गविगोत्वादिकमवांतरसामान्यमितिसंग्रहः ॥

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेठे सामान्ये मूलसर्वड्व्यव्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे रह्याजेधर्म तेनोजेसंग्रहकरे तेसंग्रहकहियें तेनाबेन्नेदठे १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह वलीसामान्यसंग्रहना बेन्नेदठे १ मूलसामान्यसंग्रह २ उत्तरसामान्यसंग्रह वली मूलसामान्यसंग्रहना अस्तित्वादिकठन्नेदठे तेपूर्वेकह्याठे तथाउत्तरसामान्यना बेन्नेदठे १ जातिसामान्य २ समुदायसामान्य तिहांगायनासमुदायमां गोत्वरूपजातिठे तथाघटसमुदायमांघटत्वपणो अनेवनस्पतिनेविषे वनस्पतिपणो तेजातिसामान्यकह्यो अनेआंबानासमूहनेंविष अंबवनकहे तथा मनुष्यना समूहमां मनुष्यग्रहणथाय तेसमुदायसामान्य एउत्तरसामान्य तेचक्षुदर्शन तथाअचक्षुदर्शनने ग्राहीकठे अनेमूलसामान्यतेअवधिदर्शन तथाकेवलदर्शनथी ग्रहवायठे अथवा १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह तिहां ठ ड्व्यनासमुदायने ड्व्यकह्युंएसामान्यसंग्रह इहांसर्वनोग्रहणथयोठे अनेजीवनेजीवड्व्यकही अजीवड्व्यथी जूदोन्नेदपाड्यो एविशेषसंग्रह एविशेषसंग्रहनो विस्तारघणोठे तथाविशेषावश्यकथी संग्रहनयना चारन्नेद तेलखियेंठेयें मूलपाठमां कहेलीगाथानोअर्थठे.

संग्रहणंके० एकठो एकवचनमध्ये एकअध्यवसाय उपयोगमां समकालेंग्रहेवुं सामान्यरूपपणे सर्ववस्तुनो आक्रोमण ग्रहणकरवो तेसंग्रहकहियें अथवासामान्यरूपपणे सर्व संग्रहकरे तेसंग्रहकहियें अथवाजेथकीसर्वन्नेद सामान्यपणे ग्रहियें तेने संग्रहकहियें अथवासंगृहीतं पिंमितके० जेवचनथी समुदायअर्थग्रहवाय तेसंग्रहवचनकहियें तेनाचारन्नेदठे १ संगृहीतसंग्रह २ पिंमितसंग्रह ३ अनुगमसंग्रह ४ व्यतिरेकसंग्रह.

१ सामान्यपणे वेचणविना ग्रहणथाय एवोजेउपयोग अथवा एवुंवचन अथवा एवोधर्म कोइपणवस्तुनेविशेहोय तेनेसंगृहितसंग्रहकहियें.

२ अनेएकजातिमाटे एकपणोमानिने तेएकमध्ये सर्वनोग्रहणथायजेमएगेआयाएगे पुग्गले इत्यादिवस्तुअनंतिछे पणजातिएकमाटेग्रहवायछे तेबीजोपिंडितसंग्रहकहियें.

३ जेअनेकजीवरूप अनेकव्यक्तिछे तेसर्वमांपामियें जेम सत्चित्मयोआत्मा एटले सर्वजीव तथासर्वप्रदेश सर्वगुण तेजीवनालक्षणछे एनेअनुगमसंग्रहकहियें.

४ तथाजेनेनाकहेवे तेथीइतरनो सर्वसंग्रहपणेज्ञानथायतेजेमअजीवछेतेवारें जे जीवनहीतेअजीवकहिये एटलेकोइकजीवछे एमव्यतिरेक वचनेछेत्यो तथाऊपयोगें जीवनो ग्रहणथायछे तेव्यतिरेकसंग्रहकहियें.

अथवासंग्रहनयबेभेदेंकहेवायछे १ महासत्तारूप २ अवांतरसत्तारूप एरीतेंपणसंग्रहनोस्वरूपकह्योछे सवतिभणिएणज म्हासवन्नाणुप्पवत्तएबुद्धि तोसवंसत्तमत्तंनत्नीतदंतरं किंचि ॥ १ ॥ यद्यस्मान्सदित्येवंभणीते सर्वत्रिभुवनत्रयांतर्गतवस्तुनिबुद्धिरनुप्रवर्तते प्रधावतिनहितत् किमपिवस्तुअस्तियत् सदित्युक्तेजगतिबुद्धौनप्रतिभासते तस्मात्सर्वसत्तामात्रं नपुनःअर्थांतरं तत्श्रुतसामर्थ्यात् यत्संग्रहेन संगृह्यते तेनपरिणमनरूपत्वादेवसंग्रहस्येति एटलेत्रणेभुवनमां एहवीवस्तुकोइनथीजे संग्रहनयनेग्रहणमांआवतीनथी जेजेवस्तुछेतेसर्व संग्रहनयमां ग्रहवाणीजछे एसंग्रहनयकह्यो.

संग्रहगृहीतवस्तुभेदांतरेण विभजनंव्यवहरणंप्रवर्तनंवाव्यवहारःसद्विविधःशुद्धोशुद्धश्च शुद्धोद्विविधः वस्तुगतव्यवहारः धर्मास्तिकायादिद्रव्याणां स्वस्वचलनसहकारादिजीवस्यलोकालोकादिज्ञानादिरूपः स्वसंपूर्णपरमात्मभावसाधनरूपो गुणसाधकावस्थारूपः गुणश्रेण्यारोहादिसाधनशुद्धव्यवहारः अशुद्धोपिद्विविधः सद्भूतासद्भूतभेदात् सद्भूतव्यवहारो ज्ञानादिगुणः परस्परंभिन्नः असद्भूतव्यवहारः कषायात्मादि मनुष्योहं देवोहं सोपिद्विविधः संश्लेषिताशुद्धव्यवहारःशरीरंममअहंशरीरी असंश्लेषितासद्भूतव्यवहारः पुत्रकलत्रादि तौचउपचरितानुपचरितव्यवहारभेदात्द्विविधौ तथाचविशेषावश्यके व्यवहरणंव्यवहारः एसतेणव्यवहार एवसामान्नंव्यवहारपरोवजउविसजंते णव्यवहारःव्यवहरणंव्यवहारः व्यवहरतिसइतिवाव्यवहारः विशेषतोव्यवह्रीयते निराक्रियते सामान्यंतेनेतिव्यवहारः लोकव्य

वहारपरोवाविशेषतोयस्मात्तेनव्यवहारः नव्यवहारास्वस्वधर्मप्रव र्तितेनऋतेसामान्यमितिस्वगुणप्रवृत्तिरूपव्यवहारस्यैववस्तुत्वंत मंतरेणतदभावात् सद्विविधः विभजन १ प्रवृत्ति २ भेदात्प्रवृ त्तिव्यवहारस्त्रिविधःवस्तुप्रवृत्तिः १ साधनप्रवृत्तिः २ लौकिकप्र वृत्तिश्च ३ साधनप्रवृत्तिस्त्रेधा लोकोत्तर १ लोकिका २ कुप्रावच निक ३ भेदात् इतिव्यवहारनयश्रीविशेषावश्यके ॥

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयनी व्याख्याकरेछे संग्रहनयें ग्रहितजेवस्तु तेनेभेदांतरे विभजनके० वेचवुं तेव्यवहारनय जेमद्रव्यएवुंसामान्यनामकह्युं तेमां वलीवेंहेचणकरियें जे द्रव्यनाबेभेदछे १ जीवद्रव्य २अजीवद्रव्य वलीतेमांपणवेंहेचणकरियें जेजीवना बेभेद १ सिद्ध बीजासंसारी एमवेंहेचणकरवी तेसर्वव्यवहारनयनो स्वभावजाणवो अथवा व्यवहरणके० प्रवर्त्तन तेव्यवहारनय तेनाबेभेदछे १ शुद्धव्यवहार २ अशुद्धव्यवहार वलीशुद्धव्यवहारनाबेभेदछे १ सर्वद्रव्यनी स्वरूपरूपशुद्धप्रवृत्ति जेमधर्मास्तिकायनी चलणसहायता तथाअधर्मास्तिकायनीथिरसहायता तथाजीवनीज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगतशुद्ध व्यवहारकहियें २ द्रव्यनोउत्सर्ग निपजवामाटे रत्नत्रयी शुद्धता गुणस्थाने श्रेणीआरोहणरूप तेसाधनशुद्ध व्यवहारकहियें.

वलीअशुद्धव्यवहारनाबेभेदछे १ सद्भूत २ असद्भूत तेमांजेखेत्रे अवस्थाने अभेदें रह्याजे ज्ञानादिगुण तेनेपरस्परभेदेंकहेवा ते सद्भूतव्यवहार.

तथाजेमक्रोधीहुं मानीहुं अथवादेवताहुं मनुष्यहुं इत्यादिदेवतापणो तेहेतुपणेपरिणमतांग्रह्याजेदेवगतिविपाकीकर्म तेनेउदयरूपपरभावछे तेपणयथार्थज्ञानविना भेदज्ञानशून्यजीवने एककरीमानेछे तेअशुद्ध व्यवहारकहियें तेनाबेभेदछे १ संश्लेषित अशुद्धव्यवहार ते जे शरीरमारुं हुंशरीरी इत्यादिकसंश्लेषितअसद्भूतव्यवहार २ असंश्लेषितअशुद्धव्यवहार ते आपुत्रमारो धनादिकमारा एमकहेवुंतेअसंश्लेषितअसद्भूत व्यवहार तेचउपचरित अनुपचरित एवेभेदजाणवा.

तथाविशेषावश्यकमाहाभाष्यमांकह्युंछे जे व्यवहारनयना मूलबेभेदछे एकवेंहेचणरूपव्यवहार बीजोप्रवृत्तिव्यवहार तेवलीप्रवृत्तिनात्रणभेदछे १ वस्तुप्रवृत्ति २ साधनप्रवृत्ति ३ लौकिकप्रवृत्ति तेमांवलीसाधनप्रवृत्तिनात्रणभेदछे १ जे अरिहंतनीआज्ञायें शुद्धसाधनमार्गें इहलोकसंसारपुद्गलभोगआशंसादिदोषरहितजेरत्नत्रयीनीपरिणति परभावत्यागसहित तेलोकोत्तरसाधनप्रवृत्ति २ जेस्याद्वादविना मिथ्याभिनिवेशसहित साधनप्रवृत्तिते कुप्रावचनिकसाधनप्रवृत्ति ३ अनेजेलोकनास्वस-

देश कुलनीचालेप्रवृत्ति तेलोकव्यवहारप्रवृत्ति एत्रणप्रवृत्तिकहियें एव्यवहारनयनाभेद जाणवा तिहां द्वादशसारनयचक्रमां एकेकनयना सोसोभेदकह्याछे तेजैनशासनरहस्य नाजाणजीवे तेग्रंथमांथीधारवा एव्यवहारनयकह्यो.

उजंरुजुसुअनाणे सुजसुयमत्ससोयमुजसुज ॥ सुत्तयइवाजमु वत्थु तेणउज्जुसुतोत्ति ॥ १ ॥ उक्तंतिरुजुश्रुतंसुज्ञानंबोधरूपं ततश्चरुजुअवक्रमश्रुतमस्यसोयमृजुश्रुतंवा अथवा रुजुअवक्रं वस्तुसूत्रयतीतिरुजुसूत्रइति कथंपुनरेतदभ्युपगतस्य वस्तुनो वक्रत्वमित्याह पच्चुपन्नंसंपयमुप्पन्नंजंचजस्सपत्तेयं तंरुजुतदेव तस्सत्थि उवकम्मन्नंतिजमसंतं ॥ २ ॥ यत्सांप्रतमुत्पन्नं वर्त्तमा नकालीनं वस्तुयच्चयस्य प्रत्येकमात्मायत्तदेवतज्जनयस्वरूपं व स्तुप्रत्युत्पन्नमुच्यते तदेवासौनयः रुजुप्रतिपाद्यते तदेवच वर्त मानकालीनंवस्तुतस्यार्जसूत्रस्यास्तिअन्यत्रशेषातीतानागतंपर कार्यंच यद्यस्मात् असदविद्यमानं ततोअसत्वादेवतरूक्रमिच्छ त्यसावितिअतएवउक्तं निर्युक्तिकृता पच्चुपन्नगाही उजुसुनयवि हीमुणेयव्वोति यतकालत्रयेवर्तमानमंतरेणवस्तुत्वं उक्तंचयतः अतीतंअनागतंभविष्यति नसांप्रतंतद्वर्तते इतिवर्तमानस्यैव वस्तुत्वमितिअतीतस्यकारणता अनागतस्यकार्यता जन्यजन कभावेनप्रवर्तते अतः रुजुसूत्रंवर्तमानग्राहकंतद्वर्तमानं नामा दिचतुः प्रकारंग्राह्यं ॥

अर्थ ॥ हवे रुजुसूत्रनयकहेछे रुजुके० सरलछे श्रुतके० बोधतेरुजुसूत्रकहियें रुजु- शब्दें अवक्रएटलेसमोछे श्रुतजेने तेरुजुसूत्रकहियें अथवारुजु अवक्रपणे वस्तुनेजाणे कहे तेरुजुसूत्रकहियें ते वस्तुनोवक्रपणोकेमजाणियें तेकहेछे सांप्रतके० वर्तमानपणे उपनोजेवर्तमानकालेंवस्तुतेरुजुसूत्रकहियें अन्यजे अतीतअनागत तेरुजुसूत्रनीअपेक्षा- यें अछतोछेकेमके अतीततो विणसीगयोछे अनेअनागतआव्योनथी तेवारेंअतीतअना- गत एवेअवस्तुछे अनेजेवर्तमानपर्यायेंवर्ते तेवस्तुपणोछे जेपूर्वकालपश्चात्काल लेयीव- स्तुकहेवीते नैगमनयछे आरोपरूपछे तिहांकोइपुछे जेसंसारीसकर्माजीवने सिद्धसमान कहेछे तेतोअनागतकालें सिद्धथशे तोतमेअनागतने अवस्तुकेम कहोछो तेनोउत्तर जे

वहारपरोवाविशेषतोयस्मात्तेनव्यवहारः नव्यवहारास्वस्वधर्मप्रव र्तितेनऋतेसामान्यमितिस्वगुणप्रवृत्तिरूपव्यवहारस्यैववस्तुत्वंत मंतरेणतन्नावात् सद्विविधः विन्नजन १ प्रवृत्ति २ नेदात्प्रवृ त्तिव्यवहारस्त्रिविधःवस्तुप्रवृत्तिः १ साधनप्रवृत्तिः २ लौकिकप्र वृत्तिश्च ३ साधनप्रवृत्तिस्त्रेधा लोकोत्तर १ लौकिका २ कुप्रावच निक ३ नेदात् इतिव्यवहारनयश्रीविशेषावश्यके ॥

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयनी व्याख्याकरेबे संग्रहनयें ग्रहितजेवस्तु तेनेन्नेदांतरे विन्न-जनके० वेचवुं तेव्यवहारनय जेमद्रव्यएवुंसामान्यनामकह्युं तेमां वलीवेंहेचणकरियें जे द्रव्यनावेन्नेदबे १ जीवद्रव्य २ अजीवद्रव्य वलीतेमांपणवेंहेचणकरियें जेजीवना बेन्नेद १ सिद्ध बीजासंसारी एमवेंहेचणकरवी तेसर्वव्यवहारनयनो स्वन्नावजाणवो अथवा व्यवहरणके० प्रवर्त्तन तेव्यवहारनय तेनाबेन्नेदबे १ शुद्धव्यवहार २ अशुद्धव्यवहार वलीशुद्धव्यवहारनाबेन्नेदबे १ सर्वद्रव्यनी स्वरूपरूपशुद्धप्रवृत्ति जेमधर्मास्तिकायनी चलणसहायता तथाअधर्मास्तिकायनीथिरसहायता तथाजीवनीज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगतशुद्ध व्यवहारकहियें २ द्रव्यनोउत्सर्ग निपजवामाटे रत्नत्रयी शुद्धता गुण-स्थाने श्रेणीआरोहणरूप तेसाधनशुद्ध व्यवहारकहियें.

वलीअशुद्धव्यवहारनाबेन्नेदबे १ सद्भूत २ असद्भूत तेमांजेखेत्रे अवस्थाने अन्नेदें रह्याजे ज्ञानादिगुण तेनेपरस्परन्नेदेंकहेवा ते सद्भूतव्यवहार.

तथाजेमक्रोधीहुं मानीहुं अथवादेवताहुं मनुष्यहुं इत्यादिदेवतापणो तेहेतुपणेप-रिणमतांग्रह्याजेदेवगतिविपाकीकर्म तेनेउदयरूपपरन्नावबे तेपणयथार्थज्ञानविना न्ने-दज्ञानशून्यजीवने एककरीमानेबे तेअशुद्ध व्यवहारकहियें तेनाबेन्नेदबे १ संश्लेषित अशुद्धव्यवहार ते जे शरीरमारुं हुंशरीरी इत्यादिकसंश्लेषितअसद्भूतव्यवहार २ अ-संश्लेषितअशुद्धव्यवहार ते आपुत्रमारो धनादिकमारा एमकहेवुंतेअसंश्लेषितअसद्भूत व्यवहार तेचउपचरित अनुपचरित एबेन्नेदजाणवा.

तथाविशेषावश्यकमाहान्नाष्यमांकह्युंबे जे व्यवहारनयना मूलबेन्नेदबे एकवेंहे-चणरूपव्यवहार बीजोप्रवृत्तिव्यवहार तेवलीप्रवृत्तिनात्रणन्नेदबे १ वस्तुप्रवृत्ति २ साधनप्रवृत्ति ३ लौकिकप्रवृत्ति तेमांवलीसाधनप्रवृत्तिनात्रणन्नेदबे १ जे अरिहंत-नीआज्ञायें शुद्धसाधनमार्गें इहलोकसंसारपुद्गलन्नोगआशंसादिदोषरहितजेरत्नत्रयी नीपरिणति परन्नावत्यागसहित तेलोकोत्तरसाधनप्रवृत्ति २ जेस्याद्वादविना मिथ्या-न्निनिवेशसहित साधनप्रवृत्तिते कुप्रावचनिकसाधनप्रवृत्ति ३ अनेजेलोकनास्वस्व-

देश कुलनीचालेप्रवृत्ति तेलोकव्यवहारप्रवृत्ति एत्रणप्रवृत्तिकहियें एव्यवहारनयनाभेद जाणवा तिहां द्वादशसारनयचक्रमां एकेकनयना सोसोभेदकह्याछे तेजैनशासनरहस्य नाजाणजीवे तेग्रंथमांथीधारवा एव्यहारनयकह्यो.

उजंरुजुसुअनाणे मुजसुयमत्ससोयमुजसुउ ॥ सुत्तयइवाजमु वत्थु तेणउजुसुतोत्ति ॥ १ ॥ उक्तंतिरुजुश्रुतंसुज्ञानंबोधरूपं ततश्चरुजुअवक्रमश्रुतमस्यसोयमृजुश्रुतंवा अथवा रुजुअवक्रं वस्तुसूत्रयतीतिरुजुसूत्रइति कथंपुनरेतदभ्युपगतस्य वस्तुनो वक्रत्वमित्याह पच्चुपन्नंसंपयमुप्पन्नंजंचजस्सपत्तेयं तंरुजुतदेव तस्सत्थि उवकम्मन्नंतिजमसंतं ॥ २ ॥ यत्सांप्रतमुत्पन्नं वर्त्तमा नकालीनं वस्तुयच्चयस्य प्रत्येकमात्मायत्तदेवतद्भनयस्वरूपं व स्तुप्रत्युत्पन्नमुच्यते तदेवासौनयः रुजुप्रतिपाद्यते तदेवच वर्त मानकालीनंवस्तुतस्यार्जसूत्रस्यास्तिअन्यत्रशेषातीतानागतंपर कार्यंच यद्यस्मात् असदविद्यमानं ततोअसत्वादेवतद्वक्रमिच्छ त्यसाविति अतएवउक्तं निर्युक्तिकृता पच्चुपन्नगाही उजुसुनयवि हीमुणेयव्वोति यतकालत्रयेवर्तमानमंतरेणवस्तुत्वं उक्तंचयतः अतीतंअनागतंभविष्यति नसांप्रतंतद्वर्तते इतिवर्तमानस्यैव वस्तुत्वमितिअतीतस्यकारणता अनागतस्यकार्यता जन्यजन कभावेनप्रवर्तते अतः रुजुसूत्रंवर्तमानग्राहकंतद्वर्तमानं नामा दिचतुः प्रकारंग्राह्यं ॥

अर्थ ॥ हवे रुजुसूत्रनयकहेछे रुजुके० सरलछे श्रुतके० बोधतेरुजुसूत्रकहियें रुजुशब्दें अवक्रएटलेसमोछे श्रुतजेने तेरुजुसूत्रकहियें अथवारुजु अवक्रपणे वस्तुनेजाणे कहे तेरुजुसूत्रकहियें ते वस्तुनोवक्रपणोकेमजाणियें तेकहेछे सांप्रतके० वर्तमानपणे उपनोजेवर्तमानकालेंवस्तुतेरुजुसूत्रकहियें अन्यजे अतीतअनागत तेरुजुसूत्रनीअपेक्षायें अछतोछेकेमके अतीततो विणसीगयोछे अनेअनागतआव्योनथी तेवारेंअतीतअनागत एबेअवस्तुछे अनेजेवर्तमानपर्यायेंवर्ते तेवस्तुपणोछे जेपूर्वकालपश्चात्काल लेयीवस्तुकहेवीते नैगमनयछे आरोपरूपछे तिहांकोइपुछे जेसंसारीसकर्माजीवने सिद्धसमान कहेछे तेतोअनागतकालें सिद्धथशे तोतमेअनागतने अवस्तुकेम कहोछो तेनोउत्तर जे

हे द्रव्यए अनागतभावि माटे कहेतानथी एतो वर्तमान सर्वगुणनी छति आत्मप्रदेशेछे ते आवरणदोषें प्रवर्ततिनथी तेथी तिरोभावीपणामाटे संग्रहनयें कहियें पणवस्तुमां सर्व केवलज्ञानादिगुण छतावर्त्ते छे तेमाटे सिद्धकहियेंछेयें.

अनेजेवस्तु तेनामादिकपर्यायसहितवर्त्तेछे माटेनामादिकनिक्षेपा तेसर्वऋजुसूत्रनयनाभेदछे तथानामादिक त्रणनिक्षेपातोद्रव्यछे अनेभावतेभावछे एव्याख्याकारण कार्य भावनी वेंचणकरियें तेमाटेछे पणवस्तुमां सहज चारनिक्षेपाते भावधर्मजछे तथा एस्वस्वकार्यनाकर्त्ताजछे एऋजुसूत्रनाबेभेद दिगंबरकहेछे १ सूक्ष्मऋजुसूत्र २ स्थूलऋजुसूत्र जेवर्तमानकालनो एकसमयतेने सूक्ष्मऋजुसूत्रकहियें अनेजेबहुकालिते स्थूलऋजुसूत्र एपणकालापेक्षीभावछे तथाएभावनयछे अनेयोगावलंबीपणो तेबाह्यछे तेपणद्रव्यमाटे एकद्रव्यमध्येगणेछेएऋजुसूत्रनयकह्यो.

शपआक्रोशेशपनमाव्हानमितिशब्दः शपतीतिवाआव्हानयतीति शब्दःशप्यतेआहूयते वस्तुअनेनेतिशब्दः तस्यशब्दस्य योवाच्योर्थस्तत्परिग्रहात्तत्प्रधानत्वात्नयशब्दः यथाकृतकत्वादित्यादिकपंचम्यंतःशब्दोपिहेतुः अर्थरूपंकृतकत्वमनित्यत्वगमकत्वान्मुख्यतयाहेतुरुच्यतेउपचारवस्तुतद्वाचककृतकत्वशब्दोहेतुरभिधीयते एवमिहापिशब्दवाच्यार्थपरिग्रहाउपचारेणनयोपिशब्दो व्यपदिश्यतेइतिभावः यथाऋजुसूत्रनयस्याभीष्टं प्रत्युत्पन्नं वर्त्तमानं तथैवइच्छत्यसौशब्दनयः यद्यस्मात्पृथुबुध्नोदरकलितमृन्मयं जलाहरणादिक्रियाक्षमं प्रसिध्दघटरूपं भावघटमेवेच्छत्यसौ नतुशेषान्नामस्थापनाद्रव्यरूपान्त्रीन्घटानितिशब्दार्थप्रधानो ह्येषनयः चेष्टालक्षणश्चघटः शब्दार्थोघटचेष्टायां घटतेइतिघटः अतो जलाहरणादिचेष्टांकुर्वन्घटः अतश्चतुरोपिनामादिघटानिच्छतःऋजुसूत्राद्विशेषिततरंवस्तुइच्छति असौशब्दार्थोपपत्तेर्भावघटस्यैवानेनाभ्युपगमादिति अथवाऋजुसूत्रात् शब्दनयःविशेषिततरःऋजुसूत्रेसामान्येनघटोभिप्रेतः शब्देनतुसद्भावादिभिरनेक धर्मैरभिप्रेतइति तेचसप्तभंगाःपूर्वेउक्ताइति ॥

अर्थ ॥ हवेशब्दनयनुं स्वरूपकहियेंछेयें शपतिके० बोलावे तेनेशब्दकहियें अथवा शपियेंबोलावियें वस्तुपणेतेशब्दकहियें तेशब्देंजेवाच्यअर्थ तेने ग्रहे एहवोछेप्रधानपणो

जेनयमां तेपणशब्दनयकहियें जेमकृतकतेजेकर्यो तेनो हेतुजेधर्मते जेवस्तुमांहोय ते बोलाय एटलेशब्दनुंकारणतो वस्तुनोधर्मथयो जेमजलाहरणधर्मजेमांछे तेनेघटकहि-येंछैयें एमइहांपण शब्देंवाच्यअर्थग्रहेतेमाटेतेनयनोनामपण शब्दकहेवायजेमऋजुसूत्र-नयने वर्त्तमान कालनाधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनयने पण वर्त्तमानतानाधर्मजइष्टछे.

केमकेपेटेपृथुके० पहोलो बुध्नके० घोल संकोचितउदरकलितयुक्त जलाहरणक्रिया-नेसमर्थ प्रसिद्धघटरूप भावघट तेनेजघटइछेछे पण शेष नामस्थापना अनेद्रव्यरूप त्रणघटने एशब्दनयघटमानेनही घटशब्दनाअर्थने तेसंकेतनेजघटकहे घटधातुतेचे-ष्टावाचीछे अतःकारणात्के० एकारणपणामाटे एशब्दनयते चेष्टाकर्त्तानेजघटकहे एटले ऋजुसूत्रनय चारनिक्षेपासंयुक्तने पण घटमाने अनेशब्दनयते भावघटनेजघटमाने ए-टलोविशेषपणोछे शब्दनाअर्थनी जिहांउपपत्तिहोय तेनेजतेवस्तुपणेकहे एटलेऋजुसू-त्रनयें सामान्यघटगवेष्यो अनेशब्दनयें सद्भाव जे अस्तिधर्म तथाअसद्भाव जेनास्ति-धर्म तेसर्वसंयुक्तवस्तुने वस्तुपणेंकहे.

एटले वस्तुने शब्देंबोलावतां सातभांगेबोलाववो माटेएसप्तभंगीजेटलाज शब्दन-यनाभेदजाणवा तेसप्तभंगीनो स्वरूपपूर्वेंकह्युंछे एशब्दादिकनय वस्तुनापर्यायने अवलं-बीने वस्तुनाभावधर्मनाग्राहकछे तेमाटेवस्तुना भावनिक्षेपा एनयेंमुख्यछे धुरनाचारन-यमां नामादिक त्रणनिक्षेपामुख्यछे एशब्दनयनुंस्वरूपकह्युं.

गाथा ॥ जंजंसण्णंभासइ ॥ तंतंचियसमभिरोहइजम्हा सण्णंत रथ्थविमुहो तउनउसमभिरूढोत्ति ॥ १ ॥ यांयांसंज्ञांघटादिल क्षणांभाषते वदतितांतामेवयस्मात्संज्ञांतरार्थविमुखः समभिरू ढोनयःनानार्थनामाएवभाषते यदिएकपर्यायमपेक्ष्यसर्वपर्यायवा चकत्वं तथाएकपर्यायाणांसंकरःपर्यायसंकरेच्चवस्तुसंकरोभवत्ये वेतिमाभूत्संकरदोषः अतःपर्यायांतरानपेक्षएवसमभिरूढनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेसमभिरूढनयनी व्याख्याकहियेंछैयें जेशब्दनयतेइंद्र शक्र पुरंदर इत्या-दिकसर्वेइंद्रनानामभेदछे पणएकइंद्रपर्यायवंत इंद्रदेखी तेनासर्वेनामकहे उक्तंचविशे-षावश्यके एकस्मिन्नपिइंद्रादिकेवस्तुनियावत् इंद्रनशक्रनपुरदारणादयोर्थाघटंते तद्वशे-नेंद्रशक्रादिबहुपर्यायमपितद्वस्तुशब्दनयोमन्यतेसमभिरूढवस्तुनेवमंस्यतेइत्यनयोर्भेदः

जे एकपर्यायप्रगटपणे अने शेषपर्यायने अणप्रगटवे शब्दनय तेटलासर्वेनामबोलावे पण समभिरूढनयतेनबोलावे एटलोशब्दनय तथा समभिरूढनयमां भेदछे माटे हवे समभिरूढनय कहेछे.

घटकुंभादिकमां जेसंज्ञानो वाच्यअर्थदेखाय तेजसंज्ञाकहे जेमांसंज्ञांतर अर्थने विमुखछे तेनेसमभिरूढनयकहियें जोएकसंज्ञामध्ये सर्वनामांतरमानियें तोसर्वनोसंकर थाय तेवारेंपर्यायनो भेदपणोरहेनही अनेजेपर्यायांतरहोय तेतोभेदपणेजहोय तेथीपर्यायांतरनो भेदपणोजरह्यो तेमाटेलिंगादिभेदने सापेक्षपणे वस्तुनोभेदपणोजमानवो एसमभिरूढनयवखाण्यो एनयमांपण भेदज्ञाननी मुख्यताछे.

एवंजहसदथ्थो संतोभूउंतदन्नहाभूउं ॥ तेणेवंभूअनउं सदथ्थ परोविशेशेणं ॥ १ ॥ एवंयथाघटचेष्टायामित्यादिरूपेणाशब्दार्थोव्यवस्थितः तद्वत्तितथैवयोवर्त्तते घटादिकोर्थः सएवंसन्भूतो विद्यमानः तदन्नहाभुउंत्तिवस्तुतदन्यथाशब्दार्थोल्लंघनेनवर्त्तते सतत्वतोघटाद्यर्थोपिनभवति किंभूतोविद्यमानःयेनैवमन्यते तेन कारणेनशब्दनयसमभिरूढनयाभ्यांसकाशादेवंभूतनयो विशेषेणशब्दार्थनयतत्परः अयंहियोषिन्मस्तकारूढं जलाहरणादिक्रियानिमित्तंघटमानमेव चेष्टमानमेव घटमन्यते नतुग्रहकोणादिव्यवस्थितंविशेषतःशब्दार्थतत्परोयमिति वेंजणमछेणछंच वंजणेणोभयंविशेशे इजहघम्मसद्दंचेठा वयातहातंपितेणेव॥१॥व्यंज्यते अर्थोनेनेतिव्यंजनंवाचकशब्दोघटादिस्तंचेष्टावताएतद्वाच्येनार्थेनविशिनष्टिसएवघटःशब्दोयश्चेष्टावंतमर्थंप्रतिपादयति नान्यइत्येवंशब्दमर्थेननैयत्येव्यवस्थापयतीत्यर्थः तथार्थमप्युक्तलक्षणमभिहितरूपेणव्यंजनेनविशेषयतिचेष्टापिसैवया घटशब्देनवाच्यत्वेनप्रसिद्धायोषिन्मस्तकारूढस्यजलाहरणादिक्रियारूपानतुस्थानतरणक्रियात्मिका इत्येवमर्थं शब्देननैयत्येस्थापयतीत्यर्थः इत्येवमुभयं विशेषयतिशब्दार्थोनार्थः शब्देननैयत्येस्थापयतीत्यर्थः एतदेवाहयदायोषिन्मस्तकारूढचेष्टावानर्थो घटशब्देनोच्यतेसघटलक्षणोर्थःसचतद्वाचकोघटशब्दः अन्यदातुवस्त्वंतरस्येवतच्चेष्टाभावादघटत्वं घटध्वनेश्चावाचकत्वमित्येवमुभयविशेषकः एवंभूतनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयनोस्वरूपकहिछैयें एवंके०जेमघटचेष्टावाची इत्यादिकरूपे

शब्दनयनोअर्थकह्योछे एरीतेजेघटादिकअर्थवर्ते ते एवंके० एमज जेविद्यमानपणे शब्दनाअर्थने उलंघीनेवर्त्ते तेतेशब्दनोवाच्यनथी अने शब्दार्थपणोजेमांनपामियें ते वस्तुतेरूपेनही माटेजोशब्दार्थमांथी एकपर्यायपण उछोहोयतो एवंभूतनयतेने तेपणो कहेनही तेमाटेशब्दनयथी तथासमभिरूढनयथी एवंभूतनयतेविशेषांतरछे.

एएवंभूतनयते स्त्रीनेमस्तकेचढ्यो पाणीआणवानी क्रियानोनिमित्त मार्गेंआवतापणानी चेष्टाकरतोहोय तेनेघटमाने पणघरनेखूंणे रह्योजेघट तेनेघटकरीमानेनही केमकेते चेष्टाने अणकरतोछेतेमाटे. जेथकीअर्थने व्यंजीयेके०प्रगटकरियें तेनेव्यंजनकहियें व्यंजनतेवाचकशब्दछे तेअर्थनेकहेतेक्रियावंतथको तेनेजतेवस्तुकहे बीजानेनकहे अनेतेहिजअर्थेंकह्युं जेलक्षण तेकह्यानेरूपेंविशेषथाय जेमचेष्टाघटशब्दवाचेप्रसिद्धछे योषित्के०स्त्रीनेमाथेपाणीलावतो तेघट तथास्थानकेंरह्यो अथवातरणक्रियाकरताने एवंभूतनयघटकहेनही एशब्देंअर्थ तथाअर्थेंशब्दनेथापेछे एनुंएरहस्यछे जेस्त्रीनेमस्तकें चढ्यो चेष्टावंतअर्थ तेघटशब्देंबोलावे तेथीअन्यथा तेने तेपणेबोलावेनही जेम सामान्यकेवली जे ज्ञानादिकगुणेसमानछे तेने समभिरूढ नय अरिहंतकहे पण एवंभूतनयतो समोसरणादि अतिशयसंपदासहित तथाकेवलीतेइंद्रादिकेंपूजतां युक्तहोयतेनेज अरिहंतकहे तेविनानकहे वाच्यवाचकनी पूरणतानेकहे एस्वरूपे एवंभूतनयजाणवो.

एसातेनयनाभेद ते विशेषावश्यकने अनुसारेकह्या तेमांनैगमनादसभेद संग्रहना छभेद अथवाबारकह्या व्यवहारनाभेदआठ अथवाचउदकह्या ऋजुसूत्रनाचार अथवा छ कह्या शब्दनासातभेदकह्या समभिरूढनाबेभेद अनेएवंभूतनो एकभेदकह्यो एरीते सर्वेनाभेदकह्या वलीनयचक्रमां नयनाभेद सातसोकह्याछे तेपणजाणवा.

एवमेवस्याद्वादरत्नाकरात्पुनर्लक्षणतउच्यते नीयतेयेनश्रुताख्य प्रामाण्यविषयीकृतस्यार्थस्यशस्तादितरांशौदासीन्यतः संप्रतिप त्तुरभिप्रायविशेषोनयःस्वाभिप्रेतादेशादपरांशापलापीपुनर्नयाभा सःससमासतःद्विभेदः द्रव्यार्थिकःपर्यायास्तिकश्च आद्योनैगम संग्रह व्यवहारऋजुसूत्रभेदाच्चतुर्धा केचित्ऋजुसूत्रंपर्यार्थिकं व दंति तेचचेतनांशत्वेनविकल्पस्यऋजुसूत्रेग्रहणात्श्रीवीरशासने मुख्यतःपरिणतिचक्रस्यैवभावधर्मत्वेनांगीकारात् तेषांऋजुसूत्रः द्रव्यनयेएवधर्मयोर्धर्मिणोर्धर्मधर्मिणोश्च प्रधानोपसर्जनआरो पसंकल्पांशादिभावेनानेकगमग्रहणात्मकोनैगमः सतूचैतन्यमा

त्मनीतिधर्मयोः गुणपर्यायवत्द्रव्यमितिधर्मधर्मिणोः क्षणमेको सुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोः सूक्ष्मनिगोदीजीवसिद्ध समानसत्ताकः अयोगी नोसंसारीतिअंशग्राहीनैगमःधर्मधर्मादी नामेकांतिकपार्थक्याभिसंधिर्नैगमाभासः

अर्थ ॥ हवेस्याद्वादरत्नाकरथी नयस्वरूपलखियेंछैयें नीयतेकें० पमाडीयें जेथकीश्रुत ज्ञान स्वरूपप्रमाणे विषयेकीधो जेपदार्थनोअंश तेअंशथी इतरकें० बीजोजे अंशतेथकी उदासीपणोतेनेपडिवर्जवावालानोजेअभिप्रायविशेष तेनेनयकहियेएटले वस्तुनाअंश- नेग्रहेअनेअन्यथी उदासीनपणो तेनयकहिये एकअंशनेमुख्यकरीने बीजा अंशनेउथापे तेनयाभासकहियें तेनयनावेभेदछे एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक तेमांद्रव्यार्थिक- ना १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र एचारभेदछे केटलाक आचार्यते ऋजुसूत्र- ने विकल्परूपमाटे भावनयगवेषेछे तेरीते द्रव्यार्थिकना त्रणभेदछे.

हवेनैगमनयनुं स्वरूपकहेछे जेधर्मनेप्रधानपणे अथवागौणपणे अथवा धर्मीने प्र- धानपणे अथवा गौणपणे तथाधर्मधर्मीएबेउने प्रधानपणे तथागौणपणे जेगवेषवो ए- टलेधर्मोनी प्राधान्यता तेवारेपर्यायोनी प्रधानताथयी अनेजिहांधर्मीनोप्रधानपणो तिहांद्रव्यनोप्रधानपणो तेमजगौणपणो तथाधर्मधर्मीनो प्रधानगौणपणो एरीतेजेद्र- व्यपर्यायनो गौणप्रधानपणानी गवेषणारूप ज्ञानोपयोग तेनैगमनयजाणवो तेनाबो- धने नैगमबोधकहिये तेनाउदाहरण कहेछे.

सत्कें०छतापणे चैतन्यकें०जाणपणो एबेधर्ममध्ये एकधर्मपक्षमुख्यपणेगणे अनेबी- जानेगौणपणे नगवेषे एरीतें नैगमनयजाणवो इहांचैतन्यनामेजे व्यंजन पर्यायतेने प्र- धानपणेगणे केमकेचैतन्यपणो तेविशेषगुणछे अने सत्वनामाव्यंजनपर्यायछे तेसकल- द्रव्यसाधारणछे तेमाटेतेने गौणपणेलेखवे एनैगमनोप्रथमभेदकह्यो.

तथावलीवस्तुपर्यायवत्द्रव्यं एमबोलवुंते धर्मिनोनैगमछे इहांपर्यायवत्द्रव्यं एमव- स्तुछे इहांद्रव्यनोमुख्यपणो वलीवस्तुनेपर्यायवंतकहेवुं ते वस्तुनोगौणपणो अनेपर्याय- नोमुख्यपणो इहांउभयगोचरपणामाटे एनैगमनोबीजोभेदकह्यो.

क्षणमेकःसुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोरिति इहांविषयासक्तजीवाख्य जेध- र्मिना मुख्यताना विशेषपणाथी सुखलक्षणधर्मनीप्रधानता तेविशेषणपणेकरीने धर्म- धर्मिने आलंबने एत्रीजोनैगम जेवारेधर्म तथाधर्मिएबेने अवलंबे ग्रहणकरे तेवारेसं- पूर्णवस्तुनोग्रहणथयो तेवारेएज्ञाननेप्रमाणकह्यो तिहांउत्तरद्रव्यपर्यायतेबेहुनेप्रधानपणे अनुभवतो जेज्ञानप्रमाणथाय इहांबेपक्षनेविषे एकनीगौणता बीजानीमुख्यतालेइने

ज्ञानथायछेतेमाटे नयकहियें तथावलीसूक्ष्मनिगोदिजीव तेसमानसत्तावंतछे अथवा अयोगीकेवलीजिनतेने संसारीकहेवुं तेअंशनैगम.

हवेनैगमाभ्यासकहेछे वस्तुमांधर्मअनेकछे तेएकांतेमाने पणएकबीजाने सापेक्षपणेनमाने एटलेएकधर्मनेमाने अनेबीजाधर्मनेनमाने तेनैगमाभ्यासकहियें एदुर्नय जाणवो केमके अन्यनयनेगवेषेनही माटेजेमआत्मानेविषे सत्वतथाचैतन्य एधर्मभिन्नभिन्नछे तेमांचैतन्यपणोनमाने ते नैगमाभ्यासकहियें एटलेनैगमनयकह्यो.

यथात्मनिसत्वचैतन्येपरस्परंभिन्ने सामान्यमात्रग्राहीसत्ता परामर्शरूपसंग्रहः सपरापरभेदात्द्विविधः तत्रशुद्धद्रव्य सन्मात्रग्राहकःपरसंग्रहः चेतनालक्षणोजीवइत्यपरसंग्रहः सत्ताद्वैतंस्वीकुर्वाणः सकलविशेषान्निराचक्षाणः संग्रहाभासः संग्रहस्यैकत्वेन एगेआयाइत्यनभिज्ञानात् सत्ताद्वैतएवआत्माततःसर्वविशेषाणांतदितराणांजीवाजीवादि द्रव्याणामदर्शनात् द्रव्यत्वादिनावांतरसामान्यानिमन्वानस्तदभेदेषुगजनिमीलिकामवलंबमानःपरापरसंग्रहः धर्माधर्माकाशपुद्गलजीवद्रव्याणामैक्यं द्रव्यत्वादिभेदादित्यादिद्रव्यत्वादिकंप्रतिजानानस्तद्विशेषान्निन्हुवानस्तदाभासः यथाद्रव्यमेवतत्वं तत्वपर्यायाणामग्रहणाद्विपर्यासइतिसंग्रहः

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेछे सामान्यमात्र समस्तविशेषरहित सत्यद्रव्यत्वादिकने ग्रहेवानोछेस्वभावजेनोते संके० पिंडपणेविशेषराशीनेग्रहे पणव्यक्तपणेनग्रहे स्वजातिनादीठाजे इष्टअर्थतेने अविरोधेंकरीने विशेषधर्मोने एकरूपपणेजेग्रहणकरवो तेसंग्रह नयकहियें एभावनाछे तेनाबेभेदछे १ परसंग्रह २ अपरसंग्रह तेमां अशेषविशेषोदासीनंभजमानंशुद्धद्रव्यं सन्मात्रमभिमन्यमानःपरसंग्रहइति जेसमस्तविशेषधर्मस्थापनानीभजनाकरतो एटलेविशेषपणाने अणग्रहतोथको शुद्धद्रव्य सत्तामात्रप्रतेंमाने जेमद्रव्यएपरसंग्रह विश्वएकसत्पणामाटे एमकह्याथी छतापणाना एकपणानुं ज्ञानथायछे एटलेसर्वपदार्थनोएकपणेग्रहणछे तेपरसंग्रहकहियें.

तथाजेसत्तानो अद्वैतस्वीकारे अने द्रव्यांतरभेदनमाने समस्तविशेषपणाने ना कहेतोथको जेग्रहणकरे तेअद्वैतवादिवेदांत तथासांख्यदर्शन एपरसंग्रहाभासछे केमके जेभेदधर्म छतादेखायछे तथाद्रव्यांतरपणो तेनेनमाने माटे परसंग्रहाभासकहियें अने जैनतो विशेषसहित सामान्यनेग्रहेछे माटेसंग्रहनयकहियें.

द्रव्यत्वादिनयांतरसामान्यानिमत्वातः तद्भेदेषुगजनिमीलिकावलंबमानः अपरसंग्रहः द्रव्यजे जीवअजीवादिक जेअवांतरसामान्यनेमानतो अनेजीवनेविषे प्रतिजीवनो विशेषजेद जव्य अजव्यसम्यक्तमिथ्यात्वी नरनारकादिजेजेद तेनेगजनिमीलिकाके० मास्ताइयेंनगवेषवो तेअपरसंग्रहकहियें अनेद्रव्यने सामान्यपणेमाने पणस्वद्रव्यनी परिणामिकतादिक धर्मनेनमाने तेअपरसंग्रहाजासकहियें एसंग्रहनयनुंस्वरूपकह्युं.

संग्रहणेचगोचरीकृतानामर्थानांविधिपूर्वकमवहरणं येनाभिसंधिनाक्रियतेसव्यवहारः यथायत्सत्तत्द्रव्यंपर्यायश्चेत्यादियः पुनरपरमार्थिकंद्रव्यपर्यायप्रविजागमाभिप्रैतिसव्यवहाराजासःचार्वाकदर्शनमितिव्यवहारदुर्नयः

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयकहेछे संग्रहनयेंग्रह्याजे वस्तुनासत्वादिकधर्म तेनेजगुणजेदें वेहेंचे जिन्नजिन्नगवेषे तथापदार्थनीगुणप्रवृत्ति तेनेजमुख्यपणेगवेषे तेव्यवहारनयकहियें जेमद्रव्यछेतेनाजीवपुद्गलादिकपर्यायना क्रमजावी तथासहजावी एरीतेंबेजेदछे तेमांवलीजीवबेप्रकारें १ सिद्धना २ संसारी तेमजपुद्गलनाबेजेद परमाणुतथाखंध इत्यादिक कार्यजेदें जिन्नमाने तथाक्रमजावीपर्यायनाबेजेद एकक्रियारूप बीजोअक्रियारूप इम वेहेंचणजे सामर्थ्यादिकगुणजेदेंपके तेसर्वं व्यवहारनयजाणवो अने जेपरमार्थविना द्रव्यपर्यायनोविजागकरे ते व्यवहाराजासजाणवो.

जेकल्पनाकरीजेदेंवेंचे तेचार्वाकमतप्रमुख एव्यवहारनोदुर्नयछे जेमचार्वाकप्रमाणपणें ठतोजीवपणो लोकप्रत्यक्षमां दृष्टिगोचर नथी आवतो ते माटे जीव नथी एमक- अनेजगत्मांपंचजूतादिकवस्तुनथी एमकल्पनाकरी शुलसोकनेकुमार्गेप्रवर्त्तावे ते व्यवहारदुर्नयकहियें एव्यवहारनयनुंस्वरूपकह्युं

ऋजुवर्तमानक्षणस्थायिपर्यायमात्रप्राधान्यतःसूत्रयतुअभिप्रायःऋजुसूत्रः तथ्यनोपयुक्तःज्ञानीदर्शनोपयुक्तः दर्शनी कषायोपयुक्तःकषायीसमतोपयुक्तः इ सायकीवर्तमानापलापीतदाजासः यथातथागतमतइति ॥

सामा

हवेऋजुसूत्रनयकहेछे ऋजुके० सरलपणेअतीतअनागतने अणगवेषतो

अर्थ ॥ पयवर्त्तता जेपदार्थनापर्यायमात्र तेने प्रधानपणे सूत्रके० गवेषे ते ऋजुसूत्रनयकहियें

अनेवर्त्तमानस तेज्ञानेनेउपयोगें वर्तताने ज्ञानीकहे दर्शनपयोगें वर्तताने दर्शनीकहे कषायपणेवर्तताजीवने कषायीकहे समतानेउपयोगेंवर्तताजीवने सामायकवंतकहे इहांकोइपुछेजे उप रकह्यामुजबतो ऋजुसूत्र तथा शब्दनय एबेएकजथायछे तेनेउ-

त्तरकहेछे जेविशेषावश्यकमांकह्युंछे कारणंयावत् ऋजुसूत्रः एटलेज्ञाननेकारणपणे वर्ततो तेऋजुसूत्रग्रहेछे अनेजेजाणपणारूप कार्यपणेथाय तेशब्दनयकहियेंएफेरछे.

वर्तमानकालनेपण ग्रहण न करे तेऋजुसूत्राभासकहियें जेछताभावनेअछताकहे अथवाविपरीतकहे जेमजीवनेअजीवकहे अजीवनेजीवकहे इत्यादिक ते गत के० बौद्धनोमतछे जेछतोसदासर्वदावर्ततो जीवादिद्रव्य तेनापर्यायने पलटवे सर्वथाद्रव्यने विनासिकमाने तेनेऋजुसूत्रनयाभासाभिप्रायजाणवो एऋजुसूत्रनयकह्यो.

एकपर्यायप्रागूभावेनतिरोभाविपर्यायग्राहकशब्दनयः कालादि भेदेनध्वनेरर्थभेदंप्रतिपाद्यमानः शब्दः जलाहरणादिक्रियासमर्थ एवघटः नमृत्पिंमादौ तत्वार्थवृत्तौशब्दवशादर्थप्रतिपत्तिः तत्का र्यधर्मैववर्त्तमानवस्तुतथामन्वानः शब्दनयः शब्दानुरूपंअर्थपरि णतं द्रव्यमिछतित्रिकालत्रिलिंगत्रिवचनप्रत्ययप्रकृतिभिः सम न्वितमर्थमिछति तद्भेदेतस्यतमेवसमर्थप्रमाणस्तदाभासः

अर्थ ॥ हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुनाएकपर्यायने प्रगटदेखवे बीजाशब्दवाचकपर्यायने तिरोभावें अणप्रगटवेंपणतेपर्यायनेग्रहे अथवाकालत्रण वचनत्रण लिंगत्रण तेनेभेदें शब्दनोभेदपडे तेभेदेंजअर्थनेकहे अथवा जलाहरणादि समर्थनेघटकहे तथाकुंभादिक चिन्हपर्यायजेटलाछे तेटलानो अर्थवर्ततोनदेखाय तोपण तेनेनाम कहीबोलावे एम जेमां कार्यनोसामर्थ्यवंतपणोछे तेनेग्रहे पण माटीना पिंडने घट कहेनहीं तेशब्दनयकहियें अनेजे संग्रह तथानैगमनयवालोकहे ते सत्तायोग्यता अंशनाग्राहकछे तथातत्वार्थटीकामध्ये शब्दवशथीअर्थपडिवजवो तेशब्देंबोलावतोहोय जे अर्थतेवस्तुमां धर्मपणेप्रगटदेखाय तेनेज तेवस्तुमाने एनयने शब्दानुजायी अर्थपरिणमतिजेवस्तु तेनेवस्तुकहेछे काललिंगादिभेदें अर्थनोभेदछे ते भेद तेम ते धर्मेवस्तु माने तेशब्दनयकहियें अनेतेअर्थविना तेवस्तुमध्ये तेपणोवर्ततो देखातो नथी तेनेते वस्तुपणेसमर्थनकरे तेशब्दाभासकहिजे एटलेशब्दनयकह्यो.

एकार्थावलंबिपर्यायशब्देषुनिरुक्तिभेदेनभिन्नमर्थं समभिरोहन्स मभिरूढः इंदनादिंद्रः शकनाच्छक्रः पुरदारणात् पुरंदरःइत्यादि षुयथापर्यायध्वनिनामाभिधेयनानात्वमेवकक्षीकुर्वाणस्तदाभासः यथाइंद्रःशक्रःपुरंदर इत्यादिभिन्नाभिधेये

अर्थ ॥ हवेसमभिरूढनयकहेछे जेएकपदार्थनेअविलंबी जेटलासरिखानाम तेटलापर्यायनामथया तेपर्यायनामजेटलाहोय तेटलानिरुक्तिव्युत्पत्तिभिन्नहोय तेअर्थनो पणभेदहोय तेअर्थने शं के० सम्यक्प्रकारें आरोहतो एटलेएटलासर्वेअर्थसंयुक्तजेहोय तेसमभिरूढनयकहियें जेमइंद्रादिधातु परमैश्वर्यनेअर्थेछे तेपरमऐश्वर्यवंतनेंइंद्रकहियें तथाशकनकहेतांनविनविशक्तियुक्तने शक्रकहियें पुर के० दैत्यने दरे के० विदारे तेपुरंदर अनेशचिजेइंद्राणी तेनोपतिस्वामी तेशचीपतिकहियें एटलासर्वेधर्म तेइंद्रमां छे तेमाटेजेदेवलोकनोधणीछे तेनेइंद्रएवेनामें बोलावेछे बीजानामादिकइंद्रने एनामेन बोलावे जेटलापर्यायनामछे तेनाजेअर्थथाय तेसर्वेनेभिन्नभिन्नअर्थकहेछे पण एकार्थ नजाणेते समभिरूढाभासकहिये एटलेंसमभिरूढनयकह्यो.

एवंभिन्नशब्दवाच्यतत्वाच्छब्दानांस्वप्रवृत्तिनिमित्तभूतक्रियावि
शिष्टमर्थवाच्यत्वेनाभ्युपगच्छन्नेवंभूतः यथाइंदनमनुभवन्निंद्रः
शकनाच्छक्रः शब्दवाच्यतयाप्रत्यक्षस्तदाभासः यथा विशिष्ट
चेष्टाशून्यं घटाख्यवस्तुनः घटशब्दवाच्यं घटशब्दप्रव्यवृ
त्तिभूतार्थशून्यत्वात् पटवदित्यादि

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयकहेछे शब्दनीप्रवृत्तिनो निमित्तभूतजेक्रिया तेविशिष्टसंयुक्त जेअर्थ तेनेवाच्यजेधर्म तेनेजेपहोंचतोहोय एटलेतेकारणकार्यधर्मसहिततेनेएवंभूतनय कहियें तथा ऐश्वर्यसहित तेइंद्रशक्ररूप सिंहासनेबेशेतेशक्र शचि के० इंद्राणीनेसाथेवेठो तेवारेंशचीपतिकहे एटलेजेशब्दना जेटलापर्याय तेसर्वेतेमांपहोंचताभावने ते नामकहिबोलावे अनेजेपर्यायपहोंचतोदेखेनहीतेपर्यायनीनाकहे जिहांसुधीएकपर्याय ऊणोछेतिहांसुधी समभिरूढनयकहियें अने सर्ववचनपर्यायनेपहोंचे तेवारेंएवंभूतनयकहियें जेपदार्थनोनामभेदनो भेददेखीनेपदार्थनीभिन्नताकहे तेएवंभूतनयाभासकहिजे नामभेदेंतेवस्तुजभिन्न जेम हाथी घोडाहिरण्यभिन्नछे तेमभिन्नपणोमाने जेमअर्थभिन्नपणामाटे घटथी पट भिन्न छे तेमइंद्रपणाथी पुरंदरपणोभिन्नमाने तेएवंभूतनयनोदुर्नयजाणवो एटलेएवंभूतनयकह्यो एरीतेसातनयनी व्याख्या कही.

अत्र आद्यनयचतुष्टयमविशुद्धपदार्थप्ररूपणाप्रवणत्वात् अर्थ
नयानामद्रव्यत्वसामान्यरूपानयाः शब्दादयो विशुद्धनयाः श
ब्दावलंबार्थमुख्यत्वादाद्यास्तेतत्वभेदद्वारेणवचनमिच्छंतिशब्दन
यास्तावत्समानलिंगानां समानवचनानांशब्दानां इंद्रशक्रपुरंद

रादीनांवाच्यं भावार्थमेवाभिन्नमभ्युपैति नजातुचित्भिन्नवचनं वाशब्दंस्त्रीदाराः तथाआपोजलमितिसमभिरूढवस्तुप्रत्यर्थंश ब्दनिवेशादिंद्रशक्रादीनांपर्यायशब्दत्वंनप्रतिजानीते अत्यंतभि न्नप्रवृत्तिनिमित्तत्वादभिन्नार्थत्वमेवानुमन्यंते घटशक्रादिशब्दा नामिवेति एवंभूतःपुनर्यथासद्भाववस्तुवचनगोचरं आपृच्छती तिचेष्टाविशिष्टएवार्थोघटशब्दवाच्यःचित्रालेख्यतोपयोगपरिणत श्चचित्रकारः चेष्टारहितस्तिष्ठन्घटोनघटःतच्छब्दार्थरहितत्वात् कूटशब्दवाच्यार्थवन्नापिभुंजानः सयानोवाचित्रकाराभिधाना भिधेयश्चित्रज्ञानोपयोगपरिणतिशून्यत्वाद्गोपालवदेवमभेदभेदा र्थवाचिनो नेकैकशब्दवाच्यार्थावलंबिनश्चशब्दप्रधानार्थोपसर्ज नाच्छब्दनयाइतितत्वार्थवृत्तौ एतेषुनैगमः सामान्यविशेषोभय ग्राहकः व्यवहारविशेषग्राहकः द्रव्यार्थावलंबिऋजुसूत्रविशेषग्रा हकएव एतेचत्वारः द्रव्यनयाः शब्दादयः पर्यायार्थिकविशेषाव लंबीभावनयाश्चेति शब्दादयोनामस्थापनाद्रव्यनिक्षेपादवस्तुत याजानाति परस्परसापेक्षाःसम्यक्दर्शनिप्रतिनयंभेदानांशतं ते नसप्तशतंनयानामितिअनयोगधारोक्तत्वातज्ञेयं.

अर्थ ॥ एसातनयमां आद्यनाचारनय जेछे तेअविशुद्धछे शामाटे के जे पदार्थ केο द्र-व्य तेनेसामान्यपणेकहेवाना अधिकारीछे एनयनुं किहांएकअर्थनय एपणनामछे तेअर्थ-शब्देद्रव्यलेवुं तथाशब्दादिकत्रणनयते शुद्धनयछे केमके शब्दनाअर्थनी एनेमुख्यता छेपेहेलानयते भेदपणेवचननेवांछेछे अनेशब्दादिकनयते लिंगादिके अभेदवचने अभेद कहे तथाभिन्नवचनने भिन्नार्थकहीमाने अनेसमभिरूढते भिन्नशब्दतेनेवस्तुपर्यायन माने तथाएवंभूतते भिन्नगोचरपर्यायने भिन्नमाने जेचेष्टाकरतोहोय तेनेघटकहे पण खूंणेपड्योघटकहेनही चित्रामकरतोहोय तथातेजउपयोगेंवर्ततोहोय तेनेचित्रकार कहेपणतेजचित्रकारसुतोहोय अथवाखावाबेठोहोय तेनेचित्रकारनकहे केमकेतेउप-योगेंरहितछे माटेएनयतेशब्द तथाअर्थनेअभेदपणोमानेछे अनेअर्थथीशून्यशब्दते प्रमाणनथी अनेशब्दप्रधान अर्थतेद्रव्यने गौणपणेवर्तता शब्दादिकत्रणनयछे एम.त-त्वार्थटीकामध्येकह्योछे.

एसातनयनेविषे पेहेलोनैगमनयते सामान्यविशेषबेहुनेमानेछे संग्रहनय ते सामान्यनेमानेछे व्यवहारनयविशेषनेमानेछेअने द्रव्यार्थावलंबीछे तथाऋजुसूत्रतोविशेषग्राहकछे एचारतेद्रव्यनयछे अनेपाछला शब्दादिकत्रणनयते पर्यायार्थिक विशेषावलंबी भावनयछे तथाशब्दादिकनयते नामस्थापनाद्रव्य एपेहेलात्रणनिक्षेपाने अवस्तुमानेछे तिन्हसद्दनयाणंअवबू एअनुयोगद्वारसूत्रनुंवचनछे एसातेनयपरस्पर सापेक्षपणे ग्रहेते समकेतिजाणवा अनेजो एनय परस्परविरोधीहोय तोमिथ्यात्वी जाणवा तथाएकेकानयना सोसोभेदथायछे एमसातेनयनामली सातसोभेदथायछे एअधिकार श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथीकह्योछे.

पूर्वपूर्वनयःप्रचुरगोचरःपरास्तुपरिमितविषयाः सन्मात्रगोचरात् संग्राहात्नैगमोभावाभावभूमित्वाद्भूरिविषयः वर्त्तमानविषया ऋजुसूत्राद्यवहारस्त्रिकालविषयत्वात्बहुविषयकालादिभेदेनभिन्नार्थोपदर्शनात् भिन्नाद्दजुसूत्रविपरीतत्वान्महार्थःप्रतिपर्यायमशब्दमर्थभेदमभीप्सितःसमभिरूढाच्छब्दप्रभूतविषयः प्रतिक्रियां भिन्नमर्थंप्रतिजानात्एवंभूतात् समभिरूढः महान्गोचरःनयवाक्यमपिस्वविषयेप्रवर्त्तमानंविधिप्रतिषेधाभ्यांसप्तभंगीमनुव्रजति असंग्राहीनैगमः सत्ताग्राहीसंग्रहः गुणप्रवृत्तिलोकप्रवृत्तिग्राही व्यवहारः कारणपरिणामग्राहीऋजुसूत्रः व्यक्तकार्यग्राहीशब्दःपर्यायांतरभिन्नकार्यग्राही समभिरूढःतत्परिणामनमुख्यकार्यग्राही एवंभूतः इत्याद्यनेकरूपोनयप्रचारः जावंतियावयणप्पहा ॥ तावतियाचेवहूंतिनयवाया ॥ इतिवचनात् उक्तोनयाधिकारः

अर्थ ॥ एप्रकारे पूर्वकेंपूर्वलोजेनैगम नय तेनो विस्तारघणोजाणवो अनेतेथी ऊपरलोनयतेनो परिमितविषयछे एटले थोडोविषयछे केमकेसत्तामात्रनुंग्राहकसंग्रहनयछे छतिसत्ताने संग्रहनयग्रहे अनेनैगमते छताभाव अथवा संकल्पपणे अछता भाव सर्वनेग्रहे अथवासामान्यविशेष बेधर्मनेग्रहे तेमाटेनैगमनोविषयघणोछे. तथा संग्रहनयते सत्तागत सामान्यविशेष बेहुनेग्रहेछे अनेव्यवहारते सत्एकविशेषनेज ग्रहेछे माटेसंग्रहनयथी व्यवहारनयनो विषयथोडोछे अने व्यवहारनयथी संग्रहनय ते बहुविषयीछे

तथाऋजुसूत्रनय ते वर्त्तमानविशेषधर्मनो ग्राहकछे अनेव्यवहारथी ऋजुसूत्रनयते काल-विषयनोग्राहकछे तेमाटेव्यवहार बहुविषयीछे अने व्यवहारथी ऋजुसूत्रअल्पविषयीछे ऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानकालग्रहे अनेशब्दनयकालादि वचनलिंगथी वेहेंचताअर्थनेग्रहे अने ऋजुसूत्रनयतेवचनलिंगने भिन्नपाडतोनथी तेमाटे ऋजुसूत्रथी शब्दनयअल्पवि-षयीछे ऋजुसूत्रबहुविषयीछे अनेशब्दनय सर्वपर्यायनो एकपर्यायनेग्रहताग्रहे अनेस-मभिरूढतेजेधर्मव्यक्त तेवाचकपर्यायनेग्रहे तेमाटे शब्दनयथी समभिरूढनय ते अ-ल्पविषयीछे केमके समभिरूढते पर्यायनोसर्वकालगवेष्योछे अने एवंभूतनयते प्रति-समयें क्रियाभेदें भिन्नार्थपणो मानतोअल्पविषयीछे तेमाटे एवंभूतथी समभिरूढब-हुविषयीजाणवो अने एवंभूत अल्पविषयी जाणवो.

जेनयवचनछे तेपोतानानयने स्वरूपेंअस्तिछे अनेपरनयनास्वरूपनी तेमांनास्तिछे ए-मसर्वेनयनी विधिप्रतिषेधेंकरीने सप्तभंगीऊपजे पणनयनीजेसप्तभंगी ते विकलादेशी जहोय अनेजेसकलादेशीसप्तभंगी तेप्रमाणछेपणनयनीसप्तभंगीनऊपजे.

उक्तंच रत्नाकरावतारिकायां विकलादेशस्वभावाहिनयसप्तभंगीवस्त्वंशमात्रप्ररूप-कत्वात् सकलादेशस्वभावनुंप्रमाणसप्तभंगी संपूर्णवस्तुस्वरूपप्ररूपकत्वात्एवचनछे एट-लेयथायोग्यपणेनयनोअधिकार कह्यो.

सकलनयग्राहकंप्रमाणं प्रमाताआत्माप्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धः चैतन्यस्वरूपः परिणामीकर्त्तासाक्षात्भोक्तास्वदेहपरिमाणः प्रतिक्षेत्रभिन्नत्वेनैवपंचकारणसामग्रीतः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रसाधनात्साधयतेसिद्धिः स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं तद्द्विविधप्रत्यक्षपरोक्षभेदात्स्पष्टंप्रत्यक्षापरोक्षमन्यत् अथवाआत्मोपयोगताइंद्रियद्वाराप्रवर्त्तनेनयत्ज्ञानंतत्प्रत्यक्षं अवधिमनपर्यायौ देशप्रत्यक्षौ केवलज्ञानंतुसकलप्रत्यक्षंमतिश्रुतेपरोक्षे तच्चतुर्विधं अनुमानोपमानागमार्थापत्तिभेदात् लिंगपरामर्शोनुमानं लिंगंचाविनाभूतवस्तुकंनियतंज्ञेयंयथागिरिगुहिरादौव्योमावलंबिधूमलेखांदृष्ट्वाअनुमानंकरोति पर्वतोवन्हिमान्धूमवत्वात् यत्रधूमस्तत्राग्निः यथामहानसं एवंपंचावयवशुद्धं अनुमानं यथार्थज्ञानकारणं सदृश।वलंबनेनाज्ञातवस्तुनांयत्ज्ञानंउपमान

ज्ञानं यथागोस्तथागवयः गोसादृश्येनअदृष्टगवयाकारज्ञानं उपमानज्ञानं यथार्थोपदेष्टापुरुषआप्तः सदउत्कृष्टतोवीतरागः सर्वज्ञएव आप्तोक्तंवाक्यंआगमः रागद्वेषाज्ञानाद्यादि दोषर हितत्वात् अर्हतः वाक्यआगमः तदनुयायिपूर्वापरविरुद्धंमि थ्यात्वासंयमकषायभ्रांतिरहितं स्याद्वादोपेतंवाक्यं अन्येषांशि ष्टानामपिवाक्यंआगमः लिंगग्रहणादृज्ञेयज्ञानोपकारकंअर्थाप त्तिप्रमाणं यथापीनोदेवदत्तोदिवानभुंक्ते तदाअर्थाद्रात्रौभुंक्तेएव इत्यादिप्रमाणपरिपाटीगृहीतजीवाजीवस्वरूपःसम्यक्ज्ञानीउच्यते

अर्थ ॥ हवेप्रमाणनुं स्वरूपकहेछे सर्वेनयना स्वरूपने ग्रहणकरनारो तथा सर्वध र्मनो जाणंगपणोछेजेमां एहवुंजेज्ञानतेने प्रमाणकहियें जेप्रमाणतेमापवानुंनामछे त्र ण जगतनासर्वप्रमेयने मापवानुंप्रमाण तेज्ञानछे अनेतेप्रमाणनो कर्त्ताआत्मातेप्रमाता छे तेप्रत्यक्षादिप्रमाणे सिद्ध के०ठहेरयोछे चैतन्यस्वरूपपरिणामीछे वलीभवनधर्मेथी उ त्पादव्ययपणे परिणमेछे तेमाटेपरिणामिकछेतथाकर्त्ताछे तथाभोक्ताछे जेकर्त्ताहोय ते- जभोक्ताहोय भोक्तापणाविना सुखमयीकहेवायनही तेचैतन्यसंसारीपणेस्वदेहपरिमा णछे प्रतिक्षेत्रके०प्रत्येकें शरीरभिन्नपणामाटे भिन्नजीवछे तेजीवपांचकारणनी सामग्री पामीने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्रनेसाधवाथी संपूर्णअविनाशी निर्मल निःकलंकअसहाय अप्रयास स्वगुणनिरावरण स्वकार्यप्रवृत्तिअक्षर अव्याबाधसुखमयी एवीसिद्धता निःपन्नतानीपजे एजसाधनमार्गेछे.

स्वशब्देंकरीआत्मा परशब्देंपरद्रव्य स्वआत्माथीभिन्न अनंतापरजीवधर्मादिक ते- नाव्यवसायीव्यवछेदकजेज्ञान तेनेप्रमाणकहियें तेनामूलभेदबेछे एकप्रत्यक्ष बीजो प- रोक्ष तिहांस्पष्टज्ञानते प्रत्यक्षकहियें तेथीइतरके०बीजोजे अस्पष्टज्ञानते परोक्षकहियें अथवा आत्माना उपयोगथी इंद्रियनीप्रवृत्तिविना जे ज्ञान ते प्रत्यक्षकहियें तेना बे भे- दछे एकदेशप्रत्यक्ष बीजोसर्वप्रत्यक्ष तेमांअवधिज्ञान तथामनपर्यवज्ञान ते देश प्रत्य- क्ष छे केमके अवधिज्ञान एकपुद्गलपरमाणुने द्रव्यैंतथाक्षेत्रें अने कालें तथाभावें के- टलाकपर्यायनेदेखे तथामनपर्यवज्ञानी मनभापर्यायने प्रत्यक्षजाणे पण बीजाद्रव्यने न जाणे माटेबेहुज्ञानने देशप्रत्यक्षकहियें कारणके देशथीवस्तुनेजाणे पण सर्वथीनजा- णेमाटे अने केवलज्ञान ते जीवतथाअजीवरूपीतथाअरूपीसर्वलोकालोकना त्रणका- लना सर्वभावने प्रत्यक्षपणेजाणे माटे सर्वप्रत्यक्षकहियें.

तथामतिज्ञान अनेश्रुतज्ञान एबेअस्पष्टज्ञानछे माटेपरोक्षछे तेपरोक्षप्रमाणना चारभेदछे १ अनुमानप्रमाण २ उपमानप्रमाण ३ आगमप्रमाण ४ अर्थापत्तिप्रमाणतिहांचिन्हेकरीने जेपदार्थनेउलखवुं तेनेलिंगकहियें तेपरामर्शके०संभालवाथी जेज्ञान थाय तेनेअनुमानज्ञानकहियें लिंगते जेविना तेवस्तुहोयजनही ते तेवस्तुनुंलिंगजाणवुं तेलिंगनेदेखवाथी वस्तुनोनिर्धारकरवो तेअनुमानप्रमाणजाणवो.

जेमगिरिगुहिरनेविषे आकाशावलंबी धूमनीरेषादेखीने अनुमानकरेजेएपर्वत अग्निसहितछे ए पक्ष तथासाध्यकह्यो जेपक्षतेपर्वत अनेसाध्यते अग्निवंतपणो साधवो ते हेतु जेधूम्रवंतपणामाटे एटलेजिहांधूम्रहोय तिहांअग्निअवश्यहोयज आकाशने पोहोंचती जेधूम्ररेषाते अग्निविनाहोयनही तिहांदृष्टांतकहेछे.

जेममाहानसके०रसोइआए तेरसोडानेविषे धूम्रतथाअग्निनेभेलादीठा तेमाटेइहां आअमुकपर्वतनेविषेधूम्रछे तोतिहांनिश्चेथीअग्निछेज एहवीव्याप्ति निर्धारीनेज्ञानकरवो तेपंचावयवें शुद्धअनुमानप्रमाणकहियें तेअनुमानप्रमाण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञाननुं कारणछे तेअनुमानेजे यथार्थज्ञानथाय तेनेमानके०प्रमाणकहियें अने जे अयथार्थज्ञान थाय ते प्रमाण नही.

तथासरिखावलंबीपणे अजाणीवस्तुनो जेजाणपणोथाय जेम गो के० बलद तेम गवय के० गवो ए गो सरिखो गवयनुंज्ञानथयुं तेउपमानप्रमाणकहियें.

यथार्थभावनो उपदेशकजेपुरुष तेआप्तकहियें तेउत्कृष्टआप्त वीतरागरागद्वेषरहितसर्वज्ञकेवलज्ञानीते आप्तनोकह्योजेवचन तेनेआगमकहियें जेराग द्वेषतथाअज्ञान एदोषेआगोपाछो अधिकोओछो बोलायछे तेआगमनही अने राग द्वेष त्रय अज्ञान रहितजे अरिहंत तेनुं वचन ते आगमप्रमाणजाणवो.

तथावलीते अरिहंतनावचनने अनुजायी पूर्वापरअविरोधि मिथ्यात्व असंयम कषायथीरहित तेभ्रांतिविनास्याद्वादेंयुक्त तथा जे साधकते साधक बाधक ते बाधक हेय ते हेय उपादेय ते उपादेय इत्यादिकवहेंचणसहित जेहोय तेनोकह्योते आगम प्रमाणजाणवो उक्तंच सुत्तंगणहररइयं तहेवपत्तयबुधरइयंच ॥ सुअकेवलीनारहियं अभिन्नदशपुविणारइयं ॥ १ ॥ इत्यादिकसद्उपयोगी नवभीरु जगतजीवोना उपकारी एवाश्रुतआम्नायधर जेश्रुतनेअनुसारेंकहे तेनोवचनपण प्रमाणमानवुं.

तथाकोइक फलरूपलिंगेकरीने जेअजाण्यापदार्थनो निर्धारकरियें तेअर्थापत्तिप्रमाणकहियें जेमदेवदत्तनो पीन के०पुष्टशरीरछे पण ते देवदत्त दिवसनोजमतोनथीतेवारेंअर्थापत्तिथीजाणीयें जेरात्रेंजमतोहशे माटेपुष्टशरीरछे एमअर्थापत्तिप्रमाणजाणवो एप्रमाणतेजाते अनुमाननोअंशछे तेमाटे श्रीअनुयोगद्वारमां प्रथमकह्योनथी.

इहांदर्शनांतरी जे प्रमाणमानेछे पणतेसत्यनथी जेमछप्रकारनाइंद्रियसन्निकर्षथी ऊपनो जेज्ञान तेनेनैयायिक प्रत्यक्षप्रमाणकहेछे अने परब्रह्मनेइंद्रियरहितमानेछेज्ञानानंदमयीमानेछे तेवारें इंद्रियरहितज्ञानते अप्रमाणथायछे इत्यादिकअनेकयुक्तिछे तेमाटेतेप्रमाणनही' तथाचार्वाकमतवाला मात्र एकइंद्रियप्रत्यक्षनेज प्रमाणमानेछे एमदर्शनांतरीना अनेकविकल्पटालीने सर्वनयनिक्षेप सप्तभंगी स्याद्वादयुक्त जेवस्तु जीव तथाअजीवनो जे सम्यक्ज्ञान तेने सम्यक्ज्ञानीकहियें एज्ञाननुंस्वरूपकह्युंः

तत्वार्थश्रद्धानंसम्यग्दर्शनं यथार्थहेयोपादेयपरीक्षायुक्तज्ञानेनसम्यग्ज्ञानंस्वरूपरमणपरपरित्यागरूपंचारित्रंएतद्रत्नत्रयीरूपमोक्षमार्गसाधनात्साध्यसिद्धिः इत्यनेनात्मनः स्वीयंस्वरूपंसम्यक्ज्ञानंज्ञानप्रकर्षएवात्मलाभः ज्ञानदर्शनोपयोगलक्षणएवात्मा छद्मस्थानांचप्रथमंदर्शनोपयोगः केवलीनांप्रथमज्ञानोपयोगः पश्चाद्दर्शनोपयोगसहकारीकर्तृत्वप्रयोगात् उपयोगसहकारेणैवशेषगुणानां प्रवृत्त्यभ्युपगमात् इत्येवंस्वतत्वज्ञानकरणेस्वरूपोपादनं तथास्वरूपरमणाध्यानैकत्वेनैवसिद्धिः

अर्थ ॥ हवे श्रीवीतरागना आगमथी जाण्यो जे वस्तुस्वरूप तेने हेयोपादेयपणे निर्धारकरवो तेसम्यक्दर्शनकहियें तिहांतत्वार्थनेविषेकह्योछे के जे तत्वार्थश्रद्धान सम्यक्दर्शन उक्तंच उत्तराध्ययने जीवाजीवायबंधो ॥ अपुन्नंपावसवोतहा ॥ संवरो निज्जरामुक्खो ॥ संतिएतिहियानव ॥ १ ॥ तिहियाणंतुभावाणं सदभावेउवएसण ॥ भावेणसद्दहंतस्स ॥ समत्तंतिवियाहियं ॥२॥ इत्यादिकदशरुचीथी सर्वजाणवुं जे तत्वार्थ जीवादिपदार्थनो श्रद्धाननिर्धार ते सम्यक्दर्शनकहियें अनेजेसम्यक्दर्शनते धर्मनुंमूलछे तथाजेहेयतेतजवायोग्य अने उपादेयते ग्रहणकरवायोग्य एहवी परिक्षासहित जेजाणपणो तेसम्यक्ज्ञानछे जेमांहेयोपयोग संकोच अकरणबुद्धीनथी पणउपादेयने उपयोगें एहवीचिंतवणाथायजेहवे किवारेकरुं एविनाकेमचाले एहवी जोबुद्धीनथी तो तेसंवेदनज्ञानछे तेथीसंवरकार्यथाय एवोनिर्धारनथी.

तथास्वरूपरमण परभावरागद्वेष विभावादिकनोत्याग तेचारित्रकहियें एरत्नत्रयीरूप परिणामते मोक्षमार्गछे एमार्गनेसाधवाथी साध्य जे परमअव्याबाधपद तेनी सिद्धिनिष्पत्तिथाय. जेआत्मानोपोतानुंरूप तेयथार्थज्ञानछे तथा चेतनालक्षण तेज जीवपणोछे अने ज्ञाननोप्रकर्ष बहुलपणोते आत्मानेलाभछे ज्ञानतथादर्शननो उपयोगल-

क्षणआत्माछे तिहांछद्मस्थने प्रथमदर्शनोपयोग पछेज्ञानोपयोगछे अनेकेवलीने प्रथम ज्ञानोपयोग पछे दर्शनोपयोगछे जेसर्वे जीवनवोगुणपामेतेनो केवलीनेज्ञानोपयोग तेकालेंथाय तेमाटे प्रथमज्ञानोपयोगवर्त्ते.

अनेसहकारीजेकर्तृताशक्ति तेजेमहतोतेमजछे एकगुणनेसाह्यकरे अनेबीजागुणनो उपयोगसहकारेंवर्त्तेछे सहकारतेज्ञानोपयोग विशेषधर्मनेजाणे तेजाणतांविशेषते सामान्यनेआधारेंवर्त्तेछे तेसहितजाणेएटले विशेषतेभेला सामान्यग्रहवाणा अनेसामान्यग्रहतां सामान्यतेविशेषता जनकहेता सहितजाणेतेमाटेसर्वज्ञसर्वदर्शीपणोजाणवोएरीतेस्वतत्वनुंज्ञानकरवुं तेथीस्वधर्मनो उपादानके०लेवापणुंथाय पछे स्वरूपनेपामवे स्वरूपमांरमणथाय तेरमणथकीध्याननी एकत्वताथाय एटलेनिश्चेंज्ञान निश्चेंचारित्र तथा निश्चेंतपपणो थाय जेथकी सिद्धिके०मोक्ष निपजे एसिद्धांत जाणवो.

तत्रप्रथमतः ग्रंथिभेदंकृत्वाशुद्धश्रद्धानज्ञानीद्वादशकषायोपशमः स्वरूपैकत्वध्यानपरिणतेनक्षपकश्रेणीपरिपाटीकृतघातिकर्मक्षयः अवाप्तकेवलज्ञानदर्शनः योगनिरोधात् अयोगीभावमापन्नः अघातिकर्मक्षयानंतरंसमयएवास्पर्शवक्रत्याएकांतिकात्यंतकानांवाधनिरूपाधिनिधिरूपं चरित्रानयाशाविनाशिसंपूर्णात्मशक्तिप्राग्भावलक्षणंसुखमनुभवन् सिध्यति साद्यनंतंकालंतिष्ठतेपरमात्माइति एततकार्यं सर्वभव्यानां

अर्थ ॥ तेप्रथमग्रंथिभेदकरीने शुद्धश्रद्धावान तथाशुद्धज्ञानीजेजीव ते प्रथमत्रण चोकडीनो क्षयोपशमकरीने पाम्योजेचारित्र तेध्यानेंएकत्वथयीने क्षपकश्रेणीमांडी अनुक्रमेंघातिकर्म क्षयकरीने केवलदर्शनपामे पछेएसयोगीगुणें जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अनेउत्कृष्टो आठवरशउणापूर्वकोडीरहीने कोइककेवलीसमुद्घात करे कोइककेवलीसमुद्घातनकरे पणआवर्जिकरण सर्वेकेवलीकरे ते आवर्जिकरणनुंस्वरूपकहेछे इहां आत्मप्रदेशे रह्याजेकर्मदल तेपेहेलाचलेछे पछेउदीरणाथायछे पछेभोगवीनिर्जरेछे तिहांकेवलीने जिवारेतेरमेंगुणठाणे अल्पायुरहे तिवारेंआवर्जिकरणकरेछे तेआत्मप्रदेशगतकर्मदलने प्रतिसमयें असंख्यातगुणनिर्जराकरवीछे तेटलादलने आत्मवीर्येंकरीने सर्वेचलायमानकरीमूके एवुंजेवीर्यनुंप्रवर्तन तेआवर्जिकरणकहियें एमकरतां त्रणकर्म्मदलवधतांरह्यातो समुद्घातकरे नहीका नकरे तेमाटे आवर्जिकरण सर्वेकेवलीकरे पछे तेरमागुणठाणानेअंते योगनोरोधकरीने अयोगी अशरीरी अणाहारीअप्रकंप घनीकृ-

तथात्मप्रदेशीथको पांचलघुअक्षरजेटलोकाल अयोगीगुणठाणेरहिने शेषसत्तागत प्रकृतिविद्यमान तथाअविद्यमान स्तिबुकसंक्रमें सत्ताथीखपावी सकलपुद्गलसंगपणाथी रहितथयी तेहिजसमयें आकाश प्रदेशनी बीजीश्रेणीने अणफरसतोथको लोकांतेसिद्धकृतकृत्य संपूर्णगुणप्रागृभावी पूर्णपरमात्मा परमानंदी अनंतकेवलज्ञानमयी अनंतदर्शनमयी अरूपीसिद्धथाय उक्तंच उत्तराध्ययने कहिपडिहयासिद्धा ॥ कहिसिद्धापयठिया ॥ कहिबोहिचइत्ताणं ॥ कत्थंगंतुणसिज्झई अलोएपडिहयसिद्धा लोयग्गम्मिपयठिया ॥ इहबोंदिंचइत्ताणं तत्थगंतूण सिज्झइ ॥ इत्यादि तेसिद्ध एकांतिक आत्यंतिक अनाबाध निरुपाधि निरुपचरित अनायास अविनाशी संपूर्ण आत्मशक्तिप्रगटरूपसुखप्रते अनुभवे अव्याबाधसुखते प्रदेशेंप्रदेशें अनंतोछे उक्तंच उववाइसूत्रे सिद्धस्ससुहोराशि ॥सव्वद्धापंडियंजइवज्जा ॥ सोणंतवग्गोभइयो ॥ सव्वागासेनमाइज्जा॥१॥ इतिवचनात् एरीतेपरमानंदसुख भोगवतारहेछे सादिअनंतकालपर्यंत परमात्मापणेरहेछे तोएहिजकार्य सर्वभव्यने करवो तेकार्यनोपुष्टकारण श्रुताभ्यासछे तेश्रुतअभ्यासकरवा माटे एद्रव्यानुयोग नयस्वरूप लेशथीकह्यो तेजाणपणो जेगुरुनीपरंपराथी हुंपाम्यो ते गुर्वादिकनी परंपरानेसंभारुंछुं.

काव्य

गच्छेश्रीकोटिकाख्येविशेदखरतरेज्ञानपात्रामदांतःसूरिश्रीजैनचं
द्रा शु[illegible]शिष्यमुख्याविनीताः ॥ श्रीमत्पुण्यात्प्र
धानाः सुमतिजलनिधिपाठकाः साधुरंगाः ॥ तच्छिष्याःपाठकेंद्राः
श्रुतरसरसिकाराजसारामुनींद्राः ॥ १ ॥

तच्चरणांबुजसेवालीनाः श्रीज्ञानधर्मधराः ॥ तत्शिष्यपाठकोत्तम दीपचंद्राःश्रुतरसज्ञाः ॥ २ ॥ नयचक्रलेशमेतत्तेषांशिष्येणदेवचंद्रेण ॥ स्वपरावबोधनार्थं कृतंसदभ्यासवृध्यर्थं ॥ ३ ॥ शोधयंतुसुधियःकृपापराः शुद्धतत्वरसिकाश्चपठंतु ॥ साधनेनकृतसिद्धिसत्सुखाः परममंगलभावमश्नुते ॥ ४ ॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तम् ॥

दोहा

सूक्ष्मबोधविणुभविकने ॥ नहोयेतत्वप्रतीत ॥ तत्वालंबनज्ञानविण ॥ नटलेभवभ्रमभीत ॥ १ ॥ तत्वतेआत्मस्वरूपछे ॥ शुद्धधर्मपणतेह ॥ परभावानुगचेतना ॥ कर्मगेहछेएह ॥ २ ॥ तजीपरपरिणतिरमणता ॥ भजनिजभावविशुद्ध ॥ आत्मभावथीएकता परमानंदप्रसिद्ध ॥ ३॥ स्याद्वादगुणपरिणमन ॥ रमतासमतासंग ॥ साधेशुद्धानंदता॥

निर्विकल्परसरंग ॥ ४ ॥ मोक्षसाधनतणुमूलते ॥ सम्यक्दर्शनज्ञान ॥ वस्तुधर्मअवबोधविणु ॥ तुसखंमणसमान ॥ ५ ॥ आत्मबोधविणुजेक्रिया ॥ तेतो बालकचाल ॥ तत्वार्थनीवृत्तिमें ॥ लेजोवचनसंज्ञाल ॥६॥ रत्नत्रयीविणुसाधना ॥ निःफलकहीसदीव॥ लोकविजयअध्ययनमें ॥ धरोउत्तमजीव ॥ ७ ॥ इंद्रिविषयआसंसना ॥ करताजेमुनिलिंग ॥ खूतातेजवपंकमें ॥ जाखेआचारंग ॥ ८ ॥ इमजाणीनाणीगुणी ॥ नकरेपुद्गलआस ॥ शुद्धात्मगुणमेंरमे ॥ तेपामेसिद्धिविलास ॥ ए ॥ सत्यारथनयज्ञानविनुं ॥ नहोयेसम्यक्ज्ञान ॥ सत्यज्ञानविणुदेशना ॥ नकहेश्रीजिन जाण ॥ १० ॥ स्यादवादवादीगुरु ॥ तसुरसरसियाशीस ॥ योगमिलेतोनीपजे ॥ पूरणसिद्धजगीस ॥ ११ ॥ वक्ताश्रोतायोगथी ॥ श्रुतअनुजवरसपीन ॥ ध्यानध्येयनी एकता ॥ करताशिवसुखलीन ॥ १२ ॥ इमजाणी शासनरुची ॥ करजोश्रुतअज्यास ॥ पामीचारित्रसंपदा ॥ लेहेसोलीलविलास ॥ १३ ॥ दीपचंद्रगुरुराजने ॥ सुपसायेंउल्लास ॥ देवचंद्रजवीहितजणी ॥ कीधोग्रंथप्रकाश ॥ १४॥ सुणसेजणसेजेजविक ॥ एहग्रंथमनरंग ॥ ज्ञानक्रियाअज्यासतां॥लहेसे तत्वतरंग ॥१५॥ द्वादशसारनयचक्रछे॥ मल्लवादिकृतवृद्ध॥सततशतिनयवाचना ॥ कीधीतिहांप्रसिद्ध ॥ १६ ॥ अल्पमतिनाचित्तमें ॥ नावेतेविस्तार ॥ मुख्यथूलनयजेदनो ॥ जाख्योअल्पविचार ॥ १७ ॥ खरतरमुनिपतिगच्छपति ॥ श्रीजिनचंद्रसूरिस ॥ तासशीसपाठकप्रवर ॥ पुन्य प्रधानमुनीस ॥ १८ ॥ तसुविनयीपाठकप्रवर ॥ सुमतिसागरसुसहाय ॥ साधुरंगगुणरत्ननिधि ॥ राजसारउवज्झाय ॥१ए॥ पाठकज्ञानधर्मगुणी ॥ पाठकश्रीदीपचंद॥ ताससीसदेवचंदकृत ॥ जणतांपरमानंद॥२०॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तं ॥

॥ इतिश्रीपंमित देवचंदजीकृत नयचक्रसार

बालावबोधसहितः संपूर्णः ॥

॥ श्रीगौतमगुरुभ्योनमः ॥

## ॥ श्रीआनंदघनकृत चतुर्विंशति जिनस्तवन बालावबोध सहित ॥

### दोहा

चिदानंद आनंदमय, चिद्रूपिअविकार ॥ सिद्धबुद्धसुविशुद्धतुं, तुंजग परमाधार ॥ १ ॥ तुजकृपालताथीकरूं, भाषाभाषारूप ॥ तवनाजिनबा वीसनी, आनंदघनरसकूप ॥ २ ॥ राजरीद्धि जेम देखीने, डमक करे मनआश ॥ बुद्धि रीद्धिविण हुं डमक, अरथराजरीद्धिरास ॥ ३ ॥ आ शय आनंदघनतणो, अतिगंभीर उदार ॥ बालक बाहु पसारिजिम, कहे ऊदधि विस्तार ॥ ४ ॥ तेममनोरथमुजमने, बुद्धिविण किमथाय ॥ गुरू कृपाथी गहननग, पंगु पार लंघाय ॥५॥ शीभाषाभाषातणी, को एवुं कहिदेय ॥ पीस्यानुं शुं पीसवुं, पीस्येगाणनलेय ॥ ६ ॥

### ॥ अथ श्री ऋषभ जिनस्तवन ॥

॥ रागमारू ॥ करमपरिक्षा करण कुमर चल्योरे ॥ ए देशी ॥

ऋषभ जिनेश्वर प्रितममाहरोरे॥ ओर न चाहुंरे कंत॥
रीझ्यो साहेब संग न परिहरेरे ॥ भांगेसादिअनंत ॥ ऋषभ० ॥१॥

अर्थ ॥ शुद्धचेतना श्रद्धासखीने पोताना घरनुं वृत्तांत कहेछे. हे सखि ! मारा स्वामिनुं वृत्तांत सांभल; मारा स्वामिनुं वृत्तांत सांभलवाथी, मारा घरनुं सर्व वृत्तांत, तुं पोतानीमेले समजी जईश. जे स्त्रीने पति कथनमां होय तेने बीजातो कथनमां होयज. मारो प्रितम के० भर्तार ऋषभ जिनेश्वर के०प्रथम तीर्थंकर, रागद्वेष रहित छे; एवो भर्तार पामवाथी हुं रागद्वेषयुक्त परिणतिवाला बीजा देवोनी कंत के० भर्तार-पणे चाहना करती नथी. मारा भर्तारनो एवो स्वभावछे के, माराविना बीजा कोइथी ते रंजन थतो नथी अर्थात् ज्यारथी ते मारीसाथे रीझयो छे त्यारथी, अत्यारसुधी, ते साहेबके०स्वामिए मारा संगनो त्याग कर्यो नथी अने भविष्यमां त्याग करशे पण नही, कारणके अभेदस्वरुपे संग थयो छे. मारा स्वामिना संगनो सिद्धांतमां सादि अनंत भांगो वर्णवेलो छे. शुद्ध स्वभाव प्रगट्यो त्यारथी सादि अने ते स्वभाव त्रि-

कालें अक्षय, माटे अनंत, अथवा वीतरागपणे प्रतीत कर्यो ते सादि अने ते स्वज्ञाव स्वरूपताज्ञावि तन्मयिज्ञाव आचरणहेतुरूपे थयो ते अनंत. ए प्रमाणे मारो ज्ञर्त्तार मने तजवानो नथी. ॥ १ ॥

प्रीत सगाईरे जगमां सहु करे रे ॥ प्रीत सगाई न कोय ॥
प्रीतसगाईरे निरूपाधिक कहीरे॥ सोपाधिक धन खोय॥ऋषज्ञ०॥२॥

अर्थ ॥ प्रीति बे प्रकारनी छे. लोकोत्तरप्रीति अने लौकिकप्रीति. जगतमां सर्व मनुष्यो प्रीति वधारवामाटे पुत्रपुत्रीनो सगपणसंबंध अन्योअन्यवच्चे करेछे, परंतु ते प्रीतिनी रीतितरफ विचारकरतां मने ज्ञासे छे के, हे श्रद्धा, मारा ज्ञर्त्तारनी प्रीति एवा सगपण संबंधवाळी नथी. मारा ज्ञर्त्तारनी प्रीतिमां स्वज्ञावनो मेलाप होवाथी, ते निरुपाधिक प्रीति छे अने सिद्धांतमां पण प्रीतिनी रीतिने उपाधिरहित वर्णवेली छे, तेथी हे श्रद्धा! जेविज्ञावीहोय अने स्वज्ञावि ऋषज्ञपरमात्मासाथे उपाधियुक्त प्रीतिकरवा वांछतो होय ते ऋषज्ञजिननी प्रीतिरूप स्वज्ञावनी प्राप्तिसंबंधी परमधनने खोवेछे अर्थात् आत्मगुणनो नाश करेछे ॥ २ ॥

कोइ कंत कारण काष्ट ज्ञक्षण करेरे ॥ मलशुं कंतने धाय ॥
ए मेलो कहिंये नवि संज्ञवेरे॥ मेलो ठाम न ठाय ॥ ऋषज्ञ० ॥३॥

अर्थ ॥ वळी सोपाधिक प्रीतिनुं दृष्टांत आपी, निरुपाधिक प्रीति दृढ करेछे. हे श्रद्धा! कोइ स्त्री पतिना मरण पछी पतिने मलवावास्ते काष्टज्ञक्षण के० सति थायछे. वळी केटलाएक मतवादी, निरंजन परमात्माने मलवासारू पंचाग्नि तपेछे, जंपापात करेछे, धरतीमां समाध करेछे, एम धारीने के, दोडीने कंतने मळीए; परंतु एवां कष्टो करवाथी, निरंजन परमात्मानी साथे मेलाप थवो ते त्रणे काळमां संज्ञवतो नथी. वळी अमुक गतिमां तुं जाजे अने हुं पण अग्निमां ज्ञस्मथइ तेज स्थानके आवीश एम मेलोठामनठायके० निश्चये कदापि तेज स्थान प्राप्त थतुंज नथी. वळी तेनी जेम पंचाग्नि प्रमुखथी मरण थाय ते पण बालमरणछे तेथी तेवा मरणथी सिद्धस्थानक प्राप्त थाय नहि. ॥३॥

कोइ पतिरंजन अतिघणो तप करेरे ॥ पतिरंजन तनताप ॥
ते पतिरंजन में नविचित्त धर्युंरे॥ रंजन धातु मेलाप ॥ रीषज्ञ० ॥४॥

अर्थ ॥ वळी हे श्रद्धा! मारा पतिने मलवावास्ते, कोइ क्रियारुचि जीव मारा पतिने रंजनके०राजी करवावास्ते अत्यंत तप करे छे, तेवी एकांत तपस्याथी मारो पति राजी थतो नथी, तेवी तपस्याथीतो मात्र शरीर सूकायछे. तेथी मात्र तपस्यारूप बाह्यकरणीए मारा पतिने राजी करवा एवुं में माराचित्तमां ठराव्युं नहि, कारणके मारा पतिने

रंजन करवानी रीत धातुना मेलाप जेवीछे अर्थात् तेवी प्रकृतिवालो थइ तन्मय थाय त्यारे ते राजी थाय॥ ४ ॥

कोइ कहे लीलारे ललख अलखतणीरे ॥ लख पूरे मनआश॥
दोषरहितने लीला नवि घटेरे ॥ लीलादोषविलास ॥ऋषभ०॥५॥

अर्थ ॥ वली कोइ जगत्कर्त्ता ईश्वरवादी एम कहेछे के अलखके०परमेश्वरनी लीला ललखके०जाणीशकाय तेवी नथी.ते परमेश्वरे पोतानी शक्तिथी लीलानी परमकारणभूत माया रची. तेनुंज नाम सर्वजगतनुं घटनविघटनरूप लीलानुं लखवुं, समजवुं. तेज परमेश्वर जगतना जीवोनी लाखोगमे आशा पूरेछे. हे श्रद्धा! आवुं कथन न्याययुक्त नथी, कारणके रागादिदोष सहित होय ते अलख कहेवाय नही अने परमेश्वरने अलख कही ते लीला करेछे एम कहेवुं ते वाजबी नथी, कारणके लीला ते मात्र दोषनो विलास के०तरंग छे, तेथी रागद्वेषविना लीलानो विलास न होय. ॥५॥

चित्तप्रसन्नेरे पूजन फल कह्युंरे ॥पूजा अखंडित एह॥
कपट रहित थइ आतम अरपणारे ॥ आनंदघन पदरेह ॥ ऋषभ० ॥६॥

अर्थ ॥ तेथी हे श्रद्धा ! तप, संयम, नियम, व्रतपालन ए तारी लीला छे, वा, तप संयमादिक विनापण तुं लाखोना मननी आशानो पूरणहार छो एवां खुशामतनां वचनो ते परमेश्वरनुं पूजन नथी; परंतु चित्तनी प्रसन्नता के० आल्हादपणुं तेज पूजननी सफलता छे. अखंड तंडुल, धूप, दीप, नैवेद्य, केशर, बरास, पुष्प विगेरे सर्व सामग्री संपूर्ण होय छतांपि चित्तनी प्रसन्नता के०शुभभावनो अभाव होय तो ते अखंड पूजा नही. शुभ भाव तेज अखंड पूजा छे. माटे हे सखि! जे प्राणी आनंदघन पद के०मुक्तिपद पामवानी अभिलाषा राखतो होय ते मारा ऋषभ भर्त्तारसाथे कपटरहित के०वहिरात्मपणानो त्याग करी अंतरात्मवंत थइ स्थिर स्वभावे परमात्म स्वरूपने पोताना आत्मामां चिंतवे. ए प्रमाणे जे प्राणी ऋषभ परमात्माने आत्मानुं अर्पण करे ते आनंद के०ज्ञानानंदनुं पद जे मुक्तिपद तेनी रेह के०रेखा अर्थात् मेलाप प्राप्त करे. ते सिद्ध थाय. ॥ ५ ॥ इति ऋषभजिनस्तवन.

## ॥ अथ श्रीअजितजिनस्तवन ॥

॥ राग आशावरी ॥ मारुं मन मोह्युंरे श्रीविमलाचलेरे ॥ ए देशी ॥

पंथडो निहाळुंरे बीजा जिनतणोरे ॥ अजित अजित गुणधाम ॥
जे तें जित्यारे तेणे हुं जीतियोरे ॥ पुरुष किस्युं मुजनाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन सुमतिने कहेछे. हे सुमति! बीजा अजितनाथनो पंथ के०मार्ग-

प्रवर्त्तना ते हुं यूथभ्रष्ट मृगनी जेम जोउंछुं, अर्थात् जे मार्गे प्रवर्त्तता अजितजिन निर्वाणपद पाम्या ते मार्गनी शोध करुंछुं. ते अजितनाथ, भव्यजीवो विना बीजा प्राणी मात्रथी प्राप्त न थइ शके तेवा अनंतज्ञानदर्शनादि गुणोना धामछे. ते अजितनाथ भगवंतने आनंदघन कहेछे के, हे प्रभु ! राग, द्वेष, मोह प्रमुख जे शत्रुउने तमे जीत्या, ते रागद्वेषादिके मने जीती लीधोछे, तेथी हे परमात्मा ! मारुं नाम पुरुष केम कहेवाय ? धर्मविना धर्मी केम थई शके, !जेम तमे पुरुषत्वधर्मे रागादिने जीत्या तेम हुं जीत्यो होत तो हुं पण पुरुष कहेवात ॥ १ ॥

चर्म नयण करी मारग जोवतोरे ॥ भूल्यो सयल संसार ॥
जेणे नयणे करी मारग जोईएरे ॥ नयण ते दीव्य विचार ॥पंथ०॥२॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर ! चर्मनयण के०बाह्यदृष्टिएकरी तमारो मार्ग, आत्मस्वरूप रूप, वीतराग परिणतिये परिणामेलो, परमात्मधर्मे धर्मित तेने, जोतां समस्त संसार भूलमां भमेछे अर्थात् बौध, नैयायिक, सांख्य, वैशेषिक, वेदांती प्रमुख एकांतवादी, मतममत्वी सर्व तमारा मार्गथी दूर भम्या करेछे. हे भगवंत ! जे नेत्रथी, शुद्ध स्याद्वाद परमामृतमय जैनदर्शन, आत्मस्वरूप साक्षात्कार करवाने असाधारण कारणरूप तमारो मार्ग देखी शकिये, तेतो दीव्य के०ज्ञानरूप चक्षुज विचारके०जाणवी अर्थात् अजितनाथ प्रभुनो मार्ग ज्ञान चक्षुथीज जोवाय ॥ २ ॥

पुरुष परंपर अनुभव जोवतांरे ॥ अंधोअंधपुलाय ॥
वस्तु विचारेरे जो आगमें करीरे ॥ चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ० ॥३॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! पुरुषोनी परंपरा के०श्रेणी– अहिं सुधर्मास्वामि, प्रभवस्वामि इत्यादि संबंधे कथन नथी, परंतु गछोना भेद करनारा, मतममत्वी, परभवनी बीकथी नही करनारा एवा गछ स्थापी परंपरा स्थापनारा पुरुषोने अनुभव के०विचार करी जोतां अंधोअंध पुलाय ए दृष्टांत साक्षात् संभवेछे. जेमके सुयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां कह्युं छे के "अंधोअंध पहंनित्ता पुरमद्धा न गछइ" आंधलो आंधलाने ग्रामांतरे पहोचाडी शके नही, तेम अहिं पण ज्ञान नेत्र अने पुरुष परंपरा जेथी मार्ग पामी शकाय ते बे कारणो विद्यमान नथी अने आगम जे सिद्धांत तेनाथी वस्तु के०तत्वविचारणा करीए छीए तो जे रीते अजितनाथ प्रवर्त्या, ते मार्गमां संपूर्ण प्रवर्त्तवुं तो दूर रह्युं, परंतु चरण के०पग मुकवुं अर्थात् पग मात्र प्रवर्त्तवुं ते पण कठिन छे. ॥ ३ ॥

तर्कविचारेंरे वाद परंपरारे ॥ पार न पहोंचे कोय ॥ अभि
मतें वस्तु वस्तुगतें कहेरे ॥ ते विरलाजगजोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली हे सुमति ! तर्कथी मार्गने विचारुं हुं तो एक तर्करूप कथन तेना उपर बीजुं कथन, एम कथन परंपरा एटले वादपरंपरा चाली आवेछे. तेप्रमाणे विचारतां मारो जन्म विति जाय तोपण पार पामी शकुं नही. हुंतो शुं परंतु महातर्कवादी बीजो कोइपण पार पामे नही; माटे हे सुमति ! अभिमते के०पामवायोग्य जे वस्तुके०पदार्थ ते जैनमार्गी सिद्धांत, तेने विषे गत के०जेम छे, तेमज कहे, परंतु एक अक्षर पण हिनाधिक न कहे, तेवा प्राणी जगतमां विरलाज तुं जोयके०देखीश. श्रीयशोविजय उपाध्यायजी कहेछे के "शुद्ध भाषकनी बलिहारी" ॥ ४ ॥

वस्तुविचारेंरे दीव्य नयन तणोरे ॥ विरह पड्यो निरधार ॥
तरतमजोगेरे तरतम वासनारे ॥ वासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ माटे जेथी वस्तुना यथार्थ स्वरूपनो विचार करीशकुं एवा ज्ञानरूप नेत्रनुं तो रागादिकथी निरधार के०निश्चयपूर्वक विरह के०अंतर पड्युं, अर्थात् मारुं आत्मज्ञानरूप नेत्र फूटी गयुं. वली बीजीरीते वस्तुके०तत्वविचारे विचारीएतो दीव्यनयनके०केवलज्ञानीविना शुद्धमार्ग पामी शकीए नही अने केवलज्ञानीनो निश्चयथी विरह पड्यो; माटे हे सुमति ! शुद्ध कथन करनार केवलज्ञानी प्रमुख मार्ग पामवाना कारणनो तो अभाव थयो अर्थात् निःसंदेह योग प्राप्त नही थवाथी मार्ग पामीए केवीरीते ? तेथी ज्ञाननी तरतमतानो योग प्राप्त थवाथी वासना के०श्रद्धा पण तरतम थइ परंतु संदेह रहित न थइ; तो एवी श्रद्धाए वासितके०सुगंधित बोध ज्ञाननो मारे आधार छे. ॥ ५ ॥

काललब्धि लही पंथ निहालशुंरे ॥ ए आशा अविलंब ॥
ते जन जीवेरे जिनजी जाणजोरे ॥ आनंदघनमतअंब ॥ पंथ० ॥६॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त सर्व वात विचारी सुमति सहित आनंदघन विलखो थइने विनति करेछे. हे प्रभु ! परिपाक काल पामीने अर्थात् चरमावर्त्तन भवस्थितिनो परिपाक एवी कालरूप लब्धि पामीने पंथ के०तमारो मार्ग निहालशुं के०जोइशुं. आ कालमां तमारो मार्ग हाथ आववानो कोइ उपाय नथी तेथी हे परमेश्वर ! काललब्धिरूप आशाके०मननी तेवी स्थिरता तेने अविलंबके०ग्रहण करीने ए जनके०आ पंचम कालना पुरुष जीवेके०जीवता रहेछे अर्थात् निराधार छतां कालक्षेप करेछे. एवी पंचम कालवासी जीवोनी व्यवस्था हे प्रभु ! तमे जाणजो के०ध्यानमां लेजो. हे प्रभु ! तमे

केवा छो ? आनंदके०ज्ञानानंद तेना घन के०समूह अर्थात् केवल ज्ञान आपनार जे शुद्ध स्याद्वाद मत तेना अंब के०आम्रवृक्ष छो. ॥ ६ ॥ इति अजितजिनस्तवन ॥

॥ अथ श्री संभवजिनस्तवन ॥

॥ राग रामगिरि ॥ रातडी रमीने क्यांथी आवीयारे ॥ ए देशी ॥

संभवदेव ते धूर सेवो सवेरे ॥ लही प्रभु सेवन भेद ॥ सेवन
कारण पेहेली भूमिकारे ॥ अभय अद्वेष अखेद ॥ संभव० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत थवाथी निजस्वरूपानुयायी पुष्टालंबन परम कारणरूप त्रीजा संभव परमेश्वरनुं सेवन तेज परमेश्वर पासे मागतां, पोते तेमज सर्वने उपदेश आपतां विनति करतो कहेछे. हे भव्य प्राणीयो ! संभवनाथ प्रभुने धूरके०प्रथम सेवो; कारणके आत्मानुं अनंतकालथी आवरण पामेलुं आत्मस्वरूप, तेनो भास, प्रथम ए परमात्मानी सेवा कर्याविना थायज नही तेमज थशे पण नही अर्थात् जे जे भव्य प्राणीयोए पोताना आत्मस्वरूपने भूतकालमां उलख्युं छे, वर्त्तमानमां उलखेछे अने भविष्यमां उलखशे ते सर्व प्रथमथी प्रभुना स्वरूपनुं सेवन करवानुं फल छे. अहीं अजकुलगत केशरी सिंहनुं दृष्टांत विचारवुं. वली जेम सुवर्ण अने माटी खाणमां अनादि मिश्र छे तेम आत्मा संसारमां अनादिथी कर्म साथे मिश्र छे. ते आत्मा प्रथम संभवदेवथी पोतानुं एकत्व जाणी, जड स्वभावथी पोतानुं स्वरूप भिन्न जाणी, पोते जडथी भिन्न थाय. तेथी अनादि कालथी भूलेला आत्माने स्वरूपनी प्राप्तिनुं असाधारण कारण धूरथीज संभवतुं नथी. माटे हे सुमति ! शुद्ध आत्म प्रवर्तिये परमेश्वरने स्वरूपे सेवननुं रहस्य पामीने, प्रभुसेवनना कारणनी प्रथम भूमिका के० पायो लक्षमां लेवो; तेज सेवनारूप कार्यना कारक छे. तेना त्रण प्रकार छे. १ अभयपणुं २ अद्वेषपणुं ३ अखेदपणुं. मजबुत पाया विना जेम बांधकाम टकी शके नही तेम आ त्रण गुणविना प्रभुसेवनरूप मकान स्थिर थइ शके नही ॥ १ ॥

भयचंचलता होजे परणामनी ॥ द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद
प्रवर्तिहो करतां थाकीयेरे ॥ दोष अबोध लखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ प्रथम अभयनुं लक्षण कहेछे. संभवजिननुं चिंतवन करतां ते चिंतवनथी परिणाम चलायमान थइ अन्य चिंतवनमां मन प्रवर्त्ते, इत्यादि परिणामनी चंचलता, अस्थिरपणुं ते भय, ते सर्व पलटावी एकाग्र स्वरूपनुं चिंतवन ते अभय. हवे अद्वेषनुं लक्षण कहेछे. संभवदेवनुं सेवन, स्तवन, स्वरूप चिंतवन चित्तमां रुचे नही एवो जे अरोचक भाव ते द्वेष अने तेज सेवन प्रमुख चित्तमां रुडां लागे ते अद्वेष. हवे

अखेदनुं लक्षण कहेछे. संजवप्रजुना स्वरूप चिंतवन प्रमुख प्रवृत्तिमां प्रवर्त्तता थकां अल्प कालमां मन थाकी जाय, कंटाली जाय अने तेथी प्रवृत्तिमां रही शके नही ते खेद अने तेज सेवनादि कार्यमांथी निवृत्ते नही ते अखेद. तेथी हे सुमति! जेने संजवदेवनी सेवनामां अजय, अद्वेष अने अखेद छे तेने स्वरूपानुयायी बोधनुं जाणपणुं छे अने जेउने तेमां जय, द्वेष अने खेद छे तेउने अबोध के०स्वरूपनुं अजाणपणुं अने दोषनुं लखाव के०प्रवर्त्तवुं छे. ॥ २ ॥

चरमावर्त्तहो चरम करण तथारे ॥ जवपरिणति परिपाक ॥
दोष टले वली दृष्टी खुले जलीरे ॥ प्रापति प्रवचन वाक ॥ संजव० ॥३॥

अर्थ ॥ ते दोष दूर करवानां जे कारणो श्रीसंजवनाथ परमात्माए सिद्धांतमां कह्यां छे, तेमां पेहेलुं कारण तो जीवने संसारमां परिभ्रमण करतां अनंती उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि थइ, तेमां छेल्ली उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि संसार भ्रमण करवानी रहे ते चरमावर्त्तन अने बीजुं कारण अपूर्व करणादि त्रण करणमध्येनुं छेल्लुं करण ते चरम करण तथा के०तेमज त्रीजुं कारण जवके०संसारनी गति आगति तेनुं जे परिणमवुं तेनो परिपाक अर्थात् गत्यागतिनो अजाव ते जवपरिणति परिपाक नामनुं कारण छे. तेथी हे सुमति! आ त्रणे कारण मलतांज जीवने जय, द्वेष अने खेदरूप दोष दूर थाय अने आत्मा अजयी, अद्वेषी अने अखेदी थतांज जलीके०स्वरूपानुयायी ज्ञानरूप दृष्टि के०चक्षु तेनी खुले के०उघडे ते ज्ञान दृष्टि खुलवाथी प्रवचन वाक के०सिद्धांतना सप्तनयाश्रित वाक्यनी शंका रहित प्राप्ति थाय ॥ ३ ॥

परिचय पातिक घातिक साधुशुंरे ॥ अकुशल अपचय चेत ॥
ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करीरे ॥ परिशीलन नय हेत॥संजव०॥४॥

अर्थ ॥ ज्यारे प्रवचनामृतनी प्राप्ति थई त्यारे मिथ्यादर्शनीउथी प्रथम परिचय हतो ते दूर थयो अने आश्रवना रोधनार, संवरना शोधनार, प्राणातिपातादिकना हणनार, मोक्षमार्गना साधनार साधुओनो परिचयके० आसेवनरूप संबंध थाय; अने तेथी आत्मस्वरूप पामवाने विघ्नकारक जे अशुद्ध श्रद्धा तद्रूप अकुशलपणानो अपचय के० नाश करनार चेत के० चित्त थाय अर्थात् आत्मस्वरूपानुयायी चित्त थाय. तेवुं चित्त थवाथी संमतितर्क, तत्त्वार्थ, अध्यात्म कल्पद्रुम, अध्यात्मसार प्रमुख अध्यात्मिक ग्रंथोनुं श्रवण अने मनन थाय. नैगमादि साते नयना जिन्न जिन्न हेतुए जिन्न जिन्न कथन होय अने जिन्न हेतुने अजावे जिन्न कथननो अजाव होय, परंतु अर्हिंतो श्रीसंजवनाथ प्रजुना स्वरूपथी पोताना आत्मस्वरूपने परि के०

समस्त प्रकारे शीलन के० स्वभावथी मेलववुं छे तेथी ते नयनो हेतुपार पडे ॥ ४ ॥

कारण जोगेंहो कारज निपजेरे ॥ एमां कोइ न वाद ॥ पण
कारणविण कारज साधियेरे ॥ ते निजमतउनमाद ॥ संभव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ परमात्माना स्वरूपसाथे पोताना आत्मस्वरूपने मेलववुं तद्रूपकारणने संयोगे पोताना स्वरूपनी सिद्धिरूप कार्य थाय, तेमां कांइ विवाद नथी; परंतु श्रीसंभवदेवना स्वरूपनी सेवाना कारणविना आत्मस्वरूपनी सिद्धतारूप कार्यनी वांछा राखवी ते पोतानी मतिनी उन्मत्तता छे, हठग्राहीपणुं छे अथवा बहिरात्मपणारूप कुमतिनो उन्माद के० चित्त विभ्रमताछे. ॥ ५ ॥

मुग्ध सुगम करी सेवन आदरेरे ॥ सेवन अगम अनूप ॥
देजो कदाचित सेवक याचनारे ॥ आनंदघन रसरूप ॥ संभव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ संभवदेवनी सेवनारूप कारणने सद्भावे आत्मस्वरूपरूप कार्यनुं निःसंदेह सद्भावीपणुंजछे, पण ते सेवन घणुं दुष्कर छे. मात्र मुग्ध के०सेवनना असमंजस भद्रक लोक ते सेवनने सुगम जाणीने आदरेछे. परंतु अंतरात्माविना ते सेवननुं स्वरूप बीजा कोइने गम्य नथी. ए सेवन तो परमोत्कृष्ट निरुपमछे. आ भवे तो पामवुं दुर्लभ छे; माटे संभवदेवने विनति करुंछुं के कदाचित् के०चरमावर्त्तनादि कारणोने मेलापे कोइभवे तमारो सेवक जे हुं पामर तेनी याचनाके०सेवनारूप प्रार्थनाने देजो के०सफल करजो. हे प्रभु तमे आनंदके० ज्ञानानंद तेना घन के०समूह एटले केवलज्ञान केवल दर्शनेकरी द्रव्यना अनंत गुणादिने जाणवाथी उपन्यो जे आनंद तद्रूप रस छे रूप के०स्वरूप ते जेनुं एवा छो ॥ ६ ॥ इतिश्री संभवजिनस्तवन.

## ॥ अथ श्री अभिनंदन जिनस्तवन ॥

॥ राग धनाश्री सिंधुउ ॥ आजनीहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

अभिनंदनजिन दरशण तरसियें ॥ दरशण दुर्लभ देव ॥ मत
मतभेदेरे जो जइ पूछीयें ॥ सहु थापे अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अभिनंदन प्रभुनुं दर्शन एटले जैनदर्शन तरसियेंके०कोइ रीते मले एवी चाहना करीए छीए, परंतु हेप्रभु! तमारुं दर्शन अतिदुर्लभ के०दुःखे पामीशकाय तेवुं छे. भूतकालमां कोइ वखत पाम्या नथी अने आ जन्ममां पामवानी व्यवस्था आ प्रमाणे छे. जेम कोइ अजाण पुरूष मार्गनी माहितीमाटे बीजानेपुछे, तेरीते जुदाजुदा मतवाला छे तेमने पुछीए के शुद्ध आत्मस्वरूपनुं भासन करावे तेवुं स्वरूपानुयायी दर्शन कयुं? त्यारे तेते मतना धारक सर्वे अहमेव के०निश्चयपूर्वक अमे प्रवृत्ति करीए छीए तेज शु-

ऊदर्शन बे. परंतु अमारा दर्शनथी स्वरूपनी प्राप्ति थती नथी एम कोइ कहे नही. ॥१॥

सामान्ये करी दरशण दोहेलूं ॥ निरणय सकलविशेष ॥ मदमें
घेर्योरे अंधो केम करे ॥ रविशशिरूप विलेष ॥ अभि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटे हे परमेश्वर ! सामान्यप्रकारे मतमतांतरना भेदें अर्थात् एकांतवादी-उने पूबतां तमारुं जैनदर्शन पामवुं डुर्लन्न बे. वली निरणयके०परमतात्विकपणे स्वरूपानुयायी, अनंताकेवलज्ञानीए कथन करेलुं, तदाकारभूते समस्त नयानुयायी, एम विशेषपणे तमारुं दर्शन प्रत्यक्षपणे कहेवुं ते पण कठिन बे. वली ते मतमतांतरीउने पूबतां तमारुं दर्शन नज पामीए, ते उपर दृष्टांत कहेबे. जेम कोइ जन्मांध प्राणी बे, तेणे वली मद्यपान कर्युं, ते प्राणी जेम सूर्यचंद्रना स्वरूपने विशेषपणे जाणी शके नही तेम जे मिथ्यादर्शने करी अंध बे, वली मतममत्वरुप मदिरापानथी घेरायोबे, ते सूर्यचंद्ररूप जैनदर्शनना स्वरूपने विशेषपणे केवी रीते जाणी शके अर्थात् नज जाणी शके॥

हेतु विवादेंहो चित्तधरि जोईयें ॥ अति डुरगम नयवाद ॥ आगम
वादेंहो गुरूगम को नही ॥ ए सबलो विषवाद ॥ अभि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हे परमेश्वर! जे साधवा योग्य कार्यनी प्राप्ति करावे एवा हेतु के०कारणोनो विवाद के० विस्तारपणे कथन तेने मनमां विचारी जोइए ढीए अर्थात् ज्ञान दृष्टिए विचारीए ढीएतो तमारा दर्शनमां नयोनुं वाद के०कथन एवुं बे के जे वस्तुने एक नये स्थापीये तेनेज बीजी नये उत्थापी शकाय बे, माटे तमारा दर्शनमां नयवादनी डुर्गमता बे. वली तमारा सिद्धांतना वाद के०कथनथी तो सहेजे तमारुं दर्शन पामी शकीए, परंतु तमारा सिद्धांतोना कथननुं गुरुगम कोइ नथी अर्थात् जे गुरुउथी सिद्धांतोनी समज पडे एवा गुरु कोइ नथी अथवा गुरुने आधीन रही समज्या होयएवा परंपरागामी कोइ गुरु आकालमां देखाता नथी, माटे मतमतांतरोना भेदथी, हेतु विवादोथी तेमज नयवादोथी अने आगमवादथी तमारा दर्शननी प्राप्ति नथी एज सबलो के०अति बलवान, मनमां विषवाद के०उद्वेग बे ॥ ३ ॥

घाति डुंगर आमा अतिघणा ॥ तुज दरिशण जगनाथ ॥
धीठाई करी मारग संचरूं ॥ सेंगु कोइ न साथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे हे जगनाथ ! त्रण जगत्ना स्वामी तमारुं दर्शन पामवाने अंतरायना करनार पर्वत उपमारूप घातकारक पूर्वोक्त जे कारणो बे तेनाथी पण बीजा घणां हजु बे, माटे केटलां कहुं;तोपण धीठाइ करी के०तमारा दर्शन पामवाने अंतराय करनारां एवां कारणोने नही गणतां इगनुयोगें जैनदर्शनना मार्गमां संचरुं के० प्रवर्त्तन करुं

छुं, परंतु शुद्ध स्याद्वाद मार्गनो प्रवर्त्तावनावालो तेने सेंगू कहीए तेवो कोइ ज्ञाता पुरुष तमारो मार्ग देखाडनार साथे नथी के जेना सहायथी मार्गे प्रवर्त्ती शकीए ॥ ४ ॥

दरशण दरशण रटतो जो फरूं ॥ तो रणरोझ समान ॥ जेहने
पिपासाहो अमृत पाननी ॥ केम भांजे विषपान ॥ अभि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे अभिनंदन प्रभु! तमारा दर्शननी पूर्वोक्त कारणोथी अप्राप्ति जाणीने, मात्र दर्शनीओ परत्वे दर्शन दर्शन एम हे उपगारीओ! शुद्ध आत्मस्वरूपानुयायी, परमपदप्रापक एवुं दर्शन मने बतावो एम रटतो के० बोलतो थको जो के०कोइरीते फरूं के०परिभ्रमण करुं,अर्थात् जैनीओ सुधांत सर्व दर्शनना अध्यक्षोने पुछतो पुछतो भटक्या करुं तेथी कांइ तमारुं दर्शन प्राप्त थाय नहीं, उलटुं जैनदर्शननी शोध करतो देखीने सर्व दर्शनीओ एम कहेके आतो मनुष्याकारे जंगलनुं रोझ छे, अर्थात् मूर्ख शिरोमणि छे. वली सर्व दर्शनीओथी तमारा दर्शननी शोध करतां थकां कोइ महावंचकी नयनो पक्ष ग्रहण करी एवी वात संभलावे के तमारा दर्शननी प्राप्ति थवी तो दूर रही पण उलटा मनमां शंकाना गोटा उत्पन्न करावीदे तेथी श्रद्धा भ्रष्ट थइ अन्यमत प्रवर्त्तन करी तमारा दर्शननी निंदा करवा लागी जउं; माटे हुं जेने तमारा दर्शनरूप अमृतपाननी पिपासा के०तृषा छे, तेने अमृतपान तो मले नही पण तेथी उलटुं भ्रष्ट श्रद्धाथी मिथ्यात्व प्रवर्त्तनरूप झेर अन्यमतियोने पुछवाथी मारी श्रद्धामां दाखल थाय, तेथी ते विष के०झेरनुं पान मारी अमृतपानरूप पिपासाने केम दूर करी शके? ॥ ५ ॥

तरस न आवेहो मरण जीवनतणो ॥ सीजे जो दरिशण काज ॥
दरिशण दुर्लभ सुलभ कृपाथकी ॥ आनंदघन महाराज ॥अभि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे हे परमेश्वर! तमारुं जैनदर्शनरूप कार्य जो कोइ रीते सिद्ध थाय तो मरण जीवननो तरस के०त्रास न रहे अर्थात् ते प्राणी जन्मजरामरणादिकना दुःखथी रहित थइ मुक्ति पामे; परंतु तमारुं दर्शन पामवुं दुर्लभ छे. मात्र तमारी कृपाथी सुलभ छे तेथी हे आनंदघन के०ज्ञानानंदनो अत्यंत भराव तेना महाराज ते आनंदघन महाराज, तमारी कृपाथी जैनदर्शन पामीए ॥६॥ इति अभिनंदन जिनस्तवन.

## ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

सुमति चरण कज आतम अरपणा ॥ दरपण जेम अविकार ॥ सुज्ञानी ॥
मतितरपण बहु सम्मत जाणियें ॥ परिसरपण सुविचार ॥सुज्ञानी॥सुमति० १॥

अर्थ ॥ सुमतिनाथ जगवंतना चरणकमलमां मारा आत्मानुं अरपण के० स्थापन करुंछुं. निभ्रमपणे परमात्म स्वरूपनुं चिंतवन ते आत्मार्पण कहीए. ते परमेश्वर उपाधिजनित विकारथी रहित छे. जेम आरीसामां जेवुं स्वरूप होय तेवुंज जासे पण विपरीत न जासे,तेवीरीते परमात्मा पण निर्विकारी यथातथ्य कान्तिवंत, केवलज्ञान स्वरूपी होवाथी तेमां आत्मार्पण करवाथी यथार्थ स्वरूप जासे. माटे हे सुमतिवंत प्राणी! बहु के० घणां मतने सम्मत थइ चालतां आत्मार्पणनुं स्वरूपतो मतितरपण थइ जाय के० बुद्धि तृप्त थाय तेटले सुधी जाणी लेवुं पछी परिके० समस्तपणे अन्यमतिउंमां जे आत्मार्पण तेथी सरपण के० निवर्त्तवुं तेज सुविचार के० उत्तम विचार छे॥१॥

त्रिविध सकल तनुधरगत आतमा ॥ बहिरातम धुरिजेद ॥ सु० ॥
बीजो अंतर आतम तिसरो ॥ परमातम अविछेद ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ २॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे आत्मार्पण संबंधी योग्यता बताव्या पछी आत्माना जेद कहेछे. समस्त शरीरधारीउंना शरीरने विषे रहेला आत्माना त्रण प्रकार छे १ बहिरात्मा २ अंतरात्मा ३ परमात्मा. अहिं कोइ पुछेके सिद्ध अनंता छे माटे तेना अनंता जेद केम न कह्या ? उत्तर–जे अनंता सिद्धनुं स्वरूप एक छे तेथी परमात्मा साथे अविछेद के० अजेद शब्द मुक्यो छे. अहीं पेहेलो, बीजो, त्रीजो आत्मा ए प्रमाणे तो जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट त्रण प्रकारना आत्मा थया, परंतु सत्ताजिन्नथी कोइ पूछे तो तेना अनंता जेद थाय. ॥ २ ॥

आतम बुद्धें कायादिकें ग्रह्यो ॥ बहिरातम अघरूप ॥ सु० ॥ काया
दिकनोहो साखीधर रह्यो ॥ अंतरआतम रूप ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे त्रणे आत्मानुं स्वरूप कहेछे. मलीन बुद्धियें करी शरीरादिकथी अहंबुद्धिपुर्वक ग्रह्यो के० बंधायेलो अर्थात् शरीरने सुखे सुखी अने शरीरने दुःखे दुःखी, आदिशब्दें माया, ममता, मिथ्यात्वादिके ग्रह्यो, ते परिणतिये परिणम्यो इत्यादि लक्षित जे आत्मा तेने बहिरात्मा कहीए. ते आत्मा पापरुप व्यापारवंतछे;अने जे आत्मा कायादि के० शरीर प्रमुखअंगोपांग, जूमि धन कंचनादिनोशाक्षी, कायादिकनो निर्ममत्वी आत्मस्वरूपनो ज्ञाता, आत्माने दशमेद्वारे स्थापन करनार इत्यादि लक्षणे लक्षित ते अंतरात्मा कहीए ॥ ३ ॥

ज्ञानानंदेहो पूरण पावनो ॥ वरजित सकल उपाधि ॥ सु० ॥
अतिंद्रियगुणगण मणिआगरू ॥ एमपरमातमसाध ॥ सु० ॥सुमति०॥४॥

अर्थ ॥ स्वरूपज्ञानथी प्रगट्यो जे आनंद तेना हर्षथी संपूर्ण पवित्र, वळी कर्मजनित समस्त उपाधियोथी रहित कारण के उपाधिनो अभाव थया विना ज्ञानादि गुणयुक्त थवातुं नथी, वळी अतिंद्रिय गुण के०शब्दादि पांचे इंद्रियोजनित गुणोना अभावथी प्रगट थयो जे अतिंद्रिय गुणज्ञान दर्शनादि तेना अनंता समूह तद्रूप महा मणिउना आगर के०उत्पत्तिस्थान. एवा परमात्म स्वरूपने हे सुमति! तुं साध के० सिद्ध कर. तारा विना ए परमात्मानुं स्वरूप सिद्ध नज थाय. ॥ ४ ॥

बहिरातम तज अंतर आतमा ॥ रूप थई थिर भाव ॥ सु० ॥ परमा
तमनुं हो आतम भाववुं ॥ आतम अरपण दाव ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ५॥

अर्थ ॥ अहीं कोइ शंका करे के आनंदघने प्रथम सुमति परमेश्वरने चरणे आतम अरपणा एवुं कह्युं अने पछी आत्मानां त्रण लक्षण कह्यां तेनुं शुं कारण? उत्तर जे परमात्माना चरणमां आत्मार्पणरूप स्तवनानी प्रथम जरूर छे, पछी आत्मानां लक्षण बतावी कयो आत्मा परमात्मा स्वरूपमां आत्मार्पण करी शके ते बतावववानी जरूर छे. माटे पूर्वोक्त बहिरात्मपणुं मूकीने अंतरात्मानुं जे स्वरूप तेमां स्थिर भावे थइ, एकाग्रताए परमात्मानुं स्वरूप आत्मामां चिंतववुं, एज आत्मार्पणनो दाव के० उपाय छे. ॥५॥

आतम अरपण वस्तु विचारतां ॥ भरम टळे मतिदोष ॥ सु०॥ परम
पदारथ संपति संपजे ॥ आनंदघनरस पोष ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे आतम अरपण वस्तु विचारतां के०तत्त्व विचारणा करतां परस्वरूपने पोतानुं स्वरूप मान्युं हतुं तद्रूप बुद्धिनुं दूषण मटीजाय. भ्रमता मटतांज केवलज्ञान केवलदर्शनथी उपन्यो जे आनंदनो समूह तद्रूप अनिर्वचनीय रसनी पुष्टता छे जेने विषे एवो परम पदार्थ जे उत्कृष्ट मोक्षरूप संपत्ति के०संपदा ते संपजे के० प्राप्तथाय ॥ ॥ ६ ॥ इति सुमति जिनस्तवन ॥

## ॥ अथ श्रीपद्मप्रभजिन स्तवन ॥

॥ रागमारू तथा सिंधुउ ॥ चांदलीया संदेशो कहेजो मारा कंतने ॥ए देशी॥

पद्मप्रभजिन तुज मुज आंतरूरे ॥ केम भांजे भगवंत ॥ करम
विपाकें कारण जोईनेरे ॥ कोई कहे मतिमंत ॥ पद्म०॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो श्री पद्मप्रभ परमेश्वर सिद्धांत अनुसारे तमारी साथे मारे कांइ अंतर नथी. मारे अने तमारे अंतर शानुं होय? परंतु अन्वय व्यतिरेक लक्षणे मारी अने तमारी वच्चे बहु अंतर पड्युंछे. माटे हे भगवंत के०ज्ञानवंत ते अंतर केम दूर था-

थ, ते आप कहो. हे प्रजु ! तमारा अने मारा अंतरनुं कारण, ज्ञानावरणादि कर्मनो विपाक केοपरणमवुं, तेना कारण मिथ्यात्व, अविरती, कषाय, योग, तेना बंधने जोइने कोइ महाबुद्धिवंत ज्ञानीए तमाराथी अंतर पड्युं ते कह्युं के, जे ठते जे होय ते अन्वय अने जे अठते जे न होय ते व्यतिरेक अर्थात् कर्मबंधना कारणने अजावे अंतरनो पण अजाव थाय ॥ १ ॥

पयई ठिई अणुजाग प्रदेशथीरे ॥ मूल उत्तर बहुजेद ॥ घाति
अघाति हो बंधूदय उदिरणारे ॥ सत्ताकरम विछेद ॥ पद्मο ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे अंतर पडवानां कारण विस्तारथी बुद्धिवंत पुरुष कहे छे. १ प्रकृति बंध २ स्थितिबंध ३ अनुजाग ते रसबंध ४ प्रदेश ते दलनो संचय, एम चार प्रकारे कर्म बंध छे. कर्मनी मूलप्रकृति आठ छे. उत्तर प्रकृति एकसो अठावन छे. मूलमां चार आत्मगुणना घात करनारा कर्म छे अने बीजां चार आत्मगुणना अघातक छे. वली कर्मना बंध, उदय, उदिरणा, सत्ता इत्यादि विछेद केο जेद छे. इत्यादि शब्दथी ध्रुवबंधी अध्रुवबंधी, ध्रुवोदयी अध्रुवोदयी, ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्ता, तेमज जव विपाकि, क्षेत्र विपाकि, जीवविपाकि, पुजलविपाकि तेमज देशघाति, सर्वघाति, परावर्त्तमान, पुण्यप्रकृति, पापप्रकृति इत्यादि सर्व कर्मना विछेद छे ॥ २ ॥

कनकोपलवत पयमि पुरुसतणीरे ॥ जोमी अनादि स्वजाव ॥
अन्य संजोगी जिहां लगे आतमारे ॥ संसारी कहेवाय ॥ पद्मο ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एरीते कर्मनी पयमि केο प्रकृति ते पुरुस केο जीवनी साथे अनादि कालथी मलेली छे. संयोग संबंध छे. जेम सुवर्ण तथा माटीने खाणमां अनादि संबंध स्वजाविक छे, तेम पुरुष प्रकृतिनो अनादि संबंध स्वजाविक ज छे. माटे ज्यांसुधी आत्मा पुजलादिक साथे संयोगी छे त्यांसुधी आ आत्मा संसारी कहेवाय छे. ॥ ३ ॥

कारणजोगे हो बंधे बंधनेरे ॥ कारण मुगति मूकाय ॥ आश्रव
संवर नाम अनुक्रमेंरे ॥ हेयउपादेय सुणाय ॥ पद्मο ॥४॥

अर्थ ॥ आत्मा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग, आ कारणोने लीधे कर्मनो बंध करे छे अने सम्यकत्व, विरति, अकषाय अने अयोग, आ कारणोने लीधे कर्मथी छुटे छे. एम अनुक्रमे कर्मबंधनां कारणोने मेलववा ते आश्रव अने कर्म आवतां अटके एवां कारणो मेलववां ते संवर. तेमां आश्रव ते हेय केο छांमवा योग्य छे अने संवर ते उपादेय केοआदरवा योग्य छे. ए प्रमाणे सिद्धांतमां संजलाय छे. ॥ ४ ॥

यूंजन करणे हो अंतर तुज पड्योरे ॥ गुण करणें करी भंग॥ ग्रंथ
ऊकते करी पंम्तिजने कह्योरे ॥ अंतरभंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेथी पंडित पुरुषे आनंदघनने कह्युं के सिद्धांतमां त्रण कारण कह्यां तेमां जे कारणथी आत्मा कर्म साथे जोमाय तेने यूंजनकरण कहीए. ते यूंजन करणने योगे हे आनंदघन ! तारे परमेश्वर साथे अंतर पमी गयुं छे. तेथी ज्ञान करणे आत्मस्वरूप जाणीने गुणपणे आचरणा अर्थात् कार्य कारण भावनो अभेद उपचार छे, तेथी ज्ञानदर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञानदर्शन एवा अभिन्न भावे करी हे आनंदघन ! पद्मप्रभु साथेना तारा अंतरनुं त्रुटवुं छे. वळी पंम्तिोने आनंदघने पुब्युं के, आ कथन तमारी पोतानी बुद्धिए कहोछो ? पंम्तिोए उत्तर आप्यो के,हे आनंदघन ! जैन सिद्धांतना न्यायथी अमे आ वचन कहीए छीए, खेञ्चाए कहेता नथी, माटे हे आनंदघन ! परमेश्वरथी तमारुं अंतर भांगवानो रहस्य स्वरूपे एज उत्तम उपाय छे. ॥५॥

तुऊमुऊ अंतर अंतर भाजसेरे ॥ वाजसे मंगलतूर ॥ जीव
सरोवर अतिशय वाधसेरे ॥ आनंदघन रसपूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी हे पद्मप्रभु ! ज्यारे हुं गुण करणे प्रवर्त्तिश त्यारे तमारुं अने मारुं जे ध्याता ध्येयरूप अंतर छे ते दूर थशे, अर्थात् भेदनुं अभाविपणुं थशे, अने त्यारेज स्वरूप प्राप्तिना हर्षना उत्कर्षनुं महाघोष करनारुं अनादि ध्वनिरूप मांगलिक वाजित्र वागशे. ए रीते आत्मा परमात्म स्वरूप पामे थके आनंदघन के०केवल ज्ञान केवल दर्शनथी अनंताज्ञेय स्वरूपने अवलोकन करवाथी परम आल्हादरूप रस उपजशे अने तेना संपूर्ण भरावथी अत्यंत शुष्क एवुं जीवरूप सरोवर अनंत ज्ञानरूप जलथी वृद्धि पामशे ॥ ६ ॥ इति पद्मप्रभजिन स्तवन.

## ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ रागसारंग ॥ मल्हार ॥ ललनानी देशी ॥

श्रीसुपास जिनवंदियें ॥ सुख संपतिने हेतु ॥ ललना ॥
शांत सुधारस जलनिधि ॥ भव सागरमां सेतू ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत आनंदघन कुमतिवंत प्राणीउने आत्म साधनना उपाय कथनपूर्वक श्रीसुपार्श्व परमेश्वरनी स्तवना करतो कहे छे. हे भव्यो ! श्रीसुपार्श्व प्रभुने द्वादशावर्त्तवंदने वांदो. ते अव्याबाध सुख प्राप्तिरूप मोक्षनी संपत्तिना हेतुरूप ए वंदन छे. ललना शब्द वाक्य अलंकारे छे. वळी ते सुपार्श्वजिन केवा छे ? आत्म स्व-

रूपना अनुभवथी रागद्वेषने अभावे उत्पन्न थयो जे शांतरस तद्रूप अमृत रसना सं-मुद्र छे. वली संसार समुद्रनो पार उतरवाने सेतु के०पाज समान छे. ॥ १ ॥

सात महाभय टालतो ॥ सप्तम जिनवर देव ॥ ललना ॥
सावधान मनसा करी ॥ धारो जिनपद सेव ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली सुपार्श्वनाथ केवा छे ? वज्र समान इहलोक परलोकादि सात भय अथवा काम, क्रोध, लोभ, मद, राग, द्वेष, मिथ्यात्व आ सात भयना नाश करनार छे. एवा सुपार्श्वजिन के०सामान्य केवलीमां वर प्रधान, स्वस्वरूप कान्तिवंत परमेश्वरने अहो बहिरात्माउं तमे सावधान थइ एकाग्र तदाकार मनः प्रवृत्ति करी बहिरात्मपणुं तजी अंतरात्मवंत थइ जिनेश्वरना चरणकमलनी सेवा त्रणेकाल तन्नत ध्याने करो ॥ २ ॥

शिवशंकर जगदीश्वरु ॥ चिदानंद भगवान ॥ ललना ॥
जिन अरिहा तीर्थंकरु ॥ ज्योतिसरूप असमान ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आनंदघननुं एवुं कथन सांभलीने, शिव, शंकर, अलख, योगी, निरंजन, विरंचि रुषीकेश इत्यादी अन्य सर्वना उपासको आनंदघनने पूछवा लाग्या,हे आनंदघन! अमारा सर्वना देवोना सेवनने उत्थापी एक सुपार्श्वनाथनुं सेवन स्थापन करो छो तेनुं शुं कारण ? शुं उपरना सर्व अभिधाननी सत्ता तेनामां छे ? आनंदघन कहे छे के, हा. शिव के०कर्म उपद्रव निवारक, शंकर के०सुखना कर्ता, जगदीश्वर के०जगतना परमेश्वर, चिदानंद के०ज्ञानानंदी, भगवान के०महा वैराग्यवंत, ऐश्वर्यवंतजिन के० राग द्वेषना जीतनार,अरिहा के० इंद्रादि सर्वनी द्रव्य तथा भाव पूजा योग्य तथा कर्मरूप शत्रुने हणनार, तीर्थंकरु के०गणधर प्रमुख साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विध संघना स्थापन करनार एम सर्व सत्ता सुपार्श्वभगवंतमां छे. तेनी तुलना करी शके एवुं ज्योतिस्वरूप पण अन्यमां नथी ॥ ३ ॥

अलख निरंजन वछलू ॥ सकलजंतु विशराम ॥ ललना ॥ अभय
दान दाता सदा ॥ पूरण आतमराम ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली ते प्रभु अलख के०बहिरात्माथी जाणी शकाय नही तेवा छे. वली निरंजन के० कर्मरूप लेपरहित छे, वछलू के० सर्व प्राणीना हित करनार छे. वली त्रस थावर सर्वजीव भव अटवीमां भमतां थकां कर्मजनित प्रचंम तापथी तपेलाने अर्थात् जन्म जरा मरण आधि व्याधि अने उपाधिथी दुःखी थयेलाउने विशराम के०शाताना धाम छे, वली मरणथी बचावनार तेथी निरंतर अभयदानना दातार

छे, अर्थात् जन्म मरणना टालणहार छे. वली ज्ञानादिगुणे जरपूर होवाथी आतमराम के० आत्म स्वरूपमां रमण करनार पण तेज छे. ॥४॥

वीतराग मद कल्पना ॥ रति अरति जय सोग ॥ ललना ॥ निद्रा
तंद्रा दुरंदशा ॥ रहित अबाधित योग ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली राग द्वेष रहित छे तेथी वीतराग छे. वलीमद के० अजिमान, कल्पना के० संकल्प विकल्प, रति के०रागनो उत्कर्ष, अरति के० द्वेषनो उत्कर्ष, जय, सोगके०शोक कल्पांत, निद्रा,तंद्रा के०आलस, पूर्वोक्त सर्व दूषणोथी रहित छे. वली मनोयोग, वचनयोग अने काययोगनुं बाधकपणुं, तेनाथी पण प्रजु अबाधित छे. ॥५॥

परम पुरुष परमातमा ॥ परमेश्वर परधान ॥ ललना ॥ परम
पदारथ परमेष्ठी ॥ परमदेव परमान ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जगतने विषे जेटला पुरुष छे तेमां उत्कृष्ट पुरुषत्व धर्मयुक्त पुरुष एज छे तथा परम उत्कृष्ट आत्मा पण एज छे. वली परमेश्वर के० सर्व मनुष्य शिरोमणि, त्रण जगतना नायक छे, तेमज त्रण जगतमां सर्वोत्कृष्ट वस्तु पण तेज छे, अथवा परमपद के० मुक्तिपद तेना रहस्य छे. तथा परमइष्ट के० परमोत्कृष्ट वांछित पदार्थ पण तेज छे, अर्थात् जव्य आत्माउने परम वांछनीक पण एज छे. वली सर्वोत्कृष्ट देव पण एज छे. हे अन्य देवनी सेवा करनारा प्राणीउं, सर्व देवोमां परम देवपणे सेववा योग्य आ सुपार्श्वनाथ प्रजुने परमान के० अवधारो. ॥ ६ ॥

विधि विरंचि विश्वंजरू ॥ रुषीकेश जगनाथ ॥ ललना ॥ अघ
हर अघमोचन धणी ॥ मुक्ति परमपद साथ ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए प्रजुनी सेवा करनार शुजबंध करे अने तेनुं नहीं सेवन करनार अशुज बंध करे अने जे जीवो बंध करे तेवुं जोगवे ते स्वरूपे विधाता पण एज छे. वली संसारी जीवो अने परमात्मा सत्ताए एकज छे, परंतु श्रेष्ठ स्वरूपनो कर्त्ता होवाथी विरंचि के० ब्रह्मा पण तेज छे. वली संसारी जीवोने परम आधाररूप होवाथी विश्वंजर पण तेज छे. वली रुषीउं तेनुं ध्यान करता होवाथी रुषीउंना स्वामी पण एज छे. वली जगतना जीवोने शुद्ध स्वरूपना पोषण करनार होवाथी जगतना नाथ पण तेज छे. वली पापना करनारा तथा अनेक कालना पापी प्राणीउंने मुक्त करावनारा पण तेज छे, तेवीजरीते जगतना स्वामी पण तेज छे. वली मुक्ति जे परमपद तेना सार्थवाह छे, अर्थात् आगेवान दोरनार छे. ॥ ७ ॥

एम अनेक अभिधा धरे ॥ अनुभव गम्य विचार ॥ ललना ॥
जे जाणे तेहने करे ॥ आनंदघन अवतार॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥८॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे अनेक के० घणी अभिधा के० शक्तिउने धारण करनारा छे, अर्थात् अमर, अजर, अक्षर, अकल, अनादि स्वरूपि, विजयी, अतिंद्रिय प्रश्नात्मा, शंभु, स्वयंभु, सार्व, अज, अच्युत, अविरुद्ध इत्यादि अनेक नामोना धारण करनारा छे. तेथी हे भव्य प्राणीउं ! तेनी सेवा करो. ते प्रभुना सेवनमां सर्वेनुं सेवन अंतर्भूत छे. वली अनेक नामोना अर्थ विचारना रहस्यनुं चिंतवन अर्थात् दरेक नामना व्युत्पत्ति सहित अर्थनुं विवेचन अंतःकरणमां करवुं ते अनुभव गम्य कहेवाय. ए प्रमाणे नामोनो विचार, हेतु सहित चिंतवन करवानी जे रीत जाणे ते प्राणीने श्री सुपार्श्वनाथ परमेश्वर आनंदघन अवतार करे के० परमानंदपणे अवतरण करे ॥८॥

## ॥ अथश्री चंद्रप्रभजिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥ गोडी ॥ कुमरी रोवे आक्रंद करे, मने कोइ मुकावे ॥ ए देशी ॥

देखणदेरे सखी मुने देखणदे ॥ चंद्रप्रभ मुखचंद ॥ स० ॥ उप
शमरसनो कंद ॥ स० ॥ गतकलिमल दुखदंद ॥ स० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शुद्ध चैतन्य धर्मयुक्त शुद्ध चेतना परमेश्वरना मुख प्रमुख अंगोपांगने विषे व्यापि रही छे ते, परमेश्वरनुं मुखाविंद देखवा देती नथी, तेने अनादि कालथी कर्म उपाधि युक्त आनंदघननो आत्मा सुमतिवंत थइ परमेश्वरना मुखनुं दर्शन करवा इछा करतो कहे छे. हे सखी ! चंद्रप्रभ परमात्माना मुखरूप चंद्रने मने जोवादे, कारणके ते प्रभुना मुखनुं अवलोकन तुं तो निरंतर कर्या करे छे अने में पूर्वे जे जे स्थानके ते मुखावलोकन कर्युं नथी तेनुं वर्णन हवे पछी करीश. माटे विनंति करुं छुं के, ते मुखरूप चंद्र जोवादे. ते मुखरूप चंद्र केवो छे? राग द्वेषना अभावथी उपशमरस के० शांतरसनो कंद के० उगतो किसलय छे. वली जेने चारे निकायना देवोना इंद्रो तथा मनुष्यना इंद्र जे चक्रवर्ती प्रमुख सेवता होवाथी ते सेवनाराउंना कलिमल के०पाप तथा दुःखोनादंद के०समुदाय गत के०नाश पाम्या छे. माटे हे सखि ! मारा पण पाप अने दुःखसमुदाय दूर थाय. ॥ १ ॥

सुहमनिगोद न देखियो ॥ स० ॥ बादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥
पुढवि आउ न लेखीयो ॥ स० ॥ तेउ वाउ न लेश ॥ स० ॥ २॥

अर्थ ॥ हे सुखी ! अव्यवहार राशी सूक्ष्म निगोदमां चंद्रप्रभुना मुखनुं दर्शन

थयुं नहीं; कारण के सूक्ष्म निगोदे रूपनो असंभव, रूपना असंभवथी चक्षुनो असंभव, तेथी देखवानो असंभव, माटे हे सखि ! अहिं मने जोवादे. वली बादर निगोदमां तो अत्यंत विशेषपणे मुख दीठुं नथी, कारण के, जो के सूक्ष्म निगोदमां प्रभुमुख दीठुं नथी तो पण सिद्धक्षेत्रमां सूक्ष्म निगोद छे अने सिद्ध परमात्माउनी नजीक सूक्ष्म निगोदना जीवो छे अने बादर जीवोनो नजीक वास नथी तेथी बादरमां तो अति विशेषपणे प्रभुमुख दीठुं नथी. वली पृथ्वीकाय, अप्कायमां पण चक्षु दर्शनने अभावे न लख्यो के० जोवामां आव्युं नथी अने जाणवामां पण आव्युं नथी. वली तेउकाय तथा वाउकायमां पण लेशमात्र दीठुं नथी, कारणके मनुष्यना भवमां प्रभुनुं दर्शन करी मरण पामीने जो आवे तो अपर्याप्त अवस्थाये पूर्वभवनुं लेश पण पामे, पण मनुष्य ए बे निकायमां तो मरण पामी आवेज नहीं तेथी ते बे कायमां पण दीठुं नथी. ॥ २ ॥

वनसपति अतिघण दिहा ॥ स० ॥ दीठो नहीं देदार ॥ स० ॥
बिति चउरिंदी जललीहा ॥ स० ॥ गतिसन्नी पण धार ॥ स० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे सखि ! मारो जीव वनस्पति कायमां पण घणो काल रह्यो, तेथी त्यां पण चक्षु इंद्रिने अभावे प्रभुना मुखनुं दर्शन थयुं नहीं. हे सखि ! हवे तुं एम कहीश के एतो तें एकेंद्रीनांज स्थानको बताव्यां, तो कहुं छुं के बेंद्री अने तेंद्रीने पण चक्षु नथी अने चउरिंद्रीने जे चक्षु छे ते पण जललिहा के० पाणीनी लीक जेम निष्फल छे, तेम ते चक्षु पण दर्शन कार्यसिद्ध करवा माटे निष्फल छे. जेम पाणीमां लींटी पाडीये पण रहे नहीं तेम आंख छतां दर्शन न थाय तेथी ते आंख प्राप्त थइ पण निरर्थक छे. वली संज्ञीपणानी पण के० पांचे गतिमां पण प्रभुमुख दीठुं नथी एम हे शुद्ध चेतना सखि ! तुं धार के० अवधारजे, मानजे. ॥ ३ ॥

सुरतिरि निरय निवासमां ॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥
अपजाता प्रतिभासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढीउ हाथ ॥ स० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली विषयाशक्त थवाथी देवगतिमां अने विवेकना विकलपणाथी तिर्यंचगतिमां पण प्रभुमुख दीठुं नथी. वली नर्कगतिमां निवासथतां अत्यंत दुःखनी वेदनाथी संभारवुं पण थयुं नहीं तो देखवुं तो क्यांथीज थाय. वली धर्माधर्मना ज्ञानना अभाववाला अनार्य मनुष्यना साथ के०संगमां उत्पन्न थवाथी तेमज अपजाता के०अपर्याप्ता मनुष्यनी प्रतिभा के०प्रतिबिंब ते पण धर्माधर्म विवेक विकल होवाथी ते स्थानकमां प्रभुमुख दीठुं नथी,इत्यादि पूर्वोक्त स्थल मात्रमां चतुर के० म-

हानिपुण एवो परमेश्वर मारे हाथ न आव्यो, अर्थात् दर्शननी प्राप्ति न थइ, परंतु हवे दर्शननी योगवाइ मली छे तेथी हे सखि ! मने प्रजुमुख जोवा आप. ॥ ४ ॥

एम अनेक थल जाणिये ॥ स० ॥ दरिशण विणु जिणदेव ॥ स० ॥
आगमथी मत जाणिये ॥ स० ॥ कीजे निरमलसेव ॥ स० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त तेमज अन्य स्थलो जेवां के कामी, क्रोधी, लोजी, मोही, रागी इत्यादि चोरासीलक्ष जीवायोनि फरसतां अनेक स्थलो श्री जिनेश्वर जगवंतना मुखनुं दर्शन कर्याविना निरर्थक थया, तेथी हे सखि ! प्रजुना मुखनुं दर्शन करवा दे. वली सुमतिवंत आनंदघन शुद्धचेतनाने कहेछे के गया जवतो निरर्थक गया, परंतु आ मनुष्य जवमां पण शीरीते सेवा करूं ? त्यारे शुद्धचेतना उत्तर आपे छे के,हे आनंदघन ! सिद्धांतना वचनथी पूजानुं मत के०स्वरूप जाणीए. सिद्धांतमां, हिआए सुहाए निस्सेसाए अर्थात् हितने माटे, सुखनेमाटे, निःश्रेयसने माटे परमात्मानी सेवा छे एम जाणीने अजय,अद्वेष,अखेदपणे निर्मल जावांकितपूजा करवानी आज्ञाछे.

निरमल साधु जगति लही ॥ स० ॥ योग अवंचक होय ॥ स० ॥
किरिया अवंचक तिमसही ॥ स० ॥ फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली निर्मल के०शुद्ध, मुक्ति मार्गना साधनारा साधुउनी जक्ति के०जावांकित वात्सल्यपणुं प्राप्त थयुं. तेना सद्भावथी आत्माना ज्ञानादिक गुणो ठगाय नही एवा मनवचन कायाना अवंचय योगनी प्रवृत्ति थइ; अने तेम थवाथी क्रियानुं सर्व प्रवर्त्तन अवंचक के०अठगाइरूप थाय अने तेम थाय त्यारे मनोयोग अवंचकपणे प्रवर्त्ते, तेथी सही के० निश्चयथी आत्मस्वरूप अवछेद फल पण अवंचक जोय के०हे सखि ! तुं देख ॥ ६ ॥

प्रेरक अवसर जिनवरू ॥ स० ॥ मोहनीय क्षय जाय ॥ स० ॥
कामित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥आनंदघन प्रजु पाय ॥ स० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे समये अवंचक फल स्वरूपनी प्राप्ति थाय तेसमये प्रेरक के० प्रेरणाना कारक, पोताना स्वरूपथी अन्यना स्वरूपने उलखावनार एवा चंद्रप्रज परमेश्वर प्रावर्त्तक छे अने आत्मा प्रवर्त्तक छे, एम हे सखि ! स्वरूप तदाकारपणे आत्मा प्रवर्त्यो थको अचिंतनीय आत्मशक्तिथी मोहनीय कर्मनो क्षय करे. माटे केवल ज्ञान केवल दर्शननो जे परमानंद तेनो घन के०समूह, तेज छे स्वरूप जेनुं एवा जे चंद्रप्रज स्वामी तेना पाय के० चरण ते कामित के० निज स्वरूपाजिलाषी प्राणीउना मनोवांछित पूरवाने हे सखि ! साक्षात् सुरतरु के० कल्पवृक्ष छे. ॥ ७ ॥ इति चंद्रप्रजस्तवन.

## ॥ अथश्री सुबुद्धि जिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥ एम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

सुबुद्धि जिणेसर पाय नमिने ॥ शुभकरणी एम कीजेरे ॥
अतिघणो ऊलट अंग धरीने ॥ प्रह उठी पूजीजेरे ॥ सुबु० ॥१॥

अर्थ ॥ हवे आनंदघन सुबुद्धि जिनना पूजनना भेदपूर्वक स्तवनने करतो थको, भव्य प्राणीउने यथातथ्य पूजननुं फल उपदेशे छे. अहो भव्यो ! तमे सुबुद्धि परमेश्वरना चरण कमलने नमिने हवे पछि वर्णवीश तेवी शुभ करणी करो अर्थात् स्वरूप अनुयायी कर्त्तव्य आचरो, वा, देवगतिदायक शुभ करणी शरु करो. ते शुभ करणी आ प्रमाणे छे. जेम संसारी जीवने विवाह प्रमुख कारणो अति हर्षना स्थानक छे, वा, अपुत्रीयाने पुत्रोत्पत्ति जेम हर्षनुं स्थानक छे, तेम शुभगतिना इछनाराने प्रभुपूजन हर्षनुं स्थानक छे. माटे अत्यंत उल्लास अंगमां धारण करीने, जन्ममां ते दिवसने धन्य मानतां अहो भव्यो! तमे हर्षोत्कर्ष सहित प्रभातमां उठीने अन्य सर्व संसारी कामो कर्या पहेलां सुबुद्धि परमेश्वरना चरण कमलने नमस्कार करी, पूजनरूप शुभ करणी करो ॥ १ ॥

द्रव्यभावशुचिभाव धरीने ॥ हरखे देहरे जइएरे ॥ दह
तिगपण अहिगम साचवतां ॥ एकमना धुरि थइएरे ॥ सु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जे जे वखते पूजा करवी ते ते वखते प्रथम निर्मल जलथी स्नान करवुं अने शुद्धवस्त्र परिधान करवा, तेटलीज शुचि के० पवित्रता करवी, एम कर्त्तानी मान्यता नथी, पण द्रव्य अने भाव बंनेनी पवित्रता कही छे. ते प्रमाणे द्रव्य भावनी पवित्रताथी साक्षात्रण क्रोड रोमरोजी विकस्वर थकां, निस्सिहि प्रमुख दश त्रिक तथा पांच अभिगमन, जे रीते प्रवचन सारोद्धार तथा चैत्यवंदनभाष्य प्रमुख ग्रंथोमां कह्या छे, ते सर्व रीत साचवतां थकां हर्षभर हैये जिनमंदिर जइए. त्यां जइ प्रथम तो मात्र पूजा करवाने विषेज मननी एकाग्रता करवी अर्थात् अन्य सर्व कार्यथी सर्व प्रकारे मननी निवृत्ति करवी. एवीरीते तन्मयी थइ पूजारूप शुभकरणी करीए ॥२॥

कुसुम न्हवण वर वास सुगंधो ॥ धूप दीप मन साखीरे ॥ अंग
पूजा पण भेद सुणी एम ॥ गुरु मुख आगम भाखीरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ पूजाना चार भेद छे. १ अंगपूजा २ अग्रपूजा ३ भावपूजा ४ प्रतिपत्ति

पूजा. तेमां प्रथम अंगपूजाना पांच भेद छे. १ कुसुम ते मोगरो, चंबेली, गुलाब प्रमुख २ न्हवण ते गंगाजल प्रमुख ३ वर के० प्रधान चंदन, कस्तुरि, बरास प्रमुख ४ धूप ते अगर, सेल्हारसना दशांग धूप ५ घी तथा सूतरनी बत्तियुक्त दीपक. आ सर्वे मननी एकाग्रताए सार्थक छे अने ते विना निरर्थक छे. आ अंगपूजा पण के० पांच भेदे जेम आगममां कहीछे तेमज गुरुमुखथी श्रवण करी छे ॥ ३ ॥

एहनुं फल दोय भेद सुणीजे ॥ अनंतर ने परंपररे ॥ आणा
पालण चित्त प्रसन्नी ॥ मुगति सुगति सुरमंदिररे ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त अंगपूजानुं फल कहे छे. तेनुं कार्य सिद्धरूप फल बे प्रकारनुं छे. १ अनंतर २ परंपर, ते जेम सिद्धांतमांथी श्रवण कर्युं छे तेज प्रमाणे कहुं छुं. जे पूजामां तदाकार वृत्तिये स्वामि सेवक संबंधे प्रवर्त्ते, ते परमेश्वरनी आज्ञा लोपे नहीं. चित्त प्रसन्नी के० मननी हर्ष प्रवृत्तिये आज्ञापालनरूप फलनी प्राप्ति थाय ते पूजानुंअनंतर के० आंतरा रहित फल जाणवुं. कारण के जेने प्रभु आज्ञानी प्राप्ति थइ तेने जैनदर्शननुं सर्वस्व हस्तगत थयुं. अने ए रीते आज्ञा सहित पूजन करनारने परंपर फल तो मुक्ति तथा सुगति के० उत्तम मनुष्यगति अने सुरमंदिर के० देवभुवन प्राप्त थाय. तेमां पण भावाधिकपणे मुक्तिज कही छे. परंतु भवस्थितिनी परिपक्तताना कारणने अभावे तथाविध भावनी निर्मलता न होय तोपण मनुष्य तथा देवनी उत्तम गति पामे ॥ ४ ॥

फूल अक्षत वर धूप पइवो ॥ गंध नैवेद्य फल जल भरीरे ॥ अंग
अग्रपूजा मलि अडविध ॥ भावे भविक शुभगति वरीरे ॥ सु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे अग्रपूजा नामनो बीजो भेद वर्णवे छे. पूर्वे पांच भेद अंगपूजाना कह्या ते साथे त्रण भेद अग्रपूजाना कहे छे. १ अक्षत ते शुद्ध तंडुल २ नैवेद्य ते साकर प्रमुख ३ फल ते सोपारी प्रमुख एम पूर्वोक्त १ न्हवण २ चंदन ३ पुष्प ४ धूप ५ दीप, साथे अग्रपूजाना त्रण भेद मेलवतां आठ भेद थाय छे. ते अंग तथा अग्रपूजा जे भव्यजीव भावसहित करे ते प्राणी शुभगति के० पंचम गति जे मुक्ति तेने प्राप्त करे ॥ ५ ॥

सत्तर भेद एकविश प्रकारे ॥ अठोत्तर शत भेदेरे ॥ भावपूजा
बहुविधि निरधारी ॥ दोहग डुरगति छेदेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे अंग तथा अग्र पूजाना मली सत्तर भेद बतावे छे. १ न्हवण २ विलेपन ३ वस्त्रयुग ४ वासक्षेप ५ पुष्प ६ पुष्पमाला ७ पंचवर्ण पुष्प ८ चूर्ण ९ ध्वजा १०

आजरण ११ पुष्पघर १२ पुष्प पगर १३ अष्टमंगल १४ धूप १५ गीत १६ नृत्य १७ वाजीत्र ए रीते सत्तर ज्नेदथी, एकवीश प्रकारथी, एकसो आठ ज्नेदथी अने एक हजार आठ ज्नेदथी पण पूजा थाय. ए सर्व पूजाना ज्नेद जाव सहित आचरतां सुगति प्राप्त थाय. हवे त्रीजो पूजानो ज्नेद ते जावपूजा ठे. जाव शब्दें परमात्माना स्वरूपने ज्ञानादिक बहुविधि के० घणां प्रकारे निरधारी के० ते ते लक्षणे अवधारीने चिंतववुं अर्थात् मनन करवुं. ते त्रीजी पूजानुं फल, डुर्जाग्य जे स्वरूपनी अप्राप्तिरूप कर्म्म संबंधनी चारे डुर्गति तेनो तथा तेना डुःखनो नाश थाय अने पंचम गतिनी प्राप्ति थाय ते रूप ठे॥ ६ ॥

तुरिय ज्नेद पडिवत्ती पूजा ॥ उपशम खीण सयोगीरे ॥
चउहा पूजा एम उत्तर ऊयणे ॥ जाषी केवल जोगीरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे पूजानो तुरीय के० चोथो ज्नेद जे पमिवत्ती के० प्रतिपत्ति पूजा तेनुं स्वरूप कहे ठे. प्रतिपत्ति के० अंगीकार करवुं अर्थात् पोताना स्वरूपने अविछिन्नपणे आदरवुं ते प्रतिपत्ति पूजा ठे. ते, अग्यारमा उपशम, बारमा क्षिणमोही अने तेरमा सयोगीकेवली गुणठाणे प्राप्त थाय. ए रीते चार प्रकारनी पूजा, ऊत्तराध्ययन सूत्रना सम्यक्त पराक्रम नामना अध्ययनमां केवल ज्ञानना जोगी के० धारण करनारा पुरुषोए उपदेशेली ठे. तेथी अहो जव्यो! मत ममत्वमां ग्रस्त थइ, परजवनी बीकने अवगणी, ऊत्सूत्रना जाषण करनारा, परमेश्वरनी पुष्प, धूप प्रमुख पूजामां आरंज बतावे ठे, ते प्रमाणे केवलज्ञानी जो तेवी पूजामां आरंज थाय ठे एम जाणता होत तो सिद्धांतमां तेवी पूजानुं वर्णन नहीं करतां निषेध करत; परंतु तेमणे तो लाज जाणी करवाने ऊपदेश करेलो ठे. ॥ ७ ॥

एम पूजा बहु ज्नेद सुणीने ॥ सुखदायक शुज्नकरणीरे ॥
जाविक जीव करशे ते लेशे ॥ आनंदघन पद धरणीरे ॥ सु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ माटे हे जव्यो! ए रीते ड्रव्य जाव पूजाना घणां ज्नेद ते सुख के० मुक्तिसुख आपनाररूप शुज्न करणी अर्थात् आत्माने स्वस्वरूप प्राप्त करावनार कर्त्तव्य श्रवण करीने जे जविक जीव, ड्रव्यपूजा तथा जावपूजा करशे ते प्राणी आनंद के० अनिर्वाच्य अतिशय प्रमोदना जरावरूप पद के० मुक्तिपदनी धरणी के० जूमिने प्राप्त करशे ॥ ८ ॥ इति सुबुद्धि जिन स्तवन ॥

## ॥ अथ श्री शीतलजिन स्तवन ॥

॥ राग धनाश्री ॥ मंगलिकमाला गुणह विशाला ॥ ए देशी ॥

शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी ॥ विविध भंगी मन मोहेरे ॥
करुणा कोमलता तीक्ष्णता ॥ उदासीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे शीतलजिन! सामान्य केवलीनास्वामि तमारा स्वरूपमां रमण थयेली, प्रत्यक्ष विरोधाभासी परंतु तमारे विषे अविरोधपणे प्रवर्त्तेली, माटे ते मनोहर छे, एवी त्रिभंगी के० त्रण छे प्रकार जेना एवी एक त्रिभंगीने विषे, वली मूल भंगीना नामोना अर्थ विभेदे भंगांतरनी रचना विविध के० नाना प्रकारनी छे, ते भव्य जीवोने मनोहर के० चमत्काररुप छे, परंतु मनमां भयानकपणे दुर्धर्ष नथी. ते त्रिभंगीनी भंग रचनानुं स्वरूप कहे छे. १ करुणा ते मननी कोमलता, दयाना परिणाम. ते शितलजिनना स्वभावरूप अहिंसक भावेज परिणम्या छे. अहिं करुणानो कोमलता अर्थ पद्य रचनामांज कर्यो छे, ते दोष नथी, कारण के भाष्य निर्युक्तिमां, पोताना पदनो अर्थ पोतेज योजनामां करे तेमां दोष नथी एम कहेलुं छे. वली तीक्ष्णता के० तीक्ष्णवृत्ति, क्रूरता, दुर्धर्षपणुं, आ बीजो भंग छे अने उदासीनवृत्ति ते त्रीजो भंग छे. भव्य जीव, काल परिपाक कारण मलतां सेहेजे सिद्ध थाय, माटे दया चिंतवाथी शुं? वली कर्म पण सेहेजे खपी जाय, माटे कोमलता तथा तीक्ष्णतामां मध्यस्थ भावे प्रवृत्ति करवी ते उदासीनता, एवी शीतलजिननी मनोहर त्रिभंगी छे ॥ १॥

सर्व जंतु हितकरणी करुणा ॥ कर्म विदारण तीक्ष्णरे ॥
हानादान रहित परिणामि ॥ उदासीनता विक्षणरे ॥ शी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेज त्रिभंगीनो संभव बतावे छे. समस्त सूक्ष्म, बादर, त्रस, थावर संसारी जीवमात्रने हितकारी चिंतवणा ते करुणा नामनो प्रथम भंग. ज्ञानावरणादि कर्मनुं विदारवुं, नाश करवुं ते तीक्ष्णता. अहिं निर्दयीपणुं छे अर्थात् बापडा, रांक जडोने कोण हणे एवी रीते कर्मोनो नाश करवामां दया आवती नथी ते तीक्ष्णता नामनो बीजो भंग. हवे त्रीजो भंग उदासीनता, जे उभय विलक्षण होवाथी जेनो असंभवज होय तेनो संभव कहे छे. हान के० छोडवायोग्य अने आदान के० ग्रहण करवायोग्य, तेथी रहित परिणामि अर्थात् छोडवायोग्य वस्तुने छोडवानी इछा नथी अने ग्रहण करवायोग्य वस्तुने ग्रहवानी इछा नथी, ए रीते इछानो निरोध कर्यो छे. ते पण जाणीने अर्थात् कृत्रिमपणे नही परंतु स्वभावेज निरोध करेलो छे. इष्ट अनिष्ट वस्तु उपरथी स्वभाविकरीते हानादानपणुं थयेलुं छे. ते उदासीनता वृत्तिने हे

विक्षण के० विचक्षण धारो. अहिं "च" अक्षर पादपूर्त्ति माटे तजी दीधो छे. हवे उदासीनतानुं लक्षण कहे छे. अनादि निजस्वरूपनुं जे ग्रहण ते आदान अने परपरिणतिनो त्याग ते हान. ए वंनेथी रहित परिणामीपणुं छे, केमके मारा अनादि स्वरूपने हुं पाम्यो तेमां शो हर्ष, जेम ज्ञान दर्शन ते आत्मा अने आत्मा ते ज्ञान दर्शन. तेवीज रीते निश्चय नये त्रण कालमां आत्मामां कर्मनो असंभवज छे तेथी शोक पण शुं. ए रीते उदासीनतानो संभव कह्यो ॥ २ ॥

परदुःखछेदन इच्छा करुणा ॥ तीक्षण परदुःख रीझेरे ॥
उदासीनता उभय विलक्षण ॥ एक ठामें केम सीझेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे ए त्रिभंगीने विषे अर्थ भेदथी त्रिभंगी बतावे छे. संसारी जीवोने अनादि कालथी पुद्गलादि जड संबंधथी थयुं जे दुःख, तेने छेदवानी इच्छा ते करुणा नामनो प्रथम भंग. भगवंत महावीर स्वामि, संगमाना उपसर्गथी पुद्गलोने दुःख पामता देखीने रीझे के० हर्ष पामे अर्थात् ज्ञानी पुरुष एम विचारे के अनादि कालथी ए कर्मो मने दुःख आपता हता, आजे ए दुःख पामे छे एवी विचारणा ते रीझ कहेवाय, ए तीक्षणता नामनो बीजो भंग; अने उभय विलक्षण के० ए बंने लक्षणोथी जे जुदीज छे ते उदासीनता नामनो त्रीजो भंग. ते आ प्रमाणे. जेमके पुद्गलसंगी जीवोने दुःखी जोइने विचारे के, तेउनी भवस्थिति परिपक्व थया विना मारी करुणाथी शुं थाय ? वली ए पुद्गलादिक जड वस्तुने बीजाना करेला उपसर्ग प्रमुखथी दुःखी देखीने हुं राजी थयो, परंतु मारुं स्वरूप निश्चयथी एक आनंदोपेतज छे. माटे जड तेने रोकी शके नही, ते उदासीनता. एम त्रणे लक्षण कह्या. ते एक परमेश्वररूप ठाम के० स्थानकमां शीरीते सिद्धयाय? केमके तेना लक्षण भिन्न भिन्न छे, तेथी एक स्थानमां केम पामिये ? तेनो उत्तर आगली गाथामां आपे छे ॥ ३ ॥

अभयदान ते मलक्षय करुणा ॥ तीक्षणता गुणभावेरे ॥
प्रेरण विणु कृत उदासीनता ॥ एम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे ते त्रिभंगीनुं शीतल परमेश्वरमां अविरोधिपणे अवतरण करी देखाडे छे. कोइ जीवने भय न उपजाववो एवुं अभयदान सर्व जीवने परमेश्वर आपे छे, ते करुणा; ते राग द्वेषरूप मलना क्षयथी थाय छे. हवे सुमति पुछे छे के, तीक्षणता अने करुणाने परस्पर विरोधि भाव छे, माटे ज्यां करुणा त्यां तीक्षणता केम संभवे ? उत्तर के—परमात्मामां स्वगुण स्वभाव एवोज छे के, कर्मो उपर अति तीक्षणता तेमने उत्पन्न थाय. अहिं जीव उपर करुणा अने कर्म उपर तीक्षणता होवाथी मतिमां वि-

रोध आवतो नथी. वली मतिनो अर्थ सुमति करीए तोपण विरोधिपणुं नथी. ए बीजो जंग. हवे त्रीजा जंगनुं स्वरूप कहे छे. प्रेरणा कर्या विना उदासीनता छे. ज्यां इष्टनो वियोग अने अनिष्टनो संयोग थाय त्यां उदासीनता थाय, परंतु ते दुःखनी प्रेरणाथी थइ कहेवाय, पण परमेश्वरने विषे जे उदासीनता छे ते प्रेरणाविना छे, केमके आत्मधर्मथी वीतराग परिणति परिणमि परमात्मवृत्तियें स्वजाव प्राप्ति थइ, तेनो शो हर्ष; तेथी प्रेरणाविना उदासीनता छे. माटे हे सुमति! शीतल परमेश्वरमां पूर्वोक्त रीते त्रिजंगीनी परस्पर विरोधता आवती नथी. ॥ ४ ॥

शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रजुता ॥ निर्ग्रंथता संयोगेरे ॥
योगी जोगी वक्ता मौनी ॥ अनुपयोगी उपयोगेरे ॥ शी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे बे जांगाना प्रयोगथी त्रीजो जांगो थाय एवी पांच त्रिजंगी कहे छे. १ शक्ति २ व्यक्ति. तेमनी साथे "न" जोडवाथी ३ न शक्ति, न व्यक्ति. वली १ त्रिजुवन प्रजुता २ निर्ग्रंथता. तेमनी साथे "न" जोडवाथी ३ न त्रिजुवन प्रजुता, न निर्ग्रंथता. एम जांगा थाय छे. स्वगुणपर्यायने ग्रहवानुं सामर्थ्य ते "शक्ति." तेज शक्तिथी स्वस्वजावनुं प्रत्यक्ष करवुं ते "व्यक्ति." वली स्वगुण ग्रहण करतां शक्ति फोरववानुं शुं काम? ते तो आत्माना गुण हता ते आत्मामां प्रगट थया, माटे "नशक्ति" अने आत्मा पोताना स्वजावमां रम्यो तेमां प्रत्यक्ष शुं कर्युं? तें "नव्यक्ति" ए प्रथम त्रिजंगी. वली त्रण जगतना पूज्य तेथी "त्रिजुवन प्रजुता" अने बाह्य अज्यंतर ग्रंथीथी रहित तेथी "निर्ग्रंथता." स्वेछाये त्रण जगतना पूज्यपणाना अवांछक तेथी " न त्रिजुवन प्रजुता" पासे उंघो मुहपत्ति राखे नही, निर्ग्रंथी थइने फरे नही, तेथी " न निर्ग्रंथता" ए बीजी त्रिजंगी. १ योगी २ जोगी. साथे "न" जोडतां ३ नयोगी, न जोगी. मनवचन कायाना योगना रुंधनारा तेथी "योगी." निजगुणना जोक्ता, तेथी "जोगी." सिद्धस्वरूपने चिंतवनारा तेथी "नयोगी" स्वजावे सिद्धगुणना अंतर्जावी तेथी "नजोगी". ए त्रीजी त्रिजंगी. १ वक्ता २ मौनी. साथे "न" जोडतां ३ नवक्ता, नमौनी. द्वादशांगीना उपदेष्टा, तेथी "वक्ता". आश्रव संबंधी वचन न कथन करे, तेथी "मौनी". अनंता तीर्थंकरे द्वादशांगी प्ररूपी तेमनाथी कांइपण हिनाधिक न कह्युं, तेथी "नवक्ता". तीर्थप्रवर्तनसमये द्वादशांगी वचनवर्गणाए जाषी, तेथी " न मौनी". ए चोथी त्रिजंगी. हवे अनुपयोग उपयोगने संयोगे पांचमी त्रिजंगी बतावे छे. १ अनुपयोगी २ उपयोगी. साथे "न" जोडतां ३ नअनुपयोगी, नउपयोगी. उपयोग प्रयुंज्या विना अनंता पदार्थ केवलज्ञानथी प्रत्यक्ष छे,तेथी "अनुपयोगी". केवल-

ज्ञानोपयोगी, केवलदर्शनोपयोगी, तेथी "उपयोगी". सिद्धअवस्थामां केवलज्ञान केवलदर्शन ए बे उपयोगोनो संभव, तेथी "नअनुपयोगी" परंतु उपयोग प्रयुंजवानुं कारण कोइपण वखते पडतुं नथी, तेथी "नउपयोगी" ए पांचमी त्रिभंगी. ॥ ५ ॥

इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी ॥ चमत्कार चित्त देतीरे ॥ अच
रिजकारी चित्रविचित्रा ॥ आनंदघन पद लेतीरे ॥ शी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इत्यादि अनेक द्विक संयोगी त्रिभंगीउना भांगा छे. जेमके १ कामक्रमें २ क्रोधक्रमें. साथे "न" जोमतां ३ नकामक्रमे, नक्रोधक्रमे. स्वस्वरूप ग्रहवानो काम के० अभिलाष तेमां क्रमके० व्यापि रेहेवापणुं. मोहादिक शत्रु हणतां क्रोध व्यापि रह्यो छे. संज्वलननो लोभ खपावी बारमे गुणठाणे चड्या त्यारे "नकामी नक्रोधी". अहिं कामक्रोधादि सर्वना त्यागी छे. ए त्रिभंगी थइ. तेमज १ सकामी २ निष्कामी ३ नसकामी ननिष्कामी. स्वरूप ग्रहवाने अभिलाषा, तेथी "सकामी". परपरिणतिने नही ग्रहवाथी, "निष्कामी". कामकर्मने त्यागवाथी, "नसकामी" अने पोताना अनंतगुणोमांथी एकपण गुण उंछो न ग्रहण कर्यो, तेथी "ननिष्कामी". इत्यादि अनेक त्रिभंगीउ छे. असंभवपणाने प्राप्त करती थकी चित्तने चमत्कार उपजावनारी छे, केमके चित्र के० नानाप्रकारना विचित्रा के० अनेक भंग तरंगनी त्रिभंगी ते असंभव संभवरूप तेथी अचरिजकारीछे. जेमके करुणा, त्यांज तीक्ष्णता, त्यांज उदासीनता, ए केम संभवे माटे आश्चर्यकारी छे. ए त्रिभंगीउनी फलप्राप्ति ते ज्ञानानंदना भराव रूप जे मुक्तिपद तेने लेतीके० ग्रहण करनारी छे. अर्थात् त्रिभंगीउना भंग तरंग, केवलज्ञान केवलदर्शनात्मक छे, अथवा एकेक भंग ते पण आनंदघनपदथी व्यापी रहेल छे ॥ ६ ॥ इति शीतलजिन स्तवन.

## ॥ अथ श्रीश्रेयांसजिन स्तवन ॥

॥ रागगोडी ॥ अहो मतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ आतमरामी नामीरे ॥ अध्या
तम मत पूरणपामी ॥ सहज मुगतिगति गामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीश्रेयांस प्रभुने साक्षीभूत करीने कहेछे. हे सुमति ! केवलज्ञानादि लक्ष्मीवाला श्रेयांस परमात्मा आपणा अंतर के० अंतःकरणना सर्वभेदना जामी के० जाणनार छे. ते सर्वना अंतरजामी तेथीज तेनुं नाम आतमाराम छे. वली जेणे स्वस्वरूप संबंधी संपूर्ण ज्ञान अखंडितपणे प्राप्त करेल छे, तेथी अध्यात्ममतना पूरण पामी छे, वली निःप्रयासे मुक्तिगतिने प्राप्त करनारा छे ॥ १ ॥

सयलसंसारी इंडियरामी ॥ मुनिगुण आतमरामीरे ॥
मुख्यपणे जे आतमरामी ॥ ते केवल निःकामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ सर्व संसारी जीवो, शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श रूप इंडियोना सुख- जागमां लीनपणे प्रवृत्ति रह्या ठे. अने सिद्धांत वचनानुसारे आत्मस्वरूपने साधनारा मुनिराजो ज्ञानादि आत्मगुणोमां रमी रह्या ठे. तेथी निश्चयनयने मतें मुख्यपणे, गुणगुणीने अजेदस्वरूपे, आत्मस्वरूपमां तद्रूपपणे प्रवृत्ति करनारा जे मुनिराज, तेमने तो निःकेवल एक आत्मस्वरूपनी कामना शिवाय अन्य अजिलाष मात्र नथी, तेथी तेउ निष्कामी ठे ॥ २ ॥

निजस्वरूप जे किरिया साधे ॥ तेह अध्यातम लहियेंरे ॥ जे
किरिया करी चउगति साधे ॥ ते न अध्यातम कहियेंरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! जे प्राणी पोताना आत्मस्वरूपमां रमतां थकां प्रतिक्रमणादि पापनिवर्त्तनरूप क्रियामात्रने साधे ते प्राणी अध्यात्म के० आत्मामां अंतवर्ती रह्युं एवुं स्वस्वरूप अविछेदकरूप आत्मस्वरूप पामे अर्थात् तेने अध्यात्म लहिये के० कहिए. परंतु जे प्राणी निजस्वरूपमां नही रमतां क्रियाकरी चारगति सिद्धकरे अर्थात् शुजकरणी करी देव तथा मनुष्यनी गति सिद्धकरे अने अशुज करणी करी नरक तिर्यंचनी गति सिद्ध करे; दृष्टांत के साधुपणामां देव अने मनुष्यनी गति सिद्ध करे अने साधुपणुं ठतां वंचक करणी करी अथवा प्राणातिपातादियुक्त करणी करी नरक तिर्यंचगति सिद्ध करे, ते क्रियाने अध्यात्म स्वरूप अनुयायी क्रिया न कहीए ॥ ३ ॥

नाम अध्यातम ठवण अध्यातम ॥ इव्य अध्यातम ठंडोरे ॥
जावअध्यातम निजगुण साधे ॥ तो तेहशुं रढ मंमोरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मक्रियाना चार प्रकार ठे. तेमां प्रथम, अध्यात्मशब्दनो मात्र अर्थ पण न जाणे अने जे पुढे तेने कहे के अमे अध्यात्मी ठईए ते नाम अध्यातम. बीजो अध्यात्म स्वरूपनो अक्षरविन्यास आदि स्वरूप ते स्थापना अध्यात्म. त्रीजुं, रेचक, पुरक, कुंजकादि प्राणायामना जेदे बाह्यवृत्तिए एवुं ध्यान बतावे के जे मने देखी लोको एम जाणे के तेणे अंतरवृत्तिए आत्मानुं स्वरूप प्रत्यक्ष कर्युं देखाय ठे, परंतु पोते तो कोरानेकोरा होय, ते इव्य अध्यात्म. आ त्रणे अध्यात्म ठांकवा योग्य ठे तेथी तेउने तजीयो अने जे आत्मस्वरूपमां रमणतासहित क्रियामां प्रवर्त्तनरूप जाव ते जाव अध्यात्म. ते आत्माना ज्ञान दर्शनादि गुणोने सिद्धकरे, निर्मल करे. माटे अहो जव्यो ! जो तमारे निजगुणनी सिद्धता करवी होय तो जाव अध्यात्मनीज रटना करो.

शब्द अध्यातम अरथ सुणीने ॥ निरविकल्प आदरजोरे ॥
शब्द अध्यातम भजना जांणी ॥ हान ग्रहणमति धरजोरे ॥ श्रीश्रे० ॥५॥

अर्थ ॥ हे भव्यो ! आत्माने अंतवर्ती आत्मस्वरूपमां तदाकारपणे रमणता करवी ते अध्यात्मशब्दनो अर्थ छे. ते गुरूमुखथी श्रवणकरी, निश्चयनये आत्मानेविषे स्वरूपनुं निरविकल्पिपणुं अर्थात् अभेदिपणुं छे ते आदरजो के० अवधारजो. वली अध्यात्मशब्दना बीजा बे भेद छे. एकमां स्वरूप अध्यात्मीपणुं छे अने बीजामां स्वरूप अध्यात्मीपणुं नथी. माटे भजना समजजो अर्थात् मात्र नामपण अर्थ रहित एवो अध्यात्मशब्द, स्वरूपनी सिद्धताना अभावने लीधे हान के० छांडवा योग्य छे, तेथी तेमां छांडवानी बुद्धि धारजो, अने अर्थ अध्यात्ममां स्वरूपनी सिद्धता होवाथी तेने ग्रहण करवानी बुद्धि धारजो ॥ ५ ॥

अध्यातम जे वस्तु विचारी ॥ बीजा जाण लबासीरे ॥
वस्तुगतें जे वस्तु प्रकासे ॥ आनंदघन मत वासीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे वस्तु के० आत्मतत्त्वने तदाकार स्वरूपे विचारनारा, लक्ष्य लक्षणना अभिन्न विचारी, तेतो अध्यात्मने ग्रहण करेछे; अने जेउं अध्यात्मस्वरूपथी भिन्न तथा शुन्य हृदय छतां हठ ग्राहीपणे अध्यात्ममतना ममत्वी, मात्र निश्चयनयना वाद करनार तेउंतो लबासीके० लबाड छे. जे मुनिराज वस्तु के० सिद्धांतनेविषे गत के० प्राप्त थयेल एवुं वस्तु के० अध्यात्म तत्त्वप्रकासे के० प्रगट करे अर्थात् सिद्धांतमां जेम अध्यात्म स्वरूप कह्युं छे तेमज प्रकासे, ते आनंदघन के० अनंत केवलज्ञानीउंनो जे सप्तनयाश्रित मत के० जिनमत, तेनो वासी होय ॥ ६ ॥ इति श्रीश्रेयांसजिनस्तवन.

## ॥ अथ श्रीवासुपूज्यजिन स्तवन ॥

॥ राग गोडी तथा परज ॥ तुंगीयागिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

वासुपूज्यजिन त्रिभुवनस्वामी ॥ घननामी परनामीरे ॥
निराकार साकार सचेतन ॥ करम करम फलकामीरे ॥ वासु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो भव्यो ! वासुपूज्य प्रभु त्रणभुवनना पूज्य होवाथी स्वामि छे. वली जे घननामी के० घणां नामवालां छे अने जे परमात्माना नामो ते ते परिणामेज परिणमि रह्या छे. हवे संसारी जीवोना बे भेद छे १ बहिरात्मा २ अंतरात्मा. तेमां अंतरात्मानी अहिं विवक्षा करतां, निराकार ते सामान्य उपयोग अने साकार ते विशेष उपयोग, एवां उपयोग लक्षणसहित चेतन छे. ते करम करमफलकामी के० सामान्य

विशेष शुजाशुज उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन ज्ञानावरणादि कर्मोनो कामी के० अजि-लाषी तेमां शुज उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन शुजपुण्य प्रकृतिनो कामी के० अजिलाषी अने अशुज उपयोगे प्रवर्त्ततो चेतन अशुज पाप प्रकृतिनो कामी बे ॥ १ ॥

निराकार अजेद संग्राहक ॥ जेदग्राहक साकारोरे ॥
दर्शनज्ञान डुजेद चेतना ॥ वस्तुग्रहण व्यापारोरे ॥ वासु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे निराकारनुं लक्षण कहे बे. जेदरहित जे संग्रह करनार ते निराकार, दर्शनोपयोग अने जे जिन्न जिन्न स्वरूपनो ग्राहक ते साकार, ज्ञानोपयोग. एवी रीते निराकार अने साकार बे उपयोगना जेदथी चेतनाना पण बे जेद थया. एवी रीते सामान्य विशेष बे उपयोगें जडथी आत्मतत्त्वने जिन्न के० जुडुं करी लेवुं ते बे व्यापार के० प्रवर्त्तन ते जेनुं एवो चेतनावंत लक्षणयुक्त अंतरात्मा बे. ॥ २ ॥

कर्त्ता परिणामी परिणामो ॥ कर्म जे जीवे करीएरे ॥
एक अनेक रूप नयवादें ॥ नियतें नर अनुसरीएरे ॥ वासु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ कर्मनुं कर्त्तापणुं ते परिणामि के० व्यापीने परिणामो के० परिणमवुं ते बे; अर्थात् कर्मनुं कर्त्तापणुं ते परिणामे व्यापि रह्युं बे पण जीवमां नथी. कोइ पुढे के जीवमां कर्त्तापणुं केम नथी, तेने उत्तर के, जे परिणामे प्रवर्त्ते ते कर्मने जीव करे. जेमके मिथ्यात्वपरिणामे परिणमतो जीव, मिथ्यात्व कर्मप्रकृतिने करे पण अविर-तिने न करे. तेथी कर्त्तापणुं परिणाममां बे, पण जीवमां नथी. जे करीए ते कर्म तेथी करवामात्र कर्म तो एकज बे, परंतु नयवादे के० नय वचन मार्गें तेनां अनेक रूप बे. अर्थात् वस्तु तत्त्वे एक नयवचन मार्गें ज्ञानावरणादि कर्म आठ बे. ते हे जव्य नर के० मनुष्यो नियतें के० निश्चयथी अनुसरिये के० अवधारो. ॥ ३ ॥

डुःखसुखरूप करमफल जाणो ॥ निश्चय एक आनंदोरे ॥
चेतनता परिणाम न चूके ॥ चेतन कहे जिनचंदोरे ॥ वासु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे जव्यो ! डुःखस्वरूप अने सुखस्वरूप एवां बे कर्मनां फल बे. ते व्यव-हारनयनी अपेक्षायें बे अने निश्चयनयने मते तो त्रणे कालमां निज स्वजावनोज आत्मा कर्त्ता, एक अद्वितीय आनंदमयी बे. चेतनाने विषे चैतन्य धर्म ते चेतना-पणुं बे; ते चेतनतानो परिणाम के० परिणमन धर्म ते चेतना कदि मुके नही, केमके ते तेनो धर्म, गुण बे. धर्मथी धर्मीनी उलखाण थाय, गुणथी गुणीनी उलखाण थाय. यथा ॥ धर्मी अपने धर्मकुं ॥ न तजे तिनूकाल ॥ आत्मज्ञान गुण नव तजे ॥ जड कि-

रियाकी चाल ॥ १ ॥ माटे धर्मने अभावे धर्मीनो अभाव अने तेने सद्भावे तेनो सद्भाव, तेथी चेतनता धर्मवंतने श्रीजिनचंद्रे चेतन कह्यो ॥ ४ ॥

परिणामी चेतन परिणामो ॥ ज्ञान करमफल भावीरे ॥ ज्ञान करमफल चेतन कहिये ॥ लेजो तेह मनावीरे ॥ वासु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ माटे चेतना धर्मे परिणामि के० व्यापी रह्यो एवो चेतन जे जीव तेनुं परिणामो के० परिणमन शुं छे, अर्थात् धर्म शुं छे ? ते कहे छे. ज्ञान के० निजस्वरूपज्ञान, जेमके हुं चेतन छुं अने पुद्गलादिकमां रमी रह्योछुं, ते जड छे. हुं अविनाशी छुं, जड विनाशी छे. हुं चैतन्य धर्मी छुं, शास्वत छुं, ते सडण पडण विध्वंसन धर्मी छे. तेथी ते ज्ञानस्वरूप आत्मानुं करम के० करवुं ते शुद्ध आत्मस्वरूप प्राप्तिरूप फल तेनो भावि के० विचारनारो तेथी ज्ञान के०आत्मज्ञाननुं करम के० करवुं, प्रयुंजवुं तेनुं फल ते स्वरूप प्राप्तिरूप तेने चेतनावंत चेतन कहीए एटले लक्षण सहित चेतन कहीए; केमके सिद्धांतमां स्वरूप प्राप्ति थइ तेनेज लक्षण सहित चेतन कह्यो छे; अने बीजा तो कहेवा मात्र चेतन जाणवा. माटे अहो भव्यो ! ते शुद्ध आत्मस्वरूपने मनावी लेजो के० निरंतर तेनी साथे हेत राखजो, अर्थात् स्वरूपमांज प्रवर्त्तजो. अन्य कांइ पण चिंतवनमां प्रवर्त्तशो नहीं ॥ ५ ॥

आतमज्ञानी श्रमण कहावे ॥ बीजा तो द्रव्य लिंगीरे ॥ वस्तु गतें जे वस्तु प्रकासे ॥ आनंदघन मति संगीरे ॥ वासु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे अंतरात्मवंत ज्ञानीने साधु कहीए, कारण के ते शुद्ध आत्मस्वरूपना ज्ञाता छे. जेने आत्मस्वरूप प्रत्यक्ष थइ रह्युं छे तेज श्रमण के० साधु कहेवाय छे. "नाणेणय मुणी होइ" इति वचनातः अने बीजा जे स्वरूपज्ञानथी रहित छे, तेतो मात्र ओघा मुहपत्तिना धारक द्रव्यलिंगी छे. स्वरूप ज्ञानमां भावलिंगीपणुं छे. ओघा मुहपत्ति धारण करवामां द्रव्यलिंगीपणुं छे. माटे वस्तुगतें के० आत्मवस्तु जेम छे, तेमज आत्मवस्तु तत्त्वने जे प्रकासे के० प्रगट करे अर्थात् आत्माथी बहार स्वरूपज्ञान नथी परंतु आत्मानी अंदरज स्वरूपज्ञान छे, एवुं जे कहे. ते आनंदघन मति संगी के० चित् आनंदनो समुह तेनी मति जे सुमति तेनो संगी के० सहचारी थाय. ॥ ६ ॥ इतिश्री वासुपूज्यजिन स्तवन.

## ॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥

॥ राग मल्हार ॥ ईडर आंबा आंबलीरे ॥ ए देशी ॥

दुख दोहग दूरें टल्यारे ॥ सुख संपदशुं भेट॥धींग धणी माथे कियारे॥ कोण गंजे नरखेट ॥ विमलजिन ॥ दीठा लोयण आज ॥ मारासिध्या वंछितकाज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति ! विमलनाथ परमात्माना दर्शनथी चारे गतिना दुःख अने अनादि कालनुं अज्ञान संबंधी दुर्भाग्य दूर टल्या के० नाश पाम्युं. वली प्रभुने निरखतां हर्ष निर्भर गात्रो थवाथी आत्माने उल्लास प्रगट थवारूप सुख थयुं. ते सुखथी, शमदम क्षम विचक्षण रुची, प्रभु स्वरूपानुयायी अनुभव संबंधी प्रीत. तेथी प्रगट थती निजस्वरूप संपदा जे रत्नत्रय तेनो भेट के० मेलाप थयो. हे सुमति ! परमात्माना दर्शन मात्रथी दुःख दौर्भाग्य दूर थया अने सुखसंपत्तिनी प्राप्ति थई, तो एवा धींग के० समर्थने माथे धणी कर्या छतां, अर्थात् बलवान धणीना सेवकने, खेटनर के० खानारा अने मारनारा एटले के रातदिवस नुकशान करवाना इलाजमांज प्रवर्त्तनारा एवा मोह कषायादि जे नर, ते पराभव करवाने समर्थ नथी. एवा विमलनाथ प्रभुने मारा आजे नेत्रोथी दीठा. मारो आजनो दिवस कृतार्थ थयो अने प्रभु दर्शनथी मारां मनोवांछित कार्य सिद्ध थयां ॥ १ ॥

चरणकमल कमला वसेरे ॥ निरमल थिरपद देख ॥
समल अथिरपद परहरीरे ॥ पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आ गाथानो अर्थ अन्वयथी करीए छीए. कमला के० लक्ष्मीए पोताना निवासनुं स्थान, कमल कादवमां उत्पन्न थएलुं होवाथी समल के० मल सहित छे एम जाणी तथा ते कमलनी पांखडीउ खरी जती होवाथी अन्य कमलमां निवास करवानी जरुर पडे एम कमल स्थानकने अस्थिर पण जाणी,वली तेज कमलने पामर पेख के० रांकसमान पण जाणीने ते कमलरूप स्थानने परिहरि के० तजी दीधुं. अने हे सुमति ! तेणीए निरमल के० कर्मरूप मेलरहित विमलनाथ प्रभुना चरणकमल के० पगरूप कमलने थिरपद देख के० स्थिर स्थानक देखीने तेमां निवास कर्यो अर्थात् त्रण जगतनी लक्ष्मी प्रभुना चरणकमलमां निवास करे छे. मुग्ध प्राणीउ लक्ष्मीनो वास अन्यस्थलमां धारे छे, तेउ जूठा छे, कारण के विमलनाथ प्रभुना चरणकमलनी सेवा करवाथी निर्वाणपदादिक समस्त संपदाउ मले छे ॥ २ ॥

मुजमन तुऊपद पंकजेरे ॥ लीनो गुण मकरंद ॥
रंक गणे मंदरधरारे ॥ इंद चंद नागिंद ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु! जेम कमलना मकरंद के० पराग उपर ज्रमराउ लीन थई कमलमां तदाकार थाय तेम मारो मनरूप ज्रमर, अनंत ज्ञानादि गुणयुक्त तमारा चरणकमलमां लीनो के० तदाकार थई रहेल ठे अने ते हर्षेथी एवो उन्मत्त थयो ठे के मंदरधरा के०मेरु पर्वतनी सुवर्णमय जूमि वा नंदनवननी अत्यंत रमणीक पृथ्वीने रंक समान गणे ठे, अर्थात् तमारा चरणकमलनी सेवारूप निवासनी आगल ते वस्तुउ शी गणतीमां ठे? एम मारो मनरूप भ्रमर जाणे ठे, एटलुंज नही पण देवोना स्वामि इंद्र, ताराग्रहनास्वामि चंद्र अने नागेंद्रने पण रांक तुल्य गणे ठे; एवुं मारुं मन मोहुं थयुं ठे ॥ ३ ॥

साहेब समरथ तुं धणीरे ॥ पाम्यो परम उदार ॥
मन विसरामी वालहोरे ॥ आतमचो आधार ॥ विमल० ॥ दी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहो समर्थ साहेब के० प्रजु, तमारा जेवो धणी के० नाथ मने प्राप्त थयो तेथी मारा सर्वकर्मरूप शत्रुउ, हवे मने पराजव करी शकशे नही. वली हे प्रजु! तमो संतुष्ट थये पोतानुं परमपद आपो ठो तेथी परम उदार एवा तमे मने प्राप्त थया. वली मारा मनने संसारिक आहट दोहट रूप चिंतानो अतिशय जार होवाथी शांति नहोती तेथी हे प्रजु! तमो मलवाथी मनने स्थिरतारूप शांति थइ तेथी तमो मनना विसरामी ठो. हे प्रजु! तमो मने पूर्ण वहाला ठो एटलुंज नही पण मारा आत्माने स्वरूपप्राप्तिमाटे परम आधार ठो ॥ ४ ॥

दरिशन दीठे जिन तणोरे ॥ संशय न रहे वेध ॥
दिनकर करजर पसरंतारे ॥ अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हे सुमति! विमलनाथ प्रजुने में नेत्रथी निरख्या, ते प्रजुना दर्शननो प्रजाव एवो ठे के, जाव विशुद्धताए ते प्रजुनुं दर्शन थतांज, जेनी मति एकाग्रताए ते दर्शनमां स्थिरता पामी तेने स्वस्वरूपने माटे मनमां संशय के० ज्रांति रहे नही, एटलुंज नही पण प्रजुनुं अने मारुं स्वरूप एक ठे अने तेमां वेध के० विरोध नथी एवी मननी निर्दोष स्थिति थइ जाय. दृष्टांत के दिन कर के० सूर्यना कर के० किरणोनो जर के० समूह जगतमां प्रसरतांज अंधकारनो प्रतिषेध के० निषेध थई जाय तेज प्रमाणे प्रजुनुं दर्शन थतांज संशय तथा वेध मात्र रहे नही. ॥ ५ ॥

अमीय नरी मूरति रचीरे॥ उपमा न घटे कोय ॥
शांत सुधारस ऊीलतीरे ॥ निरखत तृपति न होय ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परमात्मानी मूर्तिना स्वरूपनुं अधिक वर्णन एक मुखें केटलुं करी शकुं? तोपण अल्पमां बहु कहीश. जगतमां अमृतसमान प्रशंसापात्र कोइ वस्तु नथी, तेथी निःकेवल अमृतमयज जेम कोईए रची होय तेम तमारी मूर्ति स्वनाविक तेवी रचायेली ले. जगतमां एवो कोई पदार्थ नथी के जेनी उपमा तमारी मूर्तिने आपी शकाय, तेमज तमारी मूर्तिमां उपमा संबंधी अतिव्याप्ति, अव्याप्ति के असंनव एवो दोष पण नथी. वली प्रत्यक्ष के अनुमान प्रमाण पण उपमा संबंधमां बीजा पदार्थने दोरतुं नथी; अहीं जे मूर्तिने अमीयनरी कही ते तो मात्र वचन व्यापार करवारूप उपमा कही ले; परंतु प्रनुनी मूर्ति तो राग द्वेषना अनावथी परम शांतरूप अमृत रसमांज ऊीली रही ले, जाणे मूर्तिमान शांतरस द्रवतो होय, तेवी मूर्ति ले. वली अमृतोपमा पण घटती नथी, कारण के अमृतथी तो मात्र अंगोपांग अजर थाय ले अने प्रनु मूर्तिना शांतरसथी आत्मा जन्ममरणरहित थाय ले. तेथी प्रनुनी मूर्तिने निरखतां निरखतां मारी चक्षुने, दर्शननी इछाने अने हृदयनेत्रने तृप्ति थती नथी.

एक अरज सेवक तणीरे ॥ अवधारो जिनदेव ॥
कृपा करी मुज दीजियेरे॥ आनंदघनपद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे सुमतिवंत आनंदघन विमलप्रनुने आधीन थइ विनंति करे ले. हे जिनदेव! सामान्य केवलीना स्वामि, हुं लानानंद नामनो तमारो अनुचर, सेवक, तेनी एक अरज अवधारो के० मानो. मारा उपर संपूर्ण कृपा करी मने आपवानी इछा करता हो तो, बीजुं तो शुं परंतु पांच अनुत्तरवासी देवोना सुखनी पण हुं अनिलाषा राखतो नथी परंतु निजस्वरूपथी उत्पन्न थयो जे आनंद, तेनो जे समूह ते रूप पदने प्राप्त करावनारी एवी तमारा चरणकमलनी सेवा आपो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअनंतजिन स्तवन ॥
॥ राग रामगिरि ॥ कमखानि देशी ॥

धार तरवारनी सोहेली दोहेली ॥ चउदमा जिनतणी चरणसेवा ॥
धारपर नाचता देख बाजीगरा ॥ सेवना धारपर रहे न देवा ॥ धार० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन आ पंचम कालमां जैनदर्शनीउनी जैनदर्शनथी विरुद्ध आचरणा देखी दुःखी थवाथी तेमज अनंतप्रनु सेवित चारित्रनी पण दुषमकालमां

दुष्करता देखी महादुःखी थवाथी सुमतिने कहे छे. हे सुमति! तरवारनी तीक्ष्ण धार उपर उघाडे पगे चालवुं ते दोहेलुं छे, पण विचार करतां सेहेलुं छे, परंतु चउदमा श्रीअनंतनाथ प्रभुना चरण के० चारित्रनुं सेवन ते दोहेलुं छे. अर्थात् तरवारनी धार करतां चारित्रनी धार तीखी छे. जुओ के चोगठामां चारे बाजुए तरवारने बांधी ते तरवारोनी धारोनी वचमां गुलांटा खातां खातां निकली जनारा एवा बाजीगरोने नाचता दीठा छे, परंतु चारित्रनी आसेवनारूप धारा उपर महाशक्तिवंत एवा देवो पण रही शकता नथी, देवताओने व्रतना उदयनोज असंभव तो चारित्र प्रवर्त्तन तो क्यांथीज होय. तेथी तरवारनी धारा सुगम अने चारित्र प्रवर्त्तनरूप धारा विषम छे. ॥ १ ॥

एक कहे सेवियें विविध किरिया करी ॥ फल अनेकांत लोचन न देखे ॥
फल अनेकांत किरिया करी बापडा ॥ रम्रवडे चारगतिमांहि लेखे ॥ धा०॥२॥

अर्थ ॥ कोइ गणभेदी, समुदायना नायक कहे छे के विविध प्रकारे तपस्या प्रमुख किरिया के० आचरणा आचरीने परमेश्वरना चारित्रनी सेवना करीए, कारण के चारित्रनुं मूल क्रिया छे जेम ढुंढकादि करे छे तेम. ते प्रमाणे बोलनारा प्रवचन रहस्यना अजाण छे. कारण के नथी जेमां एकांत फल ते अनेकांत फल एवी अनेक क्रियाओनां अनेक फल छे. जेम क्रिया भिन्न भिन्न तेम तेनां फल पण भिन्न भिन्न उदय पण भिन्न भिन्न भोगपण भिन्न भिन्न. जेम शालिभद्रना भवमां देवसुख ते संगमाना भवमां दान देवानुं फल तेम. आ सर्व शुं लोचने नथी जोतां? आ प्रमाणे अनेकांत छे फल जेनां एवी अनेक क्रिया करीने परमार्थशुन्य ते निरर्थक छतां आंधीना रेंटनी जेम चारे गतिमां रडवडे के० परिभ्रमण करे ते लेखे के० न्याये अनेकांत फलवाली गतिनी समृद्धि थवाथी भवभ्रमण टले नहीं. तेथी आत्मानी सिद्धि पण केम थाय? ए प्रमाणे एकांत क्रियाज करवी ते तो आश्रव छे. ॥ २ ॥

गछना भेद बहु नयण निहालतां ॥ तत्त्वनी वात करतां न लाजे ॥
उदर भरणादि निज काज करता थकां॥मोह नडिया कलिकाल राजे ॥धार३॥

अर्थ ॥ गछ के० समुदायविशेष, जेम के खरतर, तपा, लोंका प्रमुख गछो; तेमना मतोना भेद ग्रहण करतां, प्रतिभेद पण ग्रहण थाय. तेवा मत मतांतरना बहु के० घणांभेद प्रतिभेद नयण निहालतां के० तात्विक दृष्टियें, हृदयरूप नेत्रें, विचारी जोतां एम लागेछे के शुं ते निर्लज्जोने आत्मतत्त्वनी वातो करतां शरम नहीं आवती होय? कारणके ममत्व अने तत्त्वनी वातने परस्पर विरोध छे. जेम वृक्षना को-

टरमां अग्नि होय तो वृक्ष नवपल्लव न थाय, तेम आत्मामां ममत्व होय तो आत्म तत्त्वरूप वृक्ष नवपल्लव न थाय.तेथी शुद्ध तत्त्वज्ञानी मत ममत्वीने तत्त्वनी वातो करतां देखीने हसे छे. गछ नेदीउने जे जे धर्म करणी करवा प्रमुख थाय छे ते उदर नरवा निमित्तेज थाय छे. तेमज आदि शब्दथी क्रोध, मान, माया, लोन, राग, द्वेष, उन्नति प्रमुखने अर्थेज थाय छे. उत्तम पुरुष तो लाखमां कोइक हशे. बाकी बीजा तो वेशना धारण करनारा जाणवा. आ दुषम कलिकालमां मोहनुं प्रबल राज्य तेथी संसारीउं करतां पण गछधारीउं उपर तेनुं विशेष शासन चाले छे. रहस्य ए छे के, संसारी जीवोमांथी कोइए मोहने गलेथी, कोइए छातीएथी अने कोइए केडथी पकडेल छे अने गछधारीएतो मोहने सर्वांगे मस्तक सुधी पकडेल छे. ॥ ३ ॥

वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो ॥ वचन सापेक्ष व्यवहार साचो ॥
वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल ॥ सांजली आदरी कांइ राचो ॥ धार० ॥४॥

अर्थ ॥ जे मतवादी होय ते अपेक्षा सहित बोलनारो थायज नहीं. तेतो एकांतवादि, निरपेक्षी अर्थात् अपेक्षारहित बोलनारा थाय. तेवा अपेक्षा रहित वचनें, अत्यंत कठिन चारित्रमां प्रवर्त्तन होय तोपण ते व्यवहार जूठो के० आज्ञाथी विरुद्ध जाणवो. तेथी हे नव्यो, वांछायुक्त ते सापेक्ष कहेवाय. जेम निश्चय संबंधी वचन व्यवहारनी वांछा राखे छे तेम, ज्ञान क्रियासहित उत्सर्ग अपवादयुक्त, सापेक्ष वचने जे व्यवहार के० चारित्रनुं प्रवर्त्तन ते सिद्धांत अनुयायी व्यवहार छे. ते चारित्र आज्ञाथी अविरुद्ध तेथी साचुं छे. तेथी वांछा विनानुं अर्थात् अपेक्षा वगरनुं वचन ते निरपेक्ष वचन कहेवाय. तेवा वचनवाला एकांतवादीउनुं चारित्र, संसारफल आपनारुं छे. तेथी तेवा एकांतवादीउना वचनस्वरूप अनिलाषीउने सांजलवा योग्य नथी. कदाच सांजलवामां आवी जाय तो आदरवा नही अने कदाच आदरवामां आवी जाय तो तेमां राचवुं नहीं. निरपेक्ष वचन जैनमतथी विरुद्धज छे. तेथी तेवां वचनो सांजली राग करवो नहीं. यथा ॥ नाषे निरपेक्षक वचन ॥ क्रिया देखावे क्रूर ॥ वाको तप संयम सरव ॥ कर्यो करायो धूर ॥ १ ॥ तेथी एकांत क्रियापक्षी, एकांत पूजापक्षी, एकांत नक्तिपक्षी, एकांत गुरुपक्षी, इत्यादि वचनना कथन करनाराउ चारगतिमां नटकनारा छे ॥ ४ ॥

देवगुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे ॥ केम रहे शुद्ध श्रद्धा न आणो ॥
शुद्ध श्रद्धानविण सर्व किरिया करी ॥ छारपण लींपणो तेह जाणो ॥ धार० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अहो जव्यो ! ते एकांतवादिर्उना वचनथी शुद्धदेव, शुद्धगुरु अने शुद्ध धर्मनी परिक्षा केम थइ शके? अर्थात् नज थइ शके; अने शुद्ध देव गुरु धर्मनी परिक्षाने अजावे शुद्ध देव गुरु उपर श्रद्धा के० प्रतीत ते पण केम रहे. कारण के साची वस्तनी ओलखाण विना साची प्रतीत पण न थाय, ए वात श्राणो के० अव-
...ा-प्रतीतविना सर्व क्रियानुं प्रवर्त्तन, ते ठार के० राख अथवा ठाण प्रमुखनुं लींपण करवा तुल्य निरर्थक ठे ॥ ५ ॥

...त्सूत्र जाषण जिस्यो ॥ धर्म नहीं कोई जगसूत्र सरिखो ॥
...े जविक किरियाकरे ॥तेहनो शुध्द चारित्र परखो॥धार०॥६॥

...पेक्ष उत्सूत्र जाषण ठे, तेथी सूत्रथी विरुद्ध जाषण समान बीजुं ...ां उत्सूत्र जाषीने महापापी कहेलो ठे; अने सूत्रमां जे प्रमाणे ...ाणे जाषण करवुं, ते समान तप संयमादिमां पण धर्म नथी. तेथी ...यजीव, तप संयमादि क्रिया करे ते चारित्रवंतनुं शुद्ध चारित्र परखो जेवुं ऋजदमा तीर्थंकरनुं चारित्र तेवुंज तेनुं चारित्र जाणजो ॥ ६ ॥

...र संक्षेपथी ॥ जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे ॥
...ाल सुख अनुजवी ॥ नियत आनंदघनराज पावे ॥धा० ॥७॥

...पदेशनो सार अर्थात् सूत्र अनुयायी चारित्रनुं प्रवर्त्तन ते संक्षे-...व्यप्राणी निरंतर पोताना चित्तमां धारी राखे. सार ए ठे के व-...शुद्ध धर्मतत्वनुं स्वरूप पुछतां, हठग्राहीपणुं शिखवे ठे, तेथी ...देश अंगीकार न करवो; अने जे जव्य प्राणीर्ड सूत्र अनुसारे ... के० निरूपम देवता संबंधी वा मनोहर मनुष्य संबंधी घणां ...ागरोपम काल सुधी सातावेदनीना विपाकोदयने अनुजवी के० जोगवीने नियत के० निश्चयपणे, संदेह रहितपणे परमानंद, अतिंद्रिय आनंद स-मूहने पामे अर्थात् मोक्षस्थान पामे ॥ ७ ॥ इति अनंतजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीधर्मजिन स्तवन ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

धरम जिनेसर गाउं रंगशुं ॥ जंग म पमशो हो प्रीति ॥ जिनेसर ॥
बीजो मनमंदिर आणुं नहीं ॥ ए अम कुलवट रीत ॥ जिनेसर ॥धर्म०॥१॥

अर्थ ॥ आनंदघन शुद्ध चेतनावंत थइ, जावोल्लासें हर्षोत्कर्षवंत थइ, परंतु प्री-

टरमां अग्नि होय तो वृक्ष नवपल्लव न थाय, तेम आत्मामां ममत्व होय तो आत्म तत्त्वरूप वृक्ष नवपल्लव न थाय.तेथी शुद्ध तत्त्वज्ञानी मत ममत्वीने तत्त्वनी वातो करतां देखीने हसे छे. गछ भेदीउने जे जे धर्म करणी करवा प्रमुख थाय छे ते उदर भरवा निमित्तेज थाय छे. तेमज आदि शब्दथी क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, उन्नति प्रमुखने अर्थेज थाय छे. उत्तम पुरुष तो लाखमां कोइक हशे. बाकी बीजा तो वेशना धारण करनारा जाणवा. आ दुषम कलिकालमां मोहनुं प्रबल राज्य तेथी संसारीउं करतां पण गछधारीउं उपर तेनुं विशेष शासन चाले छे. रहस्य ए छे के, संसारी जीवोमांथी कोइए मोहने गलेथी, कोइए छातीएथी अने कोइए केडथी पकडेल छे अने गछधारीएतो मोहने सर्वांगे मस्तक सुधी पकडेल छे. ॥ ३ ॥

वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो ॥ वचन सापेक्ष व्यवहार साचो ॥
वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल ॥ सांभली आदरी कांइ राचो ॥ धार० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जे मतवादी होय ते अपेक्षा सहित बोलनारो थायज नहीं. तेतो एकांतवादि, निरपेक्षी अर्थात् अपेक्षारहित बोलनारा थाय. तेवा अपेक्षा रहित वचनें, अत्यंत कठिन चारित्रमां प्रवर्त्तन होय तोपण ते व्यवहार जूठो के० आज्ञाथी विरुद्ध जाणवो. तेथी हे भव्यो, वांछायुक्त ते सापेक्ष कहेवाय. जेम निश्चय संबंधी वचन व्यवहारनी वांछा राखे छे तेम, ज्ञान क्रियासहित उत्सर्ग अपवादयुक्त, सापेक्ष वचने जे व्यवहार के० चारित्रनुं प्रवर्त्तन ते सिद्धांत अनुयायी व्यवहार छे. ते चारित्र आज्ञाथी अविरुद्ध तेथी साचुं छे. तेथी वांछा विनानुं अर्थात् अपेक्षा वगरनुं वचन ते निरपेक्ष वचन कहेवाय. तेवा वचनवाला एकांतवादीउंनुं चारित्र, संसारफल आपनारुं छे. तेथी तेवा एकांतवादीउंना वचनस्वरूप अभिलाषीउंने सांभलवा योग्य नथी. कदाच सांभलवामां आवी जाय तो आदरवा नही अने कदाच आदरवामां आवी जाय तो तेमां राचवुं नहीं. निरपेक्ष वचन जैनमतथी विरुद्धज छे. तेथी तेवां वचनो सांभली राग करवो नहीं. यथा ॥ भाषे निरपेक्षक वचन ॥ क्रिया देखावे क्रूर ॥ वाको तप संयम सरव ॥ कर्यों करायो धूर ॥ १ ॥ तेथी एकांत क्रियापक्षी, एकांत पूजापक्षी, एकांत भक्तिपक्षी, एकांत गुरुपक्षी, इत्यादि वचनना कथन करनाराउं चारगतिमां भटकनारा छे ॥ ४ ॥

देवगुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे ॥ केम रहे शुद्ध श्रद्धा न आणो ॥
शुद्ध श्रद्धानविण सर्व किरिया करी ॥ छारपण लींपणो तेह जाणो ॥ धार० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अहो भव्यो ! ते एकांतवादिउंना वचनथी शुद्धदेव, शुद्धगुरु अने शुद्ध धर्मनी परिक्षा केम थइ शके? अर्थात् नज थइ शके; अने शुद्ध देव गुरु धर्मनी परिक्षाने अभावे शुद्ध देव गुरु उपर श्रद्धा के० प्रतीत ते पण केम रहे. कारण के साची वस्तुनी उलखाण विना साची प्रतीत पण न थाय, ए वात आणो के० अवधारो; अने शुद्ध श्रद्धा-प्रतीतविना सर्व क्रियानुं प्रवर्त्तन, ते ढार के० राख अथवा खातरनी पृथ्वी उपर ढाण प्रमुखनुं लींपण करवा तुल्य निरर्थक ढे ॥ ५ ॥

पाप नहीं कोई उत्सूत्र भाषण जिस्यो ॥ धर्म नहीं कोई जगसूत्र सरिखो ॥
सूत्र अनुसार जे भविक किरियाकरे ॥तेहनो शुध्द चारित्र परखो॥धार०॥६॥

अर्थ ॥ माटे निरपेक्ष उत्सूत्र भाषण ढे, तेथी सूत्रथी विरुद्ध भाषण समान बीजुं पाप नथी. सिद्धांतमां उत्सूत्र भाषीने महापापी कहेलो ढे; अने सूत्रमां जे प्रमाणे वचन होय तेज प्रमाणे भाषण करवुं, ते समान तप संयमादिमां पण धर्म नथी. तेथी सूत्रने अनुसारे जे भव्यजीव, तप संयमादि क्रिया करे ते चारित्रवंतनुं शुद्ध चारित्र परखो के० जाणजो, अर्थात् जेवुं भउदमा तीर्थंकरनुं चारित्र तेवुंज तेनुं चारित्र जाणजो ॥ ६ ॥

एह उपदेशनो सार संक्षेपथी ॥ जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे ॥
ते नरा दीव्य बहुकाल सुख अनुभवी ॥ नियत आनंदघनराज पावे ॥धा० ॥७॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त उपदेशनो सार अर्थात् सूत्र अनुयायी चारित्रनुं प्रवर्त्तन ते संक्षेपथी कह्युं. तेने जे भव्यप्राणी निरंतर पोताना चित्तमां धारी राखे. सार ए ढे के वर्त्तमानना गढधारीउं शुद्ध धर्मतत्वनुं स्वरूप पुढतां, हठग्राहीपणुं शिखवे ढे, तेथी तेवा मतवादीउंनो उपदेश अंगीकार न करवो; अने जे भव्य प्राणीउं सूत्र अनुसारे प्रवर्त्तनारा ढे ते दीव्य के० निरूपम देवता संबंधी वा मनोहर मनुष्य संबंधी घणां पल्योपम अने सागरोपम काल सुधी सातावेदनीना विपाकोदयने अनुभवी के० भोगवीने नियत के० निश्चयपणे, संदेह रहितपणे परमानंद, अतिंद्रिय आनंद समूहने पामे अर्थात् मोक्षस्थान पामे ॥ ७ ॥ इति अनंतजिन स्तवन.

## ॥ अथ श्रीधर्मजिन स्तवन ॥

॥ राग गोमी सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

धरम जिनेसर गाउं रंगशुं ॥ भंग म पम्शो हो प्रीति ॥ जिनेसर ॥
बीजो मनमंदिर आणुं नहीं ॥ ए अम कुलवट रीत ॥ जिनेसर ॥धर्म०॥१॥

अर्थ ॥ आनंदघन शुद्ध चेतनावंत थइ, भावोल्लासें हर्षोत्कर्षवंत थइ, परंतु प्री-

तिना जंगनो जय लागवाथी, दीनवचने धर्मनाथ प्रजुनी स्तवना करे ले. हे प्रजु! तमने निजस्वरूप प्राप्तिरूप रंग के० रागथी वचनद्वाराए स्तवुं छुं, परंतु दृष्टिरागथी स्तवतो नथी. हे शुद्ध चेतना! ते स्तवनारूप कार्यारंज अविछिन्न धाराए पार पामजो. तेमां कांइपण विघ्न पमशो नहीं. धर्मनाथ प्रजुविना बीजा राग द्वेषयुक्त देवोने मारा मनरूप मंदिर के० मेहेलमां लावुं नहीं अर्थात् रागादि दोषयुक्त देवोनुं ध्यान कदापि करुं नहीं; कारण के आत्मधर्मे धर्मित एवा आत्मामात्रना कुलनी वट के० मर्यादा एज ले, एज धर्म ले. एज लक्षण के वीतराग विना बीजाने ध्यावे नहि. ॥ १ ॥

धरम धरम करतो जग सहु फरे ॥ धरम न जाणेहो मर्म ॥ जि० ॥ धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पली ॥ कोइ न बांधेहो कर्म ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना! जगतना प्राणीमात्र धर्म धर्म करता फरे ले, कोइ शिवधर्म, कोइ विष्णुधर्म, कोइ संन्यस्तधर्म, कोइ गृहस्थाश्रमधर्म, कोइ तपधर्म, कोइ कुलधर्म, एम प्राणीमात्र निरर्थक ज्रमण करी रह्या ले. परंतु तेवा सर्व प्राणीर्ज धर्मशब्दनो जे मर्म के० रहस्य ते बिलकुल जाणता नथी. अर्थात् आत्मस्वजावरूप धर्म जेथी विजाव परिणतिनो त्याग करी स्वजाव परिणतिमां रमणता करवी तद्रुप धर्मनुं रूप रहस्य जाण्या विना तेर्ज धर्म धर्म पोकारे ले. परंतु हे शुद्ध चेतना! धर्मनुं रहस्य तो धर्म परमेश्वरना चरणकमलमां व्यापेलुं ले, तेथी जे प्राणी बहिरात्मपणानो त्याग करी अंतरात्मवंत थइ धरम परमेश्वरना चरणकमलमां आत्मस्वरूप प्रवर्तीए मनने स्थापे ते प्राणी आश्रवद्वारने बंध करवाथी कोइपण कर्मनो बंध न करे ॥ २ ॥

प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे ॥ देखे परमनिधान ॥ जि० ॥ हृदय नयण निहाले जगधणी ॥ महिमा मेरु समान ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे धर्मनाथ प्रजुनुं स्वरूप केवीरीते जाणी शकाय ते कहे ले. हे सुमति! शुद्ध उपदेशक गुरु जो कृपा करीने, हृदयरूप चक्षुने विषे सिद्धांतरूप अंजन करे तो अनादिकालनो मिथ्यात्वरूपी हृदयनेत्रनो रोग दूर थाय. ते रोग दूर थवाथी आत्मस्वरूपरूप परमनिधान के० अनाशवंत धन जे अनादिथी गुप्त हतुं ते प्रत्यक्ष थाय. पली ते हृदयरूप नेत्रथी त्रण जगतना स्वामिने ते प्राणी निहाले के० देखे अने स्वस्वजावे पोताना स्वरूपने प्रगट जाणे. जे प्राणी पोताना स्वरूपने उलखे ते प्राणी हृदयचक्षुथी परमेश्वरना स्वरूपने उलखी शके; अने ते प्राणीनो महिमा के० प्रताप मेरुपर्वत समान सर्वोत्कृष्ट थाय, अर्थात् निरूपम थाय. ॥ ३ ॥

दोम्त दोम्त दोम्त दोमीउं ॥ जेती मननीरे दोम् ॥ जि० ॥ प्रेम
प्रतीत विचारो ढूकडी ॥ गुरुगम लेजोरे जोम् ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे शुद्ध चेतना आनंदघनने कहेछे के प्रवचन कारण विना परमनिधान देखवानो बीजा मत ममत्वीउंए कहेलो सिद्धांत शुं कारण नथी? त्यारे आनंदघन कहेछे के हुं तो आत्मस्वरूप उंलखवा माटे दोमी दोमीने थाक्यो. मत मात्रने ढुंढि जोया. मात्र बाह्य दृष्टिए नही, परंतु तेउंना संकल्पित वेदांत न्यायादिक सिद्धांतोमां उतरवा सारु जेटली मारा मननी दोम् हती अर्थात् विचार बल हतुं तेटले सुधी दोड्यो, परंतु स्वरूप प्राप्ति न थइ; अने विचार करतां प्रेम के० स्वरूप अभिलाषनो निश्चय तेनाथी धर्म जिनेश्वरनी प्रीत ढुंकमी के० अत्यंत नजीक छे, दूर नथी अर्थात् आत्मामां ज छे; अने नजीक छतां पामता नथी, ते पामवानो उपाय गुरुगम के० गुरुए बतावेलो मार्ग अंगीकार करवो अर्थात् सूत्र मर्यादाथी गुरु जे मार्ग बतावे ते मार्गे निजस्वरूपनी धर्म जिनेश्वरनी प्रीत नजीक छे ॥ ४ ॥

एक पखी केम प्रीति वरें पडे ॥ उभय मिल्या हुए संधी ॥ जि० ॥
हुं रागी हुं मोहें फंदिउं ॥ तुं निरागी निरबंध ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ धर्म जिनेश्वरनी साथे प्रीति केम थइ शके? हुं प्रीतिनो अभिलाषी, प्रभु प्रीतिना अभिलाषी नथी. कदाच एक पक्षी प्रीत थाय तो पण ते वरे पडे नही के० नभे नही. विरुद्ध स्वभावनी प्रीत टके नही. प्रभु शुद्ध आत्मस्वरूपी, हुं तेवा स्वरूपथी रहित, तेवा वच्चे प्रीति केम नभे? प्रीतिनो तो उभय के० बंने समान धर्मवाला होय तो संधि के० मेलाप थाय. माटे हे जिनेश्वर! हुं तमारी साथे मेलाप करवा इछुं छुं, परंतु मारा परिणाम संबंधमां अंतःकरणथी विचार करतां संधी माटे विष अमृत जेटलो तफावत छे. हुं रागी छुं, तमे वीतराग छो. हुं मोह फंदमां फसायेलो छुं अने तमे तो मोहना बंधनथी रहित छो. तेथी मारो अने तमारो प्रकृतिए मेलापज नथी, तो प्रीति केम थाय? यथा ॥ प्रकृति मिले तें मन मिले, अनमिलते न मिलात ॥ दूध दहीं तें जमत है, कांजी तें फट जात ॥ १ ॥ तेथी अगर जो हुं अने तमे सत्ताए तो एक छइए, परंतु दहींनी खटाश अने कांजीनी खटाश प्रकृतिमां भिन्न भिन्न छे, दहींथी दुध जमे, कांजीथी दुध फाटी जाय, तेम मारी सराग प्रकृति, तमारी निराग प्रकृति तेथी प्रीतिरूप दुध जमे नहीं. हुं तो प्रीतिने जमावुं, परंतु तमे वीतराग होवाथी प्रीति जमावो नहीं. ॥ ५ ॥

परमनिधान प्रगट मुख आगलें ॥ जगत उलंघीहो जाय ॥ जि० ॥
ज्योति विना जुर्ज जगदीशनी ॥ अंधोअंध पुलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली हे शुद्ध चेतना ! जगतनी विपरीत रीति तेंतो जो ! पूर्वें कथन कर्युं एवुं परनिधान प्रत्यक्ष अंतःकरणरूप हृदयकमलमांज छे, दूर नथी, छतां जगतना प्राणीमात्र ते उलंघी जाय छे. ज्यां ते प्राप्त थाय ते स्थानकने तो जोतांज नथी अने कष्ट क्रियादिक, ज्यां ते न पामी शकीए तेनी पाछलज मंडी रह्या छे. कारण के जगतना स्वामिनी ज्ञान प्रकाशक ज्योति अने आत्मानी स्वरूप प्राप्तिनी ज्योति ते बंनेमां अन्नेद-पणुं छे; परंतु जुर्ज, जेम ज्योतिस्वरूपने अन्नावे आंधलानी पाछल आंधला दोरूे तेम, ज्ञानस्वरूप दृष्टिने अन्नावे, अज्ञानीनी पाछल अज्ञानी दोव्या जाय छे. वक्ता पण आंधला अने श्रोता पण आंधला एवो योग छे. ॥ ६ ॥

निरमल गुणमणि रोहण नूधरा ॥ मुनिजन मानसहंस ॥ जि० ॥
धन्य ते नगरी धन्य वेलाघमी ॥ मात पिता कुलवंश॥ जि० ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे जगदीश्वरनी ज्योतिविना जगतमां अंधकार व्यापि रह्यो छे, ते जगदी-श्वर, महा निर्मल छे ज्ञानादि गुण जेना एवा अनंत गुणरूप रत्नोना रोहिताचल पर्वत समान छे. वली मुनिराजोना मानस के० अंतःकरणरूप मानसरोवरने विषे हंस समान छे, अर्थात् जे मुनिराजोना अंतःकरणमां वसी रह्या छे. एवा परमेश्वरे जे नगरीमां जन्म लीधो ते नगरीने धन्य छे, जे वेलाए जन्म लीधो ते वखतने पण धन्य छे, तेमना माता, पिता, कुल तथा वंश सर्वने धन्य छे ॥ ७ ॥

मन मधुकर वर कर जोमी कहे ॥ पदकज निकट निवास ॥ जि० ॥ घन
नामी आनंदघन सांनलो ॥ ए सेवक अरदास ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेथी वर के० उत्तम एवो मारो मनरूप न्रमर, परम उल्लासवंत थइ, हाथ जोमी विनंति करेछे के, हे प्रजु ! मारा उपर कृपा करीने, तमारा चरणकम-लनी निकट के० नजीकज मने निवास करवा द्यो. हे प्रजु! तमे अनेक नामोवालाछो, चिदानंदना समूह छो, माटे आधीन वृत्तिवाला आ सेवकनी अरज सांनलो॥८॥इति

## ॥ अथ श्रीशांतिजिन स्तवन ॥

॥ राग मल्हार ॥ चतुर चोमासुं पडिकमी ॥ ए देशी ॥

शांतिजिन एक मुज विनति ॥ सुणो त्रिजुवन रायरे ॥ शांति
सरूप केम जाणीए ॥ कहो मन केम परखायरे ॥ शांति० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे आनंदघन शांतिनाथ परमेश्वरनुं शांतस्वरूप स्वपक्ष, परपक्षथी नि-श्चय करवा प्रजुने विनतिरूप प्रश्न करे छे. हे त्रण जुवनना स्वामि ! तमे मारी एक विनति कृपा करी सांजलो. तमे शांतरस पूर्ण छो तेथी तमारुं नाम शांति छे. ते शां-तरसनुं स्वरूप यथातथ्य केवीरीते जाणी शकीए ते कृपा करी मने उपदेशो, जेथी मारा मनने शांतरसनी परीक्षा थाय. ॥ १ ॥

धन्य तु आतम जेहने ॥ एहवो प्रश्न अवकाशरे ॥ धीरज
मनधरी सांजलो ॥ कहुं शांति प्रतिजासरे ॥ शांति० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली आनंदघन पोताना मनमां हर्षवंत थइ कहेछे के हे आत्मा ! तने पण धन्य छे, तुं सर्व आत्मामां उत्कृष्ट थयो, कारणके तने शांतरसना स्वरूपनो प्रश्न करवानो अवकाश के०अवसर प्राप्त थयो; अने शांतिनाथ प्रजुने तें प्रश्न पुछ्यो. हवे शांतिनाथ प्रजुए प्रश्ननो जे उत्तर आप्यो ते आनंदघन जव्य जीवोने कहेछे, हे जव्य आत्माउ ! तमे अंतःकरणमां धीरज धारण करी शांतरसनुं स्वरूप कहुंछुं ते एकाग्रताए सांजलो. जे प्रमाणे शांति जिनेश्वरें कह्युं, तेज प्रतिजास के० रहस्य हुं कहुंछुं, मारी स्वमत कल्पनाथी कहेतो नथी. ॥ २ ॥

जाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे ॥ कह्या जिनवर देवरे ॥ ते तेम
अवितछ सद्दहे ॥ प्रथम ए शांतिपद सेवरे ॥ शांति०॥३॥

अर्थ ॥ षड्द्रव्यना शुद्धाशुद्धजाव जे रीते जिनवर देवे कथन करेला छे, तेम, शुद्धजावने शुद्धपणे अने अशुद्धजावने अशुद्धपणे अवितछ के० भ्रांतिरहितपणे-सद्दहे के० श्रद्धान करे ते शांतिरसनुं प्रथम पद के० स्थानक तुं समजजे अने ए प्र-थमपदने तुं आदर, कारणके शुद्ध श्रद्धानविना शांतिपदनुं कथन संजवेज नहीं,तेथी प्रथम शुद्ध श्रद्धानरूप शांतरसनुं स्थानक हे आत्मा तुं सेव के० आदर ॥३॥

आगमधरगुरु समकीति ॥ किरिया संवर साररे ॥ संप्रदायी
अवंचक सदा ॥ शुची अनुजव आधाररे ॥ शांति० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली सिद्धांतना धारण करनारा कोइ गुरु कहेछे, नवपूर्व सुधी अजव्य पण जणे तो आगमधर गुरुनी शी अधिक्यता? उत्तर के शुद्ध देव गुरु धर्मनी प्रतीतवाला, समकितवंत गुरुथी शांत स्वरूप पामीए. ते गुरु केवा होय? आश्रवनो निरोध करी सा-रके० उत्तम संवरनी क्रियामां प्रवर्ती रह्या होय. मुग्ध प्राणीउने ठगवानो संप्रदायी के० परंपरा, गुरुक्रमागतें लेशमात्र आचरण जेमनामां नथी, अर्थात् जेउ निर्मल सं-

प्रदायवाला छे. शुचि के० पवित्र आत्मस्वरूपना ज्ञानना अजिलाषी होवाथी, अनुजव स्वरूपमां प्रवर्त्तवाथी अनुजवना आधार छे,तेवा गुरुथी शांत रसनुं स्वरूप पामीए.

शुद्ध आलंबन आदरे ॥ तजी अवर जंजालरे ॥ तामसी
वृत्ति सवि परिहरी ॥ जजे सात्विकी सालरे ॥ शांति० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली ते गुरु केवा होय? आत्मस्वरूपना अनुजवथी प्रगट थयेल निर्मल ज्ञानथी सिद्ध स्वरूपनुं अवलंबन करनारा छे, अर्थात् स्वस्वरूपमां विद्यमान छतां सिद्धादिनुं ध्यान करनारा छे. बीजा आर्त्तरौद्र ध्यान अने मोह तथा रागादि विघ्नकारक जंजालोने दूर करी, शुद्ध आलंबनने आदरी रह्या छे. वली तामसी के० क्रोधादि दुर्गुणो जेथी उत्पन्न थाय तेवा आहार प्रमुख लावी आजीविका करवानो जेमणे त्याग कर्यो छे, वा हठग्राहीपणे प्राणायामादिकनो त्याग करी शालके० प्रधान सात्विक वृत्ति अंगीकार करी ज्ञानादि गुणथी उपजेली शत्रु मित्रउपर समानवृत्तिना धारण करनारा छे. ॥ ५ ॥

फल विसंवाद जेमां नहीं ॥ शब्द ते अर्थ संबंधीरे ॥ सकल
नयवाद व्यापी रह्यो ॥ ते शिव साधन संधीरे ॥ शांति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवा गुरु उत्सूत्रना जाषण करनारा, अर्थात् विसंवाद के० विरुद्धता जेमां होय नही तेवा वचनना बोलनारा होय, जे वचननुं फल पण विरुद्ध न होय. शब्दनो अर्थ पण संबंध युक्त कहेनारा होय. जेमना वचनमां नैगमादि साते नयनुं वाद के० कथन होय. एवा शांतरसना जरेला गुरु ते शिव साधनना हेतु के० मेलाप करावनारा छे.

विधि प्रतिषेध करी आतमा ॥ पदारथ अविरोधरे ॥ ग्रहण
विधि महाजने परिग्रह्यो ॥ इस्यो आगमे बोधरे ॥ शांति० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एवा गुरुना मेलापथी स्वरूप अजिलाषी प्राणी स्वकार्य साधे ते विधि कहेछे. जेथी आत्मस्वरूप सुखे ग्रहण थाय ते आचरवा योग्य आचरण ते विधि कहेवाय; अने जे आत्म स्वरूपने ग्रहण करवामां विघ्न करे एवा जडादि स्वरूपने न ग्रहण करवा ते प्रतिषेध कहेवाय. एवा विधि प्रतिषेधथी आत्मा मुक्तिरूप पदना अर्थ कार्यनो अविरोधपणे करनारो थाय. एवा ग्रहण करवा योग्य विधिने महाजन के० महा मुनिराजोए समस्तपणे ग्रहण करेलो छे. एम सिद्धांतमां कथन करेलुं छे, वा सिद्धांतनो एवो बोध छे एम तमे अवधारजो ॥ ७ ॥

दुष्टजनसंगति परिहरी ॥ भजे सुगुरु संतानरे ॥ जोग सामर्थ्य
चित्त भावजे ॥ धरे मुगति निदानरे ॥ शांति० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वली शांतरसना अभिलाषी पुरुष दुष्ट के० क्षुद्र अंतःकरणवाला, मत ममत्वधारी, हठग्राही मनुष्य जेमना वचनथी श्रद्धा भ्रष्ट थाय तेनी संगतनो त्याग करे अने ज्ञानादि उत्तम गुणना धारण करनारा सद्गुरु अने तेमना शिष्य परंपरानुं भजे के० सेवन करे. पछी जोगसामर्थ्य के० मनादि त्रणे योग, स्ववशीभूत छतां, चित्तने विषे भाव के० आत्मभावने अछेदी, अभेदीपणे जे प्राणी धारण करी राखे ते निदान के० निश्चयपणे मुक्ति प्राप्त करे, कारण के चित्तवृत्तिनो निरोध तेज कर्मक्षयनुं मूल कारण छे ॥ ७ ॥

मन अपमान चित्त समगणे ॥ समगणे कनक पाषाण रे ॥
वंदक निंदक समगणे ॥ इस्यो होय तुं जाण रे ॥ शांति० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एवा आत्मस्वभावमां प्रवर्त्तेला पुरुषोनां चित्त केवां होय ते कहेछे. तेमनो कोइ सत्कार,सन्मान करे तेथी ते हर्षवंत न थाय अने कोइ अपमान करे तो खेदवंत न थाय एवी तेमनी चित्तवृत्ति समान होय. वली लोभदशानी मंदता थवाथी तेमनीपासे कोइ सुवर्ण मुके वा कोइ माटी के पछर मुके तोपण बंनेमांथी कोइने हिनाधिकपणे न माने. बंनेने तुल्यमाने. वली कोइ प्रशंसा करी तेमने वंदना करे तो तेमना उपर प्रसन्न न थाय वा कोइ तेमनी निंदा करे तो तेना उपर नाराज न थाय. हे भव्य! ते पुरुष एवा होय एम तुं जाण के० अवधार ॥ ए ॥

सर्व जगजंतुने समगणे ॥ गणे तृणमणि भावरे ॥ मुक्ति
संसार बेहु समगणे ॥ मुणे भवजलनिधि नावरे ॥ शांति० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली त्रस थावर समस्त जगतना जंतु के० जीवो जेमके राजा रांक, शत्रु मित्र, स्वजन परजन, इत्यादि सर्वने तुल्य माने, तेमज तृण अने मणि के० चंद्रकांत्यादि मणि प्रमुखने पण तुल्य गणे; कोइने हिनाधिक न गणे. वली मुक्ति तथा चार गतिरूप संसारने पण समतुल्य माने. आ कथन अप्रमत्तादि सातमा गुणठाणे प्रवर्त्तकने माटे छे. त्यां मन स्वस्थ वृत्तियें छे. तेने हिनाधिक कांइ नथी. संसारथी उदासीन वृत्ति गइ अने मोक्ष पामवानी हर्ष वृत्ति पण गइ. मारा पदने हुं पाम्यो तेमां शो हर्ष. ते भव्य संसारसमुद्रमां शांतरसने नाव समान मुणे के० जाणे अथवा भवजलनिधिनो शांतरसरूप नावाए करी मुणे के० पार पामे ॥ १० ॥

आपणो आतम ज्ञावजे ॥ एक चेतना धाररे ॥ अवर सवि
साथ संयोगथी ॥ एह निज परिकर साररे ॥ शांति० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हे ज्ञव्य! एवुं जाणके मारो आत्मा ज्ञानदर्शन स्वज्ञाववंत ठे. एक अद्वितीय स्वरूपमयी चेतनानो आधार के० आश्रय करी रह्यो ठे. चेतनाने आधारे आत्मा आधेय ठे. ए चेतनाविना अवर के० बीजा सर्व पुज्ञल संबंध, शरीर पुण्य पापादि, संयोगजन्य ठे. ज्ञानादि गुण समवाय संबंधे ठे. रागद्वेषादि इष्टादि सर्व आरोपित धर्म ठे. ते आत्मस्वज्ञाव नथी. क्षांत्यादि धर्म तथा समित्यादिने पोतानो सार के० प्रधान परिवार जाण ॥ ११ ॥

प्रज्ञु मुखथी एम सांज्ञली ॥ कहे आतमरामरे ॥ ताहरे
दरिशणे निस्तर्यो ॥ मुज सिद्धा सवि कामरे ॥ शांति० ॥१२॥

अर्थ ॥ अहो ज्ञव्यो ! पूर्वे जे कह्युं ते परमेश्वरे पोताना मुखथी जे कथन करेलुं ते सिद्धांतमांथी में सांज्ञल्युं. ते प्रज्ञुनी वाणी सांज्ञलतांज मारो आत्माराम अत्यंत उल्लास पाम्यो. ते कहेठे के अहो परमेश्वर! तमारा दर्शनथी अर्थात् जैनदर्शनथी हुं निस्तार पाम्यो अर्थात् शांतरसना स्वरूपनोपार पाम्यो. कारणे कार्योपचार ए न्याये शांतरसना स्वरूप जाणवारूप कारणथी मारां स्वस्वरूपादि सर्व कार्यनी सिद्धि थइ ॥१२॥

अहो अहो हुं मुजने कहुं ॥ नमो मुज नमो मुजरे ॥ अमित
फलदान दातारनी ॥ जेहनी ज्ञेट थइ तुजरे ॥ शांति० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन कहेठे के अहो ज्ञव्यो ! में परमेश्वरने शांतरसनो प्रश्न पुड्यो, परमेश्वरे मने उत्तर आप्या, तेथी हुं हर्षवंत थइ मारा आत्माने कहुंबुं. अहो आत्मा! मने नमस्कार करो; मारा आत्माने नमस्कार होजो. कोइ प्रश्न करे के पोताना आत्माने पोतेज नमस्कार करे एम केम घटे ? उत्तर के आत्माने अमित के० प्रमाणरहित दानना आपनार श्रीशांतिनाथ परमात्मानी ज्ञेट के० प्राप्ति थइ. तेथी नमोमुज नमोमुज एम कह्युं, परंतु रहस्यार्थतो आनंदघने श्रीशांतिनाथ परमेश्वरने शांतरसनो प्रश्न करतां उत्तर मल्याना हर्षथी ए वचन ठे. ॥ १३ ॥

शांतिसरूप संक्षेपथी ॥ कह्यो निज पर रूपरे ॥ आगम
मांहे विस्तर घणो ॥ कह्यो शांतिजिन ज्ञूपरे ॥ शांति० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ आनंदघन कहेठे के अहो ज्ञव्यो ! आ स्तवनमां शांतरसनुं स्वरूप निज स्वरूपथी के० पोताना स्वरूपने तथा बीजा ज्ञव्य जीवोना स्वरूपनी प्राप्तिनेमाटे य-

यातथ्य रीते संक्षेपथी कह्युं. जो तमे ते रसना विशेष रुचिवंत होतो शांतिनाथ जिनराजे स्वज्ञाषित सिद्धांतनेविषे तेनुं विस्तारपणे स्वरूप कह्युंछे त्यांथी अवधारजो ॥१४॥

शांतिसरूप एम ज्ञावशे ॥ धरी शुद्ध प्रणिधानरे ॥ आनंद
घनपद पामशे ॥ ते लहेशे बहुमानरे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ माटे अहो ज्ञव्यो ! पूर्वोक्तरीते, रागद्वेष विषय कषायादि रहितपणे अने प्रणिधान के० मननी एकाग्रताए जे प्राणी शांतरसना स्वरूपने ज्ञावशे के० विचारशे, ते प्राणी आनंद के० परमानंदनो घन के० समूह ते रूप पद जे मुक्तिपद तेने प्राप्त करशे, अर्थात् त्रण जगतना पूज्यपणारूप बहुमान पामशे ॥१५॥ इतिश्री शांतिनाथजिनस्तवन.

॥ अथ श्रीकुंथुजिन स्तवन ॥

॥ राग गुर्जरी ॥ रामकली ॥ अंबर देहो मुरारी हमारो ॥ ए देशी ॥

कुंथुजिन मनडुं किमही न बाजे ॥ कुंथु०॥ जेम जेम जतन
करीने राखुं ॥ तेम तेम अलगुं ज्ञाजेहो ॥ कुंथु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे कुंथुनाथ परमेश्वर ! मारा मनने महाकष्टे तमारीसाथे जोडवा चाहुंछुं, परंतु ज्ञावस्तव संबंधी ध्यानादिकमां कोइपणरीते न बाजे के० जोडातुं नथी. अन्य स्थानके जोडाय छे पण तमारी साथे जोडातुं नथी. हे परमेश्वर! जेम जेम मारा मनने, प्रयत्न करी कबजे राखवा इछुंछुं, प्राणायामादिके, रेचक पुरक कुंज्ञक इत्यादिके एकाग्र करवा ध्यानथी प्रयास करुंछुं तेम तेम हे प्रज्ञु! ए मन तमारी साथे नहीं जोडातां अलगुं के० दूर थतुं जाय छे ॥ १ ॥

रजनी वासर वस्ति उज्जड ॥ गयण पायालें जाय ॥ साप
खायने मुखडुं थोथुं ॥ एह उखाणो न्यायहो ॥ कुं० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइ एम कहेके मननो एवो स्वज्ञावज छे के कोइ स्थानके जाय नहीं तेथी परमेश्वरपासे पण जतुं नथी. तेवुं बोलनारने आनंदघन उत्तर आपेछे के, हे ज्ञाइ ! तेनो तो मने अनुज्ञव छे. ए मन तो जेम रात्रे तेम दिवसे, जेम वस्तिमां तेम उज्जडमां, जेम आकाशमां तेम पातालमां, एवी रीते गाम गाम फरी रह्युं छे. ए मननी गति अप्रतिहत छे, भ्रमणशील छे, एवी चंचल छे के तेनी उपमा आपी शकाय एवो कोइ जगतमां चंचल पदार्थ नथी. वली कोइ कहे के जे फरे ते चरे पण खरो, तेथी शब्द रूप रस गंध स्पर्शनो स्वाद तेने मलतो हशे? उत्तर-ना. तेम पण नथी. दृष्टांत के जेम कोइ पुरुषने सर्पे खाधो, एवुं कहेनारने कोइए पुछ्युं के सापना मुखमां कांइ

ग्रास आव्यो ? उत्तर आप्यो के, सापना मुखमां शुं आवे ? तेनुं मुखतो थोथुं के० खालीज छे. ए उंखाणो के० दृष्टांत न्याय के० सत्य छे. शब्दादिनो स्वाद मात्रतो पांचेइंद्रियने मळ्यो अने मनना मुखमां कांइ आव्युं नहीं ॥ २ ॥

मुगतितणा अभिलाषी तपीया ॥ ज्ञान ने ध्यान अभ्यासें ॥
वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते ॥ नांखे अलवे पासेंहो ॥ कुं० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ए मन महादुष्ट निर्दय छे, केमके मात्र मोक्षनाज अभिलाषी तपस्याना करनारा ते मनने साधवा माटे अर्थात् आत्मस्वरूप जाणवामाटे ज्ञान अने ध्यानना अभ्यास करी रह्या छे, तदाकार वृत्तियें स्वरूपचिंतवनमां लीन थइ रह्या छे, एवा महामुनिउने पण ए महादुष्ट मन एवुं करेछे के, अर्थात् तेना संबंधमां एवो घाट विचारे छे के, तेउ अलवे के० निःप्रयासे, विशेष विचाररूप उद्यम कर्याविनाज कर्मरूप पास के० जालमां फसाइ पडे. दृष्टांत के प्रश्नचंद्र राजर्षिने सातमी नर्कना दलीयां एकठां करावी दीधां अने अल्प समयमां केवलज्ञान पण उपजावी दीधुं. माटे ज्यांसुधी मन स्थिर न थाय त्यांसुधी कष्ट क्रिया जवभ्रमणरूप छे ॥ ३ ॥

आगम आगम धरने हाथे ॥ नावे किणविधि आंकुं ॥ किहां
कणे जो हठ करी हटकुं ॥ तो व्यालतणी परें वांकुं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कोइ कहे के ज्यांसुधी आगमनी प्रवृत्ति जाणी न होय त्यांसुधी मन दुःसाध्य छे. उत्तर जे आगम जो मननी स्थिरतानुं कारण होय तो आगमना धरनारा जेना हाथमांज आगम छे अने जेउ मन दमन करवा संबंधी अधिकारज वांची रह्या छे, तेउनुं मन पण स्थिरताथी हे प्रभु ! तमारा चरणकमलोमां कोइ पण विधि के० रीते चोटतुं नथी. सर्व प्रयास निष्फल जाय छे. केमके ते मन आंकुं के० वांकुं छे. सरल नथी, वक्र छे. विना रोक्युं कदाच रही जाय, परंतु रोक्युं तो रहेज नहीं. एम जाणतां छतां पण किहां कणे के० कोइ स्थानके ए मनने हठ करीने हटकुं के० खीजवुं, तो जेम सर्पनुं गमन छेड कर्याविना पण वांकुं छे तो छेड कर्या पछी तो तेनी वक्रतानुं शुंज कहेवुं ? तेम ज्यांसुधी ए मनने हटकुं नहीं त्यांसुधी तो जलुं, परंतु जो खीजवुं तो सर्पनी जेम वक्र थइने हे प्रभु! तमारी साथे जोडाय नहीं ॥४॥

जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं ॥ शाहुकार पण नांही ॥ सर्वमांहि
ने सहुथी अलगुं ॥ ए अचरिज मनमांहि हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अहो परमेश्वर ! जो हुं ए मनने ठगाइ करतां देखुं तो ठग कहुं, परंतु ठगाइनी करनारी तो इंद्रियो छे अने मन तो पांचे इंद्रियोनो प्रेरक छे. तेथी मनने

ठग केम कहुं? वली पांचे इंड्रियो तेना प्रवर्त्तन विना प्रवर्त्ती शकती नथी अर्थात् शब्द रूपादिकमां प्रवर्त्तवानुं मूलकारण मन छे, तेथी ए मन शाहुकार पण नथी, एटलेके नारद जेवुं महा ठग छे. केमके सर्व जे पांचे इंड्रियो तेमां ए नोइंड्रिय मली रह्युं छे, एकीभूत थइ रह्युं छे. तेना मेलापविना इंड्रियोथी ठगाइ थायज नही. वली इंड्रियो पोतपोताना विषय ग्रहण करे ते वखते पोतानो भाग वेहेंची लेतुं नथी, माटे सर्वथी वेगलुं पण छे. तेथी हे परमेश्वर! मने आश्चर्य लागे छे के सर्वथी भेलुं ते वेगलुं केम कहेवाय? अने सर्वथी वेगलुं ते भेलुं केम कहेवाय? एम परस्पर विरोध छतां अविरोधपणे भेलां रह्यां छे. ॥ ५ ॥

जे जे कहुं ते कान न धारे ॥ आपमतें रहे कालुं ॥ सुरनर पंमित जन समजावे ॥ समजे न मारुं सालुं हो ॥ कुं० ॥६ ॥

अर्थ ॥ वली तेने जे जे हितशिक्षानो उपदेश करुं ते ते तमाम मारां वचनो कानेज धरतुं नथी, अर्थात् पोतानी इछाए जे जे शुभाशुभ तरंग उपजे छे ते ते प्रमाणे वर्त्ते छे, तेथी ते कालुं के० महा मेलुं छे. आर्त्तरौद्र चिंतवनथी श्याम छे. तेवाने हुंतो शुं समजावी शकुं? महा शक्तिवंत देवताउं, सिंह अष्टापद जेवा पशु पक्षीउं पण जेनाथी भय पामे तेवा प्रबल शक्तिवंत मनुष्यो अने शास्त्रना जाणनारा कोविदो पण जेने समजावी शकता नथी. तेथी ए मारी कुमति स्त्रीनो भाइ, मारो सालो छे अने आत्मा शुद्ध उपयोगे प्रवर्त्ते त्यारे पण ए मारी सुमति स्त्रीनो भाइ होवाथी सालोज छे. ॥ ६ ॥

में जाण्युं ए लिंग नपुंसक ॥ सकल मरदने ठेले ॥ बीजीवातें समरथ छे नर ॥ एहने कोइ न जेलेहो ॥ कुं० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ अहो प्रभु! शास्त्रद्वाराए में जाण्युं के ए मन नपुंसकलिंगे छे. परंतु प्रत्यक्ष प्रमाणे विचारी जोतां ए मन समस्त मरदोने ठेले के० हठावी नांखे तेवुं छे. पुरुषत्वधर्म सहित छतां जो मन परवश होय तो पुरुष पण स्त्रीने संयोगे नपुंसक समान थइ जाय. तेथी ए मन सर्व मरदोमां अग्रगामी छे. जो के तप करवामां, कष्ट क्रिया साधवामां, सिंहनागादिने दमन करवामां, समुद्रादि जल तरणमां, आकाश गमनादि क्रियामां, भूतपिशाचादि वशीकरण क्रियामां पुरुष समर्थ छे, परंतु हे कुंथुप्रभु! ए मनने एक भवपरिणति परिपाकी मुनिराज विना बीजो कोइ पण जेले के० जीली शके नही, अर्थात् तेनी गतिने रोकी शके नही, तेने एकाग्र करी शके नहीं॥७॥

मन साध्युं तेणे सघलुं साध्युं ॥ एह वात नहीं खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं ॥ एक ही वात छे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! चंचलता मटाडी, एकाग्रताए जे पुरुषे मनने साध्युं के० वशीजूत कर्युं, ते पुरुषे सर्वे तपसंयमादि कार्य साध्यां. केमके ते साधननुं अंत ते मननुं साधवुं डे. जे प्राणीए मन वश कर्युं तेणे आत्मैश्वर्यनुं मूल सिद्ध कर्युं, ए वात के० कहेवुं खोटुं नथी, निःसंदेह साचुं डे. परंतु कोइ मारा जेवो मूर्ख, मायावी डतां पोताना मुखथी एम कहे के में मारा मनने साध्युं डे, तो तेनुं कहेवुं हुं मानुं नहीं, प्रमाण न करुं, कारण के में मन वश कर्युं एम कहेवुं ते वात बहु मोटी डे, ते जेवी तेवी वात नथी. ॥ ० ॥

मनडुं डुराराध्य तें वश आएयुं ॥ ते आगमथी मति आणुं ॥
आनंदघन प्रजु माहरुं आणो ॥ तो साचुं करी जाणुंहो ॥ कुं० ॥ए॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! डुःखे साधवा योग्य मन, तमें वश कर्युं. ते मन वश करवानी वात सिद्धांतोथी मारी बुद्धिमां लावुं, अर्थात् सिद्धांतथी मनवश करवानी रीत समजाय, परंतु मने प्रत्यक्ष नथी. तो हे परमानंदना समुहरूप प्रजु ! मारुं मन जे तमारी साथे जोडातुं नथी ते तमारे विषे स्थिरताए; एकाग्रताए प्रवर्त्ते, तो हुं साचुं के० प्रत्यक्षप्रमाणे प्रमाण करुं. शब्दप्रमाणे तो ए वात प्रमाण ज डे, परंतु परमेश्वरे मन वश आएयुं ते प्रत्यक्षप्रमाणे प्रमाण त्यारेज करुं ॥ए॥ इतिश्रीकुंथुनाथजिन स्तवन.

## ॥ अथ श्रीअरजिन स्तवन ॥

॥ राग परज ॥ मारु ॥ रीषजनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

धरम परम अरनाथनो ॥ केम जाणुं जगवंत रे ॥ स्वपर
समय समजावीए ॥ महिमावंत महंत रे ॥ ध० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गाथानो अर्थ अन्वयथी कर्यो डे. अहो महंत के० महा शक्तिवंत, चोसठ इंद्रो, असंख्याता देवता, चक्रवर्ती, वासुदेव प्रमुख महर्द्धिवंतोए जय जय शब्दोथी जेनो महिमा वर्णव्यो डे एवा, समवसरणमां बिराजमान थयेला अरनाथ परमेश्वर तमारा केवलज्ञानथी प्ररूपायेला परमोत्कृष्ट धर्मने हुं केवीरीते जाणीशकुं ? हे जगवंत ! स्वसमय के० स्वरूपप्राप्ति समय अर्थात् सिद्धांतप्रमाणे वर्त्ततां स्वरूप पामीए ते समजावीए के० मने समजावो. तेमज तेनाथी अन्य जे समयप्रमाणे प्रवर्त्ततां स्वरूपसिद्धि न पामीए ते परसमय ते पण मने समजावो ॥ १ ॥

शुद्धातम अनुजव सदा ॥ स्वसमय एह विलासरे ॥ परबडी
डांहडी जेह पडे ॥ ते परसमय निवासरे ॥ ध० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ परमेश्वर उत्तर आपे छे. हे आनंदघन! शुद्धनिर्मल स्वरूपवंत, निरुपाधिक आत्मतत्त्वनुं सदा के० निरंतर स्वरूप प्रत्यक्ष करवुं ते अनुभव कहेवाय. जेथकी शुद्धात्म स्वरूपनुं तात्कालिक ज्ञान थाय ते स्वसमय के० मारा स्याद्वाद सिद्धांतनो विलास के० बोध जाणवो अने ते शुद्धात्मस्वरूपना अनुभवथी भिन्न यावत् मात्र कथन ते मारो समय नही. पर के० बीजा जे कथनमां शुद्धात्म अनुभवीपणुं नथी एवा वळी के० वट एटले कथननो जेटलो विस्तार छे अथवा जे कथनमां शुद्धात्म अनुभव जेटलो विस्तारयुक्त कथन नथी पण छांहडी के० जे कथनमां आत्म अनुभवथी विरुद्ध कथननी छाया पडे छे, अर्थात् कोइ जैनमतानुसारे स्वरूपनुं कथन करी रह्युं छे, तेमां सर्वथा तो परसमय नथी पण छाया मात्र छे एटले कोइक नये आत्म अनुभवथी परकथन छे, तो आनंदघनना आशय प्रमाणे तो ते पण परमेश्वरे परसमय कहेल छे. निज समय नहीं. रहस्य ए छे के ते विरुद्ध समय के० सिद्धांतनो निवास के० स्थानक छे. शुद्धात्मस्वरूपना अनुभवथी लेशमात्र भिन्न ते परसमय छे ॥ २ ॥

तारानक्षत्र ग्रह चंद्रनी ॥ ज्योति दिनेश मझाररे ॥ ध० ॥ ३ ॥
दर्शन ज्ञान चरण थकी ॥ शक्ति निजातम धाररे ॥ ध० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वळी आनंदघन कहे छे के अहो स्वामि! शुद्धात्म अनुभवमां अने ज्ञानदर्शन चारित्रमां कांइ भेद छे के तेउ अभेद छे? परमात्मा कहे छे के, जेम तारा, नक्षत्र, ग्रह अने चंद्रमानी ज्योति दिनेश के० सूर्यने विषे अंतर्भूत छे, तेम केवलज्ञान, केवलदर्शन अने क्षायकचारित्र ए त्रणेनी ज्योति ते शुद्धात्मशक्तिना अनुभवनी ज्योतिने विषे अंतर्भूत छे. ते सर्वे पोताना आत्मानी अनंतवीर्यरूप जे शक्ति–सामर्थ्यता ते थकी धार के० अवधार. ॥ ३ ॥

भारी पीळो चीकणो ॥ कनक अनेक तरंगरे ॥ पर्याय
दृष्टी न दीजीए ॥ एकज कनक अभंगरे ॥ ध० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वळी दृष्टांत कहे छे. सुवर्ण धातुथी कोइ अजाण्यो पुछे के, सात धातुउमां सुवर्णने शी रीते उळखी शकीए, त्यारे कोइए उत्तर आप्यो के पारादि सर्वथी जे वजनमां भारे होय ते सुवर्ण समजवुं; कोइ बोल्यो के जेनामां पीळाश वधारे होय ते सुवर्ण; कोइ बोल्यो के जेनामां चिकाश वधारे होय ते सुवर्ण. एवी रीते सुवर्णना अनेक तरंग के० पर्याय छे. परंतु पर्यायो उपर दृष्टि आपवी नहीं, कारण के पर्यायांतर संबंधी जे भंग तेथी रहित एवुं अभंग सुवर्ण द्रव्य ते एकज छे ॥ ४ ॥

दरशन ज्ञान चरण थकी ॥ अलखसरूप अनेक रे ॥ निर-
विकल्प रस पीजियें ॥ शुद्ध निरंजन एक रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ केवलदर्शनरूप पर्यायें एक अलखनुंज स्वरूप ठे अने केवलज्ञानरूप पर्यायें जोइए तोपण एक अलखनुंज स्वरूप ठे, वली क्षायकचारित्र पर्यायें जोतां पण एक अलखनुंज स्वरूप ठे. एम बीजापण अजर, अमर, अचल, अकल, अरुज इत्यादि अलख के० परमेश्वरनां अनेक स्वरूप ठे. परंतु पर्यायांतर संबंधी भेद कल्पनाए रहित, द्रव्यार्थिकपणे अभेदवृत्ति चिंतवनरूप, निरविकल्परूप, अमृतोपशम रसनुं पान करतां, शुद्ध निर्मल कर्मअंजन रहित जे परमेश्वर ते एकज ठे. जेम ऋषभादिथी महावीरपर्यंत सर्व तीर्थंकर सत्ताए भिन्न परंतु रूपे अभिन्न तेम. ॥ ५ ॥

परमारथ पंथ जे कहे ॥ ते रंजे एक तंत रे ॥ व्यव-
हारें लख जे रहे ॥ तेहना भेद अनंत रे ॥ ध० ॥ ६ ॥

अर्थ॥ जे परम के० उत्कृष्ट अर्थ के० कार्यनुं करनार एवो जे पंथ के० मार्ग बतावे ते एकांत निश्चयनयनाज रागी ठे, एटले तेउ लेशमात्र व्यवहार नयना अपेक्षी नथी, अथवा ए बंने पदोना अर्थनो अन्वय आ प्रमाणे करीएतो तीक्ष्ण भास थाय. जे एकांत रागी ते परमार्थ पंथ कहे एटले उत्कृष्ट मार्ग कहे, पण बीजा तेम न कहे. आ कथन निश्चयनुं ठे. जे प्राणी व्यवहार नयनेज लख के० जाणीने रह्या ठे, एटले मात्र व्यवहारनेज मुख्य जाणी रह्या ठे, ते व्यवहार नयवादीउना भेद के० विकल्प अनंत के० घणा ठे ॥ ६ ॥

व्यवहारें लखे दोहिला ॥ कांइ आवे हाथ रे ॥ शुद्ध
नय थापना सेवतां ॥ नविरहे दुविधा साथ रे ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे प्राणी व्यवहारना रसीया होय, ते स्थविर गुणवाला प्रवृत्तकादिकोनी घणी सेवनादि कष्ट क्रियाथी, तप संयमादि व्यवहारने लखे के० शीखीने दोहिला के० महाकष्ट करतां प्रवर्त्ते ठे, परंतु तेवा व्यवहारने सेवतां जन्मारो वही जाय परंतु मात्र व्यवहारनी कडाकुट करणी करतां लेशमात्र स्वरूपप्राप्तिरूप वस्तु हाथ आवे नहीं, तेथी शुद्धनयने थापना के० प्रमाण करीने, अर्थात् आत्मा शुद्ध निर्मल कर्मोपाधियें रहित एम सेवियें के० विचारीए तो, आत्मा शुद्ध स्वरूप रहित ठे वा आत्मा आत्मस्वरूप पामशे एवी दुविधा के० बे प्रकारनी साथ के० कल्पना न रहे. अर्थात् आत्मा त्रणे कालें शुद्ध आत्मस्वरूपीज ठे, ए अरनाथनो धर्म ठे, ते धर्मने प्रसादे दुविधानी विचारणा न रहे ॥ ७ ॥

एक पखी लखी प्रीतनी ॥ तुम साथे जगनाथरे ॥ कृपा
करीने राखजो ॥ चरणतले गृही हाथ ॥ ध० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ माटे जो शुद्धात्मस्वरूपी हुं बुं तो तमे शुद्ध आत्मस्वरूपी ज छो, परंतु हुं रागी तमे निरागी, माटे तमारे मारे असमान धर्मीपणुं छे, तेथी में तमारी साथे एक पक्षी प्रीत लखी के० जाणी; अर्थात् तमने तो मारी साथे प्रीति करवानी इच्छाज नथी तो पराणे प्रीत शी रीते थाय? तेथी हे जगतना नाथ! तमारी साथे प्रीति थायज नहीं. तमे त्रण जगतना पूज्य, हुं भिखारी. लोकोक्ति पण एम छे के वेर, विवाह अने प्रीति सरखा साथे करीए. मोटानी साथे प्रीति शी? मोटानी तो कृपाज जोइए. दयावंतपणानुं तमारुं बिरुद छे तेथी मारा उपर कृपा करीने तमारा चरण के० पगनी नीचे मारा हाथने राखजो. अहीं परमेश्वर तो मुक्ति पाम्या तेथी तेने चरणनो असंभव अने सेवकना हाथने ग्रहण करवानो पण असंभव, परंतु भक्तिनां वचनो छे, तेथी दुषण नथी. भक्त लोकोने ठलंभा देवानो स्वभाव छे. ॥ ८ ॥

चक्री धरम तीरथतणो ॥ तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ
सेवे ते लहे ॥ आनंदघन निरधार रे ॥ ध० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ अहो परमेश्वर! तमारा समयधर्मनुं शुद्ध आत्मस्वरूपप्राप्तिरूप फल कह्युं अने तमारा धर्मसमय संबंधी तीर्थनुं आनंदघन प्राप्तिरूप फल आगल वर्णव्युं. ते धर्मतीर्थ के० चतुर्विध संघना तमे चक्रवर्ती छो तेथी तमारी आज्ञा चतुर्विध संघमां अखंडपणे वर्त्ते छे. वली तीरथफल के० चतुर्विध संघना तमे फल छो. तेमज तीरथ शब्द साथे तत शब्द जोडतां, तीर्थना तत्व छो–रहस्यछो तेमज तीर्थमां सार के० प्रधान तमे छो. वली तीर्थनुं चक्रवर्तीपणुं, तीर्थनुं फलपणुं, तीर्थनुं तत्वपणुं अने तीर्थनुं सारपणुं एवुं जे तमारुं तीर्थ, जेने तमारा जेवा नमो तीथ्थस्स एवी वाणीए नमस्कार करे छे, एवा चतुर्विध संघरूप तीर्थने जे प्राणी सेवे ते प्राणी निरधार के० निश्चयपूर्वक आनंदघननो समूह पामे॥ ए॥ इति श्रीअरजिन स्तवन.

## ॥ अथ श्रीमल्लिजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ सेवक केम अवगणीए हो ॥ ए देशी ॥

सेवक केम अवगणीए हो ॥ मल्लिजिन ॥ एह अब शोभा सारी ॥
अवर जेहने आदर अतिदीए ॥ तेहने मूल निवारी हो ॥ मल्लि०॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे मल्लिनाथ परमेश्वर! अब के० हवे कर्मक्षय करवाथी पाम्या जे केवल

ज्ञान, केवलदर्शन तेनी शोजा सारी के० प्रधान पामीने पोतानी साची सेवाना करनार चाकर तेनी आवे टाणे केम अवज्ञा करो बो अर्थात् मारी अवज्ञा करवी योग्य नथी. अवर के० बीजा मारा जेवा संसारी जीव रागादि परिणतियें ग्रस्त जेने आशा दासी अत्यंत आदर सत्कार करे बे ते आशा दासीने हे प्रजु! तमे मूल के० जडथी निवारण करी अर्थात् निर्लोजता खीलीए उखेमी नांखी. दिक्षा लेतांज आशानो त्याग कर्यो अने ज्यारे बारमे गुणठाणे चड्या त्यारे मुक्तिरूप आशाने पण तजी दीधी.

ज्ञानसुरूप अनादि तमारुं ॥ ते लीधुं तमे ताणी ॥ जुर्ज
अज्ञान दशा रीसावी ॥ जातां काण न आणीहो ॥ मल्लि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु! तमारुं ज्ञानस्वरूप अनादि कालथी, मोहथी प्रगटी जे अज्ञान दशा तेथी आछादित हतुं, ते तमे ताणी लीधुं अने हे सुमति! तमे जुर्ज के० देखो. अनादि कालनी क्षीर नीर जेवी संबंधवाली अज्ञानदशा नामनी स्त्री ते मल्लिनाथ परमेश्वरने, आत्मस्वरूप अनुजवीने, असोहामणी लागी तेथी अप्रीतकारिणी जाणीने तेने आत्मरूप घरथी जातां जाणी पण काण न आणी एटले तेनी साथे अनादि घरवास हतो ते घर बंडीने जेम उंठ सींघ गया तेम जाय बे तो जले जार्ज एम कर्युं, पण तेनी साथे जाषण करवुं एटली पण काण के० मर्याद न आणी ॥२॥

निद्रा सुपन जागर उजागरता ॥ तुरिय अवस्था आवी ॥
निद्रा सुपनदशा रीसाणी ॥ जाणी न नाथ मनावीहो ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हे परमेश्वर! जव्य अजव्य संसारीजीवोने निद्रा तथा सुपन, बे अवस्था बे अने जव्यने जव्यत्वनो परिपाक काल तेरमे गुणठाणे थाय त्यारे ए बे अवस्थानो नाश थाय अने ते जाग्रत अवस्था पामे तथा चउदमा गुणठाणाना अंतथी सिद्धनेविषे उजागर अवस्था होय. ए चार अवस्थामां हे प्रजु तमारे तुरिय के० चोथी उजागर अवस्था प्राप्त थइ, ते जोइने निद्रागर्जित सुपनअवस्थाए जाण्युं के अमने प्रजुए डुर्वचन कह्याविनाज अमारी प्रतिपक्षीणीर्जने मनावी, तेथी अमारो तिरस्कार थयो एम जाणी तेर्ज रीसाणी. तेर्जने आत्मघरथी जाती देखीने, स्वरूपमां अंतरायकारक तेर्जने जाणीने हे नाथ! तमे तेर्जने मनावी नही ॥ ३ ॥

समकित साथे सगाइ कीधी ॥ सपरिवारसुं गाढी ॥ मिथ्या
मति अपराधण जाणी ॥ घरथी बाहिर काढिहो ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर तमे मिथ्यात्वथी पराङ्मुख थइने उपशम विवेक संवरादि परिवार सहित समकित साथे सगाइ गाढी के० दृढपणे कीधी. तेम थवाथी आत्म-

स्वरूपथी विरुद्ध प्रवर्त्तनारी मोहरायनी पुत्री जे मिथ्यामति तेने आत्मस्वरूप प्राप्तिमां जंग पडावनारी अपराधी जाणीने तमारा आत्मघरथी बहार काढी मुकी अने तेणीने फरी घरमां प्रवेश न करवा दीधो ॥ ४ ॥

हास्य अरति रति शोक दुगंछा ॥ भय पामर करसाली ॥
नोकषाय श्रेणीगज चढतां ॥ श्वानतणी गति झालीहो ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली हे प्रभु! नोकषाय जे हास्य, अरति, रति, शोक, दुगंछा अने भय ए छ नोकषाय मोहनी क्रोधादि कषायनी अपेक्षाए पामर के० रांक, परंतु संसाररूप खेतीनी वृद्धि करनारी, तेथी करसा के० खेती खेडानी आली के० पंक्ति जे क्रोधादि कषाय तेनी सदृश माटे नोकषाय, तेउने ज्यारे तमे क्षपकश्रेणिरूप गज के० हाथी उपर स्वारी करी त्यारे श्वान के० कुतरानी रीत ग्रहण करनारीने गणी नही. जेम राजमार्गे हाथी चालतां हाथी उपर चडेलाने कुतरा पहोंची शके नही, परंतु हाऊ हाऊ करे तेम परमात्मा श्रेणिरूप गजे आरूढ थया, त्यारे हास्यादि छए कुतरानी जेम हाउ हाउ करता रह्या. ॥ ५ ॥

रागद्वेष अविरतिनी परिणति ॥ ए चरण मोहना योधा ॥ वीत
राग परिणति परिणमता ॥ उठी नाठ्या बोधाहो ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली भवरूप बीजना अंकुरना उत्पादक राग तथा द्वेष तेमज अविरतिनी परिणति, ए त्रणेनुं परिणमन; तेउ त्रणे चारित्रमोहनीयना योधा के० सुभट छे. चारित्रमां प्रवर्त्तनारा मुनियोने चारित्रथी पाडनारा छे. परंतु हे परमेश्वर! तमे ज्यारे वीतराग परिणतिने विषे तदाकार प्रवृत्तिए प्रवर्त्या त्यारे तेउए विचार्युं के अमारी विरोधी वीतरागता घरमां आवी तेथी हवे अमे रही शकीये नही, एम विचारी बोधा के० एवुं जाणनारा ते पोतानी मेलेज उठीने नाशी गया. ए प्रमाणे हे प्रभु! तमारुं कार्य सेहेजे सिद्ध थयुं. ॥ ६ ॥

वेदोदय कामा परिणामा ॥ काम्यकर सहु त्यागी ॥ निःकामी
करुणारस सागर ॥ अनंत चतुष्कपद पागीहो ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वली हे प्रभु! वेदना उदयथी कामना परिणाम के० अभिलाष एटले पुरुषने स्त्री, स्त्रीने पुरुष, एवो अभिलाष वेदोदयथी थाय. ते वेदना उदयथी कामनो अभिलाष तो दुर रह्यो, परंतु तमे तो काम्यकर के० वांछारूप कर्ममात्रना त्यागी थया, तो वेदनो सर्वथा अभाव थाय तेमां शुं नवाइ! हे प्रभु! तमे निरभिलाषीपणाथीज करुणारूप रसना समुद्र छो. निष्कामी विना दयाना परिणामनो अभावज होय.

तेथी तमे अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य ए अनत चतुष्पद जे निर्वाणपद तेना पागी के० पदना रंगाणा अर्थात् मोक्षपदमां लीन बो ॥ ७ ॥

दान विघनवारी सहु जनने ॥ अजयदान पद दाता ॥ लाज विघन जगविघन निवारक ॥ परम लाज रस माताहो ॥ म० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु! तमे दान संबंधी विघन एटले दानांतरायनो नाश करीने जव्यराशि जीवमात्रने अजयपद जे मुक्तिपद तेरूप दानना दातार थया. वली लाजांतराय कर्मनो नाश करीने तेमज जगतवासी सर्व जीवोना लाजांतरायना दूर करनार थइने पोते परम के० उत्कृष्ट आत्मरीद्धि संबंधीरस ते अव्ययपद प्राप्त थवाथी उत्पन्न थयो जे अतिंद्रियरस ते रसमां माता के० मग्न थया ॥ ८ ॥

वीर्य विघन पंमित वीर्यें हणी ॥ पूरण पदवी योगी ॥ जोगो पजोग दोय विघन निवारी ॥ पूरण जोग सुजोगीहो ॥ म० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली परम आत्मस्वजाव पामवाथी उत्पन्न थयुं जे परम आत्मवीर्य तद्रूप पंमित वीर्यें के० पराक्रमथी वीर्यांतरायनो नाश कर्यो तेथी संपूर्ण पदवी जे तीर्थंकर पदवी, ते पाम्या अर्थात् आत्मवीर्य फोरवता आत्मपदवीने विघ्न करनार मोहनो तमें नाश कर्यो. ए योग्य बे. अहीं पदमां योगने बदले योगी शब्द सूत्रकारे गुंथ्यो बे. ते प्रास मेलववा माटे लागे बे. योगी शब्दनो अर्थ करीए तो ते पदवीथी संयोग थयो एम थाय अने आत्माने स्वरूपपदवीनो समवायसंबंध संजवे पण संयोगसंबंध न संजवे तेथी योग शब्दनो अर्थ ए पदवीने योग्य बे एम कर्यो बे. कर्त्तानो आशय कर्त्ता जाणे. वली तमे जोगांतराय, उपजोगांतराय, बंने अंतरायने आत्मवीर्यथी निवारीने सिद्धात्मसंबंधी आठ गुणरूप जोगना सुजोगी के० उत्तम जोगवनारा थयाबो अर्थात् सुजोगने अंतराय करनारा जोगोपजोगांतराय बंनेनो नाश कर्यो ॥ ए॥

ए अढार दूषण वरजित तनु ॥ मुनिजन वृंदे गाया ॥ अविरतिरूपक दोष निरूपण ॥ निरदूषण मन जायाहो ॥ म० ॥ १०॥

अर्थ ॥ हे परमेश्वर ! पूर्वोक्त अढारे दोष रहित तमारुं तनु के० शरीर असंख्यात प्रदेशरूप आत्मपिंमधारक बे. तेथी तमे मुनिराजोना वृंद के० समूहने स्तववा योग्य थया बो अने तेमणे तमने स्तव्या. परंतु हे सुमति ! अविरति दोषथी नथी निवर्तवुं जेने तेनुं कथन तो दोष निरूपण बे अर्थात् अढारे दोषमां प्रवर्त्तवुं ते दोष तो सर्वजीवमात्रमां कहेवाय परंतु प्रजु तो अविरति प्रमुख दूषणोथी रहित थया तेथी निरदूषण एवा ते मारा मनमां जाया के० सुहाया-गम्या बे ॥ १० ॥

इणविध परखी मन विसरामी ॥ जिनवर गुण जे गावे ॥ दीनबंधु
नी मेहेर नजरथी ॥ आनंदघन पद पावेहो ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटे हे सुमति! जे स्वरूपज्ञाता प्राणी होय ते पूर्वोक्त अढार दोष वर्जवानी विधि के० रीत कही, ते रीते मन वीसरामी के० मनने स्थिरताभावे प्रवर्त्तावी अढार दूषण रहित तेज अरिहंत देवाधिदेव एवी परीक्षा करीने सामान्य केवलीउमां प्रधान एवा मल्लिपरमेश्वरना गुणग्राम—स्तवना करे अथवा मनने विशरामना धाम एवा मल्लिजिनना गुण वर्णवीने स्तवना करे. ते प्राणी मोहमल्ले हणायेला, निजस्वरूपे रहित, संसारमां जन्मजरादिथी खिन्न थयेला दीन होवाथी तेमना बंधु के० भ्रातासमान निःस्वाथ सहायना करनार मल्लिपरमेश्वरनी मेहेर के० कृपानजररूपशितल दृष्टिथी, अतिंद्रियानंदनो समूह एवुं जे मुक्तिपद ते निःसंदेहपणे पामे ॥११॥

## ॥ अथ मुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ आघा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जिनराय एक मुज विनति निसुणो ॥ आतमतत्व
क्युं जाण्युं जगतगुरु ॥ एहविचार मुज कहियो ॥ आतमतत्व
जाण्याविण निरमल ॥ चित्तसमाधि नवि लहियो ॥ मुनि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो मुनिसुव्रत जिनराज! आनंदघननी आत्मतत्व संबंधी एक विनति अतिशयपणे श्रवण करो. हे त्रण जगतना स्वामि! आत्माथी विसर्जन थयेलुं एवुं आत्मधर्मरूप तत्व तमे केवी रीते जाण्युं? तेनो विचार अनुक्रम विधिए मने कृपाकरीने कहो. केमके आत्मतत्व जाण्याविना अर्थात् पुद्गलादि जडथी आत्माने भिन्न अवधारण कर्याविना, काम, क्रोध, लोभ मोहादिना जोरथी मननी समाधि के० स्थिरता न पामी शकीए. परंतु अकामी, अक्रोधी, अमानी, अलोभी इत्यादि वृत्तिथी निरमल थइ चित्तवृत्ति निरोधकरी तदाकारे स्वस्वरूपने विषेज प्रवर्त्तन, ते न पाम्यो. माटे आत्मतत्व जे रीते जाणुं ते उपदेश करो ॥ १ ॥

कोइ अबंध आतम तत माने ॥ किरिया करतो दीसे ॥ क्रिया
तणुं फल कहो कोण भोगवे ॥ एम पुछयुं चितरीसें ॥ मुनि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ कोइ प्रश्न करे के, सर्व मतोमां आत्मतत्वनुं वर्णन छे, तेथी परमेश्वरने पुछवानुं शुं कारण छे? उत्तर के मुनिसुव्रत प्रभुविना, बीजाउने जो आत्मतत्वनो निर्णय होय तो कोइ के० सांख्यादि मतवाला अबंधपणे आत्मतत्व माने छे. तेउ माने छे के

" विगुणो न बध्यते न मुच्यते" गुणविनानो आत्मा त्रणे काल कर्मथी बंधातो नथी, मुकातो नथी. निश्चयनयनो मत तो एमज ठे, परंतु व्यवहार नयनी अपेक्षाथी तेउ रहित ठे. वली वेदांति आत्माने अबंध माने ठे अने काम क्रोधादि उपयोगे प्रवर्त्ततां तेमने पुठीए के तमे कर्मथी बंधाउ ठो के केम? त्यारे तेउ उत्तर आपे ठे के, जे कर्मथी बंधाय एम माने ते कर्मथी बंधाय, परंतु आत्मा तो स्वज्ञावेज निर्मल ठे तेथी आत्मा बंधातो ज नथी. एप्रमाणे बोलनारा वेदांति प्रमुखने पाठा क्रिया करतां तो देखीए ठीए. माटे हे शुद्ध चेतना! में तेउने क्रियामां प्रवर्त्तता देखीने चित्त रीसे के० मनमां रीस आववाथी पुठ्युं के तमे आत्माने तो अबंध मानो ठो एटले शुज्ञाशुज्ञ करणीए आत्मा शुज्ञाशुज्ञ कर्मनो बंध करतो नथी, परंतु आत्मा आत्मस्वज्ञावे निर्मल अबंधक ठे, एम मानो ठो, तो महाकष्टकरी,शुज्ञकरणी करी ते क्रियानुं फल आत्मा ज्ञोक्तापणे ज्ञोगवे एम मानशो तो तमारो पक्ष ठेदाशे,अने क्रियानुं फल आत्मा न ज्ञोगवे एम मानशो तो क्रिया करो ठो तेनुं फल कोण ज्ञोगवशे? अने जो क्रियानुं फल आत्मा न ज्ञोगवे तो क्रिया निरर्थक थइ, असिद्ध थइ, तेथी व्यवहारनयने अंगीकार कर्या ठतां तेने ठेदो ठो. तो हे शुद्ध चेतना! एवा मतवालाउने पुठवाथी हुं आत्मतत्वने केम पामुं? तेथीज परमेश्वरने पुठ्युं ॥ २ ॥

जड चेतन ए आतम एकज ॥ थावर जंगम सरिखो ॥ दुख
सुखशंकर दूषण आवे ॥ चित्त विचारी जो परिखो ॥ मुनि०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली अद्वैतवादीना त्रण पक्ष ठे १ अद्वैत २ द्वैताद्वैत ३ विशिष्टाद्वैत. विशिष्टाद्वैतपक्षी विष्णुना उपासक ठे. तेउ जड चेतन के० जडयुक्त चेतन एवो आत्मा एकज ठे एम माने ठे. सर्व शरीरधारीउमां परमात्मा अंशे व्यापी रह्यो ठे, ते एक ठे. सर्व गत ठे, नित्य ठे. एवो तेमनो मूल सिद्धांत ठे. जीवात्मा कोइकाले परमात्मा नज थाय, त्रणेकाल जीवात्मा सेवक अने परमात्मा स्वामि एम तेउ माने ठे. इत्यादि तेमनी मान्यतानो घणो विस्तार ठे. वली द्वैताद्वैतपक्षी स्थावर जंगममां कथंचित् ज्ञेद माने ठे. तेउ विशिष्टाद्वैतने पुठे ठे के, पृथ्वी, अप्, तेज, वायु अने वनस्पतिने निर्मल पृथ्वीना अंतर्जामी मानोठो तो थावर जंगममां जड संबंधीत चेतना एक ठे वा कथंचित् ज्ञेद ठे. त्यारे तेउ कहे ठे के थावर जंगम सरिखो के० थावर अने जंगम अज्ञेद ठे. तो हे शुद्ध चेतना! में तेउने पुठ्युं के तमारो मत जे तमे स्थाप्यो, तेनो चित्त विचारी परिखो के० चित्तमां विचार करी कांइ परिक्षा तो करो. तमारा मतमां तमाराज कहेवाथी दुःख सुख संबंधी शंकर दूषण प्रवेश करे ठे. सुखदुःखने प-

रस्पर विरोध छे. सुख ते दुःख न थाय अने दुःख ते सुख न थाय. एवा सुख दुःखने एक समान अधिकरणरूप मानी सुखनो कर्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन अने दुःखनो कर्त्ता पण थावर जंगममयी जड चेतन; तेथी थावरनुं करेलुं सुखदुःख जंगममां प्रवेश थवुं जोइए अने जंगमनुं करेलुं सुख दुःख थावरमां प्रवेश थवुं जोइए. एम कहेवाथी शंकर दूषण थावर जंगम थाय ॥ ३ ॥

एक कहे नित्यज आतम तत ॥ आतम दरशण लीनो ॥ कृत
विनाश अकृतागम दूषण ॥ नवि देखे मतहीणो ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली कोइक अद्वैतवादी, तेरापंथी, समयसारीया, वाशिष्ठसार ग्रंथी एम कहेछे के आत्मा निश्चयथी चारे गतिमां भमतां छतां पोताना स्वरूपदर्शनमां लीनो के० व्यापक छे अर्थात् त्रणे काल आत्मा स्वरूपदर्शनथी रहित नथी. तेमने में पुछ्युं के जो आत्मा आत्मस्वरूपमांज लीन होय तो कृत विनाश के० साधेली उत्तम क्रियाना उत्तम फलनो विनाश तेरूप दूषण शुं तमे नथी देखता? अने अकृतागम के० आत्मा आत्मस्वरूपमां लीन होय तो दुष्कृतनो बंध नज थाय अने प्राणीउने दुष्कृतोना फल भोगवता तो देखीए छीए तेथी ते अकृतागमरूप दूषण तेने पण हे मतहीणा के० बुद्धिहीन तमे देखता नथी. तमाराज शास्त्रमां कह्युं छे के "कृतंविना न भोक्तव्यं" तेथी कर्याविना भोगवाय केम? ॥ ४ ॥

सुगतमति रागी कहे वादी ॥ क्षणिक ए आतमजाणो ॥
बंधमोक्ष सुखदुःख न घटे ॥ एह विचार मन आणो ॥ मुनि० ॥ ५॥

अर्थ ॥ वली हे शुद्ध चेतना! बौधमतना रागी, वादी के० पक्षवाला एम कहे छे के, यावत् मात्र आत्मा, क्षणेक्षणे भिन्नभिन्न छे एम जाणो के० अवधारो. अर्थात् जगतमां आत्मा मात्र तथा पदार्थ मात्र क्षणिक छे, जे प्रथम क्षणे छे ते बीजी क्षणे नथी एवो तेमनो सिद्धांत छे. ते बौधमतवादीने में कह्युं के आत्माने जो क्षणेक्षणे भिन्नभिन्न ठरावशो तो बंध के० शुभाशुभ कर्म बंध तथा मोक्ष के० कृतकर्मनो नाश, तेमज सुकृत्योनुं फल सुख अने दुष्कृत्योनुं फल दुःख, आ चारे प्रकारो क्षणिक आत्माने न घटे के० संभवता नथी; कारण के जे क्षणे आत्मा बंध करे ते बंधना कर्त्ताथी बीजी क्षणनो आत्मा जे भोक्ता छे ते भिन्न छे, तो कर्त्ता आत्मा भिन्न अने भोक्ता आत्मा भिन्न एम थाय छे. तो तेवीरीते थवुं असंभव छे, तेथी ते असंभवनो विचार मनमां आणो के० लावो माटे हे शुद्ध चेतना! जे पोतेज आत्मतत्व

पाम्या नथी अने भूल्या फरे छे तेउने पुछतां हुं आत्मतत्व शीरीते जाणुं ? माटे परमेश्वरने विनति करुं छुं के मारी विनति तत्वनी उंलखाण कराववानी अवधारो ॥ ५ ॥

भूत चतुष्क वरजित आतम तत ॥ सत्ता अलगी न घटें ॥
अंध शकट जो नजर न देखे ॥ तुं शुं कीजे शकटे ॥मुनि०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! वली नास्तिक मतवादी कहे छे के १ पृथ्वी २ अप ३ तेज ४ वायु आ चार भूत शिवाय आत्मतत्वनी सत्ता के० आत्मतत्वनुं अस्तित्वपणुं अलगी के० पृथक् न घटे के० संभवतुं नथी. अहीं आकाश तत्वने जूदुं लख्युं नथी, कारण के ज्यां ए चार भूत होय त्यां आकाश पण होयज. तेथी नास्तिकमतिए चारनुंज ग्रहण कर्युं. तेउं ए भूतचतुष्कमयी आत्मसत्ता मदिरा दृष्टांते माने छे. जेम मदिराना एक एक अंगमां केफनी शक्ति नथी, तमाम अंगना एकत्र थवाथी तेमां केफनी शक्ति आवे छे. तेवीजरीते चारे भूतने संयोगे चैतन्य शक्ति प्रगट थाय छे. हे नास्तिमति ! आ तमारो मत अयोग्य छे. जेम अंध के० जन्मांध प्राणी शकट के० गाडानी लंबाइ, पहोलाइ नजरे देखी शकतो नथी तेने गाडानी परोक्षवात करवाथी शुं समज पडे तेवीरीते ज्यारे गाडा जेवुं मोटुं दृष्टांत हृदयरूप नजरथी न देखाय तेवाने बीजुं दृष्टांत शाकामनुं ? जेमके कोइ प्राणी मरण पाम्यो, तेना शरीरमां चारे भूतोथी प्रथम आत्मसत्ता प्रगट थइ हती अने चारे भूतो विद्यमान छतां आत्मसत्ता अलग थाय तेम तो घटतुं नथी तो आत्मसत्ता चारे भूतोने तजीने केम चाली गइ. तेथी हे शुद्ध चेतना ! तेवाथी आत्मतत्व केम उंलखाय ॥ ६ ॥

एम अनेकवादी मत विभ्रम ॥ संकट पडीयो न लहे ॥ चित्त
समाध तेमाटे पुछुं ॥ तुमविण तत कोइ न कहे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए प्रमाणे जैनविना बीजा एकांतपक्षी सर्व मतवादीना सिद्धांतोथी भिन्न भिन्न कथन सांभलतां आत्मतत्त्व संबंधी विभ्रम् के० विशेष शंका-भ्रांति तद्रूप संकट के० महाकष्टरूप समुद्रमां डुब्यो छतो अर्थात् भ्रांतिमां पड्यो छतो आत्मतत्वने पामे नहीं; परंतु हे शुद्ध चेतना! अनेक मतवादीउंना कथनरूप विभ्रममां हुं पड्यो नथी तेथीज मारा चित्तने समाधि छे. अर्थात् तेमना कहेवा मुजब मारुं मन प्रवर्त्ततुं नथी तेथीज परमेश्वरने पुछुं छुं के हे प्रभु ! तमाराविना बीजा कोइ आत्मतत्वनुं स्वरूप कहेवाने समर्थ नथी तेथी तमेज कहो जेथी शुद्धात्मतत्व पामीए ॥७॥

वलतुं जगगुरु एणी परे भाखे ॥ पक्षपात सब छंमी ॥ राग
द्वेष मोह पखवर्जित ॥ आतमशुं रढ मंडी ॥ मुनि० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ मारा प्रश्ननो त्रण जगतना स्वामिए आ प्रमाणे उत्तर आप्यो ते कहुं बुं जे प्राणी आत्मतत्व जाणवानी चाहना करे ते प्राणी एकांतपक्षी वाद सर्वथा मुकीने राग द्वेष मोह अने अज्ञाननो पक्ष वर्जे तो ते प्राणी अवश्य आत्मस्वरूप प्राप्तिथी रात्रदिवस, सुतां जागतां, उठतां बेसतां, खातां पीतां, कार्यादिकमां प्रवर्त्तता छतां तेनी अंतरवृत्ति अर्थात् मनःप्रवृत्ति आत्मस्वरूपमां प्रवर्त्ततां आत्मतत्व यथार्थ जाणे॥८॥

आतमध्यान करे जो कोउ ॥ सो फिर इणमें नावे ॥ वागजाल
बीजुं सहु जाणे ॥ एह तत्व चित्त चावे ॥ मुनि० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ ए रीते जे प्राणी ब्रह्मरंध्र मध्य आसन पुरीने आत्मामां लयलीन थइ तदाकारवृत्तिए शुद्धात्मस्वरूपनुं ध्यान करे ते प्राणी अनेक मतवादीउना विभ्रम ममत्वरूप जालमां फसे नही. ते प्राणी एक आत्मस्वरूप कथनविना अन्य जे जप तप पूजा नियमादि कथनमात्रने वागजाल के० वचननी जाल, आत्माने फसवानो फंद जाणे अने आत्मस्वरूपना तत्वनेज पोताना चित्तमां चावे के० चिंतव्याकरे॥ए॥

जेणे विवेकधरी ए पख ग्रहियें ॥ ते ततज्ञानी कहियें ॥
श्री मुनिसुव्रत कृपाकरो तो ॥ आनंदघन पद लहिए ॥ मुनि० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ माटे जे विवेक धरी के० विवेकवंत प्राणी होय ते आत्मध्यान संबंधीपक्ष ग्रहण करे अने तेनेज तत्वज्ञानी आत्मतत्वनो वेत्ता कहीए, माटे सिद्ध संपदाना धारण करनारा अहो मुनिसुव्रत प्रभु! कृपा करो के० आत्मतत्वनी उलखाण करावो तो अनादि कालथी जेथी दूर छइए एवा चिंतामणि सदृश परमानंदना समूहरूप पद जे मुक्तिपद ते पामीए ॥ १० ॥ इति मुनिसुव्रतजिन स्तवन.

## ॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवन ॥

॥ राग आशाउरी ॥ धनधन संपति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

षट दरशण जिन अंग जणीजे ॥ न्यासषडंग जो साधेरे ॥
नमिजिनवरना चरण उपासक ॥ षट दरशन आराधेरे ॥ षट० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! पूर्वना स्तवनमां वर्णवेला छए दर्शन जिन के० जिनेश्वरना अंग छे, परमात्मा पोते छए अंगोना धारक छे अने बीजाउ एक एक अंगना धारक छे. जैननां वचन सप्तनयाश्रीत छे. बीजाउ एक एक नयना अपेक्षी छे. तेथी अन्यने अंग कह्या अने जैन उत्तमांग छे. कर्त्तानो आशय एवो छे के जे अंगोने छेदे ते जिनेश्वरना उत्थापक छे, कारण तेउ जिनेश्वरना अंग छे. अहीं कोइ प्रश्न करे के

"एगंते होइ मिछतं" एवो पाठ छे. उत्तर के ते सत्य छे, परंतु अन्य मतोमां जे जे स्थले जैन सदृश वस्तुप्ररुपणा करी होय ते ते स्थलने सर्वथा असत्य कहेवाय नहीं कारण के षट्दर्शन ते जिनेश्वरनां अंग छे एवो पाठ छे. तेउने जिनेश्वरना अंग कह्या परंतु दर्शन कहेल नथी. तेथी हे शुद्ध चेतना! आ स्तवनमां जेम षडंग के० छए अंगनुं न्यास के० स्थापन कर्युं छे तेवी रीते नमि परमेश्वरना चारित्रना आराधन करनारा, निरममत्वी, समपरिणामि थइ छए अंगोरूप षट्दर्शननुं आराधन करे. कर्त्तानो आशय एवो छे के अन्यदर्शनी सर्व एक एक नयाश्रीत छे, तेउने ते ते नयें सत्य कहे. परंतु ज्यांसुधी अन्यदर्शनी जैनदर्शननुं उत्थापन करे तेवा वचनो कहे नही त्यांसुधी जैनी पण तेउने दूषवता वचन कहे नही. ॥ १ ॥

जिनसुर पादप पाय वखाणुं ॥ सांख्य जोग दोय जेदेरे ॥ आतम
सत्ता विवरण करता ॥ लहो छुग अंग अखेदें रे ॥ षट० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ छए मतोमां जे जे मत परमेश्वरना जे जे अंग छे ते कहे छे. एक सांख्य, बीजो योग के० नैयायिक. आ बे दर्शन, ते नमि परमात्माना सुरपादप के० कल्पवृक्ष समान उपमा छे जेने एवा पाय के० चरण वखाणुं के० व्याख्यान करुं छुं. अर्थात् तेउ परमेश्वरना बे पग छे. जेम शरीरनुं मंडाण पगोथी छे तेम जीवमात्रनुं मंडाण सत्ताथी छे. आ बंने दर्शनो पण आत्मसत्ताना विवेचन करनारां छे. सांख्यदर्शन कहे छे के आत्मामात्र पुष्करपत्रवत् निर्लेप छे, लेप तो प्रकृतिने छे इत्यादि बहु विस्तारयुक्त कथन छे, परंतु सर्व आत्मसत्तानुं विवेचन छे. नैयायिक पण आत्मा मात्रमां सत्ता तो एकज माने छे, परंतु एक जीवात्मा बीजो परमात्मा एम आत्मानी बे जाति माने छे. तेमां जीवात्माने मात्र कार्यनुं कारणजूत माने छे अने परमात्माने कर्त्ता माने छे. ए प्रमाणे हे शुद्ध चेतना! जेम सत्ता सर्वनुं मूल छे तेम पाद अंगोनुं मूल छे. ए प्रमाणे आ बे दर्शन ते परमेश्वरना छुग अंग के० बे चरण ते अखेद के० प्रसन्नचित्तें लहो के० जाणो. दर्शनोनुं विशेष स्वरूप षड्दर्शन समुच्चय प्रमुख ग्रंथोथी जाणवुं ॥ २ ॥

जेद अजेद सुगत मीमांसक ॥ जिनवर दोय करजारी रे ॥
लोकालोक अवलंबन जजियें ॥ गुरु गमथी अवधारी रे ॥ ष० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सुगत के० बौधदर्शन अने मीमांसक दर्शन. तेमां बौधदर्शन क्षणे क्षणे आत्मादि सर्व वस्तुने जेद के० जिन्न माने छे. मीमांसक आत्मा नित्य अकर्त्ता माने छे. त्रणे काल स्वरूपे अजेद माने छे. यथा ॥ एक एवही जूतात्मा, जूतेजूते व्यव-

स्थितः ॥ एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचंद्रवत् ॥ १ ॥ वली, एकः सर्वगतो नित्यः पुनः वेदे, विगुणो न बध्यते न मुच्यते ॥ इत्यादि; माटे आ बे दर्शन ते परमेश्वरना दोय कर के० बे हाथ छे. भारी के० गंभीर आशयवाला छे माटे गुरुगम के० गुरुए बतावेल जे रेचक, पूरक, कुंभक संबंधी प्रवर्त्तन, तेथी प्रथम तो लोक के० ब्रह्मरंध्रथी नीचेनुं बाकीनुं शरीर जेने भूगोल संज्ञा छे ते लोक शब्द छे, तेनुं अवलंबन के० आत्माने आश्रयकरीने, आ बे दर्शनरूप परमेश्वरना बे हाथ तेने अवधारी के० निर्णय करीने भजियें के० ध्याइए. तेमज अलोक के० शुन्य माटे खगोल संज्ञा ते ब्रह्मरंध्रने छे तेथी अलोक शब्दे ब्रह्मरंध्रने विषे आत्माने आश्रयकरीने आ बे दर्शनरूप बे हाथनो निर्णयकरी भजीए, ध्याइए.

आ बे दर्शनमां बौद्धदर्शन, जे विद्यमान ते क्षणेक्षणे भिन्नभिन्न छे, एवो तेनो सिद्धांत छे. ते प्रमाणे आत्मा प्रमुखने व्यवहार नयथी पर्यायांतर कालथी अवधारीए तो क्षणेक्षणे भिन्नभिन्न छे ते सत्य छे. मीमांसक वस्तुने अभेद माने छे. ते प्रमाणे निश्चय नयनी अपेक्षाए आत्मा प्रमुख सर्ववस्तु पोतपोताना लक्षणथी त्रणे काले अभेद छे ते सत्य छे. ए प्रमाणे आ बे दर्शन ते व्यवहार अने निश्चय नयना अपेक्षी छे. परमेश्वरनुं प्रवर्त्तन निश्चय अने व्यवहार बंनेथी छे तेथी बौद्धदर्शननुं व्यवहारथी प्रवर्त्तन छे तेथी ते वामकर छे अने मीमांसकनुं निश्चयथी प्रवर्त्तन छे तेथी ते दक्षिण कर छे. आ आशय समजवामां कठिन छे तेथी गंभीर कह्युं. एरीते परमेश्वरनां चार अंग वर्णव्यां.

लोकायतिक कूष जिनवरनी ॥ अंश विचारी जो कीजे रे ॥
तत्वविचार सुधारस धारा ॥ गुरुगमविण केम पीजे रे ॥ षट० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नमि परमेश्वरनुं कूष के० पेट ते लोकायतिक के० नास्तिकवादी चार्वाक दर्शन छे. जीव, पुण्य, पाप, गत्यागति कांइ नथी, एवो नास्तिकनो मत छे. सर्वांशे तो ते परमेश्वरनुं पेट नथी, पण अंशविचारी जो कीजे के० एक अंश विचारी जोइए तो परमेश्वरनुं ते पेट छे. नास्तिक जेम शुन्यवादी छे, तेम परमेश्वरनुं पेट पण शुन्य छे. परंतु तत्वविचारे जोइए छीए तो सर्व दर्शन वाणीथी वर्णव्या अने वाणी पेटथी उत्पन्न थइ माटे कूख ते पांचे अंगनो खजानो छे. ए कूखथी पांचे दर्शननी उत्पत्ति छे. माटे सुधारसधारा के० अमृतरूप रसनो प्रवाह छे तेथी ए सर्वांग धारानो मेलाप करीने पीले के० रस आस्वादन करीए. निर्ममत्वी गुरुना बतावेला मार्गविना सर्वांग दर्शनना मेलापरूप तत्वनो विचार तद्रूप सुधारसनी धारा शीरीते पान करी शकीए. ममत्वरूप दुर्जन पान करतां ढोळी नांखे. एरीते पांच दर्शन वर्णव्या.

जैन जिनेश्वर वर उत्तम अंग ॥ अंतरंग बहिरंगेरे ॥ अक्षर
न्यास धराआधारक ॥ आराधे धरी संगेरे ॥ षट० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जैनदर्शन ते नमि परमेश्वरनुं वर के० प्रधान, सर्व अंगोमां शिरोमणि उत्तमांग, मस्तक छे, केमके अंतरंगे जोइए तो जैनदर्शनना अजावे स्वस्वरूप प्राप्ति न थाय, अने बाह्यांगे जोइए तो जैनदर्शन सर्वांशी छे. सर्व नयाश्रित छे तेथी ते उत्तमांग छे. परंतु जे प्राणी निर्ममत्वी थइ अक्षरन्यास के० एकेक अक्षरनुं स्थापन तेनी धरा के० जूमिका स्थानक अर्थात् आ पहेला अक्षरने रेहेवानुं स्थानक, आ बीजाने रेहेवानुं स्थानक एम एकेक अक्षरना आधारक के० आधारजूत एटले आश्रय करीने रह्या जे अर्थ ते अर्थने संगे धरी के० साथे करीने, सर्वांशी जैनदर्शननुं आराधेके० आराधन करे. अर्थात् एक अक्षर मात्रनो उछेद करवो ते तो दूर रह्युं परंतु अक्षर आगल पाछल पण न कहेवुं. एवीरीते जैनदर्शननुं आराधन करे. ए छ दर्शन परमेश्वरना अंग वर्णव्या ॥ ५ ॥

जिनवरमां सघला दरशन छे ॥ दर्शने जिनवर जजनारे ॥
सागरमां सघली तटनी सही ॥ तटनीमां सागर जजनारे ॥ षट० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ ए रीते नमि परमेश्वरमां सर्व दर्शन छे. तेथी ए छए दर्शन परमेश्वरना अंग छे. एकेका अन्य दर्शनमां सर्वांगी सत्ता न पामीए अर्थात् एकांगी सत्ता पामीए तेथी ते अंशे जिनवर जजना कहीए. जेम समुद्रमां सर्व तटनी के० नदीउं सही के० निश्चयथी छे, परंतु नदीउंमां समुद्रनी जजना छे, एटले समुद्रनी वेलनुं पाणी जे नदीमां आवे तेरीते ते नदीमां समुद्र एक देशे संजवे छे. ए रीते समुद्रोपमाए जिनवरना ए छए दर्शन अंग छे ॥ ६ ॥

जिनस्वरूप थइ जिन आराधे ॥ ते सही जिनवर होवे रे ॥ जृंगी
इलिकाने चटकावे ॥ ते जृंगी जग जोवे रे ॥ षट० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ए रीते सर्व दर्शनोना एकज जावरूप जिनेश्वरना स्वरूपरूप थइ तदाकारवृत्तिए परमेश्वरनुं आराधन करे—ध्यान करे ते प्राणी सही के० निश्चयथी जिनवर के० केवलज्ञानदर्शनी थाय. जेम भृंगी के० जमरी उष्णकालमां मदनी उन्मत्ततायी, चंचलता वधवाथी अने पोताना कांटामां पण विष वधवाथी, काली अथवा पीली झींनी माटीमां पोते लव मुकी, गोलीवाली, एकेक गोली लावी घर बांधी, तेमां पोते इलिका के० लट, तेने कांटाथी चटको दइ ते लटने घरमां मुकी, फरी एक गोलीए

ते घरनुं मोढुं ढांकी, सत्तरमे दीवसें, चटकाथी ते घरनुं मुख उघाडे. उघाडतांज जे लट हती ते ज्ञमरी थइ उडी जाय. ते लटने ज्ञमरी थयेली जगत देखे. ते दृष्टांते जिनस्वरूप थइ जिनने आराधतां पोते जिनवर थाय ते आ प्रमाणे. जिनेश्वरनां वचन प्रमाणे अंतरात्मवर्ती थइ लटरूप बाह्यात्माने चटको आपी निजस्वरूपमां परिणमन तद्रूप घरमां रही ध्यानथी प्रवर्त्ततां लटरूप बाह्यात्मा ते ज्ञमरीरूप परमात्मा थाय. एम सर्व जगतने ज्ञासन थतां, सिद्धमां गमन ते उडवारूप थाय ॥ ७ ॥

चूरणि ज्ञाष्य सूत्र निर्युक्ति ॥ वृत्ति परंपर अनुज्ञव रे ॥ समय
पुरुषना अंग कह्या ए ॥ जे छेदे ते डुरज्ञव रे ॥ षट० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहो शुद्ध श्रद्धा! परमेश्वरना उत्तमांगरूप जैनदर्शन तद्रूप समयपुरुषना छ अंग छे. १ पूर्वधरकृत त्रुटक पदनी व्याख्या ते चूर्णि २ सूत्रोक्त अर्थ ते ज्ञाष्य ३ गणधरादि कृत वचन मात्र रचना ते सूत्र ४ पूर्वधरकृत पदज्ञंजना ते निर्युक्ति ५ सूत्रो उपर विस्तारयुक्त टीका ते वृत्ति ६ परंपर अनुज्ञव के० गुरु संप्रदायथी अनुज्ञव के० उतरती यथार्थ स्मृतिपूर्वक जिन्न तात्कालिक ज्ञान. आ प्रमाणे समय के० सिद्धांतरूप पुरुषना पूर्वोक्त चूर्णि प्रमुख छ अंग छे. तेने जे प्राणी, परज्ञवनी बीक नहीं राखतां निर्ज्ञय थइ उछेदे, ममत्वरूप रसथी हिनाधिक ज्ञाषे ते प्राणी डुरज्ञव के० डुष्ट ज्ञवगामी जाणवो ॥ ८ ॥

मुद्रा बीज धारणा अक्षर ॥ न्यास अरथ विनियोगे रे ॥
जे ध्यावे ते नवि वंचीजे ॥ क्रिया अवंचक ज्ञोगे रे ॥ षट० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ मुद्रा बीज धारणा अक्षरन्यास ए बधा ध्याननां अंग छे. ए मुद्रा बीज धारणादिनो अर्थ के० तात्पर्यार्थ–रहस्य तेनुं विनियोगे के० विशेषपणे विधिनुं ज्ञान. आ ध्यानना अंगोना रहस्यनुं मने ज्ञासन नथी अने कर्त्ताए त्रीजा पदमां जे ध्यावे एवुं पद गुंथ्युं छे तेथी ते ध्याननुंज कथन छे, परंतु मने ज्ञासतुं नथी, कर्त्तानो आशय कर्त्ता जाणे. तेथी जे प्राणी उपशमयुक्त, निर्ममत्वी थइ पूर्वोक्त मुद्रा बीज धारणादिकें स्तवना विधि ध्यावे अर्थात् एकाग्रचित्तें, तदाकार वृत्तियें, तद्रूप तन्मयी तल्लेशी तदाज्ञिलाषी थइ ध्यान करे, जेने विषय विषयी अज्ञिन्न ज्ञासे ते प्राणीनुं आत्मस्वरूप रूप चिंतामणि रत्न रागादिथी वा डुष्ट ममत्वी ठगोथी नवंचिजे के० ठगाइमां जाय नहीं. ते प्राणी अवंचक क्रियानो ज्ञोगी थाय. शुद्ध सरल स्वज्ञाविक करणीनो ज्ञोगी थाय. ते मायावी वचनोथी ठगाय नही. अहीं कोइक प्रतमां ध्यावेने

ठेकाणे साधे एवों शब्द बे तेनो अर्थ एवो बे के मुद्रा बीज धारणादिके जे समयपुरुषने साधे ते क्रिया अवंचकनो जोगी होय. आ पदनुं रहस्य कर्त्ता जाणे मने जास्युं नथी॥ए

श्रुत अनुसार विचारी बोलुं ॥ सुगुरु तथाविधि न मिले रे ॥
किरियाकरी नवि साधी शकीये॥ ए विषवाद चित्त सघले रे ॥ षट० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हे शुद्ध चेतना ! आ कालमां जेवा प्रवर्त्तने मारो कालक्षेप थाय बे ते तने कहुं बुं. जैनदर्शनना श्रुत के० सिद्धांतनुं नैगमादि नयानुयायी कथन, वचन वर्गणाए कहेतां अपार बे माटे अनुसार के० ते पाठने समीप राखी अर्थ करतां विचारी विचारी बोलुं बुं. वली सिद्धांतमां जे प्रमाणे गुरुनुं लक्षण कर्युं बे, तेवा विशुद्ध श्रद्धावंत, ज्ञानी, आत्मार्थी, परोपकारी, निर्मायी, निर्ममत्वी, कथनी करणी समान, सप्तनयानुयायी, जिन प्रवचन विशुद्धजाषी तथाविध के० तेवा प्रकारना गुरुनी योगवाइ मने मलती नथी. तेथी सूत्रमर्यादाए विचारीने बोलुं तो पण शुं? कारण के ते मर्यादामां रहीने साधु संबंधी क्रिया करी उदयमां आवेला चारित्रने नविसाधी शकीए के० साधी शकतो नथी, कारण के श्रुतमर्यादाए पण चारित्र साधवुं अति कठिन बे. तेथी एक तो ए अने बीजुं तथाविध गुरुनो योग न मलवाथी क्रिया न करी शकुं. माटे जोके वेषधारी बुं, तोपण कोइ पुढे के तमे कोण बो ? त्यारे महाहीन वचने मुखथी कहुं बुं के हुं जैननो फंफो बुं. तेथी समस्त चित्तने विषे प्रदेशे प्रदेशे विषवाद के० उदासीनता लागी रही बे ॥ १० ॥

ते माटे उजा करजोमी ॥ जिनवर आगल कहीएरे ॥ समय
चरण सेवा शुद्ध देजो ॥ जेम आनंदघन लहीएरे ॥ षट० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटे हे शुद्ध चेतना ! तुं, हुं अने शुद्धश्रद्धा, आपणे त्रणे परमेश्वरनी आगल बे हाथ जोमी उजा थइ विनंति करीए के हे प्रजु! तमारा जाषित समय के० सिद्धांत अनुसार शुद्ध चारित्रनी सेवा के० प्रवर्त्तना अमने आपजो, जेम अमे पण आनंदना समूह पामीए. अथवा हे परमेश्वर! अमने चरमावर्तन, चरमकरण अने जवपरिणति परिपाक समये शुद्ध आगमोक्त चारित्रनी सेवा आपजो वा तमारा चरणकमलनी सेवा आपजो जेथी आनंदघन पद पामीए॥११॥ इति नमि जिनस्तवन.

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवन ॥

॥ राग मारुणी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

अष्ट जवांतर वालहीरे ॥ तुं मुज आतमराम ॥ मनरावाला ॥

मुगति स्त्रीशुं आपणेरे ॥ सगपण कोइ न काम ॥ मन० ॥ १ ॥
घर आवोहो वालिम घर आवो ॥ मारी आशाना विसराम ॥ म० ॥
रथ फेरोहो साजन रथ फेरो ॥ साजन मारा मनोरथ साथ ॥ म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ नेमनाथ प्रभु राजेमतिनुं पाणिग्रहण करवा तोरणे आव्या त्यारे मृगादि पशुने सजय देखी तेऊने निर्जय करवा सारथिने कह्युं के रथ पाछो फेरवो. ते समयनां राजेमतिनां वचनो नेमनाथजी परत्वे छे. हे परमेश्वर! तमे आठ जवथी मारा वल्लज छो, आठमांथी एकपण जवमां प्रीतिनी न्यूनता राखी नथी तेथी मारा आत्मानेविषे तमे रमी रह्या छो. अंतःकरणरुप कमलनी पांखडी दीठ रमी रह्या छो. तेथी हे स्वामि! आपने मुक्तिस्त्री साथे संबंध करवानुं कांइ पण काम के० जरुर नथी. मुक्ति स्त्रीतो रूप रहित छे, हुं राजकुमरी शोजनरुपा स्त्रीरत्न छुं. जो मारा उपर मुक्तिस्त्रीने लावशो तो ते स्त्री मारी शोक थशे अने स्त्रीने शोकना दुःख करतां मरणनुं दुःख मोटुं नथी, माटे तमारे मारी प्रीतिनो नाश करवो होय तो बीजी स्त्री लावो ॥ १ ॥ माटे अहो स्वामि! महारा वाला उग्रसेनना घरनेविषे पधारो. अहीं राजेमति अत्यंत रागथी रंजित थयेली पतिना फरवाथी विकल चित्त थतां शुन्य हृदय थइ जवाथी कहे छे. हे स्वामि! तमे मारी आशाना विसराम के० धाम छो. हे वालेसर! तमे विलंब न करो, कारणके मारी आशारूप वेल त्रुटशे तो फरी संधाशे नहीं, तेथी हे सज्जन! रथने पाछो फेरवो अने मारा मनना मनोरथ पूराकरो, केमके तमारा रथने अने मारा मनोरथने जेवो साथ छे तेवो साथ फरी मलशे नही ॥ २ ॥

नारीपखो श्यो नेहलोरे ॥ साच कहे जगनाथ ॥ मन० ॥
इश्वर अरधंगे धरीरे ॥ तुं मुज झाले न हाथ ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ नारीविना स्नेह नही, जोके स्नेहनो वास अंतःकरणमां छे, परंतु नारी स्नेहलता छे, स्नेहरूप फलने उत्पन्न करनारी छे, तेथी नारी साक्षात् मूर्तिमान स्नेहज छे. जगतना जीवो नारीविना स्नेह मानताज नथी. जो नारीविना स्नेह गणातो होय तो महादेव जे सृष्टि संहारकर्त्ता कहेवाय छे ते पण पोताना अर्धांगमां पार्वतीने केम धारण करी राखे छे. तेणे तो न करवा योग्य कार्य कर्युं, तमारे तो तेम करवानुं नथी. सगाइ करीने पाणिग्रहण तो सर्व जगत करे छे, तेम तमारे पण करवानुं छे, माटे तमे मारो हाथ झालो. ॥ ३ ॥

पशुजननी करुणा करीरे ॥ आणी हृदय विचार ॥ मन० ॥
माणसनी करुणा नहीरे ॥ ए कोणघर आचार ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामि! तमे पशुउंनी करुणा संबंधी विचार अंतःकरणमां आण्यो के पशुउंनी हिंसा थशे, तेथी धिःकार डे मारी परणवानी प्रीतिने, कारणके एवा अविवेकी पुण्यहीन प्राणीउंनी दया चिंतवी रथ फेरव्यो अने हुं तेउंथी असंख्यात गुण पुन्यप्रबल मनुष्यनी दया तमने न आवी. आवो विचार ते कोना घरनो आचार जोइ आव्यो. जगतमां हीनमां हीन अने अधिकमां अधिक जातिवाला घरोमां आवुं प्रवर्त्तन नथी ॥ ४ ॥

प्रेमकल्पतरू बेदीउंरे ॥ धरीउं जोग धतूर ॥ मन० ॥
चतुराइरो कोण कहोरे ॥ गुरु मलीउं जगसूर ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम कल्पवृक्ष आजव संबंधी मनोवांबक डे तेम हे स्वामि! प्रेमरूप कल्पवृक्ष पण आजव संबंधी वांगउं पूरनार डे, अर्थात् स्त्रीना सुंदररूप, हावजाव, मंदहास्य, तीक्ष्ण कटाक्ष, मनोजावित षट्रस जोजन, अंतर पुष्पादिकनी सुरजि इत्यादि मनोवांछित प्रेमकल्पतरुने बेदीने हे स्वामि! तमे योगरूप धतूरो धारण कर्यो. कारणके क्षुधा पिपासा, शीत उष्ण, दंशमशक इत्यादि शरीरनी शाताने विषप्राय डे; अशातानां कारणरूप होवाथी धतुर प्राय डे. माटे हे स्वामि! आवी चतुराइनो शिखवनारो जगतमां सूर्य जेवो रत्नप्राय तमारे हाथ क्यांथी चडी आव्यो ॥ ५ ॥

मारुंतो एमां क्युंही नही रे ॥ आप विचारो राज ॥ मन० ॥
राजसजामें बेसतां रे ॥ किसडी वधशे लाज ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे राजन्! मने तजीने आप जाउं गे तेमां मारी बदनामोशी किंचित् मात्र नथी केमके, तमे पोतानी इच्छाए रथ पाछो फेरव्यो, तेथी में अकार्य कर्युं एम कोइ कहेशे नहीं. वली मारो त्याग करो गे तेथी चित्तमां विचारजो जे तमारा समान राजाउंनी सजामां ज्यारे जइने बेसशो त्यारे तमारी किसकी के० केवी शोजा वधशे? कोइक बहु बोलो हशे तेतो तमने जोइनेज मुखे कहेशे के जुउं आ मरद आव्या, एम कहेशे त्यारे तमारी केवी लाज वधशे. घणी शरम जेवी वात डे. हजु कांइ वगड्युं नथी तेथी रथ पाछो फेरवो ॥ ६ ॥

प्रेमकरे जगजन सहुरे ॥ निरवाहे ते उर ॥ मन० ॥
प्रीत करीने गेमीदेरे ॥ तेशुं न चाले जोर ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ संसारी जीवमात्र रागी डे तेथी प्रीति करवाना अजिलाषी डे. सरागीपणुं प्रीतरूप कार्यनुं कारण डे. ए प्रमाणे प्रीति तो करनारा सहु डे, परंतु करेली प्रीतिनो

निरवाह करनारा ठेर के० जुदाज ठे. तमे तेवा नथी. तमे प्रीत तो करो ठो परंतु प्रीतने नजावतां तमने आवमतुं नथी. यथा ॥ प्रीतरीत अति कठिन हे ॥ समज करैठे काय ॥ ज्ञांग जखंता सोहेली ॥ लेहेरां मुश्किल होय ॥ १ ॥ तेथी हे वल्लन! जे मनुष्य प्रथम प्रीत बांधीने पठी ओमी नाखे तेनी साथे शुं जोर चाले? पराणे प्रीत थती नथी ॥ ७ ॥

जो मनमां एहवुं हतुं रे ॥ निसपत करत न जाण ॥ मन० ॥
निसपत करीने ठांमता रे ॥ माणस सहुए नुकसाण ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जो आपना मनमां प्रथमथीज, तोरणथी रथ फेरवी, मने तजी देवानी इछा हती तो निसपत के० मारी साथे संबंध करवो घटतो नहोतो अने हुं पण संबंध करत नही. तेथी हवे विचार करो के स्त्रीमात्रनी ज्यांसुधी सगाइ थइ नथी त्यांसुधी तो दरेक स्त्रीने बंधन नथी, परंतु ज्यारे कोइ पुरुषनी साथे कोइ स्त्रीनो सगपण संबंध थाय त्यारे ते पुरुषनी साथेज तेनो संबंध रह्यो. हवे ज्यारे संबंधी पुरुष स्त्रीने तजी दे त्यारे ते तजायेली स्त्रीने बीजो पुरुष रांधेली हांडली प्राये जाणे अने तेनी साथे कोइ संबंध करवा जाय तो ते पुरुषने बीजाठे कहे के तमने बीजी कोइ कन्या मलती नथी, ते कन्याने तो अमुक पुरुषे तजी दीधी ठे तेथी विषकन्या प्रमुख दुषणो पण ते कन्या उपर लोको मुके. तेथी संबंध कर्या पठी कन्यानो त्याग करतां ते कन्याने मोटुं नुकशान ठे, प्रगट रीते कलंकित करवा जेवुं ठे ॥ ८ ॥

देतां दान संवत्सरी रे ॥ सहु लहे वंछित पोष ॥ मन० ॥
सेवक वंछित नवी लहे रे ॥ ते सेवकनो दोष ॥ मन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हे स्वामि! तमे रथ फेरवी घेर गया. लोकांतिक देवताए दीक्षानो अवसर जाणी तमोने विनंति करी. जेथी तमे संवत्सरी दान देवा लाग्या. सर्व प्राणीमात्रना मनोवांछित पूर्ण करवा लाग्या. दाननो वरसाद वरसावतां ठतां मारा जेवा परम सेवक कांइपण वंठीत पामता नथी, तेथी एवी केहेवत थइ के ॥ पेंडा खावे दूरका, ऊख्या मरे हजूरका ॥ अथवा, घरनां ठैयां घंटी चाटे, पाडोसणने आटो ॥ एवी वातो तमे साची करी बतावी; पण तेमां तमारो दोष नथी, तमारा सेवकनोज दोष ठे. बीजा सर्वने जोगकर्मनो उदय हतो तेथी तेठे तमारी पासेथी इत्यादि पाम्या अने मारे जोगोपजोग कर्मनो असंजव तेथी हुं न पामी, एवी रीते मारा कर्मनोज दोष ठे ॥ ए ॥

सखी कहे ए शामलोरे ॥ हुं कहुं लक्षण सेत ॥ मन० ॥
इण लक्षण साची सखीरे ॥ आप विचारे हेत ॥ मन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ आजसुधी पुरुषसंबंधी मारी परिक्षा साची पडी, मात्र तमारी परिक्षा हुं बराबर करी शकी नहीं. तमारी साथेनी सगाइने वखते मारा सखीवर्गे मने सूचव्युं हतुं के तमारो भर्त्तार अंतर अने बहार श्याम छे; में तेउने कह्युं के बहारथी तो श्याम छे, परंतु अंतरथी ते सेत के० उज्वल, निष्कपटी छे. हवे तमे ज्यारे मारो संबंध करी मने कुवामां उतारी दोरडुं काप्युं, त्यारे सखीउना वर्गेनुं केहेवुं साचुं थयुं अने मारी परीक्षा खोटी पडी. ते हेत के० कारणने असत्य गणता हो तो आप विचारी जोजो ॥ १० ॥

रागीसुं रागी सहु रे ॥ वैरागीस्यो राग ॥ मन० ॥
रागविना केम दाखवोरे ॥ मुगति सुंदरी माग ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु ! हुं सरागणी छुं तेथी आपने सरागी थवुं योग्य छे. जगतनी पण एवीज नीति छे. राग राखे तेनी साथे रागनो संबंध थाय, परंतु रागरहितनी साथे राग केम थाय? हुं रागी तमारा उपर छुं तेथी जो तमारामां राग होय तो मारा उपर राग राखो, परंतु तमारामां रागज लागतो नथी तेथी मारा उपर केवी रीते राग करो. वली मने एक विचार आवे छे के जो तमे रागी नथी तो रागने अभावे जे मार्गे मुक्तिस्त्री पामीए तेवो मार्ग जेने मुगति सुंदरी मार्ग कहेवाय छे, तेने बारे पर्षदामां केम दाखवो के० प्रगट बतावो छो? तेथी जेम अंतःकरणमां होय तेज होठे आवे तेम तमारे मुक्तिस्त्री उपर राग छे अने तेणीने सर्व समक्ष लाजनो त्याग करी स्मरो छो. जेने अनेक भर्त्तार छे एवी स्त्रीने इछो छो अने मने परिहरो छो. आवो ते कोना घरनो आचार ॥ ११ ॥

एक गुह्य घटतुं नथी रे ॥ सघलो जाणे लोक ॥ मन० ॥
अनेकांतिक भोगवो रे ॥ ब्रह्मचारी गतरोग ॥ मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामि ! लोको मने आवी कहे छे के तमारा भर्त्तारनी केवी रीत के तजीने चाल्या गया. में कह्युं के तेमनामां कामरूपी रोग नथी अने ते ब्रह्मचारी छे तेथी गया. लोको कहे छे के एक राजेमतिने तज्या तेमां शुं ? अनेकांतिक भोगवेछे अने ब्रह्मचारी कहेवाय छे. तेथी जो आप ब्रह्मचारी नाम धरावता होतो अरज करुं छुं के आवुं एक गुह्य आपने घटतुं नथी. लोको जाणे ते गुह्य शानुं? लोको जाणे

छे के ते अनेक जोगवे छे अने निष्कामी, ब्रह्मचारी एवुं नाम धरावो तेथी एवुं गुह्य अघटित छे.घटित गुह्य तो ते कहेवाय के जेने लोको न जाणी शके. चतुरनी गुप्तवात कोइ जाणी शके नहीं. आपनुं गुप्त तो सर्वे लोकोए जाण्युं के अनेकने जोगवोछो तो मने एकने जोगववामां ब्रह्मचर्यनो शुं जंग थाय छे? जो ब्रह्मचर्यने अखंम पालवुं एवुं धारता होतो अनेकांतने जोगववुं तजीयो. पण तमे तो बे घोडे चमो छो, अनेकांतने जोगवो छो अने ब्रह्मचारी नाम धरावो छो. ॥ १२ ॥

जिण जोणी तमने जोउं रे ॥ तिण जोणी जुउ राज ॥ मन० ॥
एकवार मुजने जुउ रे ॥ तो सीजे मुजकाज ॥ मन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हे स्वामी जिण जोणी के० जे जोवानी रीते हुं तमने जोउं बुं अर्थात् जे सराग दृष्टिए हुं आपने निरखुं बुं, तेज सराग दृष्टिए हे राजन्! मने आप हृदयरूप नेत्रे जुउ. जो कृपाकरी आप एकज वखत मारा उपर दृष्टि करशो तो मारुं वांछित कार्य सिद्ध थशे ॥ १३ ॥

मोहदशा धरी जावनारे ॥ चित लहे तत्वविचार ॥ मन० ॥
वीतरागता आदरी रे ॥ प्राणनाथ निरधार ॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अत्यारसुधी राजेमति सखीउ साथे तथा नेमनाथजी साथे मोहदशानी व्यवस्थानां वचनो बोलती हती. हवे चित्तमां मोहदशा धारण कर्या छतां स्वजाविकरीते एकत्वजावना आवी अने तेवाज आशयने प्रसंगे, कर्त्ताए पाछली गाथामां " एकवार मुजने जुउ " एवुं पद मुक्युं छे तेथी मोहमयी वचनो कह्यां छतां स्वजाविकरीते एकत्वजावना आवी एम लागे छे. राजेमति विचारे छे के, मारुं आत्मद्रव्य मारा आत्मप्रदेशोने आधारे छे तो मारे तेमनी साथे शुं संबंध छे ? आवो आत्मतत्वनो विचार के० जेद राजेमति पामवाथी पोताना आत्माने कहेछे के हे आत्मा! प्राणनाथ के० प्राणोना नाथ जे नेमनाथ स्वामी तेमणे निरधार के० निश्चयथी वीतरागता आदरी के० ग्रहण करी, तेथी तारो राग तेमने केम जेदी शके, माटे ते कोण अने हुं कोण? एम एकत्वजावना जावता हवा ॥ १४ ॥

सेवक पण ते आदरे रे ॥ तो रहे सेवक माम ॥ मन० ॥
आशय साथे चालीए रे ॥ एहीज रुडुं काम ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे राजेमति नीतियुक्त सन्मुख दृष्टिए एकत्वजावना जावे छे. हे आत्मा! नेमनाथजी साथे स्वामी सेवक संबंध करवो तने योग्य हतो ? तेवा संबंधथी

तारे परवश थवुं पडत अने परवश थवुं ते स्वेच्छाचारीने नरकतुल्य छे. परंतु ए वात तारे प्रथम विचारवी योग्य हती. पाछलथी विचार करवाथी शुं सिद्धि ? स्वामीए वीतरागता आदरी तो सेवक पण निश्चयथी तेज आदरे अने तेम करे तोज सेवकनो माम के० महिमा रहे, धर्म स्थिर रहे. माटे हे आत्मा! स्वामिना मननो आशय के० अजिप्राय जाणी ते प्रमाणे चालीए तो तेज उत्तम काम बने. सेवकनो सेव्यधर्म एवो छे के पोतानी मरजी प्रमाणे नहीं चालतां स्वामिनी आज्ञाप्रमाणे वर्तवुं ॥ १५ ॥

त्रिविध योगधरी आदर्यो रे ॥ नेमनाथ जरतार ॥ मन० ॥
धारण पोषण तारणो रे ॥ नवरस मुगताहार ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ माटे श्रीनेमनाथ स्वामिए मन वचन काया, त्रिविधथी योग आदर्यो तेथी मारे पण तेमज करवुं ते उत्तम छे. मारा मननो वल्लज श्रीनेमनाथ मारा आत्मिक गुणोनो आधार छे, वली गुणोनुं पोषण करनारा पण तेज छे तेमज मारा आत्माने संसारसमुद्रथी तारनार पण तेज छे. वली तेज मारा स्वामि नवरस मुक्तानो हार छे. शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, जयानक, विजत्स, अद्भुत अने शांत, आ नव रस छे. तेमां निरूपम आत्मिकस्वरूप ते अद्वितीय शृंगार छे. अनादि कनकोपलनी जेम पुरुषनो प्रकृतिथी वियोग तेथी अतींद्रियनो हर्षोत्कर्ष ते परम हास्य छे; सर्व जंतुने अजयदान देवानी वृत्ति ते करुणा छे. कर्मने विडारवानी वृत्ति ते रौद्र रस छे. इत्यादि सर्व रसनो विचार यथार्थरीते करवो. विशेष लखाण वधवाथी विस्तार कर्यो नथी ॥ १६ ॥

कारणरूपी प्रजु जज्योरे ॥ गण्यो न काज अकाज ॥ मन० ॥
कृपाकरी मुज दीजीए रे ॥ आनंदघन पदराज ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हे प्रजु ! में आपनी कारणरूपे सेवा करी अर्थात् मारा मनमां परमेश्वरनुं स्वरूपरूप कारण प्रवर्त्तशे तो मारुं आत्मस्वरूपरूपकार्य सिद्ध थशे एवी धारणाथी तमारुं सेवन करतां में करवा नहीं करवा योग्य कांइ गण्युं नही. जेम संसारीने शब्दादिनुं सेवन ते करणीय अने वैराग्यनुं सेवन ते अकरणीय एरीते बंनेने नहीं गणतां मात्र परमेश्वरनुं ज सेवन कर्युं. माटे हे परमेश्वर! मारा उपर कृपा करीने प्रसन्न थइ मने आनंदघन के० निर्वाणपदरूप राज्य आपो ॥ १७ ॥ इति श्रीनेमनाथजिनस्तवन. इति श्रीआनंदघनजी कृत बावीसी. आ बावीस स्तवननो बालावबोध ज्ञानविमलसूरीए कृष्णगढमां रही संवत् १७६६ ना जादरवासुद १४ ना रोज संपूर्ण कर्युं छे. ते प्रमाणे आशय लइ छापतां जूल थइ होय ते वांचनारे सुधारी वांचवुं. वली

बीजी प्रत उपर आनंदघनजीना छेल्ला बे स्तवनो हता ते पोतानाज करेला हता अने तेनी उपर ज्ञानविमलसूरिए बालावबोध कर्यो छे. ते हवे पछी छाप्या छे ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ राग सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

ध्रुवपदरामीहो स्वामि माहरा ॥ निःकामी गुणराय ॥ सुग्यानी ॥
निजगुण कामीहो पामी तुं धणी ॥ ध्रुव आरामीहो थाय ॥ सु०॥ध्रु०॥१॥

अर्थ ॥ ध्रुव के० निश्चलपद जे सिद्धपणुं तेना रामि के० रमणहार प्रभु ते मारा स्वामि छे, वली कामकंदर्पना अभिलाष रहित छे तेथी निष्कामी छे. अष्टगुण युक्त होवाथी गुणराय छे. अव्याबाध सुखना भोगी छे. केवलज्ञान युक्त होवाथी सुज्ञानी छे. पोताना गुणना अभिलाषी छे एटले स्वस्वभाव प्रगट थयो तेनाज अर्थी छे. सम्यक् दृष्टि जीवो तमारा जेवो धणी पामी ध्रुवपद आरामी के० अचल सुखवाला आत्मारामी थाय, कारणके जे परमात्माने सेवे ते परमात्मा थाय ॥ १ ॥

सर्वव्यापि कहे सर्व जाणंगपणे ॥ परपरिणमन सरूप ॥ सु० ॥
पररूपें करी तत्वपणुं नही ॥ स्वसत्ता चिद्रूप ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे प्रभु! तमने केटलाएक सर्वव्यापि कहे छे. तमे सर्वज्ञ होवाथी ज्ञानस्वरूपे सर्वव्यापि छो एवी रीते आरोपें घटे छे, परंतु तेउ जो वस्तुधर्में सर्वव्यापि कहे तो दोष उपजे छे; केमके जे परमां व्यापे ते परपणे परिणमवुं थाय त्यारेज व्यापे अने परपरिणमन स्वरूप थवाथी परमात्म द्रव्यने अस्थिरस्वभाव तथा अभव्यस्वभावरूप दूषणो थाय. वली पररूपें थतां, अन्य द्रव्यरूप थवाथी तत्वपणुं रहे नही, माटे पोतानी सत्ताज चिद्रुप ज्ञानस्वरूप छे तेनाथी तत्वपणुं कहेवाय ॥ २ ॥

ज्ञेय अनेके हो ज्ञान अनेकता ॥ जल भाजन रवि जेम ॥ सु० ॥ द्रव्य एकत्वपणे गुण एकता ॥ निजपद रमताहो खेम ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली ज्ञेय के० सर्वद्रव्य ते अनेक छे तेने ज्ञाने करी जाणे तेथी आत्मानुं ज्ञान अनेक छे. ज्ञेयना भेदथी ज्ञानना पण अनेकरूप छे. जेमके सूर्य एक छे छतां जलाशयमां प्रतिबिंब पडतां अनेक जोनारने पृथक् पृथक् देखाय छे, तेमज ज्ञान गुणाधिकरणभूत सर्व आत्मभावनुं स्थानरूप जे आत्मद्रव्य तेनुं तथा प्रकाशरूपगुणनुं एकरूप छे, परंतु पर्यायरूपे अनेकता छे. ज्ञायकरूप कार्य अभेदें ज्ञानगुण एक छे परंतु अन्योने प्रकाश करवाथी ते पृथक् पृथक् लागे छे. एप्रमाणे सर्वगुण पोतपोतानुं क्षेत्र जे द्रव्य तेमां रमतां थकां क्षेम कल्याण छे अर्थात् कोइ गुण पर परिणामी नथी.

परक्षेत्रे गत ज्ञेयने जाणवे ॥ परक्षेत्रे थयुं ज्ञान ॥ सु० ॥
अस्तिपणुं निजक्षेत्रे तमे कह्युं ॥ निर्मलता गुणमान ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥४॥

अर्थ ॥ स्व अवगाहनाथी पर के० अन्य क्षेत्रे रह्युं जे जीवद्रव्य तथा अजीवद्रव्य तेने मात्र जाणवाथी, ज्ञान परक्षेत्री थयुं, परंतु जे गुणी होय ते गुणथी अभेदपणे होय. तेथी ज्ञान निज क्षेत्रे के० आत्मानेविषे व्यापकपणे रह्युं छे तेथी तमे तेने अस्तिपणुं कह्युं. ज्ञानमां स्वभावे निर्मलता छे तेथी तेमां सर्वद्रव्य दर्पणनी जेम भासे छे. परंतु ज्ञान क्षेत्रमां ज्ञेय जतां नथी अने ज्ञेयमां ज्ञान जतुं नथी ॥ ४ ॥

ज्ञेय विनाशेहो ज्ञान विनिश्वरु ॥ काल प्रमाणेरे थाय ॥ सु० ॥
स्वकाले करी स्वसत्ता सदा ॥ ते पररीतें जाय ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ कोइ कहे के ज्ञेय जे घटपटादि तेना विनाशथी ज्ञान पण विनाशी छे. अतीत अनागत वर्त्तमानने परावर्त्ते, जे अनागत पर्याय ते वर्त्तमानपणुं पामे अने वर्त्तमान पर्याय ते अतीतपणुं पामे ते सर्व पर्यायनुं भासन ज्ञानमां छे. भासन पर्याय ए रीते परिणमे छे तेथी ज्ञानमध्ये विनाशी धर्म छे. तेने उत्तर के, स्वकालें करी पोताना उत्पादव्ययरूप परिणमन जोतां ज्ञान उत्पादव्ययरूप छे, तोपण तेनो स्वसत्ता धर्म कदापि परसत्तापणुं पामतो नथी. परानुयायी चाल न ग्रहण करवाथी स्वरूप धर्म छे.

परभावें करी परता पामता ॥ स्वसत्ता थिर ठाण ॥ सु० ॥ आत्म
चतुष्कमयी परमां नही ॥ तो केम सहुनोरे जाण ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली परभावे करी के० परभावने जाणवाथी ज्ञान ते पर थाय अर्थात् परतापणुं पामे; परंतु ज्ञान स्वसत्तारूप छे, स्थिर स्थानक छे माटे स्वसत्तारूप होय ते कदापि परपणुं पामे नहीं. अर्थात् आत्मचतुष्कमयीपणुं ते परमां न पामीए. सारांश के स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, स्वभावपणे आत्मानो धर्म होय ते अन्यमां न पामीए. एम निरधार कर्यो. अहीं कोइ पूछे जे, त्यारे ज्ञान सर्व परद्रव्यनुं जाण छे एम केम थाय?

अगुरु लघु निज गुणने देखतां ॥ द्रव्य सकल देखंत ॥ सु० ॥
साधारण गुणनी साधर्म्यता ॥ दर्पण जलने दृष्टांत ॥ सु० ॥ ध्रु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेने उत्तर आपे छे. जीवादि सर्व द्रव्यमां अगुरुलघु धर्म छे. ते सर्व द्रव्यमां सामान्य छे. जीवमां पण सर्वव्यापि छे. ते पोतानो अगुरुलघुभाव देखतां सर्व द्रव्यने देखे, सर्वने जाणे. दर्शनोपयोगे सामान्य जाणे, ज्ञानोपयोगे विशेष जाणे. साधारण गुणने, नित्यत्वादिकने तथा अगुरुलघुत्वादिकने समानधर्मि तेथी

एकने जाणवे सर्वनो जाण थाय. जेम आरसीमां सर्वनुं प्रतिबिंब पडे छे, पण जेनुं जेनुं प्रतिबिंब आरसीमां पडे छे, ते ते वस्तुमां आरसी प्रवेश करती नथी, तेम ते ते वस्तु पण आरसीमां प्रवेश करती नथी. तेवीज रीते जलनुं दृष्टांत पण समजवुं. ए दृष्टांतो मुजब ज्ञान ज्ञेयमध्ये परिणमतुं नथी अने ज्ञेय ज्ञानमध्ये परिणमतां नथी ए रीते स्व अवगाहनागत ज्ञानगुण ते आत्मानुं स्वरूप छे.

श्रीपारसजिन पारसरस समो ॥ पण इहां पारस नाहिं ॥ सु० ॥
पूरण रसीउं हो निजगुण परसनो ॥ आनंदघन मुज मांहि ॥सु०॥ ध्रु०॥७॥

अर्थ ॥ एवा पार्श्वनाथ भगवान पार्श्वमणि समान छे. जेम पार्श्वमणिनो स्पर्श थतां लोह ते कनक थाय तेम पार्श्वप्रभुना योगथी आत्मारूप सेवक परमात्मा थाय. पार्श्वनाथ भगवानमां पार्श्वमणिनो रस नथी परंतु पोताना अनंतज्ञानादि गुणरूप रस छे ते अनंतज्ञानादि मारामां पण छे, पण सत्तारूपे छे अने परमात्मामां प्रगट छे तेथी भगवान पूज्यछो ॥ ७ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवन.

## ॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

वीर जिनेश्वर चरणे लागुं ॥ वीरपणुं ते मागुं रे ॥ मिथ्या
मोह तिमिर भय भागुं ॥ जितनगारु वागुं रे ॥ वी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्री महावीर परमात्माना चरणमां नमस्कार करीने हुं क्षायकवीर्यपणुं मागुं छुं. जे वीर्यना उल्लासथी मिथ्यात्व के० कुश्रद्धा अने मोह के० मूढता तद्रुप तिमिर के० अंधकारनो भय दूर कर्यो छे एवा हे प्रभु! तमे शत्रुनो नाश करीने जीत नगारु वगाड्युं तेवुं वीर्य हुं मागुं छुं. जे वीर्यथी हुं पण कर्मशत्रुने जीतुं ॥ १ ॥

छउमथ्थ वीरय लेश्यासंगे ॥ अभिसंधिज मति अंगेरे ॥
सुक्ष्म थूल क्रियाने रंगे ॥ योगी थयो उमंगे रे ॥ वी० ॥२॥

अर्थ ॥ हे प्रभु ! छद्मस्थवीर्य ते क्षयोपशमवीर्य. ते लेश्याए जे परिणम्यो ते अभिसंधिजवीर्यें अनेक कर्म ग्रहण करे. जे मतिपूर्वक उपयुक्तवीर्य ते अभिसंधिज वीर्य कहीए. ते सूक्ष्म क्रिया कंपनरूप, स्थूलक्रिया आकुंचनप्रसारणरूप एटले भाव योग तथा द्रव्ययोगरूप. सूक्ष्म तथा स्थूल क्रियाने रंगे योगवंत थयो थको आत्मा संसारमध्ये उमंग पामी रह्यो छे. आ विचार कम्मपयडी ग्रंथमां छे ॥ २ ॥

असंख्य प्रदेशे वीर्य असंखें ॥ योग असंखित कंखे रे ॥ पुज्ल
गण तेणे ले सुविशेषें ॥ यथाशक्ति मति लेखे रे ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आत्माना असंख्याता प्रदेश छे. एकेका प्रदेशे असंख्याता वीर्य विजाग छे, एम कम्मपयडीना योगस्थानकमां कह्युं छे. एरीते जीवने योग पण असंख्याता छे. जे क्षयोपशमी वीर्य असंख्यातु छे ते योगरूप छे, तेणे करी जीव कर्मपुज्लना समूहने ग्रहण करे छे. योगविशेषे, विशेष कर्म ग्रहणे करे. जेवी योग बलशक्ति तेवुं कर्मनुं दल जीव ग्रहण करे, एम समजवुं ॥ ३ ॥

उत्कृष्टे वीरयने वेसें ॥ योग क्रिया नवि पेसे रे ॥ योगतणी
ध्रुवताने लेसें ॥ आतम शक्ति न खेसे रे ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ज्यां उत्कृष्ट के० अनंतवीर्य त्यां कर्म न लागे.ज्यां चलवीर्य त्यां कर्म लागे. जे प्रदेशोमां उत्कृष्ट वीर्य होय त्यां योगक्रिया जे कर्म ग्रहणरूप क्रिया ते प्रवेश करी शके नहीं. आत्माना आठ रूचक प्रदेशोमां कर्मग्रहणरूप योगक्रिया नथी. वली योगनी ध्रुवता के० निश्चलता छे. ज्यां योगनी निश्चलता त्यां आत्मशक्तिने कोइ कर्म रुंधी शके नहीं, अर्थात् ते प्रदेशे आवरण न थाय ॥ ४ ॥

कामवीर्यवशें जेम जोगी ॥ तेम आतम थयो जोगी रे ॥ सूरपणे
आतम उपयोगी ॥ थाय तेहने अयोगी रे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम काम के० अजिलाषना वीर्यना वशथी जेम जोगी पुरुष सर्व परजावने वांछे छे, तेम आत्मा परजावनो जोगी थयो छे अने तेज आत्मा शुरवीर थइ मारा स्वरूप विना परजावमां प्रवेश करवो नहीं एवी प्रतिज्ञा धारण करी आत्मोपयोगी थाय तो अयोगीपणुं प्रगट करे. एवुं शुरवीरपणुं हे वीरपरमात्मा! तमारुं घणुंज उत्कृष्ट छे.

वीरपणुं ते आतम ठाणे ॥ जाण्युं तुमची वाणे रे ॥ ध्यान
विनाणे शक्ति प्रमाणे ॥ निज ध्रुवपद पहिचाणे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवुं वीरपणुं ते आत्मस्थानकमां अर्थात् आत्मामांज छे, एम में तमारी वाणीथीज जाण्युं छे. तेवा ध्यानथी, विज्ञानथी तथा शक्तिना प्रमाणथी जेम जेम आत्मानुं मूल वीर्य-शूरत्व चिंतवीए तेम तेम आत्मा तेमां रमीने पोतानुं ध्रुवपद के० निश्चल परमानंदपद तेने पहिचाने के० उलखे ॥ ६ ॥

आलंबन साधन जे त्यागे ॥ परपरिणतिने जागे रे ॥ अक्षय
दर्शन ज्ञान वैरागे ॥ आनंदघन प्रजु जागे रे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ परंतु परने अवलंबन करी जे साधन करवुं, तेनो त्याग करवाथी परावलंबनपणुं छंडाय तो परपरिणति जागे के० जाय अने ए प्रमाणे जे करे ते अक्षय अप्रतिपाति क्षायिक केवलदर्शन केवलज्ञान अने वीतरागता के० यथाख्यात चारित्रमां लयलीन थयो थको आनंदघन के० परमानंदमय प्रभुता जाग्रत करे ॥ ७ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तवन. श्रीज्ञानविमलसूरि तथा पंडित देवचंद्रजीए आ चोवीसीना पाछला बे स्तवनो कर्या छे. ज्ञानविमलसूरिजीए बालावबोध चोवीसे स्तवनो उपर कर्यो छे. देवचंद्रजीए कर्यो नथी. अहीं ज्ञानसारजीनो बालावबोध छाप्यो छे, अने हवे पछीना तेमनाज बे स्तवनो छापेला छे.

## ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ शांतिजिन एक मुज विनति ॥

पासजिन ताहरा रूपनुं॥ मुज प्रतिभास केम होयरे॥ तुझमुझ
सत्ता एकता॥ अचल विमल अकल जोयरे॥ पास० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहो पार्श्वनाथ प्रभु! तमारा स्वरूपनो मने प्रतिभास के० प्रकर्ष आभास अर्थात् साक्षात्कार केम थाय? विचार करतां तमे अने हुं सत्ताए एक छीए तेथी अभिन्न छीए अने भिन्नभावीपणुं थया विना तमारा स्वरूपनो मने प्रतिभास केम थाय? वली निश्चयनयथी हुं मारा स्वरूपने विचारुं तो जेम तमे स्वरूपथी त्रणेकाल निश्चल छो तेम हुं पण मारा स्वरूपथी चल्यो नथी. वली जेम तमे निर्मल तेम हुं पण निश्चयथी कर्ममल रहित, जेम तमने कालादिके कल्या नथी तेम हुं पण कालादिकथी अकल छुं, माटे ए त्रणे रीते एकता देखीने अहो पार्श्वप्रभु! तमारुं रूप भिन्नपणे प्रत्यक्ष केम करी शकुं? ॥ १ ॥

मुज प्रवचन पक्षथी॥ निश्चय भेद न कोयरे॥ व्यवहारे
लखी देखीए॥ भेद प्रतिभेद बहु लोयरे॥ पास० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे परमात्मा उत्तर आपे छे. हे आनंदघन! निश्चयनयनी अपेक्षाए तो परमात्मा अने जीवात्मामां भिन्नभावीपणुं अर्थात् भेद कांइ नथी अने व्यवहार नयनो आश्रय करी जोइए तो अर्थात् हेतुप्रतिहेतुपुर्वक हृदयनेत्रें अवलोकन करीए तो जीवना लोय के० लोकने विषे बहु के० घणां भेद प्रतिभेद थाय. एक देवता एक मनुष्य तेज जीवने नरकपणुं प्राप्त थाय ए रीते भेद प्रतिभेद घणां थाय॥२॥

बंधन मोख नहीं निश्चयें॥ व्यवहारें भज दोयरे॥ अखंडित
अबाधित सोय कदा॥ नित अबाधित सोयरे॥ पास० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली हे आनंदघन! निश्चयनयथीज आत्माने अवलोकन करीए तो आत्मा मात्रने त्रणेकालमां कर्मबंधन नथी. निश्चयनयथी जीव त्रणेकाल अरुपीज छे अने ज्यारे बंधन नथी त्यारे मोक्ष के० मुकवापणुंज नथी अर्थात् निश्चयनयथी आत्माने बंध मोक्ष नथी; अने व्यवहारनयथी आत्माने बंध अने मोक्ष बंने ज्ञज के० अवधार. व्यवहारनयें आत्मा अखंडित नथी अक्षरनो अनंतमो विज्ञाग ज्ञान रही गयुं तेथी. वली पर्याय मरण तेथी अनादि नथी. गत्यागति करवाथी अचल नथी. क्षीणविनश्वर तेथी नित्य नथी. कर्मे पीडित तेथी अबाधित नथी. ए रीते व्यवहारनयनी अपेक्षाए सोय के० आत्मा छे अने तेज आत्मा निश्चयनयथी विचारतां आठ रुचक प्रदेश निरावरण होवाथी त्रणेकाल अखंडित छे .अणाइए अपज्जवसिए ए ज्ञांगे अपर्यवसित तेथी अनादि छे. सर्वथा ज्ञाननो अज्ञाव थतो नथी तेथी अचल छे. त्रणे काल आत्मद्रव्यनो नाश थतो नथी तेथी नित्य छे. अनादि निर्मल स्वरूपने बाधा पहोंचती नथी तेथी अव्याबाध छे. ए रीते पण सोय के० आत्मा छे. ॥ ३ ॥

अन्वय हेतु व्यतिरेकथी ॥ अंतरो तुज्झमुज्झ रूपरे ॥ अंतर
मेटवा कारणे ॥ आतमस्वरूप अनूपरे ॥ पास० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जे छते ते छतुं ते अन्वय कहेवाय अने जे अछते ते अछतुं ते व्यतिरेक कहेवाय. एवा अन्वय तथा व्यतिरेक हेतुथी अर्थात् स्वरूपने सद्ज्ञावे परमात्मानो सद्ज्ञाव अने स्वरूपने अज्ञावे परमात्मानो अज्ञाव एवी रीते तमारा अने मारामां अंतर के० ज्ञेद पडेलो छे. ते मारा अने तमारा ज्ञेदने मटाडवा माटे 'अन्वयहेतुरूप तमारा आत्मानुं निरूपम स्वरूपज छे ॥ ४ ॥

आतमता परमातमता ॥ शुद्धनय ज्ञेद न एकरे ॥ अवर
आरोपित धर्म छे ॥ तेहना ज्ञेद अनेकरे ॥ पास० ॥५॥

अर्थ ॥ हे प्रज्ञु! मारा आत्माने विषे रहेली आत्मता अने परमात्माने विषे रहेली परमात्मता तेमां ज्ञेद छे के केम? उत्तर, हे आनंदघन! शुद्धनयथी तारा आत्मामां अने मारा परमात्म स्वरूपमां कांइ ज्ञेद नथी. कारण के अवर के० स्वरूपथी व्यतिरिक्त जेटला संयोगजन्य आरोपित धर्म छे ते कर्मे आरोपित छे. तेना अनेक ज्ञेद छे. यथा ॥ कबहु हाटक कबहु नाटक, काटक कबहु कंबहु ॥ कबहु साटक कबहु फाटक, चेटक कबहु कबहु ॥ करमकी कैसी बात कहुं ॥ एम अनेक ज्ञेद छे.

धरमी धरमथी एकता ॥ तेह मुजरूप अज्ञेदरे ॥ एक सत्ता
लख एकता ॥ कहे ते मूढमति खेदरे ॥ पास० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हे आनंदघन ! आत्मत्व धर्मयुक्त आत्मस्वरूपमां अने मारा स्वरूपमां अ-भेदपणुं छे, केमके हुं आत्मत्वधर्मयुक्त थयो छुं अने बीजा जे आत्मत्वधर्में युक्त थाय तेमां अने मारामां भेद कांइ न रहे. परमात्मानी सत्ता जेम निर्मल छे तेम श-रीरमां रहेलो आत्मा त्रणे कालें कर्मलेपरहित निर्मल छे एवी जे एकता के० एक-त्वपणुं अद्वैतपक्षी लख के० कहेछे ते अतात्विक छे. एवो खेद के० प्रयास छे ते मू-ढमति के० बुद्धिहीन पुरुषनो छे ॥ ६ ॥

आतम धरम अनुसरी ॥ रमे जे आतमरामरे ॥ आनंद
घनपदवी लहे ॥ परम आतम तस नामरे ॥ पास० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हे आनंदघन ! जे आत्मा आत्मधर्मने अनुसरी तद्रूवत् थइ रमे के० प्र-वर्त्ते, तेनुं नाम आतमराम कहीए अने तेज आत्मा आनंदघन के० अनंता पदा-र्थोनुं भासन थाय एवा ज्ञानना समूहनी पदवी जे मुक्तिपदवी तेने लहे के० प्राप्त करे. तेज आत्मानुं नाम परमात्मा कहीए. ए रीते अहो प्रभु! मने तमारा कहेवाथी तमारा रूपनो प्रतिभास करामलकवत् थयो ॥ ७ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन.

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥

॥ पंथडो निहालुंरे बीजा जिनतणोरे ॥ ए देशी ॥

चरमजिणेसर विगत स्वरूपनुंरे ॥ भावुं केम स्वरूप ॥ साकारी
विण ध्यान न संभवेरे ॥ ए अविकार अरूप ॥ चरम० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! चरमजिनेश्वर शासननायक महावीर परमात्माना स्व-रूपनुं चिंतवन कर. त्यारे शुद्धचेतना कहेछे के ते तो विगतस्वरूपी छे. अर्थात् मनःप-र्यवज्ञानी पण जेना स्वरूपने जाणी शके नहीं तो हुं शी रीते जाणी शकुं. वली सिद्धां-तमां सालंबन ध्यान कह्युं छे तो रूपविना आलंबन केम संभवे? आलंबनने अभावे ध्याननो असंभव तेथी साकारी के० आकारवालाविना ध्यान केम करी शकुं ? वली परमेश्वर ज्ञानावरणादि कर्मना विकाररहित माटे अविकारी छे तथा रूपरहित तेथी अरूपी छे. माटे एवा चरमपरमेश्वर अलख स्वरूपीने स्वरूपे केम चिंतवी शकुं? ॥ १ ॥

आप स्वरूपे आतममां रमेरे ॥ तेहना धुर बे भेद ॥ असंख
उक्कोसें साकारी पदेंरे ॥ निराकारी निरभेद ॥ चरम० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे शुद्धचेतना ! तें कह्युं के, विगतस्वरूपीने शीरीते ध्याई शकुं? ते तारुं वचन सत्यासत्य छे, कारणके अरूपीनुं ध्यान संभवे छे तेथी असत्य छे अने तुं पण

चेतना मात्र चिंतववारूप छो तेथी आत्मधर्मरहित अने हुं आत्मा छतां अघरूपीनुं तेथी आत्मधर्मरहित छुं, तेथी आपणे बंने विगतस्वरूपीनुं ध्यान ध्याववा अशक्त छीए तेथी सत्य छे. परंतु तुंज शुद्धचेतना थई मारा आत्मामां रमणता कर, तो हुं पण आपस्वरूपे आत्मामां रमुं. जे आत्मा आपस्वरूपे आत्मामां रमे ते आत्माने ध्याता अने आत्मस्वरूपने ध्येय कह्युं छे. कारणके ते आत्माने तथा परमात्माने अनेद छे. घनघाती चार कर्म खपावी अघाती चार कर्म जेना शेष रहे तेवा आत्मा ते साकारी परमात्मा छे अने जेना घाती अने अघाती सर्व कर्म खपी गयाछे ते निराकारी परमात्मा छे. तेमां वळी साकारी परमात्माना बे नेद छे. एक तीर्थंकर नाम कर्मोदयी साकारी, बीजा अतीर्थंकर नाम कर्मोदयी साकारी. तेमां तीर्थंकर साकारी उत्कृष्ट पदें १७० अने उत्कृष्ट पदें अतीर्थंकर साकारी–सामान्य केवली नवक्रोड पामीए. निराकारी अनंतसिद्धोनुं एकरूप माटे तेउं नेदरहित छे ॥ २॥

सूखम नाम करम निराकार जे रे ॥ तेह नेदें नहीं अंत ॥ निराकार
जे निरगत कर्मथीरे ॥ तेह अनेद अनंत ॥ चरम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वळी हे शुद्धचेतना! आ वचनो मारां लाडनां वचनो छे ते सांजल. निराकारना बे नेद छे. एक सूक्ष्म नामकर्मी निराकार अने बीजा निर्गतकर्मी निराकार. अहीं ध्यान करवा माटे वर्णन नथी, परंतु निराकार नाम मात्रना नेदनुं वर्णन छे. सूक्ष्म नामकर्मोदयथी प्राप्त थयुं जे निराकारीपणुं तेना नेदनी संख्यानो पार नथी, तेमज निर्गत के० सर्वथा खपाव्यां छे कर्म जेणे एवा निराकारी जे सिद्ध तेना पण नेद अनंत छे. सर्व सिद्धोनी सत्ता असंख्यात प्रदेशात्मक, जिन्नपणामाटे अनंत छे ॥ ३ ॥

रूप नहीं कंईए बंधन घट्युंरे ॥ बंधन मोक्ष न कोय ॥ बंध
मोक्षविण सादि अनंतनुंरे ॥ नंग संग केम होय ॥ चरम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वळी हे आनंदघन ! जो आत्माने रूप नथी तो बंधन शीरीते घटे ? एटले कर्मथी बंधावुं शीरीते संजवे. रूपविना बंधनो असंजव. ज्यारे बंध नहीं अने आत्माने त्रणेकाळें अबंधक मानशो तो पुण्य पापना क्षयथी जे मोक्ष थाय ते मोक्षनो पण असंजव अने मोक्षने अजावे सादि अनंत नांगाना संगनो पण असंजव होय ॥ ४॥

द्रव्यविना तेम सत्ता नवि लहेरे ॥ सत्ताविण स्यो रूप ॥ रूप
विना केम सिद्ध अनंततारे ॥ नावुं अकल स्वरूप ॥ चरम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम कोई मनुष्यने पुछ्युंके पृथ्वी उपर घट छे ? तेणे पृथ्वी तरफ जोई

घट न दीठो त्यारे कह्युं के पृथ्वी उपर घट द्रव्य नथी. द्रव्यने अभावे सत्ता के० अस्तित्व पण न होय अने सत्ताने अभावे रूप के० स्वरूप पण शेनुं होय. माटे हे आनंदघन! रूपने अभावे वस्तुनो अभाव समजवो अने वस्तुने अभावे, एक, बे, त्रण, चार, एवी संख्यानो पण संभव नथी तो सिद्धनी अनंतता तो केम संभवे? माटे चरम जिनेश्वरनुं स्वरूप चिंतववा तमे कह्युं परंतु अकल स्वरूपनुं स्वरूप केम भावुं ते आप कहो ॥ ५ ॥

आतमता परिणति जे परिणम्यारे ॥ ते मुज भेदअभेद॥तदा
कारविण मारा रूपनुंरे ॥ ध्यावुं विध प्रतिषेध ॥ चरम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे शुद्धचेतना तथा आनंदघनने चरम जिनेश्वर उत्तर आपे छे. आत्माने विषे रह्युं जे आत्मस्वधर्म तेने विषे आत्मतानुं परिणमवुं–तद्रूपथवुं, अर्थात् आत्मस्वरूपने विषे स्थिरताभावे– रूपातीत भावे अभेदोपचारे प्रवर्त्तवुं, तेवी परिणतिए परिणम्या एवा, ज्ञानदर्शनरूप आत्मा अने आत्मता ते ज्ञानदर्शन, आत्मामां अने मारामां एटलोज भेद छे. ते साकारी परमात्मा अने हुं सिद्ध निराकारी परमात्मा, माटे बहिरात्मपणुं तजी अंतरात्म स्वरूपवंत थइ मारा अभेद्य अछेद्यादि स्वरूपने विषे तदाकार थइ मारा रूपनुं ध्यावुं के० ध्यान करवुं तेतो विध के० ध्याननो विधि छे अने तदाकार थयाविना स्वरूप धर्मने अभावे अर्थात् बहिरात्मपणे ध्यान करवुं ते प्रतिषेध के० निषेध छे, एम जाणजो ॥ ६ ॥

अंतिम भवगहणे तुज भावनुंरे ॥ भावशुं शुद्धस्वरूप ॥ तइयें
आनंदघन पद पामशुंरे ॥आतमरूप अनूप ॥ चरम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ते सांभली आनंदघन बे हाथ जोडी वीर परमात्माने विनंति करेछे. अहो स्वामि! अंतिम भवगहणे के० भविष्यमां सर्वथा अभावी एवो जे छेल्लो भव अर्थात् चरमावर्त्तन, चरमकरण अने भवपरिणतिनो परिपाक, ए सर्व प्राप्त थशे त्यारे तुज भावनुं के० परमात्मस्वभावनुं मारा आत्मामां भावशुं के० चिंतवन करीश. ज्यारे परमात्मस्वभावनुं चिंतवन करीश त्यारेज जे अरूपी छे तथा जे अनुपमेय छे एवा आनंदघनपद के० मुक्तिपद, तेने प्राप्त करीश ॥ ७ ॥ इति श्रीमहावीरजिन स्तवन॥ इति श्री ज्ञानसारजीकृत बालावबोध संपूर्ण ॥

॥ इति श्रीआनंदघनकृतचतुर्विंशतिजिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ श्रीशांतिनाथायनमः ॥

॥ अथ श्रीमद्यशोविजयजीउपाध्यायकृत द्रव्यगुणपर्यायनो रास ॥

॥ बालावबोधसहित लखियें बेयें ॥

॥ श्लोकः ॥

इंद्रश्रेणीनतं नत्वा। जिनं तत्वार्थदेशिनं ॥
प्रबंधे लोकवाचात्र। लेशार्थः कश्चिदुच्यते ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥

श्रीगुरुजितविजयमनधरी ॥ श्रीनयविजयसुगुरुआदरी ॥
आतमअरथीनेउपकार ॥ करुंद्रव्यअनुयोगविचार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीजितविजयपंम्ति अनेश्रीनयविजयपंकित एबेहुरुडागुरुने चित्तमां संजारीने आत्मार्थी ज्ञानरुचि जीवना उपकारनेहेते द्रव्यानुयोगनो विचार करुंछुंजे अनुयोगते सूत्रार्थव्याख्यान तेहना चारभेद शास्त्रेंकह्याछे १ आचारवचन आचारांग प्रमुखसूत्र ते चरणकरणानुयोग २ संख्याशास्त्र चंद्रप्रज्ञप्तिप्रमुखसूत्र ते गणितानुयोग ३ ज्ञाताप्रमुख आख्यायिकावचन तेकथानुयोग ४ षट्द्रव्यादिविचारते सूत्रमध्येसूत्रकृतांग तथाप्रकरणमध्ये संमतितत्वार्थप्रमुख महाशास्त्र तेद्रव्यानुयोग एचारभेदमां द्रव्यानुयोग जे द्रव्यगुणपर्याय ते विचारेछे तेनोमहिमाकहेछे इहांप्रथम गुरुने नमस्कारकरीने प्रयोजनसहित अभिध्येयदेखाड्युं. पहेलाबेपदें नमस्कारकस्यो ते मंगलाचरणदेखाड्युं अने इहांअधिकारी आत्मार्थिजीवछे तथाआत्मार्थिने अवबोधथसे ते उपकाररूप प्रयोजनजाणवुं द्रव्यनो अनुयोगके० कथन तेइहांआत्मार्थि ज्ञानरुचिजीवनाउपकारनेअर्थेकरुंछुं ॥ १ ॥

विनाद्रव्यअनुयोगविचार ॥ चरणकरणनोनहिकोसार ॥
संमतिग्रंथेंभाख्युंइस्युं ॥ तेतोबुधजनमनमांवस्युं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगनो विचारकस्याविना केवलचरणसितरी तथाकरणसितरी प्रमुखनो सारकोइछेनही एवुंसंमतिग्रंथनेविषेकह्युंछे तेतो बुद्धजननामनमांवस्युं पण बाह्यदृष्टीना चित्तमांवसेनही. उक्तंच चरणकरणप्पहाणा ॥ ससमयपरसमयमुक्कवावारा ॥ चरणकरणस्संसारं ॥ णिछयसुद्धंनयाणन्ति ॥ १ ॥ वलीतेहीजदृढकरेछे ॥ २ ॥

शुद्धआहारादिकतनुयोग ॥ मोटोकहिउंद्रव्यअनुयोग ॥ ए
उपदेशपदादिकग्रंथे ॥ सांखलहीचालोशुभपंथे ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ बेतालीसदोषरहित शुद्धआहारलेउं इत्यादिकयोगछे पणतेसर्व तनुके० न्हानायोगकहियें अने स्वसमयपरिज्ञानजे द्रव्यअनुयोगते मोटोयोगकह्योछे केमके शुद्धआहारादिकेंतो स्वाध्यायनुंज साधनछे एसांख उपदेशपद आददेइने ग्रंथोथीलेइने शुभपंथेके० उत्तममार्गेचालो पणबाह्यव्यवहार प्रधानकरीने ज्ञाननीगौणताकरवी ते अशुद्धमार्गजाणवो अनेजिहांज्ञाननी प्रधानता राखवी तेशुभ उत्तममार्ग जाणवो जे ज्ञानादिकगुणनोहेतु गुरुकुलवासतेनेछांडी शुद्धआहारादिकनी यत्नावंतने महादोषें चारित्रहानि कहीछे यतः गुरुदोषारंभितयालध्धकरणयत्नतोनिपुणधीभिः ॥ सन्निंदादेश्च तथाज्ञायतेयन्नियोगेन इतिषोडशके ॥ ३ ॥

एयोगेंजोलागेरंग ॥ आधाकर्मादिकनहिभंग ॥ पंच
कल्पभाष्येंइमभण्युं ॥ सद्गुरुपासेइस्युंमेंसुण्युं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे द्रव्यानुयोगविचाररूप जेज्ञान तेनेयोगें जोअभंग सेवारूप रंगलागे तो गुरुकुलवासें समुदायमध्ये ज्ञानाभ्यासकरतां कदाचित्आधाकर्मादि दोषलागे तोपण चारित्रभंगथायनही केमके भावशुद्धि बलवंत छे माटे. एरीतें पंचकल्पभाष्यमां कह्युं छे तथा सद्गुरुपासेथीपण एमसांभल्युं अतएव कल्पाकल्पतो अनेकांत शास्त्रेकह्युंछे ॥ आहागमाइभुंजंति अणमणेसकम्मुणा उवलितेवियाणिज्जाअणुवतलित्तत्तिवापुणोएतेहिंदोहिंठाणेहिं ववहारेणविज्जइ एतेहिंदोहिंठाणेहिंअणायारं तुजाणए ॥ २ ॥ एमबीजाअंगनापहेलाअध्ययनमांकह्युंछे तथा किंचिच्छुद्धंकल्प्यमकल्प्यंस्यादकल्प्यमपिकल्प्यं ॥ पिंडःशय्यावस्त्रंपात्रंवाभेषजाद्यंवा ॥ १ ॥ देशंकालंपुरुषमवस्थामुपयोगशुद्धिपरिणामान् ॥ प्रसमीक्ष्यभवतिकल्प्यं नैकांतात्कल्प्यतेकल्प्यं एमप्रशमरतिग्रंथमांकह्युंछे ॥ ४ ॥

बाह्यक्रियाछेबाहिरयोग ॥ अंतरक्रियाद्रव्यअनुयोग ॥ बाह्य
हीनपणज्ञानविशाल ॥ भलोकह्योमुनिउपदेशमाल ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आवश्यकादिरूपबाह्यक्रियातेतो बाह्ययोगछे अनेद्रव्यानुयोगजे स्वसमय परिज्ञानते अंतरंगक्रियाछे माटेजे बाह्यक्रियायेंहीनहोय पणज्ञानविशालबहुश्रुतहोय एवो मुनीश्वर ते उपदेशमालामां भलोकह्योछे यतः नाणाहिउंवरतरं हीणोविहुपवयणंपभावंतो ॥ नयदुक्करंकरितो सुट्ठुविअप्पागमोपुरिसो ॥ १ ॥ हीणस्सविसुद्धपरुवगस्स

नाणाहियस्सकायवं तेमाटे क्रियाहीनतादेखीनेपण ज्ञानवंतनी अवज्ञा न करवी तेहने ज्ञानयोगेकरीनेजप्रभाविकजाणवुं ॥ ५ ॥

द्रव्यादिकचिंतायेंसार ॥ शुक्लध्यानपणलहियेंपार ॥ ते
माटेएहिजआदरो ॥ सदगुरुविणमतभूलाफिरो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइपुछेजे क्रियाहीन ज्ञानवंतनेजलोकह्योतेतो दीपकसम्यक्तनी अपेक्षायेंकह्यो पणक्रियाहीनतायें मात्र ज्ञानथीज पोतानो उपकार न थाय एमकहे तेनी शंकाटालवाने द्रव्यादिकज्ञान तेहिजशुक्लध्यानद्वारें मोक्षनुं कारणछे माटेउपादेयछे ए द्रव्यादिकनी चिंतवणायें शुक्लध्याननोपण पारपामियें केमके आत्मद्रव्य गुणपर्याय-भेदचिंतायें पण शुक्लध्याननो पहेलोपायोहोय अने तेनीज अभेदचिंतायेंशुक्लध्याननो वीजोपायोहोय तथाशुद्धद्रव्य गुणपर्यायनीभावनायें सिद्धसमापत्तिथाय तेतो शुक्लध्याननुंफलछे एमप्रवचनसारोद्धारमध्येकह्युंछे जोजाणइअरिहंते दवगुणपज्जवंतेहिं ॥ सोजाणइअप्पाणं मोहोखलुजाहितस्सलयं ॥ १ ॥ तेमाटेएहिज द्रव्यानुयोगने आदरो एहिजउपायछे पणसद्गुरुविना स्वमतिकल्पनायें भूलाफिरसोनही ॥ ६ ॥

एहनोजेणेपाम्युंताग ॥ उंघेएहनोजेहनेराग ॥ एवेविण
त्रीजोनहिसाध ॥ भाष्योसंमतिअरथअगाध ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेजेज्ञानविना मात्रचारित्रथीज संतुष्टथायछे तेहनेशिक्षा कहेछे एक तो एद्रव्यानुयोगनो जे ताग के० पारपामी संमतिप्रमुख तर्कशास्त्रजाणीने जेगीतार्थ थयो ते तथा वीजो उंघे के० सामान्यप्रकारें एद्रव्यानुयोगनो जेनेरागछे तेगीतार्थनिश्रित एवेहुविना त्रीजोसाधुनही एवोअगाधअर्थ संमतिग्रंथमांकह्योछे तेमाटेज्ञानविना चारित्रजनहोय उक्तंच गाथा ॥ गीयच्छोयविहारो वीउंगीयच्छनिस्सिउंभणीउं ॥ इत्तो तइयविहारो नाणुणाउंजिणवरेहिं ॥ १ ॥ एटलोविशेष जे चरणकरणानुयोग दृष्टी निशीथ कल्प व्यवहार दृष्टीवादीध्ययने जघन्यमध्यमोत्कृष्ट गीतार्थजाणवा द्रव्यानुयोगदृष्टीते संमत्यादिक तर्कशास्त्रपारंगामीज गीतार्थजाणवा अने तेनीनिश्रायेंज अगीतार्थनेंचारित्रकहेवुं ॥ ७ ॥

तेकारणगुरुचरणआधीन ॥ समयसमयइणयोगेलीन ॥ सा
धुजेकिरियाव्यवहार ॥ तेहिजभमोटोआधार ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगनी लेशमात्रप्राप्ति पोताना आत्मानें कृतकृत्यताकहेछे ते माटे द्रव्यानुयोगनी वलवत्तानेंहेतें गुरुचरणनें आधीनतायेकरी मतिकल्पनापरि-

हरीनें समयसमय एद्रव्यानुयोगें लीन के० आसक्तथका जेक्रियाव्यवहारसाधु छैयें तेहिजअमनें महोटोआधारछे केमके एनाथी इछायोगसंपजे तेहलुंलक्षणकहेछे कर्त्तु-मिछोःश्रुतार्थस्य ज्ञानिनोपिप्रमादिनः ॥ विकलोधर्मयोगोय मिछायोगउदाहृतः ॥ १ ॥ एमललितविस्तरादिग्रंथनेविषेकह्युं एमइछायोगेंरहीनें हुंपरोपकारनेअर्थें द्रव्यानुयोग-नो विचारकहुंछु पणएटलेंज संतुष्टकरवोनही विशेषार्थें गुरुसेवामूकवी नही एहित-शिक्षाआगलीगाथामांकहेछे ॥ ८ ॥

संमतितत्वार्थमुख्यग्रंथ ॥ मोटाजेप्रवचननिर्ग्रंथ ॥ तेहनो लेशमात्रएलह्यो ॥ परमारथगुरुवयणेरह्यो ॥ ए ॥

अर्थ ॥ संमतितत्वार्थ प्रमुखग्रंथ जे महोटानिर्ग्रंथ प्रवचनरूपछे तेनोलवलेशमात्र एलह्योके० आप्रबंधमांबांध्योछे पणपरमार्थें गुरुवचनरहेजो थोडुंजाणीने गर्वकरशो-नही अधनेनधनंप्राप्तं तृणवत्मन्यतेजगत् एहदृष्टांते माटेज ऊपरलाचारनय ते अति-गंभीरछे घणाने न परिणमे एमजाणीने सिद्धांते पेहेलादेखाव्यानथी अनेजेगंभीर होयगुरुआधीनहोय तेहनेजदेखाडवाकह्याछे ॥ ए ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धनधनसंप्रतिसाचोराजा ॥ ए देशी ॥

गुणपर्यायतणूजेभाजन ॥ एकरूपतिहुंकालेंरे ॥ तेहद्रव्यनिजजातिकहियें ॥ जसनहिभेदविचालेंरे ॥ जिनवाणीरंगेमनधरियें ॥ १ ॥ एआंकणी ॥

अर्थ ॥ गुण तथा पर्यायनो जे भाजनके० स्थानक तेजेहनोअतीत अनागत तथा वर्त्तमान एत्रणेंकालें एकस्वरूपेंहोय पणपर्यायनीपरेफिरेनही तेहनें निजजातिके० पोतानी स्वजाति द्रव्यकहियें जेमज्ञानादिक गुणपर्यायनुं भाजन तेजीवद्रव्यअने रूपादिगुणपर्यायनुं भाजनते पुद्गलद्रव्य तथा रक्तादि घटादि गुणपर्यायनुं भाजन ते मृद्द्रव्य वलीतंतुतेपटनीअपेक्षायें द्रव्य अनेतंतुअवयवनी अपेक्षायें पर्याय केमके पटनेविचालें पटावस्थामध्ये तंतुनोभेदनथी अनेतंतुअवयव अवस्थामध्ये अन्य-त्वरूप भेदछे माटे पुद्गलस्कंधमां द्रव्यपर्यायपणो ते अपेक्षायें जाणवो इहांकोइ कहेशेजे एरीतें द्रव्यत्वपणुं स्वभाविकनथयुं पण अपेक्षिकथयुं तेने उत्तर जे सकलवस्तुनो व्य-वहारते अपेक्षायेंज होयछे माटे इहांदोषनथी जे समवायी कारण प्रमुखें द्रव्यलक्षण मानेछे तेनेपण अपेक्षा अवश्य अनुसरवी गुणपर्यायवत् द्रव्यं इतितत्वार्थे एजिनवा-णीनेंरंगके० विश्वासें मनमांधरियें ॥ १ ॥

धरमकह्हीजेगुणसहनावी ॥ क्रमनावीपर्यायोरे ॥ निन्नअनिन्न त्रिविधतियलक्षण ॥ एकपदारथपायोरे ॥ जिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ सहनावीके० यावत् ड्रव्यनावी जेधर्म तेनेगुणकहियें जेमजीवनोगुण उपयोग अने पुजलनोगुण ग्रहणपणो तथा धर्मास्तिकायनो गतिहेतुत्वगुण वलीअधर्मास्तिकायनो स्थितिहेतुत्वगुण अने आकाशड्रव्यनो अवगाहनाहेतुत्वगुण कालड्रव्यनो वर्त्तनाहेतुत्वगुण एरीतेंड्रव्यना स्वनाविकधर्म ते गुणजाणवा तथा क्रमनाविके० यावत् ड्रव्यनावी ते पर्यायकहियें जेम जीवने नरनारकादिक पर्याय तथा पुजलने रूपरसादि परावर्त्तिते पर्यायजाणवा एम ड्रव्यादिक ते ड्रव्य गुण पर्याय ए त्रणरीतें निन्न ठे तथा लक्षणादिकथी अनिन्नठे अने प्रदेशना अविनागथी त्रिविधठे केमके नवविधोपचारें एकेकमां त्रणत्रणनेद आवे ते नवविधोपचार कहेठे १ ड्रव्यें ड्रव्योपचार २ ड्रव्ये गुणोपचार ३ ड्रव्यें पर्यायोपचार ४ गुणेड्रव्योपचार ५ गुणेगुणोपचार ६ गुणेपर्यायोपचार ७ पर्यायें ड्रव्योपचार ८ पर्यायें गुणोपचार ए पर्यायें पर्यायोपचार तथा तियलक्षणके० उत्पादव्यय अने ध्रुवस्वरूपठे एहवानावने एकपदार्थे जैनप्रमाणे पाम्यो थकोठे एह्वारूप पाठलावेपद जाणवा ॥ २ ॥

जेममोतीउज्ज्वलतादिकथी ॥ मोतीमालाअलगीरे ॥ गुण परयायव्यक्तिथीजाणो ॥ ड्रव्यशक्तितेमवलगीरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे आढालमां प्रथम ड्रव्य गुणपर्यायनो नेदयुक्ति देखाडेठे जेम मोतीथकी तथा मोतीना उज्ज्वलतादिक धर्मथकी मोतीनीमाला अलगीठे तेमज ड्रव्यनीशक्ति ते गुणपर्यायनी व्यक्तिथी अलगीठे तथा एकप्रदेश संबंधेवलगीठे एटले एमजे मोती ते पर्यायनेठामें जाणवा अने उज्ज्वलतादिक धर्म ते गुणने ठामे जाणवो तथा माला ते ड्रव्यनेठामे जाणवी एम दृष्टांत जोम्वो एरीतें घटादिड्रव्य प्रत्यक्ष प्रमाणें सामान्य विशेषरूप अनुनवेठे ते सामान्य उपयोगें मृत्तिकादि सामान्य नासेठे विशेष उपयोगें घटादिक विशेष नासेठे तेमांहे जे सामान्य ते ड्रव्य जाणवुं अने विशेषते गुण पर्यायरूप जाणवा३

उरधतासामान्यशक्तिते ॥ पूरवअपरगुणकरतीरे ॥ पिंम्कुसूलादिकआकारे ॥ जेममाटीअणफिरतीरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे आगली गाथामां ड्रव्यने सामान्य कह्युं ते सामान्यना बेप्रकारठे ते देखाडेठे एकउर्ध्वता सामान्यरूप ड्रव्यशक्ति ते तेहनेकहियें जे पूरवके० पहेला अने अपर के० आगलें गुण के० विशेष तेने करती ते सर्वमां एकरूपे रही ठे जेम पिंम्के०

माटीनो पिंम्रो अने कुसूलादिके० कोठीप्रमुख एवा मृत्तिकाना अनेक आकारफिरेछे पण तेमां माटी फिरतीनथी ते पिंम्र कुसूलादिक आकारने ऊर्ध्वता सामान्य कहियें अने जो पिंडकुसूलादिक पर्यायमां अनुगत एक मृद्रुद्रव्य न कहियेंतो घटादि पर्यायमां अनुगत घटादि द्रव्यपण न कहेवाय तेथी सर्व विशेषरूप थातां क्षणिकवादि बौद्धमत आवे अथवा सर्वद्रव्यमां एकज द्रव्यआवे माटे घटादिद्रव्य अने तेमां सामान्य मृदादिद्रव्य अनुभवने अनुसारें परापर ऊर्ध्वता सामान्य अवश्यमानवा घटादि द्रव्य ते रक्तादिक थोडा पर्यायने व्यापेछे अने मृदादि द्रव्य ते रक्तादिक घटादिक घणापर्यायने व्यापेछे एम नरनारकादिकपणुं तेपण द्रव्यनो विशेष जाणवो ए सर्व नैगमनयनुं मत अने शुद्धसंग्रहनयनेमतेतो सदद्वैतवादें एकज द्रव्यआवे एमजाणवुं ॥४॥

भिन्नविगतमांरूपएकजे ॥ द्रव्यशक्तिजगदाखेरे ॥ तेतिर्यक्
सामान्यकहीजे ॥ जेमघटघटपणेराखेरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजोभेद देखाडेछे ते भिन्नविगतमांके० भिन्नप्रदेशी विशेषमां जेद्रव्य पोतानीशक्ति एकरूप एकाकारछे ते देखाडेछे तेतिर्यक् सामान्यछे जेम घटघटपणे घटत्वराखेछे इहां कोइपुछे जे घटादिक भिन्नव्यक्तिमां जेमघटत्वादिक एकसामान्यछे तेमज पिंम्रकुसूलादि भिन्नव्यक्तिमां मृदादिक एकसामान्यछे तो तिर्यक् सामान्य अने ऊर्ध्वता सामान्यनो स्योविशेषछे तेनेकहियेंजे देशभेदें जिहांएकाकारप्रतीतउपजे तिहांतिर्यक् सामान्यकहियें अने जिहांकालभेदें अनुगताकारें प्रतीत उपजे तिहां ऊर्ध्वता सामान्य कहियें कोइक दिगंवरानुसारी एमकहेछे जे षट्द्रव्यने कालपर्यायरूप ऊर्ध्वताप्रचयछे अने कालविना पांचद्रव्यने अवयव संघातरूप तिर्यक् प्रचयछे तेनेमते तिर्यक् प्रचयनो आधार घटादिक तिर्यक् सामान्य थाय पण परमाणुरूप प्रचयपर्यायनो आधार भिन्नद्रव्य जोइयें माटे पांचद्रव्यने खंध देश प्रदेशभावेंज एकअनेक व्यवहार उपपादवो पण तिर्यक् प्रचय नामांतर न कहेवुं ॥ ५ ॥

शक्तिमात्रतेद्रव्यसर्वनी ॥ गुणपर्यायनीलीजेरें ॥ कार्यरूप
निकटदेखीने ॥ समुचितशक्तिकहीजेरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेऊर्ध्वतासामान्यशक्तिनाबेभेददेखाडेछे तेमांजे सर्वद्रव्यनी पोतपोताना गुणपर्यायनी शक्तिमात्रलीजे तेओघशक्तिकहियें अनेजेकार्यरूप निकट के० वहेलुं उपजतुं देखीयें तेकार्यनीअपेक्षायें तेनेसमुचितशक्तिकहियें समुचितके० व्यवहारयोग्य ॥६॥

घृतनीशक्तियथातृणभावें ॥ जाणीपणनकहायरे ॥ दुग्धा
दिकभावेतेजनने ॥ भाषीचित्तसुहायरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ इहां दृष्टांत कहेछे जेमपुद्गल द्रव्यमां घृत उपजवानीशक्ति तृणभावेंछे न-हीकां तृणआहारथी धेनुदुध आपेछे तेदुधमां घृत नीपजवानीशक्तिकिहांथीआवी एम अनुमान प्रमाणें तृणमां घृतशक्तिजाणी पण कहेवायनही माटे तेनेउंघशक्ति कहियें अने जोतृणने दुग्धादिकभावेंके० दूध दहीप्रमुखने परिणामें घृतशक्ति कहियेंतो ते भाषीथकी जनके० लोकना चित्तमां सुहायछे माटे तेने समुचितशक्ति कहियें एटले अ-नंतरकारणमां समुचितशक्ति कहेवी अने परंपरकारणमां उंघशक्ति कहेवी एविवेकछे एवेनाज १ अन्यकारणता २ प्रयोजनता एबेबीजानाम पणकहेछे तेजाणवां ॥ ७ ॥

धरमशक्तिप्राणीनेपूरव ॥ पुद्गलनेआवर्त्तरे ॥ उंघेंसमुचित
जेमवलीकहियें ॥ छेहलेंतेआवर्त्तरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे एशक्ति ते आत्मद्रव्यमां फलावेछे जेम प्राणीके० भव्यजीवने पूरव के० पहेला अनंता पुद्गल परावर्त्तवित्या तेमांपण उंघेंके० सामान्यें धर्मशक्ति कहियें जोनकहियें तो छेहेले पुद्गल परावर्त्तेते शक्ति आवेनही नासतो विद्यतेभाव इत्यादि वचनात् अने छहेले पुद्गल परावर्त्तधर्मनी समुचितशक्ति कहियें अतएव अचरम पु-द्गलपरावर्त्तभाव बालकाल कह्युंछे अने छहेलो पुद्गल परावर्तधर्म यौवनकाल कह्युंछे अचरम परिअट्टेसु कालोभव बालकालमो भणिउं ॥ चरमो उधम्मजुवण कालोतह चित्तभेउत्ति ॥ १ ॥ एयोगनीबीजीवीसीमध्ये कह्युंछे ॥ ८ ॥

कारयभेदेंशक्तिभेदइम ॥ व्यवहारेंव्यवहरियेंरे ॥ निश्चय
नानाकारयकारण ॥ एकरूपतेधरियेंरे ॥ जिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एमएकेकाकार्यनी उंघसमुचितरूप अनेकशक्तिएकद्रव्यनीपामियें केमके कार्य-नाभेदेंशक्तिनोभेदथायछे तेव्यवहारनयेंकरी विवहरियें केमके एव्यवहारनय ते कार्यकार-णभेदमानेछे अने निश्चयनयथी द्रव्यना नानाप्रकारना कार्यकारण ते एकशक्तिस्वभावज हृदयमांधरियें नहीतोस्वभावभेदेंद्रव्यभेदथाय अनेव्यवहारनयें ते तेकालादिकनीअपे-क्षायें एकनेअनेक कार्यकारण स्वभावमानता कोइदोषनथी कारणांतरनी अपेक्षापण स्व-भावमांज अंतर्भूतछे तेमाटे तेनुंपण निष्फलपणुं नथाय तथाशुद्धनिश्चयनयनेमतेंतो का-रणकार्यतेमिथ्याछे आदावंतेचयन्नास्ति वर्तमानेपितत्तथा इतिवचनात् कार्यकारण कल्पनारहित शुद्ध अविचलितरूप द्रव्यजछे एम जाणवुं एशक्तिरूप द्रव्य वखाण्युं ॥ए॥

गुणपर्यायविगतबहुभेदें ॥ निजनिजजातिवरतेरे ॥ शक्ति
रूपगुणकोइकभाषे ॥ तेनहिमारगनिरतेरे ॥ जिन०॥१०॥

अर्थ ॥ हवे व्यक्तिरूपगुणपर्यायवखाणेछे तेगुणपर्यायनीव्यक्तिबहुन्नेदेके० अनेकप्रकारें निजनिजजाति सहन्नाविक्रमन्नावि कल्पनाकृत आपआपणे स्वन्नावेवर्तेछे कोइक दिगंबरानुसारी ते शक्तिरूपनेजगुण न्नाषेके० कहेछे ते आवीरीतेजे जेम द्रव्यगुणपर्यायनुं कारण द्रव्यछे तेमगुणपर्यायनुं कारण गुणछे द्रव्यपर्यायद्रव्यनो अन्यथान्नाव जेम नरनारकादिक अथवा द्व्यणुक त्र्यणुकादिक गुणपर्याय गुणनो अन्यथान्नाव नही जेममतिश्रुतादिक विशेष अथवा न्नवस्थसिद्धादि केवलज्ञानविशेष एम एकद्रव्य वीजोगुण एजातिशाश्वत अने पर्यायथी अशाश्वत एम आव्युं एम कहेछे ते निरतेके० रुडेमार्गें नही केमके एकल्पना शास्त्रथी तथा युक्तियें मिलेनही ॥ १० ॥

पर्यायथीगुणन्निन्ननन्नाषीउं ॥ संमतिग्रंथेव्यक्तिरे ॥ जेहनो
न्नेदविवक्षावशथी ॥ तेकेमकहियेंशक्तिरे ॥ जिन०॥११॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरकहेछे जेपर्यायथकीगुणते न्निन्नके० जूदोन्नाष्योनथी एमसंमति ग्रंथनेविषे व्यक्तिके० प्रगटअक्षरेकह्युंछे गाथा ॥ परिगमणंपज्जाउ अणेगकरणे गुणत्तितुल्लछा ॥ तहविणगुणत्तिन्नणइ पज्जवणयदेशणाजह्मा ॥१॥ अर्थ ॥ जेम क्रमन्नाविपणुं पर्यायनुंलक्षणछे तेमअनेकपणुंकरवुं तेपणपर्यायनुंलक्षणछे द्रव्यतो एकजछे अनेज्ञानदर्शनादिकन्नेदकरेछे तेपर्यायछे पणगुणनकहियें केमके द्रव्यपर्यायनीदेशना न्नगवंतनीछे पणद्रव्यगुणनीदेशनानथी इतिगाथार्थ ॥ इहांकोइपुछे जे एरीतेंजो गुणते पर्यायथीन्निन्नथी तोद्रव्यगुणपर्याय एत्रणनांनाम किमकहोछो तेमनेकहेवुंजे विवक्षाके० न्नेदनयनीकल्पना तेहथीजेम तैलस्यधारा इहां ते लने धारा न्निन्नकहीदेखाड्या पण तेल अनेतेलनीधारा न्निन्ननथी तेमसहन्नावी क्रमन्नावी कहीनें गुणपर्याय न्निन्नकहीदेखाड्या पणपरमार्थेन्निन्ननथी एरीतें जेहनोन्नेद उपचरितछे तेहनेंशक्तिकेमकहियें जेम उपचरित गायदूजेनही तेम उपचरित गुण तेपणशक्तिधरेंनही ॥ ११ ॥

जोगुणत्रीजोहोएपदारथ ॥ तोत्रीजोनयलहीयेंरे ॥ द्रव्या
रथपर्यायारथनय ॥ दोइजसूत्रेकहीयेंरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेजेगुणनेपर्यायथीन्निन्नमानेछे तेहनेदूषणआपेछे के जोगुणएहवोत्रीजोपदार्थद्रव्यपर्यायथी जूदोन्नावहोय तोनयपणत्रीजो लहीयेंके०पामियें पणतेतो किहांकज्ञानथी सूत्रमांहेतो १ द्रव्यार्थ२ पर्यायार्थएबेहुजनयकह्याछे अनेजोगुण होय तोत्रीजोगुणार्थनयपणकह्योजोइयें उक्तंचसंमतौ दोउणणयान्नगवया दवठियपज्जवठियाणिपया ॥ जइपुणगुणोविहुंतो गुणठियणउंविजुज्जंतो ॥१॥ जंचपुण न्नगवया तेसुसुत्तेसुगोयमाईणं ॥ पज्जवसणाणीयया वागरियातेणपज्जाया ॥२॥ रूपादिकनें गुणकहीनें सूत्रेबोलाव्यानथी प-

णवन्नपज्जवा गंधपज्जवा इत्यादिकपर्यायशब्दें बोलाव्या छे तेमाटेपर्याय कहियें पण गुण कहियें नही अने एगगुणकालए इत्यादिकठामें जे गुण शब्दछेते गणितशास्त्र सिद्धपर्यायविशेषसंख्यावाचीछे पणतेवचनगुणास्तिकनयविषयवाचीनथीउक्तंचसंमतिग्रंथे जंपइअन्निसमए एगगुणोदसगुणोअणंतगुणो ॥ रूवाइपरिणामो जन्नइतम्हागुण विसेसो ॥१॥ गुणसद्दमंतरेणावि तंगुपज्जवविसेससंखाणं ॥ सिज्जइ नवरंसंखाणे ॥ सब धम्मोणय गुणोत्ति ॥ २ ॥ जहदससुदसगुणमिय ॥ एगंमिदसत्तणं समंचेव ॥ अहियंमिविगुणसद्दे तहेवइयंपिदठवं ॥ ३ ॥ एम गुण ते परमार्थ दृष्टियें पर्यायथी जिन्न नथी तो तेने द्रव्यनी परें शक्तिरूप केवी रीतें कहियें ॥ १२ ॥

जोगुणदलपर्यवनुंहोवे ॥ तोद्रव्येंसुंकीजेरे ॥ गुणपर्याय
पटंतर केवल ॥ गुणपर्याय कहीजेरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजेपर्यायनुं दलतेगुणछे माटे गुणनेजेशक्तिरूपकहेछे तेहने दूषणआपेछे जोगुणपर्यायनुं दलके० उपादानकारणहोय तोद्रव्यसुंकीजे द्रव्यनोकाम गुणेजकीधो माटे १ गुण २ पर्याय एबेजपदार्थकह्यो पणत्रीजोद्रव्यपदार्थनहोय कोइकहेसे जे द्रव्यपर्याय तथागुणपर्यायरूपकार्यंजिन्न छे तेमाटे एकद्रव्य बीजुंगुणरूप कारणजिन्न कल्पियें एम कहेछे तेजूठो छे केमके कार्यमांकारणशब्दनोप्रवेश छे तेथीकारणजेदें कार्यजेद सिद्धथाय अनेकार्यजेदसिद्धथयोहोय तो कारणजेद सिद्धथाय नहिंकां अन्योन्याश्रय नामेदूषणउपजेमाटे गुणपर्याय जे कहियें ते गुणपरिणामनो जे पटंतर जेदकल्पनारूप तेथीजकेवलसंजवेछे पण परमार्थें नही अनेद्रव्यगुणपर्याय ए त्रण नामकहियें छैयें तेपणजेदोपचारेंजकहियेंछैयें एमजाणवुं ॥ १३ ॥

एक अनेकरूपथी एणीपरे ॥ जेद परस्पर जावोरे ॥ आधा
राधेयादिक जावें ॥ इमजजेद मन लावोरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एणीपरेके० ए रीतें द्रव्य एक अने गुणपर्याय अनेक ए रूपें परस्पर के० माहोमांहे जेदजाव विचारो एमज आधार आधेय प्रमुख जावेंके० स्वजावें करीने एनो जेद मनमां लावो केमके परस्पर अवृत्तिधर्म परस्परमां जेद जणावे ॥ १४ ॥

द्रव्य आधारे घटादिक दीसे ॥ गुणपर्याय आधेउरे ॥ रूपा
दिक एकेंद्रियगोचर ॥ दोइ घटादिक वेउरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे तेहीज विवरीदेखाडेछे जेघटादिकद्रव्यते आधारदेखायछे अनेएघटना रूपादिकते एमजाणियेछैयें जेगुणपर्याय रूपरसादिक तथानीलपीतादिक ते आधेय द्र-

व्यक्तपर्रेरह्याछे एमआधाराधेयन्नावें द्रव्यथी गुणपर्यायने न्नेदछे तथारूपादिकगुणपर्याय एकेक इंद्रियनो गोचरके०विषयछे जेम रूपते चक्षुरिंद्रियेंज जणायछे तथारसते रसनेंद्रियेंजजणाय इत्यादिक अने घटादिकद्रव्यछेते चक्षुइंद्रिय अनेस्पर्शइंद्रिय एदो इके० बेंद्रियेंकरीजणायछे एनैयायिकमत अनुसरीनेकह्युं अनेस्वमते गंधादिकपर्यायते घ्राणेंद्रियादिकेंपण द्रव्यप्रत्यक्षछे नहीकां कुसुमगंधुंबुं इत्यादिक ज्ञानने ञ्रांतिपणोथायछे तेजाणवुं एमएकअनेक इंद्रियग्राहकपणे द्रव्यथी गुणपर्यायने न्नेदजाणवुं अने गुणपर्यायने मांहोमाहेंन्नेदते स्वन्नावी क्रमन्नावीपणेथाय एकल्पनाथीजन्नाववुं ॥ १५ ॥

संज्ञा संख्या लक्षणथी पण ॥ न्नेद एहोनो जाणीरे ॥ सुजश
कारणी सुन्नमति धारो ॥ डुरमति वेलि कृपाणीरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तथासंज्ञाके० नाम तेथीद्रव्यनोन्नेद एटलेनामन्नेदेंन्नेद तेमांवली एकद्रव्य नामथीन्नेद बीजोगुणनामथीन्नेद त्रीजोपर्यायनामथीन्नेद तथासंख्यातेएकबेत्रणनीगणना तेथीन्नेद एटलेद्रव्यछे गुणअनेकछे पर्यायअनेकछे अनेलक्षणथीन्नेदतेनअनेक पर्यायगमन द्रव्यलक्षण नएकथीअन्यने न्निन्नकरण तेगुणलक्षण परिगमनसर्वतोव्याप्ति तेपर्यायलक्षण एमद्रव्यगुणपर्याय एहोनोमाहोमांहेन्नेदजाणीने उत्तमयशनीकरनारी न्नलीमतिनेधारो तेकहेवीछे जेडुरमतिके० द्रव्याद्वैतपक्षनीमाठीमतितेरूपणीजेवेली तेहनेविषे कृपाणीके०कोहाडीसमानछे एढालमां द्रव्यगुणपर्यायनोन्नेददेखाड्यो ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ शालिन्नद्र न्नोगी रह्यो ॥ एदेशी ॥

एकांतेजोन्नाषियेंजी ॥ द्रव्यादिकनोरेन्नेद ॥ तोपरद्रव्यपरेंहुएजी ॥
गुणगुणीन्नावउच्छेदरे ॥ न्नविका ॥ धारोगुरुउपदेश ॥ १ ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेजेद्रव्यमां एकांतेन्नेदमानेछे तेनेअन्नेदपक्ष अनुसरीने दूषणदीयेछेद्रव्यादिक के० द्रव्यगुणपर्यायनोजो एकांतेन्नेदन्नाषियें तो परद्रव्यनीपरें स्वद्रव्यने विषे पण गुणगुणी न्नावनो उच्छेदथयीजाय जेमजीवद्रव्यना गुणज्ञानादिकछे तेनोगुणी जीवद्रव्य तथापुद्गलद्रव्यनागुणरूपादिकछे तेनोगुणी पुद्गलद्रव्यछे ए व्यवस्थाशास्त्रप्रसिद्धछे तेमांन्नेदमानतां तेलोपाय जीवद्रव्यने पुद्गलगुणथी जेम न्नेदछे तेमपोतानागुणथीपणन्नेदछेतोअमुकद्रव्यनो अमुकगुण अथवा अमुकगुणनोअमुकगुणी ए व्यवहारछे तेनो विलोपथयीजाय माटेद्रव्यगुणपर्यायनो अन्नेदजसंन्नवे एहवो अन्नेदनयनागुरुनो उपदेशछे तेने हेन्नव्यप्राणीतुमेधारो आदरो जेमआत्मद्रव्यशुद्धथाय ॥ १ ॥

द्रव्यें गुणपर्यायनोजी ॥ छेअनेदसंबंध ॥ भिन्नतेहजो
कल्पियेंजी ॥ तोअनवस्थाबंधरे ॥ न० ॥ धा० ॥२॥

अर्थ ॥ वली अनेद ऊपरयुक्ति कहेछे द्रव्यनेविषे गुणपर्यायनो जे संबंधते अनेदजछे केमके जो द्रव्यनेविषे गुणपर्यायनो समवायनामे संबंधने भिन्नकल्पियें तो अनवस्थादोषतुं बंधनथाय जेथी गुणगुणथीअलगो समवायसंबंधकहियेंतो तेसमवायनेपण अनेरोसंबंधजोइयें वली ते संबंधने पण अनेरो संबंध जोइयें एमकरतां किहांपण ठहेराव न थाय अने जोसमवायनो स्वरूप संबंधनेज अभिन्न मानियें तो गुणगुणीने स्वरूप संबंध मानतां सुंविघटेछे जे फोकटनवा संबंध मानोछो ॥ २ ॥

सुवर्णकुंभलादिकहुर्डजी ॥ घटरक्तादिकन्नाव ॥ एव्यव
हारनसंन्नवेजी ॥ जोनअनेदस्वन्नावरे ॥ न० ॥ धा० ॥३॥

अर्थ ॥ वलीजेअनेदनमाने तेहनेबाधककहेछे जे सुवर्णके० सोनुंतेकुंभलथयुं तथा घरोप्रथमश्यामहतो तेहिजरातोवर्णथयो एहवोसर्वलोकनोजे अनुनवसिद्धव्यवहारछे तेजोद्रव्यादिकन्नणने अनेदस्वन्नावनहोयतो तेव्यवहारपणघटेनहि ॥ ३ ॥

खंधदेशन्नेदेंहुएजी ॥ बमणीगुरुतारेखंध ॥ प्रदेशगु
रुतापरिणामेंजी ॥ खंधअनेदसंबंधरे ॥ न० ॥ धा० ॥४॥

अर्थ ॥ वलीजेअनेदनहीमाने तेहनेबीजुंबाधककहेछेजे खंधके० अवयवी अने देशतेअवयव एहोनेजोन्नेदेंजमानियें तो बमणोन्नार खंधमांहेंथवोजोइयें जेमाटे सोतंतुनोजेपटछे ते सोतंतुंआमांजेटलोन्नार तेटलोजन्नार तेनापटमांपण थायछे तथा जेकोइनवानैयायिक एमकहेछे जे अवयवनान्नारथी अवयवीनो न्नार अत्यंतहीनछे तोतेहनेमतें द्विप्रदेशादिकखंधमांहे किहांपणउत्कृष्टगुरुता नथवीजोइयें माटेद्विप्रदेशादिकखंधते एकप्रदेशादिकनीअपेक्षायें अवयवीछे अनेपरमाणुमांहेजो उत्कृष्टगुरुत्वमानियें तोरूपादिकविशेषपण परमाणुमांहेमानवाजोइयें अनेद्विप्रदेशादिकमां न मानवाजोइयें अनेन्नेदनयनो बंधनमानियेंतो प्रदेशनोन्नार तेहिजखंधन्नारपणे परिणमे जेमतंतुरूपपटरूपपणे परिणमे तेवारेंगुरुतावृद्धीनोदोषकह्योतेनलागे ॥ ४ ॥

भिन्नद्रव्यपर्यायनेजी ॥ न्नवनादिकनेरेएक ॥ न्नाषेंकिम
दाखेनहीजी ॥ एकद्रव्यमांविवेकरें ॥ न० ॥ धा० ॥५॥

अर्थ ॥ वलीजेद्रव्यादिकने अनेदनथीमानता तेहनेउलंनोआपेछे भिन्नद्रव्यजे पाषाण काष्ट पृथ्वी जलादिकतेनोपर्यायजेन्नवनादिक घरप्रमुख तेहनेतुंएककहेछे जे

एकघरइत्यादिक लोकव्यवहारछे तोएकद्रव्यमां द्रव्यगुणपर्यायनोअन्नेदहोय एहवो विवेक शावास्तेनथीकहेतो माटेजेआत्मद्रव्य तेहिजआत्मगुण अनेतेहिजआत्मपर्याय एहवो व्यवहारअनादिसिद्धछे ॥ ५ ॥

गुणपर्यायअन्नेदथीजी ॥ द्रव्यनियतव्यवहार ॥ परिणति
जेछेएकताजी ॥ तेणेतेएकप्रकाररे ॥ नवि० ॥ धा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीजीवद्रव्य अजीवद्रव्यइत्यादिक जे नियतके० व्यवस्थासहितव्यवहार थायछे तेगुंणपर्यायनाअन्नेदथीथायछे जेमज्ञानादिकगुणपर्यायथी अनिन्नतेजीवद्रव्य अनेरूपादिक गुणपर्यायथी अनिन्नतेअजीवद्रव्य नहीकांइद्रव्यसामान्यथी गुणपर्यायनी विशेषसंज्ञानथाय १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय एत्रणनामछे पणस्वजाति त्रणनेएकत्वपरिणामछे माटेएत्रणेनोएकप्रकारकहियें जेमआत्मद्रव्य ज्ञानादिकगुण तथातेहनापर्याय एसर्वेएकजआत्माकहियें तथा जेम १ रत्न २ कांति ३ ज्वरापहारशक्ति ए त्रणेनेएकजपरिणामछे तेमद्रव्यगुणपर्यायनेपण जाणवुं ॥ ६ ॥

जोअन्नेदनहीएहनेंजी ॥ तोकारयकिमहोय ॥ अछतिवस्तु
ननीपजेजी ॥ शशविषाणपरेंजोयरे ॥ न० ॥ धा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीजेअन्नेदनमाने तेहनेदोषदेखाडेछे जोएद्रव्यगुणपर्यायने अन्नेदनथी तो कारणकार्यनेपण अन्नेदनहोवोजोइयें तोमृत्तिकादिक कारणथी घटादिकार्यकेम नीपजे अनेकारणमांहेकार्यनीशक्तिहोय तोजकार्यनीपजे पणकारणमांहे अछतिकार्यवस्तुनीपरिणतिनीपजेनही जेम शशविषाण शशलानाशिंगडा माटेजोकारणमांहे कार्यनीसत्तामानियेंतो अन्नेदसहजेजआव्यो ॥ ७ ॥

द्रव्यरूपछतिकार्यनीजी ॥ तिरोन्नावनीशक्ति ॥ आविरन्नावें
नीपजेजी ॥ गुणपर्यायनीव्यक्तिरे ॥ न० ॥ धा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेजोकारणमांहे कार्यउपनाअगाउ जोकार्यनीसत्ताछे तोकार्यदर्शनकेमथतुंनथी एहवीशंकाकरनारने उत्तरआपेछे जे कार्यउपनोनथी तेवारेंकारणमांहे कार्यनीद्रव्यरूपेंतिरोन्नावनीशक्तिछे तेथीकार्यजणातुंनथी पणसामग्रीमले तेवारें गुणपर्यायनीव्यक्तिथीआविरन्नावके० प्रगटन्नावथायछे तेथीकार्यदेखायछे तिरोन्नाव तथाआविरन्नावपणे दर्शनादर्शन नियामककार्यनापर्यायविशेषजजाणवा तेथीआविरन्नाव नेसत्असत्विकल्पेंदूषणहोयनही केमके अनुन्नवनेअनुसारेंपर्यायकल्पियें ॥ ८ ॥

नैयायिकमांपणतुंजी ॥ जिमअछतानुंरेज्ञान ॥ होवेविषय
अतीतनुंजी ॥ तिमकार्यसहिनाणरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ इहांनैयायिकएहवुंकहेछे के जेमअतीतविषयजे घटादिकअछताछे तेह-नुंजेमज्ञानहोय तेमघटादिककार्यमृत्तिकादिकदलथकीपण अछताजछे सामग्रीमिलेनि-पजसे अछतानीज्ञप्तिहोयतो अछतानीउत्पत्तिकेमनहोय घटनुंकारणदंडादिकअमेकहि-येंछेयें तिहांलाघवछे तुंमारेमतेघटाभिव्यक्तिनुं दंडादिककारणकहेवुंतिहांगौरवहोय बीजुंअभिव्यक्तिनुंकारणचक्षुप्रमुखछे पणदंडादिकनथी माटेभेदपक्षजघटेछे ॥ ए ॥

तेमिथ्यानहीसर्वथाजी ॥ अछतोविषयअतीत ॥ पर्यायारथ
तेनहीजी ॥ द्रव्यारथछेनित्यरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनैयायिकमतनेदुषवेछे जे अछतानीउत्पत्तिहोयएमकहेछे तेमत मिथ्याछे केमके अतीतविषयघटादिक सर्वथाअछतोनथी तेपर्यायार्थथीनथी अनेद्रव्यार्थथीनि-त्यछे जेम नष्टघटपणमृत्तिकारूपेंछे जोसर्वथानहोयतो शशलानाशृंगपरेंथाय ॥ १० ॥

अछतोभासेंज्ञाननेजी ॥ जोस्वभावेंसंसार ॥ कहेतोज्ञाना
कारतोजी ॥ जीपेयोगाचाररे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसर्वथाअछतोअर्थज्ञानमांहेभासेछे एहवुंकहेछे तेहनेबाधकदेखाडेछे जोज्ञाननेस्वभावें अतीतघटप्रमुखनोअछतोअर्थभासेछे एहवुंमानीयेंतो सर्वसंसारज्ञा-नाकारज छे बाह्यआकारअनादिअविद्यावासनायेंअछताजभासेछे जेमस्वप्नमांहे अछ-तापदार्थभासेछे एहवोबाह्याकाररहितशुद्धज्ञानते बुद्धनेजहोय एमकहेतो योगाचा-रनामेंभीजोबौधजजीपे तेमाटेअछतानुंज्ञान नहोय ॥ ११ ॥

हवणाजाणयोअरथतेजी ॥ एमअतीतजेंजणाय ॥ वर्त्तमान
पर्यायथीजी ॥ वर्त्तमानताथायरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जोछतानुंज्ञाननहोय तोहमणामेंअतीतघटजाण्यो एमकेमकहेवायछे तेअ-तीतघटमेंहमणाजाण्यो एमजेजणायछे तिहांद्रव्यथीछताअतीतघटनेविषे वर्तमानज्ञेय-आकाररूपपर्यायथी हमणाअतीतघटजाण्योजायछे अथवा नैगमनयथीअतीतने विषे वर्तमानतानोआरोपकरियेंछेयें माटेसर्वथाअछतिवस्तुनोज्ञाननथाय ॥ १२ ॥

धर्मिअछतेधर्मनोजी ॥ अछतेकालेंसुहाय ॥ सर्वकालनिर्भे
यपणेजी ॥ तोशशशृंगजणायरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ धर्मिंअतीतघटछतेधर्मघटत्वछतेकालें घटनेअभावकालेंभासेछे अथवाधर्मिंअतीतघटछते धर्मज्ञेयाकारछतेकालेंभासेछे एरीतेंजोतुजनेचित्तमांहे सुहाय तो सर्वअतीत अनागत वर्त्तमानकालेंनिर्भयपणे अदृष्टशंकारहितपणे शशशृंगपणजाएयुंजोइयें एमतो नथी ॥ १३ ॥

तेमाटेछताताणोजी ॥ बोधनजनमनहोय ॥ कारयकारण
नेसहीजी ॥ छेअभेदइमजोयरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेछताअर्थनोबोधनहोय तथाजन्मपणनहोय एमनिर्द्धारकार्यकारणनोअभेदछे तेदृष्टांते द्रव्यगुणपर्यायनोपण अभेदछे एमसद्दहवुं एभेदपक्षनीढालउपरें अभेदपक्षनीढालकही केमकेभेदनयपक्षनो अभिमानते अभेदनयटाले ॥ १४ ॥

भेदेंभणेनैयायिकोजी ॥ सांख्यअभेदप्रकाश ॥ जैनउभय
विस्तारतोजी ॥ पामेंसुजशविलासरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएबेहुनयनास्वामीदेखाडीने स्थितपक्षकहेछे जेभेदनयतेनैयायिकभाषेछे जेथीते असत्कार्यवादीदेखायछे तथासांख्यमततेअभेदनयप्रकाशेछे अनेजैनते बेहुनयस्याद्वादेंकरीविस्तारतोथको भलायशनोविलासपामे केमके पक्षपातिबेहुनय मांहोमांहे घसतां स्थितपक्ष अपक्षपातितेस्याद्वादिनोजदीपेछे उक्तंच ॥ अन्योन्य पक्षप्रतिपक्षभावात् यथापरेमत्सरिणः प्रवादाः ॥ नयानशेषानविशेषमिछन्नपक्षपाती समयस्तथाते ॥ १ ॥ यएवदोषाःकिलनित्यवादे विनाशिवादेपिसमास्तएव ॥ परस्परध्वंसिषुकंटकेषु जयत्यधृष्यंजिनशासनंते ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रागआसाउरी ॥ नंदनकुं त्रिसला हुलरावे ॥ ए देशी ॥

भेदअभेदउभयकिममानो ॥ जिहांविरोधनिरधारोरे ॥ एक
ठामेंकहोकिमकरीरहेवे ॥ आतपनेअंधारोरे ॥ श्रुतधर्मेमन
दृढकरीराखो ॥ जिमशिवसुखफलचाखोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेभेदाभेदनोविरोध आशंकीनेटालेछे इहांकोइपरवादी कहेछेजे द्रव्यादिकनेविषे १ भेद २ अभेद एबेहुधर्म किममानोछो जिहांविरोधताने निरधारोछो केमकेजिहांभेदहोय तिहांअभेदनहोय अने जिहांअभेदहोय तिहांभेदनहोय एबिहुं भावाभावरूपें विरोधीछे तोबेहुविरोधी एकठामेंरहेनही जेमआतपहोय तिहांअंधारो रहेनही अनेजिहां अंधकारहोय तिहांआतपरहेनही तेमभेदाभेदपण एकत्रनहोय

इहांश्रुतधर्मँ स्याद्वादप्रवचनमां मनदृढविश्वासवंत करीराखो जिनशासन श्रद्धादृढ-पणे मोक्षरूप कल्पवृक्षना सुखरूपफलचाखो श्रुतधर्मविना चारित्रधर्म फलवंतनहोय केमके शंकासहित चारित्रिजेपण समाधीनपामे यडुक्तं वितिगछसमावन्नेणं अप्पाणे-णंनलजतेसमाहिं इतिआचारांगे ॥ १ ॥

एहवीशिष्यनीशंकाजाणी ॥ परमारथगुरुबोलेरे ॥ अविरो
धेंसवीठामेंदीसे ॥ दोयधर्मएकतोलेरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एहवीशिष्यनी शंकाजाणीकरीने गुरुस्याद्वादी परमार्थबोलेछे जे घटघटाभावादिकने यद्यपिविरोधछे तोपणभेदाभेदने विरोधनथी केमके सर्वठामे भेदअभेद एबेहुधर्म अविरोधें एकाश्रयवृत्तिपणेज एकतोले देखायछे पणकोइकएमकहेछेजे अभेदस्वाभाविक साचोछे अनेभेदउपाधिकतेजुठो तेअनुभवतानथी केमके व्यवहारेंपरापेक्षायें बेहुनेगुणादिकनोभेद तथागुणादिकनोअभेद एवचननथी ॥ २ ॥

एकठामेंसविजननीसांखे ॥ प्रत्यक्षेंजेलहियेंरे ॥ रूपरसा
दिकनीपरेंतेहनो ॥ कहोविरोधकेमकहियेंरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एकठामें घटादिकद्रव्यनेविषे सर्वलोकनीसांखे प्रत्यक्षप्रमाणे रक्तत्वादिक गुणपर्यायनो भेदाभेदजे लहीयेंछेयें तेनोविरोधकहो केवीरीतेंकहियें जेमरूपरसादिकनो एकाश्रयवृत्तित्वानुभावथी विरोधनकहियें तेम भेदाभेदनुंपण जाणवुं उक्तंच नहिप्रत्यक्षदृष्टेर्थेविरोधोनाम तथाजेमप्रत्यक्षदृष्टेर्थे दृष्टांतनुंपणकार्यनथी उक्तंच क्षेदमन्यत्रदृष्टत्व महोनिपुणतातव ॥ दृष्टांतंयाचसेयत्त्वंप्रत्यक्षेप्यनुमानवत् ॥ १ ॥ ३ ॥

श्यामभावजेघटेछेपेहेला ॥ पछेभिन्नतेरातोरे ॥ घटभावें
नविभिन्नजणाय ॥ सीविरोधनीवातोरे ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेभेदाभेदना प्रत्यक्षनो अभिलाप तेपुद्गलद्रव्यें देखाडेछे जेघटपहेलां श्यामभावेंछे तेपछेंरातो थयो तेवारें भिन्नजणायछे अनेबिहुंकालें घटभावें अभिन्नजणायछे श्यामतथारक्त अवस्थानेभेदेंघटएकजछे तोइहांविरोधतानीवातसीकहेवी॥४॥

बालभावजेप्राणीदीसे ॥ तरुणभावतेन्यारोरे ॥ देवदत्त
भावेंतेएकज ॥ अविरोधेंनिरधारोरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्मद्रव्यमां भेदाभेदनो अनुभवदेखाडेछे जेप्राणी बालकभावें देखायछे तेजप्राणी तरुणभावें न्यारोके० भिन्नछे अनेदेवदत्तभावें एटलेमनुष्यपणाना पर्यायें तेएकछेतोएकपदार्थनेविषे बालतथातरुण भावेंभेदछे अनेदेवदत्तभावें अभेदछे

एमअविरोधेंनिरधारो उक्तंच पुरिसंमिपुरिससद्दो जम्माइमरणकालपज्जंतो ॥ तस्सउबालाईया पज्जवभेयाबहुवियप्पा ॥ १ ॥ इतिसंमतिग्रंथे ॥ ५ ॥

धर्मभेदजोअनुभवभासे ॥ धर्मिभेदनवीकहियेंरे ॥ भिन्न
धर्मनुंएकजधर्मि ॥ जडचेतनपणलहियेंरे ॥ श्रुत० ॥६॥

अर्थ ॥ जिहांभेदहोय तिहांअभेद होयजनही केमके भेदव्याप्यवृत्तिछे एहवी प्राचीननैयायिकनी शंकाछे तेटालेछे जे श्यामोनरक्तः इहां श्यामत्व रक्तत्वधर्मनाभेदनो अनुभवभासेछे पणधर्मिजे घटपदार्थ तेनोभेद भासतोनथी माटेएमजो कहियेंतो जडचेतननो भेद भासेछे तेपण जडत्वचेतनत्व धर्मनोजभेदछे पणजडचेतन द्रव्यनोभेदनथी एरीतें अव्यवस्थाथाय धर्मिने प्रतियोग्यपणे उल्लेखतो विंहु ठामें सरिखोछे अनेप्रत्यक्ष सिद्धअर्थें बाधकतो अवतरेजनही ॥ ६ ॥

भेदाभेदतिहांपणकहेतां ॥ विजयजैनमतपावेरे ॥ भिन्नरूप
मांरूपांतरथी ॥ जगअभेदपणआवेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजडतथा चैतन्यमांपण भेदाभेदकहेतां जैननो मत विजयपामेछे माटे भिन्नरूपजे जीवअजीवादिक तेमांरूपांतर द्रव्यत्वपदार्थत्वादिक तेथीजगतमां पण अभेदपणोआवे एटलेभेदाभेदने सर्वत्रव्यापकपणुंकह्युं ॥ ७ ॥

जेहनोभेदअभेदजतेहनो ॥ रूपांतरसंयुतनोरे ॥ रूपां
तरथीभेदजतेहनो ॥ मूलहेतुनयसतनोरे ॥ श्रुत० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजविवरीदेखाडेछे के जेहनोभेदतेहनोज रूपांतरसहितनो अभेद होय जेम थास कोस कुसूल घटादिकनोभेदछे अनेतेजमृद्‌द्रव्य विशिष्टअनर्पित स्वपर्यायनो अभेदछे वलीतेनोज रूपांतरथी भेदथाय जेम थास कोस कुसूलादिक पर्यायविशिष्टमृद्‌द्रव्यपणें तेनोज भेदथाय एरीतेंभेदनेअभेदजेछे तेशैकडागमेनयनो मूलहेतुछे सातनयनाजे सातसेंनयभेदछे तेएरीतेंद्रव्यपर्यायनी अर्पणाअनर्पणायें थाय तेशतारनयचक्राद्यनयमां पूर्वेहता अनेहमणा द्वादशसारनयचक्रमां विधिर्विधिविधिरित्यादिरीतें एकएकनयमां बारबारभेद उपजवाकह्याछे ॥ ८ ॥

खेत्रकालभावादिकयोगें ॥ थायभंगनीकोडीरे ॥ संखेपे
एकठामेंकहीयें ॥ सप्तभंगनीजोडीरे ॥ श्रुत० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यादिक विशेषणे भंगथाय तेमज खेत्रादिकविशेषणे पण अनेक भंगथाय जेमघटद्रव्यने स्वकरीविवक्षियें तेवारे खेत्रादिकघट परथाय एमप्रत्येकें

सप्तभंगीपण कोडोगमेनीपजे १ घटः स्यादस्त्येव २ स्यान्नास्त्येव ३ स्यादवाच्यएव ४ स्यादस्त्येवनास्त्येव ५ स्यादस्त्येवस्यादवक्तव्यएव ६ स्यादनास्त्येवस्यादवक्तव्यएव ७ स्यादस्त्येवस्यादनास्त्येव स्यादवक्तव्यएवइतिप्रयोग तथापि लोकप्रसिद्धजे कंबुग्रीवादि पर्यायैंर्पितघटछे तेनेजस्वत्रैवडीने स्वरूपेंअस्तित्व पररूपेंनास्तित्व लेइनेसप्तभंगी देखाडेछे १ स्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वभावनी अपेक्षायें घटछे अने २ परद्रव्य परखेत्र परकाल परभावनी अपेक्षायें घटनथी ३ तथाएकवारें बेपर्याय एकशब्दें मुख्यरूपें नकहेवायसाटे उभयविवक्षायें अवाच्यछे ४ एकअंशस्वरूपें अनेएकअंश पररूपें विवक्षियें तेवारें छेनेनथी ५ एकअंशस्वरूपें तथाएकअंश युगपत् उभयरूपें विवक्षियें तेवारेंछे अनेअवाच्य ६ एकअंशपररूपें अनेएकअंशयुगपत् उभयरूपें विवक्षियेंतेवारेंनथी अनेअवाच्य ७ एकअंश स्वरूपें तथाएकअंश पररूपें अनेएकअंश युगपत् उभयरूपें विवक्षियें तेवारें छे नथी अने अवाच्य ॥ ए ॥

पर्यायारथभिन्नवस्तुछे ॥ द्रव्यारथेंअभिन्नोरे॥ क्रमेउभय
नयजोअर्पिजे ॥ तोभिन्नअभिन्नोरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेभेदाभेदमां सप्तभंगी जोडियेछैयें १ पर्यायार्थनयथी सर्ववस्तु द्रव्य गुणपर्यायलक्षणें कथंचित्पणे भिन्नछे २ द्रव्यार्थनयथी कथंचित्अभिन्नजछे केमके द्रव्यनाजे गुणपर्याय तेआविर्भाव तथातिरोभावेंछे ३ अनुक्रमें जो द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिक एबेहुनय अर्पियें तोकथंचित् भिन्न तथाकथंचित् अभिन्नकहियें ॥ १० ॥

जोएकदाउभयनयग्रहियें ॥ तोअवाच्यतेलहियेंरे ॥ एके
शब्देंएकजवारें ॥ दोयअर्थनवीकहियेंरे ॥ श्रुत० ॥११॥

अर्थ ॥ ४ जोएकवारेंज बेहुनयना अर्थविवक्षियेंतो तेअवाच्यलहियें केमकेएक शब्दें एकजवखते बेअर्थकह्याजातानथी संकेतिकशब्दपण एकजसंकेतिकरूपकहे पण बेरूप स्पष्टकही शकीयेंनही जेमपुष्पदंतादिक शब्दपणएकोक्ति चंद्रसूर्यकहे पणभिन्नोक्ति कहीशकेनही अनेबेनयनाअर्थ मुख्यपणेतो भिन्नोक्तिज कहेवा घटे इत्यादिक युक्ति शास्त्रांतरथी जाणवी ॥११॥

पर्यायारथकल्पनउत्तर ॥ उभयविवक्षासंधिरे ॥ भिन्नअवा
च्यवस्तुतेकहियें ॥ स्यातकारनेबंधिरे ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ५ जेमांप्रथमपर्यायार्थकल्पनापणछे पछेएकदाउभय नयार्पणाकरियें तेवारें वस्तुने भिन्नअवक्तव्य कथंचित् एमकहियें ॥ १२ ॥

द्रव्यारथनेजनयग्रह्याथी ॥ अभिन्नतेहअवाचोरे ॥ क्रमयुग
पतनयजनयग्रह्याथी ॥ भिन्नअभिन्नअवाचोरे ॥ श्रुत० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ६ प्रथमद्रव्यार्थ कल्पनापणछे अनेएकदाजनयनय अर्पणाकरियें तेवारें कथंचित् अभिन्नअवक्तव्य एमकहियें ७ अनुक्रमें बेहुनयनी प्रथमअर्पणाकरियें पछेबेहुनयनी एकवारेंअर्पणाकरियें तेवारेंकथंचित् भिन्नअभिन्न अवक्तव्यएम कहियें ए एकभेदाभेद पर्यायमां सप्तभंगी जोडी तेमजसर्वत्रजोडवी इहांशिष्यपुछेछेके जिहांबेनयनाजविषयनी विचारणाहोय तिहांएकेक गौणमुख्यभावें सप्तभंगी थाउ पण जिहांप्रदेश प्रस्थकादिविचारें तो सात ब पांच प्रमुखनयना भिन्नभिन्नविचारहोय तिहांअधिकभंगथाय तेवारेंसप्तभंगीनो नियमकेमरहे तेनेगुरुकहेछे के तिहांपणएकनयार्थ मुख्यपणेविधि बीजासर्वनो निषेधेछेइ प्रत्येकें अनेकसप्तभंगीकरियें अमेतोएमजाणियेंछैयेंजे सर्वेनयार्थ प्रतिपादकता पर्यायाधिकरणवाक्य प्रमाणवाक्य एलक्षणलेइने तेवेठामें स्यात्कारलंबित सकलनयार्थसमूहालंबन एभंगेपण निषेधनथी तेमाटे व्यंजनपर्यायने ठेकाणे बेभंगेपण अर्थसिद्धि संमतिग्रंथनेविषे देखाडीछे तद्गाथा ॥ एवसत्तविअप्पो वयणपहोहोइअत्थपज्जाए ॥ वंजणपज्जाएपुण सविअप्पोनिव्विअप्पोअ ॥ १ ॥ एगाथानोअर्थ एवंपूर्वोक्तप्रकारें सप्तविकल्प सप्तप्रकारवचनपथ सप्तभंगीरूप वचनमार्ग तेअर्थपर्याय तेअस्तित्व नास्तित्वादिकनेविषे होय व्यंजनपर्यायजेघटकुंभादि शब्दवाच्यता तेहनेविषे सविकल्प विधिरूप निर्विकल्प निषेधरूप एबेभांगाहोय पण अवक्तव्यादि भंगनहोय केमके अवक्तव्य शब्दविषय कहियेंतो विरोधथाय अथवा सविकल्पशब्द समभिरूढनयमते अनेनिर्विकल्पशब्द एवंभूतनयनीमते एमबेभंगजाणवा अर्थनये प्रथमचारजे अर्थनय छे तेतो व्यंजनपर्याय मानेनही तेमाटे तेनयनीइहां प्रवृत्तिनथी अधिकुं अनेकांतविवस्थाथी जाणवुं तदेवमेकत्रविषये प्रतिस्वमनेकनयविप्रतिपत्तिस्थलेस्यात् कारलांछिततावन्नयार्थप्रकारकसमूहालंबनबोधजनकएकएवभंगएष्टव्योव्यंजनपर्याय स्थले भंगद्वयवत् यदिचसर्वत्रसप्तभंगीनियमएवाश्वासास्तदाचालनीयन्यायेनतावन्नयार्थनिषेधबोधको द्वितीयोभंग स्तन्मूलकाश्चान्येतावत्कोटिकाः पंचभंगाश्चकल्पनीयाइत्थमेव निराकांक्षसकलभंगप्रतिपत्तिनिर्वाहादितियुक्तंपश्यामः एविचार स्याद्वाद पंडितें सूक्ष्मबुद्धीयें चित्तमांधारवो.

सप्तभंगएदृढअभ्यासी ॥ जेंपरमारथदेखेरे ॥ जशकिरति
जगवाधेतेहनी ॥ जैनभावेंतसलेखेरे ॥ श्रुत० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेएनोफलितार्थकहेछे एकह्याजेसातभांगा ते दृढअभ्यासें सकलादेशी

विकलादेशी नयसप्तभंगप्रमाण सप्तभंगइत्यादि भेदें घणोअभ्यासकरी जीवाजीवादि-परमार्थसमजे देखे तेहनीजशकीर्त्तिवधे केमके स्याद्वादपरिज्ञानेज जैनने तर्कवादनुं यश छे अने जैनभावपण तेप्राणीनोज लेखेजाणवो केमके निश्चेनयथी सम्यक्त स्याद्वाद परिज्ञानजछे उक्तंचसंमतौ चरणकरणपहाणा ससमयपरसमयमुक्कवावारा ॥ चरणकरणस्ससारं नछयसुद्धंनयाणत्ति ॥ १ ॥ एचोथीढालमां भेदाभेददेखाड्यो अने सप्तभंगीनुं स्थापनकर्युं ॥ १४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ आदिजिणंदमयाकरो ॥ ए देशी ॥

एकअरथत्रयरूपछे ॥ देख्योभलेप्रमाणेरे ॥ मुख्यउपचारथी ॥
नयवादिपणजाणेरे ॥ १ ॥ ग्यानदृष्टीजगदेखिये ॥ ए आंकणी

अर्थ ॥ हवेनयप्रमाण विवेककरेछे एकअर्थ जे घटपटादिक जीवअजीवादिक ते त्रयरूपके० द्रव्यगुणपर्यायरूपछे केमके घटादिक मृत्तिकादिरूपेंद्रव्य अनेघटादिरूपें सजातीयद्रव्य पर्यायरूपरसात्मकपणेंगुण एमजीवादिकमां जाणवो एहवेप्रमाणें स्याद्वादवचनेदेख्युं जेमाटे प्रमाणेसप्तभंगात्मके त्रयरूपपणो मुख्यरीतेंजाणियें केमके नयवादीजे एकांशवादीतेपण मुख्यवृत्ति अनेउपचारें एकअर्थनेविषे त्रयरूपपणोजाणे यद्यपि नयवादिने एकांशवचने शक्तिएकज अर्थकहियें तोपणलक्षणारूप उपचारें बीजाअर्थपणजाणे पणएकदावृत्तिद्वयनहोय एपणतंतनथी जेमगंगायां मत्स्यघोषौ इत्यादिस्थलें एमबेवृत्तिपणमानीछे इहांपणमुख्य अमुख्यपणे अनंतधर्मात्मिक वस्तुजणाववाने प्रयोजने एकनयशब्दनी बेवृत्तिमानतां विरोधनथी अथवानयात्मक शास्त्रें क्रमिकवाक्य द्वयेंपणएअर्थ जणाविये अथवाएकबोधशब्दें एकबोधअर्थें एमअनेकभंगाजाणवा एरीतें ज्ञानदृष्टीयें जगतनाभाव देखीयें एअर्थकह्यो तेहिजस्पष्टपणे जणाववानेआगलीगाथाकहेछे ॥ १ ॥

मुख्यवृत्तिद्रव्यारथो ॥ तासअभेदवखाणेरे ॥ भेद
परस्परएहनो ॥ तेउपचारेंजाणेरे ॥ ग्यान० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ मुख्यवृत्तिके० शक्तिशब्दार्थ केहेतो जे द्रव्यार्थनयते तासके० तेनेएटले द्रव्यगुणपर्यायने अभेदवखाणेछे केमके गुणपर्यायें अभिन्न एवो मृद्द्रव्यादिक तेने विषेघटादिपदनी शक्तिछे पणएनो परस्परके० मांहोमांहेभेदछे तेउपचारेंके० लक्षणे जाणे माटे द्रव्यभिन्न कंबुग्रीवादिक पर्यायनेविषे घटादिकपदनी लक्षणामानेछेअने मुख्यार्थसंबंधे तथाविधव्यवहार प्रयोजनें अनुसरीयें तिहांलक्षणाप्रवृत्ति दुरघटनथी.

मुख्यवृत्तिथकोलेखवे ॥ पर्यायारथन्नेदंरे ॥ उपचारें
अनुन्नवबलें ॥ मानेतेदअन्नेदंरे ॥ ग्यान० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एमपर्यायार्थनयनीमुख्यवृत्तिकरीने सर्वद्रव्यनागुणपर्यायन्नेदंलेखवे केमके एन-यनेमतेमृदादिपदनो द्रव्यअर्थ अनेरूपादिपदनोगुणज घटादिकपदनो कंबुग्रीवादिपर्याय-ज तथाउपचारें लक्षणायेंकरी अनुन्नवनेबलेकरी ते अन्नेदंमाने जेमघटादिमृद्द्रव्यादि अन्निन्नजछे एप्रतीतें घटादिपदनी मृदादिकद्रव्यनेविषे लक्षणामानियें एपरमार्थ छे.

दोयधर्मनयजेग्रहे ॥ मुख्यअमुख्यप्रकारोरे ॥ तेअनुसारें
कल्पियें ॥ तासवृत्तिउपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ न्नेदअन्नेदप्रमुख बहुधर्मते द्रव्यार्थिक अथवापर्यायार्थिकनय जेग्रहे ऊहाख्य-प्रमाणेधारे मुख्यअमुख्यप्रकारें साक्षात्संकेतें तथाव्यवहितसंकेतें तेअनुसारें तासके० तेनयनीवृत्ति अनेतेनयनो उपचारकल्पियें दृष्टांतजेम गंगापदनो साक्षात् संकेतते प्र-वाहरूपअर्थनेविषेछे तेमाटेप्रवाहेशक्ति तथागंगानेतीरे जेगंगासंकेतकरवो ते व्यव-हित संकेतछे तेमाटे उपचारछे तेमज द्रव्यार्थिकनयनो साक्षात्संकेतते अन्नेदछे अ-नेशक्तिनान्नेदं व्यवहितसंकेतछे तेथीउपचारछे एमपर्यायार्थिकनयनापण शक्तितथाउ-पचार तेन्नेदअन्नेदने विषेजोडवा ॥ ४ ॥

न्निन्नविषयनयग्यानमां ॥ जोसर्वथानन्नासेरे ॥ तोस्वतंत्र
न्नावेंरहे ॥ मिथ्यादृष्टिपासेरे ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ कोइकहेछेजे एकनयते एकजविषयने ग्रहे पणबीजानयनो विषयग्रहेनहीते-हनेदूषवेछे जोनयज्ञानमां न्निन्नविषयके० नयांतरनो मुख्यार्थ ते सर्वथाके० अमुख्य-पणेपण नन्नासे तो स्वतंत्रन्नावें सर्वथानयांतर विमुख्यपणें मिथ्यादृष्टिपासेरहे एटले दुर्नयथाय पण सुनय थाय नही एम जाणवुं ॥ ५ ॥

एहविशेषावश्यकें ॥ संमतिमांपणधारोरे ॥ एमनयथी
सविसंन्नवे ॥ न्नेदअन्नेदुपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एअर्थविशेषावश्यके तथासंमतिग्रंथमांछे एमधारो यतः दोहिंविणएहिं-णीअ सछमूलएणतहविमिछत्तं ॥ जंसविसयहाण तणेणअणुणनिरवक्के १ स्वार्थग्राही इतरांशाप्रतिक्षेपीसुनयइतिसुनयलक्षणं स्वार्थग्राहीइतरांशप्रतिक्षेपीदुर्नयइतिदुर्नयल-क्षणं एम नयविचारथी न्नेदअन्नेद ग्राह्य व्यवहारसंन्नवे तथानयसंकेतविशेषथी ग्राहकवृत्तिविशेषरूप उपचारपण संन्नवे तेमाटेन्नेदअन्नेद तेमुख्यपणे प्रत्येकनयविषय

मुख्यामुख्यपणे उन्नयनयविषयउपचारते मुख्यवृत्तिनीपरें नयपरिकर पण विषयनही एसमोमार्गते श्वेतांबरप्रमाणे शास्त्रसिद्धजाणवो ॥ ६ ॥

गंभिमारगएसमो ॥ उपनयमुख्यजेकल्पेरे ॥ तेहप्रपंच
पणजाणवा ॥ कहियेंतेजेमजल्पेरे ॥ ग्यान० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एसमोमार्गछांमिकरीने जेदिगंबर वाल उपचारादिक ग्रहवानेकाजे उपनय प्रमुखकल्पेछे तेप्रपंच शिष्यबुद्धी धंधन मात्र छे पण ते समानतंत्र सिद्धांतछे माटे जाणवानेकाजे जेमते दिगंबरीयो जल्पेके० स्वप्रक्रियायेंबोलेछे तेमजकहियेंछेयें ॥ ७ ॥

नवनयउपनयतीनछे ॥ तर्कशास्त्रअनुसारोरे ॥ अध्यातम
वाचेंवली ॥ निश्चयनेव्यवहारोरे ॥ ग्यान० ॥ ८ ॥ ॥

अर्थ ॥ तेदिगंबरीउनेमते तर्कशास्त्रने अनुसारें नवनय अने त्रणउपनयछे तथा वली अध्यातमवाचेंके० शैलीयें १ निश्चयनय २ व्यवहारनय एबेजनयकह्याछे ॥ ८ ॥

पहेलोद्रव्यारथनयो ॥ दशप्रकारतसजाणोरे ॥ शुद्धअक
र्मोपाधीथी ॥ द्रव्यार्थिकधुरेंआणोरे ॥ ग्यान० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एकद्रव्यार्थनय बीजोपर्यायार्थनय त्रीजोनैगमनय चोथोसंग्रहनय पांचमो व्यवहारनय छठोऋजुसूत्रनय सातमो शब्दनय आठमोसमभिरूढनय नवमोएवंभूतनयएनवनयनो नियमछे तेमां पहेलोद्रव्यार्थकनय तेना दशप्रकारजाणवा तेमां धुरेंके० पहेलो अकर्मोपाधिथी शुद्धद्रव्यार्थिकनय मनमांहेआणोएटलेकर्मोपाधीथीरहित शुद्धद्रव्यार्थिक एप्रथमभेदजाणवो ॥ ए ॥

जिमसंसारीप्राणीया ॥ सिद्धसमोवम्गणीयेंरे ॥ सहेजभाव
आगलकरी ॥ भवपर्यायनगणीयेंरे ॥ ग्यान० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धद्रव्यार्थिकनो विषयदेखाकेछे जेम सर्वसंसारीप्राणीमात्रने सिद्धसमानगणियें एटले सहजभावजे शुद्धात्मस्वरूप तेआगलकरियें अने भवपर्यायजेसंसारनाभाव तेगणियेंनही तेनी विवक्षानकरियें एअभिप्राय द्रव्यसंग्रहेकह्योछे यतः मगाणगुणठाणेहिं चउदसहिंहवंतितहंअसुद्धणया विणेयासंसारी सवे सुद्धाहुसुद्धणया ॥

उत्पादव्ययगौणता ॥ सत्तामुख्यजबीजेंरे ॥ भेदशुद्ध
द्रव्यारथें ॥ द्रव्यनित्यजिमलीजेंरे ॥ ग्यान० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ उत्पादव्ययनी गौणतायें अनेसत्तानी मुख्यतायें बीजोभेद शुद्धद्रव्यार्थनो जाणवो उत्पादव्ययगौणत्वेन सत्ताग्राहक शुद्धद्रव्यार्थिक एबीजाभेदनेमते द्रव्य ते नित्यप-

णेलेवी एटले नित्यते त्रिकालेंअविचलितरूप सत्ताने मुख्यपणेलेतां एजावसंजवे केमके जो पर्याय प्रतिक्षणे परिणामीठे तोपणजीवपुजलादिक द्रव्यसत्ता कदापिचलतीनथी.

त्रीजोशुद्धद्रव्यारथो ॥ जेदकल्पनाविनोरे ॥ जिमनिज
गुणपर्यायथी ॥ कहीयेंद्रव्यअजिन्नोरे ॥ ग्यान० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजोजेद तेजेदकल्पनायेंहीन शुद्धद्रव्यार्थकठे जेदकल्पनारहित शुद्ध द्रव्यार्थिक इतितृतीयजेद जेमएकजीव अथवा पुजलादिकद्रव्यने निजके० पोतानागुणपर्यायथी अजिन्नकहियें केमके जोजेदपणुंठे तोपणतेनी अर्पणानकरियें अनेअजेदनी अर्पणाकरियें तोअजिन्नठेएत्रीजोजेद शुद्धद्रव्यार्थिकथयो ॥ १२ ॥

अशुद्धकर्मोपाधिथी ॥ चोथोएहनोजेदोरे ॥ कर्मजावमय
आतमा ॥ जिमक्रोधादिकवेदोरे ॥ ग्यान० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेद्रव्यार्थिकनो चोथोजेद ते कर्मोपाधिथीठे माटेअशुद्धकहेवुं कर्मोपाधिसापेक्षोअशुद्धद्रव्यार्थिक इतिचतुर्थजेद जेमक्रोधादिक कर्मजावमय आत्मावेदोठे जाणोठो के जेवारेंजेद्रव्य जेजावेंपरिणमे तेवारें तेद्रव्य तन्मयकरीजाणवुं जेम लोह अग्निपणे परिणम्युं तेकालेंलोह अग्निरूप जाणवुं एमक्रोध मोहनीआदि कर्मोदयनेअवसरें क्रोधादिजाव परिणतआत्मा क्रोधादिकरूप जाणवो अतएव आत्मानाजेदआठ सिद्धांतमां प्रसिद्धठे ॥ १३ ॥

तेहअशुद्धवलीपंचमो ॥ व्ययउतपतिसापेखोरे ॥ उत्पाद
व्ययध्रुवएकें ॥ समयेंद्रव्यजिमपेखोरे ॥ ग्यान० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेवलीअशुद्धद्रव्यार्थिकनामे पांचमोजेद तेव्ययउत्पत्तिसापेक्षजाणवो. उत्पादव्ययसापेक्ष सत्ताग्राहकअशुद्धद्रव्यार्थिकपंचम जेमएकसमयें द्रव्यने उत्पादव्ययध्रुवरूपकहियें जेकनकाद्युत्पादसमय तेहिज केयूरादि विनाशसमय अने कनकसत्तातो अवर्जनीयजठे एवंसति त्रैलक्षणग्राहकत्वेनेदं प्रमाणवचनमेवस्यान्नतु नयवचनमितिचेन्न मुख्यगौणजावेनैवानेननयेन त्रैलक्षणग्रहणान्मुख्यनयस्वार्थग्रहणे नयानां सप्तजंगीमुखेनैवव्यापारात् ॥ १४ ॥

ग्रहतोजेदनीकल्पना ॥ ठठोतेहअशुद्धोरे ॥ जिमआतमिक
बोलीयें ॥ ज्ञानादिकगुणशुद्धोरे ॥ ग्यान० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ जेदनीकल्पनाग्रहतो ठठोजेदते अशुद्धद्रव्यार्थिक जाणवो जेमज्ञानादिक

शुद्धगुण आत्मानाबोलीयें इहांषष्ठी विभक्तीभेदकहेछे जिह्वोःपात्रमितिवत्अनेगुणगुणीने भेदतोनथी पण भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकषष्ठ ॥ १५ ॥

अन्वयद्रव्यार्थिककह्युं ॥ सप्तमएकस्वभावोरे ॥ द्रव्यएक
जिमभाषियें ॥ गुणपर्यायस्वभावोरे ॥ ग्यान० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ सातमोभेद अन्वयद्रव्यार्थिक कह्योछे. जे एकस्वभावबोले जेमएकजद्रव्य गुणपर्यायस्वभावकहियें एटलेगुणपर्यायनेविषे द्रव्यनो अन्वयछे जेम द्रव्यने जाणवाथी द्रव्यार्थादेशें तदनुगत सर्वगुणपर्याय जाण्याकहियें जेमसामान्यप्रत्यासत्ति परवादीनी सर्वव्यक्तिजाणी कहे तेमइहांजाणवुं एअन्वयद्रव्यार्थिक सप्तम ॥ १६ ॥

स्वद्रव्यादिकग्राहको ॥ भेदआठमोभाख्योरे ॥ स्वद्रव्यादि
कचारथी ॥ छतोअर्थजिमदाख्योरे ॥ ग्यान० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ स्वद्रव्यादिग्राहक नामेंद्रव्यार्थिकनो आठमोभेदभाष्यो. जेम अर्थजे घटादिकद्रव्यतेस्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वभाव एचारथीछतोकह्यो स्वद्रव्यथी मृत्तिकायें अनेस्वखेत्रथी तेपाटलिपुरादिकें अनेस्वकालथी विवक्षितकालें तथास्वभावथी रक्तादिकभावें जे घटादिकनी सत्ताते प्रमाणछे सिद्धछे इतिस्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिक अष्टम एआठमोभेदथयो ॥ १७ ॥

परद्रव्यादिकग्राहको ॥ नवमभेदतेमाहिंरे ॥ परद्रव्या
दिकचारथी ॥ अर्थछतोकिमनाहिंरे ॥ ग्यान० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेद्रव्यार्थिकमां परद्रव्यादिक ग्राहक नवमोभेदकह्योछे जेम अर्थजेघटादिक तेपरद्रव्यादिकचारथी छतोनथी परद्रव्यजे तंतुप्रमुख तेथीघटअसत्कहियें अनेपरक्षेत्रजे काशीप्रमुख तथापरकालजे अतीत अनागतकाल परभावथी कालादिभावें विवक्षितविषयें अछतापर्यायतेथी परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनवम ॥ १८ ॥

परमभावग्राहककह्यो ॥ दशमोजशअनुसारोरे ॥ ग्यान
सरूपीआतमा ॥ ग्यानसर्वमांसारोरे ॥ ग्यान० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ दशमो द्रव्यार्थिकनो परमभावग्राहकनामें भेदकहेछे जेनयने अनुसारें आत्मानेज्ञानस्वरूपकहियेंछैयें अने दर्शनचारित्र वीर्य लेश्यादिक. आत्माना अनंतागुणछे पणसर्वमां ज्ञानते सारउत्कृष्टछे केमके अन्यद्रव्यथी आत्मानेभेदते ज्ञान गुणेदेखाडेछे तेमाटे शीघ्रोपस्थिकपणे आत्मानुंज्ञानते परमभावछे एमबीजाद्रव्यना पण परमभाव असाधारणगुणलेवा परमभावग्राहकद्रव्यार्थिकदशम ॥ १९ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥

॥ एकवारदरिशनआपग्गुरुजी ॥ ए देशी ॥

षटभेदनयपर्यायअरथो ॥ पहेलोअनादिकनित्यरे ॥ पुग्
लतणोपर्यायकहियें ॥ जिममेरुगिरिमुखनित्यरे ॥ १ ॥
बहुभांतफेलीजैनशैली ॥ साचडुंमनधारेरे ॥ खोटकुंजे
कांइजाणे ॥ तिहांचित्तनिवाररे ॥ बहु० ॥ २ ॥ ॥

अर्थ ॥ हवेपर्यायार्थनय ७भेदेंजाणवो तेमां पहेलोअनादिनित्य शुद्धपर्यायार्थिक कहियें जेमपुग्गलनोपर्याय मेरुप्रमुख प्रवाहथी अनादिअने नित्यछे असंख्यातकालें अन्योन्यपुग्गलसंक्रमे पण संस्थानतेहिजछे एमज रत्नप्रभादिक पृथ्वीपर्यायपण जाणवा॥१॥ एमघणाप्रकारें जैननी शैलीफेलीछे दिगंबरमतेंपण जैनदर्शननाम धरावी एवीनयनी अनेक शैलीप्रवर्त्तविछे तेमांविचारतां जेसाचुंहोयते मनमांनिरधारी राखवुं अनेतिहांजेकांइ खोटुंजाणे तेचित्तमांनधरवुं पणशब्दफेरमात्रें द्वेषकरवोनही अर्थजप्रमाणछे.

सादिनित्यपर्यायअरथो ॥ जिमसिद्धनोपज्जाउरे ॥ ग्रहे
शुद्धअनित्यसत्ता ॥ गौणवयउप्पाउरे ॥ बहु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सादिनित्य शुद्धपर्यायार्थनय तेबीजोभेदजाणवो जेमसिद्धना पर्यायनी आदिछे केमके सर्वकर्मक्षयथया तेवारेंसिद्धपर्यायउपनो तेथीआदिथयी पणतेनो अंतनथी केमकेपछी सिद्धभावसदाकालेंछे एरीतेंजपर्यायसरिखो सिद्धद्रव्यपर्यायभाववो हवेसत्तागुणत्वे उत्पादव्ययग्राहक अनित्यशुद्ध पर्यायार्थिक त्रीजोभेदकहियेंछेयें ॥३॥

जेमसमयमेंपर्यायनाशी ॥ छतिगहतनित्यअशुद्धरे ॥
एकसमयेंयथापर्याय ॥ तृतीयरूपेंरुद्धरे ॥ बहु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमएकसमयमां पर्यायविनाशीछे एमकहियें इहां नाशीकहेतां एनोप्रतिपक्षी उत्पादतोआव्यो पणध्रुवताने गौणकरीदेखाडीनही चोथो छतिके० सत्तानेग्रहतो तेनित्यअशुद्ध पर्यायार्थिक कहियें जेमएकसमयमां पर्यायते उत्पादव्ययध्रुवलक्षण तृतीयरूपेंरुद्धछे एवुंबोलीयें पणपर्यायनुं शुद्धरूपतो तेनेकहियेंजे सत्तानदेखाडवी पणइहांतो मूलसत्तादेखाडी तेमाटेअशुद्धभेदथयो ॥ ४ ॥

पर्यायअरथोनित्यशुद्धो ॥ रहितकर्मोपाधिरे ॥ जेमसिद्धना
पर्यायसरिखा ॥ भवजंतुनानिरुपाधिरे ॥ बहु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधिरहित नित्यशुद्धपर्यायार्थिक पांचमोभेद कहेछे. ते जेम भव-जंतुके० संसारीजीवना पर्याय सिद्धनाजीवो सरिखाकहियें जोपणकर्मोपाधिभाव छताछे तोपणतेनी विवक्षानकरियें अनेज्ञानदर्शन चारित्रादिक शुद्धपर्यायनीज विवक्षाकरियें.

पर्यायअरथअनित्यअशुद्धो ॥ सापेक्षकर्मोपाधिरे ॥ संसा-
रवासिजीवने ॥ जेमजनममरणव्याधिरे ॥ बहु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधि सापेक्ष अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक छठोभेदकहेछे जेम संसारवासीजीवने जन्ममरणनीव्याधिछे एमकहियें इहांजन्मादिक जीवनापर्याय जे कर्मसंयोगेंछे तेअनित्य अशुद्धछे तेथीज जन्मादिपर्यायनो नाशकरवानेअर्थें मोक्षार्थ जीवप्रवृत्तेछे एरीतेंद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक नयकह्या ॥ ६ ॥

बहुमानग्राहिकह्योनैगम ॥ भेदतसछेतीनरे ॥ वर्त्त
मानारोपकरवा ॥ भूतअर्थेलीनरे ॥ बहु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे नैगमनयकहेछे सामान्यविशेषज्ञानरूप बहुमानके० घणाप्रमाण तेनो ग्राही नैगमनयकहियें. नैकैर्मानैर्मिनोतीतिनिगमः ककारलोपान्नैगमइतिव्युत्पत्तिः तेनैगमनयना त्रणभेदछे तेमांप्रथमनैगमभूतार्थ वर्त्तमाननो आरोपकरवाने तत्परछे. ॥७॥

भूतनैगमकह्योपहेलो ॥ दीवालीदिनआजरे ॥ यथा
स्वामीवीरजिनवर ॥ लहिउंशिवपुरराजरे ॥ बहु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथमभेदनुं उदाहरण देखाडेछे जेमआज दीवालीना दिवसनेविषे श्रीमहावीरस्वामी शिवपुरनुंराज्यपाम्या इहांअतीत दिवालीनादिननेविषे वर्त्तमान दिवालीना दीवसनो आरोपकरियेंछैयेंएमवर्त्तमान दिवसनेविषे भूतदिवसनो आरोप करियें देवागमनादिक महोटाकल्याण भाजनत्व प्रतीतप्रयोजननेअर्थें जेमगंगायां घोषः इहांगंगानातटनेविषे गंगानोआरोपकरियें शैत्यपावनत्वादि प्रत्यायन प्रयोजनभणी तोएघटमानछे जो वीरसिद्धिगमननो अन्वय भक्तिनेवास्तेप्रतीतिकमानियें एअलंकारनाजाण पंमितहोय तेविचारजो ॥ ८ ॥

भूतवतकहेभाविनैगम ॥ भाविजेमजिनसिद्धरे ॥ सिद्ध
वंतछेवर्त्तमाने ॥ कांइसिद्धअसिद्धरे ॥ बहु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ भावीनुं भूतवदुपचारकरे एबीजोनैगमनोभेद जेम जिननेसिद्ध कहियें छैयें केमके केवलीनेसिद्धपणो अवश्यभावीछे माटे कांइकसिद्ध अने कांइकअसिद्धने वर्त्तमानकहे तेवर्त्तमान नैगमकहियें ॥ ९ ॥

भाषीयेंजिमभक्तपचियें ॥ वर्त्तमानारोपरे ॥ करेकिरिया
भूतलेश ॥ भूतवचनविलोपरे ॥ बहु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम भक्तके० रसोइरांधिछे एमकहियें इहां रसोइना केटलाकअवयव सिद्धथयाछे अनेकेटलाक साध्यमानछे पणपूर्वापरभूतावयव क्रियासंतान एकबुद्धीयें आरोपियें तेने वर्त्तमानकहियेंछैयें एआरोप सामग्री महिमायें कोइअवयवनी भूत क्रियालेश पचतिएछेकाणे अपाक्षीत् एप्रयोगनथीकरता जेनैयायिकादिक तेएमकहेछे जे चरमक्रियाध्वंस अनेअतीत प्रत्ययविषय तेहनेकिंचित्पक्कं किंचित्पच्यते एवुं कहे-छेतो एप्रयोगनथवोजोइयें तेमाटे एवर्त्तमानारोप नैगमनयनोभेदज भलोजाणवो॥१०॥

संग्रहेनयसंग्रहो ॥ तेद्विविधउघविशेषरे ॥ द्रव्यसवि
अविरोधियाजेम ॥ तथाजीवअशेषरे ॥ बहु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहेते संग्रहनयकहियें तेना एकउघ बीजोविशेष ए बेभेदछे तेमां एक उघके० सामान्यसंग्रह अनेबीजो विशेषसंग्रह एबेभेदजाणवा द्रव्याणिसर्वाणिअवि-रोधीनि एप्रथमभेदनुं उदाहरण तथाजीवाःसर्वेअविरोधिनः एबीजाभेदनुं उदाहरण सर्वद्रव्यनेएकपणे बोलाववुंते सामान्यसंग्रह अने तेमांवली एकजीवद्रव्यने जूदो करी सर्वजीवने एकजीवद्रव्य कहिबोलाववुं तेविशेषसंग्रह ॥ ११ ॥

व्यवहारसंग्रहविषयभेदक ॥ तेमजद्विविधप्रसिद्धरे ॥ द्रव्य
जीवाजीवभाषें ॥ जीवभवियासिद्धरे ॥ बहु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहनयनो विषय तेनाभेदनोदेखाडनार तेव्यवहारनयकहियें तेना तेमज संग्रहनयनीपरें द्विविधके० बेभेदछे १ सामान्यसंग्रहभेदकव्यवहार २ विशेष-संग्रहभेदकव्यवहार एरीते बेभेदजाणवा द्रव्यजीवाजीवौ एसामान्यसंग्रहभेदव्यवहार अने जीवाःसंसारिणः सिद्धाश्च एविशेषसंग्रहभेदकव्यवहार एमउत्तरोत्तरविवक्षायें सामान्य विशेषपणुंभाववुं ॥ १२ ॥

वर्त्ततोऋजुसूत्रभाषें ॥ अथनिजअनुकूलरे ॥ क्षणिकपर्याय
कहेसुषिम ॥ मनुष्यादिकस्थूलरे ॥ बहु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानें वर्त्ततो अर्थभाषे पणअतीत अनागत अर्थने न माने अनेवर्त्तमानेपण निजअनुकूलके० पोताना कामनोअर्थमाने पणपरकीयमाने नही ते ऋजुसूत्रनय बेभेदेंकहेवो १ सूक्ष्मऋजुसूत्र ते क्षणिकपर्याय जेउत्पादव्यय तेनेमाने अनेबीजोस्थूल ऋजुसूत्रते मनुष्यादिपर्यायमाने एटलेमनुष्यतीर्यंचादिक भवनापर्या-

थग्रहे पणकालत्रयवर्ति पर्यायमानेनहो अनेजे व्यवहारनयछे तेत्रणेकालना पर्यायमाने तेमाटे स्थूलरुजुसूत्र तथाव्यवहारनयने संकरदोषनजाणवो ॥ १३ ॥

शब्दप्रकृतिप्रत्ययादिक ॥ सिद्धमानेशब्दरे ॥ समन्निरूढ
विन्निन्नअर्थक ॥ कहेन्निन्नजशब्दरे ॥ बहु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेशब्दनयते प्रकृतिप्रत्ययादिक व्याकरणव्युत्पत्तिथी सिद्धथयेलोशब्दमाने लिंगवचनादिन्नेदें अर्थनोन्नेदमाने जेम तटः तटी तटं एत्रणलिंगन्नेदें अर्थन्नेद तथा आपः जलं इहांएकवचन बहुवचनन्नेदें अर्थन्नेदमाने अनेरुजुसूत्रनयने एशब्दनय एमकहेजे कालन्नेदें अर्थन्नेदतुंमानेछे तोलिंगादिन्नेदें न्नेदकांनथीमानतो अने छहो समन्निरूढनय एमकहेजे न्निन्नशब्दते न्निन्नार्थकजहोय माटे एनयते शब्दनयने एम कहेजे तुंलिंगादिन्नेदें अर्थन्नेदमानेछे तोशब्दन्नेदें अर्थन्नेदकेममानतोनथी तेमाटे घटशब्दार्थन्निन्न अनेकुंजशब्दार्थन्निन्न एमएमाने एबेशब्दनुं एकार्थपणुं तेशब्दादि-नयनी वासनाथकी प्रसिद्धछे ॥ १४ ॥

क्रियापरिणतअर्थमाने ॥ सर्वएवंन्नूतरे ॥ नवेनयना
न्नेदएणीपरें ॥ अठावीसप्रन्नूतरे ॥ बहु० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवंन्नूतनयते सर्वअर्थक्रियाने परिणतक्रियावेलायें माने पणअन्यदा मानेनही जेमछत्रचामरादिके शोन्ने परषदामांबेठा चामरढलावे तेवारेज तेने राजा माने पण स्नानादिकवेलायें तेअर्थविना राजानकहियें एरीतेंनवेनयना अठावीसन्नेद तेप्रन्नूतके० घणाथया १० द्रव्यार्थिकना ६ पर्यायार्थिकना ३ नैगमना २ संग्रहना २ व्यवहारना २ रुजुसूत्रना १ शब्दनो १ समन्निरूढनो १ एवंन्नूतनो ॥ १५ ॥

नवेनयएमकह्याउपनय ॥ तीनकहियेंसाररे ॥ साचमोश्रुत
अरथपरखी ॥ लहोजशविस्ताररे ॥ बहु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमनवेनयकह्या हवेत्रणउपनय ते दिगंबरप्रक्रियायेंकहियेंछैयें एमां साचो श्रुतनोअर्थ परखीकरीने बहुश्रुतपणाना यशनोविस्तारपामो ॥ १६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ चक्रउपनुंसाररे ॥ एदेशी ॥

सन्नूतव्यवहार ॥ न्नेदप्रथमतिहां ॥ धर्मधर्मिनान्नेदथीए ॥ १ ॥
शुद्धअशुद्धद्विन्नेद ॥ शुद्धअशुद्धना ॥ तेहअरथनान्नेदथीए ॥ २ ॥

अर्थ ॥ नयसमीपेंतेउपनयकहियें तेमांसन्नूतव्यवहारते उपनयनोप्रथमन्नेदछे ते धर्म

अने धर्मिना भेददेखाडवाथी होय ॥ १ ॥ तेहनावलीबेभेदछे एकशुद्ध बीजोअशुद्ध तेमांपेहेलो शुद्धधर्मधर्मिनाभेदथी शुद्धसद्भूत व्यवहारथाय अनेबीजोअशुद्ध धर्मधर्मिनाभेदथी अशुद्धसद्भूत व्यवहारथाय इहांसद्भूतती एटलाटेजे एकद्रव्यजछे अने भिन्नद्रव्यसंयोगादि अपेक्षानथी तथा व्यवहार ते माटेजे भेददेखाडेछे ॥ २ ॥

जेमजगकेवलज्ञान ॥ आतमद्रव्यनुं ॥ मइनाणादिकतेहनुंए ॥३॥
गुणपर्यायस्वभाव ॥ कारकरतन्मनो ॥ अरथभेदछेएहनोए ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगतमां आत्मद्रव्यनुं केवलज्ञान षष्ठीयें प्रयोगकरियें तेशुद्धसद्भूतव्यवहारथयो तथामतिज्ञानादिकते आत्मद्रव्यनागुणछे एमबोलावियें तेअशुद्ध सद्भूतव्यवहारथयो ॥३॥ गुणगुणीनो पर्यायपर्यायवंतनो स्वभाव स्वभाववंतनोकारक अने तन्मयके० कारकी तेहनोजे एकद्रव्यानुगत भेदबोलावियें तेसर्वेउपनयनो अर्थ जाणवो घटस्यरूपं घटस्यरक्तता घटस्यस्वभावः मृदाघटोनिष्पादित इत्यादिप्रयोगजाणवा. ॥ ४ ॥

असद्भूतव्यवहार ॥ परपरिणतिभलें ॥ द्रव्यादिकउपचारथीए ॥ ५ ॥
द्रव्येंद्रव्यउपचार ॥ पुद्गलजीवने ॥ जिमकहियेंजिमआगमेंए ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परद्रव्यनी परिणति भलेंथके जेद्रव्यादिकने नवविधोपचारथी कहियें ते असद्भूत व्यवहारजाणवो ॥५॥ तेनवविधोपचारमां पहेलो द्रव्येद्रव्यनोउपचार कहेछे जेमजिनआगममां क्षीरनीरनेन्यायें जीवतेपुद्गलसार्थे मिल्योछे माटे जीवनेपुद्गल कहियें एजीवद्रव्यें पुद्गलद्रव्यनो उपचार तेद्रव्येद्रव्योपचार पहेलोभेदथयो ॥ ६ ॥

कालीलेस्याभाव ॥ श्यामगुणेभली ॥ गुणउपचारगुणेकहोए ॥ ७ ॥
पर्यायेंपर्याय ॥ उपचारेंवली ॥ हयगयखंधयथाकह्याए ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेभावलेश्यातेआत्मानो अरूपीगुणछे तेनेजे कृसनीलादिक कालीलेश्या कहियेंछेयें तेकृस्नादि पुद्गलद्रव्यनागुणनो उपचार करियेंछेयें एआत्मगुणे पुद्गलगुणनो उपचारजाणवो एरीतें गुणेगुणोपचारथयुं ॥ ७ ॥ वलीपर्यायें पर्यायोपचारते हयके० घोडा गयके० हाथी रथप्रमुख आत्मद्रव्यना असमानजातीय द्रव्यपर्याय तेने खंध कहियेंछेयें तेआत्मपर्यायउपरें पुद्गलपर्यायजेस्कंध तेनोउपचारकरीने कहियेंछेयें एपर्यायेपर्यायोपचारनो त्रीजोभेदथयो ॥ ८ ॥

द्रव्येंगुणउपचार ॥ वलीपर्यायनो ॥ गौरदेहहुंबोलतांए ॥९॥ गुणे
द्रव्यउपचार ॥ पर्यायद्रव्यनुं ॥ गौरदेहजिमआतमाए ॥ १० ॥

अर्थ ॥ द्रव्येगुणोपचारः चोथोभेदकहेछे ते हुंगौरवर्णतुं एमबोलताहुंतेआत्माद्रव्य

अनेजे गौरतेपुद्गलनो उज्वलतापणो उपचस्त्युं एचोथोभेद हवेपांचमुं द्रव्येंपर्यायोप-चार ते जेमहुंदेहएमबोले तेमां हुंतेआत्मद्रव्य अनेदेहतो पुद्गलद्रव्यनो सामान्य-जातीय द्रव्यपर्यायउपचास्युं एपांचमोभेदथयो ॥ ए॥ गुणेद्रव्योपचारः जेम एगौरदेखा-यछे तेआत्मा एमगौरपणो उद्देसीने आत्मविधानकरियें एटलेए गौरतारूप पुद्गलगुण उपरें आत्मद्रव्यनो उपचार तेगुणेद्रव्योपचार छछोभेदथयो तथापर्यायें द्रव्योपचारः ते जेम देहनेआत्माकहियें इहां देहरूप पुद्गलपर्यायनेविषे आत्मद्रव्यनो उपचार कस्यो एसातमोभेदथयो ॥ १० ॥

गुणपज्जवउपचार॥ गुणनोपज्जवें॥ जिममतितनुतनुमतिगुणोए ॥११॥
असद्भूतव्यवहार ॥ एमउपचारथी ॥ एहत्रिविधहवेसांभलोए ॥१२॥

अर्थ ॥ गुणेपर्यायोपचारः तेजेममतिज्ञानते शरीरजन्यछे तेमाटे शरीरजकहियें इहांमतिज्ञानरूप आत्मगुणनेविषे शरीररूप पुद्गलपर्यायनो उपचारकस्यो एआठमो भेदथयो हवे पर्यायेगुणोपचारः ते पूर्वप्रयोगनेज अन्यथाकरियें तेआवीरीतें के शरी-रते मतिज्ञानरूप गुणजछे तोइहां शरीररूप पर्यायनेविषे मतिज्ञानरूप गुणनोउप-चारकरायछे एनवमोभेद ॥ ११ ॥ एमउपचारथी असद्भूतव्यवहार नवप्रकारनोकह्यो हवेएना त्रणभेदछेतेकहियेंछैयें तेसांभलो ॥ १२ ॥

असद्भूतनिजजाति ॥ जिमपरमाणुउ ॥ बहुप्रदेशीभाषियेंए ॥१३॥
तेहविजातिजाणो ॥ जिममूरतमति ॥ मूरतद्रव्येंउपनीए ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एकस्वजाति असद्भूतव्यवहार ते जेमपरमाणु ते बहुप्रदेशीथवानी जातिछे माटे बहुप्रदेशीकहियें ॥ १३ ॥ तथा जेम मतिके० मतिज्ञानने मूर्तिवंत कहियें मूर्त्तजे विषयालोकनमस्कारादिकथी उपनोतेमाटे इहांमतिज्ञानते आत्मगुण तेनेविषे मूर्त्तत्व जे पुद्गलगुण तेनेउपचस्युं तेनेविजातीय असद्भूत व्यवहारजाणो एबीजोभेद ॥ १४ ॥

असद्भूतदोउभांत ॥ जीवअजीवने ॥ विषयग्यानजिमभांषियेंए॥१५॥
उपचरितासद्भूत ॥ करियेंउपचारो ॥ जेहएकउपचारथीए ॥१६॥

अर्थ ॥ दोउभांतिके० बेजाति तेस्वजाति अने विजातियें असद्भूत व्यवहारनो संबंध कहियें जेमजीवाजीव विषयज्ञानकहियें इहांजीवतेज्ञाननी स्वजातिछे अनेअ-जीवते ज्ञाननोविजातिछे एबेनोविषयविषयीभाव नामे उपचरित संबंधछे तेस्वजाति विजातिनामे असद्भूतकहियें स्वजातीयांशेकिंनायंसद्भूतइतिचेत् विजातीयांशेविषयता संबंधस्योपचरितस्यैवानुभावादितिग्रहाण एत्रणभेदकह्या ॥ १५ ॥ जेएकउपचारथी बीजोउपचारकस्यो तेउपचरित असद्भूत व्यवहारकहियें ॥ १६ ॥

तेहस्वजातिजाणोरे ॥ हुंपुत्रादिक ॥ पुत्रादिकछेमाहराए ॥१७॥ विजा
तिथीतेजाणोरे ॥ वस्त्रादिकमुऊ ॥ गढदेशादिकउत्नयथीए ॥ १८ ॥
उपनयन्नाष्याएम ॥ अध्यात्मनय ॥ कहीपरिक्षाजशलहोए ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेस्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारजाणो संबंधीकल्पनं जेहुंपुत्रादिक इहांहुंमारा एवुं जेपुत्रादिकनेविषेकहेवुं तेपुत्रादिकने उपचस्याछे ते आत्मानो न्नेदान्नेदसंबंध उपचरियेंछैयें जेपुत्रादिकते शरीरआत्मपर्यायरूपें स्वजातिछे पणकल्पितछे नहीतो स्वशरीरजन्य मत्कुणादिकने पुत्रकेमनकहियें ॥ १७ ॥ तथाविजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारते कहियेंजे आवस्त्रादिक माहराछे इहांवस्त्रादिक पुद्गलनापर्यायेंनामादिन्नेदें कल्पितछे नहीतो वल्कलादिक शरीराछादक तेनेवस्त्रकेमनकहियें तेविजातिमां स्वसंबंध उपचरियेंछैयें तेमज माहरागढदेश प्रमुखछे एमकहेतांथकां स्वजाति विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार कहियें केमके गढदेशादिकतो जीवअजीवउन्नय समुदायरूपछे ॥ १८ ॥ एरीतेंउपनयकह्या हवे आगलीढालमां अध्यात्मनयकहिने घमांगुणदोष परिक्षानो यशपामो ॥ १९ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ जायातुजविणघडीरेछमास ॥ एदेशी ॥

दोयमूलनयन्नाषीयारे ॥ निश्चयनेव्यवहार ॥ निश्चयद्विविधकह्युंरे ॥
शुद्धअशुद्धप्रकाररे ॥ प्राणीपरखोआगमन्नाव ॥१॥ एआंकणी

अर्थ ॥ हवेप्रथम अध्यात्मन्नाषायेंतो मूलबेजनयकह्याछे एकनिश्चयनय अनेबीजो व्यवहारनय तेमां निश्चयनयनावली बेन्नेदछे एकशुद्धनिश्चयनय अनेबीजो अशुद्धनिश्चयनय हेप्राणी ! आगमना न्नावपरखीनेग्रहो ॥ १ ॥

जीवकेवलादिकयथारे ॥ शुद्धविषयनिरुपाधि ॥ मइनाणा
दिकआतमारे ॥ अशुद्धतेहसोपाधिरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जीवते केवलज्ञानादिरूपछे माटेजे कर्मोपाधिरहित केवलज्ञानादिक शुद्ध गुणविषयलेइ आत्माने अन्नेददेखाडियें तेशुद्धनिश्चय नयकहियें अने जे मतिज्ञानादिक अशुद्धगुणने आत्माकहियें तेअशुद्धनिश्चयनय सोपाधिकछे एटले जेनिश्चयनयते अन्नेददेखाडे अनेजेव्यवहारनयते न्नेददेखाडे ॥ २ ॥

दोइन्नेदव्यवहारनाजी ॥ सद्भूतासद्भूत ॥ एकविषय
सद्भूतबेजी ॥ परविषयासद्भूतरे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वली व्यवहारनयना बेभेदछे एकसद्भूतव्यवहार बीजोअसद्भूतव्यवहार एक विषयके० एकद्रव्याश्रितते सद्भूतव्यवहार अनेजे परविषयते असद्भूतव्यवहार ॥ ३ ॥

उपचरितानुपचरितथीजी ॥ पहेलोदोयप्रकार ॥ सोपाधिक
गुणगुणीभेदरे ॥ जेअनिमित्तउपचाररे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमां पहेलोजे सद्भूतव्यवहारते बेप्रकारेंछे एकउपचरित सद्भूतव्यवहार बीजो अनुपचरित सद्भूतव्यवहार ते जे सोपाधिकगुणगुणीनो भेददेखाडे जेम जीवस्यमतिज्ञानं एउपाधि तेहिजइहां उपचरित प्रथमभेदछे ॥ ४ ॥

निरुपाधिकगुणगुणीभेदेरे ॥ अनुपचरितसद्भूत ॥ केवल
ज्ञानादिकगुणारे ॥ आतमनाअद्भूतरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथानिरुपाधिक गुणगुणीभेदें बीजोभेदजाणवो यथाजीवस्यकेवलज्ञानं इहांउपाधिरहितपणो तेहिज निरुपचरितपणुं जाणवुं ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारनाजी ॥ एमजभेदछेदोय ॥ प्रथमअसं
श्लेषितयोगेंजी ॥ देवदत्तधनजोयरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीएजरीतें असद्भूतव्यवहारनापण बेभेदछे एकउपचरित असद्भूत व्यवहार बीजोअनुपचरित असद्भूतव्यवहार तेमांप्रथमभेदते असंश्लेषित योगें कल्पित संबंधेंहोय जेम देवदत्तनुंधन इहांधनते देवदत्तनेसंबंध स्वस्वामीभावरूप कल्पितछे तेमाटेउपचारथयो तथादेवदत्त अनेधनतेजाते बेहुएकद्रव्यनथी तेमाटे असद्भूत एम भावनाकरवी तेउपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो ॥ ६ ॥

संश्लेषितयोगेंबीजोरे ॥ जेमआतमनुंदेह ॥ नयउपनय
नयचक्रमांरे ॥ कह्यामूलनयएहरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ बीजोभेद संश्लेषितयोगें कर्मसंबंधेजजाणवो ते जेम आतमनुंशरीर आत्मातथादेहनासंबंध तेधनसंबंधनीपरें कल्पितनथी विपरीतभावनायें निवर्त्तेनहीं जावजीवरहे तेमाटे एअनुपचरित अनेभिन्नविषयमाटे असद्भूतजाणवो एरीतेंनयतथा उपनय एवेमूलनयसहित तेदिगंबर देवसेनकृत नयचक्रमां कह्याछे ॥ ७ ॥

विषयभेदयद्यपिनहीरे ॥ इहांअमारेथूल ॥ उलटी
परिभाषाइसीरे ॥ तोपणदाजेमूलरे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इहांयद्यपिअमारे श्वेतांबरने थूलके० महोटो विषयभेदके० अर्थनोफेर नथी तोपणमूलके० प्रथमथी उलटीके० विपरीतपरिभाषानी शैलीकरीतेदाजेछे खेद

करेछे यद्यपि न भवति हानिः परकीयां चरतिरासभेद्राक्षां ॥ असमंजसं तु दृष्ट्वा तथापि फेरिखिद्यते चेतः इतिवचनात् ॥ ८ ॥

तत्वार्थेनयसातछेरे ॥ आदेशांतरपंच ॥ अंतरभा
वितदूरीरे ॥ नवनोकिस्योप्रपंचरे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवेतेबोटीकनी ठलटीपरिभाषाछे ते देखाडीयेंछैयें तत्वार्थसूत्रें सातनय कह्याछे अने आदेशांतरके० मतांतर तेथीपांचनयकह्याछे सप्तमूलनयाः पंचेत्यादेशांतरं एसूत्रें एटले १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूत एत्रणनयने एकशब्द एवेनामें संग्रहीयें तो पहेलानैगमादिक चारनयसाथें मेलवतां पांचनयकहियें तेवलीएकेकना सोसोभेदहोय तिहांपण ७०० तथा ५०० भेदथायं एरीतें बेमतकह्याछे तथोक्तमावश्यके इक्किक्कोयसयविहो सत्तणयसयाहवंतिएसेव ॥ अणोविहुआएसो पंचेव सयानयाणंतु ॥१॥ एवीशास्त्रनीरीत मूकीने अंतर्भावित सातनयमां भेल्याजे द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक तेदूरी अलगाकाढीने नवनयकह्या एस्योप्रपंच हेचतुरमनुष्योतमे विचारीजुओ ॥ए॥

पज्जयथ्थद्रव्यारथोरे ॥ जोतुमेअलगादीठ ॥ अप्पियण
प्पियभेदथीरे ॥ केमइग्यारनइठरे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एमकरतां पर्यायार्थ तथाद्रव्यार्थ एबेनयजोतुमे अलगादीठा अनेनवनय कह्या तोअर्पित तथाअनर्पित एबेनयअलगाकरीने इग्यारनयकेमकह्यानहीं ॥ १० ॥

संग्रहव्यवहारादिकेरे ॥ जोतुमेभेलोतेह ॥ आदिअंतनय
थोकमांजी ॥ केमनवीभेलोएहरे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेजो एमकहेसोजे अर्पितानर्पितसिद्धेरित्यादि एटले तत्वार्थसूत्रादिकमां जे अर्पितानर्पित नयकह्यांछे तेअर्पितके० विशेषकहियें अने अनर्पितके० सामान्यकहियें जे अनर्पितते संग्रहनयमांभले अने अर्पितते व्यवहारादिक विशेषनयमां भवे माटे जूदाशीरीतेकहियें तो अर्पितनार्पित एबेनयजो जूदानथीकहेता तो आदिअंतके० पहेला तथापाछलनयना थोकडामां द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एबेनयकेमनथीभेलता जेथकीसूधीरीतें मूलनयसातजकहेवाय तेसर्वसुविधियेंरहे ॥ ११ ॥

पज्जवनयतिअअंतमारे ॥ प्रथमद्रव्यनयचार ॥ जिनभद्रा
दिकभाषियारे ॥ महाभाष्यसुविचाररे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेसातनयमध्ये द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एबेनय भेल्यानी आचार्य मत प्रक्रियादेखाडेछे जे अंतमांके० छेहलाजे शब्द समभिरूढ अनेएवंभूतरूप एत्रण

नयते पर्यायनयकहियें अनेप्रथमनाचारनय जे नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र ते द्रव्यार्थिकनयकहियें एरीतें जिनभद्रगणीखमाश्रमण प्रमुखसिद्धांतवादि आ ते श्रीविशेषावश्यकना महाभाष्यमध्ये निर्धारैंकहेले ॥ १२ ॥

सिद्धसेनमुखएमकहेरे ॥ प्रथमद्रव्यनयतीन ॥ तसऋजु
सूत्रनसंभवेरे ॥ द्रव्यावश्यकलीनरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेसिद्धसेन तथामल्लवादीप्रमुख तर्कवादीआचार्य एमकहेले के प्रथ नात्रणनयजे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार लक्षणते द्रव्यनयकहियें अने १ ऋजुस २ शब्द ३ समभिरूढ ४ एवंभूत एचारनय पर्यायार्थिककहियें. द्रव्यार्थिकमते पर्यायाः खलु कल्पिताः ॥ सत्यंतेष्वन्वयिद्रव्यं कुंडलादिषुहेमवत् ॥ १ ॥ पर्यायार्थ द्रव्यं पर्यायेभ्योस्ति नोपृथक् ॥ यत्तैरर्थक्रिया दृष्टा नित्यं कुत्रोपयुज्यते ॥ २ ॥ द्रव्यार्थपर्यायार्थनयलक्षणात् अतीत अनागत पर्यायप्रतिक्षेपीऋजूसूत्रः शुद्धमर्थ यंमन्यमानः कथंद्रव्यार्थिकः स्यादित्येतेषामाशयः तेआचार्यनेमते ऋजुसूत्रनय द्र वश्यकनेविषे लीननसंभवे तथाच उज्जुसुअस्सएगे अणुवउत्तेएगंदव्वावस्सयंपुहुत्तं इतिअनुयोगद्वारसूत्रविरोधः वर्त्तमानपर्यायाधारस्यद्रव्यांशपूर्वापरपरिणामसाधा ऊर्ध्वतासामान्यद्रव्यांशसादृश्यास्तित्वरूपतिर्यक्सामान्यद्रव्यांशः एमांएकेपर्यायनम तो ऋजुसूत्रने पर्यायार्थिकनयकहेतां एसूत्रकेममिले तेमाटेक्षणिकद्रव्यवादी सूक्ष्म जुसूत्र तद्वर्तमानपर्यायापन्न द्रव्यादि स्थुलऋजुसूत्रतें द्रव्यनयकहेवो एमसिद्धां दीकहेले अनुपयोगद्रव्यांशमेव सूत्रपरिभाषितमादायोक्तसूत्रतार्किकमतंतेनोपपा यमित्यस्मादेकपरिशीलितःपंथा ॥ १३ ॥

इमअंतरभाविततणोरे ॥ केमअलगोउपदेश ॥ पांचथकी
जेमसातमांरे ॥ विषयभेदनहीलेशरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इमके० एरीतेअंतरभावितके० मांहेभेल्याजे द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिकनय तेनो अलगोउपदेश केमकर्यो कदाचितजो इमकहेसोजे मतांतरें पांचनयकहियेंछैयें तेमांबेनयभल्याथका सातनयकहेता जेमअलगोउपदेशले तेमअमारे द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकनो अलगोउपदेशले तेनोउत्तरजे शब्द समभिरूढ तथाएवंभूतने जेमविषयभेदले तेमद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिकने सातनयथी भिन्न विषय देखाडी जेमत्रणनयने एक संज्ञायेंसंग्रही पांचनयकह्यांले पणविषयभिन्नले पणइहांतो विषयभिन्नथी केमके जेद्रव्यार्थिकना दशभेददेखाड्या तेसर्वेशुद्धाशुद्धसंग्रहादिक नयमांआवेले तथाजे पर्यायार्थिकना छभेददेखाड्या तेसर्वे उपचरितानुपरित व्यवहार शुद्धाशुद्ध ऋजुसूत्रा-

करेछेमांआवे जोगोबलिवर्दन्यायें विषयभेदें भिन्ननयकहियें तोस्यादस्त्येव स्यान्नास्त्येव पि ॑दिक सप्तभंगीमांकोकोरीतें अर्पितानर्पित सत्वासत्व ग्राहक नय भिन्नभिन्नकरतां मूलनयप्रक्रियाभांजे एपंक्तितेविचारवुं ॥ १४ ॥

संग्रहनेव्यवहारथीरे ॥ नैगमकिहांएकभिन्न ॥ तेणेते
अलगोतेहथीरे ॥ एतोदोयअभिन्नरे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥

क अर्थ ॥ इहांजो विषयभेदनेनयभेदकहेसो तो सामान्यनैगमसंग्रहनयमांअने विशेए नैगमव्यवहारनयमांभेलतांबाकीछनयजथयीजासेएहवी शिष्यनीआशंकाटालवाने हीथेंकहेछेकेयद्यपि संग्रहनय तथाव्यवहारनयमांहेज सामान्यविशेषपर्यायेंनैगमनय सोछे तोपणकिहांएकप्रदेशादिदृष्टांतस्थानेभिन्नथायछे उक्तंच छन्हंतहयचउन्हं पंच इक्कीतहयहोइभणिज्जा ॥ तम्मयसोयपएतो सोचेवणचेवसत्तन्हं ॥ इत्यादिक तेमाटे एवीएक भिन्नविषयपणाथी नैगमनयभिन्नकह्युं पणइहांतो द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकबेतेउयनो नैगमादिकनयथी अभिन्नविषयछे तोतेने अलगाकरीने नवभेद शीरीतेकहियें

इमकरताएपामिएरे ॥ सर्वविभक्तविभाग ॥ जीवादिक
परेंकोनहीरे ॥ इहांप्रयोजनलागरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमकरतां नवनयदेखाडतां तो विभक्तनो विभागथाय एटले वहेंच्यानुं कह्यवुंथाय जोतमारे वहेंचणकरवीहोयतो तेवारें जीवाद्विधाः संसारिणःसिद्धाःसंसा: पृथ्वीकायिकादि षट्भेदाः सिद्धाःपंचदशभेदाः एमज नयाद्विधाः द्रव्यार्थिक ार्थिक भेदात् द्रव्यार्थिकास्त्रिधाः नैगमादिभेदात् ऋजुसूत्रादिभेदाच्चतुर्धापर्याया- एमकह्युंछे पणनवनया एमएकवाक्यनो विभागकीधो तेसर्वथा मिथ्याजाणवो ..तो जीवसंसारी सिद्धा. इत्यादि विभागवाक्यपण थवापामे इवेकोइकहेसेजे जीवाजीवौतत्वं एमकहेतां अनेरातत्वआव्या तोपणसात अथवानवतत्व जेमकहियेंछैयें तेमजद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकौ नयौ एमकहेतांथकां अनेरानय सर्वआवेछे तोपण अमे स्वप्रक्रियायें नवनयकहिसुं एमकहेतेनेकहियेंजे तिहांप्रयोजनभेदें भिन्नभिन्न तत्व व्यवहारमात्र साध्यछे तेतेमजसंभवे अने इहां इतरव्यावृत्तिसाध्यछे तिहांहेतु कोटि अनपेक्षित भेदप्रवेशें वैयर्थ्यदोषहोय तत्वप्रक्रियायें एप्रयोजनछे जीव अजीव एबेमुख्यज्ञेयपदार्थेजणीकहेवा अनेबंध मोक्ष एबे मुख्यहेयउपादेयछे तेमाटे बंधकारण जेआश्रव ते हेयके० छांडवुं अनेमोक्षमुख्य पुरुषार्थछे तेनावेकारण एक संवर बीजोनिर्जराकहेवा एसाततत्वकहेवानी प्रयोजनप्रक्रियापुण्यपापरूप शुभाशुभबंध भेदविगति अलगाकरी एजप्रक्रियानवतत्वकथननीजाणवी ॥ १६ ॥

भिन्नप्रयोजनविणकह्यारे ॥ सातमूलनयसूत्र ॥ तेणेअधिकुं
केमभाषीयेंरे ॥ राखीयेंनिजघरसूत्ररे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेइहांद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकना भिन्नोपदेशतुं कोइप्रयोजननथी केमके सत्तमूलनयापणत्ता एहवुंसूत्रेंकह्युंछे तेउल्लंघीने नवनयकहियें तो आपणाघरनुं सूत्रकेमरहे तेमाटे नवनयाः एमकहेतोथको देवसेननामा बोटिकतेउत्सूत्रभाषीजाणवो॥१७॥

दशभेदादिकपणइहांरे ॥ उपलक्षणकरीजाण ॥ नहीतो
कहोअंतरभेवेरे ॥ प्रदेशार्थकुणठाणरे ॥ प्राणी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ इहां नयचक्रग्रंथमां दिगंबरें द्रव्यार्थिकादिक दशभेदादिककह्या तेपणउपलक्षणेकरीजाणो नहीतो प्रदेशार्थ नयकयास्थानकेंआवे तेविचारजो उक्तंचसूत्रे दवठ्याए पएसठ्याए इत्यादि तथाकर्मोपाधीसापेक्ष जीवभावग्राहक द्रव्यार्थिकनय जेम कह्यो तेम जीवसंयोगसापेक्ष पुद्गलभावग्राहकनयपण भिन्नकह्योजोइयें एरीतेंकरियें तो अनंताभेदथाय तथाप्रस्थकादि दृष्टांते नैगमादिकना अशुद्ध अशुद्धतर अशुद्धतम शुद्धतर शुद्धतमादिभेद किहांसंग्रह्याजाय उपचारछे तेमाटे उपनयकहियेंतो अपसिद्धांतथाय एअनुयोगद्वारसूत्रें तेनयनाभेद देखाड्याछे ॥ १८ ॥

उपनयपणअलगानहीरे ॥ जेव्यवहारसमाय ॥ नहीतोभेद
प्रमाणनोरे ॥ उपप्रमाणपणथायरे ॥ प्राणी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजवातदृढेछे जेउपनयकह्या तेपण व्यवहार नैगमादिनयथी अलगानथी उक्तंच तत्वार्थसूत्रे उपचारबहुलोविस्तृतार्थे लौकिकप्रायोव्यवहारइति एम करतां नयनाभेदनेजो उपनयकरीमानसो तो स्वपरव्यवसायि ज्ञानप्रमाणं एलक्षणेंलक्षित ज्ञानरूपप्रमाणनो एकदेश मतिज्ञानादिक अथवा देशअवग्रहादिकतेने उपप्रमाणपण केमनथीकहेता तस्मात्नय उपनय एबोटिकनीप्रक्रिया शिष्यबुद्धीते धंधनमात्रजाणवी ॥ १९ ॥

व्यवहारनेनिश्चयथकीरे ॥ स्योउपचारविशेष ॥ मुख्य
वृत्तिजोएकनीरे ॥ तोउपचारिशेषरे ॥ प्राणी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ व्यवहारनेविषे उपचारछे अनेनिश्चयनयमां उपचारनथी एपणस्योविशेष जेवारें एकनयनी मुख्यवृत्तिलहियें तेवारें बीजानयनी उपचारवृत्तिआवे अतएवस्यादस्त्येव एनयवाक्यें अस्तित्वग्राहक निश्चयनयेंअस्तित्वधर्म मुख्यवृत्तिलेतां कालादिकआठे अभेदवृत्त्युपचारे अस्तित्वसंबंध सकलधर्मेलेतांज सकलादेशरूप नयवाक्य थाय एम

आकरग्रंथेप्रसिद्धछे स्वस्वार्थे सत्यपणानो अभिमानतो सर्वेनयने मांहोमांहेछेज अने फलथीसत्यपणुंतो सम्यक्दर्शनयोगेंजछे ॥ २० ॥

तेणेएभाष्येभाष्युंरे ॥ आदरियेंनिरधार ॥ तत्वअरथ
निश्चयग्रहेरे ॥ जिनअभिमतव्यवहाररे ॥ प्राणी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेनिश्चय तथाव्यवहारनुंलक्षण भाष्येके० विशेषावश्यकें कह्युंछे तेरीतें निरधारीने आदरो तत्वार्थग्राहीनयोनिश्चयः लोकाभिमतार्थग्राहीव्यवहारः जेतत्वअर्थते युक्तिसिद्धअर्थ जाणवो अनेजेलोकाभिमतते व्यवहारप्रसिद्धछे तेयद्यपि प्रमाणेतत्वार्थग्राहीछे तथापि प्रमाणस्य सकलतत्वार्थग्राही निश्चयनयः जछे एटले एकदेशतत्वार्थग्राही व्यवहार एभेदनिश्चें व्यवहारमांजाणवो अनेनिश्चयनयनी विषयता अनेव्यवहारनयनीविषयताते अनुभवसिद्धभिन्नछे अत्राज्ञाननयनिष्ठ जेमसविकल्पकतानिष्ठप्रकारी इत्यादिक अन्यवादिभिन्न मानेछे एमहृदयमां विचारवुं ॥ २१ ॥

अभ्यंतरताबाह्यनेरे ॥ जेबहुविगतिअभेद ॥ निरमलपरिं
णतिद्रव्यनीरे ॥ एसवीनिश्चयभेदरे ॥ प्राणी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेबाह्यअर्थने उपचारें अभ्यंतरपणुं करियें तेनिश्चयनयनो अर्थजाणवो यथा समाधिर्नंदनंधैर्यं दंभोलिःसमताशची ॥ ज्ञानंमहाविमानंच वासवश्रीरियंपुनः ॥ १ ॥ इत्यादि पुंडरीकाध्ययनाद्यर्थोप्येवंभावनीयः जेघणीव्यक्तिनो अभेददेखाडियें तेपण निश्चयनयार्थ जाणवो जेम एगेआया इत्यादिसूत्रं वेदांतदर्शनपण शुद्धसंग्रहनयादेशरूप शुद्धनिश्चयनयार्थ एमसंमतिग्रंथेंकह्युंछे तथाद्रव्यनीजे निर्मलपरिणति बाह्य निरपेक्ष परिणाम तेपणनिश्चयनयनोअर्थजाणवो जेम आयासामाइए आयासामाइअस्सअट्ठे एमजेजेरीतें लोकातिक्रांत अर्थपामियें तेते निश्चयनयनो अर्थभेदथाय अने तेथीलोकोत्तरार्थ भावनाआवे ॥ २२ ॥

जेहभेदछेविगतिनोरें ॥ जेउत्कटपर्याय ॥ कार्यनिमित्त
अभिन्नतारे ॥ एव्यवहारउपायरे ॥ प्राणी० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ जेव्यक्तिनो भेददेखाडियें जेम अनेकानिद्रव्याणि अनेकजीवा इत्यादिरीतें व्यवहारनयनोअर्थ तथा उत्कटपर्याय जाणियें तेपणव्यवहारनयनोअर्थ अतएव तिन्नयणएणंपंचवन्ने भमरेववहारणएणंकालवणे इत्यादि सिद्धांतेंप्रसिद्धछे तथा कार्यने निमित्तके० कारण एबेहुने अभिन्नपणुंकहियें तेपणव्यवहारनयनो उपायछे जेमआयुर्घृतं इत्यादिककहियें एमजगिरिर्दह्यते कुंडिकास्रवति इत्यादिक व्यवहारभाषा अनेकरूपें कहियेंछैयें ॥ २३ ॥

एमबहुविषयनिराकरीरे ॥ करतांतससंकोच ॥ केवलबाल
बोधवारे ॥ देवसेनआलोचरे ॥ प्राणी० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ एहवानिश्चयनय तथाव्यवहारनयनाघणाअर्थ तेनेनिराकरीके० टालीने तेनो संकोचकरतां थोडोभेददेखाडतां नयचक्रग्रंथनोकर्त्ताजे देवसेननामा दिगंबरी तेनो आलोच ते पोतासरिखा केटलाक बालकनेज बोधवानोदेखायछे पणसर्वार्थनिर्णयनो आलोच देखातोनथी अनेजे शुद्धनयार्थतेतोश्वेतांबर संप्रदायना शुद्धनयनाग्रंथ तेना अभ्यासथीज जणाय एभावार्थछे ॥ २४ ॥

एमबहुविधनयभंगसुंरे ॥ एकत्रिविधपयथ्य ॥ परखोहरषो
हैयफलेरे ॥ सुजशलहीपरमछरे ॥ प्राणी० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ एप्रक्रियामांपणअशुद्धटालीने जेयुक्तिसिद्धअर्थछे ते उपपाद्युंछे तेमाटे ए रीतें बहुप्रकारनयेभंगे एकजअर्थ त्रिविधके० द्रव्यगुणपर्यायरूप परखो स्वसमय परसमयतुं अंतरजाणीने हृदयनेविषे हर्षो परमार्थज्ञानयशपामीने ॥ २५ ॥

॥ ढालनवमी ॥

॥ इमधन्नोधणनेपरचावे ॥ एदेशी ॥

एकअरथतिहुंलक्षणे ॥ जेमसहितकहेजिनराज
रे ॥ तेमसद्दहणामनधारतां ॥ सीजेसघलासुभ
काजरे ॥ जिनवाणीप्राणीसांभलो ॥ एआंकणी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेएकजअर्थ जीवपुद्गलादिक तथाघटपटादिक ते जेम उत्पादव्ययध्रुव एत्रणलक्षणेकरी सहित एमश्रीजिनराजकहेछे उपन्नेवा विगमेइवा ध्रुवेइवा ए त्रिपदीयेंकरीने तेमज सद्दहणामनमांधरतां सर्वकार्यसीजे एत्रिपदीने सर्वअर्थव्यापकपणुं धारवुं तेजिनशासननार्थ पणकेटलाएक एकनित्यज केटलाएकएकअनित्यज एमनैयायिकादिककहेछे तेरीतिनथी केमके नित्यैकांत अनित्यैकांत पक्षतोलोकयुक्तिथीपण विरोधछे माटे दीपथीमांडीने आकाशसुधी जेटलापदार्थछेतेमां उत्पाद व्यय ध्रुव लक्षणमानवुं तेहिजप्रमाणछे उक्तंच श्रीहेमाचार्यैं आदीपमाव्योमसमस्वभावं स्याद्वादमुद्रानतिभेदवस्तु ॥ तन्नित्यमेवैकमनित्यमन्यदितित्वदाज्ञाद्विषतांप्रलापः ॥ १ ॥ एजिनेश्वरनी वाणी हेप्राणीतुमेसांभलो ॥ १ ॥

उत्पादव्ययध्रुवपणे ॥ छेसमयसमयपरिणामरे ॥ षटद्रव्य
तणोप्रत्यक्षथी ॥ नविरोधतणोंएठामरे ॥ जिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएहिजजाव विवरीनेकहेछे १ उत्पाद २ व्यय ३ ध्रुवएलक्षणे षटद्रव्यनो समयसमय परिणामछे इहांकोइकहेसेजे जिहांउत्पादव्यय तिहांध्रुवपणो नजोइयें अनेजिहांध्रुवपणो तिहांउत्पादव्यय नजोइयें एहवोविरोधछे तोत्रणलक्षण एकठामेकेमहोय जेम छाया तथाआतप एकठामेनहोयतेम ए त्रणलक्षपण एकठामे नहोवाजोइयें तेनेकहियेंजे शीत उष्ण स्पर्श जल तथा अनलके० अग्निनेविषे परस्परें परिहारेंदीठाछे तेने एकठामें उपसंहारे विरोधकहियें पण इहांतोत्रणलक्षण सर्वत्रएकठाज प्रत्यक्षथीदेखायछे परस्परपरिहारेंकिहांयें प्रत्यक्षसिद्धनथी तोए विरोधनो ठाम केमहोय अनादिकालनी एकांतवासनायें मोहितजीव तेउनोविरोधजाणेछे पणपरमार्थें विचारीजोतां विरोधनथी समनियततायें प्रत्ययजविरोधभंजकछे ॥ २ ॥

घटमुकुटसुवर्णहअर्थिया ॥ व्ययउत्पतिथितिपेखंतरे ॥
निजरूपेंहोवेहेमथी ॥ दुखहर्षउपेक्षावंतरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेहिजदेखाडेछे जे एकहेमद्रव्यनेविषे घटाकारेंनाश अनेमुकुटाकारेंउत्पत्ति तथाहेमाकारेंस्थिति एत्रणलक्षण प्रगटदेखायछे केमके हेमघटभांजी नेहेममुकुट थायछे तेथी हेमघटार्थ दुषवंतथायछे माटेघटाकारें हेमव्ययसत्यछे अने हेममुकुटार्थी हर्षवंतथायछे तेमाटेहेमोत्पत्ति मुकुटाकारेंसत्यछे अनेहेममात्रार्थी तेकालेंनसुखवंत नदुःखवंतथायछे स्थितिपरिणामेंरहेछे तेथी हेमसामान्यस्थिति सत्यछे एमसर्वत्र उत्पादव्यय स्थितिपर्याय द्रव्यरूपेंजाणवा इहांउत्पादव्यय भागेंभिन्नद्रव्य अनेस्थितिभांगे भिन्नद्रव्य कोइदेखातुंनथी केमके घटमुकुटाद्याकारें स्पर्शि हेमद्रव्यछेनही जेएकध्रुवहोय ध्रुवतानीप्रतितिपणछे माटेतद्भावाव्ययंनित्यं एलक्षण परिणामे ध्रुवअने परिणामेंअध्रुव एसर्वभाववुं ॥ ३ ॥

घटव्ययतेउतपत्तिमुकुटनी॥ ध्रुवताकंचननीएकरे ॥ दलएकें
वर्त्तेंएकदा ॥ निजकारयशकतिअनेकरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउत्पादव्यय ध्रुवनो अभेदसंबंध भेददेखाडेछे हेमनाघटनोजेव्यय तेहिज हेममुकुटनीउत्पत्ति एककारणजन्यछे तेमाटे विभागपर्यायोत्पत्ति संतानछे तेथीज घटनाश व्यवहारसंभवेछे तेमाटे पण उत्तरपर्यायउत्पत्ति तेपूर्वपर्यायनो नाश जाणवो अनेकंचननी ध्रुवतापणतेहिजछे केमके प्रतित्यपर्यायोत्पदें एकसंतानपणुं तेहिजद्रव्यलक्षण ध्रौव्यछे एत्रणलक्षण एकदलें एकदावर्त्तेंछे एमअभिन्नपणे पण शोक प्रमोद माध्यस्थरूप अनेककार्यदेखीने तत्कारणशक्तिरूपें अनेकपणे भिन्नतापणो जाणवो जेम सामान्यरूपें ध्रौव्य अनेविशेषरूपें उत्पादव्यय एममानतांपण विरोधनथी व्यव-

हारतोसर्वत्र स्याद्वादार्थातुं प्रवेशेजहोय विशेषपरतापण व्युत्पतिविशेषेंजहोय अत-एव स्याडुत्पद्यते स्यान्नश्यति स्यादध्रुवं एमजवाक्यप्रयोगकरियेंउत्पन्नेवा इत्यादौ वा-शब्दोविवस्थायांसच स्याछब्दसमानार्थः अतएव कृष्णः सर्पः एलौकिकवाक्यपण स्या-त्शब्देंलहीयें केमके सर्पने पृष्ठावछेदेश्यामताछे पण उदरावछेदें श्यामतानथी तथा सर्पमात्रें कृष्णतानथी शेषनाग शुक्लकहेवायछे तेमाटे विशेषणविशेष्यनियमार्थजो स्यात्शब्दप्रयोगछे तोत्रिपदि महावाक्यपणे स्यात्कारनीभजनासंभवे ॥ ४ ॥

बहुकारयकारणएकजो ॥ कहियेंतेद्रव्यस्वभावरे ॥ तो
कारणभेदाभावथी ॥ होयकारयभेदाभावरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहियेंजे हेमद्रव्यएकज अविकृतछे अनेजेविकार तेमिथ्याछे अनेशोकादिककार्यत्रय जननैकशक्ति स्वभावतेछे तेमाटे तेथी शोकादिककार्यत्रयथाय छे तोकारणनाभेदविना कार्यनोभेद केमथाय श्रेष्टसाधनते प्रमोदजनक अने स्वानिष्ठ-साधनते शोकजनक तदुभयभिन्नते माध्यस्थजनक एत्रिविधकार्य ते एकरूपथी केम होय शक्तिपण दृष्टांतानुसारे कल्पियेंछेयें नहीतो अग्निसमीपें जलदाह जनकस्वभावे इत्यादिककल्पतां पण कोणनिषेधकछे तस्मात् शक्तिभेद कारणभेद कार्यभेदानुसारे अवश्यअनुसरवो अने जननैकशक्तिशब्दज एकत्वानेकत्व स्याद्वादसूचवेछे ॥ ५ ॥

शोकादिकजननेवासना ॥ भेदेकोईबोलेबुद्धरे ॥ तसमन
सकारनीभिन्नता ॥ विणनिमित्तभेदकिमशुद्धरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ शोकके० बौधमतवादि एमकहेछे जे तुनानोमन्नोतमननीपरें उत्पादव्य-यजएकदाछे क्षणिकस्वलक्षणनेध्रुवतातोछेजनही हेमथीशोकादिक कार्यहोयछे भिन्न-भिन्नलोकनी भिन्नवासनाछे तेमाटे जेमएकजवस्तुवासनाभेदें कोनेअनिष्ट एप्रत्यक्ष छे जेमसेलडीप्रमुख मनुष्यनेइष्टछे तथाकरभजेऊंट तेनेअनिष्टछे पणतिहां वस्तुभेदनथी तेमइहांपणजाणवुं तेबौद्धने निमित्तभेदविना वासनारूप मनस्कारनीभिन्नता केमशु-द्धथाय माटे शोकादिकनुं उपादान जेमभिन्नभिन्नछे तेम निमित्तपणभिन्न अवश्यमा-नवुं एकवस्तुनीप्रमातृभेदें इष्टानिष्टताछे तिहांपण एकद्रव्यना इष्टानिष्टग्यानं जननश-क्तिरूपपर्यायभेदकहेवाज ॥ ६ ॥

जोनिमित्तभेदविणग्यानथी ॥ शक्तिसंकल्पविकल्परे ॥ तो
बाह्यवस्तुनालोपथी ॥ नघटेतुजघटपटजल्परे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जो योगाचारमतवादि बौद्ध कहेसेजे निमित्तकारणनाभेदविनाज वासना-

विशेषजनितज्ञानस्वभावथी शोकप्रमोदादिक संकल्पविकल्पहोयछे तो घटपटादिक निमित्तविनाज वासनाविशेषें घटपटाद्याकार ज्ञानहोवुंजोइयें तेथी बाह्यवस्तु सर्वलोपाए अनेनिःकारण तत्तदाकारज्ञानपण संभवेनही अंतरबहिराकारविरोधें बाह्याकार मिथ्याकहियें तोचित्रवस्तुविषय नीलपीताद्याकार ज्ञानपण मिथ्या थयीजाय तथासुखाद्याकार नीलाद्याकारपण विरुद्धथाय तेथीसर्वे शून्यज्ञानवादि माध्यमिकबौद्धनो मतआवीजाय उक्तंच किंस्यात्साचित्रतैः कस्यांनस्यात्तस्यामतावपि ॥ यदीदंस्वयमर्थानां रोचतेतत्रकोवयं ॥ १ ॥ तेशून्यवादपण प्रमाणसिध्यसिद्धिं व्याहतछे तेमाटे सर्वनयशुद्धस्याद्वादज वीतरागप्रणीत आदरवो ॥ ७ ॥

घटनाशमुकुटउतपत्तिनो ॥ घटएकजरूपेंहेतरे ॥ एकांत
भेदनीवासना ॥ नैयायिकपणकेमदेतरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एमशोकादि कार्यत्रयनेभेदें उत्पादव्ययध्रौव्य एत्रणलक्षण वस्तुमांसाध्या पण तेअविभक्तछे द्रव्यपणेअभिन्नछे अतएव हेमघटनाशाभिन्न हेममुकुटोत्पत्तिनेविषे हेमघटावय विभागादिकहेतुछे अतएवच महापटनाशाभिन्न खंडपटोत्पत्तिप्रतिएकादि तंतुसंयोगापमहेतुछे खंडपटें महापटनाशने हेतुताकल्पियें तोमहागौरवथाय एमजाणतो एलाघवप्रियनैयायिक नाशोत्पत्तिना एकांतभेदनीवासना केमदीयेछे तेहनुंमतछे जे कल्पनागौरवंयत्र तंपक्षंनसहामहे ॥ कल्पनालाघवंयत्र तंपक्षंतुसहामहे ॥ ८ ॥

दुग्धव्रतदधीजिमेनही ॥ नवीदूधदधीव्रतखायरे ॥ नवीदोइ
अगोरसव्रतजिमे ॥ तेणेतियलक्षणजगथायरे ॥ जिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जेदधिद्रव्यते दुग्धद्रव्यनही केमके जेहनेदूधनुंव्रतछेएटलेदूधजजिमवुं एहवीप्रतिज्ञारूपछे तो तेदहीजिमेनही माटे दूधपरिणामतेहिजदधि एमजोअभेदकहियें तोदधिजिमतां दुग्धव्रतभंगथवोनजोइयें एमाटे जे दूध तेदधिद्रव्यनही अने जोपरिणामीछे माटे अभेदकहियें तो दूधजिमतां दधिव्रतभंग नथवोजोइयेंअने जेहने दधिखावानुंव्रतछेतेपण दूधजिमतोनथी तथाअगोरसजजिमवुं एहवोव्रतवंत होय ते दूध तथादहीबेहुजिमेनहीएमगोरसपणे बेनेअभेदछे इहांदधिपणे उत्पत्तिअने दुग्धपणेनाशतथागोरसध्रुवपणोप्रत्यक्षसिद्धछे एदृष्टांते सर्वजगद्वर्त्तिभावने लक्षणत्रययुक्तपणुं कहेवुं श्लोक पयोव्रतोनदध्यत्तिनपयोत्तिदधिव्रतः ॥ अगोरसव्रतोनोभे तस्माद्वस्तुत्रयात्मकं ॥१॥ जे अन्वयिरूप अनेव्यतिरेकरूप द्रव्यपर्यायथी सिद्धांत अविरोधेंसर्वत्र अवतारीने त्रणलक्षणकहेवा केटलाएकभाव व्यतिरेकीज अने केटलाएकभावअन्वयीज एरीतेंजे दर्शनीकहेछे तिहांअनेराभावस्याद्वादव्युत्पत्तीयें देखाडवा बीजुंवस्तुनी

सत्ता त्रणलक्षणरूपजछे उत्पादव्यय ध्रुव्ययुक्तं सदितितत्वार्थ वचनात् तोसत्ताप्रत्यक्ष-
तेहजत्रिलक्षणसाक्षात्छे तथारूपें सद्व्यवहार साध्यअनुमानादिकप्रमाणअनुसरियेंछेयें

उत्पन्नघटेंनिजद्रव्यना ॥ उत्पत्तिनाशकेमहोयरे ॥ सुणध्रु
वतामांपहेलाजलिया ॥ छेअनुगमशक्तिदोयरे ॥ जिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेयावत्काल एकेकवस्तुमां त्रिणत्रिणलक्षणादिक केवीरीतेंहोय तेनिर-
धारेछे उत्पत्तिथयीछेजेहनी एहवोजेघट तेनेविषे द्वितीयादिलक्षण स्वद्रव्यसंबंध रू-
पोत्तरपर्यायोत्पत्ति तेहिजपूर्वपर्यायनाश तेतुमेपूर्वेथाप्योछे एहवोशिष्येंप्रश्नपुछ्यो तेवारें
गुरुकहेछे प्रथमक्षणेंथयाजे उत्पत्तिनाश ते ध्रुवतामांजल्या अने अनुगमके० एकता
तेशक्तिसदाइछे अछतेपण आद्यक्षणे उपलक्षणेथयीने आगलक्षणे द्रव्यरूपतत्संबंध
कहियें जेम उत्पन्नोघटः नष्टोघटः सर्वप्रयोगात् इदानींउत्पन्ननष्टः एमकहियें तेवारें
एतत्क्षणविशिष्टता उत्पत्तिनाशनेजाणियें तेद्वितीयादिक्षणेनथी तेमाटे द्वितीयादि
क्षणे इदानींउत्पन्न इत्यादिप्रयोगनथाय घटके० इहांद्रव्यार्थदेशें मृद्द्रव्यलेवुं जेमाटे
उत्पत्तिनाशधरतां सामान्यरूपेंकहियें तत्प्रतियोगिता तेविशेषरूपेंकहियें ॥ १० ॥

उत्पत्तिनाशनेअनुगमें ॥ भूतादिकप्रत्ययभानरे ॥ पर्याया
रथथीसविघटें ॥ तेमानेसमयप्रमाणरे ॥ जिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ निश्चेनयथी कज्जमाणेकडे एवचनअनुसरीने उत्पद्यमानते उत्पन्नंएमकं-
हियें पणव्यवहारनयथी उत्पद्यते उत्पन्नं उत्पस्यतेनश्यतिनष्टंनंक्ष्यति एविजक्त काल
त्रयप्रयोगछे तेप्रतिक्षण पर्यायोत्पत्तिनाशनयवादी जे ऋजुसूत्रनय तेणेअनुगृहीत जे
व्यवहारनयते लेइनेकहियें केमके ऋजुसूत्रनय समयप्रमाण वस्तुमानेछे तिहां जेप-
र्यायना वर्त्तमान उत्पत्तिनाश विवक्षीयें तेलेइने उत्पद्यते नश्यतिकहियें अने अतीत-
लेइ उत्पन्नोनष्टः एमकहियें वली अनागतनेलेइ उत्पत्स्यतेनंक्ष्यति एमकहियें व्यव-
स्थासर्वस्याछब्दप्रयोगेंसंजवे ॥ ११ ॥

जोतुजउत्पत्तिविशिष्टनो ॥ व्यवहारनाशनोइष्टरे ॥ व्यवहारें
उत्पत्तिआदरो ॥ तोपहेलाअछतिविशिष्टरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उत्पत्तिधारारूप नाशनेविषे भूतादिकप्रत्ययनकहियें अने नशधातु-
नोअर्थ नाश ने उत्पत्ति एवेलेइ तदुत्पत्तिकालत्रयनो अन्वयसंजवतो कहियें एरीतें
कहेतां नश्यसमयें नष्टःएप्रयोगनहोय केमके तेकालेंनाशोत्पत्तिनुं अतीतत्वनथी एम
व्यवहारनोजो समर्थनकरोछो तोव्यवहारें उत्पत्तिक्षणसंबंध मात्रकह्यो तिहांप्रागजा-

वध्वंसनाकालभावथी कालत्रयनोअन्वय समर्थनकरो अनेजोएमविचारसोजेघटने वर्त्तमानत्वादिकें जेमघटवर्त्तमानत्वादि व्यवहारनहोय अने पटधर्मवर्त्तमानत्वादिकें पटवर्त्तमानत्वादिकव्यवहारनहोय तेमनाशोत्पत्ति वर्तमानत्वादिकें नाशवर्तमानत्वादिव्यवहारनहोय तोक्रियानिष्टा परिणामरूप वर्त्तमानत्वने अतीतत्वलेइ नश्यतिनष्टः उत्पद्यतेउत्पन्नः एविभक्ति व्यवहारसमर्थन करो अतएव क्रियाकाल निष्टाकालयोगपद्य विवक्षायें उत्पद्यमानं उत्पन्नं विगछद्विगतं एसिद्धांतिक प्रयोगसंभवे अनेपरमतें इदानीं ध्वस्तोघटः एआद्यक्षणे व्यवहारसर्वथा घटेनही पण अमारेनयभेदेसंभवे उक्तंच संमतौ स्वाधिकरणक्षणत्वव्यापकस्वाधिकरणक्षणध्वंसाधिकरणताकत्वं अनुत्पन्नं ॥ उप्पज्जमाणकालं उप्पणंति विगयंविगछंतं॥भेदवियपन्नवंतो तिकालविसयंविसेसेई ॥१॥

उत्पत्तिनहीजोआगलें ॥ तोअनुत्पन्नतेथायरे ॥ जिमनाश
विनाअविनष्टछे ॥ पहेलातुजकेमसुहायरे ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आगलेंके० द्वितीयादिक्षणेजो उत्पत्तिनही तोघटादिक द्वितीयादिकक्षणे अनुत्पन्नथाय जेमध्वंसथयापहेला नाशविना अविनष्टकहियेंछेयें तोएतर्कतुजने केमसुहातुंनथी तेमाटेप्रतिक्षणोत्पाद नाशपरिणामद्वारें मानवा द्रव्यार्थदेशेंद्वितीयादिक्षणे जोउत्पत्ति व्यवहारकहियें तोनाशव्यवहारपण होवोजोइयें तथाक्षणांतरभावें द्वितीयादिक्षणे उत्पत्ति पामीजोइयें जोअकल्पित अनुत्पन्नता होयनही तोपणप्रतिक्षणे उत्पत्तिविना परमार्थथी अनुत्पन्नताथवी जोइयें ॥ १३ ॥

एणेभावेंभासिउं ॥ संमतिमांहेएभावरे ॥ संघयणादिक
भवभावथी ॥ सीजंताकेवलजायरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥
तेसिद्धपणेवलीउपजे ॥ केवलभावेंछेतेहरे ॥ व्ययउत्पत्ति
अनुगमथीसदा ॥ शिवमांतियलक्षणएहरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एमपरिणामथी सर्वेद्रव्यने त्रिलक्षणयोग समर्थिउ एजअभिप्रायें संमति ग्रंथमां एभावभाष्योछे जेसंघयणादिक भवभावथीसीजतां मोक्षसमयें केवलज्ञानजाय भवस्थ केवलज्ञानपर्यायें नाशथाय एअर्थतोसिद्धपणे सिद्धकेवलज्ञानपणे उपजे तेहीजकेवलज्ञानपणे भावेंछे ध्रुवछे एमोक्षगमनसमयजे व्ययउत्पत्तिथया ततपरिणतसिद्धद्रव्यानुगमथी शिवमां मोक्षमां त्रणलक्षणहोय जेसंघयणाइया भवछकेवल विसेषपज्जाया ॥ तेसिज्झमाणसमए णहोइविगयंतउहोइ ॥ १ ॥ सद्धत्तणेणयपुणो उप्पणोएसअहपज्जाउ केवलभावंतुपडुच्च केवलंदाइअंसुत्ते ॥ २ ॥ एभावलेइने केवलनाणेदुवि-

हेपन्नते नवब्केवलनाणेय सिद्धकेवलनाणेय इत्यादिसूत्रें उपदेशले एत्रणलक्षण स्थूलव्यवहारनय सिद्धनेआव्युं पणसूक्ष्मनयनाव्युं केमके सूक्ष्मऋजुसूत्रादिकनय तेसमयसमयप्रतें उत्पादव्ययमानेले तेलेइने तथा द्रव्यार्थादेशनो अनुगमलेइने जेसिद्धकेवलज्ञानमां त्रैलक्षणकहियें तेजसूक्ष्मकहेवाय एमविचारीने पक्षांतरकहेले ॥१४॥१५॥

जेज्ञेयाकारेंपरिणमे ॥ ज्ञानादिकनिजपर्यायरें ॥ व्यतिरेकें
तेथीसिद्धने ॥ तियलक्षणइमपणआयरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानादिकके० केवलज्ञान केवलदर्शन तेपोतानापर्यायें ज्ञेयाकारेंके० वर्त्तमानादिक विषयाकारें परिणमे व्यतिरेकेंके० प्रतिक्षणेअन्योन्यपणे सिद्धनेपरिणमे तेथीपणत्रणलक्षणथाय तेआवीरीतेंजे प्रथमादिसमये वर्त्तमानाकारले तेहनो द्वितीयादिक्षणेनाश अतीताकारेंउत्पादआकारेंनावें अनेकेवलज्ञान केवलदर्शननावें अथवा केवलमात्रनावें ध्रुवले एमनावना करवी ॥ १६ ॥

इमजेपर्यायेंपरिणमे ॥ क्षणसंबंधेंपणनावरें ॥ तेथीतिय
लक्षणसंनवे ॥ नहीतोतेथायअनावरे ॥ जिन० ॥१७॥

अर्थ ॥ एमजेज्ञेय दृश्याकारसंबंधे केवलनेत्रैलक्षण कह्युं हवेनिराकारजे सम्यक्तवीर्यादिकनाव तेने तथा सिद्धादिक शुद्धद्रव्यने कालनासंबंधथी त्रैलक्षणदेखाडेले एमजेनाव क्षणसंबंधेपण पर्यायथीपरिणमे एप्रथमपदार्थः तेथीत्रणलक्षण संनवे जेम द्वितीयक्षणेनाव अने आद्यक्षणे संबंधपरिणामें नाशपाम्यो अनेद्वितीयक्षणे संबंधपरिणामे उपनो वलीक्षणसंबंधमात्रे ध्रुवले तेकालसंबंधथी त्रणलक्षणसंनवे नहीतो तेवस्तुनो अनावथयीजाय उत्पादव्यय ध्रुवयोग्यज नावलक्षणले अनेतेरहित जे शशविषाणादिक तेअनावरूपले ॥ १७ ॥

निजपरपर्यायेंएकदा ॥ बहुसंबंधेबहुरूपरे ॥ उत्पत्तिनाश
एमसंनवे ॥ नियमेंतिहांध्रौव्यसरूपरे ॥ जिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एमपोतानापर्यायें जीव तथापुद्गलने अनेपरपर्यायें आकाश अनेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायएत्रणद्रव्यने एककाले बहुके० घणासंबंधे बहुप्रकारें उत्पत्ति नाशसंनवे जेटलास्वपर्याय तेटला उत्पत्तिनाशहोय तेथी तिहांध्रौव्यस्वरूपपण तेटला निरधारले पूर्वापरपर्यानुगतआधारांशतावन्मात्रहोय तेवति अत्रसंमतिगाथा एगसमयंमीएग दवियस्सबहुआविहोंतिउ ॥ उप्पायसमाविगमा ठिईयउस्सग्गोणियमा ॥१८॥

द्विविधप्रयोगजवीससा ॥ उत्पादप्रथमअविशुद्धरे ॥ तेनियमें
समुदयवादनो ॥ यतनेंसंयोगजसिद्धरे ॥ जिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ उत्पाद द्विविधके० बेप्रकारेंछे एकप्रयोगज बीजोवीससाके० स्वन्नावजनित तेमांपहेलो उत्पादते व्यवहारनोछे तेमाटेअविशुद्धकहियें तेनिर्द्धार समुदयवादनो तथायलेकरी अवयवसंयोगें सिद्धकहियें अत्रसंमतिगाथा ॥ उप्पाउंदुविअप्पो पर्उगजणीउंअवीससाचेव ॥ तन्नयपउंगजणीउं ॥ समुदयवाउंअपरिसुद्धो ॥ १९ ॥

सहजेंथायतेवीससा ॥ समुदयएकत्वप्रकाररे ॥ समुदय
अचेतनखंधनो ॥ वलीसचित्तमिसनिरधाररे ॥ जिन० ॥२०॥

अर्थ ॥ जनेजे सहजें यत्नविनाउत्पादथाय तेविश्रसा उत्पादकहियें तेएकसमुदयजनित अनेबीजोएकत्विक उक्तंच साहाविउंविसमुदय कउंवएगत्तिउंव्होज्जाहिं ॥ जेसमुदयजनित विश्रसाउत्पाद तेअचेतनस्कंध अन्नादिकनो तथासचित्तमिश्रशरीरवर्णादिकनो निरधारजाणवो ॥ २० ॥

संयोगविनाएकत्वनो ॥ तेद्रव्यविन्नागेंसिध्दरे ॥ जिमखंध
विन्नागेंअणुपणुं ॥ वलीकर्मविन्नागेंसिध्दरे ॥ जिन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ संयोगविनाजे विश्रसाउत्पाद तेएकत्विकजाणवो तेद्रव्यविन्नागें सिद्धके० उत्पन्नजाणवो जेमद्विप्रदेशादिक स्कंधविन्नागें अणुपणुंके० परमाणुद्रव्यनो उत्पाद थाय तथाजेमजीवने कर्मविन्नागें सिद्धपर्यायनो उत्पादथाय अनेअवयवनासंयोगेंज द्रव्यनीउत्पत्तिहोय पणविन्नागेंनहोय एहवुंजे नैयायिकादिक कहेछे तेनेमतें एकत्वादिविन्नागें खंडपटोत्पत्तिकेमघटे प्रतिबंधकालन्नावसहित अवस्थित अवयवनासंयोगने हेतुताकल्पतां महागौरवहोय तेमाटेकिहांएकसंयोग किहांएकविन्नागें द्रव्योत्पादकमानवो तोविन्नागज परमाणुउत्पादपणे एपणअर्थसिद्धथयो एसंमतिमांसूचव्युंछे तडुक्तं दव्वंतरसंयोगाहि केइदवियस्सबिंतिउप्पायं ॥ उप्पायथ्थाकुशलाविन्नागजायणइथ्थंति॥१॥ अणुएहिंदव्वेआ रद्धेतिअणुअंतिववएसो ॥ तत्तोअपुणविन्नत्तो अणुत्तिजाउंअणुहोइ ॥

विणखंधहेतुसंयोगजे ॥ परसंयोगेंउत्पादरे ॥ वलीजेक्षिण
क्षिणपर्यायथी ॥ तेएकत्वजअविवादरे ॥ जिन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेमपरमाणुनो उत्पादएकत्वजछे तेमजजेनासंयोगें बंधनीपजेनही एहवो जे धर्मास्तिकायादिकनो जीवपुद्गलादिकना संयोग तद्द्वारें जेसंयुक्तें द्रव्योत्पादअसंयुक्ता अवस्थाविनाशपूर्वक तथाऋजुसूत्रनयाभिमतजे क्षणिक पर्याय तेप्रथमद्वितीयसमयादि द्रव्यव्यवहारहेतुतद्द्वारें जेउत्पाद तेसर्वेएकत्वउत्पाद अविवादपणेजाणवो इहांकोइविवादनथी ॥ २२ ॥

परप्रत्ययधर्मादिकतणो ॥ नियमेभांख्योउत्पादरे ॥ निजप्रत्यय
पणतेदिजकह्यो ॥ जाणीअंतरंगनयवादरे ॥ जिन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकनो उत्पाद ते नियमेंपरप्रत्यय स्वोपष्टन्यगत्यादिपरिणत जीवपुद्गलादिकना निमित्तेंजभाख्युंछे तेउभयजनित तथाएकजनितपणहोय ते माटेतेने निजप्रत्ययपणेकह्यो अंतरनयवाद के० निश्चेंव्यवहारजाणीने एअर्थ आगासाइअणंति न्हंपरपच्चउनियमा एसंमतिनीगाथामध्येअकारप्रश्लेषे वीजोअर्थ वृत्तिकारें कह्योछे तेअनुसरीने लख्योछे ॥ २३ ॥

द्विविधनाशपणजाणीयें ॥ एकरूपांतरपरिणामरे ॥ अर्थांतर
गमनभावनगमनवली ॥ बीजोप्रकारअभिरामरे ॥जिन०॥२४॥

अर्थ ॥ परिणामोह्यर्थांतरगमनंनचसर्वथाव्यवस्थानं ॥ नचसर्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टः॥ सत्पर्यायेणविनाशःप्रादुर्भावोसताचपर्ययतः॥ द्रव्याणांपरिणामःप्रोक्तः खलुपर्यवनयस्य एवचन संमति तथाप्रज्ञापनावृत्तिमां कह्युंछे कथंचित्सतरूपांतर पामे पणसर्वथाविणसेनही तेद्रव्यार्थकनयनो परिणामकह्यो पूर्वसत्पर्यायेंविणसेअने उत्तर असत्पर्यायेंउपजे तेपर्यायार्थिकनयनो परिणामकह्यो एअभिप्रायेंजोतां एकरूपांतरपरिणाम विनाशअनेएकअर्थांतरगमनविनाशएरीतेंविनाशना बेभेदजाणवा॥२४॥

अंधारानेउद्योतता ॥ रूपांतरनोपरिणामरे ॥ अणुनेअणु
अंतरसंक्रमे ॥ अर्थांतरगतिनोठामरे ॥ जिन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तिहांअंधारो अनेउद्योतता तेअवस्थित द्रव्यनो रूपांतरपरिणामें रूपनाशजाणवो अने अणुके० परमाणु तेजेवारेंअणुअंतरसंक्रमे तेवारें द्विप्रदेशादिकभाव थायछे तिहांपरमाणुपर्यायमूलगोटल्यो अनेस्कंधपर्यायउपनो तेणेकरीने अर्थांतरगति रूप नाशनो ठामजाणवो ॥ २५ ॥

अणुनेबेयद्यपिखंधता ॥ रूपांतरअणुसंबंधरे ॥ संयोग
विभागादिकथकी ॥ तोएणेएभेदप्रबंधरे ॥ जिन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि अणुनेअणुसंबंधे खंधताछे तेरूपांतर परिणामजछे तोपणसंयोगविभागादिकरूपें द्रव्यविनाश द्विविधनुंजछे एउपलक्षणजाणवुं केमके द्रव्योत्पादविभागेंज जेमपर्यायोत्पादविभागथाय तेमद्रव्यनाशविभागेंज पर्यायनाशविभागहोय तेसमुदयविभाग अनेअर्थांतरगमन एबेप्रकार व्यवहारियें पहेलोतंतुपर्यंत पटनाश अने वीजोघटोत्पत्तियें मृत्पिंडादिकनो नाश उक्तंचसंमतौ विगमस्सविएसविहा समुदयजाणीएमिसोउडुविअप्पो ॥ समुदयविभागमित्तं अत्थंतरभावगमणंच ॥ १ ॥ २६ ॥

ध्रुवभावथुलरुजुसूत्रनो ॥ पर्यायसमयअनुसाररे ॥ संग्रहनो
तेहत्रिकालनो ॥ निजद्रव्यजातिनिरधाररे ॥ जिन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ ध्रुवभावपण स्थूलतथासूक्ष्मभेदें बेप्रकारनोछे, तेमां पहेलो स्थूलते ऋजुसूत्रनयने अनुसारे मनुष्यादिकपर्याय समयप्रमाणजाणवो, अनेबीजो सूक्ष्मते संग्रहनयनेसम्मत तेत्रिकालव्यापकजाणवो पणजीवपुद्गलादिक निजद्रव्यजातीते जेमआत्मद्रव्यें गुणपर्यायतुं आत्मद्रव्यानुगमजध्रौव्य तेसामान्याधिकरणत्वे नान्वयानुगमज ध्रौव्य अनेपुद्गलद्रव्यें गुणपर्यायतुं पुद्गलद्रव्यानुगमज ध्रौव्य एमपोतपोतानी जातियें निरधारजाणवो ॥ २७ ॥

सविअर्थसमयमांभाषिया ॥ एमविधत्रिलक्षणशीलरे ॥ जे
भावेएहनीभावना ॥ तेपावेसुखजशलीलरे ॥ जिन० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें समयके० सिद्धांतमां सर्वअर्थविविधप्रकारें त्रिलक्षणके० उत्पादव्ययध्रौव्य, तत्शील तत्स्वभावभाष्याछे; माटेजेपुरुषपदार्थमां एत्रणलक्षणस्वभावनी भावनाभावे तेप्राणीविस्ताररुची सम्यक्त्व अवगाहीने अंतरंगसुख अने प्रभाविकपणानो यश तेनीलीलाप्रतेंपामे ॥ २८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

आजनहेजोरेदिसेनाहलो ॥ एदेशी ॥

भिन्नअभिन्नतिविहतियलक्षणो ॥ भाषिउइममेंअत्थ ॥ भेद
द्रव्यगुणपज्जवनाहवे ॥ भाषीजेंपरमत्थ ॥ १ ॥ समकित
सुधोरेइणीपरेंआदरो ॥ समकितविणसविधंध ॥ समकेत
विणजेरेहठमारगेंपरुया ॥ तेसविजातिरेअंध ॥ सम० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एरीते भिन्नतथाअभिन्न अनेत्रिविध त्रीयलक्षणे अछके० एकअर्थ ते एक पदार्थछे एवुंजेपहेलां बीजाढालमां द्वाररूपेंकह्युंहतुं तेमेंविस्तारीने आगलाढालेंकह्युं. हवेद्रव्यगुणपर्यायनाजे परमार्थेंभेदछे तेविस्तारीनेभाखुबुं ॥ १ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्याय परमार्थविचारीने विस्ताररुची सम्यक्त्वनेआदरो. जोकदाचित् तादृशधारणाशक्तिनहोय अने एद्रव्यगुणपर्यायनाजे विचार तेनेजभावथीसद्दहे, तथाज्ञानवंतनोरागीहोय, तेनेपणयोग्यतायें द्रव्यसम्यक्त्वहोय एवेप्रकारछे तेसम्यक्त्ववंतनी दानदयादिक तथाथोकीक्रिया तेपणसर्वसफलहोय. उक्तंच ॥ विंसेकायांदाणाइं आउएयं मिचेवसहलाउ ॥ हुंतिकिरियाउएआउ विहुजह्मामोक्खफलाउपराउअ ॥ १ ॥ मादेसम्यक्त्वविना तेसर्वक्रिया

धंधके० क्लेशरूपजाणवी, अनेसम्यक्त्वविनाजेअगीतार्थ तथाअगीतार्थनिश्रीत स्वस्वाभि निवेशें हठकदाग्रहमार्गे पड्याछे, तेसर्वेजातिअंधसरिखा जाणवा, तेजोरुडुंजाणीकरे तोपणन्नलुंनहोय ॥ उक्तंच ॥ सुंदरबुद्धीइकयं बहुअंपिणसुंदरंहोइ ॥ माटेद्रव्यगुणप- र्यायन्नेदपरिज्ञानेकरीने सूधुंसम्यक्त्वआदरो, एहितोपदेशछे ॥ २ ॥

धर्मअधर्मह्गगनसमयवली ॥ पुद्गलजीवजएह ॥ षट्द्रव्य
कह्यारेश्रीजिनशासने ॥ जासनआदिनछेह ॥ सम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ धर्मके० धर्मास्तिकाय अनेअधर्मके० अधर्मास्तिकाय तथागगनके० आका- शास्तिकाय तथासमयके० कालद्रव्य तथाअद्धासमय जेहनुं बीजुंनामछे वलीपुद्गलके० पुद्गलास्तिकाय अनेजीवके० जीवास्तिकाय ॥ एषट्द्रव्यश्रीजिनशासननेविषे कह्याछे, जेनोद्रव्यजाति तथापर्यायप्रवाहें आदितथा छेहके० अंतनथी, एछमध्ये एककालवर्जीने बाकीपांचद्रव्यतें अस्तिकायकहियें. अस्तयःप्रदेशास्तैः कायंतेशब्दायंते इतिव्युत्पत्तेः ॥ एरीतेंप्रदेशनोसंबंधछे, माटेअस्तिकायकहियें. अनेकालद्रव्यने प्रदेशसंघातनथीमाटे अस्तिकायनकहियें, केमके जे एकसमयते बीजासमयने मिलेनहीमाटे. एमबीजापण धर्माधर्माकाशाद्येकैकमतःपरंत्रिकमनंतंकालंविनास्तिकाया जीवमृतेचाप्यकर्तॄणि इत्या- दिकसाधर्म्य वैधर्म्यप्रशमरत्यादिक महाग्रंथथी जाणवुं ॥ ३ ॥

गतिपरिणामीरेपुद्गलजीवने ॥ झषनेजलजेमहोय ॥ तासअ
पेक्षारेकारणलोकमां ॥ धरमद्रव्यछेरेसोय ॥ सम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथम धर्मास्तिकायद्रव्यनुं लक्षणकहेछे. गतिपरिणामीजे पुद्गल तथा जीवद्रव्य ते लोकके० चतुर्दशरज्ज्वात्मक आकाशखंडतेमांछे तेनुंजेअपेक्षाकारण परि- णामव्यापाररहित अधिकरणरूप उदासीनताकारण जेमगगनादि क्रियापरिणत झष के० मत्स्यतेनेजेम जलअपेक्षाकारणछे तेहनीपरेंअपेक्षाकारणते धर्मास्तिकाय द्रव्य जाणवुं, स्थलेझषक्रिया व्याकुलतयाचेष्टाहेत्विष्ठान्नावादेव नन्नवति ननुजलान्नावादिति गत्यपेक्षाकारणेमानान्नाव इतिचेन्न ॥ अन्वयव्यतिरेकाभ्यांलोकसिद्धव्यवहारादेवतद्धेतु सिद्धेरन्यथांत्यकारणेनेतराखिलकारणान्यथासिद्धिप्रसंगादितिदिग् ॥ ४ ॥

थितिपरिणामीरेपुद्गलजीवनी ॥ थितिनोहेतुअधर्म ॥ सवि
साधारणगतिथितिहेतुता ॥ दोयद्रव्यनोरेधर्म ॥ सम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेअधर्मास्तिकायद्रव्यनुं लक्षणकहेछे. तेस्थितिपरिणामीजेपुद्गल तथाजी- वद्रव्य तेहनीस्थितिनोहेतुके० अपेक्षाकारणजेद्रव्य तेअधर्मास्तिकायजाणवुं. गतिस्थि-

तिपरिणत सर्वद्रव्यनुंजे एकद्रव्यलाघवें कारणसिद्धहोय तेएवेद्रव्यजाणवा, तेथी ज खादिगत्यपेक्षाकारण जलादिद्रव्यनेविषे धर्मास्तिकायादिक द्रव्यलक्षणनी अति व्याप्तिनहोय एमगतितथास्थितिना हेतुतानोधर्म सर्वसाधारणपणें वेहुद्रव्यनोछे ॥ ५ ॥

सहेजऊर्ध्वगतिगामीमुक्तने ॥ विनाधर्मप्रतिबंध ॥ गगनेअ-
नंतेरेकहीयेंनविटले ॥ फिरवारसनोरेधंध ॥ सम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेधर्मास्तिकायनेविषें प्रमाणकहेछे. जोगतिनेविषे धर्मास्तिकायनो प्रतिबंधके० नियमनहोय तोसहज ऊर्ध्वगतिगामीजे मुक्तके० सिद्धजीव तेएकसमयें लोकाग्रेंजाय. एहवेंस्वभावें अनंतगगनेजता हजीलगें फिरवानारसनो धंधटलेनही, केमके अनंतालोकाकाशप्रमाणें एक अलोकाकाशछे, तेमांलोकाकाशने गतिहेतुपणुंछे, तेथीअलोकमां सिद्धगतिनहोयएमतो कहुंजायनही,पणधर्मास्तिकायविना लोकाकाश व्यवस्थाजनहोय धर्मास्तिकायविशिष्टाकाशएवहि लोकाकाशस्तस्यच गतिहेतुत्वेघटादावपि दंडविशिष्टाकाशसत्वेनैवहेतुतास्यादितिनकिंचिदेतत् बीजुंअन्यस्वभावपणे कल्पितआकाशने स्वभावांतर कल्पनाते अयुक्तछे ॥ माटेगतिनिबंधप्रमुख धर्मास्तियकाद्रव्य अवश्यमानवुं

जोथितिहेतुअधर्मनभाषीये ॥ तोनित्यथितिकोइठाण ? ॥ गतिवि
णहोवेरेपुद्गलजंतुनी ॥ संभालोजिनवाण ॥ सम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे अधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणदेखाडेछे. जोसर्वजीवपुद्गलने साधारण थितिहेतुत्व अधर्मास्तिकायद्रव्य नकहियेंतो किंतुधर्मास्तिकायाभावप्रयुक्त गत्यभावे आलोकेस्थित्यभाव एमकहियेंतो अलोकाकाशें कोइकस्थाने गतिविना पुद्गलजीवद्रव्यनी नित्यस्थितिपामिजोइयें. बीजुंगतिस्थिति स्वतंत्र पर्यायरूपछे, जेमगुरुत्व लघुत्व एकने एकाभावरूप कहेतां विशेषग्राहक प्रमाणनथी, तेमाटेकार्यभेदें अपेक्षाकारण द्रव्यभेद अवश्यमानवो. धर्मास्तिकायाभावप्रयुक्तगत्यभावें स्थित्यभावकही,अधर्मास्तिकाये अपलपियें,तो अधर्मास्तिकायाभावप्रयुक्त स्थित्यभावेगत्यभावकही धर्मास्तिकायनोपण अपलापथाय, जेमनिरंतर गतिस्वभावें द्रव्यनकहेवोजोइयें तोनिरंतर स्थितिस्वभावेंपण केमकहीयें ? तेमाटेश्रीजिनवाणीनो परमार्थ सांभलीने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय एवेद्रव्य असंकीर्णस्वभावेमानवा ॥ ७ ॥

सर्वद्रव्यनेरेजेदीयेसर्वदा ॥ साधारणअवकाश ॥ लोक
अलोकप्रकारेभाषिउं ॥ तेहद्रव्यआकाश ॥ सम० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे आकाशद्रव्यनुं लक्षणकहेछे. सर्वद्रव्यनेजे सर्वदासाधारण अवकाश-

आपे तेअनुगत एकआकाशास्तिकाय सर्वाधारकहिये, इहपक्षीतेहपक्षी इत्यादिव्यवहारयदेशनेदेंहोय तद्देशीअनुगतआकाशज पर्यवसन्नहोय, तद्देशोर्ध्वनागावच्छिन्नमूर्त्तानावादिनातद्व्यवहारोपपत्तिरिति वर्द्धमानाद्युक्तं॥नानवच्छतस्यानावादिनिष्ठत्वेनानुनूयमानद्रव्याधारांशापलापप्रसंगात्तावत्प्रतिसंधानेपि लोकव्यवहारेणाकाशदेशप्रतिसंधेयोक्तव्यवहाराच्च ॥ एमआकाश लोकालोकनेदें द्विविधनाष्युंछे. यतःसूत्रं डुविहेआगासेपन्नते,लोआगासेय अलोआगासेय ॥ ७ ॥

धर्मादिकसुंरेसंयुतलोकछे ॥ तासवियोगअलोक ॥ तेनिर
वधिछेरेअवधिअनावने ॥वलगीलागेरेफोक ॥ सम० ॥ए॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकथी संयुक्त जेआकाश तेलोकाकाशछे, अनेते धर्मास्तिकायादिकनो जिहांवियोगछे तेअलोकाकाशकहियें. तेअलोकाकाश निरवधिछे, एटले तेहनोछेहनथी. कोइएमकहेशेके जेमलोकनेपाशें अलोकनोछेहछे, तेमआगलपणहशे. तेहनेकहियेंजे, लोकतोनावरूपछे. ! तेमांतोअवधिघटेछे, पणआगल अलोकमां केवलअनावछे. मादेतिहां अलोकावधिपणुंकेमघटे ? शशशृंगकोणनो अवधिहोय ? अनेजोनावरूप आत्मामानियेंतो तेअन्यद्रव्यरूपनथी. आकाशदेशस्वरूपनेतो तदंतपणुंकहेतां वदतोव्याघातहोय मादेअलोकाकाश अनंतुंजाणवुं ॥ ए ॥

वत्तणलक्षणसर्वद्रव्यहतणो ॥ पजवद्रव्यनकाल ॥ द्रव्यअ
नंतनीरेद्रव्यअनेदथी ॥ उत्तराध्ययनेरेनाल ॥ सम० ॥१०॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यने लक्षणेकरीकहेछे. जेकालते परमार्थथीद्रव्यनथी, तोशुंसर्वेद्रव्यनो वर्त्तनालक्षण पर्यायजछे ! तेपर्यायनेविषे अनादिकालीन द्रव्योपचारअनुसरीने कालद्रव्यकहियें. अतएव पर्यायेंद्रव्यनेदथी अनंतकालद्रव्यनेदनीनाल तेश्रीउत्तराध्ययनेछे, तथाचतत्सूत्रं ॥ धम्मोआगासं दवंइक्किकमाहियं ॥ अणंताणिय दवाणि कालोपुग्गलजंतवो ॥ १ ॥ टीकाएतदुपजीव्यान्यत्राप्युक्तं धर्माधर्माकाशाद्येकैकमतः परंत्रिकमनंतमिति ॥ तेमादे जीव अजीवद्रव्यजेअनंतछे, तेहनीवर्त्तनापर्यायजणीज कालद्रव्य सूत्रनेविषे अनंतकह्याजाणवा ॥ १० ॥

जीवअजीवजसमयेंतेकह्युं ॥ तेणेकेमजुदोरेतेह ? ॥ एकवखा
णेरेआचारयइस्युं ॥ धरतांशुनमतिरेह ॥ सम० ॥११॥

अर्थ ॥ कंठथीपणसूत्रें जीवाजीवथी अनिन्न कालकह्योछे, तेदेखाडेछे. समयके०सूत्रें जराखेतेकालने जीव तथाअजीवरूपजकह्योछे.तेकारणे कालने जुदोके०निन्नद्रव्यरूप केम कहियें तथाचोक्तं जीवानिगमादिसूत्रे किमयंनंतेकालोत्तिपंच्चुचइ गोयमा जीवाचेव-

अजीवाचेवत्ती ॥ एकआचार्यतो सिद्धांतनापाठने अनुसारें शुभमतिनीरेखाधरतां काळद्रव्यने एरीतेंवखाणेछे ॥ ११ ॥

बीजाभांषेरेजोइसचक्रने ॥ चारेंजेथितितास ॥ काळअपे-
क्षारेकारणद्रव्यछे ॥ षट्नीभगवइभास ॥ सम० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तथाबीजाआचार्य एमभाषेछे जेज्योतिषचक्रनेचारें परत्वापरत्व नवपुराणादिभावस्थितिछे, तेहनुं अपेक्षाकारण मनुष्यलोकमां काळद्रव्यछे. अर्थनेविषे सूर्यक्रियोपनायक द्रव्यनुं चारके० फिरवुं तेक्षेत्रप्रमाणज कल्पवुंघटे, माटेएहवुंकाळद्रव्यकहियें तोज श्रीभगवतीसूत्रमां ॥ कइणंभंतेदव्वापन्नत्ता, गोयमा, छविहादव्वपन्नत्ता धम्मत्थीकाए जाव अद्धासमए ॥ एवचनछे तोतेनुंनिरुपचरितज व्याख्यानघटे अनेकाळद्रव्यवर्त्तनापर्यायने साधारणापेक्षा द्रव्यनकहियेंतो गतिस्थित्यवगाहनासाधारणपेक्षा कारणपणे धर्माधर्माकाशास्तिकाय सिद्धथया तिहांपण अनाश्वासआवे माटेएअर्थयुक्तिग्राह्यछे तेथीकेवलआज्ञायें ग्राह्यकह्युं पणतेथीकेमसंतोषधराय ? ॥ १२ ॥

धर्म्मसंग्रहणीरेएदोयमतकह्या ॥ तत्त्वार्थमांरेजाण ॥ अनपे
क्षितद्रव्यार्थिकनयमतें ॥ बीजुंतासवखाण ॥ सम० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ एबेमत धर्मसंग्रहणीग्रंथमां श्रीहरिभद्रसूरियें कह्याछे, तथाचतद्गाथा ॥ जंवत्तणाइरूवो कालोदव्वस्सचेवपज्जाउ ॥ सोचेवतत्तोधम्मो कालस्सवजस्सजोलोएत्ति ॥ १ ॥ तथातत्त्वार्थसूत्रेंपण एबेमतकह्याछे ॥ कालश्चेत्येके इतिवचनात् ॥ बीजुंमतते तत्त्वार्थनेव्याख्याने, अनपेक्षित, द्रव्यार्थनयनेमतें कह्युंछे. स्थूललोकव्यवहारसिद्ध एकाळद्रव्य अपेक्षारहितजाणवुं. अन्यथा वर्त्तनापेक्षाकारणपणेजोकाळद्रव्य साधियें, पूर्वापरादि व्यवहारविलक्षण परत्वापरत्वादि नियामकपणे दिग्द्रव्यपणे सिद्धथाय अनेजो ॥ आकाशमवगाहाय तदनन्यादिगन्यथा ॥ तावप्येवमनुछेदात्ताभ्यां चान्यदुदाहृतं ॥ एसिद्धसेनदिवाकरकृतनिश्चयद्वात्रिंशिकार्थविचारी ने आकाशथीज दि कार्यसिद्धहोय, एममानीयेंतोकाळद्रव्यकार्यपणेकथंचित्तेहथीज उपपन्नहोय. तस्मात्कालश्चेत्येकेइतिसूत्रंअनपेक्षितद्रव्यार्थिकनयें नैवेतिसूक्ष्मदृष्ट्याविभावनीयं ॥ १३ ॥

मंदगतेंअणुथावतसंचरे ॥ नहप्रदेशएकेठोर ॥ तेहसमय
नोरेभाजनकाळाणुं ॥ इमभांषेकोइउर ॥ सम० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवेकाळद्रव्याधिकारें दिगंबरप्रक्रिया उपन्यासेछे, जेएकनभप्रदेशने ठोरके० मंदगति अणुके० परमाणुजेटलेंकाळें संचरे तेपर्यायनेसमयकहियें. तदनुरूपते

कालपर्यायसमयनुं जेभाजन तेकालाणु कहियें. तेएकेक आकाशप्रदेशें एकेकपरमाणु, एमकरतां लोकाकाशप्रदेशप्रमाण कालाणुहोय, एरीतें कोइक उंर के० जैनाभास दिगंबरभाषेछे उक्तंचद्रव्यसंग्रहे ॥ रयणाणंरासीइव तेकालाणुअसंखदव्वाणि ॥१४॥

योगशास्त्रनारेअंतरश्लोकमां ॥ एपणमतछेरेइष्ट ॥ लोक
प्रदेशेंरेअणुआजूजुआ॥मुख्यकालेंतिहांदिठ॥सम०॥१५॥

अर्थ ॥ ते योगशास्त्रना अंतरश्लोकमां एदिगंबरमतपणइष्टछे केमके तेश्लोकमां लोकप्रदेशें जूजूआ कालनाअणुआ तेनेमुख्यकालकह्योछे तथाचतत्पाठः॥लोकाकाशप्रदेशस्था भिन्नाकालाणवस्तुये ॥ भावानांपरिवर्त्ताये मुख्यकालःसउच्यते ॥ १५ ॥

प्रचयऊर्ध्वतारेएहनोसंभवे ॥ पूर्वअपरपर्याय ॥ तिर्यक्
प्रचयघटेनहीखंधनो ॥ विणप्रदेशसमुदाय ॥ सम०॥१६॥

अर्थ॥ एकालाणुद्रव्यनो ऊर्ध्वताप्रचयसंभवे, जेममृद्द्रव्यने स्थास, कोस, कुसूलादि पूर्वापरपर्यायछे, तेमएहने समयावलिप्रमुख पूर्वापरपर्यायछे, पणखंधनोप्रदेश समुदाय एकालद्रव्यनेनथी, माटे धर्मास्तिकायादिकनीपरें तिर्यक्प्रचयसंभवेनही. तेतिर्यक्प्रचयनथी, तेथीजकालद्रव्यने अस्तिकाय नकहियें. वलीएहने परमाणुपुद्गलनीपरें तिर्यक्प्रचय योग्यतापणनथी, माटेउपचारेंद्रव्यछे. तेथीपण कालद्रव्यने अस्तिकायपणुंनकहेवाय ॥ १६ ॥

एमअणुगतीनीरेलेशहेतुता ॥ धर्मद्रव्यअणुथाय ॥ साधार
णतारेलेशएकनी ॥ समयखंधपणथाय ॥ सम० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगंबरपक्ष प्रतिवादेंदुषेछे. एमजोमंदाणुगतिकार्यहेतु पर्यायसमयभाजन द्रव्यसमय अणुकल्पियेंतो मंदाणुगतिहेतुतारूप गुणभाजन तेधर्मास्तिकायाणुपण सिद्धहोय. एमअधर्मास्तिकायादिक अणुनोपण प्रसंगथाय, अनेजो सर्वसाधारण गतिहेतुतादिकलेश धर्मास्तिकायादिक एकस्कंधरूपज द्रव्यकल्पियें, देशप्रदेशनीकल्पना तेहनीव्यवहारानुरोधे पछीकरीएतो सर्वजीवाजीवद्रव्य साधारणवर्त्तना हेतुतागुणलेशने कालद्रव्यपण लोकप्रमाणे एककल्पवोजोइयें, धर्मास्तिकायादिकने अधिकारें साधारणगति हेतुताद्युपस्थितिकल्पकछे अनेकालद्रव्यकल्पकते मंदाणुवर्त्तना हेतुत्वोपस्थितिजछे, एकल्पनायेंतो अभिनिवेशविना बीजुंकोइकारण दिगंबरीयोमांजणातुंनथी

अप्रदेशतारेसूत्रेंअनुसरी ॥ जोअणुकहियेंरेतेह ॥ तोप
र्यायवचनथीजोडीयें ॥ उपचारेंसवीएह ॥ सम० ॥ १८॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेशोजे सूत्रेंकालप्रदेशकह्योछे तेहनेअनुसारें कालाणुकहियें तोसर्वजीवाजीवनापर्यायरूपजकालकह्योछे तेमांविरोधनथी तोद्रव्यकालपण केमकह्योछो माटेकालने द्रव्यत्ववचन तथालोकाकाश प्रदेशप्रमाणअणुवचन एसर्व उपचारेंजोडीयें मुख्यवृत्तियेते पर्यायरूपकालज सूत्रसंमतछे, अतएव ॥ कालश्चेत्येके ॥ इहांएकवचनते सर्वसंमतत्वाभावसुचव्यो ॥ १८ ॥

पर्यायेजेमभाष्योद्रव्यनो ॥ संख्यारथउपचार ॥ अप्रदेश
तारेयोजनकारणें ॥ तेमअणुतानोरेसार ॥ सम० ॥१९॥

अर्थ ॥ हवे उपचारप्रकारज देखाडेछे ॥ षड्वेवद्रव्याणि ॥ एसंख्यापूरणनेअर्थे जेमपर्यायरूप कालनेविषे द्रव्यपणानोउपचार जगवत्यादिकनेविषे करियेंछैयें, तेमसूत्रे कालद्रव्यने अप्रदेशताकहियेंछैयें, तथाकालपरमाणुपण कह्याछे, तेयोजननेकारणे लोकाकाशप्रदेशस्थ पुद्गलाणुनेविषेज, योगशास्त्रनाअंतरश्लोकमां कालाणुनो उपचारकर्योछे, तेजाणवो. मुख्यकालइत्यस्यचानादिकालीनाप्रदेशत्वव्यवहारनियामकोपचारविषयइत्यर्थः ॥ अतएव मनुष्यक्षेत्रमात्रवृत्तिकालद्रव्यंयेवर्णयंतितेषामपिमनुष्यक्षेत्रावछिन्नाकाशादौकालद्रव्योपचारएवशरणमितिदिङ्मात्रमेतत् ॥ १९ ॥

वर्णगंधरसफासादिकगुणे ॥ लिखियेंपुद्गलनेद ॥ सहज
चेतनारेगुणवलीजाणियें॥जीवअरूपअवेद ॥ सम०॥२०॥

अर्थ ॥ हवेपुद्गल तथाजीवद्रव्य संक्षेपेकहेछे. जेवर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिकगुणे पुद्गलद्रव्यनो अन्यद्रव्यथीभेदलखियें, तेपुद्गलद्रव्य; अनेजीवद्रव्य— ते सहज चेतनागुणछे. तेलक्षणेजसर्व अचेतनद्रव्यथी भिन्नछे. ते व्यवहारनयथी रूप तथावेदसहितपणेछे अनेनिश्चयनयथी रूपतथावेदरहितछे. उक्तंच ॥ अरसमरूवरसगंध अवत्तचेयणागुणमसद्दं ॥ जाणअलिंगगहणं जीवमणीदिठसंठाणं ॥ १ ॥ २० ॥

एमएभांष्यारेसंखेपेंकरी ॥ द्रव्यतणाषट्नेद ॥ विस्तारेतेजा
णिश्रुतथकी ॥ सुजशलहोगतखेद ॥ सम० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एरीतें द्रव्यनासंक्षेपथी छभेदभांष्याछे. तेविस्तारें श्रुतके० सिद्धांतथकी जाणीने खेदरहितथका प्रवचनदाक्षिणपणानो सुजशके० सुबोध तेपामो ॥ २१ ॥

॥ सोवनगिरिभूषणत्रिसलानंदनए ॥ देशी ॥

॥ ढाल इग्यारमो ॥

हवेभेदगुणनाभाषीजे ॥ तिहांअस्तिताकहियेंजी ॥ सद्भूत
तावस्तुताजाति ॥ व्यक्तिरूपतालहियेंजी ॥ द्रव्यभावछ

व्यत्वप्रमाणे ॥ परिछेदजेरूपजी ॥ प्रमेयत्वआ
णागमसुधीम ॥ अगुरुलघुत्वरूपजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेगुणनाभेद सामान्यतंत्रप्रक्रियायें कहियेंछेयें. तिहां १ अस्तित्वगुणतेक हियें के जेहथी सद्भूततानो व्यवहारथाय. २ वस्तुत्वगुणतेकहियेंके जेहथी जातिव्यक्ति रूपपणुं जाणियें. जेमघटतेहिज सामान्यथी जातिरूपछे अनेविशेषथी तद्व्यक्तिरू पछे. अतएव अवग्रहें सामान्यरूप सर्वत्रभासेछे, अपायें विशेषरूप भासेंछे, पूर्णोपयोगें संपूर्णवस्तुग्रहणथायछे. तथा ३ द्रव्यभावजे गुणपर्यायाधारताभिव्यंग्यजातिविशेषते द्रव्यत्वएजातिरूपछे माटेगुणनहोय एहवीनैयायिकादिवासनायें आशंका करवीनही, केमके ॥ सहभुवोगुणाः क्रमभुवःपर्यायाः॥ एहवीजजैनशास्त्रनी व्यवस्थाछे ॥द्रव्यत्वंचेद्गुणः स्याद्रूपादिवदुत्कर्षापकर्षभागिस्यादितितुकुचोद्यमेकत्वादिसंख्यायां परमतेपि व्यभिचा रेण तथाव्याप्त्यभावादेवनिरसनीयं. ४ प्रमाणेपरिछेद्यजे रूपप्रमाण विषयत्व ते प्रमे- यत्व गुणकहियें, तेपणकथंचित् अनुगत सर्वसाधारणगुणछे. परंपरासंबंधें प्रमाणत्वज्ञाने- पण प्रमेयत्व व्यवहारथायछे, तेमाटेजे प्रमेयत्वगुणते स्वरूपथीअनुगतछे ५ अगुरुलघुत्वगु ण ते सूक्ष्मआज्ञाग्राहीछे ॥ सूक्ष्मंजिनोदितंतत्त्वं हेतुभि नैवहन्यते ॥ आज्ञासिद्धंतुतद्ग्राह्यं नान्यथावादिनोजिनाः ॥ अगुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मा अवाग्गोचराः ॥ १ ॥

प्रदेशत्वअविभागीपुद्गल ॥ खेत्रभावजेव्यापिउंजी ॥ चेत
नताअनुभूतिअचेतन ॥ भावअननुभवथापिउंजी ॥ मूर
ततारूपादिकसंगति ॥ अमूर्त्ततातदभावोजी ॥ दशसा
मान्यगुणाप्रत्येकें ॥ आठआठएभावोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ६ जेअविभागीपुद्गल यावत्खेत्रेंरहे तावत्खेत्रव्यापीपणुं तेप्रदेशत्वनामा छठोगुणजाणवो. ७ चैतन्यत्वगुण तेआत्मानो अनुभवरूप गुणकहियें जेसुखदुः खादिचिंतवियें एव्यवहारथायछे, जेहथीजाति, वृद्धि, भग्न, क्षत, संरोहणादि जीवन धर्महोयछे ८ एथीविपरीत जेअचेतनत्वगुण तेअजीवमात्रनो गुणछे ए मूर्त्तागुणते रूपादिक सन्निवेशाभिव्यंग्यपुद्गलद्रव्यमात्रवृत्तिछे. १० अमूर्त्तत्वागुणमूर्त्तत्वाभावस मनियतछे ॥ अचेतनत्वामूर्त्तत्वयोश्चेतनत्वमूर्त्तत्वाभावरूपत्वान्नगुणत्वमितिनाशंकनीयंअ- चेतनामूर्त्तद्रव्यवृत्तिकार्यजनकतावछेदकत्वेनव्यवहारविशेषनियामकत्वेनचतयोरपि पृ- थग्गुणत्वात् नञ् पर्युदासार्थकत्वात् नञ्गर्भपदवाच्यतायाश्चानुष्णाशीतस्पर्श इत्यादौ व्यभिचारेणपरेणपरेषामप्यभावत्वानियामकत्वाद्भावांतरमभावोहि कयाचित्तु व्यपेक्षये

तिनयाश्रयणेनदोषाभावाच्च ॥ एदशसामान्यगुणछे. तेमां १ मूर्त्तत्व २ अमूर्त्तत्व ३ चेतनत्व ४ अचेतनत्व, एचारगुणते द्रव्योनेविषे परस्परपरिहारें बेबेगुण रहे, तेमाटे प्रत्येकें एकएकद्रव्यनेविषे आठआठगुणपामियें, एमविचारीनेभावो ॥ २ ॥

ज्ञानदृष्टिसुखवीर्यफरसरस ॥ गंधवर्णएजाणोजी ॥ गति
थितिअवगाहनावर्त्तना ॥ हेतुभावमनआणोजी ॥ चेत
नादिचारेभेला ॥ विशेषगुणएसोलेंजी ॥ षट्पुग्गलआत
मनेतिनह ॥ अन्यद्रव्यनेटोलेंजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ १ ज्ञान २ दर्शन ३ सुख ४ वीर्य, एचारआत्मानागुणछे. १ स्पर्श २ रस ३ गंध ४ वर्ण, एचारपुग्गलना विशेषगुण. शुद्धद्रव्यें अविकृतरूप अविशिष्टरहे, तेमाटेएगुणकह्या, विकृतस्वरूपते पर्यायमांभिले एविशेषजाणवुं. १ गतिहेतुता २ स्थितिहेतुता ३ अवगाहनाहेतुता ४ वर्त्तनाहेतुता. एचारगुणतेधर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अनेआकाशास्तिकाय, तथाकालद्रव्यना प्रत्येकेंप्रत्येकेंविशेषगुण जाणवा. एरीतेंबारगुणथया, तेमां १ चेतनत्व २ अचेतनत्व ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व एचारगुणभेलीयें, तेवारें सोलविशेषगुणथाय; तेमध्ये पुग्गलद्रव्यने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मूर्त्तत्व, अचेतनत्व, एछगुणहोय, अनेआत्मद्रव्यने ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, अमूर्त्तत्व, चेतनत्व, एछगुणहोय. बीजांसर्वद्रव्यने टोलेके० समुदाय त्रणगुणहोय; एकपोतानो अचेतनत्वगुण, बीजोअमूर्त्तत्व, त्रीजोगतिस्थित्यादि, एमफलावीनेधारवुं ॥ ३ ॥

चेतनतादिकचारस्वजाति ॥ गुणसामान्यकहायजी ॥ वि
शेषगुणपरजातिअपेक्षा ॥ ग्रहताचित्तसुहायजी ॥ विशेष
गुणछेसूत्रेंभाषिया ॥ बहुस्वभावआधारोजी ॥ अर्थतेह
किमगणिआजावे ॥ एहथूलव्यवहारोजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेचेतनत्वादि चारगुणते सामान्यगुणमां पणकह्या, अनेविशेषगुणमां पणकह्या, तेनुंकारणकहेछे. चेतनत्वादिचारगुण स्वजात्यपेक्षया अनुगत व्यवहारेंछे, तेथी सामान्यगुणकहियें, अनेपरजातिनी अपेक्षायें चेतनत्वादिक तेअचेतनत्वादिकद्रव्यथी स्वाश्रय व्यावृत्तिकरेछे, तेमाटे विशेषगुणकहियें ॥ परापरसामान्यवत्सामान्यविशेषगुणमेषामितिभावः॥तथाज्ञान,दर्शन,सुख,वीर्य,एचारआत्मविशेषगुणअनेस्पर्श,रस,गंध,वर्ण, एचार पुग्गलविशेषगुण एमजेकह्युं, तेस्थूलव्यवहारजाणवो. जेमके अष्टौसिद्धगुणाःतथा एकत्रिंशत्सिद्धादिगुणाः एकगुणकालकादयः पुग्गलाअनंताः इत्यादिसूत्रार्थविचारणायें

विशेषगुण अनंताथाय,तेछद्मस्थकेमगणीशके?॥तस्माद्धर्मास्तिकायानां गतिस्थित्यवगाह-नावर्त्तनाहेतुत्वोपयोगग्रहणाख्याः षडेवास्तित्वादयः सामान्यगुणास्तुविवक्षयाअपरिमिताइत्येवन्यायं षण्णांलक्षणवतां लक्षणानिषडेवेतिहिकोनश्रद्दधाति ॥ नाणंचदंसणंचेव चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरियंउवउंगोय एवंजीवस्सलरकणं ॥ १ ॥ सदंधआरउज्जोय प-ज्ञावायातहेवय ॥ वण्णरसगंधफासा पुग्गलाणं तुलरकणं॥ २ ॥ इत्यादितुस्वज्ञावलक्ष-णयोरन्यो न्येनांतरीयकत्वप्रतिपादनायेत्यादिपंक्तिभैर्विचारणीयं ॥ ४ ॥

धर्म्मेअपेक्षायेंइहांअलगा ॥ स्वज्ञावगुणथीज्ञाख्याजी॥
निजनिजरूपमुख्यतालेइ ॥ स्वज्ञावगुणकरीदाख्याजी॥
अस्तिस्वज्ञावतिहांनिजरूपें ॥ ज्ञावरूपतादेखोजी ॥ परअ
ज्ञावपरेंनिजज्ञावेंपण ॥ अरथअनुज्ञवलेखोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुवृत्तिव्यावृत्तिसंबंधें धर्ममात्रनी विवक्षाकरीने इहांस्वज्ञावनेगुणथकी अ-लगा के०जूदा पंडितेंज्ञाख्याछे, तेद्रव्यना निजनिजके० आपआपणारूपनी मुख्यतालेइने, अनुवृत्तिसंबंधमात्र अनुसरीने,जेस्वज्ञावछे तेनेजगुणकरीने, दाख्याके०देखाड्याछे. माटे गुणविज्ञागकहिने स्वज्ञावविज्ञाग कहियेंछेयें. तिहांप्रथम अस्तित्वज्ञावते निजरूपें ए-टलेस्वद्रव्य, स्वखेत्र, सकाल, सज्ञाव स्वरूपें ज्ञावरूपतादेखो. जेमपरज्ञावें नास्तित्वज्ञाव अनुज्ञवियेंछैयें, तेमनिजज्ञावें अस्तित्वज्ञावपण अनुज्ञवियें छैयें. तेमाटे अस्तिज्ञाव तेलेखेछे. एप्रथम अस्तिज्ञावकह्यो ॥ ५ ॥

नहीतोसकलशून्यताहोवे ॥ नास्तिस्वज्ञावपरज्ञावेंजी ॥
परज्ञावेंपणसत्ताकहेता ॥ एकरूपसविपावेजी ॥ सत्ताजे
मअसत्तानफुरे ॥ व्यंजकअमिलनवसथीजी ॥ छतोसरा
वगंधनवीज्ञासे ॥ जेमविसनीरफरशथीजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तिस्वज्ञाव द्रव्यनेविषे नमानीयेंतो, परज्ञावापेक्षायें जेमनास्तिता, तेमस्वज्ञावापेक्षायेंपण नास्तिताथातां, सर्वशून्यताथइजाय, तेमाटेस्वद्रव्याद्यपेक्षायेंअ-स्तिस्वज्ञाव सर्वथामानवो, एप्रथमगुण. अनेपरज्ञावेंके०परद्रव्याद्यपेक्षायें नास्तिस्वज्ञा वकहियें. परज्ञावेंपण सत्ता,अस्तिस्वज्ञावकहेतां सर्वस्वरूपें अस्तिथयुं, तेवारें जगत्एक रूपथाय, तेतोसर्वशास्त्र व्यवहारविरुद्धछे,माटेपरापेक्षायें नास्तिस्वज्ञाव छे. जेसत्तातेस्व-ज्ञावें वस्तुमांहेजजणायछे, माटेसत्यछे,जे असत्तातेस्वज्ञाने परमुखनिरीक्षणकरेछे. तेथी कल्पना ज्ञानविषयपणे असत्यछे,एहवुं बौद्धमतछे, तेनेखंडवानेकहेछे,जेसत्तानीपरें त-

रकाल असत्ताजेनथीस्फुरति, तेव्यंजक अणमिल्यावशथी जाणवी, पण शुन्यपणाथी, तुछपणाथकीनही, जेमछतुं माटीनुं सरावके० घटछे, तेहनोजेगंधते नीरके० पाणीना स्पर्शविना जणायनही,एतावता असत्यनथी. केटलाएकवस्तुनागुण स्वभावेंजजणायछे, अनेकेटलाक प्रतिनियत व्यंजननाव्यंग्यछे,एवस्तुमांवैचित्र्यछे,पण एकेनीतुछताकहियें,तो घणोव्यवहार विलोपाय॥ उक्तंचास्माभिर्भाषारहस्यप्रकरणे,तेहुंतिपरावेक्खा वंजयमुहदंसिणोत्तिणयतुछा ॥ दिठमिणंवेचित्तं सरावकपूरगंधाणंति॥ ६ ॥

निजनानापर्यायेंतेहज ॥ द्रव्यएहएमकहियेंजी ॥ नित्यस्वभा
वअनित्यस्वभावें ॥ पज्जयपरणतिलहियेंजी ॥ छतिवस्तुनेरू
पांतरथी ॥ नाशेद्विधाभासेजी ॥ विशेषनेसामान्यरूपथी ॥
स्थूलअंतरनाशेजी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ निजके० पोतानाजे क्रमभावी नानाप्रकारनापर्याय श्यामत्व, रक्तत्वादिकते भेदकछेतेछतां पणएद्रव्यतेहिज जेपूर्वेंअनुभव्युंहतु, एवुंज्ञानजेहथीथायछेतेनित्यस्वभाव कहियें॥तद्भावाव्ययंनित्यमितिसूत्रं॥प्रध्वंसाप्रतियोगित्वंनित्यत्वमित्यस्याप्यत्रैवपर्यवसानं केनचिद्रूपेणैवतल्लक्षणव्यवस्थितेः॥एनित्यस्वभावत्रीजोथयो. अने अनित्यस्वभावते पर्यायनीपरिणतिलेइयें, जेरूपेंउत्पादव्ययछे, तेरूपेंअनित्यस्वभावछे. जेमछतिवस्तुनुं रुपांतरथीपर्यायविशेषथीनाशछे,तेथीकरीएद्विधा,आरूपेंनित्य,आरूपेंअनित्यएवेचित्र्यभासेछे,विशेषअनेसामान्यरूपथी अनित्यता,जेमघटनाशें पणमृद्द्रव्यानुवृत्ति तथासामान्येमृदादिकने पण स्थूलार्थांतर घटादिकनाशेंअनित्यताछे,नेघटरूपेणमृन्नष्टेतिप्रतीतेः॥७॥

जोनित्यतानछेतोअन्वय ॥ विनानकार्यहोवेजी ॥ कारज
कालेंअछतुंकारण ॥ परिणतिरूपविगोवेजी ॥ अनित्य
ताजोनहीसर्वथा ॥ अर्थक्रियातोनघटेजी॥ दलनीकारय
रूपपरिणति ॥ अनुत्पन्नतोविघटेजी॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जोनित्यता द्रव्यनेविषेनथी,अनेएकांतक्षणिकज स्वलक्षणछे, तोकारणना अन्वयविना कार्यनीपजेनही. केमके कारणक्षण कार्यक्षणोत्पत्तिकालें निर्हेतुक नाश अनुभवतो अछतोछे, तेकार्यक्षण परिणतिकेमकरे ? अछतोयेंकारणक्षण कार्यक्षणकरेंतो चिरनष्टकारणथी अथवाअनुत्पन्नकारणथी कार्यनीपजुंजोइयें एमतोकार्य कारणभावनी विडंबनाथाय. अव्यवहितजेकारणक्षण कार्यक्षणकरे, एमकहियेंतो, रूपालोक मनस्कारादिक्षण रूपादिकनेविषें उपादानआलोकादिकनेविषे निमित्त ए व्यवस्थाकेम-

घटे ? केमके अन्वयविना शक्तिमात्रें उपादानता निमित्तमांहेपण कहि शकीयें; माटेजेउपादानते अन्वयीमानवुं, अनेअन्वयीपणुं तेहीज नित्यस्वभावहोय. हवेजोसर्वथा नित्यस्वभावज मानीयें, अनेअनित्यस्वभाव सर्वथानमानियेंतो, अर्थक्रियाघटेनही, केमके दलनेकारणेंअने कार्यरूपता परिणतिकथंचित् उत्पन्नपणुंजआव्युं, अनेसर्वथा अनुत्पन्नपणुं विघटीजाय, अनेजोएमकहियें, केजेकारण ते नित्यजछे, तथा तद्वृत्तिकार्य तेअनित्यजछे, तोकार्यकारणने अभेदसंबंधकेमघटे ? भेदसंबंधमाने तो तत्संबंधांतरादि गवेषणायें अनवस्थाथाय.तेमाटे कथंचित् अनित्यस्वभावपण मानवो॥७॥

स्वभावनेएकाधारत्वें ॥ एकस्वभावविलाशोजी ॥ अनेक
द्रव्यप्रवाहएहने ॥ अनेकस्वभावप्रकाशोजी ॥ विणएक
ताविशेषनविलहीयें ॥ सामान्यनेअभावेंजी ॥ अनेकत्व
विणसत्तानघटे ॥ तेमजविशेषअभावेंजी ॥ ए ॥

अर्थ ॥ स्वभावके० सहभावीधर्म, तेहनेआधारत्वें एकस्वभाव. जेमरूप,रस,गंध,स्पर्शनो आधार घटादिएककहियें, तेमनानाप्रकारना धर्माधारत्वें एकस्वभावता, नाना क्षणानुगतत्वे नित्यस्वभावता, एविशेषजाणवो; एपांचमोएकस्वभावजाणवो. हवे मृदादिद्रव्यनो स्थास, कोस, कुशूलादिक अनेकद्रव्य प्रवाहछे. तेथीअनेकस्वभाव प्रकाशियें, पर्यायपणेआदिष्ट द्रव्यकरियें, तेवारें आकाशादिकद्रव्यमांपण घटाकाशादिकभेदें एस्वभाव दुर्लभनथाय, एछठो अनित्यस्वभावकह्यो. हवेएकस्वभावविना सामान्यनो अभावथाय, माटेविशेष नपामियें, माटेविशेषाभावें अनेकस्वभावविना मूलसत्तापण घटेनही, तेमाटे एकानेक एबेहुस्वभावमान्याजोइयें ॥ ए ॥

गुणगुणीनेसंज्ञासंख्यादिक॥भेदेंभेदस्वभावोजी॥ अभे
दवृत्तिसुलक्षणधारी ॥ होयेंअभेदस्वभावोजी ॥ भेद
विनाएकत्वसर्वने ॥ तेणेव्यवहारविरोधोजी ॥ विण
अभेदकेमनिराधारनो ॥ गुणपजवनोबोधोजी ॥ १० ॥

अर्थ ॥ गुणगुणीने,पर्यायपर्यायीने, कारककारकीने, संज्ञा, संख्या, तथालक्षणादिक भेदेंकरीनेसातमो पण भेदस्वभाव जाणवो, अने अभेदनीजेवृत्ति ते लक्षणवंतआठमो अभेदस्वभाव जाणवो. हवेजोद्रव्यनेविषे भेदस्वभाव नमानीयेंतो, सर्वद्रव्यगुणपर्यायने एकपणुंथाय, तेथीकरी, " इदंद्रव्यं अयंगुणः अयंपर्यायः " एव्यवहारनो विरोधथाय अने जो अभेदस्वभाव नकहियेंतो, निःकेवल निराधार गुणपर्यायनो बोधथ-

वोजोइयेंनही, केमके आधाराधेयनो अभेदविना बीजोसंबंध घटेजनही. अत्र प्रवचनसारोद्धारनीगाथा ॥ पविभत्तपदेशत्त पुधत्तमितिसासणंहिवीरस्स ॥ अन्नत्तमतभावो एतप्नवंभवदिकधमेगति ॥ १० ॥

शक्तिअवस्थितनिजरूपांतर ॥ भवनेभव्यस्वभावोजी ॥
त्रिहुंकालेमिलतापरभावें॥अभव्यनअभव्यस्वभावोजी॥
शून्यभावपणभव्यस्वभावें ॥ कूटकार्यनेयोगेंजी ॥ अभ
व्यभावेविणद्रव्यांतरता ॥ थायेद्रव्यसंयोगेंजी ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ अनेककार्य--कारणशक्तिकजे अवस्थितद्रव्यछे, तेहने क्रमिकविशेषता आविर्भावें अतिव्यंग्यते नवमोभव्यस्वभाव कहियें. त्रिहुंकालें परद्रव्यमांमिलतांपण परस्वभावें नपरिणमवुं, तेदशमोअभव्यस्वभावकहियें ॥ अन्नोन्नंपविसंता देताउगासमण मणस्स ॥ मेलंताविदणीचं सगसगभावंणविजहंति ॥ १ ॥ हवेभव्यस्वभावविना कूटके० खोटाकार्यनेयोगें शून्यपणुंथाय. परभावेंनहोय अनेस्वभावेंहोय तेवारेंभव्यहोय, अनेतेजो परभावेपणनहोय अने स्वभावेपणनहोय तेवारें होयजनही, ए वुंथयुं, तथाजोअभव्यस्वभाव नमानीयेंतो, द्रव्यनेसंयोगें द्रव्यांतरपणुं थवुंजोइयें, केमके धर्माधर्मादिकने जीवपुद्गलादिकने एकावगाहनावगाढ कारणें कार्यसंकर अभव्यस्वभावेज नथाय, तत्तद्रव्यने तत्कार्यहेतुता कल्पनपणे अभव्यत्वस्वभाव गर्भजछे. ॥ आत्मादेःस्ववृत्त्यनंतकार्यजननशक्तिर्भव्यतातत्तत्सहकारिसमवधानेनतत्तत्कार्योपधायकताशक्तिश्च तथाभव्यतेति तथाभव्यतयैवनातिप्रसंगइतितु हरिभद्राचार्याः ॥ ११ ॥

परमभावपरिणामिकभाव ॥ प्रधानेंतायलीजेजी ॥ एवि
णमुख्यरूपकेमद्रव्यें॥प्रसिद्धरीतेंदीजेजी॥ एसामान्यस्व
भावइग्यारह ॥ सकलद्रव्यनेधारोजी ॥ आगमअर्थ
विचारीनेजग ॥ सुजशवादविस्तारोजी ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ लक्षणीभूत पारिणामिकभाव प्रधानतायें परमभावस्वभावकहियें. जेमज्ञानस्वरूपआत्मा. एइग्यारमोभेदथयो. जोपरमभाव स्वभावनकहियें, तोद्रव्यनेविषेप्रसिद्ध रूप केमदेवाय?अनंतधर्मात्मकवस्तुने एकधर्मपुरुषकारें बोलावियें,तेहीज परमभावनुं लक्षणछे.एइग्यारसामान्यस्वभाव सर्वद्रव्यनेधारवा. एहवाआगमना अर्थविचारीने जगतूमां सुयशविस्तारो ॥ १२ ॥ हवेआगलाढालमांदशविशेषस्वभावकहेछे.

॥ ढाल बारमी ॥

॥ जीहोसंभवनामसोहामणोएदेशी ॥

जीहोचेतनभावतेचेतना ॥ लाला.उलटअचेतनभाव ॥ जीहोचेतनता विणजीवने ॥ लालाथाएकर्मअभाव ॥ चतुरनरधारोअर्थविचार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेहथी चेतनपणानो व्यवहारथाय,तेचेतनस्वभाव, अनेतेथीउलटो तेअचेतनस्वभाव. जोजीवने चेतनस्वभाव नकहियें,तोरागद्वेष चेतनारूपकारणविना ज्ञानावरणादिकर्मनो अभावथाय,उक्तंच॥स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य रेणुनाश्लिष्यतेयथा॥गात्रंरागद्वेषक्लिन्नस्य कर्मबंधोभवत्येव॥इति. माटेहेचतुरपुरुषोएरीतें अर्थविचारीनेधारो ॥१॥

जीहोजोचेतनतासर्वथा ॥ लालाविनाअचेतनभाव ॥ जीहोध्यान ध्येयगुरुशिष्यनी ॥ लालासीखपशुध्दस्वभाव ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जोजीवने सर्वथा चेतनस्वभावजकहियें अनेअचेतनस्वभावनकहियें तो अचेतनकर्मनो कर्मद्रव्योपश्लेष जनितचेतनाविकारविना शुद्धसिद्धसदृशपणुंथाय, तेवारें ध्यानध्येय तथा गुरुशिष्यनीशीखपतीपडे, एरीतेंसर्वशास्त्रव्यवहार फोकट थइजाय, शुद्धने अविद्यानिवृत्तिपणे स्योउपकारथाय ? तेमाटे॥अलवणायवागूरितिवत् ॥ अचेतनआत्मा एमपणकोइकरीतें कहियें ॥ २ ॥

जीहोमूर्त्तभावमूरतीधरे ॥ लालाउलटअमूर्त्तस्वभाव ॥ जीहोजोमूर्त्ततानजीवने ॥ लालातोसंसारअभाव ॥ चतु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ मूर्त्तिके० रूप,रस,गंध,स्पर्शादिसन्निवेशते जेहथीधरियें तेमूर्त्तस्वभावकहियें, अनेतेहथीजे विपरीत तेअमूर्त्तस्वभावजाणवो, जोजीवनें कोइकरीतें मूर्त्ततास्वभाव नहोयतो, शरीरादिसंबंधविना गत्यंतरसंक्रमविना संसारनो अभावथाय ॥ ३ ॥

जीहोअमूर्त्ततावीणसर्वथा ॥ लालामोक्षघटेनहीतास ॥ जीहो एकप्रदेशस्वभावता ॥ लालाअखंडबंधनिवास ॥ चतु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेजो लोकदृष्टव्यवहारें मूर्त्तस्वभावज आत्मानेमानीयें, तोमूर्त्ततेहेतुसहस्त्रेंपण अमूर्त्तनहोय; तेथीमोक्षघटेनही. माटेमूर्त्तसंचलितजीवनेपण अंतरंग अमूर्त्तस्वभावमानवो. वलीएकप्रदेशस्वभाव तेहनेंकहियेंजे एकत्वपरिणति अखंडाकार बंधके० सन्निवेश तेहनो निवासके० भाजनपणुं तेएकप्रदेशस्वभाव जाणवो ॥ ४ ॥

जीहोअनेकप्रदेशस्वभावता ॥ लालाभिन्नप्रदेशस्वभाव॥ जीहो जोनहीएकप्रदेशता ॥ लालाभेदहुएबहुभाव ॥ चतु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अने अनेकप्रदेशस्वभाव तेहनेकहियें जेभिन्नप्रदेशयोगें तथा भिन्नप्रदेश कल्पनायें अनेकप्रदेश व्यवहारयोग्यपणुंहोय. हवे जोएकप्रदेशस्वभाव नहोयतो, असंख्याता प्रदेशादियोगें बहुवचनप्रवृत्ति एकधर्मास्तिकायछे, तेमाटे एव्यवहारनहोयतो घणाधर्मास्तिकायछे, इत्यादिक थवुंजोइयें ॥ ५ ॥

जीहोकेमसकंपनिःकंपता ॥ लालाजोनअनेकप्रदेश ॥ जीहो
अणुसंगतिपणकेमघटे ? ॥ लालादेशसकलआदेश ॥च० ॥६॥

अर्थ ॥ जो अनेकप्रदेशस्वभाव द्रव्यनेकहियेंतो घटादिक अवयवी देशथीसकंप तथादेशथीनिःकंप देखियेंछेयें तेकेममले, अनेअवयवकंपे पणअवयवीनिःकंप एमकहियेंतो चलतिएप्रयोग केमथाय? प्रदेशवृत्तिकंपनो जेमपरंपरासंबंधछे; तेमदेशवृत्ति कंपाभावनोपण परंपरासंबंधछे, तेमाटेदेशथीचलेछे अनेदेशथी नथीचलतो, एअस्खलितव्यवहारेंअनेकप्रदेशस्वभाव मानवो. तथाअनेकप्रदेशस्वभाव नमानियेंतो,आकाशादिद्रव्यें अणुसंगतिके० परमाणुसंयोग केमघटे ? ॥ ६ ॥

जीहोदेशसकलभेदेंद्विधा ॥ लालादीठीजगमांवृत्ति ॥ जी
होप्रत्येकेंदूषणतिहां ॥ लालाबोलेसंमत्तिवृत्ति ॥ चतु० ॥७॥

अर्थ ॥ वलीएहिजयुक्ति विस्तारीदेखाडेछे. एकवृत्तिदेशथीछे; जेमकुंडलइंद्रने;इहां कुंडलतो कानमांपहेर्याछे; तेकानतोइंद्रनो एकदेशछे. पणइंद्रकहिबोलायछे,तथाबीजी वृत्ति सर्वथीछे. जेमसामान्यवस्त्रद्वयनी एटलेजामो सर्वअंगमांपेर्योछे तेदेवदत्त ए सर्वथीजाणवी. तिहांप्रत्येकेंदूषण संमत्तिग्रंथनी वृत्तिबोलेछे. परमाणुने आकाशादिकें देशवृत्तिमानतां आकाशादिकनाप्रदेश अनिष्ठतापणआवे अनेसर्वथी वृत्तिमानतां परमाणु आकाशादिप्रमाण थइजाय, तथाउभयाभावेंतो परमाणुने अवृत्तिपणुंथाय; यावद्विशेषाभावस्यसामान्यभावनियतत्वादित्यादि ॥ ७ ॥

जीहोभावस्वभावहअन्यथा ॥ लालाछेविभावबव्याधि ॥ जीहो
एविणनघटेजीवने ॥ लालाअनियतकर्मउपाधि ॥ चतु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ स्वभावथी जेअन्यथाभाव तेविभावस्वभावकहियें,तेमहाव्याधिरूपछे. ए विभावस्वभाव मान्याविना जीवने अनियतके० नानाप्रकारना देशकालादिविपाकी कर्मोपाधि नलागवाजोइयें, उपाधिसंबंध योग्यतायें अनादिविभावस्वभावः ॥ ८ ॥

जीहोशुद्धभावकेवलपणुं ॥ लालाउपाधिकजअशुद्ध ॥ जीहोवि
णशुद्धतानमुक्तिछे ॥ लालालेपनविगरअशुद्ध ॥ चतु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ केवलपणुंके० उपाधिभावरहितांतरभाव परिणमनते शुद्धस्वभाव, अने जे उपाधिजनित बहिर्भाव परिणमन योग्यताते अशुद्धस्वभावछे. जोशुद्धस्वभाव नमानियें,तो मुक्तिघटेनही, अनेजोअशुद्धस्वभाव नमानियें,तो कर्मनोलेपघटेनही. इहांशुद्धस्वभावनेकदापि अशुद्धतानहोय,अने अशुद्धस्वभावने पछीपणशुद्धता नहोय, एवेदांतादिक मतनेनिराकरी उभयस्वभावमाने; जेथकीकोइदूषणनहोय ॥ ए ॥

जीहोनियमितएकस्वभावजे ॥ लालाउपचरियेंपरठाण ॥ जीहोतेउ
पचरितस्वभावछे ॥ लालाएविणकेमपरनाण? ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ नियमितजे एकस्थाने निरधार्योजे एकस्वभाव अनेपरस्थानकें उपचरियें तेउपचरित स्वभावहोय,तेउपचरितस्वभाव नमानियें,तो स्वपरव्यवसायी ज्ञानवंतआत्मा केमकहियें? जेमाटे ज्ञानने स्वविषयत्व तो अनुपचरितछे,पणपरविषयत्व ते परापेक्षायें प्रतीयमानपणे तथापरनिरूपित संबंधपणेउपचरितछे. ॥ १० ॥

जीहोकर्मजसहजबेभेदते ॥ लालामूर्त्तअचेतनभाव ॥ जी
होप्रथमजीवनीसिद्धने ॥ लालाअपरपरज्ञस्वभाव ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेउपचरित स्वभाव बेप्रकारेंछे, एककर्मजनित,बीजोस्वभावजनित, तिहांपुद्गलसंबंधे जीवने मूर्त्तपणुं अनेअचेतनपणुंजे कहियेंछेयें, तिहांगौर्वाहीकः एरीतें उपचारछे, तेकर्मजनितछे, माटेकर्मतेहीज उपचरितस्वभावछे,हवेजीवने अपरके०बीजोजे सहजउपचरित स्वभाव तेसिद्धने परज्ञपणु तिहांकोइ कर्मोपाधिछेनहीः तदुक्तमाचारसूत्रे ॥ अकम्मस्सववहारोणविज्जइ कम्मुणाउवाहिजायतत्ति ॥ ११ ॥

जीहोदशेविशेषस्वभावए ॥ लालासर्वएकवीससंभाल ॥ जी
होसविहुंपुद्गलजीवने ॥ लालापन्नरभेदछेकाल ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एदशेविशेषस्वभाव नियतद्रव्यवृत्तिमाटे, एमध्ये पूर्वोक्तइग्यार सामान्यस्वभाव भेलियें, तेवारें सर्वमिलिने एकवीस स्वभावथाय, तेपुद्गलतथाजीवने एकवीस स्वभावहोय. तेएकवीसमांथी छकाढियें तेवारें कालद्रव्यने पन्नरस्वभावथाय, तेछस्वभावनांनाम आगलीगाथामां कहेशे ॥ १२ ॥

जीहोबहुप्रदेशचित्मूर्त्तता ॥ लालाविभावशुद्धअशुद्ध ॥ जीहो
टालीआदिमसंजूआ ॥ लालासोलधर्ममुखबुद्ध ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ बहुप्रदेशके० अनेकप्रदेशस्वभाव २ चित्के० चेतनस्वभाव ३ मूर्त्तत्वस्वभाव ४ विभावस्वभाव ५ शुद्धस्वभाव ६ अशुद्धस्वभाव, एछस्वभावकाढीयें, तेवारें

बाकी पन्नरस्वभाव कालद्रव्यनेथाय, वली १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय एत्रणद्रव्यने आदिमके० पहेलो अनेकप्रदेशस्वभाव तेणेसंयुक्तकरियें अने वीजापांचटालियें तेवारेंसोलस्वभावथाय. ॥ एकविंशतिभावाःस्यु,जींवपुद्गलयोर्मताः, धर्मादीनांषोडशस्युः, कालेपंचदशास्मृताः ॥ १३ ॥

जीहोप्रमाणनयतेअधिगमें ॥ लालाजाणीएहस्वभाव ॥ जीहोसुय
शविबुधजिनसंगतें ॥ लालाधरोचित्तशुभभाव ॥ चतु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एएकवीस स्वभावते प्रमाणनयने अधिगमेके० ज्ञानेजाणीने सुयशके० शोभन अनुयोग परिज्ञान यशवंतजे विबुधके० पंमितजन तेहनीसंगतकरी सर्वशंकादोषटालीचित्तमांहें शुभभावधरो ॥ १४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ वीराचंदला ॥ ए देशी ॥

स्वद्रव्यादिकग्राहकेंरे ॥ अस्तिस्वभाववखाण ॥ परद्रव्यादि
कग्राहकेंरे ॥ नास्तिस्वभावमनआणोरे ॥ चतुरविचारियें ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेस्वभावनो अधिगम तेनयेंकरीदेखाडेछे, १ जेअस्तित्वस्वभाव द्रव्यनोछे, तेस्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयें वखाणियें; अने जे २ नास्तिस्वभावछे तेपरद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयेंवखाणियें; उक्तंच ॥ सर्वमस्तिस्वरूपेण पररूपेणनास्तिच ॥ १ ॥

उत्पादव्ययगौणतारे ॥ सत्ताग्राहकनित्य ॥ कोइकपर्या
यार्थिकेंरे ॥ जाणोस्वभावअनित्योरे ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ३ उत्पादव्ययगौणत्वें अनेसत्ताग्राहक द्रव्यार्थिकनयें नित्यस्वभावकहियें तथा ४ कोइकरीतें पर्यायार्थिकनयेंकरी उत्पादव्यय ग्राहकहोय, तेणेकरीने द्रव्यनेविषे अनित्यस्वभावजाणो ॥ २ ॥

भेदकल्पनारहितथीरे ॥ धारोएकस्वभाव ॥ अन्वय
द्रव्यार्थिकनयेंरे ॥ अनेकद्रव्यस्वभावोरे ॥ चतु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ५ भेदकल्पनानी अपेक्षारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकस्वभावजाणो तथा ६ अन्वयद्रव्यार्थिकनयेंकरी अनेकस्वभावजाणो, कालान्वयेसत्ताग्राहको देशान्वयेचान्वयग्राहकोनयः प्रवर्त्तते ॥ ३ ॥

सद्भूतव्यवहारथीरे ॥ गुणगुणादिकभेद ॥ भेदक
ल्पनारहितथीरे ॥ जाणोतासअभेदोरे ॥ चतु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ७ सद्भूतव्यवहारनयथी गुणगुणी, पर्यायपर्यायीनो भेदस्वभावजाणवो ० अने भेदनीकल्पनारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयथी अभेदस्वभावजाणवो, यत्रकल्प्यमानस्यांतर्निगीर्णत्वेनग्रहस्तत्रैकस्वभावो यथाघटोयमिति अत्रविषयविषयिणोर्वैविक्त्येनग्रहस्तत्राभेदस्वभावो यथानीलोघटइति सारोपासाध्यवसानयोर्निरूढत्वार्थमयं प्रकारभेदः प्रयोजनत्वेतुतेयदृष्टानिमित्तकत्वेनस्वभावभेदसाधके ॥ इतिपरमार्थः ॥ ४ ॥

परमभावग्राहकनेरे ॥ भव्यअभव्यपरिणाम ॥ शु
द्धअशुद्धतेहथीरे ॥ चेतनआतमरामोरे ॥ चतु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे ए भव्यस्वभाव अने १० अभव्यस्वभाव. एबेस्वभावते परमभावग्राहकनयें जाणवा. भव्यताते स्वभावनिरूपितछे,अनेअभव्यता तेउत्पन्नस्वभावनी तथापरभावनी साधारणछे, तेमाटेइहां अस्ति नास्ति स्वभावनीपरें स्वपरद्रव्यादिक ग्राहकनय एबेप्रवृत्तिनहोय. शुद्धाशुद्धपणा संमुग्धजे परमभाव ग्राहकनय तेणेकरीने आत्मारामने ११ चेतनस्वभाव कहियें ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ चेतनकर्मनोकर्म ॥ परम
भावग्राहकनयेंरे ॥ तेहअचेतनधर्मोरे ॥ चतु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी ज्ञानावरणादिककर्म तथानोकर्मते मनवचनकायापणुं तेहनेचेतनकहियें. चेतनसंयोगकृतपर्यायतिहांछे. तेमाटे "इदंशरीरमावश्यकं जानातीत्यादिव्यवहारः अतएवभवति घृतंदहतीतिवत्"अने परमभावग्राहकनयें तेकर्म नोकर्मने १२ अचेतनस्वभावकहियें, जेम घृतअनुष्णस्वभाव ॥ ६ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवअचेतनधर्म ॥ परम
भावग्राहकनयेंरे ॥ मूरतकर्मनोकर्मोरे ॥ चतु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १२ अचेतन स्वभावकहियें.अतएव "जडोयमचेतनोयमित्यादि" व्यवहारछे,"एतेनमांनजानामीतिप्रतीत्या विलक्षणाज्ञानसिद्धिर्वेदांतिनामपास्ता सद्भूतव्यवहारनयग्राह्येणाचेतनस्वभावेनैवतदुपपत्तेः" परमस्वभावग्राहकनयें कर्मनोकर्मने मूर्त्तस्वभावकहियें ॥ ७ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवमूरतपणहोय ॥ परम
नयेंपुद्गलविनारे ॥ द्रव्यअमूर्त्ततुंजोयरे ॥ चतु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १३ मूर्त्तस्वभावपणकहियें. अतएवं॥अयमात्मादृश्यते. अमुंआत्मानंपश्यामि॥एव्यवहारछे, एस्वभावेंजे "रक्तौचपद्मप्रभवासुपूज्यौ"

इत्यादिवचनछे. तथापरमभावग्राहकनयें पुद्गलद्रव्यविना बीजांसर्वद्रव्यने १४ अमूर्त्त स्वभाव कहियें ॥ ८ ॥

उपचारेंपणपुद्गलीरे ॥ नहीअमूर्त्तस्वभाव ॥ उपचरि
येंअनुगमवसेंरे ॥ व्यवहारेंजेहभावोरे ॥ चतु० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ चेतनना संयोगे देहादिकने विषे जेमचेतनत्व उपचरियेंछैयें, तेमअमूर्त्तउपचरतानथी,तेमाटेंअसद्भूतव्यवहारथीपण पुद्गलने अमूर्त्तस्वभावनकहियें. प्रत्यासत्तिदोषे अमूर्त्तत्व तिहांकेमउपचरिते उपचरित कहेछे. अनुगमवसे० एकसंबंधदोषे जेहभावव्यवहरियें, तेउपचरियें पणसर्वधर्मनो उपचारनहोय. तथाच आरोपेसतिनिमित्तानुसरणं नतुनिमित्तमस्तीत्यारोपइतिन्यायोनाश्रयणीयइतिभावः ॥ ९ ॥

एभावेंसंमतिभणिउरे ॥ अनुगतअर्थअशेष ॥ जलपयजे
मनविभंजीयेंरे ॥ यावत्अंत्यविशेषोरे ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एभावेंके० एअभिप्रायें संमतिग्रंथमांकह्युंछे जे, अनुगतके० अत्यंतसंबंध अशेषके० सर्वअर्थ जलपयजेमके० खीरनीरनीपरें विभंजेनही, पृथक्करहेनही किहां? तोके अंत्यविशेषतायें अंत्यविशेषे शुद्धपुद्गलजीवलक्षणे विभंजीयें ॥ यथा उदारिकादिवर्गणानिष्पन्नाछरीरादेर्ज्ञानघनासंख्येयप्रदेशआत्माभिन्नइति अत्रगाथा ॥ अनुन्नाणुगयाणं इमवतंवत्तिविभयणमजुत्तं ॥ जहदुद्धपाणियाणं जावंतविशेषपज्जाया ॥ १० ॥

अनभिभूतजिहांमूर्त्ततारे ॥ अमूर्त्तता तिहांनाहिं ॥ जिहांअ
भिभूतअमूर्त्ततारे ॥ मूर्त्तिअनंत्यतेमांहिरे ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एमकहेतांमूर्त्तता जोपुद्गलद्रव्य विभंजक अंत्यविशेषछे,तोतेनोउपचार आत्मद्रव्यें केमहोय, अनेजोते अंत्यविशेषनहीतो, अन्योन्यानुगमे अमूर्त्ततानो उपचार पुद्गलद्रव्ये केमनहोय, एहवीशंका कोइकनेहोयछे, तेटालवानेकहेछे; जिहांपुद्गल द्रव्यमूर्त्तता अभिभूतनथी, किंतुउद्भूतछे, तिहांअमूर्त्तता स्वभावनहोय, तेमाटेंअमूर्त्तता अपुद्गलद्रव्यनो अंत्यविशेष, अनेजिहांआत्मद्रव्य कर्मनहोय, तिहांअमूर्त्तता अभिभूतछे, तिहांमूर्त्तता अनंत्य अनुगमजनित साधारणधर्मरूपहोय. तथाचान्योन्यानुगमाविशेषेपिकचिदेवकिंचित्केनचित्कथंचिदभिभूयतइतियथागमव्यवहारमाश्रयणीयं ॥ ११ ॥

पुद्गलनेएकवीसमोरे ॥ एमतोभावविमुक्त ॥ तेणेंअसद्भू
तनयेंरे ॥ परोक्षअणुअअमूर्त्तोरे ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उपचारेंपण अमूर्त्तस्वभाव पुद्गलनेनहोय एमकहेवाय,तो एकवीसमो भाव

लोपाय, तेवारें "एकविंशतिजावाःस्युर्जीवपुजलयोर्मताः" एवचनव्याघातथी अपसिद्धां-तथाय, तेटालवानेअर्थे असद्भूतव्यवहारनयें परोक्षते पुजलपरमाणुछे,तेनेअमूर्तकहियें. व्यवहारिकप्रत्यक्षागोचरत्वममूर्त्तत्वं परमाणोः जाक्तंस्वीक्रियतइत्यर्थः ॥ १२ ॥

कालपुजलाणुतणोरे ॥ एकप्रदेशस्वजाव ॥ परमनयेपर
द्रव्यनेरे ॥ जेदकलपनाअजावोरे ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ कालाणुने तथापुजलाणुने परमजावग्राहकनयें १५ एकप्रदेशस्वजावकहियें, एमकालतथापुजल एबेद्रव्यटालीने परद्रव्य जेबीजांचारद्रव्य तेहने जेदकल्पनारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकप्रदेशस्वजावकहियें ॥ १३ ॥

जेदकल्पनायुतनयेंरे ॥ अनेकप्रदेशस्वजाव ॥ अणुविण
पुजलअणुतणुरे ॥ उपचारेतेहजावोरे ॥ चतु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अनेजेदकल्पनानी सापेक्षायें जेशुद्धद्रव्यार्थिकनयें अणुके० एकछुटापरमाणुविना सर्वद्रव्यने १६अनेकप्रदेशस्वजावकहियें, अने पुजलपरमाणुनेपण अनेकप्रदेशथवानीयोग्यताछे, तेमाटे उपचारें तेहनेपण अनेकप्रदेश स्वजावकहियें,तथाकालाणुमांते उपचारकारणनथी, तेमाटे तेहनेसर्वथा एस्वजावनथी ॥ १४ ॥

शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकेंरे ॥ जाणोविजावस्वजाव ॥ शुद्धेशुद्ध
स्वजावछेरे ॥ अशुद्धेअशुद्धस्वजावोरे ॥ चतु० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिनये संमुग्धे १७ विजावस्वजावछे. तथा शुद्धद्रव्यार्थिकनयें १८ शुद्धस्वजावजाणो. अनेअशुद्धद्रव्यार्थिकनयें १९ अशुद्धस्वजावजाणवो ॥ १५ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ छेउपचरितस्वजाव ॥ एस्वजाव
नययोजनारे ॥ कीजेंमनधरीजावोरे ॥ चतु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी २० उपचरितस्वजावछे. एजावचित्तमांधरीने स्वजावनयनी योजनाकरियें ॥ १६ ॥

अनुपचरितनिजजावजेरे ॥ तेतोगुणकहेवाय ॥ एकद्रव्या
श्रितगुणकह्यारे ॥ उजयाश्रितपज्जाउरे ॥ चतु० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगंबरप्रक्रिया किहांकिहांस्वसमयेंपण उपस्कृतकरीछे; एमांहेचिंत्यछे, तेदेखाडेछे. स्वजावते गुणपर्यायथीजिन्न नविवक्षियें, जेमाटे जेअनुपचरितजाव तेगुणजजाणवो, अनेजेउपचरितते पर्यायजजाणवो. जेम द्रव्याश्रिततेगुण अनेउजया

श्रिततेपर्यायकह्याछे. तथोक्तमुत्तराध्ययनेषु॥गुणाणमासउदव्वं एगदव्वस्सियागुणा ॥लक्खं-णंपज्जवाणंतु उन्नउअस्सिआन्नवेत्ति ॥ १ ॥ १७ ॥

स्वन्नावन्नेदसहितकह्यारे ॥ एमएगुणहप्रकार ॥ हवेन्नेद
पज्जायनारे ॥ सुणयोसुयशन्नंमारोरे ॥ चतु० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ यदिचस्वद्रव्यादिग्राहकेणास्तिस्वन्नावः परद्रव्यादिग्राहकेणनास्तिस्वन्नाव इत्युपगम्यते तदोन्नयोरपि द्रव्यार्थिकविषयत्वात्सप्तन्नंग्यामाद्यद्वितीययोर्न्नंगयोर्द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकाश्रयेण प्रक्रियान्नज्येतेत्याद्यत्रबहुविचारणीयं ॥ स्वन्नाव० एमएस्वन्नावन्नेदसहितगुणना प्रकारकह्या. हवेआगलीढालमां पर्यायनान्नेदकहुंछुं. तेहनेसुयशना न्नंडार एहवाश्रोतापुरुषो तमेसांन्नलो ॥ १८ ॥

॥ ढाल चउदमो ॥

॥ ढोडोसीमंधरसामीश्रा ॥ तेमुफमिछामिडुक्कमं ॥ एदेशी ॥

सुणोन्नेदपज्जायनारे ॥ तेदोयप्रकार ॥ व्यंजनअर्थवेन्नेद
थी ॥ संक्षेपेंसार ॥ श्रीजिनवाणीआदरो ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेपर्यायना न्नेदसांन्नलो. तेपर्यायनान्नेद संक्षेपथी बेप्रकारनाछे. एकव्यंजनपर्याय, बीजोअर्थपर्याय, एसंक्षेपेकह्या ॥ १ ॥

अनुगतकालकलितकह्यो ॥ व्यंजनपर्याय ॥ वर्त्तमानसु
षिमतिहां ॥ अत्थहपज्जाय ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेजेहनो त्रिकालस्पर्शिपर्याय तेतेनोव्यंजन पर्यायकहियें. जेमघटादिने मृदादिपर्याय तेहमां सूक्ष्मवर्त्तमानकालवर्त्ति ते अर्थपर्यायछे. जेमघटनेतत्तत्क्षणवर्त्तिपर्यायते अर्थपर्याय ॥ २ ॥

द्रव्यगुणेविहुंन्नेदथी ॥ वलीशुद्धअशुद्ध ॥ शुद्धद्रव्यव्यं
जनतिहां ॥ चेतननेसिद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेप्रत्येकें एकेकवेबेप्रकारें एकद्रव्यपर्याय बीजोगुणपर्याय न्नेदथीजाणवा. तथातेवली शुद्ध अनेअशुद्धन्नेदथी बेबेप्रकारेंजाणवा. तेमांशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते चेतनद्रव्यने केवलज्ञानना न्नावथी सिद्धपर्याय जाणवो ॥ ३ ॥

अशुद्धद्रव्यव्यंजनबहु ॥ मनुजादिकन्नेद ॥ गुणथीव्यं
जनएमद्विधा ॥ केवलमइन्नेद ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेअशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय तेमनुष्य, देवता, नारकी, तीर्यंचादिकबहुभेदें जाणवो, केमके तेद्रव्यभेद पुद्गलसंयोग जनितछे. एमज शुद्धगुणपर्यायते केवलज्ञानादिरूप अने अशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते मतिज्ञानादिरूप जाणवा ॥ ४ ॥

ऋजुसूत्रादेशेंकरी ॥ क्षणपरिणतएह ॥ कह्योअर्थ
पज्जायए ॥ अभ्यंतरभेद ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एमऋजुसूत्रादेशे क्षणपरिणतजे अभ्यंतरपर्याय तेशुद्धार्थपर्याय अने जेजेहथी अल्पकालवर्त्तिपर्याय तेतेहथीअल्पविवक्षायें अशुद्ध अर्थपर्यायकहेवा ॥ ५ ॥

पुरुषशब्दजेमपुरुषने ॥ व्यंजनपर्याय ॥ संम
तिग्रंथेअर्थथी ॥ बालादिकहाय ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांवृद्धवचन संमतिग्रंथदेखाडेछे, जेम पुरुषशब्दवाच्य जेजन्मादि मरणकालपर्यंत एकअनुगतपर्याय तेपुरुषनोव्यंजनपर्यायकहियें, एसंमतिग्रंथेकह्युंछे. तथाबालतरुणादि पर्यायते अर्थपर्यायकह्याछे. एमसर्वत्रफलावीलेवुं. अत्रगाथा ॥ पुरिसंमिपुरिससद्दो जम्माइमरणकालपज्जंतो ॥ तस्सउबालाईया पज्जवभेयाबहुविगप्पा ॥ ६ ॥

षट्गुणहाणीवुद्धीथी ॥ जेमअगुरुलहुत्त ॥ पजाव
तेमक्षिणभेदथी ॥ केवलपणेवुत्त ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेकेवलज्ञानादिकते शुद्धगुणव्यंजनपर्यायहोय, तिहांअर्थपर्यायनथी, एहवी कोइक दिक्पटाभासनी शंकाटालेछे. "जे षट्गुणहानिवृद्धिलक्षणागुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मार्थपर्यायाः" एजेमकह्युंछे, तेमक्षणभेदथी केवलज्ञानपर्यायपण भिन्नभिन्न देखाड्याछे ॥ पढमसमयसयोगिभवत्थकेवलनाणे ॥ अपढमसमयसयोगिभवत्थकेवलनाणे॥इत्यादिवचनात्॥ तेमाटेऋजुसूत्रादेशें शुद्धगुणनापण अर्थपर्यायमानवा ॥ ७ ॥

शुद्धद्रव्यव्यंजनअणु ॥ पुद्गलपर्याय ॥ अशुद्धद्व्यणु
कादिकगुणा ॥ निजगुणपर्याय ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ पुद्गलद्रव्यनो शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते अणुके० परमाणुजाणवो, केमके तेपरमाणुनोकेवारें नाशनथी, तेमाटेतथा द्व्यणुकादिकद्रव्यते पुद्गलद्रव्यना अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय संयोगजनितछे, तेमाटे एमगुणाके० पुद्गलद्रव्यना शुद्धगुणव्यंजनपर्याय तथाअशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते पोतपोताना गुणाश्रितजाणवा, जेपरमाणुगुण तेशुद्धगुणव्यंजनपर्याय अनेद्व्यप्रदेशादिगुणते अशुद्धगुणव्यंजनपर्याय ॥ ८ ॥

सूक्ष्मअर्थपर्यायते ॥ धर्मादिकएम ॥ निजपरप्र
त्ययथीलहो ॥ छंडिहठप्रेम ॥ श्रीजिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकना शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायजछे, एहवोजे हठकरेछे, तेह नेकहियें, जे ऋजुसूत्रादेशें क्षणपरिणतिरूप अर्थपर्यायपण केवलज्ञानादिकनीपरें हठछांडीने तिहांपणकेमनथीमानता? ॥ ए ॥

जेमआकृतिधर्मादिकनी ॥ व्यंजनछेशुद्ध ॥ लोकद्रव्य
संयोगथी ॥ तेमजाणीअशुद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेधर्मास्तिकायादिकमां अपेक्षायें अशुद्धपर्यायपणहोय, नहीतोपरमाणुपर्यंत विश्रामेंपुद्गलद्रव्यपण नहोय, एहवें अभिप्रायेंकहेछे, जेधर्मास्तिकायादिकनी आकृति लोकाकाशमान संस्थानरूपते शुद्धद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें, परनिरपेक्षपणामाटे, तेमजलोकवर्त्ति द्रव्यसंयोगरूप अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें, पणतेहनोपरापेक्षपणे कहेताथका अनेकांतिकने विरोधनथी ॥ १० ॥

संयोगेआकृतिपरें ॥ पज्जायकहेवाय ॥ उत्तराध्य
यनेभाषिया ॥ लक्षणपज्जाय ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेआकृतिते पर्यायहशे, अने संयोगपर्यायनहोय, एहवीआशंकाटालेछे. जे संयोगतेपण आकृतिनीपरें पर्यायकहेवायछे, केमके पर्यायनांलक्षण भेदरूप श्री उत्तराध्ययनसूत्रें एरीतेकह्यांछे ॥ ११ ॥

एकतपृथकततेमवली ॥ संख्यासंठाण ॥ वलीसंयोग
विभागए ॥ मनमांतुंआण ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उक्तंच ॥ एगत्तंचपुहुत्तंच संखासंठाणमेवय ॥ संयोगायविभागाय पज्जवाणं तुलक्खणं ॥१॥ एगाथातुंमनमांआण,एमदिगंबरनयचक्रनाकर्त्तादेवसेननेकहेछे॥१२॥

उपचारीनयशुद्धते ॥ जोपरसंयोग ॥ असद्भूतम
नुजादिका ॥ तोनयशुद्धयोग ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेशोजे धर्मास्तिकायादिकने परद्रव्यसंयोगछे, तेउपचरित पर्यायकहियें, पणअशुद्धपर्यायनकहियें, द्रव्यान्यथात्वहेतुनेविषेज अशुद्धत्व व्यवहारछे, तेवतीतो तेमाटे मनुष्यादिकपर्यायपण अशुद्धनकहो. असद्भूतव्यवहारनयग्राह्य माटे असद्भूत कहो ॥ १३ ॥

धर्मादिकपरपज्जायें ॥ विसमाइएम ॥ अशुद्धताअ
विशेषथी ॥ जिअपुग्गलजेम ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ द्वितंतुकादिक पर्यायनीपरें एकद्रव्यजनकअवयवसंघातनयेंज अशुद्ध द्रव्यव्यंजनपर्यायपणुंज कहेतां रुडुंलागे "तस्मादपेक्षानपेक्षाभ्यांशुद्धाशुद्धानेकांतव्यापकत्वमेवश्रेयः." तेहिजदेखाडेछे. धर्मादिकने परपर्यायें एटलेस्वपर्यायथी विषमार्थीके० विलक्षणताएमजाणवी, केमके परापेक्षायें जेमजीवद्रव्य पुग्गलद्रव्यनेविषे अशुद्धतानो विशेषनथी

एमजसजातिविजातिथी ॥ द्रव्येंपज्जाय ॥ गुणेस्व
भावविभावथी ॥ एचारकहाय ॥ श्रीजिन०॥१५॥

अर्थ ॥ हवे प्रकारांतरे चारप्रकारनापर्याय नयचक्रमांकह्याछे, तेदेखाडेछे. एमज स्वजातीयद्रव्यपर्याय,तथा विजातीयद्रव्यपर्याय,वलीस्वभावगुणपर्याय,अने विभावगुणपर्याय एरीतेंचारभेद पर्यायनाकहेवा ॥ १५ ॥

द्व्यणुकमनुजेकेवलीवली ॥ मतिमुखदिंछंत ॥ एप्रायि
कजेणेद्रव्यथी ॥ अणुपज्जवसंत ॥ श्रीजिन ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवेउदाहरणदेखाडेछे. द्विप्रदेशादिकस्कंधते स्वजातीय द्रव्यपर्यायकहियें. तथा द्रव्यबेमिलीएकद्रव्यउपनुं, तेमाटे मनुजादिपर्यायते विजातीय द्रव्यपर्याय कहियें, केमके तेबेद्रव्यमली परस्पर भिन्नजातीय द्रव्यपर्यायउपनो, तेमाटे तथाकेवलज्ञान ते कर्मरहितपणामाटे स्वभावगुणपर्यायकहियें. अनेमतिज्ञानादिकते कर्मपरतंत्रपणामाटे विभावगुणपर्यायजाणवा. एरीते एचारभेदपण प्रायिकजाणवा. केमके परमाणुरूप द्रव्य पर्यायते एचारमांहेन अंतरभवें. पर्यायपणुतेहने विभागजाति शास्त्रेंकह्युंछे. तदुक्तं संमतौ ॥ अणुडुअणुएहिंदव्वे आरद्धेडुअणुअंतिअणुतिववएसो ॥ तत्तोअपुणविभत्तो अणुत्तिजाउअणुहोइ ॥ इत्यादिक ॥ १६ ॥

गुणविकारपज्जवकही ॥ द्रव्यादिकदंत ॥ शुंजा
णेमनमांहेते ॥ देवसेनमहंत ॥ श्रीजिन॥ १७॥

अर्थ ॥ "गुणविकाराः पर्यायाः" एमकहीने तेहनाभेदनेअधिकारें तेपर्याय द्विभेद १ ,द्रव्यपर्याय २ गुणपर्याय इत्यादिककहेतोथको नयचक्रनोकर्त्ता जे देवसेनदिगंबर तेमनमांहेशुंजाणेछे? अर्थात् पूर्वापरविरोधभाषणथी काइंजाणतोनथी. तेमाटे द्रव्यपर्याय जकहेवा, पणगुणपर्याय जूदानकहेवा एपरमार्थछे॥ १७ ॥

इमद्रव्यादिकपरखीया ॥ राखीगुरुआण ॥ भवेखी
बहुतनुमति॥ अवगणीअजाण श्री० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें द्रव्यगुणपर्यायते स्वरूपलक्षण भेदादिकेंकरीने परख्या, गुरुआणाके० गुरुपरंपरानी आज्ञाराखीने तथाघणा तनुमतिके० तुच्छबुद्धिनाधणी तेहनेउवेखीने, अजाणजेहठकदाग्रही तेहनेअवगणी–निराकरीने द्रव्यादिकनीपरीक्षामेंकरी ॥ १७ ॥

जेदिनदिनएमभावशे ॥ द्रव्यादिविचार ॥ तेलहेशेज
शसंपदा ॥ सुखसघलांसार ॥ श्रीजिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जे एअर्थदिनदिनप्रतें द्रव्यगुणपर्याय विचाररूपभावशे, तेप्राणी यशनीसंपदाप्रतें पामशे तथा सघलांसुखप्रतें सारके० निश्चेंपामशे, एगुरुनोउपदेश प्रमाणकरजो

दोहा

गुरुश्रुतअनुभवबलथकी ॥ कह्योद्रव्यअनुयोग ॥
एहसारजिनवचननो ॥ एहपरमपदभोग ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गुरुउपदेश, श्रुतशास्त्राभ्यास, अनुभवबल, अने सामर्थ्ययोग तेंहथीए द्रव्यानु योगकह्यो. एसर्वेजिनराजनां वचननोसारछे. एजपरमपदके० मोक्षतेहनोभोगछे, केमके एद्रव्यादिकविचारें शुक्लध्यानसंपदायें मोक्षपामियें ॥ १ ॥

मध्यमकिरियारतहुए ॥ बालकमानेलिंग ॥
षोडशकेंभाष्युंधरे ॥ उत्तमज्ञानसुरंग ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगमां जे रंगधरे, तेहनेजपंडितकहियें, एहवुं अभियुक्तसाखेंसमथेंछे. षोडशकवचनंचेदं ॥ बालःपश्यतिलिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयतिवृत्तिं ॥ आगमतत्त्वंतुबुधः परीक्षते सर्वयत्नेन ॥ २ ॥

नाणरहितजेशुभक्रिया ॥ क्रियारहितशुभनाण ॥
योगदृष्टिसमुच्चयकह्यो ॥ अंतरखजुआभाण ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानरहितजे शुभक्रिया अनेक्रियारहित जे शुभज्ञान तेनेयोगदृष्टिसमुच्चयमां खजुआ अनेसूर्यजेटलो आंतरोकह्योछे ॥ ३ ॥

खजुआसमीक्रियाकही ॥ नाणभाणसमजोय ॥
कलियुगएहपटंतरो ॥ विरलाबुजेकोय ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तात्त्विकः पक्षपातश्च भावशून्याचयाक्रिया ॥ अनयोरंतरंज्ञेयं भानुखद्योतयोरिव ॥ इत्यादिकयोगदृष्टिसमुच्चयें कह्युंछे ॥ ४ ॥

क्रियामात्रकृतकर्मखय ॥ दद्दुरचुन्नसमान ॥
ग्यानकिउंउपदेशपदें ॥ तासछारसमजाण ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ मंडुक्कचुन्नकप्पो किश्याजाणिउंकउकिलेसाणं ॥ तद्दुरचुन्नकप्पो नाणकउं तंचआणाए ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसंग्रह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिककर्मथिति ॥ अकरणनियमेंजाष ॥
अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिशीथहसाष ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानते सम्यग्दर्शनसहितजआवे. तेपाम्यापछि मिथ्यात्वमां आवे, तोपण एककोडाकोडी सागरोपम " उपरांतकर्मबंध जीव नकरे. बंधेंणनबोलेयकयावितिवच नात् " एअनिप्रायें नंदिषेणनेअधिकारें महानिशीथे ज्ञानगुण अप्रतिपाति कह्योछे. उत्तराध्ययनेप्युक्तं ॥ सूइजहासमुत्ता णणस्सईकयवरंमिपडिआवि ॥ इयजीवोविससुत्तो- णणस्सइगउविसंसारे ॥ १ ॥ ६ ॥

ग्यानवंतहकेवली ॥ उव्यादिकअहिनाण ॥ बृह
त्कल्पनानाष्यमां ॥ सरिषानाष्याजाण ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ बृहत्कल्पगाथाचेयं ॥ किंगीयछोकेवली चउविहेजाणणेयकहणेय ॥ तु ल्लारागदेसे अणंतकायसवज्जणवा ॥ १ ॥ ७ ॥

नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणनवार्णवपोत ॥
मिथ्यामतितमनेदवा ॥ नाणमहाउद्योत ॥ ८ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ होमतवालेसाजना ॥ एदेशीछे ॥

नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ क्रियावंतमहंतोरे ॥ तेमृगपतिजेमपाखरिया ॥ तेहना गुणनोनअंतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेवियें ॥ १ ॥ एआंकणीछे ॥ वशनिरुपक्रमकर्म्मने ॥ जेपणज्ञानविहीनारे ॥ तेपणमारगमांकह्या ॥ ज्ञानीगुरुपदलीनारे ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अज्ञानजहठरातारे ॥ कपटक्रियाकरतायति ॥ नहुयेनिजमतिमातारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेआपणो ॥ परनागुह्यते खोलेरे ॥ गुणनिधि गुरूथकीबाहेरा ॥ विरउनिजमुखेंबोलेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ बा हिरबकपरेंचालता ॥ अंतरआकरीकातीरे ॥ तेहनेजेहनलाकहे ॥ मतिनवीजाणेतेजा तीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ बहुविधबाह्यक्रियाकरें ॥ ज्ञानरहितजेहटोलेंरे ॥ शतजि मअंधदेखता ॥ तेतोपडिआछेनोलेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ निजउत्कर्षेथीहरषि या ॥ निजअवगुणनवीदाखेरे ॥ ज्ञानजलधीगुणअवगणी ॥ अवगुणबहुनांषेरे ॥ श्री- जिन० ॥ ७ ॥ गुणप्रियआगेंअछुटता ॥ जेगुणअल्पशोनाषेरे ॥ तेपणअवगुणपरिणमे ॥ मायाशल्यमनराखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥ ज्ञानरहितजेएहवा ॥ जिनशासनधनचोरेरे ॥

तेह शिथलपरेंपरिहरु॥ गछाचारनेजोरेंरे ॥श्रीजिन०॥ ए ॥ एनवमीगाथानोअर्थ॥ गछाचारवचनंचेदं ॥ अगीअबकुसीलेहिं संगंतिविहेणवोसिरे॥ मुरकमग्गस्सिमेविग्घं पहंमितेणगेजहाइति॥ ज्ञानीवचनविषअमृतछे॥ उलटीमूरखवाणीरे॥आगमवचनएआदरी॥ ज्ञानग्रहोजविप्राणीरे ॥ श्रीजिन० ॥१०॥ अर्थ ॥ गीयछस्सवयणेणं विसंहालाहलंपिबे ॥ अगीयछस्सवयणेणं अमयंपिनघुट्टए ॥ १ ॥ इत्यादिवचनशास्त्रेंछे, तेमाटे हेधर्मार्थिजव्यप्राणी ज्ञानपक्षदृढआदरो, केमकेहमणाज्ञानपक्षनोदृढाधिकारछे॥ १० ॥ चरणकरणगुणहीणका ॥ज्ञानप्रधानआदरियेंरे॥ एम किरयागुणअजयसी ॥ इछायोगथीतरियेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ कर्तुमिछोःश्रुतार्थस्यज्ञानिनोपिप्रमादिनः॥ कालादिविकलोयोग इतीछायोगलक्षणं ॥ ललितविस्तारादौग्रंथे ॥११॥ चरणपतितवलीश्रावको ॥ तनुधर्मावलीजेहोरे ॥ तेहनेज्ञानप्रधानछे ॥ मुनिनेछेगुणगेहोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥ आवश्यकमांहेजाषिउं ॥ तेणेगहीज्ञानप्रधानोरे ॥ आचरणापथचालतां ॥ लेश्येजश बहुमानोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ अत्रआवश्यकगाथा ॥ दंसणपरकोसावय चरित्तनठेयमंदधम्मेय ॥ दंसणचरित्तपरको समणपरलोगकंखं मि॥ १३ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ समरीसारदाए वरदायकदेवी॥ एदेशी ॥

आत्मअर्थिनेअर्थप्राकृतवाणी ॥ एमएमेंकीधीहीयडेउलटआणी ॥ मिथ्यादृष्टिनेएहमांमतिमुंजाणी ॥ सम्यग्दृष्टीनेलागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ गुरूपासेंशीखीअर्थएहनाजाणी ॥ तेहनेएदेजो, जेहनीमतिनवीकाणी ॥ लघुनेनयदेताहोएअर्थनीहाणी॥ योगदृष्टिसमुच्चयएहवीरीतिवखाणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनब्रह्माणी ॥ जलीपरेंसंजालोतत्त्वरयणनीखाणी ॥ एशुजगतिमाता, डुरमतिवेलिकृपाणी॥ एशिवसुखसुरतरुफलरसस्वादनिशाणी ॥३॥ एहनेसुपसायेंउजाजोकीपाणी ॥ सेवेनर, किन्नर, विद्याधर, पविपाणी ॥ एअमियदृष्टीथीजेहेनीमतिसीचाणी ॥ तेमांहेउल्लसेसुरुचिवेली करमाणी॥४॥ बहुजावएहनाजाणेकेवलनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखथीकहेवाणी ॥ एहथीसंजारीजिनगुणश्रेणीउसुहाणी ॥ वचनानुष्ठानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ५ ॥ एहथीसवीजाएपापश्रेणीउजाणी ॥ गुणश्रेणीचढतांलहेमुक्तिपटराणी॥घनघातिकर्मनेपीलीयेंजेमतेलघाणी॥ निर्मलगुणएहथीपामियाबहुजविप्राणी ॥ ६ ॥ खलजनजोएहमांदूषधरेअजिमानी ॥ तोपणसज्जनथीएहनीख्यातिमचाणी ॥ गुणमणिरयणायरजगउत्तमगुणगाणी ॥ जशदियेगुणीसज्जननेसंघअनंतकल्याणी ॥ ७ ॥

॥ ढाल सतरमी ॥

॥ देशीहमचडीनीढे ॥

तपगछनंदनसुरुतरुप्रगट्यो ॥ हीरविजयसूरींदो ॥ सकलसूरिमांजेसोजागी ॥ जेम तारामांचंदोरे ॥ हमचडी० ॥ १ ॥ तासपाटविजयसेनसूरीश्वर ॥ ज्ञानरयणनोदरिउ ॥ शाहीसन्नामांजेयशपाम्यो ॥ विजयवंतगुणन्नरिउरे ॥ हम० ॥ २ ॥ तासपाटे विजयदेवसूरिसर ॥ महिमावंतनिरीहो ॥ तासपाटेविजयसिंहसूरिसर ॥ सकलसूरिमांलीहोरे ॥ हम० ॥ ३ ॥ तेगुरुनाउत्तमउद्यमथी ॥ गीतारथगुणवाध्यो ॥ तस हितशिखतणेअनुसारें ॥ ज्ञानयोगएसाध्योरे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जशउद्यमउत्तममारगनो ॥ न्नलेन्नावथीलहियें ॥ जसमहिमामहिमायेंविदीतो ॥ तसगुणकेमनगहियेंरे ॥ हम० ॥ ५ ॥ श्रीकल्याणविजयवरवाचक ॥ हीरविजयगुरुसीसो ॥ उदयाजशगुण संततिगावे ॥ सुरकिन्नरनिसदीसोरे ॥ हम० ॥ ६ ॥ गुरुश्रीलान्नविजयवरपंडित ॥ ताससीससोन्नागी ॥ श्रुतव्याकरणादिकबहुग्रंथें ॥ नित्येंजशमतिलागीरे ॥ हम० ॥ ७ ॥ श्रीगुरुजितविजयतससीसो ॥ महिमावंतमहंतो ॥ श्रीनयविजयविबुधगुरुन्नाता ॥ तासमहागुणवंतोरे ॥ हम० ॥ ८ ॥ जेगुरुस्वपरसमयअन्यासें ॥ बहुउपायकरी कासी ॥ सम्यग्दर्शनसुरुचिसुरन्निता ॥ मुजमतिशुन्नगुणवासीरे ॥ हम० ॥ ९ ॥ जशसेवासुपसायेंसहजें ॥ चिंतामणीमेंलहिउ ॥ तसगुणगाइशकुंकेमसघला ॥ गावानेगहगहिउरे ॥हम०॥१०॥ तेगुरुनीन्नक्तिशुन्नशक्ति वाणीएहप्रकाशी ॥ कवियशविजयन्नणेएमन्नणयो ॥ दिनदिनबहुअन्यासीरे ॥ हम० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

एमद्रव्यगुणपर्यायेंकरी जेहवाणी विस्तरी॥गतपारगुरुसंसारमारगतरणतारणवरनरी॥ तेएहन्नाषीसुजनमधुकर रमणसुरनरपंजरी॥श्रीनयविजयबुधचरणसेवक जशविजयबुधजयकरी॥१॥ सर्वगाथा२८५ ॥ इयमुचितपदार्थोल्लापनश्रव्यशोन्ना बुधजनहितहेतुर्न्नावनापुष्पवाटी ॥ अनुदिनमितएवध्यानपुष्पैरुदारैर्न्नवतुचरणपूजा जैनवाग्देवतायाः ॥

॥ इतिउपाध्यायश्रीयशोविजयगणिकृतद्रव्यगुणपर्यायनोरासबालावबोधसहितसमाप्तः ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत आठ दृष्टिनी सजाय बालावबोध सहित ॥

ऐंद्रश्रेणिनतंपार्श्वं, श्रीशंखेश्वरनामकं ।लिखा
मियोगदृष्टिंस्वाध्यायार्थं लोकभाषया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ इंद्रना समुदाय, श्रेणिपरंपरा, जेने नम्याछे, एवा श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथने नमस्कार करीने, यम, नियम, प्राणायामादि अष्टांगयोग जेमां छे, एवा पातंजलिआदिकृत योगशास्त्रमां प्रवेश करीशकाय तेवो श्रीहरिभद्रसूरिरचित श्रीयोगदृष्टिसमुच्चय ग्रंथछे, तेना भाव ग्रहण करी, सकल तार्किकशिरोमणि वाचकराज श्रीयशोविजयजी उपाध्याये योगदृष्टिनी सजाय रचेली छे, तेनो भावार्थसूचक बालावबोध गुर्जरी भाषामां लखीए छीए.

प्रथम योग शब्द एटले शुं ? योग एटले चंचलता. त्रण प्रकारना योग ते मन, वचन, कायानायोग तथा अष्टांगयोग अने ज्ञान दर्शनादि योग; अथवा जेजे वस्तुउना योग युंजन करीए, तेपण योग कहेवाय. एम योगना बहु प्रकार छे. अहींआतो पातंजलादि ग्रंथानुयायी त्रण योग वर्णवेला छे. तेनां नाम. १ इछायोग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्यप्रतिज्ञायोग.

१ तथाविध ज्ञानावरणादि कर्मना क्षयोपशम विशेषथी श्रुतज्ञाननो अर्थ लई, करवानी इछावालो छतां, प्रमादथी धर्म व्यापारमां विकल अने अंतःकरणमां सूत्रार्थनुं इछकपणुं होय, पण यथार्थ बोध न होय, ते इछायोग कहीए.

२ यथार्थस्वरूपे विकथादिनो त्याग करवो तथा अप्रमादि, धर्मव्यापारवंत, श्रद्धावंत, तीव्रबोधथी अवितथ्य वचननुं भाषण करवुं, तथाविध मोहना अपगमथी सत्यप्रतीतवंत, तथा कालादि विकलपणानी बाधाए अतिचारादि दोषने जाणता छतां तथा प्रकारे टाली न शकाय; ते शास्त्रयोग कहीए.

३ शास्त्रमां बतावेला उपायोने अतिक्रमिने अधिकशक्तिथी धर्मव्यापार योग आदरवो ते सामर्थ्य प्रतिज्ञा योग कहीए. सिद्धिपद प्राप्तिनां कारणो आ योगमां बहु छे, तेनुं अतिक्रमण करे नही; शास्त्र थकीज सर्व अर्थ जाणे. सामर्थ्य प्रतिज्ञा योगथी, सर्वज्ञपदप्राप्ति, सिद्धिपदसौख्यप्राप्ति, सकलप्रवचनपरिज्ञाप्राप्ति इत्यादि सर्वनो साक्षात् लाभ छे. सामर्थ्य योगना पण बे भेद छे १ धर्मसंन्यास २ योगसंन्यास.

धर्मसंन्यास ते मोहादिक्षयोपशमरूप छे अने योगसंन्यास ते कायादि व्यापार कायोत्सर्गकरणादिरूप छे. आ बे प्रकारना सामर्थ्ययोग समस्त लाजप्राप्तिना हेतु छे,धर्म संन्यास सामर्थ्य योग प्रथमथी बीजे अपूर्व करणे होय एटले के प्रथम अपूर्व करणे यथाप्रवृत्ति करणनी संज्ञा छे, तेथी अधिकृत धर्म सामर्थ्य योग न होय अने बीजे अपूर्व करणे ते ग्रंथिजेदनुं निबंधन छे तेथी प्रथमनो त्याग करी बीजुं कह्युं ॥ यतः ॥ जागंठीतापढमं, गंठीसमइक्कमेजवेबीअं ॥ अनिअट्टिकरणंपुण, सम्मत्तंपुरखके जीवे ॥ १ ॥ इति वचनात्

अपूर्व करण ते आत्मवीर्य शुज परिणाम, अनादिकाले अपूर्व अपूर्व जे शुजशुज तर परिणाम धर्म स्थानकने विषे होय ते धर्म संन्यास,बीजे अपूर्वकरणे ग्रंथिजेद थवाथी सम्यग् दर्शन,शमसंवेगादि लिंगरूप,आत्मपरिणाम. यतः॥ शमसंवेगनिर्वेदाद्य-नुकंपास्तिक्यलक्षणैः॥ पंचजिः सम्यक्, सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ इति ॥१॥ योगशास्त्रे.तथा "तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं." त्यार पछी तथाविध कर्म स्थितिने उंछी करे, संख्य सागरोपम अतिक्रमे त्यारे प्रथम धर्म संन्यास सामर्थ्य योग होय. यतः ॥ गंठित्ति-सुडुजेर्ड, कखरूघणरूढगूढगंठिव ॥ जीवस्सकम्मजणिर्ड, घणरागदोस परिणामो ॥१॥ सम्मत्तंमिउलद्धे, पलियपहुत्तेणसावर्डहुज्जा ॥ चरणोपसमखयाणं, सागरसंखंतराहुंति ॥२॥माटे स्थिति जेद उपर जेम जेम वधे, तेम तेम आयुंजी करण थकी जेम जेम आत्म वीर्योल्लासें गुण स्थानक जजन ते सर्व धर्म संन्यास सामर्थ्य योग कहीए, अने तेने पारमार्थिक तात्त्विक कहीए. कोइक वेलाए प्रव्रज्या प्रतिपत्तिकाले अतात्त्विक कहीए. कारणके प्रव्रज्या सन्मुखतो छे परंतु प्रव्रज्या आदरी नथी, माटे त्यां ज्ञानरूप प्रतिपत्ति विशेष होय अने धर्मसंन्यास सामर्थ्य अधिकारी जव विरक्त होय. आप्रमाणे सिद्धांतमां कह्युं छे.

प्रव्रज्याधिकारी, आर्यदेशोत्पन्न, विशिष्ट जातिवंत, कुलमर्यादावंत, अशुजकर्म मलबुद्धि प्रपंच प्रायः क्षीण होय अने मनुष्यपणानां निमित्त डुर्लज छे, संपदा चपल छे, विषय डुःखौघहेतु छे, संयोग वियोग मिलित छे, शरीर प्रतिक्षणे मरणयुक्त छे, एवा दारुण विपाकवाला संसारनुं अनेक प्रकारे निर्गुणपणुं जावीने सहजपणे संसारथी विरम्यो होय, अल्प कषायी, अल्प हास्यादिवंत अल्पवेदोदयी, कृतज्ञ, विनीत, घरवासमां राजामात्यादि बहुजनमान्य, अद्रोही, सुंदर अंगवंत, श्रद्धावंत, प्रव्रज्या आराधक, ज्ञानयोगनो आराधक इत्यादि गुणोपेत मनुष्यने धर्मसंन्यास सामर्थ्ययोग जाणवो.

योग संन्यास सामर्थ्य योग पारमार्थिक तात्त्विकपणे, क्षपकश्रेणिगत योगीने तथा

क्षांत्यादि सर्वगुण क्षयोपशमपणे जेने उत्पन्न थया होय तेने, यावत् केवलज्ञान लाज जोग शीलसुधी तथा तेज लाज वेलाये शैलेसी अवस्थागत योग निरुंधन काले वर्त्तता होय, तेने होय.

त्रण योगमां प्रथम योग, चरमा कहेवाय छे अने ते जव्य मिथ्यादृष्टिने पण होय; बीजो योग सम्यग्दृष्टि, देशविरति प्रमुखने होय अने त्रीजो योग, दीक्षानी सन्मुख एवा जवविरक्त तथा अप्रमत्त यावत् अयोगी अवस्थावालासुधी पण होय. तेनो विशेष अधिकार योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथथी जाणवो. अहीं लेशमात्रलख्यो छे. योगनुं दर्शन ते सामान्यमात्र ज्ञानावरणीयना क्षयापशमे जाणवुं अने दृष्टि ते इहादि विचारणाए अवधारवुं. दृष्टिनुं स्वरूप हवे कहीए छीए.

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ एदेशी ॥

शिवसुखकारण उपदिशी ॥ योगतणी अडदिठीरे ॥ तेगुण
थुणीजिनवीरनो ॥ करशुं धर्मनी पुठीरे ॥ वीरजिनेसर देशना ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शिवके० निरूपद्रव, अव्याबाध सुख तेना कारण के० हेतुवास्ते श्रीवीर परमात्माए, योगनी आठ दृष्टि उपदेशी छे, ते श्रीवीरनागुणस्तवीने अमे धर्मनी पुष्टि करशुं. श्रीवीर परमात्मा केवा छे ? यतः ॥ विदारयतियत्कर्म, तपसाचविराजते ॥ तपोवीर्येण युक्तश्च तस्माद्वीर इतिस्मृतः ॥ १ ॥ वली धर्म केवो छे ? यथा ॥ दुर्गति प्रपतत्प्राणिधारणा धर्म उच्यते ॥ संयमादिदशविधः, सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १ ॥ अथवा, अपरजाव व्यतिरिक्त, केवल वस्तु स्वजावपणुं, तेपण निरावरणपणे तथा सादि अपर्यवसानपणे ते धर्म छे. एवी सामान्यपणे श्रीवीरनी देशना के० वाणी छे. ॥ १ ॥

सघन अघन दिनरयणिमां ॥ बालविकलने अनेरारे ॥ अर्थ
जुए जेम जुजुआ ॥ तेम ओघनजरनाफेरारे ॥ वीर० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम सघन के० मेघ सहित दिवस अने अघन के० मेघ रहित दिवस, जेम दिवस तेम रात्रि अर्थात् मेघयुक्त दिवस रात्रि अने मेघ रहित दिवस रात्रि; तेते दिवसो अने रात्रिओमां पण जेद छे अने ते जेदने देखनाराओमां पण कोइ बालदृष्टि, कोइ विकलदृष्टि अने अनेरा के० कोइ तरुण, वृद्ध, रोगी इत्यादि अनेक जेद छे. तेओ जेजे पदार्थने जुए तेमां ज्ञानावरणादि कर्मविचित्रताये सामान्य विशेषादिमां अनेक रीते फेरपडे; जूदाजूदा जाव देखे. ते सर्वओघ दृष्टिछे. ओघदृष्टि बहु जातनी छे.॥२॥

दर्शन जे थयांजुजुआ ॥ ते ठंघनजरनेफेरेरे ॥ नेदथिरा
दिकदृष्टिमां ॥ समकितदृष्टिनेहेरेरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ठंघ नजरना फेरने अनुसारे षट् दर्शनना नेद जुदाजुदा थया. ते ठंघदृष्टिनो अहीं अधिकार नथी. अहींआतो योगनी आठ दृष्टिनो अधिकार ठे, यथा॥मित्रा तारा बलादीप्ता, स्थिराकांता प्रनापरा ॥ नामानि योगदृष्टीनां, लक्षणं तु निबोधत ॥ १ ॥ ते आठ दृष्टिमां बोध–ज्ञान प्रकाश केवो होय ? ते कहे ठे, यथा ॥ तृणगोमयकाष्ठाग्निकणदीपोपमप्रभा ॥ तारार्कचंद्रना रत्नसदृशी दृष्टिरष्टधा ॥ २ ॥ इति योगदृष्टि समुच्चये. आठमां प्रथमनी चार दृष्टिसुधी मिथ्यादृष्टी; अने पाठली चार दृष्टि ग्रंथिनेदथी होय, अर्थात् थिरादृष्टिथी सम्यक्त्व ठे अने ते दृष्टिठंने योगदृष्टि एवुं बिरुद घटे ठे, परंतु आठेने योगदृष्टि केम कही ? तेनो एवो उत्तर ठे के, पेहेली चार दृष्टिमां सत्संगना योग ठे, तेमांपण बीजा ध्यान करे ठे तेथी तेठंनेपण दृष्टि कहीए॥३॥

दर्शन सकलनानयग्रहे ॥ आपरहेनिज नावेरे ॥ हित
करीजननेसंजीवनी ॥ चारोतेह चरावेरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे थिरादिक दृष्टिवंत प्राणी समस्त ठए दर्शनना नयग्रहण करे, तेने अद्वेषगुं राखे अने जगत् पोताना स्वनावमां स्यात् नित्यानित्यपणे वर्त्ते ठे ते नावमां प्रवर्त्ते. शुद्ध दृष्टिनो नंग करे नही. नव्य जनने हितकारी शुद्धोपदेशरूप संजीवनी औषधीनो चारो चरावीने आपस्वरूप प्रगट करावे. ते उपर उपनययुक्त दृष्टांत कहेठे; कोइ नगरमां कुलवान मनुष्य रहे ठे. तेने बे स्त्री ठे. एक प्रौढ, सुशील, विनीत ठे, बीजी वक्र ठे. वक्र स्त्री पोताना पतिसाथे कामक्रीमा करी दिवसे वृषन बनाववानी विद्याथी पतिने वृषन बनावी खेतरमां मुके ठे. प्रौढ स्त्री स्वामिना प्रेमने लीधे वृषनरूपस्वामिपासे रही, चारापाणीथी सार संनाल करे ठे. कटलाएक दिवसे विद्याधरदंपती ते रस्तेथी विमानमां बेसी जतां, वृषनने देखीने विद्याधरे पोतानी पत्निनें कह्युं के, आ स्त्री जे वृषननी सेवा करे ठे, ते तेनी प्रौढ पत्नि ठे अने ते वृषननी नानी स्त्रीए पोताना पतिने वृषन करेलो ठे. एवुं चमत्कारिक वृतान्त सांनली विद्याधरनी स्त्रीए कह्युं, के एवो कांइ योग ठे, के जेथी आ वृषन, पुरुष थाय ? विद्याधरे कह्युं के अमुक वड समीपे जे औषधी ठे, ते जो आ वृषनने चरावे तो ते पुरुष थइ जाय. विद्याधर एम कही चाल्यो गयो. प्रौढ स्त्रीए ते विद्याधरनी सर्व वात सांनली अने तेना वचननी प्रतीतथी प्रयत्न करी ते वडनी आसपासनी सर्व औषधी ग्रहण करीने तेनो चारो वृषनने चराव्यो. तेथी वृषन पुरुष थयो. प्रौढ स्त्रीनी सेवा नक्ति पतिए जाणी. आ दृष्टांतनो

उपनय आप्रमाणे छे. पुरुष ते आत्मा; जेणे वृषभ बनाव्यो ते अशुद्ध चेतना स्त्री; जेणे सेवाभक्ति करी ते शुद्ध चेतना स्त्री; विद्याधर ते गुरु; विद्याधरनी स्त्री ते दया-रूप धर्मकरणी; वड ते मनुष्यगति; संजीवनी चारो ते सम्यग् दृष्टिपणुं, इत्यादि सकल सामग्रीवंतने संजीवनीचारो चरावी यथास्थित भर्त्तार कर्यो. तेवी रीते शुद्ध चेतनाने अनुवर्त्ततो सर्व गुणनुं भाजन थाय. एप्रमाणे थिरादिक चार दृष्टिनो धणी सर्व जीवने हितकारी उपदेश आपे ॥ ४ ॥

दृष्टिथिरादिक चारमां ॥ मुगति प्रयाणनभाजेरे ॥ रयणि
शयनजेमश्रमहरे ॥ सुरनरसुखतेमछाजेरे ॥ वीर० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ थिरादिक चार दृष्टिमां मुक्तिनुं प्रयाण के० गमन रोकाय नही, कारणके ए दृष्टिवंत प्राणी प्रायः प्रतिपाति न होय. जेम वांछित नगरे प्रयाण करतां, वचमां रात्रे विश्राम लइए अने तेथी जेम श्रम के० थाक दुर थाय अने इछित नगरे सुखेथी पहोचाय तेम सम्यग् दृष्टिप्राणीने मुक्ति जतां वचमां सुबाहु कुंवर तथा श्रीपाला दि जेम देव मनुष्यना भव करवा पडे, परंतु मुक्ति पुरे अवश्य पहोंचाय ॥ ५ ॥

एह प्रसंगथी में कह्युं ॥ प्रथमदृष्टि हवे कहीएरे ॥ जिहां
मित्रातिहां बोधजे ॥ ते तृण अगनिसोलहीएरे ॥ वीर० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त सर्व प्रसंगथी कह्युं, ते योगदृष्टि तथा ओघदृष्टि सामान्य रीते सर्व संसारी जीवनी वर्णवी. दृष्टि के० देखवुं, जाणवुं ते ज्ञानावरणीयना क्षयोपशम आश्री छे, पण तेनो अहीं अधिकार नथी. अहीं तो मित्रादि आठदृष्टिनो अधिकार छे, तेमां प्रथम मित्रा दृष्टिनां लक्षण, क्रिया तथा बोध कहीए छीए. सत् श्रद्धावंतना संगथी असत् प्रवृत्ति नही करतां, सत् प्रवृत्ति करवी; अने ज्ञाननो बोध होय, तेथी ते दृष्टि कहेवाय. ज्यां मित्रादृष्टि होय त्यां मिथ्यात्व दर्शननी मंद स्थिति तथा मंद रस होय अने तृणना अग्नि सरखो अल्प बोध होय ॥ ६ ॥

व्रतपणइहांयमसंपजे ॥ खेदनहींशुभकाजेरे ॥ द्वेष
नहीं वली अवरशुं ॥ एहगुणअंगविराजेरे ॥ वीर० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिने विषे पांचयम प्राप्त थाय. १ अहिंसा २ सत्य ३ अस्तेय ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह, आ पांचयम छे. वली शुभ कार्य जेमके दान, दया, देवगुरुनी भक्ति इत्यादिमां खेद वा आलस न थाय. वली बीजा दर्शनीओना तथा प्रकारना देखीने द्वेष न उपजे. एप्रमाणे सत् प्रवृत्तिनागुण, असत् प्रवृत्तिनुं निवारण करवाथी प्रगटे.

१ पांच महाव्रत ते पांच यम छे. २ शौच संतोषादि पांच नियम छे. ३ योग, पद्म इ-

त्यादि आसन ४ पवननुं रुंधन ते प्राणायाम ५ इंद्रियोने विषयोमां न प्रवर्त्तावबी ते प्रत्याहार ६ शुद्ध वस्तुनो यथार्थ निरधार ते धारणा ७ ध्येयनुंज चिंतवन ते ध्यान ८ ध्येयनो तन्मयपणे अनुजव ते समाधि. ए अष्टांग योग प्रवृत्ति ले ॥ ७ ॥

योगनांबीज इहांग्रहे ॥ जिनवरशुद्धप्रणामोरे ॥ जावा
चारजसेवना ॥ जवउद्वेगसुगमोरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वली बीजी पण अष्टांगयोग प्रवृत्ति ले. १ अद्वेष २ जिज्ञासा ३ शुश्रुषा ४ श्रवण ५ बोध ६ मीमांसा ६ परिशुद्धि ८ अप्रतिपत्ति इत्यादि योगना बीज आ दृष्टिमां ग्रहण करे. नाम, स्थापना, द्रव्य अने जाव एवा चार निक्षेपें जिनेश्वरने शुद्ध प्रणाम करे. सूत्रोक्त प्रवृत्तिए प्रवर्त्तनारा, पंचाचारने यथार्थ पालनारा अने शुद्ध जापक एवा जावाचार्यनी सेवना करे अने जवोद्वेग के० संसारथी उदासीनता तेज मोक्षप्राप्ति करावे ले, एम जाणे ॥ ८ ॥

द्रव्य अजिग्रह पालवा ॥ उषधप्रमुखने दानेरे ॥ आदर
आगम आसरी ॥ लिखनादिक बहुमानेरे ॥ वीर० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ ग्रंथिजेदविना जाव अजिग्रह होय नहीं, तेथी द्रव्यअजिग्रह हर्षेथी पाले, अर्थात् औषध, वस्त्र, पात्र प्रमुख देवाना अजिग्रह आदर—सत्कार सहित आगम विधिने अनुसारे साधु—मुनिराजने उचित होय ते आपे तथा बहुमान पूर्वक पुस्तक लखाववा प्रमुख उद्यम करावे ॥ ए ॥

लेखन पूजन आपवुं ॥ श्रुतवाचना उद्ग्राहोरे ॥ जाव
विस्तार सज्झायथी ॥ चिंतनजावनचाहोरे ॥ वीर० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ सिद्धांत लखाववामां तथा वीतरागनां बिंबोना पूजनमां द्रव्यादि सामग्री आपवाने सावधान होय; वली सन्मार्ग प्ररुपक श्रुत के० सिद्धांतनी वाचनानो उद्ग्राही के० योग मेलववा उद्यम करे, वली स्वाध्याय ते वांचना प्रमुख पांच प्रकारथी करी जाव विस्तार के० जाव आस्वादिकनां कारणो वधारे, अने तेनुं चिंतवन तथा जावनानी चाहना करे ॥ १० ॥

बीजकथाजलीसांजली ॥ रोमांचितहुवे देहरे ॥ एह
अवंचकयोगथी ॥ लहीए धरम सनेहरे ॥ वीर० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ संवेग जावनी यथास्थितता, शम, संवेग, सत्प्रवृत्तिलक्षण रूप श्रद्धा, निराशय परोपकारकरण, दुःखितानुकंपा, सत्शीलानुचरण, औदार्य, धैर्य, गांजीर्य प्रमुख बीज

कथा० योगांग कथा श्रवण करीने हर्षोत्कर्षयुक्त रोमांचित शरीर थाय. एवा प्रशस्त बाह्य संयोग मलवाथी, सदभ्यास करवा कराववानां साधन मलवाथी योगनुं अवंचकपणुं तेने प्राप्त थाय. तेथी ते प्राणी विषक्रिया वांछे नहीं, क्रिया निष्फल करे नहीं, ते अवंचक योग समजवो. ते अवंचक योग पामीने परमोत्कृष्ट धर्मस्नेह पामे. मनमां एम विचारे, के आ लाभ दुष्कर पणे पाम्यो छुं ॥ ११ ॥

सद्गुरुयोगेंवंदनक्रिया ॥ तेहथीफलहोयजेहोरे ॥ योग
क्रियाफलभेदथी ॥ त्रिविध अवंचकएहोरे ॥ वीर० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उत्तम गुरुनो योग पामीने वंदन क्रिया व्यवहारविधिपूर्वक साचवे, तेथी जे फल थाय ते आ प्रमाणे छे. मनने विशुद्धपणे प्रवर्त्तावदुं ते योग अवंचक कहिए तथा वचन अने कायाने निरवद्यपणे प्रवर्त्ताववां ते क्रिया अवंचक कहिए. ते प्रमाणे करवाथी मिथ्यात्व तथा विषय कषायादिकनी हीनताए शुभगति प्रमुख फल पामे, ते फल अवंचक कहीए. आ त्रणप्रकारना अवंचक योग ते प्राणीने होय. यद्यपि आ त्रण अवंचक योग साधुने उद्देशीने होय, परंतु अवक्र सामायिकें तथा अमत्सरयुक्त भावसमाधिपणे द्रव्यथी ए होय छे ॥ १२ ॥

चाहेचकोरतेचंदने ॥ मधुकरमालतीभोगीरे ॥ तेमभवि
सहजगुणेहोये ॥ उत्तमनिमित्तसंयोगीरे ॥ वीर० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेम चकोर पक्षी चंद्रनी चाहना करे अने जेम भ्रमर मालतीनां पुष्पनो भोगी होय तेम आ भव्य प्राणीने यद्यपि मोहनो क्षयोपशम नथी, तथापि उत्तम के० प्रधान जे शुभ निमित्तो तेनो संगी थाय, एवो सहज गुण होय ॥ १३ ॥

एह अवंचक योगते ॥ प्रगटे चरमावर्त्ते रे ॥ साधुने
सिद्धदशासमुं ॥ बीजनुं चित्त प्रवर्त्तेरे ॥ वीर० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एवा अवंचक योग ज्यारे चरम पुद्गल परावर्त्त संसार बाकी रहे, त्यारे उपजे. तोपण केटलाएक प्राणी जे क्रियायोगी होय तेउने होय, अने साधुउने तो सिद्ध अवस्था समान परमानंद आपनार होय. आ मित्रादृष्टिमां वर्त्तता प्राणीने, बीज जे योगना अंग, समता औदार्य प्रमुख, ते ग्रहण करवाने प्रयत्नवालुं चित्त होय ॥ १४ ॥

करणअपूर्वनानिकटथी ॥ जे पेहेलुं गुणठाणुंरे ॥ मुख्य
पणेतेइहांहोये ॥ सुयशविलासभुंटाणुंरे ॥ वीर० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ अहिं छेला यथाप्रवृत्ति करणना निकट के० समीपपणाथी स्थिति तथा र-

समां मंदपणे मिथ्यात्वगुणठाणे ते प्रवर्त्ते. वली शिवराजराजर्षिप्रमुखनी पूर्वे जे दशा हती, तेवी मुख्यपणे अहीं होय. वली ते उत्तम यशना विलासनुं ठाणुं के० स्थानक होय. सारांशके अभव्य, दुर्भव्य, बहुपुजलपरावर्त्तनवाला शठ, हठकदाग्रही, अत्यंत अभिनिवेशी, गुरु आशातनावालाने आ दृष्टि न होय ॥ १५ ॥ इतिप्रथम मित्रादृष्टि विचार.

॥ ढाल बीजी ॥

॥ मनमोहनमेरे ॥ एदेशी ॥

दर्शनतारादृष्टिमां ॥ मनमोहनमेरे॥ गोमयअग्निसमान ॥ म० ॥
शौचसंतोषने तपभलुं ॥ म० ॥ सज्झाय ईश्वरध्यान ॥म०॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेतारादृष्टिनोविचार कहेछे. मित्रादृष्टि करतां तारादृष्टिमां मिथ्यात्व केवुं मंद होय तथा बोध केवोहोय ते कहे छे. मिथ्यात्व विशेष मंद होय अने बोध गोमय के० छाणानी अग्नि समान होय. जेम छाणानो अग्नि धीमे धीमे वधे, तेम बोध वधतो जाय, अर्थात् कांइक कार्यसाधक थाय. तेथी शौच के० मननिर्मल रहे. संतोषके० प्राप्तवस्तुथी विशेष तृष्णा न राखे; इछानुंरुंधनकरे. सझायके० श्रुतअध्ययन प्रमुख करेअने इश्वरध्यानके० परमात्मानुं ध्यानकरे. आत्महित चिंतवे अने विचारेकें रखे अकार्य सेवीश तो दुर्गति पामीश ॥ १ ॥

नियमपंचइहांसंपजे ॥ म० ॥ नहीं किरिआउद्वेग ॥ म० ॥
जिज्ञासागुणतत्त्वनी ॥ म० ॥ पणनहीनिजहठटेग ॥ म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमां पूर्वोक्त पांचनियम उपजे.मोटीक्रियामां अखेदपणे प्रवर्त्ते,अर्थात् परलोकहितार्थे कामकरतां उद्वेग न पामे. वली तत्त्वगुणके० शुद्धगुण तत्त्वसंबंधीनी जिज्ञासाके० चाहनाहोय, तथा करण, करावण, अनुमोदनरुप निर्विकारपणुं होय, परंतु पोताना हठकदाग्रहनो टेक विशेषपणे नज होय ॥ २ ॥

एहदृष्टिहोयवरतता ॥ म० ॥ योगकथाबहुप्रेम ॥ म० ॥
अनुचिततेहनआचरे ॥ म० ॥ वाल्योवलेजेमहेम ॥ म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमां वर्त्ततो प्राणी अष्टांग योगादिकनी कथामां बहुप्रेम धारण करे. योगशुद्धि, क्रियाशुद्धिमां प्रवर्त्ती फलशुद्धि करे अर्थात् जेथकी परलोक संबंधी अहित थाय तेवुं अनुचित कार्य करेनहीं. वली ते प्राणीने कोइ हितशिखामण कहे, तेनी साथे सुवर्ण जेमवाल्युं, वले तेनीजेमसरलताराखे ॥ ३ ॥

विनयअधिकगुणीनोकरे ॥ म० ॥ देखेनिजगुणहाण ॥ म० ॥
त्रासधरे भवभयथकी ॥ म० ॥ भवमानेदुःखखाण ॥ म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ पोताथी अधिकगुणवंतनो विनयकरे अने पोतेविशेष गुणीहोयछतां पोतामां न्यूनता नावे, अर्थात् अहंकृति वा निजउत्कर्ष नकरे. वली चतुर्गतिरुप संसारने दुःखनी खाणदेखीने तेना भयथी त्रास पामे. यतः ॥ जम्म दुखं जरादुखं, रोगाणि मरणाणिय ॥ अहोदुःखेहु संसारे, जथ्थथार्कि संतिजंतुणो ॥ ४ ॥

शास्त्रघणांमतिथोमली ॥ म० ॥ शिष्टकहेतेप्रमाण ॥ म० ॥
सुयशलहेएभावथी ॥ म० ॥ नकरेजूठमफाण ॥ म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ शास्त्र घणांछे अने पोतानी मति के० बुद्धि अल्पछे, माटे शिष्ट महानगुरु कहे ते वचन प्रमाणकरे. सम्यग् रीतेमन, वचन, कायाए कारण,करावण अनुमतिरुपे निर्विकारीपणुं होय, तेप्रमाणे विशिष्ट भावना भावतो थको सुयशके० निर्मल कीर्त्तिपामे. ते अछतागुणोनो जुठो के० असत्य मफाण के० आमंबर करे नही. शुभयोग कथामां प्रीति राखे ॥ ५ ॥ इति तारादृष्टि विचार.

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवालतणे भवे जीरे ॥ ए देशी ॥

त्रीजीदृष्टिबलाकहीजी ॥ काष्ठअग्निसमबोध ॥ क्षेपनहीआसनसधेजी ॥
श्रवणसमीहासोधरे ॥ जिनजी ॥ धनधनतुजउपदेश ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे बला नामनी त्रीजीदृष्टि वर्णवेछे. आदृष्टिमां सुखासने बेठेलानीजेम स्थिरचित्तहोय. देववंदन, गुरुवंदन,आवश्यकादि कार्य अनुकूलपणे करे,यद्यपिमिथ्यादर्शनछे तोपण मिथ्यात्वनी बहुजमंदताहोय,अर्थात् मिथ्यात्वीउना भ्रान्तिरुप चमत्कारिक ज्ञान देखीने चपलपरिणामवालो नथाय. आदृष्टिमां शास्त्रश्रवणथी काष्ठना अग्नि सरखो दृढबोध होय. वली क्रियाउनुं अन्योन्य मिश्रणकरवुं तेक्षेपदोष कहेवाय, ते बोक्षेप दोष नहोय,पर्यंकासनादि योगासनने साधे. सिद्धांत श्रवण करवानी समीहाके० तीव्रइच्छाकरे. तेवी इच्छाने सोधके० साधे. हे,जिनजी! तमारा उपदेशने धन्य छे, एवो सत्कार करे, अने पोताना आत्माने धन्य माने ॥ १ ॥

तरुणसुखीस्त्रीपरिवर्योजी ॥ जेमचाहेसुरगीत ॥ सांभलवा
तेमतत्त्वनेजी ॥ एदृष्टिसुविनीतरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम कोई तरुण के० युवान पुरुष धनाढ्य सुखी होय, वली सुंदर स्त्रीए युक्त होय; ते जेम देवगांधर्वनां गीत–गायन श्रवण करवानी चाहना करे, तेवीरीते आ दृष्टिवंत प्राणी तत्त्व ज्ञान श्रवण करवानी चाहना करे. तेवीज रीते वली आ दृष्टिवाला विनयवंत पण होय ॥ २ ॥

सरिएबोधप्रवाह्नीजी ॥ एविणश्रुतथलकूप ॥ श्रवण
समीहातेकिसीजी ॥ शयितसुणेजेमनूपरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टि बोध ज्ञान प्रवाह्नी सरिके० सरछे, जेम कूवा अने वावमां पाणीनी सर खनन करवाथी निकली आवे, अने ते सरथी पाणी तरत प्राप्त थाय, तेम आ दृष्टिथी ज्ञान प्रवाह्नी सर प्राप्त थाय. जेम राजा शय्यामां सुतांथकां याचकोनां गीत श्रवण करे, पण विषयकषायमां ग्रस्त थवाथी ते गीतमां ध्यान न रहे, तेवी रीते आ दृष्टि विना श्रुत श्रवण मात्र बोधकारक न थाय. सर्व थल कूप समान थाय ॥३॥

मनरीझेतनउल्लसेजी ॥ रीझेबुझेएकतान ॥ तेइछाविण
गुणकथाजी ॥ बेहेराआगलगानरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जे श्रवणथी मनहर्ष पामे, शरीर रोमांचित थाय, अने हर्ष अने बुझ के० बोधनी एकतान के० थाय, ते श्रवणज सार्थकछे. तेवी प्रबल इछा विना तत्त्व कथा श्रवण करवी, ते जेम बेहेरा आगल गीत निष्फलछे तेम ते पण निष्फल जाणवी ॥४॥

विघनइहांप्रायेंनहींजी ॥ धर्महेतुमांकोय ॥ अनाचारपरि
हारथीजी ॥ सुयशमहोदयहोयरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिमां वर्त्ततां धर्मना कार्य करतां प्रायः कांइ विघन के० अंतराय थाय नहीं, केमके अनाचारनो आ दृष्टिमां परिहार के० त्याग छे; अने तेम होवाथी उत्तम यश अने महान् उदयनो लाज पण थाय. ए दृष्टिमां शुन योगना आरंन, सुकथाश्रवण इत्यादि महालनो छे ॥ ५ ॥ इति बला दृष्टि विचार.

॥ ढाल चोथी ॥

॥ झांझरीआ मुनिवर धनधन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

योगदृष्टिचोथीकहीजी ॥ दीप्तातिहांनउत्थान ॥ प्राणायामते
नावथीजी ॥ दीपप्रनासमज्ञान ॥ मनमोहनजिनजी ॥ मीठी
ताहरीवाण ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे दीप्तानामे चोथी दृष्टिनुंस्वरुपकहेछे-१ समान २ उदान ३ व्यान ४अपान अने प्राणायाम. आपांच प्रकार वायु संबंधीछे. तेमां समान ते नानि अनेहृदयवचेनोवायु, उदानते हृदय अने मस्तक वचेनो वायु, व्यान तेसर्वत्वचावर्तीवायु, अपान ते अंगवर्तीवायु अने प्राणायामते श्वासोछ्वासरुंधन. एप्रमाणे वायुना पांच नेदछे. तेमां रेचक, पूरक कुंनक पवन साधवाथी प्रशांतवाहितानो लानथाय. ए

कक्रियामां अपरक्रियानो उपयोग तेउत्थानदोष, तेआदृष्टिमां नहोय. यद्यपि अहीं ग्रंथिभेद थयो नथी, तोपण प्रशस्तयोगवंतने भावथीप्राणायाम होय. आदृष्टिमां दीपप्रभा समान बोधछे, अर्थात् तत्त्वश्रवण शुश्रूषाअने यमनियमादिक फलवालो पण सूक्ष्मबोधते जाणवो. हे! मनना प्यारा. जिनजी तमारो उपदेश अत्यंत मधुरछे ॥ १ ॥

बाह्यभावरेचकइहांजी ॥ पूरकअंतरभाव ॥ कुंभक
थिरतागुणेकरीजी ॥ प्राणायामस्वभाव ॥ मन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ बहिरात्म प्रवृत्ति जेबाह्यभावतेने कढववारूप रेचकपनुं आदृष्टिमां छे. वली अंतरात्म वृत्तिवाला गुणो दाखलकरवाते पूरकपणुंछे अने प्राप्तथयेला गुणोनेस्थिरकरवाते कुंभकपणुंछे. एवीरीते प्राणायमरुप आदृष्टिनो स्वभावछे, अनेश्वासरुंधनरुप प्राणायामनोपण एवोज स्वभावछे ॥ २ ॥

धर्म अर्थेइहांप्राणनेजी ॥ छंमेपणनहींधर्म ॥ प्राण
अर्थेसंकटपमेजी ॥ जुओएदृष्टिनोमर्म ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमां वर्त्ततो प्राणी धर्मअर्थेप्राणने तृणनी जेमत्यागे, पणप्राणत्यागरूप संकटपमे तोपण धर्मतजेनहीं, एवोआदृष्टिनो मर्मके० रहस्यछे, तेतमे ध्यानमांल्यो ॥३॥

तत्त्वश्रवणमधुरोदकेंजी ॥ इहांहोये बीजप्ररोह ॥ खार
उदकसमभवत्यजेजी ॥ गुरुभगति अद्रोह ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिमां सिद्धांत प्रमुखमांथी तत्त्व श्रवण रूप मधुर उदकनुं सिंचन थवाथी बीज के० संसारनी अनाशंसा, विरक्तता प्रमुख प्ररोह के० अंकुरा प्रगट थाय. वली क्षार उदक समान भवाभिनंदी पणानो त्याग थाय; तेमज गुरु भक्तिनो अद्रोही थाय अर्थात् करनारो थाय. ॥ ४ ॥

सूक्ष्मबोधतोपणइहांजी ॥ समकितविणनहोय ॥ वेद्य
संवेद्यपदेंकह्योजी ॥ तेनअवेद्येंजोय ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि सूक्ष्म बोध आ दृष्टिमां नथी, कारणके ग्रंथिभेद थया विना सम्यक्त्व थाय नहि, अने सम्यक्त्व विना सूक्ष्म बोध होय नहीं. सूक्ष्म बोध ते वेद्य संवेद्य पदरूप सम्यक्त्व ते आ दृष्टिमां नथी. अहीं तो अवेद्य पद के० मिथ्यात्व छे. तेथी सूक्ष्म बोध नथी. ते संबंधी विस्तार योगदृष्टिसमुच्चय ग्रंथमां छे. अहीं संक्षेपथी बतावीए छीए.

मित्रादि चार दृष्टि यद्यपि क्रिया प्रमुखमां सत्संगति आदि गुणो तथा धर्मनां बी-

जनो संग्रह करे, परंतु ए चारे दृष्टि ए अवेद्य पद छे अर्थात् सूक्ष्म तत्त्वबोध नथी. जेम पक्षीनी छाया पाणीमां पडतां पाणी पण तेवीज प्रवृत्ति करे, तेवी रीते आ चार दृष्टिमां पण तेवीज प्रवृत्ति होय, सूक्ष्म तत्त्व बोध न होय. ते अवेद्य पद ते अपद छे. अवेद्य पद एटले ज्यां अंतर मुहूर्त्त प्रमाण मात्रमां दर्शन मोहनीयनो क्षयोपशम रूप ग्रंथि नेद करे, एवुं आत्मानुं पंडित वीर्य स्फुरे नहीं ते पद समजवुं.

थिरादिक चार दृष्टिमां वेद्य संवेद्य पद छे. वेद्य के० जे सूक्ष्म बोध, सम्यग् वेदन छे, अर्थात् मिथ्यात्व क्षय छतां यद्यपि छेली पाप प्रवृत्ति नरकादि गमन रूप श्रेणिकादिकनी जेम तप्तलोहपदस्पर्शप्रवृत्ति सरखी होय, परंतु ते वेद्य संवेद्य- पद सूक्ष्म बोध सहित आत्म पंडित वीर्यनुं स्फुरण मिथ्यात्वादिकना क्षयथी होय ॥ ५ ॥

वेद्यबंधशिवहेतुछेजी ॥ संवेदनतसनाण ॥ नय
निक्षेपेंअतिनलुंजी ॥ वेद्यसंवेद्यप्रमाण ॥ मन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथी वेद्य पदनो बंध ते शिवके० मोक्षनो हेतु छे; संवेदन पद ते तेनुं ज्ञान छे. नैगमादि सप्तनय, नामादि चारनिक्षेपा, स्यादस्ति आदि सात नंग तथा गमा एटले सरखा पाठ, इत्यादिकथी अति निर्मल एवुं वेद्य संवेद्य पद प्रमाण छे. ॥ ६ ॥

तेपदग्रंथिविनेदथीजी ॥ छेहेलीपापप्रवृत्ति ॥ तप्तलोह
पदधृतिसमीजी ॥ तिहांहोयअंतनिवृत्ति ॥ मन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ते वेद्य संवेद्य पद, दर्शन मोह नाशथी ग्रंथिनेदें उपजे, तेथी अनादिनी अतत्त्ववासना मटे. संसारमां छेली पाप प्रवृत्ति, ते अग्निनीए तप्त एवा लोह उपर पग मांडवाना धैर्य समान अनर्थनीकरनारी एवी पाप प्रवृत्ति लागे. अंते ए पाप प्रवृत्तिनी पण अहीं निवृत्ति थाय. ए वेद्य संवेद्य पदनुं लक्षण जाणवुं ॥ ७ ॥

एहथकीविपरीतछेजी ॥ पदतेअवेद्यसंवेद्य ॥ नवा
निनंदीजीवनेजी ॥ तेहोयवज्रअनेद्य ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वेद्य संवेद्य पदथी विपरीत लक्षणवालुं पद ते अवेद्य संवेद्य, ते छतां मिथ्यात्व होय अने सूक्ष्म बोध न होय, आ चार दृष्टिमां दर्शनमोहनीयनो क्षयोपशम, ग्रंथि नेद न होय. तेथी नवाभिनंदीके० संसारनां सुखमां अतिशय राचनारा प्राणीने अवेद्य संवेद्य पद होय. वज्रनी जेवुं एअनेद्य छे. अनादि कालथी छे ॥ ८ ॥

लोनीकृपणदयामणोजी ॥ मायीमच्छरठाण ॥ नवा
निनंदीनयनर्योजी ॥ अफलआरंनअयाण ॥ मन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ लोजी के० सर्वत्र याचक, धनवतां अजोगी, कृपण के० इव्यादिक न आपनार, तुच्छ प्रकृतिवालो, दयामणो के० सर्वनुं अहित इच्छनार, मायी के० कपटी, गुप्तस्वार्थ साधक, मछर के० परसुखे दुःखी, जवाजिनंदी, जयजयोके० सहुथी जय पामतो रेहेनार अने अयाण के० अज्ञान, आ आठ दोषवाला अर्थात् आ आठ दोष जेनामां विद्यमान छे ते प्राणी धर्मनो आरंज करे, ते जो सत्य होय तो पण कुशला देवीनी जेम तेनुं निष्फल थाय ॥ ए ॥

ऐहवा अवगुणवंतनुंजी ॥ पदछे अवेद्य कठोर ॥ साधु
संग आगमतणोजी ॥ तेजीत्यो धुरंधोर ॥ मन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त दोषवालांने अवेद्य पद कठोर के० बहुज आकरूं होय छे, तेथी ते प्राणीने ग्रंथिजेद न थाय, त्यां सुधी तेने सूक्ष्मबोध पण न थाय. परंतु साधुनो संग अने सिद्धांतनुं श्रवण, आ बेहेतु मलवाथी ते धुर के० प्रथम घोर के० महामोहनीय उपर जयमेलवे ॥ १० ॥

ते जीते सहजें टलेजी ॥ विषमकुतर्कप्रकार ॥ दूर
निकटहाथीहणेजी ॥ जेमऐबठरविचार ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ ते मोहनीयने जीतवाथी विषम के० आकरा माठा तत्त्वना विचाररूप कुतर्क सेहेजे टली जाय. जेम बे बठर के० अज्ञानी, मूर्ख हता, तेउने हाथी उपर बेठेला मावते कह्युं के तमे दूर रहो, नहीं तो हाथी तमने मारी नांखशे. ते सांजली ते बंने बठरे विचार कर्यो के हाथी प्राप्त थयेलाने हणे छे के अप्राप्तने हणे छे? जो प्राप्तने हणे छे, तो मावतने हणे अने अप्राप्तने हणे तो आवनारने हणे छे, एवो विचार करेछे, तेटलामां हाथी आव्यो, अने ते बंनेने हणी नांख्या. आवा कुतर्कवाला विचार सहेजे टली जाय ॥ ११ ॥

हुंपाम्योसंशयनहींजी ॥ मूरख करे ऐ विचार ॥ आलसु
आगुरुशिष्यनोजी ॥ ते तोवचनप्रकार ॥ मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हुं तत्त्वज्ञान पाम्यो छुं, तेमां कांइ संशय नथी, एवा विचार मूर्ख होय ते करे. जेम आलसु गुरु अने आलसु शिष्य बंनेने परस्पर अनेक वचनना वाद थतां स्वाध्यायमां आवीशक्या नहीं, तेनी जेम ते बाबत समजवी ॥ १२ ॥

धीजेतेपति आववुंजी ॥ आपमतें अनुमान ॥ आगम
ने अनुमानथीजी ॥ साचुंलहे सुज्ञान ॥ मन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ तेथीजे प्राणी धी के० पोतानी बुद्धिए पति आववुं के० प्रत्यय उपजावे अर्थात् पोताना अनुमान प्रमाणे पोतानी मतिपुर्वक निश्चय करे ते कांइ पण तत्त्व न पामे; अने जे आगम प्रमाणथी प्रवीण गुरुना अभिप्राय प्रमाणे प्रत्यय उपजावे के० निश्चय करे, तेज साचुं सुज्ञान के० उत्तम तत्त्वज्ञान प्राप्त करे ॥ १३ ॥

नहीसर्वज्ञजुजूआजी ॥ तेहनाजेवलीदास ॥ भगति
देवनीपणकहीजी ॥ चित्रअचित्रप्रकाश ॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली ते विचार करेके सर्वज्ञ वीतराग देव जूदा जूदा होता नथी. तेउं अवितथ्यवादी छे. तेमना जेउं दास के० सर्वज्ञ शासनना आराधनारा, तेउंने ते ते देवनी भक्ति पण कही छे. तेमां एक चित्रभक्ति बीजी अचित्र भक्ति एम बंनेना पण अनेक प्रकार छे ॥ १४ ॥

देवसंसारीअनेकछेजी ॥ तेहनीभक्तिविचित्र ॥ एक
रागपरद्वेषथीजी ॥ एकमुगतिनीअचित्र ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ जे वीतरागभाव पाम्या नथी अने संसारमां देवनाम धरावे छे, एवा अनेक देवो छे, अने तेमनी भक्ति विचित्र के० अनेक प्रकारनी छे. एक रागथी भक्ति, बीजी द्वेषथी भक्ति; तेवी सर्व विचित्र भक्ति समजवी अने एक केवल वीतरागनी भक्ति ते मुक्ति निमित्त होय अने ते अचित्र भक्ति कहेवाय ॥ १५ ॥

इंद्रियार्थगतबुद्धिछेजी ॥ ज्ञानछेआगमहेत ॥ असंमोह
शुभकृतिगुणेजी ॥ तेणेफलभेदसंकेत ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ए रीते भक्ति बे प्रकारनी छे. तेना फलभेद अनेक तरेहनाछे. जेमके कोइ प्राणीनी बुद्धि इंद्रियना विषयोमांज पहोचे छे, कोइनी बुद्धि ज्ञानप्राप्ति माटे आगममां प्रवेश करवा निमित्ते थाय छे.कोइने असंमोह पण थाय छे अने तेथी ते शुभ कृतिरूप गुणो प्राप्त करे छे. एवा अनेक प्रकारे फल भेदना पण बहु संकेतो छे ॥१५

आदरकिरिआरतिघणीजी ॥ विघनटलेमिलेलछि ॥ जिज्ञा
साबुधसेवनाजी ॥ शुभकृतिचिन्हप्रत्यछि ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ शुभकृति गुणोनुं स्वरूप कहे छे. विधिपूर्वक क्रियामां अत्यंत प्रीति उपजे, शुद्धक्रियामां अति उद्योग होय, हर्ष पण घणो होय. तेवां वर्त्तनथी कर्मावरणनां विघ्नो टले अने अक्षय भावी मोक्षरूप लक्ष्मी मलें. वली तत्त्वज्ञान जाणवानी जिज्ञासा थाय, बुद्ध के० ज्ञानी पुरुषना चरणनी सेवा करवानी इछा थाय, इत्यादि शुभकृतिनां चिन्हो प्रत्यक्ष जाणवां ॥ १७ ॥

बुद्धिक्रियाभवफलदीएजी ॥ ज्ञानक्रियाशिवअंग ॥
असंमोहकिरिआदियेजी ॥ शीघ्रमुगतिफलचंग ॥ मन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेनां फल कहे छे. इंद्रियार्थगत बुद्धिवाली क्रिया भव के० संसार फल-आपे छे. ज्ञानक्रिया मोक्षनुं अंगछे. ते ज्ञानपूर्वक असंमोह क्रियारूप चारित्र शीघ्र के० तत्काल चंग के० मनोहर मुक्तिनां फल आपे छे. यतः ॥ ज्ञानस्य फलं विरति विरतिफलं संवरो बोधः ॥ संवरफलं क्रिया निवृत्तिः, क्रियानिवृत्तेरयोगित्वं ॥ १८ ॥

पुद्गलरचनाकारमीजी ॥ तिहांजसचित्तनलीन ॥ एक
मार्गतेशिवतणोजी ॥ भेदलहेजगदीन ॥ मन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ ज्यां समस्त पुद्गल रचना कारमी के० निर्माल्य जाणी अर्थात् भव ना-टकने बालके करेला धुलिग्रह जेवी असार जाणी, तेमां जेनुं चित्त लागे नहीं अ-र्थात् आसक्त न थाय, तेज एक मोक्षनो मार्ग छे. ते मार्गमां जे प्राणी भेद माने ते प्राणी जगत्मां दीन के० दुःखी जाणवो ॥ १९ ॥

शिष्यभणीजिनदेशनाजी ॥ कहेजनपरिणतिभिन्न ॥ कहे
मुनिनीनयदेशनाजी ॥ परमार्थथीअभिन्न ॥ मन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वीतरागनी देशना, गणधर प्रमुख शिष्य तथा तीर्थ स्थापनादि कार्य माटे होय छे ॥ अग्गिला ए धम्म देसणाए तिथ्थंकर नामकम्मं वेइज्जाइ ॥ इति आगम व-चनात् ते देशना सर्व मनुष्य सांभले, सांभलनारानी परिणति पण भिन्नभिन्न होय मुनिराजनी देशना पण नयेनये भिन्नभिन्न होय, देशना आपनारनी परिणति पण भिन्नभिन्न होय, परंतु तेउ सर्वे परमार्थे, स्याद्वाद मुद्राए अभिन्न जाणवा ॥ २० ॥

शब्दभेदझघमोकिस्योजी ॥ परमारथजोएक ॥ कहो
गंगाकरोसुरनदीजी ॥ वस्तुफरेनहींछेक ॥ मन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ शब्दभेदमां पण कांइ पण झघडो के० विवाद नथी. जो परमार्थ एक होय तो वाद शेनो होय ? जेम कोइ गंगाने सुरनदी कहे, कोइ जान्हवी कहे, तेम जुदा पर्याय नामथी कांइ वस्तुमां जरापण फेर पडे नही ॥ २१ ॥

धर्मक्षमादिकपणमटेजी ॥ प्रगटेधर्मसंन्यास ॥ तोझघमा
झांटातणोजी ॥ मुनिनेकवणअभ्यास ॥ मन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ आदृष्टिमां क्षमादि धर्म मटे अने मात्र धर्म संन्यास प्रगटे. धर्म संन्यास

सामग्री ते द्रव्य योगतुंज घर छे. ते अशठ पंडित तथा अमायीनेज होय अने एवा मुनिने कगडा प्रमुखनो अन्यास नज होय ॥ २२ ॥

अभिनिवेशसघलोत्यजीजी ॥ चारलहीजेणेदृष्टी ॥ ते
लेशेहवेपंचमीजी ॥ सुयशअमृतघनवृष्टि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ अभिनिवेश के० कदाग्रह, मात्सर्य इत्यादि सर्व दोष तजीने जेणे पूर्वोक्त चारदृष्टिओ प्राप्तकरी ते प्राणी पांचमी थिरादृष्टि पामे. ते दृष्टि केवी छे? सर्व दिशाए प्रवर्त्तनारा उत्तम यशरूप अमृतने वधारवाने घन के० मेघनी वृष्टि समान छे. गौतम स्वामीना पन्नरसे तापसना पारणानी जेम वृद्धि करनार छे. आचार दृष्टिमां ग्रंथिभेद नही परंतु सत्संगति अने सदाचार प्रवृत्ति होय ॥ इति दीप्ता दृष्टिविचार ॥२३॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

दृष्टिथिरामांहेदर्शननित्ये ॥ रतनप्रभासमजाणोरे ॥
भ्रांतिनहीवलीबोधतेसूक्ष्म ॥ प्रत्याहारवखाणोरे ॥ १ ॥
एगुणवीरतणोनविसारूं ॥ संभारूंदिनरातरे ॥ पशु
टालीसुररूपकरेजे ॥ समकितने अवदातरे ॥ए गुण० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे पांचमी थिरादृष्टि कहे छे. थिरा दृष्टिमां ग्रंथिभेद थवाथी सम्यग् दर्शन नित्य होय. बोध ते रत्ननी कान्ति समान होय. भ्रान्ति लेशमात्र न होय. तत्त्वार्थरूप सूक्ष्म बोधनुं यथार्थ ज्ञान होय. अज्ञान अने मिथ्यात्वना पुदगलो न छेदाता होय ते छेदाय. सरल बुद्धि होय. सर्व इंद्रियार्थ विषयोना रूंधन रूप प्रत्याहार प्रगट थाय ॥ १ ॥ आवो मोटो श्रीमहावीर स्वामीनो गुण हुं चित्तथी विसारूं नहीं. दिनरात निरंतर संभारूं, कारणके मारा इंद्रियार्थ गुणो विषयार्थे हता, पशु प्रायें हता, तेने टालीने सुररूप के० तत्त्वबोधवंत कर्या. दर्शन मोहना विनाशथी सम्यक्त्व गुण प्रगट थयो ॥ २ ॥

बालधुलिघरलीलासरखी ॥ भवचेष्टा[illegible]सेरे ॥ रिद्धि
सिद्धिसविघटमांपेसे ॥ अष्टमहासिद्धिपासेरे ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेम बालकोए करेली धुलिना गृहनी लीला परमार्थे गृहरूप सत्य नथी, तेम आ दृष्टिमां वर्त्तता प्राणीने संसारनी सर्व चेष्टा, पुद्गल विलास तेवाज भासे छे, अर्थात् सत्य लागता नथी. आवीरीते संसारनी अनित्यता जाणवाथी अंतरंगनी सर्व

सिद्धि तेना घटमांज प्रगट थाय. संतोषरूप महासुखोत्पादक गुण प्रगटे. अष्ट महासिद्धि तेनी पासेज रहे. समस्त लब्धिनी सिद्धि ते योगरूप कल्पवृक्षनां कुसुम छे एम माने ॥ ३ ॥

अहीं अष्ट महासिद्धिनुं वर्णन करे छे. १ महिमा के० शरीरादिकने मेरू पर्वत करतां पण मोटां करवानी शक्ति. २ लघिमा के० शरीरादिकने वायु करतां पण लघु करवानी शक्ति. ३ गरिमा के० तेउने वज्र थकी पण अत्यंत भारे करवानी शक्ति. ४ प्राप्ति के० भूमिए रह्याछतां अंगुलने मेरूना शिखरे पहोंचाडवानी शक्ति. ५ प्राकाम्य के० पाणीने विषे पण पृथ्वीनी जेम गमनादि करवानी शक्ति. ६ ईशिता के० त्रैलोक्य रीद्धि करण तथा तीर्थेश्वरादि रीद्धि विकुर्वण शक्ति. ७ वशिता के० सर्व जीवने वश करवानी शक्ति. ८ अप्रतिघात के० पर्वतमां पण प्रवेश करवानी शक्ति.वळि ते उपरांत अंतर्धान, अदृश्य करण, नानारूप करण इत्यादि अनेक चमत्कारिक शक्ति प्रगट थाय.

विषयविकारेंनइंद्रियजोडे ॥ तेइहांप्रत्याहारोरे ॥ केवल
ज्योतितेतत्त्वप्रकाशे ॥ शेषउपायअसारोरे ॥ ए गुण० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शब्दादि त्रेवीश विषयना वसे बावन विकारोमां इंद्रियोने जोडे नहीं. अर्थात् आसक्त न करे ते रूप जे प्रत्याहार गुण ते आ दृष्टिमां उपजे. ते प्राणीनी ज्योति मात्र तत्त्व रहस्यनेज प्रकाश करे, अर्थात् ते तत्त्वज्ञाननेज साररूप माने अने अने संसारना बीजा सर्व उपाय के० प्रपंचने असार माने ॥ ४ ॥

शीतलचंदनथीपणउपन्यो ॥ अग्निदहेजेमवननेरे ॥ धर्म
जनितपणभोगइहांतेम ॥ लागेअनिष्टतेमननेरे ॥ ए गुण० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ ते उपर दृष्टांत कहे छे. जेम बावना चंदन अत्यंत शीतल छतां तेमांथी उत्पन्न थयेलो अग्नि वनना सर्व वृक्षने बाळे छे, तेम न्यायसंपन्न वैभवथी तथा एकपत्नीव्रतादिकथी गृहस्थ धर्मनी सेवना करे छे, तोपण ते प्राणीने ते भोगादिकनी सेवना मनमां अनिष्ट लागे. अवसर प्राप्त थतां भोगादिकनो त्याग करवामां लेशमात्र वार लगाडे नहीं. गृहस्थावासने पाश समान माने ॥ ५ ॥

अंशेहोयइहांअविनाशी ॥ पुद्गलजालतमासीरे ॥ चिदा
नंदघनसुयशविलासी ॥ केमहोयजगनोआशीरे ॥ ए गुण० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिमां अंशे के० थोडे भागे अविनाशी थाय. जेम जेम आश्रवना हेतु न्यून थाय, तेम तेम आत्मा निरावरणी थाय. पुद्गलनी सर्व रचनाने बाजीग-

रनी बाजी जेवी जाणे. ते प्राणी ज्ञाननो जे आनंद तेना समूहने प्राप्त करावनारो उत्तम यश तेना विलासमां रमणता करनारो थाय, अने तेथी त्रण भुवनरूप जगतुमां कोइ पण वस्तुनी तेने आशा न होय; मात्र सहज स्वरूपनो विलासी होय ॥५॥ दर्शनमोहनीना क्षयोपशमे वा उपशमे आ दृष्टि होय.

॥ ढाल छठी ॥

॥ जोलीमा हंसारे विषयन राचियें ॥ एदेशी ॥

अचपलरोगरहितनिठुरनहिं ॥ अल्पहोयदोयनीति ॥
गंधतेसारोरेकान्तिप्रसन्नता ॥ सुस्वरप्रथमप्रवृत्ति ॥ १ ॥
धनधनशासनश्रीजीनवरतणुं ॥

अर्थ ॥ वली ते प्राणी इंद्रियार्थना चपलपणा रहित होय. सम्यक्त्वथी तेनुं चित्त स्थिर होय. वली रोग रहित शरीर होय. तेनुं हृदय कठण न होय, परंतु कोमल होय. लघुनीति तथा वडीनीति बंने शरीरमां अल्प होय. शरीरनो मेल सुरजिवंत होय. शरीरनी कान्ति पण सुंदर होय. वचन पण प्रसन्नतावालां होय. मधुर स्वर होय. ए प्रमाणे आदृष्टिमां प्रवर्त्तन होय ॥ १ ॥ एवुं श्रीवीतरागनुं शासन के० आज्ञारूप प्रवचन ते धन्य के० प्रसंशनीय छे.

धीरप्रजावीरे आगलेंयोगथी ॥ मित्रादिकयुतचित्त ॥ लाज
इष्टनोरेद्वंद्वअधृष्यता ॥ जनप्रियताहोयनित्य ॥ धन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आगले कालें योगथी धैर्यताना गुण विशेषरीते जावे. जेम अप्रमत्तता वधे तेम योग थाय. १ मैत्री २ प्रमोद ३ कारुण्य ४ माध्यस्थ, आ चार जावनायुक्त चित्त थाय. इष्ट जे ज्ञानादि तेनो लाज थाय. द्वंद्व अधृष्यता के० एकत्वपणुं, असहायीपणुं वांछे. जनप्रिय के० लोकप्रियपणुं निरंतर होय. मैत्री प्रमुख चार जावना धर्मध्याननी पुष्टि करे छे. यद्यपि ध्याननी एकाग्रता मुहूर्त्त मात्र होय छे, परंतु ध्याननी जावना बहुकाल सुधी रहे छे. वली बहुकाल सुधी ज्ञाननुं चिंतवन ते पण धर्मध्यान कहेवाय. तेथी मैत्री प्रमुख जावना ते धर्मध्याननुं रसायण छे. जेम रसायणथी जर्जरित शरीर दृढ थाय तेम जावनारूप रसायणथी ध्यान दृढ थाय. जावनानुं विशेष स्वरूप जवजावना ग्रंथ तथा योगशास्त्र प्रमुख ग्रंथथी जाणवुं ॥ २ ॥

नाशदोषनोरे तृपतिपरमलहे ॥ समताउचितसंयोग ॥ नाश
वयरनोरे बुद्धिऋतंजरा ॥ एनिष्पन्नहयोग ॥ धन० ॥३॥

अर्थ ॥ क्षुधादि आठ दोष तथा रागद्वेष, कामक्रोध, मदहर्ष, तेनो नाश करे. वली अतत्त्व बुद्धिने तजवाथी, प्रकृष्ट रुचिमार्गें, तत्त्व श्रद्धानादिकमां तृप्ति पामे. कृतापराधजन उपर पण क्रोधनी मंदता होय अने तेनुं प्रतिकूल न चिंतवे, समता भाव होय. तत्त्वमार्गरूप धर्म व्यापारनो संयोगी होय. वैर विरोधनो नाश करनार होय, पाप प्रवृत्ति थइजतां पश्चात्ताप करे. तेनी बुद्धि एवी होय के शतंभरा के० सैंकमो मनुष्योनी आजीविकाने लाभकारी होय, इत्यादि योग आठ दोष गयाथी स्वाभाविकरीते उपजे ॥ ३ ॥

चिन्हयोगनारे जेपरग्रंथमां ॥ योगाचारयदिठ ॥ पंचमदृष्टी
थकीतेजोडीए ॥ एहवातेहगरिठ ॥ धन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वली योगनां चिन्ह के० लक्षणो ब्रह्मचर्यादि कृतप्रतिज्ञा निर्वाह, अपाय निराकरणादि जे पातंजलादि योगाचार्ये सर्वांगे दीठां छे, ते सर्व पंचम दृष्टिमां होय, अर्थात् पूर्वनी चार दृष्टिथी अधिक गुणेयुक्त गरिष्ट बुद्धि होय. तेज कारणथी मोहनो क्षयोपशम जे ग्रंथिभेद ते अहीं कह्यो छे ॥ इति थिरा दृष्टि विचार ॥ ४ ॥

छठीदिठिरेहवेकांताकहुं ॥ तिहांताराभप्रकाश ॥ तत्त्व
मिमांसारेदृढहोयेधारणा ॥ नहींअन्यश्रुतवास ॥ धन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे छठी कांतानामा दृष्टि कहीये छीए. आ दृष्टिमां आकाशना तारा सरखो तत्त्वज्ञाननो प्रकाश होय. जेम तारानो अभाव थतो नथी, तेम ते ज्ञाननो अभाव थतो नथी. तत्त्वनीज विचारणा होय. तत्त्वउपर दृढ के० निबिड धारणा होय, मिथ्यात्वप्रणीत श्रुतशास्त्रनी लेश मात्र वासना न होय ॥ ५ ॥

मनमहिलानुंरे वाहलाउपरें ॥ बीजांकामकरंत ॥ तेम
श्रुतधर्मेंरे एहमांमनधरे ॥ ज्ञानाक्षेपकवंत ॥ धन० ॥६॥

अर्थ ॥ जेम पतिव्रता स्त्रीनुं मन पोताना वहाला स्वामी उपर, बीजा सर्वकाम घरना करतां छतां, जोडायेलुंज होय तेम कांता दृष्टिवालो प्राणी जो के संसारमां रह्यो थको सर्वकार्य करे, तोपण तेनुं मन तो अर्हत्प्रणीत धर्ममांज जोडायेलुं होय. संसारनां कार्यों उपर आसक्ति न होय अने ते सम्यग् ज्ञाननोज आक्षेपक के० आदरवावालो होय ॥ ६ ॥

एहवेज्ञानेरे विघननिवारणा ॥ भोगनहीं भवहेत ॥
नविगुणदोषन विषयस्वरूपथी ॥ मनगुण अवगुणखेत ॥ धन० ॥७॥

अर्थ ॥ एवा ज्ञानथी धर्मनां विघ्नकारक कारणोनुं निवारण करे. वली अजयकुमारनी जेम परने शासन प्रजावनादि कारणो मेलवी आपे. ते प्राणी यद्यपि जोगादि जोगवे ठे तथापि ते, तेने संसारना हेतु थतां नथी. कारण के ते प्राणीनी निरंतर एवी विचारणा होय ठे के संसारना विषयो गुणरूप नथी, तेम दोषरूप पण नथी. वली ते विषयादिकने विषे मन जोडवुं ते अवगुणनुं क्षेत्र ठे, एम जाणी तेमां मनने परोवेज नहीं ॥ ७ ॥

मायापाणीरे जाणीतेहने ॥ लंघीजायअमोल ॥ साचुं
जाणीरे तेबीतोरहे ॥ नचलेमामाडोल ॥ धन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ ते प्राणी मायारूप पाणीना विविध तरंगना विलास देखीने ते मायाने उलंघी जाय, अर्थात् तेमां प्रवेश करे नही. वली सम्यग् ज्ञान तथा श्रद्धाए ते प्राणी अडोल होवाथी जव प्रपंचमां फसातो नथी. आत्मस्वरूपनुं ज्ञान साचुं थवाथी जव प्रपंचथी बीतो रहे. संसारमां अविद्याना मायायुक्त प्रपंचोथी क्षोज पामे नहीं. अंबड परिव्राजक अने सुलसाना दृष्टांतनी जेम चले नहीं ॥ ८ ॥

जोगतत्वनेरे एमजयनविटले ॥ जूठाजाणेरे जोग ॥ तेऐ
दृष्टिरे जवसायरतरे ॥ लहेवली सुयशसंयोग ॥ धन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जे संसारना जोगने तात्विक जाणे तेने संसारनो जय टले नहीं, एवो दृढनिश्चय थवाथी इंद्रियोना जोगने जूठा के० माठा जाणे ठे. एवा संसारना जोगथी प्रपंच वधे ठे परंतु मोक्षपंथ मलतो नथी एवुं जे प्राणी जाणे ठे, ते प्राणी आ दृष्टिमां वर्त्ततो थको जवसमुद्रनो पार पामे ठे, अर्थात् कर्मरहित थइ, सुयश मेलवी आत्माना अक्षय सुखना विलासनो संयोग प्राप्त करे ॥ इति ठठी कांता दृष्टिविचार ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ ए ठिंडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

अर्कप्रजासम बोधप्रजामां ॥ ध्यानप्रीयाएदिठ्ठी ॥
तत्त्वतणी प्रतिपत्ति इहांवली ॥ रोगनही सुखपुठीरे ॥
जविकावीरवचन चित्तधरीए ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रजा नामा सातमी दृष्टि कहीए ठीए, आ दृष्टिमां बोधनो प्रकाश सूर्यनी प्रजा सरखो होय अर्थात् अर्कप्रजा के० सूर्यनो प्रकाश जेम अंधकारनो नाश करे तेम आ दृष्टिवंत प्राणी अज्ञाननो नाश करे. प्रशांतवाहितादि गुणो जे कायरोने

दुर्धर छे, ते आदृष्टिवंतने होय छे. आ दृष्टिमांध्यान प्रिय होय. आ दृष्टि ध्यानप्रिया होवाथी ते प्राणी ध्यानमांज वर्त्ततो रहे. तत्त्वनी प्रतिपत्ति के० चारित्रादिक रत्न त्रयनी आदरणा होय. बाह्य अभ्यंतरना शरीरना रोग, उपाधि के असमाधि तेने न होय अने सुखनी पुष्टि होय ॥ १ ॥ अहो भव्यो! एवा श्रीवीरप्रभुनां वचनने मनमां तत्त्वपणे ग्रहण करो.

सघलुं परवश तेदुःखलक्षण ॥ निजवश तेसुखलहीए ॥ ए
दृष्टें आतमगुण प्रगटे ॥ कहोसुखतेकुण कहीएरे ॥ भवि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जे पर पुद्गलादिकने वशवर्तीपणुं तेज दुःखनुं लक्षण छे. अने पोताना आत्मस्वभावमांज वर्तवुं ते सुखनुं लक्षण छे. एवीरीते आंदृष्टिमां आत्मगुणथी परमानंद सुख प्रगट थाय ते सुखनां स्वरूप ने ज्ञानीविना बीजो कोण कहीशके? अर्थात् बीजाथी कहीशकाय नहीं ॥ २ ॥

नागरसुखपामरनवजाणे ॥ वल्लभसुखनकुमारी ॥ अनु
भववणतेमध्यानतणुं सुख ॥ कोणजाणेनरनारीरे ॥ भवि० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेम नगरना रेहेनारा चतुर पुरुषोना सुखनो विलास गामडानो रेहेनार पामर के० गरीब जाणी शके नहीं तथा जेम कुंवारी कन्या सुंदर भत्तारयुक्त वल्लभाना सुखने जाणी शके नहीं तेम आत्माना अनुभव ज्ञानविना ध्याननुं सुख बहिरात्मा एवा स्त्री अथवा पुरुष कोण जाणी शके? अर्थात् जाणी शके नहीं ॥ ३ ॥

एहदृष्टिमां निर्मलबोधें ॥ ध्यानसदाहोयसाचुं ॥ दुषण
रहितनिरंतर ज्योति ॥ रतनतेदीपें जाचुंरे ॥ भवि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिवंत प्राणीने निर्मल बोधनो प्रकाश थवाथी निरंतर धर्म ध्यान तथा शुक्ल ध्यान साचांज होय. ध्याननो विचार, आवश्यक निर्युक्ति तथा ध्यान शतकनी वृत्तिथी अवधारवो. जेम दूषण रहित, निर्मल जात्यवंत रत्ननी ज्योति निरंतर विशेष प्रकाश आपे तेम ध्यानमां लीन प्राणी कर्मउपाधिने अभावे विशेषपणे आत्मप्रकाशथी दीपे ॥ ४ ॥

विषभागक्षय, शांतवाहिता ॥ शिवमारगध्रुवनाम ॥ कहे
असंगक्रियाइहांयोगी ॥ विमलसुयशपरिणामरे ॥ भवि० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिनुं लक्षण कहे छे. विष भाग के० "रागद्वेष, अहंकृति, कामेछादिकना क्षयथी मोक्ष" एवो बौधनो मत छे. "अपराधी उपर प्रशांत वाहिता के० निरंतर

शांतपणुं ते मोक्ष" एवो सांख्यनो मत छे. "ज्यां उत्पाद के विनाश नही अने जे ध्रुव होय ते मोक्ष" एम जैमिनीयनो मत छे; अने आ दृष्टिवंत ए सर्व पदार्थ असंग जा-वथी अलिप्त क्रियायुक्त उत्तम यशरूप आत्म गुणना परिणाम सहित, कर्मोपाधि र-हितपणे शुद्ध ते मोक्ष एवा परिणामवालो होय छे. ॥५॥ इति सातमी प्रजादृष्टि विचार.

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तुज साथे नहीं बोलुं मारा वाहाला ॥ ए देशी ॥

दृष्टि आठमी सारसमाधि ॥ नामपरातसजाणुजी ॥
आपस्वजावेप्रवृत्तिपुरण ॥ शशिसम बोधवखाणुंजी ॥
निरतिचारपदएहमांयोगी ॥ कहीयेनहिअतिचारीजी ॥
आरोहेआरुढेगिरिने ॥ तेंमएहनीगतिन्यारीजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जव्य लोकना आत्मसजाव ज्यां अक्षयपणे वर्त्ते छे, एवी आठमी दृष्टि सार के० प्रधान आत्म समाधिरूप छे. तेनुं नाम परा छे. आ दृष्टिमां पोताना आत्म-स्वजावमां पूर्ण प्रवर्त्तन होय. वली बोध प्रकाश, संपूर्ण चंद्रमा सरखो निर्मल प्रशां-तवाहितादि गुणयुक्त होय. आ दृष्टिमां प्रवर्त्ततो योगी निरतिचार पदे प्रवर्त्ते, कोइ पण वखत अतिचार पदमां वर्त्ते नहीं. १ अतिक्रम २ व्यतिक्रम ३ अतिचार, आवा त्रणे दोषना प्रकारमां आवे नहीं, तो पछी अनाचारनी प्रवृत्ति होयज क्यांथी ? जेम मुनिराज उपशम, क्षपक श्रेणिरूप गिरि के० पर्वत उपर आरोहे के० चढे, तेम अहीं परिणाम धाराए आत्माना पंडित वीर्यना विलासे तेपण गुण श्रेणिने आरुढे के० आ-रोहे. माटे तेनी गति ते जवगतिथी न्यारी छे ॥ १ ॥

चंदनगंधसमानक्षिमाइहां ॥ वासकने, नगवेषेजी ॥
आसंगेवर्जितवलीएहमां ॥ किरियानिजगुणलेखेजी ॥
शिक्षाथी जेमरतननियोजन ॥ दृष्टिजिन्नतेमएहोजी ॥
तासनियोगे करण अपूरव ॥ लहेमुनिकेवलगेहोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली शरीरादिकनो गंध चंदन समान सहजथी होय; तेम वचन पण स-हजथी चंदन समान शीतल होय. क्षमादिक धर्मपण सहजथी होय. वली तेवी वा-सना सहजथी होय के बीजा कोइ डव्यनी अपेक्षा न करे, केमके जेने सहजथी गुण प्राप्त थया होय ते परना गुणनी प्राप्ति वांछे नही. वली आ दृष्टिमां संसारनी आ-संगता न होय. समिति गुप्ति प्रमुख मूलोत्तर गुणोनो अभ्यास तेथी सर्व क्रिया आ-त्माना गुणने माटे थाय. जे क्रियाने अनुसरतो होय ते क्रिया एवी होय के अक्रि-

यागुणने साधे. जेम क्षारादि शतपुटादि शिक्षाना योगे रत्ननी जातिने तादृशस्थाने जोडीए, रत्ननी तो एकज जाति छे परंतु जेम जेम पुट देता जइए तेम तेम जोवावालानी दृष्टिमां भिन्नभिन्न ते रत्न देखाय, तेम आ दृष्टिमां भिन्न भिन्न दृष्टिवंत होय, केमके छद्मस्थनुं ज्ञान एक सरखुं न होय, तेथी ते कारणथी आ दृष्टांत छे ते ध्यानमां लेवुं. ते प्रमाणे अपूर्व करणादि गुणस्थानकना करण साधतो अनुक्रमे आदृष्टिमां वर्त्ततो मुनिराज केवल ज्ञाननुं गृह पामे ॥ २ ॥

क्षीणदोष सर्वज्ञमहामुनि ॥ सर्वलब्धिफलभोगीजी ॥
परउपगार करीशिवसुखते ॥ पामे योग अयोगीजी ॥
सर्वशत्रुक्षय सर्वव्याधिलय ॥ पूरणसर्वसमीहाजी ॥
सर्वअरथयोगेंसुखतेहथी ॥ अनंतगुणनिरीहाजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आ दृष्टिवंत प्राणी सर्व दोषने क्षय करे; वली ते महामुनिराज सर्वज्ञ केवलज्ञानवंत थाय; समस्त लब्धिनां फलनो भोगी थाय; भव्य प्राणीउने चारित्रधर्म पमाडतां तेउने अत्यंत उपगारी थाय; पोते मोक्ष सुख पामे; सयोगि गुणठाणें वर्ती अयोगि गुणठाणें अयोगि पद लइ सिद्धि पामे; सर्व कर्मरूप शत्रुउनो क्षय करतां रोगादि सर्व व्याधियोनोपण नाश करे. एप्रमाणे सर्व समीहा के० वांछाउ पूर्ण थवाथी केवल आत्मस्वरूपमां लीन थयोथको एकरूपता पामे. सर्व अर्थना योगथी संपूर्ण सुखे तृप्तिवंत रहे, तेथी निरीहा के० निस्पृहपणे प्रगट थया जे अनंतगुण तेनुं अव्याबाध सुख वधतां वधतां पूर्ण आत्मानंदी थाय ॥ ३ ॥

एअमदिठी कहीसंक्षेपे ॥ योगशास्त्रसंकेतेजी ॥
कुलयोगीनेप्रवृत्तचक्रजे ॥ तेहतणेहितहेतेंजी ॥
योगीकुलेजायातसधर्मे ॥ अनुगततेकुलयोगीजी ॥
अद्वेषीगुरुदेवद्विजप्रिय ॥ दयावंतउपयोगीजी ॥४॥

अर्थ ॥ आ आठ दृष्टि भव्य प्राणीउना उपकारने अर्थे योगशास्त्र, अध्यात्म ग्रंथ जेवा के उपमितिभवप्रपंच, भवभावना वृत्ति, पातंजल शास्त्र तथा प्रवचन प्रबोधादि ग्रंथोने अनुसारे संक्षेपथी कही छे. योगी बे प्रकारना छे. १ कुलयोगी २ प्रवृत्तचक्रयोगी. तेउ पोताना चित्तमां अहंकारथी एम माने छे के अमेपण योगी छीए तेथी तेउना हितने अर्थे आ दृष्टियो कही छे. हवे ते योगीउनां लक्षण बतावे छे. जे योगीना कुलमां जन्म्या होय तथा जेना धर्माचार रुढिमार्गने अनुसरता होय एवा

सामान्यबुद्धिप्रवर्त्तता सर्व तापसादि षट्दर्शनीउ ते कुलयोगी जाणवा. जेउ अद्वेषी होय तथा देवगुरु अने द्विज के० ब्रह्मचर्यादिगुण जेमने प्रिय होय, वली दयावंत तथा यत्नावंत होय तेमज ॥ ४ ॥

शुश्रूषादिक अडगुणसंपूरण ॥ प्रवृत्तचक्रतेकहीएजी ॥
यमद्वयलाभी परद्दुगअर्थी ॥ आद्यअवंचकलहीएजी ॥
चारअहिंसादिकयमइच्छा ॥ प्रवृत्तिथिरसिद्धिनामेजी ॥
शुद्धरुचेंपालेअतिचारह ॥ टालेफलपरिणामेजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ १ शुश्रूषा २ श्रवणंचैव ३ ग्रहणं ४ धारणं तथा ॥ ५ उहा ६ पोहो ७ अऽर्थ विज्ञानं ८ तत्त्वज्ञानंच धीगुणाः ॥ १ ॥ अथवा १ शुश्रूषा २ श्रुतज्ञान ३ विरति ४ आश्रवरोध ५ संवर ६ निरीहतप ७ निर्जरा ८ क्रियानिवृत्ति. एटले के शुश्रूषादि आठ गुण जेनामा संपूर्ण होय, ते प्रवृत्त–चक्र–योगी कहेवाय. वली यमद्वय के० अहिंसा अने सत्य तेनो लाभवंत तथा परद्दुग के० अस्तेय अने ब्रह्मचर्यनो अर्थी होय. वली आद्य अवंचकफलनो धणी होय. अवंचक त्रण प्रकारना छे. योगावंचक २ क्रियावंचक ३ फलावंचक, तेमांथी आद्य अवंचकनो धणी होय. वली अहिंसादि चार यमने वश थको होय. वली इच्छा के० गुणीजननी सम्यक् कथा करवाने मन करे; प्रवृत्ति के० आचार उत्कृष्टपणे पालवाने प्रवर्त्ते; थिर के० निरतिचारपणे प्रवर्त्ति दृढ रहे; सिद्धि के० स्वार्थ परार्थने निपजावे. एप्रमाणे अति शुद्ध रुचिपणे चार प्रकारे पाले वली अतिचार टाली जे रीते फलीभूत थाय तेवा परिणामे साधे. तेवा योगी सदासफलाभ्यासी जेम एक वखत फेरव्युं चक्र फरी भाजन उतार्या करे तेम आ योगी क्रिया निःफल न थाय ॥ ५ ॥

कुलयोगीने प्रवृत्तचक्रने ॥ श्रवणशुद्धिपक्षपातजी ॥
योगदृष्टि ग्रंथेहितहोवे ॥ तेणेकहीएवातजी ॥
शुद्धभावनेसूनिकिरिया ॥ बेहुमां अंतर केतोजी ॥
जलहलतोसुरजनेखजुउ ॥ तासतेजमांतेतोजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ कुलयोगी तथा प्रवृत्त चक्रयोगीने शुद्ध मार्ग यम नियमादिक, धर्म शास्त्रनुं श्रवण होय तथा शुद्धाचार विनयादि करण, सत्संग तथा गुणोनो पक्षपात होय. एवा गुणना धारक ते योगी कहेवाय. परंतु दंभी अने विषयना प्रसंगी ते योगी न कहेवाय. आ वातनुं विस्तारथी स्वरूप श्रीहरिभद्रसूरिकृत योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथथी जोवुं. शून्यमन अने शुन्य आचारे योगी न कहेवाय. दिवसे मध्यान्हे प्रकाश करता

सहस्र किरणोवाला सूर्यना अने अंधारी राते प्रकाश करता खजुआ के० आगीआ कीडाना तेजमां जेटलो फेर छे, तेटलो अंतर, सम्यक् क्षयोपशम जावनी शुद्धक्रियामां अने मोहना क्षयोपशम विनानी शून्य क्रियामां छे ॥ ६ ॥

गुह्यजावएतेहने कहीए ॥ जेहसुं अंतर जांजेजी ॥
जेहसुंचित्तपटंतर होवे ॥ तेहशुं गुह्यनजाजेजी ॥
योग्यअयोग्य विजाग अलहतो ॥ करशेमोटी वातोजी ॥
खमशे ते पंमित परखदमां ॥ मुष्टिप्रहारने लातोजी ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ शास्त्रना गुह्यजावके० रहस्य ते तेहनेज कहीए, के जेनी साथे अंतरंग मलतुं होय, अर्थात् मिथ्यात्वनो त्याग करी जेने सम्यग् दर्शन परिणति श्रद्धान होय तेनी पासेज शास्त्रना रहस्य प्रकाशीए. जेनी साथे चित्त पटंतर वर्त्ततुं होय अर्थात् जेने प्रवचनानुसार सम्यक् श्रद्धान न थयुं होय, तेनीसाथे शास्त्रना रहस्यनो प्रकाश करवो ते घटतुं नथी. योग्य अयोग्यनो विजागके० वेहेंचण जे समजतो नथी, अर्थात् गुरुनो विनय करतो नथी शुद्धाचार पालतो नथी, इत्यादि जावने समजतो नथी, छतां पोते माह्यो थइने शास्त्र संबंधी मोटी मोटी वातो करेछे, ते पंमितोनी परखदके० सजामां हार पामी मुष्टिप्रहारके० गल्लादिकथी बहार काढवुं तथा नरकादि वध बंधन अने लातो के० आलोयणना प्रहार अने अपयश तथा अपकीर्त्ति पामशे. यदुक्तं ॥ जंजायइ अगीयछो, जंच अगीयछ निस्सीयो जयइ ॥ वट्टा वेयइ गछं, अणंत संसारियो जणियो ॥ १ ॥ इत्यावश्यकनिर्युक्ति वचनात्. ते कारणथी गीतार्थ तथा गीतार्थना आश्रितने विहार कह्यो छे. तेम गंजीर अर्थनी देशनापण योग्य जनने आपवी.

सजात्रण श्रोतागुणअवगुण ॥ नंदीसूत्रे दिसेजी ॥
तेजाणीएग्रंथयोग्यने ॥ देजोसुगुणजगीशेजी ॥
लोकपूरयोनिजनिज इछा ॥ योगजाव गुणरयणेजी ॥
श्रीनयविजयविबुधपयसेवक ॥ वाचकयशने वयणेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सजा त्रण प्रकारनी श्रीनंदीसूत्रमां कहीछे. १ जे श्रोता गुण तथा दोषने ... तेवा श्रोताउनी सजा राजहंस समान डाही समजवी. २ श्रोताउ अज्ञान छे, ते सजा पशु मृगना बालको सरखी मूर्ख समजवी. ३ जेउ गीतार्थना अपमानी निंदक छे, ते अयोग्य सजा समजवी. तेवीरीते सजानुं स्वरूप जाणीने आ ग्रंथनो हार्द तेवी सजानो आपजो, जेउने देतां उत्तम प्रवचन शोजाकारकादि गुणो तथा

जगीश के० ते गुणोथी पामवानी सुखरूप लीला ते पामशो. एम इछायोग तथा शास्त्रादिना जे योग तेरूप जे भावगुण, तद्रूप मणिरत्नोथी समस्त लोक पुरजो! विशिष्ट आत्मयोगरूप भाव रत्नोथी समग्र लोक तृप्ति पामो! आ ग्रंथनुं रहस्य पामी भव्यजनो संसार भावथी मुक्त थाउं! आप स्वभावमां मग्न रेहेजो! एम श्रीनयविजय पंडितना चरणकमलना सेवक उपाध्याय श्रीयशोविजयगणि जेमणे काशीमां " न्याय विशारद " एवुं विरुद प्राप्तकर्युं, तेमनां वचन जाणजो ॥ ८ ॥

काव्यं ॥ श्री मद्यशोविजयवाचकराजराज, विनिर्मितोदृष्टिविचाररूपः ॥
स्वाध्यायएषप्रथमंततोयं, भाषामयो लेशतयाटबार्थः ॥ १ ॥
श्री स्तंभतीर्थेऽत्रतपागणिय, नाम्नाचज्ञानाद्विमलाभिधेन ॥
श्रीसूरिणाभूरि सुखावबोधार्थ मेवलेशंलिखितोहिभद्रं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ महामहोपाध्याय श्रीयशोविजयगणिकृत योगदृष्टि विचारनी सज्झायोनो सुखे अवबोध थवा माटे श्रीमत्तपागछीय संविज्ञजन पक्षिय भट्टारक श्रीज्ञानविमलसूरिए बालावबोधरूप लेशमात्र अर्थ लख्यो छे. श्री खंभात बंदरमां दोशीभेघजी उदेकरण तथा वडनगरीआ शा. अमुलखचंदना अनुग्रहने वास्ते प्रथमादर्शें लख्यो छे. श्रीयोगदृष्टि सज्झायोनी सर्व गाथा ७६ तथा बे श्लोक मली ७८ छे.

॥ इति महोपाध्याय श्रीयशोविजयगणिकृत योगदृष्टि स्वाध्याय,
श्रीज्ञानविमल सूरिकृत अर्थसहित समाप्तः ॥

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्रीयशोविजयजी उपाध्यायकृत अध्यात्मसार ग्रंथ अर्थसहित प्रारंभ करियेंछैयें ॥

॥ श्लोकः ॥

ऐंद्रश्रेणिनतः श्रीमान्नंदतान्नाभिनंदनः ॥ उद्दधार युगादौ यो जगदज्ञानपंकतः ॥ १ ॥ श्रीशांतिस्तांतिभिद्भूयाद्भविनां मृगलांछनः ॥ गावः कुवलयोल्लासंकुर्वते यस्य निर्मलाः ॥२॥

अर्थ ॥ इंद्रसंबंधीजे श्रेणितेणे नतके० नमस्कारकर्योंछे जेनेएवाअने अष्टमहाप्रातिहार्यरूपलक्ष्मीयेंकरीयुक्त तथा युगनेआदें जगत्ने अज्ञानरूप कादवमांथी उद्धारनाकरनार एहवाजे श्रीऋषभदेवभगवान् तेजयवंतावर्तो! ॥ १ ॥ श्रीशांतिनाथ भगवंतते भव्यप्राणीओप्रतें संतापना भेदनाराथाओ! मृगनुं लांछनछेजेने एवा तथा जेमचंद्रकिरण निर्मल थका कुमुदनीनेविकसितकरेछे, तेमजेनीगावःके०वाणीते पृथ्वीनेविषे उल्लासकरेछे

श्रीशैवेयं जिनं स्तौमि भुवनं यशसेव यः ॥ मारुतेन मुखोत्थेन पांचजन्यमपूपुरत् ॥ ३ ॥ जीयात् फणिफणप्रांतसंक्रांततनुरेकदा ॥ उद्धर्तुमिव विश्वानि श्रीपार्श्वोबहुरूपभाक् ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शिवाराणीनापुत्र श्रीनेमनाथजी तेमनेस्तवुंछुं. जेभगवंतेपोताना यशेंकरीने जेम जगत्नेभर्युंछे तेमजपोतानामुखथी प्रगट्योजेवायु तेणेकरीने पांचजन्य नामे शंखनेपूरीने तेनोनादकीधो ॥ ३ ॥ फणी के० शेषनाग तेनी फणनाप्रांतेजेमणीतेनेविषे संक्रम्युंजेशरीर तेणेकरीने त्रणजगत्नो उद्धारजजाणेकरताहोयनी एवाजे श्रीपार्श्वनाथबहुस्वरूपनाकर्त्ता, तेजयवंतवर्तो ॥ ४ ॥

जगदानंदनः स्वामी जयति ज्ञातनंदनः ॥ उपजीवंति यद्वाचामद्यापि विबुधाः सुधाम् ॥ ५ ॥ एतानन्यानपि जिनान्नमस्कृत्य गुरूनपि ॥ अध्यात्मसारमधुना प्रकटीकर्तुमुत्सहे ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जगत्नेआनंदनाकरनार वलीजेहनी अमृतसरिखीवाणीने हजीसुधी पंडितलोको सेवेछे, अंगीकारकरेछे एहवा ज्ञातनंदनजेश्रीवीरजिन तेजयवंतावर्तो ॥ ५ ॥ एपांचेपरमेश्वरने तथा बीजापण जिनोने तथापोतानागुरूने नमस्कारकरीने अध्यात्मनो सारजेरहस्य तेप्रगटकरवाने हवेउछाहकरुंछुं ॥६॥

शास्त्रात्परिचितां सम्यक् संप्रदायाच्च धीमतां ॥ इहानुभवयो
गाच्च प्रक्रियां कामपिब्रुवे ॥ ७ ॥ योगिनां प्रीतये पद्यमध्या
त्मरसपेशलं ॥ भोगिनां भामिनीगीतसंगीतकमयं यथा ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ घणांशास्त्रोथीभलीरीतैंपरिचितकरीने ने वलीपंफितलोकोना संप्रदायथकी जे अध्यात्मशास्त्रनेविषे अनुभवयोग्य थयुं तेथकी हुंकांइक संक्षेपमात्र प्रस्तावनाकरुं बुं ॥ ७ ॥ जेरीतैंभोगीपुरुषने स्त्रीनागीतसंगीत प्रियकारीलागेछे तेरीतैं योगीश्वरपुरुषने प्रीतिनाअर्थें आ अध्यात्मरसैंकरीने मनोहरकारी एहवो पद्यबंधतायेंकरुंछुं ॥ ८ ॥

कांताधरसुधास्वादा यूनां यज्जायतेसुखं ॥ बिंदुः पार्श्वे तदध्यात्म
शास्त्रस्वादसुखोदधेः ॥ ए ॥ अध्यात्मशास्त्रासंभूतसंतोषसुख
शालिनः ॥ गणयंति न राजानं न श्रीदंनापिवासवम् ॥ १० ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनाअधररूपअमृतना स्वादथीजे जुवानपुरुषने सुखउपजेछे तेसुखनो स्वादतो अध्यात्मशास्त्रनास्वादनो जेसमुद्रछे तेनोएकबिंदुमात्र स्वादछे ॥ ए ॥ जेप्राणीनेअध्यात्मशास्त्रथी मनोहर संतोषरूपसुख प्रगटथयुं, तेप्राणी राजाने तथाधनदने अनेइंद्रसरिखानेपण लेखामांगणतानथी ॥ १० ॥

यः किलाशिक्षिताध्यात्मशास्त्रः पांडित्यमिच्छति ॥ उत्क्षिपत्यंगुली
पंगुः स स्वर्द्रुफललिप्सया ॥ ११ ॥ दंभपर्वतदंभोलिः सौहार्दां
बुधिचंद्रमाः ॥ अध्यात्मशास्त्रमुत्ताल मोहजालवनानलः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेमकल्पवृक्षना फलने लेवानी इछाये पांगलोपुरु आंगलीउंचीकरेछे ते जेम-व्यर्थछे, तेमजेप्राणीनिश्चेंअध्यात्मशास्त्रने पाम्यानथी, अने आचार्यपंडितपणुं इछेछे, ते-पणव्यर्थछे ॥ ११ ॥ कपटरूप पर्वतनेभेदवाने वज्रसमान, मैत्रताभावरूपसमुद्रनी वृद्धि करवाने चंद्रमासमान, एहवुं अध्यात्मशास्त्र ते वृद्धिपामेलुंएहवुंजे मोहजालनुंवन तेहने बालवानेअर्थें दावानलसमान छे ॥ १२ ॥

अध्वा धर्मस्य सुस्थः स्यात्पापचौरः पलायते ॥ अध्यात्मशा
स्त्रसौराज्ये न स्यात्कश्चिदुपप्लवः॥१३॥येषामध्यात्मशास्त्रार्थतत्त्वं
परिणतं हृदि ॥ कषायविषयावेश क्लेशस्तेषांन कर्हिचित् ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मशास्त्रनुं भलुंराजप्रवर्ततेथके कशोएउपद्रव थायनही, धर्मनोमार्ग सुगमथाय, अने पापरूपचोरटानासीजाए॥१३॥ जेप्राणीना हृदयनेविषे अध्यात्म शास्त्रनाअर्थनुं तत्त्वत ज्ञान थयुंछे तेनेकषायरूपविषनावेगनो क्लेशतेकदीएनथाय ॥ १४ ॥

निर्दयः कामचंडालः पंडितानपि पीड्येत् ॥ यदि नाध्यात्मशा
स्त्रार्थबोधयोधकृपा भवेत् ॥१५॥ विषवल्लिसमां तृष्णां वर्धमा
नां मनोवने ॥ अध्यात्मशास्त्रदात्रेण छिंदंतिपरमर्षयः ॥१६॥

अर्थ ॥ जोअध्यात्मशास्त्रना अर्थनाबोधनी कृपापंडितजेवाने पणनहोयतो निर्दय एवोजे कामरूपचंडाल ते पंडितनेपणपीडाकस्याविना रहेनहीं ॥ १५ ॥ जेपरमऋषीश्वरछे, ते अध्यात्मशास्त्ररूप दातरडेकरीने मनरूपीवननेविषे वृद्धिपामती एहवीतृष्णारूप जेहेरनीवेली तेनेछेदीनाखेछे ॥ १६ ॥

वने वेश्म धनं दौस्थ्ये तेजो ध्वांते जलं मरौ ॥ दुरापमाप्यते धन्यैः
कलावध्यात्मवाङ्मयं ॥ १७ ॥ वेदान्यशास्त्रवित् क्लेशं रसमध्या
त्मशास्त्रवित् ॥ भाग्यभृद्भोगमाप्नोति वहति चंदनं खरः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेमवननेविषेघर, दरिद्रनेधन, अंधारामांउद्योत तथा, मरुदेशनेविषेजेपाणी, तेदुःखेंपामवायोग्यछे, तेमजेधन्यप्राणीहोयछे, तेनेजअध्यात्मशास्त्र कलियुगनेविषे प्राप्तथायछे ॥१७॥ वेदनाजाणतथा बीजाशास्त्रना जाणनाराते क्लेशनाभोक्ताछे, अनेरसनाभोक्ता तेअध्यात्मशास्त्रना जाणनाराछे. तेएरसनोभोगतो जेभाग्यवंतहोय, तेज पामे, अनेजेगधेडोहोय तेतोमात्रचंदनना भारनेउपाडेएटलुंज ॥ १८ ॥

भुजास्फालनहस्तस्यविकाराभिनयाः परे ॥ अध्यात्मशास्त्रवि
ज्ञास्तु वदंत्यविकृतेक्षणाः ॥१९॥ अध्यात्मशास्त्रहेमाद्रिमथिता
दागमोदधेः ॥ भूयांसि गुणरत्नानि प्राप्यंते विबुधैर्न किम् ॥२०॥

अर्थ ॥ भुजानाआस्फोटकरवेकरीने, वलीहाथने तथामुखनेविकारेकरीने, इत्यादिकनाटिकना अभिनयेंकरवेकरीने, भोगीपुरुषसुखकरीमानेछे, अनेअध्यात्मशास्त्रना जाणजेपुरुषछे, तेतोअविकारीनेत्रनाधणी इंद्रियनाविकाररहितछे. ॥ १९ ॥ अध्यात्मशास्त्ररूपजे हेमाचलपर्वत तेणेमथ्योजे आगमरूपसमुद्र तेथकी निकल्यां घणागुणरूपीयां जेरत्नतेतो विबुधजेपंडितलोकतेपामेछे ॥ २० ॥

रसोभोगावधिः कामे सद्भक्ष्ये भोजनावधिः ॥ अध्यात्मशास्त्रसे
वायां रसोनिरवधिः पुनः ॥ २१ ॥ कुतर्कग्रंथसर्वस्वगर्वज्वरवि
कारिणी ॥ एति दृङ्निर्मलीभावमध्यात्मग्रंथभेषजात् ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ कामनोजेरस तेभोगवतांसुधी मधुरछे, भलांभोजननोजेरस तेजमवाना

वखतसुधी मधुरपणेवर्त्तेछे, पणअध्यात्मशास्त्रनीसेवानोजेरस तेतोनिरवधिछे. केमके प्रा-रंज्ञकालथीमांडीने सदा वधतोजरसछे, पणकिवारे विरस नथाय ॥ २१ ॥ कुतर्कशास्त्र-ना सर्वरहस्यनो जेअहंकार,तेरूपीताव तेहनाविकारवाली थइएहवीजे दृष्टितेअध्यात्म-शास्त्ररूप औषधनायोगथी निर्मलपणाने पामेछे ॥ २२ ॥

धनिनां पुत्रदारादि यथा संसारवृद्धये ॥ तथा पांडित्यदृप्तानां शास्त्रमध्यात्मवर्जितं ॥ २३ ॥ अध्येतव्यं तदध्यात्मशास्त्रं ज्ञाव्यं पुनः पुनः ॥ अनुष्ठेयस्तदर्थश्च देयो योग्यस्य कस्यचित्॥२४॥

अर्थ ॥ धनवंतजनने जेमपुत्रअनेस्त्री तेसंसारनीवृद्धिनां कारणछे, तेम अज्ञिमाने ज्ञरायला पंडितलोकने अध्यात्मशास्त्रविना मात्रसंसारनी वृद्धिछे ॥ २३ ॥ तेमाटे अ-ध्यात्मशास्त्रनेज्ञणवुं;वलीवारंवारहृदयनेविषेज्ञाववुं; एनाअर्थनुंवारंवार चिंतनकरवुं;अने जेपुरुषयोग्यहोय तेनेजशीखववुं, पुस्तकआपवुं. ॥ २४ ॥ एरीतें अध्यात्मशास्त्रनामहा-त्म्यनो पहेलोअधिकार पुरोथयो.

ज्ञगवन् किं तदध्यात्मं यदित्थमुपवर्ण्यते॥शृणु वत्स यथाशास्त्रं वर्णयामि पुरस्तव ॥ १ ॥ गतमोहाधिकाराणा मात्मानमधि कृत्य या ॥ प्रवर्तते क्रिया शुद्धा तदध्यात्मं जगुर्जिनाः॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेशिष्येपुब्युंके,हेज्ञगवंत! अध्यात्म तेशुंछेकेजेनुंतमे आवुंवर्णन कीधुं? त्यारे गुरुकहेछेके, हेशिष्य ! शास्त्रमर्यादायें तनेकहुंछुंतेसांज्ञल ॥ १ ॥ जेमुनिराजनोमोहनो अधिकारनाशपाम्योछे अनेजेआत्माने आश्रीनेशुद्धक्रियायें अंतरआत्मानेविषेप्रवर्त्ते, तेनुंनाम परमेश्वर अध्यात्मकहेछे ॥ २ ॥

सामायिकंयथासर्वं चारित्रेष्वनुवृत्तिमत् ॥ अध्यात्मं सर्व योगेषु तथानुगतमिष्यते ॥३॥ अपुनर्बंधकाद्यावद्गुणस्थानं चतुर्दशं ॥क्रमशुद्धिमती तावत् क्रियाध्यात्ममयी मता॥४॥

अर्थ ॥ सामाइकचारित्रजेम सर्वचारित्रनेविषे अनुगतकारणपणे वर्त्तेछे, तेम सर्व जोगनेवीषे अध्यात्मपण सहचारीपणेवर्त्तेछे ॥३॥ अपुनर्बंधी जेचोथुंगुणठाणुं त्यांथीमां कीने चउदमा गुणठाणालगण अनुक्रमेजेआत्मानी विशुद्धता प्रगटथाय, ते सर्व अध्यात्मक्रियाजाणवी ॥ ४ ॥

आहारोपधिपूजर्द्धिगौरवप्रतिबंधतः ॥ जवाजिनंदी यां कुर्यात् क्रियां साध्यात्मवैरिणी॥५॥ क्षुद्रोलोजरतिर्दीनो मत्सरी जयवान् शठः ॥ अज्ञोजवाजिनंदीस्या निष्फलारंजसंगतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अनेजेआहारोपधिनेअर्थे तथा पूजापामवानीऋद्धि तेनीगौरवतायें बंधाणा थका जवाजिनंदीजे क्रिया करे, तेसर्व अध्यात्मक्रियानीवैरिणीजाणवी ॥५॥ १ क्षुद्रता २ लोज ३ रति ४ दीनता ५ मत्सरीपणुं ६ जय ७ शठता ८ अज्ञानता एजवाजिनंदिपणाना संगथकीजेक्रियाकरे, तेक्रियानो आरंज निःफल थायछे ॥ ६ ॥

शांतोदांतः सदागुप्तो मोक्षार्थी विश्ववत्सलः॥ निर्दंजां यां क्रियां कुर्यात् साध्यात्मगुणवृद्धये ॥७॥ अतएव जनः पृष्ठोत्पन्नसंज्ञः पिपृच्छिषुः॥ साधुपार्श्वं जिगमिषु धर्म्मं पृछन् क्रियास्थितः ॥८॥

अर्थ ॥ १ शांतगुण २ दांतगुण ३ सदागुप्तेंद्रियपणुं ४ मोक्षार्थिपणुं५ विश्वनुं वात्सल्यतापणुं इत्यादिकगुणवालोनिर्दंजीपणेजेक्रियाकरे, तेक्रिया अध्यात्मगुणनी वृद्धिकर्त्ता थाय ॥७॥ तेमाटेजेनेतत्त्वपुछवानीसंज्ञा उपनीछे, तथा पिपृछिषुके० तत्त्वप्रतेहवे पुछवाने सन्मुखथयोछे ते, साधुनीपासे तत्त्वसांजलवानेअर्थे जवानुंशीलछेजेनुं ते, तथा क्रियायोगनेविषे रह्योथको धर्मना तत्त्वने पुछेछे ते ॥ ८ ॥

प्रतिपित्सुः सृजन् पूर्वं प्रतिपन्नश्च दर्शनं॥श्राद्धोयतिश्च त्रिविधोऽनंतांशक्षपकस्तथा ॥ ९ ॥ दृङ्मोहक्षपकोमोहशमकः शांतमोहकः॥क्षपकः क्षीणमोहश्च जिनोऽयोगीच केवली॥१०॥

अर्थ ॥ वलीतत्त्वनेअंगीकार करतांथकां पूर्वेप्रतिपन्नथयुंछे सम्यक्त्वदर्शन जेने एवा श्रावकतथा यतितेत्रणप्रकारना १ उपशमसमकीति २ क्षयोपशमसमकीती ३ क्षायकसमकीति तेअनंतानुबंधीनो अंशखपाव्योछेजेणे ॥९॥ वलीजेणेदर्शनमोहनीयखपावीछे अथवा मोहनीयने उपशमावीछे एहवाजे उपशांतमोही तथा क्षपकश्रेणिने विषेवर्त्तेछे तथा जेणेमोहनोक्षय कस्योछेते सयोगीकेवली तथा अयोगी केवलीजगवंत १०

यथाक्रममममी प्रोक्ता असंख्यगुणनिर्जराः ॥ यतितव्यमतोध्यात्मवृद्धये कलयापि हि ॥११ ज्ञानं शुद्धं क्रिया शुद्धेत्यंशौ द्वाविह संगतौ ॥ चक्रे महारथस्येव पक्षाविव पतत्रिणः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एअनुक्रमेजेकह्या,तेसघला एकएकथकी असंख्यातगुणीनिर्जराना करताछे; माटे एक कलायेकरीनेपण आध्यात्मनीवृद्धिने अर्थे उद्यमकरवो एहिजहेतुछे ॥११॥ जेम रथनाबेचक्रते रथनीसाथें संलग्नजछे, तथा पक्षीनीबेपांखोते पक्षीनीसाथे संलग्नज छे,तेम एक शुद्धज्ञान अनेबीजीशुद्धक्रिया एबेअंशते अध्यात्मनीसाथे संलग्नजछे॥१२॥

तत्पंचमगुणस्थाना दारभ्यैवैतदिच्छति ॥ निश्चयोव्यवहार
स्तु पूर्वमप्युपचारतः ॥१३॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने शुश्रूषा
द्या क्रियोचिता ॥ अप्राप्तस्वर्णभूषाणां रजताभरणं यथा ॥१४॥

अर्थ ॥ पूर्वेपण निश्चयनय अने व्यवहारनयनुं आरोपण उपचारथीछे, पण पांचमा गुणठाणाथी मांडीनेएनयइच्छेछे ॥ १३ ॥ अने चोथेगुणठाणेपण शुश्रूषादिक क्रियाते उचितछे; जेमकोइनेसोनाना घरेणानमलताहोय,तेनेरुपाना मलेतेपण रूडांमनाय॥१४॥

अपुनर्बंधकस्यापियाक्रियाशमसंयुता ॥ चित्रादर्शनभेदेनध
र्म्मविघ्नक्षयायसा ॥१५॥ अशुद्धापिहिशुद्धायाःक्रियाहेतुःस
दाशयात् ॥ ताम्रंरसानुवेधेनस्वर्णत्वमधिगच्छति ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ शमभावेकरीनेसहित,दर्शनभेदेकरीने विचित्रप्रकारनी अपुनर्बंधी जे चोथुं गुणठाणुंतेहनी क्रियापण धर्मनाविघ्नने क्षय करनारीछे ॥१५॥ तोपण भलाआशयथकी अशुद्धक्रियाकरे, तेपण शुद्धकेवाय; जेम त्रांबुं जेछे तेनेगालीतेमां रसानुवेधकस्वाथी रसायनमेलववाथी सोनुंथइजायछे तेम. ॥ १६ ॥

अतोमार्गप्रवेशायव्रतंमिथ्यादृशामपि ॥ द्रव्यसम्यक्त्वमारो
प्यददतेधीरबुद्धयः ॥१७॥ योबुध्वाभवनैर्गुण्यंधीरःस्याद्व्रत
पालने ॥ सयोग्योभावभेदस्तुदुर्लक्षयोनोपयुज्यते ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एहिजकारणमाटे धीरबुद्धिनाधणी रत्नत्रयनामार्गनेविषे पेसवाने मिथ्या दृष्टिवालानेपण द्रव्यसमकितनो आरोपकरीने चारित्रआपेछे ॥ १७ ॥ जेप्राणी संसारनुं निर्गुणपणुं जाणीने व्रतपालवानेविषे धीरथाय तेप्राणी धर्मनेयोग्यजाणवो अने अंत रंगभावनो भेदतोदुःखेकरीने समजायछे, माटेतेउपयोगमां न करवो ॥ १८ ॥

नोचेद्भावापरिज्ञानात्सिद्ध्यसिद्धीपराहते ॥ दीक्षाऽदानेनभव्या
नांमार्गोच्छेदःप्रसज्यते ॥ १९ ॥ अशुद्धानादरेभ्यासाद्योगान्नो
दर्शनाद्यपि ॥ सिद्धिर्नैसर्गिकीमुक्तातदप्यभ्यासिकंयतः ॥२०॥

अर्थ ॥ कदापिकोइक एमकहेशेजे भावजाणाविना चारित्रदेवाथी सिद्धिअसिद्धि सर्वेहणाइजाय, तेवारें जव्यनेपणदीक्षानआपवी केमके तेनेअंतरंगनी खबरनथी, अने एरीतें दीक्षानआपवाथी तो सम्यग्मार्गनो उछेद थाय ॥ १९ ॥ एमअशुद्धनोअनादरकरे अने शुद्धजोगनोअभ्यासनकरे, त्यारेदर्शनजेसमकित तेपणशुद्धनथाय, केमके एकनिसर्ग समकितटालीनेशुद्धकरवुं तेपणअभ्यासथीज थइशके ॥ २० ॥

शुद्धमार्गानुरागेणाशठानांययातुशुद्धता ॥ गुणवत्परतंत्राणां
सानक्वापिविहन्यते ॥ २१ ॥ विषयात्मानुबंधैर्हित्रिधाशु
द्धंयथोत्तरं ॥ ब्रुवते[illegible]नाद्यपि ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धमार्गने अनुरागेकरीने अशठताभावेजे आत्मानी शुद्धताके० निर्मलतायें गुणवंतप्राणीने आधीनथइने वर्त्ते, तो तेप्रवृत्ति कोइठेकाणे हणायनही ॥ २१ ॥ विषयेंकरीने, आत्मायेकरीने,अनेअनुबंधेकरीने एत्रणप्रकारनी विशुद्धिछे; ते एकेकथी निर्मलछे. एत्रणेकर्मछे, तेमां जेदुःखथी पोताना आत्माने मुकाववाने झंपापातप्रमुख करे, तेहनेविषयशुद्धिकहियें ॥ २२ ॥

अज्ञानिनांद्वितीयंतुलोकदृष्टयायमादिकं ॥ तृतीयंशांतवृत्त्यात
त्त्वसंवेदनानुगं ॥२३ ॥ आद्यानाज्ञानबाहुल्यान्मोक्षबाधक
बाधनं ॥ सद्भावाशयलेशेनोचितंजन्मपरेजगुः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ अज्ञानीने आत्मशुद्धिनामे बीजीशुद्धिथाय; तेलोकदृष्टियें पांच यम नियमप्रमुखपालेछे; एबीजोभेद. त्रीजोआत्मानुबंध तेकहियें, जेशांतवृत्तियेंतत्त्वनुं संवेदनकरे, चिंतनकरे ॥२३॥ पेहेलीशुद्धिमां अज्ञाननीबहुलता घणीछे, तेणेकरीने मोक्षना बाधकनेबाधनकरे अनेतेनासद्भावथकी शुभाशयनोलेशमात्रहोय, तोतेथी जन्ममरणनी परंपराकांइत्रुटेनही एहवुंजोगाभ्यासीपुरुषकहेछे ॥ २४ ॥

द्वितीयादोषहानिःस्यात्क्वचिन्मंडूकचूर्णवत् ॥ आत्यंतिकीतृती
यातुगुरुलाघवचिंतया ॥ २५ ॥ अपिस्वरूपतःशुद्धाक्रियात
स्माद्विशुद्धिकृत् ॥ मौनींद्रव्यवहारेणमार्गबीजंदृढादरात् ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ आत्मशुद्धिनामे बीजाजोगथकी कांइकलवलेशमात्र दोषनीहानितो थाय, पणपरंपरायें घणादोषथयेलाते देडकानाचूर्णनीपेठे एकडेडकानो नाशथाय, पण तेथीबीजाघणा देडकाउत्पन्नथाय, त्रीजीशुद्धि आत्यंतिकछे, तेथीकर्मनीहानिथाय केमके तेगुरुताभाव अनेलघुताभावनी विचारणाकरवाथीप्रगटे एबीछे ॥ २५ ॥ स्वरूपथकी

जेक्रियाशुद्धछे तेजनिश्चयपणे आत्मानेविशुद्धतानी करनारीछे, तेमाटेशुद्धक्रियाकरवी मुनींद्रजेपरमेश्वर तेणेबताव्योजे व्यवहारतेनुं सेवनकरवेकरीने घणाआदरसहित क्रियाकरे, तो मार्गजेरत्नत्रयी तेनुंबीजप्रगटथायछे ॥ २६ ॥

गुर्वाज्ञापारतंत्र्येणद्रव्यदीक्षाग्रहादपि ॥ वीर्योल्लासक्रमात्प्राप्ता
बहवःपरमंपदं ॥ २७ ॥ अध्यात्माभ्यासकालेपिक्रियाकाप्ये
वमस्तिहि ॥ शुभौघसंज्ञानुगतंज्ञानमप्यस्तिकिंचन ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ गुरुनीआज्ञाने आधीनरेहेवाथी द्रव्यदीक्षालीधीहोय, तोपण वीर्योल्लासनी अनुक्रमेवृद्धिकरीने घणाजीव परमपदने पाम्याछे ॥ २७ ॥ एरीतेंअध्यात्मनाअभ्यासकालनेविषेपण क्रियाकांइक लेशमात्रनिश्चेंवर्तेजछे, अनेशुजकारी उंघसंज्ञाने सहचारीपणे तिहांज्ञानपणकांइकवर्त्तेछे ॥ २८ ॥

अतोज्ञानक्रियारूपमध्यात्मंव्यवतिष्ठते ॥
एतत्प्रवर्द्धमानंस्यान्निर्दंजाचारशालिनां ॥ २९ ॥

अर्थ ॥ एजकारणमाटे ज्ञाननेक्रियारूप ते अध्यात्मपणुं वर्तेछे, जे ज्ञानक्रिया रूप तेअध्यात्मछे. एजज्ञानक्रियानिर्दंजाचारेंकरीने मनोहरएहवोजे प्राणीतेनेविषे उत्तरोत्तरवृद्धिनेपामेछे ॥ २९ ॥ एबीजो अध्यात्मनास्वरूपनो अधिकार संपूर्णथयो ॥

दंजोमुक्तिलतावन्हिर्दंजोराहुःक्रियाविधौ ॥ दौर्जाग्यका
रणंदंजोदंजोध्यात्मसुखार्गला ॥ १ ॥ दंजोज्ञानाद्रिदं
जोलिर्दंजःकामानलेहविः ॥ व्यसनानांसुहृदंजोदंजश्चौ
रोव्रतश्रियः ॥ २ ॥ दंजेनव्रतमास्थाययोवांछतिपरमं
पदं ॥ लोहनावंसमारुह्यसोब्धेःपारयियासति ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ मुक्तिरूपवेलीने दहनकरवामां कपटतेअग्निसमानछे; ने क्रियारूप चंद्रने ग्रासकरवाने कपटतेराहुछे; अनेकपटजदुर्जाग्यनुंकारणछे; अध्यात्मसुखनेगलीजनार जुंगलीपणकपटछे. ॥ १ ॥ ज्ञानरूपपर्वतने तोडवानेकपटते वज्रसमानछे; कामरूपी अग्निनीवृद्धिकरवाने घृतजोइयेंतेपणकपटछे, व्यसननोमित्र तेकपटछे; अने व्रतरूप लक्ष्मीनो चोरपण दंजजछे, ॥ २ ॥ कपटराखीव्रतनेविषेरही जेप्राणी परमपद जे मोक्ष ते नीवांछनाकरेछे, तेप्राणीलोढानीनावमां वेसीसमुद्रतरवानी इछाराखेछे,तेवोजाणवो.॥३॥

किंव्रतेनतपोभिर्वादंभश्चेन्ननिराकृतः ॥ किमादर्शेनाकिंदीपै
र्यद्यांध्यंनदृशोर्गतं ॥ ४ ॥ केशलोचधराशय्याभिक्षाब्रह्मव्र
तादिकं ॥ दंभेनदुष्यतेसर्वंत्रासेनैवमहामणिः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेतपेंपणशुं? तेव्रतेंपणशुं? जोकपट दिशाने तजीनही तोतेसर्वनिष्फलछे. ते आरसीएपणशुं ? अनेदीवेपणशुं ? जोदृष्टीएअंधछेतोतेहनेसर्वठेकाणे अंधकारजरेहशे, ॥४॥ केशलोचकरवो, भुमिउपरशयनकरवुं, भिक्षामागवी, शीलव्रतादिकपालवां, ए सर्व धर्मकरणीमात्र कपटेकरीने दुषाइजायछे, जेमसुंदरमणिहोय नेतेउपरएकत्रासलागवाथी तेनीकांतिमंदथायछे, तेहनीपरेंजाणवुं ॥ ५ ॥

सुत्यजंरसलांपट्यंसुत्यजंदेहभूषणं ॥ सुत्यजाःकाम
भोगाद्याडुस्त्यजंदंभसेवनं ॥ ६ ॥ स्वदोषनिन्हवोलोकपूजा
स्याङ्गौरवंतथा ॥ इयतैवकदर्थ्यंतेदंभेनबतबालिशाः ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ रसनुंलोलपीपणुं तेसुखेंतजीशकाय, देहनीशोभा पणसुखें तजीशकाय, कामभोगादिनेपण सुखेंतजाय, पणकपटनो त्यागकरवोघणोज विकटछे, ॥ ६ ॥ पोताना दोषने ढांकीराखेतेथी लोकमांपूजनाथाय, तथामोटाइथाय, एहिजपूजाप्रमुखनी लालचमाटे पोतानाआत्माने मूर्खप्राणीकदर्थना उपजावेछे! ॥ ७ ॥

असतीनांयथाशीलमशीलस्यैववृध्दये ॥ दंभेनाव्रतवृध्यर्थं
व्रतंवेषभृतांतथा ॥ ८ ॥ जानानाअपिदंभस्यस्फुरितंबा
लिशाजनाः ॥ तत्रैवधृतविश्वासाः प्रस्खलंतिपदेपदे ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमकुलटानारीनुंशील जेआचारते कुशीलनी वृध्धिनेअर्थेंज होय, तेम कपटें वेषधरनार व्रतवंताने भवनीवृध्धिथाय; तेअव्रतनी वृध्धिनेअर्थेजथाय ॥८॥ कपटना विपाकनेजाणताथकापण मूर्ख अज्ञानीप्राणीतेज कपटनेविषे विश्वास करताथका पगलेपगले खलनापामेछे ॥ ९ ॥

अहोमोहस्यमाहात्म्यंदीक्षांभागवतीमपि ॥ दंभेनयद्विलुंपंति
कज्जलेनेवरूपकं ॥१०॥ अब्जेहिमंतनौरोगोवनेवन्हिर्दिनेनि
शा ॥ ग्रंथेमौर्ख्यंकलिःसौख्येधर्मेदंभउपप्लवः ॥ ११ ॥

अर्थ॥ अहोइतिखेदेजूउ! मोहराजानोमहिमा! जेभगवंतसंबंधीदीक्षातेपणजेम काजलेकरीने चित्रामणनुं लोपथायछे, तेहनीपरे कपटेकरीने लोपीनाखेछे, जेमकमलने-

विषे हिम, शरीरनेविषेरोग, वननेविषेअग्नि,दिवसनेविषेरात्री, ग्रंथनेविषे मूर्खता, सुखनेविषे क्लेश, तेउपद्रवनाकरताछे; तेमधर्मनेविषेकपट तेदुःखकर्त्ताछे ॥ ११ ॥

अतएवनयोधर्तुंमूलयोत्तरगुणानलं ॥ युक्तासुश्राद्धतातस्य
नतुदंभेनजीवनं ॥ १२ ॥ परिहर्तुंनयोलिंगमप्यलंदृढरा
गवान् ॥ संविग्नपाक्षिकःसस्यान्निर्दंभःसाधुसेवकः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ एहिजहेतुमाटे मूलगुणपंचमहाव्रत अनेउत्तरगुण करणसित्तरीप्रमुख धरवाने जेप्राणी समर्थनहोय, तेणेश्रावकनाव्रतपालवा तेयुक्तजछे पणकपटचारित्रें जीववुं तेरुडुंनथी ॥ १२ ॥ हवेजेप्राणी व्रतनेमूकवाने समर्थनथी केमके जेनेव्रतउपर दृढरागलाग्यो होय तेमूकीशकेनही तोतेनेसंविग्नपक्ष अंगीकारकरवो श्रेष्ठछे, केमके निर्दंभीसाधुनी सेवनाकरवाथी घणोगुणथायछे ॥ १३ ॥

निर्दंभस्यावसन्नस्याप्यस्यशुद्धार्थभाषिणः ॥ निर्जरांयतनादत्ते
स्वल्पापिगुणरागिणः ॥१४॥ व्रतभारासहत्वंयेविदंतोप्यात्मनः
स्फुटं ॥ दंभाद्यतित्वमाख्यांतितेषांनामापिपाप्मने ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ निष्कपटीहोय, शुद्धसिद्धांतना अर्थनाभाषकहोय, तेगुणेकरीने तेउसन्नाप्रमुखसाधु जो थोडीपणजतना करेछे, तोपण तेगुणनारागीपणाथी वर्त्तताथका तेनेनिर्जराथायछे ॥ १४ ॥ व्रतनोभारनथीउपरूतो. पोताथीएवुंजाणताछतांपणजेपोतानाआत्माने प्रगटरीते कपटेकरीने यतिपणुंठरावेछे, संयमीपणुं स्थापेछे, तेलिंगोनुं नामलेतां पण पापथाय तोतेनीसेवनातो, पापकारीथायज तेमांशुंकेहेवुं ? ॥ १५ ॥

कुर्वते ये न यतनां सम्यगालोचितामपि॥तैरहो यतिनाम्नैव
दांभिकैर्वंच्यते जगत् ॥ १६ ॥ धर्मातिख्यातिलोभेन प्रच्छा
दितनिजाश्रवः॥तृणायमन्यते विश्वं हीनोपि धृतकैतवः ॥१७॥

अर्थ ॥ जेलिंगीभलीरीतें द्रव्यक्षेत्रकालभावजोइने यतनथीकरता, तेलिंगीयतिएवेनामेकरीनेकपटीथइ लोकनेठगताफरेछे॥ १६॥जेहीनाचारीथको कपटनोधरनारो लिंगीहोय अनेतेयतिधर्मीछे एवीप्रसिद्धिथइ; कोइ तेनालोभेकरीने पोताना आश्रव नेढांक्याहोय एहवाजे यतिते समग्रजगत्ने तृणतुल्यजाणेछे, ॥ १७ ॥

आत्मोत्कर्षा त्ततोदंभा त्परेषां चापवादतः ॥ बध्नाति कठिनं
कर्म्म बाधकं योगजन्मनः ॥१८॥ आत्मार्थिना ततस्त्याज्योदं
भोऽनर्थनिबंधनं॥शुद्धिः स्यादृजुभूतस्येत्यागमे प्रतिपादितं ॥१९॥

अर्थ॥ पोतानाआत्मानी वक्राइकरे, घणुंकपटधरे, अनेपारकाअवरणवादबोले तेणे करीने कठिणकर्मबांधेछे, तेवापुरुषो ते योगिनाजन्मने बाधककरनाराछे; तेशुद्धचारित्रने पामीशकेनही॥ १८॥ माटेअनर्थनुंकारणजेकपट तेनेधर्मार्थिप्राणीयें तजवुं, केमके आत्मानीशुद्धितो सरलताजावेंथायछे, एवुंआगमनेविषेकह्युंछे॥ १९॥

जैनैर्नानुमतंकिंचिन्निषिद्धंवानसर्वथा॥ कार्यंजाव्यमदंत्नेने
त्येषाज्ञापारमेश्वरी॥ २०॥ अध्यात्मरतचित्तानांदंजःस्वल्पो
पिनोचितः॥ छिद्रलेशोपिपोतस्यसिंधुंलंघयतामिव॥ २१॥

अर्थ॥ तीर्थकरेंएकांते आज्ञापणनथीकरी, तेमसर्वथा निषेधपणनथीकीधो, तो पणजेकार्यकरवुं तेकपटरहितकरवुं एहिजपरमेश्वरनी आज्ञाछे॥ २०॥ जेम वाहाणमां छिद्रनो लेशहोयतेपण समुद्र तरवामांयोग्यनथी, तेम अध्यात्मनेविषेनुं जेनुं मनरंगायुछे, तेनेजरापण कपटकरवुं तेयोग्यनथी॥ २१॥

दंजलेशोपि मल्ल्यादेः स्त्रीत्वानर्थनिबंधनं॥
अतस्तत्परिहाराय यतितव्यं महात्मना॥ २२॥

अर्थ॥ जेम मल्लिनाथजीने कपटनोलेशपण स्त्रीवेदनोकारणिकथयो, माटे महान्पुरुषें कपटतजवाने घणोयत्न करवो॥ २२॥ इति श्रीअध्यात्मसार ग्रंथनेविषे दंजत्यागनामा त्रीजोअधिकार समाप्तथयो॥

तदेवं निर्दंजाचरणपटुता चेतसि जवस्वरूपं संचिंत्य क्षण
मपि समाधाय सुधिया॥ इयं चिंताऽध्यात्मप्रसरसरसी
तीरलहरी सतां वैराग्यादिप्रियपवनपीना सुखकृते॥ १॥

अर्थ॥ एटलामाटे निर्दंजआचरणकरवाने हे चेतन! तुं सावधानथा! आत्मस्वरूपनुं चिंतनकर! केमके क्षणमात्रपण सद्बुद्धिहृदयमांधरीने आत्मस्वरूपनीचिंता करवी तेहिज आत्मदिशारूप सरोवरनीलहरीछे तेशीतलताकरेएवीछे; एहिजसज्जन लोकने वैराग्यदिशारूप पवनपूर्णपुष्टताकारीछे; माटेते आत्मिकसुखने अर्थसाधवी॥ १॥

इतः कामौर्वाग्निर्ज्वलति परितोडुःसह इतः पतंति ग्रावा
णो विषयगिरिकटाद्विघटिताः॥इतःक्रोधावर्तोविकृतितटिनी
संगमकृतः समुद्रे संसारे तदिह न जयं कस्य जवति॥२॥

अर्थ॥ एकतरफकामरूप वडवानलनो अग्निबलीरह्योछे, तेडुःखेसहनथाय एवोछे.

अने एकतरफ पंचप्रकारनाविषयरूप पर्वत, तेहथीपड्याजे उन्मादरूपपथरा, तेणेकरी-भयंकर; वली एकतरफ विकारदिशारूपनदीना संगथकी क्रोधनाआवर्त्तपड्याछे; एवोजे-आसंसारसमुद्रतेनेविषे कहो कयाठेकाणे प्राणीनेजयनथी? सर्वत्रजयजवर्त्तेछे. ॥ २ ॥

प्रिया ज्वाला यत्रोद्गमति रतिसंतापतरला कटाक्षान् धूमौ
घान् कुवलयदलश्यामलरुचीन् ॥ अथांगान्यंगारा कृतबहुविका
राश्च विषया दहंत्यस्मिन्वह्नौ भववपुषि शर्म क्व सुलभं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेसंसारनेविषे रतिनासंतापेकरीने तरला के०चपल एवी जे प्रियाके० भा-र्याते कटुकज्वालावर्त्तेछे; वली नीलकमलदलना सरखी जेनीकांतिछे एहवानेत्रना त्रि-कोणमांथीजेजोवुं तेनुंनामकटाक्ष तेरूपधूम्रना समूहचालेछे, तथास्त्रीनाअंग ते अंगा-रासमानछे, जेअंगवडेघणाप्रकारना विकारप्रगटथायछे तेमाटेसंसाररूप अग्निमां बली-रह्या जेप्राणीतेने भवमांपणसुखनथी तेमजशरीरमां पणकंइंजसुखनथी ॥ ३ ॥

गले दत्वा पाशं तनयवनितास्नेहघटितं निपीड्यंते यत्र प्र-
कृतिकृपणाः प्राणिपशवः ॥ नितांतं दुःखार्त्ता विषमविषयै
र्घातिकभटैर्भवः सूनास्थानं तदहह महासाध्वसकरं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनागलानेविषे पुत्र तथा स्त्रीरूपस्नेहनोफांसो नखायोछे, तेनास्नेहपाश-मां पड्यातुछस्वभावनाधणी तेअतिशयपणे पीडापामेछे. आकराविषयरूपजे घातकी सुभट तेणेकरीनेसंसारते खाटकीनुंस्थानकछे, माटेहाहासंसारतेकेवलदुःखनुंमूलछे ॥४॥

अविद्यायां रात्रौ चरति वहतो मूर्ध्नि विषमं कषायव्यालौघं
क्षिपति विषयास्थीनि च गले ॥ महादोषान् दंतान् प्रकटयति
वक्रस्मरमुखो न विश्वासार्होयं भवति भवनक्तंचर इति ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अज्ञानदिशारूप रात्रिनोचालनार जेनामाथाउपर विषमकषायरूप सर्पनो-समूहरह्योछे, जेनागलानेविषे विषयरूपहाडकांबांध्यांछे, जेमहोटादोषरूप दांतप्रगटक-रेछे, जेनुंमुख कामनीचेष्टाकरेछे, एवोसंसाररूपीराक्षस तेविश्वासकरवानेयोग्यनथी.॥५॥

जना लब्ध्वा धर्म्मद्रविणलवभिक्षां कथमपि प्रयांतोवामा-
क्षीस्तनविषमदुर्गस्थितिकृतः ॥ विलुप्यंते यस्यां कुसुमशर
भिल्लेन बलिना भवाटव्यां नास्यामुचितमसहायस्य गमनं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणीधर्मरूपधनना लवलेशनेपाम्योछे, तेणेभिक्षामागवाने एकलाविच-

रखुंनही, केमके नवाटवीनेविषे बलवत्तरभील एवोजेकाम तेस्त्रीनास्तनरूप विषयीकोटमांरहीने तेप्राणीमात्रना धर्मरूपधनने लुटीलीयेछे, माटे सहायविना ते प्राणीयें एकलुं विचरवुं ( चालवुं ) योग्य नथी ॥ ६ ॥

धनं मे गेहं मे मम सुतकलत्रादिकमतो विपर्यासादासादि-
तविततदुःखा अपि मुहुः ॥ जना यस्मिन् मिथ्यासुखमद-
भृतः कूटघटनामयोयं संसार स्तदिह न विवेकी प्रसजति ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ धन, घर, पुत्र, ने स्त्रीआदि सर्ववस्तु मारी छे, एवाविपर्यासपणाथी विशेषप्रसिद्धदुःखजछे, माटे जेप्राणीवारंवार सुखनेमदेभर्याथका सुखमानेछे, ते फोकट छे. ए संसारतो केवल कपटरचनायें भर्योछे. तेनेविषे विवेकीप्राणीयें प्रीति करवीनही॥७॥

प्रियास्नेहोयस्मिन्निगडसदृशो यामिकभटोपमः स्वीयो-
वर्गोधनमभिनवं बंधनमिव ॥ महामेध्यापूर्णं व्यसनबिस
संसर्गविषमं भवः कारागेहं तदिह न रतिः क्वापि विदुषां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ स्त्रिनोस्नेहतेबेडीसमानछे, बीजासगासंबंधीलोकते पोरियातसमानछे, धनसंपत्तिते नवाबंधनसरखीछे, अने महा अमेध्येंकरीसहितछे; सातप्रकारना व्यसनरूप बिलेंसहितछे; टुंकामांकहियेंतोआसंसारते बंदिखानाजेवोछेमाटेपंडितलोकने ए वस्तुमांहेली एके वस्तुउपर रति के० मरजी थती नथी. ॥ ८ ॥

महाक्रोधोगृध्रोऽनुपरतिशृगाली च चपला ॥ स्मरोलूकोयत्र
प्रकटकटुशब्दः प्रचरति ॥ प्रदीप्तः शोकाग्नि स्ततमपयशोभ-
स्म परितः श्मशानं संसारस्तदतिरमणीयत्वमिह किं ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेपंडितलोकते आसंसारने स्मशानसरखोकहेछे, केमके स्मशानमांरेहेनारीचीजो सर्वसंसारमांछे, तेकहीबतावेछे, जेमस्मशानमां गिधपक्षीछे, तेमसंसारमां महाक्रोधते गीधपक्षीछे; अरतिरूपघणीचपल शियालणीछे; घुवरूपक्षीरूप कामछे, तेप्रगटपणे कडवाशब्दथी रुदनकरेछे; देदीप्यमान शोकरूपी अग्निप्रज्वलेछे; निरंतर अपयशरूप राख छे; माटे संसारते स्मशान छे, एमां रमणीक चीज कोइ नथी ॥ ९ ॥

धनाशा यच्छायाप्यति विषयमूर्छा प्रणयिनी विलासोनारीणां
गुरुविकृतये यत्सुमरसः ॥ फलास्वादोयस्य प्रसरनरकव्या-
धिनिवह स्तदास्था नो युक्ता भव विषतरावत्र सुधिया ॥ १० ॥

अर्थ ॥ धननीजेइच्छा तेअतिशयविषयरूप विषममूर्छानी विस्तारनारीछे. स्त्रीयोनो विलास ते महाविकारकारी कुसमनोरसछे. जेनाफलनोस्वाद विस्तारपामतोनर्कनीपिडाना समूहतुल्यथाय; एवुंसंसाररूप विषयवृक्षछे, एनीहेठल विश्रामकरवोयुक्तनथी ॥१०॥

क्वचित् प्राज्यं राज्यं क्वचन धनलेशोप्यसुलजः क्वजि जातिस्फातिः
क्वचिदपि च नीचत्वकुयशः ॥ क्वचिल्लावण्यश्रीरतिशयवती-
क्वापि न वपुः स्वरूपं वैषम्यं रतिकरमिदं कस्य नु जवे ॥११॥

अर्थ ॥ कोइनेतोविस्तारवालुंराज्यछे, कोइनेधननोलेशपण दोहेलोछे, कोइनीउत्तम जातिछे, कोइनीनीचजातिछे,कोइनेअपयशछे,कोइनेलावण्यलीलानी लक्ष्मीघणीछे, कोइनुंशरीरपण रुडुं नथी, एवुंसंसारनुंस्वरूपविषमछे. तेकोनेरतिकारीथाय ? ॥ ११॥

इहोद्दामः कामः खनति परिपंथी गुणमही मविश्रामः पार्श्व-
स्थितकुपरिणामस्य कलहः ॥ बिलात्यंतः क्रामन्मदफणभृ-
तां पामरमतं वदामः किंनाम प्रकटजवधामस्थितिसुखं ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ इहांउद्दामकामदिशाछे; तेजपरिपंथीके० शत्रुछे; तेगुणरूपजे महीके० पृथ्वीतेनेखणेछे अनेपासेरह्योजे कुपरिणामते विश्रामलीधाविना निरंतर क्लेशकरेछे; एक्लेशवडे खरडाया एवाजेप्राणी तेअष्टमदरूपसर्प तेणेकरीयुक्तछे. एवुंपामरलोकने मानवायोग्य आ संसाररूप जे घर तेनुं शुं सुख कहियें? ॥ १२ ॥

तृषार्त्ताः खिद्यंते विषयविवशा यत्र जविनः करालक्रोधार्का-
उमसरसि शोषं गतवति ॥ स्मरस्वेदक्लेदग्लपितगुण
मेदस्यनुदिनं जवग्रीष्मे जीष्मे किमिह शरणं तापहरणं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे प्राणीमात्र पुद्गलनी तृष्णारूपतरसेकरीने पीडाणाछे; अने विषयनीआशायेंकरी परवशथयाछे; एहवाप्राणीयो विहामणाक्रोधेंकरीपीडायछे, केमके तेमनेमाटे शमतारूपसरोवरतो सुकाइगयुंछे, अनेकामदिशारूपजे परिस्वेद तेनीजेग्लानता तेणेकरीनिरंतर गुणमेदा खरडायछे. ज्यां एहवोबिहामणो आसंसाररूपउष्णकाल छे, त्यां तेना तापने हरे एवो कोइ नथी ॥ १३ ॥

पिता माता भ्राता प्यजिलषितसिध्यावजिमतो गुणग्रामज्ञाता
न खलु धनदाता च धनवान् ॥ जनाः स्वार्थस्फातावनिशमवदा
नाशयभृतः प्रमाता कः ख्यातावि‍ह जवसुखस्याशु रसिकः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ आसंसारनेविषे पितामातानेभ्राताके० भाइआदी तेसवेंचिंतितअर्थनी अभिलाषापुरे त्यांलगीअभिमतके० संमतकरीमाने, तथागुणनासमूहनोजाण एहवोधनवंतप्राणीहोयतेपण कृपणपणेकरीने गुणीजनने धनदेइशकेनही, एम सर्वप्राणीपोताना स्वार्थसाधनकरवाने सावधानपणेवर्त्तेछे, पणपरमार्थथी वेगला वसेछे, एवाभवसुखना रसियाजेजीवतेहना स्वरूपने केहेवाने कोण समर्थ थइ शके! ॥ १३ ॥

पणेः पाणिंगृह्णात्यहह महति स्वार्थ इह यान् त्यजत्युच्चैर्लोक
स्तृ [illegible]था ॥ विषं स्वांते वक्त्रेऽमृतमिति च विश्वा
सहतिकृन्नवादित्युद्वेगोयदि न गदितैःकिं तदधिकैः ॥ १५ ॥

अर्थ॥एमस्वार्थने वशथइने प्राणी चंडालनो हाथपकडी चालेछे! अहोइतिआश्चर्य! जेस्वार्थपणुंतेएहवुंछे. वलीजेउत्तमकुलथी उपजेलातेहनेतजेछे अने तरणाजेवोनिर्लज्ज थइने हैयामांतो केरभर्युंहोय पण मोढे अमृतजेवुंमीठुंबोलेछे. एवा अनेक प्रपंच स्वार्थमाटेप्राणीकरेछे, नेविश्वासघातीथायछे. एवाप्राणीआसंसारमांवसेछे, तेजोइनेपण आसंसारथी जेनुंमनउद्वेगपामतुंनथी तेने घणुं शुं कहियें? ॥ १५ ॥

दृशां प्रांतैः कांतैः कलयति मुदं कोपकलितैरमीभिः खिन्नः
स्यादघनधननिधीनामपि गुणी ॥ उपायैस्तुत्याद्यैरपनय-
ति रोषं कथमपीत्यहो मोहस्येयं भवभवनवैषम्यघटना ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीदृष्टिना प्रांतके० खुणातेमनोहरछे, माटेतेनाजोवाथी हर्षउपजेछे, अने स्त्रीनीकोपयुक्तदृष्टिखराबछे माटेतेदेखीनेखेदउपजेछे, तथाघणाधनवालापुरुषने गुणीजनोस्तुतिआदिकरीरीजवेछे, ने कष्टसहीनेतेमनोरोषउतारेछे, एसघलुंमोहथकीथायछे. माटे जुओमोहरूपीराजानुं केवुंविषमतापणुंछे केजेतजवायोग्यछे तेनो आदरकरावेछे अने जेनोआदरकरवोजोइये तेनोत्याग करावेछे? ॥ १६ ॥

प्रिया प्रेक्षा पुत्रोविनय इह पुत्री गुणरति र्विवेकाख्यस्तातः
परिणतिरनिंद्या च जननी ॥ विशुद्धस्य स्वस्य स्फुरतिहि कु-
टुंबं स्फुटमिदं भवे तन्नोदृष्टं तदपि बत संयोगसुखधीः ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जीवनेतत्त्वविचारणाकरवीतेस्त्रीछे, विनयकरवोतेपुत्रछे, गुणनेविषेजेरतिकरवीतेपुत्रीछे, स्याद्वादपणेस्वपरविवेचनकरवुंतेपिताछे, अनिंद्याजेपारकीनिंदातजवीतेआत्मानी माताछे, एवुंजेअंतरंगकुटुंबछे, तेतोजेवारें आत्माशुद्धथाय तेवारेंप्रगटरीतेंपेदाथाय, पणतेनेजेपुरुषसंयोगीसुखमां मग्नथइरह्योछे तेतोक्यारेपणदेखतोनथी. ॥ १७ ॥

पुरा प्रेमारंजे तदनु तदविछेदघटने तडछेदे ङःखान्यथ क-
ठिनचेता विषहते ॥ विपाकादापाकाहितकलशवत्तापबहु-
लाजनोयस्मिन्नस्मिन्कचिदपि सुखं हंत न जवे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ प्रथमप्रेमकरतांङुःखछे; तेपछीतेनेनिश्चलपणेराखवाने पणघणुंङुःखछे; वली-तेप्रेमपात्रनो विछेदथाय, मरणथाय अथवाप्रेमत्रुटे त्यारेसउथीवधारे ङःखउपजे, ने ते सहनकरवाने ठातीघणीकठणराखवीपडे, नींजाडानापाकनेविषे आरोपितकस्यो एवो जे घट तेनासरखीतापनी बहुलताछे ज्यां तोएवोजे आसंसाररूप नींजाडोतिहां सुखतो कांइज नथी. समग्र ङुःखमयजछे. ॥ १७ ॥

मृगाक्षी दग्बाणै रिहहि निहतंधर्म्मकटकं विलिप्ताहृद्देशा
इह च बहुलैरागरुधिरैः ॥ ज्रमंत्यूर्ध्वं क्रूरा व्यसनशतग्
धाश्च तदियं महामोहक्षोणीरमणरणजूमिः खलु जवः ॥ १ए ॥

अर्थ॥ आसंसारनेविषे धर्मराजाना कटकनेतोमृगनयनीना दृष्टिरूपीवाणे हणी ना-ख्युं; रागदिशारूपरुधीरवडे लोपाइगयाछे हृदयप्रदेशजेनाते उपर अनेकप्रकारना मन तनसंबंधीकष्टरूपीगीधपक्षीयो जमीरह्याछे; एवो महामोहरूप क्षोणीरमण जे राजा ते-नी रणजूमीसमान आ संसार छे ॥ १ए ॥

हसंति क्रीमंति क्षणमथच खिद्यंति बहुधा रुदंति क्रंदंति क्ष
णमपि विवादंविदधते ॥ पलायंते मोदं दधति परिनृत्यंति
विवशा जवे मोहोन्मादं कमपि तनुजाजः परिगताः ॥ २० ॥

अर्थ ॥ क्षणमांहसे, क्षणमांक्रीडाकरे (रमे), क्षणमांखेदकरे, क्षणमांबहुप्रकारें रडे, क्षणमांविलापकरे, क्षणमांअनेकप्रकारनो विवादकरे, क्षणमांनासीजाए, क्षणमां हर्षित थइ नाचवामांडे, इत्यादीउन्मादसंसारनेविषे देहधारीप्राणीयोकरेछे, ते सर्व मोहराजा-ने आधीनथका करेछे ॥ २० ॥

अपूर्णा विद्येव प्रकटखलमैत्रीव कुनयः प्रणालीवा स्था
ने विधववनितायौंवनमिव ॥ अनिष्णाते पत्यौ मृगदृशइव
स्नेहलहरी जवक्रीडाव्रीमा दहति हृययं तात्विकदृशां ॥२१॥

अर्थ ॥ असंपूर्णविद्याजेमपंडितने, तेमज खलमाणसनी मित्राइ, वलीराजसजामां अ-न्यायनी प्रणालिका एटलेअन्यायनोमार्ग, तथा विधवास्त्रीनुंयौवन, वलीमूर्खजरतारने-

आगलस्त्रीनास्नेहनीलहरी तेजेमखेदनीपात्रथायछे तेमजसंसारनीक्रीडा जेलज्ञामणीछे तेथी तत्त्वदर्शींप्राणीडुःखपामेछे ॥ २१ ॥

प्रभाते संजाते भवति वितथा स्वापकलना द्विचंद्रज्ञानं वा
तिमिरविरहे निर्म्मलदृशां ॥ तथा मिथ्यारूपं स्फुरति विदि
ते तत्त्वविषये भवोयं साधूनामुपरतविकल्पः स्थिरधियां ॥२२॥

अर्थ ॥ जेम प्रभातसमयस्वप्ननीरचना निष्फलथइजायछे, जेमकोइनीआंखमां जाकलआवीहोय तेहनेआकाशमां बेचंद्रमाभासे पणनिर्मलदृष्टथितां बेचंद्रमानुं भ्रांतिज्ञानमटीजायछे, तेमसंसारथीन्यारारह्या, एहवाजेस्थिरबुद्धिवाला तत्त्वज्ञानसमजेला-साधु तेने आ संसार ते मिथ्यारूपभासेछे ॥ २२ ॥

प्रियावाणीवीणाशयनतनुसंवाधनसुखै र्भवोयं पीयूषैर्घ
टितइति पूर्वं मतिरभूत् ॥ अकस्मादस्माकं परिकलितत
त्त्वोपनिषदामिदानीमेतस्मिन्न रतिरपितु स्वात्मनि रतिः ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीवाणीयेंकरीने तथा विणानादेकरीने शय्यायेंकरीने वलीशरीरनेचोलवुं चापवुंतेणेकरीने जे सुखउपजेछे, ते अमृतेकरीनेघुटेलुंहोयतेवुंछे. एवुंपूर्वेंबालकालें वर्तायुंहतुं, पण हवेसहसात्कारेंअमने तत्त्वदिशानारहस्यनी परिकलनाथइ जाणपणुं थयुं; तेथी संसारनेविषे तत्त्वरुचिवर्त्तति नथी, पण आत्मतत्त्वमां रुचिथइ छे ॥ २३ ॥

दधानाः काठिन्यं निरवधिकमाविद्यकभवप्रपंचाः पांचाली
कुचकलशवन्नातिरतिदाः ॥ गलत्यज्ञानाभ्रे प्रसृमररुचावा
त्मनि विधौ चिदानंदस्यंदः सहजइति तेभ्योस्तु विरतिः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ संसारनासमस्तप्रपंच तेअतिशयकठिणताने धरताथकाछे, माटेमुजने काष्टअनेपाषाणनी पुतलीनास्तननीपेरे रतिकारीनथीलागता. केमके अज्ञाननुंवादल गलीगयुंछे अनेआत्मिकज्ञानरूप चंद्रोदयथयो तेथीसहजचिदानंदरसनी शीतलता प्रगटी तेणेकरी विषयतापनी अरतिमटीगइ. ॥ २४ ॥

भवे या राज्यश्रीर्गजतुरगगोसंग्रहकृता न सा ज्ञानध्यानप्र
शमजनिता किंस्वमनसि॥ वहिर्याः प्रेयस्यः किमु मनसि ता ना
त्मरतय स्ततः स्वाधीनं कस्त्यजति सुखमित्यथ परं ॥२५॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे हाथी, घोडा, बलद, प्रमुखजेराजलक्ष्मीछे, तेशुंअंतरंगआत्माने

नथी ? अर्थात् छे. ज्ञानहाथी, ध्यानघोमा, समतातेबलद, एलक्ष्मीआत्मानीछे; अनेतुंजो मनवमेबाह्यसाथें प्रेमकरेछे तोपोतानाआत्मासाथें रतिकेमकरतोनथी ? आत्मिकसुखत- जीने पौज्ञलिकसुखने कोणइछे ? एवोमूर्खकोणहोय ? ॥ २५ ॥

पराधीनं शर्म्म क्षयि विषयकांक्षौघमलिनं नवे नीतेः स्थानं त
दपिकुमतिस्तत्र रमते॥बुधास्तु स्वाधीने दक्षयिणि करणौत्सुक्य
रहिते निलीनास्तिष्ठंति प्रगलितनयाध्यात्मिकसुखे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ पौज्ञलिकसुखकेवुंछे ? एकतोपराधीनछे; स्वनावेक्षयथवालायकछे; विषयनी वांछनावडेमलिनछे; एमसंसारनेविषेनयनांस्थानघणांछे, तेछतांकुमतिनाधणी संसारमां रमेछे. अनेपंडितलोकजेछे तेस्वाधीनसुखमांरमेछे. तेसुखकेवुंछे, केजेकोइकालेंक्षयपामे नही; इंद्रियोनीउत्सुकतायेंरहितछे जेप्राणीआत्मज्ञानमां लयपाम्याथकाछेतेप्राणी स- कलनयदिशा रहितथका परमानंदनेविषे मग्नपणेरहेछे ॥ २६ ॥

तदेतन्नाषंते जगदनयदानं खलु नवस्वरूपानुध्यान शमसु
खनिधानं कृतधियः ॥ स्थिरीनूते ह्यस्मिन्विधुकिरणकर्पूरवि
मला यशःश्रीः प्रौढा स्याज्जिनसमयतत्त्वस्थितिविदा ॥२७॥

अर्थ ॥ आजगतप्रत्येपंडितलोक एमकहेछे, जेपोतानाआत्मनावना स्वरूपनुंचिंत- नतेज शमताना सुखनुंकारणछे, अनेजगतनेअनयदाननुं देवावालुंछे.जेणेकारकता ना- वेंबुद्धिकरीछे तेनेआत्मस्वरूपज्ञान स्थिरथयेथके चंद्रकिरणकर्पूरसरीखी उज्ज्वल य- शलक्ष्मीतेप्रौढपणे विस्तारपामे, एवातत्त्वज्ञानी तेजिनेश्वरप्रणीत सिद्धांतनातत्त्वनी म- र्यादायेंवर्त्ते ॥ २७ ॥ इतिनवस्वरूपचिंताधिकारःचतुर्थःसमाप्तः ॥

इतिश्रीनयविजयगणिशिष्य श्रीयशोविजयेनविरचिते अध्यात्मसा
रप्रकरणे प्रथमः प्रबंधः ॥ १ ॥ सर्वश्लोक १०२ तेमां पेहलाना
२४ बीजाना २९ त्रीजाना २२ तथा चोथाअधिकारना ॥ २७ ॥

नवस्वरूपविज्ञाना द्वेषान्नैर्गुण्यदृष्टिजात् ॥ तदिच्छोच्छेदरू
पं प्राग् वैराग्यमुपजायते॥१॥ सिद्ध्या विषयसौख्यस्य वैराग्यं
वर्णयंति ये ॥ मतं न युज्यते तेषां यावदर्थोप्रसिद्धितः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ नवनुं स्वरूपजाणवायकी संसारउपरद्वेषथयायकी संसारनेनिर्गुणपणेदेखवा- थकी शीघ्रपणे संसारना विछेदनोवैराग्य आत्मानेविषे प्रगटथाय ॥ १ ॥ विषयसुख-

नीसिद्धि-निष्पत्ति-प्राप्तितेवडे जेवैराग्यनुंवर्णनकरेछे, तेनुंमत घटमान नथी. जिहांसुधी अर्थके० द्रव्यछेतिहांसुधीविषयछे, एवीप्रसिद्धिछे. "अर्थसत्वेविषयसत्वं" ॥ इति. ॥२॥

अप्राप्तत्वभ्रमाद्वच्चै रवाप्तेष्वप्यनंतशः ॥ कामभोगेषु मूढानां
समीहा नोपशाम्यति ॥ ३ ॥ विषयैः क्षीयते कामो नेंधनैरिव
पावकः ॥ प्रत्युत प्रोल्लसच्छक्ति र्भूय एवोपवर्द्धते ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेएमजाणेछे, जेहुंकोइकाले संसारनेविषेआव्योजनथी, जोअनंतिवारविषयसेव्याछे, तेछतांआविषयनवापाम्यो,एवोभ्रमजेनेउपजेछे,एवाजेकामभोगने विषे मुंझाइरह्याछे, तेनीअभिलाषानोनाशथतोजनथी ॥३॥ जेमइंधनथीअग्निघटेनही, पणउलटी वृद्धिजपामे, तेमविषयसेवतां कामभोगपण कदापिक्षयपामेनही, उलटी शक्तिउल्लासपामतीजाये; वारंवारवधतीजजाए ॥ ४ ॥

सौम्यत्व मिव सिंहानां पन्नगानामिव क्षमा ॥ विषयेषु प्रवृत्ता
णां वैराग्यं खलु दुर्लभं ॥ ५ ॥ अकृत्वा विषयत्यागं योवैराग्यं
दिधीर्षति अपथ्यमपरित्यज्य स रोगोच्छेदमिच्छति ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमसिंहनेसोमपणुंनथी, सर्पनेजेमशमतानथी,तेमविषयमां जेप्रवर्त्या तेमने वैराग्यदोहिलोछे, पण सुगमनथी ॥ ५ ॥ जेविषयनोत्यागकर्याविना चित्तमां वैराग्यनी धारणाकरेछे, तेकुपथ्यतज्याविना रोगटालवानी इछा करे एवुं छे ॥ ६ ॥

न चित्ते विषयासक्ते वैराग्यं स्थातुमप्यलं ॥ अयोघन इवोत्तप्ते
निपतन्बिंदुरंभसः ॥७॥ यदींदुः स्यात् कुहूरात्रौ फलं यद्वव
केशिनी ॥ तदा विषयसंसर्गिचित्ते वैराग्यसंक्रमः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेम लोढानो घण तप्योहोय तेपाणीनाबिंदुने शोषीजायछे, तेमजेनुंचित्त विषयासक्तछे, तेनाहृदयमां वैराग्यरहीशकतो नथी ॥ ७ ॥ जो अमासनीरात्रीयें चंद्र उगे, अने जोवांझीआवृक्षने फलआवे; तोविषयीजीवना हृदयमां वैराग्यसंक्रमे ॥८॥

भवहेतुषु तद्द्वेषा द्विषये ष्वप्रवृत्तितः ॥ वैराग्यं स्यान्निराबाधं
भवनैर्गुण्यदर्शनात् ॥ ९ ॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने नन्वेवं तत्
प्रसज्यते ॥ युक्तं खलु प्रमातॄणां भवनैर्गुण्यदर्शनं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ भवनी वृद्धिनाहेतुउपरजेनेद्वेषहोय विषयनेविषे जेनीप्रवृत्तिनहोय तेप्राणीने संसारनीनिर्गुणताना चिंतनथकी निराबाधपणे वैराग्यउपजे ॥ ९ ॥ चोथागुण

ठाणानेविषेपण सम्यक्त्ववंत ज्ञातापुरुषनिश्चयनयपणे संसारनीनिर्गुणताज जुयछे, तो तेने वैराग्यनीप्राप्तिथायछे, तेयुक्तजछे ॥ १० ॥

सत्यचारित्रमोहस्य महीमा कोप्ययं खलु ॥ यदन्यहेतुयोगे
पि फलायोगोत्र दृश्यते॥११॥दशाविशेषे तत्रापि नचेदं ना
स्ति सर्वथा ॥ स्वव्यापारहतासंगं तथा च स्तवभाषितं ॥१२॥

अर्थ ॥ चारित्र मोहनीनोमहीमा साचोजछे, केमके निश्चेंथकी अन्यजोगहेतुयेंपण फललुं अयोग्यपणुं तेथकी जोवामां आवेछे ॥११॥ सम्यक्त्वनीदशाविशेषेंकरीने तेचोथेगुणठाणेपण सर्वथावैराग्यनजहोय, एमनजाणवुं, तिहांपणपोताना आत्मिक स्वभावनी रमणतायें कुसंगपणुंहणायछे, ए अर्थ वीतरागस्तोत्रनेविषे श्रीहेमाचार्यजीयें करेलोछे; माटे चोथे गुणठाणे वैराग्यपणुं होय॥ १२॥

यदा मरुन्नरेंद्रश्रीस्त्वया नाथोपभुज्यते ॥यत्र तत्र रतिर्नाम
विरक्तत्वं तदापि ते॥१३ ॥भवेछा यस्य विछिन्ना प्रवृत्तिः कर्म्म
भावजा ॥ रतिस्तस्य विरक्तस्य सर्वत्र शुभवेद्यतः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जे काळें देवताना राजानी लक्ष्मी हेनाथ! तमेभोगवी तिहांपणजिहांजिहां रतिमोहिनीउपजेते तमेकरीनथी, त्यांपणतमेविरक्तपणुजकह्युछे. पणरंगायानथी ॥ १३ ॥ माटे भवनीइछाजेहनेविछेदथायछे, तेनेजेअवश्यवेदवायोग्य भावकर्मनी प्रवृत्तिप्रमुख जेविरक्तआत्मानेरतिपणुंछे तेसर्वत्र शुभवेदनीजवर्त्तेछे. ॥ १४ ॥

अतश्चाक्षेपकज्ञानात् कांतायां भोगसन्निधौ ॥ न शुद्धिप्रक्षयो
यस्माध्दारिभद्रमिदं वचः ॥ १५ ॥ मायांभस्तत्त्वतः पश्यन्ननु-
द्विग्नस्ततोद्भुतं॥ तन्मध्ये न प्रयात्येव यथा व्याघातवर्जितः ॥१६॥

अर्थ ॥ एहिजकारणमाटे स्वरूपज्ञाननाअभ्यासेंकरी अथवा अन्यवस्तुयेंकरी अन्यवस्तुनुंपुरवुं तेक्षेपककेवाय;तेक्षेपकपणुंजेनेनथी; तेनुंनामअक्षेपककहियें; एहवोअक्षेपक ज्ञानवंत निश्चेभावनुंग्रहणकरनारो ते पुरुषजोकांता जेस्त्रीतेनाभोगनेसन्मुख प्रवर्त्ततो होय, तोपणतेहनी शुद्धिनोप्रकर्षरीतें क्षयनथाय; एटले ज्ञानशुद्धिते कर्मक्षयनुं कारणछे एवुंहरिभद्रसूरीनुंवचनछे ॥ १५ ॥ परमार्थदिशायकी सर्वसंसारने इंद्रजालसमान देखतोथकोअनुद्वेगदिशामांवर्त्ते, जेहनेकामभोगमां उद्वेगनथी, ने रागपण नथी ते तेयेकरीतेमां तन्मयपणुंनकरे, तेनिरविघ्नपणे यथायोग्येंमोक्षेजजायछे॥ १६ ॥

भोगान् स्वरूपतः पश्यंस्तथा मायादिकोपमान् ॥ भुंजानोपि
ह्यसंगः सन् प्रयात्येव परं पदं ॥ १७ ॥ भोगतत्त्वस्य तु पुनर्न भ
वोदधिलंघनं ॥ मायोदकदृढावेशस्तेन यातीह कुपथा ॥१८॥

अर्थ ॥ जेप्राणी शब्दादिकभोगने परमार्थदिशायें जोतोथको इंद्रजालसमानजाणेते विषयादिकने भोगवतोपण तेमांलेपातोनथी, तेनिश्चयपरमपदजे मोक्षतेनेपामेछे ॥१७॥ अनेजेभवाभिनंदीप्राणी तेसंसारना भोगनेज तत्त्वकरीमानेछे, तेप्राणीसंसारसमुद्रने उलंघीनशके, केमके मायारूपउदकनाआवेशें तेप्राणीकुपंथनेविषेजायछे ॥ १८ ॥

स तत्रैव भवोद्विग्नो यथा तिष्ठत्यसंशयं ॥ मोक्षमार्गेपि हि तथा
भोगजंबालमोहितः ॥ १९ ॥ धर्म्मशक्तिं न हंत्यत्र भोगयो-
गबलीयसीं ॥ हंति दीपापहोवायुर्ज्वलंतं न दवानलं ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेप्राणीभोगनो जंबालके० कलिमलतेणेमोहितथयोथको मोक्षमार्गना साधननेविषेपण भवोद्विग्नतापणेनिश्चयथकीरहेछे ॥ १९ ॥ धर्मनिसामर्थताने कामभोगनो संयोग हणीशकतोनथी, केमके धर्मनीसामर्थता घणीबलवत्तरछे. दीपकसमान अल्प धर्मनेतोकदापि वायुसमानविषयओलवीनाखे, पणजाज्वल्यमान दावानलसमान जे महाधर्मनी वासना तेने वायुनडीशकतो नथी ॥ २० ॥

बध्यते बाढमासक्तो यथा श्लेष्मणि मक्षिका ॥ शुष्कगोलवद्
श्लिष्टो विषयेभ्यो न बध्यते ॥ २१ ॥ बहुदोषनिरोधार्थमनिवृत्तिर
पि क्वचित् ॥ निवृत्तिरिव नो दुष्टा योगानुभवशालिनां ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेम श्लेष्मनेविषे माखीलेपाइ फसाइजायछे, तेम विषयनेविषे गाढापणे आसक्तथतां प्राणीबंधाइजायछे. सुकीमृत्तिकानागोलामांजेम माखीफसातीनथी तेम आसक्तिरहितउदासीन एवाजेजीव तेविषयनेविषे बंधातानथी ॥ २१ ॥ जेम रोग ने काढवाने औषधोनीजरूरछे, तेमघणादूषणनो रोधकरवानेअर्थे क्वचित्अनिवृत्तिपणुं पण दुष्टनथी. जेमकामभोगनी त्यागबुद्धिदुष्टनथी,तेमअनुभवजोगेकरीने सहित जेवर्त्ते तेनेक्वचित्मात्र अनिवृत्तिछे. तेपण निवृत्तिनीपरेंज दुष्टनथी ॥ २२ ॥

यस्मिन्निषेव्यमाणेपि यस्याशुद्धिः कदाचिन ॥ तेनैव तस्य शुद्धिः
स्यात् कदाचिदिति हि श्रुतिः ॥ २३ ॥ विषयाणां ततोबंधजनने
नियमोस्ति न ॥ अज्ञानिनां ततो बंधो ज्ञानिनां तु न कर्हिचित् ॥२४॥

अर्थ ॥ जेमशत्रुनी सेवनाकरनारोपुरुष दुःखीथोथइने कालांतरेसुखीथाय, तेम कदापि विषयनेसेवनारो कर्मेकरीने तेहिजविषयादिकथीशुद्धथाय, एवीपण कोइकनी श्रुतिछे ॥ २३ ॥ जेविषयतेएकांतेकर्मबंधनुंजकारणछे, एवोएकांतनियमनथी. पण जेअज्ञानीछे तेनेजकर्मबंधनु कारणछे, पणजेतत्त्वज्ञानी समतारसमां मग्नछे, तेनेनथी ॥२४॥

सेवतेऽसेवमानोपि सेवमानो न सेवते ॥ कोपि पारजनो न स्या
द्यन्नन् परजनानपि ॥ २५ ॥ अतएव महापुण्यंविपाकोपहि
तश्रिया ॥ गर्भादारभ्य वैराग्यं नोत्तमानां विहन्यते ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ केटलाकप्राणी विषयनेद्रव्यथी अणसेवताथका पणभावथी विषयनेसेवेछे; केटलाकप्राणी द्रव्यथीसेवेछे पणभावथीनथीसेवता, पारकीसेवनाकरतोथको पणतेहनो परमार्थपरप्रतेनदेतोथको एहवोजेज्ञानीते कर्ममयीजनथीथतो ॥ २ ॥ एमाटेउत्तम-पुरुषें महापुण्यविपाकनायोगें प्राप्तकरी एहवीजे तीर्थंकरादिकनीलक्ष्मी तेनेगर्भथकी मांडीनेपण वैराग्यधारात्रुटतीनथी. ॥ २६ ॥

विषयेभ्यः प्रशांताना मश्रांतं विमुखैः कृते ॥ करणैश्चारुवैरा
ग्य मेष राजपथः किल ॥ २७ ॥ स्वयंनिवर्त्तमानैस्तै रनुदीर्णै
रयंत्रितैः॥ तृप्तैर्ज्ञानवतां तस्मात्स्यादसावेकपदी मता ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ जेहनेविषयथकी प्रशांतचित्तथयुंछे, अनेविश्रामरहित इंद्रियोनाविषयने विमुखकरवुं तेणेकरीने मनोहरवैराग्यमार्गसेववानुंबने, अनेविषयनोपणत्यागथाय, ते तोनिश्चयथकी वैराग्यदिशानो राजमार्गछे ॥ २७ ॥ अनेजेइच्छाविनां सहेजेकोइकार णयोगे पोतेइंद्रियविकारथकीनिवर्त्तेछे, पण प्रशांतनेअणउदीरवेकरीने अनियंत्रणायें करी एटलेइंद्रियनोनिरोध हजीकर्योनथी, पणसहेजचारित्रप्रमुखना योगेंइंद्रियनि रोधथयाछे एहवातृप्तिवंत ज्ञानीपुरुषतेनोवैराग्यते पूर्वोक्तराजमार्गनावैराग्यनी एकप-दीछे, एटलेएकदंडीछे. जेमगाडाचालवानामार्गने तोमहोटोमार्गकहियें, पणमाणसोनेप गेचालवानोरस्तो न्हानोथायछे, तेवोतेवैराग्यपण न्हानोकहियें. ॥ २८ ॥

बलेन प्रेर्यमाणानि करणानि वनेभवत् ॥ न जातु वशतां यां
ति प्रत्युतानर्थवृद्धये ॥ २९ ॥ पश्यंति लज्जया नीचै दुर्ध्यानं
च प्रयुंजते ॥ आत्मानं धार्मिकाभासाः क्षिपंति नरकावटे ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ बलात्कारेंप्रेर्याथकापण वननाहाथीनीपेठेइंद्रियो कदापि वशथतीनथी, उ-

लटीअनर्थनी वृद्धिकरनारीथायछे ॥ २९ ॥ लाजेकरीनीचुंजुएछे; अनेमनमांदुष्टध्यान धरेछे, एवाधर्मधुताराप्राणीते पोतानाआत्माने नरकनाकूपमां नाखेछे ॥ ३० ॥

वंचनं करणानां तद्विरक्तः कर्तुमर्हति ॥ सद्भावविनियोगेन स
दास्वान्यविभागवित् ॥ ३१ ॥ प्रवृत्तेर्वानिवृत्तेर्वा न संकल्पो
न च श्रमः ॥ विकारोहियतेऽक्षाणा मिति वैराग्यमद्भुतं ॥ ३२॥

अर्थ ॥ शुभभावनेअर्पणकरीने सदास्वपरविवेचन ज्ञानयुक्त भावनावालाज्ञाता विरक्तप्राणी इंद्रियोनेठगवानेसमर्थथायछे, पण बीजानथीथाता ॥ ३१ ॥ प्रवृत्तिनेविषे अथवा निवृत्तिनेविषे जेनेसंकल्पनथी, अनेथाकपणनथी, एवासमभावेंवर्तनारना सर्व विकारदूरथायछे, अनेएतुंजनामअद्भुतवैराग्यपणछे ॥ ३२ ॥

दारुयंत्रस्थपांचाली नृत्यतुल्याः प्रवृत्तयः ॥ योगिनो नैव बाधा
यै ज्ञानिनो लोकवर्तिनः॥३३॥इयं च योगमायेति प्रकटं गीयते
परैः ॥ लोकानुग्रहहेतुत्वान्ना स्यामपि च दूषणं॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ जेमकाष्ठनीपुतलीने दोरीनासंचारेंकरी नाचनारीनामाफकनाचती जोइयें छइयें, पणतेनेकर्मबंधननथी, तेमलौकिकव्यवहारनेविषे वर्त्तताज्ञानी जे योगीश्वरपुरुष तेहनेसंसारनी प्रवृत्तिपीडाकरतीनथी ॥ ३३ ॥ एवैराग्यदिशाने परदर्शनीजोगमाया नेनामेप्रगटपणे बोलावेछे, एपणलोकनेउपकारकर्त्ताछे, एनेविषेदूषणनथी ॥ ३४ ॥

सिद्धांते श्रूयते चेय मपवादपदेष्वपि ॥ मृगपर्षत्परित्रास नि
रासफलसंगता ॥ ३५ ॥ औदासीन्यफले ज्ञाने परिपाकमु
पेयुषि ॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने तद्वैराग्यं व्यवस्थितं ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतमांपणसांभलीयेंछइयेंके, अपवादनेविषे मृगलासरखीपर्षदाने पण निरासकरवी एजवृषभतुल्यगीतार्थनी शुद्धज्ञानदिशाजाणवी. ॥ ३५ ॥ परिपक्वथइ थकी एवीजेज्ञानदिशाअने जेनुंफलउदासीनताछे, तेथकीचोथेगुणस्थानके पणवैराग्य-दिशा प्राप्तथायछे. इतिवैराग्यसंभवाधिकारपंचम समाप्तः ॥ ३६ ॥

तद्वैराग्यं स्मृतं दुःख मोहज्ञानान्वया त्रिधा ॥ तत्राद्यं विषयाप्रा
प्तेः संसारोद्वेगलक्षणं ॥ १ ॥ अत्रांगमनसोःखेदो ज्ञानमव्याप
कं न यत् ॥ निजाभीप्सितलाभे च विनिपातोपि जायते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेवैराग्यत्रणप्रकारनोछे. दुःखगर्भित, मोहगर्भित अने ज्ञानगर्भित. तेमां

अर्थ ॥ श्रद्धा, मृदुता, उद्धतता, मधुरता, अविवेकतापणुं एमोहगर्भित वैराग्यनी परंपराजाणवी॥१५॥एरीतेंमोहगर्भितवैराग्यतुं स्वरूपकह्युं. हवेज्ञानगर्भित वैराग्यनुंस्वरूपकहेछे. जेसम्यक्त्वेंतत्वनीओलखाणकरे, स्याद्वाददृष्टियेंवर्त्ते,मोक्षनुंचिंतनकरे मोक्षना उपायनेफरसे, अनेतत्त्वदिशा देखवानोअर्थीथाय; तेज्ञानगर्भितवैराग्यजाणवो ॥१६॥

मीमांसा मांसला यस्य स्वपरागमगोचरा ॥ बुद्धिः स्यात्तस्य वैराग्यं ज्ञानगर्भ मुदंचति ॥१७॥ न स्वान्यशास्त्रव्यापारे प्राधान्यं यस्य कर्मणि ॥ नासो निश्चयसंशुद्धं सारं प्राप्नोति कर्म्मणः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेहनोविचार पुष्टकारीहोय अनेस्वसिद्धांत तथापरसिद्धांतसंबंधी बुद्धि जेने होय, तेने वैराग्यनीवातकहियें, अनेएवानेज ज्ञानगर्भित वैराग्यप्रगट थाय ॥ १७ ॥ जेनेस्वशास्त्र परशास्त्रना व्यापारनुं प्राधान्यपणुंनथी, तेमज क्रियानेविषेपण प्राधान्यतानथी, तेनिश्चेंथकीक्रियानुं निर्मलसारभूतजेफल, तेनेक्यारेपणपामेनही ॥ १८ ॥

सम्यक्त्वमौनयोः सूत्रे गतप्रत्यागते यतः ॥ नियमोदर्शित स्तस्मात् सारं सम्यक्त्वमेव हि ॥ १९ ॥ अनाश्रवफलं ज्ञान मव्युच्छानमनाश्रवः ॥ सम्यक्त्वं तदव्यक्तिरित्येकत्वविनिश्चयः ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेसम्यक्त्वतेमौनचारित्रकहियें,अनेचारित्रते मौनसमकितकहियें; एवुंश्री आचारांगमध्ये गतप्रत्यागककरीने कह्युंछे. ॥ जंसम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहाजम्मोइं० ॥ तेमाटे नियामकातापणुंजाणवुं.॥सिज्झंतिचरणरहिया दंसरणहियानसिज्झंति॥इतिवचनात्. तेमाटेसम्यक्त्वतेते सारभूतजाणवुं ॥१९॥ आश्रवनोत्याग तेज्ञाननुंफलछे, अनेअनाश्रवनुंफल तेअव्युच्छान एटलेविषयमां उजमाल नथाय, विषयनोत्यागीहोय. एनुंनाम निश्चयसम्यक्त्वतकहिये. कारकसम्यक्त्वीनी एवीदृष्टिहोय,एटलामाटे निश्चय नयनीरतिके० प्रीतितेशुद्धाचारित्रवंतनेजहोय ॥ २० ॥

बहिर्निर्वृत्तिमात्रं स्या च्चारित्र्या द्व्यावहारिकात् ॥ अंतःप्रवृत्ति सारं तु सम्यक् प्रज्ञानमेवहि ॥२१॥ एकांते नहि षट्काय श्रद्धानेपि न शुद्धता ॥ संपूर्णपर्ययालाभाद् यन्न याथात्म्यनिश्चयः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ बाह्यथीधन, कण, कंचन, कामिनीप्रमुख बाह्यवस्तुनोजे त्यागीथाय, एव्यवहारचारित्रना पालवाथी तेप्राणीव्यवहार दृष्टियेंजचालेछे. अनेजेने सम्यक्त्वसहित ज्ञाननी प्रवृत्तिहोय, तेहनेजअंतरंग प्रवृत्तिनो सारकहियें ॥ २१ ॥ समस्तनयनी वासनारहितथका एकांतेछकायनीरक्षानी श्रद्धाकरताथका सम्यक्त्वनीशुद्धता नकेहेवाय.

पण संपूर्णनयनीअपेक्षायें द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयना लाजविना यथार्थपणानोलाज-नहीजथाय, मातेशुद्धनयनी अपेक्षायेंवर्त्तवुं ॥ ११ ॥

यावंतः पर्यया वाचां यावंतश्चार्थपर्ययाः ॥ सांप्रतानागतातीतास्तावद्द्रव्यं किलैककं ॥ १३ ॥ स्यात्सर्वमयमित्येव युक्तं स्वपरपर्ययैः ॥ अनुवृत्तिकृतं स्वत्वं परत्वं व्यतिरेकजं ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगत्मां वर्त्तमान, अनागत, तथाअतीतकालना जेटलाशब्दपर्याय वचननाछे, तथापदार्थनाजेटला अर्थपर्यायछे, ते सर्वपर्यायनिश्चेंथी एकजद्रव्यछे ॥ १३ ॥ जे-सत्वके० पदार्थते सर्वस्वपरपर्यायमयीहोय. तेआवीरीतेंजे, अनुवृत्तिसहजचारी गुणप-स्वपणेत्वंके० स्वपणुंजाणवुं अने परपणुते व्यतिरेकपणेकरीजाणवुं ॥ १४ ॥

ये नाम परपर्यायाः स्वास्तित्वयोगतोमताः ॥ स्वकीया अप्यमी त्याहुः स्वपर्यायविशेषणात् ॥१५॥ अतादात्म्येपि संबंधो व्यवहारोपयोगतः ॥ तेषां सत्वं धनस्येव व्यज्यते सूक्ष्मया धिया ॥१६॥

अर्थ ॥ जेटलापरपर्यायछे, तेसर्वपोतानीआस्तिक्यताना अजोगथीजाणवा. तेयद्यपि पोतानाछे, तोपणगतजावेंछे. अनेपोतानापर्यायतो सामान्यतापणेछे ॥ १५ ॥ परपर्याय जो पणतादात्म्यजावेंनथी तोपण व्यवहारनयना जोगथीतेहनो संबंधछे. जेमधननोधणी अनेधनते जूदाजूदाछे, तोपणसूक्ष्म बुद्धियेंविचारतां तेमनोसंबंधजणायछे ॥ १६ ॥

पर्यायाः स्युर्मुनेर्ज्ञानदृष्टिचारित्रगोचराः ॥ यथा भिन्ना अपि तथोपयोगाद्वस्तुनोह्यमी ॥ १७ ॥ नोचेद्भावसंबंधा न्वेषणे का गतिर्भवेत् ॥ आधारप्रतियोगित्वे द्विष्ठे न हि पृथग् द्वयोः ॥१८॥

अर्थ ॥ तेमअभिन्नपणे ज्ञाननातथा चारित्रसंबंधीपर्याय मुनिनेपण होय; जोपण तेअभिन्नछे, तोपणउपयोगपणेविचारतां निश्चयनयपोतपोतानाजछे, पणव्यवहारेंएक आत्मानाछे, एमकेहेवाय ॥ १७ ॥ एमजोनकहियें अने अभावनासंबंधथी गवेषणाकरियेंतो केवीगतिथाय ? आधारांतरनिरूपकतानेभावें विचारतां, “द्विष्टेविनष्टेद्वयात्,” एटले पृथक्भावताना द्वेषकरवाथी विणसेअने तेबेहुथीआत्माभिन्ननथी ॥ १८ ॥

स्वान्यपर्यायसंश्लेषात् सूत्रेप्येवं निदर्शितं ॥ सर्वमेकं विदन्वेद सर्वं ज्ञानं तथैककं ॥ १९ ॥ आसक्तिपाटवाभ्यास स्वकार्यादिभिराश्रयन् ॥ पर्यायमेकमप्यर्थं वेत्ति भावाद् बुधोऽखिलं ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ स्वपर्यायअने परपर्यायना संबंधथी सूत्रनेविषे पणएमदेखाड्युंछे, के सब

प्रथमकह्योतेविषयादिकने नपामवाथकी संसारथीउद्वेगपामवानुं लक्षणछे,माटेतेहने दुःखगर्जितवैराग्यकहियें. ॥१॥ देहसंबंधी मनसंबंधी जेखेदतेथीउपज्युं, जेज्ञानतेअध्यापककेंवृद्धिकारीनथाय, आत्मानीपुष्टिकर्त्तानथाय, केमके तेप्राणीपोताने अजिला षकरवायोग्य धनादिकवस्तुनेपामीने तापसादिपणुंछोडीने पाछुंगृहस्थपणुंअंगीकारकरे ॥२॥

दुःखाद्विरक्ताः प्रागेवे छंतिप्रत्यागतेः पदं ॥ अधीराइव संग्रा
मे प्रविशंतो वनादिकं ॥ ३ ॥ शुष्कतर्कादिकं किंचि द्वैद्यका
दिक मप्यहो ॥ पठंति ते शमनदीं नतु सिध्धांतपध्दतिं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ दुःखथकीजेवैराग्यपामेछे, तेतोप्रथमथीज पाछागृहस्थावासनी इछाकरेछे; जे दुःखटलेतो घरेजइये, जेमअधीरपुरुष जेकायरते संग्रामनेविषे जतोथको वननीगली मांजराइवेसवानीइछाकरेछे, तेहनीपरें ॥ ३ ॥ प्राणीयोवादविवाद करवानेशुष्कतर्क ग्रंथजणेछे,आजीविकानेअर्थें वैद्यकप्रमुखना ग्रंथजणेछे,पण शमतारसनीनदी एवी सिद्धांतनी जेपद्धति तेजणतानथी ॥ ४ ॥

ग्रंथपल्लवबोधेन गर्वोष्माणं च बिभ्रति ॥ तत्त्वांतं नैव गछंति
प्रशमामृतनिर्झरं ॥ ५ ॥ वेषमात्रभृतोप्येते गृहस्थान्नाति
शेरते ॥ नपूर्वोछायिनोयस्मा न्नापि पश्चान्निपातिनः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जे शमताअमृतना झरणनेपाम्यानथी, तेग्रंथनापल्लवमात्रके० खंडखंडमात्रेकरीने गर्वनीगरमीनेधरीनेज वर्त्तेछे,पणतत्त्वना रहस्यने पामताजनथी ॥ ५ ॥ जेसाधुनावेषमात्रेकरीने पोतानुं जीवितव्यपणुंराखेछे, तेपणगृहस्थतुल्यजछे, पण गृहस्थथी न्यारानथी; जेणेआगलउछाह धर्योनथी, जेगुणपामिने पडवाइ पण थयानथी, केमकेजे गुणपामीने तजेतेतोपडवाइकेहेवाय, पणएतोकोइवारें पडवाइपणथयानथी, एहवाजे छे तेतोगुणनेपाम्याजनथी ॥ ६ ॥

गृहेन्नमात्रदौर्लभ्यं लभ्यंते मोदका व्रते ॥ वैराग्यस्यायम
र्थोहि दुःखगर्भस्य लक्षणं ॥ ७ ॥ कुशास्त्राभ्यासंभूतभव
नैर्गुण्यदर्शनात्॥मोहगर्भं तु वैराग्यं मतं बालतपस्विनां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहोघरमांतो पुरुअन्नपणनथीमलतुं, नेदीक्षालीधाथकी तोलाडुवामलेछे, तेमाटेदीक्षालेवामां शुंदुःखछे? एवुंजाणीने जेदीक्षालियेछे,तेनुंनाम दुःखगर्जित वैराग्य जाणवुं ॥ ७ ॥ एरीतेंप्रथम दुःखगर्जितवैरागपणुंदेखाडयुं; हवेमोहगर्जित वैराग्यक-

छेडे. कुशास्त्रनाअभ्यासथी प्रगटयुंजेसंसारनुं निर्गुणीपणुं तेथीमोहगर्भित वैराग्य थायछे. तेबालतपस्वी प्रमुखजाणवा ॥ ८ ॥

सिद्धांत मुपजीव्यापि ये विरुद्धार्थभाषिणः ॥ तेषामप्येतदेवे
ष्टं कुर्वता मपि दुष्करं ॥९॥ संसारमोचकादीना मिवैतेषां न
तात्त्विका॥शुभोपि परिणामोय ज्ञातानज्ञान रुचिस्थितिः ॥१०॥

अर्थ ॥ जेसिद्धांतनुंउपजीवन करीनेपण सूत्रविरोधि अर्थकेहेछे, तेप्राणीजो दुष्कर करणीकरेछे तोपणतेनेएवोजजाणवो ॥ ९ ॥ संसारना दुःखथीमूकाववाना हेतुथीजे मुसलमानते घोडाप्रमुखने दुःखीदेखी तेनेदुःखथी छोडववाने दयाभावेकरीमारीनाखेछे, तेपणशुभपरिणामनी बुद्धिराखेछे तेछतांपरमार्थेपापजछे, तेममोहगर्भितने परमार्थंजडेनही. जोएनो परिणामशुभहोय तोपणपरमार्थे ज्ञाननीरुचिथायनही ॥ १० ॥

अमीषां प्रशमोप्युच्चै र्दोषपोषाय केवलं ॥ अंतर्निलीनविषम
ज्वरानुभवसन्निभः ॥ ११ ॥ कुशास्त्रार्थेषु दक्षत्वं शास्त्रा
र्थेषु विपर्ययः ॥ स्वछंदता कुतर्कश्च गुणवत्संस्तवोज्झनं ॥१२॥

अर्थ ॥ जेमअंतरंगमां लीनथइरह्यो एहवोहाडवेदीज्वर दुःखदाइथायछे,तेमएनेपण जेप्रशमादिकगुण थाय, तेपण घणुंकरीने केवलदूषणभणीजथाय, पणगुणभणी नहीजथाय, केमकेअंतरंग मिथ्यात्वगयाविना वैराग्यतेदुःखदाइछे ॥ ११ ॥ कुशास्त्रनाअर्थने विषे डाह्याथाय, नेशास्त्रनाविपरीत अर्थकरे, स्वछंदपणेवर्ते, कोइसाथेक्षमाराखेनही, अनेगुणीनी प्रशंसानकरे ॥ १२ ॥

आत्मोत्कर्षः परद्रोहः कलहो दंभजीवनं ॥ आश्रवाछादनं श
क्त्युल्लंघनेन क्रियादरः ॥ १३ ॥ गुणानुरागवैधुर्य मुपकारस्य
विस्मृतिः ॥ अनुबंधाद्यचिंता च प्रणिधानस्य विच्युतिः ॥१४॥

अर्थ ॥ जेपोतानीमोटाइकरे, पारकोद्रोहकरे, क्लेशकजीआकरे, कपटराखे, पोतानां पाप ढांके,पोतानुंसामर्थ्य उलंघीने क्रियानोउद्यमकरे,तेआर्त्तध्यानी केहेवाय ॥१३॥ वली जेगुणीपुरुषोनो रागीनहोय बीजानाकरेलाउपकारने विसरी जाय, तीव्रकर्मबंधनी चितासहितवर्त्ते, अनेशुभअध्यात्मना अध्यवसाय रहितपणेवर्त्ते ॥ १४ ॥

श्रद्धा मृदुत्वमौद्धत्य माधुर्य्यमविवेकिता वैराग्यस्य द्वितीयस्य
स्मृतेयं लक्षणावली ॥१५॥ ज्ञानगर्भे तु वैराग्यं सम्यक् तत्त्व
परिछिदः॥स्याद्वादिनः शिवोपायस्पर्शिन स्तत्त्वदर्शिनः ॥१६॥

अर्थ ॥ श्रद्धा, मृदुता, उद्धतता, मधुरता, अविवेकतापणुं एमोहगर्भित वैराग्यनी परंपराजाणवी॥१५॥एरीतेंमोहगर्भितवैराग्यनुं स्वरूपकह्युं. हवेज्ञानगर्भित वैराग्यनुंस्वरूपकहेछे. जेसम्यक्त्वेंतत्वनीओलखाणकरे, स्याद्वादद्दष्टियेंवर्त्ते,मोक्तनुंचिंतनकरे मोक्तना उपायनेफरसे, अनेतत्वदिशा देखवानोअर्थीथाय; तेज्ञानगर्भितवैराग्यजाणवो ॥१६॥

मीमांसा मांसला यस्य स्वपरागमगोचरा ॥ बुद्धिः स्यात्तस्य वैराग्यं ज्ञानगर्भ मुदंचति ॥१७॥ न स्वान्यशास्त्रव्यापारे प्राधान्यं यस्य कर्मणि ॥ नासो निश्चयसंशुद्धं सारं प्राप्नोति कर्म्मणः ॥ १८॥

अर्थ ॥ जेहनोविचार पुष्टकारीहोय अनेस्वसिद्धांत तथापरसिद्धांतसंबंधी बुद्धि जेने होय, तेने वैराग्यनीवातकहियें, अनेएवानेज ज्ञानगर्भित वैराग्यप्रगट थाय ॥ १७ ॥ जेनेस्वशास्त्र परशास्त्रना व्यापारनुं प्राधान्यपणुंनथी, तेमज क्रियानेविषेपण प्राधान्यतानथी, तेनिश्चेंथकीक्रियानुं निर्मलसारभूतजेफल तेनेक्यारेपणपामेनही ॥ १८ ॥

सम्यक्त्वमौनयोः सूत्रे गतप्रत्यागते यतः ॥ नियमोदर्शित स्तस्मात् सारं सम्यक्त्वमेव हि ॥ १९ ॥ अनाश्रवफलं ज्ञान मव्युच्छानमनाश्रवः ॥ सम्यक्त्वं तदव्यक्तिरित्येकत्वविनिश्चयः ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेसम्यक्त्वतेमौनचारित्रकहियें,अनेचारित्रते मौनसमकितकहियें; एवुंश्री आचारांगमध्ये गतप्रत्यागककरीने कह्युंछे. ॥ जंसम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहाजम्मोई० ॥ तेमाटे नियामकातापणुंजाणवुं.॥सिझंतिचरणरहिया दंसरणहियानसिझंति॥इतिवचनात्. तेमाटेसम्यक्त्वतेते सारभूतजाणवुं ॥१९॥ आश्रवनोत्याग तेज्ञाननुंफलछे, अनेअनाश्रवनुंफल तेअव्युछान एटलेविषयमां उजमाल नथाय, विषयनोत्यागीहोय. एनुंनाम निश्चयसम्यक्त्वतकहिये. कारकसम्यक्त्वीनी एवीदृष्टिहोय, एटलामाटे निश्चय नयनीरितिकें० प्रीतितेशुद्धाचारित्रवंतनेजहोय ॥ २० ॥

वहिर्निर्वृत्तिमात्रं स्या च्चारित्र्या द्व्यावहारिकात् ॥ अंतःप्रवृत्तिसारं तु सम्यक् प्रज्ञानमेवहि ॥२१॥ एकांते नहि षट्काय श्रद्धानेपि न शुद्धता ॥ संपूर्णपर्ययालाभाद् यन्न याथात्म्यनिश्चयः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वाह्यथीधन, कण, कंचन, कामिनीप्रमुख वाह्यवस्तुनोजे त्यागीथाय, एव्यवहारचारित्रना पालवाथी तेप्राणीव्यवहार दृष्टियेंजचालेछे. अनेजेने सम्यक्त्वसहित ज्ञाननी प्रवृत्तिहोय, तेहनेजअंतरंग प्रवृत्तिनो सारकहियें ॥ २१ ॥ समस्तनयनी वासनारहितथका एकांतेछकायनीरक्षानी श्रद्धाकरताथका सम्यक्त्वनीशुद्धता नकेहेवाय.

पण संपूर्णनयनीअपेक्षायें द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयना लाजविना यथार्थपणानोलाज-नहीजथाय, माटेशुद्धनयनी अपेक्षायेंवर्त्तवुं ॥ २२ ॥

यावंतः पर्यया वाचां यावंतश्चार्थपर्ययाः ॥ सांप्रतानागतातीतास्तावद्द्रव्यं किलैककं ॥ २३ ॥ स्यात्सर्वमयमित्येव युक्तं स्व परपर्ययैः ॥ अनुवृत्तिकृतं स्वत्वं परत्वं व्यतिरेकजं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगत्मां वर्त्तमान, अनागत, तथाअतीतकालना जेटलाशब्दपर्याय वचननाछे, तथापदार्थनाजेटला अर्थपर्यायछे, ते सर्वपर्यायनिश्रेंथी एकजद्रव्यछे ॥ २३ ॥ जे-सत्वके० पदार्थते सर्वस्वपरपपर्यायमयीहोय. तेआवीरीतेंजे, अनुवृत्तिसहजचारी गुणप-स्वपणेत्वंके० स्वपणुंजाणवुं अने परपणुते व्यतिरेकपणेकरीजाणवुं ॥ २४ ॥

ये नाम परपर्यायाः स्वास्तित्वयोगतोमताः ॥ स्वकीया अप्यमी त्याहुः स्वपर्यायविशेषणात् ॥२५॥ अतादात्म्येपि संबंधो व्यवहारोपयोगतः ॥ तेषां सत्वं धनस्येव व्यज्यते सूक्ष्मया धिया ॥२६॥

अर्थ ॥ जेटलापरपर्यायछे, तेसर्वेपोतानीआस्तिक्यताना अजोगथीजाणवा. तेयद्यपि पोतानाछे, तोपणगतजावेंछे. अनेपोतानापर्यायतो सामान्यतापणेछे ॥ २५ ॥ परपर्याय जो पणतादात्म्यजावेंनथी तोपण व्यवहारनयना जोगथीतेहनो संबंधछे. जेमधननोधणी अनेधनते जूदाजूदाछे, तोपणसूक्ष्म बुद्धियेंविचारतां तेमनोसंबंधजणायछे ॥ २६ ॥

पर्यायाः स्युर्मुनेर्ज्ञानदृष्टिचारित्रगोचराः ॥ यथा भिन्ना अपि तथोपयोगाद्वस्तुनोह्यमी ॥ २७ ॥ नोचेद्भावसंबंधा न्वेषणे का गतिर्भवेत् ॥ आधारप्रतियोगित्वे द्विष्टे न हि पृथग् द्वयोः ॥२८॥

अर्थ ॥ तेमअभिन्नपणे ज्ञाननातथा चारित्रसंबंधीपर्याय मुनिनेपण होय; जोपण तेअभिन्नछे, तोपणउपयोगपणेविचारतां निश्चयनयपोतपोतानाजछे, पणव्यवहारेंएक आत्मानाछे, एमकेहेवाय ॥ २७ ॥ एमजोनकहियें अने अभावनासंबंधथी गवेषणाकरियेंतो केवीगतिथाय ? आधारांतरनिरूपकतानेभावें विचारतां, "द्विष्टेविनष्टेद्वयात्," एटले पृथक्भावताना दूषकरवाथी विणसेअने तेबेहुथीआत्माभिन्नथी ॥ २८ ॥

स्वान्यपर्यायसंश्लेषात् सूत्रेप्येवं निदर्शितं ॥ सर्वमेकं विदन्वेद सर्वं ज्ञानं तथैककं ॥ २९ ॥ आसक्तिपाटवाभ्यासस्वकार्यादिभिराश्रयन् ॥ पर्यायमेकमप्यर्थं वेत्ति भावाद् बुधोऽखिलं ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ स्वपर्यायअने परपर्यायना संबंधथी सूत्रनेविषे पणएमदेखाडयुंछे, के सघ

लुंएकताजावें जाणता, "एगेआया,"इत्यादिक सघलुंज्ञानते संग्रहनयकरीएकजछे॥२ए॥ माटेचित्तनीआसक्तियें अने बुद्धिनीपाटवतायें अभ्यासकरवाथी पोताना कार्यपणादिकनेआश्रयतायकी पर्यायना एकअर्थनेजाणीनेपण बुधजेपंडित तेसर्वेभावनेजाणे."जेएगंजाणइ सेसवंजाणइ" इतिवचनात् ॥३०॥

अंतरा केवलज्ञानं प्रतिव्यक्ति नं यद्यपि ॥ क्वापि ग्रहणमेकांशद्वारं चातिप्रसक्तिमत् ॥ ३१॥ अनेकांतागमश्रद्धा तथाप्यस्खलिता सदा ॥ सम्यग्दृशस्तयैव स्यात् संपूर्णार्थविवेचनं ॥ ३२॥

अर्थ ॥ यद्यपिकेवलज्ञाननेविषे तोकांइपणप्रतिव्यक्तिनथी, तोपणकोइठेकाणे एक अंशनुंज ग्रहणकर्युंछे, नेकोइस्थानकें सर्वांशग्रहणकीधोछे ॥ ३१ ॥ तोपणअनेकांत आगमनी श्रद्धातेअस्खलितपणें सदाप्रवर्त्तेछे, माटेअनेकांतपणुंअंगीकारकरतांज सम्यक्त्वछे; तथाउत्सर्गअपवाद, निश्चव्यवहारतेनासंपूर्णअर्थनोनिश्चयथायछे ॥ ३२ ॥

आगमार्थोपनयनाद् ज्ञानं प्राज्ञस्य सर्वगं ॥ कार्य्यादेर्व्यवहारस्तु नियतोल्लेखशेखरः ॥३३॥ तदेकांतेन यः कश्चिद्विरक्तस्यापि कुग्रहः॥शास्त्रार्थबाधनात्सोयं जैनाभासस्य पापकृत् ॥३४॥

अर्थ ॥ आगमनाअर्थनुं उपनयनजेथापवुं तेथकीप्राज्ञजे बुद्धिवंत तेनुंज्ञान सर्वव्यापकपणेप्रवर्त्ते; कार्यादिकजेव्यवहारछे, तेतोनिश्चयपणें चित्रामणनीरेखासरिखोछे. श्रेष्ठरूपकरवाने जेमआलेखकरे तेसरिखाव्यवहारछे, अनेसमग्ररूपकरवा समानतेनिश्चयनयछे ॥ ३३ ॥ तेमाटेएकांतनय अंगीकारकरीनेप्रवर्त्तनारा वैराग्यवंतनेपणकुग्रही कहिये, तोबीजामात्र नामधरावनारहोय तेनीतोशीवार्ता ? एकनयवालोशास्त्रना अर्थनोबाधककरता जाणवो. तेजोपण जैनाभासछे तोपण पापकारी जाणवो ॥३४॥

उत्सर्गे चापवादेपि व्यवहारेथ निश्चये ॥ ज्ञाने कर्म्मणि वायं चेन्न तदा ज्ञानगर्भता ॥ ३५ ॥ स्वागमेन्यागमार्थानां शतस्येव परार्ध्यके ॥ तावताप्यबुधत्वं चेन्न तदाज्ञानगर्भता ॥३६॥

अर्थ ॥ उत्सर्गमार्गमां, अपवादमार्गमां. व्यवहारमार्गमां, निश्चयमार्गमां, ज्ञाननयनेविषे अनेक्रियानयनेविषे जोकदाग्रहनथी, तोतेनेज्ञानगर्भितपणुंछे, अनेतेज्ञानिपणछे ॥ ३५ ॥ स्वसिद्धांतनाजाणवाथी अन्यशास्त्रनुं जाणवुंते तेमांजसमायीजायछे. जेमपरार्ध्यनाम उत्कृष्टगणितछे, तेमांसोनुंगणितपण समाइजायछे, अनेतेटलुं ज्ञानपामिनेपण जोअज्ञानपणुंरहेतो, तेनेज्ञानगर्भिताबिलकुलनथी एमजाणवुं ॥ ३६ ॥

नयेषु सार्थसत्येषु मोघेषु परचालने ॥ माध्यस्थ्यं यदि नायातं न तदा ज्ञानगर्भता ॥३७॥ आज्ञयागमिकार्थानां यौक्तिकानां च युक्तितः ॥ न स्थाने योजकत्वं चे न्न तदा ज्ञानगर्भता ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ पोतपोताना स्वार्थनेविषे सघला नयसत्यछे, नेपरमार्थनी चालनानेविषे निष्फलछे, अनेतेनयना विवादमांजो मध्यस्थता न आवी तोतेनेज्ञानगर्भताछेजनही॥३७॥ जेआज्ञाग्राह्यअर्थने आज्ञायें ग्रहेनही, आगमप्रमाणेग्रहवायोग्यने आगमें ग्रहे नही, अनेयुक्तिग्राह्यनेयुक्तिवकेग्रहेनही, एमसहुने पोतपोतानेठेकाणे जोमीजाणेनही,तोतेने ज्ञानगर्भिता मूलथीजनथी एमजाणवुं ॥ ३८ ॥

गीतार्थस्यैव वैराग्यं ज्ञानगर्भं ततः स्थितं ॥ उपचारादगीतस्याप्यभीष्टं तस्य निष्ठया ॥ ३९॥ सूक्ष्मेक्षिका च माध्यस्थ्यं सर्वत्र हितचिंतनं ॥ क्रियायामादरोभूयान् धर्मे लोकस्य योजनं ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ उपरकह्या मुजबतो गीतार्थनेज ज्ञानगर्भितवैराग्यछे, पणअज्ञानीनेनथी, एमठरयुं. तोपणतेनाउपचारथकी अगीतार्थने पणगीतार्थनीनिष्ठायें ज्ञानगर्भितवैराग्यछे ॥ ३९ ॥ तेमाटेसूक्ष्मदृष्टियें मध्यस्थपणुं अंगीकारकरीने अनेपरदूषण तजीनेवर्त्तवुं, सर्वजगत्नाजीवनुं हितचिंतववुं, मैत्रीभावधरवो, क्रियानेविषेघणो आदरकरवो, उपयोगधरवो, अनेधर्ममार्गमां लोकनेजोमवा, एहिजश्रेष्ठछे ॥ ४० ॥

चेष्टा परस्य वृत्तांते मूकांधबधिरोपमा ॥ उत्साहः स्वगुणाभ्यासे दुःस्थस्येव धनार्जने ॥ ४१ ॥ मदनोन्मादवमनं मदसंमर्दमर्दनं ॥ असूयातंतुविच्छेदं समतामृतमज्जनं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ मुगाने तथाआंधलाने अनेबेहराने बोलवामां देखवामां अनेसांजलवामां इत्यादिकपारकावृत्तांतनेविषे जेणेचेष्टातजीछे; अनेपोताना गुणनाअभ्यास करवामां जे उत्साहवंतछे; जेमदरिद्रीधनकमाववानो उद्यमीहोयतेनीपरें उजमालथकोवर्त्ते ॥ ४१ ॥ कामनाउन्मादनुं वमनकरनारा,मदनासमूहने टालनारा, ईर्षारूपतंतुनातोडनारा, अने समतारूपअमृत कुंडमांमज्जनकरनारा ॥ ४२ ॥

स्वभावान्नैव चलनं चिदानंदमयात्सदा ॥ वैराग्यस्य तृतीयस्य स्मृतेयं लक्षणावली ॥ ४३ ॥ ज्ञानगर्भमिहादेयं द्वयोस्तुस्वोपमर्दतः ॥ उपयोगः कदाचित् स्या न्निजाध्यात्मप्रसादतः॥४४॥

अर्थ ॥ तथाचिदानंदमयपणाना स्वभावथी सर्वदा चलायमाननही एहवावर्त्तणुकवंत जेहोय. एत्रीजा ज्ञानगर्भित वैराग्यनागुणनी लक्षणावलीकही ॥ ४३ ॥ इहां ज्ञानगर्भितवैराग्यतेग्रहवायोग्यछे; अने मोहगर्भितवैराग्य तथा दुःखगर्भितवैराग्यनुं उपमर्दनकरीने पोतानाअध्यात्मभावनाप्रसादथकी कदाचित् ज्ञानगर्भितवैराग्यनो उपयोगथाय ॥ ४४ ॥ इतिश्रीवैराग्यभेदाधिकारः षष्टःसमाप्तः ॥

विषयेषु गुणेषु च द्विधा भुवि वैराग्यमिदं प्रवर्त्तते ॥
अपरं प्रथमं प्रकीर्तितं परमध्यात्मबुधैर्द्वितीयकं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पृथ्वीनेविषे विषयमांअने गुणमांएवेबुप्रकारे वैराग्यप्रवर्त्तेछे. तेमांविषयवैराग्यतो अमुख्यपणेकह्योछे. बीजोअध्यात्मभावयुक्तगुणवैराग्यतेमुख्यपणेजाणवो ॥१॥

विषयानुपलंभगोचरा अपि चानुश्रविकाविकारिणः ॥
न भवंति विरक्तचेतसां विषधारेव सुधासु मज्जतां ॥२॥

अर्थ ॥ जेविषयवैराग्यछेते, प्राप्तिगोचरपणे वर्त्तेछे, पणनिश्चेथी ज्ञातापुरुषतेरूपरसादिकनेविषे आसक्तिकरेनही. जेविरक्तचित्तवालाते अविकारीथकाजहोय. केमकेजेअध्यात्मरूप अमृतधारानेविषे मज्जनकरताहोय, तेहनेविषनीधाराशुंकरनारछे ? अर्थात् तेहनेकांइविषनीधारापीडा करीशकतीनथी ॥ २ ॥

सुविशालरसालमंजरी विचरत्कोकिलकाकलीभरैः
किमु माद्यति योगिनां मनो निभृतानाहतनादसादरं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेयोगीश्वर अनहदनादेसहितछे, तेनेयोगमार्गेकरीने सर्व देहरंध्रपुरीने "अर्हंपद" अथवा "सोहं"पद अथवाँॐकारध्वनि मनमांधरेछे, तेनोब्रह्मद्वारेजेनाद ऊठेछे तेनुंनाम अनहदनाद कहियें, तेणेकरीजेयुक्तछे तोतेवायोगीश्वरनुंमन भलीविस्तारवंती आंबानीमंजरीनेविषे विचरतीजे कोकिला तेना मनोहर शब्दसांभलीनेशुंमग्नथशे ? अर्थात्नहीजथशे ॥३॥

रमणीमृदुपाणिकंकणक्वणनाकर्णनपूर्णघूर्णनाः ॥ अ
नुभूतनटीस्फुटीकृत प्रियसंगीतरता न योगिनः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनासुकोमल हाथमांरह्यांजेकंकण तेनोशब्दसांभलीने पूर्णपणे घुम्यांछे लोचन तेनीअनुभवनदिशारूप नाटककरनारीस्त्रीयें प्रियकारीसंगीतबंध कीधांतो, तेमां योगीश्वरनुंमन रंगायनही, मटलेलोभायनही ॥ ४ ॥

स्खलनाय न शुद्धचेतसां ललनापंचमचारुघोलना ॥
यदियं समतापदावली मधुरालापरते न रोचते ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीपंचमरागनी घोलनाते समतापदनीश्रेणिना मधुरआलापनी रतिवालाशुद्धचेतनावंत जोगीनेरुचेनही, एटलेशुद्धचेतनावंतने खलनाकारीनथाय ॥ ५ ॥

सततंक्षयि शुक्रशोणितप्रभवं रूपमपि प्रियं नहि ॥
अविनाशिनिसर्गनिर्म्मलप्रथमानस्वकरूपदर्शिनः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अविनाशी सहजनिर्मल अनेविस्तारपामतुं एहवुंजे पोतानुंस्वरूप तेहनाजोनार योगीश्वरतेनेतोजेनुं निरंतर शीलक्षयथायछे अनेवीर्यरुधिरथी उपनुंएवुंजे स्त्रीआदिकनुं रूपते प्रियकारीलागतुंनथी ॥ ६ ॥

परदृश्यमपायसंकुलं विषयो यत्खलु चर्मचक्षुषः ॥
न हि रूपमिदं मुदे यथा निरपायानुभवैकगोचर ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेवोनिरपाय के० जेहनोनाशनथी एहवोअनुभवदिशाने जोवानोरसछे तेवो रूपते परपदार्थके० बीजानेजोवायोग्यछे, तथानाशवंतछे; अनेचर्मचक्षुनोविषयछे एहवो जेरूप तेजोवाथकीतेनोजेरसते निश्चयनयथकी हर्षकारीनथाय ॥ ७ ॥

रतिविभ्रमहास्यचेष्टितै र्ललनानामिह मोदते ऽबुधः ॥
सुकृताद्रिपविष्वमीषु नो विरतानां प्रसरंति दृष्टयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ रतिसुखनेदेखीने तथास्त्रीनानेत्रविभ्रमनी चेष्टायेंकरीने अबुद्धजेअज्ञानी प्राणी तेघणोहर्षपामेछे, पणए विभ्रमविलासादिकतो सुकृतरूप पर्वतनेवज्रथइ भेदेए वाछे माटेयोगीश्वरनी दृष्टितेमांरमतीनथी ॥ ८ ॥

न मुदे मृगनाभिमल्लिकालवलीचंदनचंद्रसौरभं ॥ वि
दुषां निरुपाधिबाधित स्मरशीलेन सुगंधिवर्ष्मणां ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ कस्तुरी, मालतीनापुष्प, लवलीके०एलचीचंदनतथाचंद्रके०कपुरनीसुगंधीते पंडितलोकोने मग्नकरतीनथी; तेमनेतो निरुपाधिक अनुभवगोचर स्वरूपचिदानंदने विषेज मग्नपणुवर्त्तेछे, पणरूपादिकनेविषेमग्नतापणुं नथी ॥ ९ ॥

उपयोगमुपैति यच्चिरं हरते यन्नविभावमारुतः ॥ न ततः
खलु शीलसौरभा दपरस्मिन्निह युज्यते रतिः ॥ १० ॥

अर्थ॥ जे घणाकालसुधी उपयोगमांआवे,जेनीसुगंधीने विभावदिशारूपवायु हरी शकतोनथी, एवीजेशीलसुगंधीतेनेमूकी योगीश्वरनुं चित्तअन्यसुगंधीमां लोभातुंनथी॥१०॥

मधुरैर्न रसैरधीरता क्च नाध्यात्मसुधालिहां सता ॥ अ
रसैः कुसुमैरिवालीनां प्रसरत्पद्मपरागमोदिनां ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम विकस्वरथतां जे कमल तेना स्वाद सुगंधयुक्त रसेमग्नथया एवाजेभ्रमर ते निरस कुसुमउपररतिपामेनही, तेम अध्यात्मरूप अमृतरसनाभोगी जेप्राणी तेने बीजाशर्करादिक मधुररसनी अधीरजताउपजतीनथी; गृधतापणुं करेनही ॥ ११ ॥

विषमायतिभिर्नु किं रसैः स्फुटमायातसुखैर्विकारिभिः ॥
नवमे नवमे रसे मनो यदि मग्नं सततविकारिणि ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जे आगल करुवा विपाकआपे एवामधुररसेशुंसारुं ? वलीप्रगटपणे राज्य ऋद्धि स्त्रीविषयादिक सुखपाम्याअनेतेपाछांजतांरहे तेथीविक्रियाप्रगटे तोतेवांसुखथी शुंसारुं? जोसदायअविकारी एवोपूर्णनवमोजेशांतरस तेनेविषे मनमग्नछे, तो पूर्वेकह्या एवारसेशुंफायदोथाय ! अर्थात्कांइजनही ॥१२॥

मधुरं रसमाप्य निःपते द्रसनातोरसलोभिनां जलं ॥ परि
भाव्य विपाकसाध्वसं विरतानां तु ततोहशोर्जलं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ एकअचरत जुवो,के रसना लालचीजेप्राणी तेमधुररसने जोइने अथवा खाधानीवात सांभलीने केहेछेके, मारामुखमांपाणीभरायछे एटलेजीभथीपाणीपडेछे. अनेसर्वविरतिजे मुनिराजते मांसादिकमधुररसखाधे आगलमाठाविपाकआवशे, ते भावयनेविचारी बेउआंखेपाणीआणेछे, एटलेआंखमांथी आंसुपाडेछे ॥ १३ ॥

इह ये गुणपुष्पपूरिते धृतिपत्नीमुपगृह्य शेरते ॥ विमले सु
विकल्पतल्पके क्व बहिःस्पर्शरता भवंतु ते ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इहांचरणकरणादिकजे गुणतेरूपफुलेंपुरीएवी निर्मलजे सुविकल्पके०मन-कुशलतारूपशय्या तेहनेविषे संतोषरूपस्त्रीने आलिंगन देइनेसुएछे, तेवामुनिराज ते बाह्यस्त्रीना स्पर्शविषेरतकेमथाय ? ॥ १४ ॥

हृदि निर्वृतिमेव बिभ्रतां न मुदे चंदनलेपनाविधिः॥
विमलत्वमुपेयुषां सदा सलिलस्नानकलापि निःफला ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हृदयनेविषे निवृत्ति सुखनेधरनारा जेप्राणी तेनेबावनाचंदनना लेपनी विधि तेहर्षआपतीनथी. तथासदैवनिर्मलभावने धरताजेप्राणी तेनेजलस्नानविधि तेनिष्फलजाणवी ॥ १५ ॥

गणयंति जनुः स्वमर्थवत्सुरतोल्लाससुखेन जोगिनः ॥
मदनाहिविषोग्रमूर्छनामयतुल्यं तु तदेव योगिनः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोगीप्राणीस्त्रीसाथे विलाससंजोगना सुखेकरी जन्मारोसफलमानेछे, अने योगीश्वरपुरुषतोमदनजेकाम तेनीचेष्टानेसर्पनाविषनी आकरीमूर्छातुल्यमानेछे॥१६॥

तदिमे विषयाः किलैहिका न मुदे केपि विरक्तचेतसां ॥ पर
लोकसुखेपि निःस्पृहाः परमानंदरसालसा अमी ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वेरागीजीवने आभवमांक्षणिकसुखआपे एवांजेविषय तेनिश्चयथकीकांइपण हर्षकारीनथी, केमकेत्यागीप्राणीतोपरलोक जेस्वर्गादिकनांसुख तेनेविषेपण निस्पृहीछे; तेतोमात्रमोक्षसुखनाजअभिलाषीछे ॥ १७ ॥

मदनमोहविवादमत्सर ज्वरबाधाविधुराः सुरा अपि॥ विष
मिश्रितपायसान्नवत् सुखमेतेष्वपि नैति रम्यतां ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ गर्वअज्ञानविषादअने मत्सरतेरूपज्वरनी पीडायेंरहितएवाजे देवतातेहना जेविषयादिकसुख तेपणविषमिश्रितदुधपाकनाभोजनेननीपरें मनोहरकारीनथी ॥ १८ ॥

रमणीविरहेण वन्हिना बहुबाष्पानिलदीपितेन यत् ॥ त्रिद
शैर्दिवि दुःखमाप्यते घटते तत्र कथं सुखस्थितिः ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ केमके स्त्रीनावियोगरूपअग्नि तेआंसुरूप वायरेकरी देदीप्यमानथयो एहवोजे शोकरूपअग्नि प्रगट्यो,तेथी स्वर्गनादेवतानेपण पीडाथायछे, तेवारेंस्वर्गमांदेवताने पणसुखनीस्थितिछे, एहवुं केमकहेवाय? ॥ १९ ॥

प्रथमानविमानसंपदां च्यवनस्यापि दिवोविचिंतनात् ॥
हृदयं न हि यद्विदीर्यते द्युसदां तत्कुलिशाणुनिर्मितं ॥२०॥

अर्थ ॥ जेने विमानसंपदामोटीछे, एवादेवतानेपण च्यवनवेलायेंजे दुःखप्रगटेछे, तेदुःखथीदेवतानुं हृदयमात्रफाटतुंनथी, तेनुंकारणजे तेमनोहृदयतेवज्रनापरमाणुयेंकरी उत्पन्नकरेलुंछे, तेथीघणुंकठणछे; माटेजफाटतुंनथी ॥ २०॥

विषयेषु रतिः शिवार्थिनां न गतिष्वस्ति किलाखिलास्वपि ॥
६ ननंदनचंदना॥र्थिनो गिरिभूमिष्वपरद्रुमेष्विव ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेमनिबिड नंदनवनना चंदननाविलेपनवालाने पर्वतनीभूमियें अथव

बीजाकोइपणवृद्धेंरतिथातीनथी, तेममोक्षार्थिने विषयउपर प्रीतिथतीनथी, तेमजमनुष्य तथा स्वर्गप्रमुख समग्रगतिनेविषे पण प्रीतिथतीनथी ॥ २१ ॥

इति शुद्धमतिः स्थिरीकृता ऽपरवैराग्यरसस्य योगिनः ॥
स्वगुणेषु वितृष्णतावहं परवैराग्यमपि प्रवर्त्तते ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ एमविचारी शुद्धबुद्धिस्थिरकरीने जेनेबीजावैराग्यनों गुणप्रगट्योछे, तेवायोगीने आत्मगुणनेवधारे एवीवितृष्णाना आगमरूप परमवैराग्यप्रगटथाय ॥२२॥

विपुलर्द्धिपुलाकचारण प्रबलाशीविषमुख्यलब्धयः ॥
न मदाय विरक्तचेतसा मनुषंगोपनताः पलालवत् ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ विपुललब्धि, पुलाकलब्धि, चारणलब्धि, महोटीआशीविषलब्धि, प्रमुख अनेक लब्धिओजोपणउपजे, तोपण तेवैरागीमुनीने अहंकारजणीथायनही, मात्रएक मुक्तिसुखविना पलालना पुंजरूपतेमानेछे ॥ २३ ॥

कलितातिशयोपि कोपि नो विबुधानां मदकृद्गुणव्रजः ॥ अधिकं न विदंत्यमी यतो निजभावे समुदंचति स्वतः ॥२४॥

अर्थ ॥ पंडिततेकोइ मोटाअतिशयादिगुणना समूहेंसहितहोय,तोपणमदकरेनही अनेतेथीकांइ अधिकतापणनगणे, मात्रपोताना शुद्धस्वभावमांज आनंदपामे ॥ २४ ॥

हृदये न शिवेपि लुब्धता सदनुष्ठानमसंगमंगति ॥
पुरुषस्य दशेयमिष्यते सहजानंदतरंगसंगता॥२५॥

अर्थ ॥ पोतानाहृदयनेविषे मुक्तिसुखउपरपण लुब्धतानथी, एकसद्अनुष्ठानरूप सहेजानंदना कल्लोलने मलतीअसंगानुष्ठानरूपपुरुषनी जेदशातेने वांछेछे;पामेछे॥२५॥

इति यस्य महामतिर्भवे दिह वैराग्यविलासभृन्मनः ॥ उपयंति वरितुमुच्चकैः स्तमुदारप्रकृतिं यशःश्रियः ॥२६॥

अर्थ ॥ वैराग्यविलासीपुरुषने एवीबुद्धिउपजेछे; तेनेवाउदारप्रकृतिवालाने यशरूपजेलक्ष्मी तेहर्षधरीने वरवानेइच्छेछे. इतिश्रीवैराग्य विषयाधिकारःसप्तमः समाप्तः ॥२६॥

निर्ममस्यैव वैराग्यं स्थिरत्वमवगाहते ॥ परित्यजेत्ततः प्राज्ञो ममतामत्यनर्थदां ॥ १॥ विषयैः किं परित्यक्तै जागर्ति ममता यदि ॥ त्यागात्कंचुकमात्रस्य भुजंगो नहि निर्विषः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ममतारहितप्राणीनेज वैराग्यस्थीरपणेरहेछे, तेमाटे बुद्धिवंतप्राणीयें अन-

र्थदायकजे ममतातेनेतजवी ॥ १ ॥ जेमसर्पकांचळी काढवाथी विषरहितथतोनथी, तेमजेनेममता जागेछे तेविषयने त्यागकरे, तोपण त्यागीथतोनथी ॥ ४ ॥

कष्टेन हि गुणग्रामं प्रगुणीकुरुते मुनिः ॥ ममता राक्षसी सर्वं भक्षयत्येकहेलया ॥ ३ ॥ जंतुकांतं पशूकृत्य भागविद्यौ षधिवलात् ॥ उपायैर्बहुभिः पत्नी ममता क्रीमयत्यहो ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेगुणसमूहनेमुनिराज घणाकष्टेकरीप्रगटकरेछे, तेने ममतारूपराक्षसी एक कोळीयेंखाइजायछे ॥ ३ ॥ केवुंआश्चर्यछेके क्रियाराज्यनीपेरे ममतारूपस्त्री ते जीवरूपभर्त्तारने पशुजेमर्कट तेरूपेंकरीने शीघ्रपणेअज्ञानरूप जडीबुटीनावळथकी घणेंप्रकारेनचावीने रमाडेछे ॥ ४ ॥

एकः परभवे याति जायते चैकएव हि ॥ ममतोद्रेकतः सर्वं संबंधं कल्पयत्यथ ॥ ५ ॥ व्याप्नोति महतींभूमिं वटवीजाद्यथा वटः ॥ तथैकममतावीजात्प्रपंचस्यापि कल्पना ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एकलुंचेतन परभवेजायछे अनेएकलुंज आभवेंआवेछे, पणममताने वश थइने स्नादेत्रीनीपरें मिथ्यासगपण न्यातजातवगेरेनी कल्पनाकरेछे ॥ ५ ॥ जेम एक वडना बीजथकी घणीधरतीयें वडव्यापीनेविस्तारपामेछे;तेमएकममताना बीजथकी घणाप्रपंचनी कल्पनाउठेछे ॥ ६ ॥

माता पिता मे भ्राता मे भगिनी वल्लभा च मे ॥ पुत्राःसुता मे मित्राणि ज्ञातयः संस्तुताश्च मे ॥ ७ ॥ इत्येवं ममताव्याधिं वर्द्धमानं प्रतिक्षणं ॥ जनःशक्नोति नोछेत्तुं विना ज्ञानमहौषधं ॥८॥

अर्थ ॥ मातापिता, भाइ, बेन, स्त्री, एसर्वेमाहरांछे; पुत्र, पुत्री, मित्र,एपणमाहरांछे; न्याति परिचित एमाहरांछे ॥ ७ ॥ एप्रकारेंममतारूपरोग दिवसेंदिवसें वधतोजायछे, तेनेमटाडवाने कोइपणज्ञानरूप औषधविना समर्थथातोनथी ॥ ८ ॥

ममत्वेनैव निःशंक मारंभादौ प्रवर्त्तते ॥ कालाकालसमुत्थायी धनलोभेन धावति ॥ए॥ स्वयं येषां च पोषाय खिद्यते ममता वशः ॥ इहामुत्र च ते न स्यु स्त्राणाय शरणाय वा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमवेलाकवेलाउठीने विप्रवेमासासोजुं लेवानेगयो, तेनीपरेंएक ममतायेंकरीनेनिःशंकपणे आरंभमांप्रवर्त्तेछे; ममणशेठपरें धननेलोभेकरीदोडेछे ॥ ए॥ परभवमां इहांतुंकुटुंब शरणआधारनथी, तोपणकुटुंबनेपोषवानी ममतामां खेदपामेछे ॥ १० ॥

ममत्वेन बहून् लोकान् पुष्णात्येकोर्जितधनैः ॥ सोढा नरक
दुःखानां तीव्राणामेक एव तु॥११॥ममतांधोहि यन्नास्ति तत्प
श्यति न पश्यति॥जात्यंधस्तु यदस्त्येत ञ्नेद इत्यनयोर्महान् ॥१२॥

अर्थ ॥ पोतेएकलो धनमेलवीने ममत्वेंकरीने घणालोकने पुष्टिकरेछे, पणपरञवमां आकरांनारकीनांदुःखआवशे, तेवारेंएकलोजञोगवशे. ॥११॥जीवतोआंधलोनथी, पण ममतायेंकरी नास्तिकपदार्थने खरुंकरीमानेछे, तेहनेमिथ्यादृष्टिअंधकहियें, केमके तेनीचर्मचक्षुछे, तोपणतेचक्षुयेंकरी आत्मिकअर्थने नथीदेखतो, माटेएनेदेखतो पणआंधलोजजाणवो;अनेजेजातिअंधतो छे पणज्ञानीनेसंयोगें आत्मार्थने जुए छे, मा टेएबेप्रकारना अंधमां घणोअंतरछे ॥ १२ ॥

प्राणाऽनित्यताध्यानात् प्रेमभूम्ना ततोधिकां ॥ प्राणपदां प्रि
यां मत्वा मोदते ममतावशः॥१३॥ कुंदान्यस्थीनि दशनान् मुखं
श्लेष्मगृहं विधं॥मांसग्रंथी कुचौ कुंञौ हेम्नो वेत्ति ममत्ववान्॥१४॥

अर्थ ॥ रागदिशायेंकरीने प्राणनेअनित्यमाने पणप्राणनी लेनारीजेस्त्री तेनेममताने वशथइ वल्लञजाणीने हर्षपामेछे ॥१३॥ तेस्त्रीनादांतयद्यपि हाडकांनाछे, तोपणतेने कुं दफुलनी कलिनाजेवाजाणे, अनेश्लेष्मजेलाल तेणेकरी ञरेलुं मुखहोय ते नेचंद्रतुल्यवखाणेछे, अनेस्तनमांसनागंठाछे तेनेसोनाना कलशसमान लेखेछे, ए वातो सर्वममत्वनेलीधे थायछे ॥ १४ ॥

मनस्यन्यद्वचस्यन्यत् क्रियामन्यदेव च ॥ यस्या स्तामपि लो
लार्दी साध्वीं वेत्ति ममत्ववान्॥१५॥या रोपयत्यकार्येपि रागि
णां प्राणसंशये॥दुर्वृत्तां स्त्रीं ममत्वांध स्तां मुग्धामेव मन्यते ॥१६॥

अर्थ ॥ वलीतेस्त्रीकेवीछे ? जेनामनमांकोइकहोय, अनेवचनमां वली बीजो कोइक होय,अनेञोगतोवली कोइस्त्रीजानी साथेजकरे, एवीछे. तेनेवैरागीपुरुषकहेछे, जेएस्त्री थकी सर्वसखुं. एटलेस्त्रीने सर्वथीजुंकीगणेछे; पणजेप्राणीममतावंतछे, तेतोएवीचंचल नेत्रवालीस्त्रीने सतीमानेछे ॥ ५ ॥ स्त्रीपोतानारागी धणीनेमरण थाय एवांकाम ञलावे, अनेतेपण ममत्वेंआंधलोपुरुष तेकार्यंकुटाइ पीटाइनेकरे. वली स्त्रीव्यञिचारणी होय,तोपणतेनेञोलीकरीमाने. तेउपरएक दृष्टांतछे. "लालीकेतीबापकी अवला खेलमखे ल, ज्यांथीलाव्योलाकनी त्यांनीत्यांजइमेल" ॥ १६ ॥

चर्माच्छादितमांसास्थि विण्मूत्रपिठरीष्वपि ॥ वनितासु ममत्वं
य त्तन्ममत्वं विजृंभितं ॥ १७ ॥ लालयन्बालक नोते त्येवं ब्रुते
ममत्ववान् ॥ वेत्ति च श्लेष्मणा पूर्णा मंगुलीममृतांचितां॥१८॥

अर्थ ॥ जेममत्वनी चेष्टाते धूलखीला सरखीछे, तेनेवशथइरह्यो एवोजेपुरुषते हाड,मांस,विष्टा,मूत्र,तथा चर्मेथीमढेली हांफलीजेवीस्त्रीउपरप्रेमकरेछे;ममत्वधरेछे॥१७॥ वलीममत्वेंकरीने पोतानापुत्रनेरमाडे तेवखतेतेनेबापबापकरीकहे. अने तेबालकना हाथनीआंगलीयो श्लेष्मथीभरीहोय तेनेअमृतसमानजाणे ॥ १८ ॥

पंकार्द्रमपि निःशंका सुतमंकान्न मुंचति॥ तदमेध्येपि मेध्यत्वं जा
नात्यंबा ममत्वतः ॥ १९ ॥ मातापित्रादिसंबंधो नियतोपि म
मत्वतः ॥ दृढभूमि भ्रमवतां नैयत्येनावभासते ॥ २० ॥

अर्थ ॥ मोहथकी बालकनीमाता पोतानाबालकने कादवेंभर्योहोय, तोपणनिः शंकपणे खोलामांथी मूकतीनथी; वलीविष्टायेंअशुचिहोय, तोपणतेबालकने तेनीमाता मोहनावशथकी तेहनेपवित्रगणेछे ॥ १९ ॥ जेमधरती शाश्वतदृढछे, पणधतुरानाफलभक्षकरनार प्राणीनेफेरआवेछे, त्यारेतेनेधरतीफरतीजणायछे तेममातापितादिकनो संबंध संसारमां अनादिनो शाश्वतछे; पणमोहवडेमुंझाणोप्राणी एमकहेछेजे, मातामरीगइ; हवेकेमथशे ? शीरीतेंचालशे ? ॥ २० ॥

भिन्नाः प्रत्येकमात्मानो विभिन्नाः पुद्गला अपि॥ शून्यसंसर्ग इ
त्येवं यः पश्यति स पश्यति॥२१॥अहंताममते स्वत्वस्वीयत्वभ्र
महेतुके॥ भेदज्ञानात्पलायेते रज्जुज्ञानादिवाहिभिः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ तेमप्रत्येकेंजीवपण जुदाजुदाछे, अनेतेकइगतिथीआव्या अनेकइगतियें जशे ? तेमपुद्गलपणजुदाछे, तथाशरीरनो संगपणशुन्यछे, एरीतेजेदेखेछे; तेनेदेखतो जाणवो ॥२१॥ जेमदोरडानुं ज्ञानथये सर्पनीभीति नाशपामेछे, तेमहुंअनेस्त्रीआदिक माहरीछेएवो ममत्वथायछे,तेभ्रमहेतुछे. तेभ्रमभेद ज्ञाननजरेंजोवाथी नाशपामे ॥२२॥

किमेतदिति जिज्ञासा तत्वाभिज्ञानसंमुखी ॥ व्यासंगमेव नोत्थातु
र्दत्ते क्व ममतास्थितिः ॥ २३ ॥ प्रियार्थिनः प्रियाप्राप्तिं विना क्वा
पि यथा रतिः ॥ न तथा तत्त्वजिज्ञासो स्तत्त्वप्राप्तिं विना क्वचित्॥२४॥

अर्थ ॥ एसंसारनोसंबंधशुंछे ? एमआत्मतत्त्वने सन्मुख ओलखवानी इछायइ. ए

टलेममता तरतनाशपामे· आत्मज्ञानीआगल ममताकिहांठेकाणेरहे? ॥ २३ ॥ जेमकामीपुरुष स्त्रीनोअर्थीथयो, तेस्त्रीपाम्याविना कोइपणठेकाणे रतिनपामे, तेमतत्त्वनोजाणपुरुषपण तत्त्वपाम्याविना क्यांयेंरतिनपामे ॥ २४ ॥

अत एव हि जिज्ञासा विष्टंभति ममत्वधीः ॥ विचित्राभि
नयाक्रांतः संभ्रांत इव लक्ष्यते ॥२५॥ धृतो योगो न ममता
हता न समताऽऽदृता॥न च जिज्ञासितं तत्त्वं गतं जन्म निर
र्थकम् ॥ २६ ॥ जिज्ञासा च विवेकश्च ममतानाशकावुभौ ॥
अतस्ताभ्यां निगृह्णीया देनामध्यात्मवैरिणीं ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ एकारणमाटे तत्त्वजाणवानी इच्छायेंकरी ममतानीबुद्धिजेणेदबावीछे, ते प्राणी विचित्रप्रकारनी नय, गम, भंग, रचनायें व्याप्योथको संसारना सर्वपदार्थने संभ्रांतजाणे, एटलेइंद्रजालवत्जाणे ॥ २५ ॥ जेणेजोगपणधर्योनही, अनेममता पण हणीनही, तथा समतापणआदरीनही, वलीशास्त्रजाणवानी इच्छापणनकरी, तेनोनरजन्मनिष्फलगयो, एमजाणवुं ॥ २६ ॥ एकजाणवानी इच्छा अनेबीजोविवेक एबेममताने नाशकरनाराछे· तेमाटेएबेहुथकी ममतानो निग्रहकरवो. कारणके ममता ते अध्यात्मनी दुश्मनछे ॥ २७ ॥ इतिममता त्यागाधिकारः अष्टमसमाप्तः ॥

त्यक्तायां ममतायां च समता प्रथते स्वतः ॥ स्फटिके गलितो
पाधौ यथा निर्मलतागुणः ॥१॥ प्रियाप्रियत्वयोर्यार्थे व्यवहार
स्य कल्पना निश्चयात्तव्युदासेन स्तैमित्ये समतोच्यते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेसमता आववानो अधिकारकहेछे· जेमस्फटिकनेविषे उपाधिपणुंटले, तेवारें निर्मलतापणुंवधेछे, तेमजेवारें ममतानोत्यागथाय तेवारेंपोतानीमेलेज समताविस्तरे ॥ १ ॥ संसारनेविषेपोताने अर्थेकोइकामपडे तेवारें एमंजाणेजेआमाहरो वहालोछे;अनेआदुश्मनछे,पणएसर्व व्यवहारकल्पनाछे; निश्चयथकीतो तेव्यवहार-नाशेकरी मध्यस्थपणुंपामे; तेवारेंज तेसमतावंत केहेवाय ॥ २ ॥

तेष्वेव द्विषतः पुंस स्तेष्वेवार्थेषु रज्यतः ॥ निश्चयात्किंचि दि
ष्टं वाऽनिष्ट वा नैव विद्यते॥३॥एकस्य विषयो यः स्यात्स्वाभिप्रा
येन पुष्टितः ॥ अन्यस्य द्वेष्यतामेति स एव मतिभेदतः ॥४॥

अर्थ ॥ व्यवहारकल्पनावालोतो जेनेविषेद्वेषलावे तेनेजविषे पोतानांअर्थसाधनेकरि राजीथाय;पणजोनिश्चयथकीविचारे, तोएमांकांइ इष्टनथी, तेमअनिष्टपणनथी,

॥ ३ ॥ एकविषयजे एककार्यछे तेएकजणने पोतानीरुचियेंपुष्टकारीछे अनेबीजानेतेथीज द्वेषरुपजेछे. एमतिकल्पनानाभेदछे, एमजाणवुं ॥ ४ ॥

विकल्पकल्पितं तस्मा द्वयमेतन्न तात्विकं ॥ विकल्पोपरमे तस्य द्वित्वादिवद्भपक्षयः ॥५॥ स्वप्रयोजनसंसिद्धिः स्वायत्ता भासते यदा ॥ बहिरर्थेषु संकल्पसमुत्थानं तदा हतं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इष्टअनिष्ट ए विकल्पनीकल्पनाथकीछे;एबेनेजरागद्वेषजाणवा. पणएमांकांइ तत्वनथी. जोमनथीविकल्पजाय, तोरागद्वेष एबेहुदूरथाय ॥५॥ पोताना प्रयोजननी- सिद्धि जेवारेंपोताने स्वाधीनथाय, तेवारेंबाहारना अर्थसंकल्पनो उठावनाशपामे ॥६॥

लब्धे स्वभावे कंठस्थस्वर्णन्यायाद्भ्रमक्षये ॥ रागद्वेषानुप स्थाने समता स्यादनाहता॥७॥जगज्जीवेषु नो भाति द्वैविध्यं कर्मनिर्मितं॥यदा शुद्धनयस्थित्या तदा साम्यमनाहतं ॥८॥

अर्थ ॥ जेमकंठउपररहेलुं सुवर्ण साक्षात्देखायछे, तेमस्वाभाविकगुण पामेथकेवि- भाविकभ्रमणादूरजाय, तेवारें रागद्वेषउठीदूरथाय अनेसमताविशेषेंवधे ॥ ७ ॥ जग- तुनाजीवनेविषे कर्मनुंविचित्रपणुंछे, माटेतेविभावपणुं सारुंनरतुंकेहेवानीरीतें जेवारेंन भासे, तेवारेंशुद्धनयमां रह्योथको प्रबलसमतानेपामे ॥ ८ ॥

स्वगुणेभ्योपि कौटस्था देकत्वाध्यवसायतः ॥ आत्मारामं म नो यस्य तस्य साम्यमनुत्तरं॥९॥ समतापरिपाके स्या द्विषय ग्रहशून्यता॥यया विशदयोगानां वासीचंदनतुल्यता ॥१०॥

अर्थ ॥ पोतानागुणथकी पोतानोआत्मासाक्षीकरीने पोतानाएकशुद्धअध्यवसाय- थकी आत्मानेविषे जेनुंमनरमेछे, तेनीसमताअनुत्तरकहियें ॥ ९ ॥ एमजेनेपाकीसम- तायइ तेनुंविषयरूपघरसुनुंथयुं; एमजेमुनिनेनिर्मल समतायोगप्रगट्यो, तेमुनिनेवांस- लेंकरी कोइछेदे अथवा चंदनेकरीकोइपूजेते बेहुतुल्यछे. ॥ १० ॥

किं स्तुमः समतां साधो या स्वार्थप्रगुणीकृता ॥ वैराणि नित्य वैराणा मपि हंत्युपतस्थुषां ॥ ११ ॥ किं दानेन तपोभिर्वा यमैश्च नियमैश्च किं ॥ एकैव समता सेव्या तरिः संसारवारिधौ ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एवा साधुनीसमतानां शुंवखाणकरियें ? जेणेपोतानाआत्मानी सिद्धिकर- वाने समताआदरी, एहवामुनितें समतारूपघरमांरहेताथका आजन्मनातथा आगला-

कश्कनवतेसर्व नवनावैरनावने टालीनाखेछे, जेमनित्यपासेंवसतांथका कुतराअने मांजरीके० बिलाडीतेमनांवैरपण शमीजायछे, तेह्नीपरेंजाणवुं ॥ ११ ॥ कपटीवेशधारण करवाथीशुंथाय! तथाघणीतपस्यायेंपण शुंथाय! वलीमौनधारी अतीतनीपेरें इंद्रियदमनकीधेशुंथाय? अने व्रतधारणकरेपणशुंथाय! मात्रएकसमताजे संसाररूपसमुद्रतरवामां नौकाजेवीछे, तेनुंजसेवनकरवुंतेहिजश्रेष्ठछे ॥ १२ ॥

दूरे स्वर्गसुखं मुक्तिपदवी सा दवीयसी ॥ मनःसंनिहितं दृष्टं
स्पष्टं तु समतासुखं ॥ १३ ॥ दृशोः स्मरविषं शुष्येत् क्रोधताप
क्षयं व्रजेत्॥औध्दत्यमलनाशः स्यात् शमतामृतमज्जनात्॥१४॥

अर्थ ॥ देवलोकनासुखतोदूरछे. वलीमोक्षपदवीतेतोमोटीछे, अनेनवस्थितिनेहाथछे, तेवारे मननीपासे प्रगटपणेदेखीयें एवीसमतानुंसुखते शुंखोटुंछे! ॥ १३ ॥ समतारूप अमृतकुंडमां स्नानकरवानाप्रनावथी आंखथकी कंदर्परूपदर्पनुं विषसोषाइजायछे; क्रोधरूपताप नाशपामेछे; उध्धताइरूपी मेल तेपणदूरकरेछे. ॥ १४ ॥

जरामरणदावाग्निज्वालिते नवकानने ॥ सुखाय समतैकै
व पीयूषघनवृष्टिवत् ॥१५॥ आश्रित्य समतामेका निर्वृता
नरतादयः॥नहि कष्ट मनुष्ठानमभूत्तेषां तु किंचन ॥१६॥

अर्थ ॥ जन्म,जरा,मरण,रूप दावानलेंकरीबलतुंएवुं संसाररूपवनखंम तेमांसमतानुं जेसुखछे, तेअमृतनावरसादसरखुंजाणवुं ॥ १५ ॥ चित्रशालीमध्ये एकजसमताने अवलंबता नरतराजाआदि आठपाट केवलपामिने सिद्धथया, पण तेमने कष्टक्रियाकांइ पण करवीपडीनही, एह्वीएसमताछे ॥ १६ ॥

अर्गला नरकद्वारे मोक्षमार्गस्य दीपिका ॥ समता गुणरत्ना
नां संग्रहे रोहणावनिः॥१७॥मोहाछादितनेत्राणा मात्मरूपम
पश्यतां ॥ दिव्यांजनशलाकेव समता दोषनाशकृत् ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ वलीसमता तेनरकनेबारणे नोगलजेवीछे;अनेमोक्षमार्गनीदीविछे; वलीगुणरूपरत्ननो संग्रहकरवाने रोह्णाचलपर्वतनी नूमिकासरिखीछे ॥ १७ ॥ जेनांनेत्र मोहवमेढंकायांछे अनेजेपोतानास्वरूपने जोइशकतानथी, तेनेदिव्यअंजनआंजवाने समशलाकारूपछे; अनेअज्ञाननापमलने छेदनारीछे ॥ १८ ॥

क्षणं चेतः समाकृष्य समता यदि सेव्यते ॥ स्यात्तदा सुखम
प्यस्य यद्वक्तुं नैव पार्यते॥१९॥कुमारी न यथा वेत्ति सुखं दयित
भोगजं ॥ न जानाति तथा लोको योगिनां समतासुखं ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी एकक्षणमात्र मननेखेचीने समतानेसेवे, तेप्राणीने एहवुंसुख प्रगटे, जेहनोमुखेकहेताथकां पारआवेनही ॥ १९ ॥ जेमकुमारिका जरतारनासुखने जाणतीनथी, तेम लोकोपणमुनिराजनी समतानासुखने जाणतानथी ॥ २० ॥

नतिस्तुत्यादिकाशंका शरस्तीव्रः स्वमर्म्मभृत् ॥ समतावर्मगुप्ता
नां नार्त्तिकृत्सोपि जायते ॥ २१ ॥ प्रचितान्यपि कर्म्माणि जन्मनां
कोटिकोटिभिः॥तमांसीव प्रभा भानोः क्षिणोति समता क्षणात् ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेणेसमतानुं बख्तरपेर्युंछे, तेनेनमस्कार, स्तुति, पूजा, लाभ, परद्रव्यनी इछादिरूप जेपोतानाज मर्मनेलागनारा एहवाजेतीक्ष्णबाणो तेपीडाकरीशकतानथी. ॥ २१ ॥ जेमसूर्यकिरणप्रकाशथी अंधकारनाशपामेछे, तेमकोटिकोटि भवना प्राणीनां निविडसंचितजे पापकर्मछेते, समतावडे एकक्षणमांनाशपामेछे ॥ २२ ॥

अन्यलिंगादिसिद्धाना माधारः समतैवहि ॥ रत्नत्रयफलप्राप्ते
र्यथा स्याद्भावजैनता ॥ २३ ॥ ज्ञानसाफल्यमेषैव नयस्थानाव
तारिणः ॥ चंदनं वह्निनेव स्यात् कुग्रहेणातु भस्म तत् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेअन्यलिंगीसिद्धथया तेपण द्रव्यथी मोक्षफलसाधताथका रत्नत्रयनाफलनीप्राप्तिवडे भावथीजैनपणुंपाम्या; माटेतेअन्यलिंगीओनेपण समताते एकआधारभूतहति ॥२३॥ जोनयस्थानके उतारीजोइयेंतो, एसमताजज्ञाननुंफलछे; नेजेमज्ञानवडेभवताप शमेछे, तेमसमतारूपचंदनेकरी भवतापशमीजायछे; पणकुग्रहके० कदाग्रहअज्ञानरूप अग्निवडेतो समतारूपचंदनबली भस्मथायछे ॥ २४ ॥

चारित्रपुरुषप्राणाः समताख्या गता यदि ॥ जनानुधावनावेश
स्तदा तन्मरणोत्सवः ॥२५॥ संत्यज्य समतामेकां स्याद्यत्कष्ट
मनुष्ठितं ॥ तदीप्सितकरं नैव बीजमुप्तमिवोषरे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ आसंसाररूपगामनेविषे सर्वलोक क्रयविक्रयकरता दोडादोडकरेछे,तेशुंछे? तेकहेछे; केजेवारेंचारित्ररूपीपुरुष मरणपाम्यो, तेवारें समतारूपीप्राणपण जतारह्या; पछी तेनामृतकार्यनोउत्सव पायरणास्नानसूतक वगेरे करवानेजाणियेंएलोको दोडा-

दोडकरेछे एमसमजवुं ॥ २५ ॥ जेमऊखरक्षेत्रमां बीजवाव्युं तेकष्टेफलेनही, तेमएक समतानेछोडी जेप्राणीकष्टक्रियाकरेछे, तेनेरूडुंफल आगलमलतुंनथी ॥ २६ ॥

उपायः समतैवेका मुक्तेरन्यः क्रियानरः ॥ तत्तत्पुरुषनेदेन तस्या एव प्रसिध्ये ॥ २७ ॥ दिङ्मात्रदर्शने शास्त्रव्यापारः स्यान्न दूरगः ॥ अस्याः स्वानुनवः पारं सामर्थ्याख्योवगाहते ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ मुक्तिनोउपायतो एकसमताछे;बाकी क्रियाकष्ट सर्वेआडंबरछे; तेपुरुषने नेदें-करी एटलेतपजप सर्वेसमतानी प्रसिद्धिछे;पुरुषनेदते गृहस्थ अने मुनिने शीलेछे; ए-टले क्रियाकरवामां गृहस्थ तथा मुनिनो व्यवहारजुदोछे, पणतेबेउनी क्रिया समतायें वखाणवी, एवीशास्त्रनीआज्ञाछे ॥२७॥ शास्त्रनाउपदेशतो जेमकोइआंगलीवडे मार्गब-तावे, पणपोतेकांइसाथेंआवेनही; तेमदिशिमात्रने बतावेएवाछे, पण जेशास्त्रसांनलीने पोतानाअनुनवमांलावी पोतानेसामर्थ्येकरी पंथअवगाहे,तेजनवाटवीनोपारपामे ॥२८॥

परस्मात् परमेषा यन्निगूढं तत्त्वमात्मनः ॥
तदध्यात्मप्रसादेन कार्योस्यामेव निर्नरः ॥२९॥

अर्थ ॥ परपुद्गलादिक वस्तुतेआत्मानानथी, अने देखवाथी आआत्मापरमपवि-त्रछे; आत्मानेविषेआत्मतत्त्व गुप्तछे. माटेअध्यात्मने प्रसादेकरी समतानेविषे हर्षउल्ला-सकरवो ॥ २९ ॥ इतिसमताधिकारः नवमःसमाप्तः ॥

परिशुद्धमनुष्ठानं जायते समतान्वयात् ॥ कतकक्षोदसंक्रांतेः कलुषं सलिलं यथा ॥१॥ विषं गरलाऽननुष्ठानं तद्धेतुरमृतं परं ॥ गुरुसेवाद्यनुष्ठान मिति पंचविधं जगुः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम कतकफलना चूर्णनेयोगें कोहलुंपाणि निर्मलथाय, तेम समतानायोगथी शुद्धअनुष्ठानप्रगटथायछे ॥ १ ॥ विषानुष्ठान, गरलानुष्ठान, अनानुष्ठान, तद्धेतुअ-नुष्ठान ने अमृतानुष्ठान एपांचअनुष्ठान गुरुसेवादिक करणीमांकह्यांछे ॥ २ ॥

आहारोपधिपूजर्द्धि प्रभृत्याशंसया कृतं ॥ शीघ्रं सच्चित्तहंतृत्वा द्विषानुष्ठानमुच्यते ॥३॥ स्थावरं जंगमं चापि तत्क्षणं नक्षितं विषं ॥ यथा हंति तथेदं सच्चित्तमैहिकनोगतः ॥४॥

अर्थ ॥ मिष्टान्नजोजननीलालचें, वस्त्रनीलालचें, पूजानीलालचें, दोलतनीइछायें, जेतप जप कष्टक्रियाकरे, तेक्रियापोताना शुनचित्तनीहणनारीछे. एनुंनाम विषअनुष्ठा-

नजाणवुं ॥३॥ स्थावरविषते सोमलजाणवुं, अनेजंगमविषसर्पादिकनुंजाणवुं; एबेजमां-थी एकविषखाधाथी तरतमरेछे, तेमजोगाभिलाषेंक्रियाकरवी तेशुजचित्तनेहणेछे ॥४॥

दिव्यभोगाभिलाषेण कालांतरपरिक्षयात्॥ स्वादिष्टफल संपूर्त्तेर्गरानुष्ठानमुच्यते ॥५॥यथा कुद्रव्यसंयोगजनितं ग रसंज्ञितं ॥ विषं कालांतरे हंति तथेदमपि तत्त्वतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेदेवेंद्रादिकना सुखपरजवें पामवानीइछाकरीनेतपस्याकरेतेप्राणीकालांतरें नरकगतिपामे. कष्टकरीने अणदीठांफलनीवांछाकरे तेनेगरलानुष्ठानकेहेवुं ॥ ५ ॥ जेमबंगडीचूर्णप्रमुखनिर्बलद्रव्यने संयोगेंप्रगटथतुंविष तेगरलनामाविषकहियें,ते घणा दिवस कष्टपमाडीमारेछे, तेमएपणतत्त्वथी नर्कफलनीप्राप्तिकरेछे ॥ ६ ॥

निषेधध्यानयोरेव विचित्रानर्थदायिनोः ॥ सर्वत्रैवानिदान त्वं जिनेंद्रैः प्रतिपादितं ॥ ७ ॥ प्रणिधानाद्यभावेन कर्म्मा नध्यवसायिनः॥ संमूर्छिमप्रवृत्त्याभमननुष्ठानमुच्यते ॥८ ॥

अर्थ ॥ अनेकप्रकारें महाअनर्थउपजावे एवांएपूर्वोक्तबेअनुष्ठाननो निषेधकरवाने समस्ततीर्थंकरें नियाणुंवर्जवानुंकह्युंछे ॥ ७ ॥ प्रणिधानादिकनेअभावें कर्मजेक्रियातेमां अध्यवसायरहितके० शून्यपणेसंमूर्छिमनीपरें शून्यमननी प्रवृत्तियें अथवा देखादेखी-यें जे क्रियाकरे तेअन्योन्यानुष्ठानकहियें ॥ ८ ॥

ओघसंज्ञात्र सामान्यं ज्ञानरूपानिबंधनं॥ लोकसंज्ञा च नि र्दोषसूत्रमार्गानपेक्षणी ॥ ए ॥ न लोकं नापि सूत्रं नो गुरु वाचमपेक्षते॥अनध्यवसितं किंचित्कुरुते चौघसंज्ञया ॥१०॥

अर्थ ॥ इहांसामान्यप्रकारें ज्ञानरूपनुंकारणनगवेषे, तेओघसंज्ञा प्रवाहरूपकहियें. तेथी निर्दोषसूत्रनामार्गनीअपेक्षाविना लोकदेखादेखीयें क्रियाकरे अथवा उपयोग शून्यथकाजेक्रियाकरे, तेअन्योन्यानुष्ठानछे॥ए॥एटलेलोकनीरीतविना अने सूत्रनी तथा गुरूनावचननीअपेक्षाविना उपयोगशून्यपणे जेकांइकरवुं तेनुंनाम ओघसंज्ञाछे ॥ १० ॥

शुद्धस्यान्वेषणे तीर्थोछेदः स्यादिति वादिनां ॥ लोकाचारादर श्रद्धा लोकसंज्ञेति गीयते ॥ ११ ॥ शिक्षितादिपदोपेतमप्या वश्यकमुच्यते॥द्रव्यतो भावनिर्मुक्तमशुद्धस्य तु का कथा ॥१२॥

अर्थ ॥ जोअत्यंतशुद्धमार्ग खोलवाजइयें,तो तीर्थनोउछेदथाय. माटेलोकना आ-चारउपरआदर श्रद्धाकरवी, जेमचालेतेम चालवादीजे, एहवांवचनबोलता जेलौकिक

आचारेंप्रवर्त्तें तेनुंनाम लोकसंज्ञाछे ॥११॥ अनेशिक्षाग्रहण, आसेवन, तथा पद संपदायें सहित भावशून्यपणेजे आवश्यककरे तेपण द्रव्यआवश्यक कह्युंछे, तोजे अशुद्धज करेतेनी तोशीवातकहियें ? ॥ १२ ॥

तीर्थोछेदभिया हंता विशुद्धस्यैव चादरे ॥ सूत्रक्रियाविलोपः स्याद्गतानुगतिकत्वतः ॥१३॥ धर्मोद्यतेन कर्त्तव्यं कृतं बहुभिरेव चेत्॥तदा मिथ्यादृशां धर्मो न त्याज्यः स्यात्कदाचन॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेतीर्थनोउछेदथाय, तेनाभयथी अशुद्धक्रियानेविषे गाडरीयाप्रवाहनी पेरें गतानुगतिकपणें आदरकरतां कांइपरमार्थ जाणेनही; अनेज्ञानक्रियानो नाशकरे॥१३॥ जेधर्मनाअर्थीथइने एमकहेशो केजेघणाजन करेतेआपणेपण करवुं; तोमिथ्यात्वधर्मनापण घणासेवनारछे, माटेतेपण कोइकालेछंडाशेनही; एमजाणवुं ॥ १४ ॥

तस्माद्गतानुगत्या यत् क्रियते सूत्रवर्जितं ॥ ओघतो लोकतो वा तदननुष्ठानमेव हि॥१५॥ अकामनिर्जराकत्वं कायक्लेशादिहोदितं॥सकामनिर्जरा तु स्यात् सोपयोगप्रवृत्तितः॥१६॥

अर्थ ॥ माटेसूत्रनीशैलीरहितपणे गतानुगतिकपणे ओघसंज्ञायें अथवा लोकसंज्ञायें जेकरवुं तेनेअन्योन्यानुष्ठानकेहेवुं ॥१५॥ जेअज्ञानपणे कायक्लेशकरे, तेनेअकामनिर्जराकहेवी, अने उपयोगसहित ज्ञानक्रियाकरवी तेनुंनामसकामनिर्जराछे ॥ १६ ॥

सदनुष्ठानरागेण तद्धेतुर्मार्गगामिनां ॥ एतच्च चरमावर्त्ते नो भोगादेर्विना भवेत् ॥ १७ ॥ धर्मयौवनकालोयं भवबालदशापरा॥अत्र स्यात्सक्रियारागो न्यत्र चासत्क्रियादरः॥१८॥

अर्थ ॥ मार्गानुसारीपुरुष शुद्धक्रियानुष्ठाननेरागेकरी जेकरेते तद्धेतुअनुष्ठानकेहेवाय. तेजेवारेंछेल्लुंपुद्गलपरावर्त्तरहे, तेवारेंजेक्रियाकरे तेअनउपयोगेनकरे, माटेएअनुष्ठानपणतेवारेंजहोय ॥१७॥ छेल्लेपुद्गलपरावर्त्तेंजेवारें तद्धेतुअनुष्ठानप्रगटे, तेवारेंएधर्मनो यौवनकाल प्रगटथो; अनेसंसारमांबालदिशाहति,तेमटिगइ; एमजाणवुं. एअनुष्ठानेशुद्धक्रियानोरागउपजेछे, अनेपूर्वेनात्रणअनुष्ठानेअशुद्धक्रियानोआदरउपजेछे ॥ १८ ॥

भोगरागाद् यथा यूनो बालक्रीडाऽखिला ह्रिये ॥ धर्म्मयूनस्तथा धर्म्म रागेणासक्रियाह्रये ॥ १९ ॥ चतुर्थं चरमावर्त्ते तस्माद्धर्म्मानुरागतः ॥ अनुष्ठानं विनिर्दिष्टं बीजादिकमसंगत ॥२०॥

अर्थ ॥ जेमयुवान्पुरुष जोगनोविलासी थायछे, नेबालक्रीडाथी लजवायछे; तेम धर्मयौवन कालवंतपुरुष धर्मनारागेंकरी शुद्धक्रियाथी लजवायछे ॥ १९ ॥ तेमाटे तेधर्मनाअनुरागथी चरमपुद्गलपरावर्त्तेंजवली तद्धेतुनामेंचोथुंअनुष्ठानकह्युंछे, पणवी जादिकजेसमकित तेतो असंगके० अप्राप्तछे ॥ २० ॥

वीजं चेह जनान् दृष्ट्वा शुद्धानुष्ठानकारिणः ॥ बहुमानप्रशंसा-
भ्यां चिकीर्षा शुद्धगोचरा ॥ २१ ॥ तस्या एवानुबंधश्चाकलंकः
कीर्त्यतेऽङ्कुरः॥तद्धेत्वन्वेषणा चित्रा स्कंधकल्पा च वर्ण्यता॥२२॥

अर्थ॥ इहांसमकीतरूपबीज तो तेवारेंथाय,के जेवारें शुद्धक्रियाकरतांप्राणीने देखीने बहुमानप्रशंसाकरे, अनेआगमविधिरागेंपोतेपण ज्ञानेशुद्धविधिगोचरहोय. तेवारेंसम-कितउपजेछे ॥ २१ ॥ एतद्धेतुअनुष्ठाननोअनुबंधजे शुद्धप्रणमनते कलंकरहितअंकुर-कहिये, अने तद्धेतुअनुष्ठाननी खोलकरवी तेनानाप्रकारनो स्कंधकहियें ॥ २२ ॥

प्रवृत्तिस्तेषु चित्रा च पत्रादिसदृशी मता ॥ पुष्पं च गुरुयो
गादि हेतुसंपत्तिलक्षणं ॥ २३ ॥ भावधर्म्मस्य संपत्तिर्या च
सद्देशनादिना॥फलं तदत्र विज्ञेयं नियमान्मोक्षसाधकं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमध्येप्रवर्त्तवुंतेरूप विचित्रप्रकारनापानडा जाणवां, अने सद्गुरुना योगवडे स्वर्गमांसुखसंपदापामवी तेरूप फुलजाणवां ॥ २३ ॥ जेवारेंगुरुपासे देशनासांभलीने भावधर्मरूप संपदापामे तेफलकहियें; तेफलमोक्षसाधनरूपछे, एमजाणवुं ॥ २४ ॥

सहजो भावधर्मो हि शुद्धचंदनगंधवत् ॥ एतद्गर्भमनुष्ठा
नममृतं संप्रचक्ष्यते॥२५॥जैनीमाज्ञां पुरस्कृत्य प्रवृत्तं चि
त्तशुद्धितः ॥ संवेगगर्भमत्यंतममृतं तद्विदो विदुः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥सहजस्वाभाविकजे भावधर्मछे, तेतोचंदननी सुगंधसमानछे. तेसहितजेअनु-ष्ठान क्रियाकरवी तेनुंनाम अमृतानुष्ठानछे ॥ २५ ॥ प्रभुनीआज्ञावडे मनशुद्धियेंप्रवर्त्ते अनेअत्यंतपणे संवेगगुणेसहितहोय तेनेगणधरादिक अमृतानुष्ठानकहेछे ॥ २६ ॥

शास्त्रार्थालोचनं सम्यक् प्रणिधानं च कर्म्मणि ॥ कालाद्यंगा
विपर्यासोमृतानुष्टानलक्षणं ॥२७॥द्वयं हि सदनुष्ठानं त्रयम
त्रासदेवच ॥ तत्रापि चरमं श्रेष्ठं मोहोग्रविषनाशनात् ॥२८॥

अर्थ ॥ भलीरीतेंशास्त्रना अर्थविचारें, क्रियामध्येवीर्यउल्लासधरे, पंचमकालना

दोषनगणे, अथवाजेकालेजें उचित क्रियाहोयतेक्रियाकरे, एलक्षणअमृतानुष्ठाननांजाणवां ॥ २७ ॥ एपांचअनुष्ठानमांहेलां बेअनुष्ठानतेरुमांहे अनेप्रथमनांत्रण अनुष्ठान ते रुडांनथी, तेमांपणसर्वथा श्रेष्ठतोअमृतानुष्ठान जाणवुं. केमके मोहके० अज्ञानतेनुं आकरुंजेविषतेएअनुष्ठान वडेनाशपामेछे ॥ ३७ ॥

आदरः करणे प्रीतिरविघ्नसंपदागमः ॥ जिज्ञासा तज्ज्ञसेवा च सदनुष्ठानलक्षणं ॥२९॥ जेदैर्जिन्नं जवेदिछा प्रवृत्तिस्थिरसिध्धिजिः॥चतुर्विधमिदं मोक्षयोजनाद्योगसंज्ञितं॥३०॥

अर्थ ॥ क्रियायेंआदरकरतांरागधरे तथाआगमने अतिमोटीसंपदानुमाने, वली जाणवानीइछाकरे, जाणनोसंगकरे, एशुद्धक्रियानांलक्षणछे ॥२९॥ तेनापण जुदाजुदा जेदछे१इछा२प्रवृत्ति३स्थिरता४सिद्धियोग. एचारयोगमोक्षनेजोडे. माटेयोगकहियें॥३०॥

इछा तद्वत्कथाप्रीतियुक्ता विपरिणामिनी ॥ प्रवृत्तिः पालनं सम्यक् सर्वत्रोपशमन्वितं ॥ ३१ ॥ सत्क्षयोपशमोत्कर्षादतिचारादिचिंतया ॥ रहितं तु स्थिरं सिध्धिः परेषामर्थसाधकं॥३२॥

अर्थ ॥ जेगुरुनोउपदेशसांजली गुरुउपर अनेकथाउपर परमप्रीतिधरे; गुणपरिणमे तेनेपहेलो इछायोगकहियें. पछीगुरुनाकह्या प्रमाणेसमतायें सहितव्रतपाले, क्रियायें सहितप्रवर्त्ते, तेबीजोप्रवृत्तियोगकहियें ॥ ३१ ॥ जेरुडाक्षयोपशमना उत्कर्षथी अतिचारनलगाडे अने मनस्थिरपणेप्रवर्त्ते एत्रीजोस्थिरयोगकह्यो, अनेनिरतिचारशुद्ध क्रियामांबीजा प्राणीनेजेलवीने तेनोपणअर्थसधावे, तेचोथो सिद्धियोग जाणवो ॥ ३२ ॥

जेदा इमे विचित्राः स्युः क्षयोपशमजेदतः ॥ श्रध्धाप्रीत्यादियोगेन जव्यानां मार्गगामिनां ॥३३॥ अनुकंपा च निर्वेदः संवेगः प्रशमस्तथा ॥ एतेषामनुजावाः स्युरिछादीनां यथाक्रमं ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ एइछादिकयोगनावली विचित्रजेदछे, ते क्षयोपशमजावना जेदथीछे. ते श्रद्धाप्रीतिप्रमुखयोगेंकरीने मुक्तिमार्गपामनार जव्यजीवने होय ॥ ३३ ॥ १ करुणा २ वैराग्य ३ संवेग ४ उपशम एअनुक्रमे इछादिकनाचारप्रकारछे ॥ ३४ ॥

कायोत्सर्गादिसूत्राणां श्रध्धामेधादिजावतः ॥ इछादियोगसाफल्यं देशसर्वव्रतस्पृशां ॥३५॥ गुमखंमादिमाधुर्यजेदवत् पुरुषांतरे॥जेदेपीछादिजावानां दोषो नार्थान्वयादिह ॥३६॥

अर्थ ॥ कायोत्सर्गादिक आवश्यकसूत्रनुं भणवापणुंजोजावथीथाय, तोश्रावक त थासाधुने इच्छादिकयोग सफलथाय ॥ ३५ ॥ कोइनेगोलमीठोलागेछेअने कोइनेखांडमीठीलागेछे. एरीतेंमीठाशनास्वादमां जेमभिन्नताछे. तेमजपुरुषोनी प्रकृतिभिन्नभिन्न माटे इच्छादिकयोगनाजेभाव तेनापणभेदछे; तोपणतेमांकांइ दूषणनथी, केमके जे मशर्करादिकनीमीठाश जुदीजुदीछे, तोपण मिठाशनो अर्थएकजछे. मिठाशगमे तेनी होय, पण तेथी मिठाशनो अर्थ सरेछे. तेमज इच्छादिकयोगना भेदछे, तोपण तेथकी अर्थ जेफल तेएकजमलेछे; माटेदूषणनथी एम जाणवुं ॥ ३६ ॥

येषां नेच्छादिलेशोपि तेषां त्वेतत्समर्प्पणे॥स्फुटो महामृषावाद इ त्याचार्याःप्रचक्षते॥३७॥ उन्मार्गोत्थापनं बाढमसमंजसकारणे॥ भावनित्यमिदं तत्त्वं जाननैर्योगविंशिकां॥३८॥ त्रिधा तत्सदनुष्ठा नमादेयं शुद्धचेतसा॥ज्ञात्वा समयसद्भावं लोकसंज्ञां विहाय च ॥३९॥

अर्थ॥पणजेने शुद्धअनुष्ठानने विषे इच्छादियोगनो लेशपण नथी, तेवाअयोग्यनरने जेइच्छादियोगआपे, तेनेप्रगटमृषावादनुं पापलागेछे, एवुंपूर्वाचार्यकहेछे ॥ ३७ ॥ जेअ तिअसमंजस कारणछे, तेनेविषे उन्मार्गस्थापनथायछे; माटेयोगविंशिका ग्रंथना जाण पुरुषे एतत्त्वचिंतवीने सद्अनुष्ठानकरवुं. एटलेजेमतेमकरियेंतो उन्मार्गनुं स्थापनथइ जाय॥३८॥माटेशुद्धचेतनायें, मनवचनकायायेंकरीने, सदनुष्ठान सेववां; सिद्धांतना स द्भावजाणी लोकसंज्ञा तजीने शुद्धक्रियाकरवी ॥ ३९ ॥ इतिसदनुष्ठानाधिकारदशमः ॥

उचितमाचरणं शुभमिच्छतां प्रथमतो मनसः खलु शोधनं ॥ गदवतां ह्यकृते मलशोधने कमुपयोगमुपैतु रसायनं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मनी शुद्धिकरवामाटे प्रथमथीतो उचितपणे शुभआचरणनीइ छाकरवी ने मननी शुद्धताकरवी. जेमरोगवंतप्राणी मलशोधनकरवाने रेचलीधाविना रसायनखायतो, तेथीतेनेकांइगुणथायनही. केमकेमलजाय, तेवारपछिरसायणखाय, तोगुणकरे; तेमप्रथममनशुद्धिथइहोय, तोजअध्यात्मनी शुद्धिथाय ॥ १ ॥

परजने प्रसन्नं किमु रज्यते द्विषति वा स्वमनो यदि निर्मलं ॥ विरहिणामरतेर्जगतोरतेरपि च का विकृतिर्विमले विधौ ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हे!चेतन!जो तारुंमन निर्मलछे, तो लोकताहराउपर रागधरशे अथवा द्वेष

करशे, तेथकीताहरे शुंबगाडथवानोछे ? जेमचंद्रमानिर्मलछे, पणतेनाउदयथी विरही जीवो अथवाचोरलोकोने अरतिउपजेछे; अनेजगत्नाबीजाजीवोने तेथीआनंदथाय छे; पणतेथीचंद्रमाने गुणअथवा अवगुणकांईजथतांनथी ॥ २ ॥

रुचितमाकलयन्ननुपस्थितं स्वमनसैव हि शोचति मानवः ॥
उपनते स्मयमानमुखः पुनर्भवति तत्र परस्य किमुच्यतां ॥३॥

अर्थ ॥ रुडीवस्तुमनमांचिंतवी मनोरथकीधो, अनेतेमनोरथ निपनोनही, तेवारें तेप्राणीपोतानामनमां शोक धरेछे, अनेजेवारें तेधारेलीवस्तुमलेछे, तेवारें खुशीथायछे; एहर्षशोकनोकर्त्ता आत्माने एकमनजछे; तो बीजायेंमहारुंसारुंनरसुंकर्युं, एमशुंकहेवुं?३

चरणयोगघटान्प्रविलोठयन् शमरसं सकलं विकिरत्यधः ॥
चपल एष मनः कपिरुच्चकै रसवणिग् विदधातु मुनिस्तु किं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ मन मांकडाजेवुंछे. केमकेतेचारित्रना योगरूपघृतनाघडाने ऊंधावालेछे. तथासमतारूपीअमृतरसनाघडाने ढोलीनाखेछे; एवुंएचपल मनते खरेखरुंवांदरुंछे. तेनी आगल मुनिरूप रसवाणीउपनो करनार वाणीयोबिचारोशुंकरे ? ॥ ४ ॥

सततकुट्टितसंयमभूतलोत्थितरजोनिकरैः प्रथयंस्तमः ॥
अतिदृढश्च मनस्तुरगोगुणैरपि नियंत्रित एष नतिष्ठति ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीमुनियेंचारित्रेंकरी कर्मरूपीधूलने दाबीनाखीहती, पणमनरूपीघोडा यें नित्यकुदीकुदीने संयमरूपभूमीनुंतलियुं उखेड्युं, तेथीकलुषतारूप रजउडीते हनासमूहेंकरी अज्ञानरूपअंधकारथयो; एवोअतिआकरो एमनरूपघोडोछे, तेश्रुतरूपीदोरडेबंधायोछतो तोफानकरेछे, पणसमोरहेतोनथी ॥ ५ ॥

जिनवचोघनसारमलिम्लुचः कुसुमसायकपावकदीपकः ॥
अहह कोपि मनःपवनो बली शुभमतिद्रुमसंततिभंगकृत् ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एककौतुकजुवोके मनरूपीवायुमहाबलवानछे. केमके रुडीबुद्धिरूपवृक्षने भांगीनाखेछे तथा जिनवचनरूप बरासनोचोरछे; वली कंदर्परूपअग्निनोदीपावनारछे॥६॥

चरणगोपुरभंगपरः स्फुरत्समयबोधतरूनपि पातयन् ॥ भ्रमति यद्यतिमत्तमनोगजः क कुशलं शिवराजपथे तदा ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीमनरूपहाथीछे, तेचारित्ररूपनगरना दरवाजाभांगतोथको प्रसरेछे. सि-

भ्रांतनाबोधरूपीवृक्षनेपण पाकतोथकोजमेछे. एवोमदोन्मत्त मनरूपीहाथी दोडादोड करेछे; तेवारेंसाधुने मोक्षमार्गेंजतां कुशलतातेक्यांथीहोय? ॥ ७ ॥

व्रततरून्प्रगुणीकुरुते जनो दहति डुष्टमनोदहनः पुनः ॥
ननु परिश्रम एष विशेषवान् क्व जविता सुगुणे पवनोदये ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेसाधुछे तेव्रतरूपीवृक्षें फलीवाकीने चेतनज्ञानअमृतरसवडे सींचीनेनवपल्लवकरेछे; पणडुष्ट मनरूपजेअग्नितेवली वाकीनेबालीनांखेछे; तोरुमागुणरूपवाकीमां गुणरूपवायरानेउदयें मुनिनीमेहनततेकेमकरीने सफलथाय? ॥ ८ ॥

अनिगृहीतमना विदधत्परां न वपुषा वचसा च शुजक्रियां ॥
गुणमुपैति विराधनयाऽनया बत डुरंतजवभ्रममंचति ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एकमननो निग्रहकस्याविना वचनेतथाकायायें जेटलीशुजक्रियाकरे तेउपयोगशून्यतायें अविधियेंकरे, अनेतेअविधिनोकरनारो तोअवश्यसूत्रनेविषेछकायनोविराधककह्योछे; माटेतेगुणनकरे. जेमनशून्य मने क्रियाकरनारो तेविराधकछे, माटेशुन्यक्रियाकरतो विराधकपणे संसारनेविषेघणा जवजमशे ॥ ९ ॥

अनिगृहीतमनाः कुविकल्पतो नरकमृच्छति तंडुलमत्स्यवत् ॥
इयमजक्षणजा नहि जीर्णताऽनुपनतार्थविकल्पकदर्थना ॥ १० ॥

अर्थ ॥ मनवशकिधाविनाजे तपजपकरे, वलिमनमां कुविकल्पघणाथाय तेथीतेतंडुलमछनीपरें नरकेंपके. एकुविकल्पकरतोथको जो उपवासकरे, तपकरे, तेथीतेनेमात्रअजीर्णथाय; केमकेअणपाम्याअर्थनो विकल्पकरे, तेनीकदर्थनाअजीर्णनुंकारणछे. ॥ १० ॥

मनसि लोलतरे विपरीततां वचननेत्रकरेंगितगोपना ॥
व्रजति धूर्त्ततया ह्यनयाखिलं निबिरुदंजपरैर्मुषितं जगत् ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जोमनचपलछे तो, वचनगुप्तिकरेतथानेत्रनेगोपवे इंगितआकारचेष्टाविनाकाउसग्गकरे, तेसर्वेविपरीतजाणवुं. तेसर्वेधुर्त्तपणानेपामे अनेएवीरीतेंधुर्त्तपणे कपटक्रियानाकरनारा तेमोटाचोरछे, तेजगत्नेलुटनाराछे ॥ ११ ॥

मनसएव ततः परिशोधनं नियमतोविदधीत महामतिः ॥
इदमजेषजसंवननं मुनेः परपुमर्थरतस्य शिवश्रियः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेमननेजलिरीतें निश्चयथकी शोधनकरे, तेजपंक्तितनेमनोशुद्धिरूपचूर्णछे; अनेपरमपुरुषार्थनेविषे राताजेमुनि तेनेमुक्तिस्त्रीने वशकरवानुं औषधछे ॥ १२ ॥

प्रवचनाब्जविलासरविप्रभा प्रशमनीरतरंगतरंगिणी ॥
हृदयशुद्धिरुदीर्णमदज्वरप्रसरनाशविधौ परमौषधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकमलने विकसितकरवाने मनशुद्धिते सूर्यकांतिरूपछे; उपशमरूप जलकल्लोलवधारवाने मनशुद्धितेनदीरूपछे; वलीप्रसरतोथको एहवो मदरूपजेताप तेनेटालवाने मनशुद्धितेपरमसुंदर जडीबुटीनुं औषधछे ॥ १३ ॥

अनुभवामृतकुंभमनुत्तरव्रतमरालविलासपयोजिनी ॥
सकलकर्मकलंकविनाशिनी मनस एव हि शुद्धिरुदाहृता ॥१४॥

अर्थ ॥ वलीमनशुद्धि अनुभवनो मोटोअमृतकुंडछे; तथाचारित्ररूपहंसने रमवाने कमलिनीछे, अनेसर्वकर्मकलंक हरवाने अग्निसमान मनशुद्धिनेकहीछे ॥ १४ ॥

प्रथमतो व्यवहारनयस्थितोऽशुभविकल्पनिवृत्तिपरो भवेत् ॥
शुभविकल्पमयव्रतसेवया हरति कंटक एव हि कंटकं ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ प्रथमथी व्यवहारनयेरह्यो एहवोजेपुरुषते अशुभविकल्पनी निवृत्ति जेनाशकरवुं तेनेविषे तत्परथइने शुभविकल्पमयजेव्रत तेनीसेवाकरे, तेथीअशुभपणुंटलीजाय. जेमकांटावडे कांटोनीकलीजायछे तेनीपरें ॥ १५ ॥

विषमधीत्य पदानि शनैः शनैर्हरति मंत्रपदावधि मांत्रिकः ॥
भवति देशनिवृत्तिरपि स्फुटा गुणकरी प्रथमं मनसस्तथा ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेममंत्रवादीपुरुष मंत्रपदसमाप्तिसुधी मंत्रनाशब्द धीमेधीमे मनमां भणे, पण सर्पनाविषनेटाले; तेमजेदेशथी निवृत्तिकरेतेपणप्रगटपणेप्रथम मननेगुणकारीथाय॥१६॥

स्फुटमसद्विषयव्यवसायतो लगति यत्र मनोऽधिकसौष्ठवात् ॥
प्रतिकृतिः पदमात्मवदेव वा तदवलंबनमत्र शुभं मतं ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जेदेखतांज नबलोअनेभुंडो एहवोजेविषय तेनाव्यापारथी जेनरनुंचित्तघणी चतुराइथी जेवस्तुनेविषेलागे तेवस्तुआत्मानेसाथें जोडीये तेवारें तेनुंप्रतिबिंबभासे, पणते आत्मधर्मनहीं; तोपणअध्यात्मरीतें तेनुंजअवलंबन रुडुकह्युंछे ॥ १७ ॥

तदनु काचन निश्चयकल्पना विगलितव्यवहारपदावधिः ॥
न किमपीति विवेचनसंमुखी भवति सर्वनिवृत्तिसमाधये ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ पढीकांइक निश्चयकल्पनाथइ, अने व्यवहारपदनीमर्यादागलितथइ. "एगोहं-नथिमेकोई", एवीवेचणचेतनासन्मुखथइ, तेवारें सर्वनिर्वृत्तिरूपसमाधिथाय ॥ १७ ॥

इह हि सर्वबहिर्विषयच्युतं हृदयमात्मनि केवलमागतं ॥

चरणदर्शनबोधपरंपरा परिचितं प्रसरत्यविकल्पकं ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेवारें सर्व बाह्यविषयथीहृदयखस्युं, तेवारेंपोताना आत्मानेविषे केवलए-कज ज्ञान, दर्शन, चारित्रनाबोधनी परंपराजे आत्मकुटुंबछे, तेनोमिलापते निर्विक-ल्पपणें प्रसरे, उलखाणथाय एमजाणवुं ॥ १९ ॥

तदिदमन्यडुपैत्यधुनापि नो नियतवस्तुविलास्यपि निश्चयात् ॥

क्षणमसंगमुदेति निसर्गधी र्हतबहिर्ग्रहमंत रुदात्तता ॥ २० ॥

अर्थ ॥ निश्चयनयथकी एआत्माते खरीशुद्धवस्तुनो विलासीछे, तेमाटे हमणा अ-न्यजे रागद्वेषादिज्ञाव तेनेनपामे; वलीक्षणमांपण जेपरपुद्गलादिकनोसंगनकरे, एवी स्वाज्ञाविकबुद्धि जेनेथइ तेथीबाह्यज्ञाव हण्यो, अनेअंतरंग उत्कृष्टज्ञावने पाम्यो ॥२०॥

कृतकषायजयः सगज्ञीरिमा प्रकृतिशांतमुदात्तमुदारधीः ॥

समनुगृह्य मनोनुज्ञवत्यहो गलितमोहतमः परमं महः ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एहवोजेगंज्ञीर स्वज्ञाववालो, जेणेकषायनो जयमेलव्योछे, अनेजेनीबुद्धिमो टीछे, अनेस्वज्ञावें शांतछे, तेजोसम्यक्प्रकारें मननोनिग्रहकरे, तोतेथीमोहांधकारने-गालीने परम महातेजस्वीपणानो तेप्राणीजरूर अनुज्ञव पामे ॥ २१ ॥

गलितडुष्टविकल्पपरंपरं धृतविशुद्धिमनो ज्ञवतीहशं ॥ धृतिमु-

पेत्य ततश्च महामतिः समधिगछति शुभ्रयशःश्रियं ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेणे मागाविकल्पनी श्रेणिटालीछे अनेजेणेविशुद्धतानुं ग्रहणकीधुंछे, तेम-नोशुद्धिनेपामे, अनेतेवली संतोषीपणानेपामिने तेपंक्तिपुरुष उज्वलयशरूपलक्ष्मी अथवा यशशोज्ञानेपामे ॥ २२ ॥ इतिमनःशुद्धिनामा एकादशोधिकारः समाप्तः ॥

इतिश्रीपंक्ति यशोविजयेन विरचितेऽध्यात्मसारप्रकरणे

तृतीयःप्रबंधः ॥ २३ आठमाना २९ नवमाना ३९

दसमाना २२इग्यारमाना सर्वश्लोक ११३.

मनशुद्धिश्च सम्यक्त्वे सत्येव परमार्थतः ॥ तद्विना मोहगर्ज्ञा सा-
प्रत्यपायानुबंधिनी ॥ १ ॥ सम्यक्त्वसहिता एव शुद्धा दानादि-
काः क्रियाः ॥ तासां मोक्षफले प्रोक्ता यदस्य सहकारिता ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एपूर्वेंमनशुद्धिकही, तेजोसम्यकत्वगुणहोयतो, निश्चें मनशुद्धि केहेवाय.पण-सम्यकत्वविनाजे मनशुद्धिमाने, तेमोहगर्जितहोय; एटलेअज्ञान सहितहोय. तेतोउल-टीकष्टबंधन करनारीछे. माटेहवेसम्यकत्वनो अधिकारकहेछे॥ १ ॥ दानादिकक्रियाप-ण सम्यकत्वसहितहोय, तोजशुद्धछे; तेक्रिया मोक्षफललेवाने सहायकारकछे ॥ २ ॥

कुर्वाणोपि क्रियां ज्ञातिधनज्ञोगांस्त्यजन्नपि ॥ दुःखस्पोरोददा
नोपि नांधोजयति वैरिणं ॥ ३ ॥ कुर्वन्निर्वृत्तिमप्येवं कामज्ञोगां
स्त्यजन्नपि ॥ दुःखस्पोरोददानोपि मिथ्यादृष्टिर्न सिध्यति ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमआंधलो वैरीनेजीतीशकतोनथी, तेमक्रियाकरेछे, न्यातिधननो ज्ञोग तजेछे, दुःखसहेछे, कायानेकष्टआपेछे, पणएसर्व सम्यकत्वविना व्यर्थजायछे ॥ ३ ॥ जोसंतोषधरे,कामज्ञोगछोडे,कायानेकष्ट आपे,तो पणमिथ्यात्वीथको मुक्तिनेपामेनही॥४॥

कनीनिकेव नेत्रस्य कुसुमस्येव सौरज्ञं ॥ सम्यक्त्वमुच्यते सारः
सर्वेषां धर्म्मकर्म्मणां ॥५॥ तत्त्वश्रद्धानमेतच्च गदितं जिनशास
ने ॥ सर्वे जीवा न हंतव्याः सूत्रे तत्त्वमितीष्यते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमआंखमां कीकीसारज्ञूतछे, फूलमांसुगंध सारज्ञूतछे, तेमसर्वधर्मक्रिया मां सम्यक्त्वते सारज्ञूतकह्युंछे ॥ ५ ॥ जिनशासननेविषे जेतत्त्वनीश्रद्धाकरवीतेहने सम्यक्त्वकह्युंछे; अनेकोइपणजीवने हणवोनही तेनेसूत्रमां तत्त्वकह्युंछे ॥ ६ ॥

शुद्धोधर्मोयमित्येत द्धर्म्मरुच्यात्मकं स्थितं ॥ शुद्धानामिदमन्या
सां रुचीनामुपलक्षणं ॥ ७ ॥ अथवेदं यथातत्त्व माज्ञैव तथा
ऽखिलं ॥ नवानामपि तत्त्वाना मितिश्रद्धोदितार्थतः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेशुद्धधर्मते एधर्मरुचिनामा सम्यक्त्वनेज कहियें; अनेएमध्ये उपलक्ष णथी बीजीपणशुद्धपदार्थनीरुचिउप्रगटेछे ॥ ७ ॥ अथवाएसम्यक्त्वते जेमप्रज्ञुआज्ञा रूप तत्त्वेप्रगटेछे, तेतत्त्वतोजीवादिकनवप्रकारेंछे; तेनीजेश्रद्धा तेसम्यक्त्वजाणवुं ॥ ८ ॥

इहैव प्रोच्यते शुद्धा ऽहिंसा वा तत्त्वमित्यतः॥ सम्यक्त्वं दर्शितं
सूत्रप्रामाण्योपगमात्मकं ॥९॥ शुद्धाऽहिंसोक्तितत्सूत्र प्रामाण्यं
ततएव च॥ अहिंसा शुद्धधीरेव मन्योन्याश्रयजीर्न तु॥ १०॥

अर्थ॥ वलीइहां तत्त्वते अहिंसारूप शुद्धतत्त्वछे. तेतत्त्वशुद्धाचारप्रमाणे विचारि-
यें, तेवारें आत्माने अभिन्नस्वरूपें सम्यक्त्वदेखाडयुंछे ॥९॥ अने शुद्धिअहिंसाकही
ते सूत्रेंप्रमाणछे; एबेहुनीमात्रवचनेजजुदाइछे. तेमाटेएकअहिंसा तथाबीजीतत्त्वशुद्धि
एबेहुने माहोमाहें मेलवतां दूषणनथी; एकस्वरूपेंछे॥ १०॥

नैव यस्माददहिंसायां सर्वेषामेकवाक्यता॥ तच्छुद्धतावबोधश्च
संभवादिविचारणात्॥ ११॥ यथा ऽहिंसादयः पंच व्रत धर्म
यमादिभिः॥ पदैः कुशलधर्माद्यैः कथ्यंते स्वस्वदर्शने॥ १२॥

अर्थ॥ केमके अहिंसानेविषे सर्वेनी एकवाक्यतानथी, तोपणविचारीजोतां शुद्ध
अवबोध जणायछे॥ ११॥ जेमअहिंसादिक पांचव्रततेधर्मछे, तेमसर्वेपोतपोताना दर्श
ननेविषे कुशलथकाधर्मआदेदेइ यमादिकपदेंकरीने व्रतकहेछे॥ १२॥

प्राहुर्भावव्रतास्तत्र व्रतोपव्रतपंचकान्॥ यमांश्च नियमान् पाशु
पतान् धर्मान् दशाभ्यधुः॥१३॥ अहिंसा सत्यवचन मस्तैन्यं वा
प्यकल्पना॥ ब्रह्मचर्यं तथाक्रोधो ह्यार्जवं शौचमेव च ॥ १४॥

अर्थ॥ तेमांभावव्रतवाला एमबोलेछे, के पांचव्रतअने पांचउपव्रत मलीनेदशछे.
एमपाशुपतमतवाला दशप्रकारें धर्मदिशा मानेछे. तेयमनियमादिक दश कही बता-
वेछे॥ १३॥ दया, सत्यवचन, अचोरी, अकल्पना, अनेब्रह्मचर्य एपांच यम तथा
अक्रोध, सरलता, शौच, संतोष, गुरुसेवा, एपांचनियमजाणवा॥ १४॥

संतोषो गुरुशुश्रूषा इत्येते दश कीर्तिताः ॥ निगद्यंते यमा सांख्यै
रपिव्यासानुसारिभिः ॥ १५ ॥ अहिंसा सत्यमस्तैन्यं ब्रह्मच
र्यं तुरीयकं॥ पंचमो व्यवहारश्चेत्येते पंच यमाः स्मृताः ॥ १६॥

अर्थ॥ संतोष,गुरुसेवादि एदशधर्मदशाकहेवाय. हवेवेदव्यासना मतानुसारी सांख्यमत
वालापणयम नियमएमकहेछे १५ दया,सत्य,अचोरी,ब्रह्मचर्य व्यवहार एपांच यमजाणवा

अक्रोधो गुरुशुश्रूषा शौचमाहारलाघवं॥ अप्रमाद श्च पंचेति
नियमाः परिकीर्तिताः॥ १७॥ बौद्धैःकुशलधर्माश्च दशेष्यंते य
दुच्यते ॥ हिंसास्तेयान्यथाकामं पैशुन्यं परुषानृतं॥ १८॥

अर्थ ॥ अक्रोध, गुरुसेवा, शौच, अल्पआहार, अप्रमाद, एपांचनियमकह्याछे ॥ १७ ॥ अनेबौद्धदर्शनमांजेकुशलछे, तेधर्मवाला पणदशप्रकारेंकहेछे, तेमकहियेंछेयें; हिंसा, चोरी, कंदर्प, चाडी, कठोरवचन अने जुठुंबोलवुं ॥ १८ ॥

संभिन्नालापव्यापाद मभिध्यादृगविपर्ययं ॥ पापकर्मेति दश
धा कायवाङ्मनसै स्त्यजेत् ॥ १९ ॥ ब्रह्मादिपदवाक्यानि ता
न्याहुर्वैदिकादयः॥अतःसर्वैकवाक्यत्वा द्धर्मशास्त्रमदोर्थकं॥२०॥

अर्थ ॥ जेमतेमबकवुं, मारवुं, अब्रह्मसेववुं, दृष्टिविपर्यास, एदशप्रकारें पापकर्मते मन, वचन अने काया एत्रणेयोगेंकरीत्यजवा ॥ १९ ॥ अने वैदिकादिकमतवाला पण ब्रह्मादिपद बोलेछे, जेसर्वत्रब्रह्मपदछे, एथीएसर्वेधर्मवालानां एकवचनछे. माटे सार्थकपणे सर्वनेधर्मशास्त्रकहियें ॥ २० ॥

क्वचैतत्संभवोयुक्त इति चिंत्यं महात्मना॥शास्त्रं परीक्षमाणेना
व्याकुलेनांतरात्मना ॥ २१ ॥ प्रमाणलक्षणादेस्तु नोपयोगो
त्र कश्चन॥तन्निश्चये ऽनवस्थाना दन्यथार्थस्थिते र्यतः ॥२२॥

अर्थ ॥ तेमाटेएसर्वेदर्शननोसंभवकिहां ठेकाणेछे, एममोटा पुरुषेंचिंतववुं, तेशास्त्रनी परीक्षावालायें विचारवुं, तेवलीअव्याकुलपणे अंतरात्मावडे विचारवुं ॥ २१ ॥ इहांप्रमाणलक्षणादिकथकी कशोएउपयोग कार्यकारीनथी, जिहांअन्यथा अर्थउपजे एटलेतेधर्म जुदोथइजाय अनेधर्मतो एकस्वभावरूपछे. ॥ २२ ॥

प्रसिद्धानि प्रमाणानि व्यवहारश्च तत्कृतः ॥ प्रमाणलक्षणस्यो
क्तौ ज्ञायते न प्रयोजनं ॥२३॥ तत्रात्मा नित्यएवेति येषामेकांत
दर्शनं ॥ हिंसादयः कथं तेषां कथमप्यात्मनोव्ययात् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ अनेचारप्रमाणतो प्रसिद्धछे; व्यवहारपणतेजकह्योछे; माटेप्रमाण तथा लक्षणनीयुक्तिविषे प्रयोजनजणातुंनथी ॥ २३ ॥ तेमध्येबेनयेंकरी आत्मानित्यजछे; एवुंएकांतमतवालानुं कहेवुंछे; तेनेमतेतोहिंसादिकनथी. केमके आत्माअविनाशीछे, तेकोइवारेंमरेनही, अनेमरेनही, तेवारेंहिंसापणशानी ? ॥ २४ ॥

मनोयोगविशेषस्य ध्वंसोमरणमात्मनः ॥ हिंसा तच्चेन्न तत्वस्य
सिद्धेरार्थसमाजतः ॥ २५ ॥ नैति बुद्धिगता दुःखोत्पादरूपेयमौ
चिती ॥ पुंसि भेदाग्रहात्तस्याः परमार्थोऽव्यवस्थितः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ सघलेमरणे मनोयागनाशपामेछे, तेवारेंलोककहेछेके जीवमुवो; पण आत्मातो मरतोनथी; माटेतत्त्वथकी आत्मानीहिंसानथी, एअर्थघटमानछे. एमकहेछे. ॥ २५ ॥ कोइजाणशेजे आगल डुःखउपजाववानीजेबुद्धितेहनेहिंसाकहियें; पणएवात योग्यनथी, केमकेतमे बुद्धिनेतो पुरुषन्नेदआग्रहथकी आत्माथीन्निन्नमानोछो, तेथीपण आत्मानी हिंसानथइ. केमकेपरमार्थें बुद्धिने आत्मासाथें व्यवस्थानथी ॥ २६ ॥

न च हिंसापदं नाशपर्यायं कथमप्यहो ॥ जीवस्यैकांतनित्यत्वे नुन्नवाबाधकं न्नवेत् ॥ २७ ॥ शरीरेणापि संबंधो न तद्योगावि वेचनात् ॥ विन्नुत्वेनैव संसारः कल्पितः स्यादसंशयं ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एकांतेनित्यपणे जीवनोनाशथवानोजे पर्याय तेहिंसापदकहेवाय; तेहने अहोइति आश्चर्य ! अनुन्नवअबाधकपणेनहोयशुं? होयज. इतिकाकोक्ति ॥ २७ ॥ नित्यपणे शरीरेकरीने पण संबंधनथी; केमके तेनायोगनी वेहेंचणनथी, माटेसंशयरहितपणें ईश्वरवरेकरीनेज ईश्वरकर्त्ता इत्यादिकसंसारकल्प्योछे ॥ २८ ॥

आत्मक्रियां विना च स्या न्मितानुग्रहणं कथं॥कथं संयोगन्नेदा दि कल्पनाचापि युज्यते ॥२ए॥ अदृष्टादेहसंयोगः स्यादन्यत रकर्म्मजः ॥ इत्थं जन्मोपपत्तिश्चे न्न तद्योगविवेचनात् ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ एकआत्मक्रियाविना एटले आत्माना व्यापारविना परिमितपरमाणुनुंग्रहण केमथाय ? वली संयोगवियोगादिकनी कल्पनापणकेमघटे ? ॥२ए॥ एमसांन्नलीने कोइबोल्योके हरकोइकर्मथी पूर्वसंस्कारदिगविना शरीरनोसंयोगथायछे; तेनोउत्तरआपेछे.एमजन्मनी उत्पत्तिते जीवनाव्यापारविना,वेचणविनाथायनही, इतिन्नावार्थः॥३०॥

कथंचिन्मूर्त्ततापैति विना वपुरसंक्रमात् ॥ व्यापारयोगतश्चैव यत्किंचित्तदिदं जगुः ॥३१॥ निःक्रियोऽसौ ततोहंति हन्यते वा न जातुचित् ॥ किंचित्केनचिदित्येवं न हिंसास्योपेपद्यत ॥३२॥

अर्थ ॥ शरीरनेसंयोगेतो जीव कांइकरूपीपणुंपामेछे. जोशरीरनो संक्रमनहोयतो जेकांइछे तेइहांकहेछे ॥ ३१ ॥ जेणेआत्मात्यागीकीधोछे, तेएमकहेछेके आत्माक्रिया रहितछे; माटेकोइनेहणतोनथी; तेमकोइकालें कोइथीहणातोपणनथी; एवुंजेनाचित्त मांछे तेहिंसानहीमाने ॥ ३२ ॥

अनित्यैकांतपक्षेपि हिंसादीनामसंजवः ॥ नाशहेतोरयोगेन क्षणिकत्वस्य साधनात् ॥ ३३ ॥ न च संतानजेदस्य जनकोहिं सकोजवेत् ॥ सांवृतत्वादजन्यत्वात् जावत्वनियतं हि तत्॥३४॥

अर्थ ॥ एमएकांते अनित्यवादिनेपक्षे हिंसानथीमनाती केमके, तेसर्वपदार्थ क्षणरूपमानेळे. माटेआत्माक्षणमां नाशरूपछे, तेपोतानीमेळेजमरेछे, तेवारें मारनार हेतुकोइनथी. माटेहिंसानथीज ॥ ३३ ॥ पुत्रपुत्रीप्रमुखनो कोइबापनथी, तेमकोइ मारनारपणनथी; एजगत्सर्वक्षणिकजावनोनियमछे; अनित्यछे; माटेकोइ प्रगटकरनार नथी. तेवारेंपिताकोनो अनेपुत्रकोनो ? ॥ ३४ ॥

नरादिःक्षणहेतुश्च सूकरादेर्न हिंसकः ॥ सूकरांत्यक्षणेनैव व्यजिचारप्रसंगतः ॥ ३५ ॥ अनंतरक्षणोत्पादे बुधलुब्धकयोस्तुला ॥ नैव तद्विरति क्वापि ततः शास्त्राद्यसंगतिः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ मनुष्यक्षणमात्रछे अनेपछेसुअरनामरणने अंतकालनाक्षणमां तेमनुष्यनथी, माटेसूअरने मारनारकोणछे, एहवाबोलनारनेपणप्रसंगथी व्यजिचारआवेछे ॥ ३५ ॥ तथासूअरनेमार्खुं अनेमरणनेबीजेसमयें ज्ञानीतथाआहेमी एबेसरिखाछे. सूअरमरणपाम्युं, तेएबेजणेजाएयुं; माटेहवे एबेमांथीकोइने मारवानीमतिनथी. तेमाटे मारनारतथामरनार सर्वनांक्षणेक्षणे उत्पत्ति तथा मरणछे, पण कोइक्षणे कांइविरतिनथी, एमकहेछे, एमतवालानां शास्त्रपणजुठांछे ॥ ३६ ॥

घटते न विनाऽहिंसां सत्यादीन्यपि तत्त्वतः ॥ एतस्यावृत्तिजूतानि तानि य जगवान् जगौ ॥ ३७ ॥ मौनींद्रे च प्रवचने युज्यते सर्वमेव हि ॥ नित्यानित्ये स्फुटं देहा झिन्नाजिन्ने तथात्मनि ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ केमकेअहिंसाविना सत्यादिकधर्मपण घटेनहीं; अनेसत्यादिक धर्मजेछे, ते जीवदयारूपक्षेत्रनी वाफीछे, एवुंकेवलीकहेछे ॥ ३७ ॥ जिनशासननेविषे तोएसर्वघट मानछे; शरीरथी प्रगटपणेनित्यछे, वलीअनित्यपणछे; तेमज जिन्नाजिन्नपणुंछे; तथा एकपणुंछे, अनेअनेकपणुंपणछे; वलीआत्मानेविषेपण तेमजकहेवुं ॥ ३८ ॥

आत्मा द्रव्यार्थतोनित्यः पर्यायार्थाद्विनश्वरः ॥ हिनस्ति हन्यते तत्तत्फलान्यप्यधिगछति ॥ ३९ ॥ इह चानुजवः साक्षी व्यावृत्त्यान्वयगोचरः ॥ एकांतपक्षपातिन्यो युक्तयस्तु मिथो हताः ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ आत्माद्रव्यार्थिकनयेंनित्यछे; अनेपर्यायार्थिकनयें अनित्यछे; एजीवकोइ नेहणेछे, अथवा कोइएजीवनेहणेछे, तेनांफलपरजवमां आत्माजोगवेछे ॥ ३ए ॥ ए जैननेशीलें अन्वय अनेव्यतिरेक एबेगुणेसहित एवोजेअनुजव तेसाक्षीकरतांथका, एकांतमतवालानी युक्तिओ माहोमांहे हणाइजायछे ॥ ४० ॥

पीमाकर्तृत्वतो देहव्यापत्या डुष्टजावतः ॥ त्रिधा हिंसागमे प्रो
क्ता न हीब्रमपहेतुका ॥ ४१ ॥ हंतुर्जाग्रति को दोषो हिंसनी-
यस्य कर्म्मणि ॥ प्रसक्तिस्तदजावे चान्यत्रापीति मुधा वचः ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ पीमाकरवाथी, देहपीमाथी, डुष्टजावथी, एवात्रणप्रकारनीहिंसा सिद्धांत मांकहीछे; तेकांइजुठीनथी ॥ ४१ ॥ जेप्राणीनुं स्वकृतकर्मनो उदयथयेथके मृत्युथयुं तोतेनाहणनारने शोदोषछे ? एटलेहिंसानथइ; अनेजेहणाणो तेनांकर्मउदयआव्यां, तेतेणेजोगव्यां, तो तेमांशीहिंसाछे? केमकेजेजीवने मरणनोउदयहालनथी, तेनेमारियें तोपण तेकांइमरतोनथी; माटेहिंसाकोइनीथतीनथी; एवुंजेमानेछे तेमिथ्याछे ॥ ४२ ॥

हिंस्यकर्म्मविपाकेस्य डुष्टाशयनिमित्तता ॥ हिंसकत्वं न तेने
दं वैद्यस्य स्याद्रिपोरिव ॥ ४३ ॥ इबं सडुपदेशादे स्तन्निवृत्ति
रपि स्फुटा ॥ सोपक्रमस्य पापस्य नाशात्स्वाशयवृद्धितः ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ केमकेजेप्राणीनामनमां डुष्टआशयनुंनिमित्तछे, तेनेएहिंसाछे. अनेहिंसाना- कर्मविपाकपण तेनेजछे; जोवैद्यनेऔषधकरतां डुष्टचित्तहोय,तोतेऔषधशत्रुसरखुं थाय, अनेतेवैद्यनेपणहिंसकपणुंलागे. अनेजोवैद्यनुंमननिर्मलछे, तोवैद्यनेहिंसकपणुंनलागे ॥ ४३ ॥ एवासड्गुरुना उपदेशसांजलवाथी हिंसानीनिवृत्तिप्रगटपणेथाय; निर्मलचि- त्तना आशयनीवृद्धियकी सोपक्रमीजे निकाचितबांधेलांपाप तेनोनाशथायछे. ॥ ४४ ॥

अपवर्गतरोर्बीजं मुख्याऽहिंसेयमुच्यते ॥ सत्यादीनि व्रताश्चयत्र
जयंते पल्लवा नवाः ॥४५॥ अहिंसासंजवश्चेबं दृश्यतेऽत्रैव शा
सने ॥ अनुबंधादिसंशुद्धिरप्यत्रैवास्ति वास्तवी ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ जेअहिंसाते मोक्षरूपवृक्षनुंबीजकहियें; अनेसत्यादिकजेव्रतछे तेमोक्षरू पवृक्षना नवपल्लवअंकुराछे. ॥४५॥ तेतोआजिनशासनमां जीवदयानो, अहिंसकपणा नो संजवजोवामांआवेछे; अनेवलीअनुबंधहिंसा तथा हेतुहिंसा अनेस्वरूपहिंसा एत्र णजातनीजे हिंसातेनीशुद्धि तेपणआजिनशासनमांज वसीरहीछे ॥ ४६ ॥

हिंसा या ज्ञानयोगेन सम्यग्दृष्टेर्महात्मनः ॥ तप्तलोहपदन्यास
तुल्याया नानुबंधनं ॥४७॥ सताम्यस्याश्च कस्याश्चिद् यतना भ
क्तिशालिनां ॥ अनुबंधो ह्यहिंसाया जिनपूजादिकर्म्मणि ॥४८॥

अर्थ ॥ मोटाप्राणीजे सम्यग्दृष्टि ते ज्ञानयोगेंकरीवर्तेछे, तेनेपणअविरतिथी हिंसा लागेछे; तेकेवीछे ? जेमतपाव्युंएवुंजेलोहुं तेउपरपगमुकीकोइचाले, पणबलवानेजयें निःशंकपणें पगठरावेनहीं, तेमसमकीतिपण निशंकपणेहिंसानकरे, अनेतेमाटेज नरकनोबंधपणकरे नही ॥ ४७ ॥ तेमरुडाजयणावंत जीवनेज्ञानयोगेंकरी जिनपूजाकरता अहिंसाजेदया तेनोअनुबंधछे; केमकेएपूजातेपरंपरायें मुक्तिफलनी आपनारीछे. ॥४८॥

हिंसानुबंधिनी हिंसा मिथ्यादृष्टेस्तु दुर्मतेः ॥ अज्ञानशक्तियोगे
न तस्याहिंसापि सादृशी ॥ ४९ ॥ येन स्यान्निन्ह्वादीनां दिवि
षद्दुर्गतिः क्रमात् ॥ हिंसैव महती तिर्यङ् नरकादिभवांतरे ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ पणनरकगतिनोबंधपडे, एवीजेहिंसाते मिथ्यात्वीदुर्मतिनेहोय. अज्ञानने योगेकरी तेमिथ्यात्वीजो जीवदयापाले तोतेपण हिंसाजेवीजजाणवी ॥ ४९ ॥ जे कारणमाटे निन्ह्वादिक जम्मालीप्रमुखेपण जीवदयापालीछे; तोपणअज्ञानोदयनायोगें स्वर्गमांपण दुर्गतिपाम्याछे; अनेढेरुरूपछे; माटेनिन्ह्वनीजे अहिंसाते परमार्थें हिंसानांजफलआपे, केमके भवांतरें तेमने तिर्यंच्नरकादिकनीगति प्रगटेछे ॥ ५० ॥

साधूनामप्रमत्तानां सा चाऽहिंसानुबंधिनी ॥ हिंसानुबंधवि
च्छेदा गुणोत्कर्षो यतस्ततः ॥५१॥ मुग्धानामियमज्ञत्वात् सानुबं
धा न कर्हिचित्॥ज्ञानोद्रेकाप्रमादाभ्या मस्या यदनुबंधनं॥५२॥

अर्थ ॥ अप्रमत्तसाधु जेसातमागुणठाणावाला तेनेजेहिंसाछे, तेअहिंसानुबंधीछे. केमके हिंसानोअनुबंध विछेदथयाथकी जिहांतिहांथकी गुणनोउत्कर्षथाय छे ॥ ५१ ॥ पण एअहिंसाते अज्ञानपणे भोलाप्राणीने कदापिकालें सुखदायकनथी, एटलेएअनुबंधसहितनथाय, पणअप्रमत्त साधुने ज्ञानसहितजेअहिंसा अथवाहिंसाते अनुबंधें अहिंसाजकहियें, केमके एपरंपरायें मोक्षसुखनुंकारणछे. माटे ॥ ५२ ॥

एकस्यामपि हिंसाया मुक्तं सुमहदंतरं ॥ भाववीर्यादिवैचित्र्या
दहिंसायां च तत्तथा ॥ ५३ ॥ सद्यः कालांतरे चैत द्विपाकेना
पि भिन्नता ॥ प्रतिपक्षांतरालेनोघा शक्तिनियोगतः ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ एकलीहिंसानेविषे पण जेममोटोअंतर देखाड्योछे, तेमजभाववीर्यना विचित्रपणाथकी अहिंसानेविषेपण तेमजजाणवुं ॥ ५३ ॥ प्रतिपक्षपणे अंतरालेंकरी अथवातेशक्तिनेयोगेंकरी तत्काल अथवाकालांतरे एविपाकेकरीने पणभिन्नताछे ॥ ५४ ॥

हिंसाप्युत्तरकालीनविशिष्टगुणसंक्रमात् ॥ त्यक्ताविध्यनुबंधत्वादहिंसैवातिभक्तितः ॥ ५५ ॥ इहग्भंगशतोपेता ऽहिंसा यत्रोपवर्ण्यते ॥ सर्वांशपरिशुद्धंतत्प्रमाणं जिनशासनं ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ जेहिंसाछे तेपणजो उत्तरकालें विशिष्टगुणप्रगटे, तथापिअविधिनो अनुबंध तज्याथी अने अत्यंतभक्तिथकी प्राणीने अहिंसारूपज फलदायकथायछे. ॥ ५५ ॥ एरीतेंसेंकमोगमे भंगजालसहित जिहांअहिंसानेवर्णवियें, तेतोसर्वांशें शुद्धएवुंजेजिनशासन तेमांजप्रमाणछे ॥ ५६ ॥

अर्थोयमपरोनर्थ इति निर्धारणं हृदि ॥ आस्तिक्यं परमं चिन्हं सम्यक्त्वस्य जगुर्जिनाः ॥ ५७ ॥ शमसंवेगनिर्वेदानुकंपाभिः परिष्कृतं ॥ दधतामेतदविछिन्नं सम्यक्त्वं स्थिरतां व्रजेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥अहिंसा तेजअर्थछे; अनेबीजासर्वअनर्थछे; एप्रकारें जेना मनमांधारणाछे, एहवी परमआस्थाप्रगटे तेआस्थाश्रद्धारूप समकितनुंचिन्हछे, एवुंप्रभुयें कह्युंछे ॥५७॥ शमता, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा एलक्षणो रुडीरीतें अविछिन्नपणे धरतांथकां समकितजेछे तेस्थिरतापणानेपामे ॥ ५८ ॥ इतिसम्यक्त्वाधिकारःद्वादशसमाप्तः ॥

मिथ्यात्वत्यागतः शुद्धं सम्यक्त्वं जायतेंऽगिनां ॥ अतस्तत्परिहाराय यतितव्यं महात्मना ॥ १ ॥ नास्ति नित्यो न कर्त्ता च न भोक्तात्मा न निर्वृतः॥तदुपायश्च नेत्याहुर्मिथ्यात्वस्य पदानि षट् ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेजेवारें मिथ्यात्वनोनाशथाय, तेवारेंजीवने सम्यक्त्वप्रगटे; माटे मिथ्यात्व टालवानो रुडाप्राणीयें उद्यमकरवो ॥ १ ॥ आत्मानथी; आत्मानित्यनथी; कर्त्तानथी; भोक्तानथी; सिद्धनथी; तेसिद्धताप्रगटकरवानो उपायनथी; एछपदमिथ्यात्वनांछे॥२॥

एतैर्यस्माद्भवेच्छुद्धव्यवहारविलंघनं ॥ अयमेव च मिथ्यात्वध्वंसी सदुपदेशतः ॥ ३ ॥ नास्तित्वादिग्रहेनैवोपदेशोनोपदेशकः ॥ ततः कस्योपकारः स्या त्संदेहादिव्युदासतः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ ए पदवडेकरी पूर्वाचार्यनाव्यवहार उलंघायछे; लोपायछे;एजमिथ्यात्वछे, अनेतेसद्गुरुना उपदेशथकी नाशपामेछे ॥३॥ एछपदरूपी कुग्रहेनछ्याथका जेउपदेशआपे, तेउपदेशनकहियें; तेथीकोइनेउपकारनथाय. मिथ्यात्वीनाउपदेशेंसंदेहटलेनही ॥४॥

येषां निश्चय एवेष्टो व्यवहारस्तु संगतः ॥ विप्राणां म्लेछभा
षेव स्वार्थमात्रोपदेशनात् ॥ ५ ॥ यथा केवलमात्मानं जाना
नः श्रुतकेवली ॥ श्रुतेन निश्चयात्सर्वं श्रुतं च व्यवहारतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमब्राह्मणने म्लेछभाषाबोलवानीमनाइछे, माटेपोतानास्वार्थजेटलीज बोले; तेमजजेहने एकनिश्चयनयजइष्टछे, तेहनेव्यवहारनयतो ब्राह्मणनेम्लेछनीभाषा नाउपदेशनीपरें स्वार्थवास्ते संगतमात्रछे ॥ ५ ॥ जेमश्रुतकेवली व्यवहारथीश्रुतजाणे; अनेसर्वनिश्चयनयवके श्रुतज्ञानेकरीश्रुतकेवली केवलआत्मानेजाणे ॥ ६ ॥

निश्चयार्थोत्र नो साक्षाद्वक्तुं केनापि पार्यते ॥ व्यवहारो गु
णद्वारा तदर्थावगमक्षयः ॥७॥ प्राधान्यं व्यवहारे चेत्तत्तेषां
निश्चये कथं ॥ परार्थस्वार्थे तुल्ये शब्दज्ञानात्मनोर्द्वयोः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ इहांनिश्चयअर्थ प्रगटपणेकेरवाने कोइसमर्थनथी. देखीतोगुणप्रगटे तेरूपद्वारें निश्चयअर्थनीप्राप्ति क्षयरूपव्यवहारकेहेवाय ॥ ७ ॥ जेनेकेवलव्यवहारने विषेज प्रधानपणुंछे, तोतेनेनिश्चयनयमांकेमहोय? वलीशब्दनयअने ज्ञाननयरूपप्राणीने स्वअर्थनेपरअर्थ बेतुल्यछे. जेशब्दतेव्यवहारछे, अनेज्ञानतेनिश्चयछे ॥ ८ ॥

प्राधान्याद्व्यवहारस्य तत्त्वमुच्छेदकारिणां ॥ मिथ्यात्वरूपतैते
षां पदानां परिकीर्त्तिता ॥ ९ ॥ नास्त्येवात्मेति चार्वाकः प्र
त्यक्षानुपलंभतः॥अहंताव्यपदेशस्य शरीरेणोपपत्तितः ॥१०॥

अर्थ ॥ जेव्यवहारनाप्रधानपणाथकी सर्वनोउछेदथाय तेवाप्राणीने मिथ्यात्वरूप उपदमां मिथ्यात्वभावथयो, एमजाणवुं ॥ ९ ॥ चार्वाकदर्शनवालाकहेछे, जे आत्मा नथी.केमकेजो आत्माहोयतो प्रत्यक्षजणाय, तेतोकांइजणातोनथी. अने अहंकार एटलेआकार्येहुंकरुंछुं,तेनोजे व्यपदेशछे तेतोशरीरें करीनेजणायछे ॥ १० ॥

मद्यांगेभ्योमदव्यक्तिः प्रत्येकमसती यथा॥मिलितेभ्योहि भूतेभ्यो
ज्ञानव्यक्तिस्तथामता॥११॥ राजरंकादिवैचित्र्य मपि नात्मबला
दितं ॥ स्वाभाविकस्य भेदस्य ग्रावादिष्वपि दर्शनात् ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेम महुडातथापाणीप्रमुख मदिरानाअंगछे, पणतेप्रत्येकमां मदिरानीश क्तिनथी; जेवारेंनेगांमले तेवारेंजशक्तिप्रगटे, तेमपंचभूतनेगांमलेंतेवारें ज्ञानशक्तिप्रग टथायछे ॥११॥ जेमएकशिलाअथवा एककांकरीएसर्वे पथरानानेदछे, तेमआ राजाछे, आरांकछे, एवुंविचित्रपणुंतेआत्मानथी. एतोस्वभावेनेदपड्याछे ॥ १२ ॥

वाक्यैर्न गम्यते चात्मा परस्परविरोधिभिः ॥ दृष्टवान्न च कोप्ये
नं प्रमाणं यद्वचो भवेत् ॥१३॥ आत्मानं परलोकं च क्रियां च वि
विधां वदन् ॥ भोगेभ्यो भ्रंशयत्युच्चै र्लोकचित्तं प्रतारकः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वलीसर्वे मतवालाना मांहोमांहें विरोधीवचनहोवाथी आत्मानीप्रतीतिन थीथती, केमके कोइयेंआत्मादीठोनथी के जेथकी एकेनुंवचन प्रमाणथाय ॥ १३ ॥ आत्माने परलोकने अर्थे एमविचित्रप्रकारनीक्रियाकरावेछे. एहवुंकहेनारा बिचारालो कने सुखभोगथीभ्रष्टकरेछे. एम जेलोकोनाचित्तने फेरवेछे, तेधूर्त्तगुरुजाणवा ॥ १४ ॥

त्याज्यास्तन्नैहिकाः कामाः कार्या नानागतस्पृहा ॥ भस्मीभूतेषु
भूतेषु वृथा प्रत्यागतिस्पृहा ॥ १५ ॥ तदेतद्दर्शनं मिथ्या जीवप्र
त्यक्ष एव यत् ॥ गुणानां संशयादीनां प्रत्यक्षाणामभेदतः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ माटेआभवमां पाम्याजेसुखभोग तेतजवानही, अने आवताभवमां सुख पा मशुं एवीवांछानकरवी. केमके पंचभूतनुंपुतलुं बलीनेराखथशे, एटलेपरभवनी इच्छा स र्वेफोगटजशे ॥ १५ ॥ एरीतेचार्वाक दर्शननुंमतकह्युं. पणएदर्शनखोटुंछे. केमके प्रत्य क्षपणे संशयादिकजेगुण, तेजीवनेछे माटेजीवप्रत्यक्ष अभेदपणेछे ॥ १६ ॥

नचाहंप्रत्ययादीनां शरीरस्यैव धर्म्मता ॥ नेत्रादिग्राह्यतापत्ते
र्नियतंगौरवादिवत् ॥ १७ ॥ शरीरस्यैव चात्मत्वे नानुभूतस्मृति
र्भवेत् ॥ बालत्वादिदशाभेदा त्तस्यैकस्यानवस्थितेः ॥ १८ ॥

अर्थ॥जेमकोइआदरआपे तेपणआत्माछे, तेमअहंकारादिकप्रत्ययजेछे,तेआत्माछे.तेकां इशरीरनोधर्मनथी अहंकारदिनेत्रमांजणायछे, तेदेखवारूपछे ॥ १७ ॥ शरीरनेजो आ त्माकहियें, तोआत्माजरूथयो.तेवारेंपूर्वेनी अनुभवेलीवात आत्माविनाकोने सांभरेछे? शरीरनेतोसांभरतुंनथी, अने बाल यौवनतथावृद्धइत्यादिकजे शरीरनीदशाना भेदछे, तेथीआत्मापण बालत्वादि दशावंतथायछे. पणनिश्चयनयथी आत्मानीएकदिशाछे.अने शरीरनीअवस्था एकनथी. केमके अनवस्थितदोषनो प्रसंगछे. माटे ॥ १८ ॥

नात्मागं विगमेप्यस्य तल्लब्धानस्मृतिर्यतः ॥ व्यये गृहगवाक्ष
स्य तल्लब्धार्थाधिगंतृवत् ॥ १ए ॥ नदोषकारणात्कार्ये वासना
संक्रमाच्च न ॥ ज्रूणस्य स्मरणापत्ते रंबानुजवसंक्रमात् ॥ २० ॥

अर्थ॥शरीरनोतोनाशथाय अनेआत्मापरजवेजाय, पणजातिस्मरणेकरी पूर्वजन्मादिकनुं स्मरणछे; जेमघरनागोखमांबेशीने नगरनापदार्थदीठा, अने पछीतेगोखपडीगयो तोपणजोयानुं स्मरण जतुंनथी ॥ १ए ॥ कारणथकी बाल्यावस्थानी वासनानासंक्रमणथकी, जेकार्यआत्माकरेछे तेकार्यनी जोस्मृतिनरही, तोपण तेनेदूषण नथी.जेम मातायें पोतानाअनुजवना संक्रमणथकी बालकनेबोलवुं चालवुं शीखव्युं होय, तेनी बालकने स्मृतिनहोय तेहनीपरेंजाणवुं ॥ २० ॥

नोपादनाउपादेयवासना स्थैर्यदर्शने ॥ करादेरतथात्वेन योग्य
त्वाप्तेरणुस्थितौ ॥ २१ ॥ मद्यांगेज्यो मदव्यक्ति रपिनो मेल
कंविना॥ज्ञानव्यक्तिस्तथा जाव्याऽन्यथा सा सर्वदा जवेत् ॥२२॥

अर्थ ॥ उपादाननायोगेंकरी स्थिरतानादर्शननेविषे उपादानवासनानहोय. जेमहस्तादिजेछेते उपादेयछे; अने तेनुंउपादानते हस्तादिकनापरमाणुछे; माटे परमाणुरूप सूक्ष्मस्थितिमां स्थिरदर्शन न संजवे ॥ २१ ॥ जेममदिरानाअंगथकी मदशक्तिप्रगटपणेनथी, पणजेगेमलवेथायछे, अथवापीधापछी आत्मानेसंयोगेंथायछे, तेमज्ञाननीप्रगटतापण आत्मानेयोगेंथायछे; नहीतोसदाय एकलुं ज्ञानरह्युंजोइयें ॥ २२ ॥

राजरंकादिवैचित्र्य मप्यात्मकृतकर्मजं ॥ सुखउःखादिसंवित्ति
विशेषो नान्यथा जवेत् ॥ २३ ॥ आगमाज्ञम्यते चात्मा दृष्टेष्टा
र्थाविरोधिनः ॥ तडक्ता सर्वविन्नैनं दृष्टवान्वीतकश्मलः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ आराजाछे अने आरांकछे,एवोजीवनेविचित्रजावउपजेछे; एवीलोकवाणीछे; तेसर्वेपोतानां कीधेलांकर्मथकी जाणवी. सुखउःखसर्वेकर्मथकी प्रगटथायछे. अन्यथावीजुं विशेषकारणकांइनथी ॥ २३ ॥ जेदृष्टियेंदीठुं तेप्रत्यक्षप्रमाण; अनेइष्टार्थतेअनुमानप्रमाण; तथा उपमाप्रमाण ते अनुमानमांजलेछे; माटेएत्रणप्रमाणने अविरोधिएहवुंजे आगमप्रमाण तेणेकरी आत्मानेजाणयोजायछे. तेआगमतो जेनांसर्वपापगयांछे एहवासर्वज्ञदेवें देखाड्युंछे ॥ २४ ॥

अभ्रांतानां च विफला नामुष्मिक्यः प्रवृत्तयः ॥ परबंधनहेतोः कः
स्वात्मानमवसादयेत् ॥२५॥सिद्धिः स्यात्एवादिवरूयव्यक्ता संशयादे
व चात्मनः ॥ असौ खरविषाणादौ वस्त्वार्थविषयः पुनः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ अभ्रांतजे ज्ञानीपुरुष तेनेहमणानीप्रवृत्तिते निःफलतानहोय; माटे पर बंधननाहेतुयेंकरी पोतानाआत्माने कोणखेदमांनाखे ? ॥ २५ ॥ आत्मानीप्रगटपणे संशयथीसिद्धिछे, एवीवाततोवगडामां झाडनातुंगजेवी देखाय, पणसंशयकरतांथकां जेखरुंवृक्षते नजणाय. तेमज संशयवडे आत्मानेनजाणियें. अनेजेविपरीतअर्थें आत्माने माने तेनेगधेडाने शिंगडामाननारजेवोसमजवो ॥ २६ ॥

अजीवइति शब्दस्य जीवसत्तानियंत्रिता ॥ असतोन निषेधोय
त्संयोगादिनिषेधनात् ॥ २७ ॥ संयोगः समवायश्च सामान्यं च
विशिष्टता ॥ निषिध्यते पदार्थानां तएव नतु सर्वथा ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ अजीवशब्दमां जीवशब्दनीसत्तावलगेलीछे; पणनिषेधअछतोछे. जेथी ना स्तिकमतवाला संयोग, समवाय, अनेसामान्य, तथा विशेषने निषेधेछे. तेपणसर्वथा पणे वस्तुस्वरूपने निषेधिशकतानथी; केमके संयोगसमवाय अने सामान्य नही मा नवाथकी पणअजीव शब्द बोलवो तेयद्यपिअजीवपदार्थसत्छे, तथापिशब्दअसत्मानि यें, तोते असत्पदार्थनो निषेधदेखातोनथी॥२७॥माटे संयोग, समवाय, सामान्य इत्या दिकपदार्थनुंविशेषपणुं तेनास्तिकमतवाला निषेधकरेछे. पणतेसर्वनिषेधथायनही॥२८॥

शुद्धं व्युत्पत्तिमजीवपदं सार्थं घटादिवत् ॥ तदर्थस्य शरीरं नो
पर्यायपदभेदतः ॥२९॥ आत्मव्यवस्थितेस्त्याज्यं ततश्चार्वाकद
र्शनं ॥ पापाः किलैतदालापाः सद्यापारविरोधिनः ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ शामाटेशुद्धनिर्मलएवीव्युत्पत्ति तेजीवप्राणधारणे एवेअर्थेयुक्त एवुंजीव पदसाचुंछे; घटादिकनीपेरेछतुंछे; पणनवानवा पर्यायना भेदथकी जीवनेमूलअर्थे श रीरनथी ॥ २९ ॥ एरीतें आत्मानुंस्थापनकरीने चार्वाकदर्शननेछांडवुं; एदर्शनीसाथें आलापकरवो तेपणपापरूपछे; केमकेएसत्यवादीसाथें विरोधकारकछे; तेथीतजवुं॥३०॥

ज्ञानक्षणावलीरूपो नित्योनात्मेति सौगताः ॥ क्रमाक्रमाभ्यां
नित्यत्वे युज्यतेर्थक्रिया न हि ॥ ३१ ॥ स्वभावहानितो ध्रौव्यं क्र
मेणार्थक्रियाकृतौ ॥ अक्रमेण च तद्भावे युगपत्सर्वसंभवः ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ हवेबौद्धमतवालाबोल्याके, आत्माज्ञानरूपछे. पणक्षण-आवलिकाप्रमाणे स्थितिछे; माटेआत्मानित्यनथी. एटलेजीवते क्षणमांक्रोधकरे, क्षणमांमानकरे, एमभिन्नअवस्थाथायछे; एकअवस्थानित्यरेहतीनथी; परंपरायें क्रमअक्रमपणेजो नित्य आत्माकोइवेलायेंहोय, तोअर्थक्रियाकलाप घटेनही; माटेनित्यआत्मानथी ॥ ३१ ॥ एनोस्वभावहणाय,तेवारेध्रुवपणुंपामे;अनुक्रमेअर्थक्रिया आकृतिनेविषे अक्रमेकरीने तेभावनेविषे समकालेंविचारतां सर्वसंभवहोय. माटेअमारोक्षणिकमतसाचोठर्यो ॥३२॥

क्षणिके तु नदोषोस्मिन् कुर्वद्रूपविशेषिते ॥ ध्रुवेक्षणोनुतृष्णाया निवृत्तेश्च गुणोमहान् ॥ ३३ ॥ मिथ्यात्ववृद्धिकृन्नूनं तदेतदपि दर्शनं ॥ क्षणिके कृतहानिर्य त्तथात्मन्यकृतागमः ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ वलीआक्षणिकमतमां दोषनथी. केमके नवनवांरूपकरेछे; पणजेसमयें जेरूपहोय, तेसमयेंतेरूपनालक्षणेंकरीध्रुवछे. तेमांतृष्णानो अनेनिवृत्तिनो मोटोगुणछे. जेथीध्रुवतारूप महागुणपामियें, एमबौद्धकहेछे ॥ ३३ ॥ एठपरथी खरेखरुं एदर्शन मिथ्यानीवृद्धिकरनारुंछे. केमकेआत्मानेक्षणिक माननारनासुकृतनीहानिथायछे. जोक दीपापनकरे, तोपणजुठाबोलवानुं पापतोपरभवेभोगववुंपडे. माटेअकृतागमकहियें॥३४॥

एकद्रव्यान्वयाभावा द्वासनासंक्रमश्च न ॥ पौर्वापर्य्यं हि भावानां सर्वत्रातिप्रसक्तिमत् ॥ ३५ ॥ कुर्वद्रूपविशेषे च न प्रवृत्तिर्नवाऽनुमा ॥ अनिश्चयान्न वाध्यक्षं तथा चोदयतो जगौ ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ जेमएकद्रव्यनो सापेक्षपणे एकभावनथी, माटेवासनानुं संक्रमणनथाय; अनेभावनुं पूर्वापरपणुंसर्वत्रशक्तिरूपें परिणमेछे ॥ ३५ ॥ रूपविशेषकरताछतां प्रवृत्तिकरवी अथवा वारवीतेतोनही, पणक्षणिकमतवालायेंतो अनिश्चयथकी आत्माने उदयथी क्षणिकपणुकह्युंछे ॥ ३६ ॥

न वैजात्यं विना तत् स्या न्नतस्मिन्ननुमा भवेत्॥ विना तेन न तत्सिद्धिर्नाध्यक्षं निश्चयं विना ॥ ३७ ॥ एकतः प्रत्यभिज्ञानं क्षणिकत्वं च बाधते ॥ योहमन्वभवं सोहं स्मरामीत्यवधारणात् ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ विजातिविना तेनहोय, एमांकांइअनुमान घटतुंनथी; केमकेतेविना तेनी सिद्धिपणनथी; निश्चयविना प्रत्यक्षज्ञानपणनथीथातुं ॥३७॥ तथाहुंआअनुभवुंछुं, तेहुंसंभारुंछुं, एअवधारणथकी आत्माने त्रैकालिक एकताज्ञान तेक्षणिकपणे बाधकार थायछे॥३८॥

नास्मिन्विषयबाधो यत् क्षणिकेपि यथैकता ॥ नानाज्ञानान्वये त
द्वत् स्थिरे नानाक्षणान्वये ॥ ३९ ॥ नानाकार्यैक्यकरण स्वाभा
व्ये च विरुध्यते ॥ स्याद्वादसन्निवेशेन नित्यान्वर्थक्रिया न हि ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ एनित्यात्मानामतवडे विषयबाधकपणुं नहोय. क्षणिकमतनेविषेपणएम-
जजेम ज्ञानान्वयें एकत्वापणुछे, तेमस्थिरआत्मानेविषे नानाक्षणनेसंयोगें एकता-
जाणवी ॥ ३९ ॥ बहुकार्यना एकीकरणस्वभावने अंगीकारकरेछते विरोधपडेछे, अ
नेस्याद्वादशैलीये स्थापना करवाथी नित्यापेक्षपणे अर्थक्रिया विरोधपामतीनथी, के
मके वेहुनयें प्रकृतिअर्थ अनुसरेछे. माटे ॥ ४० ॥

नीलादावप्येतद्भेद शक्तयः सुवचाः कथं ॥ परेणापि हि नानैक
स्वभावोपगमं विना ॥ ४१ ॥ ध्रुवे क्षणेपि न प्रेम निवृत्तमनुप
प्लवात् ॥ ग्राह्याकारइव ज्ञाने गुणस्तन्नात्र दर्शने ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ नीलादिवर्णनेविषे भेदशक्तिनहोय, एमसुखेकेम केहेवाय? परपुद्गलवडेकरी
नेपण एकस्वभावने टाल्याविना नानाविधपणुं संभवेनही ॥ ४१ ॥ ध्रुवतापणानेविषे
इक्षणनेविषेपण एटलेलोचननेविषेपण उपप्लवमाटे निवृत्तपणेप्रेमनजोइयें. जेमग्राह्या
कार ज्ञाननेविषेगुणछे, तेमआ दर्शनमांगुणनथी ॥ ४२ ॥

प्रत्युतानित्यभावे हि स्वतः क्षणजबुद्धिया ॥ हेत्वनादरतः सर्व
क्रियाविफलता भवेत् ॥ ४३ ॥ तस्मादिदमपि त्याज्यमनि
त्यत्वस्य दर्शनं ॥ नित्यसत्यचिदानंदपदसंसर्गमिछता ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ उलटाअनित्यभावनेविषेपण पोताथी क्षणनीबुद्धियेंकरी हेतुनाअनादर
थकीसघलीक्रिया निःफलथाय ॥ ४३ ॥ तेमाटेए अनित्यदर्शनपणछोडवुं. सदैव नित्य
सत्यपणे मुक्तिपदना संसर्गने इछताप्राणीयें जरूरत्यजवुं ॥ ४४ ॥

न कर्त्ता नापि भोक्तात्मा कापिलानां तु दर्शने ॥ जन्मधर्माश्रयो
नायं प्रकृतिः परिणामिनी ॥ ४५ ॥ प्रथमः परिणामोस्या बुद्धिर्ध
र्माष्टकाऽन्विता ॥ ततोहंकारतन्मात्रेंद्रियभूतोदयः क्रमात् ॥ ४६ ॥

अने ॥ हवेकपिलदर्शनवाला बोल्याके, आत्माकर्त्तानथी; तेमभोक्तापणनथी; आ
त्माप्रगटधर्माश्रय वालोनथी; मायापरिणामवर्त्तेछे ॥ ४५ ॥ एमायानो प्रथमपरिणाम

शुश्रूषा, श्रवणं, चैवग्रहणइत्यादिक आठप्रकारनी बुद्धिरूपधर्मेंकरीसहितछे. अथवा तेथी अहंकार, तन्मात्र, इंद्रिय, पांचभूतोदय, एअनुक्रमेजाणवुं ॥ ४६ ॥

चिद्रूपपुरुषोबुद्धेः सिध्ये चैतन्यमानतः ॥ सिद्धिस्तस्या अविष
या वच्छेदनियमान्वितः ॥ ४७ ॥ हेतुत्वेषु प्रकृत्यर्थै क्रियाणामत्र
निर्वृत्तिः ॥ दृष्टादृष्टाविभागाश्च व्यासंगश्च न युज्यते ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ बुद्धिनीसिद्धिनेअर्थें आत्माचिद्रूपछे; वलीचैतन्यछे, तोपण निश्चयसहित अविछेदपणे तेबुद्धिनीजेसिद्धि तेअविषयीछे ॥ ४७ ॥ हेतुत्वेंकरी आत्मानेप्रकृतिअर्थ नेविषे इंद्रियोना निवृत्तिपणानो दीठाअणदीठाना विभागथी प्रसंगघटतोनथी ॥४८॥

स्वप्ने व्याघ्रादिसंकल्पा न्नरत्वानभिमानतः॥ अहंकारश्च नियत
व्यापारः परिकल्प्यते ॥ ४९ ॥ तन्मात्रादिक्रमस्तस्मात्प्रपंचो
त्पत्तिहेतवे ॥ इत्थंबुद्धिर्जगत्कर्त्री पुरुषो न विकारभाक्॥ ५० ॥

अर्थ ॥ जेमस्वप्ननेविषे व्याघ्रादिकना संकल्पथी अनेपुरुषार्थना निरभिमानथी अहंकारनेनिश्चये व्यापाररूपकल्पियेंछियें ॥४९॥ तेप्रपंचनी उत्पत्तिनाहेतुनेअर्थेंतन्मात्रादिकनो क्रमछे. एरीतेंजगत्नीकरनारी बुद्धिठरेछे. माटे विकारनोभजनारआत्मानथी॥५०॥

पुरुषार्थोपरागौद्वौ व्यापारावेशएव च ॥ अत्रांशोवेश्यहं वस्तु
करोमीति च धीस्वतः ॥ ५१ ॥ चेतनोहं करोमीति बुद्धेर्भेदाग्रहा
त्स्मयः ॥ एतन्नाशेऽनवच्छिन्नं चैतन्यं मोक्ष इष्यते ॥ ५२ ॥

अर्थ॥ सर्वप्रवृत्तिव्यापारनेविषे एकपुरुषार्थअने बीजोउपराग एबेव्यापारभलेछे,तेवारें हुंअंशेजाणुं, हुंवस्तुकरुंछुं; एवीकदाग्रहीबुद्धिथायछे॥५१॥ हुंचेतनछुं, हुंकरुंछुं; एवोगर्वबुद्धिनाहेतुथी प्रगटेछे. एवागर्वनोनाशकरी स्वभावेंरह्युं चैतन्यपणुंमुक्तिनेपामेछे.॥५२॥

कर्तृबुद्धिगते दुःखसुखे पुंस्युपचारतः ॥ नरनाथे यथा भृत्यगतौ
जयपराजयौ ॥ ५३ ॥ कर्त्ता भोक्ता च नतस्मा दात्मा नित्यो
निरंजनः ॥ अध्यात्मादन्यथाबुद्धि स्तदाचोक्तं महात्मना ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ आत्मानेविषे दुःखसुखपामवुं, एहवीकर्त्तापणानीबुद्धिजेथायछे, तेउपचारथीछे. जेमसेवकनोजय अथवा पराजयते राजाहोवाथीजणायछे ॥ ५३ ॥ इत्यादिक- माटे आत्माकर्त्ताभोक्तानथी; पणनित्यनिरंजनछे; अनेजेबुद्धिछे,तेतो अध्यात्मथी जुदीछे; एवुंमहात्माकपिलमुनियें कहेलुंछे ॥ ५४ ॥

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वथा ॥ अहंकारविमूढा
त्मा कर्त्ताहमिति मन्यते ॥ ५५ ॥ विचार्यमाणं नो चारु तदेतद
पि दर्शनं ॥ प्रकृतिचैतन्ययोर्व्यक्तं सामानाधिकरण्यतः ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ प्रकृतिनागुणेकरी क्रियमाण जे कर्म तेनो हुंकर्त्ताछुं, एम सर्व प्रकारें अहंकारें मूढआत्मामानेछे ॥ ५५ ॥ एवोविचारकरेथी एदर्शनपणखरुंनथी; केमकेप्रगटबुद्धि प्रकृतिअनेचैतन्यनो सामानाधिकरणें विचारकरतां, रुडुनथीजणातुं ॥ ५६ ॥

बुद्धिः कर्त्री च भोक्त्रीच नित्याचे न्नास्ति निर्वृत्तिः ॥ अनित्या चेन्न
संसारः प्राग्धर्मादेरयोगतः ॥ ५७ ॥ प्रकृतावेव धर्मादिस्वीकारे
बुद्धिरेव का ॥ सुवचश्चघटादौ स्यादीदृग् धर्मान्वयस्तथा ॥५८॥

अर्थ ॥ वलीतमेजो कर्त्ता भोक्तापणे बुद्धि मानशो, पणजोतेबुद्धिनित्यछेतो, मोक्ष नथी. एटलेमोक्षठरशेनही. अनेजोबुद्धिने अनित्यमानशोतो, पूर्वधर्मनाअयोग्यथकी संसारठरशेनही ॥ ५७ ॥ प्रकृतिनेविषेधर्मादिकने.अंगीकारकीधाथी बुद्धिनेशुंकेहेवी जोइयें? अनेघटादिकनेविषेएवाधर्मनो अन्वयतेसुखेंकहेवो. इतितर्कवादः ॥ ५८ ॥

कृतिभोगौ च बुद्धेर्बंधो मोक्षश्च नात्मनः ॥ ततश्चात्मानमुद्दि-
श्य कूटमेतदुच्यते ॥ ५९ ॥ पंचविंशतितत्त्वज्ञो यत्रयत्राश्र
मे रतः ॥ जटी मुंडी शिखी चापि मुच्यते नात्र संशयः ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ जोकरवुं, भोगववुं बुद्धिनेछे, तोबंधमोक्षआत्मानेनथी. तेपणबुद्धिनेजजोइ यें. माटेआत्मानेउद्देशीने नहीसमजवामांआवे एरीतेंकूटकविकहेछे ॥ ५९ ॥ पंचविंश तत्त्वनोजाणजेपुरुषछे, ते कोइपणआश्रममांरतहोय; एटलेजटाधरहोय, अथवामुंमावे, अथवाचोटीरखावे, तोपणतेसंदेहविना संसारथीमुकाय. एवुंकपिलमतवालाकहेछे॥६०॥

एतस्य चोपचारत्वे मोक्षशास्त्रं वृथाखिलं ॥ अन्यस्य हि विमो-
क्षार्थे न कोप्यन्यः प्रवर्त्तते ॥६१॥ कापिलानां मते तस्मा दस्मि
न्नैवोचिता रतिः ॥ यत्रानुभवसंसिद्धः कर्त्ता भोक्ता च लुप्यते ॥६२॥

अर्थ ॥ एरीतें एआत्मानेविषे मोक्षनेउपचारिपणें अंगीकारकरेछे, तेनुंसकलमो क्षशास्त्र फोगटथायछे. केमकेकोइने मोक्षआपवा कोइबीजोप्रवृत्तथायनही. ॥ ६१ ॥ जिहांअनुभवसिद्ध आत्मानुंकर्त्तापणुं तथाभोक्तापणुलोपेछे, एटलेमानतानथी, तेमाटे एहवा कपिलनामतमां प्रीतिकरवीते, ठीकनथी ॥ ६२ ॥

नास्तिनिर्वाणमित्याहुरात्मनः केप्यबंधतः ॥ प्राकपश्चाद्युगप
द्वापि कर्म्मबंधाव्यवस्थितेः ॥ ६३ ॥ अनादिर्यदि संबंध इष्यते
जीवकर्मणोः ॥ तदानंत्यान्न मोक्षः स्या त्तदात्माकाशयोगवत् ॥६४॥

अर्थ ॥ केटलाकअबंधमतवालाछे, तेएमकहेछेके, आत्माने मोक्षनिर्वाणनथी; केमके प्रथमकेअथवापछी समकालें आत्माने कर्मबंध नथी, तोमुक्तिशेनीहोय? ॥६३॥ जोजीवने तथाकर्मने अनादिसंबंधमानियें, तोआदिनही, तिहांअंतपणकेमथाय? माटेअनंतपणा नाप्रसंगथी कोइकालेंमोक्षनथाय.जेमआत्माथकीआकाशयोग कदापिभिन्ननथाय॥६४॥

तदेतदत्यसंबद्धं यन्मिथो हेतुकार्ययोः ॥ संतानानादिता बीजां-
कुरवत् देहकर्मणोः॥६५॥ कर्त्ता कर्मान्वितो देहे जीवः कर्मणि दे-
हयुक् ॥ क्रियाफलोपभुक्तत्वे दंडान्वितकुलालवत् ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ एहवुंबोलेछे, एवचनपणजुठुछे. केमके कारणकार्यनेमांहोमांहे संबंधछे. जेमपुत्रपौत्रादिकनो अनादिसंबंधथायछे, तेबीजनाअंकुरानीपेरेंछे, तेमजशरीरतथाकर्म नोपणअनादिसंबंधछे ॥ ६५ ॥ कर्मसहितजीव कर्त्तापणेदेहमांरह्योछे, एवुंजेकहेछे ते-पणजुठुंछे.जेमदंडसहितकुंभारनीपरें क्रियानुंफलभोगवे, तेपण असंबंधछे तेनीपरे.॥६६॥

अनादिसंततेर्नाशः स्याद्बीजांकुरयोरिव ॥ कुकुट्यंडकयोः स्वर्ण
मलयोरिव भीनयोः ॥६७॥ भवेषु च व्यवस्थेयं संबंधोजीवकर्म-
णोः ॥ अनाद्यनंतोऽभव्यानां स्यादात्माकाशयोगवत् ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ तमेकहोछोके अनादिसंतति नाशनथाय. तेनोतोनाशथतो देखीयेंछइयें; जेमबीजवणस्ये अंकुरनथाय अने अंकुरानाशथये बीजनहीथाय; कुकडीनाशथये इंडुं-नाशपामे; अनेइंडानोनाशथये कुकडीनाशपामे; वलीअनादिनो सुवर्णथी मेलजुदो थायछे. तेमआत्माथकी कर्मजुदांथायछे ॥ ६७ ॥ एरीतेंअनादिसंतति जीवकर्मनोजे संबंधते नाशथायछे. तेभव्यजीवोआश्रयीछे; अनेजेहने अनादिसंतति टलतीनथी, तेअभव्यजीवो आश्रयीछे. आत्मातोआकाशना योगनीपरेंछे ॥ ६८ ॥

द्रव्यभावे समानेपि जीवाजीवत्वभेदवत्॥जीवभावे समानेपि भ
व्याभव्यत्वयोर्भिदा ॥६९॥ स्वाभाविकं च भव्यत्वं कलशप्राग
भावतः ॥ नाशकारणसाम्राज्याद्विनश्यन्न विरुध्यते ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यनीरीतें तोसर्वद्रव्य एकद्रव्यपणें तुल्यछे, पणतेद्रव्यमां भेदकरियें तोजीवअजीव ए बेथाय; तेमज जीवपणेतो सर्वेजीवसरिखाछे, पणभेदकरतां भव्य-

तथाभव्य एवेभेदथायछे ॥ ६९ ॥ जेमघटउत्पत्तिपेहेलां माटीद्रव्यस्वाभाविकपणेछे; अनेमाटीनानाशथी घटप्रगटेछे, तेविरुद्धनथी; तेमस्वाभाविकभव्यपणे कर्मनीअनादिसंततिना नाशरूपकारणना सामर्थ्यथी परमात्मापणुंप्रगटे तेपणविरुद्धनथी. ॥ ७० ॥

भव्योछेदो न चैवं स्याद्गुर्वानंत्यान्नभोंशवत् ॥ प्रतिमादलवत् क्वा
पि फलभावेपि योगतः ॥७१॥ नैतद्वयं वदामोयद्भव्यः सर्वोपि सि
ध्यति ॥ यस्तु सिध्यति सोवश्यं भव्य एवेति नो मतं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंभव्यपणानो उछेदनथाय. मोटाअनंतपणाथकी आकाशनाअंशनी परें घटआवे आकाशपणआवुं, अनेघटभांगे आकाशखंडथयो. पणआकाशकांइवध्युं नही. तेमकर्मनानाशथकी आत्माअधिकथतोनथी. जेमकोइछेकाणे प्रतिमानादलनी पेरें प्रतिमादलपाषाणथी बिंबरूप फलउपजे तेममोक्षनुं उपजवुं थाय ॥ ७१ ॥ अमे एमकहेता नथीके सघलाभव्यजीवो सिद्धिपामे. पणजेसिद्धिवरे तेनेनिश्चय भव्य कहियें एअमारोमतछे ॥ ७२ ॥

ननु मोक्षेपि जन्यत्वाद्विनाशिनी भवस्थितिः ॥ नैव प्रध्वंसवत्त
स्या निधनत्वव्यवस्थितेः ॥७३॥ आकाशस्येव वैविक्त्या मुद्गराहे
र्घटक्षये ॥ ज्ञानादेः कर्मणो नाशे नात्मनो जायते ऽधिकं॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ मोक्षनेविषे प्रगटथवापणुंनथी, माटेभव्यस्थिति नाशवंतीछे. पणमोक्षमां अनंतपणानी स्थितिछे, माटेमुक्तिनोनाशनथी ॥ ७३ ॥ जेममोगरेंकरी घडोभांग्यो, अनेघडानेक्षयें आकाशजुदुथयुं, पणवध्युंनही, तेमज्ञानथी कर्मनोनाशथाय, पण आत्माअधिकथायनही ॥ ७४ ॥

न च कर्माणुसंबंधान्मुक्तस्यापि न मुक्तता ॥ योगानां बंधहेतूना
मपुनर्भवसंभवात् ॥ ७५ ॥ सुखस्य तारतम्येन प्रकर्षस्यापि सं
भवात् ॥ अनंतसुखसंवित्ति मोक्षः सिध्यति निर्भयः ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ जिहांमूलथीजकर्मपरमाणुनो संबंधनथी, अनेजेमूकाणा तेनेकांइमुकाववापणुंनथी, तथामिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग एचारबंधहेतुनायोगछे, तेनुं फरीथवापणुं नथी, तेहनेसिद्धिकहियें ॥७५॥ सुखनुंतारतम्य तथाज्ञाननीउत्कृष्टता प्रगटथयेथी एट लेअनंतसुखजाणवाथी निर्भयपणेजे सिद्धिवरे तेनुंनाममोक्षकहियें ॥ ७६ ॥

वचनं नास्तिकाभाना मात्मसत्तानिषेधकं ॥ भ्रांतानां तेन नादे
यं परमार्थगवेषिणा ॥७७॥ न मोक्षोपाय इत्याद्यु रपरेनास्तिको
पमाः ॥ कार्यमस्ति न हेतुश्चे त्येषां तेषां कदर्थना.॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ माटे नास्तिकमतवालानां वचन आत्मसत्ताना निषेधकछे, तेज्रमचित्तवालायें आदरवानहीं. अथवानास्तिकमतवालानां ज्ञयनांवचनछे, एमजाणीआदरवानहीं. जेपरमार्थनो गवेषकहोय तेणेछांडवा ॥ ७७ ॥ हवेवलीबीजा नास्तिकमतने मलताज मतवालाछे, तेनुंकेहेवुं एमछे के मोक्षनोउपायनथी. एटलेकार्यजेमोक्षतेतोछे, पणतेनुंकारणजे उपाय तेनथी. एममानेछे तेमनेपण विटंबनाछे ॥ ७७ ॥

अकस्मादेव ज्ञवतीत्यलीकं नियतावधेः ॥ कदाचित्कस्य दृष्ट
त्वाद्ज्ञाषे तार्किकोप्यदः ॥ ७ए ॥ हेतुभूतनिषेधानां स्वानुपा
ख्यविधिर्न च ॥ स्वज्ञाववर्णना नैव मवधेर्नियतत्वतः ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ कोइकतो अणचिंतव्यो अकस्मात्मोक्षथायछे, एमकेहेछे. एपणजुवुंछे. नियत अवधिमर्यादाजछे. तेमाटीनापिंडथीघटनिपजेछे, तेकदाचितदीठुंछे, एमतेहनेतार्किकशास्त्रवालाकहेछे, जेअमुकवखतमांजपुरुंथाशे. एवोकांइनियमनथी ॥ ७ए ॥ हेतुज्ञूतमोक्षनोनिषेधनथी. पोतानोअनुपकथनीय एटलेपोतानेबोलवुंनहीं एहवोजेविधितेपणनथी, अनेस्वज्ञाववर्णनकरवुं स्तुतिकरवीतेनथी. केमकेएसर्वनीअवधिछे. एटलेअवधियेंज मोक्षथाशे, तेमाटेमोक्षनुं साधनकरवुतेजुठुंछे, एमकेहेछे ॥ ७० ॥

नच सार्वत्रिको मोक्षः संसारस्यापि दर्शनात्॥नचेदानीं न तद्व्य
क्तिर्व्यंजको हेतुरेव यत् ॥७१॥ मोक्षोपायोस्तु किंत्वस्य निश्चयो
नेति चेन्मतं॥ तत्र रत्नत्रयस्येव तथा ज्ञावविनिश्चियात्॥७२॥

अर्थ ॥ सर्वत्रमोक्षनथी. केमके जेहमणानथी, तेनीप्रगटतापणनथी; अनेसंसारतो प्रत्यक्षदेखायछे; माटेजेहनोजेहेतुछे, तेजप्रगटनथी, तोतेहनोसंशयछे. ॥ ७१ ॥ मोक्षनोउपायछे? किंवानथी? एवातनो निश्चयनथी. माटेएमतपणजुगछे. मोक्षनोहेतुतोरत्नत्रयनीपरें तेमजज्ञावें निश्चयथीजाणियें ॥ ७२ ॥

ज्ञवकारणरागादि प्रतिपक्षमदः खलु ॥ तद्विपक्षस्य मोक्षस्य
कारणं घटतेतरां ॥ ७३ ॥ अथ रत्नत्रयप्राप्ते प्राक्कर्म्मलघुता
यथा ॥ परतोपि तथैव स्यादिति किं तदपेक्षया ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ रत्नत्रयीजेछे, तेसंसारनां कारणजेरागादिक तेहनाशत्रुछे. अनेसंसाररूपकार्यनोशत्रु मोक्षछे. माटेमोक्षनुं कारणजे उपायतेघटेछे. ॥ ७३ ॥ केमकेरत्नत्रयनीप्राप्तिथयाथकी पूर्वेज्ञवनाकर्मनी जेवीलघुताथाय, तोबीजाथकीपणतेमजथायएअपेक्षायें जो अवधिनथी तोपणशुंथयुं? ॥ ७४ ॥

नैव यत्पूर्वसेवातो मृध्वीतो साधनक्रिया ॥ सम्यक्त्वादिक्रिया त
स्माद् दृढैव शिवसाधने ॥ ७५ ॥ गुणा प्राडर्भवंत्युच्चैरथवाकर्म
लाघवात् ॥ तथा भव्यतया तेषां कुतोपेक्षानिवारणं ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ जेपूर्वसेवाथकीते घचनाघोलनारूपथी, रुजुताथी, साधनक्रियामंदरूप ते वीनहोय, माटे समकीतादिकक्रिया तेमोक्षसाधनमांदृढछे ॥ ७५ ॥ अथवाकर्मना लघुतापणाथकी मोटाजेगुणतेप्रगटथायछे; तेप्रकारें तेनीभव्यतापणेकरीने मोक्षछे. पणमोक्षनीअपेक्षा वारीनथी. इतिसंशयिनः ॥ ७६ ॥

तथाभव्यतयाक्षेपाद्गुणा न च न हेतवः ॥ अन्योन्यसहकारित्वाद्
दंमचक्रभ्रमादिवत् ॥ ७७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्राण्युपायास्त-
द्भवक्षये ॥ एतन्निषेधकं वाक्यं त्याज्यं मिथ्यात्ववृद्धिकृत् ॥ ७७ ॥

अर्थ ॥ तेमभव्यपणानातिरस्कारथकी पुनर्हेतुभूत गुणनहोय; केमके परस्पर सहकारीछे; माटे दंडचक्रभ्रमणनीपेरें भव्यतापणे ज्ञानादिक गुणप्रगटथाय, तेगुणमोक्षनाहेतुछे; एउत्तरकह्योछे ॥ ७७ ॥ माटेसंसारनाक्षयरूपजेउपाय तेज्ञानदर्शन अनेचारित्रछे; तेनोजेनिषेधकरे अने मिथ्यात्वनीवृद्धिकरें तेनुंवचनत्यागकरवुं ॥ ७७ ॥

मिथ्यात्वस्य पदान्येतान्युत्सृज्योत्तमधीधनः ॥
भावयेत्प्रातिलोम्येन सम्यक्त्वस्य पदानि षट् ॥ ७ए ॥

अर्थ ॥ एपूर्वेकह्याजे सर्वशास्त्रना मतवाद तेमिथ्यातनाछेकाणां, तेनेछांडीने बुद्धिरूपधननुं ग्रहणकरीने मिथ्यात्वनेप्रतिकूलपणेजे समकितनां छपदछे, तेनेभाववां ॥७ए॥
इति मिथ्यात्वत्यागाधिकारः त्रयोदशःसमाप्तः ॥

मिथ्यात्वदावानलनीरवाहमसद्ग्रहत्यागमुदाहरंति ॥
अतोरतिस्तत्र बुधैर्विधेया विशुद्धभावैः श्रुतसारवद्भिः ॥ १ ॥

अर्थ ॥ मिथ्यात्वरूप जेदावानल तेनेशमाववाने मेघसमान एहवामिथ्यात्वकदाग्रह रूपप्रसारनो त्यागपंडितेंकह्योछे. कदाग्रहनात्यागनेविषेरतिकरवी. जेपंडितहोय, वली शुद्धताभाववालोहोय, अनेसिद्धांतनासारनो जाणहोय तेमणेकदाग्रहने छांडवो ॥ १ ॥

असद्ग्रहाग्निज्वलितं यदंतः क्व तत्र तत्त्वव्यवसायवल्लिः ॥
प्रशांतिपुष्पाणि हितोपदेशं फलानि चान्यत्र गवेषयंतु ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेनुंअंतःकरण अछतापदार्थना कदाग्रहरूप अग्नियेंबल्युंछे, तेनाहृदयमां

तत्त्वव्यापाररूप वेलीकेमकरीउगे ? अनेसमतारूपफुल केमफुटे ? तथाहितउपदेश रूप फलक्यांथीहोय ? तेमाटे कदाग्रहनेतजीने बीजेठेकाणे तत्त्वनीखोल करवी ॥२॥

अधीत्य किंचिच्च निशम्य किंचिदसद्ग्रहात्पंक्तिमानिनो ये ॥
मुखं सुखं चुंबितमस्तु वाचो लीलारहस्यं तु न तैर्जगाहे ॥३॥

अर्थ ॥ कांइकजणीने तथा कांइकशास्त्रसांजलीने आत्मानेपंडितपणुं मानता एवामूर्खकदाग्रहनाधरनारते पोतानुंमुखचुंबितजेवाचा तेनेमुखमाने; पणतेमुखेंकरीली लारूप रहस्यजेज्ञानते अवगाहेनही ॥ ३ ॥

असद्ग्रहोत्सर्पदतुच्छदर्पैर्बोधांशतांधीकृतमुग्धलोकैः ॥ वि
म्बिता हंत जनैर्वितंडापांक्तित्यकंडूलतया त्रिलोकी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनेकदाग्रहथकी घणोगर्ववध्योछे, अनेस्वकल्पितज्ञानने अंशेकरी जद्रि कजीवोनेजेणे आंधलाकीधाछे, एहवाजडप्राणीयें पंडिताइनी खरजेंकरीनेहंतइतिखेदे पादुप्रहारेंथकी त्रणलोकने वितंडाके० डाकडमालेंविटंबनाकरीछे ॥ ४ ॥

विधोर्विवेकस्य न यत्र दृष्टि स्तमोघनं तत्त्वरविर्विलीनः ॥ अ
शुक्लपक्षस्थितिरेषनुनमसद्ग्रहास्थूलमतिर्मनुष्यः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेनाहृदयमां विवेकरूपचंद्रनी दृष्टिनथी,तथाघणोअंधकारछे,अनेतत्त्वरूप सूर्य अस्तपाम्योछे, तेथीतेकृष्णपक्षनी निशावत्स्थितिमांछे. केमकेतेने कदाग्रहेंछल्योछे ॥ ५ ॥

कुतर्कदात्रेण लुनाति तत्त्ववल्लीरसान्सिंचति दोषवृक्षं ॥ क्षि
पत्यधःस्वादुफलं शमाख्य मसद्ग्रहः कोपिकुहूविलासः ॥६॥

अर्थ ॥ जेकदाग्रहीछे, ते कुविचाररूपदातरडेंकरी तत्त्वरूपवेलीनेछेदेछे; अनेपापरू पवृक्षनेपाणीपायेछे; तथासमतारूपअमृतफलने हेठुंधुलमांनाखेछे; एवोकोइ कदाग्रह रूप अमावास्यानी रात्रीनोविलासछे ॥ ६ ॥

असद्ग्रावमये हि चित्ते न क्वापि सद्भावरसप्रवेशः ॥ इ
हांकुरश्चित्तविशुद्धबोधः सिद्धांतवाचां बत कोपराधः ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेकदाग्रहीमाणसनुं चित्तपथ्थरजेवुंछे. जेमपथ्थरमांपाणीजेदेनही, तेम जिनवाणीरूपरस तेकदाग्रहीमाणसमां प्रवशकरेनही. तेथीतेनाचित्तरूपवृक्षमां शुद्ध बोधरूप अंकुरप्रगटेनही; तोतेमांसिद्धांतनीवाणीनो शोवांक ? ॥ ७ ॥

व्रतानि चीर्णानि तपोपि तप्तं कृता प्रयत्नेन च पिंडशुद्धिः ॥ अ
भूत्फलं यत्तु न निन्हवानामसद्ग्रहस्यैव हि सोपराधः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जोपंचमहाव्रतपाल्यां, उग्रतपकीधां, उद्यमेंकरी बेंतालीसदोषरहित आहारलीधो, तेमछतांपणजेनिन्हवादिक मुक्तिरूपफलनपाम्या, ते अपराधसर्व कदाग्रहनोजछे

स्थालं स्वबुद्धिः सुगुरोश्च दातुरुपस्थिता काचन मोदकाली ॥ अ
सद्ग्रहः कोपि गले ग्रहीतस्तथापि भोक्तुं न ददाति दुष्टः ॥ ए ॥

अर्थ ॥ पोतानीबुद्धिरूप थालमांकांइक शुद्धज्ञानरूप मोदकने गुरु पीरसवाळव्या, पणकदाग्रहेंआवी गलुंपकड्युं, तेथीजमायुंनही. एवोकदाग्रहदुष्टछे ॥ ए॥

गुरुप्रसादीक्रियमाणमर्थं गृह्णाति नासद्ग्रहवांस्ततः किं ॥
द्राक्षा हि साक्षादुपनीयमाना क्रमेलकः कंटकभुङ् न भुंक्ते ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जोगुरुप्रसन्नथइने अर्थउपदेशआपेछे, तोपणकदाग्रहीपुरुष तेउपदेशनेग्रहतोनथी; तेथीशुथयुं? उपदेशतोकांइखोटोनथी. एतोजेमप्रगटपणे मीठीद्राक्ष आगलमुकियें, तोपणतेनेतजीनेउंट कांटानेखायछे ॥ १० ॥

असद्ग्रहात्पामरसंगतिं ये कुर्वंति तेषां न रतिर्बुधेषु ॥ वि
ष्ठासु पुष्टाः किल वायसा नो मिष्टान्ननिष्ठा प्रसभं भवंति ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणीकदाग्रहेंकरी मूर्खनीसंगतकरेछे, तेनेपंडितनीसोबत गमतीनथी. जेमकागडा विष्टाभोगीछे; तेनेमधुरआहारनीइछाथतीनथी, तेनीपेरें ॥ ११ ॥

नियोजयत्येव मतिं न युक्तौ युक्तिं नमो यः प्रसभं नियुंक्ते ॥ अस
द्ग्रहादेव न कस्य हास्यो जले घटारोपणमादधानः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेमकोइमूर्ख नदीनाजलउपर घडोभरीनेमूके, तेनेजोइनेकोणहसेनही? केमके अगाधनिर्मलजलना विस्तारआगल एकतुछमात्रजलेंभरेलोघडो तेशीगणती मांछे? तेमगुरुनामुखथी शास्त्रयुक्तिसांभलीने तेमांपोतानी मतिजोडेनही, अनेपोतानीयुक्तिवके उलटुंबोले, जेतमारीयुक्तिने नमस्कारहोजो! एवाकदाग्रहीनेदेखी कोणहांसीनकरे? इहां गुरुनोउपदेशतेनदीनाजलतुल्यछे. तेनाआगलकदाग्रहीघट केमनीजे?

असद्ग्रहो यस्य गतो न नाशं न दीयमानं श्रुतमस्य शस्यं ॥ न
नाम वैकल्यकलंकितस्य प्रौढा प्रदातुं घटते नृपश्रीः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेमकोइघेलाआदमीने महोटीराज्यलक्ष्मी आपवीघटेनही, तेमजेहनेकदाग्रहगयोनथी, तेवाप्राणीने धर्मोपदेश आपवोयोग्यनथी. ॥ १३ ॥

आमे घटे वारि घृतं यथा सद्विनाशयेत्तं च घटं च सद्यः ॥ अस
द्ग्रहग्रस्तमतेस्तथैव श्रुतात्प्रदत्ताडभयोर्विनाशः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेमकाचाघमामां पाणीभरवाथी घमानो तेमजपाणीनोनाशथायछे, तेमज कदाग्रहीमाणसने शास्त्र शीखवतांशास्त्रनो तेमजतेपोतानोबनेनोविनाशथायछे ॥ १४॥

असद्ग्रहग्रस्तमतेः प्रदत्ते हितोपदेशं खलु यो विमूढः ॥ शुनी
शरीरे स महोपकारी कस्तूरिकालेपनमादधाति ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ जेमविष्टायेंभखुंमुखदेखी कुतरीनेउपकारकरवा कस्तूरीनोलेपकरे, तेमूर्खजा णवो; तेमकदाग्रहीप्राणीने उपकारकरवाने हितउपदेशआपेते पणमूर्खजाणवो ॥१५ ॥

कष्टेन लब्धं विशदागमार्थं ददाति योऽसद्ग्रहदूषिताय ॥ स
खिद्यतेयत्नशतोपनीतं बीजं वपन्नूषरभुमिदेशे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेमघणाउद्यमे अनाजनांबीज भेगांकरी उखरजमीनमांवावे, तेआगल जतांसदाय खेदपामेछे; तेम पंडितप्राणी गुरूनोविनयकरी कष्टेंकरीनिर्मल आगमसि द्धांतनाअर्थने पाम्योहोय, तेजो कदाग्रहेकरी डुषितप्राणीने तेहनो अर्थ शीखववा नोउद्योगकरे, तोतेथी अंतेखेद पामेछे ॥ १६ ॥

शृणोति शास्त्राणि गुरोस्तदाज्ञां करोति नासद्ग्रहवान् कदा
चित्॥विवेचकत्वं मनुते च सारग्राही भुवि स्वस्य च चालनीवत्॥१७॥

अर्थ ॥ जोगुरुपासेथीशास्त्रसांजले, तोपणकदाग्रहीजेहोय ते कोइकालें ते गुरुनी आज्ञानमाने. ते पोतानीमेले पोतानेएहवुंमाने, जे हुंज सर्वपदार्थनी बराबरवेचणक रुंछुं. पणतेतोजेम पृथ्वीमां चालणीमांथी चारीनेसारभूतवस्तु काहाडीलेइने बाकी असार धान्यरहेछे, तेहनो ते ग्राहीछे ॥ १७ ॥

दंभाय चातुर्य मधीतशास्त्रं प्रतारणाय प्रतिभापटुत्वं ॥ ग
र्वाय धीरत्वमहोगुणाना मसद्ग्रहस्ते विपरीतसृष्टिः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ माटे अहोइतिआश्चर्य ! विधातायें कदाग्रहीमाणसमां वीपरीतगुणसृज्या छे ! जेवादेवतेवीपात्री, अनेमेघजलसर्पनामुखमां जेमविषतुल्यथइजायछे, एकेहेवतने वीधातायें खरीपामीछे. केमके जे कदाग्रहीनी चतुराइतेकपटनेअर्थेथाय, अने शास्त्र जणवुं ते मदनेअर्थेथाय, तथा बुद्धिमाहापण अने उपदेशतेलोकने ठगवानासाधन नेअर्थेथायअने धैर्यपणुं तेगर्वकरवानेअर्थेथाय. ॥ १८ ॥

असद्ग्रहस्थेन समं समंता त्सौहार्दभृद्दुःख मवैति तादृग् ॥
उपैति यादृक्कदली कुवृक्ष स्फुट त्रुटत्कंटककोटिकीर्णा ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ जेमकेलनुंवृक्षतेकंथेरादिक वृक्षनेसंगे कांटायेंकरीकोरायछे, तेंमजेप्राणीक दाग्रहीसाथें मित्राइकरेते अंतेडुःखनाविपाक पामेछे ॥ १ए ॥

विद्या विवेको विनयो विशुद्धिः सिद्धांतवाल्लभ्य मुदारता च ॥
असद्ग्रहाद्याति विनाशमेते गुणास्तृणानीव कणाद्दवाग्नेः॥२०॥

अर्थ ॥ जेमअग्निथी घासनासमूह जस्मीजूत थायछे; तेम विद्या, विनय, विवेक, विशुद्धि, अने सिद्धांतउपर वल्लजतापणु,अने उदारता एसर्वे कदाग्रहथी नाश पामेछे॥२०॥

स्वार्थः प्रियो नो गुणवांस्तु कश्चिन्मूढेषु मैत्री नतु तत्त्ववित्सु॥अस
दृग्रहापादितविभ्रमाणां स्थितिः किलासावधमाधमानां ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेकदाग्रहीनी सोबतेरह्या, तेने स्वार्थप्रियनही ते प्राणीअवगुणवंत, मूर्ख साथेंमित्राइकरे, अने पंडितसाथें मित्राइकरेनही, एवाकदाग्रहीनी सोबतेंरह्या, जेअधममांअधम नीचप्राणी तेहनीएस्थितिछे, तेकही ॥ २१ ॥

इदंविदंस्तत्त्वमुदारबुद्धि रसद्ग्रहं यस्तृणवज्जहाति ॥ जहा
ति नैनं कुलजेव योषि फुणानुरक्ता दयिता यशःश्री ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ एमजाणीने तत्त्वनेओलखनार मोटीबुद्धिवालाप्राणी कदाग्रहने तृणषलानीपेठेछांडें; तेने जेम कुलवंतीस्त्री जरतारने त्यजतीनथी, तेमगुणरागीएवीजे यश कीर्त्ति रूप लक्ष्मीतद्रूपस्त्रीयो छांडतीनथी ॥ २२ ॥ इतिकदाग्रहत्यागाधिकारचतुर्दशः ॥

इति महोपाध्याय श्रीयशोविजयगणि विरचितेअध्यात्मसार
प्रकरणे चतुर्थःप्रबंधः बारमांअधिकारमां ५० तेरमां
ना ०ए चउदमाना २२ सर्वमली १६ए काव्यथया

असद्ग्रहव्ययाध्वांत मिथ्यात्वविषयीप्रुषः॥सम्यक्त्वशालिनो
ध्यात्म शुद्धे योगः प्रसिध्यति ॥१॥ कर्मज्ञानविभेदेन स द्विधा
तत्र चादिमः ॥ आवश्यकादिविहितः क्रियारूपः प्रकीर्त्तितः॥२॥

अर्थ ॥ हवेकदाग्रहनानाशथी मिथ्यात्वरूपअंधकारनो विषयगयोछे जेमांथीएह वासमकितेंकरी उज्ज्वलअंतःकरणथयांछे जेहना एहवाजेप्राणी तेमने अध्यात्मनीशु

द्धिथकीयोगप्रसिद्धरीतें प्रगटे ॥ १ ॥ तेयोगनाबेनेदछे. एककर्मयोग, अनेबीजोज्ञान योग. तेमांकर्मयोगते आवश्यकादिकजे क्रियाकरवीतेरूपकह्योछे ॥ २ ॥

शारीरस्पंदकर्मात्मा यदयं पुण्यलक्षणं ॥ कर्मातनोति सन्नो
गात्कर्मयोगस्ततः स्मृतः ॥ ३ ॥ आवश्यकादिरागेण वात्स
ल्याद्भगवद्गिरां ॥ प्राप्नोति स्वर्गसौख्यानि न याति परमं पदं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शरीरचेष्टारूप तेकर्मात्माकहियें, एयोगपुण्यरूपछे. तेरुडाजोगथकी कर्म नेविस्तारेछे. तेमाटेएनेकर्मयोगकहियें ॥ ३ ॥ आवश्यकादिकक्रियानेरागे तथाजिन वाणीने विलासेंकरीने स्वर्गनासुखनेपामे, पणएयोगेंमुक्तिपदनेनपामे ॥ ४ ॥

ज्ञानयोगस्तपः शुद्धमात्मरत्येकलक्षणं ॥ इंद्रियार्थोन्मनीभा
वात्समोक्षसुखसाधकः ॥ ५ ॥ न परप्रतिबंधोस्मिन्नल्पोप्येका
त्मवेदनात् ॥ शुभं कर्मापि नैवात्र व्याक्षेपायोपजायते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बीजोज्ञानयोगतेहनेकहियें, जेतपशुद्धिपणे आत्मानेविषेरतिपामे. तेएक लक्षण अने इंद्रियोनाविषयथीदूररहेवुं,तेबीजुं, एवांलक्षणेयुक्तजेयोग तेनेपामेलोपुरुष तेमोक्षसुखनेसाधे ॥ ५ ॥ एकआत्मज्ञानयोगना ज्ञानमां बीजोप्रतिबंधनथी; अने जेकर्मथीमोक्षमांजतां वारलागे तेशुभकर्मपणनथी ॥ ६ ॥

नह्यप्रमत्तसाधूनां क्रियाप्यावश्यकादिका ॥ नियता ध्यानशु
द्धत्वाद्यदन्यैरप्यदः स्मृतं ॥ ७ ॥ यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृ
प्तश्च मानवः ॥ आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अप्रमत्तसाधुने आवश्यकप्रमुखजेक्रिया तेनोपण करवानेविषे प्रतिबंधन थी. केमकेतेनेध्यानरूपशुद्धिछे; माटे ॥ ७ ॥ वलिअन्यदर्शनमां पण श्रीकृष्णकहेछे के, हे अर्जुन ! जेआत्मसुखमांतृप्तछे,तेनेआत्मानेविषेज रतिछे, अनेसंतोषछे.जेआत्म सुखमां संतुष्टछे, एहवोजेजीव तेहनेकांइपणकर्त्तव्यनथी ॥ ८ ॥

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृते नेह कश्च न॥न चास्य सर्वभूतेषु कश्चि
दर्थव्यपाश्रयः ॥ ९ ॥ अवकाशो निषिद्धोस्मिन्न रत्यानंदयोर
पि ॥ ध्यानावष्टंभतः क्वास्तु तत्क्रियाणां विकल्पनं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेप्राणीनेकार्यकरवे अर्थनथी; तेमजनकरवाथी खोटपणनथी; तेहनेसर्व भूतनेविषेकांइप्रयोजननथी ॥ ९ ॥ एठेकाणे अरतिनो अनेआनंदनो अवकाशनथी केमके, ध्याननीस्थिरताथी तेक्रियानोविकल्पपण केमहोय ? ॥ १० ॥

देहनिर्वाहमात्रार्था यापि भिक्षाटनादिका॥क्रिया सा ज्ञानिनोऽसंगान्नैव ध्यानविघातनी ॥ ११ ॥ रत्नशिक्षादृगन्या हि तन्नियोजनदृग् यथा ॥ फलभेदात्तथाचारक्रियाप्यस्य विभिद्यते ॥ १२ ॥

अर्थ ॥देहनिर्वाहरूपें मुनिने गोचरीप्रमुखजे क्रियातेक्रिया ज्ञानिनाअसंगानुष्ठानथी ध्यानमांविघ्नकरेनहीं ॥ ११ ॥ रत्नमाणिक्यपरीक्षाना ग्रंथजुदा अनेनजरपरीक्षापणजुदी. ग्रंथजाणीने जेमनजरपरीक्षामांफल भेदथीप्रवर्त्तेछे, तेमआचारक्रियापण फेलभेदेंकरी भिन्नभिन्नछे, एटले भेदवंतीछे ॥ १२ ॥

ध्यानार्था हि क्रिया सेयं प्रत्याहृत्य निजं मनः ॥ प्रारब्धा जन्मसंकल्पादात्मज्ञानाय कल्पते ॥ १३ ॥ स्थिरभूतमपि स्वांतं रजसा चलतां व्रजेत् ॥ प्रत्याहृत्य निगृह्णाति ज्ञानी यदिदमुच्यते ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जोपोतानामनने पाछुंवालीने जन्मसंकल्पथीमांडीने आत्मज्ञानभणी कल्पियें तोतेक्रियाध्यानरूपछे ॥ १३ ॥ स्थिरथयेलुंजेमन तेपणरजोगुणेकरी चपलताने-पामे. तेहनेपाछुंवाली तेनोनिग्रहकरे तेनेज्ञानीकेहवो ॥ १४ ॥

शनैः शनैरुपरमेदबुध्या धृतिगृहीतया॥ आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिंतयेत् ॥१५॥ यतो यतो निःसरति मनश्चंचलमस्थिरं ॥ ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥ १६ ॥

अर्थ॥हे अर्जुन ! मननेधीरेधीरेधीरजवकें अनेबुद्धिवडे स्थिरकरवुं. पछीतेमनजेवारें आत्मानास्वरूपनेविषेजाय, तेवारे कांइवीजुं चिंतनकरवानी जरूरनथी॥१५॥मनचंचलने-अस्थिरछे; तेनेज्यांज्यां जायत्यांत्यांथीपाछुंवालीने आत्मानीसाथें वशकरीराखवुं ॥ १६ ॥

अतएवादृढस्वांतः कुर्याच्छास्त्रादिना क्रियां ॥ सकलां विषयप्रत्याहरणाय महामतिः ॥ १७ ॥ श्रुत्वा पैशाचिकीं वार्त्तां कुलवध्वाश्च रक्षणं ॥ नित्यसंयमयोगेषु व्यापृतात्मा भवेद्यतिः ॥१८॥

अर्थ ॥ एमपरदर्शनमांपण कह्युंछे. माटेज्यांसुधी मनस्थिरनहोय, त्यांसुधी शास्त्रोक्तक्रिया जेटलीकरियें, तेटलीसर्वसफलनथाय. जेवारेंविषयत्याग थाय, तेवारेंजसफलथाय. माटेजेप्राणीमननेविषयथीवालवामां उजमालरहे, तेमहामति वालाजाणवा ॥ १७ ॥ जेमएकशेठनोपुत्र देशांतरगयो. तेनाघरनीसामेना एकवृक्षउपर एकभूतरेहेतो हतो, तेछलपामि पुत्रनुंरूपधारणकरी तेनिघरनी वायकीसाथेंलागुपड्यो. एम

करतांतेशेवनोदीकरो पोतानेघरेंआव्यो तेवारेंघरमां लडाइचालवालागी. पबीराजदर बारें इनसाफनेवास्तेगया तिहांथी जूतनेघरमांथी काढवानुंकह्युं. पणतेजूतनिकल्यो नही, नेकेहेवालाग्योकेहुं जवानोनथी; हुंपणपुत्रबुं; एवातसांजलीवहुने लाजलागी. बेवे-शेवेजूतने वैरीसाथें युद्धकरवानुंकामजलाव्युं, अनेवहुने घरनोधंधोजलाव्यो. एरीतें-अनाचारटाल्यो, अनेवहुनेराखी. तेमसुनियेंपण संयमनायोगें आत्मानेराखवो ॥ १८ ॥

या निश्चयैकलीनानां क्रिया नातिप्रयोजना ॥ व्यवहारदशास्था नां ता एवातिगुणावहाः ॥१९॥ कर्मणोपि हि शुद्धस्य श्रद्धामेधा दियोगतः ॥ अक्षतं मुक्तिहेतुत्वं ज्ञानयोगानतिक्रमात् ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेनुंमननिश्चयमां लीनबे, तेनेक्रियानुं प्रयोजननथी. व्यवहारदशावाला ने क्रियाते अतिगुणकारीबे. ॥ १९ ॥ शुजकर्मथीअने श्रद्धाबुद्धिनायोगथी अखंडपणे जेज्ञानयोगने उलंघेनहीतो, तेहनेमुक्तिनोहेतु प्रगटथाय ॥ २० ॥

अज्यासे सत्क्रियापेक्षा योगिनां चित्तशुद्धये ॥ ज्ञानपाके शमस्यै व यत्परैरप्यदः स्मृतं ॥ २१ ॥ आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्मकारणमु च्यते ॥ योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेरुडीक्रियानीअपेक्षायें अज्यासकरेबे, ते योगीश्वरने चित्तशुद्धिनेअर्थें ज्ञानपरिपककरवाने उपशमकह्युंबे. एमअन्यदर्शनीउं पणकहेबे ॥ २१ ॥ हे अर्जुन ! योगपामवानेइछताजेयोगीबे, तेहनेकर्मतो एककारणबे. जेवारेंसर्व संकल्पशमिजाय, तेवारेंतेनेज्ञानयोगी कहियें. तेमाटेज्ञानारूढने समतातेजकारणबे ॥ २२ ॥

यदा हि नेंद्रियार्थेषु न कर्म्मस्वनुषज्यते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ २३ ॥ ज्ञानं क्रियाविहीनं न क्रिया वा ज्ञानवर्जिता ॥ गुणप्रधानजावेन दशाजेदः किलैनयोः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेवारेंविषयथीविरमें, कर्मनेविषे संलग्ननथाय, जेवारेंसर्व संकल्पशमीजा य तेवारेंतेहने योगारूढकहियें ॥ २३ ॥ क्रियाविना ज्ञाननथी, अनेज्ञानविना क्रिया-नथी. एवेमांक्रियातेगौणबे, अनेज्ञानतेमुख्यबे. एवोएबेनो दिशीजेदकह्योबे ॥ २४ ॥

ज्ञानिनां कर्मयोगेन चित्तशुद्धिमुपेयुषां ॥ निरवद्यप्रवृत्तीनां ज्ञानयोगौचिती ततः ॥२५॥ अतएव हि सुश्रद्धा चरणस्पर्शो नोत्तरं ॥ दुःपालश्रमणाचारग्रहणं विहितं जिनैः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ कर्मयोगेंकरीने मनशुद्धिपामेला अने निर्दोषविहारी एहवाजेज्ञानी तेहने ज्ञानयोग मुख्यपणेसेववो उचितछे. एवोवीतरागनोमतछे ॥ २५ ॥ एमाटेरुडीश्रद्धा यें देशविरतिरूप चारित्रनो स्पर्शकीधापछी दुःखेपालिशकियें, एवामुनिनोआचार जेस र्वेविरतिपणुंछे, तेलेवो. एटलेप्रजुयें पछीसंयमलेवुंकह्युंछे ॥ २६ ॥

एकोद्देशेन संवृत्तं कर्म यत्पौर्वभूमिकं ॥ दोषोछेदकरं तत्स्या
द् ज्ञानयोगप्रवृध्ये ॥ २७॥ अज्ञानिनां तु यत्कर्म न ततश्चि
त्तशोधनं ॥ योगादेरतथाभावात् म्लेछादिकृतकर्मवत् ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ कोइएकदेशआश्रिने पूर्वभूमिते पूर्वभवरूपसंवृत्तपणे उद्देशीने एटलेदेश-थकी जेपेहेलांवृत्तआदर्यां एहवीजेक्रिया तेपणदुःखने टालनारीछे. वलीज्ञानयोगनी वृद्धिकर्त्ताथायछे ॥२७॥ अनेअज्ञाननीजेक्रियातेचित्तशुद्धि करवानेअर्थे नहीथाय. के-मकेतेहनेज्ञानयोगनो अभावछे, माटे म्लेछनाकरेंला कार्यसरखीतेजाणवी ॥ २८ ॥

न च तत्कर्मयोगेपि फलं संकल्पवर्जनात् ॥ संन्यासो ब्रह्मबो
धाद्वा सावद्यत्वात्स्वरूपतः ॥२९॥ नो चेदित्थं भवेबुद्धिर्गोर्हिं
सादेरपि स्फुटा॥श्येनाद्वा वेदविहिता द्विशेषानुपलक्षणात् ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ तोतेवाकर्मयोगेपण फलनथी. फलतोसंकल्प वर्जे तेवारेंजथायछे. आत्मज्ञा नविना त्यागपणनथी, अनेएनुंस्वरूप सावद्यछे. माटेब्रह्मजेज्ञान तेनाबोधथकी फल-प्रगटे ॥ २९ ॥ जोकदापिएमबुद्धिनहोय, तेवारेंतो गोहिंसादिक थकीम्लेछादिकनेपण प्रगटशुद्धिहोय, तथासिंचाणानावधथीवेदमां पशुयागकह्या, तेथकीहिंसककर्मनायोगें वेदीयाना अनेम्लेछना एकसरखांजलक्षणछे; कांइविशेषनथी ॥ ३० ॥

सावद्यकर्म नो तस्मादादेयं बुद्धिविप्लवात् ॥ कर्मोदयागते त
स्मिन्नसंकल्पादबंधनं ॥ ३१ ॥ कर्माप्याचारतोज्ञातु र्मुक्ति
भावो न हीयते ॥ तत्र संकल्पजो बंधो गीयते यत्परैरपि॥३२॥

अर्थ ॥एटलामाटे बुद्धिनाविपर्यासपणाथी सावद्यकर्मआदरवुंनही, अनेजोदैवयोगें तेवांकर्मकरवानुं उदय आव्युं, तेवारेतेकर्मकरवानो जोसंकल्पनथी, तोतेकर्मनुं बंधन-पणनथी ॥३१॥ सांसारिकक्रियानोजो आचारछे,तोपणज्ञानीने मुक्तिभावनी हाणनथी. केमकेसंकल्पथी बंधनछे, एवुंअन्यदर्शनवालानुंपणकेहेवुंछे, तेजुओआगलकहेछे ॥ ३२ ॥

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म्म यः ॥ स बुद्धिमान्मनुष्ये
षु स युक्तः कृतकर्म्मकृत् ॥ ३३ ॥ कर्मण्यकर्म वा कर्म कर्म्मण्य
स्मिन्नुभे ऽपि ॥ नोभे वा भंगवैचित्र्यादकर्मण्यपि नो मते ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ जेकर्मनेविसर्जे, अकर्मपणुंदेखेछे, अनेकर्मनथीकरतो, अनेजाणेछे जेहुंकरुं छुं, तेनेमाणसमां बुद्धिवंतकहियें. तेकरवापणानाकर्मने अकरवापणुंदेखेछे. ते पोतेपोता नेस्वरूपेंछे. एमघणीभंगजाल प्रगटेछे ॥ ३३ ॥ निःकर्ममार्गनेविषे नहीमान्युं, तेअक रवुंथयुं; अने अकरवापणेजेकरेछे, तेनाबेभांगाछे. एमकरवामांविचित्र भांगाछे ॥ ३४ ॥

कर्म नैःकर्मवैषम्यमुदासीनो विभावयन् ॥ ज्ञानी न लिप्यते भोगैः
पद्मपत्रमिवांभसा ॥ ३५ ॥ पापाकरणमात्राद्धि न मौनं विचिकि
त्सया ॥ अनन्यपरमात्मा स्यात् ज्ञानयोगी भवेन्मुनिः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ उदासीभाववालो विचित्रपणेंकर्मनुं विषमपणुंचिंतवे. जेमकमलपत्रजलमांले-पातुंनथी, तेमज्ञानीपुरुष भोगमांलेपातोनथी ॥ ३५ ॥ पापनकरवाथी कांइमुनिपणुंआव-तुंनथी, संशयरहितपणे पोतेजज्ञानयोगमय परमात्माथाय तेनेमुनिकहियें ॥३६॥

विषयेषु न रागी वा द्वेषी वा मौनमश्नुते ॥ समं रूपं विदंस्तेषु
ज्ञानयोगी न लिप्यते ॥ ३७ ॥ सतत्त्वचिंतया यस्याभिसमन्वा
गता इमे ॥ आत्मवान् ज्ञानवान्वेद धर्मब्रह्ममयो हि सः॥३८॥

अर्थ ॥ विषयनेविषे जेनेरागनथी, तेमद्वेषपणनथी तेनेमुनिकहियें. मध्यस्थपणे रूपादिकनेजाणतो, जेज्ञानी योगीतेने लेपलागतोनथी ॥ ३७ ॥ जेणेतत्त्वनीओलखा णवडे समताधारणकीधी, तेनेज आत्मानीओलखाणथइ, अनेतेजज्ञानी तथातेजधर्म मय तथाब्रह्ममयकेहेवाय ॥ ३८ ॥

वैषम्यबीजमज्ञानं निघ्नंति ज्ञानयोगिनः ॥ विषयांस्ते परिज्ञाय
लोकं जानंति तत्त्वतः ॥३९॥ इतश्चापूर्वविज्ञाना च्चिदानंदविनोद
तः ॥ ज्योतिष्मंतो भवंत्येते ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ संसारनुंविषमबीज जेअज्ञानछे, तेबीजनेज्ञानयोगीबालीनांखेछे; तथाविष-यादिकनेओलखीने तत्त्वथीलोकनांस्वरूपनेजाणेछे ॥ ३९ ॥ तेअपूर्वअनुभवथी अनेज्ञा-ननाआनंदमयविनोदथी महाज्योतिवंतथायअनेतेनांपापज्ञानेकरीबलीजाय ॥ ४० ॥

तेजोलेश्याविवृद्धिर्या पर्यायकर्मवृद्धितः ॥ भाषिता भगवत्या
दौ सेत्थंभूतस्य जायते ॥४१॥ विषमेपि समेक्षीयः स ज्ञानी स
पंडितः ॥ जीवन्मुक्तः स्थिरं ब्रह्म तथाचोक्तं परैरपि ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ दीक्षापर्यायनीवृद्धिथी ज्ञानसुखनीवृद्धिथायछे, एमभगवतीआदि सूत्रोमां कह्युंछे. तेवाप्राणीनेप्रगटथाय ॥ ४१ ॥ विषमनेविषेजे समभावेंजुए, तेवाज्ञानीनेपंडित कहियें. वली जीवन्मुक्त अनेस्थिर तथाब्रह्मपणतेनेजकहियें ॥ ४२ ॥

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ॥ शुनि चैव श्वपाके च
पंडिताः समदर्शिनः ॥ ४३ ॥ इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये
स्थितं मनः॥निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥४४॥

अर्थ ॥ तेमजपरदर्शनियेंपणकह्युंछेके, हे अर्जुन ! विद्याविनयसहित ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुतरुं, चंडाल, एसर्वने समदृष्टियेंजुएछे तेनेपंडितकहियें ॥ ४३ ॥ एहवा जीवेंइहांबेठेथकेज जगतसृष्टीनेजीतीलइने तेनुंमनसमतापाम्युं. तेनिर्दोषिपणेसम्यक् जेआत्मस्वरूप तेनिर्दोषछे. तेनेपाम्योतेब्रह्मज्ञानेरह्यो एमजाणवुं ॥ ४४ ॥

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियं ॥ स्थिरबुद्धिर
संमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः ॥ ४५ ॥ अर्वाग् दशायां दोषाय
वैषम्ये साम्यदर्शनं॥ निरपेक्ष मुनिनां तु रागद्वेषक्षयाय तत् ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ जेरुडुंमलेहर्षनकरे, अनेभुंडुंप्राप्तथये शोकनधरे, तेस्थिरबुद्धिवालो चतुरप्राणी ब्रह्मनोजाणते ब्रह्मज्ञानेरह्योछे एमजाणवुं ॥ ४५ ॥ हेठलीदशावालाने तोजेविषमनेविषें समपणेजोवुं तेदोषनुंकारणछे; अनेजेनिरपेक्षीमुनि तेनेतोविषमने समपणेजोवुं तेरागद्वेषनोक्षय करनारथायछे ॥ ४६ ॥

रागद्वेषक्षयादेति ज्ञानी विषयशून्यतां ॥ छिद्यते भिद्यते वाऽयं
हन्यते वा न जातुचित् ॥४७॥ अनुस्मरतिनातीतं नैव कांक्षत्य
नागतं ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषु समो मानापमानयोः ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ रागद्वेषनाक्षयथी ज्ञानीमुनि विषयनीशून्यतापणाने पामेछे. तेनेकोइछेदी शकेनही, कोइभेदीशकेनही, कोइहणीशकेनही, केमके तेपोतानो आत्माआत्मस्वरूपें मानेछे ॥४७॥ केमकेतेज्ञानीपुरुष गइवस्तुनेसंभारेनही, अनेअनागतवस्तुनेइछेनही, शीतअने उष्णतथासुख अनेदुःख वलीमानअनेअपमान एसर्वने समपणेमानेछे ॥ ४८ ॥

जितेंद्रियो जितक्रोधो मानमायानुपद्रुतः ॥ लोभसंस्पर्शरहितो वेदखेदविवर्जितः ॥ ४९ ॥ संनिरुध्यात्मनात्मानं स्थितः स्वकृतकर्मभित् ॥ हठप्रयत्नोपरतः सहजाचारसेवनात् ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ जेक्रोधरहित, तथा मानमायानाउपद्रवें रहित, अने लोभनास्पर्शेंरहित,वेदोदयरहित, खेदरहितहोय तेनेजितेंद्रियकहियें ॥ ४९ ॥ तेआत्माएकरी आत्मानेरोधीरह्यो, पोतानाकर्या कर्मनेभेदतो कदाग्रहथीविरम्यो, स्वाभाविकआचारने सेवतो॥५०॥

लोकसंज्ञाविनिर्मुक्तो मिथ्याचारप्रपंचहृत् ॥ उल्लसत्कंडकस्थानः परेण परमाश्रितः ॥ ५१ ॥ श्रद्धावानाज्ञया युक्तः शस्त्रातीतोह्यशस्त्रवान् ॥ गतो दृष्टेषु निर्वेदमनिन्हुतपराक्रमः ॥५२॥

अर्थ ॥ लोकसंज्ञाथी मुकाणो, मिथ्यात्वआचारनोटालनार, योगस्थानकें उल्लसितथयोछे, एवो जेउत्कृष्टभावें आत्मानोआश्रितथयोछे ॥५१॥ तथाश्रद्धावंत, आज्ञायुक्त अने माठाअध्यवसायरूपजे शस्त्र तेथीवेगलोरहेलो, अनेबाह्यशस्त्रथीरहित, देखातापदार्थनेविषे वैराग्यवान्, वली बलवीर्यनेअणगोपवनार ॥ ५२ ॥

निहितदंभोध्यानाग्निदग्धपापेंधनव्रजः ॥ प्रतिस्रोतोनुगत्वेन लोकोत्तरचरित्रभृत् ॥ ५३ ॥ लब्धान् कामान्बहिष्कुर्व न्नकुर्वन्बहुरूपतां ॥ स्फारीकुर्वन् परं चक्षु रपरं च निमीलयन् ॥५४॥

अर्थ ॥ अने त्रणदंभरहित, जेणे ध्यानरूपअग्निएकरी पापरूपकाष्टनासमूहने बाल्योछे, जे सामेंप्रवाहे चालवेकरीने लोकोत्तरचारित्रनो धरनार ॥ ५३ ॥ तथा विषयसुखपामीने तेसुखदूरकरनार तथामायाकपट अनेक्रोधादिकने अणकरतोथको तेज्ञानचक्षुने विकस्वरकरतो अज्ञानरूप चक्षुने बंधकरतोथको ॥ ५४ ॥

पश्यन्नंतर्गतान् भावान् पूर्णभावमुपागतः ॥ भुंजानोध्यात्मसाम्राज्यमवशिष्टं न पश्यति ॥५५॥ श्रेष्ठो हि ज्ञानयोगोयमाध्यात्मन्येव यज्जगौ ॥ बंधप्रमोक्षं भगवान् लोकसारे सुनिश्चितं ॥५६॥

अर्थ ॥ वलीजेअध्यात्मभावने देखतोथको पूर्णभावने पामेलो,अध्यात्मनी ठकुराइने भोगवतोथको अन्यपदार्थने नथीजोतो॥५५॥एउपरकह्यो तेउत्कृष्टज्ञानयोगछे. एअध्यात्मग्रंथनेविषे बंध मोक्षपण भगवंतेनिश्चये आचारांगनालोकसार अध्ययने कह्योछे ॥५६॥

उपयोगैकसारत्वादाश्वसंमोहबोधनः ॥ मोक्षाप्ते युंज्यतेचैव
तथाचोक्तं परैरपि ॥५७॥ तपस्विभ्योधिको योगी ज्ञानिभ्योप्य
धिको मतः ॥ कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥५८॥

अर्थ ॥ मोक्षप्राप्तिनेविषे उपरकहेलोज्ञानयोग घटेछे, केमके शीघ्रपणे ज्ञानजागृत एहवोउपयोगजमात्र एकसारछे; अनेअन्यदर्शनीएपण एमजकह्युंछे ॥ ५७ ॥ तपसीथी योगीअधिकछे; ज्ञानीथी अने राजाथीपण योगीनेमोटोकह्योछे; तेमाटेश्रीकृष्णे अर्जुननेकह्युंछेके, हे अर्जुन ! तुमेपणयोगीथाओ ! ॥ ५८ ॥

समापत्तिरिहव्यक्तमात्मनः परमात्मनि ॥ अभेदोपासनारूप
स्ततः श्रेष्ठतरोह्ययं ॥ ५९ ॥ उपासना भागवती सर्वेभ्योपि ग
रीयसी ॥ महापापक्षयकरी तथा चोक्तं परैरपि ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ माटेइहां आत्मानीसमाप्तिप्रगटेछे. आत्मा तथा परमात्मा ए बेउनेविषे अभेदपणे सेवनरूपजेयोग तेघणोजश्रेष्ठछे ॥ ५९ ॥ माटेसर्वथीमोटी अनेमोटापापनेटालेएवीप्रभुनीसेवाछे. अनेपरदर्शनीयेंपण एवुंजकह्युंछे ॥ ६० ॥

योगिनापि सर्वेषां मद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान् भजते यो
मां स मे युक्ततमोमतः ॥६१॥ उपास्ते ज्ञानवान् देवं यो निरंज
नमव्ययं ॥ स तु तन्मयतां याति ध्याननिर्धूतकल्मषः ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ ॥ सर्वयोगीमांपण अंतरआत्मायें भज्योएवो श्रद्धावंतप्राणी तोतेहनेकहियें. जेमुजनेसेवे, तेमुजसरखोपुरुषोत्तमथाय, एमश्रीकृष्णअर्जुननेकहेछे ॥६१॥ ज्ञानवंत, निरंजन अने अविनाशीदेवजाणीने, जेपुरुषमनेसेवेछे, तेतन्मयिपणेथायछे, अने जेणेमहाराध्यानथी पापबालीनाख्याछे, हे ! अर्जुन ! तेपुरुषमहारारूपेंथायछे ॥ ६२ ॥

विशेषमप्यजानानो यः कुग्रहविवर्जितः ॥ सर्वज्ञं सेवते सोपि
सामान्यं योगमास्थितः ॥ ६३ ॥ सर्वज्ञो मुख्य एकस्तत् प्रतिप
त्तिश्च यावता ॥ सर्वेपि ते तमापन्ना मुख्यं सामान्यतो बुधाः ॥ ६४॥

अर्थ ॥ जेविशेषनेअणजाणतोछे, तोपणजे कदाग्रहेंरहितछे अनेजेसर्वज्ञनेसेवेछे, तेपण सामान्ययोगे आश्रितछे ॥ ६३ ॥ सर्वप्रमाणमां एकसर्वज्ञतोमुख्यछे; तेहनीसेवाना करनारजेटलाछे, तेसर्वेतेहिज सर्वज्ञनाजावनेपामे, पणसर्वज्ञनुंमुख्यपणुं पंडितो सामान्यथकीकहेछे ॥ ६४ ॥

न ज्ञायते विशेषस्तु सर्वथा सर्वदर्शिजिः ॥ अतो न ते तमापन्ना विशेष्य जुवि केचन ॥ ६५ ॥ सर्वज्ञप्रतिपत्त्यंशा त्तुल्यता सर्व योगिनां ॥ दूरासन्नादिजेदस्तु तन्नृत्यत्वं निहंति न ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ तेसर्वथा सर्वज्ञ सर्वदर्शीतेवडेपण विशेषतोजाणतोनथी, तेथीतेकोइ विशेषजूमीकाने पाम्यानथी; एटले पृथ्वीमांकोइ विशेषजाणपणे सर्वज्ञपणुंपाम्यानथी ॥६५॥ सर्वज्ञपणानाजेप्रत्येक अंशछे तेसर्वेयोगीनेसरिखाछे; माटेढुकडा अनेवेगलापणाना जेदथी तेहनुंसेवकपणुं कांइहणातुंनथी ॥ ६६ ॥

माध्यस्थ्यमवलंब्यैव देवतातिशयस्य हि ॥ सेवा सर्वैर्बुधैरिष्टा कालातीतोपि यज्जगौ ॥ ६७ ॥ अन्येषामप्ययं मार्गो मुक्ताविद्यादिवादिनां ॥ अजिधानादिजेदेन तत्त्वरीत्या व्यवस्थितः ॥६८॥

अर्थ ॥ माध्यस्थपणुं अवलंबीने एटलेदेवताना अतिशयनुं माध्यस्थपणुं धारीने सर्वपंडितेंसेवामानीछे. कालथी अतीतछे. तोपणएमकहेछे ॥ ६७ ॥ बीजापणमुक्तवादीना अनेअविद्यादिकवादी जेपरदर्शनीतेनेपण आमार्गछे. एटले पूर्वेकह्योतेमार्गछे. जो पण नामादिकजेदेकरी कदापिजूदाछे, तोपणतत्त्वरीतें जोतांएकजव्यवस्थाछे. ॥ ६८ ॥

मुक्तोबुद्धोर्हन्वापि यत्र श्वैर्येण समन्वितः॥तदीश्वरः स एव स्यात् संज्ञाजेदोत्र केवलं ॥ ६९ ॥ अनादिशुद्धइत्यादि र्योजेदो यस्य कल्प्यते ॥ तत्तत्तंत्रानुसारेण मन्ये सोपि निरर्थकः ॥७०॥

अर्थ ॥ तेव्यवस्थाकहीदेखाडेछे. कोइदर्शनी मुक्तकहेछे; कोइबुद्धकहेछे; कोइक अर्हत्कहेछे; कोइकएश्वर्ययुक्तएटलेईश्वरकहेछे; एसर्वेसर्वज्ञनीसंज्ञानाजेदछे. बीजुकांइ नथी ॥ ६९ ॥ तेमजवली अनादिशुद्धईश्वरछे; इत्यादिकजेदजे परदर्शनीओकल्पेछे, तेजेदसिद्धांतने अनुसारेविचारीयें तोमानवा पण निरर्थकछे. इतिजावः ॥ ७० ॥

विशेषस्यापरिज्ञानाद् युक्तीनां जातिवादिनः ॥ प्रायोविरोधतश्चैव फलाजेदाच्च जावतः ॥ ७१ ॥ अविद्या क्लेशकर्मादि यतश्च जवकारणं ॥ ततः प्रधानमेवैत त्संज्ञाजेदमुपागतं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ केमकेजे विशेषनेनहिजाणवाथी उक्तियुक्तिनाजातिवचनथी अने प्रायेंविरोधथकी जावथीफलनोअजेदछे, एहेतुमाटे ॥७१॥ जे अविद्या, क्लेश, अने कर्मइत्यादिकजे संसारनाकारणप्रगटे, तेकेटलाएक दर्शनीओजूदाजूदाकहेछे. एटलेकोइअविद्या, कोइ क्लेश, कोइकर्म, एमसंज्ञायें करीजेदकहेछे. पणएत्रणेप्रधानपणे एकजछे ॥ ७२ ॥

यस्यापि यो परोभेद श्चित्रोपाधिस्तथा तथा ॥ गीयतेऽतीतहेतु
भ्यो धीमतां सोप्यपार्थकः ॥ ७३ ॥ ततः स्थानप्रयासोयं यत्त
द्भेदनिरूपणं ॥ सामान्यमनुमानस्य यतश्च विषयोगतः ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ एअविद्यादिकत्रणनावली बीजाभेद कल्पनायेंअनेकथायछे. तेथीअनेकप्रकारनी उपाधिनीपजे. तेमतेमजाणियेंजेहेतुनोअन्नावथायछे, पणतेउपाधिभेद पंडितनेनिरर्थकछे; एमजाणवुं ॥ ७३ ॥ तेथीआस्थाननोजेप्रयास तेभेदनुंनिरूपणकरवाने अनुमाननोविषय तेसामान्यजाणवो. केमकेज्यांअनुमान प्रमाणकरियें, त्यांसामान्यपणे उपयोगीहोयतेवारें अनुमानविषयनो अन्नावथाय ॥ ७४ ॥

संक्षिप्तरुचिजिज्ञासो र्विशेषान्न बलं बलं ॥ चारिसंजीविनीचा
रज्ञत्वादत्रोपयुज्यते ॥ ७५ ॥ जिज्ञासापि सतां न्याय्या यत्प
रेपि वदंत्यदः ॥ जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्त्तते ॥७६॥

अर्थ ॥ जेम संजीवनीनामाचारोजे घासबुटीतेने ओलखनारी एकमोटीस्त्रीयें ते बुटीनेयोगे बीजीनानीस्त्रीनाभर्त्तारने पशुअवस्थामांथी पुरुषबनाव्यो, तेम संक्षेपरूचिवालो विशेषबलवान्केवारेंकेहेवाय ? जेवारेंतेनीप्रीति साचेसाचीहोय तेवारेंकहेवाय. पणसाचीप्रीतिविनानुं विशेषबलतेबलमांनगणाय ॥ ७५ ॥ माटे एत्रणजेकामादियोगतेनेविषे सत्पुरुषेंजाणपणुंराखवुं उचितछे. परदर्शनीनुं केहेवुंपणएवुंजछे. हे अर्जुन ! जेपुरुषज्ञानयोगनेजाणवाइछे, तेपुरुषपरमात्मानी दिशानेपामे ॥ ७६ ॥

आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी चेति चतुर्विधाः ॥ उपासकास्त्रयस्त
त्र धन्या वस्तुविशेषतः ॥ ७७ ॥ ज्ञानी तु शांतविक्षेपो नित्यभ
क्तिर्विशिष्यते॥अत्यासन्नोह्यसौ भर्तुरंतरात्मा सदाशयः ॥७८॥

अर्थ ॥ एकदुःखी, बीजोजाणवानीइछावालो, त्रीजोधननोअर्थी, अने चोथोज्ञानी एचारप्रकारना हे अर्जुन ! मारासेवकोछे. पणतेमध्ये एकधनार्थीविना जे बीजात्रण जातना सेवकतेवस्तुतत्त्वनाजाणछे. माटेधन्यछे; वखाणवायोग्यछे ॥ ७७ ॥ एत्रणने धन्यकह्यातेमां पण जेनोविक्षेपशम्योछे, अने नित्यभक्तिवंत एहवोज्ञानीपुरुषजे चोथो, तेमोटोजाणवो. तेज्ञानीअमारीपासे अत्यंतनजीकरहेछे; माटेश्रेष्ठछे. केमकेअंतरात्मायें वर्त्तेछे, अनेतेनाआशयनिर्मलछे. तेमाटे ॥ ७८ ॥

कर्मयोगविशुद्धस्तद् ज्ञाने युंजीत मानसं॥ अज्ञश्च श्रद्दधानश्च
संशयानो विनश्यति ॥ ७९ ॥ निर्भयः स्थिरनासाग्रदत्तदृष्टिर्व्रते
स्थितः ॥ सुखासनः प्रसन्नास्यो दिशश्चानवलोकयन् ॥ ८० ॥

अर्थ ॥ हे अर्जुन ! कर्मयोगें विशुद्धथको तेप्राणी ज्ञानमांपोतानुं मनजोडेछे. अने हे अर्जुन ! एकमूर्ख, बीजो श्रद्धारहित, अनेत्रीजो संशयभरेलोमाणस एत्रणेविनाशपामेछे ॥७९॥ निर्भय, नाशिकानाअग्रभागनेविषे दृष्टिराखीने स्थिररहेनार, तथा निरंतर व्रतमांरहेनार, एहवोसुखआसनेबेठो, वलीप्रसन्नमुखछे जेहनुं, अने एकदृष्टिराखनार आडुंअवलुंनहीजोनार ॥ ८० ॥

देहमध्यशिरोग्रीव मवक्रं धारयन्बुधः ॥ दंतैरसंस्पृशन् दंतान्
सुश्लिष्टाधरपल्लवः ॥ ८१ ॥ आर्त्तरौद्रे परित्यज्य धर्मे शुक्ले च
दत्तधीः ॥ अप्रमत्तो रतो ध्याने ज्ञानयोगी भवेन्मुनिः ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ केड, मस्तक, अने कोटतेने पांसराधरतो, एटले शरीरनी चपलाइवांकाइरहित एहवोराख्यो; दांतेकरीदांतने अणफरसतो एटले स्पर्शकरतोनथी अने जेनाहोठपल्लवबेउरुडीरीतेंमलेलाहोय ॥ ८१ ॥ तथा आर्त्तरौद्रध्यानछांडीने धर्मशुक्लध्यानमांबुद्धिदीधीछे अनेभावेंअप्रमत्तपणें ध्यानमांरतथको एवोजेमुनि तेनेज्ञानयोगीकेहेवो ॥८२॥

कर्मयोगं समभ्यस्य ज्ञानयोगसमाहितः ॥
ध्यानयोगं समारुह्य मुक्तियोगं प्रपद्यते ॥ ८३ ॥

अर्थ ॥ तेमुनिकर्मयोगनो अभ्यासकरी चढवानेउजमालथइ ज्ञानयोगरूपदोरडुंझाली, समाधिपणे ध्यानयोग नीशरणीयें चडीने मुक्तियोगरूपमंदीरनेपामे ॥ ८३ ॥

इतियोगाधिकारः पंचदशमोसमाप्तः

स्थिरमध्यवसानं य त्तद्ध्यानं चित्तमस्थिरं ॥ भावना वाप्यनुप्रे
क्षा चिंता वा तत्रिधा मतं ॥ १ ॥ मुहूर्त्तांतर्भवेद्ध्यान मेकार्थे मन
सः स्थितिः ॥ बह्वर्थसंक्रमे दीर्घाप्यच्छिन्ना ध्यानसंततिः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेचित्तचपलछे, पणतेचित्तनेजेस्थिरपणे चित्तनाअध्यवसायने प्रगटकरेतेवारें तेनेध्यानयोगीकहियें. एकभावना, बीजीअनुप्रेक्षा,अनेत्रीजुं चिंतानुध्यान, एत्रणप्रकारें चित्तचपलथायछे ॥ १ ॥ अंतर्मुहूर्त्तेंध्यानहोय, पणजिहां एकठामें एकअर्थनेविषे घणाअर्थनुं संक्रमणथाय, एवीमननी स्थितिहोय, तिहांध्याननी अविछिन्नदीर्घपणे परंपराथाय. तिहांकांइअंतर्मुहूर्तनो नियमनथी ॥ २ ॥

आर्त्तं रौद्रंच धर्म्मं च शुक्लं चेति चतुर्विधं॥ततूस्याद्भेदाविह द्वौ
द्वौ कारणं भवमोक्षयोः ॥ ३ ॥ शब्दादीनामनिष्टानां वियोगा
संप्रयोगयोः ॥ चिंतनं वेदनायाश्च व्याकुलत्वमुपेयुषः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आर्त्त, रौद्र, धर्म ने शुक्ल, ए चार ध्यानना भेद छे. तेमध्ये प्रथमनां बे ध्यान ते संसारना कारणिक छे. अने पाछलां बे ध्यान ते मुक्तिनां कारण वाची छे ॥ ३ ॥ तेमां प्रथम आर्त्तध्यानना चार भेद कहे छे. प्रथम अनिष्ट जे शब्दादिक, तेनो वियोग वांछे के रखे अनिष्टनो संयोग बने; तेम अनिष्ट मले जे पीडा थाय तेनुं चिंतन करे तेथी व्याकुल थाय ॥ ४ ॥

इष्टानां प्रणिधानं च संप्रयोगवियोगयोः ॥ निदानचिंतनं पाप
मार्त्तमित्थं चतुर्विधं ॥ ५ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र
संभवः ॥ अनतिक्लिष्टभावानां कर्म्मणां परिणामतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बीजो भेद इष्टनुं चिंतन करे; एटले रखे इष्ट वस्तुना संयोगनो वियोग थइ जाय; त्रीजो नियाणुं करे; चोथो रोगना औषधनी चिंता करे. ए चार आर्त्तध्यानना प्रकार छे ॥ ५ ॥ एमध्ये कापोत, नील, कृष्ण, ए त्रण लेश्यानो संभव छे. केमके जेमां अतिक्लिष्टभावना नथी एवी कर्मनी परिणतिना परिणामें करी ए त्रण लेश्यानो संभव छे ॥ ६ ॥

क्रंदनं रुदनं प्रोच्चैः शोचनं परिदेवनं ॥ ताडनं लुंचनं चेति लिं
गान्यस्य विदुर्बुधाः ॥ ७ ॥ मोघं निंदन्निजं कृत्यं प्रशंसन् पर
संपदं ॥ विस्मितः प्रार्थयन्नेताः प्रसक्तश्चैव दुर्जनः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ बकोर करवो, उंचे स्वरे रडवुं, शोचना करवी, नामदइने रुवुं, मारवुं, माथाना वाल तोडवा, इत्यादिकने पंडित आर्त्तध्याननां लक्षण कहे छे ॥ ७ ॥ अमे मंदबुद्धि छैयें एम कहीने पोतानुं कार्य निंदे, अमे शुं पाली शुं ? मुक्तिमार्ग तो मोहोटो छे, एम प्रशंसा करे, एम विस्मित थको लोक पासे मांगतो फरे, इत्यादिक दुर्जननी रीत छे ॥ ८ ॥

प्रमत्तश्चेंद्रियार्थेषु गृध्नो धर्म्मपराङ्मुखः ॥ जिनोक्तमपुरस्कुर्व
न्नार्त्तध्याने प्रवर्त्तते ॥ ९ ॥ प्रमत्तांतगुणस्थानानुगमे तन्महात्म
ना ॥ सर्वप्रमादमूलत्वा त्याज्यं तिर्य्यग्गतिप्रदं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जे प्रमादी होय, विषयमां लीन होय, धर्मथी उलटो होय, जिनवाणीने गोपवे, तेवो पुरुष आर्त्तध्यानमां प्रवर्त्ते ॥ ९ ॥ माटे ए ध्यान उपला गुणठाणा पामतां थकां प्रमादमां पामे, अने ए ध्यान छठा गुणठाणा लगें रहे; माटे मोटा मुनियें सर्वप्रमादनुं मूल तथा तिर्यंचगति पमामे एवुं जाणीने ए ध्यानने छोडवुं ॥ १० ॥

निर्दयं वधबंधादिचिंतनं निबिडक्रुधा ॥ पिशुनासत्यमिथ्या
वाक् प्रणिधानं च मायया ॥ ११ ॥ चौर्य्यधीनिरपेक्षस्य तीव्रक्रो
धानलस्य च ॥ सर्वाभिशंकाकलुषं चित्तं च धनरक्षणे ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हे अर्जुन ! कर्मयोगें विशुद्धथको तेप्राणी ज्ञानमांपोतानुं मनजोडेछे. अने हे अर्जुन ! एकमूर्ख, बीजो श्रद्धारहित, अनेत्रीजो संशयजरेलोमाणस एत्रणेविनाशपामेछे ॥७७॥ निर्जय, नाशिकानाअग्रजागनेविषे दृष्टिराखीने स्थिररहेनार, तथा निरंतर व्रतमांरहेनार, एहवोसुखआसनेबेठो, वलीप्रसन्नमुखछे जेहनुं, अने एकदृष्टिराखनार आडुंअवलुंनहीजोनार ॥ ८० ॥

देहमध्यशिरोग्रीव मवक्रं धारयन्बुधः ॥ दंतैरसंस्पृशन् दंतान्
सुश्लिष्टाधरपल्लवः ॥ ८१ ॥ आर्त्तरौद्रे परित्यज्य धर्मे शुक्ले च
दत्तधीः ॥ अप्रमत्तो रतो ध्याने ज्ञानयोगी जवेन्मुनिः ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ केरू, मस्तक, अने कोटतेने पांसराधरतो, एटले शरीरनी चपलाइवांकाइरहित एहवोथाह्यो; दांतेकरीदांतने अणफरसतो एटले स्पर्शकरतोनथी अने जेनाहोठपल्लवबेजरुडीरीतेंमलेलाहोय ॥ ८१ ॥ तथा आर्त्तरौद्रध्यानछांडीने धर्मशुक्लध्यानमांबुद्धिदीधीछे अनेजावेंअप्रमत्तपणें ध्यानमांरतथको एवोजेमुनि तेनेज्ञानयोगीकेहेवो ॥८२॥

कर्मयोगं समभ्यस्य ज्ञानयोगसमाहितः ॥
ध्यानयोगं समारुह्य मुक्तियोगं प्रपद्यते ॥ ८३ ॥

अर्थ ॥ तेमुनिकर्मयोगनो अभ्यासकरी चढवानेजजमालथइ ज्ञानयोगरूपदोरडुंझाली, समाधिपणे ध्यानयोग नीशरणीयें चडीने मुक्तियोगरूपमंदीरनेपामे ॥ ८३ ॥
इतियोगाधिकारः पंचदशमोसमाप्तः

स्थिरमध्यवसानं य त्तद्ध्यानं चित्तमस्थिरं ॥ जावना वाप्यनुप्रे
क्षा चिंता वा तत्रिधा मतं ॥ १ ॥ मुहूर्त्तांतर्जवेद्ध्यान मेकार्थे मन
सः स्थितिः ॥ बह्वर्थसंक्रमे दीर्घाप्यछिन्ना ध्यानसंततिः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेचित्तचपलछे, पणतेचित्तनेजेस्थिरपणे चित्तनाअध्यवसायने प्रगटकरेतेवारें तेनेध्यानयोगीकहियें. एकजावना, बीजीअनुप्रेक्षा,अनेत्रीजुं चिंतानुध्यान, एत्रणप्रकारें चित्तचपलथायछे ॥ १ ॥ अंतर्मुहूर्त्तेंध्यानहोय, पणजिहां एकठामें एकअर्थनेविषे घणाअर्थनुं संक्रमणथाय, एवीमननी स्थितिहोय, तिहांध्याननी अविछिन्नदीर्घपणे परंपराथाय. तिहांकांइअंतर्मुहूर्तनो नियमनथी ॥ २ ॥

आर्त्तं रौद्रंच धर्म्मं च शुक्लं चेति चतुर्विधं॥तत्स्याद्भेदाविह द्वौ
द्वौ कारणं जवमोक्षयोः ॥ ३ ॥ शब्दादीनामनिष्टानां वियोगा
संप्रयोगयोः ॥ चिंतनं वेदनायाश्च व्याकुलत्वमुपेयुषः ॥ ४ ॥

अर्थ॥ आर्त्त, रौद्र, धर्म नेशुक्ल, एचारध्याननाभेदछे. तेमध्येप्रथमनांबेध्यानते संसारनाकारणिकछे. अने पाछलांबेध्यानते मुक्तिनांकारणवाचीछे ॥ ३ ॥ तेमांप्रथमआर्त्तध्यानना चारभेदकहेछे. प्रथमअनिष्टजेशब्दादिक, तेनोवियोगवांछे के रखेअनिष्टनोसंयोगथने; तेमअनिष्टमलेजे पीडाथायतेनुं चिंतनकरेतेथीव्याकुलथाय ॥ ४ ॥

इष्टानां प्रणिधानं च संप्रयोगवियोगयोः॥ निदानचिंतनं पाप
मार्त्तमित्थं चतुर्विधं ॥ ५ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र
संभवः ॥ अनतिक्लिष्टभावानां कर्म्मणां परिणामतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ बीजोभेद इष्टनुंचिंतनकरे; एटलेरखेइष्टवस्तुना संयोगनोवियोगथइजाय; त्रीजो नियाणुंकरे; चोथो रोगनाऔषधनीचिंताकरे. एचारआर्त्तध्याननाप्रकारछे ॥ ५ ॥ एमध्ये कापोत, नील, कृष्ण, एत्रणलेश्यानोसंभवछे. केमके जेमांअतिक्लिष्टभावननथी एवीकर्मनीपरिणतिना परिणामेंकरी एत्रणलेश्यानोसंभवछे॥६॥

क्रंदनं रुदनं प्रोच्चैः शोचनं परिदेवनं॥ ताडनं लुंचनं चेति लिं
गान्यस्य विदुर्बुधाः ॥ ७ ॥ मोघं निंदन्निजं कृत्यं प्रशंसन् पर
संपदं ॥ विस्मितः प्रार्थयन्नेताः प्रसक्तश्चैव दुर्जनः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ बकोरकरवो, ऊंचेस्वरेरडवुं, शोचनाकरवी, नामदइनेरुवुं, मारवुं, माथाना वालतोडवा, इत्यादिकने पंडितआर्त्तध्याननां लक्षणकहेछे ॥ ७ ॥ अमेमंदबुद्धिछैयें एमकहीनेपोतानुंकार्यनिंदे,अमेशुंपालीशुं ? मुक्तिमार्गतोमोहोटोछे, एमप्रशंसाकरे, एम विस्मितथको लोकपासे मांगतोफरे, इत्यादिकदुर्जननीरीतछे ॥ ८ ॥

प्रमत्तश्चेंद्रियार्थेषु गृध्नो धर्म्मपराङ्मुखः॥ जिनोक्तमपुरस्कुर्व
न्नार्त्तध्याने प्रवर्त्तते ॥ ९ ॥ प्रमत्तांतगुणस्थानानुगमे तन्महात्म
ना ॥ सर्वप्रमादमूलत्वा त्याज्यं तिर्य्यग्गतिप्रदं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेप्रमादीहोय, विषयमांलीनहोय, धर्मथीउलटोहोय, जिनवाणीनेगोपवे, तेवोपुरुष आर्त्तध्यानमांप्रवर्त्ते ॥ ९ ॥ माटेएध्यानउपला गुणठाणापामतांथकां प्रमादमांपाके, अनेएध्यान छठागुणठाणालगेंरहे; माटेमोटामुनियें सर्वप्रमादनुंमूल तथातिर्यंचगतिपमाडे एवुंजाणीनेएध्याननेछोडवुं ॥ १० ॥

निर्दयं वधबंधादिचिंतनं निबिडक्रुधा ॥ पिशुनासत्यमिथ्या
वाक् प्रणिधानं च मायया॥११॥ चौर्य्यधीनिरपेक्षस्य तीव्रक्रो
धानलस्य च ॥ सर्वाभिशंकाकलुषं चित्तं च धनरक्षणे ॥ १२॥

अर्थ ॥ हवेजेनिर्दयहोय, जीवनोवध बंधनादिकचिंतवे, आकरो क्रोधीहोय, चाडी ओहोय, जुठुंबोले, मिथ्यात्वनुं वचनबोले, माया कपटधरे ॥ ११ ॥ चोरीकरनार, परमार्थरहित, क्रोधरूपअग्नियें धमधमतोरहे, धनसंचयकरनार, धननेकाटीराखे, पणशंकायेंमेलुमनराखनार, एटलेरखेने कोइमारुंधनजुए अनेलेइजाय ॥ १२ ॥

एतत्सदोषकरणकारणानुमतिस्थिति ॥ देशाविरतिपर्यंतं रौद्रध्यानं चतुर्विधं ॥ १३ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र संभवः ॥ अतिसंश्लिष्टरूपाणां कर्मणां परिणामतः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंएध्यानकरवे, करावबे अने अनुमोदवानीस्थितियें करीएध्यान दोषनुंकारणछे. एध्यान चोथा अविरतिगुणठाणा अनेपांचमा देशविरति गुणठाणासुधी होय, एरीतेंरौद्रध्यानना चारभेदकह्या ॥१३॥ कापोत, नील, अने कृष्ण एत्रणलेश्यानो इहांसंभवछे. एअति संक्लिष्टरूपजे कर्मतेनापरिणामथीहोयछे ॥ १४ ॥

उत्सन्न बहुदोषत्वं नानामरणदोषता ॥ हिंसादिषु प्रवृत्तिश्च कृत्वाघं स्मयमानता ॥१५॥ निर्दयत्वाननुशयौ बहुमानः परापदि ॥ लिंगान्यत्रेत्यदोधीरैस्त्याज्यं नरकदुःखदं ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एप्रायें घणादोषनुंकारणछे. नानाप्रकारना जीवनेमारवाना दोषेंकरी हिंसादिकमां प्रवृत्तिथाय, पापकरीने खुशबक्तीपणुंमाने ॥ १५ ॥ निर्दयपणुं, पश्चात्तापपणुं, परआपदायें राजीपणुं, अनेमहाविषयीपणुं, एचिन्हेकरी एध्याननरकना दुःखनुंआपनारुंछे; माटेएध्यानने छांडवुं ॥ १६ ॥

अप्रशस्ते इमे ध्याने दुरंते चिरसंस्तुते ॥ प्रशस्तं तु कृताभ्यासो ध्यानमारोढुमर्हति ॥ १७ ॥ ज्ञानदेशकाले च स्वासत्तालंबनक्रमात् ॥ ध्यातव्यध्यानानुप्रेक्षा लेश्यालिंगफलानि च॥१८॥

अर्थ ॥ एवांएवेध्यानते महानिर्बलछे. एनोघणो परिचयकरियें, तोतेथीकडवाविपाकप्रगटे. माटेडाह्यापुरुषें अभ्यासकरता उज्ज्वलध्याने चढवुंयोग्यछे ॥ १७ ॥ हवेधर्मध्यानकहेछे. देशकालजोइने शुभभावनाकरवी, पोतानीसत्ताना आलंबननाक्रमथी ध्येय ध्याता अनेध्याननी अनुप्रेक्षा ते शुभलेश्याना चिन्हनुंफलछे ॥ १८ ॥

ज्ञात्वा धर्मं ततोध्यायेन्नतस्रस्तत्र भावनाः ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रवैराग्याख्याः प्रकीर्तिताः ॥ १९ ॥ निश्चलत्वमसंमोहो निर्जरा पूर्वकर्मणां॥संगाशंसा भयोछेदः फलान्यासां यथाक्रमात् ॥२०॥

अर्थ ॥ धर्मनेजाणीपछी ज्ञानजावना, दर्शनजावना, चारित्रजावना, अने वैराग्य जावना, एचारजावनाने धर्मजाणी ध्याववी ॥ १९ ॥ तेमां ज्ञानजावनाथी निश्चलपणुंथाय; अनेदर्शनजावनाथी अमूढपणुंथाय; वलीचारित्रजावनाथी पूर्वकर्मनीनिर्जराथाय; अने वैराग्यजावनाथी स्त्रियादिकनोसंग तथा पुजलनीइछा अनेजयतेनोछेद-थाय; एरीतेंएचारजावनानां फलजाणवां. ॥ २० ॥

स्थिरचित्तः किलैताभि र्याति ध्यानस्य योग्यतां ॥ योग्यतैव हि नान्यस्य तथाचोक्तं परैरपि ॥ २१ ॥ चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवत् दृढं ॥ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुडुष्करं ॥२२॥

अर्थ ॥ एजावनामां जेनुंचित्तस्थिरहोय, तेनेध्यानमांस्थिरतारहे. माटेतेप्राणीध्याननी योग्यतापामे; पणबीजोकोइनपामे. तेमजपरदर्शनमांपणकह्युंछे, तेकहेछे. ॥ २१ ॥ अर्जुनपुछेछे; हे कृष्ण ! मनतोचंचलछे; अनेशत्रुना सैन्यसरखुंदृढछे, तेमननोनिग्रहहुं-शीरीतेकरुं ? केमके पवननीपेठेमनडुष्कर अनेअग्राह्यछे ॥ २२ ॥

असंशयं महाबाहो मनोडुर्निग्रहं चलं ॥अभ्यासेन च कौंतेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ २३ ॥ असंयतात्मना योगो डुःप्राप्य इति मे मतिः ॥ वश्यात्मना तु यतता शक्योवाप्तुमुपायतः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ श्रीकृष्णकहेछे. हे महाबाहो ! के० मोटीछेबाहुजेनी एवा हे अर्जुन ! खरेखरुंमनचपलछे. तेनोनिग्रहकरवो तोकठणछे, तोपण हे कुंतिनापुत्र ! हे अर्जुन ! अभ्यास अने वैराग्येकरीने मनवशथाय एवुंछे. ॥ २३ ॥ हे अर्जुन ! जेनेपोतानो आत्मावश-नथी, एवोजेपुरुष तेनेध्यानयोगपामवो डुःकरछे, एवीमारीमतिछे. पणजेणेआत्माने वशकीधोछे, तेनेउद्यमेंकरी अने अभ्यासेंकरी ध्यानयोगपामवो सुलजछे ॥२४॥

सदृशप्रत्ययावृत्त्या वैतृष्ण्याद्वहिरर्थतः ॥ एतच्च युज्यते सर्वं जावनाजावितात्मनि ॥ २५ ॥ स्त्रीपशुक्लीबडुःशीलवर्जितस्थानमागमे ॥ सदा यतीनामाज्ञप्तं ध्यानकाले विशेषतः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ सरखोप्रत्ययजे विश्वासतेणेसहित अनेबाह्यपदार्थनी तृष्णायेंरहित तथा शुद्धजावनायेंजावितपुरुषने एआत्मावशकरवो सर्वप्रकारेंघटेछे ॥२५॥ स्त्री, पशु, नपुंसक डुःशीलादि रहित एहवीवसतिमुनियें सेववी, एमआगममां मुनिनेसदाय प्रजुएआज्ञा करीछे. तेमांपण ध्यानवेलायेंतो विशेषपणे कहिछे, एमजाणवुं ॥ २६ ॥

स्थिरयोगस्य तु ग्रामे विशेषः कानने वने ॥ तेन यत्र समाधानं स देशो ध्यायतो मतः ॥ २७ ॥ यत्रयोगसमाधानं कालोपीष्टः स एव हि ॥ दिनरात्रिक्षणादीनां ध्यानिनो नियमस्तु न॥२८॥

अर्थ ॥ स्थिरयोगवालायें गाममां अने विशेषेकरीने वगडामां तथा वनमांजिहां-चित्तसमाधानीमांरहे, तेस्थानकेंध्यानकरवुं ॥ २७ ॥ जेवखतयोगस्थिररहे, तेकालरुडो-समजवो; पणध्यानवालाने दिवस अथवा रात्रिनो नियम नथी ॥ २८ ॥

यैवावस्था जिता या तु न स्याध्यानोपघातिनी ॥ तया ध्यायेन्निष ण्णो वा स्थितो वा शयितोथवा ॥२९॥ सर्वासु मुनयोदेशकाला वस्थासु केवलं॥प्राप्तास्तन्नियमो नासां नियता योगसंस्थिता ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ ध्यानवंतमुनिने जेअवस्थायें,जेठेकाणे, अने जेवेलायें ध्याननेव्यवघातनलागे तेठेकाणे, तेवेलायें, तेरीतेंबेठा, उभा, अथवा सुताध्यानकरवुं ॥२९॥ सर्वेदेशकाल अव-स्थानेविषेरह्याजे, मुनितेनेकांइनियमनथी- केमकेतेनियतपणेयोगमांस्थिररह्याछे. ॥३० ॥

वाचना चैव पृछा च परावृत्यनुचिंतनं ॥ क्रिया चालंबनानीह स धर्मावश्यकानि च ॥ ३१ ॥ आरोहति दृढद्रव्यालंबनोविषसं पदं ॥ तथा रोहति स ध्यानं सूत्राद्यालंबनाश्रितः ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ वाचना, पृछना, परावर्त्तना, अनेअनुप्रेक्षा एधर्मनां आलंबन इहांकह्यां, ते अवश्यकरणीछे ॥ ३१ ॥ जेप्राणी खरीवस्तुनो आलंबकछे, तेप्राणी कठणठेकाणेपणजे-मचढे, तेमजेजैनसूत्रादिकनो जेआलंबकछे तेप्राणी रुडेध्यानेपण चढे ॥ ३२ ॥

आलंबनादरोद्भूत प्रत्यूहक्षययोगतः ॥ ध्यानाद्यारोहणभ्रंशो योगिनां नोपजायते ॥ ३३ ॥ मनोरोधाधिको ध्यानप्रतिपत्ति क्रमो जिने ॥ शेषेषु तु यथायोगसमाधानं प्रकीर्तितं ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ आलंबनना आदरथी प्रगट्योजे विघ्ननोक्षय तेनायोगथी ध्यानरूपपर्वत उपरचढतां, योगीश्वरने भ्रष्टपणुं थतुंनथी ॥ ३३ ॥ योगनिरोधध्यानतो केवलीनेछे. मन रोधकरण, इत्यादि अनुक्रम जिनमतमांछे- बाकी बीजादर्शनमांतो जेम नजरमांआवे तेमयोगनुंसमाधानकह्युंछे ॥ ३४ ॥

आज्ञापायविपाकानां संस्थानस्य च चिंतनात् ॥ धर्मध्यानोपयु क्तानां ध्यातव्यं स्याच्चतुर्विधं ॥३५॥ नयभंगप्रमाणाढ्यां हेतूदाह रणान्वितां ॥ आज्ञां ध्यायेज्जिनेंद्राणामप्रामाण्यकलंकितां ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ आज्ञा, अपाय, विपाक, अने संस्थान एचारभेदना चिंतनथकी धर्मध्यानवालायें धर्मध्यानकरवुं ॥ ३५ ॥ सातनय, सप्तभंगी, चारप्रमाणसहित तथाहेतु उदाहरणेसहित अनेअप्रमाणरूपदूषणेंरहितएवी जिनेश्वरनीआज्ञाध्याववीएप्रथमभेद. ॥ ३६ ॥

रागद्वेषकषायादिपीमितानां जनुष्मतां ॥ ऐहिकामुष्मिकांस्तां

स्ता नानापायान्विचिंतयेत् ॥३७॥ ध्यायेत्कर्मविपाकं च तं तं यो

गानुभावजं ॥ प्रकृत्यादिचतुर्भेदं शुभाशुभविभागतः ॥३८॥

अर्थ ॥ जे जीव राग, द्वेष, कषायवमेपीमायाछे, ते आलोक ने परलोकसंबंधीक ष्टते बीजेपाश्ये चिंतवे ॥ ३७ ॥ जेयोगनाअनुभवथीथयो, अने प्रकृति, स्थिति, रस, प्रदेशनाबंधथी नीपनो, एहवोजेकर्म्मनोविपाक तेने शुभाशुभवेंहेचणथीध्यावे ॥ ३८ ॥

उत्पादस्थितिभंगादि पर्यायैर्लक्षणैः पृथक् ॥ भेदैर्नामादिभिर्लो

कसंस्थानं चिंतयेद् भृतं ॥३९॥ चिंतयेत्तत्र कर्त्तारं भोक्तारं नि

जकर्मणां ॥ अरूपमव्ययं जीव मुपयोगस्वलक्षणं ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ उत्पाद, व्यय अने ध्रुव, काल, तथाभंगादि, पर्यायलक्षणेकरी जुदाजुदाभेदें नाम, स्थापना, द्रव्य, भावभेदेंकरी नेचउदराज्यलोकनुं संस्थानधारीनेचिंतवे॥३९॥ तिहांपोतानाकर्मनो कर्त्ताभोक्ता आत्माछे, एमचिंतवें. एजीवअरूपी, अविनाशी, अनेउपयोगलक्षणेयुक्तछे, एमचिंतवें ॥ ४० ॥

तत्कर्मजनितं जन्मजरामरणवारिणा ॥ पूर्णं मोहमहावर्त्तका

मौर्वानलभीषणं ॥ ४१ ॥ आशामहानिलापूर्णं कषायकलशो

च्छलत् ॥ असद्विकल्पकल्लोलचक्रं दधतमुध्दतं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मजनितरूप समुद्रवखाणेछे. तेजन्मजरा अने मरणरूप जले पूर्ण भर्योछे, तथा मोहरूपमोटा आवर्त्त, तद्रूपभमरी अने कामरूपवडवानलें करीभयंकर ॥ ४१ ॥ आशारूप प्रचंडवायुयें भरपूर, कषायरूप चारकलशायेंयुक्त, अने माठाविकल्परूपमहाउद्धत कल्लोलजिहांउछलेछे, एवोभवसमुद्र भयंकरछे ॥ ४२ ॥

हृदिस्रोतसिकावेला संपातदुरतिक्रमं ॥ प्रार्थनावल्लिसंतानं

दुःपूरविषयोदरं ॥४३॥ अज्ञानदुर्दिनं व्याप द्विद्युत्पातोद्भव

द्भयं ॥ कदाग्रहकुवातेन हृदयोत्कंपकारिणं ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेसमुद्रमां मनमां श्रोतसिका एटलेजे हर्ष तथाशोकनुंभराववुं, तेरूपवे लाएटलेभरतिकहियें, माटे जोएमांपध्योतो पढीनिकलवुंघणुंकठणछे; अने याचनारूप सेवालनो समूहछे, जेनेविषे तथाडुःखेपूर्णथाय एवोविषयरूप मध्यभागछेजेनो ॥ ४३ ॥ जिहांअंधकारेव्याप्युं एवुंअज्ञानरूपवादलुंछे, तथा जेमांआपदारूप वीजलीपरूवानो भयछे, अने कदाग्रहरूप खराब पवननो उद्भवथयोछे, तेणेकरीने देखताज्ञान नजरवा लानुंतो हैयुंधुजेएहवो, कर्म्मजनितसमुद्रबिहामणोछे ॥ ४४ ॥

विविधव्याधिसंबंधमत्स्यकछपसंकुलं ॥ चिंतयेच्च भयांभो
धि चलद्दोषाद्रिडुर्गमं ॥ ४५ ॥ तस्य संतरणोपायं सम्यक्त्व
दृढबंधनं ॥ बहुशीलांगफलकं ज्ञाननिर्यामिकान्वितं ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ जेसमुद्र विविधजातिनाजेरोगना संबंध रूपी मछ अने काचवायेंकरी आकुलछे, तथा जेमांचंचलता, शून्यता अने गर्वतेरूपजेदोषतद्रूप महोटापर्वतछे; एवो भवरूपसमुद्रनेचिंतवे ॥ ४५ ॥ हवेएवासमुद्रथीतरवानोउपाय, तेसमकितरूप दृढबं-धनछेजिहां, अने जेनेअढारहजार शिलांगरथरूपपाटीयां जड्यांछे, तथा ते जहाज ज्ञानरूपचलावनार निर्यामकजेना खुदा तेणेसहितछे ॥ ४६॥

संवरास्ताश्रवछिद्रं गुप्तिगुप्तसमंततः ॥ आचारमंरूपोद्दीप्ताप
वादोत्सर्गभूद्वयं ॥४७॥ असंख्यैर्डुर्धरैर्योधैर्डुःप्रधृष्यं सदाशये ॥
सद्योगरूपस्तंभाग्रन्यस्ताध्यात्मसितांशुकं ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ वली तेजहाजनापाटीआनेविषेरह्याजे छिद्रोतेहनेसंवररूपीकीचक तद्रूपते लवडेपुंख्यांछे, तथा मनोगुप्तिरूप गुप्तसुकानतेमार्गबतावेछे, तेणेकरीतेवाहण समुंचा-लेछे, तथा आचाररूपमंडपेशोभतुंथकां वली तेवहाणमांउत्सर्ग अने अपवादरूप बेजातनोमालभरेलोछे ॥४७॥ जेवहाणमां शुद्धअध्यवसायरूप घणाबलवंतसुभटो जेराग द्वेषादिशत्रुने डुःप्रधृष्यछेछे; तथा भलोजेयोग तेरूपकुवं जेथंभ तेनाउपर अध्या-त्मरूप उज्वल सढ खेंच्योछेजिहां ॥ ४८ ॥

तपोनुकूलपवनोद्भुतसंवेगवेगतः ॥ वैराग्यमार्गपतितं चा
रित्रं वहनं श्रिताः ॥ ४९ ॥ सद्भावनाख्यमंजूषा न्यस्तसच्चि
त्तरत्नतः॥यथाऽविघ्नेन गछंति निर्वाणनगरे बुधाः ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ तेसढथी तपस्यारूप अनुकूल पवनप्रगट्योछे, अने ते पवनेकरी संवेगगुण

रूपवेगप्रगट्योछे; तेणेकरी वैराग्यमार्गमां तेवहाणचालतुंजायछे; एहवुंचारित्ररूप जे वहाणतेमांबेठाथका मुनिराजोते ॥ ४९ ॥ रुडीभावनारूप मंजूषामां गुप्तपणेशुभ चित्तरूपीरत्नस्थाप्युंछे जेणे, एवा मुनि निर्विघ्नपणे मुक्तिरूपनगरनेपामेछे. ॥ ५० ॥

यथा च मोहपल्लीशे लब्धव्यतिकरे सति ॥ संसारनाटकोछेदा
शंकापंकाविले मुहुः ॥ ५१ ॥ सज्जीकृतस्वीयभटे नावं दुर्बुद्धि
नामिकां ॥ श्रिते दुर्नीतिनौवृंदरूढशेषभटान्विते ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ एवातनीखबर चोरनोराजाजे मोहरूपिओपल्लिपति तेनेपडी. तेवारेंतेमोह जेचोरनोराजाछे, तेणेविचार्युंजे रखेनेसंसाररूपनाटकनो उछेदथइजाय; एवीशंकारूप जेकचरो तेमांलेपाणोथको ॥ ५१ ॥ तेमोहराजा पोतानासुभटोने सज्जकरीने दुर्बुद्धि नामे जे नावतेमां पोतेबेठोथको दुष्टाचाररूपबीजाजे नावछे, तेमांवलीबीजाघणासुभटोने बेसारीनेपोतें भवसमुद्रमांआव्यो ॥ ५२ ॥

आगछत्यथधर्मेशभटौघे रणमंडपं ॥ तत्त्वचिंतादिनाराच
सज्जीभूते समाश्रिते ॥ ५३ ॥ मिथोलग्ने रणावेशे सम्यग् द
र्शनमंत्रिणा ॥ मिथ्यात्वमंत्रिविषमा प्राप्यते चरमा दशा ॥५४॥

अर्थ ॥ तेवखते धर्मराजाना सुभटोनाजेथोकते मोहनासैन्यनेजोइने रणमंडपभूमीमांआवी तत्त्वचिंताप्रमुखजे वहाणतेबेइने सज्जथयाथका ॥ ५३ ॥ तेपछीबेउनेमाहोमांहे युद्धचालवालाग्युं; तेमांसम्यग्दृष्टिजेप्रधान तेणेमिथ्यात्वप्रधानने विषमचरमदशाके० मरणदशापमाडी, एटले मृत्युप्रायकीधोछे ॥ ५४ ॥

लीलयैव निरुध्यंते कषायचरटा अपि ॥ प्रशमादिमहायोधैः
शीलेन स्मरतस्करः ॥ ५५ ॥ हास्यादिषट्कलुंटाकवृंदं वैरा
ग्यसेनया ॥ निद्रादयश्च ताड्यंते श्रुतयोगादिभिर्भटैः ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ अने उपशमादिक महासुभटे लीलायेंकरीने कषायरूप चोरटानेरोक्या तथा शीलसुभटे कंदर्परूपचोरनेजीत्यो ॥ ५५ ॥ वैराग्यनीसेनायेंकरीने हास्यादिकजे छचोरतेने जीत्या अने ज्ञानयोगादिकजेसुभटो तेणेनिद्रादिकने मारीकाढ्या ॥ ५६ ॥

भटाभ्यां धर्मशुक्लाभ्यां मार्तरौद्राभिधौ भटौ॥निग्रहेणेंद्रियाणां च
जीयते द्रागसंयमः ॥ ५७ ॥ क्षयोपशमनश्चक्षुर्दर्शनावरणा
दयः ॥ नश्यत्याशासैन्यं च पुण्योदयपराक्रमात् ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ वलीतेसमुद्रमां मनमां श्रोतसिका एटलेजे हर्ष तथाशोकनुंभराववुं, तेरूपवे लाएटलेभरतिकहियें, माटे जोएआंपड्योतो पछी निकलवुंघणुंकठणछे; अने याचनारूप सेवालनो समूहछे, जेनेविषे तथाडुःखेपूर्णथाय एवोविषयरूप मध्यभागछेजेनो ॥ ४३ ॥ जिहांअंधकारेव्याप्युं एवुंअज्ञानरूपवादलुंछे, तथा जेमांआपदारूप वीजलीपऊवानो भयछे, अने कदाग्रहरूप खराब पवननो उद्भवथयोछे, तेणेकरीने देखताज्ञान नजरवा लानुंतो हैयुंधुजेएहवो, कर्म्मजनितसमुद्रविहामणोछे ॥ ४४ ॥

विविधव्याधिसंबंधमत्स्यकछपसंकुलं ॥ चिंतयेच्च भयांभो
धि चलद्दोषाद्रिडुर्गमं ॥ ४५ ॥ तस्य संतरणोपायं सम्यक्त्व
दृढबंधनं ॥ बहुशीलांगफलकं ज्ञाननिर्यामिकान्वितं ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ जेसमुद्र विविधजातिनाजेरोगना संबंध रूपी मछ अने काचवायेंकरी आकुलछे, तथा जेमांचंचलता, शून्यता अने गर्वतेरूपजेदोषतद्रूप महोटापर्वतछे; एवो भवरूपसमुद्रनेचिंतवे ॥ ४५ ॥ हवेएवासमुद्रथीतरवानोउपाय, तेसमकितरूप दृढबं- धनछेजिहां, अने जेनेअढारहजार शिलांगरथरूपपाटीयां जड्यांछे, तथा ते जहाज ज्ञानरूपचलावनार निर्यामकजेना खुदा तेणेसहितछे ॥ ४६॥

संवरास्ताश्रवछिद्रं गुप्तिगुप्तसमंततः ॥ आचारमंरूपोद्दीप्ताप
वादोत्सर्गभूद्वयं ॥४७॥ असंख्यैर्दुर्धरैर्योधैर्डुःप्रधृष्यं सदाशये ॥
सद्योगरूपस्तंभाग्रन्यस्ताध्यात्मसितांशुकं ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ वली तेजहाजनापाटीआनेविषेरह्याजे छिद्रोतेहनेसंवररूपीकीचक तद्रूपते लवडेपुंर्याछे, तथा मनोगुप्तिरूप गुप्तसुकानतेमार्गबतावेछे, तेणेकरीतेवाहण समुंचा- लेछे, तथा आचाररूपमंडपेशोभतुंथकां वली तेवहाणमांउत्सर्ग अने अपवादरूप वेजातनोमालभरेलोछे ॥४७॥ जेवहाणमां शुद्धअध्यवसायरूप घणाबलवंतसुभटो जेराग द्वेषादिशत्रुने डुःप्रधृष्यछे; तथा भलोजेयोग तेरूपकुवं जेथंभ तेनाउपर अध्या- त्मरूप उज्वल सरु खेंच्योछेजिहां ॥ ४८ ॥

तपोनुकूलपवनोद्भुतसंवेगवेगतः ॥ वैराग्यमार्गपतितं चा
रित्रं वहनं श्रिताः ॥ ४९ ॥ सद्भावनाख्यमंजूषा न्यस्तसच्चि
त्तरत्नतः॥यथाऽविघ्नेन गछंति निर्वाणनगरे बुधाः ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ तेसरुथी तपस्यारूप अनुकूल पवनप्रगट्योछे, अने ते पवनेकरी संवेगगुण

रूपवेगप्रगट्योछे; तेणेकरी वैराग्यमार्गमां तेवहाणचालतुंजायछे; एहवुंचारित्ररूप जे वहाणतेमांबेठाथका मुनिराजोते ॥ ४ए ॥ रुडीजावनारूप मंजूषामां गुप्तपणेशुद्ध चित्तरूपीरत्नस्थाप्युंछे जेणे, एवा मुनि निर्विघ्नपणे मुक्तिरूपनगरनेपामेछे. ॥ ५० ॥

यथा च मोहपल्लीशे लब्धव्यतिकरे सति ॥ संसारनाटकोच्छेदा शंकापंकाविले मुहुः ॥ ५१ ॥ सज्जीकृतस्वीयजटे नावं दुर्बुद्धि नामिकां ॥ श्रिते दुर्नीतिनौवृंदरूढशेषजटान्विते ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ एवातनीखबर चोरनोराजाजे मोहरूपिओपल्लिपति तेनेपडी. तेवारेंतेमोह जेचोरनोराजाछे, तेणेविचार्युंजे रखेनेसंसाररूपनाटकनो उछेदथश्जाय; एवीशंकारूप जेकचरो तेमांलेपाणोथको ॥ ५१ ॥ तेमोहराजा पोतानासुजटोने सज्जकरीने दुर्बुद्धि नामे जे नावतेमां पोतेबेठोथको दुष्टाचाररूपबीजाजे नावछे, तेमांवलीबीजाघणासुजटोने बेसारीनेपोतें जवसमुद्रमांआव्यो ॥ ५२ ॥

आगछत्यथधर्मेशजटौघे रणमंरुपं ॥ तत्त्वचिंतादिनाराच सज्जीजूते समाश्रिते ॥ ५३ ॥ मिथोलग्ने रणावेशे सम्यग् द र्शनमंत्रिणा ॥ मिथ्यात्वमंत्रिविषमा प्राप्यते चरमा दशा ॥५४॥

अर्थ ॥ तेवखते धर्मराजाना सुजटोनाजेथोकते मोहनासैन्यनेजोश्ने रणमंडपजूमीमांआवी तत्त्वचिंताप्रमुखजे वहणतेलेश्ने सज्जथयाथका ॥ ५३ ॥ तेपछीबेउनेमाहोमांहे युद्धचालवालाग्युं; तेमांसम्यग्दृष्टिजेप्रधान तेणेमिथ्यात्वप्रधानने विषमचरमदशाके० मरणदशापमाडी, एटले मृत्युप्रायकीधोछे ॥ ५४ ॥

लीलयैव निरुध्यंते कषायचरटा अपि ॥ प्रशमादिमहायोधैः शीलेन स्मरतस्करः ॥ ५५ ॥ हास्यादिषट्कलुंटाकवृंदं वैराग्यसेनया ॥ निद्रादयश्च ताड्यंते श्रुतयोगादिजिर्जटैः ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ अने उपशमादिक महासुजटे लीलायेंकरीने कषायरूप चोरटानेरोक्या तथा शीलसुजटे कंदर्परूपचोरनेजीत्यो ॥ ५५ ॥ वैराग्यनीसेनायेंकरीने हास्यादिकजे ठचोरतेने जीत्या अने ज्ञानयोगादिकजेसुजटो तेणेनिद्रादिकने मारीकाढ्या ॥ ५६ ॥

जटाभ्यां धर्मशुक्लाभ्यां मार्तरौद्राजिधौ जटौ॥निग्रहेणेंद्रियाणां च जीयते द्रागसंयमः ॥ ५७ ॥ क्षयोपशमनश्चक्षुर्दर्शनावरणादयः ॥ नश्यत्याशासैन्यं च पुण्योदयपराक्रमात् ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ धर्मध्यानअनेशुक्लध्यान एवेसुजटें आर्त्तअने रौद्र एवेसुजटनेहण्या. तथा पांचइंद्रियनानिग्रहरूपसुजटें उतावलेंकरी असंयमरूपसुजटनेजीत्यो ॥ ५७ ॥ दर्शनावरणीयना क्षयोपशमसुजटें चक्षुर्दर्शनावरणादिक योद्धाओनेमास्या; वलीपुण्योदयनापराक्रमथी आशारूपसैन्य नासीगयुं ॥ ५८ ॥

सद्द्वेषगजेंद्रेण रागकेसरिणा तथा ॥ सुतेन मोहनूपोपि धर्मनूपेन हन्यते ॥५९॥ ततः प्राप्तमहानंदा धर्म्मभूपप्रसादतः ॥ यथाकृतार्था जायंते साधवो व्यवहारिणः॥ ६० ॥

अर्थ ॥ हवे द्वेषटेद्वेषरूपहाथीयेंबेठो तथा रागरूपसिंहेंसहित एहवो मोहराजा तेनेपण धर्मराजायें हण्यो ॥ ५९ ॥ तेवारपछी साधुरूपी व्यवहारिया धर्मराजानो प्रसादजेपसाय तेथीकृतार्थथइ आनंदपामी सुखेपोतानो व्यापारकरताथया ॥ ६० ॥

विचिंतयेत्तथा सर्वं धर्मध्याननिविष्टधीः ॥ ईदृगन्यदपि न्यस्तमर्थजातं यदागमे ॥६१॥ मनसश्चेंद्रियाणां च जयाद्योनिर्विकारधीः ॥ धर्मध्यानस्य स ध्याता शांतोदांतः प्रकीर्तितः ॥६२॥

अर्थ ॥ एरीतेंसर्वधारीलेवुं. तेधर्मध्यानमां जेमुनिनीबुद्धिपेठीछे, तेणेएनेतथाएना जेवा बीजापणजेआगमसिद्धांतमां पदार्थना समूहस्थाप्याछे, तेनुंचिंतनकरवुं ॥ ६१ ॥ जेमननो अनेइंद्रियनोजयकरीने निर्विकारबुद्धिवालो थयो, तेनेधर्मध्याननोध्याताकह्योछे. वलीशांतदांतपणुं पणतेहनेजहोय ॥ ६२ ॥

परैरपि यदिष्टं च स्थितप्रज्ञस्य लक्षणं॥ घटते ह्यत्र तत्सर्वं तथा चेदं व्यवस्थितं ॥६३॥ प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् ॥ आत्मन्येवात्मसंतुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीपण स्थितप्रज्ञनुंलक्षण एमकहेछे. अनेतेसर्वइहांघटेछे. तेमजइहांअवस्थितहोयतेजाणवुं ॥६३॥ हे अर्जुन ! जेवारेंकंदर्पनेछोडे, अने मननासर्वकामने त्यागी आत्मसंतोषीथइने आत्मानेविषेरहे,तेप्राणीने तेवारेंस्थितप्रज्ञावंतकहियें ॥ ६४ ॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ॥ वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ६५ ॥ यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभं ॥ नाभिनंदति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६६॥

अर्थ ॥ जेहनेदुःखमां उद्वेगनथी, अनेसुखनीइच्छानथी, तथाजेहना राग, नय, अने क्रोधगयाछे, तेमुनिने स्थितबुद्धिवालो कहियें ॥ ६५ ॥ जेनेविषयउपर स्नेहनथी, जेवुंतेवुं शुभअशुभ मलेतोपण रागद्वेषनथी, हे अर्जुन ! तेनीबुद्धिरुडीछे एमजाणवुं ॥ ६६ ॥

यदा संहरते चायं कूर्मोंगानीव सर्वशः ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्य स्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६७ ॥ शांतो दांतो भवेदीदृगात्माराम तया स्थितः ॥ सिद्धस्य हि स्वभावोयं सैव साधकयोग्यता ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ हे अर्जुन ! जेमकाचबो अंगनेसंहरी संकोचीराखे, तेमइंद्रिओनेविषयथी पाछीवाले तेनीबुद्धिमोटीछे ॥ ६७ ॥ तेशांतगुणअने दांतगुणीहोय, तेनेआत्मारामवडे आत्मामांरह्यो कहियें. सिद्धिनोस्वभावपण एवोजछे, अने एवाजेहोयतेनेजसाधकता-पणानी योग्यता कहियें ॥ ६८ ॥

ध्यातायमेव शुक्लस्याप्रमत्तः पादयोर्द्वयोः॥ पूर्वविद् योग्ययोगी व केवली परयोस्तयोः ॥ ६ए ॥ अनित्यत्वाद्यनुप्रेक्षा ध्यानस्यो परमेपि हि ॥ भावयेन्नित्यमभ्रांतः प्राणा ध्यानस्य ते खलु ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ एधणीशुक्ल ध्यानना बेपायानो अप्रमत्तथको ध्यावनारथाय. पूर्वधरपणेयोगी होय, अथवा अयोगीहोय; पण केवलीपणेहोय, पछीशेषबेपायाने ध्यावे ॥ ६ए॥ ध्यान नेविरामकालें अनित्यत्वादिभावना छंडेनही, विभ्रमरहितपणे नित्यभावनाभावे. तेध्या-नना प्राण जाणवा ॥ ७० ॥

तीव्रादिभेदभाजः स्युर्लेश्यस्तिस्र इहोत्तराः ॥ लिंगान्यत्राग मश्रद्धाविनयः सद्गुणस्तुतिः॥७१॥शीलसंयमयुक्तस्य ध्यायतोध र्मसुत्तमं ॥ स्वर्गप्राप्तिफलं प्राहुः प्रौढपुण्यानुबंधिनीं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ इहांउत्तरजे पाछलीत्रणलेश्याउ एटले तेजो, पद्म अने शुक्ल एत्रणलेश्या जेछे ते तीव्र, तीव्रतर, अनेतीव्रत्तम एत्रणभेदनीभजनारीछे. तेनाएचिन्हछेजे आगमनी श्रद्धा, विनय, रुडागुणनीस्तवनाकरवी ॥ ७१ ॥ शील अने संयमयुक्तप्राणीने उत्तम धर्मध्यान ध्यातेथके स्वर्गप्राप्तिफलकह्युंछे.तेमोटापुण्यानुबंधी पुण्यनेपामे ॥ ७२ ॥

ध्यायेच्छुक्लमथक्षांतिमृदुत्वाजीवमुक्तिभिः ॥ छद्मस्थोणौमनो धृत्वा व्यपनीय मनो जिनः ॥ ७३ ॥ सवितर्कं सविचारं सपृथ क्त्वं तदादिमं ॥ नानानयाश्रितं तत्र वितर्कपूर्वकश्रुतं ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ जेसमतापणे तथानिष्कपटपणे अनेजीवनमुक्तपणे एवीस्थितिराखीने शुक्ल ध्याननेध्यावे, अनेछद्मस्थपणे अणुमां मनधरीनेरहे, तेवारेंरागद्वेषनेजीते ॥ ७३ ॥ सपृथक्त्व, सवितर्क, सविचार; तेमांआदिनोजेसवितर्क एनामेशुक्लध्याननो पेहलोपायो तेनेनानाविध नयेसहित विचारपूर्वक श्रुतेकरीध्यावचो ॥ ७४ ॥

अर्थव्यंजनयोगानां विचारोन्योन्यसंक्रमः ॥ पृथक्त्वं द्रव्यप र्यायगुणांतरगतिः पुनः ॥ ७५ ॥ त्रियोगयोगिनः साधोर्वितर्का द्यन्वितं ह्यदः ॥ईषच्चलत्तरंगाऽब्धेः क्षोभाभावदशानिभं ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ अर्थ, अक्षर अने योगएनाजेविचार तेनुंमाहोमाहें संक्रमण तेनुनामपृथक्त्व कहियें; तेकेवुंछे ? के, द्रव्य, गुण, अनेपर्याय तेमांगतिछे जेनीएवुंछे. एपेहेलोभेद ॥७५॥ त्रणयोगे उपरम्या जेयोगी तेसाधुनेवितर्कादिक थोडाचंचलतरंगछे, जेमां एहवोजे समुद्र तेक्षोभनोजेअभाव तेवी दशासरखुंछे ॥ ७६ ॥

एकत्वेन वितर्केन विचारेण च संयुतं ॥ निर्वातस्य प्रदीपाभं द्वितीयं त्वेकपर्ययः ॥७७॥सूक्ष्मक्रियानिवृत्ताख्यं तृतीयं तु जिनस्य तत्॥अर्धरुद्धांगयोगश्च रुद्धयोगे द्वयस्य च ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ एकत्ववितर्कविचारनामजे बीजोपायो तेपवनरहितजे दीवो तेसरखोछे. एबीजोपायोते एकपर्यायरूपछे ॥ ७७ ॥ सूक्ष्मक्रियानिवृत्तिनामे त्रीजोपायो ते केवली नेहोय. तेमांबादरजे काययोगतेने अर्द्धरुंध्योछे, अने मन तथावचनएबेयोगनेसमस्तरुंधे तेवारें त्रीजोपायोध्यावे ॥ ७८ ॥

तुरीयं तु समुछिन्नक्रियमप्रतिपाति तत् ॥ शैलवन्निःप्रकंपस्य शैलेष्यं विश्ववेदिनः ॥ ७९ ॥ एतच्चतुर्विधं शुक्लध्यानमत्र द्व योः फलं ॥ आद्ययोः सुरलोकाप्तिरंत्ययोस्तु महोदयः ॥ ८० ॥

अर्थ ॥ हवेचोथापायामां क्रियाछेदीछे. अनेपोतेंपर्वतनीपरें अप्रतिपातिथयोछे,एहवो विश्ववेदी तेजगतना सर्वभावनो जाणजे केवली तेनिःप्रकंप पर्वतनीमाफक इहांप्रथम बे पायामां जेकालकरेते,स्वर्गगतिपामे. अने उपरना बेपायामांकालकरवाथी मोक्षपामे७९॥८०

आश्रवापायसंसारानुभावभवसंततीः ॥ अर्थे विपरिणामं वा नुपश्येच्छुक्लविश्रमे ॥ ८१ ॥ द्वयोः शुक्ला तृतीये च लेश्या सा परमामता ॥ चतुर्थशुक्लभेदस्तु लेश्यातीतः प्रकीर्तितः॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ शुक्लध्यानने विश्रामें आश्रवनोनाशदेखे. संसारनास्वरूपने भवनीपरंपरादेखे-अनेअन्यपदार्थें आत्मानुविपरिणामपणुंजुए ॥ ७१ ॥ एशुक्लध्यानना प्रथमबेपायामां बेलेश्या तथात्रीजेपायेतो परमउत्कृष्ट शुक्ललेश्याकहिछे, अने चोथोपायोजेछे तेतो ले-श्यायेंरहितकह्योछे ॥ ७२ ॥

लिंगं निर्मलयोगस्य शुक्लध्यानवतोऽवधः ॥ असंमोहो विवेकश्च
व्युत्सर्गश्चाभिधीयते ॥ ७३ ॥ अबंधाडुपसर्गेभ्यः कंपते न बि
नेति च ॥ असंमोहान्न सूक्ष्मार्थे मायास्वपि च मुह्यति ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ शुक्लध्यानवालाने निर्मलयोगहोय, तेनांलक्षणकहेछे. अहिंसकहोय; मोह-रहित, विवेकीहोय; अनेत्यागबुद्धियें युक्तहोय ॥ ७३ ॥ वलीअबंधीथयो माटे उपसर्ग अनेपरिसह तेथीकंपेनही; तथाबीहेपणनही; एअहिंसकलक्षणहोय, तथासूक्ष्मअर्थमां वलीमायामांमुझायनही; एअसंमोहएटले मोहरहितनुं लक्षणकह्युं ॥ ७४ ॥

विवेकात्सर्वसंयोगाद्भिन्नमात्मानमीक्षते ॥ देहोपकरणासंगो
व्युत्सर्गाज्जायते मुनिः ॥ ७५ ॥ एतद्ध्यानक्रमं शुद्धं मत्वा भगव
दाज्ञया ॥ यः कुर्यादेतदभ्यासं संपूर्णाध्यात्मविद्भवेत् ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ सर्वसंयोगथी आत्मानेजूदोदेखे, एविवेकनुंलक्षणछे. देहतथाउपकरणनी त्यागबुद्धियें असंगानुष्ठान वर्त्तेछे, एव्युत्सर्गनुंलक्षणछे. एचारलक्षण ६६ मा श्लोकमां कह्यांछे. तेनोएअर्थविवरिने कह्यो एलक्षणेजेमुनिहोयतते, ज्ञानपणुपामे ॥ ७५ ॥ एरीतें ध्याननोजेअनुक्रम तेशुद्धरीतें जाणीनेप्रभुनी आज्ञाप्रमाणे एनोअभ्यास जेकरशे, तेसं-पूर्णअध्यात्म ज्ञानीथाशे ॥ ७६ ॥ इतिध्यानाधिकारः षोडशः ॥

यत्र गछति परं परिपाकं पाकशासनपदं तृणकल्पं ॥
स्वप्रकाशसुखबोधमयं तद्ध्यानमेव भवनाशिभजध्वं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ माटेउत्कृष्ट परिपक्वध्यान पामेथके मुनिराजतेइंद्रनीपदवीनेपण तृणखला बरोबरगणे. माटे जेथकी आत्माने प्रकाशकारी सुखेज्ञानप्रगटे एवुं संसारनुं नाशकरनां रुंध्यानसेववुं ॥ १ ॥

आतुरैरपि जडैरपि साक्षात् सुत्यजा हि विषया नतु रागः ॥
ध्यानवांस्तु परमद्य निदर्शी तृप्तिमाप्य न तमृछति भूयः ॥२॥

अर्थ ॥ कामातुरजेप्राणी तथाजडजेप्राणीतेपण प्रगटपणे विषयसुखने सुखेंछांडे;

पणरागदिशा ढांकवीदुर्घटछे; अनेध्यानवंतमुनितो मात्र परमात्मानोजदर्शनीछे. तेत ध्यानमां तृप्तिपामिने फरीथीरागद्वेषने वांछेनही ॥ २ ॥

या निशा सकलनूतगणानां ध्यानिनो दिनमहोत्सव एषः ॥
यत्र जाग्रति च तेऽभिनिविष्टा ध्यानिनो नवति तत्र सुषुप्तिः॥३॥

अर्थ ॥ सर्वप्राणीने निद्रामांजे रात्रीजायछे, तेध्यानदिशावालाने एरात्रीते जाग्रत-महोत्सवनो दिवसछे. अनेसंसारीजीव विषयमांलीनथका जेवेलायेंजागेछे, तेवेलाध्या-नवालामुनिराजने शयनरूपछे॥ ३ ॥

संप्लुतोदकमिवांधुजलानां सर्वतःसफलकर्म्मकलानां ॥
सिद्धिरस्ति खलु यत्र तद्भैर्ध्यानमेव परमार्थनिदानं ॥४॥

अर्थ ॥ जेमअवमकुवानुं पाणी डोहोलुंरहेछे, तेमजेमांसर्वथकी सकलकर्मनाफलनी सिद्धिएहवोजे ध्यानरूपघट जेजलमां रमतोहोय, त्यांजलनिर्मलहोय. माटेसकलक्रि-याफलनी सिद्धिध्यानथीछे. ध्यानतेपरम अर्थनुं कारणछे. ॥ ४ ॥

बध्यते नहि कषायसमुद्भैर्मानसैर्ननतनूपनमद्भिः ॥
अत्यनिष्टविषयैरपि दुःखैर्ध्यानवान्निभृतमात्मनि लीनः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेध्यानवान् पुरुषते कषायजनित मनेकरी बंधातोनथी. तेहनेजोराजानीश्रे णी आवीनमस्कारकरे, तोपणतेनुंचित्तडोहोलायनही. अनेअनिष्टविषयनीप्राप्तिनादुः खेकरीपणनिश्चलपणु छोडेनहि. तेनेआत्मानेविषे लीनकहिये ॥ ५ ॥

स्पष्टदृष्टसुखसंभृतमिष्टं ध्यानमस्तु शिवशर्म गरिष्टं ॥ ना
स्तिकस्तु निहतो यदि न स्यादेवमादिनयवाङ्मयदंडः ॥६॥

अर्थ ॥ जेनेप्रगटदीठुं अनेमोक्षसुखेनर्खु एवुंजेध्यान तेइष्टछे, एटले मोक्षसुखथी पणध्यान मोटुंछे, पणजिहांसुधी शास्त्रनादंडथकी नास्तिकभावने अतिशयपणे हण्यो नथी, तिहांसुधीनथी; पणनास्तिकभावेंरहित जेज्ञानतेमोटुंछे ॥ ६ ॥

यत्र नार्कविधुतारकदीपज्योतिषां प्रसरतामवकाशः ॥ ध्यान
भिन्नतमसामुदितात्मज्योतिषां तदपि नाति रहस्यं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेनीआगल सूर्यनुंतेज, तथाचंद्रमा अनेतारानुंतेज, वलीदीपकनातेजनो प्रकाशअल्पछे, एवुंजेध्यान तेणेकरीने नेदाणोछेअज्ञानरूप अंधकारजेप्राणीनो एहवा मुदितआत्मावालानुंतेज तेगुप्तपणे पणआत्मानेविषे शोभेछे ॥ ७ ॥

योजयत्यमितकालवियुक्तां प्रेयसीं शमरतिं त्वरितं यत् ॥
ध्यानमित्रमिदमेव मतं नः किंपरैर्जगति कृत्रिममित्रैः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ शमतारतिरूप स्त्रीनीसाथें प्राणीनेघणा कालथीवियोग हतो. तेकारणमां वियोगवांगीने संयोगमिलावें एहवोध्यानरूप परममित्रछे. तेध्यानमित्र अमारेप्रमाणछे, एमध्यान करनारप्राणी बोलेछे. माटेसंसारमां कृत्रिम परमित्रथीशुंथाय? तेकृत्रिममित्रोकरतांतो ध्यानमित्रघणोश्रेष्ठछे ॥ ८ ॥

वारितस्मरबलातपचारे शीलशीतलसुगंधिनिवेशैः ॥
उच्छ्रितप्रशमतल्पनिविष्टो ध्यानधाम्नि लभते सुखमात्मा ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवे ध्याननेरंगमंदिरनी उपमाआपेछे. जिहांकामरूपतापटल्योछे, अने शीलरूप शीतलसुगंधीपसरीरहीछे, तेवीबेठकनेविषे शमतारूपमोटीतलाइछे, तेउपर आत्मावेठोथको पूर्णआनंदपामेछे; एवुंध्यानरूपमंदिरछे ॥ ९ ॥

शीलविष्टरदमोदकपीठं प्रातिहार्यशमतामधुपर्कैः ॥ ध्या
नधाम्नि भवति स्फुटमात्मा हुतपूतपरमातिथिपूजा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ ध्यानमंदिरमां शीलरूपसिंहासने इंद्रियदमनरूप जलनोबाजोटछे, अने शमतारूप पोलीओ तेएवाध्यानघरमां पवित्रपणे आत्मानेतेडीनेतेनी मधुपर्केकरी परोणागतकरेछे ॥ १० ॥

आत्मनो हि परमात्मनि यो भूभेदबुद्धिकृत एव विवादः ॥ ध्या
नसंधिकृदमुं व्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ आत्मा अने परमात्मानेविषे जेभेदबुद्धिनोविवादहतो, एटलेतेमांपंक्तिना विवादरूपझगडाहता, तेनेध्यानरूपसंधिपाले एटलेध्यानिपुरुषे तेविवादोनेटाल्या अनेजलदीथी एवेउनुंअभेदपणुंकरीआप्युं ॥ ११ ॥

क्वामृतं विषभृते फणिलोके क्ष्वयिण्यपि विधौ त्रिदिवे वा ॥
क्वाप्सरोरतिमतां त्रिदशानां ध्यान एव तदिदं बुधसेव्यं ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ विषथकीभरेलोजे नागलोकतिहां अमृतक्यांथीहोय? तेमदिनदिनक्षय पामतोजेचंद्रमा तेमांअमृतकिहांथीहोय? अनेदेवलोकमांअप्सरानायोगें राताजेदेवता तेमांपणअमृत किहांथीहोय? माटेएमात्र ध्यानरूपअमृतसत्यछे. तेनेजपंडितेसेववुं ॥ १२ ॥

गोस्तनीषु न सितासु सुधायां नापि नापि वनिताधरबिंबे ॥ तं
रसं कमपि वेत्ति मनस्वी ध्यानसंज्ञवधृतौ प्रथते यः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ गायनास्तनमांजेरसनथी, जेसाकरमांरसनथी, अनेजेरसअमृतमांपणनथी तेमजस्त्रीनाअधरजेहोठ तेमांपणजेरसनथी तेरसध्यानथीप्रगट्यो अनेसंतोषथी विस्तर्यो एह्वोजेकोइकअपूर्वरस तेनेतोकोइक पंम्तिजजाणेछे ॥ १३ ॥

इत्यवेत्य मनसा परिपक्वध्यानसंज्ञवफले गरिमाणं ॥ तत्र य
स्य रतिरेनमुपैति प्रौढधामममृतमाशु यशः श्रीः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारें मनेकरीनेपरिपक्वजे ध्यानतेथीप्रगटथुंजे फलतेह्नेमोटाइपणे जाणीनेतेमांजेरतिपामे तेमहातेजवंत कांतिवानपुरुषछे अनेतेनेज यशलक्ष्मीवरशे ॥१४॥
इतिश्रीध्यानस्तुत्यधिकारः सप्तदशःसमाप्तः ॥

इतिश्रीमहोपाध्यायश्रीयशोविजयगणिविरचिते अध्यात्म
सारप्रकरणे पंचमपरिछेदः तेमां पनरमांना ७३ सोल
मांना ७६ अने सतरमाना १४ मलीने १७३ काव्यछे.

आत्मध्यानफलं ध्यानमात्मज्ञानं च मुक्तिदं ॥ आत्मज्ञानाय
तन्नित्यं यत्नः कार्यो महात्मना ॥१॥ ज्ञाते ह्यात्मनि नो ज्ञूयो
ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ अज्ञानं पुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आत्माने ध्याननुंफलतेध्यानछे, पणआत्मज्ञानहोय तेवारेंजतेनेमुक्ति आपे, माटेज्ञानतेमोटुंछे. तोमोटापुरुषें आत्मज्ञानजणी उद्यमकरवो ॥ १ ॥ जेणे आत्माने जाण्यो तेनेफरीबीजुंकइजाणवानुंरह्युंनथी. अनेजिहांसुधी आत्मानेजाण्योनथी, तिहांसुधी बीजुंसर्वेजाण्युं ते निरर्थकछे ॥ २ ॥

नवानामपि तत्त्वानां ज्ञानमात्मप्रसिद्धये ॥ येनाजीवादयो ज्ञावाः
स्वज्ञेदप्रतियोगिनः ॥३॥ श्रुतो ह्यात्मपरोज्ञेदोऽनुभूतः संस्तुतो
पि च ॥ निसर्गादुपदेशाद्वा वेत्ति ज्ञेदं तु कश्चन ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नवेतत्त्वनुंपणजे जाणपणुंकरवुंछे, तेपणआत्मज्ञान प्रगटकरवानेअर्थेंछे. कारणके अजीवादिकजेज्ञाव तेपणआत्मज्ञानवकेंशमायछे ॥ ३ ॥ पोतानोअनेपारकोजे ज्ञेद तेहेनेज्ञेदरूपेंसांज्ञल्यो, अनुज्ञव्यो, परिचयथयोथको, सेहेजे अथवा उपदेशथकी कोइकज्ञेदनेजाणे ॥ ४ ॥

तदेकत्वपृथक्त्वाभ्यामात्मध्यानं हितावहं ॥ वृथैवाभिनिविष्टा नामन्यथा धीर्विंम्बना ॥ ५ ॥ एक एव हि तत्रात्मा स्वभावस मवस्थितः ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रलक्षणप्रतिपादितः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेएकत्व पृथक्त्वेंकरी आत्मज्ञान हितकारीथाय, नहीतो फोकटपणे मिथ्यात्वनीबुद्धिनीविटंबनाछे ॥ ५ ॥ तिहांएकजआत्मा स्वभावपणेरह्योछे, तेआत्मा तोज्ञानदर्शन अने चारित्ररूपलक्षणेकह्योछे ॥ ६ ॥

प्रभानैर्मल्यशक्तीनां यथारत्नान्न भिन्नता ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र लक्षणानां तथात्मनः॥७॥ आत्मनो लक्षणानां च व्यवहारो हि भिन्नता ॥ षष्ट्यादिव्यपदेशेन मन्यते न तु निश्चयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमरत्ननीकांति अने निर्मलता एबेजनीशक्तिकांइजुदीनथी, तेमज्ञानदर्शन अने चारित्रलक्षणे जेआत्मातेकांइजुदोनथी ॥ ७ ॥ आत्मा अनेआत्मानुंलक्षण एबे व्यवहारेजुदांछे. तेषष्टिआदेदइ विभक्तिनेव्यपदेशेंकरीमानियें, पणनिश्चयथीनही ॥८॥

घटस्य रूपमित्यत्र यथाभेदो विकल्पजः ॥ आत्मनश्च गुणानां च तथा भेदो न तात्त्विकः ॥९॥ शुद्धं यदात्मनो रूपं निश्चये ना नुभूयते ॥ व्यवहारो भिदाद्वारानुभावयति तत्परं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमघटनुंरूपतेनोभेदते विकल्पमात्रछे, तेमआत्माने अने गुणनेपरमार्थे भेदनथी ॥ ९ ॥ जेआत्मरूपशुद्धछे, तेनिश्चयनयेकरी अनुभवायछे; अने व्यवहारवर्डे परके० कायातेपणओलखायछे ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मनः पृथक्॥ आत्मा स्यादन्यथा नात्मा ज्ञानाद्यपि जडं भवेत्॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्या सर्वेषामेकतात्मनां ॥ निश्चितः कर्मजनितो भेदः पुनरुपप्लवः ॥ १२॥

अर्थ ॥ वस्तुभावेतोगुणनुं अने आत्मानुंरूपजुदुंनथी. जोजुदुंकहीयेंतो, आत्माछे तेअनात्माथाय; ज्ञानादिकेजडथाय ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्यपणे सर्वआत्मानी एकताछे; अनेनिश्चयथी तोकर्मेप्रगट्योजेभेद तेतोविटंबनारूपछे ॥ १२ ॥

मन्यते व्यवहारस्तु भूतग्रामादिभेदतः ॥ जन्मादेश्च व्यवस्थातो मिथोनानात्वमात्मनां॥ १३ ॥ न चैतन्निश्चये युक्तं भूतग्रामो य तोऽखिलः ॥ नामकर्मप्रकृतिजः स्वभावो नात्मनः पुनः ॥१४॥

अर्थ ॥ जीवसमूहनाभेदथी तथाबालजुवान वृद्ध एअवस्थावडेमांहोमांहे विचित्रपणुंजणायछे. एमव्यवहारनयवालोमानेछे ॥ १३ ॥ पणएवातनिश्चयनयवालो मानतोनथी. तेएमकेहेछेके, एजीवनेसर्वअवस्था नामकर्मना स्वभावथीप्रगटेछे; पणएआत्मानोमूलस्वभावनथी ॥१४॥

जन्मादिकोपि नियतः परिणामो हि कर्मणां॥न च कर्मकृतो भेदः स्यादात्मन्यविकारिणि ॥१५॥ आरोप्य केवलं कर्म कृतां विकृतिमात्मनि ॥ भ्रमंति भ्रष्टविज्ञाना भीमे संसारसागरे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जन्मजरादिक परिणाम कर्मनेवशछे, अनेआत्मातो अविकारीछे. तेथी कर्मनोभेद आत्मानेसंभवेनही. केमकेएआत्मस्वभावनही ॥ १५ ॥ जन्मजरादिक कर्मप्रकृतिछे, अनेकर्मजनित भावनेकेवल आत्मानेविषे आरोपीने भ्रष्टज्ञानी भयंकर संसारसमुद्रमां भमशे ॥ १६ ॥

उपाधिभेदजं भेदं वेतज्ञस्फटिके यथा ॥ तथा कर्मकृतं भेदमात्मन्येवाभिमन्यते ॥ १७ ॥ उपाधिकर्मजो नास्ति व्यवहारात्स्वकर्मणः ॥ इत्यागमवचो लुप्तमात्मवैरूप्यवादिनः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ स्फटिकमां जेममूर्खप्राणी भेदमानेछे, तेमउपाधिभेदें आत्मानेविषे प्रगट्यो जे कर्मकृतभेदते एमानेछे ॥ १७ ॥ पोतानाव्यवहारथी कर्मजनित जेउपाधिते नथी, एममानता आत्मविरूपवादी आगमनुंवचन लोपेछे ॥ १८ ॥

एकक्षेत्रस्थितोप्येति नात्मा कर्मगुणान्वये ॥ यथा भव्यस्वभावत्वाच्छुद्धो धर्मास्तिकायवत् ॥१९॥ यथा तैमिरकश्चंद्र मप्येकं मन्यते द्विधा ॥ अनिश्चयकृतोन्मादस्तथात्मानमनेकधा ॥ २० ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनीपरे एकक्षेत्रमां रह्योछेतोपण कर्मगुणनासंयोगने पामतो नथी, एवोआत्मा रुडास्वभावथी शुद्धछे ॥ १९ ॥ जेमतिमिरके० ग्रहणघेलो एकचंद्रनेबेचंद्रमानेछे, तेमनिश्चयनयनी वातविनानोजे प्राणीते उन्मादममत्वेकरी आत्मानेअनेकप्रकारे मानेछे ॥ २० ॥

यथानुभूयते ह्येकं स्वरूपास्तित्वमन्वयात् ॥ सादृश्यास्तित्वमप्येकमविरुद्धं तथात्मनां ॥२१॥ सदसद्वादपिशुनान् संगोपि व्यवहारतः ॥ दर्शयत्येकतारत्नं सतां शुद्धनयः सुहृत् ॥२२॥

अर्थ ॥ जेमअन्वयथी एकस्वरूपास्तिपणाने अनुभवियेछइयें, तेमसरखापणे जे वि द्यमानपणुंछे, तेथकीआत्माने एककहियें ॥ २१ ॥ व्यवहारनयथी सद्असद्वादरूपजे चाडियो तेनेछुपावीने शुद्धनयरूपजे मित्रछे, तेएकतारूप रत्ननेदेखाडेछे ॥ २२ ॥

नृनारकादिपर्यायै रम्यं तन्न विनश्वरैः ॥ भिन्नैर्जहाति नैकत्व मात्मद्रव्यं सदान्वयि ॥ २३ ॥ यथैकं हेमकेयूरकुंडलादि षु वर्त्तते ॥ नृनारकादिभावेषु तथात्मैको निरंजनः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ नरनारकादि पर्यायजेउपजेछे, अनेविणशेछे, तेभिन्नपर्यायकांइरम्यनथी; माटे तेपर्यायेंकरीने सदाअन्वयीजे शुद्धवंशीआत्मतत्त्व तेएकत्वपणाने छांडतुंनथी ॥ २३ ॥ जेमसुवर्णएकछे, पणबाजुबंध, कंठी, कुंडलादिक पर्यायेंवर्त्तेछे, तेमआत्माएकछे, पणनरनारकादिकना भवेकरीभिन्नछे; पणआत्मातो एकनिरंजनछे ॥ २४ ॥

कर्मणस्ते हि पर्याया नात्मनः शुद्धसाक्षिणः ॥ कर्मक्रिया स्वभावो यदात्मा तु न स्वभाववान् ॥ २५ ॥ नाणूनां कर्मणो वासौ भवस्व र्गः स्वभावजः ॥ एकैकविरहे भावान्नवतत्त्वांतरं स्थितं ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ जेनरनारकादिकभव तेतो सर्वकर्मना पर्यायछे, पणशुद्धसाक्षी निश्चयनयें आत्मपर्यायछे, अनेकर्मक्रियारूपजे स्वभावतेकांइआत्मानो मूलस्वभावनथी, आत्मा तो अज, अविनाशीस्वस्वभावीछे ॥ २५ ॥ कर्मनाजेपरमाणुआ तेआसंसार स्वर्गस्वा भाविक नथी; एकेकउज्वलतानेविषे भावथकी नवतत्त्वमां रह्युंछे ॥ २६ ॥

श्वेतद्रव्यकृतं श्वैत्यं भित्तिभागे यथा द्वयोः ॥ भात्यनंतभवसत्यं प्रपंचोपि तथेक्ष्यतां ॥ २७ ॥ यथास्वप्नावबुद्धोर्थो विबुद्धेन न दृ श्यते ॥ व्यवहारमते स्वर्गो ज्ञानिना न तथेक्षते ॥२८॥

अर्थ ॥ जेमश्वेतद्रव्यें कीधेलुंजे चित्रामण तेबेभीतना भागमांशोभे, तेमअनंतभ वसत्यतायें एप्रपंचनेजाणवुंछे ॥ २७ ॥ जेमस्वप्नमां दीठेलोअर्थ जाग्यापछीदेखायनही, तेमव्यवहारें स्वर्गादिकमार्ग श्रेष्ठछे. पणनियतप्रमाणीज्ञानीपुरुषने संसार नजणाय. ॥२८॥

मध्याह्ने मृगतृष्णायां पयःपूरो यदेक्षते ॥ तथा संयोगजः सर्गो विवेकख्यातिविप्लवे ॥ २९ ॥ गंधर्वनगरादीनामंबरेऽंबरो य था ॥ तथा संयोगजः सर्वो विलासो वितथाकृतिः ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ जेमसध्याह्ने मृगतृष्णावडे पृथ्वीउपर जलपूरदेखायछे, तेमसंयोगेंउपनी जे सृष्टितेविवेकनी ख्यातियेंनाशदेखायछे ॥ २९ ॥ जेमगंधर्वनगरवडे आकाशें आडंबर जणाय, तेमसंयोगेप्रगव्याजे सर्वविलास तेजुगछे ॥ ३० ॥

इतिशुद्धनयायत्तमेकत्वं प्राप्तमात्मनि ॥ अंशादिकल्पनाप्य
स्य नेष्टा यत्पूर्णवादिनः ॥ ३१ ॥ एक आत्मेति सूत्रस्याप्यय
मेवाशयोमतः ॥ प्रत्यग्ज्योतिषमात्मानमाहुः शुद्धनयाः खलु ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंशुद्धनयेजे एकत्वपणुप्रह्युं, तेआत्मानेविषे पाम्युं; एनेअंशादिकनीजे कल्पनातेपूर्णवादिने वाहालीनथी ॥३१॥ सूत्रमां, "एगेआया" एवोजेपाठछे, तेएजआ शयेंकह्योछे. एकप्रगटज्योतिरूपजे आत्मा तेतेजरूपछे,एमशुद्धनयवालाकेहेछे ॥ ३२ ॥

प्रपंचसंचयक्लिष्टान्मायारूपाद्बिभेमि ते ॥ प्रसीद भगवन्नात्म
न् शुद्धरूपं प्रकाशय ॥ ३३ ॥ देहेन सममेकत्वं मन्यते व्यव
हारवित् ॥ कथंचिन्मूर्ततापत्तेर्वेदनादिसमुद्भवात् ॥ ३४ ॥

अर्थ॥ निश्चयनयएकहेछेके,प्रपंचसंचयवडे संक्लिष्टएटले दुःखरूपएवुं जेएमायारूपछे, तेथकी हे भगवन् ! हे आत्मा! हुं बीहुंछुं. माटे प्रसन्नथाओ, अनेशुद्धरूप प्रकाशकरो! ॥ ३३ ॥ कोइकप्रकारेंरूपीपणुं पाम्योजे आत्मातेनेवेदनादिक उपजेछे. माटे व्यवहारनयवालो शरीरसाथें आत्मानुंएकत्वपणुं मानेछे ॥ ३४ ॥

तन्निश्चयो न सहते यदमूर्त्तो न मूर्त्ततां ॥ अंशेनाप्यवगाहेत
पावकः शीततामिव॥ ३५ ॥ उष्णस्याग्नेर्यथा योगाद् घृतमु
ष्णमिति भ्रमः ॥ तथामूर्त्तांगसंबंधादात्मा मूर्त्त इति भ्रमः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ पणतेवातनिश्चयवालो सहीशकतोनथी; जेमअग्निशीतलता पामतोनथी, तेमजेअरूपीआत्माछे, तेअंशेकरीनेपणरूपीपणाने पामतोनथी ॥ ३५ ॥ जेमबलताअग्निनेसंयोगें घृतउष्णथयुं एवोभ्रमछे, तेमरूपीशरीरने संयोगें आत्मापणरूपीदीसेछे, एप णभ्रमणाजदेखायछे ॥ ३६ ॥

न रूपं न रसो गंधो न न स्पर्शो न चाकृतिः ॥ यस्य धर्मो न शब्दो
वा तस्य का नाम मूर्त्तता ॥ ३७ ॥ दृशादृश्यं हृदाग्राह्यं वाचा
मपि न गोचरः ॥ स्वप्रकाशं हि यद्रूपं तस्य का नाम मूर्त्तता ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ केमकेरूप, रस, गंध, स्पर्श, संस्थान एटलावानांआत्मानेनथी; एतो पुद्गलनेछे, तेमजबाह्यधर्मपणनथी, शब्दनथी; तेवारेंआत्मानेशीरीतेरूपीकहेवाय? ॥ ३७ ॥ वलीआत्मानजरेदेखाय एवोपणनथी, मनथीग्रहवाय एवोपणनथी, तथावचने पणअगोचरछे, जेनुंरूपपोताना प्रकाशेछे, पणबीजना प्रकाशेनथी, तेनेरूपीकेमकेहेवाय?॥३८॥

आत्मा सत्यश्चिदानंदः सूक्ष्मात्सूक्ष्मः परात्परः ॥ स्पृशत्यपि च मूर्त्तत्वं तथा चोक्तं परैरपि ॥३९॥ इंद्रियाणि पराण्याहुरिंद्रियेभ्यः परं मनः ॥ मनसोपि परा बुद्धि र्योबुद्धेः परमस्तु सः ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ आत्मासत्यछे; चिदानंदमयीछे; सूक्ष्मथीपणसूक्ष्मछे; उत्कृष्टमांउत्कृष्टछे; ते मूर्त्तपणुंकेमफरसे ? तेमजपरदर्शनमां श्रीकृष्णकहेछे, हे ! अर्जुन ! शरीरमां इंद्रियोमोटीछे, अने इंद्रियोथीमनमोटुंछे; मनकरतां बुद्धिमहोटीछे, अनेतेथीआत्मामोटोछे ॥३९॥४०॥

विकले हंत लोकेस्मिन्नमूर्त्ते मूर्त्तता भ्रमात् ॥ पश्यत्याश्चर्यवद् ज्ञानी वदत्याश्चर्यवद्वचः ॥ ४१ ॥ वेदना येन मूर्त्तत्वं निमित्ता स्फुटमात्मनः ॥ पुद्गलानां तदापत्तेः किंत्वशुद्धस्वशक्तिजा ॥४२॥

अर्थ ॥ हंतइतिखेदे. आविकललोकनेविषे अमूर्त्तिआत्मानेविषे मूर्त्तिपणानाभ्रमथ कीजेज्ञानीपुरुषछे, तेअचंबोदेखेछे, अनेवचनपणअचंबानांबोलेछे ॥ ४१ ॥ जेमाटे जीवात्मानेमूर्त्तिनिमित्तवेदना प्रगटपणेछे, एमजोमानिएतो, पुद्गलनेवेदनाथइजोइयें; ते माटेएवेदनातो आत्माने अशुद्धशक्तिथी अनुभवथायछे ॥ ४२ ॥

अक्षद्वारा यथा ज्ञानं स्वयंपरिणमत्ययं ॥ तथेष्टानिष्टविषयस्पर्शद्वारेण वेदनां ॥४३॥ विपाककालं प्राप्यासौ वेदना परिणामभाक् ॥ मूर्त्तं निमित्तमात्रं नो घटे दंडवदन्वयि ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ इंद्रियद्वारेंकरी जेम ज्ञानदिशा पोतानीमेले परिणमेछे, तेमइष्टअनिष्टविषयस्पर्शद्वारेंकरी वेदनापरिणमेछे ॥ ४३ ॥ विपाककालपामीने आवेदनापरिणामने जेम आत्माभजेछे, तेथी अमारेमतें मूर्त्तिपणुंतेनिमित्तमात्रथयुं, अन्वयीके० सहचारीथयुं, जेमघटनेविषे दंडसहचारीछे तेनीपेठेजाणवुं ॥ ४४ ॥

ज्ञानाख्या चेतना बोधः कर्म्माख्यद्विष्टरक्तता ॥ जंतोः कर्मफलाख्या सा वेदना व्यपदिश्यते॥४५॥नात्मा तस्मादमूर्त्तत्वं चैतन्यं चातिवर्तते ॥ अतो देहेन नैकत्वं तस्य मूर्त्तेन कर्हिचित् ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ ज्ञाननामे चेतनातेबोधछे अने कर्मनामेद्विष्टरक्तताछे, तेवडेजीवने कर्मफलनामेवेदना व्यपदेशपामेछे ॥ ४५ ॥ तेमाटेअमूर्त्तिआत्माते चैतन्यपणाने उलंघेनही अनेमूर्त्तिमान् देहसाथेंआत्माने कोइप्रकारें एकत्वपणुंछेजनही ॥ ४६ ॥

सन्निकृष्टान्मनोवाणी कर्मादेरपि पुजलात् ॥ विप्रकृष्टाद्धनादेश्च
जाव्यैवं जिन्नात्मनः ॥४७॥ पुजलानां गुणोमूर्त्ति रात्मा ज्ञानगु
णः पुनः ॥ पुजलेच्यस्ततोजिन्नमात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥४८॥

अर्थ ॥ एरीतें कर्मवर्गणाना, मनोवर्गणाना, वचनवर्गणाना, जेआत्मानेसमीपवर्ति, एकत्वसंगतवर्ति एवातनधनादिक जेपुजल, तेतोसर्वेआत्माथी जिन्नके० दूरछे ॥ ४७ ॥ केमकेपुजलनोगुणतोमूर्त्तिमान्छे, अने आत्मातोज्ञानगुणमयछे, माटेपुजलथी आत्मद्रव्यजुडुंछे एमप्रजुकहेछे ॥ ४८ ॥

धर्मस्य गतिहेतुत्वं गुणो ज्ञानं तथात्मनः ॥ धर्मास्तिकायात्तद्भिन्न
मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥ ४ए ॥ अधर्मे स्थितिहेतुत्वं गुणो ज्ञान
गुणोऽसुमान् ॥ ततो धर्मास्तिकायान्यमात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥५०॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनोगुण गतिहेतुछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे, माटेधर्मास्तिकायथी आत्माजुदोछे, एमप्रजुकहेछे ॥ ४ए ॥ अधर्मास्तिकायनोगुण स्थितिहेतुछे अने आत्मानोज्ञानगुणछे, माटे अधर्मास्तिकायथी आत्मद्रव्यजुडुंछे एमप्रजुकहेछे ॥ ५० ॥

अवगाहो गुणो व्योम्नो ज्ञानं खल्वात्मनो गुणः ॥ व्योमास्ति
कायात्तद्भिन्नमात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥५१॥ आत्मज्ञानगुणः सिद्धः
समयो वर्त्तनागुणः ॥ तद्भिन्नं समयद्रव्यादात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥५२॥

अर्थ ॥ आकाशनोगुणअवगाहछे, अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटे आकाशास्तिकायथीआत्मद्रव्यजुडुंछे एमप्रजुकहेछे ॥ ५१ ॥ आत्माज्ञानगुणेसिद्धछे, काल वर्त्तनारूपछे माटेकालथी आत्मद्रव्यजुडुंछे, एमप्रजुकहेछे ॥ ५२ ॥

आत्मनस्तदजीवेच्यो विजिन्नत्वं व्यवस्थितं ॥ व्यक्तिजेदेन वादेशा
दजीवत्वमपीष्यते ॥ ५३ ॥ अजीवा जन्मिनः शुद्धजावप्राणव्य
पेक्षया ॥ सिद्धाश्च निर्मलज्ञाना द्रव्यप्राणव्यपेक्षया ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ एप्रमाणेअजीवथी आत्मानुजुंदापणुं सत्यछ्युं, पणजेदेंकरी देशथकी अजी

वपणुपणवंठीयेठइये ॥ ५३ ॥ जेम निर्मलज्ञानवंतसिद्धने द्रव्यप्राणनी अपेक्षारहितपणे अजीवपणुकहिये, तेमशुद्धभावप्राणनीअपेक्षारहित जीवनेअजीवकहियेठैये ॥५४॥

इंद्रियाणि बलं श्वासो च्छ्वासो ह्यायुस्तथा परं ॥ द्रव्यप्राणाश्चतुर्भेदाः पर्यायाः पुद्गलाश्रिताः ॥ ५५ ॥ भिन्नास्ते ह्यात्मनोऽत्यंतं तदेतै र्नास्ति जीवनं ॥ ज्ञानधैर्यसदाश्वासनित्यस्थितिविकारिभिः ॥५६॥

अर्थ ॥ इंद्रिय, बल, श्वासोछ्वास, अनेआयुष्य एरीतेंद्रव्यप्राण चारभेदेठे. एनापर्यायतो पुद्गलने आश्रीरह्याठे॥५५॥ तेआत्माथी अत्यंतजुदाठे, माटे एवडे कांइआत्माने जीववुं नथी. एपर्यायतो ज्ञान, धैर्य, तेनाश्वासनीजेकांइ नित्यस्थितितेणेकरी वर्जितठे ॥ ५६ ॥

एतत्प्रकृतिभूताभिः शाश्वतीभिस्तु शक्तिभिः ॥ जीवत्यात्मा स देत्येषा शुद्धद्रव्यनयस्थितिः॥५७॥ जीवो जीवति न प्राणैर्विना तै रेव जीवति ॥ इदं चित्रचरित्र्यंको हंत पर्यनुयुज्यतां ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ एप्रकृतिरूप शाश्वतीशक्ति तेणेकरीने आत्मासदैवजीवेठे, एशुद्धद्रव्यनयनी स्थितिजाणवी॥५७ जीवकांइप्राणेकरीने जीवतोनथी,एजीवतोप्राणविनाजीवेठे,एअचंबानीवात विचित्रकारी चरित्रसांभली कोणनहखें?अनेएवातशुद्धनयें कोणनजोडे? ॥५८॥

नात्मा पुण्यं नवा पापमेते यत्पुद्गलात्मके॥आद्यबालशरीरस्यो पादानत्वेन कल्प्यते ॥५९॥ पुण्यं कर्म शुभं प्रोक्तमशुभं पाप मुच्यते ॥ तत्कथं तु शुभं जंतून् यत् पातयति जन्मनि॥६०॥

अर्थ ॥ आत्मापुण्यनही, तेमपापपणनही, केमके पुण्यनेपापतो पुद्गलरूपठे. प्रथम बालकाले जेशरीरतेनेउपादानभावेकल्पेठे ॥ ५९ ॥ जेशुभकर्म तेपुण्यकहिये, अनेजे अशुभकर्मतेपापकहिये, तेवारे तेशुभकर्मजेठे, तेजीवनेसंसारमांकेमपाडेठे? ॥ ६० ॥

नह्यायसस्य बंधस्य तपनीयमयस्य च ॥ पारतंत्र्याविशेषेण फलभेदोस्ति कश्चन॥६१॥फलाभ्यां सुखदुःखाभ्यां न भेदः पुण्य पापयोः ॥ दुःखान्नभिद्यते हंत यतः पुण्यफलं सुखं ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ एकलोहनीबेडी अनेएकसुवर्णनीबेडी तेपणपरवशपणुंठे, माटेविचारीयेंतो फलभेदकांइनथी, तेमअशुभकर्मते लोहनीबेडीअनेजे शुभकर्मते सुवर्णनीबेडी ॥६१॥

सुखनांफल अने डुःखनांजेफलप्रगटेछे, तेथीपुण्यपापमध्ये कांइन्नेदनथी. जेथकीपुण्य सुखविलसे, एपुण्यनुंफलछे, तेपणडुःखरूपजछे ॥ ६२ ॥

सर्वं पुण्यफलं डुःखं कर्मोदयकृतत्वतः ॥ तत्र डुःखप्रतीकारे
विमूढानां सुखत्वधीः ॥६३॥ परिणामाच्च तापाच्च संस्काराच्च
बुधैर्मतं ॥ गुणवृत्तिविरोधाच्च डुःखं पुण्यज्नवं सुखं ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ माटेसर्वपुण्यनुंफल तेडुःखरूपछे, केमकेएकर्मनाउदयथीथायछे. माटेडुःख नाप्रतीकारनेविषे मूर्खनेसुखबुद्धिउपजेछे ॥ ६३ ॥ पंकितकहेछेके, परिणामथी, तथाता पथी,अनेसंस्कारथी गुणवृत्तिविरोधी एहवुं जेपुण्य,तेथीनीपनुं जेसुखतेडुःखप्रायछे॥६४॥

देहपुष्टे र्नरामर्त्यनायकानामपि स्फुटं ॥ महाजपोषणस्येव
परिणामोतिदारुणः ॥६५॥ जलुकाः सुखमानिन्यः पिबंत्यो
रुधिरं यथा ॥ ज्नुंजाना विषयान् यांति दशामंते ऽतिदारुणां ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ नरनेराजाने, तथा इंद्रादिकनेपण जेसुखमांशरीरनीपुष्टिथायछे, तेमोटाबो कडानीपेठेछे, ए कथाउत्तराध्ययनमां कहीछेतिहांथीजाणवी. जेवारे वधथयो, तेवारे परिणामेअतिडुःखछे ॥ ६५ ॥ जेमजलोलोही पीतांथका सुखमानेछे, तेमविषयज्नोग वतांथकाप्राणी सुखमानेछे, पणतेथीअंते माठीदशानेपामेछे ॥ ६६ ॥

तीव्राग्निसंगसंशुष्यत्पयसामयसामिव ॥ यत्रौत्सुक्यात्सदाक्षा
णां तप्तता तत्र किं सुखं ॥ ६७॥ प्राक्पश्चाच्चारतिस्पर्शात्पुटपाक
मुपेयुषि ॥ इंद्रियाणांगणेताप व्याप एव न निर्वृत्तिः ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ आकरीअग्निमां बलतरायेंकरी लोहपाणीपीयेछे, तेमज्यांसदा इंद्रियोनी उत्कंठाथीघणीज बलतरारहेछे, त्यां शुं सुखछे ? ॥ ६७ ॥ पेहेलाअथवापछी पणजेथकी अरतिउपजे, तेने अडकवाथी विपाकपामेथके इंद्रियोना समूहमां ताप व्यापेपणसुखन थाय,एटले पेहेलाबांध्यांजेकर्म तेजेवारे ज्नोगववामांआवे,तेवारेपण अरतिलेशनेजआवे, अनेपछी तेकर्मो विपाकेपण डुःखआपे ॥ ६८ ॥

सदा यत्र स्थितो द्वेषोल्लेखः स्वप्रतिपंथिषु ॥ सुखानुज्नवकाले
पि तत्र तापहतं मनः॥६९॥ स्कंधात् स्कंधांतरारोपे ज्नारस्येव
न तत्त्वतः ॥ अद्यादृद्यादपि डुःखस्य संस्कारोपि निवर्त्तते ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ जेहनेसदैवशत्रुउपर द्वेषरह्योछे, तेप्राणीजो घरमांसुखेबेठोहोय, तोपणतेह नेसुखनहोय. तेमविषयसुखमां अनुभवकालेपण विषयना तापेकरीजेनुंमनहण्युंछे, तेहनेसुख क्यांथीहोय? ॥ ६ए ॥ जेमएकखंभाउपरथी बीजाखंभाउपरभारलीधो, पणतत्वथी भारउतर्योनही एमइंद्रियोनेआनंदे दुःखनोसंस्कारमटतोनथी ॥ ७० ॥

सुखं दुःखं च मोहश्च तिस्रोपि गुणवृत्तयः ॥ विरुद्धा अपि वर्त्तंते दुःखजात्यनतिक्रमात् ॥ ७१ ॥ क्रुद्धनागफणाभोगोपमोभोगोद्भवो खिलः ॥ विलासश्चित्ररूपोपि भयहेतुर्विवेकिनां ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ सुख, दुःखअनेमोह एत्रणे जोपणविरुद्धछे, तोपणगुणवृत्तियेवर्त्तेछे; केमकेदुःखनीजातिने उलंघनकरीशकतानथी, माटे गुणवर्त्तिरूपछे ॥ ७१ ॥ क्रोधीनागनीफणना विस्तारसरखो, सर्वभोगविलासछे, वलीतेभोगविलास यद्यपिविचित्ररूपछे, तथापि विवेकीजनने तेभयनोहेतुछे. ॥ ७२ ॥

इत्थमेकत्वमापन्नं फलतः पुण्यपापयोः ॥ मन्यते यो न मूढात्मा नांतस्तस्य भवोदधेः ॥ ७३ ॥ दुःखैकरूपयोर्भिन्नस्तेनात्मा पुण्यपापयोः ॥ शुद्धनिश्चयतः सत्यचिदानंदमयः सदा ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ एरीतें फलनीअपेक्षायें पुण्यपापनुं एकत्वपणुंठराव्युं. पणजेमूर्खनमानशे, तेसंसारमांभटकशे; अनेजेमानशेतेभवसागरतरीजशे ॥ ७३ ॥ पुण्यअनेपाप एबेदुएकसरखादुःखरुपजछे;तेथकीआत्माभिन्नछे;शुद्धनिश्चयनयथी सदासत्चिदानंदमयछे.॥७४॥

तत् तुरीयदशाव्यंगरूपमाचरणान्वयात् ॥ भात्युष्णो द्योतश्री लस्य घननाशाद्रवेरिव ॥७५॥ जायंते जाग्रतोऽक्षेभ्यश्चित्रार्थिं सुखवृत्तयः ॥ सामान्यं तु चिदानंदरूपं सर्वदशान्वयि ॥ ७६॥

अर्थ ॥ एवाततेचोथीदिशायें जाणवायोग्यछे. जेमवर्षाकालमां मेघवरसीरह्या पछी वादलनाशथायछे, अनेसूर्यप्रभाशोभेछे, तेमव्यंगरूपविचित्र एहवाआचरणविशेषेंकरी चोथीदशामांशोभेछे ॥ ७५ ॥ जागताजीवने इंद्रियोनीसुखवृत्तिओ नानाप्रकारनीथायछे, पणसामान्य जे चिदानंदस्वरूप तेनेतोसर्वदशामां सरखुंसुखछे ॥ ७६ ॥

स्फुलिंगैर्यथा वन्हि र्दीप्यते ताप्यतेऽथवा ॥ नानुभूतिपराभूती तथैताभिः किलात्मनः॥ ७७ ॥ साक्षिणः सुखरूपस्य सुषुप्तौ निरहंकृतेः ॥ यथा भानं तथा शुद्धविवेके तदतिस्फुटं ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ तणषेंकरीनेजेम अग्निदीपेनही, तपेनही, तेमअनुभवादिकें करीने आत्मानेकइंनथी ॥ ७७ ॥ निद्रावस्थामांजेम सुखरूपनोसाखीजे आत्मातेने अहंकारें-रहितसुखनो भासथायछे, तेमशुद्धविवेकनेविषे तोप्रगटपणेसुखभासेछे ॥ ७८ ॥

तच्चिदानंदभावस्य भोक्तात्मा शुद्धनिश्चयात् ॥ अशुद्धनिश्चया
त्कर्म्मकृतयोः सुखदुःखयोः ॥७९॥ कर्मणोपि च भोगस्य स्रगा
देर्व्यवहारतः ॥नैगमादिव्यस्थापि भावनीयाऽनया दिशा ॥८०॥

अर्थ ॥ तेमाटेशुद्धनिश्चयनयथकी आत्माचिदानंदभावनोभोक्ताछे; अनेअशुद्धनिश्चयनयथकीकर्मेंकर्यांजे सुखदुःखतेनोभोक्ताछे ॥ ७९ ॥ फुलनीशय्या तथा फुलनांभूषण प्रमुखनेविषेभोगकर्मनी व्यवहारथीप्रवृत्तिछे; तेमनैगमादिकनयनी व्यवस्थापण आवीरीतें भावियें; तेनीचेंलख्याप्रमाणेछे. ॥ ८० ॥

कर्त्तापि शुद्ध भावाना मात्माशुद्धनयाद्विभुः॥ प्रतीत्यवृत्तिं यच्छुद्ध
क्षणानामेष मन्यते ॥ ८१ ॥ अनुपप्लवसाम्राज्ये विघ्नभागपरि
क्षये ॥ आत्मा शुद्धस्वभावानां जननाय प्रवर्त्तते ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धभावनोकर्त्ता आत्माशुद्धनयथी समर्थछे, जेवारेंशुद्धपरिणामीछे, तेसमर्थवीर्यवृत्तिनेआश्रयीने शुद्धभावनोकर्त्ताछे. एमशुद्धनयवालोमानेछे ॥ ८१ ॥ उपद्रव अंतरायादिकेरहित साम्राज्यपणानेविषे दुष्टभावनोनाशथयेछते आत्माशुद्धस्वभाव प्रगटकरवाने प्रवर्त्तेछे ॥ ८२ ॥

चित्तमेव हि संसारो रागादिक्लेशवासितं ॥ तदेव तैर्विनिर्मुक्तं भ
वांत इति कथ्यते ॥ ८३ ॥ यश्च चित्तक्षणक्लिष्टो नासावात्मा
विरोधतः ॥ अनन्यविकृतं रूपमित्यर्थत्वं ह्यदः पदं ॥ ८४ ॥

अर्थ ॥ जेरागादिक क्लेषवडें चित्तवासितहोय, तेसंसारकेहेवाय. अने रागद्वेषथीमुकाववुं तेनुंनाम मुक्तिछे, एमजाणवुं ॥८३॥ रागद्वेषेंव्याप्यो जेमननोक्लिष्ट परिणामछे, तेकांइआत्मानोनथी. आत्मानुंरूपतो सत्यार्थपणेअविकारीछे ॥ ८४ ॥

श्रुतवानुपयोगश्चेत्येतन्मिथ्या यथा वचः ॥ तथात्मा शुद्धरूपश्चे
त्येवं शब्दनया जगुः ॥ ८५ ॥ शुद्धपर्यायरूपस्तदात्मा शुद्धस्व
भावकृत् ॥ प्रथमाप्रथमत्वादि भेदोप्येवं हि तात्त्विकः ॥ ८६ ॥

अर्थ ॥ जेम आत्मानोउपयोग श्रुतवंतछे एखोटुंछे, तेमशब्दनयवालाकहेछेके आत्माशुद्धरूपनथी, एपणखोटुंछे ॥ ७५ ॥ शुद्धपर्यायरूप आत्मा, पूर्वपश्चात्पणानो जेभेद तेपणे शुद्धस्वभावनोकर्त्ताछे. एमतात्विकछे ॥ ७६ ॥

ये तु दिक्पटदेशीयाः शुद्धद्रव्यतयात्मनः ॥ शुद्धस्वभावकर्तृत्वं जगुस्ते पूर्वबुद्धयः ॥७७॥ द्रव्यास्तिकस्य प्रकृतिः शुद्धा संग्रह गोचरा ॥ येनोक्ता संमतौ श्रीमत्सिद्धसेनदिवाकरैः ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ दिगंबरएमकहेछेके, शुद्धद्रव्यार्थे वलीजेमउपयोगविनाश्रुतभणो तेनुंपण शुद्धस्वभावनुं कर्त्तापणुंजतुंनथी; केमकेतेतेने स्वभावेजपरिणमेछे. एमअपूर्वबुद्धितुं केहेवुंछे ॥७७॥ द्रव्यास्तिकनयनीजे शुद्धप्रकृतिछे, तेसंग्रहनयउपरचालेछे, केमकेसम्मति ग्रंथमां सिद्धसेनसूरियेंकह्युंछे ॥ ७८ ॥

तन्मते च न कर्तृत्वं भावानां सर्वदान्वयात् ॥ कूटस्थः केवलं तिष्ठत्यात्मा साक्षित्वमाश्रितः ॥ ७९॥ कर्त्तुं व्याप्रियते नायमुदासीन इव स्थितः ॥ आकाशमिव पंकेन लिप्यते न च कर्मणा ॥ ८०॥

अर्थ ॥ तेनेमते कर्त्तापणुंनथी, केमकेसदैवभावनो अन्वयछे. माटेकूटस्थकेवल निर्विक्रियजे आत्मा तेसाक्षीपणाने आश्रीनेरह्योछे ॥७९॥ करवानोव्यापार करतोनथी; उदासीनीपेठेरह्योछे. जेमकचरें आकाशलेपातुंनथी, तेमकर्मेआत्मा लेपातोनथी ॥८०॥

स्वरूपं तु न कर्त्तव्यं ज्ञातव्यं केवलं स्वतः ॥ दीपेन दीप्यते ज्योति नित्यपूर्वं विधीयते ॥८१॥ अन्यथा प्रागनात्मा स्यात्स्वरूपाननुवृत्तितः ॥ भवहेतुसहस्रेणाप्यात्मता स्यादनात्मनः ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ पोतानारूपनेनवीनकरवुंनथी. मात्रपोताना रूपनेपोताथकीकेवल जाणीलेवुंछे. जेमदीवेथी ज्योतिदीपेछे, तेमनित्य शाश्वतआत्मा स्वप्रकाशहोवाथी पोतेपोताने प्रकाशेछे ॥ ८१ ॥ एम आत्माने स्वप्रकाश अने शाश्वत अंगीकार करीएनही अने परप्रकाश तथा कर्तृत्व सिद्धमानीए तो, पूर्वेअनात्मपणुं अंगीकार करवुंपडशे. केमके क्रियावडे उत्पन्नथएलापदार्थनुं पूर्वेनुं रूप जुदुज होयछे, एवोनियमछे. एवी रीतेआत्मानी उत्पत्तिनी पूर्वे आत्माने अनात्मामानवो पडशे अने क्रियावडे आत्मानुं रूपांतरथाएछे, एममानीएतो, आत्मानी आवृत्ति अंगीकारकरवीपडशे. आवृत्ति अंगीकारकरीएतो संसारविषयक हजारोकृत्यरूप हेतुवडे हजारोरूप बदलाशे. त्यारें

पूर्व पूर्वनुरूपअनात्मा अने उत्तर उत्तरक्रियाजन्यरूप आत्मामानवो पमशे, अनेएम करवाथी छेवटें अनवस्था दोष प्राप्तथशे ॥ ए२ ॥

नये तेनेह नो कर्त्ता किंत्वात्मा शुद्धनावभृत् ॥ उपचारात्तु लोके षु तत्कर्तृत्वमपीष्यते ॥ ए३ ॥ उत्पत्तिमात्रं धर्माणां विशेषग्रा हिणो जगुः ॥ अव्यक्तिरावृत्तेस्तेषां नाभावादिति का प्रमा॥ ए४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआनयनेविषे कर्त्तापणुनथी केमके आत्माशुद्धनावनो धरनारछे अनेलोकमां उपचारथी तेनुंकर्त्तापणुकेहेछे ॥ ए३ ॥ विशेषग्राही जेज्ञानीपुरुषोछे तेपूर्वोक्तरीते आत्माने क्रियासिद्ध मानतानथी, किंतु आत्मानाधर्मोनी उत्पत्ति मानेछे. आंही कोइने शंकाथशे के,जेम आत्माअव्यक्तछे, तेमआत्मानाधर्मपण अव्यक्तछे; तो ज्यारेआत्मानी उत्पत्ति मानतानथी, त्यारेतेनाधर्मनीउत्पत्तिपण केममनाय ? तेनुं समाधानजे, केटलीएकअव्यक्त वस्तुओ आकाशनीपेठे जेमनीतेमरहेछे अने केटली एक रूपांतरने पामेछे; आत्माशाश्वताव्यक्तछे अने तेनाधर्मअशाश्वताव्यक्तछे माटेते ओनी आवृत्तिथायछे. केमके जेमआत्मानी अनावृत्तिमां घणांप्रमाणोछे,तेमआत्माना धर्मनीआवृत्ति नथवामां कोइप्रमाणनथी, तेथीआत्मानी पुनरावृत्ति थतीनथी; पणआत्माना धर्मोनीपुनरावृत्तिथायछे, एवुंसिद्धथयुं ॥ ए४ ॥

सत्वं च परसंताने नोपयुक्तं कथं च न ॥ संतानिनामनित्यत्वा त्संतानोपि न च ध्रुवं ॥ए५॥ व्योमाप्युत्पत्तिमत्तत्तदवगाहात्मना ततः ॥ नित्यता नात्मधर्माणां तद्दृष्टांतबलादपि ॥ ए६ ॥

अर्थ ॥ आत्मानुंउत्पत्तिरहितपणु दृष्टांतवमेदृढकरेछे. जेमपितापुत्ररूप परिवारनी उत्पत्तिमां पूर्वपूर्वपितारूप कारणथी उत्तरउत्तर पुत्ररूपकार्यनीउत्पत्तिथयाथी पितापणानोअनाव अनेपुत्रपणानोनाव थायछे, एमसंकलनाचालतां जेमपितानोनाश तेमपुत्रनो पणनाशथायछे. तेमअनात्माथी आत्मानीउत्पतिरूप प्रवाहथी पूर्वनोअनाव अनेउत्तरनो नावथतां पूर्वनीपेठे उत्तरनानाशनो पणसंनव सिद्धथायछे. एथीआत्मा अशाश्वत अनेनाशरूप ठरशे ॥ ए५ ॥ आकाशनादृष्टांतवडे आत्मानुंअचलपणु अने आत्मानाधर्मोनुं चलायमानपणु सिद्धकरेछे. जेमआकाशउत्पत्तिरहितछे, तेथीतेनुंरूपांतर थतुंनथी, तेमजआत्मापण उत्पत्तिरहित होवाथीतेनुं रूपांतरथतुंनथी. अनेआ-

स्मानाधर्म उत्पत्तिवानछे, तेथीतेनुं रूपांतरथायछे. अहींपण आकाशनुंव्यतिरेकपणे दृष्टांतलेवुं. जेवस्तुआकाशनीपेठे उत्पत्तिरहित नथीहोती, तेनुंरूपांतर थायछे ॥ ९६ ॥

ऋजुसूत्रनयसूत्रः कर्तृतां तस्य मन्यते ॥स्वयं परिणमत्यात्मा यं यं भावं यदा यदा ॥ ९७ ॥ कर्तृत्वं परभावानामसौ नाभ्युप गच्छति ॥ क्रियाद्वयं हि नैकस्य द्रव्यस्याभिमतं जिनैः ॥ ९८ ॥

अर्थ ॥ ज्यारेआत्मानुं रूपांतरथतुंनथी, त्यारेपरिणामवादनो उछेदथशे, एवीआशंकाकरीनेतेनो उत्तरकहेछे. ऋजुसूत्रनयवालो, ज्यारेज्यारे जेजेभावनापरिणामने आत्मापामेछे, त्यारेत्यारे तेतेभावरूप कर्मवडे परिणामरूप उत्पत्तिमानेछे, तथापिआत्माते कर्तृत्वपणे बीजाभावनी प्राप्तिथतीनथी, केमके एकद्रव्यमां बेक्रियासंभवेनही, एवुंजिनने अभिमतछे ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

भूतिर्या हि क्रिया सैव स्यादेकद्रव्यसंततौ ॥ न साजात्यं विना च स्यात् परद्रव्यगुणेषु सा ॥९९॥ न चैवमन्यभावानां न चेत्कर्त्ता परोजनः ॥ तदा हिंसादयादानहरणाय व्यवस्थितः ॥ १०० ॥

अर्थ ॥ भूतिएटले भावअनेक्रिया एबन्नेनोएक अर्थछे. ते एकद्रव्यसंततिनेविषे सामान्यविना नथाय; अनेद्रव्यनागुणनेविषे पणनथाय; केमकेकोइपण द्रव्य अपरभावनो कर्त्ताहोतोनथी. ॥ ९९ ॥ एमजआत्मानेविषे अन्यभावनुं कर्त्तापणुंनथी. त्यारेशिष्यपूछेछे, के हिंसा दया दानवगेरेनी व्यवस्थाकेम रहेशे? ॥ १०० ॥

सत्यं पराश्रयं न स्यात् फलं कस्यापि यद्यपि ॥ तथापि स्वगतं कर्म स्वफलं नाभिवर्त्तते ॥१०१॥ हिनस्ति न परं कोपि निश्चया न्न च रक्षति ॥ न चायुः कर्मणो नाशो मृतिजीवनमन्यथा ॥१०२॥

अर्थ ॥ त्यारेगुरुकहेछे, तारुंबोलवुं साचुंछे. कोइनेपण पराश्रये फलथतुंनथी, तथापिपोतानेविषे रहेलुंजेकर्म तेपोतानाफलनेविषे प्रवर्त्ततुंनथी ॥ १०१ ॥ निश्चयवडे बीजाकोइने कोइमारतोनथी; तेमकोइनुंकोइ रक्षणकरतोनथी; आयुकर्मनो नाश थायनही; अनेमृत्युजीवन अन्यथाथायनही ॥ १०२ ॥

हिंसादयाविकल्पाभ्यां स्वमताभ्यां तु केवलं ॥ फलं विचित्रमाप्नोति परापेक्षां विना पुमान् ॥१०३॥ शरीरी म्रियतां मा वा ध्रुवं हिंसा प्रमादिनः ॥ दयैव दयमानस्य बंधेपि प्राणिनां क्वचित् ॥१०४॥

अर्थ ॥ हिंसाअने दयानीपणमात्र कल्पना करवीछे. पोतानामतेकरी तोपरनीअपेक्षाथी पुरुषकेवल विचित्रफलने पामेछे ॥ १०३ ॥ जीवनोघातथाय, अथवानथाय, तोपण जेप्रमादीजीवछे, तेनेनिश्चयेकरी हिंसाथायछे; अनेजे दयावानूप्राणीछे तेनाहाथे कदाचूकोइजीवनी घातथइजाय, तोपणतेने हिंसालागतीनथी ॥ १०४ ॥

परस्य युज्यते दानं हरणं वा न कस्यचित् ॥ न धर्मसुखयोर्यत्ते
कृतनाशादिदोषतः ॥ १०५ ॥ भिन्नाभ्यां भक्तवित्तादिपुद्गला
भ्यां च ते कुतः ॥ स्वत्वापत्तिर्यतो दानं हरणं स्वत्वनाशनं ॥१०६॥

अर्थ ॥ कोइबीजाने दानदेतोनथी, अनेबीजानी पासेथीकोइकांइ हरणकरी लेतोनथी; धर्मअनेसुखनेविषे पणदानतथा हरणनो संभवनथी; केमके कृतनाशअने अकृतनोप्रसंग इत्यादिदोष प्राप्तथशे. जेमदानकर्युं, तेनोनाशथाय तेनेकृतनाशकहेछे, अनेजेबीजाने आप्युंनथी तेनुंहरणकरवुंते अकृतागम प्रसंगकहेवाय. एवादोष आत्मानेविषे प्राप्तथशे ॥ १०५ ॥ केमकेभोजन तथाधनादिकजेपुद्गल तेतोआत्माथीभिन्नछे. तोतेमांक्यांथी पोतापणुंआव्युं? माटेदानअनेहरणते पोताथीजनाशछे. ॥ १०६ ॥

कर्मोदयाच्च तद्दानं हरणं वा शरीरिणां ॥ पुरुषाणां प्रयासः क
स्तत्तूपनमति स्वतः ॥१०७॥ स्वागताभ्यां तु भावाभ्यां केवलं
दानचौर्ययोः ॥ अनुग्रहोपघातौ स्तः परापेक्षा परस्य न॥१०८॥

अर्थ ॥ वलीतेदान अनेहरणप्राणीने कर्मनाउदयथकीछे, त्यांपुरुषनेशोप्रयासछे ? तेतोपोतानीमेलेज उदयपामेछे ॥ १०७ ॥ पोतामांरह्या एवाजेदानअनेहरणना भाव तेणेकरीनेएकथी उपकारथाय; बीजाथीउपघातथाय; त्यांपरनीअपेक्षापरनेनही ॥१०८॥

पराश्रितानां भावानां कर्तृत्वाद्यभिमानतः ॥ कर्मणा बध्यतेऽज्ञा
नी ज्ञानवांस्तु न लिप्यते ॥१०९॥ कर्त्तैवमात्मनो पुण्यपापयो
रतिकर्मणोः ॥ रागद्वेषाशयानां तु कर्त्तेष्टानिष्टवस्तुषु ॥ ११० ॥

अर्थ ॥ परआश्रितजे तेनोहुंकर्त्ताछुं, एमअभिमानथीकहेवुं, एवांकर्मेअज्ञानीबंधायछे. पणज्ञानीतेवाकर्मे लेपातानथी ॥ १०९ ॥ माटेआत्मातेपुण्यपापरूप कर्मनोकर्त्ताछे, राग द्वेषआशयनो कर्त्ताछे; अनेइष्टअनिष्टवस्तुनेविषेपण आत्मा कर्त्ताछे. ॥११०॥

रज्यते द्वेष्टि चार्थेषु तत्तत्कार्यविकल्पतः ॥ आत्मा यदा तदा कर्म भ्रमदात्मनि युज्यते ॥ १११ ॥ स्नेहाभ्यक्ततनौ रेणुं रेणुना श्लिष्यते यथा ॥ रागद्वेषानुविद्धस्य कर्मबंधस्तथा मतः ॥११२॥

अर्थ ॥ जेवारेतेतेकर्मनाविकल्पथी आत्माने कोइपदार्थउपर रागदिशा अथवाद्वेषउपजेछे, तेवारेआत्मामां कर्मनोभ्रमजोडायछे ॥ १११ ॥ तेललगाडेलाशरीरे जेम रजनोलेपवलगेछे, तेमरागीअनेद्वेषी आत्माने कर्मनोबंधवलगेछे ॥ ११२ ॥

आत्मा न व्यापृतस्तत्र रागद्वेषाशयं सृजन् ॥ तन्निमित्तोपनम्रेषु कर्मोपादानकर्मसु ॥ ११३ ॥ लोहं स्वक्रियया भ्येति भ्रामकोपलसंनिधौ ॥ यथा कर्म तथा चित्रं रक्तद्विष्टात्मसंनिधौ ॥११४॥

अर्थ ॥ तिहांआत्मापोते कोइक्रियाकरतोनथी. पणराग द्वेषकरतोथको तेनिमित्तेपाम्यां जेकर्म तेनानिमित्तेकर्त्तापणुकर्मछे; पणतिहांआत्मातो रागद्वेष रूपकर्मनो मूकनारोछे. एटले आत्मा भावकर्मनो व्यापारवंतछे; पणद्रव्यकर्मनोव्यापारवंतनथी ॥ ११३ ॥ जेमचमकपाषाणते लोहने आकर्षे, तेणेकरीलोह पोतानीक्रियाये चमकपासेआवीमळे, तेमरागद्वेषीआत्मानीपासे कर्मआकर्षणेआवीमळेछे ॥ ११४ ॥

वारि वर्षन् यथांभोदो धान्यवर्षी निगद्यते॥ भावकर्म सृजन्नात्मा तथा पुद्गलकर्मकृत् ॥ ११५ ॥ नैगमव्यवहारौ तु ब्रूतः कर्मादिकर्तृतां ॥ व्यापारः फलपर्यंतः परिदृष्टो यदात्मनः ॥ ११६ ॥

अर्थ ॥ जेमपाणीवरसेछे, तेलोकव्यवहारे धान्यवरसेछे एमकहियें; तेमभावकर्मकरतोथको आत्मापुद्गल कर्मनोकर्त्ताकहियें ॥ ११५ ॥ नैगमअनेव्यवहारनयवाला तो कर्मादिकनोकर्त्ताआत्माने मानेछे; जेआत्मानो व्यापार तेफलपर्यंतदेखायछे ॥ ११६ ॥

अन्योन्यानुगतानां का तदेतदिति वा भिदा ॥ यावच्चरमपर्यायं यथा पानीयदुग्धयोः ॥ ११७ ॥ नात्मनो विकृतिं दत्ते तदेषा नयकल्पना ॥ शुद्धस्य रजतस्यैव शुक्तिधर्मप्रकल्पना ॥ ११८ ॥

अर्थ ॥ परस्परमल्याएवाजेनय तेने एवोनिर्णययावत् चरमपर्यायछे. परंतुजातिभेदकेमजणाय? जेमदुधअनेपाणीनासंयोगनीपेठेसंग्रहमाने नैगमने, अनेनैगममाने संग्रहने, एवेनयमांहोमांहेंभलेछे एमव्यवहारपण भलेछे ॥११७॥ वलीशुद्धनयवालो बोले-

छेजे, आत्मानेविकार नथी, आपतोएवीनैगम तथाव्यवहारनयनी कल्पनाछे. केनी पेठे? तेकहेछे. जेमशुद्धरूपानेछीपनोधर्म कल्पेछेतेनीपेठे जाणवुं ॥ ११८ ॥

मुषितत्वं यथा पांथगतं पथ्युपचर्यते ॥ तथा पुद्गलकर्मस्था विक्रियात्मनि बालिशैः ॥ ११९ ॥ कृष्णशोणोपि चोपाधेर्नाशुद्धः स्फटिको यथा ॥ रक्तोद्विष्टस्तथैवात्मा संसर्गात्पुण्यपापयोः ॥१२०॥

अर्थ ॥ जेमपंथीजनने लुंटतांलोककहेछेजे मार्गलुंटाणो, एलोकवाक्यछे; तेममूर्खप्राणी पुद्गलकर्ममांरही जेविक्रियाकरे तेआत्मानेविषे मानेछे ॥ ११९ ॥ जेमकालो अथवारातो स्फटिकछे तेउपाधिथीछे; माटेतेथीतेने अशुद्धनकहिये; तेमपुण्यपापना संयोगथी आत्मारागीद्वेषी कहेवायछे ॥ १२० ॥

सेयं नटकला तावद् यावद्विविधकल्पना ॥ यद्रूपं कल्पनातीतं न तु पश्यत्यकल्पकः ॥१२१॥कल्पनामोहितो जंतुः शुक्लं कृष्णं च पश्यति ॥ तस्यां पुनर्विलीनायामशुक्लं कृष्णमीक्षते ॥१२२॥

अने ॥ जिहांसुधीविविध प्रकारनीकल्पनाहोय, तिहांसुधीएसर्व नटकलारूपछे. पणकल्पनायेअतीतजेरूप तेनेतो जेअकल्पकहोय तेदेखे ॥ १२१ ॥ पणकल्पनायेमुंझाणो जेजीव तेतो धोलानेकालुंदेखेअनेकालाने धोलुंदेखे, अनेतेकल्पना जेवारेजाय तेवारे तोकालानेकालुंजदेखे, अनेधोलाने धोलुंजदेखे ॥ १२२ ॥

तद्ध्यानं सा स्तुतिर्भक्तिः सैवोक्ता परमात्मनः ॥ पुण्यपापविहीनस्य यद्रूपस्यानुचिंतनं ॥ १२३ ॥ शरीररूपलावण्यवप्रछत्रध्वजादिभिः॥वर्णितैर्वीतरागस्य वास्तवी नो पवर्णना ॥ १२४ ॥

अर्थ ॥ पुण्यपापरहित एहवाजेपरमात्माप्रभु तेनास्वरूपनुं चिंतववुं तेनेजध्यानकहिये, अनेस्तुतिपणतेज तथाभक्तिपणतेजकहिये ॥ १२३ ॥ पणशरीरनावर्णे, रूपेंकरी, लावण्यतायेकरी, समोसरणे, अनेछत्रेकरी, तथा इंद्रध्वजादिकेकरी जेपरमात्मानेवखाणवा एहवीस्तुतिने वस्तुतः साचीनकहिये ॥ १२४ ॥

व्यवहारस्तुतिः सेयं वीतरागात्मवर्त्तिनां॥ज्ञानादीनां गुणानां तु वर्णना निश्चयस्तुतिः ॥ १२५॥ पुरादिवर्णनाद्राजा स्तुतः स्यादुपचारतः ॥ तत्त्वतः शौर्यगांभीर्यधैर्यादिगुणवर्णनात् ॥१२६॥

अर्थ ॥ केमके एस्तुतितोव्यवहारेछे. पणजेमां वीतरागनाज्ञानादिकगुण प्रशंसवा

तेहने निश्चयस्तुतिकहिये ॥१२५॥ जेमदेशनगरादिकेकरी राजावखाणवो एउपचारेस्तुतिजाणवी;पणराजानुंबल, गांभीर्यता, धैर्यतानुंवर्णववुं, तेनिश्चयथीस्तुतिकहिये ॥१२६॥

मुख्योपचारधर्माणा मविभागेन या स्तुतिः॥ न सा चित्तप्रसादाय कवित्वं कुकवेरिव ॥ १२७ ॥ अन्यथाभिनिवेशेन प्रत्युतानर्थकारिणी ॥ सुतीक्ष्णखड्गधारेव प्रमादेन करे धृता ॥ १२८ ॥

अर्थ ॥ जेम कुकविनीकविताथी पंडितरीझेनही, तेमबाह्यउपचार देखीवेहेंचणविनानीजेस्तुतिकरिये, तेथकी चित्तप्रसन्नथायनही ॥१२७॥ जेपोतानाहठ–कदाग्रहेकरी मुखउपचारे स्तुतिकरी गुणमानेछे, पणतेउलटी अनर्थकारीछे; जेमप्रमादेकरीहाथमांझालेली तरवारनीधार तेजोकदाचूपडे, तोउलटी अनर्थ–विघातकरेछे; तेनीपरें तेस्तुतिपण अन्यथाजाणवी ॥ १२८ ॥

मणिप्रभामणिज्ञानन्यायेन शुभकल्पना ॥ वस्तुस्पर्शितया न्याय्या यावन्नान्यजनप्रथा ॥१२९॥ पुण्यपापविनिर्मुक्तं तत्त्वतस्त्वविकल्पकं ॥ नित्यं ब्रह्म सदाध्येय मेषाशुद्धनयस्थितिः ॥१३०॥

अर्थ ॥ मणिरत्ननीकांतिदेखीने जेममणिनुंज्ञानकेंओलखाणथायछे, एदृष्टांते, शुभकल्पनायेकरी आत्मानुंज्ञानहोयछे. पछीवस्तुस्पर्शिकवडेकरी योग्यताथायछे; पणज्यांसुधिनिरंजन प्रधानथीथयी, त्यांसुधीकर्मछे. ॥ १२९ ॥ मार्टेपुण्यपापरहितपणे तत्त्वथीनिर्विकल्पएवो शाश्वतोजे आत्मातेसदायध्यावो. एवीशुद्धनयनीस्थितिछे ॥१३०॥

आश्रवः संवरश्चापि नात्मा विज्ञानलक्षणः ॥ यत्कर्म पुद्गलादान रोधावाश्रवसंवरः ॥१३१॥ आत्मा दत्ते तु यैर्भावैः स्वतंत्रः कर्मपुद्गलान् ॥ मिथ्यात्वाविरति योगाः कषायास्ते तदाश्रवाः ॥१३२॥

अर्थ ॥ आत्माज्ञानरूपछे. मार्टेआत्माने आश्रव,संवरकांइनकहिये. पणकर्मपुद्गलनुंग्रहवुं तथारोधवुंते आश्रव संवरछे ॥ १३१ ॥ जेभावकरी स्वाधीनपणे कर्मपुद्गलने आत्माग्रहेछे, ते मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अनेयोगरूपआश्रवेकरीजाणवुं॥ १३२ ॥

भावनाधर्मचारित्र–परिषहजयादयः॥आश्रवोछेदिनो धर्मा आत्मनो भावसंवराः ॥ १३३ ॥ आश्रवः संवरो न स्या त्संवरश्चाश्रवः क्वचित्॥भवमोक्षफलाभेदोऽन्यथा स्याध्देतुसंकरात् ॥ १३४॥

अर्थ ॥ अनेज्ञावनाधर्मजेचारित्रछे, जेथकी परिषहनोजयथायते एआश्रवनो उ छेदकधर्मछे. एआत्माने ज्ञावसंवरकहियें॥१३३॥ जेआश्रवतेसंवरनथाय. अनेजेसंवर ते आश्रवनथाय. हेतुसंकर एबेजोकदापि एकरूपथाय,तोसंसारअने मोक्ष एबेनांफल पण एकथाय. पणतेमांज्ञेदरहेनही,एटलेज्यांआश्रवेकरीसंवरनुं संक्रमणथाय, त्यांमोक्षफल जाणवुं; अनेज्यांसंवरेकरी आश्रवनुंसंक्रमणथाय, त्यांसंसारफलजाणवुं ॥ १३४ ॥

कर्माश्रवश्च संवृण्वा न्नात्मा ज्जिन्नैर्निजाशयैः ॥ करोति न परापेक्षा मलंजूष्णुः स्वतः सदा ॥१३५॥ निमित्तमात्रजूता तु हिंसाऽहिंसा दयोखिलाः ॥ ये परप्राणिपर्याया न ते स्वफलहेतवः ॥१३६॥

अर्थ ॥ आश्रवज्ञावने संवरकरतोथकोजे पोतानाआत्माथीजूदानथी एवाजे पोता नाआशय तेणेकरी परअपेक्षानकरे केमकेतेपोताथी सदायसमर्थछे ॥१३५॥ जेहिंसाअ हिंसादिकसघलापरप्राणिनापर्याय ते आत्माने निमित्तजूतछे, पणपोतानेफलहेतुनथी १३६

व्यवहारविमूढस्तु हेतूंस्तानेव मन्यते ॥ बाह्यक्रियारतस्वांत स्तत्त्वं गूढं न पश्यति ॥१३७॥ हेतुत्वं प्रतिपद्यंते नैवेति नियम स्पृशः ॥ यावंत आश्रवाः प्रोक्ता स्तावंतोहि परिश्रवाः ॥ १३८ ॥

अर्थ ॥ व्यवहारमूढजेआत्मातेपरपर्यायने पोताना फलहेतुमानेछे, माटेजेनुंमन बाह्य-क्रियामांरक्तछे तेवाप्राणीगुप्ततत्त्वने देखतानथी ॥ १३७ ॥ जेहिंसादिक तथाअहिंसा दिक परपर्यायहेतुपणुंछे, तेनेपडिवजे अथवानथीपडिवर्जता, एहवोनियम तेतोनिश्चय नाजेफरसनाराछे तेहनेजेटलाआश्रवछे तेटलासंवररूपथाय ॥ १३८ ॥

तस्मादनियतं रूपं बाह्यहेतुषु सर्वथा ॥ नियतौ ज्ञाववैचित्र्या दात्मैवाश्रवसंवरौ ॥ १३९ ॥ अज्ञाता विषयासक्तो बध्यते विषयैस्तु सः॥ज्ञानाद्धि मुच्यते चात्मा नतु शास्त्रादिपुद्गलात् ॥ १४० ॥

अर्थ ॥ तेमाटे सदायबाह्यहेतुनेविषे अनियतरूपछे. नियतिनेविषे ज्ञावना विचित्र पणायकी आत्मातेज संवर आश्रवरूपछे ॥ १३९ ॥ जेअज्ञानीछे, अने विषयासक्तछे, तेहिजविषयमां बंधायछे. ते विषयतो आत्माने आत्मज्ञानथकी मूकाय, पणशास्त्रादिक पुद्गलथकी नमूकाय ॥ १४० ॥

शास्त्रं गुरोश्च विनयं क्रियामावश्यकानि च ॥ संवरांगतया प्रा हु र्व्यवहारविशारदाः ॥ १४१ ॥ विशिष्टा वाक्तनुस्वांतपुद्गला स्ते फलावहाः॥ये तु ज्ञानादयोज्ञावाः संवरत्वं प्रयांति ते॥१४२॥

अर्थ ॥ शास्त्रजणवुं, गुरुनोविनयकरवो, तथाआवश्यकादिकक्रियाकरवी एनेव्यवहारमां विचक्षणपुरुषोये संवरनांअंगकह्यांछे ॥१४१॥ जेरुडामनवचनकायायेकरी प्रवर्त्तवुं तेहनाजेपुन्नलतेफलदाइछे, पणजेज्ञानादिकजावछे तेसंवरपणानेपामेछे ॥ १४२ ॥

ज्ञानादिजावयुक्तेषु शुजयोगेषु तन्नतं ॥ संवरत्वं समारोप्य स्मर्यंते व्यवहारिणः ॥ १४३ ॥ प्रशस्तरागयुक्तेषु चारित्रादिगुणेष्वपि ॥ शुजाश्रवत्वमारोप्य फलजेदं वदंति ते ॥ १४४ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानादिकजावेयुक्त एवाजेशुजयोगतेनेविषे तन्नतजेसंवरत्वतेनेआरोपीने व्यवहारे प्रवर्त्तकजेजीव तेहर्षपामेछे ॥ १४३ ॥ रुडारागेयुक्त एवाजेचारित्रादिक गुणतेनेविषे पण शुजआश्रवपणु आरोपीने फलजेदकहेछे ॥ १४४ ॥

जवनिर्वाणहेतूनां वस्तुतो न विपर्ययः ॥ अज्ञानादेव तन्नानां ज्ञानी तत्र न मुह्यति ॥१४५॥ तीर्थकृन्नामहेतुत्वं यत्सम्यक्त्वस्य वर्ण्यते ॥ यच्चाहारहेतुत्वं संयमस्यातिशायिनः ॥ १४६ ॥

अर्थ ॥ संसारतथामोक्षनोहेतु तेनेवस्तुतत्त्वे कांइविपर्यासनथी, पणअज्ञाननायोग थकी तेजगाये विपर्यासपणुथायछे, पणतिहांज्ञानीपुरुष कांइमुंफातानथी ॥ १४५ ॥ जिननामकर्मनाहेतु समकितने वर्णवीएछैये, तेपणउपचारेंकहेवायछे. अनेआहारकशरीरनोहेतु जेअतिशयलब्धिवंत संयमिमुनि तेपणउपचारेकहेवायछे ॥ १४६ ॥

तपःसंयमयोः स्वर्ग हेतुत्वं यच्च पूर्वयोः ॥ उपचारेण तद्युक्तं स्याद् घृतं दह्यतीतिवत् ॥ १४७ ॥ येनांशेनात्मनोयोग स्तेनांशेनाश्रवोमतः ॥ येनांशेनोपयोगस्तु तेनांशेनास्यसंवरः ॥ १४८ ॥

अर्थ ॥ जेपूर्वेकहेला तपअनेसंयम स्वर्गहेतुछे, तेपणउपचारेकहिये; सर्वपरिणामेछे; पण जेमघीवलेछे एउपचारेछे,पणअग्निवलेछेएखरुछे ॥१४७॥ जेअंशेकरी आत्मा योगवर्त्ती थयो तेअंशेआश्रवकहिये अनेजेअंशेआत्माउपयोगी थयो तेअंशेसंवरकहिये ॥१४८॥

तेनासावंशविश्रांतौ बिभ्रदाश्रवसंवरौ ॥ नात्यादर्श इव स्वच्छा स्वच्छजागद्वयः सदा ॥१४९॥ शुद्धैव ज्ञानधारा स्या त्सम्यक्त्व प्राप्त्यनंतरं ॥ हेतुजेदाद्विशेषे तु योगधारा प्रवर्त्तते ॥ १५० ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआ अंशविश्रांतिनेविषे आश्रवसंवर धरेछे; तेमांएकछे मलिन, अने एकछेनिर्मल; जेमआरिशाना पछवाडानो जागमलिनछे, अने आगलोजागनिर्मलछे,

तेहनीपरें सदाय निर्मलमलिन एबेजागेकरीआत्माशोजेछे, आरिसानीपेठें ॥१४ए॥ समकितपाम्यापछी जेशुद्धजज्ञानधाराप्रगटे तेहेतुजेदथकी विशेषेकरी योगधाराप्रवर्त्तेछे१५०

सम्यग्दृशो विशुद्धत्वं सर्वास्वपि दशास्वतः ॥ मृडमध्यादिजाव स्तु क्रियावैचित्र्यतोजवेत्॥१५१॥यदा तु सर्वतः शुद्धि र्जायते धारयो र्द्वयोः ॥ शैलेशीसंज्ञितस्थैर्या त्तदा स्यात्सर्वसंवरः॥१५२॥

अर्थ ॥ समकितिने सर्वदशामां शुद्धपणुंछे. एमाटे लघु, मध्यम, उत्तम एजावजे छे, तेक्रियाविचित्रताथीछे ॥ १५१ ॥ जेवारेसर्वथी मनवचनकायानायोग तथाउपयोग, एबेधारानी शुद्धिथाय तेवारेशैलेशीनामेस्थिरताथी सर्वसंवरहोय ॥ १५२ ॥

ततोर्वाग् यच्च यावच्च स्थिरत्वं तावदात्मनः॥संवरो योगचांचल्यं यावत्तावत्किलाश्रवः ॥१५३॥ निर्जरा कर्मणोत्सादो नात्मा ऽसौ कर्म्मपर्ययः॥ येन निर्जीयते कर्म स्वजावस्त्वात्मलक्षणं ॥१५४॥

अर्थ ॥ अनेतेथीपेहेलांहेठला गुणगणेतोजिहांसुधी आत्माने स्थिरतापणुछे, तिहांसुधीआत्माने संवरवर्त्तेछे; अने जिहांसुधीयोगनीचंचलताछे, तिहांसुधीनिश्चयेथी जाणीये जे आत्मानेआश्रवपणुवर्त्तेछे. एमयावत् शैलेशीकरण सुधी समजवुं ॥ १५३ ॥ कर्मनुंजेशाडवुं तेनेनिर्जराकहिये. पणआत्मापोते कर्मपर्यायरूपनथी, तेमाटे कर्मनिर्जरियेएवोजेस्वजाव तेआत्मानुंलक्षणछे ॥ १५४ ॥

तत्तपोद्वादशविधं शुद्धज्ञानसमन्वितं ॥ आत्मशक्तिसमुद्भूतानां चित्तवृत्तिनिरोधकृत् ॥ १५५ ॥ यत्र रोधः कषायाणां ब्रह्मध्यानं जिनस्य च ॥ ज्ञातव्यं तत्तपः शुद्ध मवशिष्टं तु लंघनं ॥१५६॥

अर्थ ॥ निर्जरानुंकारणते शुद्धज्ञानेसहित प्रगट्यो अने चित्तनी चंचलवृत्तिनेरोकतो एहवो बारजेदेतपछे ॥१५५॥ जिहां प्रजुनाध्यानयुक्त कषायनोरोधछे, ब्रह्मचर्यनुंधरवुंछे, तेशुद्धतपजाणवो. एशिवाय बीजोतपतेमात्रलांघण करवा जेवोछे ॥ १५६ ॥

बुभुक्षादेहकाश्यं वा तपसो नास्ति लक्षणं ॥ तितिक्षाब्रह्मगुप्त्यादिस्थानं ज्ञानं तु तद्वपुः ॥१५७॥ ज्ञानेन निपुणेनैक्यं प्राप्तं चंदनगंधवत्॥निर्जरामात्मनो दत्ते तपोनान्यादृशं क्वचित् ॥१५८॥

अर्थ ॥ जुखेमरवुं, शरीरनेडुबलुंकरवुं, एतपनुंलक्षणनथी, पण जिहांज्ञानयुक्तपणे ब्रह्मचर्यनीगुप्ति, तथा तितिक्षाके० शांतिहोय एतपनुं स्वरूपछे ॥१५७॥ जेज्ञानसाथे एक

ताजावनेपाम्यो, एवोजेतपतेनेतपकहिये. जेमचंदनसाथे गंध एकताजावनेपाम्योछे, ते नीपरेएतपते ज्ञानेयुक्तथकोआत्मानेनिर्जराफलआपे. पण बीजीरीते नआपे ॥ १५८ ॥

तपस्वी जिनभक्त्या च शासनोद्भासनोछया ॥ पुण्यं बध्नाति बहु लं मुच्यते तु गतस्पृहः ॥१५९॥ कर्मतापकरं ज्ञानं तपस्तन्नैव वेत्ति यः ॥ प्राप्नोतु स हतस्वांतो विपुलां निर्जरां कथं ॥१६०॥

अर्थ ॥ निरासीभावेतपनोकरनारो तपसी जिन तथा ज्ञानभक्तिएकरी शासननेदि- पावे, अनेघणुंपुण्यबांधे; कर्मथीमुकाय ॥१५९॥ कर्मनेतापवे एवुंज्ञानछे, अनेतेज्ञानमां जेधणी तपनेनजाणे, तेतपसीनिर्बुद्धिनोधणी विपुलनिर्जराकेमपामे ? ॥ १६० ॥

अज्ञानी तपसा जन्मकोटिभिः कर्म यन्नयेत् ॥ अंतं ज्ञानतपोयु क्त स्तत्क्षणेनैव संहरेत्॥१६१॥ज्ञानयोगस्तपः शुद्ध मित्याहु र्मुनिपुंगवाः॥तस्मान्निकाचितस्यापि कर्मणो युज्यते क्षयः ॥१६२॥

अर्थ ॥ ज्ञानविनाएककोटि भवसुधी जेटलांतपकरे, तेतपमांजेटलांकर्मक्षय नथाय तेटलांकर्मोनेएकक्षणमां ज्ञानसहित तपेकरीखपावे ॥ १६१ ॥ माटेज्ञानयोगेजेतप- करवोतेशुद्धछे, एरीतेप्रभुकहेछे, केमकेतेतपथी निकाचितकर्मनो क्षयथायछे ॥ १६२ ॥

यदिहापूर्वकरण श्रेणिः शुद्धा च जायते॥ ध्रुवः स्थितिक्षयस्तत्र स्थितानां प्राच्यकर्मणां॥१६३॥तस्माद् ज्ञानमयः शुद्ध स्तपस्वी भावनिर्जरा॥शुद्धनिश्चयतस्त्वेषा शुद्धाशुद्धस्य कापि न॥१६४॥

अर्थ ॥ जेतपथीइहांअपूर्वकरण श्रेणिशुद्धथाय, वलिएथीपूर्वकर्मनी रहिजेकर्मनी स्थितिओ तेस्थितिओनिश्चयथी क्षयथाय ॥ १६३ ॥ तेमाटेज्ञानमयी जेशुद्धतपसीते नेनिश्चयथी शुद्धभावनिर्जराथाय, पणअज्ञानतपसीनेकांइनथाय ॥ १६४ ॥

बंधः कर्मात्मसंश्लेषो द्रव्यतः स चतुर्विधः ॥ तद्धेत्वध्यवसाया त्मा भावतस्तु प्रकीर्त्तितः॥१६५॥वेष्टयत्यात्मनात्मानं यथा सर्प स्तथा पुमान्॥तत्त भावैः परिणतो बध्नात्यात्मानमात्मना ॥ १६६ ॥

अर्थ ॥ कर्मनीसाथेआत्मानुंजेमलवुं तेनेबंधकहिये. तेबंधचारभेदेछे. तेहेतुअध्य वसाये आत्माभावथीकह्योछे ॥ १६५ ॥ जेमसर्पपोतानीमेले पोतेविंटायछे, तेमआत्मा- पण तेतेभावे परिणम्योथको पोतेपोतानीमेलेज कर्मसाथेबंधायछे ॥ १६६ ॥

बध्नाति स्वं यथा कोशकारकीटः स्वतंतुभिः॥आत्मनः स्वगतैर्भा
वैर्बंधने सोपमा स्मृता ॥१६७॥ जंतूनां सापराधानां बंधकारी न
हीश्वरः ॥ तद्बंधकानवस्थाना दबंधस्याप्रवृत्तिनः ॥ १६८ ॥

अर्थ ॥ जेमरेशमनोकीडो पोतानीलाळेकरी पोतेजबंधायछे, तेमआत्मा पोताना रागादिपरिणामेकरी पोतेजबंधायछे. एउपमाकही ॥ १६७ ॥ पणजेईश्वरकर्त्ताकहेछे, तेवातनिषेधेछे, अपराधीजीवनेकांइ ईश्वरबंधकर्त्तानथी. तेईश्वरबंधकर्त्तापणाना निषेध वाथकी अबंधनीथ आत्मानेविषे अप्रवृत्तछे. एटलेस्वभावेज बंधनिवृत्तिआत्मानेछेपण ईश्वरकर्त्तानथी ॥ १६८ ॥

तत्त्वज्ञान प्रवृत्त्यर्थे ज्ञानवन्नोदना ध्रुवा ॥ अबुद्धिपूर्वकार्येषु
स्वभावो तददर्शनात् ॥१६९॥ तथा भव्यतया जंतु र्नोदितश्च
प्रवर्त्तते ॥ बध्नन् पुण्यंच पापं च परिणामानुसारतः ॥ १७० ॥

अर्थ ॥ ज्ञानवंतनी जेप्रेरणाछे तेतत्त्वज्ञाननी प्रवृत्तिनेअर्थे ध्रुवछे; केमकेस्वभादिक जेअबुद्धिपूर्वक कार्यछे, तेनेविषे ए ज्ञाननी प्रेरणाकांइ देखातीनथी; तेमाटे ॥१६९॥ तेमज प्राणीभव्यताये प्रेर्योथको परिणामने अनुसारेकरी पुण्यपापने बांधतोथको प्रवर्त्तेछे ॥ १७० ॥

शुद्धनिश्चयतः स्वात्मा न बद्धो बंधशंकया ॥ भयकंपादिकं किंतु
रज्जावहिपतेरिव ॥ १७१ ॥ रोगस्थित्यनुसारेण प्रवृत्ती रोगि
णो यथा ॥ भवस्थित्यनुसारेण तथा बंधोपि वर्ण्यते ॥ १७२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धनिश्चयनयथकीतो आत्माअबंधकछे; पणभयकंपादिकेकरी बंधनीशंका रहेछे. जेमदोरडुंदेखी सर्पनीशंकाउपजेछे, तेनीपरेंजाणवुं ॥ १७१ ॥ रोगनीस्थितिने अनुसारेरोगछे. एटले जेदिवसेशरीरउपनुं, तेजदिवसथी सर्वरोगनीस्थितिओ शरीरमां उत्पन्नथयलीछे; अर्थात्शरीरकेवल रोगनीस्थितिरूपजछे. पणतेरोगजेवारेरोगीने कुपथ्यसेवेतेवारेप्रगटथायछे. तेवारेरोगीपुरुषजेम रोगनीप्रवृत्तिगणेछे, तेमजभवस्थितिने अनुसारे आत्माने बंधपणकहियेछैये ॥ १७२ ॥

दृढाज्ञानमयीशंका मेनामपनिनीषतः ॥ अध्यात्मशास्त्रमिहं
ति श्रोतुं वैराग्यकांक्षिणः ॥ १७३ ॥ दिशाप्रदर्शकं शाखा चंद्र
न्यायेन तत्पुनः॥प्रत्यक्षविषयां शकां न हि हंति परोक्षधीः ॥१७४॥

अर्थ ॥ दृढअज्ञानमय एह्वीजेशंका तेह्नेटालवानेश्क्तो, वैराग्यनो अभिलाषी थको, अध्यात्मशास्त्रसांभलवानेश्छेछे ॥ १७३ ॥ जेमनिर्मलचक्षुछतां ग्रहणवेलाजेवी नजरथइजायतोतेणेकरी एकचंद्रनीपासे बीजोचंद्रदेखे एन्यायेकरी जे अध्यात्मशास्त्र छे, तेपण दिशिनुंदेखाडनारछे. पणपरोक्षबुद्धिकांइ प्रत्यक्षविषयनी आशंकाने टालीनशके. एटलेअध्यात्मनोविषय प्रत्यक्षपणेनथी; परोक्षपणेछे. माटेस्वभावेजे अध्यात्मशास्त्रछे, तेपरोक्षबुद्धिछे. पणअनुभवते साक्षात् प्रत्यक्षपणाने हणीनशके; एटले आत्मानुभवि पुरुषो पोतानाअनुभवेकरी आत्मानोप्रत्यक्षअनुभवकरेछे ॥ १७४ ॥

शंखश्वैत्यानुमानेपि दोषात्पीतत्वधीर्यथा ॥ शास्त्रज्ञानेपि मिथ्याधीः संस्काराद्बंधधीस्तथा॥१७५॥श्रुत्वा मत्वा मुहुःस्मृत्वा साक्षादनुभवं ति ये ॥ तत्त्वं न बंधधीस्तेषामात्मबंधः प्रकाश्यते ॥ १७६ ॥

अर्थ ॥ जेममधुरानोरोगवंतपुरुष तेयद्यपिशंखने उज्वलतोजाणेछे, पणरोगेकरीतेने पीलावर्णनीबुद्धिथायछे; तेमशास्त्रेकरीआत्मानेनिर्मलतोजाणेछे, पणमिथ्यात्वबुद्धिना संस्कारथकी बंधरूपबुद्धिछे. एटलेआत्मानेरागी द्वेषीबंधरूपजेदेखेछे, तेअनुभवविना देखेछे. एभावार्थछे॥ १७५ ॥गुरुनामुखथी अध्यात्मशास्त्रनुं सांभलवुं तेनेश्रवणकेहेछे. तेसांभलेलाविषयनो अनुक्रमेपुनःपुनः अंतःकरणमां विचारकरवो तेनेमननकहेछे. अ नेसांभलीनेविचारकरी संशयतथाविपर्ययभावरहित थइने उक्तआध्यात्मिक विषयरूप स्वात्मतत्त्व अंतर्वृत्तिकरीने जेसाक्षात् अनुभवकरवुं, तेनेनिदिध्यासनकहेछे. एवास्वा त्मतत्त्वज्ञातृ पुरुषनेबंधबुद्धि होतीनथी; केमके बंधनेप्रकाशकरनारतोआत्मा पोतेजछे तेअनुभवथयापछी अज्ञानरूपबंधनो आश्रयकेमकरे ? ज्यांसुधी आत्माअनुभवअथवा ज्ञानवडे प्रकाशनेपाम्यो नहतो, त्यांसुधी तमरूपअज्ञान अनेबंधवान्थयोहतो, पण अनुभवथयापछी आत्मानेविषे बंधनथी ॥ १७६ ॥

द्रव्यमोक्षः क्षयः द्रव्यकर्म्मणां नात्मलक्षणं ॥ भावमोक्षस्तु तद्धेतुरात्मा रत्नत्रयान्वयी॥ १७७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रैरात्मैक्यं लभते यदा ॥ कर्माणि कुपितानीव भवंत्याशु तदा पृथक् ॥ १७८ ॥

अर्थ ॥ जेद्रव्यकर्मनो क्षयतेद्रव्यमोक्षछे, पणतेकांइआत्मानुंलक्षणनथी; मात्रतेद्रव्य कर्मनोक्षयतेमोक्षनो हेतुथायछे. पणआत्मातोरत्नत्रय परिणतिरूपछे. तेने द्रव्यकर्मनो क्षयतो उपचारथीमोक्षहेतुकहिये. पणवस्तुथीतत्त्वबुद्धियेकहेवायनही ॥१७७॥ तेज्ञानद र्शनचारित्रएरत्नत्रयीवडेकरीने जेवारेआत्माएकभावपणानेपामे, तेवारेजेकर्महतां, तेको द्धकसंसारीजीवजेम रीसाइनेघरमांथीजूदोनिकले, तेमजीवथीजुदांनिकलीजाय ॥ १७८ ॥

अतोरत्नत्रयंमोक्ष स्तदजावे कृतार्थता ॥ पाषं डिगणलिंगैश्च
गृहलिंगैश्च कापि न॥ १७९ ॥ पाषंडिगणलिंगेषु गृहलिंगेषु
ये रताः ॥ न ते समयसारस्य ज्ञातारो बालबुध्ध्यः ॥ १८० ॥

अर्थ ॥ एमाटेजेरत्नत्रयी तेथी मोक्षछे, पणतेरत्नत्रयीनेअजावे पाखंकीसाधुनासमूहने तथापाखंडी ग्रहीलिंगीने कृतार्थपणु कांइनथी ॥ १७९ ॥ जेपाखंकीसाधुना समूहमां तथापाखंकीग्रहीलिंगीमां जेप्राणीरक्तछे, तेहनेबालमतिवाला समजवा; पण तेसिद्धांतनासार एटलेरहस्यना जाणनथी ॥ १८० ॥

जावलिंगरता येषु सर्वसारविदो हि ते ॥ लिंगस्था वा गृहस्था
वा सिध्यंति धूतकल्मषाः ॥१८१॥ जावलिंगं हि मोक्षांगं ड्व्य
लिंगमकारणं ॥ ड्व्यं नात्यंतिकं यस्मान्नाप्येकांतिकमिष्यते ॥१८२॥

अर्थ ॥ अनेजेप्राणी जावलिंगेरातांछे, तेहनेसर्वसारना जाणकहिये. तेवारी साधुलिंगेहोय; अथवाग्रहस्थलिंगेहोय; तोपणपापकर्मधोइने मोक्षपामे ॥ १८१ ॥ केमकेजेजावलिंगते मोक्षनुंअंगछे, अनेड्व्यलिंगतोअकारणछे. ड्व्यलिंगतेकांइ अनेकनथी, माटेजेजावलिंगीछे, तेड्व्यलिंगने एकांतेनथीइछता ॥ १८२ ॥

यथा जातदशालिंगमर्थादव्यजिचारि चेत् ॥ विपक्षबाधका
जावात् तध्धेतुत्वे तु का प्रमा॥१८३॥वस्त्रावधारणेच्छाचे ह्याधिकात
स्य तां विना ॥ धृतस्य न किमस्थाने करादेरिव बाधकं ॥१८४॥

अर्थ ॥ इहांकोइकहेशेजे, नग्नपणेमोक्षछे. तेनेउत्तरकहेछे. जोएअर्थथी वातखरीछेतो आत्मानेमोहबाधकछे. तेमोहनोअजावथाशे, अनेजोनगनपणे मोक्षहोयतो मोह टालवानुं शुंप्रमाण ? तेवारेतोमोहटालवानी कांइजरूरनरहे ॥ १८३ ॥ वस्त्ररक्षणेएटले इछाविनापण जो वस्त्रराखतां मोक्षनीबाधकताछे, तोइछाविनाजे करादिक एटले हाथप्रमुखअंगधर्यांछे, तेपणमोक्षना बाधकथाशे, एटले दिगंबरलोककहेछेके वस्त्रराखवाथी मोक्षनीबाधकताछे, तेहनेनिरुत्तरकस्या ॥ १८४ ॥

स्वरूपेण च वस्त्रं चेत्केवलज्ञानबाधकं ॥ तदादिकुपटनीत्यैव
तत्तदावरणं जवेत् ॥१८५॥ इत्थं केवलिनस्तेन मूर्ध्नि क्षिप्तेन के
नचित्॥ केवलित्वं पलायंतेत्यहोकिमसमंजसं ॥ १८६ ॥

अर्थ ॥ जोपरमार्थथी जेवस्त्रछे तेहिजकेवलज्ञानने बाधकपणेहोयतो दिगंबरनी रीते केवलज्ञानावरणीयने ठेकाणे वस्त्रावरणीय एमथयुंजोइये. तेवस्त्रावरणीय कर्मदिगंब-

रीथी कहेतानथी, एटलीएनीचूकछे ॥१८५॥ एरीतेतो केवलिनेमाथे कोइकवस्त्रओढाडे तेवारेकेवलज्ञानने नासीजवुंजोइये, पणकेवलीने वस्त्रओढाडतां केवलज्ञाननासी जायछे एमतोथतुंनथी, माटे अहोइतिआश्चर्य शुंजुठुअसमंजस बोलोछो ! ॥ १८६ ॥

भावलिंगात्ततोमोक्षो भिन्नलिंगेष्वपि ध्रुवः ॥ कदाग्रहं विमुच्यै तद्भावनीयं मनस्विना॥१८७॥अशुद्धनयतो ह्यात्मा बंधोमुक्त इतिस्थितिः ॥ न शुद्धनयतस्त्वेष बध्यते नापि मुच्यते ॥१८८॥

अर्थ ॥ तेमाटे भावलिंगथीमोक्षछे, वेषनोकांइनियमनथी. कदापिद्रव्यथी अन्य लिंगीनोवेषहोय, तोपणनिश्चयेमोक्षछे. माटेकदाग्रहछांडीने बुद्धिवंतपुरुषे एरीतेविचारवुं ॥ १८७ ॥ अशुद्धनयथी आत्माबंधायछे अनेमुंकायपणछे. पणशुद्धनयेतो एआत्माबंधातोपणनथी, अनेमुंकातोपणनथी ॥ १८८ ॥

अन्वयव्यतिरेकाभ्यामात्मतत्त्वविनिश्चयं ॥ नवभ्योपि हि तत्त्वेभ्यः कुर्यादेवं विचक्षणः ॥१८९॥ इदं हि परमध्यात्म ममृतं ह्यद एव च ॥ इदं हि परमं ज्ञानं योगोयं परमः स्मृतः॥१९० ॥

अर्थ ॥ अन्वयव्यतिरेकेकरीने जेछतेतेछतुं, तेहनेअन्वयकहिये अनेजेअछते तेअछतुं तेहनेव्यतिरेककहिये ॥ तद्भावेतद्भावोअन्वयः तदभावेतदभावोव्यतिरेकः दंरु घटदृष्टांतेनभाव्यं ॥ विचक्षणपुरुषे एरीतेआत्मतत्त्वनो निश्चयनवतत्त्वेकरीने करवो ॥ १८९ ॥ एहिजउत्कृष्टअध्यात्मछे; एहिजअमृतोपमछे; वलीएहिज परमज्ञानछे; अने एहिजपरमयोगकह्योछे ॥ १९० ॥

गुह्याद्गुह्यतरं तत्त्वमेतत्सूक्ष्मनयाश्रितं ॥ न देयं स्वल्पबुद्धीनां तेह्येतस्य विडंबिकाः ॥१९१॥ जनानामल्पबुद्धीनां नैतत्तत्त्वं हितावहं ॥ निर्बलानां क्षुधार्त्तानां भोजनं चक्रिणो यथा॥ १९२॥

अर्थ ॥ छानामांछानुं एतत्त्वछे; माटेसूक्ष्मनयआश्रीने एतत्त्वअल्पबुद्धिने नसंभलाववुं; शामाटेकेजे अल्पमतिवाला तेएतत्त्वनाविटंबकछे ॥ १९१ ॥ माटेअल्पबुद्धिवंत प्राणीने एतत्त्वहितकरेनही, जेमचक्रवर्त्तिनुं खीरनुं भोजन निर्बलजेक्षुधायेपीड्या प्राणीहोयतेनेपचेनही, तेनीपरेंजाणवुं ॥ १९२ ॥

ज्ञानांशदुर्विदग्धानां तत्त्वमेतदनर्थकृत् ॥ अशुद्धमंत्रपाठस्य फणिरत्नग्रहो यथा ॥१९३॥ व्यवहारविनिष्णातो योज्ञीप्सति विनिश्चयं ॥ कासारतरणाशक्तः सागरं स तितीर्षति ॥ १९४ ॥

अर्थ ॥ तेमखंरूखंरू पंडिताइयेकरीने अर्धबळ्याएहवा जेप्राणी तेनेएतत्त्व अनर्थकारीछे; जेमअशुद्ध मंत्रनापाठवालो पुरुष सर्पनोमणिलेवाजाय, तेतेनेअनर्थकारी थाय; तेनीपरेंजाणवुं ॥१९३॥ जेप्राणीव्यवहारनयमां कुशलनथी, अनेनिश्चयनयने समजवाजाय, तेप्राणीतलावने तरवामांअसमर्थछतां समुद्रतरवा वांछेछे ॥ १९४ ॥

व्यवहारं विनिश्चित्य ततः शुद्धनयाश्रितः ॥
आत्मज्ञानरतोभूत्वा परमं साम्यमाश्रयेत् ॥ १९५ ॥

अर्थ ॥ व्यवहार अनेनिश्चयेकरी शुद्धनयनेआश्रीने आत्मज्ञाने रतथइ जेप्रवर्त्ते तेप्राणी परमपदनेपामे ॥ १९५ ॥ इतिआत्मनिश्चयाधिकारः अष्टादशसमाप्तः ॥

उत्सर्प्पद्व्यवहारनिश्चयकथाकल्लोलकोलाहलत्रस्यद्दुर्नयवादिक
च्छपकुलं भ्रश्यत्कुपक्षाचलं ॥ उद्यद्युक्तिनदीप्रवेशसुभगं स्या
द्वादमर्यादया युक्तं श्रीजिनशासनं जलनिधिं मुक्त्वा परं नाश्रये ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनरूप रत्नाकरनीस्तुति करेछे. तेमांप्रथम जिनशासनने समुद्रनीउपमाआपेछे, तेजिनशासनरूपसमुद्र केवोछे ? तेकहेछे. पसरतीएहवी व्यवहारतथा निश्चयनयनीजेकथा, तेरूपजेकल्लोल तेनोजेकोलाहल, तेणेकरीने दुष्टजननयवादिरूपी; काचबानोकुल जेनेविषे त्रासपामेछे वलीजेमांथी कुमतिरूपियपर्वत तुटीगयाछे, भागाछे; वलीजेमांमोहोटी उक्तियुक्तिरूपिणी नदीओनो प्रवेशछे तेणेकरीजेसुभग एटले मनोहरछे; वली स्याद्वादशैली रूपमर्यादायेजेयुक्तछे; एवो श्रीजिनशासनरूपरत्नाकरजेसमुद्र तेनेतजीनेपरदर्शननेकोणसेवे ? ॥ १ ॥

पूर्णपुण्यनयप्रमाणरचनापुष्पैः सदास्थारसैस्तत्त्वज्ञानफलैः
सदा विजयते स्याद्वादकल्पद्रुमः॥एतस्मात् पतितैः प्रवादकुसुमैः
षट्दर्शनारामभूर्यः सौरभमुद्धमत्यभिमतैरध्यात्मवार्तालवैः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएजिनमतने कल्पवृक्षकरीदेखाडेछे. जेमांपूर्णपवित्रजे सातनय अने चारप्रमाण तेहनीजेरचना तेरूपिय फुलमांहेथी सदैव श्रद्धारूपरसेकरीने तत्त्वज्ञानरूपफल नीपनांछे, एवोस्याद्वादनामाजे कल्पवृक्ष ते सदाजयवंतोवर्त्तो ! एकल्पवृक्षथी खरीपड्यांजे प्रवादरूपि फूल तेणेकरीने षद्दर्शनरूप वाडीनी जेधरतीते नवनवीअध्यात्मनी जेवार्त्ताओ तेनाजेलव तेणेकरीने भूयः कहेतांफरीने सुगंधपणाने प्रगटकरेछे ॥ २ ॥

चित्रोत्सर्गशुनापवादरचनासानुश्रियालंकृतः श्रद्धानंदनचंद नद्रुमनिभप्रज्ञोल्लसत्सौरभः ॥ भ्राम्यद्भिः परदर्शनग्रहगणैरासे व्यमानः सदा तर्कस्वर्णशिलोछ्रितो विजयते जैनागमो मंदरः ॥३॥

अर्थ ॥ हवे जिनशासनने मेरुपर्वतनी उपमा आपेछे. नानाप्रकारनो उत्सर्गमार्ग अनेरुडोजे अपवादमार्ग तेनीरचनावंत रूपशिखर तेनीशोभाये शोभितछे. वलीश्र द्धारूपनंदनवनमां चंदननोवृक्ष तेरूपजेबुद्धि तेथकीप्रगटीछे सुगंधजिहां एवोमेरुतु ल्यछे. वलीएमेरुपर्वतनीपछवाडे भमताजे परदर्शनरूपी ग्रहनासमूह तेणेकरीने सदासेवितछे. तथातर्कजे शुद्धविचार तेरूपिणीसुवर्णशिला तेणेकरीने उंचोछे. एवो जैनागमरूपजेमेरु तेजयवंतोवर्त्तो ! ॥ ३ ॥

स्याद्दोषापगमस्तमांसि जगति क्षीयंत एवक्षणाद् ध्वानो विशदी भवंति निबिडा निद्राहशोर्गच्छति॥यस्मिन्नभ्युदिते प्रमाणदिवस प्रारंभकल्याणिनी प्रौढत्वं नयगीर्दधाति स रविर्जैनागमो नंदतात् ॥४॥

अर्थ ॥ हवे जिनशासनने सूर्यनीउपमा आपी वखाणेछे. जैनागमरूपसूर्यनाउद यथकी चोरीजारीइत्यादिदोषटले, वलीजेथकी क्षणैकमां जगत्नेविषे अज्ञानरूपअं धारुं क्षयथाय, जेथकीमार्गनिर्मलथायछे, वलीचक्षुमांथी प्रमादरूपनिद्राजायछे, तथा जेमसूर्योदयथी दिवस उग्योएमसिद्धथायछे, तेमजैनागमना उदयथी प्रमाणनीसिद्ध तारूपदिवसनीसिद्धताथायछे, तेजाणियेदिवसनेप्रारंभे लोकप्रभातेमंगलिकबोलेछे; जे मसूर्यउदये लोकन्यायमार्गेचाले, न्यायनांवचनबोले, तेमजैनसूर्यउदये नयतथा आ गमनीवाणीते घणीरूडीरीतेप्रौढतापामेछे. एवोएजिनशासनरूपि सूर्य तेजयवं तोवर्त्तो ! ॥ ४ ॥

अध्यात्मामृतवर्षिभिः कुवलयोल्लासं विलासैर्गवां तापव्यापविनाशि भिर्वितनुते लब्धोदयोयः सदा॥तर्कस्थाणुशिरःस्थितः परिवृतः स्फा रैर्नयैस्तारकैः सोयं श्रीजिनशासनामृतरुचिः कस्यैति नो रुच्यतां ॥५॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनने चंद्रनीउपमाआपी वखाणेछे. अध्यात्मरूप अमृतनो जेवरसाद तेणेकरीने कुवलयजेपृथ्वीरूपकमल तेनेविकस्वर करेछे, एवो; वली ग- वांके० वाणीरूपकिरण तेनाविलासेकरीने संसारना तापनोजेसमूह तेनोनाशकरेछे, एवो; वली एचंद्रमाकेवोछे? जेतर्कविचार रूपीजे महादेव तेनामस्तकेरह्योथको उदयपाम्योछे, एवो; वली दीप्तजेनय तेरूपजेतारामंडल तेणेपरिवर्योथको फिरेछे,

एवो; जिनागमचंद्र ते आ जिनशासन रूपियोजेचंद्रमाते कोनेरुचिपणाने नउपजावे? अपितु सर्वनेउपजावेज ॥ ५ ॥

बौद्धानामृजुसूत्रतो मतमभूद्वेदांतिनां संग्रहात्सांख्यानां तत एव
नैगमनयाद् योगश्च वैशेषिकः॥शब्दब्रह्मविदोपि शब्दनयतः स
र्वैर्नयैर्गुंफिता जैनी दृष्टिरितीह सारतरता प्रत्यक्षमुद्वीक्षते ॥६॥

अर्थ ॥ जेनाअनेकनयमांथी एकेकानयग्रहणकरीने एटले ऋजुसूत्रनयथी बौद्ध नोमतप्रगट्यो, अनेसंग्रहनयथी वेदांतिकनो मतप्रगट्यो, तथासांख्यमतपण संग्रह नयथीजउपनो अनेनैगमनयथी योगमत अने वैशेषिकमत प्रगट्यो, शब्दनयथकी मीमांसकदर्शन उपनुं, अनेजैनशासनतो सर्वनयेकरीने गुंफितछे, तेमाटेआ जिनशा सनमां सारमांसारपणु प्रत्यक्षपणे रुडीरीतेदेखीये छैये ॥ ६ ॥

ऊष्मा नार्कमपाकरोति दहनं नैव स्फुलिंगावली नाब्धिं सिंधुजल
प्लवः सुरगिरिं ग्रावा नवाभ्यापतत् ॥ एवं सर्वनयैकभावगरिमस्था
नं जिनेंद्रागमं तत्तद्दर्शनसंकथांशरचनारूपं न हंतुं क्षमाः ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ उकलाटजे बाफ तेनोजेताप तेसूर्यनेजीतीशकेनही, अनेअग्निना कणि याते दावानलने जीतीनशके, तथासिंधुनदीनुंजल तेनोजेवेग तेलवणसमुद्रने ठेलीन शके, पथरनाजेखंड तेमेरुपर्वतने दाबीनशके, एमसर्वनयना एकताभावनी मोहोटाइ- नुंस्थानक एहवुं तीर्थंकरनुंजेआगम तेहने तेपरदर्शनीओ हणवानेसमर्थनथी, शामा टेजे ए जैनतेसर्वदर्शनीछे, अनेतेदर्शनीओ जैननाएकेकअंशीछे ॥ ७ ॥

दुःसाध्यं परवादिनां परमतक्षेपं विना स्वं मतं
तत्क्षेपे च कषायपंककलुषं चेतः समापद्यते ॥
सोयं निस्वनिधिग्रहव्यवसितौ वेतालकोपक्रमो
नायं सर्वहितावहो जिनमते तत्त्वप्रसिध्यर्थिनां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीजेटलाछे तेएकएकनामतने खंड्याविना पोतानामतने थापी शकतानथी. ए मतमतनोजेकदाग्रह तेनोप्रक्षेपकरतां कषायरूपकादवेकरीने मनम लिनथायछे. एकदाग्रहनो व्यापारतेतो दरिद्रीनाघरनोनिधान हरवाने वेतालगयो तेप्रायजाणवो. एउपक्रम सर्वजिनमतनेविषे हितकारीनथी. माटे अर्थीजीवने ए जि नमत ते तत्त्वरूपे प्रसिद्धछे ॥ ८ ॥

वार्त्ताः संति सहस्रशः प्रतिमतं ज्ञानांशबंधक्रमाश्चेतस्तासु ततः प्र
याति न तुमां लीनं जिनेंद्रागमे॥नोत्सर्पंति लताः कति प्रतिदिशं पुष्पैः
पवित्रा मधौ ताभ्योनैति रतिं रसालकलिकारक्तस्तु पुंस्कोकिलः ॥ए॥

अर्थ ॥ जेनोअनुक्रमज्ञानमात्रअंशेकरीनेबंधायोछे, एवीपरदर्शनीओनीवार्त्ता-छे, तेवामतममत्व हजारोगमेवर्त्तेछे, पणतेवातोनेविषे माहारुंचित्तजातुंनथी. शामाटे-जेसिद्धांतोनेविषे माहारुंमनलीनछे. माटेचैत्रमासे दिशोदिशेजेफूल तेणेकरीने पवित्र एहवीजेलता तेकेटलीकविकस्वरथाय, फले, पणपुंस्कोकिलजे कोयल तेआंबानीमंजरी शुंरक्तएवीथकी तेलताओनेविषेरतिनपामे, तेनीपरे महारुंचित्तपण सिद्धांतरूप आं-बानीमंजरिये रक्तथयुंथकुं अन्यदर्शनरूप लताओमां जातुंनथी ॥ ए ॥

शब्दोवा मतिरर्थ एव वसु वा जातिः क्रिया वा गुणः शब्दार्थः किमि
ति स्थितिः प्रतिमतं संदेहशंकुर्यथा॥जैनेंद्रे तु मते न सा प्रतिपदं जा
त्यंतरार्थस्थितिः सामान्यं च विशेषमेव च यथा तात्पर्यमन्विच्छति॥१०॥

अर्थ ॥ आशब्दछे, किंवा मतिछे केअर्थछे, केगुणछे, के वस्तुके० द्रव्यछे, केजातिछे के क्रियाछे? वलीएनो शब्दार्थकेमहशे? एवोसंदेहरूपि खीलो मतमतप्रत्येरह्योछे पण जिनमतमांनथी.तेपदपदप्रत्ये जात्यंतरअर्थनी स्थितिछे. माटे सामान्यअने विशेष जेवाप दार्थनो यथार्थनिश्चय तात्पर्यअर्थतेने जजेछे.माटे जिनमतमां संदेहरूपखीलोनथी॥१०॥

यत्रानर्पितमादधाति गुणतां मुख्यं तु वस्त्वर्पितं तात्पर्यानवलंबने
न तु भवेद्बोधः स्फुटं लौकिकः॥संपूर्णं त्ववभासते कृतधियां कृत्स्नाद्वि
वक्षाक्रमात् तां लोकोत्तरभंगपद्धतिपदं स्याद्वादमुद्रांस्तुमः ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ स्याद्वादरूपजैनमुद्रामां केवोगुणछे? के जेमांवस्तुने अनर्पणकरीछतां पण तेवस्तुगुणतानेप्राप्तिथायछे; अनेवस्तुअर्पणकरीछतांते मुख्यताभावनेपामेछे, अने जेनातात्पर्यअर्थने अवलंबनेकरीने तोप्रगटपणे लौकिकबोधथायछे; अनेसंपूर्णबोधतो समग्रविवक्षाना अनुक्रमथकी महानिपुणबुद्धिवालाने प्रकाशथायछे; तेमाटेए लोको-त्तर भंगजालनुंछेकाणुं एवीजेस्याद्वादशैलीरूपमुद्रा तेनेअमेस्तवियेछैये ॥ ११ ॥

आत्मीयानुभवाश्रयार्थविषयोप्युच्चैर्यदीयक्रमो म्लेच्छानामिव संस्कृ
तं तनुधियामाश्चर्यमोहावहः ॥ व्युत्पत्तिप्रतिपत्तिहेतुविततस्याद्वा
दवाग्गुंफितं तं जैनागममाकलय्य न वयं व्याक्षेपभाजः क्वचित्॥१२॥

अर्थ ॥ तेजैनागमकेवुंछे ? जेमां पोतोना आत्मानो अनुजवकरवाना आश्रयनो विषयछे, एवोउंचपणेकरीने जेनोक्रमछे एटलेपरिपाटीछे, अनेम्लेछनेजेम संस्कृतजाषा आश्चर्यकरनारी अनेमोहउपजावनारीछे तेनीपरे अल्पबुद्धिवालाने अर्थवोपामी मुंझावववानुंस्थानकछे; माटेजैनागमतो व्युत्पत्तिनुं निरूपण करनाराजे हेतुतेणेकरी विस्तीर्णएहवोजे स्याद्वादमार्गतेणेकरी रचेलुं छे, तेनेपामीने महाराचित्तमां वीजुंकोइपण ठ्याद्कपपणु क्यारेपणथतुंनथी ॥ १२ ॥

मूलं सर्ववचोगतस्य विदितं जैनेश्वरं शासनं तस्मादेव समुछितैर्नयमतैस्तस्यैव यत्खंडनं ॥ एतत्किंचन कौशलं कलिमलछन्नात्मनः स्वाश्रितां शाखां छेतुमिवोद्यतस्य कटुकोदर्काय तर्कार्थिनः ॥१३॥

अर्थ ॥ माटेसर्ववचनगतसमूहनुजेमूल एहवुंएजिनशासनकह्युंछे. एजिनशासनथकीज प्रगट्या एहवाजे नयनयना मत तेवामतेकरीनेज दुष्टप्राणी तेज जिनआगमनुंखंडनकरेछे. तेपापिष्टआत्माओनो आत्मा पापरूपमेलेकरीढंकाणोछे. एवादुष्टोनुंजेकांइकिंचित्मात्र डाहापणपणुछे,तेजेमकोइकमूर्ख जेवृक्षनीडाले बेठोथको तेजडालकापवानेउजमालथाय,तेथीकडवाविपाकपामे,तेमतेकुविचारवालाने आगलकडवांफल प्रगटशे १३॥

त्यक्त्वोन्मादं विजज्य वादरचनामाकर्ण्य कर्णामृतं सिद्धांतार्थरहस्यवित्क्वलजतामन्यत्र शास्त्रे रतिं ॥ यस्यां सर्वनया वसंति न पुनर्व्यस्तेषु तेष्वेव या मालायां मणयो लुठंति न पुनर्व्यस्तेषु तेष्वेव सा॥१४॥

अर्थ ॥ उन्मादतजीने,मांहोमांहे झगडोतजीने,वली कानेअमृतरूप वाणीसांजलीने, सिद्धांतनाअर्थ रहस्यनोजे जाणपुरुष तेबीजांशास्त्रनेविषे रतिकेमपामे ? अर्थात्नजपामे. जे जैनवाणिनेविषे सघलाएनय प्रवेशकरेछे, पणतेजूदाजूदामतवालाना मतमां सर्वनय नथी. तेथीजैनवाणीकांइतेमांरेहेतिनथी. शामाटेजेतेसर्वे व्यग्रचित्तवालाछे. माटेजैनमां सर्वे नयछे.जेममालानेविषे सर्वमणकारमेछे,पणछूटामणकापड्याहोय तेनेमालानकहिये अनेएकमणके सर्वेमणका समाणाएमपणनकहीए माटेतेमालासरखोजैनमतछे ॥ १४ ॥

अन्योन्यप्रतिपक्षजावविथतान् स्वस्वार्थसत्यान्नयानपेक्षाविषयग्रहै र्विजजते माध्यस्थमास्थाय यः॥स्याद्वादे सुपथे निवेश्य हरते तेषां तु दिङ्मूढतां कुंदेंदुप्रतिमं यशोविजयिनस्तस्यैव संवर्द्धते ॥१५॥

अर्थ ॥ एमएकबीजाने वैरजावेकरी जूगजूगजोपोतपोतानाअर्थ तेनेसाचाकरता एवामतवालाजे दर्शनी तेपोतानानयनो विषयग्रहणकरी माध्यस्थपणानेस्वीकारी

सारामागानो विभागकरावीने, स्याद्वादरूपउत्तममार्गनेविषेलोकनुं चित्तस्थापनकरावी ने अने जे माध्यस्थपणु ग्रहणकरीतेमनीदिग्मूढतानोनाशकरे, ते विजयवंतप्राणी कुंदनुं फूल तथाचंद्रमासरखो उज्वलोजेजश तेणेकरीवृद्धिवंतोथशे. अहीं कवियेपोता नुंनामपणसूचव्युंछे ॥ १५ ॥ इतिश्रीजैनमतस्तुत्यधिकार एकोनविंशतिसमाप्तः ॥ ॥ इतिश्रीमहोपाध्याय श्रीयशोविजयगणिना विरचिताध्यात्मसारप्रकरणेषष्टप्रबंधः ॥ अढा रमांअधिकारनाकाव्य १९५ तथा ओगणीसमांना १५ मलीने २१० काव्यछे.

शास्त्रोपदर्शितदशा गलितासद्ग्रहकषायकलुषाणां ॥
प्रियमनुभवैकवेद्यं रहस्यमाविर्भवति किमपि ॥ १ ॥
प्रथमाभ्यासविलासा दाविर्भूयैव यत्क्षणाल्लीनं ॥ चं
चलतरुणीविभ्रमसमं सुतरलमनः कुरुते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ शास्त्रेबतावीजेदशा तेणेकरीने गलीगइछे सारीनरसी असद्ग्रहरूपक षायनी कलुषताजेनी, जेने प्रियएहवोजे एकअनुभव तेथीजणातुं एवुंजेरहस्य ते कांइकप्रगटथायछे ॥ १ ॥ प्रथमअभ्यासरूपी विलासनायोगेकरीने जेप्राणीपूर्वोक्त कांइक रहस्यमां लीनथायछे अनेफरीचंचलपणेरहेछे. जेमचंचलस्त्री पोताना विलास नायोगेकरी कांइकसुखमां लीनथायछे अनेपछी जेवीनेतेवी चंचलरहेछे, तथाजेम कीडानेभमरी ज्यारेचटकोभरावेछे, त्यारेतेनाध्यानेकरीनें तेतल्लीनथइजायछे अनेपछीजे वारेभमरीपोताना चटकानोउद्योगमुकीआपेछे, तेवारेतेसर्वभुलीजइ पोतानोमूलनो स्वभाव धारणकरेछे, तेनीपरे जाणीलेवुं ॥ २ ॥

सुविदितयोगैरिष्टं क्षिप्तं मूढं तथैव विक्षिप्तं॥एकाग्रं च निरुद्धं चे
तः पंचप्रकारमिति ॥३॥ विषयेषु कल्पितेषु च पुरःस्थितेषु च
निवेशितं रजसा॥सुखदुःखयुग्बहिर्मुखमायातं क्षिप्तमिह चित्तं ॥४॥

अर्थ ॥ योगज्ञानियें पांचभेदे मनकह्युंछे. १ क्षिप्तमन २ मूढमन ३ तेमजविक्षिप्तमन ४ एकाग्रमन ५ निरुद्धमन. एपांचप्रकारमननाछे ॥ ३ ॥ तेमांक्षिप्तनुंलक्षणंकहेछे. पो- तानाचित्तनेसन्मुख कल्प्याजेविषय तेनेविषे रजोगुणेकरीने थाप्युं, सुखतथा दुःखयुक्त, अने बहिर्मुखथयलुंचित्त तेने क्षिप्तमनकह्युंछे ॥ ४ ॥

क्रोधादिभिर्नियमितविरुद्धकृत्येषु यत्तमो भाग्॥कृत्याकृत्यविभा
गासंयतमेतन्मनोमूढं ॥ ५ ॥ सत्वोद्रेकापरिहतदुःखनिदानेषु सु
खनिदानेषु ॥ शब्दादिषु प्रवृत्तं तदेव चित्तं तु विक्षिप्तं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमांबहुलताये तमोगुणहोय, एटलेक्रोधसहित विरुद्धकामनेविषे जे तत्पर-होय अने विवेकरहितपणे कृत्याकृत्यनी वहेंचणविना जे होय, तेनेमूढमनकहीये ॥५॥ जेधैर्यनाबलथी दुःखनाकारणगणतुंनथी, शब्दादिकविषयमां रूपरसादिकनांकारण-जाणी कठोरपणेप्रवर्त्ते एवुंजेचित्ततेने विक्षिप्तमनकहिये ॥ ६ ॥

अद्वेषादिगुणवतां नित्यं खेदादिषट्कपरिहारात्॥सदृशप्रत्ययसंगतमेकाग्रं चित्तमाम्नातं ॥ ७ ॥ उपरतविकल्पवृत्तिकमवग्रहादिक्रमच्युतं शुद्धं ॥ आत्मारामसुनीनां भवति न रुद्धं सदा चेतः ॥८॥

अर्थ ॥ रागद्वेषादिकेरहित जेगुणवंतपुरुषछे अनेसदा खेदादिकनोपरिहारकरनारजेपुरुष छे, ते तुंमन सदैवरागद्वेषटालवाथी सर्वेकार्यमां सरखुंमळ्युंछे; तेनेएकाग्रमनकहिये ॥ ७ ॥ जेनीविकल्पवृत्तिशांतथईछे, वलीअवग्रहादिक्रमथी पाछुंओसर्युंछे कष्टथीएहवुंशुद्धमन, तेआत्मारामसुनिनुंजेअंतःकरणहोय; तेनेनिरुद्धमनकहिये ॥ ८ ॥

न समाधावुपयोगं तिस्रश्चेतोदशा इह लभंते॥सत्वोत्कर्षात् स्थैर्याडुभे समाधिसुखातिशयात् ॥ ९ ॥ योगारंभस्तु भवेद्विक्षिप्ते मनसि जातसानंदे॥क्षिप्ते मूढे वास्मिन् व्युत्थानं भवति नियमेन ॥१०॥

अर्थ ॥ चित्तनीत्रणदशा तेआसमाधिमांकांइ उपयोग पामतीनथी, तेवारे पणतेमां बेदशातो सत्वोत्कर्षथकी तथास्थिरताथकी अनेसमाधिसुखना अतिशयथी उपयोग-पामेछे ॥ ९ ॥ कदाचित्विक्षिप्तचित्तनेविषे योगसमाधिमां आनंदितहोय तोयोगारंभ-संभवे; क्षिप्तमूढमनेतो योगनोविशेष विषयरूप उदयहोय ॥ १० ॥

विषयकषायनिवृत्तं योगेषु च संचरिष्णुविविधेषु ॥ गृहखेलबालोपममपि चलमिष्टं मनोभ्यासे॥११॥वचनानुष्ठानगतं यातायातं च सातिचारमपि॥चेतोऽभ्यासदशायां गजांकुशन्यायतोऽदुष्टं ॥१२॥

अर्थ ॥ विविधप्रकारना योगनेविषे फरतुं अनेविषयकषाये भर्युं एवुंघरमांरमता बालकनीपेरे चपलजेमनतेअभ्यासेकरी रुडुंजाणवुं ॥ ११ ॥ वचनानुष्ठानमांरह्युं एवुं जातुंआवतुं अतिचारसहित मनहोयतोपण जोमनअभ्यासदशामां वर्त्ततुं होयतो, जेम हस्तिते अंकुशेकरीरुन्धोथाय तेदृष्टांते तेमनपणरुडुंथाय ॥ १२ ॥

ज्ञानविचाराभिमुखे यथा यथा भवति किमपि सानंदं॥अर्थैःप्रलोभ्य बाह्यैरनुगृह्णीयात्तथाचेतः॥ १३ ॥ अभिरूपजिनप्रतिमां विशिष्टपदवाक्यवर्णरचनां च॥पुरुषविशेषादिकमप्यत एवालंबनं ब्रुवते॥१४॥

अर्थ ॥ ज्ञानविचारणानासुखथी जेमकांइक आनंदथाय एहवेबाह्यअर्थेकरी लोभावीने तेमांचित्तनेथोभावीराखीने ज्ञाननाविचारने सन्मुखकरीये ॥ १३ ॥ रुडीजिनप्रतिमा, रुडांसिद्धांतनांपद, वचन अक्षर, ते पुरुषविशेषजे बहुश्रुतगीतार्थमुनि होयतेइने एत्रणआलंबन प्रभुयेकह्यांछे ॥ १४ ॥

आलंबनैः प्रशस्तैः प्रायोभावः प्रशस्त एव यतः॥इति सालंबनयोगी मनः शुभालंबनं दध्यात् ॥१५॥ सालंबनं क्षणमपि क्षणमपि कुर्या न्मनोनिरालंबं ॥ इत्यनुभवपरिपाकादाकालं स्यान्निरालंबः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ रुडेआलंबनेकरीने प्रायेरूडोभावहोय. माटेसालंबनयोगी जे रुडाजीवहोय तेणेशुद्धआलंबन धरवुं ॥ १५ ॥ अनेक्षणैकमां सालंबनमनकरे, अनेक्षणैकमां निरालंबनमनकरे, एरीतेअनुभवनापरिपाकथी तेप्राणीसदाय निरालंबनथाय ॥ १६ ॥

आलंब्यैकपदार्थं यदा न किंचिद्विचिंतयेदन्यत् ॥ अनुपनतेंधनव ह्निवदुपशांतं स्यात्तदा चेतः ॥ १७ ॥ शोकमदमदनमत्सरकलहक दाग्रहविषादवैराणि॥क्षीयंते शांतहृदामनुभव एवात्र साक्षात्तः ॥१८॥

अर्थ ॥ पछीएकपदार्थनेअवलंबीने जेवारेंबीजुंकांइ चिंतवेनही, तेवारे जेमकाष्टविनानो अग्निउपशमेछे, तेनीपरेउपशांतपणुंपामे ॥ १७ ॥ माटेशोक, गर्व, काम, मत्सर, क्लेश, हठ, विषाद अनेवैर एटलावानां शमतावंतप्राणीनेनहोय, एवातनो साक्षीइहां अनुभवछे ॥ १८ ॥

शांते मनसि ज्योतिः प्रकाशते शांतमात्मनः सहजं॥भस्मीभवत्यवि द्या मोहध्वांतं विलयमेति ॥ १९ ॥ बाह्यात्मनोधिकारः शांतहृदामं तरात्मनां न स्यात्॥परमात्मानुध्येयः सन्निहितो ध्यानतो भवति ॥२०॥

अर्थ ॥ शांतमननेविषे रहेताथका आत्मानुंशांत,स्वाभाविक, सहेजानंदरूप जे तेज छेते प्रगटथाय, तेवारे जेकुविद्याछेते राखथइजाय; अनेमोहांधकार नाशपामे ॥ १९ ॥ बाह्यथकि मननोजेअधिकार तेशांतपरिणामि अंतरआत्मावाला प्राणीने नहोय, केमकेतेने ध्येयरूपी जेपरमात्मा तेध्यानथी ढुकडोछे. ॥ २० ॥

कायादिर्बहिरात्मा तदधिष्ठानांतरात्मनामेति ॥ गतनिःशेषोपाधिः परमात्मा कीर्त्तितस्तज्ज्ञैः ॥ २१ ॥ विषयकषायावेशः तत्वाश्रद्धा गु णेषु च द्वेषः॥आत्माज्ञानं च यदा बाह्यात्मा स्यात्तदा व्यक्तः ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ कायाअधिष्ठित जेबहिरात्मा तेनुंअधिष्ठानजे अंतरात्माछे, तेप्रतेपामे

अनेगइछेसमस्त उपाधिजेने तेने ज्ञानियेपरमात्मा कह्योछे ॥ २१ ॥ जेनेविषयकषायनोआवेश होय, तथा तत्वनीअश्रद्धाहोय अनेगुणीउपर द्वेषहोय, अनेजेने आत्मानुं ओलखाणनथी, तेनेप्रगटपणे बहिरात्मा कहिये ॥ २२ ॥

तत्वश्रध्धाज्ञानं महाव्रतान्यप्रमादपरता च ॥ मोहजयश्च यदा स्यात् तदांतरात्मा भवेद्व्यक्तः ॥ २३ ॥ ज्ञानं केवलसंज्ञं योगनिरोधः समग्र कर्म्महतिः ॥ सिध्धिनिवासश्च यदा परमात्मा स्यात्तदा व्यक्तः॥२४॥

अर्थ ॥ जेनेतत्वनीश्रद्धाहोय, ज्ञानपणहोय, महाव्रतीपणहोय, तथाअप्रमादीपणहोय, एमकरतां जेवारेमोहनेजीते, तेवारेतेनेप्रगटपणे अंतरात्माकहिये ॥ २३ ॥ जिहांकेवलज्ञानहोय अने मनवचनकायाना योगनिरोधी आठकर्मक्षयकरी सिद्धमांवसे तेवारे तेनेप्रगटपणे परमात्माकहिये ॥ २४ ॥

आत्मानंतो गुणवृत्ति र्विविच्य यः प्रतिपदं विजानाति॥कुशलानुबंध युक्तः प्राप्नोति ब्रह्मभूयमसौ ॥ २५ ॥ ब्रह्मस्थो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म प्राप्नोति तत्र किंचित्रं ॥ ब्रह्मविदां वचसापि ब्रह्मविलासाननुभवामः ॥२६॥

अर्थ ॥ जेप्राणीआत्मानेअने गुणवृत्तिने मांहोमांहेवेहेंचणकरीने ठेकाणेजोके तेप्राणीकुशलानुबंधि पुण्यसहित मोक्षपदनेपामे ॥ २५ ॥ जेब्रह्ममांरह्यो ब्रह्मनोजाण तेब्रह्मनेपामे, एमांशोअचंबोछे ? माटेब्रह्मवेत्तापुरुषजेज्ञानी तेनावचनेकरी ब्रह्मजेमोक्ष विलासीसुख, तेने अमे अनुभवियेछिये ॥ २६ ॥

ब्रह्माध्ययनेषु मतं ब्रह्माष्टादशसहस्रपदभावः ॥ येनाप्तं तत् पूर्णो योगी ब्रह्मणः परमः ॥ २७ ॥ ध्येयोयं सेव्योयं कार्या भक्तिः सुकृत धिया सैव ॥ अस्मिन्गुरुत्वबुध्या सुतरः संसारसिंधुरपि ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ ब्रह्मअध्ययननेविषे कह्युंछेके, अढारहजार शिलांगरथेकरी जेब्रह्मचर्यनेपाम्युं, तेनेपूर्णयोगीअनेपरम ब्रह्मकहिये ॥ २७ ॥ माटेएनेजध्यावो, एनीजपुण्यवंते भक्तिकरवी,अनेएनेविषे मोटाइपणानी बुद्धिधरीये;तो संसारसमुद्रतरवोसहेलछे॥२८॥

अवलंबेच्छायोगं पूर्णाचारासहिष्णवश्च वयं ॥ भक्त्या परमसुनीनां तदीयपदवीमनुसरामः ॥२९॥ अल्पापि यत्र यतना निर्दंभा सा शुभानुबंधकरी ॥ अज्ञानविषयं यत्तद्विवेचनं चात्मभावानां ॥३०॥

अर्थ ॥ इच्छायोगतो अमारेनिर्वलछे; पूरोआचारपणअमे पालीशकतानथी; पणमोटा

मुनिनी भक्तिएकरीने तेहनीपदवीने पामशुं ॥२९॥ थोडीपणजयणा कपटरहितथशे, तोतेशुभअनुबंधकारीछे. पणआत्माभावनीजेवेहेंचण तेअज्ञाननेटालनारछे ॥ ३० ॥

सिद्धांततदंगानां शास्त्राणां यः सुपरिचयः शक्त्या ॥ परमालंबनभूतो दर्शनपक्षोयमस्माकं ॥ ३१ ॥ विधिकथनं विधिरागो विधिमार्गस्थापनं विधेरिछा॥अविधिनिषेधश्चेति प्रवचनभक्तिः प्रसिद्धांतः॥३२

अर्थ ॥ सिद्धांतनाअमेपक्षीछीये, तेनाअंगजेशास्त्रतेनो शक्तिप्रमाणे अमारेपरिचय छे, माटेपरमआलंबनभूत एवोजेंसमकितपक्ष तेअमारेरूडोछे ॥ ३१ ॥ शुद्धभाषवुं, विधिशास्त्रनोरागकरवो, शुद्धमार्गनुं स्थापनकरवुं,विधिमार्गनीइछाराखवी, अविधिटालवी अनेसिद्धांतनी भक्तिकरवी एअमारोसिद्धांतछे ॥ ३२ ॥

अध्यात्मभावनोज्वलचेतोवृत्त्योचितं हितं ॥ पूर्णक्रियाभिलाषश्चेतिद्वयमात्मशुद्धिकरः ॥३३॥ द्वयमिह शुभानुबंधः शक्यारंभश्च शुद्धपक्षश्च ॥ अहितो विपर्ययः पुनरित्यनुभवसंगतः पंथाः ॥३४॥

अर्थ ॥ अध्यात्मनी भावनायेकरी उज्वलएहवीजेचित्तवृत्तितेणेकरीने उचितकार्य करवुं, तथाहितकारी करणीकरवी, पूर्णक्रियाना विलासनोअभिलाषधरवो. एअमारे आत्मानी शुद्धिकारकछे. एटलेएकअंतःकरणनी उज्वलताजे शुद्धिकरवीते, अनेबीजो आद्यथीमांडीअंतपर्यंत पूर्णशुभक्रियाकरवानी अभिलाषा एबेवानांआत्मानी शुद्धिकरनारांछे ॥ ३३ ॥ तथाएककरवायोग्यआरंभते शक्यआरंभअने बीजोशुद्धपक्ष एबेवानांशुभानुबंधीछे. एवेजेनेप्रारंभकालेसमर्थछे, एमांजेनी शक्तिउद्यमअने शुद्धप्ररुकपणुछे, तेनेतोहितकारीमाने अने एथीविपर्यासजेछे, तेने अहितकारीमाने. एवीरीते अनुभवज्ञानने मलवानो एपंथछे. एथीमिथ्यात्वटले ॥ ३४ ॥

ये त्वनुभवाविनिश्चितमार्गाश्चारित्रपरिणतिभ्रष्टाः ॥ बाह्यक्रियया चरणाभिमानिनो ज्ञानिनोपि न ते॥३५॥लोकेषु बहिर्बुद्धिषु विपणिकानां बहिःक्रियासु रतिः॥श्रद्धां विना नचैताःसतां प्रमाणं यतोभिहितं३६

अर्थ ॥ जेने अनुभवनो निश्चयनथी, चारित्रथी जे भ्रष्टछे, तथाबाह्य क्रियानी जेनी आचरणाछे, अने लोकमांउग्रविहारीथइ आचारनोगर्वधरेछे, तेनेज्ञानीनकहिये ॥ ३५ ॥ बाह्यदृष्टिवाला मूर्खलोक तेने बाह्यक्रियावंतदेखी प्रीतिधरे, तेतो जेमकोइकवाणीयो बाह्यक्रियाणानो व्यापारकरतोदेखिये तेनीपरेजाणवी, माटे श्रद्धाविनानुं कशुंयेप्रमाणनथी ॥ ३६ ॥

बालः पश्यति लिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयति वृत्तं ॥ आगमतत्त्वं तु बुधः परीक्षते सर्वयत्नेन ॥ ३७ ॥ निंद्यो न कोपि लोके पापिष्ठेष्वपि जव स्थितिश्चिंत्या ॥ पूजा गुणगरिमाढ्या धार्यो रागो गुणलवेपि ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ माटेजेबालजीवहोयते वेषजोइने परीक्षाकरे, तथा मध्यमजीवते आचरण जोइपरीक्षाकरे; अनेपंडिततोज्ञानतत्त्वदेखी परीक्षाकरे ॥ ३७ ॥ लोकनेविषे कोइनी निंदाकरियेनही; पापीनेविषे महोटी संसारनीस्थिति चिंतविये, जेगुणयुक्तपुरुषहोय तेनीपूजाकरीये; वडाइकरीये; तथाजेअल्पगुणीहोय तेनाउपर पण रागधरीये ॥३८॥

निश्चित्यागमतत्त्वं तस्मादुत्सृज्य लोकसंज्ञां च ॥ श्रद्धाविवेकसारं य तितव्यं योगिना नित्यं ॥३९॥ ग्राह्यं हितमपि बालादालापैर्दुर्जन स्य न द्वेष्यं ॥ सत्या वाचः पराशापाशा इव संगमा ज्ञेयाः ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ तथा आगमनोनिश्चयकरी लोकसंज्ञाछोडीने विवेकनोसारजेश्रद्धातेनेविषे योगीश्वरे सदाउद्यमकरवो ॥ ३९ ॥ बालकथकीपण आलापेकरीने हितनीवात लेवी; दुर्जनउपर द्वेषनकरवो; सत्यबोलवुं; पारकीआशानापाससरिखासंगमजाणवा ॥४०॥

स्तुत्या स्मयो न कार्यः कोपोपि च निंदया जनैः कृतया॥ सेव्या धर्माचा र्यास्तत्त्वं जिज्ञासनीयं च ॥ ४१ ॥ शौचं स्थैर्यमदंजो वैराग्यं चात्मनि ग्रहः कार्यः ॥ दृश्या जवगतदोषाश्चिंत्यं देहादिवैरूप्यं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ कोइवखाणेतो गर्वनकरवो; कोइनिंदेतो कोपनकरवो; धर्माचार्यनी सेवा करवी; तत्त्वनेजाणवानी इछाराखवी ॥ ४१ ॥ पवित्रपणु, स्थिरतापणु अने निष्कपट पणु आदरवुं तथावैरागधरवो अनेमननेवश्यकरीराखवुं, तथासंसारनादोषदेखवा, वली देहनेविनाशीपणे चिंतववो ॥ ४२ ॥

जक्तिर्जगवति धार्या सेव्यो देशः सदा विविक्तश्च॥ स्थातव्यं सम्यक्त्वे विश्वास्यो न प्रमादरिपुः ॥ ४३ ॥ ध्येयात्मबोधनिष्ठा सर्वत्रैवागमः पुरस्कार्यः ॥ त्यक्तव्याः कुविकल्पाः स्थेयं वृद्धानुवृत्त्या च ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ प्रजुउपरजक्तिधरवी; पशुपंडकादिदोषरहित देशजेस्थानक तेसेववुं; सम कितदिशामांस्थिररहेवुं; प्रमादरूपशत्रुनोविश्वासनकरवो ॥ ४३ ॥ ध्येयस्वरूपजे आ त्मबोध तेमांरहेवुं; सघलेस्थले आगमसिद्धांतने आगलकरवुं, कुविकल्पछांडवा, जेमा र्गेवृद्धचाले तेमार्गेचालवुं ॥ ४४ ॥

साक्षात्कार्यंतत्त्वं चिद्रूपानंदमेदुरैर्ज्ञाव्यं ॥ हितका
री ज्ञानवतामनुभववेद्यः प्रकारोऽयं ॥ ४५ ॥

अर्थ ॥ तत्त्वने प्रगटकरवुं, ज्ञानरूपआनंदभरेरहेवुं, ज्ञानवंतने हितकारीथइने रहेवुं, एअनुभववंतजीवोना प्रकारछे ॥ ४५ ॥ इतिअनुभवाधिकारः विंशतिमसमाप्तः ॥ २० ॥

येषां कैरवकुंदवृंदशशभृत्कर्पूरशुभ्रागुणामालिन्यं व्यपनीय चे
तसि नृणां वैशद्यमातन्वते ॥ संतःसंतु मयि प्रसन्नमनसस्ते केपि
गौणीकृतः स्वार्थोमुख्यपरोपकारविधयोत्सृंखलैःकिंखलैः ॥ १ ॥

अर्थ ॥ चंद्रविकासीकमलनाफूलनोसमूह, चंद्रमा, कपूर, एसरखाउज्ज्वला जेना गुणछे, तथाजे मनुष्यनाचित्तनेविषे मलिनताटालीने निर्मलताउज्ज्वलताने विस्तारेछे; एवाजेसज्जन पुरुषोते, माहाराउपर प्रसन्नमने सदैवरहेजो! जेणेपोतानोअर्थ गौणकर्योछे, अनजेनीमुख्यपणे परउपकारनी बुद्धिछे, एवासज्जन जो महाराउपरप्रसन्नछे तो, उन्मत्तएवाखलजे दुर्जनलोक तेनी अप्रसन्नताये शुंथवानुंछे ? ॥ १ ॥

ग्रंथार्थान् प्रगुणीकरोति सुकविर्यत्नेन तेषां प्रथामातन्वंति कृपाक
टाक्षलहरीलावण्यतः सज्जनाः ॥ माकंदद्रुममंजरीं वितनुते चित्रां म
धुश्रीस्ततः सौभाग्यं प्रथयंति पंचमचमत्कारेण पुंस्कोकिलाः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ रूडाजेकविछे, तेअर्थानुपत्तिए नवाग्रंथरचे; पणकृपानजरनीलेहरी तेनुंघर एवाजे सज्जन तेग्रंथनेवखाणीने विस्तारकरेछे, तेउपरदृष्टांतकहेछे; जेमवसंतलक्ष्मी आंबानीमंजरीना मनोहरपणानेप्रगटकरेछे, पणपोताना पंचम रागनागचमत्कारेकरी एटलेरागनोटहुको तेणेकरीनेकोयल मंजरीनुं सोभाग्यपणुंजगमांविस्तारेछे ॥ २ ॥

दोषोल्लेखविषः खलाननबिलाद्भाय कोपाज्ज्वलन् जिव्हाहिर्ननु
किं गुणान्नगुणिनां वासक्षयं प्रापयेत् ॥ तस्माच्चेत्प्रबलप्रभावभवनं
दिव्यौषधी सन्निधौ शास्त्रार्थप्रतिपत्तिदां शुभहृदां कारुण्यपुण्यप्रथा॥३॥

अर्थ ॥ दोषना विस्ताररूपविषेसहित एहवुं खलप्राणीना मुखरूपजे सर्पनुंघर तेथीउठीने कोपेबलतोथको एवोदुर्जननीजीभरूपजे सर्प जेगुणिनागुणने ननुके० निश्चेथी क्षयपणाने नपमाडेशुं ? अपितुपमाडेज. तेमाटे महाप्रभावनुंघर एहवोजे शास्त्रनोअर्थ, तेनीप्राप्तिनाजाण जेसज्जन तेनीजेकरुणातेपुण्यवार्त्तारुपनीबुटी, एटलेजडीते 'दिव्यऔषधिकहिये, तेनेपासेरहेताथका तेने झेरचढेनही ॥ ३ ॥

उत्तानार्थगिरां स्वतोऽवगमान्निःसारतां मेनिरे गंजीरार्थसमर्थने बत खलाः काठिण्यदोषं दृढः ॥ तत्कोनाम गुणोस्तु कश्च सुकविः किंकाव्यमित्यादिकां स्थित्युच्छेदमतिं दरंति नियतां दृष्ट्वा व्यवस्थाः सतां ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ डुर्जनमूर्खनीरीतिओ तोजेवारें पोतानीमेले पदवाचतां अर्थसुझे एवास्पष्टार्थने सुगमपदजो अमेजोडीये तोखलमाणसएमकहेशेजे, कांइआग्रंथमां सारनथी, एममाने. वलीजोअमे गंजीरअर्थसहित पदबांधीएतो, खलमाणस कहशेके, कठणपदबांध्याछे, एनोशुंअर्थकरिये? एतोमुंगानीपारसीछे. एवेग्रंथेकोइने गुणनथाय; जे आगलबुद्धिविचारे एवाआजेकोणरुडाकविछे? वलीसर्वनेजोगपडे एवांक्यांकाव्यछे? एवुंडुर्जनबोलेमाटेएग्रंथमर्यादानी स्थितिनेउच्छेद करवानीमतिछे; तेनेजेटाले, कविनागुणनेजाणे, एवाजेसज्जनपुरुष तेनीव्यवस्था रूडीदीठी ॥ ४ ॥

अध्यात्मामृतवर्षिणीमपि कथामापीय संतः सुखं गाहंते विषमुद्गिरंति तु खला वैषम्यमेतत्कुतः॥ नेदं चाद्भुतमिंडुदीधितिपिबाः पीताश्चकोरा भृशं किं न स्युर्बत चक्रवाकतरुणास्त्वत्यंतखेदातुराः ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अध्यातमरूप अमृतवृष्टि एवीवार्त्ता, तेनुंपानकरीने सज्जनपुरुषसुखमानेछे. अनेजेखललोकछे, तेएवीवाणीने विषमपदकहीने विषरूपप्रगटकरेछे, एमां शुंआश्चर्यछे ? तेउपरदृष्टांतकहेछे. जुओचंद्रकिरणनांदर्शनथी अमृतपीने चकोरघणुंरीझपामेछे, तोशुंचंद्रदेखीनेचकवो, चकवीघणोखेदनथीपामता ? अपितुपामेजछे ॥ ५ ॥

किंचित्साम्यमवेक्ष्य ये विदधते काचेंद्रनीलाभिदां तेषां न प्रमदावहा तनुधियां गूढा कवीनां कृतिः ॥ ये जानंति विशेषमप्यविषमे रेखोपरेखांशतो वस्तुन्यस्तु सतामितः कृतधियां तेषां महानुत्सवः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमकांइक सरखापणु देखीने काचमां अनेइंद्रनीलमणिमां अनेदरूपतें एकपणुजाणे, तेवाअल्पबुद्धिवालाने मोटाकविनि गूढअर्थनीरचना तेहर्षजणीनथाय. जे प्राणीअविषमवस्तुनेविषे एकरेखा, उपरेखा, अर्धरेखाइत्यादिक अंशेथकी वस्तुनेविशेषपणेजाणेछे, एवाकुशलबुद्धिवालासज्जनने एग्रंथनाजेजावछे, तेमहाओछवरूपछे ॥ ६ ॥

पूर्णाध्यात्मपदार्थसार्थघटना चेतश्चमत्कारिणी मोहच्छन्नदृशां जवेत्तनुधियां नो पंमितानामिव ॥ काकुव्याकुलकाम[illegible]वाक्चातुरी कामिन्याः प्रसत्नं प्रमोदयति न ग्राम्यान् विदग्धानिव॥७॥

अर्थ ॥ जेमांपूर्णअध्यात्मपदार्थ तेसहितघटनाछे, पण तेजेनीदशाअज्ञानेकरीने अवराणीछे, एवाअल्पबुद्धिवालानां चित्तमांतोजेरीते पंडितलोकआवाग्रंथथीरीज पामे, तेरीतनोचमत्कारनउपजावे. तेहनोदृष्टांत, जेमकामेव्यापीथकी अंतरंगमां विषयसुखने इछतीथकी, तथा बाह्यथी भयशोकधरतीथकी, पुरुषनेवल्लभ, हुंरूपवती एमगर्वे भरीथकी, स्त्रीवचननीचतुराइ करनार, एवीजे चतुरस्त्रीहोयतेपण गामडी आमूर्खने रीझवीनशके, पणपंडितनेतोआनंदपमाडे तेनीपेरेंजाणवुं ॥ ७ ॥

स्नात्वा सिध्धांतकुंडे विधुकरविशदाध्यात्मपानीयपूरैस्तापं संसारदुःखं कलिकलुषमलं लोभतृष्णां च हित्वा॥जाता ये शुध्धरूपाः शमदमशुचिताचंदनालिप्तगात्राः शीलालंकारसाराः सकलगुणविधीन्सज्जानांस्तान्नमामः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकुंडमां चंद्रसरखानिर्मल अध्यात्मरूपपाणीनापूरमांस्नानकरीने, भवदुःखरूपजेताप अने पापरूपजेमेलाप तथालोभ, ने तृस्नानेछांडीने, यथाशुद्धरूपे करी वलीसमतारूपइंद्रियदमनजे पवित्रतेरूपचंदनेकरी शरीरविलेपितछेजेनुं, वलीशीलरूपघराणेकरीशोभता, सर्वगुणनानिधानएवाजे सज्जनतेने अमे नमिये छैये. ॥ ८ ॥

पाथोदः पद्यबंधे विपुलरसभरं वर्षति ग्रंथकर्त्ता प्रेम्णां पूरैस्तु चेतःसर इह सुहृदां प्लाव्यते वेगवद्भिः ॥ त्रुट्यंति स्वांतबंधाः पुनरसमगुणद्वेषिणां दुर्जनानां चित्रं भावज्ञ नेत्रात् प्रणयरसवशान्निःसरत्यश्रुनीरं ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेग्रंथकर्त्ता मेघसरखाछे, तेपद्यबंधेकरीने, बहुरसभरे, वरसतांथकां तेथी प्रेमरूपपूरते सज्जननाचित्तरूप सरोवरमां वेगेकरीनेभरायछे, वलीअसाधारणगुणना द्वेषीजे दुर्जन, तेनातोअंतःकरणना बंधतुटेछे, अने एवाविचित्रकारीजेग्रंथ तेनाभाव नाजाणजेपुरुषछे तेविनयेप्रणीत रसेउज्वलाछे, तेनानेत्रथी स्नेहरूपआंसुंझरेछे ॥ ९ ॥

उद्दामग्रंथभावप्रथनभवयशःसंचयः सत्कवीनां क्षीराब्धिर्मथ्यते यः सहृदयविबुधैर्मेरुणा वर्णनेन ॥ एतद्दिंडीरपिंडीभवति विधुरुचेर्मंडलं विप्लुषस्तास्ताराः कैलासशैलादय इह दधते वीचिविक्षोभलीलां ॥ १० ॥

अर्थ ॥ रुडाकविनी उद्दामकेंप्रौढएहवीजे ग्रंथनाभावनी रचनातेणेकरीनेउपनो

जेयशनोसमूहतेरूप क्षीरसमुद्र तेसज्जनपंक्तिते वर्णवरूपि मेरूएकरीने मथ्यो तेथी प्रगट्योछे. फीण तेनोउज्ज्वलो चंद्रमाथयो; वलीतेनेवलोवतांजे छांटाउड्या तेनातारा मंडलथया; तथा कैलासादिक पर्वतथया. एरीतेग्रंथनोजश लीलाएकरी पसर्यो॥१०॥

काव्यं दृष्ट्वा कवीनां हृतममृत मिति स्वःसदा पानशंकी खेदं
धत्ते तु मूर्ध्नी मृडुतरहृदयः सज्जनो व्याधुतेन ॥ ज्ञात्वा सर्वो
पज्ञोग्यं प्रसृमरथ तत्कीर्त्तिपीयुषपूरं नित्यं रक्षापि
धाना नियतमतितरां मोदते च स्मितेन ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ कविनाकाव्यदेखीने अमृतहरायुं, एमविचारीने देवताओ सदाअमृतपीवानी शंकाधरताथका खेदधरेछे. शामाटेजे मृडुसुकोमलछे हृदयजेनुं, एवाजे सज्जन तेमस्तकधूणावीकरीने जेसर्वनेउपज्ञोग्यपणे पसरतुएवुं ते. कविनीकीर्त्तिरूप अमृतनुंपूर तथा जेनेनिरंतर रक्षारूप ढांकणुंअत्यंतपणे दीधुंछे तेनेजाणीने देखीने हसीने हर्षपामेछे ॥ ११ ॥

निष्पाद्य श्लोककुंभं निपुणनयमृदा कुंभकाराः कवींद्रा
दार्ढ्यं चारोप्यतस्मिन्न किमपि परिचयात्सून्यराक्षार्कभा
सांपकं कुर्वंति बाढं गुणहरणमिति प्रज्वलद्दोषदृष्टि ज्वा
लामालाकराले खलजनवचनज्वालजिव्हे निवेश्य॥१२॥

अर्थ ॥ रूडानयरूपमाटीवमे कवीश्वररूपिजे कुंभकारते श्लोकरूपघमो निपजावे. पछीजेमकुंभकारतेघटने परिचयथी छायेजाली टपणेसमारीतमकेमूके, तेमश्लोक घटने परिचय विचारीने पदअक्षर आघापाछाहोय तेनेसमारे एवीरीते तडकेमूके; पछीपंक्तिनेदेखाडी परिपक्ककरे, तेजाणे नीमाभोदेखामेछे. हवेडुर्जनजाणेजे एपंक्ति छे, तेथीमाहरा गुणहरणथशे, एमबलतोथको पंक्तिनीजोडेली कलामां दोषकाढवानी दृष्टिरूप आगमनीज्वालानी श्रेणि तेणेकरी विकरालएवीपोतानी नजररूपअग्नि वलीतेडुर्जननांजेवचन तेजाणिये निंदारूप अग्निनी ज्वाला तेणेकरी घडेलीजी भतेवेहु अग्निनावचमां ग्रंथरूपघमो मूकीनेपाकोकरेछे, अनेनीमाभानीराखथाय; घटमूलपोसायछे ॥ १२ ॥

इक्षुद्राक्षारसौघः कविजनवचनैः डुर्जनस्याग्नियंत्रान्ना
नाडव्यप्रयोगात्समुपचितगुणो मद्यतां याति सद्यः ॥

संतः पित्वा यडुचैर्दधति हृदि मुदं घूर्णयंत्यक्षियुग्मं स्वैरं
हर्षप्रकर्षादपि च विदधते नृत्यगानप्रबंधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ शेलडीअने द्राषनारसनासमूह सरखुंकविनुंवचनछे; पणडुर्जनरूपी अग्नि-तुंजे यंत्रछे तेमध्येनानाप्रकारना दूव्यनायोगथकी रुडीरीते गुणपुष्टिने पामतुं एहवुं-कविनुंजेवचनते, ताजा मदिरापणानेपामेछे; तेमदिरानेहर्षेकरी सज्जनपुरुषपानकरीने हृदयमांहर्षधरेछे; तेथीबेआंखोघुर्णायमानथायछे; स्वइछाये हर्षनाकल्लोलथी पणश्लोक-नोन्नावार्थपामीने नाचेछे; गायछे ॥ १३ ॥

नव्योस्माकं प्रबंधोप्यनणुगुणभृतां सज्जनानां प्रभावा
द्विख्यातःस्यादिति सुहितकरणविधौ प्रार्थनीया न किंनः ॥
निष्णाताश्च स्वतस्ते रविरुचयइवांभोरुहाणां गुणाना
मुल्लासे पेक्षणीया न खलु पर रुचा क्वापि तेषांस्वभावः ॥१४॥

अर्थ ॥ अमारोग्रंथनवोछे. तोपणमहागुणवंतजे सज्जन तेनाप्रभावथकी विख्यात थजो ! एरीतेरुडाहितनेअर्थे अमारे एसज्जनने प्रार्थनाकरवायोग्यनथीशुं ? अपि-तुछेज जेम कमलनागुणने उल्लासकरवाने सूर्यनांकिरणछे, एम पोताथकीजे प्रवीणछे, एवातेसज्जननाजे स्वभाव तेक्यांयेपररुचिभणि निश्चेउवेखवायोग्यनथी ॥ १४ ॥

यत्कीर्त्तिस्फूर्त्तिगानावहितसुरवधूवृंदकोलाहलेन प्रक्षु
ब्धस्वर्गसेतोः पतितजलभरैः क्षालितः शैत्यमेति ॥
अश्रांतभ्रांतकांतग्रहगणकिरणैस्तापवान् स्वर्णशैलो भ्रा
जंते ते मुनींद्रा नयविजयबुधाः सज्जनव्रातधुर्याः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेपोतानागुरुनो वर्णवकरेछे. जेनीपसरतीजेकीर्त्ति तेनेगावाने सावधान, एटलेस्वर्गमां देवतानी अप्सराओजेछे तेश्रीनयविजयजीना गुणगायछे, तेनागीतश ब्दना कोलाहलेकरीने क्षोभनापामी एवीजेस्वर्गनदी तेनीपाजभांगी,तेथीपड्युं जेजल तेनासमूहेकरी पखाल्योजेमेरुपर्वत, तेणेकरीमेरूपर्वतपण शीतलतानेपाम्योछे. नहितो अहर्निश प्रदक्षणायेभमताजे, ग्रहमंडल तेनाकिरणेकरी तापवंतमेरुहतो. तेहमणाशी-तलथयोथको शोभेछे. एवातेमुनींद्र श्रीनयविजयनामा पंडितजे सज्जन पुरुषोनासमू-हमां वडेराहता ॥ १५ ॥

चक्रे प्रकरणमेतत्तत्पदसेवापरोयशोविजयः ॥
अध्यात्मधृतरुचीना मिदमानंदावहं भवतु ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेनाचरणना सेवकउपाध्यायश्रीयशोविजयजी एप्रकरणकरताहवा. तेअध्यात्मनेविषेजेणेरुचिधरीछे, एवाप्राणीने रुचिसहित एप्रकरणआनंदसुखनुंआपनार होजो !॥ १६ ॥ इति ॥ सज्ज्ञानस्तुतिअधिकार एकविंशतितमःसमाप्तः ॥

॥ इतिमहोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीलाभ विजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीजितविजयगणी तच्छिष्यमुख्य पंडित श्रीनयविजयगणी चरणकमलचंचरीकेण पंडितश्रीपद्म विजयगणिसहोदरेण पंडित श्रीयशोविजयेनविरचिते अध्यात्मसारप्रकरणे सप्तमबंधःसमाप्तःऽसर्वकाव्य॥६१॥

॥ इति श्रीमत्तपागछे भट्टारकश्री विजयसिंहसूरीश्वरशिष्यपंडित श्रीसत्यविजयगणि शिष्यपंडितश्रीकर्पूरविजयगणि शिष्यपंडितश्रीक्षमाविजयगणि शिष्यपंडितश्रीयशो विजयगणि शिष्यपंडितश्रीशुभविजयगणि शिष्यपंडितश्रीवीरविजयगणिभिरध्यात्म सारग्रंथस्यवार्त्तिकरूपोमुनिकीर्त्तिविजयस्यानुग्रहाया यंटबार्थःकृतःसंवत् १८८१ चैत्र-शुक्लपक्षेपूर्णिमायामितिश्रेः ॥

सर्वमूलकाव्य ए४७ नीसंख्यायेछे. तेमां पेलाप्रबंधना १०१ बीजाप्रबंधना १०५ त्रीजाप्रबंधना ११७ चोथाप्रबंधना १६ए पांचमाप्रबंधना १०२ छठाप्रबंधना २१० सातमाप्रबंधना ६१ सर्वमलीने ए४७

## सूचना.

आ अध्यात्मसार नामनो ग्रंथ श्रीयशोविजयजी उपाध्याये संस्कृतभाषाना पद्यमां रच्योछे. ए वाक्यमां आग्रंथनुं नाम, तथा तेना रचनारनुं नाम सांभलतां अथवा वांचतां सुज्ञ जनोनां मनमां प्रसन्नतायुक्त उत्कृष्टभाव उत्पन्नथयाविना रहेशे नही; केमके ग्रंथना नामप्रमाणे ते शब्दनो अर्थ अध्यात्मनो सार थायछे; तेम ग्रंथना रचनारना नामप्रमाणे तेनो अर्थ यशनो विजयकरनार थायछे; एबन्ने नाम सार्थकछे, एम कह्याथी कांइपण बाधा आवशे नही. आ ग्रंथमां जेवी रीते अध्यात्मविषयना प्रकारोनो समावेश कर्योछे, तेवी रीते बीजे क्वचित् दीठामां आवशे. उपाध्यायजीनां पांडित्य, कविताशक्ति, समयसूचकता, पूर्वपक्षखंडन,उत्तरपक्षमंडन, वाक्पटुत्व, पदलालित्य, अर्थगौरव, रस, अने अलंकारआदि एमना रचेला हरेक ग्रंथमां जोतां कोइनेपण आश्चर्य उत्पन्न थयाविना रहेशे नहीं; केमके उपाध्यायजीए जेजे विषयोमां ग्रंथो रच्याछे, ते ते ग्रंथमां एवी युक्तिओ करीछे के, तेना यथार्थ सूक्ष्मभावार्थने साधारण अभ्यासी मनुष्य समजी शके नही. तेम विद्वानोनी बुद्धि पण कांइक

श्रमवडे जाणी शके; आम ए महापंडित हता एमां संशयनथी. तेमणे अध्यात्मविषयक जे आ ग्रंथ रच्योछे, तेनी उत्कृष्टता प्रत्यक्षप्रमाणवडे सहेजे समजाशे, एवा ग्रंथनो यथार्थनाव टीकाविना समजवो महाकठिण पडेछे; टीकानो अमे घणो शोध कर्यो, पण ते क्यांइ मली आवी नही, ने टीका थइछे एवुं पण कोइ ठेकाणेथी सां नळ्यामां आव्युं नही, त्यारे ते प्रयत्न रहेवा दइने बालावोध अथवा टबाविषे शोध करतां मात्र श्रीवीरविजयजीनो करेलो टवो मली आव्यो, ते पण तेमणे पोतानी वुद्धि अनुसार साधारण करेलोछे. ए टवाउपरथी स्पष्ट दीठामां आवेछे के, अध्यात्म विषयविषे श्रीवीरविजयजीनो अभ्यास घणो थोडो हतो, तेथी यथार्थ मूल ग्रंथनो नाव प्रदर्शित करी शक्या नथी, ए मोटी दिलगिरीनी वात छे. पण ए टवाथी वीजो सारो टवो कोइ अमने मळ्यो नही, तेथी एमां कांइक सहेज अमारी मति अनुसार सुधारो करीने आ पुस्तकमां छाप्यो छे.

॥ श्रीजिनायनमः ॥

## ॥ अथ ॥ श्रीसमाधिशतक श्रीयशोविजय उपाध्यायजीकृत प्रारंनः ॥

॥ दोहरा ॥

॥ समरी नगवति नारती। प्रणमी जिन जग बंधु ॥ केवल आतम बोधको। करशूं सरस प्रबंध ॥ १ ॥ केवल आतम वोध है । परमारथ शिव पंथ ॥ तामें जिनकूं मगनता । सोइ नाव निगरंथ ॥ २ ॥ नोग ज्ञान ज्यूं बालको । बाह्य ज्ञानकी दोर ॥ तरुण नोग अनुनव जिस्यो । मगन नाव कछु और ॥ ३ ॥ आतम ज्ञाने मगन जो। सो सव पुफ्गल खेल ॥ इंद्रजाल करि लेखवै । मिलै न तहँ मन मेल ॥ ४ ॥ ज्ञान विना व्यवहारको । कहा वनावत नाच ॥ रत्न कहो को काचकूं । अंत काच सो काच ॥ ५ ॥ राचै साचे ध्यानमें । जाचै विषय न कोइ ॥ नाचै माचै मुगति रस । आतमज्ञानी सोइ ॥ ६ ॥ वाहिर अंतर परम ए । आतम परिणति तीन ॥ देहादिक आतम नरम । वाहिरात्म वहु दीन ॥ ७ ॥ चित्त दोष आतम नरम । अंतर आतम खेल ॥ अति निर्मल परमातमा । नाहि कर्मको नेल ॥ ८ ॥ नर देहादिक देखिके । आतम ज्ञाने हीन ॥ इंद्रिय बल वहिरातमा । अहंकार मन लीन ॥ ए ॥ अलख निरंजन अकल गति व्यापी रह्यो शरीर ॥ लखै सु ज्ञाने आतमा । खीर लीन ज्युं नीर ॥ १० ॥ अरि पुत्रादिक कल्पना । देहातम अनिमान ॥ निज पर तनु संवंध मति । ताको होत निदान ॥ ११ ॥ देहादिक आतम नमी । कल्पै निज परनाव ॥ आतम ज्ञानी जग लहै । केवल शुद्ध स्वनाव ॥ १२ ॥ स्वपर विकल्पै

वासना । होत अविद्या रूप ॥ ताते बहुरि विकल्पमय । भरम जाल अँध कूप ॥ १३ ॥ पुत्रादिककी कल्पना । देहातम भ्रम भूल ॥ ताकूं जड संपत्ति कहे । इहा मोह प्रतिकूल ॥ १४ ॥ या भ्रम मति अब छांडि दौ । देखो अंतर दृष्टि ॥ मोह दृष्टि जो छोडिये । प्रगटै निजगुण सृष्टि ॥ १५ ॥ रूपादिकको देखिवो । कहन कहावन कूट ॥ इंद्रिय जोगादिक वले । ए सब लूटालूट ॥ १६ ॥ पर पद आतम द्रव्यकूं ॥ कहन सुनन कछु नाहि ॥ चिदानंद घन खेलही । निज पद तौ निजमांहि ॥ १७ ॥ ग्रहण अयोग्य ग्रहै नही । ग्रह्यो न छोडै जेह ॥ जानै सर्व स्वभावने । स्व पर प्रकाशक तेह ॥ १८ ॥ रूपेके भ्रम सीपमें । ज्युं जड करे प्रयास ॥ देहातम भ्रमतें भयो । त्युं तुज कूट अभ्यास ॥ १९ ॥ मिटै रजत भ्रम सीपमें । जन प्रवृत्ति जिम नाहि । नरमें आतम भ्रम मिटै । त्युं देहादिक मांहि ॥ २० ॥ फिरै अबोधे कंठगत । चामीकरके न्याय ॥ ज्ञान प्रकाशे मुगति तुज । सहज सिद्ध निरुपाय ॥ २१ ॥ याबिन तुं सूतो सदा । योगे भोगे जेणि ॥ रूप अतींद्रिय तुंछतें । कही शकै कहु केणि ॥ २२ ॥ देखै भाखै औ करै । ज्ञानी सबहि अचंभ ॥ व्यवहारे व्यवहारसूं निश्चयमें थिर थंभ ॥ २३ ॥ जग जाणे उन्मत्त औ । ओ जाणे जग अंध ॥ ज्ञानीकूं जगमें रह्यो । युं नहि कोइ संबंध ॥ २४ ॥ या परछाही ज्ञानकी । व्यवहारै जुं कहाइ ॥ निर्विकल्प तुजरूपमें । द्विधा भाव न सहाइ ॥ २५ ॥ युं बहिरातम छांडिके । अंतर आतम होइ ॥ परमातम मति भावइं । जहां विकल्प न कोइ ॥ २६ ॥ सो मैं या दृढ वासना । परमातम पद हेत ॥ इलिका भमरी ध्यान गत । जिन मति जिनपदहेत ॥ २७ ॥ भारे भय पद सोइ है । जहँ जडकूं बीसास ॥ जिनसूं औ डरतो फिरै । सोइ अभय पद तास ॥ २८ ॥ इंद्रिय वृत्ति निरोध करि । जो खिनु गलित विभाव ॥ देखै अंतर आतमा । सो परमातम भाव ॥ २९ ॥ देहादिकतें भिन्न में । मोथै न्यारे तेहु ॥ परमातम पथ दीपिका । शुद्ध भावना एहु ॥ ३० ॥ क्रिया कष्ट भी नहु लहै । भेद ज्ञान सुखवंत ॥ या बिन बहु विधि तप करै । तौ भी नहि भव अंत ॥ ३१ ॥ अभिनिवेश पुद्गल विषय । ज्ञानीकूं कहँ होत ॥ गुणको भी मद मिटगयो । प्रगटत सहज उद्योत ॥३२॥ धर्म क्षमादिक भी मिटै । प्रगटत धर्म संन्यास ॥ तौ कल्पित भव भावमें । क्युं नहि होत उदास ॥ ३३ ॥ रज्जु अविद्या जनित अहि । मिटै रज्जुके ज्ञान ॥ आतमज्ञानै त्युं मिटै । भाव अबोध निदान ॥३४॥ धर्म अरूपी द्रव्यके । नहि रूपी परहेत ॥ अपरम गुन राचै नही । युं ज्ञानी मति देत ॥ ३५ ॥ नैगम नयकी कल्पना । अपरम भाव विशेष ॥ परम भावमें मगनता । अति विशुद्ध नय रेख ॥३६॥ रागादिक जब परिहरी । करै सहज गु

णखोज ॥ घटमें नी प्रगटै तदा । चिदानंदकी मोज ॥३७॥ रागादिक परिणामयुत । म
नहि अनंत सँसार ॥ तेहज रागादिक रहित । जानि परमपद सार ॥३८॥ नव प्रपंच म
न जालकी । बाजी जूठी मूल ॥ चार पांच दिन खुस लगे । अंत धूलकी धूल ॥ ३९ ॥
मोह वागुरी जाल मन । तामें मृग मत होउ ॥ यामें जे मुनि नहि परे । ताकूं
असुख न कोउ ॥ ४० ॥ जब निज मन सनमुख हुए । चिंते न पर गुणदोष ॥
तब बहुराइ लगाइये । ज्ञान ध्यान रस पोष ॥ ४१ ॥ अहंकार परमें धरत । न
लहे निज गुण गंध ॥ अहं ज्ञान निज गुण लगे । छुटे परहि संबंध ॥ ४२ ॥ अर्थ
त्रिलिंगी पद लहे । सो नहि आतम रूप ॥ तौ पद करि क्यूं पाइए ? । अनुनव
गम्य स्वरूप ॥ ४३ ॥ आतम गुण अनुनवत नी । देहादिकतें निन्न ॥ नूले विभ्रम
वासना । जो रहि फिरे न खिन्न ॥ ४४ ॥ देखे सो चेतन नही । चेतन नाहि
दिखाय ॥ रोष तोष किनसूं करे । आपहि आप बुजाय ॥ ४५ ॥ त्याग ग्रहण
बाहिर करे । मूढ कुशल अति रंग ॥ बाहिर अंतर सिद्धकूं । नही त्याग औ संग
॥ ४६ ॥ आतम ज्ञाने मन धरे । वचन काय रति बोकि ॥ तौ प्रगटै शुन्न वास
ना । गुण अनुनवकी जोकि ॥ ४७ ॥ योगारंन्नीकूं असुख । अंतर बाहिर सुक्ख ॥
सिद्ध योगकूं सुक्ख है । अंतर बाहिर छुःक्ख ॥ ४८ ॥ सो कहिये सो पूबिये । तामें
धरिये रंग ॥ यातें मिटै अबोधता । बोधरूप व्है चंग ॥ ४९ ॥ नहि कबु इंद्रिय
विषयमें । चेतनकूं हितकार ॥ लोन्नी जन तामें रमे । अंधो मोह अंधार ॥५०॥ मूढा
तमसूं तेप्रबल । मोहे बोडी शुद्धि ॥ जागत है ममता जरे । पुजलमें निज बुद्धि ॥
५१ ॥ ताकूं बोधन श्रम अफल । जाकूं नहि शुन्न योग ॥ आप आपकूं बूजवै।निश्चय
अनुनव नोग ॥ ५२ ॥ परको किशो बुजावनो । तूं परग्रहण न लाग ॥ चाहे जे में
बूजवो । सो नहि तुज गुण नाग ॥ ५३ ॥ जबलौ प्रानी निज मतें । ग्रहे वचन मन
काय ॥ तबलौं है संसार थिर । नेद ज्ञान मिटि जाय ॥ ५४ ॥ सूखम घन जीरन
नवे । ज्यूं कपरे त्यूं देह ॥ तातें बुध माने नही । अपनी परिणति तेह ॥ ५५ ॥
जैसे नाश न आपको । होत वस्त्रको नाश ॥ तैसे तनुके नाश तें । चेतन अचल
अनाश ॥ ५६ ॥ जंगम जग थावर परें । जाकूं नासै नित्त ॥ सोचाखे समता सुधा ।
अवर नही जड चित्त ॥ ५७ ॥ मुगति दूरि ताकूं नही । जाकुंथिर संतोष ॥ दू
मुगति ताकूं सदा । जाकूं अविरति पोष ॥ ५८ ॥ होत वचन मन चपलता । ज
संग निमित्त ॥ जन संगी होवे नही । तातें मुनि जग मित्त ॥ ५९ ॥ बास
वनके विषे । मानै डुविध अबुद्ध ॥ आतम दरशीकुं वसति । केवल आतम शु
॥ ६० ॥ आप नावना देहमें । देहांतर गति हेत ॥ आप बुद्धि जो आपमें ।

वासना । होत अविद्या रूप ॥ ताते बहुरि विकल्पमय । नरम जाल अँध कूप ॥ १३ ॥ पुत्रादिककी कल्पना । देहातम भ्रम मूल ॥ ताकूं जड संपत्ति कहे । इहा मोह प्रतिकूल ॥ १४ ॥ या भ्रम मति अब गंडि दो । देखो अंतर दृष्टि ॥ मोह दृष्टि जो गोडिये । प्रगटै निजगुण सृष्टि ॥ १५ ॥ रूपादिकको देखिवो । कहन कहावन कूट ॥ इंद्रिय जोगादिक बखे । ए सब लूटालूट ॥ १६ ॥ पर पद आतम इव्यकूं ॥ कहन सुनन कबु नाहि ॥ चिदानंद घन खेलही । निज पद तो निजमांहि ॥ १७ ॥ ग्रहण अयोग्य ग्रहे नही । ग्रह्यो न गोडे जेह ॥ जाने सर्व स्वनावने । स्व पर प्रकाशक तेह ॥ १८ ॥ रूपेके भ्रम सीपमें । ज्युं जड करे प्रयास ॥ देहातम भ्रमतें नयो । त्युं तुज कूट अन्यास ॥ १९ ॥ मिटै रजत भ्रम सीपमें । जन प्रवृत्ति जिस नाहि । नरमें आतम भ्रम मिटै । त्युं देहादिक मांहि ॥ २० ॥ फिरै अबोधे कंठगत । चामीकरके न्याय ॥ ज्ञान प्रकाशे मुगति तुज । सहज सिद्ध निरुपाय ॥ २१ ॥ याबिन तुं सूतो सदा । योगे नोगे जेणि ॥ रूप अतींड्रिय तुंगतें । कही शके कहु केणि ॥ २२ ॥ देखे नाखे ओ करै । ज्ञानी सबहि अचंन ॥ व्यवहारे व्यवहारसूं निश्चयमें थिर थंन ॥ २३ ॥ जग जाणे उन्मत्त ओ । ओ जाणे जग अंध ॥ ज्ञानीकूं जगमें रह्यो । युं नहि कोइ संबंध ॥ २४ ॥ या परगही ज्ञानकी । व्यवहारै जुं कहाइ ॥ निर्विकल्प तुऊरूपमें । द्विधा नाव न सहाइ ॥ २५ ॥ युं बहिरातम गंमिके । अंतर आतम होइ ॥ परमातम मति नावइं । जहां विकल्प न कोइ ॥ २६ ॥ सो मैं या दृढ वासना । परमातम पद हेत ॥ इलिका नमरी ध्यान गत । जिन मति जिनपदहेत ॥ २७ ॥ नारे नय पद सोइ है । जहँ नरकूं बीसास ॥ जिनसूं ओ मरतो फिरै । सोइ अनय पद तास ॥ २८ ॥ इंद्रिय वृत्ति निरोध करि । जो खिनु गलित विनाव ॥ देखे अंतर आतमा । सो परमातम नाव ॥ २९ ॥ देहादिकतें निन्न में । मोथै न्यारे तेहु ॥ परमातम पथ दीपिका । शुद्ध नावना एहु ॥ ३० ॥ क्रिया कष्ट नी नहु लहे । नेद ज्ञान सुखवंत ॥ या बिन बहु विधि तप करे । तो नी नहि नव अंत ॥ ३१ ॥ अनिनिवेश पुजल विषय । ज्ञानीकूं कहँ होत ॥ गुणको नी मद मिटगयो । प्रगटत सहज उद्योत ॥३२॥ धर्म क्षमादिक नी मिटै । प्रगटत धर्म संन्यास ॥ तो कल्पित नव नावमें । क्युं नहि होत उदास ॥ ३३ ॥ रज्जु अविद्या जनित अहि । मिटै रज्जुके ज्ञान ॥ आतमज्ञाने त्युं मिटै । नाव अबोध निदान ॥३४॥ धर्म अरूपी इव्यके । नहि रूपी परहेत ॥ अपरम गुन राचे नही । युं ज्ञानी मति देत ॥ ३५ ॥ नैगम नयकी कल्पना । अपरम नाव विशेष ॥ परम नावमें मगनता । अति विशुद्ध नय रेख ॥३६॥ रागादिक जब परिहरी । करै सहज गु

णखोज ॥ घटमें नी प्रगटै तदा । चिदानंदकी मोज ॥३७॥ रागादिक परिणामयुत । म नहि अनंत सँसार ॥ तेहज रागादिक रहित । जानि परमपद सार ॥३८॥ नव प्रपंच म न जालकी । वाजी कूठी मूल ॥ चार पांच दिन खुस लगे । अंत धूलकी धूल ॥ ३९ ॥ मोह वागुरी जाल मन । तामें मृग मत होउ ॥ यामें जे मुनि नहि परे । ताकूं असुख न कोउ ॥ ४० ॥ जव निज मन सनमुख हुए । चिते न पर गुणदोष ॥ तव वहुराइ लगाइये । ज्ञान ध्यान रस पोष ॥ ४१ ॥ अहंकार परमें धरत । न लहे निज गुण गंध ॥ अहं ज्ञान निज गुण लगै । बुटै परहि संबंध ॥ ४२ ॥ अर्थ त्रिलिंगी पद लहे । सो नहि आतम रूप ॥ तौ पद करि क्यूं पाइए ? । अनुनव गम्य स्वरूप ॥ ४३ ॥ आतम गुण अनुनवत नी । देहादिकतें निन्न ॥ नूलै विभ्रम वासना । जो रहि फिरे न खिन्न ॥ ४४ ॥ देखे सो चेतन नही । चेतन नाहि दिखाय ॥ रोष तोष किनसूं करे । आपहि आप बुकाय ॥ ४५ ॥ त्याग ग्रहण वाहिर करे । मूढ कुशल अति रंग ॥ वाहिर अंतर सिद्धकूं । नही त्याग औ संग ॥ ४६ ॥ आतम ज्ञाने मन धरे । वचन काय रति बोमि ॥ तौ प्रगटे शुन वास ना । गुण अनुनवकी जोमि ॥ ४७ ॥ योगारंनीकूं असुख । अंतर बाहिर सुक्ख ॥ सिद्ध योगकूं सुक्ख है । अंतर वाहिर दुःक्ख ॥ ४८ ॥ सो कहिये सो पूबिये । तामें धरिये रंग ॥ यातें मिटै अवोधता । वोधरूप व्है चंग ॥ ४९ ॥ नहि कबु इंद्रिय विपयमें । चेतनकूं हितकार ॥ लोनी जन तामें रमे । अंधो मोह अंधार ॥५०॥ मूढा तमसूं तेप्रवल । मोहे बोमी शुद्धि ॥ जागत है ममता नरे । पुजलमें निज बुद्धि ॥ ५१ ॥ ताकूं वोधन श्रम अफल । जाकूं नहि शुन योग ॥ आप आपकूं बूकवे।निश्चय अनुनव नोग ॥ ५२ ॥ परको किशो बुकावनो । तूं परग्रहण न लाग ॥ चाहै जे में वूकवो । सो नहि तुक गुण नाग ॥ ५३ ॥ जवलौ प्रानी निज मतें । ग्रहे वचन मन काय ॥ तवलौं है संसार थिर । नेद ज्ञान मिटि जाय ॥ ५४ ॥ सूखम घन जीरन नवे । ज्यूं कपरे त्यूं देह ॥ तातें बुध मानै नही । अपनी परिणति तेह ॥ ५५ ॥ जैसे नाश न आपको । होत वस्त्रको नाश ॥ तैसे तनुके नाश तें । चेतन अचल अनाश ॥ ५६ ॥ जंगम जग थावर परें । जाकूं नासे नित्त ॥ सोचाखे समता सुधा । अवर नही जड चित्त ॥ ५७ ॥ मुगति दूरि ताकूं नही । जाकुंथिर संतोष ॥ दूर मुगति ताकूं सदा । जाकूं अविरति पोष ॥ ५८ ॥ होत वचन मन चपलता । जनके संग निमित्त ॥ जन संगी होवे नही । तातें मुनि जग मित्त ॥ ५९ ॥ वास नगर वनके विपे । मानै दुविध अबुद्ध ॥ आतम दरशीकुं वसति । केवल आतम शुद्ध ॥ ६० ॥ आप नावना देहमें । देहांतर गति हेत ॥ आप बुद्धि जो आपमें । सो

विदेहपद देत ॥ ६१ ॥ भवि शिव पद दे आपकुं । आपहि सन्मुख होइ ॥ तातें गुरु है आतमा । अपनो और न कोइ ॥ ६२ ॥ सोवत है निज भावमें । जागै जे व्यवहार ॥ सूतो आतम भावमें । सदा स्वरूप अधार ॥ ६३ ॥ अंतर चेतन देखिके । बाहिर देह स्वभाव ॥ ताको अंतर ज्ञानतें । होइ अचल दृढ भाव ॥ ६४ ॥ भासे आतम ज्ञान धुरि । जग उन्मत्त समान ॥ आगे दृढ अभ्यासतें । पत्थर तृण अनुमान ॥ ६५ ॥ भिन्न देहतें भाविये । त्यूं आपहिमें आप ॥ ज्यूं स्वपनहिमें नहि हुए । देहातम भ्रम ताप ॥ ६६ ॥ पुण्य पाप व्रत अव्रते । मुगति दोउके त्याग ॥ अव्रतपैरे व्रत भी तजै । तातें धरि शिवराग ॥ ६७ ॥ परम भाव प्रापति लगै । व्रत धरि अव्रत छोरि ॥ परम भाव रति पायके । व्रत भी इनमें जोडि ॥ ६८ ॥ दहन समै ज्यूं तृण दही । त्यूं व्रत अव्रत छेदि ॥ क्रियाशक्ति इनमें नही । जा गति निश्चय भेद ॥ ६९ ॥ व्रत गुण धारत अव्रती । व्रती ज्ञान गुण दोइ ॥ परमातमके ज्ञानतें । परम आतमा होइ ॥ ७० ॥ लिंगदेह आश्रित रहै । भवको कारण देह ॥ तातें भव छेदै नही । लिंग पक्ष रत जेह ॥ ७१ ॥ जाति देह आश्रित रहै । भवको कारण देह ॥ तातें भव छेदै नही । जाति पक्ष रति जेह ॥ ७२ ॥ जाति लिंगके पक्षमें । जिनकुं है दृढ राग ॥ मोह जालमें सो परै । न लहै शिव सुख भाग ॥ ७३ ॥ लिंग द्रव्य गुण आदरे । निश्चय सुख व्यवहार ॥ बाह्य लिंग हठ नय गती । करै मूढ अविचार ॥ ७४ ॥ भाव लिंग जातें भये । सिद्धा पनरस भेद ॥ तातें आतमकुं नही । लिंग न जाति न बेद ॥ ७५ ॥ पंगु दृष्टि ज्यूं अंधमें । दृष्टि भेद नहु देत ॥ आतम दृष्टि शरीरमें । त्युं न धरे गुण हेत ॥ ७६ ॥ स्वप्न विकलतादिक दशा । भ्रम मानै व्यवहार ॥ निश्चय नयमें दोष क्षय । विना सदा भ्रम चार ॥ ७७ ॥ छूटै नहि बहिरातमा । जागत भी पढि ग्रंथ ॥ छूटै भवथें अनुभवी । सुपन विकल निगरंथ ॥ ७८ ॥ पढी पार कहँ पावनो । मिट्यो न मनको चार ॥ ज्युं कोलुके बैलको । घरही कोस हजार ॥ ७९ ॥ जिहां बुद्धि थिर पुरुषकि । तहं रुचि तहं मन लीन ॥ आतममति आतम रुचि । कहो कोन आधीन ॥ ८० ॥ सेवत पर परमातमा । लहै भविक तस रूप ॥ बतियां सेवक ज्योतिकुं । होवत ज्योति सरूप ॥ ८१ ॥ आप आपमें स्थित हुए । तरुथें अगनि उद्योत ॥ सेवत आपहि आपकुं । त्युं परमातम होत ॥ ८२ ॥ एहि परम पद भाविये । वचन अगोचर सार ॥ सहज ज्योति तो पाइये । फिरि नहि भव अवतार ॥ ८३ ॥ ज्ञानीकुं दुःख कछु नही । सहज सिद्ध निर्वाण ॥ सुख प्रकाश अनुभव भये । सबही ठोर कल्याण ॥ ८४ ॥ सुपन दृष्टि सुख नाशतें ज्युं दुःख न लहै

लोक ॥ यागर दृष्ट विनष्टमे । त्युं बुधकुं नहि शोक ॥ ७५ ॥ सुखजावित डुःख पायकें । क्षय पावै जग ज्ञान ॥ न रहे सो बहु तापमें । कोमल फूल समान ॥ ७६ ॥ डुःख परितापें नविगलै । डुःख जावित मुनि ज्ञान ॥ वज्र गलै नवि दहनमें । कंचनके अनुमान ॥ ७७ ॥ ताते डुःख सूजाविये । आप श क्ति अनुसार ॥ तौ दृढतर हुइ उल्लसे । ज्ञान चरण आचार ॥ ७८ ॥ रनमें लरते सुजट ज्युं । गिने न बान प्रहार ॥ प्रजु रंजनके हेत त्युं । ज्ञानी असुख प्रचार॥७९॥ व्यापारी व्यापारमें । सुख करि माने डुःख ॥ क्रिया कष्ट सुखमें गिणे । त्युं वंछित मुनि सुख ॥ ८० ॥ क्रिया योग अज्यास हे । फल हे ज्ञानअबंध ॥ दोनूकूं ज्ञानी जजै । एक मतीतें अंध ॥ ८१ ॥ इछा शास्त्र समर्थना । त्रिविध योग है सार ॥ इछा निज शक्ति करी । विकल योग व्यवहार ॥ ८२ ॥ शास्त्र योग गुण ठाणको । पूरन विधि आचार ॥ पद अतीत अनुजव कह्यो । योग तृतीय विचार ॥ ८३ ॥ रहे यथा बल योगमें ॥ गहे सकल नय सार ॥ जाव जैनता सो लहे । चहे न मिथ्याचार ॥ ८४ ॥ मारग अनुसारी क्रिया । छेदे सो मतिहीन ॥ कपट क्रिया बल जग ठगे । सो जी जवजल मीन ॥ ८५ ॥ निज निज मतमें लरि परे । नयवादी बहु रंग ॥ उदासीनता परिणमै । ज्ञानीकूं सरवंग ॥ ८६ ॥ दोउ लरै तिहां इक परे । देखनमें डुःख नाहि ॥ उदासीनता सुख सदन । पर प्रवृत्ति डुःख छांहि ॥ ८७ ॥ उदासीनता सरलता । समता रस फल चाखि ॥ पर पेखनमें मत परे । निजमें गुण निज राखि ॥ ८८ ॥ उदासीनता ज्ञान फल । पर प्रवृत्ति है मोह ॥ शुज जानो सो आदरो । उदित विवेक प्ररोह ॥ ८९ ॥ दोधिक शतकें उधरलुं । तंत्र समाधि विचार ॥ धरो एह बुध कंठमें । जाव रतनको हार ॥ १०० ॥ ज्ञान विमान चारित्र पवि । नंदन सहज समाध ॥ मुनि सुरपति समता शचि । रंगे रमे अगाध ॥ १०१ ॥ कवि जश विजयें ए रच्यो । दोधिक शतक प्रमाण ॥ एह जाव जो मन धरै । सो पावै कल्या ण ॥ १०२ ॥ इति समाधि शतक समाप्त.

## ॥ अथश्री यशोविजयजी उपाध्यायकृत समता शतक प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ समता गंगा मगनता । उदासीनता जात ॥ चिदानंद जयवंत हो । के वल जानु प्रजात ॥ १ ॥ सकल कलामें सार लय । रहो दूर थिति एह ॥ सकल यो गमें जी सकल । लय दे ब्रह्म विदेह ॥ २ ॥ चिदानंद विधुकी कला । अमृत बीज अन पाय ॥ जानि केवल अनुजवी । किनही कही न जाय ॥ ३ ॥ तौ जी आश्रव तापके । उपशम करण निदान । बरषत हुं ताके बचन । अमृत बिंडु अनुमान

॥ ४ ॥ उदासीनता परिनयन । ज्ञान ध्यान रंग रोल ॥ अष्ट अंग मुनि योगको । एही अमृत निचोल ॥ ५ ॥ अनासंग मति विषयमें । राग द्वेषको छेद ॥ सहज भावमें लीनता । उदासीनता भेद ॥ ६ ॥ ताको कारन अममता । तामें मन विसराम ॥ करै साधु आनंद घन । होवत आतम राम ॥ ७ ॥ ममता थिर सुख शाकिनी । निर्ममता सुख मूल ॥ ममता शिव प्रतिकूलहै । निरममता अनुकूल ॥ ८ ॥ ममता विष मूर्छित भये । अंतरंग गुण वृंद ॥ जागे भाव निरागता । लगत अमृतके बिंद ॥ ९ ॥ परिणति विषय विरागता । भव तरु मूल कुठार ॥ ता आगे क्युं करि रहै । ममता बेलि प्रचार ॥ १० ॥ इहा मोहकी वासना । बुधकुं भी प्रतिकूल ॥ या केवलि श्रुत अंधता । अहंकारको मूल ॥ ११ ॥ मोह तिमिर मनमें जगे । याके उदय अछेह ॥ अंधकार परिणाम है । श्रुतके नामे तेह ॥ १२ ॥ करै मूढमति पुरुषकुं । श्रुत भी मद भय रोष ॥ ज्युं रोगीकुं खीर घृत । सन्निपातको पोष ॥ १३ ॥ टालै दाह तृषा हरै । गालै ममता पंक ॥ लहरि भाव वैरागकी । ताकुं भजौ निशंक ॥ १४ ॥ राग भुजंगम विष हरन । धारो मंत्र विवेक ॥ भव बन मूल उछेदकुं । विलसै याकी टेक ॥ १५ ॥ रवि दूजो तीजो नयन । अंतर भावि प्रकाश ॥ करो धंध सब परिहरी । एक विवेक अभ्यास ॥ १६ ॥ प्रथम पुष्करावर्त्तके । बरषत हरख विशाल ॥ द्वेष हुताश बुझाइये ॥ चिंता जाल ज टाल ॥ १७ ॥ जिनके बश भव वासना । होवै वैसा धूप ॥ मुनि भी जिनके वश भये । हाव भाव अवधूत ॥ १८ ॥ जबलूं भवकी वासना । जगै मोह निदान ॥ तबलुं रुचै न लोककुं । निर्मम भाव प्रधान ॥ १९ ॥ विषम ताप भव वासना । त्रिविध दोषको जोर ॥ प्रगटे याकी प्रबलता । क्राथ कषाए घोर ॥ २० ॥ ताते दुष्ट कषायके । छेदै हित निज चित्त ॥ धरौ एह शुभ भावना । सहज भावमे नित्त ॥ २१ ॥ सिद्ध ओषधी इक क्षमा । ताको करो प्रयोग ॥ ज्युंमिटि जाए मोह घर । विषम क्रोध ज्वर रोग ॥२२॥ चेतनकुं कोमल ललित । चिदानंदमय देह ॥ सूक भूक जुर जात हैं । क्रोध लूकते तेह ॥ २३ ॥ क्षमासार चंदन रसै । सीचौ चित्त पवित्त ॥ दया वेल मंडप तले । रहौ लहो सुख मित्त ॥ २४ ॥ याको भासै समवधू । क्षमासहजमे जोर ॥ क्रोध योध क्युं करि करै । सो अपनो बल सोर ॥२५॥ देत खेद वर्जित क्षमा । खेद रहित सुख राज ॥ इनमे नहि संदेह कछु । कारन सरिखो काज ॥२६॥ पर्वत गर्व शिखर चढ्यो । गुरुकुं भी लघु रूप ॥ कहे तिहां अचरज किस्यो । कथन ज्ञान अनुरूप ॥ २७ ॥ आठ शिखर गिरिराजके । ठामे विमला लोक ॥ तो प्रकाश सुख क्युं लहै । विषम मान वश लोक ॥ २८ ॥ मान महिधर छेद तुं । कर मृदु ताप विघात ॥ ज्युं सुख

मारग सरलता। होवै चित विख्यात ॥ २९ ॥ मृदुता कोमल कमलथें । वज्र सार अहँकार ॥ भेदत हैं इक पलकमें । अचिरज एह अपार ॥ ३० ॥ विकसित माया वेलि घर । जव अटवीके बीच ॥ सोवत है नित मूढ नर । नयन ज्ञानके मीच ॥ ३१ ॥ कोमलता बाहिर धरत । करत वक्र गति चार ॥ माया सापिणि जग डंसै । ग्रसै सकल गुण सार ॥ ३२ ॥ ताके निग्रह करनकूं । करौ जुं चित्त विचार ॥ समरौ रुजुता जंगुली । पाठ सिद्ध निरधार ॥ ३३ ॥ लोभ महा तरु शिर चढी । वढी जु तृषणा बेलि ॥ खेद कुसुम विकशित भइ । फलै दुःख रुतु मेलि ॥ ३४ ॥ आगर सबही दोषको । गुण धनको बरु चोर ॥ व्यसन वेलिको कंद है । लोभ पास चिहुं ओर ॥ ३५ ॥ लोभ मेघ उन्नत भये ॥ पाप पंक बहु होत ॥ धर्म हंस रति नहु लहे । रहै न ज्ञान उद्योत ॥ ३६ ॥ कोउ सयंभू रमनको ॥ जे नर पावे पार ॥ सोभी लोभ समुद्रको । लहै न मध्य प्रचार ॥ ३७ ॥ मन संतोष अगस्तिकूं । ताके शोष निमित्त ॥ नितु सेवौ जिनि सो कियो । निजजल अंजलि मित्त ॥ ३८ ॥ याकी लालच तूं फिरै । चिंतै तूं क्रमडोल ॥ ता लालच मिटि जात घट । प्रगटै सुख रँग रोल ॥ ३९ ॥ धनमानत गिरि मृत्तिका । फिरत मूढ दुर्ध्यान ॥ अखय खजाणो ज्ञानको । लखै नसुख निदान ॥ ४० ॥ होत न विजय कषायको । विनु इंद्रिय वश कीन ॥ तातैं इंद्रिय वश करै । साधु सहज गुण लीन ॥ ४१ ॥ आप काज पर सुख हरै । धरै न कोसूं प्रीति ॥ इंद्रिय दुर्जन परिदहै । बहै न धर्म न नीति ॥ ४२ ॥ अथवा दुर्जनथें बुरे । इह परभव दुःखकार ॥ इंद्रिय दुर्जन देतु है । इह भव दुःख इकवार ॥ ४३ ॥ नयन फरस जनु तनु लगै । दहै दृष्टि विष साप ॥ तिनसूं भी पापी विषे । सुमरै करै सँताप ॥ ४४ ॥ इछाचारी विषयमें । फिरते इंद्रिय ग्राम ॥ बश कीजै पगमें धरी । यंत्र ज्ञान परिणाम ॥ ४५ ॥ उन मारग गामी अबश । इंद्रिय चपल तुरंग ॥ खैची नरग अरण्यमें । लेइ जाय निज संग ॥ ४६ ॥ जे निजीक है श्रमरहित । आपहिमें सुख राज ॥ बाधत हे ताकू करन । आप अरथके काज ॥ ४७ ॥ अंतरंग रिपु कटक भट । सेनानी बलवंत ॥ इंद्रिय क्षणमें हरत है । श्रुत बल अतुल अनंत ॥ ४८ ॥ अनियत चंचल करण हय । पद प्रवाह रज पूर ॥ आशा छादक करतु है । तत्त्वदृष्टि बल दूर ॥ ४९ ॥ पंच बाण इंद्रिय करी । काम सुभट जग जीति ॥ सबके शिर पद देतु है । गणै न कोसू भीति ॥ ५० ॥ वीर पंच इंद्रिय लही । काम नृपति बलवंत ॥ करै न संख्या पूरणी । सुभट सेणिको तंत ॥ ५१ ॥ दुःख सबहिं सुख विषयको । करम व्याधि प्रतीकार ॥ ताकूं मन्मथ सुख कहै । धूर्त जगत् दुःख

कार ॥ ५२ ॥ ठगै कामके सुख गिनै । पाइ विषयकी भीख ॥ सहज राज पाव त नही । लगी न सद्गुरु शीख ॥ ५३ ॥ अप्रमाद पवि दंरुथैं । करी मोह चक चूँर ॥ ज्ञानी आतम पद लहै । चिदानंद भरपूर ॥ ५४ ॥ जाके राज विचारमें । अवला एक प्रधान ॥ सो चाहत है ज्ञान जय । कैसे काम अयान ॥ ५५ ॥ और भ्रांति मिटि जात है । प्रगट ज्ञान उद्योत ॥ ज्ञानीकूं भी विषय भ्रम । दिशा मोह सम होत ॥ ५६ ॥ दाखे आप विलास करि । जूठेकूं भी साच ॥ इंद्रजाल परें कामिनी । तासूं तुं मत राच ॥ ५७ ॥ हसित फूल पल्लव अधर । कुच फल कठिन विशाल ॥ प्रिया देखि मत राच तुं । या विष वेलि रसाल ॥ ५८ ॥ चरम मढित है कामिनी । भाजन मूत पुरीख ॥ काम कीट आकुल सदा । परिहर सुनि गुरु सीख ॥ ५९ ॥ विषय तजे सो सब तजै । पातक दोष वितान ॥ जलधि तरत नवि क्यूं तरे । तटिनी गंग समान ॥ ६० ॥ चाटै निज लाला मिलित । शुष्क हाड ज्युं श्वान ॥ तैसे राचै विषयमें । जड निज रुचि अनुमान ॥ ६१ ॥ भूषन वहुत बनावतें । चंदन चरचत देह ॥ वंचत आपहि आपकूं । भरु धरि पुद्गल नेह ॥ ६२ ॥ दूर दमनके जय किये । इंद्रिय जन सुख होत ॥ तातें मनजय करनकूं । करौ विचार उद्योत ॥६३॥ विषय ग्रामकी सीममें । इछा चारि चरंत ॥ जिन आणा अंकुश करी । मन गज वश करो संत ॥ ६४ ॥ एक भाव मन पौन को । कूठ कहै ग्रंथकार ॥ यातें पवनहितें अधिक । होत चित्तको चार ॥ ६५ ॥ जामें राचे ताहिमें । विरचै करि चित्त चार ॥ इष्ट अनिष्ट न विषयको । यूं निश्चय निरधार ॥ ६६ ॥ केवल तामें करमको । राग द्वेषतें बंध ॥ परमें निज अभिमान धरि ॥ कहा फिरत हो अंध ॥ ६७ ॥ जैसे ललना ललितमें । भाव धरतु है सार ॥ तैसे मैत्री प्रमुखमें । चित्त धरि करि सुविचार ॥ ६८ ॥ वाहिर वहुर कहा फिरै । आपहिमें हित देखि ॥ मृग तृष्णा सम विषयको । सुख सब जानि उवेखि ॥ ६९ ॥ प्रिय अप्रिय व्यवहार निज । रुचि रस साचौ नाहि ॥ अंगज वल्लभ सुत भयो । यूका दिक नहि काहि ॥ ७० ॥ होवत सुख नृप रंककूं । नोबत सुनत समान ॥ इक भो गै इक नाहिसो । वढ्यो चित्त अभिमान ॥ ७१ ॥ भवको सुख संकल्प भव । कृत्रिम जिसो कपूर ॥ रंजत है जन मुगधकुं । वर्जित ज्ञान अँकुर ॥ ७२ ॥ गुन ममका रन वस्तुको । सो वासना निमित्त ॥ मानै सुतमें सुत अधिक ॥ दौरत है हित चित्त ॥ ७३ ॥ मनकृत ममता झूठ है नही वस्तु परजाय ॥ नहि तो वस्तु विकायथैं । क्युं ममता मिटि जाय ॥ ७४ ॥ जन जनकी रुचि भिन्न है । भोजन कूर कपूर ॥ भोगवंतकूं जो रुचे । करभ करै सो दूर ॥ ७५ ॥ करभ हसै नृपभोगकूं । हसै कर

जकूं जूप ॥ उदासीनता बिनु नही । दोनूंकूं रति रूप ॥ ७६ ॥ परमे राचै पर रुचि। निज रुचि निज गुणमांहि ॥ खेलै प्रभु आनंदघन । धरि समता गलि बांहि ॥७७॥ माया मय जगको कह्यो । जहां सबहि विस्तार ॥ ज्ञानीकूं होवत कहां । तहां शोक को चार ॥ ७७ ॥ शोचत नहि अनित्य मति । होवत माल मलान ॥ जांके जी शोचत जगै । धरत नित्य अजिमान ॥७ए॥ कूट वासना मढितहै। आशा तंतु वितान ॥ ठेदि ताकूं शुज मती । कर धरि बोध कृपान ॥ ७० ॥ जननी मोह अंधारकी । माया रजनी कूर ॥ ज्ञान जानु आलोकते । ताको कीजै दूर ॥७१॥ उदासीनता मगनहुइ । अध्यातम रस कूप ॥ देखै नहि कछु और जब । तब देखे निज रूप ॥ ७२ ॥ आगे करी निसंगता । समता सेवत जेहु ॥ रमै परम आनंद रस । सत्य योगमे तेहु ॥७३॥ दंजहि जनित असंगता । इह जवके सुख देत ॥ दंज रहित निसंगते। कौन दूर सुख देत ॥ ७४ ॥ मतहो संग निवृत्तकूं । प्रेम परम गतिपाइ ॥ ताको समता रंग पुनि । कीनही कह्यो न जाइ ॥ ७५ ॥ तिसना विद्रुम वल्लि घन । विषय घुमर बहु जोर ॥ जीम जयंकर खेद जल । जव सायर चिहुं ओर ॥ ७६ ॥ चाहे ताको पार तो । सज कर समता नाउ ॥ शील अंग दृढ पाटिए । सहस अढार बनाउ ॥ ७७ ॥ कूआ थंज शुज योग परि । बैठे मालिम ज्ञान ॥ अध्यातम सढ बले चलै । संयम पवन प्रमान ॥ ७७ ॥ योगी जब हुं तप करै । खाइ जुरै तरु पात ॥ उदासीनता बीनु ज सम । हुतिमे सोजी जात ॥ ७ए ॥ बूटै जवके जालथे । जेनही तप करि लोक ॥ सो जी मोहै काहुकूं । देत जनमकोशोक ॥ ए० ॥ विषय उपद्रव सब मिट्यो । होवत सुख संतोष ॥ ताते विषयातीत है । देत शांत रस पोख ॥ ए१ ॥ बिनु लालच बश होत है । बसा बात यह साच ॥ याते करै निरीहके । आगे सम रति नाच ॥ ए२ ॥ दे परिमल समता लता । वचन अगोचर सार ॥ नित्य बहिरि जी जिहां बसै । लहु तु प्रेम महकार ॥ ए३ ॥ सेना राखस मोहकी । जीपै सुखे प्रबुद्ध ॥ ब्रह्म बानि कवेइके । समता अंतर शुद्ध ॥ ए४ ॥ कविमुख कल्पित अमृतके । रसमे मूझत कांहि ॥ जजो एक समता सुधा ॥ रति धरि शिवपदमांहि ॥ ए५ ॥ योग ग्रंथ जलनिधि मथो । मनकरि मेरु मथान ॥ समता अमृत पाइके । हो अनुजव रस जान ॥ ए६ ॥ उदासीन मति पुरुष जो । समता निधि शुज वेष ॥ ठेरत ताकूं क्रोध किछु । आपै कर्म अशेष ॥ ए७ ॥ शुद्ध योग श्रद्धान धरि । नित्य करम को त्याग ॥ प्रथम करै जो मूढसो । उजय ज्रष्ट निरजाग ॥ ए७ ॥ क्रिया मूढ जूठी क्रिया । करै नथापै ज्ञान । क्रिया भ्रष्ट इक ज्ञान मति ॥ ठेदै क्रिया अज्ञान ॥ एए ॥ ते दोनूंथे दूरि शिव । जे निज बल अनुसार ॥ मारग रुचि मारग गहै ।

सो शिव साधन हार ॥ १०० ॥ निवृत्ति ललनाकूं सहज । अचिरजकारी कोउ ॥ जो नहि थाकूं रुचत है । याकूं देखे सीउ ॥ १०१ ॥ मन पारद मूर्छित भयो । सम ता औषधि आइ ॥ सहज वेध रस परम गुन । सो वन सिद्धि कमाइ ॥ १०२ ॥ बहु त ग्रंथ नय देखिके । महा पुरुषकृत सार ॥ विजयसिंह सूरी किउं । समता शतको हार ॥ १०३ ॥ भावत जाकूं तत्त्व मन । हो समतारसलीन ॥ ज्यूं प्रगटै तुज सहज सुख । अनुभवगम्य अहीन ॥ १०४ ॥ कवि यशविजय शुं शीखए । आप आपकूंदेत ॥ साम्यशतकउद्धारकरि । हेमविजयमुनिहेत ॥ १०५ ॥ इतिश्री समता शतक समाप्तः॥

## ॥ अथ श्री दिक्पट चोराशी बोल प्रारंभः ॥

॥ छप्पयछंद. ॥ सुगुण ज्ञान शुभ ध्यान, दान विधि धर्म प्रकाशक; सुघटमान पर मग्न, आन जस सुगति अभ्यासक; कुमत वृंद तमकंद, चंद परि दंद निकासक; रु चि अमंद मकरंद, संत आनंद विकासक; जस वचन रुचिर गंभीर नय, दिक्पट कपट कुठार सम; जिन वर्द्धमान सो वंदिये, विमल ज्योति पूरन परम. ॥ १ ॥ क वित्त इकतीसा. ॥ सागरके आगे कहा गागरी धरेगी गर्व, खर्व कहा बेसरूंके आगे अर्ब इंदको; नाक वृछ आगे कहा आकको अंकूर छाजै, सूर तेज आगे कहा राजै धाम चंदको; कामधेनु आगे कहा कूकरी करेगी मान, भूपतीके आगे कहा जोरहै पुलिंदको; ऐसे सरवंग शुद्ध ग्रंथ जो सितंबरको, ताके आगे कौन दर्प डुर्मतीके वृंदको ॥ २ ॥ दोहरा. ॥ पहिलुं दिक्पटशुं सुनै, बोल चुरासी फेर, सर्व विसंवादे भयो, अबतो बहुत अंधेर. ३ निन्हव थैं अधिको बुरो, कह्यो मिथ्याति सो इ; परिहरना अधिकार यह, आवश्यकमे जोइ. ४. खट शत नव वरखे भयो, तस मत जरू मूग पास; सहस मल्ल दीक्षा लइ, आर्य कृष्ण गुरुपास. ५ राजमान्य तिणे अन्यदा, वीहरयो कंबल रत्न; मूर्छासेती संग्रह्यो, कियो न संवर यत्न. ६ गु रुने कीने छूटने, टले युं मूर्छा दोष; आइ देखि मनमे धस्यो, तीनि तांथें बहु रो ष. ७ थविरकल्प खंडन कियो, बरन्यो जब जिन कल्प; नगन पंथ तिण आ दस्यो, त्यजि सद्गुरुके जल्प. ८ तस भगनी देखी नगन, वेसै दीनो बेस; चरन निषेधै नारिकूं, तब सो सुरि निरदेश. ९. जैन कहावै नामथें, तांथें बढ्यो अंकू र; तनु मल ज्युं फुनि संतनैं, कियो दूरिथें दूर. १० भसमक ग्रह रज भसममय, तांथें वेसर रूप; उठे नाम अध्यातमी,भरम जाल अंध कूप. ॥११॥ कवित्त इकतीसा ॥ भोगके भीखारी अधिकारी नही ग्रंथनके, आपकी पथारीमें चलावै निंदा पारकी; खो जै भांति न्यारी न्यारी किरियाकूं डूरि डारी, कहै कोउ शीखसारी देवै गारी नारकी;

झूठे मत नामधारी भांगकी खुमारीमें जो, लवै युक्ति न्यारी सोतो, कूटै भीती गारकी; एसे हैं जुआरी अब मूढनके पट्टधारी, आरी आरी भानै बात लात जैसी टारकी ॥ १२ ॥ दोहरा ॥ पल्लवग्राही लोककूं, समुझावै कुन जान; कोमल करतुनघनघटा, ज्युं मुगसेल पखान. १३ दृष्टिराग मदमत्तकूं, जो देवै उवएस; सो कूकर मुखमें ठवै; आप कपूर अशेष १४ शुष्क पयोधर नारि ज्युं, निंदै कंचुककार; गूढ हेतु बुद्ध गम्य त्युं, निंदे ग्रंथगिमार. १५ ऐसे जडसूं संतकूं, घटै न वाद विचार; तौ भी परके बोधकूं; कहियें बोल उचार. १६ साचेकूं झूठा कहै, झूठेकूं कहे साच; अभिनिवेश उन्मत्तको, ऐसो बहु विधि नाच. ॥ १७ ॥ कवित्तइकतीसा ॥ बूटै अंतराय पंच रंचही न राग रोश, फास ठक्क काम कीनो अंचही न देखिइं; वंचना अज्ञानकी मिथ्यातको प्रपंच निंद, आश्रवको संच सो तो, मूलथैं विलेखिइं; एसैं जो अठार दोष, घाति कर्म भाव पोष, ताको परिशोष याके ज्ञानमें विशेखिइं, सोई शुद्ध नाम कोष घोषतें अनंत तोष, मोष मग्ग दाता त्राता देव देव लेखिइं॥१८॥छपय्यछंद॥ क्षुधा, तृषा, भय, शोग, रोग, जर, मरण, जनम, मद; मोह, खेद परसेद, निंद, विषमय, चिंता, गद; रति, विषाद, ए दोष, कहे अष्टादश दिक् पट; सो लीक तिन मांहि, नही गुण दूषण उद्भट; जो भाव अघाती दोष हुइ, तौ जिनकू नर गति प्रमुख,दूषन अनंत विलगे रहै, शिव पद दूषक मुनि विमुख ॥ १९ ॥ चौपाइ ॥ सप्तधातु वर्जित जिन काया, परमौ दारिक कहै सु माया; भिदा नही वैक्री परिताकी; संघयणादिक खंध विपाकी. २० परमौदारिक जो जिनवरकूं; तौ मध्योदारिक गणधरकूं; कहै कहा नहि कल्पन कारी; क्युं औरनि सरखे गणधारी. २१ सप्तहु धातु गलै जिनवरके; केते धातु गलै गनधरके; सप्त धातु जिण नांणें जावे; मन नाणें मुनि कह्यो कहाँ पावे. २२ जिन तनु थिति नो कर्माहारें; कहै मूढ तेझूठ विचारें; औदारिक थिति कवलाहारें, दृष्टि हानि होइअन्य प्रकारें; ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ कहै केवली कर्मकूं, दग्ध रज्जुं सम मूढ; आगममति जानै नही, जोआउ नाम दृढ रूढ २४ तत्त्वारथ परिषह कहै, जिनकौ प्रगटइग्यार; ताको अरथ मरोरतें, क्युं पामें भव पार; २५ सूत्रनमें परिषह कहै, वृत्ति लिख्यो नकार; जो संसो उपजत नही, तो तुज भ्रमको भार. २६ जिनकूं इंद्रिय विरहथैं, तनु गत नहि सुख दुःख; कहै जु जीव विपाक तसु, उदो फलै कुण रुख. २७ खाइक सुख जिनकूं कहै, केवल ज्ञान सरूप; वेदनीयके खय गये, कुन गुन कह्यो पशु रूप. २८ उदय भाव खाइक गन्यो, जिनकूं प्रवचनसार; अर्क तूल परें तो फिरे, क्रियारहित निरधार. २९ बेठें उठें आसने, देवैं प्रेरित देव, ऐसो है क्युं कल्पना ? छोडि न मिथ्या टेव. ३० केवलनाणे जो खगति,

मननाथें कबु होइ; करम विफल जो मोह विनु, यश कीरति क्युं जोइ? ३१ अति शय नूख अनावको, कहे सुगुरु कुल हीन; नाव अघाती क्युं मिटै, घातीगण जो खीन. ॥ ३२ ॥ कवित्त इकतीसा ॥ केवलीआहार करे जागे अग्नि अंतरकी, वेदनी आहार शक्ति ताकी नाही हीनता; हेतुके समाजतें घटै जुं काज साज शुद्ध, लाजे तहां आज लुंक हानि कहा दीनता; अन्यथा न अष्ट वर्ष, वाल केवली विशाल; पूर्व कोटि आउ पाल ताकूं वृद्धि खीनता; वृद्धि पोखदाइ नाइ वर्गणा कहासु पाइ? ज्ञानथें जु आइ तामें मुक्तिकी प्रवीणता. ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ दिकू पट जिन वोलें नही, शिरथे उठे नाद; किरिया विनु घट ध्वनि परे, तामे कौन सवाद. ३४ कहे शिलाका पुरुषकूं, नही कवहुं निहार; तपति लब्धि सवकूं नही, एहु अदृष्ट प्रकार. ३५ खल पुद्गल तिनकूं जले, रस पुद्गल जलि जाइ; दोउ जले तौ उदरमें, नस्म क व्याधि उपाइ. ३६ तेनरु कंक गहनि कहे, उर कपोत परिनाम; ए आगमके वचन में, क्युं न करो विसराम? ३७ कहे साधु अप्रमत्तकूं, नही आहार विहार; खांमी सिद्ध शिला नइ, जिहां न साधु प्रचार. ३८ वाहिर मानुष खेलके, गइंहोई व्रत नंग; यूं कहते चारण विना, क्युं जलमें शिव संग? ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ दोइ घटीके फेर, केवल मानै नरतकूं; वडो मोहको घेर, नाव प्रधान गनै नही. ॥ ४० ॥ हरि गीत छंद ॥ चारहुं निखेपे एक द्रव्यें, कहे श्रीजिन आगमें; ज्युं नाम घट संठाण थापन, द्रव्य मृदगुण नावमें; युं जीव द्रव्यह केवलादिक, गुनह द्रव्यत नावतें; इइ नियम पुद्गल द्रव्यको, तौ तंत नहि व्यनिचारतें. ४१ जो समय सारे अंत्य धारे, मुगति लिंग न वेदतें; निश्चय प्रमानै व्यवहरइ तें, वस्तु गुण गुनि नेदतें; अधिगम विना सम्यक्त्व मानै, द्रव्य विनु चारित नही; चारित बिना कहै समकिते, शिव हठें मति जो वही. ४२ सुर कोइ शिर परि वस्त्र डारै, जाय केवल तौ घटी; जो द्रव्य विनु केवल नही, तौ केवला वरणं पटी; जो नाव लिंग प्रमान कीजे, नेद पनरहुं तौ घटै; सिद्धंति नाखे सिद्धके नर, तासु निंदक नव अटै. ४३ थी लिंग सिद्ध कहे न कुमते, तास चरण निवारए; जो संघ प्रवचन सारि चोविह, पढ्यो सो न विचारए; चोनेअ जोलिं अज्जिका करि, पंच होवैं अज्जके; यूं संघ लोपै समय कोपै, डूमंती न वधी सके. ॥ ४४ ॥ कवित्त इकतीसा ॥ पुण्यके कचोल रंग रोलके निचोल सोल, शीलथें अडोल याकी जातिमें महासती; यामें जग तातनकी मात अवदात गात, नमे जाकूं इंद जाति नित्तही महीपती; दानके स्वनाव साचे, तपके प्रनाव जाचे, नही नावकाचै नाचै माचै साधु संगती; धर्म अवलंविनी जो दोपकी विलंविनी नितंविनी है ऐसी ताकूं क्यूं न पंचमी ग

ति ॥ ४५ ॥ दोहरा॥ मल्ली सो कुमरी कही, मल्लसु कुमर कहाइ; पुरुष स्वरूपें देखिये, पुरुष स्वरूप न माइ. ४६ तित्थंकर थी वेदको, क्यूं एकनको बंध; गुण थानक आकर्षे थी, एहु हमारी संध. ४७ तित्थ प्रणाम प्रदक्षिणा, थानकी वरखि कहान; परहित करनी पुण्य फल, कपिल नृत्यको तान. ४८ दोहु कुमर जिनजी कहै, पंच कुमर कुन हेत; प्रिया पंचकी द्रौपदी, मानै नहि कुल केत. ४९ एकै घरि ऊजोजिमें, अठावीस गुनमूल; अंतराय कलूपित कहै, ते सबही निरमूल. ५० कस्तुरी अपवीत्त कहै, वाद्य वजावे कांहि; कहु कुंकुम करपूरकी, गति आवै मनमांहि. ५१ प्रतिमा नगन न सोहियें, पट नूखन पहिराइ; स्नात्र विलेपन धूप मुख, जगतिहि हेतु कराइ. ५२ शिष्य करै ज्युं जिन करै, तौ क्यूं दिंरूकत शीश; क्यूं बोलत केवल बिना, न विराधौ जग दीश. ५३ नगन दशा जिनवर धरै, नगन दिखावै नाहि; अंबर हरि खंधे धरै, उचित जानि मनमांहि. ॥ ५४ ॥ अरिल्लछंद ॥ गौतम स्वामीगए, खँदककूं; मानै नहि मुनि जाइ, सुसनमुख जैनकूं; धर्मके कारन क्यूं अपवाद न मानही; ऐसिहि जांतिसुं होवत बीजाधानही. ॥ ५५ ॥ दोहरा ॥ कोरे कहै जु थापना, प्रतिमा क्यूं न पखान; सद्भावा सद्भावतें, ताको द्विविध वखान. ५६ जिन विरहै जिन बिंबकी, ज्यूं थापना प्रमान; गुरुविरहै गुरुथापना, तैसे करै सुजान. ५७ तैसी जमति न विमल गिरि, जैसी गढ गिरनार; तीरथ क्रम जानै नही, को तस बोधन हार. ५८ शुद्ध उपयोगी साधुकूं, शिष्य दिख उवएश; ध्यान शुद्ध उपयोगमें, नहि अपवाद अशेश. ५९ काय खेद जो धर्ममें, सो अहि धर्म प्रकार; ताकूं करत यती नही, जाखे प्रवचनसार. ६० तापरि हम यूं कहतु हैं, कह अपवादी साध; पंचम गुन थानक जजे, के अधिकार हि बाध. ६१ प्रथम पद्म अविरति नही, तौ व्रतको नहि जंग; द्वुतिय पद्म जो पाप है, तौ गृहिकूं क्यूं रंग ६२ हिंसा दोष स्वरूप जो, तो लूंपक मत रज्ञ; आगे पीछे देखिके, क्यूं जाषो नहि अज्ञ. ६३ वधू जइ वसुदेवकी, बहुतरि सहस उदार; अधिक जयो कह चक्रियें, यूं संसौ मत धार. ६४ बाहुबली ज्यूं अधिक बल, जरत हियें निरधार; सोजागी वसुदेव त्यूं, सबहीमें शिरदार. ६५ राज जमाली वीरको, कह्यो जमाई सुत्ति; सो उत्थाप्यो कुमतथैं, वीर कुमर कहि धुत्ति. ६६ चंकरुद्रके शीशकूं, मानै केवल नांहि; जानै नाहिं ठांभै नही, सो व्यवहार उगांहि. ६७ चोविहार पचखान बिनु, माने नहि उपवास; जाने नहि तिविहार जी, दुब्बलको अज्यास. ६८ परम क्रिया आगे करै, प्रथम क्रियाके त्याग; चपल वित्तुतें मूढ नर,

नही बोधके लाग. ॥६०॥ कवित्त इकतीसा ॥ भाषाज्यूं मलेछकीन भाषै विप्रवेद दाखै, ताके बोधके निमित्त भाषै सोउ पारसी; तैसे व्यवहारकूं न शुद्धरंगी अंगी करै, लेवै शुद्ध साधवेकूं छाया व्यवहारसी; ऐसे कहै कोउ ताकूं डुष्टताके हेतु जानि, डुष्ट पुष्टतामें देखै कल्पनाकी आरसी; ज्याही परछाही ताकी लिंग साधने विछाही, ज्ञा नीकूं उछाही मानै क्यूं न जानै छारसी. ७० जैसे कोउ मंद सत्व आपको ममत्व गहै, कहै में भखूं जो भख्य तत्व चक्रवर्त्तिको; खायो सो अघायो पैन पायो चैन तीव्र तार्थे, जाख्यो न जुरायो आयो दायो भंद अर्त्तिको; तेसे शुद्धरंगी अंगी ताहीको प्रसंगी होत, मार्गको विभंगी होवे श्वान जन्म गर्त्तिको; भरै ताकूं शुद्ध भाव याकूं योगको स्वभाव, बाह्य हेतुको प्रभाव पूगे मार्ग वर्त्तिको. ॥ ७१ ॥ दोहरा ॥ निश्चय नय पहिलूं कहै, पीछेले व्यवहार; भाषाक्रम जानैं नही, जैन मार्गको सार. ७२ नही निश्चयमें शिष्यगुरु, क्रियाक्रियाफल योग; कर्त्ता नहि भोक्ता नही; विफल सबै संयो ग. ७३ तातें सो मिथ्यामती, जैनक्रिया परिहार; व्यवहारी सो समकिती, कहै भाष्य व्यवहार. ७४ जो नय पहिलूं परिनमें, सोइ कहै हित होइ; निश्चय क्यूं धुरि परि नमे, सूखम मति करि जोइ ? ॥ ७५ ॥ कवित्त इकतीसा ॥ उंची उंची बातकूं दिखावै नसिखावै मग्ग, अंतलूं तिखावै सो चरकावै न सुखासिका; घोरेथें आरंभे पै निवाह लूं जो थंभे न अचंभे दंभको विलंभे ताकी सिद्धि आसिका; फूलसो अमूल शुद्ध निश्चयीको मूलपै सुगंधताको जानै व्यवहार वृत्ति नासिका; भोजन अगम्म सोहै किरिया अलग्ग जो है, पाग जैसे नग्नकूं विलज्जता प्रकाशिका. ॥ ७६ ॥ अडिल्लछंद ॥ द्रव्यारथ नय संगत आपस्वभावमें; जे राचे सो माचे स्वसमय भावमें; पर्यायारथ नयमें जे रंगी रमै; ते परसमयी भाखे प्रवचन सारमें. ७७ पक्षपात यूं एकहु नयमें जे करै; स्याद्वाद सरवंगी ते नवि चित्तधरै; एक पक्ष वेदको डूजो बुद्धको; खप्पर दोउमें भेद न शुद्ध अशुद्धको. ७८ निज निज वचने सत्य, असत्य नयंतरें; सबही नयहै सरखे वर्जित अंतरें; एक भाव निरधारै सो नहि पंथमें; सिद्ध सैन यूं भाखे संमति ग्रंथमें. ॥ ७९ ॥ दोहरा ॥ कहै स्वभाव विभावथै, गुनके दो परयाउ; लहै न परि नति द्रव्यकी, जीव सिद्धके न्याउ. ८० गुन विभिन्न नहि द्रव्यथें, कुन ताके पर्याय; सह भावी परयायको, गुन अभिधान कहाय. ८१ जो गुन त्रीजो भाव है, तौ त्रीजो नय होइ; सो तौ प्रवचनमें नही, संमत साथें जोइ. ८२ नवही नय नयचक्रमें, द्रव्यारथ मुखइठ; तत्वारथमें सात हैं, देवसेन कहा दिठ. ८३ तत्व सात नवजो

कहे, त्यूं नहि नयकी बात; एहु विभक्त विभाग है, सो तौ कारन जात ७४ जो इठथें नव नय कह्यो, गहत द्रव्य परयाय; अप्पियणप्पिय भेदथें, एकादश हुइ जाय. ७५ जो संग्रह व्यवहारमें, अप्पियणप्पिय इठ; आदि अंत नय थोकमें, अभाव द्रव्य निविठ. ७६ उपनय नयको अंश है, कहै विभिन्न कुवंश; उप प्रमाण मानै नही, क्यूं प्रमाणको अंश. ॥ ७७ ॥ सवैया तेइसा ॥ काल अणुकुं कहे युं अ संख्य असंख्य प्रदेश आगाशहि लोके; मंदगति अणु संक्रम गम्य समै परयायकु द्रव्य विलोके; वस्तुविना थिर जन्म विनाशि समै परयाय सधै नहि थोके; सो तुं न जानत काल सितंबर, यूं हि पुकारत दिक्पट फोके. ७८ सूखम वर्त्तन रूप समै सु तु, जीव अजीवहिके परयाया; ताहिके द्रव्य तु जीव अजीवहि, कालके द्रव्य अनंत कहाया; सूखम वर्त्तन हेतु जु चाहु तु, क्यूंगति हेतु न तैस सुहाया ? जो गति हेतु है एक साधारण, एकहि खंध समै तुह्म पाया. ॥ ७९ ॥ सोरठा ॥ गति थिति हैं जु विभाव, ताको हेतु विलोकिइं; वर्त्तन सर्वै स्वभाव, बाह्य हेतु ताको नही. ८० ज्यो पज्जव गुन द्रव्य, त्रिविध अर्थ व्यवहारथैं; त्यौं कहिये षट् द्रव्य, पज्जव काल प्रमानथैं. ८१ काल द्रव्य कहुं एक, तहं अनपेक्षित द्रव्य नय; तत्त्वा रथ सुविवेक; वृत्तिकार विगते वदे. ॥ ८२ ॥ चौपाइ॥ जनम कल्यानक समय सुहा या; मेरु अचल जिनवीर चलाया; यातो वात न मनमे आवे; मुगधनकूं यूं कहि दिखलावे. ८३ देवबले धरनी या कंपै; ताकूं शाश्वतकौन नजंपै; देवबले भावे जो सांसो; देवदेवबल कहा विमासो ? ८४ मुनिसुव्रतको गनधर थोरो; एसो कहे सु जानै थोरो; बूजे नहि असमंजस बोलै; सो संतनमे तृणके तोलै; ८५ सदा सत्य सेतंबर बानी; तहां कहे मुनिसुव्रत ज्ञानी; प्रतिष्ठानपुरमांही आए; देव मिली मठ तीन बनाए. ८६ पूरव भवको मित्र प्रमान्यो; अश्वमेधसे वधकूं आन्यो; देख्यो अश्व तास उपकारी; रातिहिमे प्रभु चले विहारी. ८७ प्रात समय प्रभुजी भृगु कछइं; समवसरन बैठे गुन अछइं; पूरव भव कहि अश्व प्रबोध्यो; तहां ओरको चित्त न सोध्यो. ८८ प्रभुपासे अनशन ले वाजी; भयो देव सहस्रार समाजी; सुव रनकी प्रतिमा तिन कीनी; अश्वमूर्त्ति सेवक करि दीनी. ८९ नाम अश्व अवबोध कहायो; तेहु तीर्थ जगमांहि गवायो; शत्रुंजय माहातममांही; भाव सुनो ए भव्य उमांही. १०० कुन गनधर इहां थोरो भाख्यो; झूठो आल मुगधने दाख्यो; आंखिकु औखध काने बाहे; ताको कुन गहिबांह निवाहे ? ॥ १०१ ॥ सवैया तेइसा ॥

जंगम तित्थ तुरंगम संगम, रंगम हानि धिकारन जानी; ताके प्रयोजन योजन साठि निशाहिमे आय जु निर्मल ज्ञानी; अश्वमही भृगु कछ सुलछन, पावन कीनि सुधाखरिवानी; ताके नमो मुनिसुव्रतके पद संपद कारन तारन प्रानी. ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ महामंत्र नव पद कहे, कहे पंच पद आन; गोमुठसारादिक धुरे, नव पद लिखे प्रमान. १०३ ज्यूं चूला बिनु श्रुत नही, त्यूं न मुढ नवकार, जो संखे पहि आदरो, जपहु एक ॐकार. १०४ श्रुत सबहीमे पंच पद, नव पद श्रुत महमंत; शुद्ध परंपर बुध लहे, ए जिन शासन तंत. १०५ चूला वर्ण बतीशकी, कहे सु सबहि अजान; अडसठ अख्कर कवचमे, कहे जु मंत्र प्रमान. १०६ नव अख्कर पदथे नही, तहां छंदको भंग; ऐसे बहु पद देखिइं, आगममांहि सुवंग. १०७ देव देव नर देव सब, अर्द्ध मागधी वाणि; भाखे सत्यारथ वचन, पंचम अंगे जाणि. १०८ और कहे जिन भाखही, सर्व मागधी वाणि; तामे साखी कौन थो, कहा लाभ कह हाणि ? १०९ दंत रहित जिन मानते, याको नहि कछु लाजः सो माने नहि दाढ तस, पूजे जे सुरराज. ११० कहे ज्यु तंत्र समाधिते, जाति लिंग नहि हेत; चंडालादिक जातिको, क्युं नहि मुकति संकेत, १११ गुणथानक प्रत्यय मिटै, नीच गोत्रकी लाज; दर्शन ज्ञान चरित्तको, सबहु तुल्य समाज. ११२ कौन जाति अधिकारिणी, नहि तौ कहो प्रमान; ब्रह्मजाति ब्रह्मणवदे क्षत्रिय क्षत्रिय मान. ११३ त्राण नही कुल जाति कछु, विद्याचरण विहीन; सूगडांगको वचन यह, क्युं न करो मन लीन ? ११४ करमभाव प्रभुको रह्यो, नीच गोत्र अवशेष; तायें द्विज घरि अवतरै, तहां करे जरु द्वेष. ११५ दोष नही दो तातको, क्षेत्र बीजके न्याय; शील भंग नहि मातकू, गर्भ न वीर्य कहाय. ११६ अन्न खात्र परिनाम है, पय तृणको परिनाम; द्रव्य भिन्न पैं भिन्न गुन, गर्भ न वीरय नाम. ११७ करम भाव प्रभुकुं कहो, जो आवैं तुम्ह लाज; सदा सिद्ध तौं मानिलो, कहा जनमको काज. ११८ कल्या नक दो घरि किये, कल्यानक षट्ट होत; सो दूशन हमकूं नही; तहँ दिन. गणित उद्योत. ११९ सुरकृत कल्यानक नही, ऋषभ राज अभिषेक; वीरगर्भ अपहारमें, त्यूं न कल्यानक टेक. १२० नैगमेषिकी शकति है, रोम कूपमें गर्भ; संक्रम करतहि अपहरै, सो नहि मानत अर्भ. १२१ कहें बाहुबल केवली, नम्यो ऋषभके पाय; बैठो देइ प्रदक्षिणा, कहो न-कूठ बनाय. १२२ अप्रमत्तता है जहां, तहां न बंधन भाव;

उचित प्रवृत्ति न गरही, तौ जी जिन सद्भाव. १२३ छींक न मानै वीरकूं, कर्म वेद्य को जाव;फरसनकूं दरसन कहै,सो तौ कुटिल स्वजाव. १२४ हरि हरिनी हरिवर्षके,यु गल हरे सुर कोइ; मथुरा नगरी राज्य दिइ; करे देह लंघु सोइ. १२५ दिव्य शक्ति तबथें जयो, हरिको वंश विशाल;ऐसो अचरय जाव ए, होत अनंतहि काल १२६. काल अनंत अनंतथें, युगल युगल अपहारि; शून्य होत हरि खेत थुं, दूषन कहे बिचारि. १२७ तहां कहे सिद्धांत हम, जैसो युग अपहार; तैसो पूरन ताहिको, काल बहू निर धार. १२८ एक रूप अचरय नही, सदा कहे दश संख्य; काल अनंत अनंतथें, होत असंख्य असंख्य १२९ कहे चमरकी गति नही, शक्र लगें निरधार; ताकूं कोप कृतां तको, जगवइ अंग विचार. १३० देशअनारयमेंनही, वीर विहार अशुद्ध; मनुषिणि देव न जोगवे, कहे सु वचन विरुद्ध. १३१ सुदि वैशाख दशमि दिने, वीर उपन्नो ज्ञान; श्रावन सुदि पडवा दिने; आपुन कियो बखान. १३२ गसठ दिन मौनी रहै, जाखे एम अजान; एकहु सजा अजाषितां, हम हैं वचन प्रमान. १३३ मौन अजा वित जानिके, मानहु अधिक डुमास; एक सजा तैसी कहत, क्यूं लागत तुम पास १३४ ठवे देव जिन विचरिते; पान कमल पग हेठि; कहे जूमि परि गमनमें, ते देव नकी वेठि. १३५ पाउ धरे जहँ धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन उपरि चले, कहा बन्यो एसाज. । १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहैं सुर लोक; इंड्र मिलत सत मानही, ते सबही मत फोक. १३७ बदले अतिशय तीस चउ, कहे जु गुरु कुल रीति; तो अदृश्य आहार विधि, दाखत पावै जीती. १३८ कुगति रहित जिनवर कहो, बलि ढौंकत कुन हेत, चरम नीर घृत कुतपको, कौन दोष कहु ले त. ? १३९ मरुदेवी औ नाजिको; युगल धर्म नहि दोष; दशायु सन्मुख धर्मकी, करे धर्मको पोष. १४० सुर नर विहित विवाहको, जबलूं नहि व्यवहार; प्रजुकूं जी तबलूं नही, युग्म धर्म अधिकार. ॥ १४१ ॥ कवित्त इकतीसाः ॥ साधुकूं कुपात्र कोउ कहे पात्रधारी नांहि; गत्रसो पढ्यो है कोपैं गात्रकूं न मानही; पाउधारी नाहि, लब्धि पात्र और पात्रधारी; एह रीति नीति ज्ञाता सूत्रथैं प्रमानही; ग्लानकूं आहार दान पात्र बिनु कैसे होत, गृही पात्र जुंजै तौ गृहस्थ जाव गनही; पाहुनेकी जक्ति युक्ति पात्रहीथै करे साधु, पिंडकी संशक्ति पात्र विना कैसे जानही. ॥ १४२ ॥ सवैया तेइसा ॥ शौचके कारन राखे कमंडलु, पात्रकुं छोरि कहा गुन पायो; वीठिसि वींठि धरी त्यजि उंघेकुं, औरसु मूढने वेष बनायो; तसलॆब्धी लग जोहि कमंडलु, पात्र

लँब्धी लगि पात्रसुहायो; जैनको भूषन जैनको वेष है, और धरे कह हाथमे आयो ? ॥ १४३ ॥ दोहरा ॥ वाल अग्र पुग्गल धरे, मुखि भाषत हो दोष; धरो कमंडल पिंछि का, कहा करौ कंठशोष ? १४४ उपधि सहित नहु शुद्ध हैं, ज्यूं तंदुल तुषवंत; एक पख मन शुद्धता, कहे भाव भगवंत, १४५ कहै कोंउ पचखानको, उपकरनै व्है भंग; देहा ऽहारादिकवीषे, तास न उचित प्रसंग. १४६ रौद्रध्यान मूर्छा प्रमुख, सब स रिखे तहँ दोष, यतनासूं निर्दोषता, ए सुवचन सत् कोष. १४७ द्रव्यादिक चोभंगसूं, धरै न मूर्छा साधु; ए चोविह पचखानको, एकहु अर्थ अगाधु. १४८ शुद्ध योग अप वादथैं, कह उपकरन सु मंद; उपचरिताऽनुपचरितमें, साधनतासममंद. १४९ मूर्छा बाह्य प्रवृत्तिमें, जोतुम कहो कुपक्ख; भोजन त्यजि अनशनभजो, ऐसें होत जु दक्ख १५० ध्यानदीपको तैलजो, भोजन करौ प्रमान; तौ निवात पद उपकरन, मानौ क्यूं न अजान ? ॥ १५१ कवित्त इकतीसा ॥ पापके ओढैया महा मोहमें पोढैया ठैया, दैया दैया करे देखि साधुके वसनकूं; छिद्रके कढैया निंदाचर्मके मढैया माया मानके दढैया लागे लोकसे हसनकूं; अंगके पढैया गुण श्रेणिके चढैया शुद्ध शीलके दढैया कहे धर्म उल्लसनकूं; फूठके लढैया सत्य थंभके गढैया भैयावस्त्र पात्र हेत साचे काया लीकसनकूं. ॥ १५२ ॥ दोहरा ॥ शीत त्राण कबके धरे, कंबल वर्षा त्राण; मुख वस्त्रे ते राखियें, जे संपातिम प्राण. १५३ सबसज्जनमें राखियें, चोल पट्टयें लाज, उचित धर्म आचारमें, नीलजकूं नहि लाज १५४ आठ भेद जिनकल्पके, एक कहे सो मूढ; नगन दिखावे सो त्यजे, वस्त्र नाहि ए गूढ १५५ और सिद्धांत उछिन्न है, इसो कुमतको नाच; पै संवाद विनाकहा, पावौ प्रकरन साच १५६ अब सिद्धांत जु तुम कहे, पाठ दिखावो तास; जब प्रकरन तुम गुरु किये, तब जो हुते प्रकाश. १५७ हेमराज पाडे किये, बोल चुराशी फेर; या विधि हम भाषा वचन, ताको मत किय जेर १५८ है दिक्पटके वचनमें और दोष शत साख; केतेकाले भारिये, भुंजत दधि उर माख. १५९ पंडित साचो सद्दहै, मूरख मिथ्यावंग; कहते सो आचार है, जन न त्यजे निज ढंग. १६० सत्य वचन जो सद्दहे, गहे साधुको संग; वाचक जस कह सों लहै, मंगल रंग अभंग १६१ इति श्रीयशोविजयजीउपाध्याय कृत दिक्पट चोराशी बोल समाप्तः ॥

॥ श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथ जिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चंद्ररोचिर्मयं किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलि मयं ॥ विश्वानंदमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद्

वालंवनं ॥१॥ पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन् दिक्चक्रं क्रमयन् सुरा सुरनरश्रेणिं च विस्मापयन् ॥ ब्रह्मांडं सुधुवन् जलानि जलधेः फेनछलाल्लोलयन् श्री चिंतामणिपार्श्वसंभवयशोहंसश्चिरं राजते ॥ २ ॥ पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः कामेभकुंभस्त्रणि र्मोक्षे निःसरणिः सुरेंद्रकरणि ज्योतिःप्रभासारणिः ॥ दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिकृपासारणिर्विश्वानंदसुधाधृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिंतामणिः ॥ ३ ॥ श्री चिंतामणिपार्श्वविश्वजनतासंजीवनं त्वं मया दृष्टस्तात ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमाचक्रिणः ॥ मुक्तिः क्रीमति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवांछितं दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥ यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जगज्जंघालः कलिकालकेलिदलनो मोहांधविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपरं समस्तकमलाकेलिगृहं राजते स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकृतौ चिंतामणिः पातु मां ॥५॥ विश्वव्यापि तमो हिनस्ति तरणिर्बालोपि कल्पांकुरो दारिद्र्याणि गजावलिं हरिशिशुः काष्ठानि वन्हेः कणः॥पीयूषस्य लवोपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो॥ मूर्त्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा ॥ ६ ॥ श्रीचिंतामणिमंत्रमोंकृतियुतं ह्रींकारसाराश्रितं श्रीमर्हं नमिऊणपासकलितं त्रैलोक्यवश्यावहं ॥ द्वेधाभूतविषापहं विषहरश्रेयःप्रभावास्पदं सोल्लासं वसुहांकितं जिनफुलिंगानंदनं देहिनं ॥ ७ ॥ ह्रींश्रींकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायंति ये योगिनो हृत्पद्मे विनिवेश्यपार्श्वमधिपं चिंतामणिसंज्ञकं ॥ भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यात्यहो ॥८॥ नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारीप्रचाराः॥ नैवांध्यं नासमाधि र्नच दुर दुरितेदुष्टदारिद्र्यता नो॥ नो शाकिन्योग्रहा नोन हरिकरिगणव्यालवेतालजाला ॥ जायंते पार्श्वचिंतामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजां ॥९॥ गीर्वाणद्रुमधेनुकुंभमणयः स्वस्यांगणेरंगिणो॥देवादानवमानवाः स विनयः तस्मैहितं ध्यायिनः॥ लक्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणिनां ब्रह्मांडसंस्थायिनीश्रीचिंतामणि पार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति ॥ १० ॥ इतिजिनपतिपार्श्वःपार्श्वपार्श्वाख्ययक्षः प्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसंघः॥ त्रिभुवनजनवांछादानचिंतामणीकः शिवपदतरुबीजं बोधबीजं ददातु ॥ ११ ॥ इतिश्रीचिंतामणिपार्श्वनाथजिनस्तोत्रंसं० ॥

॥ श्रीमत्सद्गुरुभ्योनमः ॥ श्रियः संततेः कारकं श्रीजिनेशं महामोहभूभायनाशे दिनेशं ॥ नतं नाकिभिर्भक्तिभिर्जीवनाथं स्तुवे देवचिंतामणिं पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ महानागपारींद्रवैश्वानरा हि प्रवातांबुधीरोगसंदानदाहं ॥ जितानेकपद्मं त्रिविश्वैकनाथं स्तुवे देव० ॥ २ ॥ क्षमापार्श्वसेनस्य वंशेऽवतंसं हतक्रोधशत्रुं च लक्ष्मीनिवासं ॥ जनांभोजखंडस्फुटे घस्त्रनाथं स्तुवेदेव० ॥३॥ सतांमोक्षपद्माप्रदानैकहेतुं महाकृच्छ्रविछेदने धूमकेतुं ॥ क्रमेंदी वरालीननागांकनाथं स्तुवे देव० ॥ ४ ॥ सनीरांबुदश्यामशिष्टांगकांतिं

सुविस्तारि ताविघ्नपाशेषशांतिं ॥ गतान्यूनदोषं वरं मुक्तिनाथं स्तुवे देव० ॥ ५ ॥ नरेंद्रादिवंद्यं सदालब्धयोगं निशारत्नकभ्राननं त्यक्तशोकं ॥ कृपाजाजनं विश्वदेवाधिनाथं स्तुवे देव० ॥ ६ ॥ जगत्तारकं दायकं सज्जनानां श्रियं वांछितार्थापाकं निर्द्धनानां ॥ सुरम्यस्य रुङ्निर्जिताजाधिनाथं स्तुवे देव० ॥ ७ ॥ कषायाग्निसंतर्पणे वारिदाजं जराजीरुमातंगपंचास्यशोजं ॥ विडुष्टाष्टकंकर्म्मोरगे पत्रिनाथं स्तु वेदेव चिंतामर्णी पार्श्वनाथं ॥ ८ ॥ इत्येवं श्रीमद्वीरचंद्रशिशुनामलूकचंद्रेण ॥ जयतु चिरं नूतः पार्श्वजिनवरो त्रिजितमदरागः ॥ ए ॥ इतिश्रीमत्पार्श्वनाथस्तवनाष्टकं लिखितं.



ॐ श्रीजिनायनमः

# अथ श्रीसमयसार नाटक बनारसीदास कृत गुजराती भाषामां अर्थ सहित प्रारंभः

## उपोद्घात.

आ ग्रंथनी दिगंबरी बनारसीदासे शुद्ध हिंदुस्थानी भाषामां पद्यात्मक ग्रंथरूप रचना करीछे. ए ग्रंथकर्त्ता पोते महापंडित तथा कवीश्वर होवाथी विविध प्रकारनी छंदरचना करीने तेणे पोतानी श्रेष्ठ कृति देखाडी आपीछे. पदलालित्यता तथा अर्थ गौरवतादिक जे काव्यना सारा गुण वर्णन कर्याछे, ते आ ग्रंथनी कवितामां सारी रीते दीठामां आवेछे. अलंकारवडे कविता सारीरीते भूषित करीछे. आ ग्रंथ आध्यात्मिक विषयवालो होवाथी आमां मात्र शांत रसज मुख्य छे पण प्रसंगानुसारे बाकीना रस पण क्वचित् दीठामां आवेछे. जोके आ ग्रंथ उपर कह्या प्रमाणे निन्ह वादिकमां गणायला दिगंबरीनो रचेलोछे, तोपण एनो विषय आध्यात्मिक होवाथी ते सर्वेने उपयोगीछे; माटे आपुस्तकमां अमे नाख्योछे. ए ग्रंथनी व्याख्या कोई रूपचं दजी नामना पंडिते करीछे, ते पण हिंदुस्थानी भाषामां होवाथी सर्व जनने सम ज्यामां आवे नही, माटे तेनो आश्रय लईने अमे गुजराती भाषामां व्याख्या करी छे. व्याख्या करतां आदिमां मंगलाचरणनो दोहरो कर्योछे ते आप्रमाणेः—

॥दोहाः॥—श्रीजिन बचन समुद्रको, कौंलगि होइ बखान; रूपचंद तौहू लिखे. अपनी मति अनुमान. ॥ १ ॥

अर्थः—व्याख्याकर्त्ता रूपचंदजी कहेछे के, श्री जिनवचनरूप समुद्रनो क्यांसुधी व्याख्यान थाय, तोपण हुं मारी मतिने अनुमाने लखी जणावुंछुं. ॥ १ ॥

हवे ग्रंथकर्त्ता आरंभमां मंगलाचरणरूप श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी स्तुति करेछे.

॥कवित्त,इकतीसा सर्वे ह्रस्वाक्षरः॥—करम भरम जग तिमिर हरन खग,उरग लखन पग शिव मग दरसि; निरखत नयन भविक जल वरखत, हरखत अमित भविक जन सरसि; मदन कदन जित परम धरम हित, सुमिरत भगत भगतसब डरसि; सजल जलद तन मुकुट सपत फन, कमठ दलन जिन नमत बनरसि ॥ १ ॥

अर्थः—जगमां जे आठ कर्मरूप तिमिर एटले अंधकारछे तेनुं हरण करवाने खग एटले सूर्यरूप छे. जेना चरणनेविषे सर्पनुं चिन्ह छे. जे मोक्षना मार्गने देखा डनारा छे. जेनेनेत्रे करी निरखतां कल्याणरूप जल वर्षेछे, तेणे करी अमित

के॰प्रमाणविना जव्यलोकरूप सरोवर महा हर्षने पामेछे. जे कामदेवना क्षय करनार छे, अने जेतुं उत्कृष्ट सहज सुखरूप धर्मने अर्थे जक्तजन स्मरण करी रह्याछे. तेथी तेनुं सब डरसिके॰ सात जयरूप जे शीत छे, ते नाशी जायछे. जेनुं शरीर जलसहित मेघना जेवुं नीलवर्ण छे. जेना मुकुटनेविषे सात फण छे. जेणे कमठ नामे असुरनुं मान जंजन कर्युंछे. एवा जिन के॰ श्रीपार्श्वनाथ जगवान, तेने बनारसीदास नमस्कार करेछे ॥ १ ॥

फरीथी विशेषे श्री पार्श्वनाथ स्वामीनी स्तुति करेछे.

॥ सर्वलघु स्वरांत अक्षर युक्त उप्पय छंद. ॥ एने चित्रकाव्य पण कहेछेः—सकल करम खल दलन, कमठ सठ पवन कनक नग; धवल परम पद रमन, जगत जन अमल कमल खग; पर मत जलधर पवन, सजल घन सम तन समकर; पर अघ रज हर जलद, सकल जन नत जव जय हर; यम दलन नरक पद छय करन, अगम अतट जव जल तरन; वर सवल मदन वन हर दहन, जय जय परम अजय करन. ॥ २ ॥

अर्थः—सर्व कर्मरूप खलके॰ डुष्ट वैरीने दलवा वाला छो. कमठ नामना महा मूर्ख असुर तेरूप पवन आगल मेरु पर्वतनी परे अकंप छो. धवलके॰ निर्मल सिद्ध स्थानकनेविषे रमनारा छो. जगत्ना लोकोरूपी उज्वल कमलने विकस्वर करवाने अर्थे खगके॰ सूर्य जेवा छो. एकांत नयवादी जे पर मत, तेरूप मेघने मटाडवाने अर्थे पवनना जेवा छो. जल सहित मेघ घटाना जेवुं श्याम जेनुं शरीर छे. समकरके॰ उपशमना करनार छो. परके॰ शत्रुरूप अघके॰ पाप रजने हरण करवाने मेघ जेवा छो. जेने सकल लोक नमे छे, अर्थात् त्रिजुवन पूज्य छो. जन्म मरणरूप जे जव जय तेने हरण करनार छो. लोकोना मृत्युने दलवावाला छो. जव्य प्राणीओने नरक पदना क्षय करनार छो. अगम एटले अथाग अने अतटके॰ अपार एवो जे संसाररूप समुद्र तेने तरवावाला छो. सर्व दोषोमां वरके॰ प्रधान अने बलवान जे कंदर्पवन, तेने बालवाने हरके॰ रुद्रना नेत्रनी अग्नि जेवा हे ! जगवान तमे जयवंता थाओ ! वली तमे परम अजय पदना करनार छो, एटले जय जंजन छो. ॥ २ ॥ आ उप्पय छंद वडे परमेश्वरना महीमानुं वर्णन कर्युं. अने पोतानुं काव्य चातुर्य दर्शाव्युं छे.

आ ग्रंथना कर्त्ता बनारसीदास कहेछे के जेना प्रसादथी परगसेन पिताने घेर मारो जन्म थयो एवो हुं श्री पार्श्वनाथ जगवाननी स्तुति करुंछुं.

॥सवैया इकतीसा॥—जिन्हके बचन उर धारत जुगल नाग, जये धरनिंदप द्मा

वति पलकमे; जाके नाम महीमासें कुधातु कनक करै, पारस पाषान नामी भयो है खलकमें; जिनकी जनमपुरी नामके प्रभाव हम, अपनो स्वरूप लख्यो भानसो भलकमें; तेई प्रभु पारस महारसके दाता अब, दीजे मोहि साता हग लीलाके ललकमें. ॥३॥

अर्थः—ज्यारे श्री पार्श्वनाथ भगवाननी कुमारावस्थाहती त्यारे कोई एक समयें श्री बनारसी नगरीविषे एक तापसनी साथे अज्ञानतपश्चर्यानी निर्भर्त्सना पूर्वक वाद थयो, ते प्रसंगे ते तापसनी धूणीमांनां लाकडांमां नाग छे एवी रीते श्री पार्श्वनाथ भगवाने कह्युं, ते वातने पेला तापसए गणकारी नही, तेथी ते लाकडां फोमीने ते नागने बाहेर कहाढ्यो; पण ते अधबल्यो थयो हतो तेथी तडफडवा लाग्यो, तेना अंतना समयमां श्री पार्श्वनाथ भगवाने तेने "ॐ असिआउसाय नमः" ए मंत्र संभलाव्यो ते वचन तेणे सारी रीते हृदयमां धारी लीधुं. एटलामां तेना शरीरनी शांति थई गई. तेना अंतना सारा परिणामोने लीधे ते धरणेंद्र थयो; तेनी स्त्री पद्मावती थई; ए कथा श्री पार्श्वनाथ चरित्रमां प्रसिद्ध छे. ते अद्भुत महीमाने दर्शावतां छतां ग्रंथकर्त्ता उपमालंकारवडे पारसमणि अने श्री पार्श्वनाथना ए गुणनी सादृश्यता देखाडेछेः—

जेनां वचन हृदयनेविषे धारण करीने नाग अने नागणी ए बन्ने पलकमां धरणेंद्र अने पद्मावतीरूपे थयां. आहीं नाग अने नागणी कहेवाथी दिगंबरोनुं मत जाणवुं. श्वेतांबरी तो एक नागनेज कहेछे. वली पार्श्वपाषान, खलक एटले दुनियामां, प्रसिद्ध छे, एटले पारश मणि नामना पाषाणनो स्पर्श थतांज लोखंड नामनी कुधातु सोनुं थायछे. तो ए पाषाणमां एवो महीमा किहांथी उत्पन्न थयो ? तेनो उत्तर कहेछेः— पार्श्व एवुं नाम श्री पार्श्वनाथने तुल्य छे. तेना महीमा थकी एटले मात्र पार्श्व एवुं नाम छे ते नामनाज महीमाथकी ते पार्श्वरूप पाषाणमां एवो गुण थयोछे. वली जेनी जन्म पुरीनुं नाम बनारसी नगरी छे, अने ग्रंथकर्त्ता कहे छे के, मारुं नाम पण बनारसी हुं पाम्यो. ते मात्र नामना प्रभावथी में मारुं आत्मस्वरूप जाणी लीधुं. ते केवी रीते जेम प्रभात समयमां सूर्य पोताना रूपने भलकमां स्वछ प्रकाशे छे, तेनीपरे मारुं रूप पण प्रकाशी रह्युं छे. ए पण श्री पार्श्वनाथ भगवानना महीमानो प्रतापछे.तेज श्री पार्श्वनाथ भगवान महा शांत रसने देवावाला छे, ते हवे हग लीलाकी ललकमेंके० आंख मीचीने उघाडीए अर्थात् एक पलक मात्रनी सत्तामां मुजने आत्मसमाधिरूप शाता आपो. एथी निवृत्ति सुखनी सूचना करी छे ॥ ३ ॥

सिद्ध भगवाननी स्तुति करेछेः—

॥ अडिल्ल छंदः॥— अविनाशी अविकार,परम रसधाम है; समाधान सरवंग,सहज

अभिरामहै; शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत है; जगत शिरोमनि सिद्ध सदा जयवंत है ॥ ४ ॥

अर्थः– जेनोविनाश नथी, अने जेने कोई विकार लागे नही, एवो परम रस एटले कोई केवलीगम्य जे सहजानंद उत्कृष्ट शांतरस, तेना जे धाम एटले घर छे; माटे सर्वांगने विषे सहजनी जे अनंत सुखरूप समाधि तेणेकरी जे अभिराम एटले अति मनोज्ञछे. चौदराजलोकनी उपर विराजमान होवाथी सर्व दोषथी रहित शुद्धछे. सर्वज्ञता पाम्याथी बुद्ध छे. अने सर्वना ईश्वर माटे अविरोधछे, एवी अवस्थाए करी ते अनादि अनंत छे. अने चउद राजलोकना उपर विराजमान छे तेथी जगत्ना शिरोमणि छे एवा जे श्रीसिद्ध भगवान ते सदासर्वदा जयवंत थाओ ॥ ४ ॥

साधुरूप भगवाननी स्तुति करेछेः–

॥ सवैया इकतिसा ॥– ज्ञानके उजागर सहज सुख सागर सुगुण रतनागर वैराग रस भर्यो है; सरनकी रीत हरै मरनको भै न करै करनसों पीठ दे चरण अनुसर्यो है; धरमको मंडन भरमको विहंडन जु, परम नरम व्हे के करमसो लर्यो है; ऐसो मुनिराज भुअ लोकमें विराजमान, निरखि बनारसी नमसकार कर्यो है ॥ ५ ॥

अर्थः– जे ज्ञाननो उद्योत करनार छे. आत्मद्रव्यनुं जे सहजसुख तेना जे समुद्र छे. अने सुगुनजे ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप रत्नत्रयीनी आकर एटले जे खाण छे. पांच इंद्रियोना विषयनेविषे जे वैराग्य ते रूप रसेकरी जे परिपूर्ण थयाछे. कोई परिषह आवीने प्राप्तथयाथी ग्रहस्थनीपरे जे शरणनी रीति राखे नही. आत्माने शाश्वतद्रव्य जाणीने जेणे मरणनो भयमुकी दीधो छे. पांच इंद्रियोने पूठ आपी तेना विषयोथी विमुख थयाथकी जे चारित्रने अनुसर्या छे; वली जेनो आश्रय लेवाथी धर्मपदार्थ विराजमान थाय माटे धर्मना मंडन करनाराछे. मिथ्यामतिरूप जे भरम तेलुं विशेषेकरीने जे खंडन करनारा छे; जे परम दयावान थईने कर्मोनीसाथे युद्ध करेछे. ( दयावानने युद्धकरवुं संभवे नही तेम छतां कह्युं ते माटे विरोधालंकार जाणी लेवो.) एवी विशेषताने लीधे जे मुनिराज एटले ऋषीश्वर भुअ लोकमां पिस्तालीश लाख मनुष्य क्षेत्रविषे विराजमान छे तेने हृदय कमलथी जोईने बनारसीदास नमस्कार करेछे. ॥ ५ ॥

हवे पांच अनुव्रत लीधा छे जेमणे एवा समकितीनी स्तुति करेछे.

॥ सवैया तेईसा ॥– भेद विज्ञान जग्यो जिनके घट, शीतल चित्त भयो जिम चंदन; केलि करे शिव मारगमे जगमांहि जिनेश्वरके लघु नंदन; सत्य स्वरूप सदा जिन्ह

कें प्रगट्यो अवदात मिथ्यात निकंदन; संत दशा तिन्हके पहिचान करै कर जोरि बनारसि वंदन. ॥ ६ ॥

अर्थः– जे मंदबुद्धि छे ते जीव अने शरीरने एक करी जाणेछे; भेद जाणता नथी. पण जे समकित पाम्यो छे, तेना हृदयमां जड अने चेतननुं भिन्न भिन्न ज्ञान थयुं छे; एवुं भेदविज्ञान जाग्रत थवाथी जेनुं चित्त चंदननी पेठे शीतल थयुं छे; जे मुक्ति मार्गमां केलि करे एटले खेल करी रह्या छे; आ जगत्‌मां श्री जिनेश्वरना जे न्हाना पुत्र छे. अने साधु जे छे ते सर्वज्ञपुत्र कहेवायछे, माटे ते मोटा पुत्र छे. वली आत्मा सदा निश्चयेकरी सत्यरूपमांज छे, पण मिथ्यात्ववडे मलिन थई रह्योछे. ते फरी सत्यस्वरूप जेनुं निर्मल प्रगटताने पाम्युंछे, अने मिथ्यात्वनुं निकंदन थयुंछे, एटले मिथ्यात्व रह्युं नथी, चार अनंतानुबंधीनी जड तुटी गईछे. एवी तेमनी शुद्धदशा ओलखीने बनारसीदास बन्ने हाथजोडी वंदना करेछे. ए सवैयामां सम्यक्त्वनी दृढता बतावीछे. ॥ ६ ॥

पूर्ण सम्यक्त्व दर्शाववानेअर्थे फरी तेनीज स्तुति करेछे.

॥ सवैया इकतीसाः॥–स्वारथके साचे परमारथके साचे चित्त, साचेसाचे बैन कहे साचे जैनमतीहैं; काहुके विरोधी नांहि परजायबुद्धि नांहि, आतम गवेषी न ग्रहस्थहै न यती हैं; सिद्धि रिद्धि वृद्धि दीसै घटमें प्रगट सदा, अंतरकी लक्षसों अजाची लक्षपती हैं; दास भगवंतके उदास रहै जगतसों, सुखिया सदीव ऐसे जीव समकिती हैं. ॥७॥

अर्थः– जेनी स्वार्थ एटले आत्मा पदार्थनेविषे साची प्रतीति छे. तथा परमार्थ ते मोक्ष पदार्थनेविषे साची प्रतीति छे. जेनुं चित्त निर्मल छे. जे सत्यवचनना बोलनारा छे. जे साचा जिनमतने ग्रहण करी रह्याछे. जेनुं मन कल्पना करतुं नथी. केमके, ते साते नयनुं शुद्धस्वरूप जाणेछे तेथी कोईना दर्शनना विरोधी नथी. जेम बौधमतानुसारी पर्याय बुद्धिवाला छे पण द्रव्य बुद्धिवाला नथी, तेथी जीवने क्षणभंगुर मानेछे, तेम समकितीपर्याय बुद्धिवंत नथी. पण आत्मद्रव्यनी गवेषणा करनार छे, तेथी तेने पर वस्तुमां मोह नथी; माटे गृहस्थ पण नथी, अने महा व्रत लीधा नथी तेथी यति पण नथी. पोताना घटनेविषे शुद्ध आत्म द्रव्यने सिद्धसमानज जुएछे. तेथी घटमांज प्रगट सिद्धि देखेछे. अने ज्ञानदर्शन चारित्ररूप रिद्धिनी वृद्धि जेना घटमां सदा प्रगट देखायछे. जे अंतर् परमात्मा देव छे तेनुं जेने लक्ष थयुं छे तेथी अयाची एटले कोईनी पासे कांई मागे नही, एवा लक्षपति छे. वलीजे ए पूर्वोक्त प्रकारना प्रगट स्वरूपने पामेला श्री वीतराग भगवंतने पामीने तेना दास थयाछे;

अने जतुगथी उदास रहेछे. जे आर्त्त अने रौद्र ए बे ध्यानथी विमुख थयाछे, तेथी सदैव सुखनी सन्मुख थयाछे, एवा समकिती जीव महा सुखमयी छे. ॥ ७ ॥

फरी पोताना उल्लासथी समकितीनी स्तुति करेछेः—

॥सवैया इकतीसा॥—जाके घट प्रगट विवेक गनधरकोसो, हिरदे हरख महा मोहकों हरतु है; साचो सुख माने निज महीमा अकोल जाने, अपुहीमें आपनो सुजावले धरतुहै; जैसे जल कर्दम कतक फल जिन्न करे, तैसे जीव अजीव विलछन करतु है; आतम सगति साधै ज्ञानको उदौ आराधै, सोई समकिती जवसागर तरतु है ॥ ८ ॥

अर्थः— जेवी रीते "उप्पनेवा, विगमेवा, धूवेवा," ए त्रण पद सांजलीने गणधरना हृदयमां प्रगट विवेक उत्पन्न थायछे; अने अर्थनेविषे कोई संदेह रहे नहीं. तेवी रीतेज समकितीना घटमां विवेक प्रगट थयोछे, तेणेकरी स्वस्थ थई पोताना हृदयमां आनंदने पामी महा मोहने हरण करेछे. पोतानुं मिथ्यात्व दूर करीने सम्यक्त्व करेछे. हवे सम्यक्त्वनी व्यवस्था कहेछेः—जे विषयसुख छे ते तो अनित्य छे; माटे जूठा छे, अने सहज समाधि सुख जे छे ते शाश्वता छे तेथी ते सुखनेज साचुं मानेछे. अने पोतानो ज्ञातारूप महीमा अडोल जाणेछे. तथा ज्ञान दर्शन अने चारित्र जे छे ते पोतानो स्वजाव छे, तेने पोतामांज धारेछे. पहेलां जीव मिथ्यात्व दशामां जीव अने शरीरने एक करी जाणतो हतो, अने हमणा जीव अने अजीवने जिन्नजिन्न लक्षणे करी जाणेछे. जेम पाणी अने चीकल एकठां थईगयां होय, तेने कतकफलनिर्मलीनुं चूर्ण नाखवाथी पाणी तथा कादवने ते रेणु जिन्नजिन्न करी नाखेछे, तेम जीव अने अजीवने जुदो जुदो लखेछे. चारित्रमां आत्मानी शक्तिने साधे, अने मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञाननो उदय थवानी इछा करेछे. मति अज्ञान तथा श्रुतअज्ञानने गमावी दियेछे. ते समकिती जीव जवसमुद्रनो तरनार कहेवायछे; ए रहस्य छे ॥ ८ ॥

हवे समकीत पाम्याछतां मिथ्यात्वदृष्टिमांज रहेछे, तेनुं वर्णन करेछे.

॥सवैया इकतीसा॥—धरम न जानत बखानत जरमरूप, ठौर ठौर ठानत लराई पक्षपातकी, जूल्यो अजिमानमें न पाउं धरे धरनीमें, हिरदेमें करनी बिचारे उतपातकी, फिरेडावाडोलसें करमके कलोलनमें, वैरही अवस्थासों बघूलाकेसे पातकी, जाकी ठाती ताती कारी कुटिल कुवाती जारी, ऐसो ब्रह्मघाती है मिथ्याती महापातकी॥ए॥

अर्थः—जे वस्तुना स्वजावरूप धर्मने जाणे नही, अने ज्ञमरूप मिथ्यावाणीने वखाणे; तथा ठेकाणे ठेकाणे, पोतानुं मत स्थापवाने पक्षपातनी लडाई करे अने पोताना अजिमाने जूल्यो थको धरती उपर पग राखे नही, पोतानेज तत्ववेत्ता

जाणे; (एमां अधर पगवमेकरी उत्प्रेक्षालंकार जाणवो.) अने हृदयामां जेथी उत्पात उपजे एवीज करणीनो विचार करे. अने आ संसाररूप समुद्रविषे कर्मरूप, कल्लोलोना धकाये करी चारे गतिमां झामाझोल करतो फरेछे; जेम वंटोळिया वायुमां आवीगएलुं पानडुं आकाशमां ऊडीने भम्यां करेछे, पण कोई ठेकाणे स्थिरथई रहेतुं नथी, तेवीज एनी अवस्था थई रहीछे. जेनी छाती रागद्वेषवडे तप्त थई रहेछे; ते तापे करी काली एटले माया तेने राखवाथी कुटिल थइ रहेछे. अने कुबाती एटले जे माठी वातोनुंज चिंतवनकरी रहेछे, तथा पापेकरी भरेलीछे माटे भारी जाणवी एवी जेनी छाती छे, एवो ब्रह्मघाती एटले आत्मघातनो करनार मिथ्यात्वी जीव महापातकयुक्त छे ॥ ९ ॥

॥दोहराः॥–वंदो शिव अवगाहना, अरु वंदों शिवपंथ, जसु प्रसाद भाषा करो, नाटक नामे गरंथ. ॥ १० ॥

अर्थः–जिहां सिद्धनो अवगाह थई रह्योछे, ते क्षेत्रने हुं वंदन करुंछुं, अने ज्ञान दर्शन चारित्र ए मोक्षनो पंथके० मार्ग छे, तेने हुं वंदन करुंछुं. ए मंगलाचरण करी हवे पोतानुं प्रयोजन कहेछेः–जेना प्रसाद थकी समयसार नाटक ग्रंथ संस्कृतमां हतो ते प्राकृत भाषारूप करुंछुं. ए प्रयोजन कह्युं. ॥ १० ॥

हवे आ ग्रंथना अधिकारी बनारसीदास पोतेज छे; अने एमां कहेवा लायक पोतानुं आत्मद्रव्य छे तेनुं वर्णन करेछेः–कविवर्णनं.

॥सवैया तेईसाः॥–चेतनरूप अरूप अमूरति सिद्ध समान सदा पद मेरो; मोह महातम आतम अंग कियो परसंग महातम घेरो; ज्ञानकला उपजी अब मोहि कहों गुननाटक आगम केरो, जासु प्रसाद सधै शिवमारग वेग मिटे घटवास वसेरो॥११॥

अर्थः–बाह्यात्मामां अंतरात्माने अने अंतरात्मामां परमात्माना स्वरूपनेजोईये, ए मारो निश्चयरूप पद कहेवा योग्य थायछे. ते चेतनरूपी अनुपम अमूर्त्तिक सिद्ध समान छे. जो ते निश्चयरूप पद एवुं छे तो पछी ते प्रगट केम जणातुं नथी ? तेनो उत्तर एम छे के, मोहकर्मनुं कोई एहवुं महात्म्य छे, ते प्रसंगथी आत्मअंगके० आत्मप्रदेशनेविषे महाअंधकारनो घेरोछे तेथी प्रगट लखातुंनथी. हमणा कोई ज्ञान कला मुजने उपनी छे ते कलानो अंश प्रगट थयोछे. तेथी नाटक सिद्धांत गुणनुं व्याख्यान करुंछुं, जे आगमना प्रसादवडे मोक्षमार्ग सिद्ध थाय अने जलदीथी शरीरमां वास वसवानुं मटी जाय, एटलेअशरीरपणुं सिद्धथाय. ॥ ११ ॥

हवे आ ग्रंथनुं गौरवपणुं बतावीने कविराज पोतानी बुद्धिनुं मंदपणुं देखाडी लघुता जणावे छेः– लघुता वर्णनंः–

॥सवैया इकतीसा॥–जेसै कोउ मूरख महासमुद्र तरिवेको, भुजानिसों उद्यत भयो है तजि नावरो; जेसै गिरिउपरि विरषफल तोरिवेकों बामन पुरुष कोउंमंग उतावरो; जैसे जलकुंडमें निरखी शशि प्रतिबिंब ताके गहिबेकों कर नीचो करे कावरो; तैसें मै अलपबुद्धि नाटिक आरंभकीनो, गुनीमोहि हसेंगे कहेंगे कोउ बावरो ॥१४॥

अर्थः–जेम कोई मूरख मनुष्य महासागरने तरवा चाहे अने वाहाणने ठोडी हाथवडे तरवानो उद्यम करे, तो कार्य केमबने; जेम कोई वामन पुरुष होय अने पहाड उपर वृक्ष होय तेनां फलतोडवाने उतावलो थको उमंग करे, ते कार्य केवी रीते बनी शके? वली एक त्रीजो दृष्टांत कहेछे के, जेम पाणीना कुंडमां चंद्रनुं प्रतिबिंब पडेलुं जोईने कोई नादान तेने साचो चंद्र समजी हाथ नीचो करे तो तेना हाथमां चंद्रमा केवी रीते आवे ? तेमज हुं अल्पबुद्धि छुं, अने आवा नाटकग्रंथनो आरंभ में कीधो छे, ते मारोआरंभ सफल नही थशे तेवारे बीजा गुणवान पुरुषो कहेशेके, जुउ आ ग्रंथनो आरंभ करेछे एवुं कहीने गुणीजनो मने बावरो जाणी हशी काढशे ॥ १४ ॥

वली ए कार्य करवाने साहस करेछे पुनः

॥सवैया इकतीसा॥–जैसै कोउ रतनसों वींध्यो है रतन कोउ, तामें सूत रेशमकी दोरी पोइ गई है, तैसै बुद्धीटीका करीनाटिक सुगम कीनो तापरि अलप बुद्धि सुद्धि परिनई है; जैसै काहु देसके पुरुष जैसी भाषा कहै, तैसी तिनहुके बालकनी सिखलई है, तैसै ज्यों गरंथको अरथ कह्यो गुरु त्यों हमारी मति कहिबेकों सावधान भई है॥१३॥

अर्थः–जेम कोई हीरानी कणीवडे कोई कठण रतनने आगलथी वींधी राख्युं होय, ने ते पछी तेमां पट्टुवो रेशिमनी दोरी परोवे ते सुगम चालीजाय तो तेम आ कार्य पण थशे. केमके मुनि अमृतचंद अने पांडेराजमल जेवा पंडितो थया तेमणे आ ग्रंथनी टीका बालबोधमां करीने आ नाटकग्रंथने सुगम कर्योछे, तो तेउपर माहरी अल्प बुद्धि छे तोपण आ ग्रंथमां सुधी रीते परणमी गई छे, तेथी आ कार्यनेविषे महारी समर्थाइनो दृष्टांत देखाडुं छुंः– जेम कोई देशनो वसनारो पुरुष पोतानी देशभाषामां बोलेअने तेनो बालक होय तेपण तेनीपासे रहेतोथको ते भाषा शीखी ले छे; तेमज आ कार्य पण छे. केमके मारा गुरुए आ ग्रंथनो अर्थ मने कह्योछे, तेज प्रमाणे आ ग्रंथनो अर्थ केहेवाने मारि बुद्धि सावधान थईछे. एटले आगल कहेलो पश्चाताप मट्यो ॥ १३ ॥

हवे पोताना सामर्थ्यनुं कारण बतावेछे.

॥सवैया इकतीसा॥–कबहों सुमति व्है कुमतिको बिनाश करै, कबहों विमल ज्यो

तिअंतर जगति है; कबहों दया व्है चित्त करत दयालरूप, कबहों सुलालसा व्है लोच न लगति है; कबहों कि आरती व्है प्रभु सनूमुख आवे, कबहों सु भारती व्है बाहरि बगति है;धरै दसा जैसी तब करै रीति तैसी एसी, हिरदे हमारे भगवंतकी भगति है॥१४॥

अर्थः—अमारा हृदयमां भगवंतनी भक्ति रहीछे, ते क्यारेंकतो सुमतिरूप थईने कुमतिनो नाश करेछे, क्यारेक अंतर्विषे ते भक्ति विमल ज्योतिरूप थईने जाग्रत थायछे, अर्थात् सम्यक्त्व-चेतना तेज भगवंतनी भक्ति छे; क्यारेक तेज भक्ति दयारूप थईने चित्तने दयारूप करेछे, अने क्यारेक ते भक्ति पोताना आत्मईश्वरने जोवानी लालसा के० लगन थकी, एटले लयलागवामां, लोचनोने स्थिर करेछे. अने क्यारेक तो ते भक्ति आरति के०अति रंगेकरी प्रभु सनूमुख थई रेहेछे (बीजे अरथे प्रभु सनूमुख आरति करेछे ते ) अने क्यारेक तो ते भक्ति सुभारती के० भली वाणीरूप थईने बाहार बगति के० शब्द करी रहेछे. जेवी जेवी दशा धारेछे ते वारे तेवी तेवी रीतनी करनारी छे, ते एवी भगवंतनी भक्ति अमारा हृदयमां वसी रहीछे तेथी आ नाटकग्रंथ रचनारूप कार्यमां पण एक भगवंतनी भक्तिज कारण छे. एतात्पर्यार्थ छे. ॥ १४ ॥

हवे आ ग्रंथनो महीमा वर्णवेछे. अथ नाटक वर्णनः—

॥सवैया इकतीसाः॥—मोख चलबेकों सोन करमको करै बोन, जाको रस भोन बुध लोन ज्यों घुलति है; गुनको गरंथ निरगुनको सुगम पंथ, जाको जस कहत सुरेश अकुलित है; याहीके जु पछी सो उडत ज्ञान गगनमें, याहीके विपछी जन जालमें रुलत है; हाटकसो विमल विराटकसो बिसतार, नाटक सुनत हीय फाटक खुलत है॥१५॥

अर्थः—जेम भला सुकनवडे कार्य सिद्धि थायछे, तेम आ ग्रंथपण मोक्षमार्गे चालनारने कार्यसिद्धिनो करनार छे; तथा आ ग्रंथ कर्मरूप केफनी जाल काढवाने वमन करवानुं औषध छे; अने जैन ग्रंथनो रस छे ते रस भोन के० पामिने तेमां पंडित लोक लोननीपरे गर्क थईरह्या छे. वली जेमां गुणजे ज्ञान दर्शन चारित्र तेनी ग्रंथ के० रचनाछे; परमतिनी अपेक्षाये निर्गुण जे मोक्षपद तेनो सुगम पंथ छे. ते निर्गुण कहेवो छे, जेनो यश अक्षय सुख छे; जेने कहेवाने इंद्र पण अकलायछे अने आ ग्रंथनो जेणे पक्ष लीधो छे, ते तो आ ग्रंथरूप पांखना प्रभावथी ज्ञानरूप आकाशमां पक्षीनी परे उडी रह्याछे अने जे आ ग्रंथना विपक्षि छे ते पांखरहित पक्षीनी परे जगत्रूप पाराधिनी जालमां रुली रह्याछे; तेमाटे आ नाटकनाम ग्रंथ ते हाटक एटले सुवर्णसमान छे; अने जेम गीता ग्रंथमां श्रीकृष्णे वैराटरूप महोटा विस्तारे करी

देखाड्युं तेवो आ ग्रंथ पण विस्तारवंत छे, एवा आ नाटक ग्रंथने श्रवण करतामां हैयानां कमाड ते फाटक के० खुली जायछे ॥ १५ ॥

॥दोहराः॥–कहों शुद्ध निहचै कथा, कहों शुद्ध विवहार; मुक्ति पंथ कारन कहों, अनुजौको अधिकार ॥ १६ ॥

अर्थः–जे शुद्ध निश्चयरूप कथाछे ते कहीश. अने शुद्ध व्यवहार जे छे ते पण कहीश अने मुक्ति पंथनुं कारण जे छे ते पण कहीश अने अनुजवनो जे अधिकार छे ते पण हुं कहीश ॥१६॥

अनुजव पदार्थनुं लक्षण. कहेछेः– अनुजव वर्णनं

॥ दोहराः ॥ वस्तुविचारत ध्यावतै, मन पावै विश्राम; रस स्वादन सुख ऊपजे, अनुजौ याको नाम ॥ १७ ॥

अर्थः–अजाणीवस्तु जाणवाने मनमां विचार कस्याथी तथा तेनुं चिंतन कस्याथी एम खोजतां खोजतां ज्यारे मनमां ठीक ठरे, त्यारे सत्य समज्याना रसनो स्वाद प्राप्त थाय ने तेथी सुख उपजे तेनुं नाम अनुजव छे ॥ १७ ॥

॥दोहराः॥–अनुजौ रतन चिंतामनि, अनुजौ है रसकूप; अनुजौ मारग मोखको, अनुजौ मोख सरूप ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ अनुजव जेछे तेज चिंतामणि रत्न छे, अने तेज अनुजव रसायननी कुपी छे; अनुजव तेज मोक्षनो मारग छे अने अनुजवज मोक्ष सरूप छे ॥ १८ ॥

अनुजव महीमा.

॥सवैया इकतीसाः॥–अनुजौके रसकों रसायन कहत जग, अनुजौ अज्यास यहै तीरथकी ठोर है; अनुजौकी जो रसा कहावै सोई पोरसा सु, अनुजौ अधोरसा सु ऊरधकी दौर है; अनुजौकी केली यहै कामधेनु चित्रावेली, अनुजौको स्वाद पंच अमृतको कौर है; अनुजौ करम तोरै, परमसों प्रीति जोरै, अनुजौ समान न धरम कोउ और है ॥ १९ ॥

अर्थः–जगत्वासी लोक अनुजवना रसने रसायन केहेछे, केमके जेम रसायन लोढानुं सुवर्ण करेछे, तेम अनुजव जेछे ते मिथ्यात्वने फेडीने सम्यक्त्वं करेछे; जेम तीर्थनी ठोर जवाथी अपावन होय ते पावन थायछे. तेम ग्रंथविषे अनुजवनो अज्यास ते अजाणने जाण करेछे. अने अनुजवनी जे रसा के० पृथवी तेहज सुवर्ण पोरसा छे, एटले अनुजवनी उत्पत्ति छे, ते सोवन पोरसानी परे वृद्धि पामेछे. अने अधोरसा के० पाताल लोक, ते पण अनुजव रूपमां छे, अने ऊर्ध्व लोकनी दोर ते पण

अनुभवरूपमांज छे, एटले अनुभवमांज स्वर्ग नरक छे, अने अनुभवनी केलि के० रमत ते कामधेनुरूप छे, ते आपणीऋद्धिने वधारनारी छे, अने ते अनुभवनी जे केलि छे ते अक्षय ऋद्धि करवाने चित्रावेली छे, अने अनुभवनो स्वाद ते पंचामृतना कौर के० ग्रास जेवो छे. अनुभव करमने तोडेछे, ने परमात्मानी प्राप्ति जोडे छे; एटले अनुभवथी खोजतां परमात्मानी प्राप्ति थायछे; तेथी सर्व धर्म धारण करवामां अनुभव जेवो बीजो कोई धर्म नथी. एटले अनुभव ज्ञान जाणवाथीज मोक्ष मार्ग नजीक छे.॥१९॥

हवे अनुभव साधवाने छ द्रव्यनुं वर्णन करेछे. तेमां प्रथम जीव द्रव्य वर्णनः—

॥ दोहराः॥— चेतनवंत अनंत गुन, पर्यय सकति अनंत; अलख अखंडित सर्वगत, जीव दरववीरतंत ॥ २० ॥

अर्थः—जाणवा मात्रने चेतन कहेछे तद्रूप शक्तिमान छे, जेना अनंत गुण छे. जेमां पर्याय के० नामांतरपणुं पामवानी अनंत शक्ति छे, इंद्रिय अगोचर छे, तेथी अलक्ष छे, देहना खंड थाय पण आत्मा अखंडित छे, सर्व लोकमां भर्यो छे तेथी सर्वगत छे, एवुं जीव द्रव्यनुं स्वरूप छे. ते कह्यो. ॥ २० ॥

हवे पुद्गल द्रव्यनुं लक्षण कहेछे. अथ पुद्गल द्रव्य यथाः—

॥दोहराः॥—फरस वर्न रस गंधमय, नरद पास संठाण; अणुरूपी पुद्गल दरब, नभ प्रदेश परमान ॥ २१ ॥

अर्थः—स्पर्श वर्ण रस गंध ए गुणमय सदा रहे, नरद जे सोगठीरूप राग तेना पासामां सूक्ष्म, वृत्त, अस्र, चतुरस्र, आयत ए पांच संस्थान छे; तेथी एनुं नाम संस्थान छे. पोत पोतानी वर्गणा योग्यरूप ग्रहण करे, तेथी ए पुद्गल द्रव्य अनुरूपी अथवा परमाणुरूपी छे. जेम आकाशप्रदेश अनंत छे, तेम ए पण अनंत प्रमाण छे ॥ २१ ॥

हवे धर्म द्रव्यनुं लक्षण कहेछे. धर्म द्रव्य यथा.

॥दोहराः॥— जैसे सलिल समूहमें, करै मीन गति कर्म; तैसे पुद्गल जीवको, चलन सहाई धर्म. ॥ २२ ॥

अर्थः—जेम पाणीना भरावमां माछलुं गमन क्रिया करेछे, तहां क्रियानो कर्त्ता माछलुं छे, अने सलिल समूह जे पाणीनो भराव ते क्रियानो साधक छे तेम पुद्गलद्रव्यनी तथा जीवद्रव्यनी चलन क्रियानो साधक धर्मास्तिकाय द्रव्य छे. ॥ २२ ॥

हवे अधर्मास्तिकाय द्रव्यनुं लक्षण कहेछे. अधर्म द्रव्य यथाः—

॥दोहराः॥—ज्यों पंथिक ग्रीषमसमै, बैठे छाया माहिं; त्यों अधर्मकी भूमिमें, जड चेतन ठहरांहि. ॥ २३ ॥

अर्थः—जेम कोई वटेमार्गु बेसवानी क्रियानो कर्त्ताछे, ने क्रियानी साधक छाया छे,

तेम अधर्मास्तिकायनी भूमी के० अवगाहना तेमां जरु जे पुद्गल ने चेतन जे जीव ते बने स्थिर थायछे, तेथी अधर्मास्तिकाय द्रव्य स्थिरतानुं कारण छे. ॥ २३ ॥

हवे आकाश द्रव्यनुं लक्षण कहेछे. आकाश द्रव्य यथा.

॥दोहराः॥–संतत जाके उदरमें, सकल पदारथ वास; जो भाजन सब जगत्को, सोइ दरव आकाश. ॥ २४ ॥

अर्थः–संतत के० निरंतर जेना उदरमां समस्त पदार्थ वसी रह्याछे, अने जे सर्व जगत्नुं भाजन के० आधारभूत छे, ते आकाश द्रव्य जाणवुं. ॥ २४ ॥

हवे कालद्रव्यनुं लक्षण कहेछे. काल द्रव्य यथा.

॥दोहराः॥– जो नवकरि जीरन करै, सकल वस्तु थिति ठान, परावर्त्तवर्त्तन करै, काल दरव सो जान. ॥ २५ ॥

अर्थः–जे द्रव्य वडे सघली वस्तुनी स्थिति बंधाय एटले पेहेलां सकल वस्तुने नवी बतावे, ने पछवाडेथी ते सघलीने जुनी करी देखाडे, अने उलट पालट वर्त्ता ववानी दशाधरे ते कालद्रव्य जाणवुं. ॥ २५ ॥

हवे आ ग्रंथमां कहेवा लायक नव तत्त्व छे तेनुं वर्णन करेछेः–तेमां प्रथम जीवत त्त्वनी समज पाडेछे. नवतत्त्व वर्णनं, जीवतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥–समता रमता उरधता, ज्ञायकता सुखभास; वेदकता चैतन्यता, ए सब जीव विलास. ॥ २६ ॥

अर्थः–सर्व जीव बराबर छे ए समता, घटघटमां रमी रहेछे ए रमता, ऊर्ध्व दिशे गमन करवुं ए उरधता, सर्व पदार्थनो जाणनार ते ज्ञायकता, सुखमय भासे छे तेथी सुखभास, सुखदुःख वेदे ए वेदकता, अने चेतना गुणथी चैतन्यता ए स घलो जीव तत्त्वनो विलास छे. ॥ २६ ॥

अथ अजीवतत्त्व यथा.

॥दोहाः॥–तनता मनता वचनता, जडता जड संमेल; लघुता गुरुता गमनता, ए अजीवके खेल. ॥ २७ ॥

अर्थः–शरीरपणुं, मनपणुं, वचनपणुं, जडवस्तुमां भेलभेल थवापणुं, लघुपणुं, गुरु पणुं, गमनपणुं ए सर्व अजीवतत्त्वना खेलछे. ॥ २७ ॥

अथ पुण्यतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥–जो विशुद्ध भावनि बधे, अरु ऊरध मुख होय; जो सुखदायक जगतमें, पुन्य पदारथ, सोय. ॥ २८ ॥

अर्थः—जेपदार्थ विशुद्ध परिणामथी वधे; अने जेनुं ऊर्ध्वमुखछे, ऊर्ध्वगति एज चरूंछे, जे पदार्थ जगत्मां सुखदायकछे, ते पुण्य पदार्थ जाणवो. ॥ २८ ॥

अथ पापतत्त्व यथा.

॥ दोहराः॥—संकिलेसि भावनि बधे, सहज अधोमुख होय; दुःखदायक संसारमें, पाप पदारथ सोय. ॥ २९ ॥

अर्थः—जे पदार्थ संक्लेश भाव वरू कषायनीवृद्धिथी वधे, सेहजे जेनी गति नीची छे, अधोमुखछे, अने जगत्मां जे दुःखदायक छे तेज पाप पदार्थ केहेवायछे. ॥ २९ ॥

अथ आश्रवतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥—जोई करम उद्योत धरि, होइ क्रिया रस रत्त; करषै नुतन करमको, सोई आश्रव तत्त. ॥ ३० ॥

अर्थः—जे कर्मनो उदय धरीने शुभ तथा अशुभ क्रियाना रसमां रत थई रहे, त्यारे नवां करमनुं करखे के० खेचवुं करे ते आश्रव तत्त्व केहेवाय. ॥ ३० ॥

अथ संवरतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥—जो उपयोग सरूप धरि, वरतै जोग विरत्त; रौंके आवत करमकों, सो है संवर तत्त. ॥ ३१ ॥

अर्थः—जे शुद्ध उपयोग स्वरूपने धारीने मन वचन कायाना जोगथी विरक्त थको वर्त्ते अने नवां करम आवताने रोकी राखे ते संवर तत्त्व कहिये. ॥ ३१ ॥

अथ निर्झरातत्त्व यथा.

॥दोहराः॥—जो पूरव सत्ता करम, करि थिति पूरण आउ, खिरवैकों उद्यत भयो, सो निर्झरा लखाउ. ॥ ३२ ॥

अर्थः—जे पूर्व कालनेविषे आयुविना सात कर्म सत्तारूप हतां अने आयु कर्म वर्त्तमान कालमां सत्तारूप छे तेनी स्थिति पूर्ण करीने पछी नीरस कर्मने विखेरवामां जे जीव उद्यमवंत थयो ए निर्जरानुं लक्षण जाणवुं. ॥ ३२ ॥

अथ बंधतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥—जो नव कर्म्म पुरानसों, मिले गंठि दिढ होइ; सकति बढावै वंसकी, बंध पदारथ सोइ. ॥ ३३ ॥

अर्थः—जे नवां कर्म जूना कर्म साथे आवी मळे, अने तेनी गांठ दृढ बंधाय, अने आगल जतां ते कर्मना वंसनी शक्ति चढती थाय, ते बंध पदारथ केहेवाय. ॥ ३३ ॥

अथ मोक्ष तत्त्व यथा.

॥दोहा॥—थिति पूरन करि जो करम, षिरे बंध पद भानि; हंस अंस उज्वल करै, मोक्ष तत्त्व सो जानि. ॥ ३४ ॥

अर्थः—जे कर्मनी स्थितिने पूर्ण करीने कर्मने खेरे के० क्षयकरी नाखे अने बंध पद के० सत्तावन प्रकारे बंधस्थान तेने भानि के० भांगीने हंस के० परमात्माना अंसने क्रमे उज्वल करे तेज मोक्ष तत्त्व जाणवुं. ॥ ३४ ॥

हवे कवित्त छंदमां पदार्थनी नाममाला एटले प्रयोजनवाला नामनी नाममाला लखी जणावेछेः—

अथ नाममाला सूचनिका मात्र लिख्यते. अथ समुच्चय वस्तुके नाम.

॥दोहरा॥—भाव पदारथ समय धन, तत्त्व वित्त वसु दर्व; द्रविन अर्थ इत्यादि बहु, वस्तु नाम ए सर्व. ॥ ३५ ॥

अर्थः—प्रथम सामान्यपणे वस्तुनां नाम कहेछे. भाव, पदार्थ, समय, धन, तत्त्व, वित्त, वस्तु, द्रव्य, द्रवीण, अर्थ, इत्यादि घणां वस्तुनां नाम छे. ॥ ३५ ॥

अथ शुद्ध जीव द्रव्यके नामः—

॥सवैया इकतीसा॥—परमपुरुष परमेसुर परमज्योति, परब्रह्म पूरन परम परधान है; अनादि अनंत अविगत अविनाशि अज, निरदुंद मुकत मुकुंद अमलान है; निरा बाध निगम निरंजन निरविकार, निराकार संसार सिरोमनि सुजान है; सरव दरसी सरवज्ञ सिद्ध सांई शिव, धनी नाथ ईश जगदीश भगवान है. ॥ ३६ ॥

अर्थः—परमपुरुष, परमेश्वर, परमज्योति, परब्रह्म, पूर्ण, परमप्रधान, अनादिअनंत, अव्यक्त, अविनाशी, अज, निर्द्वंद्व, मुक्ति, मुकुंद, अम्लान, निराबाध, निगम, निरंजन, निर्विकार, निराकार, संसारशिरोमणि, सुजान, सर्वदर्शी, सर्वज्ञ, सिद्ध, स्वामी, शिव, धनी, नाथ, ईश, जगदीश, भगवान, कहीये. ॥ ३६ ॥

हवे कर्म व्यास अशुद्ध जीव द्रव्यना नाम कहेछेः—संसारी जीव द्रव्यके नाम.

॥सवैया इकतीसा॥—चिदानंद चेतन अलख जीव समैसार, बुद्धरूप अबुद्ध अशुद्ध उपयोगी है; चिदरूप स्वयंभू चिन्मूरति धरमवंत, प्रानवंत, प्रानि जंतु भूत भव भोगी है; गुनधारी कलाधारी भेषधारी विद्याधारी, अंगधारी संगधारी जोगधारी जोगी है; चिन्मय अखंड हंस अखर आतमराम, करमको करतार परम विजोगी है. ॥३७॥

अर्थः—चिदानंद, चेतन, अलख, जीव, समयसार, बुद्धरूप, अबुद्ध, अशुद्ध, उपयोगी, चिद्रूप, स्वयंभू, चिन्मूर्ति, धर्मवंत, प्राणवंत, प्राणी, जंतु, भूत, भवभोगी, गुण

धारी, कलाधारी, भेषधारी, विद्याधारी, अंगधारी, संगधारी, योगधारी, योगी, चिन्मय अखंड, हंस, अक्षर, आत्मराम, कर्मकर्त्ता, परमवियोगी कहिये. ॥ ३७ ॥

अथ आकाशके नामः—

॥दोहराः॥– खं विहाय अंवर गगन, अंतरिक्ष जगधाम; व्योम वियत् नभ मेघपथ, ए आकाशके नाम. ॥ ३८ ॥

अर्थः—खं, विहाय, अंबर, गगन, अंतरिक्ष, जगधाम, व्योम, वियत्, नभ, मेघपथ, ए आकाशनां नाम. ॥ ३८ ॥

अथ कालके नाम.

॥दोहाः॥—यम, कृतांत, अंतक, त्रिदस, आवर्त्ती मृतथान; प्रानहरन, आदित तनय, कालनाम परमान. ॥ ३९ ॥

अर्थः—यम, कृतांत, अंतक, त्रिदश, आवर्त्तिक, मृतस्थान, प्राणहरण, आदित्य तनय, एवां कालनां नाम छे. ॥ ३९ ॥

पुण्यके नाम यथा.

॥दोहाः॥—पुण्य सुकृत ऊरधवदन, अकर रोग शुभ कर्म; सुखदायक संसारफल, भागवहीर्मुख धर्म. ॥ ४० ॥

अर्थः—पुण्य, सुकृत, ऊर्ध्ववदन, अकररोग, शुभकर्म, सुखदायक, संसार फल, भाग, वहिर्मुख, धर्म, ए पुण्यनां नाम छे. ॥ ४० ॥

अथ पापके नाम यथा.

॥दोहाः॥—पाप अधोमुख एन अघ, कंप रोग दुखधाम; कलिल कलुष किलविष दुरित, अशुभ कर्मके नाम ॥ ४१ ॥

अर्थः—पाप, अधोमुख, एन, अघ, कंप, रोग, दुःखधाम, कलिल, कलुष, किल्विष, अने दुरित, ए अशुभ कर्मनां नाम जाणवां. ॥ ४१ ॥

अथ मोक्षके नाम.

॥दोहाः॥—सिद्धक्षेत्र त्रिभुवन मुकुट, शिवमग अविचल थान; मोषसुगति वैकुंठ शिव, पंचम गति निरवान ॥ ४२ ॥

अर्थः—सिद्धक्षेत्र, त्रिभुवनमुकुट, शिवमार्ग, अविचलस्थान, मोक्ष, मुक्ति, वैकुंठ, शिव, पंचमगति अने निर्वाण ॥ ४२ ॥

अथ बुद्धिके नाम यथा.

॥दोहाः॥—प्रज्ञा धिषना सेमुखी, धी मेधा मति बुद्धि; सुरति मनीषा चेतना, आशय अंसविशुद्धि. ॥ ४३ ॥

अर्थः–प्रज्ञा, धिषना, सेमुषी, धी, मेधा मति, बुद्धि, सुरति, मनीषा, चेतना, आशय, अंशविशुद्धि कहिये ॥ ४३ ॥

अथ विचक्षण पुरुषके नामः–

॥दोहा॥–निपुन विचछ विबुध बुध, विद्याधर विद्वान; पटु प्रवीन पंडित चतुर, सुधी सुजन मतिमान. ॥ ४४ ॥ कलावंत कोविद कुशल, सुमन दक्ष धीमंत; ज्ञाता सज्ञान ब्रह्मविद्, तत्त्वज्ञ गुनीजन संत. ॥ ४५ ॥

अर्थः–निपुण, विचक्षण, विबुध, बुध, विद्याधर, विद्वान, पटु, प्रवीण, पंडित, चतुर, सुधी, सुजन अने मतिमान ॥ ४४ ॥ कलावान, कोविद, कुशल, सुमन, दक्ष, धीमंत, ज्ञाता, सज्ञान, ब्रह्मविद्, तत्त्वज्ञ, गुणीजन अने संत ॥ ४५ ॥

अथ मुनीश्वरके नामः–

॥दोहा॥–मुनि महंत तापस तपी, भिक्षुक चारितधाम; यती तपोधन संयमी, व्रती साधु रिषि नाम. ॥ ४६ ॥

अर्थः–मुनि, महंत, तापस, तपी, भिक्षुक, चारित्रधाम, यति, तपोधन, संयमी, व्रती, साधु ए ऋषिनां नाम जाणवां. ॥ ४६ ॥

दर्शनके नामः–

॥दोहा॥–दरस विलोकन देखनो, अवलोकन ढिगचाल; लखन दृष्टि निरखन जुवन, चिंतवन चाहन भाल ॥ ४७ ॥

अर्थः–दर्शन, विलोकन, देखवुं, अवलोकन, ढगचालन, लखवुं, दृष्टी, निरीक्षण, जोवुं, चिंतवन, चाहन, ने भालवुं. ॥ ४७ ॥

शुद्ध ज्ञान तथा चारित्रके नामः–

॥दोहा॥–ज्ञान बोध अवगम मनन, जगतभान जगजान; संयम चारित आचरण, शरन वृति धिरवान ॥ ४८ ॥

अर्थः–ज्ञान, बोध, अवगम, मनन, जगज्ञातु, जगजान, संयम, चारित्र, आचरण, शरण, वृत्ति, धैर्यवान. ॥ ४८ ॥

अथ साचके नामः–

॥दोहा॥–सम्यक् सत्य अमोघ सत, निसंदेह निरधार; ठीक यथारथ उचित तथ, मिथ्या आदिअकार ॥ ४९ ॥

अर्थः–सम्यक्, सत्य, अमोघ, सत्, निःसंदेह, निर्धार, ठीक, यथार्थ, उचित, तथ्य, मिथ्या आदि शब्दने अकार लगाडीने बोलीये तो अमिथ्या शब्द थाय ते पण एनुं नाम जाणवुं ॥ ४९ ॥

अथ जूठके नामः--

॥दोहा॥--अजथारथ मिथ्या मृषा, वृथा असत्य अलीक; मुधा मोघ निष्फल वितथ, अनुचित असत अठीक ॥ ५० ॥

अर्थः--अयथार्थ, मिथ्या, मृषा, वृथा, असत्य, अलीक, मुधा, मोघ, निष्फल, वितथ, अनुचित, असत्य, अने, अठीक, ॥ ५० ॥ इति नाममाला समाप्ता.

अथ समयसारके द्वादश द्वार वर्णनः--

॥सवैया इकतीसा॥--जीव निरजीव करता करम पुण्य पाप, आश्रव संवर निरजरा बंध मोष है; सरव विशुद्धि स्याद्वाद साधिसाधक दुआसद दुवार धरे समैसार कोष है; दरवानुयोग दरवानुयोग दूरि करै, निगमको नाटक परम रस पोष है; ऐसो परमागम बनारसी बखाने यामें, ज्ञानको निदान शुद्ध चारितकी चोष है ॥ ५१ ॥

अर्थः--जीवद्वार, अजीवद्वार, कर्त्ता कर्म क्रियाद्वार, पुण्यपाप द्वार, आश्रवद्वार, संवरद्वार, निर्जराद्वार, बंधद्वार, मोक्षद्वार, सर्व विशुद्धिद्वार, स्याद्वादद्वार, साध्य साधकद्वार, आ समयसारना ए बार द्वाररूप कोष के० कोठार छे; आ ग्रंथमां द्रव्यानुयोग के० द्रव्यनो विचारकरवो, पछी द्रव्यानुयोग दूर करवो, ने शुद्ध आत्मसत्तानोज विचार करवानुं अने निगमके० परमात्मानुं नाटक एमां परम शांतरसनो पोष छे, ए परम सिद्धांतने वणारसीदास वखाणेछे. वली आ ग्रंथमां ज्ञाननुं निदानके० मूलविवरो तथा शुद्ध चारित्रनी चोखी क्रिया कही बताववानीछे ॥ ५१ ॥

अथ ग्रंथारंभको नमस्कार मंगलाचरण रूप.

॥दोहरा॥--शोभित निजअनुभूतियुत, चिदानंद भगवान; सार पदारथ आतमा, सकल पदारथ जान ॥ ५२ ॥

अर्थः--जे पदार्थ पोताना अनुभव युक्त शोभित छे, चित्के० चेतना अने आनंद तेचिदानंद कहियें; तथा भगवान के० ज्ञानवंत छे, एवो साररूप पदार्थ संसारमां आत्मा छे, जे समस्त पदार्थनो जाणनार महोटो ज्ञाता छे ॥ ५२ ॥

अथ आत्मानुं वर्णन करी नमस्कार करेछेः--

॥सवैया तेईसा॥--जो अपनी दुति आपु विराजत, है परधान पदारथ नामी; चेतन अंक सदा निकलंक महासुखसागरको विसरामी; जीव अजीव जिते जगमें तिनको गुन ज्ञायक अंतरजामी; सो शिवरूप बसै शिवथानक, ताहि बिलोकनमें शिवगामी॥५३॥

अर्थ ॥ जे पोतानी द्युतिवमेज पोते विराजमान छे, एटले पोताथी पोते भासीरह्यो छे, पण बीजा पदार्थवडे जेनो भास थतो नथी एवो कोई प्रधान पदार्थ नामी प्र

सिद्ध छे. जेनुं चेतनरूप अंक के० लक्षण छे; जे सदा निकलंक छे; निरंजन छे; महोटा सुखसमुद्रमां जेनो विश्राम थई रह्योछे, एटले एकाग्रचित्ते जे सहेजे समाधिसुखमां रमी रह्योछे; जगत्मां जेटला जीव अजीव पदार्थ छे, ते सर्वना गुणनो ग्राहक छे, अने अंतरजामी छे. जे घटघटमां विराजमान छे. तेहज शिवरूप के० सिद्धरूप थयो थको लोकाग्रज्ञागे सिद्धावस्थामां वसेछे; जेने ज्ञान दृष्टिवडे जोईने मुक्ति गामी जीव नमस्कार करे छे ॥ ५३ ॥

हवे ज्ञगवाननी वाणीने नमस्कार करेछे. अथ जिनवाणी वर्णनं.

॥सवैया तेइसा॥–जोग धरै रहि जोगसुंजिन्न अनंत गुनातम केवल ज्ञानी; तासहृदे द्रहसों निकसी सरिता सम व्है श्रुत सिंधु समानी; यातें अनंत नयातम लछन; सत्य सरूप सिद्धांत वखानी; बुद्धलखै न लखै डुरबुद्धि सदा जगमांहि जगे जिनबानी॥५४॥

अर्थः–जे त्रण योगने धारेछे तथापि ते मन वचन कायना जोगथी प्रथक् रहे छे, अलिप्त रहेछे, अने अनंत गुण प्रगटताने लीधे जेनो आत्मा कोई केवल ज्ञानी पुरुष छे ते केवल ज्ञानीना हृदय रूप द्रह छे, तेमांथी जे नदीरूप थईने निकली ते शास्त्ररूप समुद्रमां जई मली छे, ज्यांथी अनंता नय स्वरूप लक्षण सत्य स्वरूपे जिनजीयें सिद्धांतमा वखाणी छे, एवी जे वाणी ते तो बुद्धिवंत तत्त्व दर्शी होय तेज लखे, अने डुर्बुद्धि मिथ्यामति होय ते लखे नही, जाणे नही, एवी जिनेश्वरनी वाणी जगत्मां सदा जागृत थई रही छे. ॥ ५४ ॥

हवे जीव द्वारनो विचार लखेछे, ते जीव कवीश्वर पोतेज छे माटे पोतानी व्यवस्था कहेछे. अथ जीवद्वार कवि व्यवस्था कथनः–

॥छप्पय छंदः॥–हों निहचें तिहुं काल, शुद्ध चेतनमय मूरति; पर परिनति संयोग, ज्ञई जडता विस्फूरति; मोह कर्म पर हेतु, पाइ चेतन पर रच्चै; ज्यौं धतूर रस पान, करत नर बहु विध नच्चै, अब समय सार बर्नन करत, परम शुद्धता होउ मुऊ; अनयास बनारसि दास कहि, मिटौ सहज ज्रमकी अरुऊ. ॥ ५५ ॥

अर्थः–शुद्ध निश्चयनयवडे अतीत अनागत वर्त्तमान कालमां हुं शुद्ध चेतना मय पिंड हुं, एहिज मारी मूर्त्ति छे, ते एवी छे, त्यारे शुद्ध स्वज्ञाव छांडीने विज्ञावमां केम परिणम्यो छे? एनो उत्तर कहेछे जे, कर्मादिक परवस्तु छे, तेनुं अहीं परिणमन थयुं, तेथी तेनी जडता अहीं विस्फुरति थई, एटले जरुता फेली. शिष्य पूछे छे के, एवो शुद्ध स्वज्ञाव हतो त्यारे परपरिणति केम ग्रहण करी? तेनो उतर, मोह कर्म राग द्वेष रूप जे छे तेज परहेतु उत्कृष्ट कारण पामीने चेतन आत्मा परनी साथे मोहित थयो छे; तेनो दृष्टांत कहेछेः–जेम धतुरानो रस पान करी मा

णस तरेहवार रीते नाचवा लागे, तेम अनादिनुं मोह कारण पामीने चेतन जे छे ते पोतानो शुद्ध स्वभाव छांडीने विभावथी मूर्छा पामी रह्योछे. हवे समयसार के० आत्मानुं वर्णन करतांज मुजने परम शुद्धताना स्वभावनी ओलखाणथई एटले शुद्ध स्वभावनी खबर पडी तेथी विभावपणु नाश पाम्युं. तेथी अनायास के० घणा ग्रंथ वांचवानो प्रयास कीधा विनाज बणारसीदास ज्ञाता कहेछे, के सहज के० आत्माने संगे अनादिथी भ्रमनी अरुझ ते मिथ्यामत मग्नता लागी रहीछे ते मारी मिथ्यामत मटी जाओ. ॥ ५५ ॥

हवे आ जीवनी शुद्धता ते आगमथी पामीये, माटे आगम वर्णवेछे. अथ आगम व्यवस्था कथन.

॥सवैया इकतीसा॥—निहचैमें रूप एक विवहारमें अनेक, याही नै विरोधमें जगत् भरमायो है; जगके विवाद नासिवेको जिन आगम है, जामें स्याद्वाद नाम लछन सुहायो है; दरसन मोह जाको गयो है सहजरूप, आगम प्रमान जाके हिरदेमें आयो है; अनैसो अखंडित अनुतन अनंत तेज, ऐसो पद पूरन तुरत तीन पायो है. ॥५६॥

अर्थः—सर्व आगम ज्ञानरूप निश्चयनयमां एकरूप देखाय छे, अने व्यवहार नयनी अपेक्षावडे अनेक रूप देखाय छे; पण व्यवहार नयमां नयनो विरोध महोटो छे, एज नय-विरोधमां जगत् भरमायुं छे, अने एज भ्रमवडे जगत्मां वादविवाद उपज्यो छे, माटे जगत्नो विवाद मटाडवाने वचमां प्रमाणिक साक्षीरूप जिनेश्वरनो आगम छे; जे आगममां स्याद्वाद नाम लेवाथी सर्वपदार्थनुं लक्षण सर्वने सोहावे छे; स्यात् एटले केवारेक द्रव्य दृष्टिए देखीए त्यारे ए नय साचोने केवारेक पर्याय दृष्टिए जोइये त्यारे ए नय साचो; एवुं कहे थके शिष्य पूछेछेके एवो स्याद्वाद सहित जिन आगम प्रमाण छे, त्यारे सर्वना हृदयामां केम आवतो नथी ? जे पुरुषनो अनादि कालनो मिथ्यादर्शनमोह गयो छे, तेना हृदयामां ए जिन आगम प्रमाणरूप आव्योछे, पण मिथ्यादर्शनमोहवालाना हृदयमां ए आवे नही; हवे स्याद्वादना जाणनारने केवुं फल मले ते कहेछेः—जे पद नय रहित छे, एटले नयनी पेठे नथी, केमके, नयतो एकांत ग्राही छे, ते पूर्ण पदने केम ग्रहण करी शके? अने पूर्ण पद अखंडितछे, ने ते वली अनादि कालथी छे, माटे अनूतन के० पुरातन छे एवुं अनंत तेजवालुं पूर्ण पद तेने ते तुरत पाम्यो छे ॥ ५६ ॥

हवे निश्चय अने व्यवहार नयने लीधे आगम कह्यो, तेवारे शिष्य पुछेछे के एवे नयमां कार्य सिद्धिकारी नय कयो छे ? तेनो उत्तर गुरु आपे छे.

अथ निश्चय व्यवहार कथन.

॥सवैया तेईसा॥–ज्यों नर कोउ गिरै गिरिसों तिहि, सोइ हितु जु गहे दिढ बांही, त्यों बुधकों विवहार भलो तबलों जबलों शिव प्रापति नाही; यद्यपि यों पर वान तथापि सधै परमारथ चेतनमांही; जीव अव्यापक है परसों विवहार सुतौ परकी परछांही ॥ ५३ ॥

अर्थः–जेम कोई पुरुष पाहाडनी उपरथी नीचे पडतो होय ने बीजो पुरुष तेनो हाथ मजबुत झाली रही तेने पडतो अटकावी राखे ते तेनो हित करनार कहेवाय; तेम पंडितोने ज्यां सूधी शिवसुखनी प्राप्ति नथी थई, त्यां सुधी व्यवहार भलो छे; एटले चोथा गुणठाणाथी लईने चौदमा शैलेसीकरण गुणठाणासुधी व्यवहारनुं आलं बन छे; यद्यपि ए रीते व्यवहार आलंबन प्रमाण छे, तथापि परमार्थ ज्ञान दर्शन चा रित्रनुं शुद्धपणु चेतनमांज सधाय; बीजाथी न सधाय; अने जीव जे छे ते पोताना गुणमयी छे, पोताना गुणमां व्यापी रह्योछे; परंतु पर के० कर्मादिक जडजीव सत्ताथी न्यारा, ते साथे जीव अव्यापक छे. अने व्यवहार छे तेतो परनी छायामां रहेछे, ए टले परनी निश्राविना व्यवहार न होय माटे व्यवहार करतां निश्चयनय शुद्ध छे॥५३॥

हवे शुद्धनिश्चयनयथी जे सम्यग् दर्शन प्रगटे छे तेनी व्यवस्था विशेषपणे जाण वाने अर्थे कहेछे, अथ सम्यग् दर्शन व्यवस्था कथन.

॥सवैया इकतीसा॥–शुद्ध नय निहचै अकेलो आपु चिदानंद, अपनेही गुण परजा यको गहतु है; पूरन विज्ञान घन सोहै विवहार मांहि, नवतत्त्वरूपी पंच द्रव्यमें र हतु है; पंच द्रव्यनवतत्त्व न्यारे जीव न्यारो लखै, सम्यग् दरस यहै औरतैन गहतु है; सम्यग् दरस जोई आतमसरूप सोई मेरे घट प्रगट्यो बनारसी कहतु है ॥ ५४ ॥

अर्थः–शुद्ध निश्चय नयनी अपेक्षा लेवाथी चेतनामय जे पदार्थ छे, ते पोतानी स
कपे पोते एकलोज छे; अने पोतानाज ज्ञानादिक गुणना पर्यायना अवस्था भेदने
नयाश्री रह्योछे. अने तेज सामान्य ज्ञानने शोधो. जे षट् द्रव्यादिक विशेष ज्ञान
अर्थ-न कहीये; अने तेनुं पूर्ण घन के० पिंड ते ए व्यवहार नयमांज देखायछे;
मय पिंड व्यवहार नयथी नवतत्त्वरूप लई धर्मादिक पांच द्रव्यमां एकत्र थई रहेछे.
वमां केम पां-व्यवहारमां शुद्ध निश्चय केवलना पांच द्रव्य न्यारा छे एम जाणवुं अने
रिणमन थयुं, ते-रा जाणवा; एवी द्रव्य दृष्टिथी अन्य उपाधिनो आश्रय ग्रहण करे
छे के, एवो शुद्ध रू-दर्शनी कहीये, अने जे सम्यग् दर्शन छे, तेज आत्मस्वरूप मारा
मोह कर्म राग द्वेष -रसीदास कहेछे ॥ ५४ ॥
परनी साथे मोहित थए

शिष्ये पुछ्युं के जीव द्रव्यथी नव तत्त्व अने पंच द्रव्य जुदा केम जाणीए तेनो उत्तर गुरु कहेछेः– अथ जीवद्रव्य व्यवस्था अग्नि दृष्टांत.

॥सवैया इकतीसा॥–जैसै तृन काठ बांस आरनै इत्यादि और, इंधन अनेक विध पावकमें दहिये; आकृति विलोकत कहावै आगि नानारूप, दीसैं एक दाहक सुभाउ जब गहिवे; तैसै नव तत्वमें भयो है बहु भेखी जीव, शुद्धरूप मिश्रित अशुद्धरूप कहियें; जाही छिन चेतना शकतिको विचार कीजै, ताही छिन अलख अभेदरूप लहिये.॥५९॥

अर्थः–जेम अग्निमां तृण, काठ, वांस अने आरनै के० वनना बीजो कचरो इत्यादिक अनेक तरेहना इंधण वालीये छइये ने जेवी जेवी इंधननी आकृति एटले (आकार) तेवी तेवी आकृतिनो अग्नी देखाय; ए रीते अग्नि नाना प्रकारना रूपनो कहेवायछे; पण ते वधा अग्निनो स्वभाव एक सरखो दाहक छे; एम जो ग्रहण करिये तो बधो अग्नि एकरूप छे. तेमज नव तत्त्वमां जीव जेछे ते भातभातना भेष धारी रह्यो छे माटे जीव पण बहु वेशी के० नाना प्रकारनो थयो एटले शुद्धरूप जीव छे, ते मिश्रित थयो, त्यारे ए जीवने अशुद्धरूप कह्यो एवुं नाम व्यवहार नय छे; अने जे क्षणमां नवे तत्त्वमां एक चेतना शक्ति विचारिये, ते वखते शुद्ध निश्चयनये केवलीवडे नव तत्त्वनो प्रपंच अमुख्य राखीने अलक्षरूप जीव छे, ते सर्वत्र ते अभेदरूप पामिये शुद्ध निश्चय नय जाणवो ॥ ५९ ॥

फरी बीजी रीते शुद्धजीव व्यवस्था कहेछे, अथजीव व्यवस्था बनवारी दृष्टांतः–

॥सवैया इकतीसा॥–जैसै बनवारीमें कुधातुके मिलाप हेम, नाना भांति भयो पै तथापि एक नाम है, कसिके कसोटी लीक निरखै सराफ तांही, बानके प्रमान करिलेतु देतु दाम है; तैसैंही अनादि पुद्गलसों संयोगी जीव, नव तत्वरूपमें अरूपी महा धाम है; दीसे उनमानसौ उद्योत बान ठोर ठौर, दूसरो न और एक आतमाहि राम है ॥ ६० ॥

अर्थः–जेम सोनानी मूसमां चोखुं सोनुं गाल्युं अने सोनाथी हीण धातु ते कुधातु कहिये, तेनां नाम कहेछे;–रूपुं, त्रांबुं, सीसुं, जसत, कथीर, इत्यादि वस्तुनो जुदोजुदो हेमनी साथे मिलाप थयो तेथी जुदी जुदी जातनुं सोनुं थयुं, ते छतां एक सोनाने नामे ओलखायछे; अने ते अशुद्ध सोनाने सराफ कसोटी पथ्थर उपर कसीने तेनी लकीर जुये ने तेउपरथी सोनुं केवुं छे ते प्रमाण करे, जेम आ दस रुपीयाना भावनुं छे ने आ अगीयार रुपीयाना भावनुं छे, ने ते माफक तेना दाम आपे लिए छे, तेमज अनादि कालथी ए जीव पुद्गल द्रव्यनो संयोगी माटे ए जीवे नव तत्त्वरूप व्यवस्था धारी, गतिपणे, स्थितिपणे, भाजनपणे, वर्त्तमानपणे, आधारपणे,

ए पांचे द्रव्य ग्रहण कीधां अने नवतत्त्वरूप धारण कर्यां पण एमां कोई अरूपी महा तेजवंत द्रव्य छे ते तो कोई प्रत्यक्ष प्रमाणे ग्रहण थतुं नथी, अने अनुमान वडे लइये छइये, तेवारे शिष्ये पुछ्युंके, अनुमान केवुं करीये? त्यारे गुरु कहेछे ठोर ठोर उद्योतवान प्रकाशवान द्रव्य देखाय, तेतो बीजुं कोई द्रव्य नही, पण एक आत्मारामज जाणवो; ए अशुद्ध निश्चय नयथी जीव कह्यो. ॥ ६० ॥

हवे एवी रीते जे खोजना करीने परिचय पामिये तेने अनुभव कहिये, ते अनुभवनुं स्वरूप केवी रीते छे? एवुं शिष्ये पूछे थके गुरु सूर्यना दृष्टांते कहेछेः–

अथ अनुभव व्यवस्था सूर्य दृष्टांत.

॥सवैया इकतीसाः॥–जैसै रविमंडलके उदे महिमंडलमें, आतप अटल तम पटल बिलातु है; तैसै परमातमाको अनुभौ रहत जो लों, तो लों कहूं दुविधा न कहू पक्ष पातु है; नयको न लेश परवानकोन परवेश, निछेपके वंसको विधंस होतु जातु है; जे जे वस्तु साधक हैं, तेउ तहां बाधक हैं, बाकी रागदोषकी दशाकी कौन बातु है॥६१॥

अर्थः–जेम सूर्यमंडलना उदयथी पृथ्वीमंडलमां आतप के० तावरो अटल थई जाय, अने तम के० अंधकारना पटल नासी जाय, प्रकाश उद्योत थाय, तेमज शुद्ध निश्चयनयना बलवडे ज्यांसुधी अंतरात्मानेविषे परमात्मानो अनुभव रहेछे, त्यां सुधी कांई पण द्विविधता न देखाय, पोतपोताना मतनो पक्षपात न रहे, अने अहीं नयनो लेश के० अंश न पामिये. नय तो ते छे के, जेणेकरीने वस्तुनुं साधन कराय अने अनुभव तो सिद्ध वस्तुनो होय माटे अहीं अनुभवमां नयनो लेश नथी अने एमां प्रत्यक्ष परोक्षादिक प्रमाणनो पण प्रवेश नथी, केमके जे प्रमाण होय ते तो असिद्धनुं साधन करे पण सिद्ध वस्तुने शुं साधशे? अने नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव ए चार निक्षेपा छे, तेपण असिद्ध वस्तुनुं साधन करे छे, ते तो जेवारें परमात्मानो अनुभव सिद्ध थयो त्यारे निक्षेपाना वंशनो विध्वंसज थयो. जेम सूर्यना प्रकाशवडे अंधकारनो नाश थायछे, तेम ए सर्व विलय थाय छे. आ परमात्माने नयप्रमाण निक्षेपादिक वस्तु जे जे साधक छे ते सर्व वस्तु परमात्माना अनुभवमां बाधक छे; ज्यांसुधी नयप्रमाण अने निक्षेपानो परिवार होय त्यां सुधी शुद्ध अनुभव न होय एटलासारु ए बाधक छे. बाकी राग द्वेष दशानी शुं वात केहेवी? तिहां तो नयादिक कहेवाज जोइये. ॥६१॥

हवे अनुभवमां शुद्ध रूप जीवज लख्यो तेनी व्यवस्था वचन गोचर जेवी होय तेवी केहेछेः– अथ जीव व्यवस्था विवरण द्वार.

॥अडिल्ल छंदः॥–आदि अंत पूरन सुभाव संयुक्त है; पर स्वरूप परजोग कल्पनामुक्त है; सदा एक रस प्रगट कही है जैनमें, शुद्ध नयातमवस्तु विराजे वैनमें ॥ ६२ ॥

अर्थः—आदि निगोद अने अंत सिद्ध अवस्था, तेनी वच्चे चेतना रूप पोताना पूर्ण स्वभावेकरी संयुक्त छे; अने ए चेतनामां पर स्वरूप जे जड स्वरूप, अने परजोग जे पुद्गल संयोग, तेनी दशा, कल्पना–विचारणा तेणेकरी मुक्त छे. आदि अंतसुधी एकज स्वभाव छे. सदा एक चेतना रसमय प्रगट वस्तु छे; ते शुद्ध निश्चय नयनुं आलंबन लईने जैन आगममां कही ने जेवी कही तेवी वचन व्यवहारमां पण विराजमान छे. ॥ ६२ ॥

हवे एवुंज स्वरूप वचन द्वारवडे गुरु हितोपदेश रूप केहेछे:— अथ हितोपदेश.

॥कवित छंदः॥—सतगुरु कहै भव्य जीवनिरसौं, तोरहु तुरत मोहकी जेल; समकित रूप गहो अपनो गुन, करहु शुद्ध अनुभवको खेल; पुद्गल पिंड भाव रागादिक, इनसौं नही तुमारो मेल; ए जड प्रगट गुपत तुम चेतन, जैसै भिन्न तोय अरु तेलने॥६३॥

अर्थः—अहो भव्यलोक ! वेला थाओ, मोहनो बंध तोडो. अने तमारो पोतानो समकित गुण छे, ते ग्रहण करो; अने ते लईने पोताना शुद्ध अनुभवनो खेल खेलो. अने देखवामां जे आ शरीर छे ते पुद्गल पिंड छे. अने कर्म पण पुद्गल पिंड छे. अने आ पुद्गल पिंडनो राग द्वेषादिक भाव ते स्वभाव छे, पण ए वस्तु साथे तहारो मिलाप नथी. केमके, ए वस्तु तो जडछे, ने प्रगट छे, एटले देखवामां आवेछे, ने तमे तो चेतन छो तथा गुप्त छो. त्यारे ते पुद्गल पिंडनी ने तमारी भिन्नता ठरी; जेम पाणीने तेल भिन्न छे, तेनीपरे जाणी लेवुं. ॥ ६३ ॥

हवे एवो उपदेश सांभलीने ते ज्ञाता पुरुष थयो तेनो विलास कहेछे. अथ ज्ञाताविलास.

॥सवैया इकतीसाः॥—कोउ बुद्धिवंत नर निरखै शरीर घर, भेद ज्ञान द्रष्टिसौं विचारै वस्तु वासतो; अतीत अनागत वरतमान मोहरस, भिग्यो चिदानंद लखै बंधमें विलासतो; बंधको विदारि महा मोहको सुभाउ डारि, आतमको ध्यान करी देखो परगासतो; करम कलंक पंक रहित प्रगटरूप अचल अबाधित विलोकै देव सासतो. ॥ ६४ ॥

अर्थः—कोई बुद्धिवंत् सम्यग्दृष्टि मनुष्य होय ते पोताना शरीरमां घरने जुये; अने जड चेतननो भिन्न भिन्न स्वभाव जाणवो ते भेद ज्ञान कह्युं; तेमां दृष्टि आपीने वस्तु वासतो केº वस्तु स्वभावनो विचार करे. अतीतकाल, अनागतकाल ने वर्त्तमान कालमां मोहरसविषे भीनो थको, कर्मबंधमां विलास करतो थको पोताना चिदानंद परमात्माने लखे. ते पछी क्रमेक्रमे बंधने विदारतोज जाय. एवुं कार्यकरी मोहना स्वभावने मूकतो जाय अने पोताना आत्मानुं ध्यान करे, अने अनुभवमां प्रकाशरूप

देखे. त्यारे कर्म कलंक तेहिज पंक के० कादव तेथी रहित प्रगटरूप अचल अबाधित सर्व बाध रहित एवो शाश्वत निरंजन देव परमात्मा पोते छे, एवुं देखे. ॥ ६४ ॥

अथ गुण गुणी अभेद कथन व्यवस्था.

॥सवैया तेईसाः॥–शुद्ध नयातम आतमकी अनुभूति विज्ञान विभूतिहि सोई; वस्तु विचारत एक पदारथ नामके भेद कहावत दोई; यों सरवंग सदा लखि आपुहि, आतमध्यान करै जब कोई; मेटि अशुद्धि विभावदशा तब सिद्ध सरूपकि प्रापतिहोई॥६५॥

अर्थः–हवे शुद्ध अनुभव जे छे ते गुण छे, एक आतमा गुणी छे, तेनुं जेवुं अभेद स्वरूप छे तेवी अभेद अवस्था कही बतावेछेः–शुद्ध निश्चय स्वरूपी आत्मानो अनुभूति के० जे अनुभव छे, तेज विज्ञान विभूती के० विशेष रूप ज्ञान संपदा छे. अहीं आत्मा गुणी छे ने अनुभवज्ञान गुण छे. हवे ए बे वस्तु शुं छे? एवो जो विचार करीये तो एकज आत्मा पदार्थ भासे छे. एकज पदार्थमां आ गुण अने आ गुणी एवां बे नाम छे. तेज भेद केहेवायछे. एम सरवंग के० सर्व प्रकारे पोतानेज गुणगुणी रूप लखीने ज्यारे कोई आत्मध्यान करे, त्यारे अशुद्धविभाव दशा मटीने सिद्धस्वरूपनी प्राप्ति थाय. ॥ ६५ ॥

अथ ज्ञाता चिंतवन स्वरूप कथन.

॥सवैया इकतीसाः॥–अपनेही गुन परजायसों प्रवाहरूप, परिनयो तिहूं काल अपने आधारसों; अंतर् बाहिर परकासवान एक रस, खिन्नता न गहै भिन्न रहै भौ विकार सों; चेतनाके रस सरवंग भरि रह्यो जीव, जैसै लोंन काकर भर्यो है रस खारसो; पूरन सरूप अति उज्वल विज्ञान घन, मोकों होहु प्रगट विशेष निरबारसो ॥ ६६ ॥

अर्थः–हवे एज वातने जेम ज्ञाता लोक पोताना चित्तमां चिंतवे तेवुंज स्वरूप कही देखाडे छेः–आ जे कोई आत्मा केहवायछे, ते तो विज्ञान घन छे; विशेष ज्ञानमय पिंड छे; ते अतीत, अनागत ने वर्त्तमान ए त्रणे कालमां प्रवाहरूप करवाथी अविछिन्न धाराये पोतानाज गुण पर्याये करीने पोतानाज ज्ञानादिक गुणनी अवस्था भेदने लीधे अने पोताना आधारथी परना आश्रयविना परिणामी रहे छे. अने ए विज्ञान घननो एवो महीमाछे के तेथी मांहे अने बाहिर एक चित्त चेतना रसवडे प्रकाशवान थयो जे पोताने जाणे ते अंतर् प्रकाश अने बाह्य वस्तुने जाणे ते बाहिर प्रकाश एवा कार्यमां खिन्नता ग्रहण न करे; अने भव विकारथी न्यारो रही सर्व प्रदेशविषे चेतनना रसे करी जीव भरपूर थई रह्यो छे. ए उपर दृष्टांत कहे छे के, जेम लुणना कांकरा खार रसथी भरेला छे, तेम चेतना रसथी जीव भरपूर थई रह्यो छे. एवुं पूर्ण स्वरूप ते अखंडित घणुंउज्वल जे विज्ञान घन पूर्वे वखाण्युं ते मने प्रगट थाओ.

निशेष निरवार ते सम विभाव दशानुं निवारण करीने पछी ए रीते ज्ञाता पुरुष मनमां चिंतवे अने एमांज स्थिर रहे ॥ ६६ ॥

अथ द्रव्य पर्याय अभेद कथन व्यस्था.

॥ कवित्त छंदः ॥— जहँ ध्रुव धर्म कर्म छय लछन, सिद्ध समाधि साध्य पद सोइ; सुधोपयोग जोग महि मंडित, साधक ताहि कहै सब कोइ; यों परतछ परोछ सरूप सु, साधक साध्य अवस्था दोइ; दुहुको एक ज्ञान संचय करि, सेवै शिव वंछक थिर होइ. ॥ ६७ ॥

अर्थः— विज्ञान घन छे ते द्रव्य छे, अने ज्ञाता केहवाय ते पर्याय छे, एम विज्ञान अने ज्ञाता एकज छे, तेथी द्रव्य पर्यायनुं अभेदपणुं बतावे छेः— ज्यां सकल कर्मनो क्षय लखिये एवो ध्रुव धर्म जे निश्चल स्वभाव छे, एवुं कोइक सिद्धपणानुं थवुं ते तो पद साध्य केहेवाय छे, अने शुद्ध उपयोग लेता थका ए मन वचन काय योगमां मंडित थका तीर्थंकर साधु प्रमुख पर्याय लई रह्या छे; तेमने सहु कोई साधु कहेछे. एवुं साधुपणुं ते प्रत्यक्ष स्वरूप छे; अने साध्यपणुं ते परोक्ष स्वरूप छे. ए बन्ने अवस्था लईने एक विज्ञान घन छे. मोक्षने इछनार साध साध्य बन्नेने एक ज्ञान संचयवडे सेवे, ते बन्ने पदमां विज्ञान घन एक छे; अने ए बन्ने पदनी सेवामां स्थिर थई रहेछे ॥ ६७ ॥

अथ द्रव्य गुण पर्याय भेद व्यवस्था कथन.

॥ कवित्त छंदः ॥— दर्शन ज्ञान चरन त्रिगुनातम, समल रूप कहिये विवहार; निहचे दृष्टि एकरस चेतन, भेद रहित अविचल अविकार; सम्यग् दशा प्रमाण छभै नय, नीर्मल समल एकही बार; यों समकाल जीवकी परिनति, कहे जिनंद गहे गनधार. ॥ ६८ ॥

अर्थः— शिष्य पूछे छे के, स्वामी ! तमे अभेद व्यवस्था कही ते कया नयना बलवडे कही ? गुरु केहेछे के, व्यवहार नय वडे द्रव्य गुण पर्यायनी भेद अवस्था छे ते कहुं छुं.— ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रणे आत्माना गुण छे; ए स्वरूपथी जे व्यवहार कहीए ते समल रूप छे; अने एज निश्चय दृष्टिथी जोइये तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र एक चेतना रसमय देखाय छे, अने चेतनाज चेतन छे, तेणे करीने भेदरहित अविचल अविकार निर्मल रूप छे. निश्चय नय ने व्यवहार नय ए बन्ने छे ते सम्यग् दशामां प्रमाण छे; जे नय छे ते तो अभिप्राय विशेष छे, माटे एकज अव्यक्त रूप निर्मल तथा समल रूप जाणिये. एम समकाले निर्मल अने समल जीवनी परिणति थई रही छे, ते श्री जिन देव कहे छे अने गणधर देव सर्दहे छे. ॥ ६८ ॥

अथ व्यवहार कथनं.

॥ दोहरा ॥– एक रूप आतम दरव, ज्ञान चरन दृग् तीन; जेद जाव परिनाम सो विवहारे सु मलीन. ॥ ६ए ॥

अर्थः– हवे ज्ञान, दर्शन, चारित्रनुं त्रिक ले ते व्यवहार नयथी थाय ले; ते कहे लेः–आत्म द्रव्य जे ले ते एकरूप ले, ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रण जे ले ते जेद जाव परिणाम ले; त्यारे एकविषे त्रण जेद थया तेथी ए व्यवहार नयवडे समल रूप थयुं. ॥६ए॥

अथ निश्चय स्वरूप कथन.

॥ दोहराः ॥– यदपि समल विवहारसौं, पर्यय शक्ति अनेक; तदपि नियत नय देखिये, शुद्ध निरंजन एक. ॥ ७० ॥

अर्थः–निश्चयनयेकरी निर्मल स्वरूपमांज ध्याववुं जलुं ले ते केहेलेः–यद्यपि व्यवहारनयनी अपेक्षाथी आत्मानेविषे अनेक शक्ति अनेक पर्याय देखायले; माटे ते समल ले; तोपण निश्चय नयनी अपेक्षाथी शुद्ध निरंजन एकज जाणामां आवेले. ॥ ७० ॥

अथ शुद्ध कथन.

॥ दोहराः ॥– एक देखिये जानिये, रमि रहिये इक ठोर; समल विमल न विचारिये, यहे सिद्धि नहि और. ॥ ७१ ॥

अर्थः– हवे शुद्धरूपीज उपादेय ले एवुं केहेलेः–जे एक शुद्ध चेतनामय रूपज देखवुं ते दर्शन, तेमज जाणवुं ते ज्ञान; अने तेमां जे रमि रहेवुं ते चारित्र ले; ते नयनी अपेक्षावडे समल अथवा विमल रूप विचारवुं नही. एहिज सिद्धि कहिये, पण वीजा स्वरूपमां सिद्धि नथी. ॥ ७१ ॥

अथ शुद्ध अनुजव प्रशंसाः

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जाके पद सोहत सुलब्रन अनंत ज्ञान, विमल विकासवंत ज्योति लहलही है; यद्यपि त्रिविध रूप व्यवहारमें तथापि, एकता न तजै योंनियत अंग कही है; सो है जीव कैसीहू जुगतिके सदीव ताके, ध्यान करिबेकों मेरी मनसा उमही है; जाते अविचल सिद्धि होतु और जांति सिद्ध, नांहि नांहि नांहि यामें धोखो नांहि सही हे. ॥ ७२ ॥

अर्थः–हवे एवा स्वरूपनो अनुजव स्थिर रहेवो ते डुर्लज ले, माटे सर्व ज्ञाता एनो मनोरथ करे ले. जेनेविषे अनंत ज्ञानरूप सुलक्षण शोजेले, अने विमल विकासवंत के० पोतानुं तथा परनुं जाणवुं एवी ज्योति जेनेविषे लहलही ले, अने यद्यपि व्यवहारनयमां वाह्यात्मा, अंतरात्मा, तथा परमात्मा ए त्रिविध रूप ले, तथापि निश्चयनयनी अपेक्षाथी एकताने त्यजे नही एवुं एकरूपी कह्युं ले; ते एवो पदार्थतो जीव

छे. हवे ते युक्तिथी करी आगल केहेशे. ते युक्तिये करी निरंतर तेनुं ध्यान करवाने मारी होंस मनमां उमंगी रही छे. जेना ध्यानथी पोतानी ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप ऋद्धि अविचल थायछे, एज रीते सिद्धि छे, पण बीजे कोई प्रकारे सिद्धि नथी. एमां कंई धोखो नथी, एटले जूठुं नथी, एज वात साची छे. ॥ ३२ ॥

अथ ज्ञाताकी व्यवस्था वर्णनं.

॥ सवैया तेईसा ॥– के अपनो पद आपु सँभारत, के गुरुके मुखकी सुनि बानी; भेद विज्ञान जग्यो जिनके प्रगटे, सु विवेक कला रज धानी; भाव अनंत भये प्रतिबिंबित, जीवन मोष दशा ठहरानी; ते नर दर्पनज्यो अविकार रहै थिर रूप सदा सुखदानी ॥ ३३ ॥

अर्थः– हवे भेद विज्ञानवडे एनो अनुभव थाय छे तेथी मुक्ति मळे तेज परमार्थ कहेछेः– कोई तो पोतानुं पद जे पोतानु निरालंब स्वरूप, ते पोतेज संभारीने पोताव डे ग्रंथी भेद करी पोताने उलखेछे. कोई तो गुरुना मुखनी वाणी शांभळीने पोताने उ लखेछे; अने जेना घटमां जड–चेतननुं भेद विज्ञान जाग्युं तेणे करी पोताना चेतन रूपनी जे न्यारी कला छे, तेनी राजधानी जे तेनुं ईश्वरपणुं जेना घटमां प्रगटयुं; अने एज राजधानीमां अनंत भाव पदार्थ प्रतिबिंबित थया, तेना ज्ञायक थया एटले जी वता थकाज मोक्ष दशा ठरी, मुक्त स्वरूपी थया. अने एमां अनंतभाव प्रतिबिंबित थया तोपण समलरूप न थया, तेथी ते मनुष्य दर्पण एटले आरीसानीपरें विकार र हित थया, स्थिररूप थया, अने सुखदायक थयाछे ॥ ३३ ॥

अथ भेद ज्ञान प्रशंसा कथनं.

॥ सवैया इकतीसा ॥– याही वर्त्तमान समै भव्यनिको मिट्यो मोह, लग्यो है अना दिको पग्यो है कर्म मलसो; उदो करै भेदज्ञान महारुचिको निधान, उरको उजारो भारो न्यारो दुंद दलसों; याते थिर रहै अनुभौ विलास गहै फिरि कबहों, अपनपो न कहै पुदगलसों; यहै करतुति यों जुदाइ करै जगतसों, पावकज्यों भिन्न करै कं चन उपलसों ॥ ३४ ॥

अर्थः– हवे भेदविज्ञाननी उत्पत्ति अने महीमा कहेछेः– आ वर्त्तमानकाल विषे भव्यलोकनो मोह भ्रम टली जाय; जे मोह कर्म, आत्माने अनादिकालथी लाग्यो छे; अने कर्ममलमां व्यापी रह्योछे; ते मोह भ्रम मटवाथी भेद विज्ञाननो उदय थाय, ते भेद विज्ञान केवुंछे? महारुचिनुं निधान छे. ए भेद विज्ञानमां महोटी रुचि पामीये छिये एटले महारुचिनुं कारण छे. भेद विज्ञानथी गरिष्ठ उरनुं अजवालुं प्रगट थाय छे, ते अजवालुं केवुंछे?

एटले महा धाम धुमथी न्यारोछे; द्वंद्व दशाथी नीकली स्थिरतामां रहे, अने पो

ताना अनुभवनो विलास ग्रहण करे, पोताने सत्यार्थपणे जाणे, पछी ए भेद विज्ञान पाम्या थकी शरीर कर्मादि पुद्गल रूपी जाणीने पोतानुं न कहे. आत्मा रूप न कहे करतुति के० ए जे भेदविज्ञाननी क्रिया तेज जगतथी जुदाईने करे, पांच द्रव्यथी जुदाई करे, अहीं दृष्टांत बतावेछेः– जेम अग्नि, माटी पाषाणने कंचनथी जुदां करे छे तेम जाणी लेवुं ॥ ३४ ॥

अथ परमार्थ शिक्षा कथन.

॥ सवैया इकतीसा॥– बनारसी कहे भैया भव्य सुनो मेरी शीख, केहुं भांति कसे हुके एसो काज कीजिए; एकहु मुहुरत मिथ्यातको विध्वंस होइ ज्ञानको जगाइ अंस हंस खोजि लीजिये; वाहीको विचार वाको ध्यान यहे कोतुहल, योंही भरि ज नम परम रस पीजिए; तजी भववासकी विलास सविकाररूप, अंतकरि मोहको अ नंत काल जीजिए. ॥ ३५ ॥

अर्थः–हवे शुद्ध जीवद्रव्यमां रहेवुं तेज परमार्थ छे तेनी शिक्षा कहेछेः– बणार सीदास केहेछेः– अहो भाई भव्य जीवो, मारी शीक्षा सांभलो. कोइ पण रीतेथी कोई द्रव्य क्षेत्र काल भाव पामीने एवुं काम करवुं के जेणे करीने एक मुहूर्त्तमात्र मां मिथ्यात्व मोहनो विध्वंस थाय अने ज्ञाननो अंश जगावी लेवो, अने "सोहं हंसो" एवी ध्वनि करतो हंस जे आत्मा तेने खोजी लइयें. पछी तेनुं लक्षण विचारवुं, पछी तेने ओलखीने तेनुं ध्यान करवुं. एवी एनी कला खोजीने कुतूहल जे खेल ते कस्या करियें; अने तेज जन्म पर्यंत परम रस पीवो. एरीते सविकार रूपथी फेली रह्यो एवो भववासनो विलास तेने तजीने तथा मोहनो अंत आणीने अनंत कालसुधी जीजिए. जयवंता वर्त्तिये! एटला प्रकारे सिद्ध थवाय छे. ॥ ३५ ॥

अथ तीर्थंकरकी स्तुति, बाह्यरूप कथनः–

॥ सवैया इकतीसा॥–जाकी देहद्युतिसों दसो दिशा पवित्र भई, जाके तेज आगे सब तेजवंत रुके हैं; जाको रूप निरखी थकित महारूपवंत, जाकी वपुवाससों सुवास और लुके हैं; जाको दिव्य धुनी सुनि श्रवनकों सुख होत, जाके तन लछन अनेक आइ ढुके हैं; तेई जिनराज जाके कहे विवहार गुन, निहचै निरखि सुद्ध चेतनसों चुके हैं ॥ ३६ ॥

अर्थः– हवे चेतन महीमावान थयाथी पुद्गलपण महिमावान थाय माटे कवि राज तीर्थंकरना बाह्य शरीररूप पुद्गलनो महीमा कहेछेः–जेनी देहनी द्युति एवी पसरी रहीछे के जेथी दशे दिशा पवित्र थई जायछे; एटले शोभायमान थायछे अने जेना तेज आगल सर्व तेजवाला छुपी जायछे एटले सर्व देवता मंद तेजवंत थायछे. अने जेनुं रूप जोईने महारूपवंत पंच अनुत्तरवासी देवता पण चकित थइ रहेछे अने

जेना शरीरनी सुवासथी अन्य सुवासी वस्तु सर्व ढुकी जायछे. अने जेनी दिव्य ध्वनि सांजलीने श्रवणने सुख थाय छे, एटले ज्ञव्य अज्ञव्य सर्वने ते वाणी मीठी लागेछे अने जेना शरीरमां अनेक शुज्ञ लक्षण आवी ढुकी रह्याछे एवा श्री जिनराज देव छे, तेमना एटला गुण कह्या ते अशुद्ध व्यवहार नयनो आश्रय लइने कह्या पण, निश्चयनयथी ए कहेला गुण सर्व शुद्ध चेतननी०ज्ञिन्नता दर्शावेछे. ॥ ७६ ॥

अथ जिन स्तुति व्यवहाररूप पुनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जामें बालपनो तरुनपनो वृद्धपनो नांहि, आयु परजंत महारूप महा बल है; विनाहि जनत जाके तनमें अनेक गुन, अतिसै विराजमान काया निर मल है; जैसै विनुपवन समुद्र अविचलरूप, तैसै जाको मन अरु आसन अचल है, ऐसो जिनराज जयवंत होउ जगतमें, जाकी शुज्ञगति महा सुकृतिको फल है ॥७७॥

अर्थः– हवे फरी व्यवहारनय वडे जिन स्तुति करे छेः– जेमां जन्मथी मांडीने मरण पर्यंत महारूप अने महाबल समान रहेछे; पण बालपणु, तरुणपणु, वृद्धपणु, ए त्रण जे अवस्थाना ज्ञेद तेमां रूपमां अने बलमां ज्ञेद न पामे, जेना सहज स्वज्ञावे जतनविना शरीरमां अनेक गुण आवी रहेछे; अने जेने विषे चोत्रीस अतिशय गुण विराजमान थई रह्या छे; अने जेनी काया प्रस्वेदरहित निर्मल रहेछे; जेम पवननी ल्हेर विना समुद्र अचलरूप थई रहेछे, तेम जेतुं मन अचल छे; ने आसनपण अच ल छे; अहीं गतिनी अपेक्षाविना आसन अचल कह्युं छे, पण निरंतर अचल आसन संज्ञवे नही, एवा जिनराजदेव जगत्मां जयवंत थाउ. जेनी रूडी ज्ञक्ति करवाथी महामुक्ति फलनी प्राप्ति थाय छे. ॥ ७७ ॥

यथार्थ कथनः–

॥ दोहराः ॥– जिन पद नाहिं शरीरकों, जिन पद चेतन मांहि; जिन बर्नन कछुं और है, यह जिन बर्नन नांहि. ॥ ७८ ॥

अर्थः– एटली व्यवहार स्तुति करीने हवे सत्यार्थ वात कहे छेः– ए जे जिन नाम छे ते जीव विपाकी छे पण पुज्ञल विपाकी नथी, तेथी जिनपद ते शरीरनुं नथी, जिनपद तो चेतननुं छे; तेथी जिनेश्वरनी स्तुति कोई ओरज छे पण पूर्वे जे जिनेश्वर नी स्तुति करी ते जिन स्तुति नथी. इहां शरीर जड छे अने आत्मा चेतन छे ए बने ज्ञाव ज्ञिन्न स्वज्ञावमां छे तेनुं दृष्टांत आपेछे. ॥ ७८ ॥

अथ जड चेतन ज्ञिन्नज्ञाव दृष्टांत कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– ऊंचे ऊंचे गढके कंगुरे यों विराजत हैं, मानो नज्ञ लोक लील वेकों दांत दियो है; सोहे चिहोंओर उपबनकी सघनताई, घेरा करि मानो ज्ञूमि लोक

घेरि लियो है; गहरी गंजीर खाई ताकी उपमा बनाई, नीचो करि आनन पाताल जल पियो है; ऐसो है नगर यामें नृपको न अंगकोउ, योंही चिदानंदसो शरीर जिन्न कियो है ॥ ७ए ॥

अर्थः– जेम कोई गढना उंचा उंचा कांगरा बिराजे वे (आहिं कवि उत्प्रेक्षण करे वे.) पण ते कांगरा नथी पण मानुं बुं जे आ नगरमां स्वर्गलोकने गली जवाने दांत आप्यां वे; एटले जाणे स्वर्ग लोकने गली जशे. अने एनी चारे तरफ उपवन एटले बाग वाडीनी सघनता एवी शोजी रही वे के जाणे जूमिलोक एटले मनुष्य लोक तेणे घेरी लीधो वे. अने ए नगरनी चारे बाजुए उंमी खाईबनी ते जाणे नीचुं आनन एटले मुख करीने पातालज पाणी पातो होयनी ए रीते जेणे त्रणे लोक जीत्या वे एवुं नगरनुं वर्णन कीधुं पण ए नगरमां कोइराजाना अंगनुं कांइ वर्णन कीधुं नथी मतलब के चिदानंद थकी शरीरने जिन्न करी बताव्युं. ॥ ७ए ॥

अथ तीर्थंकरकी निहचै स्तुति सरूप कथन वस्तु वर्णनं.

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जामें लोकालोकके सुजाउ प्रतिजासे सब, जगी ज्ञान सगति विमल जैसी आरसी; दर्शन उदोत लियो अंतराय अंतकीउं, गयो महामोह जयो परम महारसी; संन्यासी सहज जोगी जोगसौं उदासी जामें, प्रकृति पंचाशी लगि रहि जरि वारसी; सोहै घटमंदिरमें चेतन प्रगटरूप, ऐसो जिन राजतांहि वंदत बनारशी ॥ ०० ॥

अर्थः– हवे तीर्थंकरपदने लेइ रहेली जे वस्तु वे तेमा स्वरूपनुं वर्णन करे वेः– जेमां लोक अने अलोकनो स्वजाव एटले खट् द्रव्य जाव प्रतिजासी रहे, एवी ज्ञान शक्ति निर्मल प्रगटी वे. जेम आरीसामां पदार्थना जाव जासेवे, एवी रीते जेना ज्ञानमां सर्व जाव जासेवे, एटले ज्ञानावरण गयुं, अने दर्शनावरणना नाश थवाथी केवल दर्शन, उद्योत थयो. अने अंतराय नाश कर्यो, तेथी अनंतवीर्य धैर्यवंत थयो; अने महा मोह कर्म जे वे ते नाश पाम्युं; तेथी परम उत्कृष्ट महर्षि थयो, तेणे करी यथाख्यात चारित्रनो संन्यास एटले तेनो धारण करनार ज्ञान दर्शनचारित्र आदि जे सहजयोग वे तेनो धरनार, मन वचन कायना योगथी उदास थइने अघातिक चार कर्मनी पंच्यासी प्रकृति सत्ताये रहि वे, ते पण बलीने खाख जेवी थइ रही वे; अने जेना घटमंदिरमां चेतन देव वे ते प्रगटपणे साक्षी रह्यो वे. एवा श्री जिन राज देव तेने वणारसीदास वंदन करेवे. ए निश्चय स्तुति कही ॥ ०० ॥

हवे एवा शुद्ध चेतननी स्तुतिनुं दृष्टांत देखाडीने निश्चय व्यवहारनो निर्णय करे वे. अथ श्री निश्चय व्यवहार तीर्थंकर स्तुति कथनः–

॥ कवित्त छंदः॥– तनु चेतन विवहार एकसें, निहचे भिन्न भिन्न है दोइ; तनु स्तुती विवहार जीव थुति, नियत दृष्टि मिथ्या थुति सोइ; जिन सो जीव जीव सो जिनवर, तनु जिन एक न मानै कोइ; ता कारन तनकी अस्तुतिसों, जिनवर कीअ स्तुति नहि होइ. ॥ ८१ ॥

अर्थः– शरीर अने आत्मा ए बने व्यवहारमां एक सरखा छे; अने निश्चयथी जोइये तो बनें जुदा जुदा छे. एमाटे तननी स्तुति करतां जीवनी स्तुति करिये ए व्यवहार छे. अने निश्चय दृष्टिथी जोतां ते मिथ्या स्तुतिछे. जिनपद कर्म जे छे ते जीव विपाकी छे, पण पुद्गल विपाकी नथी, तेथी जिन ते जीव छे, अने जीव ते जिन छे; पण शरीर अने जिन एक करी न मानीए; ते कारणे तननी स्तुति करी ते जिनवरनी स्तुति थई नही. ॥ ८१ ॥

अथ वस्तु स्वरूप कथन दृष्टांत करी दिखाइयतु हैः–

॥ सवैया तेईसाः॥ – ज्यों चिरकाल गडी वसुधा महि, भूरि महानिधि अंतर गूझी; कोउ उखारि धरै महि ऊपरि, जो दृगवंत तिन्है सब सूझी; त्यों यह आतमकी अनुभूति पगी जड भाव अनादि अरूझी; नैजुगतागम साधि कही गुरु, लछन वेदि विचछन बूझी. ॥ ८२ ॥

अर्थः–शिष्य पुछेछे के एवो अनुपम महीमानो धारक जीव आ शरीरमां केम पामिये? त्यारे गुरु दृष्टांत आपी न्यारी अद्भुत स्वरूप वस्तु आ शरीरमां दृढावे छेः–जेम कोई महानिधि घणा काल सूधी धरतीनी अंदर दटाई रही होय, ते अंतर गुप्त थई रहेली लक्ष्मीने कोई खोदी काढी जमीन उपर मूके त्यारे जे नेत्रवंत पुरुष छे तेने बधी देखाई आवेछे. तेम आ आत्मानो अनुभव अनादि कालथी जड एटले पुद्गल द्रव्यमां दटाई रह्यो छे, तेने नयसहित आगम जे सिद्धांत तेणेकरी गुरुए साध्य एटले साधने करी सिद्ध करी दीधाथी विचक्षण पुरुष तेने सारी पठे जाणी लियेछे. ॥ ८२ ॥

हवे तेनो भेद ज्ञान पाम्याथी उपादेय वस्तुनुं उपादान करवाथी आवे ते उपर धोबीनुं दृष्टांत बतावे छेः–अथ भेदज्ञान स्वरूप कथन धोबीको दृष्टांतः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसै कोउ जन गयो धोबीके सदन तिन्ह, पहिर्यो परायो वस्त्र मेरो मानि रह्यो है; धनी देखि कह्यो भैया यहु तो हमारो वस्त्र, चीन्ह्यो पहिचानतहीं त्याग भाव लह्यो है; तैसैही अनादि पुदगलसों संयोगी जीव, संगके ममत्वसों विभावतामें वह्यो है; भेद ज्ञान भयो जब आपो पर जान्यो तब, न्यारो परभावसों स्वभाव निज गह्यो है. ॥ ८३ ॥

अर्थः– जेम कोई मनुष्य धोबीने घेर गयो अने पारकुं वस्त्र पोतानुं मानी भूलमां

लईने पेहेर्खुं, एटलामां ते वस्त्रनो खरो मालक मळ्यो, तेणे जोईने कह्युं के, भाई, आ वस्त्र जे तें पेहेर्खुं छे, ते मह्हारुं छे. ते वखते पेला मनुष्ये ते वस्त्र जोयुंने पराधुंज छे एवुं जाएयुं, तेवारे ते वस्त्रनो त्याग भाव उपज्यो, ने तेणे ते वस्त्र तेना धणीने हवाले कीधुं. तेमज जीवने अनादि कालथी पुद्गलनो संयोग थयो छे, एटले शरीर तथा कर्मनो संयोगी जीव अनादि काळनो छे, ते संगना ममत्वथी विभावता एटले उलटा भावमां वही रह्यो हतो ते ज्यारे जड चेतननी भिन्नतानुं ज्ञान थयु त्यारे ते पोताना स्वरूपने तथा परना स्वरूपने समज्यो; अने ते पर रूपथी जुदो थयो ने पोताना स्वरूपनुं ग्रहण कीधुं. ॥ ७३ ॥

ज्यारे निश्चय पोतानुं स्वरूप जाण्युं त्यारे ज्ञाता एवो विचार करवा लागे ते कहेछेः—

अथ निश्चय स्वरूप कथनः—

॥ अडिल्ल छंदः॥— कहै विचछन पुरुष सदा हौं एकहौं, अपने रससौं भर्यो आपनी टेकहौं; मोह कर्म मम नांहि नांहि भ्रम कूप है; शुद्ध चेतना सिंधु हमारो रूप है. ॥ ७४ ॥

अर्थः— विचक्षण पुरुष केहेछे के, हुं सदा एक पणे रहुं छुं; चेतना रस वडे भरपूर छुं, अने पोताना आधारथी रहुं छुं, मने बीजानो आश्रय नथी, अने जे भात भातनो मोह कर्मनो प्रपंच छे ते मह्हारुं स्वरूप नथी, ए भ्रम रूप कूप छे ते मारुं स्वरूप नथी; पण शुद्ध चेतनानो सिंधु के० समुद्र ते मारुं रूप छे. ॥ ७४ ॥

हवे एवा पोताना स्वरूपने जाण्याथकी केवी अवस्था प्राप्त थई ते केहेछेः—

अथ ज्ञान व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— तत्त्वकी प्रतीतिसौं लख्यो है निज पर गुन, दग ज्ञान चरन त्रिविध परिनयो है; विसद विवेक आयो आछो विसराम पायो, आपुहीमें आपनो सहारो सोधि लयो है; कहत बनारसी गहत पुरुषारथकों; सहज सुभाउ सौं विभाउ मिटि गयो है; पन्नाके पकाय जैसै कंचन विमल होतु, तैसै शुद्ध चेतन प्रकाश रूप भयो है. ॥ ७५ ॥

अर्थः— एवी जीव तत्त्वनी प्रतीति थइ तेणे करीने ज्ञानादिक निजगुण अने परगुण ते बीजा द्रव्यना गुण जे गति, स्थिति, अवगाह, वर्त्तना, वर्णादिक ए सर्व लखीने दर्शन, ज्ञान अने चारित्र ए त्रणे गुणनेविषे परिणमी रह्यो छे; निर्मल विवेक आव्याथी सारो विश्राम पाम्यो ते स्थिरता पामीने पोतानो विषेज पोतानो सहज स्वभाव शोधी लीधो. अहीं बणारसीदास केहेछे के त्यारे आ पुरुषार्थ ते आत्मस्वरूप अर्थ तेनुं ग्रहण करीने सहज स्वभावमां राग द्वेष मोहरूपी विभाव जे अनादिकाळनो हतो

ते मटी गयो. अहीं दृष्टांत कहेछे:— जेम पाकी इंटनी भठीमां गाळवाथी सुवर्ण निर्मळ थायछे, तेम शुद्ध चेतन निर्मळरूप थईने प्रकाश रूप थयोछे. ॥ ७५ ॥

हवे विभाव छूटवाथी निज स्वरूप प्रगटताने पामे तेउपर नटी जे नाचनारी स्त्री, तेनुं दृष्टांत कही देखाडे छे:— अथ वस्तु स्वरूप कथन पातरको दृष्टांतः—

॥सवैया इकतीसा॥— जैसै कोउ पातर बनाय वस्त्र आभरण, आवति अखारे निशि आडो पट करिके; दुहू ओर दीवटि संवारि पट दूरि कीजे, सकल सभाके लोक देखै दृष्टि धरिके; तैसै ज्ञान सागर मिथ्यात ग्रंथि भेद करि, उमग्यो प्रगट रह्यो तिहुं लोक भरिके; ऐसो उपदेस सुनि चाहिये जगत जीव, सुद्धता संभारे जग जालसों निकरिके. ॥ ७६ ॥

अर्थः— जेम कोई नाचनारी स्त्री आमो पट करीने तथा वस्त्राभूषणवडे पोतानो वेष मनोहर बनावीने रातना वखते अखाडामां आवी ऊभी रहे, ते आडा पटथी रात्रीनेविषे देखाय नही, ने ज्यारे अंतरपट दूर करी बेहु तरफ हाथमां काकडा सळगावी परिछद दूर करे त्यारे सर्व सभाना लोक दृष्टि धरीने तेनां रूप शणगार वगेरेनी शोभा प्रगट जोई रीझे छे, तेम ज्ञाननो सागर एवो जे आत्मा, ते मिथ्यात्व रूप आडा पटथी प्रछन्न रह्यो हतो, ते कोई समे मिथ्यात्व ग्रंथी रूप पटने भेदीने प्रगट थयो; ते ज्ञान समुद्र त्रण लोके भरी रह्यो छे; एटले त्रणे लोक ए आत्माने विषे भासी रह्या छे. हवे गुरु कहेछे के अहो ! जगत्वासी जीव, में जे पूर्वे उपदेश दीधो एवा उपदेशनुं श्रवण करवुं तारे जरूरनुं छे; ते सांभळी जगत् जाळ मांथी निकळीने तारी शुद्ध दशाने संभारी लेईश. ॥ ७६ ॥

॥इति श्रीसमयसारनाटिकना प्रथम जीव द्वारनुं निरूपण बाळबोध सहित समाप्त थयुं.॥

---

॥दोहरो॥—जीव तत्व अधिकार यह, कह्यो प्रगट समुझाइ; अब अधिकार अजीवको, सुनो चतुर मन लाइ. ॥ ७७ ॥

अर्थः— जीवतत्वनुं जेवुं स्वरूप छे तेनो ए अधिकार एटले स्वरूप, लक्षण, गुण, प्रगट समजाव्यां. हवे बीजो जे अजीवद्वारछे, तेमां अजीवनो अधिकार मुख्यपणे करीने कहुंछुं; ते चतुर लोको चित्त दईने सांभळजो. ॥ ७७ ॥

हवे अजीवने पण ज्ञानवडेज जाणवानुं बनेछे अने आ ग्रंथमां अभिधेय ज्ञानछे माटे संपूर्ण ज्ञाननी अवस्था निरूपण करेछे:—अथ ज्ञानकी व्यवस्था कथनः—

॥सवैया इकतीसा॥—परम प्रतीति उपजाइ गनधरकीसी, अंतर अनादिकी विभावता

बिदारी है; नेदज्ञान दृष्टिसों बिवेककी सकति साधि, चेतन अचेतनकी दशा निरवारी है; करमकी नासकरी अनुजौ अन्यास धारी, हियेमें हरख निज शुद्धता संजारी है; अंतराय नास गयो शुद्ध परकास नयो, ज्ञानको विलास ताकों बंदना हमारी है. ॥७७॥

अर्थः– प्रथमथी जे ज्ञानवडे नव्य लोकना आत्मामां गणधरनी माफक तत्त्वनी परम प्रतीति उपजावी, अने समकालपणे अंतरात्मानेविषे अंतरनी जे अनादिनी विजावता (मूढता) तेने विडारीछे; अने जड चेतन ए बने जिन्न छे एवुं नेदज्ञान प्रगट्युं तेनी दृष्टि तेज विवेकनी शक्ति ते साधि एटले जुदा जुदा गुण पर्याय जाण्या, अने जुदा जुदा जाणीने चेतन तथा जड तेनी दशा ठीक कीधी, ते पछी गुण श्रेणिने धरीने क्षणेक्षणे कर्मनी निर्जरा करवा लाग्यो, ते करी अनुजव अन्यास कीधो, एटले सत्य प्रत्ययमां पेठो, अने हृश्यानेविषे हर्ष पाम्यो अने पोतानी शक्ति उत्कृष्ट कीधी. ए कार्य थतां अंतराय कर्म जांग्युं, अने केवल रूप प्रकाश पाम्युं, एवो कोई क्रमे क्रमे करी ज्ञाननो विलास उत्पन्न थयो, तेने अमारी वंदनाछे. ॥ ७७ ॥

शिष्य पूछे छे के, स्वामी! तमे जे ज्ञान विलास कह्यो, तेतो तेवोज छे, पण ते पामवुं डुर्लज छे. ते उपर गुरु परमार्थनी शिक्षा दिये छेः–अथ परमार्थ शिक्षा कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैया जगबासी तूं उदासी व्हैके जगत्सों, एक छ महीना उपदेस मेरो मानु रे; और संकलप विकलपके बिकार तजि, बैठके एकंत मन एक ठेर आनु रे; तेरो घट सर तामें तुंही है कमल ताकों, तूंही मधुकर है सुवास पहचानु रे; प्रापति न व्हे है कछु ऐसो तूं बिचारतु है, सही व्हे है प्रापतिसरूपयाही जानुरे ॥७७॥

अर्थः– अरे जीव जगत्वासी नाई तुं जगत् के० नव भ्रमणा तेनु कारण ( शब्द, स्पर्श, रूप, रसने, गंध, ) एने आचारांग सूत्रना वचनथी जगत् कहियें, तेथी उदास थईने, एक छ महिना सूधी अखंड धाराए मारो उपदेश शांजल एटले मान्य कर. एमां छ महीना कह्या ते उपलक्षणथी जाणवा, पण नियम नथी, अने आर्त्तरौद्रध्यानथी अज्ञान दशामां संकल्प विकल्प घणा ऊठे, तेथी आत्मानेविषे विकार उपजे छे, माटे तेना विकारने तजीदे अने एकांत आसने बेसी मनने एक ठेकाणे परिणामथी राख; तारो घट के० शरीर तेनेज सरोवर जेवो देख; अने तेमां एक उज्वल कमल जोईयें, ते कमल तुंज छे; अने तुंज उज्वल रूपने लीधे मधुकर रूपे था; एम करवाथी तुं सहस्र दल कमलमां विलास कर; ए पिंडस्थ ध्यान लगाव्युं एटलुं कार्य करवाथी पोताना स्वरूपनी प्राप्ति न थशे एवुं तुं क्यारे पण विचारीश नही. एवा प्राणायामवडे कमल कोष खुलशेने पोताना रूपनी प्राप्ति थशे; एज रीते ज्ञानगुण खुलशे॥७७॥

हवे जीवने अजीव एक सरखा थई रह्याछे, ते जुदा जुदा लक्षणवडे देखाडेछे.

अथ वस्तु व्यवस्था वर्णनंः—

॥दोहराः॥— चेतनवंत अनंत गुण, सहित सु आतमराम, याते अनमिल और सब, पुद्गलके परिणाम ॥ ९० ॥

अर्थः— चेतनावंत छे अने अनंत गुणसहित जे पदार्थ छे ते तो आत्माराम जाणवो; अने जे एटलां लक्षणोथी मळेला नथी ते सर्व अपर पुद्गलना परिणाम जाणवा. ॥ ९० ॥

हवे एवी पिछान अनुभवविना न होय माटे अनुभवनी प्रशंसा कहेछेः—

अथ अनुभव प्रशंसाः—

॥कवित्त छंदः॥—जब चेतन सँभारि निज पौरुष, निरखै निज दृगसों निज मर्म, तब सुखरूप विमल अविनाशक, जानै जगत शिरोमनि धर्म; अनुभौ करै शुद्ध चेतनको, रमै सुभाउ वमे सब कर्म, इहि विधि सधै मुक्तिको मारग, अरु समीप आवे शिव सर्म. ॥ ९१ ॥

अर्थः—ए चेतन जे छे, ते ज्यारे पोतानुं पुरुष के० पराक्रम संभारे, ने पछी पोतानी दृष्टि करी पोतानुं मर्म जे चेतनपणुं छे ते निरखे; त्यारे पोतानो धर्म के० स्वभाव सुख रूप जे निर्मल पणुं, अविनाशी पणुं, जगत्शिरोमणीपणु, सहज स्वरूप तेने जाणे. एज अनुभव एटले जे निःसंदेह यथार्थ ज्ञान छे तेज चेतनने शुद्ध करेछे, अने एज अनुभव जे छे ते पोताना स्वभावमां रमे अने सर्व कर्मने दूर करे, एरीते अनुभव वडे मुक्ति मार्ग सिद्ध थायछे; अने शिवशर्म के० मोक्षनुं सुखते पामेछे ॥ ९१ ॥

हवे ए अनुभवथकी चेतनविषे पोतानुं अस्तित्व साधीने परनुं नास्तित्व साधेछेः—

अथ अनुभव प्रशंसाः—

॥ दोहराः॥— बरनादिक रागादि जड़, रूप हमारो नांहि; एक ब्रह्म नहि दूसरो, दीसे अनुभव मांहि. ॥ ९२ ॥

अर्थः—आ शरीरमां जे वर्ण, गंध, रस, स्पर्श राग द्वेषादिक पदार्थनेविषे मोह छे ते मारुं आत्मरूप नथी; अने अनुभवविषे पोतानुं एकज जाणपणानुं रूप अमे जोइये छइये. पण बीजुं रूप जोता नथी. ॥ ९२ ॥

हवे जीव अजीव एक क्षेत्रावगाही थया ते जुदा केम कहेवाय? ते उपर दृष्टांत कहेछेः— अथ वस्तु विचारः—

॥ दोहराः॥— खांडो कहिये कनकको, कनक म्यान संयोग; न्यारो निरखत म्यान सों, लोह कहैं सब लोग. ॥ ९३ ॥

अर्थः– जे सोनानी म्यानमां राखेली तलवार लोक जाषामां सोनेरी केहेवाय ले, ते सोनेरीनो योगतो म्यान उपर ले; ज्यारे तरवारने सोनेरी म्यानमांथी बार काढी जोइये त्यारे तरवार लोढानी जणाय, पण सोनेरी नही जणाय. तेम अंतरात्मा मांहे जाणवो. ॥ ए३ ॥

हवे व्यवहार नय वडे बाह्यात्मा अने अंतरात्मा कहेवाय ले; पण एमांज निश्चय नयथी परमात्मा ले; एवो वस्तुनो विचार कही समजावे ले. अथ निश्चय व्यवहार रूप वस्तु विचार कथनः–

॥ दोहराः॥– बरनादिक पुद्गल दशा, धरे जीव बहु रूप; वस्तु विचारत करम सों, जिन्न एक चिद्रूप. ॥ ए४ ॥

अर्थः– वर्णादिक ते वर्ण, गंध, रस, स्पर्शरूप ए पुद्गल स्वजाव ले, तेने नवी नवी रीते जीव धारण करे ले, तेथी जीव बहु रूप धारी केहेवाय ले. अने पुद्गल जे ले ते तो कर्मले पण वस्तुनो विचार करवाथी ए कर्म अजीवले; अने चिद्रूप चिदानंद ले ते तो सर्वत्र एक स्वरूप ले, ने ते ए अजीवथी जिन्न ले. ॥ ए४ ॥

हवे ए व्यवहारनो दृष्टांत बतावे लेः– अथ व्यवहार दृष्टांत कथनः–

॥ दोहराः॥– ज्यों घट कहिये घीउको, घटको रूप न घीउ; त्यो बरनादिक नाम सों, जडता लहै न जीउ ॥ एए ॥

अर्थः– व्यवहारमांमाटीनो घमो कहेवाय ले, तेम घृतनो पण घमो कहेवाय ले; पण घडानुं रूप जेवी माटी ले तेवुं घृत नथी. तेमज वर्ण, गंध, रस, स्पर्श प्रमुख नाम कर्म अजीव रूप जड ले, तेना संयोगथी जीव जमपणु पामे नही. ॥ एए ॥

हवे प्रत्यक्ष पणे निरालुं चेतननुं स्वरूप दृष्टांत देखाडी कहेलेः–

अथ चेतनको साक्षात स्वरूप कथनः–

॥ दोहराः॥– निराबाध चेतन अलख, जाने सहज सुकीउ, अचल अनादि अनंत नित, प्रगट जगतमें जीउ. ॥ ए६ ॥

अर्थः– जेनी कोई पण रीते खंमना नथी तेथी निराबाध एहवो चेतन पुरुष ले; अने वली इंद्रिय ज्ञानवडे लख्यो न जाय; तेथी अलख ले; अने स्वकीय जे पोतानो सहज स्वजाव ज्ञातापणु तेने पोतेज जाणे पण बीजा अन्य ज्ञानांतरवडे न जणाय एवा अचल स्वरूपने लीधे अनादि, अनंत, नित्य, शाश्वत, एवो जीव जगत्मां प्रत्यक्ष प्रमाण ले. ॥ ए६ ॥

हवे जीव पोतानो अनुजव पोतेज करे ले पण मिमांसक नैयायिक प्रमुख जेम बीजाथी कहे ले तेम नथी ते समजावे लेः– अथ अनुजव विधान कथनः–

॥ सवैया इकतीसा॥– रूप रसवंत मूरतीक एक पुदगल, रूप बिन उर युं अजीव दर्व दुधा है; च्यारि हैं अमूरतिक जीवभी अमूरतिक, याहितें अमूरतिक वस्तु ध्यान मुधा है; औरसों न कबहू प्रगट आपु आपहीसों, ऐसो थिर चेतन सुभाउ शुद्ध सुधा है; चेतनको अनुभौ आराधै जग तेई जीउ, जिन्हके अखंड रस चाखिवेकी क्षुधा है.॥८७॥

अर्थः– जेम रूपवंत तथा रसवंत कहेवाय छे तेम गंधवंत तथा स्पर्शवंत ए लक्षण जाणवाथी मूर्त्तिक एटले मूर्त्तिवंत ते एक पुद्गल द्रव्य जाणवुं; अने रूपादिक विना बीजा अमूर्त्तिक चार द्रव्य छे; ए रीते अजीव द्रव्यते बे प्रकारनुं छेः– हवे ए अजीव द्रव्यमां धर्म, अधर्म, आकाश, काल ए चार अमूर्त्तिक छे; अने जीव द्रव्य पण अमूर्त्तिक छे; तेथी कोइ अमूर्त्तिक वस्तुनुं ध्यान करवाथी मुक्ति छे एम कहेनारा मूर्ख छे. एथी कोई अन्य धर्मनुं आलंबन लई आत्मा द्रव्य प्रगट न थाय एवो स्थिर चेतननो स्वभाव छे, एज शुद्ध सुधा के० निर्दोष अमृत रस तेज चेतनने प्रगट करे छे, एवो जे जगत्‌ने विषे चेतना स्वभाव छे ते चेतननो अनुभव के० यथार्थ ज्ञान आराधे तेज शुद्ध जीव द्रव्यना आराधक छे. अने जे अखंड रसना क्षुधावंत छे ते एना आराधक छे. ॥ ८७ ॥

हवे कोई कहे छे के, जीव अंगुष्ट प्रमाण छे, तंदुल प्रमाण छे इत्यादि कहिने जे जीवने मूर्त्तिमान थापे छे, तेनी मूढता बतावे छे. अथ मूर्त्तिवर्णनंः–

॥ सवैया तेइसा॥– चेतन जीव अजीव अचेतन, लछन भेद उभै पद न्यारे; सम्यग् दृष्टि उद्योत विचछन, भिन्न लखै लखिके निरधारे; जे जगमांहि अनादि अखंडित, मोह महामदके मतवारे; ते जड चेतन एक कहै, तिन्हकी फिरि टेक टरै नहि टारे.॥८८॥

अर्थः– जीवनुं लक्षण चेतन छे, ने अजीवनुं लक्षण अचेतन छे; एटले जडता छे; ए लक्षण भेदथी उभय पदार्थ जुदा जुदा छे; पण जेना घटमां समकित दृष्टिनुं अजवाळुं पड्युं छे, तेज विचक्षण पुरुष ए बेहुने भिन्न भिन्न जाणे छे. अने जीव अजीव जुदा निरधार करेछे. अने जे जगत्‌नेविषे अनादि कालना अखंडित, मूर्ख, अने महामोहमदवडे मतवाला छे, ते लोक जड चेतनने एक कहे छे. अने जीवने मूर्त्तिमान मानेछे. ते मिथ्यादृष्टिने लीधे माने छे; तेमनी टेक टालवाथी टले नही एवी होयछे.॥८८॥

हवे अजीव पुद्गलमां जीवविलास जूदोज छे, पण अविवेकी पुरुष ते जाणतो नथी अने जे ज्ञानी होय ते जाणे ते कहे छेः– अथ ज्ञाता विलासः–

॥सवैया तेईसा॥– या घटमें भ्रमरूप अनादि विलास महा अविवेक अखारो; तामंहि उर सरूप न दीसत, पुग्गल नृत्य करै अति भारो; फेरत भेष दिखावत कोतुक, सो जलिये बरनादि पसारो; मोहसुँ भिन्न जुदो जडसों चिन्, मूरति नाटक देखनहारो॥८९॥

अर्थः– आ घटमां अनादि कालनो विस्तारवंत भ्रमरूप महा अविवेकनो अखाडो मंडाई रह्यो छे, ते अखाडामां बीजुं कोई शुद्ध स्वरूप तो देखातुं नथी; अने पुद्गल द्रव्य जे छे ते अत्यंत महोटुं नृत्य करी रह्योछे, एज अविवेकनी आज्ञा ते अजीव पुद्गल द्रव्य छे. तेहिज एकेंद्रियादिकना वेषमां लेवरावी फेरवी फेरवी वर्णादिकना पसारनी सामग्री लेवरावी कौतुक देखाडी रह्यो छे. हवे इहां विवेकरूप जे छे ते मो हथी जे पुद्गल जड तेथी जूदो छे. तेहिज चिन्मूर्त्ति एटले चेतन राजाछे ते तो इहां नाटिकनो देखनारो छे ॥ ९९ ॥

हवे जे जीव अने अजीवनुं एकतापणुं मिथ्या ज्ञानमां भासेछे, तेतो ज्ञान बुद्धिथी भिन्न भिन्न रूप देखाय छे, ते कहेछेः– अथ ज्ञान विलास कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे करवत एक काठ वीचि खंड करे, जैसे राजहंस निर वारे दूध जलकों; तैसे भेदज्ञान निज भेदक शकतिसेंति, भिन्न भिन्न करे चिदानंद पुदगलको; अवधिकों ध्यावे मनपर्येंकी अवस्था पावे, उमगिके आवे परमावधि केवल कों; याही भांति पूरन सरूपको उद्योत धैरे प्रतिबिंबत पदारथ सकलकों ॥ १०० ॥

अर्थः– जेम एक लाकडाने करवती वेहेरीने बे भाग करेछे, ने जेम राजहंस दुध ने पाणी एकठा होय तेने जुदा जुदा करी नाखे छे. तेम जेने भवितव्य परिपाके भेदज्ञान प्रगटे ते पोतानी भेदक शक्तिवडे चिदानंद तथा पुद्गल एकमेक होय तेने जुदा जुदा करेछे. अने तेज भेदज्ञान पोताना क्षयोपशम माफक पोतानी अवधिने ध्यावे एटले पोताना अवधि ज्ञानरूप पर्यायने पामे, पछी तेहिज भेद ज्ञानथी विशुद्ध थयेला मनपर्याय अवस्थाने पामे; अने तेथी विशुद्ध थईने परमावधि सुधी पोचे; एम वधते वधते भेदज्ञान थकी पोतानुं वर्ण स्वरूप उद्योतवंत धारण करे, एटले केवल अवस्था धारे; अने सर्व पदार्थने प्रबिंबित करे ॥ १०० ॥

॥इती श्री समयसार नाटकनो बीजो अजीवद्वार बालावबोध सहित समाप्त थयो.॥

॥ दोहराः॥– यह अजीव अधिकारको, प्रगट बखान्यो मर्म; अब सुनु जीव अजी वके, करता किरिया कर्म. ॥ १०१ ॥

अर्थः– अजीव द्वार एरीते समजावीने कह्यो; एनुं रहस्य ए छे के अजीव पदार्थ जाणीने तेथकी जीव पदार्थ जुदो जाणवो; तेनुं वर्णन कर्युं छे. हवे जीवनेविषे कर्त्ता कर्मक्रियानो विचार अने अजीवनेविषे पण कर्त्ताकर्मक्रियानो विचार गुरु कहेछे ने शिष्य सांभलेछे ॥ १०१ ॥

हवे कर्त्तापणामां जीवनी मिथ्या दृष्टि छे ते भेदज्ञानथी छुटे, माटे भेदज्ञाननुं म हात्म्य कहेछेः– अथ भेद ज्ञान महात्म्य वर्ननः–

॥ सवैया इकतीसा॥- प्रथम अज्ञानी जीव कहे में सदीव एक, दुसरो न और मेंही करता करमको; अंतर विवेक आयो आपापर भेद पायो, भयो बोध गयो मिटी भारत भरमको; भासे छहों दरवके गुण परजाय सब, नासे दुःख लख्यो सुख पूरन परमको; करमको करतार मान्यो पुद्गल पिंड, आपुं करतार भयो आतम धरमको. ॥ २ ॥ जाहि समे जीव देहबुद्धिको विकार तजे, वेदत सरूप निज भेदत भरमको; महा परचंड मति मंडन अखंड रस, अनुभौ अभ्यास परकासत परमको; ताही समे घटमें न रहे विपरीत भाव, जैसे तम नासे भानु प्रगट धरमको, ऐसी दशा आवे जब साधक कहावे तब, करता व्है कैसे पुद्गल करमको. ॥ ३ ॥

अर्थः- प्रथमथी अज्ञानी जीव जे छे, ते पोताना रूपनी भूलवडे एमज कहेछे के निरंतर कर्मनो कर्त्ता हुंज छुं, बीजो कोई नथी. एरीते जीवनी अपेक्षा लईने कर्मनो कर्त्ता बनेछे. पछी ज्यारे घटमां विवेक प्राप्त थाय, त्यारे निजरूपनो भेद समज्यो एटले बोध थयो, अने भ्रम के० मिथ्यात्वनो खेल मटी गयो; ने भ्रम नाश थता छए द्रव्यना गुण पर्याय आत्मानेविषे भासवा लाग्या, क्षण क्षण अवस्था भेद ते पर्याय कहीए. अने पूर्णपुरुष जे छे तेनुं सुख दीठुं, तेणे करीने कर्मनो कर्त्ता पुद्गलपिंड मान्यो. अने पोते अकर्त्ता थयो अने आत्मिक धर्म जे ज्ञायकता, वेदकता, तथा चेतनता इत्यादिक स्वभावनो हुं पोते कर्त्ता छुं एम मान्युं, एटले मर्मनो अकर्त्ता अने पोताना स्वभावनो कर्त्ता एम केहेवा लाग्यो. ॥ २ ॥

जे प्रस्तावे जीव छे, ते श्रेणिनुं आरोहण करे, अप्रमत्तता पामे, देहबुद्धिनो विकार तजे, एटले वाह्यात्माने पोतापणे जाणवो ए विकार छांडे, ने पोतानुं स्वरूप शुद्धंज वेदे, अने भ्रमनो भेद करे, घणी तीक्ष्णबुद्धिनी शोभानो करनार, अने जेनो रस अखंड छे, पूर्ण रसस्वाद छे, एवो जे शुद्धात्मानो अनुभव छे तेनो अभ्यास करी अंते परमात्मानो प्रकाश करे तेज प्रस्तावे घटपिंडमां विपरीत भाव रहे नही, एटले अहंबुद्धि वडे जे अकर्त्ताने कर्मनो कर्त्ता करी मान्यो; ए विपरीत भाव हतो ते रहे नही. ते उपर दृष्टांत कहेछेः-जेम भानुधर्म के० सूर्यना तीक्ष्ण तेजना प्रकाशवाथी तम जे अंधकार ते सर्व नाश पामेछे; तेम एवी अप्रमत्त दशा ज्यारे प्राप्त थाय, त्यारे ते आत्मस्वभावनो साधक थयो; ते वखत कर्मनो कर्त्ता केम थाय! अने पुद्गलरूपी कर्मने केवी रीते करे! एनो अहीं उपयोग नथी. ॥ ३ ॥

हवे अहीं प्रथम आत्माने कर्मनो कर्त्ता मानीने पछी तेने अकर्त्ता मानवो ते ज्ञानना सामर्थ्य वडे बनेछे ते कहेछेः-अथ ज्ञानसामर्थ्यवर्णनंः-

॥सवैया इकतीसा॥- जगमें अनादिको अज्ञानी कहे मेरो कर्म, कर्त्ता में याको

किरियाको प्रतिपखी है; अंतर सुमति भासी जोगसों भयो उदासी, ममता मिटाय परजाय बुद्धि नाखी है; निरजै सुभाउ लीनो अनुभौके रस भीनो, कीनो व्यवहार दृष्टि निहचैमें राखी है; भरमकी दोरी तोरी धरमको भयो धोरी, परमसों प्रीति जोरी करमको साखी है ॥ ४ ॥

अर्थः– संसारनेविषे जीव अनादिकालथी अज्ञानीज छे, ते कहेछे के शुभ अने अशुभ कर्मनो कर्त्ता हुंज हुं क्रियानो प्रतिपक्षी के० कर्मनी क्रियानो पक्षराखनारो हुं, पछी ज्यारे अंतरमां सुमतिनो भास थयो, अने मन वचन तथा कायाना योगथी उदास थयो, एटले ए योगने पररूप समज्यो, तथा ए योगनी ममता मटी गई, अने परजाय बुद्धि के० मन वचन अने कायाना योगनी जे बुद्धि ते नाखी दीधी; अने द्रव्यबुद्धि राखीने आत्मानो जे निर्जय स्वभाव छे, तेनुं ग्रहण कीधुं अने ए स्वभावनो जे अनुभव रस तेमां भीनो के० मग्न थई रह्यो, अने सर्व व्यवहारमां प्रवृत्ति करी रह्योछे, पण दृष्टिमां श्रद्धा तो निश्चयमां राखी छे, एम करतां भरमनी दोरी तोडी नाखी, एवुं छद्मस्थपणुं मूकी दीधुं, अने आत्मिक धर्म जे पोतानो स्वभाव तेनो धोरी के० धरनारो थयो; परम साथे प्रीति जोडी, एटले सिद्धपदमां प्रीति राखीने मर्मनो साखी थयो; एटले पुद्गलकर्मने करे तेनो साक्षी थयो छे. ॥ ४ ॥

शिष्य पूछेछे के, चेतन तथा अचेतन एकक्षेत्रमां रहेछे, अने कर्म करेछे, त्यां चेतनने कर्मनो अकर्त्ता केम मनाय ? गुरु कहेछे के, ज्ञानशक्तिवडे अकर्त्ता मनाय. ते कहेछे.– अथ भेदज्ञानको सामर्थपनो कथनः–

॥सवैया इकतीसा॥– जैसो जो दरव ताके तैसे गुन परजाय, ताहुसों मिलत पें मिले न काहु आनसों; जीव वस्तु चेतन करम जड जाति भेद, अमिल मिलाप ज्यों नितंब जुरे कानसों; एसो सुविवेक जाके हिरदे प्रगट भयो, ताको भ्रम गयो ज्यों तिमिर भग्यो भानसों; सोइ जीव करमको करतासो दीसे पें अकरता कह्योहै शुद्धताके परवानसों. ॥ ५ ॥

अर्थः– जे जेवुं द्रव्य होय तेना तेवा गुणपर्याय होय छे, ते तेज द्रव्यसाथे मळेछे, पण बीजा द्रव्यसाथे मळता नथी; जेम कोई स्निग्धगुणवडे घृतादिक द्रव्य पोताना पर्यायथी स्निग्ध गुणवाळा द्रव्यसाथे मळे, पण रुक्ष गुणवाळासाथे मळे नही; तेम ए जीव वस्तु चेतनजाति छे, अने कर्म जे छे ते जडजाति छे, एवो जातिभेद छे. तेथी चेतन तथा जडने अमिलनता छे, पण कांई युक्ति मिलाप नथी. जेम केडना भागनी नीचे पश्चिम प्रदेश नितंब छे, ते उपर रहेला कानसाथे केम मळे ? एवो गुणपर्यायनो विवेक जेना हैयामां प्रगट थयोछे, तेना हैयामां पूर्वनो उपजेलो भ्रम

नाश पाम्यो, ते उपर दृष्टांत कहेछे के, जेम सूर्यनो उदय थवाथी अंधकार नासेछे, तेम नाश पामेछे; एवा विवेकवालो जीव जे छे ते कर्मनो कर्त्ता तो देखायछे पण शुद्धता जे पोतपोताना द्रव्यनी गुण परिणति तेना प्रमाणथी जीवने कर्मनो अकर्त्ताज कह्यो. ॥५॥

हवे जीव अने पुद्गलना लक्षणना भेद देखाडीने एज वात दृढ करेछेः–

अथ जीवपुद्गललक्षणभेदकथनः–

॥छप्पय छंदः॥– जीव ज्ञानगुनसहित, आपगुण परगुन ज्ञायक; आपा परगुन लखै, नांहि पुद्गल इहि लायक; जीवरूप चिद्रूप, सहज पुदगल अचेत जरु; जीव अमूरति मूरतीक पुदगल अंतर वरु; जबलग न होइ अनुभौ प्रगट, तबलगु मिथ्यामति लसै; करतार जीव जड करमको, सुबुधि विकाशक भ्रम नसै ॥ ६ ॥

अर्थः– जीवजे छे ते ज्ञानगुणसहित छे, अने जेम पोताना गुणनो ग्राहक छे ते मज पारका गुणनो पण ग्राहक छे. अने एज गुणना भेदे करीने पोताने तथा परने लखै के० जुएछे; एवी कला शक्ति लायक पुद्गल क्यारे पण बनी शके नही. जीवनुं स्वरूप चिद्रूप के० चेतनारूप छे, अने पुद्गलतो सेहेज भावे अचेतना रूप छे; एटले जरु छे. वली जीव अमूर्त्ति छे अने पुद्गल मूर्त्ति छे, ए मोटुं अंतर ए बंने वच्चेछे. ज्यां सुधी शुद्धचेतननो अनुभव प्रगट न थाय. त्यांसुधी मिथ्यामति लसै के० दीप्ति वंत होयछे अने जडस्वरूपी कर्मनो कर्त्ता जीव छे, ते भ्रमबुद्धि छे; पण ए अनादि कालनो भ्रम ते सुबुद्धिना विकाश थवाथी नाश पामेछे. ॥ ६ ॥

हवे कर्त्ता, कर्म अने क्रिया ए त्रणे स्वरूप कहेछेः–अथ कर्त्ताकर्मक्रियास्वरूपकथनः–

॥दोहराः॥– करता परिनामी दरब, करमरूप परिनाम; किरिया परजैकी फिरनि, वस्तु एक त्रय नाम. ॥ ७ ॥

अर्थः–रूपांतरने भजे ते परिणामी कहेवाय, एवुं जे द्रव्य, ते कर्त्ता कहिये; रूपांतर थवुं तें परिणाम, ऐने कर्मनुं स्वरूप कहियें; अने पर्यायनुं क्रमे क्रमे फरवुं तेने क्रिया कहिये. ए रीते कर्त्ता, कर्मने, क्रिया एवां त्रण नाम छे पण वस्तु तो एकज छे. ॥७॥

हवे कर्त्ता, कर्म, ने क्रिया ते केहेवामां नाम भिन्न भिन्न छे पण वस्तु एकज छे ते कहेछेः–अथ कर्त्ताकर्मक्रियैकत्वकथनः–

॥दोहराः॥–कर्त्ता कर्म क्रिया करै, क्रिया कर्म करतार; नाउ भेद बहु विधि भयो, वस्तु एक निरधार ॥ ८ ॥

अर्थः–कर्त्ता त्यारे कहेवाय के ज्यारे क्रिया करे, अने क्रिया त्यारे कहेवाय के ज्यारे कर्म करे, एम नाम भेद भातभातनो पड्यो पण करवाथी कर्त्ता, करवाथी कर्म ने करवाथी क्रिया ए त्रणे एकज वस्तु छे. ॥ ८ ॥

हवे एक कर्म क्रियानो कर्त्ता एकज होयछे, ते स्थापन करेछेः--अथ कर्त्ता कर्मक्रियाप्रतिस्थापनाः--

॥दोहा॥-- एक कर्म कर्त्तव्यता, करै न कर्त्ता दोय; दुधां दरव सत्ता सु तो, एक भाव क्यों होय. ॥ ए ॥

अर्थः-- ए वात तो खुल्ली छे के, एक कर्मनी कर्त्तव्यता के० क्रिया ते एकज होयछे. अने तेनो कर्त्ता पण एकज होयछे, पण बे कर्त्ता एकज क्रियाना करनार नहोय. अहीं चेतन द्रव्यसत्ता अने पुद्गलद्रव्यसत्ता ते तो दुधा के० बे प्रकारे जुदी जुदी छे, ते माटे एक भाव एक कर्म केम बने ? ॥ ए ॥

हवे कर्त्ता कर्म ने क्रियानो विचार कहेछे. अथ कर्त्ताकर्मक्रियाविवरणंः--

॥सवैया इकतीसा॥-- एक परिनामके न करता दरव दोय, दोय परिनाम एक दर्व न धरतु है; एक करतूति दोइ दर्व कवहों न करै, दोई करतूति एक दर्व न करतु है; जीव पुदगल एक खेत अवगाही दोई, अपने अपने रूप कोउ न टरतु है, जड परिनामनिको करता है पुदगल, चिदानंद चेतन सुभाउ आचरतु है ॥ १० ॥

अर्थः--एक परिणामना बे द्रव्य कर्त्ता न होय, अने एक द्रव्य जे छे ते बे परिणाम धारण करे नही; ए रीते बे द्रव्य मलीने एक करतूती के० क्रिया क्यारे पण नज करे. तेमज एक द्रव्य बे क्रिया पण नहीज करे; ए व्यवस्था बुद्धि कहेवा लायक कहेछे के, जीव अने पुद्गल एकमेक थई रह्यां छे; तेथी ए बंने एक क्षेत्रावगाही थयां पण पोत पोताना स्वभावथी कोई टले नही; तेथी पुद्गल जे छे ते जड छे; ते जडपरिणामनोज कर्त्ता थाय; अने चिदानंद चेतन छे ते चेतन स्वभावने आचरे ॥ १० ॥

हवे सम्यक्त्वअवस्थामां कर्मनो अकर्त्ता अने मिथ्यात्वअवस्थानेविषे कर्मनो कर्त्ता छे एम कहेछेः--अथ सम्यक्त्वमिथ्यात्वकथनंः--

॥सवैया इकतीसा॥-- महा धीठ दुःखको वसीठ पर दर्वरूप, अंध कूप काहुपै निवार्यो नहि गयो है; ऐसो मिथ्याभाव लग्यो; जीवकों अनादिहीको, याही अहंबुद्धि लिये नाना भांति भयो है; काहू समै काहूको मिथ्यात अंधकार भेद, ममता उछेदि शुद्ध भाउ परिनयो है; तिनही विवेक धारि बंधको विलास डारि, आतम सकतिसों जगत जीति लयो है. ॥ ११ ॥

अर्थः-- महाधृष्ट अने दुःखनो पद्धु आत्मद्रव्य ते परद्रव्य के० पुद्गलद्रव्य जेनुं रूप छे, पिंड छे, अने जेमां सत्य दृष्टि पोंची शकती नथी, तेमाटे अंधकूप समान छे; अने कोईथी निवारण नथी थतो, एवो मिथ्याभाव जे मिथ्यात्व मोह कर्म ते जीवने अनादि काल थकी लागेलुं छे, एथी परद्रव्य तरफ जीवनी अहंबुद्धि लागी, तेथी जीव

नाना प्रकारनो थयो. अने कोई समये यथाप्रवृत्तिकरण कोई ज्व्यजीवनो मिथ्यात्व अंधकार ज्ेदायो, ते मिथ्यात्वग्रंथि ज्ेदीने अने सर्व कार्यनेविषे जे अहंबुंद्धिवडे रहे ली ममता हती, तेने ठेदीने शुद्ध चिदानंद ज्ञावमांज परिणमी रह्यो, ते समये ते ज्व्यजीव ज्ेद विज्ञान के० जड चेतननो विवेक धारण करीने अविरति, कषाय, योग तथा प्रमाद ए जे बंधनाहेतु हता, तेनो विलास ठोडीने आत्मशक्तिवडे एटले पोता ना वीर्यबलवडे जगत्ने जीति लीयेठे; जगत्थी निरालो थाय ठे. ॥ ११॥

हवे जेम कर्मनो कर्त्ता आत्मा नथी तेम ए कर्म आत्माना करेलां नथी; अने कर्त्ताने कर्म एक रूपज ठे ते कहेठेः—अथ यथा कर्म तथा कर्त्ता एकरूपकथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— शुद्धज्ञाव चेतन अशुद्धज्ञाव चेतन, डुहूंको करतार जीव ओर नही मानीये; कर्मपिंडको विलास बर्न रस गंध फास, करता डुहुंको पुदगलपर मानिये; ताते बरनादि गुन ज्ञानावरनादि कर्म, नाना परकार पुजलरूप जानिये; स मल विमल परिनाम जे जे चेतनके, ते ते सब अलख पुरुष यों बखानिये. ॥ १२ ॥

अर्थः— चेतनाज्ञेविषे शुद्ध ज्ञाव तथा अशुद्ध ज्ञाव जे जाणवामां आवेठे, ते तो परिणामरूप कर्म ठे; तेथी ते बनेनो कर्त्ता जीवज ठे, बीजो कोई कर्त्ता मानवो नही. अने ज्ञानने ढांकवुं, दर्शनने ढांकवुं, इत्यादि कर्म पिंमनो विलास ठे;अने वर्ण,गंध,रस,स्पर्श, इत्यादि जे कार्य अने कर्म ठे,ए बनेनो कर्त्ता पुद्गलद्रव्यनेज प्रमाण राखियें;तेणे करी ने वर्णादि के० वर्ण, रस,गंध, स्पर्श गुण ठे ते अने ज्ञानावरण, दर्शनावरण प्रमुख जे कर्म ठे ते सर्व नाना प्रकारना पुजलरूप जाणवां;जेम कह्युं ठे के,"जोगापयडिपयेसा," के० जोगवडे प्रकृतिप्रदेशबंध थाय, ने तेनेविषे चेतनना समलपरिणाम के० अशुद्ध परिणाम अने विमलपरिणाम के० शुद्ध परिणाम ए जे कर्मरूपक ठे ते ते सर्व अल क्ष पुरुषरूप ठे, माटे कर्त्ता कर्मने एकज वखाणीए. ॥ १२ ॥

हवे ए वातना रहस्यने मिथ्यादृष्टि जाणे नही, तेना उपर हस्तिनो दृष्टांतः—

अथ मिथ्यादृष्टि बर्ननं हस्तिको दृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसै गजराज नाज घासके गरास करि, ज्ञक्षत सुज्ञाय नहि ज्ञिन्न रस लियो है; जैसै मतवारी नहि जानै सिखरनि स्वाद, जुगमें मगन कहै गऊ दूध पियो है; तैसै मिथ्यामति जीव ज्ञान रूपी है सदीव, पग्यो पाप पुन्य सों सहज सुन्न हियो है; चेतन अचेतन डुहुकों मिश्र पिंड लखि, एकमेक मानैन विवेक कछु कियो है. ॥ १३ ॥

अर्थः— जेम हाथीने अनाज साथे घास ज्ेलवीने ग्रास आपेठे ते खायठे. हाथीनो स्वज्ञाव एवोठे के, घासने अनाजनो जुदो स्वाद लेतो नथी. वली कोई माणस मद्य

पीने मतवारो थयो होयने तेने दहीने खांडथी बनेलुं शीखरण जमवाने आपीये ने पुछीये के एनो स्वाद केवोछे, तो ते कहेशे के गायनुं दुध पीये तेवोछे. पण तेने दारूनी घुममां जुदा स्वादनी खबर पडती नथी, तेम जीव मिथ्यामतिवालो थईने जो पण अनादि कालनो ज्ञानरूपी छे एटले ज्ञानमय छे तो पण पापकर्म अने पुण्यकर्म मां लीन थई रह्यो छे, माटे सहज भावे शुन्यहृदय थयोछे; त्यारे चेतन अचेतन जे पुद्गल ते बेउने मिश्र के० एक पिंड जोईने एकमेक मानेछे; पुद्गलना भेलथी चेतनने पण पुद्गलकर्मनो कर्त्ता मानेछे पण कदी विवेकनी नजरथी जोतो नथी. ॥ १३ ॥

हवे जीवने कर्मनो कर्त्ता मानवो ए भ्रमवडे मनायछे; ते उपर दृष्टांत आपेछे.

अथ भ्रमस्वरूपकथनदृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसा॥—जैसे महाधूपकी तपतिमें तिसीयो मृग, भरमसों मिथ्याजल पीवनकों धायो है; जैसे अंधकारमांहि जेवरी निरखी नर, भरमसों डरपी सरप मानि आयो है; अपने सुभाय जैसे सागर सुथिर सदा, पवन संजोगसो उछरि अकुलायो है, तैसे जीव जडसों अव्यापक सहजरूप, भरमसों करमको करता कहायो है.॥१४॥

अर्थः— जेम वैशाख ने जेठना घणा सख्त तापनी गरमीवडे मृग तरस्यो थईने मृगजलने जोई तेने जल भरेलुं तलाव मानी ते मिथ्या जलने पीवाने दोडेछे; तथा जेम अंधारे पडेली दोरडीने जोइने कोई मनुष्य भरमवडे तेने साप जाणी डरीजायछे; वली जेम समुद्रनो स्वभाव स्थिर छे पण पवनना संजोग थकी उछलतो देखायछे, तेम जीव निश्चय थकी जोतां जड वस्तुथी अव्यापक छे, पण अनादि कालनो सहजरूपी भ्रम तेणे करीने ते जीवने कर्मनो कर्त्ता कहेछे. ॥ १४ ॥

हवे जे सम्यग् दृष्टि थाय ते सम्यक् स्वभावे करीने भ्रम दूर करे; अने जुदो जुदोज भाव जाणे, ते उपर राजहंसपक्षीनो दृष्टांत आपेछे. अथ सम्यग् दृष्टिस्वभाववर्णनं, राजहंसके दृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसा॥— जैसै राजहंसके वदनके सपरसत, देखिये प्रगट न्यारो छीर न्यारो नीर हैं, तैसें समकितीकी सुदृष्टिमें सहजरूप, न्यारो जीव न्यारो कर्म न्यारोई शरीर है; जब शुद्ध चेतनाको अनुभौ अभ्यासे तब, भासै आपु अचल न दुजो ओर सीरहै;पूरव करम उदे आइके दिखाई देहि,करता न होइ तिन्हको तमासगीर है॥१५॥

अर्थः— जेम राजहंसनुं वदन के० मुखनी अंदरनी जीभ, तेना अडकवाथी दुधने पाणी एकमेक होय ते फाटीने दुध जुडुं ने पाणी जुडुं थाय छे; तेमज सम्यग्दृष्टि वडे सहजरूपे जीव छे ते जुदोज जणाय ने कर्म पण जुडुंज जणाय; अने शरीर पण जुडुंज जणाय, एटले बाह्यात्मा, अंतरात्मा ने परमात्मा ए त्रणे जुदा जणाय. ज्यारे

शुद्ध चेतन अनुभवनो अभ्यास करे त्यारे पोतेज देखाय. कर्मादिकनो बीजा कोई साथे भेल नथी. पूर्व संचित कर्म जे छे ते निज स्थिति पूर्ण थये अथवा उदीरणा करी के० कर्म उदय आव्याथी देखाय, पण जीव कांई कर्मनो कर्त्ता नथी,पण ते कर्म ना उदयनो तमासो जुएछे ॥ १५ ॥

हवे शिष्य पूछे छे के, हे स्वामी! जीव तथा पुद्गल एकमेक थई रह्यां छे, त्यारे ते उनेविषे एवो जुदो जुदो स्वभाव केम जाणीये? त्यारे गुरु तेनो उत्तर आपतां पाणिनुं तथा शाकनुं दृष्टांत आपेछेः अथ कर्तृत्व स्वभाव तप्तोदक तथा व्यंजननो दृष्टांतः—

॥ सवैया इकतीसा॥—जैसै उसनोदकमें उदक सुभाउ सीरो,आगिकी उसनतै फरस ज्ञान लखिये; जैसै स्वाद व्यंजनमें दीसत विविध रूप, लोनको सवाद खारो जीभ ज्ञान चखिये; तैसै याहि पिंडमें विभावता अज्ञानरूप, ज्ञानरूप जीव भेद ज्ञानसो परखिये,भरमसों करमको करता है चिदानंद, दरव विचार करतार भाव नखिये.॥१६॥

अर्थः— जेम उष्णोदक के० उनुं पाणी ते पाणीनो पोतानो स्वभाव तो सीरो के० शीतलज छे, पण तेनो स्पर्श करतां गरम लागे छे;ते गरमी आगनी छे. अने स्वादिष्ट व्यंजन के० शाकमां भात भातनो स्वाद होय छे अने लोन के० निमकनो खारो स्वाद जुदोज जणाय छे, ते जीभ ज्ञानवडे जणायछे; तेमज घटपिंडमां विभावता जे कर्मनी साथे चेतननुं मलवुं तेतो जेम में आ कीधुं एम मानवुं, एतो अज्ञानरूप छे. अने जीव छे ते शुद्ध ज्ञानरूपी छे, एनेतो शुद्ध जाणवो एज एनुं कार्य छे. ए वात भेदज्ञान वडे जणाय छे. ए चिदानंद जे छे तेने कर्मनो कर्त्ता मानवो ते भ्रमवडे म नाय छे! पण द्रव्यनो विचार करतां एनो कर्त्ता भाव बने नही पण ज्ञाता भावज बने ए रहस्य छे. ॥ १६ ॥

हवे निश्चय प्रमाणवडे जे जेनो कर्त्ता छे तेने जुदो बतावे छे. अथ कर्तृत्वविवरणंः

॥ दोहा॥— ज्ञान भाव ज्ञानी करै, अज्ञानी अज्ञान; दरब करम पुदगल करै, यह निहचै परवान. ॥ १७ ॥

अर्थः— ज्ञानी होय तेतो ज्ञानभाव करे एटले जाणवारूपजे कार्य छे ते करे छे; अने अज्ञानी होय ते हुं कर्त्ता छुं एम मानी अज्ञानभाव करेछे; द्रव्यरूप जे कर्म छे तेने पुद्गलज करेछे, निश्चयप्रमाणमां एवुं स्पष्ट छे. ॥ १७ ॥

शिष्य पूछेछे के हे स्वामी! ज्ञानभाव ज्ञानीकरे ए वात कहेतां ज्ञाननो कर्त्ता जीव ठरेछे, ते कया नयथी ठरेछे? तेनो उत्तर गुरु आपेछेः—अथ व्यवहार कर्तृत्वकथनः—

॥ दोहा॥— ज्ञानसरूपी आतमा, करे ज्ञान नहि और; दर्व कर्म चेतन करै, यह विवहारी दौर. ॥ १८ ॥

अर्थः– आत्मा ज्ञानस्वरूपी छे माटे ज्ञानने तो तेज करे, पण बीजो नही, ए नि श्चय;अने जे एम कहे छे के,द्रव्यकर्मनो कर्त्ता पण चेतन छे तेतो व्यवहारमां कहेवाय॥१८॥

हवे शिष्य प्रश्नः– कर्तृत्वकथनः–

॥ सवैया तेईसाः॥–पुदगल कर्म करै नहि जीव कही तुम में समुजी नहि तैसी; कौन करै यहु रूप कहो अब, को करता करनी कहु कैसी; आपुहि आपु मिलैबिछुरै जड क्यों करि मोसन संशय ऐसी; शिष्य संदेह निवारन कारन बात कहै गुरु है कछुं जैसी. ॥१९॥

अर्थः– हवे शिष्य पूछे छे के, जीवने निश्चयनयथी ज्ञाननो कर्त्ता कह्यो ने कर्मनो अकर्त्ता कह्यो, तेनुं शुं कारण? हे गुरु! पुद्गल द्रव्यरूप कर्मने जीव करे नही एवी जे वात तमे कही, ते वात हुं यथार्थ समज्यो नही. ए पुद्गलरूपी कर्मनो स्वजाव करे? इहां कर्त्ता तो ठरावता नथी अने तेनी क्रिया केवी छे ते कहो. वली पुद्गल कर्मनो कर्त्ता पुद्गलनेज बनावोछो त्यारे कर्त्ता कर्म बंने जड थयां, ते पोतानी मेले मलवुं छूटा थावुं केम बनी शके ? ए मारा मनमां संदेह छे. शिष्यनों संदेह निवारवाने आ प्रश्ननो यथार्थ उत्तर गुरु हवे कहेछेः– ॥ ११९ ॥

अथ गुरु उत्तर कथनः–

॥दोहाः॥– पुदगल परिनामी दरब, सदा परिनमै सोय; याते पुदगल करमको, पुदगल कर्त्ता होय ॥ २० ॥

अर्थः– हे शिष्य! पुद्गल जे छे ते परिणामी द्रव्य छे. क्षण क्षणमां तरेहवार बनी जायछे तेमाटे सदा परिणमी रह्यो छे, ते युक्तिथी पौद्गलिक कर्मनो कर्त्ता पुद्गलज थई शकेछे. ॥ २० ॥

अथ पुनः शिष्य प्रश्नः–

॥ अडिल छंदः ॥– ज्ञानवंतको जोग निर्जरा हेतु है; अज्ञानीको जोग बंध फल देतु है;यह अचरजकी बात हिये नहि आवही;बूझे कोऊ शिष्य गुरू समुजावही.॥२१॥

अर्थः–हवे शिष्य पूछेछे के, ज्ञानजाव ज्ञानी करे एवुं कहेवाथी जोग निर्जरारूपी थाय छे ते केम ? ज्ञानी जोग जोगवे ते कर्मनी निर्जरा करेछे, त्यारे तो ज्ञानीनो जोग निर्जरानो हेतु छे अने अज्ञानी जे जोग जोगवे ते कर्म बंधन करेछे; त्यारे तो अज्ञानीनेज जोग बंध फलदाई कह्यो एतो अचरजनी वातछे; केमके जोग जोगववामां समान होय ने एकनो जोग निर्जरानो कारक अने बीजानो जोग बंधनो कारक एम केम बने ? अने ए वात हृदयमां ठसती नथी. आवुं शिष्यनुं केहेवुं सांजलीने गुरु तेनो उत्तर कहेछेः– ॥ २१ ॥

अथ गुरु उत्तर कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— दया दान पूजादिक विषय कषायादिक, दोहू कर्म जोग पै दुहूको एक खेतु है; ज्ञानी मूढ करम करत दीसे एकसे पैं, परिनाम भेद न्यारो न्यारो फल देतु है; ज्ञानवंत करनी करे पैं उदासीन रूप, ममता न धरे ताते निर्जराको हेतु है; वहे करतूति मूढ करे पै मगन रूप, अंध भयो ममता सो बंध फल लेतु है. ॥ ११ ॥

अर्थः— दया पालवी, दान देवुं, पूजा प्रमुख करवी, एक एवी रीतनां कर्मछे, अने पांच इंद्रिओना विषयनुं सेवन करवुं, कषायनुं सेवन करवुं; एक एवी रीतनां कर्म छे, ए बंने कर्मनो संसारमां भोग छे, पण क्षेत्र एक छे, तेथी बंने बंधरूप छे. अने ज्ञानी पण ए बे कर्म करे छे, तथा अज्ञानी पण करे छे, अने ए कर्म करतां तो ज्ञानी अज्ञानी एक सरखाज देखाय छे, पण एना परिणाम भेद जुदा जुदा छे माटे ए कर्मनुं फल जुदुं जुदुं आपे छे. ज्ञानवान जे कर्म क्रिया करेछे, ते उदासीन रूप थईने करे छे, एटले एनी मेळे उदय आवेलुं कर्म करेछे, पण ममता धरतो नथी; ए माटे निर्जरानो हेतु छे. अने एज कर्म क्रिया मूढ करे छे, पण ए क्रिया करवामां आनंद रूप रहे छे; ने निजात्मशुद्धिने विसरी जाय छे; एटले अंध जेवो वनी जाय छे, अने ममता धारण करे छे, तेथी बंध फलने लिये छे; एज माटे अज्ञानी अज्ञाननो कर्त्ता ठरे छे. ॥ ११ ॥

हवे कुंभारनुं दृष्टांत आपीने मूढनुं कर्त्तापणुं सिद्ध करेछेः—

अथ मूढ कर्तृत्व कथन कुलाल दृष्टांतः—

॥ छप्पय छंदः ॥— ज्यों माटीमहि कलस, होनकी शक्ति रहै ध्रुव; दंड चक्र चीवर कुलाल बाहिज निमित्त हुव; त्यों पुदगल परवानु, पुंज बरगना भेष धरि; ज्ञानी वर नादिक सरूप बिचरंत विविध परि; बाहिज निमित्त बहिरातमा, गहि संसै अज्ञान मति; जगमांहि अहंकृत भावसों, करम रूप व्है परिनमति. ॥ १२ ॥

अर्थः— जेम कलसरूप कार्य थवामां माटी द्रव्यनी शक्ति ध्रुव के० निश्चय छे. अने ते कार्यनेविषे तेने फेरववानो दंड अने चक्र के० चाकने चीवर उतारवानी दोरी ने कुंभार ए सर्व बाह्य निमित्त थयां, तेम परमाणु पुद्गलनो पुंज ते बंधपणु धरीने कार्म्मणवर्गणानो भेष धरीने ज्ञानावरणी, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयुष, नामकर्म, गोत्रकर्म,अंतराय ए स्वरूपे विविध के० जात जातनो पुद्गल खंध विचर्यो; अहीं बहिरात्मा एटले देव मनुष्यादिरूपी बाह्यात्मा बाह्यनिमित्त थईने भ्रम

रूपी अज्ञान ग्रहीने अहीं कारण बन्यो; त्यारे जगत्मां अहंकारबुद्धिनी संगति ते हिज पुद्गलखंध कर्मरूप बनीने परिणम्यो छे. ॥ ९३ ॥

हवे निश्चये जीवनुं अकर्त्तापणुं मानीने एना अनुभवमां रेहेवुं तेनुं महात्म्य कहेछेः—

अथ शुद्धानुभव महात्म्य कथनः—

॥ सवैया तेईसाः ॥— जे न करे नयपक्ष विवाद धरे न विषाद अलीक न भाखे; जे उदवेग तजे घट अंतर, शीतलभाव निरंतर राखे; जे न गुनी गुन भेद विचारत, आकुलता मनकी सब नाखे;ते जगमें धरि आतमध्यान अखंडित ज्ञानसुधारस चाखे॥९४॥

अर्थः—जेम मिथ्यात्वी लोक पोतपोताना नयनो पक्ष धरीने पोतपोतामां विवाद करेछे तेम न करतां जे सहज आनंदमां रहेछे; ने विषाद धरता नथी, अने जूठुं बोलता नथी, अने दुष्ट ध्यान धरता नथी एटले उद्वेगनो त्याग करेछे; अने हमेश पोताना हृदयनेविषे शीतल भाव राखेछे, ने एवा शुद्ध आत्माना अनुभवमां मलेछे. जेथी आत्मा गुणी छे ने ज्ञानगुण छे, एवो जेने भेद विचार रह्योज नथी, अने विकल्प के० व्याकुलतानें मनमांथी काढी नाखे, एवा जे शुद्ध अनुभवी थाय, तेज आत्मध्यान धरीने जगत्नेविषे संपूर्ण केवल ज्ञानरूप अमृत रस तेने चाखेछे. ॥ ९४ ॥

हवे निश्चय नय थकी अकर्त्तापणानी स्थापना अने व्यवहार नयवडे कर्त्तापणानी स्थापना प्रमाण करी बतावे छेः—अथ निश्चय व्यवहारनय प्रमाण स्थापनाः—

॥सवैया इकतीसाः॥— विवहार दृष्टिसों विलोकत बंध्योसो दीसे, निहचे निहारत न बांध्यो यह किनही; एक पक्ष बंध्यो एक पक्षसों अबंध सदा, दोउ पक्ष अपने अनादि धरे इनही; कोउ कहै समल विमल रूप कोउ कहे, चिदानंद तैसोई बखान्यो जैसो जिनही; बंध्यो मानै खुल्यो मानै दुहुनको भेद जानै, सोई ज्ञानवंत जीव तत्त्व पायो तिनही. ॥ ९५ ॥

अर्थः— चतुर्गतिरूप संसारमां भ्रमण करवानो आत्मानो व्यवहार जोइए तो आत्मा कर्त्ताज देखाय ने बंधमां पण जणाय, अने निश्चयनयवडे ज्ञाननोज कर्त्ता अने ज्ञानस्वरूपी जोइये तो एज आत्मा कशामां बंधायलो नही जणाय; तेथी एकलो व्यवहार पक्ष ग्रहीये तो आत्मा बंधमां छे, ने एकलो निश्चयपक्ष ग्रहीये तो आत्मा सदा अबंध जणाय, एवा बंने पक्ष अनादिकालना ग्रहण कीधा छे. कोई व्यवहारनयवालो होय ते जीवने समल कहेछे, ने कोई निश्चयनयवालो होय ते एने विमल कहेछे. पण जेणे जेवो पोतानी बुद्धिथी चिदानंदने वखाण्यो तेवोज चिदानंद छे. हवे जे सम्यग्दृष्टि होय तेतो आत्माने बंधायलो पण माने, अने अबंधपण

माने, पण ए मानवामां बेहुनयनो ज्ञेद जे जाणे तेज ज्ञानी कहेवाय, अने तेणेज जीव तत्त्वनुं स्वरूप ळंलख्युंछे ॥ २५ ॥

हवे बेउ नयने समान राखीने समकित राखेथी समरस ज्ञावमां रहे तेनी प्रशंसा करेछेः—अथ समरसी ज्ञाव प्रशंसा कथनः—

॥सवैया इकतीसा॥— प्रथम नियत नय दूजो विवहार नय, डुहुकों फलावत अनंत ज्ञेद फलै हैं; ज्यों ज्यों नय फलै त्यों त्यों मनके कलोल फलै, चंचल सुज्ञाय लोका लोकलौं उछलै हैं; ऐसी नय कक्ष ताको पक्ष तजि ज्ञानी जीव, समरसी ज्ञये एकतासों नही टलै हैं; महा मोह नासै शुद्ध अनुज्ञौ अज्यासै निज, बल परगासै सुख रासि माहिं रलै है ॥ २६ ॥

अर्थः— पहेलोतो निश्चय नय छे, अने बीजो व्यवहार नय छे; ए बेउ नयने एक एक द्रव्य साथे फलावियें त्यारे अनंत द्रव्यनी अपेक्षाने लीधे नयना अनंत ज्ञेद फले छे. हवे ए नयना अनंत ज्ञेद मननाज विचारथी फले छे, तेथी जेम जेम नयनुं फलाव थाय तेम तेम मनना तरंग पण अनंत ज्ञेदे फलेछे, अने मनना कल्लोल जे टला होय तेटला चंचल स्वज्ञावमनना थई जाय, एनुं प्रमाण षट्गुणी हानि वृद्धि लेखे लोकालोक प्रदेश परिमाण होय एवी जे नय कक्षा के० नयने अंगीकार करी तेनो पक्षपात त्यजीने जे ज्ञानी जीव समरसी ज्ञावमां रह्या अने सघला नयना विस्तारमां चेतनानी एकता होय तेथी टले नही ते तो समरसी ज्ञाव वाला महा मोह के० ज्रमनो नाश करीने अने शुद्ध चिदानंदना अनुज्ञवनो अज्यास करीने, एटले क्षपकश्रेणि आरोहण करीने परमात्मानुं जे बल छे तेनो प्रकाश करीने सुख राशि जे मोक्ष पद छे तेनेविषे मली जायछे ॥ २६ ॥

हवे निश्चय व्यवहार बतावीने पोतपोतानुं जे सत्य स्वरूप लक्षण छे तेहिज कहेछेः—अथ सम्यक् स्वरूप लक्षन कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसे काहु बाजीगर चौहटे बजाई ढोल, नाना रूप धरीके ज्ञगल विद्या ठानी है; तैसे मैं अनादिको मिथ्यातके तरंगनिसों ज्ररममें धाइ बहु काय निज मानी है; अब ज्ञान कला जागी ज्ररमकी दृष्टि ज्ञागी, अपनी पराई सब सोंजु पहिचानी है; जाके उदे होत परवान एसी ज्ञांति ज्ञई, निहचे हमारी ज्योति सोई हम जानी है. ॥ २७ ॥

अर्थः— जेम कोई बाजीगर चौटामां ढोल वगाडीने ज्ञात ज्ञातना रूप धरीने पोतानी ज्ञगल विद्या प्रसारे छे, ने तेने लोको साची मानेछे, ते रीते हुं अनादि कालथी मिथ्यात्व तरंग के० लहेरोमां मगन बनी रह्यो तेथी ज्ञगलविद्या जोनाराने न्याये

ज्ञममां धायो थको घणी कायाई पामीने पोतानी मानी लीधी हती, ते हाल मने ज्ञान कला प्राप्त थवाथी ज्ञमनी दृष्टि दूर थई गई, त्यारे पोतानी तथा पारकी सोंज के० सामग्री ते सर्वेने ओलखी लीधी; जे ज्ञान कलाना उदय थवाथी वस्तुनुं परमाण थायछे एवी रीत थई तेथी पोतानी परंपरानी शुद्धि आवी, एवा निश्चयथी अमोरी ज्योति जे अमारुं स्वरूप तेने अमे ओलखी लीधुं ॥ १७ ॥

हवे जे ज्ञाता होय ते सम्यक् स्वरूपने शुद्ध अनुजवनेविषे विचारी लिये ते कहे छेः– अथ शुद्धानुजव चिंतन ज्ञान विलासः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे महा रतनकी ज्योतिमें लहरि उठे, जलकी तरंग जैसै लीन होइ जलमें; तैसै शुद्ध आतम दरबपरजाय करी, उपजे बिनसे थिर रहे निज थलमें; ऐसे अविकलपी अजलपी आनंद रूपी, अनादि अनंत गहि लीजे एक पलमें; ताको अनुजव कीजे परम पिऊष पीजे, बंधको विलास फारि दीजे पुदगलमें ॥ १८ ॥

अर्थः– जेम हीरा, लाल, पन्ना अने रत्ननी ज्योतिमां लहरी उठे, ने ज्योतिमांज समाइ जाय छे, वली जेम पाणीना मोजां पाणीमांज समाई जाय, तेम शुद्ध आत्म द्रव्यना जे ज्ञान प्रमुख गुणना पर्याय छे ते समये समये उपजे छे, ने वणसे छे, अने द्रव्य पोताना द्रव्य स्थानने विषेज रहेछे. उपजवुं ने वणसवुं ए विकल्प पर्यायने आश्रये थाय छे; पण द्रव्यमां तो थिरता रही छे, द्रव्यमां विकल्प नथी माटे जे अविकल्पक अने अजल्पी के० स्थिरछे सर्वथा वचन गोचर नथी, अने आनंदरूपी छे, तेथी सहज समाधि थईछे, एवुं कोइ आत्म द्रव्यछे, तेनुं अनादि अनंत काल सुधी एक रूपमां ग्रहण करवुं, अने तेज द्रव्यनो अनुजव करवो, एटले तेने विषेज उपयोग राखवो, ए अनुजवमां परम पिऊष के० परम अमृतरस उपजे छे ते पीवो. अने जे आश्रव बंधनो विलास आत्मामां छे तेने पुजलनी सामग्रीमां नाखी देवो, एटले पुजलरूप जूउंज छे ॥ १८ ॥

हवे आत्मानो शुद्ध अनुजव परम पदार्थ छे, तेनी प्रशंसा करेछेः-अथ अनुजव प्रशंसाः-

॥ सवैया इकतीसाः॥– दरबकी नय परजाय नय दोउ नय, श्रुत ज्ञानरूप श्रुतज्ञान तो परोष है; शुद्ध परमातमाको अनुनौ प्रगट ताते, अनुनौ बिराजमान अनुनौ अदोष है; अनुनौ प्रवान जगवान पुरुष पुरान, ज्ञान औ विज्ञानघन महासुखपोष है, परम पवित्र योंही अनुनौ अनंत नाम, अनुनोविना न कहीं उर ठोर मोष है ॥ १९ ॥

अर्थः– पदार्थने उलखवाने बेज नय प्रवर्ते छे, एक द्रव्यार्थिक नय वडे द्रव्यनो विवरो अने पर्यायार्थिक नयवडे पर्यायनो विवरो थाय छे, ए बंने नय श्रुतज्ञानरूप छे, अने श्रुतज्ञान जे छे ते परोक्ष ज्ञान छे; अने शुद्ध परमात्मानो अनुजव जे छे

तेतो प्रगट के० प्रत्यक्ष प्रमाणमां आवे छे, तेथी अनुभवज महा बलवान थको बिराजमान थई रह्योछे, एथी अनुभव ते अदोष के० शुद्ध छे. हवे अनुभवनां नाम कहेछे, अनुभव कहिये, प्रमाण कहिये, भगवान कहीये, एनेज पुराण पुरुष कहीये, एनेज ज्ञान कहीये, एनेज विज्ञानघन कहीये, एनेज महा सुखनुं पोष कहीये, एनेज परम पवित्र कहिये, एवा अनुभवनां अनंत नाम छे. अने ए शुद्ध अनुभव शिवाय बीजे कोई स्थानके मोक्ष नथी ॥ २९ ॥

हवे शुद्ध अनुभवविना संसारमां भमे अने शुद्ध अनुभव प्राप्त थये मोक्ष पामे ते कहे छे. अथ अनुभव साम्यर्थ जलको दृष्टांतः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसे एक जल नाना रूप दरबानुयोग, भयो बहु भांति पहिचान्यो न परतु है; फीरि काल पाई दरबानुयोग दूरि होतु, अपने सहज नीचे मारग ढरतु है; तैसे यह चेतन पदारथ विभावतासों, गति योनि भेष भव भावर भरतु है; सम्यक सुभाइ पाइ अनुभौके पंथ धाइ, बंधकी जुगती भानि मुगति करतु है ॥३०॥

अर्थः– जेम पाणी एक रूप छे तथापि तेनेविषे नाना प्रकारनी माटी प्रमुख द्रव्यनो मिलाप थये पाणी पण तरेहवार जातनुं थाय छे, हवे देखवामां तो माटी प्रमुख देखाय छे, पण पाणी ओलखातुं नथी. फरी कोई औषधादिकथी ते द्रव्यनो मिलाप दूर थयो अने पाणी तरी आव्युं त्यारे पोतानुं सहज रूप लईने नीचाण तरफ ढलवा लाग्युं; ते रीते जे चेतन पदार्थ छे ते विभावतासों के० पोतानी भुल थकी चार गतिमां चोरासी लाख जीव योनिनेविषे भेष के० एक क्रोड साडासत्ताणुंलाख कुल कोडीमां भातभातना भवकरतो भावरी के० फरी रेहे छे, एज जीव कोई अवसर सम्यग् भाव पामीने पोताना अनुभवना मारगमां दोडीने अने बंधनना विलासने तोडीने कर्मनी मुक्ति करे छे. ॥ ३० ॥

हवे मिथ्यादृष्टि होय ते अनुभव शिवाय कर्मनो कर्त्ता होयज ते कहे छेः– अथ मिथ्यादृष्टि कर्तृत्व कथनः–

॥ दोहाः ॥– निशिदिन मिथ्या भाव बहु, धरै मिथ्याती जीव; ताते भावित करमको, करता कह्यो सदीव. ॥ ३१ ॥

अर्थः– रात ने दिवस पोतानी भूलनेविषे मिथ्यात्वी जीव होय ते फलाणुं में कीधुं में लीधुं, आमारुं इत्यादिक मिथ्या भाव धारे ते माटे अशुद्ध चेतनाजे छे ते विभावित कर्मछे तेनो कर्त्ता सदीव के० निरंतर कह्यो. ॥ ३१ ॥

हवे ज्ञानी अने मूढ करम करे छे, ते एक सरखां देखाय छे, तथापि मूढ जीवने

कर्मनो कर्त्ता कह्यो ने ज्ञानी जीवने कर्मनो अकर्त्ता कह्यो तेनुं कारण कहे बेः—अथ मूढ कर्मको कर्त्ता ज्ञाता अकर्त्ता यहु कथनः—

॥ चोपाईः ॥— करै करम सोई करतारा; जो जानै सो जाननहारा; जो कर्त्ता नहि जानै सोई; जानै सो करता नहि होई. ॥ ३१ ॥

अर्थः— जे कर्मने करे तेज कर्त्ता कहेवाय अने जे जाणेबे तेने तो जाणनार कहीये; जे कर्त्ता बे तेज जाणनार नथी अने जे जाणनार बे ते कर्त्ता नथी ॥ ३१ ॥

हवे जे जाणनार बे ते अकर्त्ता बे ते समजावे बेः—अथ ज्ञाता अकर्त्ता कथनंः—

॥ सोरठाः ॥— ज्ञान मिथ्यात न एक, नहि रागादिक ज्ञानमहि; ज्ञान करम अतिरेक, जो ज्ञाता करता नही. ॥ ३२ ॥

अर्थः—ज्ञान जाव अने मिथ्यात्व जाव एक कहेवाय नही; अने रागादिक जे राग द्वेष मोह इत्यादिक जाव ज्ञानमां होय नही; एथी ज्ञान जे बे ते कर्मथी अतिरेक के० जुडुं बे, तेमाटे जे ज्ञाता होय ते कर्त्ता न होय ॥ ३२ ॥

हवे जे मिथ्यात्वी जीव बे ते पुज्ञलद्रव्य रूप कर्मनो अकर्त्ताज बे अने जाव कर्मनो कर्त्ता बे ते कहेबेः— अथ जीवद्रव्य कर्मको अकर्त्ता यहु कथनः—

॥ बप्पयबंदः ॥— करम पिंम अरु राग, जाव मिलि एक होहि नहि; दोऊ जिन्न स्वरूप, वसहि दोऊ न जीवमहि; करम पिंड पुज्ञल विजाव रागादि मूढ ज्रम; अलख एक पुग्गल अनंत किम धरहि प्रकृति सम; निज निज विलास जुत जगत महि, जथा सहज परिनमहि तिम; करतार जीवजम करमको, मोह विकल जन कहहि इम ॥ ३४ ॥

अर्थः— पुज्ञग द्रव्य रूप कर्म पिंम अने राग द्वेषादिक जाव ए बंने मलीने एक रूप थाय नही, ए बंने जाव जिन्न स्वरूपमां बे, पण ए बेउ जाव जीवमां रेहेता नथी. एनो विवरो कहेबेः— कर्मपिंड बे तेतो पुज्ञलरूपी बे. अने जे रागादिक विजाव बे तेतो मूढ जीवनो भ्रम बे; अलख जीव बे तेतो एकता लीधे रह्यो बे अने पुज्ञल अनंतताने लेई रह्याबे. तो कर्मनुं कर्त्तापणुं एवी सम प्रकृति बेउ केम धारण करशे? जगत्मां सर्व कोई पोतपोताना स्वजाव विलासमां युक्त थई रह्याबे, जेवो पोतानो सहज स्वजाव बे तेवोज परिणमी रह्यो बे ए न्यायनी वात बे, तेथी जड रूपी कर्मनो कर्त्ता जीव बे, एवुं वचन जे जीव मोहथी विकल होय बे ते कहेबे ॥ ३४ ॥

हवे सम्यक् प्रकारे करीने सिद्धांत समजावेबे. अथ सम्यक्त्व प्रजाव कथनः—

॥बप्पयबंदः॥— जीव मिथ्यात न करै, जाव नहि धरै जरम मल; ज्ञान ज्ञान रस रमै, होइ करमादिक पुज्ञल; असंख्यात परदेश, सकति जगमें प्रगटे अति; चिद् वि

लास गंभीर, धीर थिर रहै विमल मति; जब लगि प्रबोध घटमहिं उदित, तब लग अनय न पेखियै; जिम धरमराज वरतांतपुर, जहं तहं नीति परेखिये ॥ ३५ ॥

अर्थः— जीव छे ते मिथ्यारूपी कर्म करे नहीं, एनो हेतु कहेछे के, भ्रम मल रूपी जे भार छे तेने ए जीव धारण करे नही. अने ज्ञान ज्ञानभाज रसमां रमे एटले ज्ञातापणामां रहे. अने कर्मादिक जे ज्ञानावरणादिक राग द्वेषादिक तेतो पुद्गलसामग्रीछे. अने ए जीवना तो असंख्यात प्रदेशनेविषे एवी शक्ति अति प्रगटपणे जगमगी रही छे. ते कहीये छइये के, चिद्विलास के० ज्ञान विलासनेविषे गंभीरछे, धीर ने विमल मतिवंत थको स्थिरता थई रह्यो छे; एवुं प्रबोध सम्यग् ज्ञान जां सुधी घट पिंडमां प्रकाशमान थई रह्युं छे त्यांसुधी अनय के० अन्याय स्वरूपने देखीये नही, ते उपर दृष्टांत कहेछे जेम पुर नगरमां धर्मराज वर्त्तता थका जहां तहां नीतिज जोवामां आवे ॥ ३५ ॥

॥ इति श्रीसमयसार नाटक कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार तृतीय बालबोध सहित समाप्तं ॥

---

॥ दोहराः ॥— करता किरिया करमको, प्रगट बखान्यो मूल; अब बरनौं अधिकार यह, पाप पुण्य समतूल ॥ ३६ ॥

अर्थः— कर्त्ता क्रिया अने कर्म एउनुं मूल के० रहस्य ते प्रगट करी वखाण्युं. हवे पाप अने पुण्य ए बने बराबर छे तेनो अधिकार वर्णन करुं छुं ॥ ३६ ॥

हवे पाप पुण्य द्वार विषे प्रथम ज्ञानचंद्रनी कलाने नमस्कार करेछेः—

अथ ज्ञानचंद्र कला वर्णनंः—

॥कवित्तछंदः॥—जाके उदै होत घटअंतर, विनसै मोह महातम रोक; सुभ अरु असुभ करमकी दुविधा, मिटे सहज दीसे इक थोक; जाकी कला होतु संपूरन, प्रतिभासै सब लोक अलोक; सो प्रबोध शशि निरखि बनारसि, सीश नमाइ देतु पग धोक ॥३७॥

अर्थः— जे प्रबोध चंद्रना प्रकाशवाथी समान घटमां जे मोहरूप महातम के० घोर अंधकारनुं रोक जे अटकाव ते नाश पामे, अने जेम अंधकार गयाथी एक कर्म शुभ अने एक कर्म अशुभ एवी जे कर्मने विषे द्विविधा छे ते मटी जाय, अने सहज भावे कर्म बंधरूप छे एवुं एक थोक देखाय अने जेने प्रबोधचंद्रनी सर्व संपूर्ण कला प्रगट थयेथके सर्व लोकालोकनो प्रतिभास थाय ते प्रबोधरूपी चंद्रकलाने निरखीने बनारसीदास माथुं नमावीने पगधोकदेतुहे के० प्रणाम करेछे. ॥ ३७ ॥

हवे मोहमां शुभ अशुभ कर्मनी द्विविधता देखायछे ते एकरूपपणे देखाडेछेः—

अथ शुभाशुभ एकत्वीकरनः—

॥सवैया इकतीसा॥—जैसे काहु चंडाली जुगल पुत्र जने तिन्ह, एक दियो बामन कूं एक घर राख्यो है; बामन कहायो तिन्ह मद्य मांस त्याग कीनो, चंमाल कहायो तिन मद्य मांस चाख्यो है; तैसे एक वेदनी करमके जुगल पुत्र, एक पाप एक पुण्य नांउ भिन्न भाख्यो है; दुहों माहिं दोरधुप दोउ कर्म बंधरूप, याते ज्ञानवंतने न कोउ अभिलाख्यो है. ॥ ३७ ॥

अर्थः— जेम कोई चंमालनी स्त्री जुगल पुत्र के० बे पुत्र जणे ने पछी एक छोकरो ब्राह्मणने आपे, ने एक छोकरो पोताना घरमां राखे, हवे जे छोकरो ब्राह्मणना घरमां उछरे ते ब्राह्मण केहेवाय, ने ते मद्य मांसनो त्याग करे, जे चंमालना घरमा रहे ते चंमाल केहेवाय, ने ते मद्य मांस पण चाखे, ते रीते एक वेदनीय कर्मनां बे पुत्र छे, एक पाप ने बीजो पुण्य, एवां जुदां जुदां नाम कह्यांछे, पण बंनेनो स्वभाव एक छे, एटले बेउने विषे दोरधूप के० वेदनानी सत्ता छे. एटले खेदसंताप छे वली पापने पुण्य ए बेउ कर्म बंधरूप छे, एटला वासते ज्ञानीजने ए बेउमांथी कोइनो पण अभिलाष कीधो नथी. ॥ ३७ ॥

हवे पाप तथा पुण्य ए बेउने समान कह्यां तेउपर शिष्य प्रश्न पूछेछेः—

अथ शिष्य प्रश्नः—

॥ चोपाईः ॥— कोऊ शिष्य कहे गुरु पांही; पाप पुण्य दोऊ सम नांही; कारन रस सुभाव फल न्यारे; एक अनिष्ट लगे इक प्यारे. ॥ ३९ ॥

अर्थः— कोई शिष्य गुरुनी पासे आवी कहे के, स्वामी पाप ने पुण्य ए बेने समान कह्यां पण ते समान देखातां नथी केमके, ए बेनां कारण, रस, स्वभाव तथा फल ते तो जुदां जुदां छे; वली एमांथी एक प्रिय लागे छे, ने एक अप्रिय लागे छे. ॥ ३९ ॥

हवे शिष्य ए बेउनां कारण प्रमुख जुदां जुदां कहे छेः— अथ शिष्य कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— संकिलेस परिनामनिसों पाप बंध होइ, विशुद्धसों पुन्य बंध हेतु भेद मानिये; पापके उदे असाता ताको है कटुक स्वाद, पुन्य उदे साता मिष्ट रस भेद जानिये; पाप संकिलेस रूप पुन्यहिं विशुद्ध रूप, दुहूंको सुभाउ भिन्न भेद यों वखानिये; पापसों कुगति होय पुन्यसों सुगति होय, ऐसो फल भेद परतक्ष परवानिये. ॥ ४० ॥

अर्थः— तीव्र कषायमय जे परिणामछे तेनुं नाम संक्लेश परिणाम, तेणे करीने पापनो बंध थायछे; अने कषायनुं जे मंदपणुं तेने विशुद्ध कहिये; तेवडे पुण्यनो बंध थाय; एवा हेतु एटले कारण भेद मानिये छइये. अने पापना उदयथी अशाता थाय

छे, तेनो स्वादतो कटुक होय छे. ने पुण्यना उदयवडे शाता उपजे छे, तेनो मिष्ट स्वाद होय छे. एटले पाप ने पुण्य ए बेउने विषे रसभेद थयो; वली पापकर्म क्लेश रूप छे, तीव्र कषाय रूप छे; अने पुण्य कर्म विशुद्ध रूप छे. मंद कषायरूप छे; ए बंने कर्मनो भिन्न भिन्न स्वभाव थयो, ते एज उपरथी ए बंने कर्मनो भेद वखाणीये छइयें; अने पापथी कुगति के० नर्क गति तिर्यंच् गति, थाय छे, अने पुण्यवडे मनुष्यगति, देवगति एवी सुगति थाय छे; ए रीते पाप पुण्यरूप कर्मनेविषे फलनो भेद प्रत्यक्ष प्रमाणथी छे.॥४०॥

हवे शिष्यना प्रश्ननो गुरु उत्तर करे छेः— अथ गुरु उत्तर वचन यथाः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— पाप बंध पुन्य बंध दुहूमें मुगति नांहि, कटुक मधुर स्वाद पुग्गलको पेखिये; संकिलेस विशुद्धि सहज दोउ कर्म चालि, कुगति सुगति जग जालमें विशेखिये; कारनादि भेद तोहि सूझत मिथ्यातमांहि, ऐसो द्वैत भाव ज्ञान दृष्टिमें न लेखिये; दोउ महा अंधकूप दोउ कर्म बंध रूप, दुहू को बिनास मोष मारगमें देखिये. ॥ ४१ ॥

अर्थः— पापनो पण बंध थाय ने पुण्यनो पण बंध थायछे; ने ज्यां बंध होय त्यां मुक्ति न होय, एटले बेउथी मुक्ति नही ते माटे बेउ समान छे; अने जे कटुक रसमां पाप छे ने मधुर रसमां पुण्य छे ए बेउ रस पुद्गलना छे तेथी पापने पुण्य समानज छे. वली जे संक्लेश स्वभावने लीधे पाप छे, ने विशुद्ध स्वभावथी पुण्य छे; पण ए बेउ स्वभाव जे छे ते कर्मनी चाल छे. अने कुगति तथा सुगति ते पाप पुण्यनां फल छे, ते भेदवडे जगत् जालनी विशेषता छे, तेथी पाप पुण्य समानज छे. अरे ! शिष्य ! तने जे पाप पुण्यना कारणादि भेद तेणे करीने पाप पुण्यनो द्वैत भाव के० द्विविध भाव सूजे छे, ते तो मिथ्यामतिमां सूजे छे; पण ज्ञान दृष्टि करी जोतां तो ए द्वैतभाव देखाशे नही. ए बेनेविषे आत्मानुं अवलोकन नथी, तेथी ए बेउ महा अंधकूप छे, अने ए बेउ कर्म छे; ते बंधरूप छे अने मोक्षमार्गने विषे ए बेउनो विनाश देखीये छीए तेथी ए बेउ समान छे ॥ ४१ ॥

हवे मोक्ष मार्गनेविषे बेउनो विनाश बतावे छेः— अथ मोक्ष पद्धति कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— सील तप संजम विरति दान पूजादिक, अथवा असंजम कषाय विषे भोग है; कोउ शुभरूप कोउ अशुभ सरूप मूल, वस्तुके विचारत दुविध कर्म रोग है; ऐसी बंध पद्धति बखानी वीतराग देव, आतम धरममें करम त्याग जोग है; भौजल तरैया राग दोषको हरैया, महा मोषको करैया एक शुद्ध उपयोग है. ॥ ४२ ॥

अर्थः— ब्रह्मचर्य तप, पंचेंद्रिय निग्रह, संवर, दान पुजाप्रमुख क्रिया; पुण्य एवंध

नां कारण कर्म छे. अथवा पापना कारण असंयम कषाय अने विषय भोग छे. ए बेउमां कोई शुभरूप कार्य छे, अने कोई अशुभरूप कार्य छे; पण वस्तुनुं मूल विचारतां तो बेउए कर्म रोग छे; एटले बेउ प्रकारनो कर्म रोग छे; एवी बंधनी पद्धति के० एक डंकी ते वीतराग देवे वखाणी; पण आत्मिक धर्ममां एटले आत्मानो स्वभाव जोतां कर्म क्रिया त्यागवा योग्य छे; एवा पापपुण्यने हेय कहेनार, अने भवजल ने तरनार, राग द्वेषने हरनार तथा महा मोक्षनो करनार एक शुद्ध उपयोग उपदेश छे.॥४२॥

हवे अर्धा सवैयामां शिष्य प्रश्न करेछे, ने अर्धा सवैयामां गुरु तेनो उतर वाले छेः– अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– शिष्य कहै स्वामी तुम करनी शुभ अशुभ, कीनी है निषिद्ध मेरे संसो मनमांहि है; मोषके सधैया ज्ञाता देसविरती मुनीस, तिन्हकी अवस्था तो निरावलंब नांहि है; कहै गुरु करमको न्यास अनुभौ अभ्यास ऐसो अवलंब उन्हहीको उनमांहि है; निरुपाधि आतम समाधि सोइ शिवरूप, और दौर धूप पुदगल परछांहि है. ॥ ४३ ॥

अर्थः– शिष्य पूछेछे हे स्वामी, तमे तो मोक्ष मार्गमां शुभने अशुभ करणी बेउनो निषेध कीधो, तेनो मारा मनमां संदेह पडेछे; केमके मोक्षमार्गना साधक ज्ञाता देश विरती पंचम गुण स्थान वर्त्ति थया अने मुनीश के० षष्ट सप्तम गुणस्थानवर्त्ति सर्व विरती थया, तेमनी अवस्था तो निरालंबन नथी, एटलेपोतपोतानी शुद्ध क्रियाना आलंबनने लेईने देश विरती सर्व विरती कहेवायछे, त्यारे करणी निषिद्ध केम थई? हवे गुरु कहेछेः– जेवो अक्षरनो न्यास मांड्यो तेवुं श्रुत ज्ञाननुं आलंबन होय तेम शुभ कर्मनो न्यास तेतो जोवामां छे पण ते अनुभवनोज अभ्यासछे, ते अनुभव अभ्यासरूप आलंबन ते तो ज्ञातानुं ज्ञाता पासेज छे, अने तेमां निरुपाधि के० राग द्वेष कषाय इत्यादिकविना आत्मानी जे समाधीछे, एटले जे पर रूपने विषे निरुपयोगीपणे रहेवुं तेज शिवरूप, के० मोक्षरूपछे अने जे दोरधूप के० खेद संताप जेछे ते तो पुद्गलनी परिछांही के० छांयाछे ॥ ४३ ॥

हवे एज शुभ क्रियाविषे बंध अने एज शुभ क्रियाविषे मोक्ष ए बेउ स्वरूप कही बतावेछेः– अथ बंध मोक्ष स्वरूप कथनः–

॥ सवैया तेईसाः ॥– मोछसरूप सदा चिनमूरति, बंधमई करतूति कही हैः जावतकाल वसै जड चेतन, तावत सो रसरीति गही है; आतमको अनुभौ जबलों तबलों शिव रूप दसा निवही है; अंध भयो करनी जब ठानत, बंधविथा तब फेलि रही है ॥ ४४ ॥

अर्थः– चिन्मूर्त्ति के० चिदानंद छे ते तो सदा मोक्ष स्वरूप छे, अने करतूती के० क्रिया तेतो सदा बंधमयछे. यावत् काल के० जेटला काल सुधी चेतन ज्यां वसे तावत्काल के० तेटला काल सुधी तेज रसरीति ग्रहण कीधी छे, एटले तेज रसमां रहेछे; एटले ज्यांसुधी आत्मानो अनुभव रहे त्यां सुधी शुभ क्रिया करतां छतां शिवपद दशा निवही एटले मोक्ष स्वरूपमां रहे, अप्रमतता कहेवाय; अने पोतानुं स्वरूप भुलीने अंध थयो थको ज्यारे करणीनोज रस ठरावे त्यारे तो बंधनाज कष्ट रोग फेलावे छे ॥ ४४ ॥

हवे मोक्षप्राप्तिनुं कारण कहेछेः–अथ मोक्ष मार्ग निरूपणंः–

॥ सोरठाः ॥– अंतर् दृष्टि लखाउ, अरु सरूपको आचरण; ए परमातमभाउ, शिवकारन एई सदा ॥ ४५ ॥

अर्थः– बाह्य दृष्टि छांडीने अंतरदृष्टि आपीने अलक्षनो जापकरवो, अने तेना स्वरूपनुं आचरण करवुं, एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्रने आचरिये, तेथकी परमात्म भावसिद्ध थाय; सदाकालनेविषे एज मोक्षनुं कारण छे ॥ ४५ ॥

हवे बाह्य दृष्टिवरें बंध पद्धति थाय ते कहे छेः– अथ बंध मार्ग निरूपणंः–

॥ सोरठाः ॥– करम शुभाशुभ दोइ, पुद्गल पिंड विभाव मल; इनसौं मुगति न होइ, नांही केवल पाइए ॥ ४६ ॥

अर्थः– शुभकर्म ते पुण्य ने अशुभ कर्म ते पाप ए बेउ कर्मछे, पुद्गलना पिंड छे, अने विभाव जे राग द्वेषादिक मलरूप छे ए बेउनेविषे दृष्टि रहेवाथी मुक्ति थाय नहीं, अने केवलज्ञाननुं पद पामिये नहीं ॥ ४६ ॥

ए वात उपर शिष्य प्रश्न करे छे, ने तेनो उत्तर गुरु दिये छेः–

अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कोउ शिष्य कहै स्वामी अशुभ क्रिया अशुद्ध, शुभ क्रिया शुद्ध तुम ऐसी क्यों न बरनी ?; गुरु कहै जबलौं क्रियाको परिणाम रहै, तबलौं चपल उपयोग योग धरनी; थिरता न आवै तोलौं शुद्ध अनुभो न होइ, याते दोउ क्रिया मोष पंथकी कतरनी; बंधकी करैया दोऊ दुहूमें न भली कोऊ, बाधक विचारमें निषिद्ध कीनी करनी ॥ ४७ ॥

अर्थः– कोई शिष्य पूछे छे के हे स्वामी ! तमे एवुं वर्णन केम करता नथी के अशुभ क्रिया जे हिंसादिक ते अशुद्ध छे अने शुभ क्रिया जे दया दानादिक ते शुद्ध छे? त्यारे गुरु उत्तर आपेछे के अहो शिष्य! ज्यांसुधी क्रियाना परिणाम रहे छे त्यां सुधी उपयोगनी धरनी के० क्षेत्र एटले उपयोगवंत आत्मा चंचल रहे छे. ज्यांसुधी

नां कारण कर्म छे. अथवा पापना कारण असंयम कषाय अने विषय जोग छे. ए बेउमां कोई शुजरूप कार्य छे, अने कोई अशुजरूप कार्य छे; पण वस्तुनुं मूल विचारतां तो बेउए कर्म रोग छे; एटले बेउ प्रकारनो कर्म रोग छे; एवी बंधनी पद्धति के० एक डंकी ते वीतराग देवे वखाणी; पण आत्मिक धर्ममां एटले आत्मानो स्वजाव जोतां कर्म क्रिया त्यागवा योग्य छे; एवा पापपुण्यने हेय कहेनार, अने जवजल ने तरनार, राग द्वेषने हरनार तथा महा मोक्षनो करनार एक शुद्ध उपयोग उपदेश छे.॥४२॥

हवे अर्धा सवैयामां शिष्य प्रश्न करेछे, ने अर्धा सवैयामां गुरु तेनो उत्तर वाले छेः— अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— शिष्य कहे स्वामी तुम करनी शुज अशुज, कीनी है निषिद्ध मेरे संसो मनमांहि है; मोषके सधैया ज्ञाता देसविरती मुनीस, तिन्हकी अवस्था तो निरावलंब नांहि है; कहै गुरु करमको न्यास अनुजौ अज्यास ऐसो अवलंब उन्हहीको उनमांहि है; निरुपाधि आतम समाधि सोइ शिवरूप, और दौर धूप पुदगल परछांहि है. ॥ ४३ ॥

अर्थः— शिष्य पूछेछे हे स्वामी, तमे तो मोक्ष मार्गमां शुजने अशुज करणी बेउनो निषेध कीधो, तेनो मारा मनमां संदेह पडेछे; केमके मोक्षमार्गना साधक ज्ञाता देश विरती पंचम गुण स्थान वर्त्ति थया अने मुनीश के० षष्ट सप्तम गुणस्थानवर्त्ति सर्व विरती थया, तेमनी अवस्था तो निरालंबन नथी, एटलेपोतपोतानी शुद्ध क्रियाना आलंबनने लेईने देश विरती सर्व विरती कहेवायछे, त्यारे करणी निषिद्ध केम थई? हवे गुरु कहेछेः— जेवो अक्षरनो न्यास मांड्यो तेवुं श्रुत ज्ञाननुं आलंबन होय तेम शुज कर्मनो न्यास तेतो जोवामां छे पण ते अनुजवनोज अज्यासछे, ते अनुजव अज्यासरूप आलंबन ते तो ज्ञातानुं ज्ञाता पासेज छे, अने तेमां निरुपाधि के० राग द्वेष कषाय इत्यादिकविना आत्मानी जे समाधीछे, एटले जे पर रूपने विषे निरुपयोगीपणे रहेवुं तेज शिवरूप, के० मोक्षरूपछे अने जे दोरधूप के० खेद संताप जेछे ते तो पुद्गलनी परिछांही के० छांयाछे ॥ ४३ ॥

हवे एज शुज क्रियाविषे बंध अने एज शुज क्रियाविषे मोक्ष ए बेउ स्वरूप कही बतावेछेः— अथ बंध मोक्ष स्वरूप कथनः—

॥ सवैया तेईसाः ॥— मोछसरूप सदा चिनमूरति, बंधमई करतूति कही हैः जावतकाल वसै जड चेतन, तावत सो रसरीति गही है; आतमको अनुजौ जबलौं तबलौं शिव रूप दसा निवही है; अंध जयो करनी जब ठानत, बंधविथा तब फेलि रही है ॥ ४४ ॥

अर्थः— चिन्मूर्त्ति के० चिदानंद छे ते तो सदा मोक्ष स्वरूप छे, अने करतूतीं के० क्रिया तेतो सदा बंधमयछे. यावत् काल के० जेटला काल सुधी चेतन ज्यां वसे तावत्काल के० तेटला काल सुधी तेज रसरीति ग्रहण कीधी छे, एटले तेज रसमां रहेछे; एटले ज्यांसुधी आत्मानो अनुभव रहे त्यां सुधी शुभ क्रिया करतां छतां शिवपद दशा निवही एटले मोक्ष स्वरूपमां रहे, अप्रमतता कहेवाय; अने पोतानुं स्वरूप भुलीने अंध थयो थको ज्यारे करणीनोज रस छरावे त्यारे तो बंधनाज कष्ट रोग फेलावे छे ॥ ४४ ॥

हवे मोक्षप्राप्तिनुं कारण कहेछेः—अथ मोक्ष मार्ग निरूपणंः—

॥ सोरठाः ॥— अंतर् दृष्टि लखाउ, अरु सरूपको आचरण; ए परमातमभाउ, शिवकारन एई सदा ॥ ४५ ॥

अर्थः— बाह्य दृष्टि छांडीने अंतर्दृष्टि आपीने अलक्षनो जापकरवो, अने तेना स्वरूपनुं आचरण करवुं, एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्रने आचरिये, तेथकी परमात्मभावसिद्ध थाय; सदाकालनेविषे एज मोक्षनुं कारण छे ॥ ४५ ॥

हवे बाह्य दृष्टिवडे बंध पद्धति थाय ते कहे छेः— अथ बंध मार्ग निरूपणंः—

॥ सोरठाः ॥— करम शुभाशुभ दोइ, पुद्गल पिंड विभाव मल; इनसों मुगति न होइ, नांही केवल पाइए ॥ ४६ ॥

अर्थः— शुभकर्म ते पुण्य ने अशुभ कर्म ते पाप ए बेउ कर्मछे, पुद्गलना पिंड छे, अने विभाव जे राग द्वेषादिक मलरूप छे ए बेउनेविषे दृष्टि रहेवाथी मुक्ति थाय नहीं, अने केवलज्ञाननुं पद पामिये नहीं ॥ ४६ ॥

ए वात उपर शिष्य प्रश्न करे छे, ने तेनो उत्तर गुरु दिये छेः—

अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कोउ शिष्य कहे स्वामी अशुभ क्रिया अशुद्ध, शुभ क्रिया शुद्ध तुम ऐसी क्यों न वरनी ?; गुरु कहे जबलों क्रियाको परिणाम रहै, तबलों चपल उपयोग योग धरनी; थिरता न आवे तोलों शुद्ध अनुभो न होइ, याते दोउ क्रिया मोष पंथकी कतरनी; बंधकी करैया दोऊ दुहूमें न भली कोऊ, बाधक विचारमें निषिद्ध कीनी करनी ॥ ४७ ॥

अर्थः— कोई शिष्य पूछे छे के हे स्वामी ! तमे एवुं वर्णन केम करता नथी के अशुभ क्रिया जे हिंसादिक ते अशुद्ध छे अने शुभ क्रिया जे दया दानादिक ते शुद्धछे? त्यारे गुरु उत्तर आपेछे के अहो शिष्य! ज्यांसुधी क्रियाना परिणाम रहे छे त्यां सुधी उपयोगनी धरनी के० क्षेत्री एटले उपयोगवंत आत्मा चंचल रहे छे. ज्यांसुधी

क्रियामां उपयोग रहे त्यांसुधी आत्मानी स्थिरता थाय नहीं, अने आत्मानो शुद्ध अनुभव होय नहीं, ए उपरथी ए पुण्य पापनी बेउ क्रिया छे ते मोक्षमार्गनी कत रणी समान छे; बंधनी करनारछे एथी बेउ क्रियामां एक पण भली नथी. ज्यां मुक्तिमार्गनो बाधक विचारे त्यां बेउ क्रिया निषिद्ध कीधी छे ॥ ४३ ॥

हवे मात्र ज्ञान मोक्षनो मार्ग छे ते कहे छेः– अथ ज्ञान मोक्ष मार्ग थइ कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– मुकतिके साधककों बाधक करम सब, आतमा अनादिको करममांहि लुक्यो है; एते परि कहै जो कि पाप बुरो पुण्य भलो, सोइ महा मूढ मोखमारगसों चुक्यो है; सम्यक् सुभाउ लिये हियेमें प्रगट्यो ज्ञान, उरध उमंगि चल्यो काहूपे न रुक्योहै; आरसीसो उज्वल बनारसी कहत आपु, कारन सरूप व्हैके कारजकों ढुक्यो है ॥ ४७ ॥

अर्थः– जे आत्मा मुक्तिनो साधक छे, तेने सर्व कर्म बाधक छे; एथीज अनादि काळनो आत्मा कर्ममां लुक्यो एटले दबाई रह्यो छे; एम छतां पण जो कोई एवुं कहेके, पाप कर्म नठारुं छे, ने पुण्य कर्म सारुं छे, तेने महा मूढ जाणवो; ने ते मोक्ष मार्गथी चुक्यो छे, एम जाणवुं. एवामां कोईने भव्यत्व परिपाक थकी सम्यक् स्वभावनी प्राप्ति थइ तेवारे हीयामां ज्ञान प्रगट्युं तो ते ऊर्ध्व दशा तरफ उमंगे करीने चाल्यो, पण कोई कर्मथी रोकायो रह्यो नहीं. ते आरीसानी पठे उज्वल थईने निज ज्ञानोपयोगीपणे कारण स्वरूपी थईने पोताना मुक्तिरूप कार्यने पोतेज ढुके छे, एवुं बनारसी दास कहे छे ॥ ४७ ॥

हवे ज्ञाननो तथा कर्मनो विवरो बतावेछेः– अथ ज्ञान तथा कर्म विवरनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जोलों अष्ट कर्मको विनास नाही सरवथा, तोलों अंतरातमामें धारा दोई बरनी; एक ज्ञानधारा एक शुभाशुभ कर्मधारा, दुहूकी प्रकृति न्यारी न्यारी न्यारी धरनी; ग्यान धारा मोखरूप मोखकी करन हार, दोषकी हरन हार भौ समुद्र तरनी; इतनो विशेष जु करमधारा बंधरूप, पराधीन सकति विविध बंध करनी. ॥ ४९ ॥

अर्थः– ज्यां सुधी आठ कर्मनो सर्वथा विनाश थतो नथी त्यांसुधी मुक्ति न होय अने त्यांसुधी अंतरात्मा थकी बे धारा वहेछे; तेमां एक ज्ञाननी धारा ने बीजी शुभाशुभ कर्मनी धारा. ए बंनेनी प्रकृति जुदी जुदी छे, अने धरनी के० क्षेत्र ते पण जुदुं जुदुं छे. एमां एटलुं विशेष छे के जे कर्मधारा छे ते बंधरूप छे; अने जडपणाने लीधे एनी शक्ति पराधीनरूपछे अने प्रकृतिबंध, स्थितिबंध तथा रसबंध एवा भात भा

तना बंधनी करनारीछे; अने ज्ञानधारा मोक्षस्वरूप छे; मोक्षनी करनारी छे; ने दोष मात्रनी हरनारी छे अने भवसमुद्र तरवाने तरनी के० नाव समान छे. ॥ ४९ ॥

हवे मोक्ष कर्त्ता जे ज्ञान क्रिया एवो जे स्याद्वाद तेनी प्रशंसा करेछेः–

अथ स्याद्वाद प्रशंसाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–समुझै न ज्ञान कहै करम कियेसों मोक्ष, ऐसे जीव विकल मिथ्यातकी गहलमें; ज्ञान पछ गहै कहै आतमा अबंध सदा, वरते सुछंद तेउ बूडे है चहलमें; जथाजोग करम करे पैं ममता न धरे, रहै सावधान ज्ञान ध्यानकी टहलमें; तेई भवसागरके उपर व्हे तरे जीव, जिन्हको निवास स्याद्वादके महलमें ॥ ५० ॥

अर्थः– क्रियावादी कहेछे के, " न ज्ञान श्रेय " एनो अर्थ एछे के ज्ञान भलुं नथी. जेमां संशय उपजे छे, अने संशय थया थकी जीव अहींनो नहीं ने तहींनो पण नहीं एवो थाय छे, माटे क्रिया कर्म करवाथीज मोक्ष छे, एम विकल थयलो जीव मिथ्यात्वनी गहलमां कहेछे. हवे जे ज्ञानवादी सांख्यमती छे ते ज्ञाननोज पक्ष ग्रहीने रहेछे ने एवुं कहेछे के बंध ने मोक्ष प्रकृतिने विषेज छे, पण आत्मा तो सदा अबंध पणे वर्त्ते छे; एवी श्रद्धावडे स्वछंद के० पोतानी मरजीमां आवे तेम चालेछे, तेउ चहल के० कर्दममां बूडेला छे. अने जे स्याद्वादी छे ते कोईना विरोधी नथी, तेथी यथायोग्य एटले गुण ठाणा माफक कर्म क्रिया करेछे, पण कर्मने उदय दशामां राखे छे, अने ममताने धरता नथी, ज्ञान ध्याननी सेवामां सावधान रहे छे; एवा स्याद्वादी जीव उपर थइ रह्या थका भवसागर तरेछे, जेनो निवास स्याद्वाद रूपमेहेलमां छे. ॥ ५० ॥

हवे मूढनी तथा विचक्षणनी क्रियानुं वर्णन करे छेः– अथ मूढविचक्षण क्रिया वर्णनंः

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे मतवारो कोउ कहै और करै और, तैसे मूढ प्रानी विपरीतता धरतु है; अशुभ करम बंध कारन बखानै माने, मुगतिके हेतु शुभ रीति आचरतु है; अंतर सुदृष्टि भई मूढता बिसरि गई, ज्ञानको उद्योत भ्रम तिमिर हरतु है; करनसों भिन्न रहै आतम सरूप गहै, अनुभौ आरंभि रस कौतुक करतु है. ॥ ५१ ॥

अर्थः– जेम कोई मतवारो पुरुष कहे कइं अने करे कइं तेम मूढ प्राणी उलटोज भाव धारे छे, एटले अशुभ कर्मने बंधनुं कारण समजे अने मुक्तिनो हेतु शुभ रीत के० शुभ क्रियाने आचरेछे. हवे ज्ञानीने अंतर सुदृष्टि थई तेथी मूढता मटी गई ने ज्ञाननों उद्योत थयो; तेणे करीने भ्रमरूप तिमिरनो नाश थयो, त्यारे मुक्तिनुं कारण जे शुभ क्रिया छे तेथी ते ज्ञानी भिन्न रहे, ममता न धरे, अने आत्मानुंज स्वरूप ग्रही आत्माना अनुभवना आरंभना रसनुं कौतुक करे छे. ॥ ५१ ॥

॥ इति श्री समयसार नाटकको पुण्य पाप एकत्वी कथन चतुर्थ द्वार संपूर्णः॥

॥ दोहराः॥–पुन्य पापकी एकता, बरनी अगम अनुप; अब आश्रव अधिकार कहुं, कहौं अध्यातम रूप. ॥ ५२ ॥

अर्थः– पाप पुण्यनी एकता तो अगम छे अने अनुपम छे तेनुं वर्णन कीधुं, हवे कइंक आश्रवनो अधिकार छे ते कहुंबुं अने अध्यात्मनुं स्वरूप कहुबुं ॥ ५२ ॥

आश्रव सुजटनो नाश करनार ज्ञान सुजटने नमस्कार करे छेः–अथज्ञान बल वर्णनंः-

॥ सवैका इकतीसाः॥– जे जे जगवासी जीव थावर जंगम रूप, ते ते निज वस करी राखे बल तोरिके; महा अजिमानी ऐसो आश्रव अगाध जोधो, रोपि रनथंज ठाढो जयो मूछ मोरिके; आयो तिहि थानक अचानक परमधाम, ज्ञान नाम सुजट सवायो बल फोरिके; आश्रव पछार्यो रनथंज तोरि डार्यो ताहि, निरखी बनारसी नमत कर जोरिके. ॥ ५३ ॥

अर्थः– जे जे थावर जंगमरूप जगत्वासी जीव छे, तेना सहज बल ने तोमीने ते ते जीवोने आश्रव जोधाए पोताने वश करी राख्याछे, एवो महा अजिमानी आश्रवरूपी अगाध जोद्धो जगत्मां रहे छे, ते रणथंज रोपीने मूछ मरोमीने ठाढो थयो छे; ते एम कहेछे के, जगत्मां मने जीते एवो कोइ नथी. ते स्थले अचानक परम धाम के० अति तेजस्वी ज्ञान नामनो सुजट उपला आश्रव जोद्धानो प्रतिपक्षी ते सवायो बल फोरवीने लडवाने आव्यो; तेणे आश्रव सुजटने पछाड्यो अने तेनो रणथंज तोमी नाख्यो. एवा ज्ञान सुजटने निरखीने बनारसीदास हाथ जोडी नमस्कार करेछे ॥५३॥

हवे द्रव्यरूपी आश्रव अने जावरूपी आश्रवनां लक्षण कहेछेः– अने सम्यग् ज्ञाननुं लक्षण पण कहेछेः– अथ द्विविध आश्रव लछन तथा ज्ञान लछन वर्णनंः–

॥ सवैया तेइसाः॥–दर्वित आश्रव सो कहिये जहिं पुज्गल जीव प्रदेस गरासै; जावित आश्रव सो कहिए जहिं राग विरोध विमोह विकासै; सम्यक्पद्धति सो कहिये, जहिं दर्वित जावित आश्रव नासै; ज्ञानकला प्रगटै तिहि थानक, अंतर् बाहरि और न जासे॥५४॥

अर्थः–ज्यां पुज्गल द्रव्य छे ते जीवना सर्व प्रदेशने ग्रासेछे के० गली जायछे, ते द्रवित आश्रव जाणीये. अने ज्यां द्रवित आश्रवना प्रसंग थकी आत्माने विषे राग द्वेष विमोहनो विकाश थाय त्यां जावित आश्रव कहीये, अने ज्यां आत्माने विषे सम्यक् पद्धति के० सम्यक् स्वरूप कहिये त्यां तेने द्रवित आश्रव अने जावित आश्रवनो नाश थाय, एटले सम्यक् पद्धतिनेविषे ज्ञान कला प्रगटे, तेथी अंतर्जावाश्रव मां बाहिर द्रव्याश्रवमां बीजुं जासे नही, सम्यक्ज दीठामां आवे ॥ ५४ ॥

हवे सम्यक् स्वरूपनो धणी जे ज्ञाता तेनुं लक्षण कहेछे. अथ ज्ञाता लक्षणंः–

॥ चोपाई छंदः॥–जो दरवाश्रवरूप न होई, जह भावाश्रव भाव न कोई; जाकी दशा ज्ञानमय लहिये, सो ज्ञातार निराश्रव कहिये ॥ ५५ ॥

अर्थः– जे द्रव्याश्रवना स्वरूपमां होय नही, अने ज्यां भावाश्रवनो पण भाव कोई नथी, अने जेनी दशा ज्ञानमय होय, तेज जीव ज्ञानी अने आश्रवरहित कहिये.

हवे ज्ञातानी समर्थाईथी निराश्रवपणुं देखाडे छेः–अथज्ञाताकोसमर्थपणोवर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जेते मन गोचर प्रगट बुद्धि पूरवक, तिन परिनामनकी ममता हरतु है; मनसा अगोचर अबुद्धि पूरवक भाव, तिन्हिके विनासवेको उद्यम धरतु है; याहि भांति परपरिनतिको पतन करे, मोखको जतन करै भौजल तरतु है; एसै ज्ञानवंत ते निराश्रव कहावै सदा, जिन्हको सुजस सुविचक्षण करतु है ॥ ५६ ॥

अर्थः– जेटला परिणाम प्रगट मनगोचर छे, एटला जिन परिणामने मनमां संज्ञा रेछे, जाणे छे, अने बुद्धिपूर्वक के० पोतानी अहं बुद्धिवडे जे अशुद्ध परिणाम उपजेछे, ते परिणामनी ममता छांडे छे; अने जे भाव मनथी अगोचर के० जेनुं स्वरूप मनवडे देखाय नही, अने अबुद्धि पूर्वक के० जेने बुद्धिनो प्रचार लागे नही, एवा अनागत कालना जे अशुद्ध परिणाम, तेनो विनाश करवाने उद्यम करे छे, ए रीते परपरिनति के० पर वस्तुनो जे परिणाम जे अतीत कालमां थयो छे, वर्त्तमान कालमां छे, अनागत कालमां थशे, तेनुं पतन करे. अने मोक्ष के० तेथी छुटवुं तेनुं जतन करे, ते भव सागरथी तरे, एवा जे ज्ञानवान् प्राणी छे तेतो सदा निराश्रव कहेनांवाय, जे सुजश ने स्तुति ते पंडित पुरुषो गायछे ॥ ५६ ॥

ज्ञानीने निराश्रव कह्या तेउपर शिष्य प्रश्न करेछेः– अथ शिष्य प्रश्न कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– ज्यों जगमें विचरै मतिमंद सुछंद सदा वरते बुध तैसे; चंचल चित्त असंजत वैन, सरीर सनेह जथावत जैसे; भोग सजोग परिग्रह संग्रह मोह विलास करै जहाँ ऐसे, पूछत शिष्य आचारजसों यह, सम्यकवंत निराश्रव कैसे?॥५७॥

अर्थः– जेम मतिमंद के० अज्ञानी जन जगत्मां स्वछंद के० मरजी मुजब वर्त्तें, तेम पंडित पण सदा तेवी रीते वर्त्तें, ते आवी रीते चंचल चित्तवाला रहे, असंजत वेन के० विचारविना वचन बोले, अने शरीर स्नेहने प्रवर्त्तावे, अने अज्ञानीनी माफक भोगसंयोग राखे, परिग्रहनो संग्रह करे, अने ज्ञान अवस्थामां मोहविलास एवो ज करे, ए रीते अज्ञानीनी अने ज्ञानीनी एक सरखी रीति जोईने शिष्य आचार्यने पूछेछे के, एने सम्यक्त्ववंत निराश्रव केम कहिये ? ॥ ५७ ॥

हवे ए प्रश्ननुं उत्तर गुरु आपेछेः– अथ गुरु उत्तर कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– पूरव अवस्था जे करमबंध कीने अब, तेई उदै आई नाना

भ्रांति रस देत हैं; केई शुभ शाता केइ अशुभ अशातारूप, दुहुसों न राग न विरोध सम चेत हैं; यथा योग क्रिया करै फलकी न इछा धरै, जीवन मुगतिको बिरुद गहिलेत हैं; यातें ज्ञानवंतकों न आश्रव कहत कोउ, मुद्धतासों न्यारे भये सुद्धता समेत हैं. ॥ ५८ ॥

अर्थः—पूर्वकालमां अज्ञान अवस्थानेविषे जे जे कर्मबंध कीधेलां होय, तेज कर्मो वर्त्तमान कालमां उदय आवीने नाना प्रकारनो रस आपेछे. तेमां केटलांएक शुभ कर्म ते शातारूप छे, अने केटलांएक अशुभ कर्म अशातारूप छे; एवां बेउ जातनां कर्मनेविषे ज्ञानीने राग अने विरोध नथी, एथी ज्ञानी समचित्त छे. अने यथायोग्य के० उदयमाफक क्रिया करे, पण फलनी इछा राखे नही; ने जीवताज मुक्त थया छे, तेथी जीवन्मुक्तिनुं बिरुद धारे छे, ए रीते ज्ञानवंत मनुष्यने कोई आश्रव कहेतुं नथी. ते मूढताथी न्यारो थयो अने शुद्धता समेत छे ॥ ५८ ॥

हवे राग, द्वेष, मोह अने ज्ञानना लक्षण कहेछेः—अथ राग, द्वेष, मोह, ज्ञान लक्षणः—

॥ दोहराः॥— जो हितभाव सु राग है, अनहितभाव विरोध; भ्रामकभाव विमोह है, निर्मल भाव सुबोध ॥ ५९ ॥

अर्थः—जे हितभाव छे ते राग छे अने अनहितभाव ते विरोध छे; अने भ्रामकभाव छे तेने विमोह कहिये, अने निर्मलभाव ते बोध एटले ज्ञान कहिये ॥ ५९ ॥

हवे राग द्वेषनुं स्वरूप कहेछेः— अथ राग द्वेष कथनः—

॥ दोहाः॥— राग विरोध विमोह मल, एइ आश्रव मूल; एइ कर्म बढाइके, करै धरमकी भूल ॥ ६० ॥

अर्थः— राग, द्वेष ने विमोह जे छे ते आत्माने मल छे, अने एज दोष आश्रवनां मूल छे. अने एज राग द्वेष अने मोह छे. ते कर्मने वधारीने धर्मने भुलावी दियछे॥६०॥

हवे ज्ञाताने निराश्रव कहेछेः— अथ ज्ञातानिराश्रव कथनः—

॥ दोहाः॥— जहां न रागादिक दसा, सो सम्यक् परिनाम; यातें सम्यकवंतको, कह्यो निराश्रव नाम ॥ ६१ ॥

अर्थः—ज्यां राग, द्वेष, मोहनी दशा न मले तेने सम्यक् परिणाम कहिये, ए उपरथी सम्यक्त्ववंत पुरुषने निराश्रवी नाम आप्युं ॥ ६१ ॥

हवे ज्ञाता जे छे ते निराश्रवपणामां विलास करेछेः— अथ ज्ञाता कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जे कोई निकट भव्य रासी जगवासी जीव, मिथ्या मदभेद ज्ञान भाव परिनये हैं; जिन्हकी सुदिष्टिमें न राग दोष मोह कहूं, विमल विलोकनि में तीनो जीति लये हैं; तजि परमाद घट सोधि जे निरोधि जोग, शुद्ध उपयोगकी

दशामें मिलिगये हैं; तेई बंध पद्धति विडारि पर संग झारि आपुमें मगन व्हैके आ परूप भये हैं ॥ ६२ ॥

अर्थः– जे कोई भव्य राशिमां जगत्वासी जीव छे, ते भव्यत्व परिपाकने लीधे निकट केο पासे थया; ने मिथ्यामतिने भेदीने पोतानुं स्वरूप जे ज्ञान भाव तेने विषे परिणमी रहे छे; जेनी ज्ञानरूपी दृष्टिमां राग, द्वेषने मोह कंइ पामिये नही; अने निर्मल निज स्वभावनी विलोकतामां राग, द्वेषने, मोह ए त्रणेने जीती लीधा छे; अने पांचे प्रमाद तजी पोताना शरीरने साधीने मन, वचन अने कायाने शैलेशीकरणमां निरोध करीने शुद्ध उपयोग दशा जे केवल दशा तेने विषे मली गया, तेवा ज्ञानी बंधनो मार्ग विडारी अने परवस्तुनो संग छोडीने आत्माने विषे मग्न थई आपरूपें थया ॥६२॥

शिष्य पूछेछे के, एम ज्ञाताने विषे निराश्रवपणुं थशे तो आयुष्यपर्यंत ज्ञाता निराश्रवी थशे. गुरु उत्तर आपेछे के, ज्ञातापणुं तो उपशमभावने क्षयोपशम भाववडे चंचल छे ते कहेछेः–अथ उपशमी क्षयोपशमी व्यवस्था कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जेते जीव पंडित खयोपशमी उपशमी, तिन्हकी अवस्था ज्यौं लुहारकी संडासी है; छिन आगमांहि छिन पानिमांहि तैसे एउ, छिनमें मिथ्यात छिनु ज्ञान कला भासी है; जोलौं ज्ञान रहे तोलो सिथिल चरन मोह, जैसे कीले नागकी सगति गति नासी है; आवत मिथ्यात तब नानारूप बंध करे, जो उकीले नागकी प्रकृति परगासी है ॥ ६३ ॥

अर्थः– मिथ्यात्वनी गांठ भेद कीधा पछी जे मिथ्यात्वनो अंश उदय आवे छे ते जेनो खपी जाय अनें मिथ्यात्वपुंज उपशम्यो रहे, ते जीव क्षयोपशमी कहिये अने जेने अंतरमुहूर्त्तलगी उपशम्योज रहे तेने उपशमी कहिये. एवा बेउ भाव ते जे जीव पंडित छे तेनी अवस्था ते लुहारनीसाणसी समान छे; जेम साणसी घडीमां लोहने ग्रहण करी आगमां होयछे, ने घडीमां तेहज साणसी लोखंडने ठंडो करवा सारु पाणीनेविषे होयछे; तेम ए क्षयोपशमी अने उपशमी जीव क्षण एकमां मिथ्यात्व भावमां आवे ने क्षणनेविषे ज्ञानकलाना प्रकाशमां रहेछे. एवी अवस्थानेविषे ज्यांसुधी ज्ञानकला रहेछे, त्यांसुधी चारित्र मोहनीयनी पचीस प्रकृति शिथिल केο ढीली थई रहेछे; जेम मंत्रनी जकीए करीने सर्पनी शक्ति–गति शिथिल थई जायछे, तेम ए पण जाणवुं. हवे ए जीवने फरी मिथ्यात्व उदय आवेछे त्यारे तो नाना प्रकारना कर्मबंध करेछे; जेम नागनी उकीलनी करवाथी नागनी पोतानी प्रकृति फरीथी प्रगटे ते रीते जाणवुं. ॥ ६३ ॥

हवे ज्ञानना शुद्धपणानी प्रशंसा कहेछेः–अथ शुद्धनय प्रशंसाः–

॥ दोहा ॥—यह निचोर या ग्रंथको, कहै परम रस पोष; तजै शुद्धनय बंध है, गहै शुद्धनय मोष ॥ ६४ ॥

अर्थः—आ समयसारग्रंथनुं रहस्य एज हे अने एज उत्कृष्ट रसनो पोषकहे के जे शुद्धतानी नय रीति छांडी तो बंध हे अने शुद्धतानी नयरीति ग्रही तो मोक्ष हे ॥६४॥

हवे बे नयनेविषे जीवनो विलास कही बतावे हेः—अथ जीव विलास वर्ननंः—

॥ सवैया इकतीसा ॥—करमके चक्रमें फिरत जगवासी जीव, व्है रह्यो बहिर मुख व्यापत विषमता; अंतर् सुमति आई विमल वडाई पाई, पुद्गलसों प्रीति टूटी छूटी माया ममता; शुद्ध नै निवास कीन्हो अनुभौ अभ्यास लीन्हो, भ्रमजाव गंडिदीनो जिनो चित्त समता, अनादि अनंत अविकलप अचल ऐसो, पद अवलंबी अवलोके राम रमता ॥ ६५ ॥

अर्थः—चौदराजलोकमां कर्मनुं चक्र के० कटक फरी रह्युं हे, तेमां जगत्वासी जीव पण फरी रह्यो हे, अने ए फरवामां जीव विषमताए युक्त थयो थको क्यारे इष्ट संयोगी ने क्यारे अनिष्ट संयोगी थई ने तेमां बहिर्मुख थई रह्यो, एटले बाह्य विषय जोगनोज ग्राहक थयो, अने अंतर्दृष्टिथकी आत्मा न जाण्यो, एटलामां अंतर्नेविषे सुमति उपजी, तेणे करीने पोतानी निर्मल प्रजुताने पाम्यो, त्यारे परवस्तु जे पुद्गल तेनी प्रीति तूटी. एटला कालसुधी पुद्गलनी माया ममता जे नहीं छुटी हती ते छुटी. जेम शुद्धनयवडे आत्मानुं स्वरूप कह्युं, तेवा शुद्धनयमां पोते निवास कीधो, अने आत्मस्वरूपमां उपयोग राखीने अनुजवनो अन्यास लीधो, एथी भ्रमजावनो त्याग थयो, अने मन जे हे ते समाधिनेविषे लीन थयुं; त्यारथी अनादि अनंत कालसुधी जे स्वरूपमां कंइ बीजा विकल्प न पामिये एवुं पोतानुं अचल पद अवलंबीने पोतानुं जे रमतारामपणु हे तेने अवलोके ॥ ६५ ॥

हवे आत्मानुं शुद्धपणु सम्यग् दर्शन हे, तेनी प्रशंसा करे हेः—अथसम्यक्त्वप्रशंसाः—

॥ सवैया इकतीसा ॥— जाके परगासमें न दीसे राग दोष मोह, आश्रव मिटत नहि बंधको तरस है; तिहुं काल जामें प्रतिबिंबित अनंतरूप, आपु हु अनंत सत्ता नंततैं सरस है; जावश्रुत ज्ञान परवान जो विचारि वस्तु, अनुजो करे जहां न बानीको परस है; अतुल अखंड अविचल अविनासी धाम, चिदानंद नाम ए सो सम्यक दरस है

अर्थः—जे शुद्ध आत्माना प्रकाशमां राग, द्वेष, मोह न देखाय, अने आश्रव न होय तेमां बंधनो तरस के० लागवुं ते पण न होय, अने जे शुद्ध आत्माना प्रकाशमां त्रणे काले अनंतरूप प्रतिबिंबित थाय हे; अने निजस्वरूप पण अनंत हे, अने सत्तानंतमां सरस हे, ते सत्तास्वरूपी अनंत पदार्थ हे, तेथी सरस हे, एटले जेना अनंतपर्याय

ज धर्म कहे, अने भावश्रुत ज्ञानने प्रमाण करी वस्तुनो विचार अनुभव करे
यां वाणीनो स्पर्श नही, एटले जे वचन गोचर नथी, अनक्षररूपनो अनुभव
रे, ए संयोगी गुणस्थानकनी दशा छे. जेनी तुलना नथी एटले अतुल; वली
खंडना नथी माटे अखंड, एवुं अचल ने अविनाशी धाम के० तेजोमय तेज
नंद स्वरूप छे; एवुं ईश्वररूप सम्यग् दर्शननुं स्वरूप कहिये ॥ ६६ ॥

॥ इति श्री नाटक समयसारविषे बालाबोधरूप आश्रवद्वार पंचम संपूर्णः ॥

दोहाः॥– अधिकार आश्रवको यह, कह्यो यथावत् जेम; अब संवर वरनन करों, भविक धरि प्रेम. ॥ ६७ ॥

र्थः– ए रीते आश्रवनो अधिकार कह्यो; हवे संवरतत्त्वनुं वर्णन करुंछुं; अहो ! क के० भव्य प्राणीओ! प्रेम धरीने ते सांभलो. ॥ ६७ ॥

हवे संवरनुं आदि ज्ञानवस्तु तेने नमस्कार करेछेः– अथ ज्ञान वर्णनंः–

सवैया इकतीसाः॥– आतमको अहित अध्यातमरहित ऐसो, आश्रव महातम
क अंडवत है; ताको विसतार गिलिवेकों परगट भयो, ब्रह्मंडको विकासी ब्रह्
ात है; जामें सबरूप जो सबमें सबरूपसो पैं सबनि सों अलिप्त अकाशखंडवत
ो है ज्ञान भानु शुद्ध संबरको भेष धरे, ताकी रुचि रेखको अमारे दंडवत है॥६८॥

अर्थः– आत्मानुं अहित करता अने अध्यात्मस्वरूपथी रहित एवुं आश्रवरूप म
म के० महा अंधकार अखंडपणे अंडवत के० सर्व लोकने ढांकी रह्यो छे, तेनो
तार गलवाने जे ज्ञानसूर्य प्रगट थयो ते ब्रह्मांड जेवो सर्व लोकालोकने विकाश
करनारो थयो, अने ब्रह्मांडनुं मंडन जेथकी थाय छे,अने जेने विषे सर्वरूप भासे
अने जे सर्वरूपे सर्वमां पामिये छियें अने जे सर्व मूर्त्तिक वस्तुथी आकाशखंडनी
अलिप्त छे; ते ज्ञानरूपी सूर्य तथा जे शुद्ध संवरनो भेष धरी रह्या छे; तेनी रुचि
ाने एटले तेना उदयने अमारो दंडवत् के० नमस्कार छे. ॥ ६८ ॥

हवे जड चेतनना भेद ज्ञान थकीज संवररूपी परमात्माने ओलखाय छे, ते सम
वे छेः– अथ भेदज्ञान महिमा कथनः–

॥ सवैया तेइसाः॥–शुद्ध सुछेद अभेद अबाधित, भेद विज्ञान सु तीछन आरा; अं
र भेद सुभाउ विभाव, करे जड चेतनरूप दुफारा; सो जिन्हके उरमें उपज्यो न रुचै
न्हको परसंग सहारा; आतमको अनुभौ करि ते हरखे परखे परमातम धारा॥६९॥

अर्थः–शुद्धपणे स्वछेद के० पोतपोताना न्यारा स्वरूपने बतावनार,अभेद के० एक
रूप अबाधित एटले कोई प्रमाणांतरे अखंडित एवुं भेदज्ञान ते तीक्ष्ण सुलाख छे,
सुलाखथी अंतरात्मामां भेदन करीने स्वभाव अने विभावने जुदा जुदा करे,ने ज

डरूप तथा चेतनरूपने डुफार के० न्यारा करी बतावे, एवुं ज्ञेदज्ञान जेना रुदयनेविषे उपज्युं ठे, तेज जीवने परवस्तुनो संग ते सहारा के० रुचे नही. अने तेज जीव पोताना स्वरूपनो अनुज्ञव करी यथार्थपणे अंतरात्मानेविषे जे परमात्मानी धाराठे तेनेपारखे.

हवे ज्ञेदविज्ञान जे ठे, ते सम्यग् ज्ञान ठे, तेनी समर्थाइ थकी स्वरूपनी प्राप्ति थाय ठे; ते कहेठेः– अथ सम्यक्त्व सामर्थ्य कथनः–

॥ सवैया तेइसाः॥– जो कबहु यह जीव पदारथ, औसर पाइ मिथ्यात मिटावै; सम्यक धार प्रवाह वहे गुन, ज्ञान उदे मुख ऊरध धावै; तो अज्ञिअंतर दर्वित ज्ञावित कर्म किलेश प्रवेश न पावै; आतम साधि अध्यातमको पथ पूरण व्है परब्रह्मकहावै॥७०॥

अर्थः– जो कोई आ जीव पदार्थ ठे ते यथाप्रवृत्ति करणरूप अवसर पामीने मिथ्यात्वग्रंथि ज्ञेदीने मिथ्यात्वने मिटावे; शुद्ध सम्यक् अने स्वरूप जलधारानो प्रवाह वहे अने ज्ञानगुणना उदय वडे ऊर्ध्व मुख थईने मुक्ति सन्मुख दोडे, त्यारे अन्यंतर जे द्रवित कर्म अने ज्ञावित कर्म तेना क्लेशनो प्रवेश ते न थाय. जे प्रकृति प्रदेशरूप कर्म ते द्रवित कर्म अने राग द्वेषादिक ते ज्ञावित कर्म ए बंने प्रवेश नही करी शके अने अध्यात्मना पंथ सेलीमां आवीने आत्माने साधीने पोताना रूपमां पूर्ण थईने परब्रह्म कहेवाय. ॥ ७० ॥

हवे संवरनुं कारण सम्यग्दृष्टिठे, तेनो महिमा कहे ठेः–अथ सम्यग् दृष्टि महिमाः–

॥ सवैया तेइसाः॥–ज्ञेद मिथ्यात सु वेद महारस, ज्ञेद विज्ञान कला जिन पाई; जो अपनी महिमा अवधारत, त्याग करे उरसों ज पराई; उद्धतरीति वसे जिनके घट, होतु निरंतर ज्योति सवाई; ते मतिमान सुवर्ण समान लगे तिनकों न शुज्ञाशुज्ञकाई॥७१॥

अर्थः–मिथ्यात्वग्रंथि ज्ञेदीने तथा उपशमरूप महारस वेदीने जे बुद्धिवंते ज्ञेद विज्ञाननी कला पामी ठे, अने जे ए ज्ञेदविज्ञान वडे पोताना स्वरूपनी प्राप्ति करीने पोताना ज्ञान, दर्शन चारित्ररूप महिमाने अवधारे, उर के० हैया थकी पराई सोज के० सामग्री तेनो त्याग करे अने जेना घटमां उद्धतरीति के० देशविरति तथा सर्व विरतिनी रीत फुरी अने निरंतर तप थकी जेनी सवाई ज्योति थाय ठे, तेने बुद्धिमान् कहिये, ते सुवर्णसमान ठे. तेमने शुज्ञाशुज्ञ कर्मरूप काट लागी शकतो नथी ॥७१॥

हवे संवरनुं मूल ज्ञेद विज्ञान ठे; ते मोक्षनुं कारण कही समजावेठेः–

अथ ज्ञेदज्ञान महिमा कथनः–

॥अडिल्ल ठंदः॥–ज्ञेदज्ञान संवरनिदान निरदोष है; संवरसो निरजरा अनुक्रम मोष है; ज्ञेदज्ञान शिवमूल जगतमहि मानिये, यदपि हेय है तदपि उपादेय जानिये॥७२॥

अर्थः– ज्ञेदज्ञान जे ठे ते निर्दोष संवरनुं निदान के० मूलकारण ठे अने निर्जरा

नुं कारण संवर छे अने निर्जरा जे छे ते मोक्षनुं कारण छे. ए अनुक्रम प्रमाणे मोक्षनुं कारण परंपराथी भेदविज्ञानज छे. अगर जो शुद्ध स्वरूपनी अपेक्षाने लीधे भेदज्ञान त्याग जोग छे, तो पण नयोनुं उपादेय, ते आदरवा जोग्य जाणिये. ॥ ३२ ॥

हवे स्वरूपनी प्राप्ति थया पछी भेदज्ञाननुं हेयपणुं देखाडेछेः—स्वरूप कथनः—

॥ दोहाः॥— भेदज्ञान तबलों भलो, जबलों मुक्ति न होय; परम ज्योति परगट जहां, तहां विकल्प न कोय ॥ ३३ ॥

अर्थः— भेदज्ञान त्यांसुधी भलुंछे, के ज्यांसुधी मुक्ति थई नथी. ज्यां परम ज्योति प्रगट थाय त्यां विकल्प कोई रहे नहीं, तो भेदज्ञान केम करीने रही शके ? ॥ ३३ ॥

भेदज्ञान मुक्तिनो उपाय छे ते कहेछेः— अथ भेदज्ञानमहिमा कथनः—

॥ चोपाईः॥— भेदज्ञान संवर जिन्हि पायो, सो चेतन शिवरूप कहायो; भेदज्ञान जिनके घट नांही, ते जडजीव बंधे घटमांही. ॥ ३४ ॥

अर्थः— जे जीवने भेदज्ञानरूप संवरनी प्राप्ति थइ, तेज चेतन शिवरूप कहियें; जेना हृदयनेविषे भेदज्ञान नथी, ते मूर्ख घट पिंडनेविषे बंधायलो रहेछे. ॥ ३४ ॥

हवे भेदविज्ञानवडे आत्मानो महिमा वधेछे ते कहेछेः—अथ भेदज्ञानको महात्म्यः—

॥ दोहराः॥— भेदज्ञान साबू भयो, समरस निर्मल नीर; धोबी अंतर आतमा, धोवै नीज गुन चीर. ॥ ३५ ॥

अर्थः— भेदज्ञान जे छे ते साबुरूप जाणवुं; अने उपशम रस ते निर्मल पाणी छे ने अंतर् आत्माने धोबी मानवो; ते धोबी पोताना गुणरूप वस्त्रने धुवेछे ॥ ३५ ॥

हवे भेदविज्ञाननी जे क्रिया छे ते कहेछेः—अथ भेदज्ञानकी कर्त्तव्यता महात्म्यः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसै रजसोधा रज सोधिके दरब काढे, पावक कनक काढी दाहत उपलकों, पंकके गरभमे ज्यो डारिये कतक फल, नीर करे उज्वल नितारिडारे मलको; दधिको मथैया मथि काढे जैसै माखनको, राजहंस जैसै दूध पीवै त्यागि जलको; तैसै ज्ञानवंत भेदज्ञानकी सकति साधि, वेदे निज संपति उछेदे परदलको॥३६॥

अर्थः— जेम कोइ रज सोधा के० जोनारो रजने सोधीने एटले सोना रूपा प्रमुख द्रव्यने काढवाने पावक के० अग्निने लगाडे, ने सोनुं काढीलइ पथरा धूल वगेरेने बाली नाखेछे. वली जेम कतकफलने पंकना गर्भनेविषे नाखीये तो ते फल जलने मेलथी जूडुं करेछे, वली जेम दधिनो मथनहार दधिनुं मथन करी माखणने जूडुं करेछे ने राजहंस पाणी दूध भेगां होय तेमांथी मात्र दूध पीइ जायछे, पाणीने जूडुं करे छे; तेम ज्ञानवंत प्राणी भेदविज्ञाननी शक्ति साधीने पोतानी ज्ञानसंपत्तिने वेदे अने परदल के० पुद्गलनुं कटक जे राग द्वेषादिक तेने कापी नाखेछे. ॥ ३६ ॥

अथ भेदज्ञान मोक्षमूल यह कथनः–

॥ छप्पय छंदः॥– प्रगट भेद विज्ञान, आपगुण परगुणजानै; परपरिनति परि त्यागि शुद्ध अनुभव थिति ठानै; करि अनुभव अभ्यास, सहज संवर परगासै; आश्रव द्वार निरोद्ध, कर्म घनतिमिर विनासै; छय करिविभाव समभाव भजि, निरविकल्पनिज पद गहै; निर्मल विशुद्ध सासुत सुथिर, परम अतींद्रिय सुख लहै. ॥ ७६ ॥

अर्थः– भेद ज्ञान जे छे ते प्रगटपणे पोताना तेम पारका गुणने जाणेछे, तेथी पर वस्तुमां जे परिणमन छे तेनुं ज्ञान करे, पोताना शुद्ध अनुभवनो ठराव राखे, ने ते अनुभवनो अभ्यास करीने सहज संवरना रूपनो प्रकाश करे, आश्रव द्वारनो निरोध करीने कर्मरूप मेघ अंधकारनो नाश करे; अने विभाव के० मोह दशानो क्षय करीने समभाव के० समाधिने भजे, तेणे करीने ज्यां कांई विकल्प नथी एवुं पोतानुं निर्विकल्प पद तेने पामे, एटले जे सुखनेविषे मल नथी ए उपरथी ते विशुद्ध अनंत कालसुधी एकरूप तेथी शाश्वत स्थिर एवुं अतींद्रिय के० इंद्रियगोचर नही एवुं सुख पामे.

॥ इति श्री समयसारनाटकको बालाबोधरूप संवर द्वार छठो संपूर्णः ॥

॥ दोहाः–बरनी संवरकी दसा, जथा जुगति परमान; मुक्ति वितरनी निर्जरा, सुनहु भविक धरि कान ॥ ७७ ॥

अर्थः–संवररूपनी दशा कही ते युक्ति तथा प्रमाणे करी कहीछे; हवे मुक्तिनी वितरणी के० आपनारी एवी जे निर्जरा छे तेनुं वर्णन करुछुं:– ते अहो! भव्य लोको तमे कान दईने सांभलो. ॥ ७७ ॥

हवे निर्जरानुं केवुं स्वरूप छे ते कहेछेः– अथ निर्जरास्वरूप कथनः–

॥ चौपाईः॥–जो संवर पद पाइ अनंदे; जो पूरव कृत कर्म निकंदे; जो अफंद व्हे बहुरि न फंदे; सो निरजरा बनारसि बंदे. ॥ ७९ ॥

अर्थः–पोतानुं जे शुद्ध स्वरूप राखवुं तेनुं नाम संवर कहिये; तेनुं पद पामीने संवर आनंद करे; अने पूर्वे कालनेविषे जे कर्म कीधांछे, तेने जडथी उखेडी नाखे; अने जे पूर्वे कर्मना फंद ते थकी छुटीने पाछु ते फंदमां सपडाय नही तेनुं नाम आत्मानी निर्जरा कहिये. ते निर्जराने बनारसी दास वंदन करेछे. ॥ ७९ ॥

निर्जरानुं कारण सम्यक्त्व छे, माटे सम्यक्त्वनो महिमा वखाणे छेः–

अथ सम्यक्त्व महिमा कथनः–

॥ दोहाः॥–महिमा सम्यक् ज्ञानकी, अरु विराग बल जोइ; क्रिया करत फल भुंजते, करमबंध नहि होइ. ॥ ८० ॥

अर्थः–जे कर्म छुटे तेनुं फरीने बंधन थइ शके नही, ए सम्यग् ज्ञाननो महिमा

छे. वली ए सम्यग्ज्ञान साथे वैराग बलनो जोग छे, तेथी शुभाशुभ क्रिया करता थका ने तेनुं फल भोगता थका शृंखलाबंध नवां कर्मनो बंध थतो नथी. ॥७०॥

हवे सम्यक्त्वनी महिमामां क्रिया करतांज कर्मनी निर्जरा थाय छे ते दृष्टांते कहेछेः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसे भूप कौतुक सरूप करै नीच कर्म, कौतुकी कहावै तासों कौन कहै रंक है; जैसे विभचारिनी विचारै विभिचार वाको, जारहीसों प्रेम भरतासों चित्त वंक है; जैसे धाइ बालक चुंघाइ करै लालि पालि, जानै तांहि और को जदपि वाके अंक है; तैसे ज्ञानवंत नानाभांति करतूति ठानै, किरियाकों भिन्न मानै यातैं निकलंक है. ॥ ७१ ॥

पुनः— जैसै निशिवासर कमल रहे पंकहिमें, पंकज कहावै पै न याके ढिग पंक है; जैसे मंत्रवादी विषधरसों गहावै गात, मंत्रकी सकति वाके विना विषडंक है; जैसे जीभ गहै चिकनाइ रहै रूख अंग, पानीमें कनक जैसे कांइसो अटंक है; तैसे ज्ञान वंत नानाभांति करतूति ठानै, किरियाकों भिन्न मानै याते निकलंक है. ॥ ७२ ॥

अर्थः— जेम कोई भूप के० राजा होय ने ते पोताना कौतुके करीने गमे तेवुं नीच कर्म करे ते क्रिया करवाने लीधे ते कौतुकी कहेवाय पण कोई ते राजाने रंक नही कहे; जेम कोई कुलटा व्यभिचारिणी स्त्री होय ते यद्यपि पोताना धणीनी साथे रहे खरी, तोपण धणीनी साथे तेनुं चित्त लुब्ध होतुं नथी; चित्तने विषे तो व्यभिचारनो ज विचार थाय, के जो वखत मले तो नीकली जाउं ने यारने मलुं; जेम कोइ धाव होय ने ते पारका बालकने धवरावे, अने रमाडे लालन पालन करे, अने अंक के० पोताना खोलामां लइने बेसे, यद्यपि एवी क्रिया तो करे खरी, पण एम जाणेछे के आ बालक पारकुं छे; तेवीज रीते जे सम्यग् ज्ञानी छे ते नाना प्रकारनी शुभाशुभ क्रिया राजा श्रेणिक तथा भरत चक्रवर्त्ति अने बीजा साधुनी माफक करे छे, पण ए क्रियाने पुद्गलरूप जाणेछे, पोताना स्वरूपथी भिन्न माने छे एथी बंधननुं कलंक लागतुं नथी.

एज उपर बीजा दृष्टांत कहेछे के; जेम कमल छे ते रात्र दिवस पंक के० कर्दमने विषे रहे छे, तेथकीज उत्पन्न थयुं छे, तेथी पंकज कहेवाय छे; तोपण कमलने पंकनो स्पर्श नथी होतो; जेम कोई गारूडी मंत्रवादी होय ते पोताना गात के० शरीरने सर्प पासे पकडावे करडावे, पण ते मंत्रवादीना मंत्रनी शक्तिवडे सर्पनो डंख विषसंजोगरहित होयछे; जेम जिव्हा इंद्रिय घी दही प्रमुखनी चीकणाई ग्रहण करेछे, पण पोताना अंगने ते चिकाशनो लेश रहेवा देती नथी, किंतु भूखीज रहेछे; जेम सोनुं पाणीनेविषे रेहेतां थका काटवालुं थतुं नथी, तेवी रीते ज्ञानवंत प्राणी

नाना प्रकारनी क्रिया करेछे, पण क्रियाने पुद्गल संयोगवाळी जाणी आत्मस्वरूपथी भिन्न माने छे, तेथीज कर्म बंध कलंकथी जुदो रहेछे ॥ ७२ ॥

हवे विषय भोगवता थका कर्म बंध न थाय एवी ज्ञानवैराग्यनी शक्ति बतावे छेः— अथ ज्ञान वैराग शक्ति वर्णनंः—

॥ सोरठाः॥— पूर्व उदय संबंध, विषय भोगवै समकिती; करै न नूतन बंध, महिमा ज्ञान विरागकी ॥ ७३ ॥

अर्थः— पूर्व संचित कर्म उदय आव्याथी तेना संबंधे समकीति जीव विषय भोग भोगवे छे, पण नवां कर्मबंध करतो नथी, ए सम्यग् ज्ञान तथा वैरागनी शक्ति छे ॥७३॥

हवे जे ज्ञाता होय छे ते सम्यग् ज्ञान अने विषयनी अरुचि ए बेउने साधेछे, ते कहेछेः— अथ ज्ञाताकी व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया तेइसाः॥— सम्यकवंत सदा उर अंतर, ज्ञान विराग उभै गुन धारै; जासु प्रभाव लखै निज लछन, जीव अजीव दशा निरवारै; आतमको अनुभौ करि व्है थिर, आपु तरै अरु औरनि तारै; साधि सुदर्व लहै शिवसर्म सुकर्म उपाधि व्यथा वमिडारै.

अर्थः— जे समकिती होय ते सदा पोताना अंतःकरणनेविषे ज्ञान अने वैराग ए बे गुणने धारे जे गुणना प्रभाववडे पोतानुं ज्ञातापणुं लक्षण जोईने जीव अजीव दशा एटले जीव अजीवनुं स्वरूप निरवार के० जुदुं जुदुं जाणे, ते पछी आत्माने यथार्थ पणे वेदीने आत्मिक स्वभावमां स्थिरता थइ रहेछे; ते पोते पण तरे अनेसत्यउपदेश आपी बीजाने पण तारेछे; ए रीते पोताना आत्मद्रव्यने साधीने मोक्षसुखने पामे, अने कर्मउपाधि सहित जे व्यथा तेनुं वमन करेछे ॥ ७४ ॥

हवे विषयनी अरुचिविना ज्ञाननुं बल निष्फल छे, अने एवा ज्ञानीने एकांत पक्षने विषे रहेवाथी मिथ्या दृष्टि ठरावे छेः— अथ मिथ्यादृष्टि व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया तेइसाः॥— जो नर सम्यक्वंत कहावत, सम्यग् ज्ञान कला नहि जागी;, आतमअंग अबंध विचारत, धारत संग कहै हम त्यागी; भेष धरै मुनिराज पटंतर. मोह महानल अंतर दागी; सून्य हिये करतुति करै परि, सो शठ जीव न होइ विरागी.

अर्थः— जे मनुष्य पोते सम्यक्त्ववंत कहेवाय अने सम्यग् ज्ञाननी कला न जागी, एटले सम्यग् ज्ञाननी प्राप्ति न थई तेथी आत्माना अंगविषे बंधविचारे नही, आत्मा अबंध छे एम माने; ने तेथी ते अभ्यंतर संयोग धारे छे. वळी कोई निश्चय नयनो पक्ष लइने पोते त्यागी छे एम कहे, मुनिराजनी पठे पटंतर के० भेष धरे; पण अंतर नेविषे मोहमहानल के० मोहरूप अग्नि शलगी रही होय; विषय थकी वैरागी न

थयो, तेथी हैया सुन्य थको मुनिराजनी पेठे क्रिया करे, पण ते जीव मूर्खज कहेवा यठे पण वैरागी कहेवाय नही ॥ ७५ ॥

हवे जे सर्व क्रिया करता थका पण मूढ कहेवाय ठे ते कहे ठेः–

अथ मूढ क्रिया वर्णनंः–

॥सवैया तेइसा॥– ग्रंथ रचै चरचै शुभ पंथ लखै जगमें व्यवहार सुपत्ता; साधि संतोष अराधि निरंजन, देइ सुसीख न लेइ अदत्ता; नंग धरंग फिरे तजि संग ठके सरवंग मुधारस मत्ता; ए करतुति करै शठ पैं समुझै न अनातम आतम सत्ता.॥७६॥ ध्यान धरै करि इंद्रिय निग्रह, विग्रहसों न गिनै निज नत्ता; त्यागि विभूति विभूति मिटै तन जोग गहै भवजोग विरत्ता; मौन रहै लहि मंद कषाय सहै वध बंधन होइ न तत्ता; ए करतुति करै सठ पै समुझै न अनातम आतम सत्ता ॥ ७७ ॥

अर्थः– ग्रंथ रचना करे, भला मार्गनी चरचा करे, भला मार्गने लखे, जगत्‌मां व्यवहार मार्गमां प्राप्त थको रहे, संतोषी थईने निरंजनने आराधे, लोकोने सारी शीखामण आपे, अदत्तदान ले नही, परिग्रह संग त्यागीने नंग धरंग फिरे के० दिगंवर थई फरे, अने मुधा के० मुग्धपणे पोताना रसमां मातो थको सर्वांगे ठक्यो रहे एवी एवी क्रिया मूर्ख होय ते करे ठे पण अनातम सत्ता के० आत्माथी पृथक् जे मोहनी गहलता ठे तेने, अने आत्मसत्ता के० शुद्ध जाणपणानी जे सत्ताठे, तेने जुदी जुदी जाणे नही तेमने मूर्ख कहेवा ॥ ७६ ॥

वली मूढनी क्रिया केहेठे के, ध्यान धरे, इंद्रिय दमन करे, विग्रह करेठे ते शरीरनी साथे पोताना आत्मानो संबंध गणे नही. विभूति के० संपत्तिनो त्याग करी विभूति के० भस्म शरीर उपर लगाडे, योग मार्ग ग्रहे, अने संसारना भोगथी विरक्त रहे, मौनपणे रहे, कषायनुं मंदपणुं समजे, वध बंधन सहतो थको पण तातो नही थाय, क्रोधादिक न करे, एवी क्रिया शठ मूढ होय ते करे ठे, पण अनातम सत्ता एटले कर्मादिक प्रभावनी सत्ता अने आत्मसत्ता एटले आत्मानुं सत्य स्वरूप तेने समजे नही माटे तेने मूर्ख समजवो. ॥ ७७ ॥

हवे फरी मूढपणानुं स्वरूपठे बतावेः– पुनः मूढ वर्णनंः–

॥ चौपाई॥– जो विनुज्ञान क्रिया अवगाहै; जो बिनु क्रिया मोख पद चाहै; जो विनु मोख कहै में सुखिया; सो अजान मूढनिमें मुखिया ॥ ७८ ॥

अर्थः– जे जन ज्ञानविना क्रिया अवगाहे अने क्रियाविना मोक्ष पद वांठे, वली जे मोक्ष पाम्या शिवाय कहे के हुं सुखी ठुं, तेने अजाण मूर्खनो शिरोमणि जाणवो.

हवे जेने कर्मसत्ता तथा आत्मसत्तानी भिन्नता भासती नथी, तेने महामूढ कहिये. तेनुं विवेचन करेछेः– अथ महामूढ व्यवस्थाकथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जगवासी जीवनिसों गुरु उपदेश कहै, तुम्हे इहां सोवत अनंत काल बीते हैं; जागो व्हे सुचेत चित समता समेत सुनो, केवल वचन जामें अक्षर सजीते हैं; आउ मेरे निकट बताउं में तुह्मारे गुन, परम सुरस भरे करमसों रीते हैं; ऐसे बैन कहै गुरु तउ ते न धरे उर, मित्रकेसे पुत्र किधो चित्रकेसे चीते हैं.

अर्थः– सर्व जगवासी जीवना हित वात्सल्यने अर्थे गुरु एवो उपदेश करेछे के, अहो! भव्य प्राणी जीव! तमे आ जगत्‌मां मोहनिद्रानेविषे सूता रह्या थकाज अनादि अनंतकाल तमोने वीत्यो छे, माटे हवे तो चित्तमां सचेत थईने जागो; अने समता स[हि]त थका केवलीनां वचन सांभलो, जे केवलीनां वचनमां अक्षर रस के० इंद्रियना विषय रस तेने जीतेला छे; अने तमे मारी पासे आवो तो तमारा गुण बतावुं; ते गुण केवा छे, परम एटले उत्कृष्ट सुरसे करी भरेला छे; अने कर्म थकी रीते के० न्यारा छे; एवां वचन गुरु कहेछे ते जे प्राणी हैयामां धरता नथी ते मित्रना पुत्र जेवाछे, केमके मित्रना पुत्रवडे पोतानुं घर उघाडुं रेहेतुं नथी. अने तेने शीखामण शी देवी? अने चित्रामण जेवा छे, कारण के चित्रामण थकी कांई सत्य क्रिया थती नथी. ॥ ७९ ॥

॥ दोहाः॥– एते पर बहुरो सुगुरु, बोले बचन रसाल; सेन दशा जाग्रत दशा, कहै दुहूंकी चाल. ॥ ८० ॥

अर्थः– ए प्रमाणे सद्गुरु छे ते फरी सरस वचन बोले छे, के जीवने एक सयनदशा ने बीजी जाग्रतदशा एवी बे दशा छे तेनी चाल शांभलो. ॥ ८० ॥

हवे सैन दशानुं वर्णन करेछेः– अथ शयन दशा वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– काया चित्र सारीमें करम परजंक भारी, मायाकी संवारी सेज चादर कलपना; सैन करै चेतन अचेतनता नींद लिए, मोहकी मरोर यहै लोचनको ढपना; उदै बलजोर यहै श्वासको सबद घोर, विषे सुख कारजकी दोर यहे सुपना; ऐसी मुढ दसामें मगन रहै तिहू काल, धावै भ्रमजालमें न पावै रूप अपना.

अर्थः– कायारूप चित्रशाली छे, तेमां कर्मरूप पर्यंक छे, तेउपर मायानी सेज संवारी छे, कल्पना के० मननी विकल्पनारूप चादर छे, अचेतनानी ऊंघ लईने एवी सामग्रीमां चेतन शयन करी रह्यो छे, मोहनी मरोड तेणे करीने लोचन ढंकाया छे; उदय बल जोर जे छे, ते श्वासनो घोर शब्द छे, अने विषयसुख कार्यनी दोड एटले करणी करवी ते स्वप्नावस्था छे, अने एनुंज नाम मूढदशा तथा शयन दशा कहिये.

अने ए दशानेविषे जे मूढ जन होय, ते त्रणे काल मग्न थको धावे छे, एटले भ्रम जालमां दोडेछे, पण पोतानुं रूप पामतो नथी. ॥ ९१ ॥

हवे जीवनी जाग्रतदशानुं वर्णन करेछेः– अथ जाग्रतदशा वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– चित्र सारी न्यारी परजंक न्यारो सेज न्यारी, चादर भी न्यारी इहां झुठी मेरी थपना; अतीत अवस्था सैन निद्रा वही कोउ पैन, विद्यमान पलक न यामें अब छपना; श्वास औ सुपन दोउ निद्राकी अलंग बूझ, सूझै सब अंग लखि आतम दरपना; त्यागी भयो चेतन अचेतनता भाव त्यागी, भाले दृष्टि खोलिके संभाले रूप अपना. ॥ ९२ ॥

अर्थः– आत्मज्ञान पाम्याथकी कायारूप चित्रसारी जुदी जुए, अने कर्मरूप पलंगने पण न्यारो देखे; मायारूप सेज पण जुदी जुए, कल्पनारूप चादरने न्यारी जुए, मतलबके ए ठेकाणे मारी स्थापना जुठी छे एम समजे. अतीत अवस्थानेविषे एटले सयनदशामां निद्रा लेनार पण कोई बीजा रूपे हुं ज हुं, विद्यमान कालमां ते अवस्था नथी, हवे पलकमात्र पण आ अवस्थामां मारो अभाव थनार नथी. श्वास अने स्वप्न ए बे निद्रानी अलंगना संयोगे बूझे, अने आत्मारूप आरिसामां आत्मानुं ज सर्व अंग सूझे, एवी रीते अचेतनतारूप निद्रानो त्याग करीने चेतन त्यागी थयो, त्यारे पोतानी दृष्टि खोलीने जूए, अने पोतानुं रूप संभाले. ॥ ९२ ॥

वली सद्गुरु शिक्षानां वचन कहेछेः– अथ पुनः सद्गुरु शिक्षा कथनंः–

॥ दोहाः ॥– इहि विधि जे जागे पुरुष, ते शिवरूप सदीव; जे सोवहि संसारमें, ते जगवासी जीव ॥ ९३ ॥

अर्थः– ए रीते जे पुरुष जागे छे, तेतो सर्व कालनेविषे शिवरूप के० मोक्षरूप जाणवा. अने जेटला संसारनेविषे सूता छे, तेटला तो जगत्वासी जीव समजवा.॥९३॥

हवे मोक्षपद उपादेयरूप कहीने स्तुति करेछेः–अथ आत्मद्रव्य स्तुतिकथनंः–

॥ दोहाः ॥– जो पद भौपद भय हरे, सोपद सोउ अनुप; जिहि पद परसत और पद, लगै आपदारूप ॥ ९४ ॥

अर्थः– जे पद के० जे स्थानक भवस्थानकनो भय हरे छे, तेनेज पद कहेवुं, तथा अनुप स्थानक कहेवुं, अने जे पदनो स्पर्श थतांज अन्य पद जे कर्म पद छे, ते आपदारूप लागे छे. ॥ ९४ ॥

हवे भव जे संसार पद तेनो भय बतावे छेः– अथ संसार वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जब जीव सोवै तब समुझ सुपन सत्य, वहि झुठ लागै जब जागै नींद खोइके; जागे कहै यह मेरो तन यह मेरी सोज, ताहू झुठ मानत म

रणथिति जोइके; जाने निज मरम मरन तब सूझै जूठ, बूझै जब और अवताररूप होइ के; वाहु अवतारकी दशामें फिरि यहे पेच, याहि जांति जूगे जग देख्यो हम ढोइके.॥५५॥

अर्थः– ज्यारे जीव सघन दशामां सूतो होय बे, त्यारे स्वप्नने सत्य करी माने बे. अने तेज स्वप्न रूपने ज्यारे निद्रा मूकी जागीने जुए बे, त्यारे जूठूं जाणे बे, जागी ने कहे के आ मारुं शरीर तो आहीं बे, आ सोंज के० सामग्री सर्व मारी बे; ने ज्यारे पोतानी मरण स्थितिनो विचार करे बे, त्यारे तो वर्त्तमान शरीर तथा सामग्री सर्वने जूठी माने बे, अने ज्यारे पोताना मर्मनी वात जाणे एटले पोताना स्वरूपनी वातने जाणे, त्यारे तो मरणने पण जूठूं जाणे; एमज वली वीजो अवतार ले त्यारे वीजा रूपे थईने बीजी वात जाणे; फरी तेज अवतारमां सूता-जागता, जूठा-साचानो पेच आ गलीज रीते लाग्यो रहे. ए रीते वारे वारे अवतार लेवाने वली सामग्रीने पोतानी स मजवी ने वली मरवुं; ए रीते सर्व संसारने ढोई के० देखीने अमे सर्व संसारने जूठोज जाण्यो. ॥ ५५ ॥

हवे ज्ञाता केवी क्रिया करे ते समजावे बेः– अथ ज्ञाताकी क्रिया कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– पंमित विवेक लहि एकताकी टेक गहि, छुंदज अवस्थाकी अनेकता हरतु है; मति श्रुत अवधि इत्यादि विकलप मेटी, निरविकलप ज्ञान मन में धरतु है; इंद्रियजनित सुख दुःखसों विमुख व्हैके, परमकी रूप व्है करम निर्जरतु है; सहज समाधि साधि त्यागी परकी उपाधि, आतम आराधि परमातम करतु है.५६

अर्थः– जे पंमित जन होय ते विवेकनो जेद एटले विज्ञान लहीने पोतानी एक तानी टेक राखीने प्रथमनी द्वंद्वअवस्था जे भ्रम अवस्थामां अनेकता हती तेने हरे बे. अने मति, श्रुत, अवधि इत्यादि ज्ञानस्वरूपना विकल्पने मटाकीने निर्विकल्प ज्ञान तेने मनमां धरेबे. अने इंद्रियजनित जे सुख दुःख तेथी विमुख थई परमात्मारूप थईने कर्मनी निर्जरा करे बे, एटले निर्जरा थाय बे. तेथी पोतानी सहज समाधिसा धिने पर जे कर्म पुजलादिकनी उपाधि जे राग द्वेषादिक, तेनो त्याग करीने आत्मा ने आराधी परमात्मापणु करेबे. ॥ ५६ ॥

हवे जे ज्ञान समुद्र परमात्मानी प्राप्ति थाय बे, ते ज्ञाननी प्रशंसा करेबेः–

अथ ज्ञान समुद्रवर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जाके उरअंतर निरंतर अनंत दर्व, जाव जासि रहे पें सुजा उ न टरतु है; निर्मलसौं निर्मल सुजीवन प्रगट जाके, घटमें अघट रस कौतुक करतु हैं; जाने मति श्रुत औधि मनपर्यै केवल सु, पंचधा तरंगनि उमंग उबरतु है; सो है ज्ञानउदधि उदार महिमा अपार, निराधार एकमें अनेकता धरतु है ॥ ५७ ॥

अर्थः– जे ज्ञान सागरना मध्यभागनेविषे निरंतर अनंत द्रव्य पदार्थ भासी रह्या छे, पण ते द्रव्यनो स्वभाव पोते पामतो नथी, निर्मलमां निर्मल एवुं सुजीवन के० जीवन के० जीवितव्य अने समुद्र पक्षे सुजीवन के० पाणी ते, जेनुं प्रगट छे, अने घट में के० हृदयनेविषे अघट के० अक्षणरस कौतुक के० सत्यार्थ वेदननो जे रस तेनुज कुतुहल करे छे, एटले ए समुद्रनेविषे रस कुतुहल घणा छे, अने जे ज्ञान समुद्रने विषे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान ने केवल ज्ञान ए पांचे ज्ञान तरंगरूप छे, उमंग के० पोतपोताने ठेकाणे प्रगट थइ रह्यां छे एवो ज्ञानसमुद्र ते उदार प्रधान छे, एनो अपार महिमा छे, एने विषे सर्व पदार्थ भासे छे तेथी पोते निराधार अने एक स्वरूप छतां ज्ञातापणामां अनेकता धरे छे ॥ ८७ ॥

हवे ज्ञानविना मात्र क्रियावडेज मोक्षनी प्राप्ति नथी तेनु वर्णन करेछेः–

अथ मोक्षमार्ग अप्राप्ति कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– केई क्रूर कष्ट सहै तपसों शरीर दहै, धुम्रपान करें अधो मुख व्हैके झुले है; केई महा व्रत गहै क्रियामें मगन रहें, वहै मुनि भारमें पयारके से पूले है; इत्यादिक जीवनको सर्वथा मुगति नांहि, फिरे जगमांहि ज्यो वयारके बधुलेहैं; जिनके हियेमें ज्ञान तिन्हहीको निरवान, करमके करतार भरममें भूलेहैं ॥८८॥

अर्थः– कोई अज्ञानी क्रूर कष्ट सहन करेछे अने पंचाग्नि प्रमुख तप करीने शरीरने बालेछे; कईक अज्ञानी अग्निना धुमाडानुं पान करेछे, नीचुं मुख राखी उंचा पग करीने झुलेछे; केटलाक अज्ञानी जैन लिंग लईने पांच महाव्रत द्रव्यथी ग्रहण करेछे, अने क्रियामां मग्न रहेछे; ए रीते मुनिराज पणानो भार वहेछे, पण ते पयारना जेवा पूले छे, (देश भाषायें) पयार एटले पलाल, जेना फूलनेविषे कण होता नथी, तेवी रीते निराश जाणवा; इत्यादि केवल क्रिया कलापवडे जीवने सर्वथा मुक्ति थती नथी; ते जगतनेविषे वयारना बघुल जेम उंचा नीचा फरी रहे छे, पण एक ठेकाणे ठरता नथी तेवा समजवा; अने जेना हृदयनेविषे ज्ञान कला जाग्रतरूप थईछे, तेमने निरवाण के० मोक्ष छे; अने जे कर्मना करतार एटले केवल क्रियानाज करनारा छे तेतो भर्मनेविषेज भूली रह्याछे. ॥ ८८ ॥

हवे जे मूढ जन छे तेनी दृष्टि निश्चयमां नथी, पण व्यवहारने विषे छे, तेथी तेने विषे अज्ञान छे ते कहेछेः– अथ मूढ व्यवस्था वर्णनंः–

॥ दोहाः ॥– लीन भयो विवहारमें, उकति न उपजै कोइ; दीन भयो प्रभु पद जपे, मुकति कहांसों होइ. ॥ ८९ ॥

अर्थः– जे व्यवहारमां लीन थई रह्यो होय एटले मग्न थइ रह्यो होय, तेने कोई

उकति के तत्त्वदृष्टि उपजे नही, अने पोते अनाथ थईने पोताना नाथना पदने नजे, ए रीते पोतानुं निश्चयरूप जाण्याविना मुक्ति क्यांथी थाय ?॥ ए९ ॥

॥ दोहा: ॥– प्रनु समरो पूजो पढो, करो विविध विवहार; मोक्ष सरूपी आतमा; ज्ञानगम्य निरधार. ॥ २०० ॥

अर्थः– प्रनुने समरो, नावे पूजो, ने नावसहित पढो इत्यादि व्यवहार करो पण मोक्ष स्वरूपी आत्माछे तेतो निरधार के० निश्चय ज्ञान गम्य छे. ॥ २०० ॥

हवे निश्चय स्वरूपनेविषे ज्ञान पर्याय रूपी अर्थनुं निरूपण करेछेः–

अथ पर्यायार्थ निरूपणंः–

॥ सवैया तेइसाः ॥– काज विना न करे जिय उद्यम, लाज विना रनमांहि न जुंझै; डीलविना न सधे परमारथ, सीलविना सतसो न अरूझै; नेम विना न लहे निहचे पद, प्रेमविना रस रीति न बूझै; ध्यानविना न थन्ने मनकी गति, ज्ञान विना शिवपंथ न सूझै. ॥ १ ॥

अर्थः– अहीं अर्थांतर बतावे छे के. जेम जीव पोताना काम विना उद्यम करतो नथी; जेम लाज विना रणसंग्रामने विषे झुझतो नथी; वली जेम देह धस्याविना परमार्थ थतो नथी; अने शील धारण कीधाविना सत्व साथे मलातुं नथी; वली नियम धस्या शिवाय निश्चय पद मलतुं नथी, अने जेम प्रेमनी प्रीत विना रसरीत जणाती नथी, तथा ध्यानविना मननी गति थोनाती नथी, तेम ज्ञानविना शिवपथ के० मुक्तिमार्ग ते सूजतो नथी. ॥ १ ॥

हवे ज्ञानवंतनो महिमा देखामीने तेनी व्यवस्था कहेछेः–

अथ ज्ञानमहिमा धारक व्यवस्था कथनंः–

॥ सवैया तेईसाः॥ ज्ञान उदै जिनके घट अंतर, ज्योति जगी मति होति न मैली; बाहिज दृष्टि मिटी जिन्हके हिय, आतम ध्यान कला विधि फैली; जे जड चेतन निन्न लखै सु विवेक लिये परखै गुन थैली; ते जगमें परमारथ जानि गहै रुचि मानि अध्यातम सैली. ॥ २ ॥

अर्थः– जेना हृदयनेविषे ज्ञाननो उदय थवाथी पोतानी ज्योति जाग्रत थईने तेथी मति जे बुद्धि ते उज्वल थई पण मेली नथी; अने पोताना बाह्य शरीरने आत्मा करी माने एवी बाह्य दृष्टि ते मटी गई, अने हृदयनेविषे आत्मध्याननी कला तेनी विधि जे यमनियमादिक ते विधि फेली एटले पसरी, ते वखतथी जड चेतनने निन्न निन्न लखे, अने पोतानो विवेक के० नेदविज्ञान तेणे करी पोताना गुणनी थेली पार

खी लीधी. एवा जे जीव तेज जगत्मां परमार्थने जाणी तेने रुचिये करी ग्रहण करे. ए रीते अध्यात्मशैली मान्य करीने परमार्थने जाणे, ॥ २ ॥

हवे मोक्षनी समग्र प्राप्ति देखाडेछेः— अथ मोक्षप्राप्ति कथनंः—

॥ दोहाः ॥— बहु विधि क्रिया कलेससों, शिवपद लहे न कोइ; ज्ञान कला परकाशसों, सहज मोक्ष पद होइ. ॥ ३ ॥ ज्ञान कला घट घट वसे, योग युगतिके पार; निज निज कला उदोत करि, मुक्त होइ संसार. ॥ ४ ॥

अर्थः— जात जातनी क्रियाने निमित्ते क्लेश करवो, तेथी मोक्षपद मले नही. पण ज्ञानकलानो प्रकाश थवाथी सेहेज मोक्षपद थायछे. ॥ ३ ॥ ज्ञानकला तो घट घटने विषे वसी रहेली छे, पण मन वचन अने कायाना योगनी युक्तिथी पार रहेली छे, माटे पोत पोतानी कलाने प्रकाश करवाथी संसारथी मुक्त थवाय छे, एवो सर्वने सद्गुरुनो आशीर्वाद छे. ॥ ४ ॥

हवे मुक्तपणुं अनुभव थकी थायछे माटे अनुभवनी प्रशंसा करेछेः—

अथ अनुभव प्रशंसाः—

॥ कुंडलिया छंदः॥— अनुभव चिंतामनिरतन, जाके हिय परगास; सो पुनीत शिवपद लहे, दहे चतुर्गतिवास; दहे चतुर्गतिवास आस धरि क्रिया नमंडे, नुतन बंध निरोध, पूर्वकृत कर्म विहंडे; ताके न गनु विकार, नगनु बहु भार न गनु भो, जाके हिरदेमांहि रतनचिंतामनि अनुभो ॥ ५ ॥

अर्थः— अनुभवरूपी चिंतामणिरत्न जेना हृदयनेविषे प्रकाशमान थई रह्युंछे, ते जीव पुनीत के० पवित्र थईने शिवपदने पामेछे, ने चतुर्गतिनो जे वास तेने दहन करेछे; एटले देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति ने नरकगति ए चारे गतिना वासने बाली नाखेछे; अनुभवी जननी रीत एछे के ते आशा धरीने क्रिया मांडे नही. नुतन बंध के० नवा कर्मना बंधने निरोधीने संवर धारण करे, तथा पूर्वकृत कर्मने विहंडी नाखीने तेनी निर्जरा करेछे, तेना विकारने अहो! भव्य जीव! तुं गणीश नही; अने तेना अतिभारने तुं गणीश नही, अने तेना भयने पण गणीश नही, जेना हृदयमां अनुभवरूपी चिंतामणिरत्न प्रकाशी रह्युं छे ॥ ५ ॥

हवे अनुभवीनी ज्ञानदृष्टिनुं सामर्थ्य वखाणेछेः— अथ ज्ञानदृष्टि सामर्थ्य कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जिनके हियेमें सत्य सूरज उदोत भयो, फेलि मति किरन मिथ्यात तम नष्ट है; जिनकी सुदृष्टिमें न परचै विषमतासों, समतासों प्रीति ममतासों लष्ट पुष्ट है; जिन्हके कटाक्षमें सहज मोक्ष पथ सधै, साधन निरोध जाके तनको न कष्ट है; तिन्हिकों करमकी किलोल यह है समाधि, डोले यह जोगासन बोले यह मष्ट है॥६॥

अर्थः— जेना हियानेविषे सत्य सूर्यनो उद्योत थई इह्योछे, अने सत्य सूर्यना मति रूप किर्ण फेली रह्याछे, तेथी मिथ्यात्व रूप अंधकार ते नाश पाम्यो. वली जे जीवनी सुदृष्टिमां विषमतानो परिचय नथी, एटले समतासाथे प्रीति बंधाणी छे, ने ममतासाथे तथा मोहसाथे लष्ट पुष्ट के० चित्तविनानी प्रीति राखेछे, ने जेना कटाक्षनेविषे एटले थोडा विलोकनमां सहज स्वजावे मोक्षमार्ग सिद्ध थायछे. साधन के० मनोयोगादिक त्रण योगनो निरोध एटले निग्रह कर्योछे अने जेना शरीरने कष्ट नथी, एवा ज्ञानधारीने जे कर्म लहेर आवेछे तेने गणतीमां समाधि जावज जाणेछे; जो कदी गति कर्मना उदयवडे डोलेछे तोपण ते जोगासनधारीछे अने जो बोलेछे तोपण मष्ट के० मौनव्रति छे. ॥ ६ ॥

हवे ज्ञानीने परवस्तुनो त्याग कह्यो अने विशेषपणे तेनोज त्याग वखाणेछेः—

॥ अथ परवस्तुको त्याग ताको विशेष वर्णनंः— ॥

॥ सवैया इकतीसा॥— आतम सुजाउ परजाउकी न सुद्धि ताकों, जाको मन गमन परिग्रहमें रह्यो है; ऐसो अविवेकको निधान परिग्रह राग, ताको त्याग इहांलों समुच्चैरूप कह्यो है; अब निज परे ज्रम दूरि करिबेके काजु बहुरो सुगुरु उपदेशको उमह्यो है; परिग्रह अरु परिग्रहको विशेष अंग, कहिवेको उद्यम उदीरि लह लह्यो है.

अर्थः— जेनुं मन परिग्रहनेविषे मग्न थई रह्युं छे, ते जीवने पोताना तथा पारका स्वजावनी शुद्धता थती नथी. परिग्रहनो राग तेतो अविवेकनुं निधान कह्युं छे, जे परिग्रहना रागनेविषे पोताना ने पारका स्वजावनी शुद्धता नथी, ते परिग्रह रागने त्याग अहीं सुधी सामान्य मात्र कह्यो. हवे निजस्वरूपनो भ्रम ने पर स्वरूपनो ज्रम तेने दूर करवाना कार्यने घणा प्रकारें सद्गुरु उपदेश करवाने उबूंगवंत थया छे. हवे इहां परिग्रह तथा ते परिग्रहनुं विशेष अंग केहेवाने सद्गुरु जे छे ते उद्यम उदीरणा करीने लह लह्यो के० सचेत थया छे. ॥ ७ ॥

हवे सामान्यरूप परिग्रहनो राग अने विशेषरूप परिग्रहनो राग तेनो विवरो कहेछेः— अथ सामान्यविशेष कथनंः—

॥ दोहा॥— त्याग जोग परवस्तु सब, यह सामान्य विचार; विविध वस्तु नाना विरति, यह विशेष विस्तार ॥ ८ ॥

अर्थः— जेटली परवस्तु छे तेटली बधी त्याग जोग छे. एतो सामान्यपणे परिग्रहना त्यागनो विचार जाणीये; अने ते परवस्तु जात जातनी छे अने तेना उपर विचारपण जातजातनो छे; एने विशेषपणे परिग्रह त्यागनो विस्तार जाणवो. ॥ ८ ॥

हवे परिग्रह छतां ज्ञातानी परिग्रह उपर अलिप्त दशा कहे छेः-

अथ ज्ञाता अलिप्त कथनंः-

॥ चोपाईः॥- पूरव कर्म उदै रस भुंजे; ज्ञान मगन ममता न प्रयुंजे, उरमें उदासीनता लहिये, यों बुध परिगह वंत न कहिये ॥ ए ॥

अर्थः- पूर्व कर्मना उदयथकी जे शुभाशुभ रस उपजे ते भोगवे पण ते रस भोगनेविषे ममता प्रयुंजे नही, मात्र ज्ञाननेविषेज मग्न रहे, पण परिग्रहना संयोग वियोगनेविषे हर्ष विषाद उपजे नहीं, एवी रीते जेना मनमां उदासीनता पामीये छइये, एवा बुध के० पंडितने परिग्रहवंत कहेवाय नही ॥ ए ॥

हवे ज्ञानीनी निस्पृह दशा वखाणे छेः- अथ ज्ञानी अवांछक कथनंः-

॥ सवैया इकतीसाः॥- जे जे मनवंछित विलास भोग जगतमें, तेते विनासिक सब राखे न रहत हैं; और जे जे भोग अभिलाष चित्त परिणाम, तेते विनासीक धर्मरूप व्है वहत हैं; एकता न दुहों मांहि ताते वांछा फुरे नांही, ऐसे भ्रम कारजको मूरख वहत हैं; सतत रहे सचेत परसो न करे हेत, याते ज्ञानवंतको अवंछक कहत हैं॥१०॥

अर्थः- मनना मानी लीधेला जे जे जगत्ना भोग विलास छे, ते ते नाश रूप छे, आपणा राख्या रेहेता नथी. वली जे जे भोग अभिलाषरूप चित्त परिणाम रहेछे ते ते चित्त परिणाम चंचलपणे विनासी धर्म रूपने विषे थई रह्या छे. एवा भोगनेविषे तथा भोग अभिलाषनेविषे अनेकता छे, पण एकता नथी. वली विनश्वरपणुं छे तेथी एना उपर ज्ञानीनी वांछा फुरती नथी. एवा भ्रम कार्यने मूर्ख होय तेज चाहे छे, जे सतत के० निरंतर सावधान रहे अने परवस्तु साथे हेत करे नही, एज माटे ज्ञानवंतने अवंछक निस्पृही कहेछे. ॥ १० ॥

हवे परिग्रहमां रेहेता छतां ज्ञाताने अलिप्तपणुं केवी रीते कहेवाय ते दृष्टांत आपीने समजावे छेः- अथ ज्ञाता अलिप्त दृष्टांत कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः॥- जैसे फिटकडी लोद्र हरडेकी पुटविना स्वेत वस्त्र डारिये मजीठ रंग नीरमें; भीग्यो रहै चिरकाल सर्वथा न होइ लाल, भेदे नही अंतर सपेती रहे चीरमें; तैसे समकितवंत राग दोष मोह बिनु, रहे निशिवासर परिग्रहकी भीरमें, पूरव करम हरे नूतन न बंध करें जाचे न जगत सुख राचे न शरीरमें ॥ ११ ॥

अर्थः- जेम कोइ स्वेत वस्त्र होय तेने फटकडी लोदर तथा हरडानी पुट के० पट दीधा शिवाय मजीठना लाल रंगना पाणीमां चिरकाल के० घणाकाल सुधी भीनावी राखे तोपण ते वस्त्र सर्वथा प्रकारे लाल थाय नही; अंतररंग भेदे नही तेथी ते चीरमां सफेती रहेज; तेमज समकितवंत जे जीव होय ते राग द्वेष मोहना पटविना

निशिवासर के० रात दिवस परिग्रहनी भीडमां रहेछे, तोपण पूर्व कर्मना भोगनी निर्जरा करेछे, अने नवां कर्मनुं बंधन करे नही, अने जगत्ना सुखने जाचे नही. वली शरीरने जोईने राचे नही. ॥ ११ ॥

हवे परिग्रहने विषे रेहता ज्ञाताने उद्वेग रहितपणुं होय छे ते दृष्टांत वडे दृढ करावे छेः- अथ ज्ञाता अनुद्वेग कथनंः-

॥ सवैया इकतीसा॥- जैसे काहु देसको वसैया बलवंत नर, जंगलमें जाई मधु छत्ताकों गहतु है; वाकों लपटाय चहु ओर मधुमक्षिका पे कंबलीकी ओटसों अडंकित रहतु है; तैसे समकिती शिव सत्ताको सरूप साधे उदेकी उपाधिकों समाधिसी कहतु है, पहिरे सहज को सनाह मनमें उछाह, ठाने सुखराह उदवेग न लहतु है. ॥१२॥

अर्थः- जेम कोईक देशनो रेहेवासी भील वगेरे बलवंत नर जंगलमां जईने मधपुडाने ग्रहण करे छे, ते वखत ते पुरुषने चारे तरफ मधु मक्षिका के० मध माखीओ लपटाई जाय छे, पण ते पुरुषना शरीर पर कांमली होयछे, तेथी अडंकित के० डंखविना अडंख रहेछे; तेमज समकिती जीव शिव के० परमात्मानी सत्ता के० सद्भूतपणुं तेनुं स्वरूप जे एक विज्ञानघनपणुं तेने साधे छे, अने कर्म उदयनी जे आत्माने उपाधि लागी रहीछे, तेने ते समाधि करी जाणे छे. सहज गुण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र तद्रूप जे सनाह के० बखतर ते पहेरी राखेछे, अने ए रीते जे कर्मनिर्जरा तेनो उछाह मनमां धारण करे एवा अनंत सुखना राह के० मार्गनेविषे रहेतो थको उद्वेग दशाने पामतो नथी. ॥ १२ ॥

हवे ए रीतमां ज्ञातानुं अबंधकपणुं बतावेछेः- अथ ज्ञाता अबंध कथनंः-

॥ दोहरा॥ ज्ञानी ज्ञान मगन रहे, रागादिक मल खोइ; चित उदास करनी करे, करम बंध नहि होइ. ॥ १३ ॥ मोह महातम मल हरे, धरे सुमति परगास; मुगति पंथ परगट करे, दीपक ज्ञान विलास. ॥ १४ ॥

अर्थः- ज्ञानी पुरुष तो ज्ञानमां मग्न रहेछे, अने रमेछे, अने राग-द्वेष-मोहरूपी जे मल छे, तेनें खोइ दिएछे; अने जे क्रिया करेछे ते पण उदासीनरूप करेछे, माटे एवा ज्ञानीने कर्म बंध थतो नथी. ॥ १३ ॥ वली मोहरूपी महातम के० घोर अंधकाररूप जे मल तेने हरे, अने सुमतिना प्रकाशनार दीपकने धरे, ए रीते मुक्ति पंथने प्रगट करी बतावे, एवोज ज्ञाननो विलास ते दीपकरूप जाणवो. ॥ १४ ॥

हवे ज्ञानदीपकनुं स्वरूप कही देखाडेछेः- अथ ज्ञान दीपक वर्णनंः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥- जामें धूमको न लेस बातको न परवेस, करम पतंगनिको नाश करे पलमें; दसाको न भोग न सनेहको संयोग जामें, मोह अंधकारको विजोग

जाके थलमें; जामें तसताइ नही रागरंग नांइ रंच, लह लहे समता समाधि जोग ज लमें; ऐसी ज्ञानदीपकी सिखा जगी अजंगरूप, निराधार फुरी पें डुरी है पुदगलमें॥

अर्थः– जे ज्ञान दीपकमां धुमाडानो लेश नथी ने जेमां वायुनो पण प्रवेश नथी अने जे कर्मरूपी पतंग जीवनो पलकमां नाश करे छे, ने जेमां दशा के० दीवेटनो जोग नथी, (बीजो अर्थ)– कोइ विकल्प दशा नथी अने जेने सनेह के० घृत तेलनो संयोग नथी; वली जेना प्रकाशमां मोहरूप अंधकारनो वियोग थयो छे; वली जे दीपकमां तस तापणुं नथी; वली जेमां लालरंगनीरंचमात्र लालाश नथी, अने जे समता समाधिनो जोगते रूप जल तेनेविषे लहलहायमान थई रह्यो छे,एवो जे ज्ञानदीपक छे, तेनी शिखा सदा अजंगरूप जागी रही छे, अने ए शिखा सर्व पदार्थनुं ज्ञान करवानो आधार छे अने पोते निराधार फुरी रही छे, अने पुद्गलमां डुरी के० छुपी रही छे. ॥ १५ ॥

हवे ज्ञानना स्वजावमां खंमना नथी ते उपर दृष्टांत आपेछेः–

अथ ज्ञान स्वजाव अखंमित दृष्टांत कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसो जो दरब तामें तैसोइ सुजाउ सधे, कोउ दर्व काउ को सुजाउ न गहतु है; जैसे संख उज्वल विविध वर्ण माटी जखे, माटीसो न दीसे नित उज्वल रहतु है; तैसे ज्ञानवंत नाना जोग परिगह जोग, करत विलास न अ ज्ञानता लहतु है; ज्ञानकला दूनी होइ दुंददशा सूनी होइ ऊनी होई जौथिति वनारसी कहतु है. ॥ १६ ॥

अर्थः– जे जेवुं द्रव्य छे, तेमां तेवोज स्वजाव सिद्ध छे, पण कोई द्रव्य अन्य द्र व्यनो स्वजाव ग्रहण करे नही. जेम कोई जलाशयमां संख बेइंद्रीजीव होय ते स्वरू पमां उज्वल होय छे, पण जात जातनी माटी खाय छे, तेम छतां माटीनो रंग तेना स्वरूपमां देखातो नथी, तेतो नित्य उज्वलज देखाय छे; तेम ज्ञानवंत प्राणी परिग्र हना जोग थकी नाना प्रकारना जोग जोगवतो छतां अने विलास करतो छतां अज्ञानता पामतो नथी. अने ज्ञाननी कला बमणी थाय छे, अने द्वंद्वदशा के० ज्रमदशा ते शुनी थाय छे, अने जवस्थिति के० संसारस्थिति ते उणी के० उंछी थाय छे, एवी रीते वना रसी दासनुं कहेवुं छे. ॥ १६ ॥

हवे सम्यग् ज्ञाननी साथे सम्यक् क्रिया स्याद्वाद मतने आश्रयी कहे छेः–

अथ स्याद्वाद प्ररूपन कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जोलों ज्ञानको उदोत तोलों नही बंध होतु, वरते मिथ्या त तब नाना बंध होहि है; ऐसो जेद सुनिके लग्यो तुं विषै जोगनिसों, जोगनिसों उद्यमकी रीतितें विछोहि है; सुनो जैया संतत कहे में समकितवंत, यहु तो एकंत प

रमेसरकी द्रोहि है; विषेसों विमुख होइ अनुजो दशा आरोहि, मोख सुख ढोहि ऐसी तोहि मति सोहि है ॥ १७ ॥

अर्थः– ज्यां सुधी ज्ञाननो उद्योत ठे त्यांसुधी बंध थतो नथी अने ज्यारे मिथ्यात्वदशावंत ठे, त्यारे तो नाना प्रकारनो बंध थाय ठे, कोई एकांतवादीयें एवो ज्ञान माहात्म्यनो जेद सांजलीने एवुं कह्युं, के तुं विषय जोगववा लाग्यो ठे, अने मन, वचन, कायाना योग थकी उद्यमनी रीति जे क्रिया, तेने तें ठोमी दीधी ठे, तेने कहेठे के हे सत् पुरुष, सांजल तुं जे कहे ठे, के हुं समकितवंत ढुं, पण ए एकांतमत जे ठे ते परमेश्वर परमात्मानी द्रोही के० द्रोह करनारी ठे, माटे तुं विषयथी विमुख थईने अनुजव दशामां गुण श्रेणि धरी आरोहण करी अने मोक्षना सुखने ढोही के० जो, तो एवीज बुद्धि थकी शोजे ठे. ॥ १७ ॥

हवे ज्ञाननुं तथा विषय विमुखतानुं सहचारिपणुं बतावेठेः–

अथ ज्ञान वैराग्य युगपद् वर्णनंः–

॥ चौपाईः ॥– ज्ञानकला जिनके घट जागी; ते जगमांहि सहज वैरागी; ज्ञानी मगन विषैसुखमांही; यहु विपरीत संजवे नांही. ॥१८॥ दोहाः॥– ज्ञान सहित वैराग्य बल, शिव साधे समकाल; ज्यों लोचन न्यारे रहैं, निरखै दोऊ नाल. ॥ १९ ॥

अर्थः– जेना घटनेविषे ज्ञानरूपी कला जागी ठे तेतो जगत्नेविषे सहेजे वैरागी रहे ठे. ज्ञानी थईने विषयसुखमां मग्न होय ए विपरीत वात संजवती नथी ॥ १८ ॥ वली ज्ञाननी संगति ने वैरागनी संगति ए बंने चीज समकाल मलीने मोक्षने साधे; जेम बे आंखो जुदी रहीठे, पण नाल के० साथे बेउ नेत्र पदार्थने जुएठे. ॥ १९ ॥

हवे मूर्खने कर्मनुं कर्त्तापणुं अने ज्ञानीने निर्जरानुं कर्त्तापणुं ए बेनुं स्वरूप कहेठे. अथ मूढ कर्त्ता कर्मको यह कथनंः–

॥ चौपाईः॥– मूढ कर्मको कर्त्ता होवै; फलअजिलाष धरै फल जोवै; ज्ञानी क्रिया करै फल सूनी; लगै न लेप निर्जरा‌दूनी ॥ २० ॥ दोहाः– बंधे कर्मसों मूढज्यो, पाट कीट तन पेम; खुलै कर्मसों समकिती, गोरख धंधा जेम. ॥ २१ ॥

अर्थः– मूढ ठे ते कर्मनो कर्ता बने ठे, केमके ते क्रियाना फलनो अजिलाष धरे ठे, अने फलने जोई रहेठे; ने जे ज्ञानी होय ते क्रिया तो करे पण फल शुन्य करे, तेथी ज्ञानीने कर्मनो लेप लागतो नथी; एथी बमणी निर्जरा थाय ठे. ॥ २० ॥

वली जे मूढ ठे ते कर्मनेविषे बंधाइ रहेठे, जेम रेशिमनो किमो पोताना शरीरना प्रेमवडे पोतानी लाल थकी पोतेज बंधाय ठे, अने जे समकिती होय तेतो कर्म

नी जालथी खुलेलो रहे छे, कोनी पेठे? जेम गोरखधंधो पोतानी जालथी खुली जा यछे तेम जाणवुं ॥ २१ ॥

हवे ज्ञानी जीवने कर्मनुं अकर्त्तापणुं तथा निर्जरारूप ठरावे छेः–

अथ ज्ञानीको अकर्तृत्व कथनंः–

॥ सवैया तेईसाः ॥– जे निज पूरव कर्म उदै सुख भुंजत भोग उदास रहैंगे; जे दुखमें न विलाप करै निरवैर हिये तन ताप सहैंगे; है जिनके दृढ आतम ज्ञान क्रिया करिके फलकों न चहैंगे; ते सुविचछन ज्ञायक है तिनको करत्ता हम तो न कहैंगे॥२२॥

अर्थः– जे जीव पोताना पूर्व संचित शुभ कर्मना उदय वडे सुख भोगवतो थको पण भोगथी उदास रहे छे, अने जे जीवने असाता वेदनीयना उदयथी दुःख उपजे तो पण विलाप करे नही, अरतिनो विभाग करे नही, अंतरमां कोई चिंता नही राखे; अने शरीरनो संताप सहन करे, वली जेनीपासे आत्मज्ञान छे, तेतो क्रिया करीने फलने इछे नही, तेज उत्कृष्ट विचक्षण ज्ञानी कहेवाय छे, अने तेने कर्म करता थका कर्मना कर्त्ता एम तो अमे कही शकशुं नही ॥ २२ ॥

हवे एवा ज्ञानीनी व्यवस्था कहे छे. ज्ञाता वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जिनकी सुदृष्टिमें अनिष्ट इष्ट दोउ सम, जिनको आचार सुविचार शुभ ध्यान है; स्वारथको त्यागी जे लहैंगे परमारथको, जिनके वनिजमें नफा न है न ज्यान है; जिनकी समुझमें शरीर ऐसो मानीयतु, धानकोसो छीलक कृपान कोसो म्यान है; पारखी पदारथके साखी भ्रम भारथके, तेई साधु तिनहीको जथारथ ज्ञान है. ॥ २३ ॥

अर्थः– जे ज्ञातानी सुदृष्टि एवी छे के, जेनेविषे इष्ट वस्तु तथा अनिष्ट वस्तु बेउ बराबर छे, अने जेनो आचार एवो छे के जे भला विचारथी शुभ ध्यानमांज रहे, अने विषय सुख प्रमुख स्वार्थने त्यागीने जे अध्यात्मरूप परमार्थ तेनेविषे लागी रहे छे, वली जेनां वचन एवां छे के, जेमां नफो नथी तेम टोटो पण नथी, एटले कोईने सुसीख किंवा कुसीख देता नथी; मौन वृत्तिज रहेछे. वली जेनी समज एवी होय के शरीरने धानना छील के० तुस जेवुं अने कृपान के० तरवार तेना म्यान जेवुं माने छे, मतलब के आत्माने शरीरथी जुदो जाणे छे. वली जे जेवो पदार्थ होय तेवी तेनी परीक्षा करे छे, अने जेम नय ज्ञानविना पांच दर्शनमां जे भ्रमनुं भारथ चाली रह्युं छे,तेनोसाक्षी छे; एछवानुं थानक छे, तेहिज साधु कहेवाय छे, अने तेने यथार्थ ज्ञानी कहिये. ॥२३॥

हवे समकितनुं साहसपणुं वर्णन करेछेः– अथ सम्यक्वंतको साहसकथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जमकोसो भ्राता दुःखदाता है असाता कर्म, ताके उदै

मूरख न साहस गहतु है; सुरग निवासी भूमिवासी औ पतालवासी, सबहीको तन मन कंपत रहतु है; उरको उजारो न्यारो देखिये सपत भैसों, डोलतु निशंक भयो आनंद लहतु है; सहज सुवीर जाको सासुतो शरिर ऐसो, ज्ञानी जीव आरज आचारज कहतु है ॥ २४ ॥

अर्थः– आहिं संसारनेविषे जे असाता वेदनीय कर्म छे, ते केवां दुःखदाता छे? अहिं उत्प्रेक्षा करे छेः– जमकासो भाता के० यमना भाई छे, तेनो उदय थता मूरख जन जे छे, तेतो साहस ग्रही शके नही. सुरगनिवासी के० देवता भूमिवासी के० मनुष्य तिर्यंच् अने पातालवासी देवता नारकी एवा सर्व त्रिलोकवासी जीवोनां तन मन असातावेदनीय थकी कांपता रहेछे, हवे ज्ञानी जीवना उरनुं अजवालुं जे छे ते अंतर्गत चांदरणां जेवुं छे, ते केवुं छे? ते समजावे छे के, ते सात भय थकी जुडुंज छे, जे अजवालाथी साते भय प्राप्त थता नथी, अने ए प्रभावथी निःशंक थई फोले छे, अने आनंद पामे छे. सहज सुवीर के० महोटो साहसीक सुभट, जेनुं ज्ञानरूपी शरीरशाश्वत छे, एवा ज्ञानी जीवो आचार्य के० महा पुरुष पूज्य जाणवा, एवुं आचार्य कहेछे. ॥२४॥

हवे साते भयनां नाम कहेछेः– अथ सप्त भयनामः–

॥ दोहाः॥– इह भव भय परलोक भय, मरन वेदना जात; अनरक्षा अनगुप्तभय अकस्मात भय सात ॥ २५ ॥

अर्थः– आ भवनो भय, परलोकनो भय, मरण भय, वेदना उपजवानो भय, अनरक्षानो भय, अनगुप्त भय, अने अकस्मात् भय. ए सात भय जाणवा ॥ २५ ॥

हवे साते भयनां लक्षण कही जुदां जुदां उलखावे छेः–अथ सप्त भय लक्षन कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– दसधा परिग्रह वियोग चिंता इह भव, दुर्गति गमन पर लोक भय मानिये; प्राननिको हरन मरन भै कहावै सोई, रोगादिक कष्टय्यह वेदना वखानिये; रक्षक हमारो कोउ नांही अनरक्षा भय, चौर भै विचार अनगुप्त मन आनिये, अनचिंत्यो अबहि अचानक कहांधों होइ, ऐसो भय अकस्मात जगतमें जानिये.॥

अर्थः– शास्त्रमां जे दश भातनो परिग्रह कह्यो छे, तेना विजोगनी चिंता रहे तेज आ भवनो भय जाणवो. दुर्गतिगमननो जे भय ते परलोकनो भय कहिये; प्राण छूटवानो जे भय ते मरण भय; रोग प्रमुखथकी जे कष्ट उपजे ते वेदना भय वखाणिये; अमारी रक्षा करनार कोई नथी देखातो ए अनरक्षा भय; चोर अथवा दुश्मन आव्याथी हुं शुं यत्न करीश एवो जे भय तेने अनगुप्त जाणिये. अणचिंत्युं शुं थशे एवो जे भय मनने विषे रहे छे तेनुं नाम अकस्मात् भय जाणवो.॥ २६ ॥

हवे आ भवना भय निवारण रूप मंत्र कहेछेः— अथ इह भव भय निवारण कथनंः—

॥ छप्पय छंदः॥— नख शिख मित परवान, ज्ञान अवगाह निरख्खत; आतम अंग अभंग, संग परधन इम अख्खत; छिनभंगुरसंसार, विभव परिवार भारज सु; जहाँ उतपति तहाँ प्रलय, जासु संयोग विरह तसु; परिग्रह प्रपंच परगट परखि, इह भव भय उपजै न चित; ज्ञानी निशंक निष्कलंक निज; ज्ञानरूप निरखंतनित ॥ २७ ॥

अर्थः— पगना नखथी ते माथानी शिखासुधी एटले सर्व शरीर प्रमाण आत्मानो गुण जे ज्ञान ते अवगाह के० व्याप्ति तेने जुए, एवां नख शिख सहित ज्ञानमय आत्मानुं अंग अभंग रहे, तेनी साथे पुद्गल छे तेने परधन के० परद्रव्य कहेछे, अने सर्व संसार क्षणभंगुर छे, ने तेने जे विभव परिवाररूप भार छे, ते पण क्षणभंगुर छे, अने जेनी उत्पत्ति तेनो विनाश छे, जेनो संयोग तेनो वियोग पण थाय छे, एवो परिग्रहनो प्रपंच प्रगट परखीए तो आ भवनो भय चित्तमां उपजे नही. ए रीते जे ज्ञानी होय ते परिग्रहना वियोगनी चिंता न राखे, निःशंक रहे, पोतानुं निष्कलंक स्वरूप ज्ञानमय सदा जुए. ॥ २७ ॥

हवे परलोकभय निवारणनुं मंत्र कहेछेः— अथ परलोक भय निवारण मंत्रः—

॥छप्पय छंदः॥— ज्ञान चक्र मम लोक, जासु अवलोक मोख सुख; इतरलोक मम नांहि नांहि जिसमांहि दोष दुख; पुन्न सुगति दातार, पाप दुरगति पद दायक; दो खंडित खानिमें, अखंडित है शिवनायक; इह विधि विचार परलोक भय, नहि व्यापक वरते सुखित; ज्ञानी निःशंकनिष्कलंक निज ज्ञानरूप निर्खंतनित ॥ २८ ॥

अर्थः— ज्ञान चक्र के० ज्ञान विस्तार तेतो ममलोक के० मारो लोक छे, महारो प्रचार छे, तेने प्रत्यक्ष जोवो, अने मोक्ष सुख बन्ने रूप छे, अने इतर लोक के० तेविना अन्य लोक ते मारो नथी, महारो ज्ञान लोक मारी साथे छे, जेनेविषे दोष दुःख नथी. परलोकमां सुगतिनुं देनार पुण्य छे, अने परलोकमां कुगतिनुं आपनार पाप छे. ए बे पुण्य पाप आत्मानी खंडनानी खाणी छे. अने हुं अखंडित रूप छु. शिवनायक के० सिद्धरूपी हुं एवा विचारथी परलोक भय व्यापे नही; अने सुखित के० सदा सुखवंत वर्त्ते; ए प्रमाणे परलोक भय छांडिने ज्ञानी पुरुष निशंक थको निष्कलंक एवुं जे निजज्ञानरूप तेने सदा निरखे ॥ २८ ॥

हवे मरणभय निवारणनो मंत्र कहे छेः—अथ मरन भय निवारण मंत्रः—

॥ छप्पय छंदः॥— फरस जीभ नाशिका, नैन अरु श्रवन अक्ष इति; मन वच तन बल तीन, सास उस्सास आउ थिति; ए दस प्राणविनाश, ताहि जग मरण कहीजे;

ज्ञान प्राण संयुक्त; जीव तिहु काल न छीजे; यह चित करत नहि मरण भय, नय प्र माण जिनवर कथित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंतनित.॥ २ए ॥

अर्थः– स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र, ए पांचे इंद्रिय; मनोबल, वचनबल, ने कायबल ए त्रण, श्वासोश्वास, आयुस्थिति, ए दश प्राण आदिनो विनाश थाय, तेने जगत्मां मरणभय कहे छे, पण जीव पदार्थ छे ते ज्ञानरूपी भाव प्राण संयुक्त छे, तेतो जीवने ज्ञान प्राण त्रणे कालनेविषे छूटे नही, एवो विचार मनमां करवाथी मरणभय उपजे नही. नय प्रमाण वडे एवुं जिनेश्वरनुं कथन छे, ज्ञानी लोक निःशंक पणे पोताना निष्कलंक स्वरूप ज्ञानरूपने सदा निरंतर निरखत के० सत्यपणे जुए छे॥२ए॥

हवे वेदना भय निवारणरूप मंत्र कहे छेः–अथ वेदना भय निवारण मंत्रः–

॥छप्पय छंद॥ः–वेदनवारो जीव, जांहि वेदंत सोउ जिय; यह वेदना अभंग, सुतो मम अंग नांहि व्यय; करम वेदना द्विविध, एक सुखमय दुतीय दुख; दोऊ मोह विकार, पुद्गलाकार बहिरमुख; जब यह विवेक मनमाहिं धरत, तब न वेदना भय विदित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित ॥ ३० ॥

अर्थः–वेदनावारो एटले जाणनारो तेतो जीव छे, अने जेने जाणवुं छे, तेपण जीवज छे, एटले वेदनावंत ते ज्ञानी जीवए ज्ञानरूप वेदन जे अभंग रूप छे तेतो मारुं अंग छे, अने कर्म वेदना जे छे ते मारी नथी. अने ते कर्मरूप वेदना बे प्र कारनी छे, एक सुखमय वेदना ने बीजी दुःखमय वेदना छे, ए बेउ मोह विकार छे, एवी सुख दुःखनी वेदना पुद्गलाकार छे, पुद्गलनी छाया बाह्यरूप छे, ज्यारे एवो विवेक विचार मनमां धरे छे, त्यारे वेदनानो भय वेदी शकातो नथी. ज्ञानी लोक होय तेतो वेदनाना भयथी निःशंक रहे अने निष्कलंक एवुं पोतानुं ज्ञान स्वरूप तेने सदा जोता रहे ॥ ३० ॥

हवे अनरक्षाभय निवारणरूप मंत्र कहे छेः–अथ अनरछा भय निवारण मंत्रः–

॥छप्पय छंदः॥–जो स्ववस्तु सत्ता सरूप जगमहि त्रिकाल गत; तास विनास न होइ सहज निहचै प्रमाण मत; सो मम आतम दरब, सरबथा नहि सहायधर; तिहि कारन रछक न, होइ भछक न कोइ पर; जब यहि प्रकार निरधार किय, तब अन रछा भय नसित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित ॥ ३१ ॥

अर्थः–स्ववस्तु के० निजआत्मरूप वस्तु; सत्तास्वरूप के० द्रव्यपणे छतुं कहेवा य ते जगत्मां त्रणे कालनेविषे पामिये, तेनो क्यारे पण विनाश नथी थतो, एवुं स हज स्वरूप निश्चयनयना प्रमाणवडे जाणवुं; एज मारुं आत्मद्रव्य जे छे, तेतो सर्वथा प्रकारे कोईनो सहाय धरतुं नथी, तेमाटे ए आत्मद्रव्यनो कोई रक्षक नथी. तेमज

कोईपर के० बीजो एनो रक्षक पण नथी. जेवारे एवो विचार हृदयमां नकी करी राखे, त्यारे अनरक्षा भय नाश पामे, एवा ज्ञानी होय ते अनरक्षा भयथी निःशंक थका पोताना निष्कलंक ज्ञानस्वरूपने सदा निरखे छे. ॥ ३१ ॥

हवे चौरभय निवारण रूप मंत्र कहे छेः—अथ चौरभय, निवारनमंत्रः—

॥छप्पय छंदः॥—परम रूप परतछ, जासु लछन चिन्मंडित, पर प्रवेश तहाँ नांहि महि मांहि अगम अखंडित; सो मम रूप अनूप, अकृत अमित अखूट धन; तांहि चोर किम गहै, ठोर नहि लहै और जन; चितवंत एम धरि ध्यान जब, तब अगुप्त भय उपसमित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित. ॥३२॥

अर्थः—जे परम स्वरूप कहेवाय छे, अने मान सन्मानवडे प्रत्यक्ष छे, चिन्मंडित के० चिन्मय एवुं जेनुं लक्षण छे, अने जेना स्वरूपनेविषे परस्वरूपनो प्रवेश नथी; महीमांहि के० पृथ्वीना वचमां अगम्य छे, अने अखंडित छे, एवुं तो अनूपम मारुं रूप छे, ते कोईनुं कीधेलुं नथी, अमित के० प्रमाणविना, एवु अखूट धन छे, ते धनने चोर केम हरी शके? अने और के० बीजा कोई लोक तेनी जगा पामी शके नही. ज्यारे ध्यान धरीने एवुं चिंतवन करे त्यारे अगुप्त भय के० उघाडा धननो जे भय ते उपशमी जाय. अने एवा ज्ञानी होय ते अगुप्त भयथी निःशंक थका पोताना निष्कलंक ज्ञान स्वरूपने सदा निरखता रहेछेः ॥ ३२ ॥

हवे अकस्मात्भय निवारण रूप मंत्र कहेछेः—अथ अकस्मात्भय निवारण मंत्रः—

॥छप्पय छंदः॥—शुद्ध शुद्ध अविरुद्ध, सहज सु समृद्ध सिद्ध सम; अलख अनादि अनंत, अतुल अविचल सरूप मम; चिद् विलास परगास, वीत विकलप सुख थानक; जहाँ दुविधा नहि कोइ, होइ तहाँ कछु न अचानक; जब यह विचार उपजंत तब, अकस्मात भय नहि उदित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञान रूप निरखंत नित. ॥ ३३ ॥

अर्थः—जे वस्तु शुद्ध छे, केवल पोताना स्वरूपने विषेज छे, बुद्ध के० ज्ञानमय छे, अविरोधी छे, सिद्धसमान ऋद्धिवंत छे, अलक्ष छे, आदिरहित छे, अने अंत रहित छे, जेनी तुलना कोईथी न थाय माटे अतुल छे, एवुं अविचल मारुं रूप छे. चिद्विलास के० ज्ञानविलासनो जेने प्रकाश छे. वीतविकलप के० अवस्था भेद रहित छे, अने समाधि सुखनुं थानक छे. ज्यां कोई विजातीय न पामिये त्यां कोई अणचिंतव्यो अचानक भय शोक कांई उपजे नही, आवो विवेकविचार हृदयामां ज्यारे उपजे छे, त्यारे अस्कमात् भय जे छे, ते उदय थतो नथी. जे ज्ञानी हो

य छे ते अकस्मात् जयथी निःशंक थको पोताना निष्कलंक ज्ञान स्वरूपने सदा जोता रहेछे. ॥ ३३ ॥

हवे निर्जराना करनार ज्ञानीनी व्यवस्था कहेछेः— अथ ज्ञानी व्यवस्था कथनंः—

॥ छप्पय छंदः॥—जो परगुन त्यागंत, शुद्ध निजगुन गहंत ध्रुव; विमल ज्ञान अंकूरा जासु घट महि प्रकास हुव; जो पूरव कृतकर्म, निर्जरा धार वहावत; जो नव बंध निरोध, मोक्ष मारग मुख धावत; निःसंकतादि जस अष्ट गुन, अष्ट कर्म अरि संहरत; सो पुरुष विचछन तासु पद, बनारसी बंदन करत. ॥ ३४ ॥

अर्थः— जे कोई पुद्गलादि गुणनो त्याग करे, अने ध्रुव के० निश्चयरूप एवा शुद्ध पोताना गुणनुं ग्रहण करे; निर्मल ज्ञाननो अंकुर के० उदय जेना घटमां प्रकाशित थयो, अने जे पूर्वकृत कर्मने निर्जरानी धार के० श्रेणिविषे वहावि दिये वली जे नवा बंधनो निरोध करीने एटले निराश्रव थईने मोक्षमार्गने सन्मुख दोडेछे; गुण श्रेणिमां दोडेछे, निशंकित प्रमुख जेना आठ गुण छे, ते आठे कर्मरूप शत्रुनो संहार करे, तेज विचक्षण पुरुष कहेवाय, अने तेना चरणकमलने वणारसीदास वंदन करेछे ॥ ३४ ॥

हवे आठ अंगनां नाम कहेछेः— अथ अष्टांगके नाम कथनंः—

॥ सोरठाः॥— प्रथम निसंसैजानि, द्रुतिय अवंछित परिनमन; तृतिय अंग अगिलान, निर्मल दृष्टि चतुर्थ गुन ॥ ३५ ॥ पंच अकथ परदोष, थिरी करन छठम सहज सत्तम वछल पोष, अठम अंग प्रजावन. ॥ ३६ ॥

अर्थः— पेलुं निःसंशय के० निःशंकित, बीजुं समकितनो गुण जे अवांछक पणारूप मननो परिणाम, त्रीजु अंग अग्लान, चोथुं गुण निर्मल दृष्टि एटले मूढ दृष्टि नही ते ॥ ३५ ॥ पांचमुं परदोष अकथन, छठुं अंग समकित स्थिर करवाना स्वजावरूप, सातमुं सर्व साथे वात्सलपणुं अध्यात्मक पोषक, अने आठमुं अंग प्रजावना गुणरूप॥३६॥

हवे अंगनां लक्षण कहे छेः— अथ अंग लक्षणंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— धर्ममें न संसै शुजकर्म फलकी न इछा, अशुजको देखि न गिलानि आनै चित्तमें; साचि दृष्टि राखै काहू प्रानीको न दोष जाखै, चंचलता जानि थिति ठानै बोध चित्तमें; प्यारे निजरूपसों उछाहके तरंग उठे, एह आठो अंग जब जागे समकितमें; तांहि समकितकों धरे सो समकितवंत, वहे मोषपावे छैन आवै फिर इतमें ॥ ३७ ॥

पुनः— धर्मनेविषे संदेह नहोय ते निःशंकित गुण, शुज कर्मना फलनी इछा न होय ते निस्पृही गुण, अनिष्ट वस्तुने जोइने चित्तमा ग्लानी न लाववी ते अग्लान गुण, कोईना

रुगाव्यारुगवुं नही ने साचनेविषे दृष्टि राखवी ते अमूढ दृष्टिगुण, कोई प्राणीनो दोष कहेवो नही ते दोषाकथन गुण; चंचलता त्यागीने ज्ञानरूप चिंतनेविषे स्थिरता राखवी ते थिरीकरण गुण;आत्म स्वरूपमां प्रेम राखवो ते वछल गुण;अने आत्मस्वरूप साधननेविषे उछाह लहरी के० तरंग उठवापणुं लीधुं रहे ते प्रभावना गुण, एम एक समकितना आठे अंग ज्यारे जागे, अने ते आठ गुणे सहित सम्यक्त्व धारण करे, ते समकितवंत केहेवाय ने तेवाज समकिती मोक्ष पामे, ने फरीथी आ संसारमां आवे नही

हवे निर्जराधारी चैतन्यनुं नाटक कहे छेः– अथ चैतन्य नाटक कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–पूर्व बंध नासे सोतो संगित कला प्रकाशे, नव बंध रुंधी ताल तोरत उछरिके; निसंकित आदि अष्टअंग संग सखा जोरी, समता अलाप चारि करे सुख भरिके; निरजरा नाद गाजे ध्यान मिरदंग वाजे,छक्यो महानंदमें समाधि रीझि करिके; सत्तारंग भूमिमें मुकत भयो तिहू काल, नाचे शुद्ध दृष्टि नट ज्ञान स्वांगधरिके ३७

अर्थः– जेम पूर्वकालनेविषे उत्कृष्ट स्थिति थकी बंध करतो हतो तेवी रीते न करतां अनुत्कृष्ट स्थिति थकी करवो एम पूर्व बंध नासे, तेतो संगित कला आलापचारी प्रकाशे, अने नवा बंधने रोधवुं ते रूपताल उछले छे, तालतोरे छे, निःशंकित प्रमुख जे समकितनां आठ अंग कह्यां, ते सहाय जोडी समता समाधि धारी तद्रूप स्वर बांधीने आलाप करे छे, अंही कर्मनी निर्जरा हेतु छे, एटले कर्मनाश करवारूप कार्यनुं निर्जरा कारण छे, ते ध्याननेविषे एक स्वरूपनाद गाजे छे, अने "सोहं" ध्वनि छे तेरूप मृदंग वाजे छे, अंही जे महानंदमय थईने छाक्यो तेतो सुखी थयो, ते जाणिये रीझ थई, ने पोतानी आत्मसत्ता तेज कोई रंगभूमि छे एटले रंग मंडप थयो, तेनेविषे त्रणे कालमां शुद्ध दृष्टिसहित ज्ञानरूप वेष स्वांग पहेरी धरीने नटरूप चैतन्य मुक्त थइने नाचे छे

॥ इतिश्री समयसार नाटकविषे बालबोधरूप निर्जराद्वार सप्तम संपूर्ण. ॥

॥ दोहाः ॥– कही निर्जराकी कथा, शिवपथ साधनहार; अब कछु बंध प्रबंधको, कहुं अल्प विस्तार ॥ ३९ ॥

अर्थः–मोक्ष मार्गनी साधनकार जे निर्जरा तेनी कथा हती ते कही, हवे जे बंध थाय छे तेना अधिकारनो अल्प विचार कहेछे ॥ ३९ ॥

हवे बंध जे छे ते छांडवा योग्य छे, माटे ते बंधनो विदारणहार जे समकित तेने नमस्कार करेछेः–अथ बंध विदारन सम्यक्त्व वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–मोह मद पाई जिन संसारी विकल कीने, याहिते अजानुबाहु विरद वहतु है; ऐसो बंध वीर विकराल महाजाल सम, ज्ञान मंद करे चंद राहु ज्यों गहतु है; ताको बल भंजिबेकों घटमे प्रगट भयो, उद्धत उदार जाको

उदेस महतु है; सो है समकित सूर आनंद अंकूर ताही, निरखी बनारसी नमो नमो कहतु है. ॥ ४० ॥

अर्थः—जे बंधरूप सुभट छे ते मोहरूप मदिरा पाईने सर्व संसारी जीवने विकल करेछे, एथी ए बंधरूप वीर छे ते अजानुबाहुनुं बीरुद कहावेछे के० सार्वभौम थई र हेला छे, एवो विकराल ए बंधरूप वीर सुभट छे, वली ए महाजाल समान छे. अने एज ज्ञान प्रकाशनें मंद करेछे, कोनी पेठे? जेम राहु चंद्रने मंद करेछे, तेनी पठे जाणी लेवुं. हवे एवा बंधरूप वीरनो प्रतिपक्षी जे छे, ते एनुं बल तोडवाने घटनेविषेज प्रगट थयो छे, जेनो उद्यम उद्धत छे, एटले कोईथी रोक्यो रहे एवो नथी, अने उदार छे के० श्रेष्ठ छे, तथा महत के० मोटो छे, तेतो समकितरूप शूरवीर जाणवो. ते आनंद अंकूर लईने उदय थयो छे, ते सम्यक्त्व शूरवीरने जोईने पोताना अंग उल्लसित थको बनारसीदास नमो नमो कहेछे. ॥ ४० ॥

हवे चेतनाविना कर्म बंध नथी थतां, माटे ज्ञानचेतना तथा कर्म चेतना ए बे उनी समज पाडेछेः—अथ कर्मचेतना ज्ञानचेतना वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः—जहां परमातम कलाको परगास तहां, धरम धरामें सत्य सूरजको धूप है; जहां शुभ अशुभ करमको गढाश तहां; मोहके विलासमें महा अंधेर कूप है; फेली फिरै छटासी घटासी घट घन बीच, चेतनाकी चेतना डुहोंधा गुपचूप है; बुद्धिसों न गही जाय बेनसों न कही जाय, पानीकी तरंग जैसे पानीते गुडुप है.॥४१॥

अर्थः—जे चेतनामां परमात्मानी कलानो प्रकाश थाय छे, ते धर्म धरती छे. ते धरतीमां सत्यरूप सूर्यनो तडको छे, एटले उजली जगा छे. वली जे चेतनानेविषे शुभ अशुभ कर्मना रसनी गढाश छे, एटले शुभाशुभ कर्मना रस वडे जे चेतना घोलाइ रही छे, त्यां मोहराजा विलास करे छे, तेतो घोर अंधकार छे, ए रीते चेतन पुरुषनी जे चेतना के० संज्ञा छे, तेतो घटाघन बीच के० शरीररूप मेघवच्चे छटानी माफक फेली रही छे, अने घटानी माफक फेलीथकी फरे छे, अने ए चेतना ते परमात्मानी कलाना प्रकाशमां तथा मोहविलासमां ए बेउ तरफ गुपचुप छे, एटले चुप थई रही छे; एवी ए चेतना बे तरफ प्रवेश करे छे, ए वात बुद्धिथी ग्रहण थाय छे; पण वचनथी कही जाय एवी नथी, जेम पाणीना तरंग पाणीमां गुडुप्प छे तेम चेतना बेउ तरफ गुडुप्प छे. ॥ ४१ ॥

हवे बंध द्वारनेविषे बंधनो हेतु कहे छेः— अथ बंधनिदान कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— कर्मजाल वर्गनासों जगमें न बंधे जीव, बंधे न कदापि मन वच काय जोगसों; चेतन अचेतनकी हिंसासों न बंधे जीव, बंधे न अलख पंचविषै

विखरोगसों; कर्मसों अबंध सिद्ध जोगसौं अबंध जिन हिंसासौं अबंध साधु ज्ञाता विषै ञोगसों; इत्यादिक वस्तुके मिलापसों न बंधे जीव, बंधे एक रागादि अशुद्ध उपजोगसों ॥ ४२ ॥

अर्थः– कोई कहे ले के कर्मजाल वर्गणा थकी जगत्मां जीव बंधाय ले, ते वात खोटी एटले कर्म वर्गणा जीवना बंधनो हेतु नथी, एवी रीते कदाचित् मनवचन कायाना योगथी पण जीव बंधातो नथी; चेतन तथा अचेतननी हिंसाथकी पण जीवने बंध थतो नथी. अलक्ष पति ले, तथा अलक्षरूपी ले; ते पंचेंद्रियना विषयरूप विष रोग वडे पण बंधातो नथी. कर्म वर्गणाथी सिद्धना जीव बंधाता नथी; वली जिनेश्वर देव ले तेतो त्रणे योगमां ले तोपण अबंध ले; साधुजेले, ते अनाञोगपणे हिंसा करे ले, तोपण अबंध ले; ज्ञाता विषय ञोगवेले, तो पण ते अबंध ले. ए रीतें कर्मव र्गणा प्रमुख वस्तुना मिलापथी जीवबंधातो नथी. पण मात्र एक राग द्वेषने मोह अने जीव बंधरूप अशुद्ध उपयोगथीज जीव बंधाय ले ॥ ४२ ॥

हवे राग द्वेष अने मोहनेज दृढपणे बंधना हेतु ठरावे लेः–

अथ बंधनिदानदृष्टि करन व्यवस्थाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कर्मजाल वर्गनाको वास लोकाकाश माहिं, मन वच कायाको निवास गति आउमें; चेतन अचेतनकी हिंसा वसै पुद्गलमें, विषै ञोग वरते उदेके उरजाउमें; रागादिक शुद्धता अशुद्धता है अलखकी; यहे उपादान हेतुबंधके ब ढाउमें; याहिते विचक्षन अबंध कह्यो तिहूं काल, राग दोष मोहनादि सम्यक् सुजाउमें.४३

अर्थः– कर्म जाल वर्गणानो वास तो लोकाकाशमांज ले, केवल कर्म वर्गणा कारण थकीज जो अमूर्त्ति चेतनद्रव्य बंधञावने पामे, तो लोकाकाशनो बंध केम नही थाय? तेमज मन वचन अने कायाना योगनो वास तो चारे गतिनेविषे ले, अने चारे आउषामां ले, त्यारे योग ते आत्माना बंधना हेतु केम थाय? चेतननां प्राण हरणथी हिंसा थाय ले; ते पुद्गल बंधरूप प्राणमांज हिंसा थाय ले, एमज अचेतननी हिंसा पण पुद्गलमां ले, ते आत्मासाथे स्पर्शती नथी, तो बंध केम थाय? अने विषय ञोग जे वरते ले, तेतो कर्मना उदयमां ले, अरुजी रह्या ले, अने आत्मा तो तेथी निरालो ले, ते बंधाय केम? माटे राग द्वेषने मोहथकी जेशुद्धता के० मुग्धता थाय ने परवस्तु ने पोतानी करी मानवी ते अलख पुरुषनी अशुद्धता ले. अने एज अशुद्धता बंधने वधारे ले, ए माटे विचक्षण पुरुषने त्रण कालविषे अबंध कह्यो; केमके, तेने सम्यक् स्वञावमां राग द्वेष अने मोह नथी. ॥ ४३ ॥

हवे ज्ञाताने अबंध कह्यो तोपण उद्यमी थइने क्रिया करवी ते समजावेछेः–

अथ उद्यम प्रशंसाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कर्मजाल जोग हिंसा ज्ञोगसों न बंधे पै त, थापि ज्ञाता उद्यमी बखान्यो जिन बैनमें; ज्ञानदृष्टि देतु विषै ज्ञोगनिसों हेतु दोउ, क्रिया एक खेत यो तो बनै नांहि जैनमें; उदै बल उद्यम गहै पै फलकों न चहै, निरदै दसा न होइ हिरदेके नैनमें; आलस निरुद्यमकी ज्ञूमिका मिथ्यात मांहि, जहां न संज्ञरे जीव मोहनींद सैनमें ॥ ४४ ॥

अर्थः– जीव छे ते कदापि कर्मजालथी बंधाय नही, अने जोग थकी, पण बंधाय नही अने हिंसा थकी पण न बंधाय, ज्ञोगवडे बंधायतोपण जिनेश्वरनावचनथकी ज्ञाता जीवने उद्यमीज वखाण्यो छे. ज्ञानने विषे दृष्टिपण आपेछे, अने विषयज्ञोगमां प्यार पण राखे छे, एवी बे क्रिया एक खेत के० एक आत्माविषे एक स्थानकविषे करेछे, एवुं तो जैनवासीमां बने नही; अने जे ज्ञानी होय ते एटलुं तो करेके जे संहनन के० संघयण प्रमुख कर्मनुं उदय बल छे, तेथी यथायोग ते क्रियाविषे उद्यमवंत थाय, अने तेना फलने इछे नही, ने हृदयरूप नेत्रनेविषे निर्दय दशावंत न थाय; अने आलस निरुद्यम तो मिथ्यात्वमांज पामिये, एथी आलस ने निरुद्यमनी मिथ्यात्व ज्ञूमिका छे, जे ज्ञूमिकानेविषे जीव मोहनिद्रा लेतो थको शयनदिशामां रहेछे, अने पोताना स्वरूपने संज्ञारतो नथी. ॥ ४४ ॥

हवे जे उदय माफक क्रिया कही तेथी उदय बलनी व्यवस्था कहेछेः–

अथ उदै व्यवस्था वर्णनंः–

॥ दोहाः ॥– जब जाकों जैसे उदै, तब सो है तिहि थान; सकति मरोरे जीवकी, उदै महा बलवान ॥ ४५ ॥

अर्थः– जे कालनेविषे जेनो उदय जेवो थाय ते कालनेविषे ते स्थान के० ते स्वरूपमां जीव रहे छे; ते जीवनी शक्ति मरोडीने पोतानी शक्ति प्रगट करे, एथी कर्म उदय महा बलवान् छे ॥ ४५ ॥

हवे उदय बल उपर दृष्टांत आपेछेः– अथ उदै बल वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे गजराज पस्यो कर्दमके कुंडबीच उद्यम अहुटै न पै छूटै दुःख दंदसों; जैसे लोह कंटककी कोससो उरज्यो मीन, चेतन असाता लहै साता लहे संदसों; जैसे महाताप सिरवाहिसों गरास्यो नर, तकै निजकाज उठी सकै नसुछंदसों; तैसे ज्ञानवंत सब जानै न वसाईकछु, बंध्यो फिरै पूरब करम फल फंदसों. ४६

अर्थः–जेम हाथी कर्दमना कुंडमां पड्यो पछी तेमाथी निकलवाने उद्यम अहुटै के०

करेछे, पण ते दुःखदंडथी छूटी शक्तो नथी; जेम हृदयमां लोह कटकी के० लोढाना कांटानी अणीमां चरायो एवो मछ छुटो थई शकतो नथी, तेथी मत्स्यनुं चेतन अशाता पामे, अने संद के० छुटे तो शाता लहे पण छूटे नही; वली कोई माणस ताप ज्वर अने माथाना दरदथी हेरान थतो पथारीमां पडी रह्यो होय अने ते मनुष्य पोताना कार्य करवाने वास्ते त्यांथी उठवाना अनेक उपाय करतो छतां पोताना स्वछंदथी उठी शकतो नथी, तेमज ज्ञानवंत जीवतो सर्व हेय उपादेय जाणे छे पण कोइ पोतानुं बल चाले नही; पूर्व संचित कर्मना फलना फंदथी एटले कर्मना उदयथी बांध्यो फरे छे ॥ ४६ ॥

हवे आलसुने निरुद्यमीनी जेवी अवस्थाछे तेवी बतावे छेः—अथ यथावस्था वर्ननंः—

॥ चौपाईः॥— जे जिय मोहनींदमें सोवै, ते आलसु निरुद्यमि होवै; दृष्टिखोलिजे जगे प्रवीना; तिन्हि आलस तजि उद्यम कीना ॥ ४७ ॥

अर्थः— जे जीव मोहरूप निद्रानेविषे सुइ रह्या छे, ते जीवने आलसु कहीए ने तेज निरुद्यमी कहेवाय. अने जे प्रवीण जीव ज्ञान दृष्टि खोली जाग्रत छे, ते आलस तजीने उद्यम करे छे ॥ ४७ ॥

हवे आलसु ने उद्यमीनी क्रियानुं वर्णन करे छेः— अथ यथावस्थातथा क्रिया कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— काच बांधे सिरसों सुमनी बांधे पायनिसों, जानै न गवार कैसी मनी कैसो काच है; योंही मूढ जूठमें मगन जूठहिकों दौरै, जूठ बात मानै पै न जानै कहा साच है; मनीकों परखि जानै जोहरी जगत मांहि, साचकी समुझी ज्ञान लोचनकी जाच है; जहांको जु वासी सो तो तहांको मरम जानै, जाको जैसो स्वांग ताको तैसेरूप नाच है ॥ ४८ ॥

अर्थः— काचने माथाउपर बांधे अने मणिने पगे बांधे, एवा गमार लोकने खबर नथी होती के काच शी वस्तु छे, अने मणि शी वस्तु छे? एम मूढ अज्ञानी जीव जूठी वातमां मग्न रहे, जूठा कार्यमां दोडे, अने जूठी वात माने, पण एम न जाणे के एमां साच केटलुं छे? मणि रत्ननी तो जे झवेरी होय तेज जगत्मां परीक्षा करी शके, तेमज साचानी समज पण तेनेज पडे, जेने ज्ञानरूपी लोचननी उत्पत्ति थई होय? केमके, जे ज्यांनो वासी होय ते त्यांनो मरम जाणे, एटले मिथ्यात्व भूमिकानो वासी मिथ्यात्वनेज ग्रहे अने सम्यक्त्व भूमिकानो वासी ते समकितनेज साचुं माने, मतलब जे जेवो वेष धरी आवे ते तेवोज नाच नाचेछे. ॥ ४८ ॥

हवे जे जेवी क्रियाकरे ते तेवुं फल पामे ते कहेछेः—अथ यथाक्रिया तथा फलकथनंः—

॥ दोहाः ॥– बंध बंधावे अंध व्है, आलसी अजान; मुक्ति हेतु करनी करे, ते नर उद्यमवान. ॥ ४९ ॥

अर्थः– जे भाव अंध थईने बंधने वधारे, ते अजाण आलसु कहेवाय छे अने जे मुक्ति हेतुने अर्थे क्रिया करेछे, ते मनुष्य उद्यमवंत कहेवाय छे. ॥ ४९ ॥

हवे जो ज्ञान होय तो वैराग्यपण होय अने जो वैराग्य न होयतो ज्ञान पण न होय, तेथी ज्ञान वैराग्यनुं सहचारिपणुंः–अथज्ञानवैराग्य सहचारित्ववर्णनंः– कहे छे.

॥ सवैया इकतीसाः॥– जब लगु जीव शुद्ध वस्तुकों विचारे ध्यावे, तवलगु भोगसों उदासी सरबंग है; भोगमें मगन तब ज्ञानकी जगन नाहिं, भोग अभिलाषकी दशा मिथ्यात अंग है; तातें विषे भोगमें मगन सो मिथ्याति जीव, भोगसों उदासि सो समकिति अभंग है; ऐसी जानि भोगसों उदासि व्है मुगति साधे, यहे मन चंग तो कठौत मांहि गंग है. ॥ ५० ॥

अर्थः– ज्यांसुधी जीव शुद्ध वस्तुना विचारमां दोरूतो होय, ज्यांसुधी सर्व अंगनेविषे भोगथी उदासीनपणुं जोवामां आवे; अने ज्यारे भोगमां मगन रेहेतो होय, त्यारे तो ज्ञाननी जगन के० जाग्रती न होय, केमके भोग अभिलाषनी दशामां वर्त्तवुं तेतो मिथ्यात्वनुं अंग छे, तेथी विषयभोगमां मगन रहे ते जीव मिथ्यातनुं अंग छे, तेथी विषयभोगमां मगन रहे ते जीव मिथ्यात्वी कहेवाय, अने जे विषय भोगथी उदासी रहे ते तो अभंग समकिती छे. एवुं जाणीने अहो ! भव्यलोको ! भोगथी उदास थई, ने मुक्तिने साधो. ते उपर दृष्टांत कहे छे के, जेनुं मन चंगुछे तेने कथरोटमांज गंगा छे, मतलब के कथरोटमां नातां थका गंगा स्नाननुं फल ते पामेछे. ॥ ५० ॥

हवे मोक्षना अधिकारनेविषे चार पदार्थनुं स्वरूप कहे छेः–

अथ पदार्थ चतुष्क कथनंः–

॥ दोहाः॥– धरम अरथ अरु काम सिव, पुरुषारथ चतुरंग; कुधी कलपना गहि रहै, सुधी गहै सरवंग ॥ ५१ ॥

अर्थः– धर्म, अर्थ, काम, ने मोक्ष, पुरुषार्थना ए चार अंग छे, ए पुरुषार्थ विषे कुधी के० कुमतिवालो पोतानी मति कल्पनाने झालीने बेसे छे, अने सुधी के० पंडित पुरुष छे ते सर्वांगनुं ग्रहण करे छे. ॥ ५१ ॥

हवे चारे पदार्थनी न्यारी न्यारी व्यवस्था सुमति अने कुमतिनामन आश्री कहे छेः– अथ पदार्थ व्यवस्था कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– कुलको आचार ताहि मूरख धरम कहै, पंडित धरम कहै वस्तुके सुभाउकों; खेहको खजानो ताहि अज्ञानी अरथ कहै, ज्ञानी कहै अरथ दरवदरसा

उककों; दंपतिको भोग ताहि डुरबुद्धि काम कहै, सुधीकामकहै अभिलाष चित आउको; इंद्रलोक थानकों अजान लोक कहे मोक्ष, मतिमान मोक्ष कहै बंधके अभावकों ॥५२॥

अर्थः– जे मूर्ख जन होय ते पोताना कुलना आचारने धर्म कहे छे, अने पंडित जन तो वस्तुना स्वभावने धर्म कहे छे, अज्ञानी जन होय ते खेहना खजाना जे सोनुं रुपुं जवाहिर वगेरे छे तेने अर्थ के० द्रव्य कहि बतावे छे, अने ज्ञानी जन होय ते द्रव्यना दरशावने अर्थ कहे छे; एटले षट्द्रव्यने अर्थ कहे छे. डुर्बुद्धि जन स्त्री भरतारना भोग संयोगने काम कहे छे, पण सुधी के० पंडित जन तो चित्तनी इछा अभिलाषने काम कहे छे; अने जे इंद्रनुं स्थानक छे, तेने अजाण लोक मोक्ष कहे छे, अने जे मतिमान एटले पंडित लोक छे तेतो जेथकी बंधनो अभाव थाय छे, तेने एटले बंधना नाशने मोक्ष कहे छे ॥ ५२ ॥

हवे चारे पुरुषार्थने अध्यात्मरूप कहे छेः–अथ पुरुषार्थ चतुष्क अध्यात्मरूपकथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–धरमको साधन जु वस्तुको सुभाउ साधै, अरथको साधन विलछ दर्व षटमें; यहै काम साधना जु संगहै निरास पद, सहज स्वरूप मोष सुद्धता प्रगटमें; अंतर सुदृष्टिसों निरंतर विलोकै बुध, धरम अरथ काम मोछ निजघटमें; साधन आराधनकी सोंज रहै जाके संग, भूलो फिरे मूरख मिथ्यातकी अलटमें ॥५३॥

अर्थः– धर्मनुं साधन तो तेने कहीये के जे वस्तुना स्वभावने साधवो एटले वस्तुना स्वभावने यथार्थ जाणवो; अर्थनुं साधन तेने कहीये के जे षट् द्रव्यने विलक्षण के० जुदां जुदां जाणवां; काम साधन तेनुं नाम छे के, जे निरास पदनो संग्रह करवो, एटले निस्पृह दशामां रहेवुं; मोक्षनुं साधन ते छे, के जेवके पोतानी सहज स्वरूप शुद्धता प्रगट भावमां करवी; ए रीते अंतरदृष्टि वडे एटले ज्ञान दृष्टि थकी बुद्धिमान पुरुष धर्म, अर्थ, काम ने मोक्ष ए चार पुरुषार्थने निरंतर पोताना घटमां देखे; एम चारे पुरुषार्थ साधवानी जेना संघाते सोंज के० सामग्री रहे छे, तोपण मूर्ख जे छे ते मिथ्यातनी अटलमां भूल्या फिरे छे ॥ ५३ ॥

हवे शुद्ध व्यवहार नये करी वस्तुनुं सत्य स्वरूप कहेछेः–

अथ शुद्ध नय वस्तु स्वरूप कथनंः–

॥ सवैया एकतीसाः॥–तिहुं लोकमांहि तिहूं काल सब जीवनिको, पूरव करम उदै आइ रस देतु है; कोउ दीरघाउ धरे कोउ अलपाउ मरे, कोउ डुखी कोउ सुखी कोउ समचेतु है; याहीमें जीवायो याहि मास्यो याहि सुखी कस्यो, डुखी कस्यो एसी मूढ आपु मानी लेतु है; याही अहं बुद्धिसों न विलसै भरम मूल, यहै मिथ्या धरम करम बंध हेतु है. ॥ ५४ ॥

अर्थः– त्रणे लोक तथा त्रणे काल तेनेविषे जगत्वासी सर्व जीवने पूर्व संचित नर्म उदय आवेछे, ने ते पोतानो कडवो तथा मीठो रस आपेछे, तेणे करी ने कोई .र्घ आयुष्य भोगवी मरेछे, ने कोई अल्प आयुष्यमांज मरेछे, कोई दुःखी छे, अने कोई सुखी होयछे, कोई समचित केο सम भावमां रहेछे, एम पोत पोतानी कमाई थी सर्व जीव सुखी अथवा दुःखी छे. तेने मूढ प्राणी जे छे ते पोताना साधन माने छे के, जो में फलाणाने जीवाड्यो, फलाणाने मारी नाख्यो, फलाणाने दुःखी कीधो, ने फलाणाने सुख आप्युं. एवो मूढ अहं बुद्धिथी भर्ममां भुल्यो फरेछे, अने ए भूल एनी मटती नथी, एज मिथ्या धर्म मूढने कर्मबंधनो [illegible], तवलगु भोगसों [illegible] तव ज्ञानकी जगन नाहिं [illegible]

यातं अंग है [illegible] छे. ॥ ५४ ॥

हवे फरी मूढनीज व्यवस्था कहेछेः– अथ मूढता कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जहांलों जगतके निवासी जीव जगतमें, सवै असहाको ऊ काहुको न धनी है; जैसी जैसी पूरव करम सत्ता बांधि जिन, तैसी तैसी उदैमें अवस्था आइ बनी है; एते परि जो कोउ कहै कि में जीवावो मारो इत्यादि अने क विकलप वात घनी है; सो तो अहं बुद्धिसों विकल भयो तिहुं काल, होले निज आतम सकति तिन्ह हनी है. ॥ ५५ ॥

अर्थः– ज्यांसुधि जीव जगत्मां निवास करेछे त्यांसुधी एक बीजाने असहाय पणे रहेछे, कोई कोईनो सहायकारी नथी, तेम कोई कोइनो धणी नथी, अने जेवी जेवी पूर्व कालनेविषे कर्मसत्ता बांधी राखीछे, तेवी तेवी उदय कालनेविषे जीवनी अ वस्था बनेछे; एटला उपर जे कोई कहे के में आने जीवाड्यो ने आने मार्यो, इत्या दि अनेक मनना विकल्पनी वातो घणी छे, ते सघली अहंबुद्धि थकी थाय छे, अने ते जीव त्रणे कालने विषे अहंकार बुद्धिमां होले छे; तेणे शुद्ध ज्ञानशक्तिने हणी छे, अने ते जीवनी ए मूढ अवस्था कहेवाय छे ए रहस्य छे. ॥ ५६ ॥

हवे चार प्रकारे करीने जीवनी व्यवस्था उपर चार दृष्टांत आपेछेः–

अथ चार प्रकार जीव व्यवस्था कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– उत्तम पुरुषकी दशा ज्यों किसमिस द्राख, बाहिज अभिं तर विरागी मृदु अंग है; मध्यम पुरुष नारीयर केसी भांति लिये, बाहिज कठिन हिय कोमल तरंग है; अधम पुरुष बदरीफल समान जाके, बाहिरसों दिसै नरमाइ दिल संग है; अधमसों अधम पुरुष पुंगीफल सम, अंतरंग बाहिर कठोर सरवंग है.

अर्थः– उत्तम पुरुषनी दशा किसमिस द्राक्ष जेवी छे, जेम किसमिस द्राक्ष बा हिरथी ने अंदरथी कोमल छे; तेमज उत्तम पुरुष बाह्य व्यवहार अने अभ्यंतर व्यव हारमां पण मृदु अंग केο कोमल छे; मध्यम पुरुष नारीयल सरीखो छे, जेम नारीय

ल बाह्य व्यवहारमां कठोर अने अभ्यंतर कोमल छे, तेम मध्यम पुरुष पण बहारथी कठण अने हृदयामां कोमल होय छे. अधम पुरुष बोर समान छे; जेम बोर बाह्य व्यवहारनेविषे नरम देखाय छे, ने मांहेथी कठोर छे, तेम अधम पुरुष बहार नरमाश राखे पण अंतरमां संग के० पाषाण जेवो कठण होयछे. अने अधमाधम पुरुष पुंगीफल के० सोपारी जेवोछे; जेम सोपारी बहारने अंदर सर्वांगमां कठोर छे, तेम अधमाधम पुरुष मांहे अने बहार सघले कठोर होय छे. ॥ ५६ ॥

हवे उत्तम पुरुषनी दशा कही बतावेछेः– अथ उत्तम पुरुष कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– कीचसो कनक जाके नीचसो नरेसपद, मीचसी मिताई गरवाई जाके गारसी; जहरसी जोग जानि कहरसी करामति, हहरसी हौंस पुदगल छबि छारसी; जालसों जग विलास भालसों भुवन वास, कालसों कुटंब काज लोक लाज लारसी; सीठसों सुजश जानै बीठसों बखत मानै ऐसी जाकी रीति ताही बंदत बनारसी. ॥ ५७ ॥

अर्थः– जे पोताना हैयानेविषे सुवर्णने कादव सरखुं जाणे, अने नरेश पद के० राज्य गादीने नीच सरखी जाणे, मित्राईने मीचसी के० मरण जेवी जाणे, ने गरवाई के० वडाई ते लीपवानी गार जेवी जाणे, रसायन प्रमुख द्रव्यजोगनी जातिने जे झेर सरिखी जाणे, मंत्र शक्तिवडे जे करामत थाय तेने कहर सरखी जाणे, देशी भाषाने विषे हहर के० अनर्थ ते सरखी हौंस छे, अने पुद्गलनी छबी ते राख समान जाणे, माया रूप जाल तथा जगत्नो विलास तेने जाल जेवो जाणे, भुवनवास के० घरवासने तीरना भाल समान जाणे, कुटुंब कार्यने काल समान करी जाणेछे, लोकलाज राखवी ते मोहराजनी लाल जेवी जाणे छे, सुयशने सीठ के० नाकना मेल समान जाणे, भाग्यो दयने विष्टासमान जाणे, एवीजेनी रीत होय तेने बनारसीदास वंदना करेछे५७

हवे मध्यम पुरुषनी दशा बतावे छेः– अथ मध्यम पुरुष यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे कोउ सुभट सुभाय ठग मूरखाय, चेरा भयो ठगनीके घेरामें रहतु है; ठगोरी उतरि गई तब तांहि सुधि भई, पर्यो परवस नाना संकट सहतु है; तैसेही अनादिको मिथ्याति जीव जगतमें, डोले आठो जाम विसराम न गहतु है; ज्ञान कला भासी भयो अंतर उदासी पें तथापी उदै व्याधिसों समाधि न लहतु है. ॥ ५८ ॥

अर्थः–जेम कोई स्वभावे सुभट होय ने तेने कोइ ठग मळे ने ते सुभटने कोइ जडी मूळी खवरावे, तेथी ते सुभट ठगनो चेलो थइ जाय, अने ठगना घेरामां पड्यो रहे, पछी ते सुभटे मूळी खाधेली तेनी असर नीकळी जाय ने पाछो पोतानी शुद्धिमां आवे, तेवा

रे ते ठगने दुर्जन करी जाणे, पण पोते परवश पड्यो तेथी नाना प्रकारना संकट सहन कर्या करे छे, तेम अनादि कालनो मिथ्यात्वी जीव परवश पडेलो नाना प्रकारना संकट सहन करेछे, ते आठ प्रहर संसारमां विकल थइ ने डोले, पण विश्राम लिये नही, एटलामां ज्ञान कलानो जास थयो, तेवारें अंतरमां उदासी थयो तो पण कर्मना उदयरूप व्याधिवडे समाधि लेतो नथी, आश्रवमांज रहेछे ॥ ५८ ॥

हवे अधम पुरुषनी दशा दृष्टांत दइने देखावे छेः– अथ अधम पुरुष यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसें रांक पुरुषके जाये कानी कोडी धन, उलूवाके जाय. जैसे संझाई बिहान है; कूकरके जाये ज्यों पिंडोर जिरवानी मठा, सूकरके जाय ज्यों पुरीष पकवान है; वायसके जाये जैसे नींबकी निंबोरी दाख, बालकके जाये दंत कथा ज्यों पुरान है; हिंसकके जाये जैसे हिंसामें धरम तैसें, मूरखके जाये सुन्न बंध निरवान है

अर्थः– जेम रांक पुरुषने काणी कोढी छे तेहीज धन मनाय छे, अने जेम घुवडने संध्याकाल प्रजात मनाय छे,अने कुकराने पिंडोर जीरवानी के० गाय जेंसनुं पाणी ते दहींनो थको मनाय छे, अने सूकर के० सूअरने पुरीष के० विष्टा तेज पक्वान्न मनाय छे अने कागडाने लींबोडी तेज द्राक्ष जेवी मनाय छे, अने बालकने दंत कथा के० लोकनी कथा छे तेज पुराण मनाय छे, ने हिंसकने हिंसामांज धर्म मनाय छे, तेमज मूर्खने पुण्यबंध ते निरवाण के० मोक्षपद मनाय छे, ए अधम पुरुषनी दशा जाणवी.

हवे अधमाधम पुरुषनी दशा दृष्टांतेकरी देखावेछेः–अथ अधमाधम पुरुष यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कुंजरको देखि जैसे रोष करी जुंसे स्वान, रोष करै निधन बिलोकि धनवंतकों; रेनके जगैयाको विलोकि चोर रोष करै, मिथ्यामति रोष करै सुनत सिद्धांतको, हंसकों विलोकी जैसे काग मनि रोष करे, अजिमानी रोष करै देखत महंतकों; सुकविकों देखि ज्यों कुकवि मन रोष करै त्योंही दुरजन रोष करै देखि संतको.

अर्थः– जेम हाथी जोइने कुतरा रीशे जराईने जुंकेछे, जेम निर्धन पुरुष धनवानने जोईने रीशे जराय छे, जेम राते जागनार पुरुषने जोईने चोर रीशे जराय छे, जेम मिथ्यात्वी सिद्धांतने शांजली रीशे जराय छे, जेम हंसने जोईने कागडो रीशे जराय छे, जेम महंतने जोईने अजिमानी रीश करे छे, जेम सुकवि के० सारा कविने जोईने कुकवि के० नठारो कवि रीशे बले छे, तेम अधमाधम पुरुष साधुने जोईने दुष्ट मन वके रीशे जराय छे. ॥ ६० ॥

हवे वली अधमाधम पुरुषनी चाल कहेछेः–अथ पुनः अधमाधम पुरुष वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– सरलकों सठ कहै वकताकों धीठ कहै, विनो करे तासों कहै धनको अधीन है; छमीको निबल कहै दमीकों अदत्ती कहै, मधुर वचन बोले

तासों कहै दीन है; धरमीको दंत्री निसपृहीको गुमानी कहै, तिशना घटावै तासो कहै जागहीन है; जहां साधु गुण देखे तिन्हकों लगावै दोष, ऐसो कछु डुर्जनको हिरदो मलीन हे. ॥ ६१ ॥

अर्थः— सरल चित्तवालाने शठ के० मूर्ख कहे, वक्ता के० कथा कीर्त्तन वांचनारने धीठ कहे, विनय करनारने कहे के एतो धननी आधीनताथी करेछे, क्षमावंतने निर्बल कहे; इंद्रिय दमन करनारने अदाता कहे, अने मधुर जाषण करनारने कहे एतो गरीब बीहामणो छे, धर्मीने दंजी कहे, निस्पृहीने अहंकारी कहे छे, तृष्णा छोमनारने जाग्यहीन कहे, ज्यां एवा सरलतादिक गुण देखे त्यां दूषण लगाडे, एवुं डुर्जननुं हृदयुं मलीन के० मेलुं होय छे. अने एवा डुर्जननेज अधमाधम पुरुषनी प्रकृति जाणवी.

हवे मिथ्यादृष्टिनी अहंबुद्धिनुं वर्णन करे छेः— अथ मिथ्यादृष्टि वर्णनंः—

॥ चौपाईः॥— में करता में कीन्ही कैसी; अब यों करो कहौ जो ऐसी; ए विपरीत जाव है जामें; सो वरतै मिथ्यात दसामें. ॥ ६२ ॥ दोहराः— अहं बुद्धि मिथ्यादसा, धरै सु मिथ्यावंत; विकल जयो संसारमें, करै विलाप अनंत. ॥ ६३ ॥

अर्थः— हुं कर्त्ता छुं, आ वर्त्तमान कालमां केवी वात करुंछु, जविष्य कालमां जेवी कहीश तेवी करीश, एवी अहं बुद्धि ए विपरीत जाव छे, अने ए जाव मिथ्यात्व दशाना छे ॥ ६२ ॥ जे एवी अहंबुद्धि छे, तेज मिथ्यात्व दशा छे, अने ए मिथ्यात्वदशाने धारण करे, तेज मिथ्यात्वी कहेवाय छे, अने एवा पुरुषोज संसारनेविषे विकल थका संसारमां जटकता डुःख सहता अनंत विलाप करेछे. ॥ ६३ ॥

हवे मूढ प्राणीनी व्यवस्था कही देखाडे छेः— अथ मूढ व्यवस्था कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— रविके उदोत अस्तहोत दिनदिन प्रति, अंजुलीके जीवन ज्यों जीवन घटतु है; कालके ग्रसत छिनछिन होत छीन तन, औरके चलत मानो काठसो कटतु है; एते परि मूरख न खोजै परमारथकों, स्वारथके हेतु भ्रम जारथ ठटतु है; लग्यो फिरे लोगनिसों पग्यो परजोगनिसों, विषै रस जोगनिसों नेकु न हटतु है. ॥६४॥ जैसे मृग मत्त वृषादित्यकी तपतिमांहि तृषावंत मृषा जल कारण अटतु है; तैसे जववासीमायाहीसों हित मानिमानि ठानिठानि भ्रमजूमि नाटक नटतु है; आगेकों ढुकत धाय पाछे बछरा चराय, जैसे दृग हीन नर जेवरी वटतु है; तैसे मूढ चेतन सुकृत करतूति करै, रोवत हसत फल खोवत खटतु है. ॥ ६५ ॥

अर्थः— सूर्यना उदयथी ते अस्तसुधीमां अंजलिना पाणीनी परें आयुष्य घटतुं जायछे, अने क्षण क्षणविषे काल जे छे ते शरीरने ग्रासेछे, तेथी शरीर क्षीण थाय छे. ए रीते तन और के० शरीर तरफ काल ग्रसी रह्योछे, एटले जेम शस्त्र कोई वस्तुने का

पेठे तेम काळरूपी शस्त्र शरीरने कापेछे. एवुं कार्य थइ रह्युं छे तोपण मूर्खजन जे छे ते परमार्थने खोजतो नथी, पण पोताना स्वार्थने माटेज भ्रमना भारने खेंची रहेछे; लोग के० परवस्तु जे काम क्रोधादिक ते साथे लागो फिरेछे, अने परपुद्गलजोग तेथी पग्यो के० इलि मलि रहेछे, तेथी विषयरसने भोगवतां जरा पण हटतो नथी. ॥६४॥

वली जेम कोइ जबरो मृग होय छे ते वृषादित्य के० वृषसंक्रांतनो सूर्य एटले जेष्टमास तेना तापनेविषे अति तृषावंत थयो थको मृषा के० जूठी इछा थकी पाणीने माटे अटत हे के० भटके छे, तेवी रीते संसारी जीव परस्वरूप मायाजालने विषे हेत राखीने एटले तेने हितकारी मानीने भ्रमरूपी भूमीनेविषे ठराव करी नट नी पेठे नाची रह्यो छे. ते केवो छे तो के जेवो कोई दृगहीन के० आंखविनानो पुरुष होय ने ते दोरी वाटतो होय त्यां पासे वाछरुं होय ते दोरीने चावी नाखतो होय तेने ते जाणी शकतो नथी तेथी तेनी मेहनत व्यर्थ जाय छे. तेम मूढ प्राणी जे छे ते सुकृतनी क्रिया करेछे त्यारे रोवत हासत के० अरति अने रतियें करी क्रिया करेछे तेथी ते करेली क्रियाना परम फलने खोई देयछे. ॥ ६५ ॥

हवे फरी बंधना करनार मूढ विषयिनी अवस्था कहेछेः—अथ मूढ विषयी वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— लिये द्रिढ पेच फिरे लोटन कबूतरसो, उलटो अनादि को न कहो सुलटु है, जाको फल दुःख ताही सातासो कहत सुख, सहित लपटी असी धारासी चटतु है; ऐसे मूढ जन निज संपती न लखे क्योंही, मेरी मेरी मेरी निशिवासर रटतु है; याही ममतासों परमारथ विनसी जाइ, कांजीको फरस पाई दूध ज्यों फटतु है. ॥ ६६ ॥

अर्थः— जेम लोटण खबुतर होय ते जो पांख बंध करीने पेच लाग्यो तेथी उलट पालट फरेछे, तेम मूढ प्राणी अनादि कालना कर्म बंध पेचमां पडेलोछे माटे अवलो मार्ग धरेछे, पण कोई रीते सवलो मार्ग धरतो नथी. अने जेनुं फल दुःख छे एवा विषय भोगवडे जे कंईक साता उपजे, तेने सुख मानेछे, जेम कोई मधे लपेटी तरवार नी धारने चाटे, जेमां मधनी मीठाश थोडी होय ने तरवारनी धार ते मीठास चाखवा जतां जीभने छेदी नाखे तेनुं दुःख बहु थाय, तेम मूर्ख प्राणी पोतानी ज्ञानादिक संपत्तिने कदी ओलखतो नथी, पण परवस्तुने रात दिवस मारी मारी मानी रह्योछे, एज जूठी ममतावडे परमार्थ जाणवानो विनाश थई जायछे; जेम कांजीना पाणीना स्पर्शथी दूध फाटी जायछे, तेम ममताथी परमारथ बगडी जायछे. ॥ ६६ ॥

हवे मूढनी अहंबुद्धिनी वव्यवस्था कही बतावेछेः— अथ पुनः मुढ व्यवस्थाः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—रूपकी न झांक हिये करमको ढांक दिये, ज्ञान दबि रह्यो

मिरगांक जैसे घनमें,लोचनकी ढांकसों न माने सदगुरु हांक,बोले पराधीन मूढरांक तिहुं पनमें; टांक इक मांसकी डलीसी तामें तीन फांक, तीनि कोसो अंक लिखिराख्यो काहु तनमें; तासों कहे नांक ताके राखिवेको करे कांक,लांकसो खरग बांधिबांक धरे मनमें

अर्थः– आत्मानुं रूप हृदयामां नथी दीठुं, तेथी कर्मनो डांक पीधो, एटले कर्मनो रस व्यापी गयो, तेणे करी आत्मानुं स्वरूप जे शुद्ध ज्ञान ते दबाई रह्युं. कोनी पेठे? जेम धन कहेतां मेघरुप वादलाउने विषे चंद्र ढंकाइ रहेछे तेम ज्ञानरुप लोचनउपर मिथ्यात्वनी ढांक पडी तेथी सद्गुरुनी हांक के० आज्ञा तेने मानतो नथी, अने मूर्ख पराधीन थको रांक वचन बोलेछे, अने त्रणे कालनेविषे निःशंक रहेछे. हवे मूढता प्रगट करी बतावेछे जे नाकछे ते टांक के० एक मांसनी सीरूरी छे तेनेविषे फांक छे ते प्रत्यक्ष प्रमाणे देखियें छैयें, ते त्रण फांक केवा देखायछे ते कहेछे, ते जाणे त्रणनो आंक त्रण फांकवालो कोइए शरीरमांज लखी राख्योछे, ते औदारिक अवयवने नाक कहेछे, अने ते नाकने राखवाने कांक के० लडाई करे ने विचारे जे मरी जईश तोपण नाक तो रहेशे एवा विचारथी लडाई करेछे खग धरेछे अने मनमां वांक धरीज राखेछे.

हवे मूढना विषय रागीपणानी दशा कहे छेः– अथ मूढ विषय वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसे कोउ कूकर क्षुधित सूके हाड चावे, हाडनिकी कोर चिहूं उंर चुभे मुखमें; गाल तालु रस मांस मूढनिको मांस फाटे, चाटै निज रुधिर मगन स्वादसुखमें; तैसे मूढ विषयी पुरुष रति रीत ठाने, तामें चित साने हित माने खेद दुखमें, देखै परतछ बल हानी मल मूत खानी गहे न गिलानि पगी रहे रागरुखमें

अथः– जेम कोई कुतरो भुख्यो थको हाडकाने चावे छे, ते हाडकु सूकु होय छे, तो पण तेने चारे तरफ फेरवीने ते चाटे छे, ने तेम चाटतां तेना गाल जीभ ने तालवानी चामडी फाटे छे, अने तेथी लोही नीकले छे ने तेज पोताना लोहीना स्वादथी मगन थई जाय छे, तेमज जे मूढ विषयी पुरुष छे, ते रति के० स्त्री पुरुष संयोगनी रीति जे श्रृंगार रस तेनेविषे मग्न रहे छे, अने तेथी खेद दुःख उपजे छे, तोपण तेमां सुख माने छे, अने ते कार्यथी प्रत्यक्ष पणे बलनी हानि थती जाणे छे, तथा तेने मल मूत्रनी खाण जुए छे. तेम छतां तेमां ग्लानि ग्रहण करतो नथी, दुगंछा पामतो नथी, अने रागरूप रुख के० वृक्षमां मली रहेछे, तेनो शोक आणतो नथी, उलटो तेमां चित्त लगावी आनंद मानेछे. ॥ ६७ ॥

हवे संसारीनी विकलता कहीने साधु जननी व्यवस्था कहे छेः–

अथ संसारी तथा मुनि व्यवस्था कथनः–

॥ अडिल्ल छंदः ॥– सदा करमसों भिन्न सहज चेतन कह्यो; मोह विकलता मानि

मिथ्याती व्हे रह्यो; करे विकल्प अनंत, अहंमति धारिके; सो मुनि जो थिर होइ ममत्त निवारि के ॥ ६ए ॥

अर्थः– निश्चयनय वडे सहजरूपे चेतन छे, ते सदा कर्मथी भिन्न कह्युं छे, पण व्यवहारमां पडीने मोहनुं विकलपणुं मानीने मिथ्यामती थई रह्यो छे, तेथी मनमां अनंत विकल्प धरीने अहंबुद्धि धारी रह्यो छे, अने जेणे ममत्व निवारण कीधुं ने स्थिरता पाम्यो तेज साधु थयो. ॥ ६ए ॥

हवे मिथ्यात्व भावथकी व्यवहारनुं असंख्यातपणुं कहे छेः–

अथ मिथ्यात्वभाव व्यवहार एकत्व कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– असंख्यात लोक परवान जो मिथ्यात भाव, तेई व्यवहार भाव केवली उकत है; जिन्हके मिथ्यात गयो सम्यक दरस भयो, ते नियत लीन वि वहारसों मुकत हैं; निरविकलप निरुपाधि आतम समाधि, साधि जे सगुन मोछ पंथ कों ढुकत है, तेई जीव परम दशामें थिररूप व्हे के, धरममें ढुके न करमसों रुकत है.

अर्थः– एक लोकाकाश छे, तेनी असंख्यातपणे कल्पना करीयें; तेना प्रदेश असंख्यात छे, ते प्रमाणेज मिथ्यात्व भाव छे. जीवना अध्यवसाय स्थान छे, ए व्यवहार भावे केवलीनु कहेवुं छे, अने जेनु मिथ्यात्व गयुं, जेने सम्यक् दर्शन थयुं,जे निश्चय–लीन थयो, ते व्यवहारथी मुक्त थाय. जेमां विकल्प नथी ते निर्विकल्प, अने जेमां उपाधि नही ते निरुपाधि, एवी समाधिथी जे सगुण थईने एटले ज्ञानादिकगुणमय थईने मोक्ष मार्गने जुए छे, ते जीव परम दशामां स्थिर रूप थईने आत्मिक धर्ममां ढुके पण कर्मथी रोकाय नही. ॥ ७० ॥

हवे गुरुने शिष्य प्रश्न पूछे छेः– अथ शिष्य प्रश्न कथनंः–

॥कवित्त छंदः॥– जे जे मोह करमकी परिनति, बंध निदान कही तुम सब;संतत भिन्न शुद्ध चेतनसों, तिन्हिको मूल हेतु कहु अब्ब; कै यह सहज जीवको कौतुक, कै निमित्त है पुग्गल दव; शिश नवाइ शिष्य इम पूछत, कहे सुगुरु उत्तर शुनु भव.॥७१॥

अर्थः– मोह कर्मनी जे जे परिणति छे, एटले राग द्वेषादिक छे, ते तो तमे सर्व बंधनुं निदान कह्युं, अने एतो निरंतर शुद्ध चेतन थकी भिन्न छे, ते माटे ए बंधनो हवे मूल हेतु कहो; ए बंध थाय छे ते शुं. जीवने सहज कौतुक छे, के एने पुग्गल द्रव्य निमित्त छे ते कहो एम, शिष्य माथुं नमावीने गुरुने पूछे छे. हवे गुरु उत्तर आपे छे के भव्य प्राणी एनो उत्तर शांभलो॥ ७१ ॥

अथ गुरु वचनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसे नाना वरन पुरी बनाइ दीजे हेठि, उज्जल विमल मनु

सूरज करांति है; उजलता नासै जब वस्तुको विचार कीजै, पुरीकी झलकसों वरन भांति भांति है; तैसे जीव दरवको पुग्गल निमित्त रूप, ताकी ममता सो मोह मदिराकी मांति है; भेद ज्ञान दृष्टिसों सुभाव साधि लीजे तहां, साचि शुद्ध चेतना अवाची सुख शांति है. ॥ ७२ ॥

अर्थः– जेम सूर्यकांति मणि छे तेम बीजो काश्मिरी पाषाण तेवोज छे, ने ते महा उज्वल छे, ने तेनी नीचे तहरेतहरेना रंगनी पुरी बनावी आपिये, त्यारे तेमां भात भातनो रंग देखाय; पण ज्यारें ते सूर्यकांति मणिना स्वभावनो विचार करिये,त्यारे तो तेनी कांति जे उज्वल छे, तेज मनमां आवे, अने दीठामां तो नीचेनी बनावेली रंगनी पुरणीनी जलक पडेछे तेथीज तरेहवार रंग वरण देखाय छे, ते रीते जीव द्रव्यनी अशुद्ध दशानुं निमित्त कारण पुद्गल द्रव्य छे, तेनी ममताथी मोहरूप मदिरानुं उन्मत्तपणुं छे अने ज्यारे जड चेतननी भेद ज्ञान दृष्टिवडे चेतननो स्वभाव साधिये, त्यारे साची शुद्ध चेतनाज भासे. अने अवाच के० वचन गोचर नही, एवी रीतनी सुख शांति छे तेज भासे. ॥ ७२ ॥

हवे वस्तुना संयोगथी स्वभावमां भेद पडेछे, ते उपर दृष्टांत आपे छेः–

अथ संयोगिका स्वभाव वर्णनं:–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जैसे महिमंडलमें नदीको प्रवाह एक, ताहीमें अनेक भांति नीरकी ढरनि है; पाथरको जोर तहां धारकी मरोरि होति, कांकरिकी खानि तहां झागकी झरनि है; पौनकी झकोर तहां चंचल तरंग उठे, भूमिकी निचानि तहां भौरकी परनि है; तैसे एक आतमा अनंत रस पुदगल, दुहूकी संयोगमें विभावकी भरनि है. ॥७३॥

अर्थः– जेम पृथ्वी मंडल उपर नदीनो प्रवाह एकरूप छे, अने तेज नदीना प्रवाहमां पाणीनुं व्हेवुं अनेक तरेहनुं छे, जे ठेकाणे नदीना प्रवाहमां मोटा मोटा पथरा आवी अफेला होय त्यां धार मरडाईने पडे छे, अने ज्यां कांकरी घणी होय त्यां झागनी झरनी के० झाग एटले पाणीना झरा भभकी उठेछे. अने ज्यां पवननी झकोर चालती होय त्यां चंचल तरंग उठेछे, अने जे ठेकाणे जमीन नीची होय त्यां भोर पडेछे, वमल थायछे, तेम आत्मद्रव्य छे, तेने पुद्गल द्रव्यनो संयोग छे अने रस जे छेते षट्गुणी हानि वृद्धिथी अनंत छे, तेनो संयोग थये आत्मानेविषे विभावनी भरणी थायछे.

हवे आत्मा अने शरीर एक मेक बंधाई रह्यां छे पण लक्षण भेदे जुदा जुदा छे. ते बतावे छेः– अथ आत्मशरीर लछन भिन्न कथनं:–

॥ दोहराः ॥– चेतन लछन आतमा, जड लछन तन जाल; तनकी ममता त्यागि के, लीजें चेतन चाल ॥ ७४ ॥

अर्थः– आत्मानुं चेतन लक्षण छे. शरीरनुं जड लक्षण छे, तेथी शरीरनी ममता छोडीने चेतननुं शुद्ध ज्ञानपणुं तेनुं ग्रहण करी लेवुं. ॥ ७४ ॥

हवे निःकेवल आत्मानी शुद्ध चाल कहेछेः– अथ आत्मा यथाः–

॥ सवैया तेईसा ॥– जो जगकी करनी सब ठानत, जो जग जानत जोवत जोई; देह प्रमान पै देहसुँ दूसरो, देह अचेतन चेतन सोई; देह धरे प्रभु देहसु भिन्न, रहे पर छन्न लखै नहि कोई, लछन वेदि विचछन बूझत अछनिजों परतछ न होई. ॥७५॥

अर्थः– जे पदार्थ सर्व जगतनी करणी करेछे, एटले चतुर्गति गमन करेछे, अने जे जगतने जाणे छे, अने जोवत के० देखेछे, पोताना देहने प्रमाणे छे, पण देहथी ते जुदो छे. देह अचेतन पिंड छे अने आत्मा चेतनपिंड छे, देहधारी छे, प्रभु छे, पण देहथी भिन्न छे. देहनेविषे प्रछन्न के० ढंकाई रह्यो छे, एने कोइ लखतो नथी, पण एनां जे लक्षण छे तेने वेदी के० जाणीने विचक्षण पुरुष एने ओलखेछे. एवो ए आत्मा अक्ष के० इंद्रियथी प्रत्यक्ष नथी. ॥ ७५ ॥

हवे देहनी चाली कहेछेः– अथ देह यथाः–

॥ सवैया तेईसा ॥–देह अचेतन प्रेत दरी रज रेत भरी मल खेतकी क्यारी; व्याधिकी पोट अराधिकी ओट उपाधिकी जोट समाधिसौं न्यारी; रे जिय देह करे सुख हानि इते परि तोहि तु लागत प्यारी; देह तु तोहि तजेगि निदान पि तूहि तजे क्युं न देहकि यारी ? ॥ ७६ ॥

अर्थः– देह अचेतन छे, प्रेत दरी के० जडतारूप प्रेतनी गुफा छे. रज के० लोहि, रेत के० वीर्य ते थकी भरेलो छे, अने मलरूप खेतरनो क्यारो छे. व्याधि० रोगनी पोट छे, आराध के० आत्माने ढुपावाने ओट छे अने उपाधिनी जोट के० मेलारूप छे. एने विषे असमाधिज रहेछे, समाधि रेहेती नथी. माटे अरे! जीव! ए देह ते सुखनो नाश करे छे एवो छे, तोपण तने ए देह प्यारो लागे छे. अरे! जीव! तुं समज के ए देह निदान तनेज तजशे पण तुं ए देहनी यारीनो त्याग करतो नथी ? ॥ ७६ ॥

॥ दोहराः ॥– सुनु प्रानी सद्गुरु कहै, देह खेहकी खानि; धरै सहज दुख दोष कौं, करै मोछकी हानि. ॥ ७७ ॥

अर्थः–सद्गुरु कहेछे के अरे प्राणी! सांभलो. देह छे ते खेह के० धुलनी खाण छे. एनो सहज स्वभाव वात, पित्त, कफ रूप दुःख दोषने धरनारो छे. अने मोक्षनी हानि करे छे. ॥ ७७ ॥

हवे देहनुं वर्णन करेछेः–अथ देह वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– रेतकीसी गढी किधों मढी है मसान केसी अंदर अंधेरी

जैसी कंदरा है सैलकी; ऊपरकी चमक दमक पट भूखनकी, धोखे लागे भली जैसी कली है कनेलकी; औगुनकी औंडी महा भौंडी मोहकी कनोंडी, मायाकी मसूरति है मूरतिहैमैलकी; ऐसी देह याहिके सनेह याकी संगतिसों, व्है रही हमारी मति कोलू केसेबैलकी. ॥७७॥ ठौर ठौर रकतके कुंड केसनिके झुंड हाडनिसों भरी जैसे थरी है चुरेलकी; थोरेसे धकाके लगे ऐसे फट जाइ मानो, कागदकी पुरी किधों चादर है चैलकी; सूचै भ्रम वानि ठानि मूढनिसों पहिचानि, करै सुखहानि अरुखानि बदफैलकी; ऐसी देह याहिके सनेह याकी संगतिसों,व्है रही हमारी मति कोलू केसे बैलकी.

अर्थः– जाणे रेतीनी ढीग बांधी होय, के मसाणनी मढी एटले अपवित्र ठेकाणे हाड मांसनुं एक थवुं कल्लुं होय, वली जेनी अंदर सैल के० पहाडनी कंदर के० गुफाजेवुं अंधारुं छे, एवुं अपवित्र देहरूप स्थानछे. ते उपरना भूषणना चमक दमकथी शोभे छे;धोखे के० फूंठा भ्रमकाथी देह भलो लागे छे. ते उपर दृष्टांत छे के, जेम कनेरनी कलि उपरथी सुंदर देखाय छे, पण तेमां अंदर बिलकुल सुवास होतो नथी; तेथी उचाटकारी लागे छे, तेम वलीदेह अवगुणनी ऊंरडी छे, महाभुंडो छे, अने मोहनी कनोंडी के० मोहनी काणी आंख छे, तेथी सूजतुं नथी, अने मायानी मसूरति के० मायानो समुदायछे; एवी मेलनी मूर्त्ति ए देह छे; एना स्नेहथी अने संगतथी अमारी मति शेलडीपीलवानुं कोल्हु तेना बलद सरखी बनी गई छे. ॥ ७७ ॥

वली ए देहनेविषे ठेकाणे ठेकाणे लोहीनां कुडलां छे, ने अपवित्र केशनी झुंरु छे. तेमां हाडकां भरेलां छे. जेम चूडेल- व्यंतरीनुं स्थानक होय तेवो ए देह छे. थोमो धको लागवाथी ए देह फूटी जाय छे; जेम कागलनी पुडी अने जुंनी मेली चादर ते टकोराथी फाटी जाय, तेम देह फाटी जाय छे; एवी ए देहनी ममताथी भ्रम वाणी के० मिथ्यावाणी सुचै के० कहे, अने मूढलोक एनी पिछान राखे छे, अने ए देह सुखनी हानिकर्त्ता छे, अने बदफेलीनी खाण छे. एवा ए देहना स्नेह तथा एनी सोबत थकी अमारी बुद्धि शेलडी पीलवाना कोल्हाना बलदनी गति जेवी थई गईछे.

हवे कोल्हुना बलदनी अवस्था अने तेनी बराबर संसारी जीवनी गति छे, एवुं स्पष्ट करी बतावे छे; अथ कोल्हुका बैलकी अरु संसारी जीव समानरूप कथनं:–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– पाटी बंधे लोचनसों संकुचै दबोचनिसों, कोचनिकोसोच सोनिवेदे खेद तनको;धाइवोही धंधा अरु कंधा माहि लग्यो जोत,वार वार आरस हैकायर है मनको; भूखसहे प्यास सहे डुर्जनको त्रास सहे, थिरता न गहे न उसास लहे छिनको; पराधीन घूमै जैसो कोल्हुकोकमेरो बेल, तेसोइ स्वभाव भैया जगवासी जनको.

अर्थः– जेनी आंख उपर पाटी बांधी छे, जे दबोच के० पगथी ठेलवुं, तेथी संकोचा

य छे, अने परोणानी आरना घोंच वागे छे, तेनी सोचनांथी शरीरने खंचवा दे नही, जो दोरुतो फिरे, पोताना धंधामां धावतोज रहे, जे ने खांधे जोतर लाग्युं रहे छे,वारंवार जेने आरनो मार पडे छे,तेजे सहन कर्यां करे, अनेजे मननो कायर छे, भूखने पण वेठे छे, अने दुर्जननो त्रासपण खमे छे, अने स्थिरता पकडतो नथी, क्षण वार पण सुखे मोढेथी श्वास लई शकतो नथी, एरीते पराधीन थको जेम कोल्हुनो कमेरो,के० काम करनारो बलद घूमेछे, तेम जगत्वासी लोक घूमे छे. अर्थात् हे! भाई! कोल्हुना बलद सरखो तेमनो पण स्वभाव छे. ॥ ७० ॥

हवे जगत्वासी जीवनी व्यवस्था कहे छेः– अथ जगत्वासी यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जगतमें डोले जगत्वासी नर रूप धरी, प्रेतकेसे दीप किधों रेत केसे धुहे है; दीसे पटभूखन आरंबरसों निके फिरे, फीके छिनमांही सांझीअंबर ज्यों सुहे हैं; मोह के अनल दगे मायाकी मनीसों पगे दाभकी अनीसों लगे ऊसकेसे फुहे है, धरमकी बुझिनाहिं, रिझे भरम माहि नाचि नाचि मरजाहि मरीकेसे चुहे है.

अर्थः– जगत्वासी जीव मनुष्यरूप धरीने डोली रह्या छे; ए केवा छे, जाणियें प्रेतना दीप छे, ते जेम जलदी मटी जाय छे, तेम ए पण समजवा. वली रेतिना धूमाडा जेवा छे, तथा वस्त्र भूषणना आरंबरथी शोभायमान देखाय छे, अने क्षणेकमां फीका थई जाय छे, जेम सांझ समये आकाशमां वादल रंग बदले छे, तेम जाणवा. वली मोहना अग्निथी दाझे छे, ने मायानी मनी के० पोतापणुं तेथी पगे के० व्यापी रह्या छे, जाणियें डाभनी अणीउपर लागेला पाणीना बिंदु सरखा छे, ठारना बिंदु जेवा छे. धर्मनी ओलखाण जेने नथी अने भ्रमनेविषे जे अरुझी रह्या छे, जेम मरी उत्पादनां उंदरडां नाची नाची ने मरी जाय छे. तेम ए संसारी जीव नाचीने मरण पामेछे. ॥७१॥

हवे जगत्वासीनी मोह व्यवस्था कहेछेः– अथ जगत् व्यवस्था कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः– जासों तुं कहत यह संपदा हमारी सोतो, साधनि अरुारी ऐसे जैसे नाक सिनकी; जासों तुं कहत हम पुन्य जोग पाई सोतो, नरककी साई हैवडाई देढ दिनकी; घेरा मांहि पर्यो तू विचारे सुख आखिन्हिको, माखिनके चूंटत मिठाई जैसे भिनकी; एते परि होहि न उदासी जगवासी जीव, जगमें असाता है न साता एक छिनकी. ॥ ७२ ॥

अर्थः– अरे! प्राणी! जेने तुं कहेछे के आ मारी संपत्ति छे, तेने तो साधु लोके नाकना मेलनी जेम नाखी दीधीछे, अने जे बडाईने तुं कहेछे के पुण्यना जोगथी हुं पाम्यो छुं, ते तो नरकनी सहायी छे; जे राजादिकनी साहेबीछे. ते दोढ दिवसनी छे. ए परिवारना घेरामां तुं पड्यो थको आंखनुं सुख समजे छे,पण

ते मिठाईनी ऊपर माखीनी पेठे टोळानो जणजणाट थई रहे तेम परिवारनो मेरोछे, एवुं छतां जगवासी जीव उदास थतो नथी. वास्तविक रीते तो जगत्‌नाविषे असाताज छे, एक क्षणमात्र पण साता नथी. ॥ ७२ ॥

॥ दोहराः ॥– यह जगवासी यह जगत, इनसों तोहि न काज; तेरे घटमें जग वसै, तामें तेरो राज ॥ ७३ ॥

अर्थः– ए जे पूर्वे वखाण्या एवा जगत्‌वासी लोक ... लोकोनो ज्यां वास छे, तेने जगत् जाणवुं, ए साथे संबंध राखवानुं तारुं काम नथी, पण तारा घटनेविषे ज जगत्‌नो वास छे, अने ते जगत्‌मां तारुं राज्य छे. ॥ ७३ ॥

हवे जे पिंडे ते ब्रह्मांडे एवात साची छे, एवुं सिद्ध करी आपेछेः–

अथ पिंड ब्रह्मांड वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥– याही नर पिंडमें विराजे त्रिभुवन थिति, याहिमें त्रिविध परिणाम रूप सृष्टि है; याहिमें करमकी उपाधि दुःख दावानल, याहिमें समाधि सुख वारिदकी वृष्टि है; यामें करतार करतुति याहिमे विभूति, यामें भोग याहीमें वियोग यामें घृष्टि है, याहिमें विलास सब गर्भित गुपतरूप, ताहिकों प्रगट जाके अंतर सुदृष्टि है.

अर्थः– मनुष्य पिंडनेविषे कटीनी नीचे पाताल लोकछे, नाभि ते तिर्यक् लोकछे, ते उपर उर्द्ध लोकछे, एवी त्रिभुवननी स्थिति जाणवी, अने एनेविषेज कईक परिणाम उपजे छे, ने कईक नाश पामे छे, ने कईक स्थिर छे, एवी त्रिविध सृष्टि बनी रही छे; अने एज पिंडमां आत्माने कर्मनी उपाधि वलगी छे, तेज दुःखकारी दावानल के० अग्निनो समूह लाग्यो छे; अने एज पिंडमां कोईवारे समाधि सुख आवेछे तेज वादलनी वृष्टि जाणवी. ते दावानल उपर मेघनी वृष्टि छे, एज पिंडमां कर्मनो कर्त्ता पुरुष छे, एज पिंडमां कर्त्तानी क्रिया छे; ए पिंडमांज विभूति के० ज्ञानादिक संपत्ति छे, एज पिंडमां कर्मनो भोग ने कर्मनो वियोग छे, अने एज पिंडमां आत्मानुं धृष्ट के० दलन जे शुभाशुभ गुणोमां घसडाई रहेवुं ते छे; ए रीते ए पिंडमां गर्भित के० मध्य भागमां गुप्तरूपे सर्व विलास छे. पण जेना अंतर्‌मां सुदृष्टिनो प्रकाश छे, तेने सर्व विलास प्रत्यक्षपणे जणाय छे ॥ ७४ ॥

हवे ए वातनो उपदेश गुरु कहे छेः– अथ गुरूपदेश कथनंः–

॥ सवैया तेईसाः॥– रे रुचिवंत पचारि कहै गुरु, तुं अपनो पद बूझत नांही; खोज हिये निज चेतन लछन, है निजमें निज गुझत नांही; सिद्ध सुछंद सदा अति उज्जल मायाके फंद अरूझत नांही; तोर सरूप न छुंदकि दोहिमें तोहिमंहे तुहि सूझत नांही. ॥ ७५ ॥

अर्थः—पचारी के० बोलावीने गुरु कहे छे, के रे! रुचिवंत तुं पोतानुं पद के० स्थान तेने जाणतो नथी. पोतानुं चेतन लक्षण हृदयामां खोज. ए पोतानुं लक्षण पोताने विषे छे ते गुप्त के० गुप्त नथी; तारूं स्वरूप सिद्ध समान छे, स्वछंद के० निज आधीन छे, सदा अति निर्मल छे, पण मायानी जालना फंदमां पड्युं छे, तेमांथी छूटी शकतुं नथी; तारूं स्वरूप ढूंढवानेविषे नथी एटले भ्रम जालनी द्विविध दशामां नथी. तारामांज छे; पण तने सूजतुं नथी. ॥ ७५ ॥

हवे ज्ञानना प्रकाश वडे ईश्वरताने पमाय ते समजावे छेः—

अथ ज्ञान महात्म्य कथनंः—

॥ सवैया तेईसा ॥—केइ उदास रहे प्रभु कारन, केइ कहीं उठि जाहि कहींके; केइ प्रनाम करे गढि मूरति, केइ पहार चढे चढि छींके; केइ कहे असमान के ऊपरि, केइ कहे प्रभु हेठि जमीके; मेरो धनी नहि दूरदिशांतर मोमहि है मुहि सूजतनीके॥७६॥

अर्थः— कोई पोताना परमेश्वरने ओलखवाने उदासी थई बेसी रहे छे, कोई कई क्षेत्रनेविषे जतो रहे छे, कोई परमेश्वरनी घडेली मूर्त्तिने प्रणाम करे छे, कोई परमेश्वरने पामवा छीकामां बेसी पर्वत उपर चढे छे, कोई परमेश्वरने आसमान उपर छे एवुं कहे छे, कोई कहे छे के परमेश्वर जमीननी नीचे छे, (ए कुरानवालानी श्रद्धा छे); पण ए विषे मारो निश्चय तो ए छे के मारो धणी तो कांइ दूर देश नथी; पण माराविषेज छे. एम अनुभवथी मने सारुं मालम पडे छे. ॥ ७६ ॥

॥ दोहराः ॥— कहै सुगुरु जो समकिती, परम उदासी होइ; सुथिर चित्त अनुभौ करै, यह पद परसै सोइ ॥ ७७ ॥

अर्थः— सद्गुरु कहे छे केजे समकिती होय ते परम उदासी रूप थइ चित्तने स्थिर राखीने निज अनुभव अभ्यासथी पोताना पदने पामे. ॥ ७७ ॥

हवे मननी चंचलता दर्शावी तेने स्थिर केम राखवुं ते उपदेशे छेः—

अथ मन स्वरूप कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— छिनमें प्रवीन छिनहीमें मायासों मलीन, छिनकमें दीन छिन मांहि जेसो शक्र है; लिये दोरधूप छिन छिनमें अनंतरूप कोलाहल ठानत मथानको सो तक्र है; नट कोसो थार किधों हार है रहट कोसो नदी कोसो भौर कि कुंभार कोसो चक्र है; ऐसो मन भ्रामक सुथिर आजु केसो होइ, उरहिको चंचल अनादि हीको वक्र है. ॥ ७८ ॥ धायो सदा काल पै न पायो कहू साचो सुख रूपसों विमुख दुख कूपवास बसा है; धरमको घाती अधरमको संघाती महा, कुराफाती जाकी संनिपातीकीसी दसा है; मायाकों झपटि गहै, कायासों लपटि रहै, भूल्यो भ्रम भीरमें

वहीरकोसो ससा है; ऐसो मन चंचल पताका कोसो अंचल सु ज्ञानके जगेसें निरवान पथ धसा है. ॥ ७९ ॥

अर्थः— आ मन क्षणमां प्रवीण थायछे, क्षणमां मायानेविषे मलीन थायछे, क्षणमां दीन दशा धरेछे, क्षणमां शक्र के० इंद्र जेवुं बनेछे, क्षणमां दोरू धाम करेछे, क्षणमां अनंतरूप धरे छे, जेम दहीने वलोवतां कोलाहल थायछे, तेवो कोलाहल ए मन करेछे. वली नट जे नाचनार घुमे तेवो, के अरहटनी माला घुमे तेवो, के नदीनो वमल घुमेछे तेवो, अथवा कुंजारनुं चक्र फरेछे तेवो सदाकाल मननो भ्रामक स्वभाव छे. एवुं ए मन आज केम स्थिर थाय? जाते चंचल अने अनादिकालथी वाकुं चालनारुं मन छे. वली केवुं छे? ॥ ७७ ॥ हमेशा दोडतुं फरेछे, पण एने किहांय साचुं सुख प्राप्त थतुं नथी, पोताना समाधिसुखथी विमुख थयुंछे अने दुःखरूप कूप वासमां वस्युं छे, वली ए मन धर्मनुं घाती छे, अने अधर्मनुं संघाती छे, एवुं महा कुराफाती छे, ए मननी दशा तो जेम कोई पुरुषने सन्निपात थयो होय तेना सरखी छे. द्रोह तथा वंचनाने फट ग्रही लिये ने कायाना मोहथी मग्न रहे, ने भ्रम जालमां पडी ज्रुव्युंज फरे. जेम कटकनी झीकमां ससलुं आवी पडे ने भमतुं फरे, तेवुं मन छे. ने पताका के० ध्वजा तेना अंचल के० छेडानी पेठे जाणवुं. ते ज्यारे ज्ञान प्रगटे त्यारे निरवाण के० मोक्ष मार्ग तेने विषे गमन करे एवुं छे. ॥ ७९ ॥

॥ दोहराः ॥— जो मन विषय कषायमें, वरते चंचल सोइ; जो मन ध्यान विचार सों, रुके सु अविचल होइ ॥ ९० ॥ ताते विषय कषायसों, फेरि सु मनकी वानि; शुद्धातम अनुभौविषे, कीजे अविचल आनि ॥ ९१ ॥

अर्थः— जो मन विषय कषायरूप राग द्वेषमां वर्त्ते तो चंचल जाणवुं. अने जो ए मन राग द्वेष छांडो ध्यान विचारथी रोक्युं रहे तो अविचल जाणवुं. ॥ ९० ॥ माटे विषय कषायमां मननी लागणी छे तेने काढी निज शुद्धात्मना अनुभवमां लगाडीने आ मनने अविचल करियें. ॥ ९१ ॥

हवे मन स्थिर करवाने आत्मानो विचार करवो ते कहेछेः—

अथ विचार शिक्षा कथनंः—

॥ सवैया इकतीसा ॥ः—अलख अमूरति अरूपी अविनासी अज, निराधार निगम निरंजन निरंध है; नानारूप भेष धरें भेषको न लेस धरे, चेतन प्रदेस धरे चेतनाको षंध है मोह धरे मोहीसो विराजे तोमें तोहीसो, न तोहिसो न मोहीसो निरागी निरबंध है; ऐसो चिदानंद याही घटमें निकट तेरे, ताही तुं विचार मन और सर्व धंध है. ॥ ९२ ॥

अर्थः— ए आत्मा अलक्ष छे, अमूर्त्ति छे, अरूपी छे, अविनाशीछे. अज के० ज न्म्यो नही एवो छे, अने जेने कोईनो आधार नही, ज्ञानरूपी छे, तथा रंगविनानो छेने लिङ्ग विनानो छे. व्यवहारमां जोईयें तो नाना प्रकारना वेष धरनारो छे, निश्चय मां जोईये तो वेषनो लेश धरे नही मात्र चेतनाए प्रदेशनुं धारण करनारो छे, अने चेतना नो पुंज के० पुंजरूप छे, ए उपदेश मनने बाह्यात्मानो छे. ते मनने कहे छे के; ए चिदानं द जेछेतेराजाछे ने आ पिंडनो मोह धरे छे, अने हे ! मन ! ए चिदानंद तारामां ताराजेवो विराजे छे, पण निश्चयनयथकी तारा ने माराविषे एने मोह नथी, एवो निरागी नि र्बंध छे, एवो जे चिदानंद भगवान छे, ते अरे मन जे घटमांहे ज्यां तुं वसेछे तेज घटमां ते पण वसेछे माटे ते ईश्वरनोज विचार तुं कर, बीजो विचार सर्व द्वंद्व रूपछे.

हवे ए चिदानंदनो जे रीते शुद्धानुभव थाय, ते रीते मनने उपदेश करेछेः—

अथ शुद्धानुभव शिक्षा कथनंः—

॥ सवैया इकतीसा॥— प्रथम सु दृष्टिसों सरीररूप कीजे भिन्न; तामै और सूछम शरीर भिन्न मानियें; अष्ट कर्मभावकी उपाधि सोई किजे भिन्न, ताहुमें सुबुद्धिको वि लास भिन्न जानिये; तामें प्रभु चेतन विराजित अखंडरूप, वहे श्रुत ज्ञानके प्रवान ठीक आनिये; वाहिको विचार करि वाहिमें मगन हुजे, वाको पद साधिवेकों ऐसी विधि ठानिये. ॥ ए३ ॥

अर्थः— प्रथम सम्यग् दृष्टिवडे शरीररूप बाह्यात्मा भिन्न राखवो, ते बाह्यात्माने विषे बीजुं सूक्ष्म शरीर कर्म संबंधी अंतरात्मा छे ते पण भिन्न जाणवो, ते अंतरात्मा थी परमात्माना ज्ञान दर्शननुं आछादन थायछे, एवुं अष्ट प्रकारनुं कर्म तेना भावनी उपाधि ते पण भिन्न जाणवी अने ते अंतरात्मानेविषे सुबुद्धिनो विलास जे भेद ज्ञा नादिक ते पण भिन्न जाणीये, अने ते सुबुद्धि विलासमां चेतनरूपी प्रभु जे छे ते अ खंडरूपे विराजे छे, अने ते चेतन श्रुत ज्ञानना प्रमाणथी हृदयमां सारी पठे ठरावि ये, ए रीते हे ! मन ! तुं तेनाज विचारमां मग्न रेहेजे, ने ते चेतननुं पद साधवाने एटले मोक्ष मार्ग ग्रहवाने एज विधि युक्त छे एम जाणजे. ॥ ए३ ॥

हवे ज्ञाता जीवनुं स्वरूप वर्णवे छेः— अथ ज्ञानी जीव कथनंः—

॥ चोपाईः ॥— इहि विधि वस्तु व्यवस्था जाने; रागादिक निजरूप न माने; तातें ज्ञानवंत जगमांही, करम बंधको करता नांही. ॥ ए४ ॥

अर्थः— ए रीते वस्तुनी व्यवस्था जाणे अने राग द्वेषादिक जे भाव छे, तेने पोता नुं रूप न माने, तेणे करीने ज्ञानवंतने जगत्मां कर्म बंधनो कर्त्ता कह्यो नथी. आठ कर्म तेने बंध करी शकतां नथी. ॥ ए४ ॥

हवे ज्ञातानी क्रिया कहे छे:- अथ ज्ञाताकी क्रिया कथनं:-

॥ सवैया इकतीसा:॥- ज्ञानी भेद ज्ञानसों विलेछि पुदगल कर्म, आतमाके धर्मसों निरालो करि मानतो; ताको मूल कारन अशुद्ध राग भाव ताके, नासिवेको शुद्ध अनुभौ अभ्यास ठानतो; याही अनुक्रम पररूप भिन्न बंध त्यागि, आपुमांहि अपनो सुभाउ गहि आनतो; साधि शिवचाल निरबंध होतु तिहू काल, केवल विलोक पाई लोकालोक जानतो. ॥ ९५ ॥

अर्थ:- ज्ञाता होय ते भेद ज्ञानवडे पौद्गलिक कर्मनुं विलक्षण केम करे ते कहे छे. आत्मिक धर्मथी पौद्गलिक धर्मने जूदो करी जाणे, एम विलक्षण करे, अने ते पुदगल धर्मनुं मूल कारण अशुद्ध रागद्वेषादिक भाव छे, तेनो नाश करवाने शुद्ध अनुभव अभ्यास जे रीते पूर्वे कह्यो ते प्रमाणे अवस्था देखी अभ्यास राखे. ए रीते अनुक्रमे प्रथम सुदृष्टिथी शरीररूप भिन्न करवुं, ए अनुक्रमें पूर्व संबंधथी अनादि कर्म बंधने त्यागीने पोतानेविषे पोतानोज ज्ञानादिक स्वभाव ग्रहण करे, एम शिव पदनी साधना करीने त्रणे काल निर्बंध थाय, तेवो थई केवल ज्ञान पामीने लोकालोकने जाणनार थाय.

हवे सम्यक्त्व धारीनुं पराक्रम कही बतावे छे:- अथ सम्यक्त्वधारी वैभव वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसा:॥- जैसे कोउ हिंसक अजान महा बलवान, खोदि मूल विरख उखारे गहि बाहुसों; तैसे मतिमान दर्वकर्म भावकर्म त्यागि, व्है रहे अतीतमति ज्ञानकी दसाहुसों; याहि क्रिया अनुसार मिटे मोह अंधकार, जगे ज्योति केवल प्रधान सवि ताहुसों; चुके न सकतिसों लुके न पुदगलमांहि, धुके मोषथलकों रुके न फिरि काहुसों. ॥ ९६ ॥

अर्थ:- जेम हिंसक पुरुष भील प्रमुख जे हिंसानां फलथी अजाण छे, अने महा बलवान छे, ते वृक्षना मूलने खोदीने पछी पोताना भुजाना बले करी तेने उखेडी नाखे छे, तेम मतिमान के० सम्यक्त्वी पंडित जे छे, ते पुद्गल स्वरूपी द्रव्य कर्मने अने ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय इत्यादि आठ भाव कर्मने त्यागीने ज्ञान दशावडे अतीत के० कर्मरहित थई रह्यो छे, अने क्षण क्षणमां ए क्रियाना अनुसारे मोह अंधकारने मटावे छे, अने तेथी केवल ज्ञाननी ज्योति उदय थाय, ते ज्योति मतिज्ञान प्रमुख सर्व ज्ञानोमां प्रधान छे, अने एथी अनंत वीर्य प्रगटे, ने फिरि ए शक्तीते चुके नही अने मोक्ष स्थानने जई धुके, अने कोईथी रोकाय नही. ॥ ९६ ॥

॥ इतिश्री समयसार नाटकविषे बंध द्वार बालबोध रूप अष्टम समाप्तः॥

॥ दोहरा:॥- बंध द्वार पूरन भयो, जो दुःख दोष निदान; अब बरनों संछेपसों मोक्ष द्वार सुखखान ॥ ९७ ॥

अर्थः– दुःखने दोषनुं निदान जे बंध तेनो द्वार संपूर्ण थयो. हवे सुखनुं स्थान जे मोक्ष तेनो द्वार संक्षेपथी वरणवुं छुं. ॥ ९७ ॥

हवे मोक्ष द्वारने आदि ज्ञान विलासने नमस्कार करे छेः–अथ ज्ञान विलास वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः॥ – भेद ज्ञान अरासौं दुफारा करै ज्ञानी जीव, आतम करम धारा भिन्न भिन्न चरचै; अनुभौ अभ्यास लहै परम धरम गहै, करम भरमको ख जानो खोलि खरचै; योंही मोखमुख धावै केवल निकट आवै, पूरन समाधि लहै पू रनके परचै; भयो निरदोर याहि करनो न कछु और ऐसो विश्वनाथ ताहि बना रसी अरचै ॥ ९८ ॥

अर्थः– जेम कोई परीक्षानो करनार पुरुष मुद्रा प्रमुख द्रव्यने सुलाकनी आरवडे भेदी सुधातु छे, के कुधातु छे, तेनो निश्चय करे छे, तेम ज्ञानी जीव छे, ते भेद ज्ञान रूपी आर वडे आत्मा तथा कर्म ए बेउने जुदां करे छे, अने ते बेउने जुदा जुदा चरचे के॰ तेमां आत्मिक धारानेविषे तो अनुभवनो अभ्यास धारण करे, तेथी परम धर्म के॰ शुद्ध समाधि तेनुं ग्रहण करे; अने कर्मजालने जुदी जाणी छे, तेने सत्ता कर्मरूप खजानो खोलि खरचे के॰ विखेरी नाखे, तिहां निर्जरा थाय, एवी क्षपक श्रेणिने लीधे मोक्षना सुखने धाय, त्यां केवल ज्ञान ढुकडो आवे, अने पूर्ण आत्म स्वरूपना परिचय थकी पूर्ण समाधि पामे, पछी भव भ्रमणनी दोर छांडीने निर्दोर थाय. ते पछी तेने कइं बीजुंकृत्य करवानुं बाकी रहे नही; ने तेथी ते विश्वनो नाथ थयो, तेने बनारसी दास पूजे छे ॥ ९८ ॥

हवे सुबुद्धि विलास वडे आत्मस्वरूप सधाय ते अधिकार कहेछेः–

अथ सुबुद्धि विलास वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– काहु एक जैनी सावधान व्है परम पैनी, ऐसी बुद्धि छैनी घटमांहि डारि दीनी है; पैठी नो करम भेदि दरब करम छेदि, सुभाउ विभाउ ता की संधि सोधि लीनी है; तहां मध्य पाती होइ लखी तिन्हि धारा दोइ, एक मुधा मई एक सुधारस भीनी है; मुधासों विरचि सुधा सिंधूमें मगन भई, ए ती सब क्रि या एक समै बीच कीनी है ॥ ९९ ॥ ॥ दोहराः ॥– जैसी छैनी लोहकी, करै एक सों दोइ; जड चेतनकी भिन्नता, त्यों सुबुद्धिसों होइ ॥ ३०० ॥

अर्थः– कोई एक जैनी जैन आगमना जाणनारे सावधान थईने परमपैनी के॰ अ ति तीक्ष्ण एवी बुद्धिरूप बेनी के॰ सोनीनी छीणी ते शस्त्र विशेष, पोताना घटमां नाखी दीदी, पछी ते सुबुद्धिरूप छीनी नो कर्म के॰ आत्म प्रदेशनेविषे श्लेष्म रूप जे राग द्वेष परिणाम छे, ते नो कर्मना भेद तेना पुद्गलरूपी द्रव्य कर्मने छेदीने स

ञाव अने विज्ञावतानी संधी शोधि लीधी छे, त्यां सांधनेविषे मध्यपाती के० त्रिहा ईत बनीने ते पुरुषे बे धारा लखी, तेमां एक तो मुधामइ के० अज्ञान मय छे, ने बी जी सुधारस जीनी के अमृत रस जीनी ज्ञान समाधिमय छे, अहीं राग द्वेषादिकनी दशा छे, ते मुधा दशा छे, तेथी विरचि के० वैराग धारीने सुधा सिंधुमां मग्न थवुं, ज्ञान समाधिरूप सुधा समुद्रमां मग्न रेहेवुं, ए जे क्रिया कही ते सर्व क्रियानो विचार एक समयमां करे ॥ ए९ ॥ जेम लोढानी ढीणी एकना बे ञाग करे छे, तेम जड चे तननी एकता ञांगीने जिन्नता करवी ते सुबुद्धिथकीज थाय छे. ॥ ३०० ॥

हवे जेवो सुबुद्धिनो विलास छे, तेवो कहे छेः– अथ सुबुद्धि विलास कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–( सर्व ह्रस्वाक्षर चित्रालंकार ) धरति धरम फलहरति क रम मल, मन वच तन बल करत समरपन; ञखति असन सित चखति रसन रित, लखति अमित वित करि चित दरपन; कहति मरम धुर दहति ञरमपुर, गहति प रम गुर उर उपसरपन; रहति जगत हित लहति ञगति रति, चहति अगति गति यह मति परपन ॥ १ ॥

अर्थः– सुबुद्धि जे छे ते धरम रूप फलने धारेछे, कर्मरूप मलने हरे छे, अने ए क्रियाने विषे मनबल, वचनबल अने कायानुं बल तेने समर्पण करे एटले ए त्रणे बल ते क्रियामां कामे लगाडे. ञखति के० खाय छे, सित के० शीतल ञोजन ते रसन रित के० जीञना स्वादविना ञोजन जमे, अमित वितके० परिमाण विनानुं पो तानुं ज्ञानादिक धन चित्तरूप दर्पण वडे जुए, मर्म धुर के० मर्मनी वात जे जीवनुं स्वरूप ते कहे, भ्रम पुर के० मिथ्या नगर तेने बाले, अने अंतरनेविषे उत्कृष्ट गुरुनां वचनने ग्रहण करे, अने हृदयनेविषे उपसरपन के० स्थिरता धारे अने जगत्‌नो हि तकारी थको रहे, त्रणे लोकनी ञक्ति अने रति के० सुख तेने लहे, एटले सर्व लो कने पूजनीक थाय. होई अगति गति के० जेनेविषे बीजा सामान्यनी गति थती नथी, तेवी मोक्षगति चाहे, एवो सुमतिनो उत्कृष्ट विलास छे. ॥ १ ॥

हवे ज्ञातानो विलास कहे छेः– अथ ज्ञाता वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–( सर्व गुरु अक्षर चित्रालंकार ) रानाकोसो बाना लीने आपा साधे थाना चीने, दाना अंगी नानारंगी खाना जंगी जोधा है; माया वेली जेती तेती रेतेमें धारेती सेती, फंदाहीको कंदा खोदे खेतीकोसो लोधा है; बाधा सेती हांता लोरे राधासेती तांता जोरे, बांदी सेती नांता तोरै चांदी कोसो सोधा है; जानै जाही ताही नीके माने राही पाही पीके, ठानै बाते डाही ऐसो धारा वाही बोधा है. ॥ २ ॥

अर्थः— जे बुध के० ज्ञानी छे, ते राणा के० राजा जे पातसाहनुं स्वांग लेतो थको रहे छे. जेम राजा पोताना आत्मानुं साधन करे; अने पोताना मंकूलनो साज राखे-पोताना थाणाने चीन्हे के० नीघेबानी राखे, दानाइ राखे पण नादानी नही राखे, ए चारे उपाय वडे नाना रंग करे, खाना जंगी के० लकाईनेविषे जोद्धा थई रहे, तेम ज्ञानी पुरुष आत्म साधन करे, गुणठाणा चिन्हे अने त्यागी थको कर्म निर्जरानेविषे नाना प्रकारना रंग धारे, राग—द्वेष डुर्जन साथे लकी तेने हटावी देय, एवी रीते एक पदमां बे अर्थ थाय छे. जेम लुहार रेतरकीवके लोढाने घसी नाखे छे, तेम जेटली जेटली माया वेली के० कर्मजाल तथा गजवेल ने क्रोध तेने मेधा के० सुबुद्धि ते रूप रेतरकी वडे घसी नाखे; अने फंदना कंदने खोदेछे. जेम लोधा के० खेडुत खेतरनी धरतीने कंद के० मूलथी खोदी नाखे छे, तेम वाधा के० कर्मवंध तेथी हातालोरे के० जुदाई करे, अने राधा के० सुबुद्धि ते साथे नातो जोडे; बांदी के० कुबुद्धि तेनो नांतो के० संबंध ते तोडे. जेम सोनारूपानी चांदी शोधनार वस्तु उज्वल करेछे, तेम जे जेने तेने जाणे, हेय जे छांडवा योग्य वस्तु अने उपादेय जे आदरवो योग्य वस्तु तेने पण नीके के० ठीक जाणे, पण हैयाने राहीपाही के० फुल समान पीकसमान जाणे जीनासथी खीलावेछे, ए रीते काही वातो ठरावे एवो सम्यक्त्व धारानो वेहेनार वोधा के० पंडितने ज्ञानी कहीये. ॥ २ ॥

हवे ज्ञाताने चक्रवर्त्ति समान कही बतावेछेः— अथ ज्ञाता चक्रवर्त्ति समान कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जिन्हिके दरब मिति साधत छ खंड थिति, विनसै विभाव अरिपंकति पतन है; जिन्हिके भगतिको विधान पईनो निधान त्रिगुनके भेदमान चौदह रतन है; जिन्हिके सुबुद्धि रानी चूरि महा मोह वज, पूरे मंगलीक जे जे मोखके जतन है; जिन्हिके प्रमान अंग सोहै चमू चतुरंग, तेई चक्रवर्त्ति तनु धरे पै अतन है.

अर्थः— जेणे छए द्रव्य प्रमाण करी साध्या तेज जाणे छये खंड साधी लीधा अने जेना राग द्वेषादि विभावदिशा वणसी जाए तेज जाणिये शत्रुनी पंक्तिनुं पतन के० नाश थयो, अने तेने नव प्रकारनी भक्तिनुं विधान के० करवुं तेज तेने नव निधान छे, ज्ञान दर्शनने चारित्ररूप जे त्रण गुण छे, अने तेना क्षयोपशम माफक जे भेद उपजेछे, ते जेना चौद रतन प्रगटमान छे,अने जेम चक्रवर्त्तिने स्त्रीरत्न होय छे, ते तेनो छ खंड साधवानो राज्याभिषेक समय होय त्यारे वज्ररत्न हाथवडे चूरीने, मुख आगल मंगलीक पूरे तेम जेने सुबुद्धिरूप स्त्री रत्न छे, ते महा मोहरूप वज्रने चूरीने मोक्षना जतनने माटे मंगलीक पूरे छे, एटले मंगल कार्य करे; अने जे, प्रत्यक्ष प्रमाणे करीने अर्थनुं ग्रहण करेछे, तथा परोक्ष प्रमाणे करीने पण अर्थनेग्रहेछे, एवा जेना

प्रमाणरूप अंग छे, तेज तेनी चतुरंगी सेना थई एम जाणवुं. ए रीते ज्ञाता पुरुषे चक्रवर्त्तिनो देह धार्यो छे, तेम छतां पण ज्ञाता अतनके० अशरीरीजेवो छे. ॥ ३ ॥

पूर्वे कही जे नवधा भक्ति तेनुं हवे वर्णन करेछेः— अथ नवधा भक्ति वर्णनंः—

॥ दोहाः ॥— श्रवन कीरतन चिंतवन, सेवन वंदन ध्यान; लघुता समता एकता, नौधा भक्ति प्रमान. ॥ ४ ॥

अर्थः— उपादेय स्वरूपने शांभलवुं, किरतन करवुं, चिंतवन करवुं, सेवा पूजा करवी, वंदन स्तुति करवी, ध्यान धरवुं, तन्मयता करवी, समाधि करवी, अने एकमेकपणुं, ए नौधा के० नव भेदवडे भक्ति प्रमाण थायछे. ॥ ४ ॥

हवे जे ज्ञाता मोक्ष सन्मुख थयो तेनी अनुभव दशा कहे छेः—

अथ अनुभवी वचनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कोई अनुभवी जीव कहे मेरे अनुभोमें, लछन विभेद भिन्न करमको जाल है; जाने आप आपुकों जु आपु करी आपुविषे, उतपति नासध्रुव धारा असराल है; सारे विकलप मोसों न्यारे सरवथा मेरो निहचै सुभाउ यह विवहार चाल है; मै तो शुद्ध चेतन अनंत चिन मुद्रा धारी, प्रभुता हमारी एक रूप तिहू काल है.

अर्थः— जे आत्मानो अनुभव पाम्यो तेज अनुभवी जीव एवुं कहे छे, के मारा अनुभवमां लक्षण भेदथकी कर्म जाल हवे भिन्न दीसवा लागी. अने आत्माज कर्त्ता कारक, आत्माज करण कारक, आत्माज आधार कारकविषे आत्माज कर्म कारकने जाणे. अने अहीं कोई पर्यायनी उत्पत्ति अने नाश छे, अने द्रव्य ध्रुवता पणे छे, ए त्रणे धारा अहीं असराल पणे वही रही छे, तोपण ए त्रणे धारा विकल्परूप छे, अने माराथी तो सर्व विकल्प सर्वथा जुदाज छे, विकल्पमां तो कहीं निश्चय नथी. अने मारो तो चेतना स्वरूप निश्चय स्वभाव छे, अने आगल कही जे त्रण धारा तेतो व्यवहार नयनी चालमां छे. आ जे सिद्धांत वचन कहुं छुं तेणे करीने हुंतो शुद्ध चेतना स्वरूपी छुं, अनंत चिन्मुद्रा धारी के० अनंत ज्ञाननो धरवावालो छुं, एहवी महारी प्रभुता त्रणे कालने विषे एक रूपेछे. ॥ ५ ॥

हवे चेतनानुंज स्वरूप बतावे छेः— अथ चेतना वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— निराकार चेतना कहावे दरसन गुन साकार चेतना शुद्ध ज्ञान गुण सार है; चेतना अद्वैत दोउ चेतन दरवतांहि, सामान विशेष सत्ताहीको विसतारहै; कोउ कहे चेतना चिनह नाही आतमामें, चेतनाके नास होत त्रिविध विकार है; लछनको नास सत्ता नास मूल वस्तु नास, तातें जीव दरवको चेतना आ

धार है ॥ ६ ॥ ॥ दोहराः ॥– चेतन लछन आतमा, आतम सत्ता मांहि; सत्ता प रिमित वस्तु है, भेद तिहूमें नांहि ॥ ७ ॥

अर्थः– आत्मानो दर्शन गुण जे निराकार कहीये छइये तेतो निराकार चेतना थई, अने जे आत्माने शुद्ध ज्ञान गुण सारजूत कहीये छइये तेतो साकार चेतना थई, विशेषताने लीधे रह्यो छे माटे साकार कहिये, ए रीते निराकार अने साकारपणे दर्शन तथा ज्ञाननेविषे द्वैत जाव थयो, पण चेतनानेविषे तो अद्वैत जावज रह्यो छे, अने चेतनागुण थकी चेतन द्रव्य छे, तेथी चेतन द्रव्यमां बेउ समाइ गयां. वली निराकार ने साकारपणुं सामान्य ने विशेषपणाथकी छे, ते तो सामान्यता अने वि शेषता चेतना द्रव्यनी सत्तानो विस्तार छे; कोई मूढमति वैशिषिक प्रमुख दर्शन वाला कहे छे, के, आत्मानेविषे चेतन चिन्ह नथी, चेतना लक्षण नथी, तेने केहेवुं के अरे! मूढ, ! जो चेतन चिन्ह न कहिये तो चेतनानो नाश थवाथी त्रिविध विकार ज पजशे, ते कया ? तो के मन वचन ने कायाना विकार जाणवा, माटे लक्षणनो नाश थ वाथी वस्तुनी सत्तानो नाश थशे अने वस्तुनी सत्तानो नाश थवाथी मूल रूप वस्तु नो पण नाश थशे, माटे जीवने जाणवानो तो एक आधार चेतनानोज छे ॥ ६ ॥ आत्मानुं चेतना लक्षण छे, सत्ता धर्मविना आत्मा ठरे नही तेथी आत्मा सत्ताने वि षेज छे, अने पोतपोतानी सत्ता प्रमाणेज सर्व वस्तु छे, वस्तु द्रव्य विचारी जोइये त्यारे उत्पादादि त्रणे वस्तुमां भेद कोई नथी ॥ ७ ॥

हवे चेतना लक्षणनुं शाश्वत तथा अविनाशीपणुं दृढ करावेछेः–

अथ चेतना अविनाशी यह कथनंः–

॥ सवैया तेईसाः ॥– ज्यों कलधौत सुनारकि संगति, जूषन नांउ कहे सब कोई; कंचनता न मिटी तिहिं हेतु वहे फिरि ओटि तु कंचन होई; त्यों यह जीव अजीव संयोग जयो बहु रूप जयो नहि दोई; चेतनता न गई कबहू तिहिं, कारन ब्रह्म क हावत सोई. ॥ ८ ॥ देखु सखी यह आपु विराजत याकि दसा सब याहिकुँ सोहै; एकमैं एक अनेक अनेकमैं, द्वंद्व लिये डुविधामहि दो है; आपु सँजारि लखै अ पनो पद, आपु विसारकैं आपुहि मोहै; व्यापक रूप यहै घट अंतर, ज्ञान मैं कौन अज्ञानमैं कोहै ! ॥ ए ॥ ज्यों नट एक धरे बहु जेष कला प्रगटै जग कौतुक देखै; आपु लखै अपनी करतूति वहै नट जिन्न विलोकत पेखै; त्यों घटमें नट चेतन राउ विजाउ दसा धरि रूप विसेखै; खोलि सुदृष्टि लखै अपनो पद, डुंद विचार दसा नहि लेखै. ॥ १० ॥

अर्थः–जेम कलधौत के० सोनुं तेने सोनी घडीने जूषण बनावेछे, त्यारे ते घाटना

संयोगथी लोको तेने जूषण केहेवा लागेछे. पण मूल वस्तु जे कंचन ते कांई जतुं रह्युं नथी, केमके, ज्यारे ते घाटने अग्निमां गाली नाखे त्यारे पाछुं ते सोनुं केहेवाय, तेम आ जीव जे छे, ते अजीवरूप कर्म पुद्‌गल इत्यादिक बीजा पण पुद्गलना संयोगथी एक कोडी साडी संताणुं लाख कुल कोडीमां बहुरूपे थयो, तोपण द्विविध नथी थयो; केमके, चेतनता कंई गई नथी; तेमाटे ते स्वरूपमां जीव ब्रह्मज केहेवाय छे, जेनो विस्तार मोटो तेने ब्रह्म कहीये. ॥ ८ ॥ आत्मानी अनुजूति ते सुबुद्धि सखीने कहेछे, हे सखी, जो आ आपणो ईश्वर विराजे छे, अने ए ईश्वरनी दशा सर्वे एनेज शोजेछे, एवी विरुद्धता बीजे ठेकाणे न शोजे. लक्षणवडे एकतामां जोईये तो एक रूप छे, अने अपर सत्ताए देखीये तो अनेकरूप छे, अने द्वंद्व दशामां देखीये एटले अज्ञान दशामां देखीये अने ज्ञान दशामां देखीये तो द्विविध रूप छे, ते द्विविधपणुं कहेछेः- क्यारेक तो पोतानुं पद जे पोतानुं स्वरूप तेने संजारीने जुए, अने क्यारेक तो पोताने विसरीने पोते मोहमां पडे. हे सखी, एहिज ईश्वर घटने अंतर्व्यापक रूप छे, तेथी जे जे अवस्थामां आप छे, तेवारे ज्ञाननेविषे पण बीजो कोइ नथी अने अज्ञाननेविषे पण बीजो कोइ नथी. ॥ ९ ॥ हवे एना उपर दृष्टांत कहेछेः- जेम कोई नट होय ते बहु वेष धरेछे, ने तेते वेषनी कला प्रगट करेछे, त्यारे जगत् तेने कुतुहल समजे पण नट पोते पोतानी क्रिया जाणेछे, ने तेणे धरेला वेषथी पोते जुदोछे, एवुं जाणेछे. तेम घटनेविषे चेतन राजा रूप नट छे, ते विजाव दशा धरीने रूप विशेष करेछे, पण ज्यारे सुदृष्टि खोली जुए त्यारे तो पोतानुं पद उलखे अने द्वंद्व विचारनी दशाने पोते लेखामां गणे नही. ॥ १० ॥

हवे चेतन नटनी सघली चेतना एक छे, ते कहेछेः- अथ चेतना उपादेय कथनंः-

॥अडिल छंदः॥- जाके चेतनजाव चिदातम सोइ है; और जाव जो धरे सु औरे कोइ है; यों चिन्मंडित जाव, उपादे जानते; त्याग जोग परजाव पराये मानते ॥११॥

अर्थः- जेनेविषे चेतन जाव छे, तेने चिदात्मा अथवा चिद्रूप कहिये छे, अने ए चेतनाजावथी बीजो जाव जे धारेछे, तेतो कोई बीजो छे, एथी चेतना मंडित जे जाव छे तेतो उपादेय रूप जाणवो, अर्थात् पोतानो करी जाणवो, अने चेतना जावथी जे परजाव छे, तेसघलो त्यागवा योग्य छे ने तेने पारको करी मानी लेवो. ॥ ११ ॥

हवे जे सम्यग् दृष्टि चेतना उपादेय राखीने मोक्ष मार्गना साधक थया तेनी अवस्था कहेछेः- अथ सम्यग्दृष्टि मोक्ष मारगको साधक कथनंः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥- जिन्हके सुमति जागी जोगसों जये विरागी, परसंग त्यागी जे पुरुष त्रिजुवनमें; रागादिक जावनिसों जिन्हकी रहनि न्यारी, कबहु मगन व्हे रहे

धाम धनमें; जे सदीव आपकों विचारै सरवंग सुद्ध, जिन्हके विकलता न व्यापै कब मनमें; तेई मोक्ष मारगके साधक कहावे जीव, भावै रहो मंदिरमें भावे रहो बनमें.

अर्थः– जेना हृदयामां सुबुद्धि जागी, अने विषय भोगथी जे वैरागी थया, अने जे रागद्वेषादिक परभाव छे, तेना सेवना संग के० त्रण लोकनेविषे तेना त्यागी जे पुरुष छे, अने जे राग द्वेषादिक भाव पदार्थ छे ते थकी जेनी रेहेणी न्यारी छे, तेथी धाम के० घर अने धन तेनेविषे मग्न थई न रहे, अने जे सदा निश्चय दृष्टिए देखीने आत्माने सर्वांग शुद्ध विचारे छे, तेथी जेना मननेविषे विकलता नही व्यापे, एवी दशा लईने जे जीव रह्या छे, तेज जीव मोक्ष मार्गना साधक केहेवाय, पछी ते भावे तो मंदिरमां रहे, ने भावे तो वनमां रहे, पण तेनी दशा सर्व स्थानके एकज होय छे.॥१२॥

हवे मोक्षगामी जीव विचक्षण पुरुषनी दशा कहेछेः– अथ विचक्षणदशा वर्णनंः–

॥ सवैया तेईसाः ॥– चेतन मंडित अंग अखंडित शुद्ध पवित्र पदारथ मेरो; राग विरोध विमोह दशा समुझे भ्रम नाटिक पुग्गल केरो; भोग सँयोग वियोग व्यथा अविलोकि कहै यह कर्मज घेरो; है जिन्हकों अनुभौ इहि भांति सदा तिन्हिकों परमारथ नेरो. ॥ १३ ॥

अर्थः– जे परमात्मानेविषे दृष्टि दैने विचार करे के, जे मारो पदार्थ छे, ते चेतन मंडित छे, अने अखंडित छे, अछेद्य छे, अभेद्य छे, अने शुद्ध छे, पवित्र छे, अने एथी जुदी जे राग द्वेषने मोहनी दशा थई रहीछे, तेने तो भ्रमरूप मिथ्याजाल पुद्गलनुं नाटक करी समझे छे, अने पंचेंद्रियना भोगसंयोगने वियोग एवी बाह्यात्माने विषे व्यथा अवलोकीने एवुं कहे के, एतो कर्मनो घेरो छे, कर्मनो उदय छे, एवो अनुभव जेने नित्य रहे, तेने परमार्थरूप मोक्ष ते सदा नेरो के० नजीक छे. ॥ १३ ॥

हवे जे मोक्षथी दूर ते चोर, ने मोक्षथी निकट ते साहुकार एवुं कहेछेः–

अब चोर तथा साहुकार वर्णनंः–

॥ दोहराः ॥– जो पुमान परधन हरै, सो अपराधी अज्ञ; जो अपनो धन विव हरै, सो धनपति धरमज्ञ. ॥ १४ ॥ परकी संगति जो रचै, बंध बढावे सोइ; जो निज सत्तामें मगन, सहज मुक्त सो होइ. ॥ १५ ॥

अर्थः– जे पुमान के० पुरुष परधनने हरे, ते अपराधी जीव अज्ञ के० अजाण कहीये; ने जे पोतानाज धननो व्यवहार राखे, ते धनपति कहिये, धर्मज्ञ के० धर्मने जाणनार कहियें. ॥ १४ ॥ तेम जे परवस्तुनी संगतीए राचे ते चोर केहेवाय, ने तेज पोताना बंधने वधारे, अनेजे पोतानी सत्तामां सदाकाळ मग्न रहे तेज मुक्तरूप थाय.

हवे वस्तु कोने कहिये अने सत्ता कोने कहियें ते बतावेछेः—अथवस्तुसत्तावर्णनंः—

॥ दोहराः ॥— उपजे विनसे थिर रहे, यह तो वस्तु वखान; जो मरजादा वस्तुकी सो सत्ता परवान. ॥ १६ ॥

अर्थः— उत्पत्तिवंत, विनाशवंत, स्थिरतावंत एतो वस्तुनुं वखाण छे, अने जे वस्तु नी मर्यादा जे परिमाण ते धर्मने सत्ता कहीये, ए अनुभव प्रमाण ग्राह्य छे. ॥ १६ ॥

हवे केवा केवा द्रव्यनी केवी केवी सत्ता छे ते कहेछेः—

अथ सत्ता व्यवस्था वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— लोकालोक मान एक सत्ता है आकाश दर्व, धर्म दर्व एक सत्ता लोक परिमिति है; लोक परवान एक सत्ता है अधर्म दर्व, कालके अणु असंख सत्ता अगनिति है; पुदगल शुद्ध परवानकी अनंत सत्ता, जीवकी अनंत सत्ता न्यारी न्यारी थिति है; कोउ सत्ता काहुसों न मिलें एकमेक होई, सबे असहायथों अनादि हीकी थिति है. ॥ १७ ॥

अर्थः— आकाश द्रव्यनी मर्यादा लोकालोक लगे एक छे, तेथी आकाश द्रव्यनी एक सत्ता छे, अने धर्मास्तिकाय द्रव्य लोक प्रमाण रूप छे, तेथी धर्म द्रव्यनी एक सत्ता छे, अने अधर्मास्तिकाय द्रव्य पण लोक प्रमाण एक रूप छे तेथी अधर्म द्रव्य नी एक सत्ता छे, अने कालना द्रव्यना अणु छे ते लोकाकाश प्रदेश परिमाणे असंख्यात छे, तेथी काल अणुनी असंख्यात सत्ता छे, ए कहेवुं दिगंबर संप्रदायनुं छे, अने अने योग शास्त्रमां पण कह्युं छे, अने लोकविषे पुद्गलरूपी शुद्ध परमाणुनी पण अनंत सत्ता छे, अने लोकविषे जीव अनंत छे, तेथी जीवनी पण अनंत सत्ता छे, तेथी ज जीवाजीवनी जुदी जुदी क्षेत्रावगाहना छे, जे द्रव्यनी जे सत्ता होय ते बीजी कोई द्रव्यनी सत्ता साथे मळे नही, जो एकमेक थइ जाय तो सर्व सत्ता असहाय पणे वर्त्ते, माटे एकमेक न थाय एवी अनादि काळनी स्थितिछे. ॥ १७ ॥

हवे चेतन द्रव्यनी सत्तानुं वर्णन करेछेः— अथ चेतन सत्ता वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— एइ छहो द्रव्य इन्हहीको है जगतजाल, तामें पांच जड एक चेतन सुजान है; काहुकी अनंत सत्ता काहुसों न मिले कोई, एक एक सत्तामें अनंत गुण गान है; एक एक सत्तामें अनंत परजाय फिरे, एकमें अनेक इह भांति परवान है; यहे स्यादवाद यहे संतनिकी मरजाद, यहे सुख पोष यहे मोक्षको निदान है. ॥ १८ ॥

अर्थः— ए छए द्रव्ये करी एथीज जगत्जाळ वर्त्तेछे, ते छनेविषे पांच द्रव्य जड रूपी छे, ने एक चेतनरूपी द्रव्य छे ते जाणनार छे. अंही पुद्गलनी अनंत सत्ता कही,

अने जीवनी अनंत सत्ता कही, एवा अनंतपणे करीने कोईनी सत्ता कोई साथे मळे नही, एटले जुदी जुदी अनंत सत्ता छे, अने प्रत्येक सत्तामां अनंत गुणनुं ज्ञान छे, अने एक एक सत्तामां अनंत पर्याय अनंत अवस्था भेदफिरे तेथी जे पूर्वे एकमां अनेक कह्युं ते एरिते छे. स्याद्वाद मतमां ए वात प्रमाण छे, अने सत्पुरुषनां वचननी पण एज मर्यादा छे, तथा एज मत सुखनुं पोषण करनार छे, अने मोक्षनुं निदान एटले मूल कारण छे. ॥ १८ ॥

हवे ए वचन थकी जे वस्तुनो धर्म ग्रह्यो जाय तेज सत्ताधर्म कहीये तेथी एक जीव द्रव्यनी सत्ता कहेछेः— अथ एक जीव द्रव्यसत्ता वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— साधि दधि मंथनि अराधि रसपंथनिमें, जहां तहां ग्रंथनिमें सत्ताहीको सोर है; ज्ञान भानु सत्तामें सुधा निधान सत्ताहीमें, सत्ताकी दुरनि सांझि सत्तामुख भोर है; सत्ताको सरूप मोख सत्ता भूलै यहै दोष, सत्ताके उलंघे धूंम धाम चिहू ओर है; सत्ताकी समाधिमें विराजि रहे सोई साहु. सत्तातें निकसि और गहे सोई चोर है. ॥ १९ ॥

अर्थः— जे वस्तुनेविषे छती देखाय, जेम दहीना मंथनमां घीनी सत्ता साधिये,जे औषधमां मधुर रस छे, तो तेथी वस्तु नीपजे छे, माटे रस मार्गमां सत्ताविना सिद्ध नथी. जे वस्तुमां छतापणुंछे तेने सत्ता कहिये. शास्त्रमां ज्यां त्यां ग्रंथोनेविषे सत्तानोज सोरके० शब्दछे. ज्ञान रूपी भानुनो उदय जीवनी सत्तामां निपजे, वळी सुधा के० अमृत ते पण सत्तामांज पामिये, निधान पण सत्तामांज पामिये. जे सत्तानुं दुरनि के० छुपाववुं ते संध्या रूपछे, अने जे सत्तानी मुख्यताछे तेज भोर के० प्रभात रूपछे. जीवनी सत्तानुं जे स्वरूप छे तेज मोक्ष छे, अने सत्ताने भुली जवुं एज दोषरूप छे. सत्तानुं उलंघन करवाथी चौहोळर के० चारें तरफ धामधुम नीपजे, जे पोतानी सत्ता सद्भूतपणुंछे, तेमां बिराजमान थई रहे तेने साहुकार कहिये, अने जेपोतानी सत्ताथी नीकळीने अन्यनी सत्ताने ग्रहे तेने चोर कहीये. ॥ १९ ॥

हवे सत्तानी समाधिनुं वर्णन करेछेः— अथ समाधि वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जामें लोक वेद नांहि थापना उछेद नांहि पाप पुन्य खेद नांहि क्रिया नाहि करनी; जामें राग दोष नांहि जामें बंध मोष नांहि, जामें प्रभु दास न आकास नाहि धरनी; जामें कुलरीत नांहि जामें हारजीत नांहि जामें गुरु शिख नांहि विष नांहि भरनी; आश्रम वरन नांहि काहुकी सरनि नांहि ऐसी सुद्ध सत्ताकी समाधि भूमि वरनी. ॥ २० ॥

अर्थः— जेमां लौकिक वेदवुं नथी, अने जेमां स्थापनानो उछेद नथी, जेमा पाप

पुण्यनो खेद नथी, जेमां कोइ क्रियाकरणी नथी, जेमां राग द्वेष नथी, जेमां बंध मोक्ष नथी, जेमां प्रभुताने दासपणुं नथी, जेमां आकाश अने धरती नथी, जेमां कुलनी रीत नथी, जेमां हारने जीत नथी, जेमां गुरु अने शिष्य नथी, जेमां विष भरनी एटले चालवुं हालवुं नथी, जेमां कोई आश्रम व्यवहार नथी, तथा वर्ण व्यवहार नथी, जे कोइनी शरण रूप नथी, एवी शुद्ध सत्तानी भूमि ते समाधिरूप वरणवीछे. एटले स्वरूपनी शुद्ध समाधिने विषेज शुद्ध सत्ता पामीये. ॥ २० ॥

हवे मिथ्यादृष्टिने चोर अने अपराधी कही देखडावे छेः—

अथ मिथ्यादृष्टि अपराधि यह कथनंः—

॥ दोहराः ॥— जाके घट समता नहीं, ममता मगन सदीव; रमता राम न जानही, सो अपराधी जीव ॥ २१ ॥ अपराधी मिथ्यामती, निरदै हिरदै अंध; परकों मानै आतमा, करे करमको बंध ॥ २२ ॥ झूठी करनी आचरे, झूठे सुखकी आस; झूठी भगती हिय धरे, झूठो प्रभुको दास ॥ २३ ॥

अर्थः— जेने केवल जाणपणुं जे समता ने समाधि ते नथी, अने जे सदा परवस्तुनी ममताविषे मगन थई रहे, ने निंज घट अथवा स्वरूपनेविषे रमी रह्यो एवो जे आत्मराम तेने जेणे जाण्यो नथी तेनेज अपराधी चोर जीव कहीये ॥ २१ ॥ जे परवस्तु लेय ते अपराधी ने तेज मिथ्यामति, तेज निर्दय ने तेज हैयानो अंध कहिये, एटले जे पररूप पुद्गलने आत्मा माने ते कर्मनो बंध करेछे ॥ २२ ॥ ज्यांसुधी पोतानी वस्तुने न जाणे त्यांसुधी तो जे क्रिया आचरे ते सर्व झूठी छे, अने तेने जे मोक्ष सुखनी आशा छे, ते सर्व झूठी छे. पोताना प्रभु जाण्या विनानी जे भक्ति हैयामां धरे छे, ते सर्व झूठी जाणवी, अने परमेश्वरने ओलख्याविना दासपणुं राखवुं ते पण सघलुं झूठुं छे ॥ २३ ॥

हवे मूढ लोकना झूठपणानी व्यवस्था कहे छेः— अथ मूढ व्यवस्था यथाः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— माटी भूमि सैलकी सु संपदा बखाने निज, कर्ममें अमृत जाने ज्ञानमें जहर है; अपनो न रूप गहे ओरहीसों आपु कहे, साता तो समाधि जाके असाता कहर है; कोपको कृपान लिये मान मदपान किये, मायाकी मरोरि हिये लोभकी लहर है, याही भांति चेतन अचेतनकी संगतिसों, साचसों विमुख भयो झूठमें बहर है ॥ २४ ॥ तीन काल अतीत अनागत वरतमान, जगमें अखंडित प्रवाहको डहर है; तासों कहै यह मेरो दिन यह मेरी घरी, यह मेरोई परोई मेरोई पहर है; षेहको खजानो जोरे तासों कहे मेरो गेह, जहां वसे तासों

कहे मेरोई सहर है; याहि भांति चेतन अचेतनकी संगतिसों, साचसों विमुख भयो झूठमें बहर है ॥ २५ ॥

अर्थः– सात धातु जे छे पहाडनी धरतीनी माटी जेवी छे, तेने संपत्ति करी वखाणे छे. पोतानी अशुद्ध क्रियामां अमृत जाणे छे, अने ज्ञानमां झेर समजे छे; एटले क्रिया थकी सिद्धि जाणे, ने ज्ञान थकी नही जाणे. जे पोतानुं चिदानंद स्वरूप छे, तेने ग्रहे नही, पण शरीरादिक जे छे तेने आत्मारूप जाणेछे. अने जे साता वेदनीय उपजे छे, तेने तो समाधि करी जाणे छे; असाता वेदनीयने कहर के० उपद्रव माने छे, कोपनुं कृपान जे खडग ते लईने रहे छे; मान ने अहंकार रूप मद पीइने रहेछे; हैयानेविषे मायानो मरोड राखेछे, लोभनी फेर खाया करे छे, एवी रीते अचेतननी संगती थकी एटले जड पुजलनी संगतीथी साच थकी विमुख थयोछे, ने जुठमां बहर हे के० तत्पर थई रह्योछे, ॥ २४ ॥ अर्थ स्पष्ट. ॥ २५ ॥

हवे सम्यग् दृष्टि साहुकारनी व्यवस्था कहे छेः–अथ सम्यकदृष्टि व्यवस्थाकथनंः–

॥ दोहराः ॥– जिन्हके मिथ्या मति नही, ज्ञान कला घटमांहि; परचे आतम रामसों, ते अपराधी नांहि ॥ २६ ॥

अर्थः– जेनी मिथ्यामति नाश पामीने घटनेविषे ज्ञान कला प्रगटी छे, जेणे आत्मारामने ओलख्यो छे, ते लोक अपराधी नथी, साहुकार छे ॥ २६ ॥

हवे ज्ञानीनी व्यवस्था कहे छेः– अथ ज्ञानी यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जिन्हके धरम ध्यान पावक प्रगट भयो, संसे मोह विभ्रम विरष तीन्यो वढे हैं, जिन्हकी चितौनि आगे उदे स्वान भूसि भागे लागे, न करमरज ज्ञान गज चढे हैं; जिन्हिकी समुझिकी तरंग अंग अगममें, आगममें निपुन अध्यातममें कढे हैं; तेई परमारथी पुनित नर आठों जाम, राम रस गाढ करे यहे पाठ पढे हैं ॥ २७ ॥ जिन्हकी चिहुंटी चिमटासी गुन चूनबेकों, कुकथाके सुनबेकों दोउ कान मढे हैं; जिन्हको सरल चित कोमल वचन बोले, सोम दृष्टि लिये डोले मोम कैसे गढे हैं; जिन्हिके सगति जगि अलख अराधिबेकों, परम समाधि साधिवेंगो मन वढे हैं; तेई परमारथी पुनित नर आठों जाम, राम रस गाढ करे यहे पाठ पढे हैं ॥ २८ ॥

अर्थः– जेना हैयामां धर्म ध्यानरूप पावक के० अग्नि प्रगट थयो, तेथी संशय, मोह अने विभ्रम ए त्रणे वृक्षरूप छे, ते वढे के० बली गया छे, जेनी चितौनी के० ज्ञानदृष्टि आगल उदयरूप कुतरो भसीने भागी जाय छे, अने जे ज्ञानरूपी गजराज उपर चढी रहेछे, तेथी जेने कर्मरूप रज लागती नथी, बीजानुं जे अगम अंग छे, तेमां जेनी समजना तरंग उठी रह्या छे एवा आगम के० जैन वाणीमां जे निपुण थयो, अने अ

ध्यात्म ज्ञानमां पूर्ण थयो छे, तेनेज सम्यग्दृष्टि कहिये; परमार्थने पामनार पुनित के० पवित्र रूप थयो जाणवो. आत्मारामना अनुजव रसमां आठे प्रहर गढे के० संपूर्ण मग्न थई, एज पाठ पढे छे, एटले जणे छे, ॥ २७ ॥ वली जेम चीमटी के० हाथनी चिमटी अथवा चिपीयो तेवडे कई नानी वस्तुने पकडी लइयें छइये, तेम पारकागुण चुंटी लेवाने जेनी एवी चपटी छे, अने विकथा सांजलवाने जे बने कानने बंध करी राखे छे, जेनुं चित्त सरल ने निष्कपटी छे, जे निरहंकारीपणे कोमल वचन बोले छे; काम क्रोधादिक विकारविना सौम्य दृष्टि जे राखे छे, वली जे मोम केसेगढेहें के० मीणना घडाजेवुं हृदय कोमल राखे छे, अने पोताना अलख समाधि स्वरूपने साधवाने जेनी सुमति जागी छे, अयोगी अवस्थामां जेनी परम समाधि थइ छे, तेने साधवाने जेनुं मन वध्युं छे, तेज सम्यग् दृष्टि परमार्थना पामनार पुनित के० पवित्र रूप थई रह्या छे, ने तेज आत्मारामना अनुजव रसमां आठे पहोर दृढ मग्न थई एज पाठ पढे छे. ॥ २८ ॥

हवे समाधिनुं स्वरूप कहे छेः– अथ समाधि वर्णनः–

॥ दोहराः ॥– राम रसिक अरु रामरस, कहन सुननकों दोइ; जब समाधि परगट जई, तब दुविधा नहि कोइ. ॥ २९ ॥ नंदन वंदन थुति करन, श्रवन चिंतवन जाप; पढन पढावन उपदिसन, बहुविध क्रिया कलाप. ॥ ३० ॥ शुद्धातम अनुजौ जहां, सुजाचार तिहि नांहि; करम करम मारगविशे, शिव मारग शिवमांहि. ॥ ३१ ॥

अर्थः– आत्माराम जे छे ते रसिक के० रस जोक्ता छे, अने राम के० रमवुं ते रस रूप छे, केहेवाने सांजलवाने रसिकने रस बेउ छे, पण जेवारे एनेविषे समाधि प्रगट थाय छे त्यारे बे पणुं नथी रेहेतुं. त्यारेतो रसिक अने रस ए बे एकज वस्तु छे ॥२९॥ राम के० रसिक अवस्था धारतो एटली क्रिया करे छे के, नंदन के० आनंद पामे छे, वंदन के० प्रणाम करे, थुती के० जात जातना गुणनी स्तुतिकरे छे, अने एवाजगुण सांजली एनुंज चिंतवन करे, एनोज जाप जपे छे, जणे, जणावे, उपदेशे, एवी रीते रसिक अवस्थामां जात जातना क्रिया कलाप छे ॥ ३० ॥

पूर्वे कही जे क्रिया तेने करतां करतां ज्यां शुद्ध आत्मानो अनुजव थाय शुजाचार छुटीजाय, कृत–कृत्यपणे ते अयोगी दशामां छे, कर्म जे छे ते कर्म मार्गमांज रहे, एटले संसार मार्गनेविषेज रहे, शुज कर्म पण संसार मार्गमां छे अने शिव मार्ग ते शिवमांहे एटले शुद्ध आत्माने विषेज छे. ॥ ३१ ॥

॥ चोपाईः ॥– इहि विध वस्तु व्यवस्था जैसी, कही जिनिंद कही में तैसी; जे प्रमाद संयति मुनि राजा, तिन्हिको शुजाचारसों काजा. ॥ ३२ ॥ जहां प्रमाद द

सा नहिं व्यापे; तहाँ अवलंब आपनो आपे, ता कारन प्रमाद उतपाती, प्रगट मोक्ष मारगको घाती. ॥ ३३ ॥ जे प्रमाद संयुक्त गुसांई; उठहि गिरिहि गिंडुककी नांई; जे प्रमाद तजि उद्धत होही, तिन्हिको मोष निकट दृग सोही. ॥ ३४ ॥ घटमें है प्रमाद जबतांई, पराधीन प्रानी तबतांई; जब प्रमादकी प्रभुता नासै, तब प्रधान अनुभो परगासे. ॥ ३५ ॥

अर्थः– ए रीते श्री जिनेंद्र देवे वस्तुनी व्यवस्था कही छे, ने तेवीज आज्ञा प्रमाणथी में पण कही छे, अने जे मुनिराज प्रमाद दशामां छे, तेने तो शुभाचार एटले शुभ क्रियानुं आलंबन लीधाथीज कार्य सिद्धि थाय ॥ ३२ ॥

अने जे मुनिराजने आत्माना अधिक वीर्यांशने लीधे प्रमाद दशा न व्यापे त्यां पोतानुं आलंबन पोते लिये, तेमाटे प्रमाद तो उत्पाती छे; अने प्रगट रीते मोक्ष मार्गनो घात करनार छे, अने अंतरायनो करनार छे. ॥ ३३ ॥

गुसांई देशी भाषानो शब्द छे, एनो अर्थ मुनिराज थाय छे. जे मुनिराज प्रमाद संयुक्त छे, ते तो गिंडुक के० दडानी रीते उछे छे, ने पडे छे, पण स्वस्थताने पामे नही अने जे प्रमाद छोडीने अप्रमादपणे उठीने उभा रहे छे, तेने पोतानी दृष्टि नजीक मोक्ष छे. ॥ ३४ ॥ ज्यां सुधी घटमां प्रमाद छे, त्यांसुधी ते पराधीन छे, अने ज्यारे आत्मानी शक्ति जागे छे, त्यारे प्रमादनी प्रभुता नाश पामे छे. त्यारे तो पोताना प्रधान अनुभवनो प्रकाश थाय छे. ॥ ३५ ॥

॥ दोहराः ॥–ता कारन जग पंथ इत, उत शिव मारग जोर; परमादी जगकों ढुंके, अपरमाद सिव ओर ॥३६॥ जे परमादी आलसी, जिनके विकलप भूरि, होहि सिथिल अनुभौविषे, तिन्हिको शिवपथ दूरि ॥ ३७ ॥ जे अविकलपी अनुभवी, शुद्ध चेतना युक्त; ते मुनिवर लघु कालमें, होहि करमसों मुक्त ॥ ३८ ॥ जे परमादी आलसी, ते अभिमानी जीव, जे अविकलपी अनुभवी, ते समरसी सदीव ॥ ३९ ॥

अर्थः– तेमाटे जगत्नो मार्ग प्रमादीनी तरफ छे, अने अप्रमादीनी तरफ मोक्ष मार्ग छे, केमके, जे प्रमादी होय ते जगत्ने जुए अने अप्रमादी मुक्ति तरफ जुए छे ॥ ३६ ॥ जे प्रमादी छे, ते आलसु छे. तेने भूरि के० घणा विकल्प उठे छे, अने पोताना अनुभवमां तेने शिथिलपणुं रहे छे, अने तेने मुक्ति मार्गरूप स्वरूपाचरण दूर छे ॥ ३७ ॥ अने जे विकल्पविना अनुभवमां वसे छे, ने शुद्ध चेतना युक्त छे, ते मुनीश्वर थोडा कालमां कर्मथी मुक्त थाय छे ॥ ३८ ॥ जे प्रमादी अने आलसु छे, तेने अहंबुद्धिथी अभिमानी कहिये. ने जे विकल्प रहित पोताना अनुभवमां छे तेने तो सदाय समरसी कहिये ॥ ३९ ॥

हवे अभिमानी तथा ज्ञानीनी अवस्था उपर दृष्टांत आपेछेः-

अथ अभिमानी तथा ज्ञानी व्यवस्था कथनंः-

॥कवित्त छंदः॥-जैसे पुरुष लखे पहार अढि, भूचर पुरुष तांहि लघु लग्ग; भूचर पुरुषलखे ताकों लघु, उतर मिलै दुहुको भ्रम भग्ग, तैसे अभिमानी उन्नतगल, और जीवको लघुपद दग्ग; अभिमानीको कहे तुछ सब, ज्ञान जगे समतारसजग्ग ॥ ४० ॥

अर्थः-जेम कोई माणस पहाड उपर चड्यो होय तेने भूचर के० तलाटीपरना माणसो न्हानोछे एम जुए, अने तलाटी वाला माणसने पहाड उपर चडेला न्हाना जुए, अने पछी पहाड उपर चडेलो हेठे उतरी तलाटी वालाने मले त्यारे बेउनो नाना पणानो भ्रम दूर थाय, तेम अभिमानी पुरुष उंची गरदन राखनारो, अन्य, जीवने नाना जुए, तुछ जाणे, अने बीजा पुरुषो ते अभिमानी पुरुषने तुछ जाणे, एम अरसपरस विचारमां विषमता रहे छे, ते ज्यारे ज्ञान जागे त्यारे बेउना मनमां विषमता मटीने समपणुं आवी जाय ॥ ४० ॥

हवे एकला अभिमानीनी व्यवस्था कहे छेः-अथ अभिमानी यथाः-

॥सवैया इकतीसाः॥-करमके भारी समुझे न गुनको मरम, परम अनीति अधरम रीति गहे है; होहि न नरम चितगरम घरमहुते, चरमकी दृष्टिसों भरम भूली रही है; आसन न खोले मुख वचन न बोले सिरधुनाएहू न डोले मानो पाथरके चहे है; देखनके हाउ भव पंथके वटाउ ऐसे, मायाके खटाउ अभिमानी जीव कहे हैं. ॥४१॥

अर्थः-जे करम बंधथी अति भारी छे. जे दूषनने गुण जाणेछे, पण गुणनो मर्म जाणतो नथी; अने परम अन्याय तथा अधर्मनी रीत ग्रही राखेछे; जेना चित्तनेविषे नरमाश तथा दया परिणाम नथी; दूषनो अति घर्म ताप छे, तेथी जे गरम रहेछे, ज्ञान दृष्टि नथी अने चर्मरूप दृष्टिवडे भ्रममां भूल्यो फरे छे, कोई विकट आसन बांधे तेने खोले नही, ने मोढेथी वचन बोले नही, मौन व्रती रहे, तेने ज्ञानी महा पुरुष जाणीने कोई माथुं नमावे, तो तेनो सत्कार ने अंग चेष्टा पण न करे, जाणिये पथर थवानीज इछा करतो होय; नेवली जेम बालकने डरावचाने हाउ कहीये छइये तेम लोकोने डरावचाने वेष धरी हाउ बनीने बेसे, अने भव भ्रमणना मार्गमां वटाउना सरखो चाले; एरीते माया जालना खाटनारा अभिमानी जीवने उलखीये ॥ ४१ ॥

हवे ज्ञानी जीवनी व्यवस्था कहे छेः-अथ ज्ञानी यथाः-

॥ सवैया इकतीसाः॥-धीरके धरैया भवनीरके तरैया भयभीरके हरैया वर वीर ज्यों उमहे हैं; मारके मरैया सुवीचारके करैया सुख ढारके ढरैया गुनलोसों लह लहे हैं;

रूपके रीझैया सवनैके समुझैया सवहीके लघुभैया सबके कुबोल सहे हैं; वामके व मैया दुखदामके रमैया ऐसे रामके समैया नर ज्ञानी जीव कहे हैं ॥ ४२ ॥

अर्थः–धीरजने धरनार, संसार सागरने तरनार, भवभीडने हरनार, मोटा शूर वीरनी परे पोताने साह्य आपवाने उमंगी रह्याछे, कंदर्पने मारनार, भला विचारना करनार, सुख समाधिना ढालामां ढलनार, आत्माना गुणनो लव एटले अंश तेमां ल हलहि रह्या छे, आत्मरूपना रीझवनार, सर्व नयना सारनो रस समजनार, निरहं कारी पणे सर्वना नाना भाई जे थई रह्याछे; क्षमावंतपणे सर्वनां दुष्ट वचन जे सहेछे; वाम के० स्त्रीने वमैया के० छोडनार, दुःखनी परंपराना दमनार, एवा आत्मारामने विषे रमनारा मनुष्यने ज्ञानी जीव कहीये ॥ ४२ ॥

हवे शुद्धात्मना अनुभवनी प्रशंसा करेछेः–अथ शुद्धात्म अनुभव प्रशंसाः–

॥चोपाईः॥–जे समकिती जीव समचेती; तिन्हिकी कथा कहों तुमसेती; जहां प्रमाद क्रिया नहि कोई; निर्विकल्प अनुभौ पद सोई. ॥ ४३ ॥ परग्रिह त्याग जोग थिर तीनो; करम बंध नहि होइ नवीनो; जहां न राग दोष रस मोहे; प्रगट मोषमारग मुख सोहे. ॥ ४४ ॥ पूरव बंध उदे नहि व्यापे, जहां न भेद पुन्न अरु पापे; दरब भाव गुन निर्मल धारा, बोधविधान विविध विस्तारा. ॥ ४५ ॥ जिन्हिके सहज अ वस्था ऐसी; तिन्हिके हिरदे दुविधा केसी; जे मुनिषिपक श्रेणिचढी धाये; ते केवलि भगवान कहाये. ॥ ४६ ॥ दोहराः–इहिविधि जे पूरन भये, अष्ट करम वनदाहि; ति न्हिकी महिमा जो लखे, नमे बनारसि ताहि. ॥ ४७ ॥

अर्थः– जे समकिती जीव छे ते समचेती के० वीतरागपणे समतावंत छे अहो! भव्य प्राणी ! तेनी कथा हुं तमने कहुछुं. ज्यां कोई प्रमादनी क्रिया नथी, तेने नि र्विकार निर्विकल्प अनुभव पद कहीयें, एटले अनुभवमां विकल्प नथी. ॥ ४३ ॥ ज्यां परिग्रहनो त्याग छे, अने त्रणे जोग स्थिर छे, त्यां नवीन कर्मनो बंध नथी थतो; वली ज्यां जीवने राग द्वेष रस मोह नथी, तेज प्रगटपणे मोक्ष मार्गनुं मुख के० प्रारंभ छे. ॥ ४४ ॥ वली ज्यां पूर्वे जे कर्मबंध छे, तेनो उदय नथी, अने ज्यां पुण्य पापना भेदनो विचार नथी, अने ज्यां साधुना सतावीस गुण द्रव्यपणे भाव पणे निर्मल धाराये वही रह्या छे, वली ज्यां बोधविधान के० ज्ञानना प्रकार भात भातना विस्तारमां छे. ॥ ४५ ॥ जेनी एवी सहज अवस्था थई होय तेना हृदयमां आत्म उलखवानी दुविधा केम रहे? अने एज अवस्थामां जे मुनिराज क्षपक श्रेणि चढी ऊर्ध्व मुख धाये तेतो केवली भगवंत जाणवा. ॥ ४६ ॥ ए रीते करी अष्ट कर्म रूप वनने वालीने पूर्ण आत्मारूपमां जे थायछे अने जेना महिमाने जे सत् पुरुष

होय तेहिज जुएछे, एटले सत्य पणे जाणेछे, तेने वाणारसीदास नमस्कार करेछे ॥४७॥

हवे मोक्ष पदार्थनी उत्पत्तिनो क्रम कहेछेः—अथ मोक्ष उत्पत्ति वर्णनं॥—

॥ छप्पय छंदः—जयो शुद्ध अंकूर, गयो मिथ्यात् मूर नशि; क्रमक्रम होत उदोत, सहज जिम शुक्लपक्ष शशि; केवल रूप प्रकासि, जासि सुख रासि धरम ध्रुव; करि पूरन थिति आउ, त्यागि गतभाव परम हुव; इह विधि अनन्य प्रभुता धरत, प्रगटी बूंद सागर भयो; अविचल अखंड अनभय अखय, जीव दरब जगमहि जयो. ॥ ४८ ॥

अर्थः—शुद्धतानो अंकुर प्रगट थतां मिथ्यात मूलथी नाश पाम्युं, तेवारे जेम अजवालीया पखवाडीयामां चंद्रमा क्रमे क्रमे उद्योतवंत थायछे, एरीते आत्मापण क्रमे क्रमे उद्योत थतां केवल ज्ञान रूपनो प्रकाश थाय, अने आत्मानो निश्चल ध्रुव धर्म सुख समुद्र ते भासे, ते पछी आयुष्य कर्मनी स्थिति पूर्ण करीने अने मनुष्य गतिनो भाव छोडीने परमात्मारूपे थाय, एरीते अनन्य प्रभुता एटले सर्वथी श्रेष्टता धारण करे. कोनी पेठे ? तो के जेम पाणीनी बुंद बुंद एकठी मली समुद्र थायछे तेम आत्मा गुणना अंश क्रमे क्रमे प्रगट करतो पूर्ण थयो, ते पछी अविचल, अखंड, अभय ने अक्षय एवुं जीव द्रव्य जगत्नेविषे सदा जयवंत थायछे. ॥ ४८ ॥

हवे अष्ट कर्मनो नाश थयेथी जे आत्मामां सहज आठ गुण प्रगट थायछे ते कहेछेः—अथ अष्ट कर्म नाशते अष्ट गुन प्रकाश वर्णनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— ज्ञानावरनीके गये जानिये जु है सु सब, दंसनावरनके गयेते सब देखिये; वेदनी करमके गयेते निराबाध रस, मोहनीके गये शुद्ध चारित विसेखिये, आउकर्मगये अवगाहनअटल होइ, नामकरमगये ते अमूर्त्तिक पेखिये; अगुरुअलघुरूप होई गोत कर्म गये, अंतराय गयेते अनंत बल लेखिये. ॥ ४९ ॥

अर्थः— ज्ञानावरणीय कर्म नाश थता लोकालोकमां जे वस्तु छे, ते सर्व जणाय, एटले केवल ज्ञान प्रकाश थाय; अने दर्शनावरणीय कर्मनो क्षय थवाथी लोकालोकना भावने सामान्यपणे जोईये, एटले केवल दर्शनगुण प्रगट थाय; अने वेदनीय कर्मना क्षयथी निराबाध रस उपजे एटले आत्मा बाधपणाथी मुक्त थाय, ते अबाधपणे अनंत सुखरूप गुण उपजे; वली मोहनीय कर्मनो नाश थयेथी विशेषपणे शुद्ध चारित्र प्रगट थाय, एटले यथाख्यात चारित्र स्पष्ट गुण होय; आयु कर्मनाश थयेथी अवगाहनानी सादि अनंत स्थिति थाय (आयुकर्मगते निश्चला स्थितिर्भवति); नाम कर्म नाश थयेथी अमूर्त्तिकपणुं जीवनुं शुद्ध स्वरूप उपजे; गोत्र कर्मनो क्षय थयेथी अगुरुलघु गुण उपजे, जेथी जीवमां लघुपणु तथा गुरुपणु न होय; अने अं

तराय कर्मनो नाश थयेथी अनंत बल उपजे, एटले अनंत वीर्यपणानो गुण उपजे छे. ए आठ गुण उपजे. ॥ ४ए ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक बालबोधरूप नवमो मोक्ष द्वार समाप्तः ॥

॥दोहराः॥–इति श्रि नाटिक ग्रथमें, कह्यो मोक्ष अधिकार; अब बरनों संक्षेपसों, सरब विशुद्धीद्वार. ॥ ५० ॥

अर्थः– इति के० संपूर्ण नाटक समयसारविषे मोक्ष द्वारनो अर्थ कह्यो ने हवे दशमुं संक्षेपथी सर्व विशुद्धि द्वारनुं वर्णन करुं छु ॥ ५० ॥

हवे अंही सर्वउपाधि रहित शुद्ध आत्म स्वरूपनुं वर्णन करे छेः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–करमको करता है जोगनिको जोगता है, जाकी प्रजुतामें ऐसो कथन अहित है; जामें एक इंद्रियादि पंचधा कथन नांहि, सदा निरदोष बंध मोक्षसों रहित है; ज्ञानको समूह ज्ञान गम्य है सुजाउ जाको, लोक व्यापी लोकातीत लोकमें महित है; शुद्ध वंस शुद्ध चेतनाके रस अंश जर्यो, ऐसो हंस परम पुनीतता सहित है ॥ ५१ ॥ दोहराः–जो निहचे निरमल सदा, आदि मध्य अरु अंत; सो चिद्रूप बनारसी, जगतमांहि जयवंत ॥ ५२ ॥

अर्थः– कर्मनुं कर्त्तापणुं अने सुखडुःखनुं जोक्तापणु एवुं जे लोक व्यवहारमां केहेवाय छे, ते जेनी प्रजुतामां ईश्वरताई छे, तेमां अहितकारी छे; वली जेनी प्रजुतामां एकेंद्रिय प्रमुख पांच जेदनुं केहेवुं ते पण अहितकारी छे, सत्य नथी. केमके जे सदा निर्दोष छे, तेना निश्चय स्वजावमां बंध नथी, अने मोक्ष पण नथी, एवो जे बंध मोक्ष रहित छे. त्यारे ए द्रव्य शुं छे, एवो प्रश्न उठे तेनो खुलासो करे छे के, ए ज्ञाननो समूह जे पुंज ते रूप छे. जेनो स्वजाव ज्ञान गम्य छे, ज्ञान वडे जाणवामां आवे एवो छे, लोकमां सघले स्थले व्यापी रह्यो छे, लोकातीत के० क्षेत्र लोकथी जुदो छे, ने लोकमां महित के० पूजनीक उपादेय छे, अनादि कालनो एवोज चाल्यो आवेछे तेथी जेनो शुद्ध अवतंश छे अने शुद्ध चेतनाना रस प्रदेशथी जरपूर छे, एवा जे हंस छे ते परम पुनीतता सहित एटले उत्कृष्ट शुद्धता सहित छे ॥५१॥ जे निश्चय स्वरूपमां सदा निर्मल छे, आदि मध्यने अंत्य अवस्थाने विषे एक रूप छे, ने तेज चिद्रूप छे. तेनी वणारसी स्तुति करेछे के एवा जगवान जगत्मां जयवंत थाओ. ॥ ५२ ॥

हवे जीवनुं अजोक्ता पणुने अकर्त्ता पणु ठरावे छेः– अथ जीव अकर्त्ता वर्णनंः–

॥ चोपाईः ॥–जीव करम करता नहि ऐसो; रस जोगता सुजाउ न जैसो; मिथ्याम तिसों करता होई; गये अज्ञान अकरता सोई ॥ ५३ ॥

अर्थः–जेम जीवने कर्मनो कर्त्ता न कहिये तेम रसनो जोक्ता पण न कहिये; जीव

ज्यांसुधी मिथ्यामति वाळो छे, त्यांसुधी तो कर्त्तापणुं केहेवतमां साचो छे. पण ज्यारे ए अज्ञान जायछे, त्यारे जीव अकर्त्तापणे छे एवुं स्पष्ट जणाय छे. ॥ ५३ ॥

हवे आत्माना शुद्ध स्वभाव तथा विभावनुं वर्णनः– अथ स्वभाव विभाव वर्णनं:–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– निहचे निहारत सुभाउ जाहि आतमाको, आतमीक धरम परम परगासना; अतीत अनागत वरतमान काल जाको, केवल सरूप गुन लोकालोक भासना; सोई जीव संसार अवस्थामांहि करमको, करतासो दीसे लिये भरम उपासना; यहे महा मोहके पसार यहे मिथ्याचार, यहे भौ विकार यहे व्यवहार वासना ॥ ५४ ॥

अर्थः– निश्चय दृष्टिए जोतां जे आत्मानो आत्मिक धर्म परम प्रकाशरूप सदा स्वभाव छे. एटले निश्चयनयथी अतीत, अनागत तथा वर्त्तमान कालमां लोकालोकना भासनानो करनार केवल स्वरूप गुण छे. तेज आत्मा संसार अवस्थानेविषे भ्रम उपासनावडे एटले मिथ्यात्व-अज्ञाननी सेवाने लीधे कर्मना कर्त्तानी पेठे देखाय छे, एम मिथ्यात्वनी सेवामां जे रेहेवुं ते मोहनो पसार छे, एज मिथ्याचार छे; जीवने भव भ्रमणनो एज विकार छे. तथा एज व्यवहार वासना छे ॥ ५४ ॥

हवे जीवनी अभोक्ता अवस्थानुं वर्णन करेछेः– अथ जीव अभोक्ता वर्णनं:–

॥ चोपाईः ॥– तथा जीव करता न कहावै; तथा भोगता नाउ न पावै; है भोगी मिथ्यामति मांही; मिथ्यामती गयेतें ते नाही. ॥ ५५ ॥

अर्थः– जेम जीव कर्त्ता नथी तेम भोक्ता पण नथी, मात्र मिथ्यात्वमां कर्त्ता जीव छे, ने भोक्ता पण जीव छे, पण मिथ्यात्व नाश थाय त्यारे जीव कर्त्ता अने भोक्ता नाम धरावतो नथी. ॥ ५६ ॥

हवे नय स्वरूपमां भोक्ता अभोक्ता पणानां लक्षण बतावेछेः–
अथ भोगतापना अभोगतापनाको लक्षण:–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– जगवासी अज्ञानी त्रिकाल परजाय बुद्धी, सोतो विषे भोग निको भोगता कहायो है; समकिती जीव जोग भोगसों उदासी तातें, सहज अभोगता गरंथनिमे गायो है; याही भांति वस्तुकी व्यवस्था अवधारे बुध, परभाउ त्यागि अपनो सुभाउ आयो है; निरविकलप निरुपाधि आतमा अराधि, साधि जोग जुगति समाधिमें समायो है. ॥ ५६ ॥

अर्थः– जगत्‌वासी जे अज्ञानी छे, त्रणे कालविषे पर्याय बुद्धि छे, एटले द्रव्यबुद्धि नथी, ने हुं सुखी, हुं दुःखी एवी पर्याय बुद्धि करेछे, पण भिन्नपणे शुद्ध आत्म द्रव्यने नही जाणे, एवो अज्ञानी जीव तो विषय भोगनो भोक्ता केहेवायछे, अने सम

किती जीव मनवचन ने कायाना योगथी तथा विषय भोगथी उदासीपणे रहेछे अने शुद्ध आत्म द्रव्यना अनुभवमां मग्न छे, तेथी समकितीने शास्त्रमां सहज अभोक्ता पणे गायलो छे, एरीते पंडित छे ते वस्तुनी व्यवस्था अवधारीने एटले वस्तुनो स्व भाव विचारीने परभावने त्यागीने पोताना सहज स्वभावमां आवे छे, तेथी सुखी दुःखी इत्यादि विकल्पविना, कर्म संयोगरूप उपाधिविना, एवा आत्माने आराधीने ज्ञान दर्शन चारित्ररूप जोगनी जुगति साधी समाधि एटले सहज स्वरूपमां समायछे.

हवे अभोक्ता जीवनी अवस्थानुं वर्णन करेछेः— अथ जीव अभोक्ता वर्णनं:—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— चिनमुद्रा धारी ध्रुव धर्म अधिकारी गुन, रतन भंडारि अप हारी कर्म रोगको; प्यारो पंडितनिको हुस्यारो मोख मारगमें, न्यारो पुद्गलसों उजियारो उपयोगको; जाने निजपर तत्त रहे जगमें विरत्त, गहे न ममत्त मन वच काय जोगको; ता कारन ज्ञानी ज्ञानावरनादि करमको, करता न होइ भोगता न होइ भोगको. ॥ ५७ ॥ दोहराः॥— निरभिलाष करनी करे, भोग अरुचि घट मांहि; तातें साधक सिद्ध सम करता भुगता नांहि. ॥ ५८ ॥

अर्थः— चेतना चिन्हनो धरनार, निश्चल स्वभाव ज्ञातापणुं तेनो अधिकारी, ज्ञा नादिक गुणरूप रत्नना भंडारनो भंडारी छे, कर्मरूप रोगनो विनाश करनार, पंडित नो प्यारो एटले तत्त्व ज्ञानीने वल्लभ, मोक्षमार्गमां हुशीयार के० सावधान, पौद्गलिक धर्मथी जुदो रेहेनार, मतिश्रुत प्रमुख उपयोगनुं अजवालुं जेना हृदयमां थयुंछे, पोता नां अने पारकां सर्व तत्त्वनो जाणनार, जगतमां विरक्तपणे रेहेनार, एटले वैरागी, मन वचन ने कायाना योगनी ममता नही राखनार माटे ज्ञानी जीव ज्ञानावरणीय प्रमुख कर्मनो कर्त्ता पण नथी, अने दुःख सुखना भोगनो भोक्तापण नथी. ॥ ५७ ॥ इछा विना क्रिया करवी, अने घटपिंडमां भोगनी रुचि नही राखवी, तेथी मुक्तिनो सा धक पुरुष सिद्ध समान कह्यो, अने ते कर्त्ता तथा भोक्ता नथी. ॥ ५८ ॥

हवे अहंबुद्धि थकी कर्त्तापणु थायछे ते कहेछेः— अथ अहंबुद्धि वर्णनं:—

॥ कवित्तछंदः ॥— ज्यों हिय अंध विकल मिथ्यात धर मृषा सकल विकलप उपजा वत; गहि एकंत पछ आतमको, करता मानि अधोमुख धावत; त्यों जिनमती दरव चारित कर, करनी करि करतार कहावत; वंछित मुक्ति तथापि मूढमति, विनु सम कीत भवपार न पावत. ॥ ५९ ॥ चोपाईः॥— चेतन अंक जीव लखि लीन्हा, पुद्गल क रम अचेतन चीन्हा; वासी एक खेतके दोऊ; यदपि तथापि मिले नहि कोऊ.॥६०॥

॥ दोहराः ॥— निजनिज भाउ क्रिया सहित, व्यापक व्यापि न कोइ; करता पुद्ग ल करमको, जीव कहांसों होइ. ॥ ६१ ॥

अर्थः—जेम कोइ हृदय अंधपुरुष विकल मिथ्यात्वधारीने हैयामां विकल्प उपजावे, ते सर्व जुठा छे, ते क्रियावादीनो एकांत पक्ष ग्रहीने आत्माने कर्त्ता मानीने अधोमुख के० नीची गतिने पकडी रह्योछे, एवो जे जिनमती छे ते भाव चारित्रविना अने द्रव्य चारित्रयुक्त करणी करेछे, ने क्रिया करण एटले शुभ क्रियानो कर्त्ता पोते के हेवायछे, ते मुक्तिने वांछे तोपण मूढमतिछे; भवनो पार समकित विना पामतो नथी. ॥ ५९ ॥ अने जीवनो अंक के० चिन्ह चेतना जाणवी; अने पुद्गल तथा कर्म ए बे उने जड जाणवां. चेतन अने अचेतन बेउ एक क्षेत्रावगाहीछे एटले एक क्षेत्रवासी छे, तथापि कोई कोईथी मले एवां नथी. ॥ ६० ॥ जे पदार्थ छे ते पोतपोताना भावनी क्रिया सहित रहे छे; जेमां व्यापी रहे ते वस्तुने व्याप्य कहीये अने व्यापी रहे नार पदार्थने व्यापक कहीये तेथी पुद्गल व्याप्यमां जीवनुं व्यापकपणुं नथी, माटे पौद्गलिक कर्मनो कर्त्ता जीव क्यांथी थाय अर्थात् न ज थाय. ॥ ६१ ॥

हवे व्यवहारमां जे रीते जीवनुं कर्त्तापणुं ठरेछे ते जणावेछेः—अथ कर्त्ता कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः— जीव अरु पुद्गल करम रहे एक खेत, जद्यपि तथापि सत्ता न्यारी न्यारी कही हे; लछन सरूप गुन परजे प्रकृति भेद, दुहूमें अनादिहीकी दुविधा व्हैरही हे; एते परि भिन्नता न भासे जीव करमकी, जौलों मिथ्या भाउ तौलों औंधी वाउ वही हे; ज्ञानके उदोत होत ऐसी सूधी दृष्टि भई, जीव कर्म पिंडको अकरतार सही हे. ॥ ६२ ॥ दोहराः॥— एक वस्तु जेसी जु हे, तासों मिले न आन, जीव अकर्त्ता करमको, यह अनुभो परवान. ॥ ६३ ॥

अर्थः— जेम आकाश प्रदेशमां पुद्गल कर्म अवगाहि रहे छे; तेज आकाश प्रदेशमां जीव प्रदेश पण अवगाहि रहे छे. एम जीव अने पुद्गल एक क्षेत्रना वासी छे, तथापि चेतननी सत्ता अने जडनी सत्ता ए बे जुदी छे. अनादि कालनी लक्षण भेदवडे, स्वरूप भेदवडे, गुणपर्यायवडे ने प्रकृति भेदवडे ए बेउनेविषे द्विविधता चाली आवेछे, तेम छतां लक्षण प्रमुखनी भिन्नता मिथ्यात्व भावने लीधे जीव अने कर्मनी ज्यां सुधी भासे नही, त्यां सुधी उंधोवायु वहे छे एटले जीवने कर्त्ता मानीये छैये. अने ज्ञाननो उद्योत थवाथी सम्यक्त्वनी एवी शुद्धता थई के तेथी कर्म पिंडनो अकर्त्ता जीव सही थयो छे, एम जाणवुं ॥६२॥ जे वस्तु जेवीरीते छे ते साथे आनके० बीजा स्वरूप वाली वस्तु मलती नथी; एकमेक थती नथी; एथी जीव कर्मनो अकर्त्ता छे. ए अर्थ अनुभव प्रमाणथी समजाय छे ॥ ६३ ॥

हवे मूढ जीव कर्मनो कर्त्ता मानी लेय छे ते कहे छेः— अथ मूढकर्त्तायहकथनंः—

॥ चोपाईः ॥— जेदुरमती विकल अज्ञानी; जिन्हि सुरीति पररीति न जानी; मा

था मगन भरमके भरता; ते जिव भाव करमके करता ॥ ६४ ॥ दोहराः॥—जे मिथ्या मति तिमरसों, लखे न जीव अजीव; तेई भावित करमके, करता होइ सदीव।६५॥ जे अशुद्ध परिनति धरे, करे अहं परमान; ते अशुद्ध परिनाम के, करता होइ अजान॥

अर्थः—जे जीव दुष्ट बुद्धिवडे विकल छे, अज्ञानी छे, जे पोतानी ने पारकी रीत जाणता नथी, माया जालमां मग्न छे, भ्रमनाभरता के० धणी छे, ते जीव भाव कर्मना करनारा छे ॥ ६४ ॥ जे जीव मिथ्यामति अंधकारथी जीव अजीवने भिन्न पणे जाणता नथी, ते जीव सदाकाल भावित कर्मना कर्त्ता छे, एटले पोतपोताना कर्मनो जे स्वभाव तेनेज भावित कर्म कहिये ॥ ६५ ॥ जे जीव अशुद्ध परिणतिने धरेछे, सर्व क्रियामां अहंकार बुद्धिथी अहं कर्त्ता एवुं प्रमाण करछे, ते जीव अजाण थका अशुद्ध परिणामना कर्त्ता थायछे ॥ ६६ ॥

अथ शिष्य प्रश्नः—

॥ दोहराः ॥— शिष्य कहै प्रभु तुम्ह कह्यो, दुविध करमको रूप; दर्व कर्म पुदगल मई, भाव कर्म चिद्रूप ॥ ६७ ॥ करता दरबित करमको, जीव न होइ त्रिकाल; अब इह भावित करम तुम, कहो कौनकी चाल ॥ ६८ ॥ करता याको कौन है, कौन करै फल भोग; के पुदगल के आतमा, के दुहुको संयोग ॥ ६९ ॥

अर्थः— हवे शिष्य प्रश्न पुछे छे के, हे प्रभु! तमे कह्युं छे के,कर्मनुं स्वरूप बे प्रकारनुं छे; एकतो पुद्गलमय ते पुद्गल पिंडरूप द्रव्य कर्म छे, अने बीजुं भाव कर्म छे ते चिद्रूप के० चेतनाविकार रूप छेः ॥ ६७ ॥ वली स्वामी तमे एवुं कह्युं के द्रव्य कर्मनो करनार जीव त्रणे कालमां नथी, त्यारे भावित कर्म तमे कोनी चाल कहो छो? ॥ ६८ ॥ ए भावित कर्मनो कर्त्ता कोण छे, ने एना कर्म फलनो भोक्ता कोण छे? पुद्गल कर्त्ता भोक्ताछे? के आत्मा कर्त्ता, भोक्ता छे? किंवा पुद्गल अने आत्मा ए बेहुनो संयोग कर्त्ता भोक्ता छे? ॥ ६९ ॥

हवे आ प्रश्ननो गुरु उत्तर आपेछेः— अथ गुरु उत्तर कथनंः—

॥ दोहराः ॥— क्रिया एक करता जुगल, यों न जिनागम मांहि; अथवा करनी औरकी, और करै यों नाहि ॥ ७० ॥ करे और फल भोगवे, और बने नहि एम; जो करतासो भोगता, यहै यथावत जेम ॥ ७१ ॥ भाव कर्म कर्त्तव्यता, स्वयं सिद्ध नहि होइ; जो जगकी करनी करे, जग वासी जिय सोइ ॥ ७२ ॥ जिय करता जिय भोगता, भाव कर्म जिय चालि; पुदगल करे न भोगवे, दुविधा मिथ्या जालि ॥ ७३ ॥ तातें भावित करमकों, करे मिथ्याती जीव; सुख दुख आपद संपदा, भुंजे सहजसदीव ॥ ७४ ॥

अर्थः– क्रिया करणी एक होय अने तेना करनारा जुगल केᵒ बे एवी वात जिनेश्वरना आगममां नथी कही, तेम पुद्गल अने जीव ए बेउ एक क्रिया करे नही अथवा बीजानी क्रिया छे अने करनार वली बीजोज छे, एवुं पण छे नही, एटले पुद्गलनी क्रिया जीव न करे अने जीवनी क्रिया पुद्गल न करे ॥ ३० ॥ ए रीते करे एक अने तेनुं फल भोगवनार बीजोज होय एवुं बने नही, एवुं जिनेश्वरना आगममां नथी कह्युं, एटले पुद्गलनी क्रियानुं फल जीव भोगवे नही; केमके जे कर्त्ता तेहिज भोक्ता; जे कर्म करे तेज फल भोगवे ए वात केहेवत प्रमाणे खरी छे. ॥३१॥

भाव कर्मनी कर्त्तव्यता केᵒ क्रिया तेतो स्वयं सिद्ध न थाय; एटले भाव कर्म पोतानी मेले सिद्ध नही थाय. तेथी एवुं ठरे छे के जे जगत्नी क्रिया करे ते भाव कर्मनो कर्त्ता छे; एटले गमनागमन क्रिया करे तेज भाव कर्मनो कर्त्ता जगत् वासी जीव छे ॥ ३२ ॥ जीव ज कर्त्ता अने जीवज भोक्ता छे, जीवनी चल विचलताथी भावे कर्म उपजे छे, एथी भावित कर्म जीवनी चाल छे. ए भावित कर्मने पुद्गल करे नही, तेम भोगवे पण नही, एमां जे अद्वैत मतवाला द्विधा राखे छे; ते मिथ्या जाल छे ॥ ३३ ॥ तेमाटे जे मिथ्यात्वी जीव छे, ते भावित कर्मने करे छे. तेणे करी सुख दुःख आपदा संपदा सदा सहजे भोगवे छे ॥ ३४ ॥

हवे एकांत वादिसांख्यमतना वचननुं वर्णन करे छेः–अथ एकांत वादी वर्णनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कोई मूढ विकल एकंत पछ गहे कहे आतमा अकरतार पूरन परम है; तिन्हसो जु कोउकहे जीउ करता है तासो, फेरी कहे करमको करता करम है; ऐसे मिथ्यामगन मिथ्याती ब्रह्म घाती जीव, जिन्हके हिये अनादि मोहको भरम है; तिन्हको मिथ्यात दूरि करिबेको कहे गुरु स्यादवाद परवान आतम धरम है ॥ ३५ ॥

अर्थः– कोई मोह मूढ जीव ज्ञानवडे विकल एकांत पक्ष ग्रहीने एम कहे छे के, आत्मा अकर्त्ता छे, परम पूर्ण छे, ते एकांत वादीने कोई एवुं कहे के, आत्मा कर्त्ता छे, तेने सांख्यमति प्रमुख एकांत वादी कहे छे के, कर्मनो कर्त्ता कर्मज छे. एवा मिथ्यात्वमां मग्न मिथ्यात्व जीव ब्रह्म घाती छे. तेमना हैयामां अनादि कालथी मोह कर्म लाग्युं रहे छे, ते मिथ्यात्वी जीवनुं मिथ्यात दूर करवाने स्याद्वाद रूप जे आत्म धर्म छे, ते धर्मज बधी रीत प्रमाण करी कहे छे ॥ ३५ ॥

हवे जेम स्याद्वाद वस्तु स्वरूप छे तेम कहे छेः–अथ स्याद्वाद कथनंः–

॥ दोहाः ॥– चेतन करता भोगता, मिथ्या मगन अजान; नहि करता नहि भोगता, निहचे सम्यकवान ॥ ३६ ॥ सवैया इकतीसा॥ः– जैसे सांख्यमति कहे अलख

अकरता है सर्वथा प्रकार करता न होइ कब ही; तैसे जिनमति गुरु मुख एक पक्ष सुनि, याही जांति माने सो एकंत तजो अबही, जोलों डुरमति तौलो करमको करता है, सुमती सदा अकरतार कह्यो सब ही; जाके घट ज्ञायक सुजाव जग्यो जब ही सो, सोतो जग जालसो निरालो जयो तबही ॥ ७७ ॥

अर्थः– मिथ्यात्वमां मग्न अजाण थको चेतन कर्त्ता छे. अने जोगता पण छे अने समकिति जीव निश्चयथी कर्त्ता पण नथी अने जोक्ता पण नथी ॥ ७६ ॥

जेम सांख्यमति पोताना मतमां एवी प्ररूपणा करेछे के, जे अलक्षरूप छे ते सर्वथा अकर्त्ता छे, पण क्यारे कर्त्ता थतो नथी, अने सत्व रज तम गुण प्रकृति कर्त्ता छे, एरीते जे सांख्यमतिवाला कहे छे, तेम कोई जिनमती पण कोई गुरुना मुखथी निश्चय नयनो एक पक्ष सांजलीने एमज माने, एटले जीवने अकर्त्ता माने छे. पण श्री जिनेश्वरना मतमां स्याद्वाद पक्ष छे. ते एवो ठराव छे के ज्यां सुधी डुष्ट बुद्धि मिथ्यामती अहं बुद्धिमां छे, त्यां सुधी जीव कर्मनो कर्त्ता छे; अने सुमति आवेथी सदा अकर्त्ता छे, जेवो छे तेवोज अकर्त्ता कह्यो, जेना घटमां पोतानो ज्ञायक स्वजाव ज्यारे जाग्यो ते वखतथीज ते जगजालथी निरालो थइ, तेणे अर्थ पुद्गल परावर्तमां संसार लावी मुक्यो ॥ ७७ ॥

हवे एकांत वादी बौधमतीनि बुद्धिनुं वर्णन करेछेः–अथ बौध मति वर्णनं

॥ दोहरा ॥– बौध छिनय वादी कहे, छिनु जंगुर तनुमांहि; प्रथम समे जो जीव है, डुतिय समे सो नांहि ॥ ७० ॥ ताते मेरे मतविषे, करे करमजो कोइ; सो न जोगवे सरवथा, और जोगता होइ ॥ ७ए ॥

अर्थः–बौध क्षणिक वादी छे, ते एवुं कहे छे के शरीरमां रेहेनारो जे पदार्थ छे ते क्षणजंगुर छे एटले प्रथम समयमां जे जीव पदार्थ शरीरने विषे छे, ते बीजा समयमां न पामिये, एथी सर्व क्षणजंगुर छे ॥ ७० ॥ वली बौध कहे छे के मारा मनमां एवी श्रद्धा ठरी छे, के जे कोई कर्म करेछे, ते तो कर्मना फलनो जोक्ता नथी. क्षणजंगुर पणाने लीधे बीजोज जोक्ता थाय छे ॥ ७ए ॥

हवे एकांत वादी बौधमतीना खंडननो उपदेश करेछेः–अथ बौध मतखंडन उपदेशः–

॥ दोहरा ॥–यह एकंत मिथ्यात पष, डूरि करनके काज; चिद विलास अविचल कथा, जाषै श्री जिनराज ॥ ๒० ॥ बालापन काहू पुरुष देख्यो पुर कइ कोइ; तरुन जये फिरिके लख्यो, कहे नगर यह सोइ. ॥ ๒१ ॥ जो डुहु पनमे एक थो, तो तिन्हि सुमिरन कीय; और पुरुषको अनुजव्यो, और न जाने जीय. ॥๒२॥ जबयह वचन प्रगट सुन्यो, सुन्यो जैनमत शुद्ध; तब इकांत वादी पुरुष, जैन जयो प्रति बुद्ध ॥๒३॥

अर्थः– ए जे एकांत क्षणभंगुरपणुं ते मिथ्यात्व पक्ष छे, तेने दूर करवाने चिद्विलास अविचल कथा के० जीवना अचल पदनी वात सामान्य केवलीना राजा श्री जिनेश्वर देव कहेछे. ॥ ७० ॥ कोईक पुरुषे बाल्यावस्थामां एक नगर दीठुं होय ने ते पछी ज्यारे जुवानीमां आव्यो त्यारे फरीथी तेज नगरने तेणे जोयुं त्यारे तेने रेहेतां रेहेतां स्मृति आवी के, आ नगर तो में बालपणामां जोयुं हतुं तेज छे. ॥७१॥ हवे अही जीवना अचलपणानो संभव देखाडेछेः–के, बेहु कालमां जो ते एकज हतो ते वारे ते पुरुषे बालपणामां ते नगर जोयुं हतुं त्यारे तेने जुवानीमां तेनुं स्मरण थयुं ए वात सत्य छे. एटले बने वखतमां नगर तेज खरुं छे, तेम एक पुरुषनो अनुभव के० भोगवेलुं कार्य तेने बीजो पुरुष जाणी शके नही. ॥ ७२ ॥ ज्यारे आ वात प्रगट सांभली अने जैनना शुद्ध मतनी वात सांभली त्यारे एकांतवादी पुरुषे प्रतिबोध पामीने जैनमत ग्रहण कीधो अने बौधमतने छोडी दीधो. ॥ ७३ ॥

हवे बौधमतीना क्षणभंगुरपणामां सद्दहणा केम थई ते कहे छेः–

अथ बौध मतीकी सद्दहना कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– एक परजाय एक समैमे विनसि जाइ, दूजी परजाय दूजै समै उपजति है; ताकी छल पकरिके बोध कहै समै समै, नवो जीव उपजे पुरातनकी षति है; ताते मानै करमको करता है और जीव, भोगता है और वाके हिय ऐसी मति है; परजै प्रवानको सरवथा दरब जाने, ऐसे दुरबुद्धिकों अवश्य दुरगति है ॥७४॥

अर्थः– हरकोई द्रव्यनो एक समयमां जे एक पर्याय छे, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावने लीधे अवस्था भेद छे, तेतो पर्याय ते समदमांज विनाश पामे छे, अने बीजा समयमां बीजो पर्याय उपजे छे, एवी जैननी वाणी छे. ते वातनेज बौध मतीवाला निश्चलपणे पकडी राखीने कहे छे के, समय समय नवो नवो जीव उपजे छे, अने पाछला जुना जीवनी हाणी थायछे; वली आम मानेछे के कर्मनो कर्त्ता कोई बीजो जीवछे अने कर्मनो भोक्ता कोई बीजोज जीव छे. एम बौधमति कहेछे; द्रव्यना पर्यायतो समयमां फरे छे, तेने बौधमति पर्याय प्रमाणने सर्वथा प्रकारे द्रव्यज जाणे छे. एवा दुर्बुद्धिने अवश्य दुर्गतिज प्राप्त थाय छे. ॥ ७४ ॥

हवे दुर्बुद्धि अने दुर्गतिनु लक्षण कहे छेः–अथ दुर्गति स्थिति लक्षणः–

॥ दोहराः ॥–दुर्बुद्धी मिथ्यामती, दुर्गति मिथ्या चाल; गहि एकंत दुर्बुद्धिसों, मुगति न होइ त्रिकाल ॥ ७५ ॥ कहै अनातमकी कथा, चहै न आतम शुद्धि, रहै अध्यातमसों विमुख, दुराराधि दुर्बुद्धि ॥ ७६ ॥सवैया इकतीसाः ॥–कायासें विचारि

प्रीति मायाहिमे हारि जीति, लिये हठरीति जैसे चरिलकी लकरी; चूंगुलके जोर जैसे गोह गहि रहै जूमि,त्योंहि पाई गाडेपेंन ठोडेटेक पकरी; मोहकी मरोरसों भर-मको न ठार पावे, धावे चिहु ओर ज्यों वढावे जाल मकरी; ऐसी दुर्बुद्धि जूलि जूठके ऊरोखे जूली, फूली फिरे ममता जंजीरनिसों जकरी. ॥ ७७ ॥ बात सुनि चौक ठठे वातहिसों चौकी ठठे, बातसों नरम होइ बातहीं अकरी; निंदाकरे साधुकी प्रशंसा करे हिंसककी, साता माने प्रजुता असाता माने फकरी; मोख न सुयाइ दोख देखे तहां पेठि जाई, कालसो डराई जैसे नाहरसों बकरी; एसी डुरबुद्धि जूलो जूठके ऊरोखे जूली, फुली फिरे ममता जंजीरनिसों जकरी ॥७७॥

अर्थः– मिथ्यामतिने डुर्बुद्धि कहिये, अने मिथ्या चालने डुर्गति कहिये, जे डुष्ट बुद्धि ठे, ते एकांत मतीने ग्रहणेकरी रहेठे, तेने त्रणे कालमां मुक्ति न थाय. ॥७५॥ हवे डुर्बुद्धिनी व्यवस्था कहेठेः–जे आत्माथी जिन्न होय ते अनात्मा कहिये. तेअ नात्मानी कथा करे, आत्मानी शुद्धता न जाणे, अने जे आत्माने आश्रयी विचार ठे तेने अध्यात्म कहिये, ते तेनाथी डुराराध्य के० डुखे समजायो जाय; तेनाथी डुर्बुद्धि जीव विमुख रहे ठे ॥ ७६ ॥ डुर्बुद्धिनो विचार कहेठेः–कायासाथे प्रीति विचारे; हार जीत करी मायामां गही रहे; हठ पकडी रहे; जेम हारल पक्षी पोताना पगमां लाकडी पकडीज राखे ठोडे नही. वली बीजो दृष्टांत एक ठे; जेम कोई एक चोर चुंगली बंध देई करी गोहने मेहल अथवा हवेली उपर चढावे ठे, ते बंधना जोरथी गोह जुमीने पकडी राखे, ने त्यां पोताना पग घटी राखे, पण जे टेक पकडी ते मूके नही, तेम मोह कर्मनी मरोड लागी तेथी ज्रमनो ठेर पामे नही, एटले ज्रम ठोडे नही. जेम मकडी जाल वधारती पसारती चारे तरफ दोडे ठे, तेम चारे तरफ दोडती फरे, ए रीते डुर्बुद्धिये जूली जुठने ऊरुखे ऊुली रहेठे, ने ममतारूप डु र्बुद्धिना जंजीरनी बेडीने जकडी रह्यो ठे, ॥ ७७ ॥

वली एवाने कोई अध्यात्मनी वात कहे त्यारे चौंकी ठठे, ने चों चों करी ठठे,कदा ग्रह करे अने पोताना मनने रुचती वातथी नरम थाय ने मनमानती वात न थाय तो प्रकृति अकारी करे, मोक्षमार्गना साधकनी निंदा करे, अने जे हिंसक अधर्म कहेठे, तेनी प्रशंसा करे, पोतानी मोटाईने साता सुख समजे असाताने फकीरी जाणे मोक्षनी वात सुहाय नही, ज्यां कोई दोष जुए त्यां चतुराईनुं अजिमान बतावे, अने मृत्युथी एवो डरे के, जेम नाहीरथी बकरी डरे, ए रीते डरतो रहे एम डुर्बुद्धि जीव जूल्यो फरेठे, ने जूठने ऊरुखे ऊुलतो ममतारूप बेडीमां बंधाई रह्यो ठे. ॥ ७७ ॥

हवे एकांत पक्षीना मतनी स्थापनाउपर अनेकांत स्याद्वादी मतनी प्रशंसा करेछेः—

अथ अनेकांत श्लाघा कथनः—

॥ कवित्त छंदः ॥— केई कहे जीव छिन जंगुर, केई कहे करम करतार; केई कर्म रहित नित जंपहि, नय अनंत नाना परकार; जे एकंत गहे ते मूरख, पंडित अने कांत पखधार; जैसे जिन्न जिन्न मुगतागन, गुंनसों गहत कहावे हार. ॥ ८९ ॥

॥ दोहराः ॥— जथा सूतसंग्रहविना, मुक्तमाल नहि होइ; तथा स्याद्वादी विना, मोख न सधे कोई. ॥ ९० ॥

अर्थः— कोई बौध मती जेवा तो जीवने क्षणजंगुर कहे छे; कोई मिमांसक सर खा कर्मने कर्त्ता मानेछे; कोई सांख्यमती सरखा तो सदा जीवने कर्मरहित कहे छे. एरीते अनंत नय नाना प्रकार कहे छे, एमांथी जे एकांत पक्षज ग्रही रहेछे ते तो मूर्ख छे अने पंडित जन जे छे, ते अनेकांत पक्ष ग्रहेछे, जेम एक मालामां मोतीनो समुदाय आपणी आपणी सत्तामां सउ जुदा जुदा छे पण ते सुतरमां परोव्याथी स वेतुं एक हार नाम पडे छे, ॥ ८९ ॥ तेवो अनेकांत मत छे, केम के, सूतरना संगवि ना मोतीनी माला बने नही, तेम स्याद्वादमत धारण कीधा शिवाय मोक्षनो साधन हार थाय नही. ॥ ९० ॥

हवे मत जेदनुं कारण पांच नय छे तेनुं वर्णन करेछेः— अथ पंच नय वर्णनंः—

॥ दोहराः ॥— पद सुजाउ पूरवउदे, निहचे उद्दिम काल; पक्षपात मिथ्यात पथ, सरवंगी सिव चाल. ॥ ९१ ॥

अर्थः— कोई पद वस्तु स्वजाव माने, कोई पूर्व कर्मनो उदय माने, कोई निश्चय माने, कोई उद्यम माने, अने कोई काल माने. एमां पक्षपात करी जे एकनेज माने ते मिथ्यात्व मार्ग कहेवाय. ॥ ९१ ॥

हवे जुदा जुदा मतनी व्यवस्था कहे छेः— अथ मतव्यवस्था कथनंः—

॥ सवैया इकत्तीसाः ॥— एक जीव वस्तुके अनेक रूप गुन नाम, निरजोग शुद्ध पर जोगसों अशुद्ध है; वेद पाठी ब्रह्म कहे मीमांसक कर्म कहे सिवमति शिव कहे बौध कहे बुद्ध है; जैनी कहे जिन, न्याय वादी करतार कहे, छहों दरसनमें वचनको वि रुद्ध है; वस्तुको सरूप पहिचाने सोइ परवीन, वचनके जेद जेद माने सोई शुद्ध है ॥

अर्थः—जीव वस्तु एक अने तेना गुण अनेक छे, रूप अनेक छे, अने नाम अनेक छे, निरजोग छे एटले परसंयोग विना पोताना स्वजावमां रह्यो शुद्ध छे, अने परना संयोगथी अशुद्ध छे. वली वेद पाठी प्रजावे करी एने ब्रह्म कहेछे. मिमांसक जै मिनीय एने कर्म कहेछे; शिवमती एटले वैशेषिक एने शिव कहेछे, बौधमती एने

बुद्ध कहेछे, अने जैनी एने जिन कहेछे, न्यायवादी नैयायकादिक एने क[illegible]र्त्ता कहेछे, एरीते छए दर्शनमां शुद्ध जीवने कहेवामां एकएकथी वचननो विरोध [illegible]छे. ए छए दर्शनमां जे वस्तुनुं स्वरूप ओळखे तेज प्रवीण कहेवाय, अने वचनना भेद प्रमाणे सम भिरूढ नयनिमित्ते वस्तुमां भेद प्रवीण माने तेज शुद्ध वात छे ॥ ९२ ॥

हवे छए दर्शननामत स्थापन करे छेः– अथ, मतस्थापना कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–वेदपाठी ब्रह्म मानै निहचै स्वरूप गहै, मीमांसक कर्म मानै उदैमें रहतु है; बौधमति बुद्ध मानै सूछम सुभाउ साधै, शिवमती शिवरूप कालकी हरतु है; न्याय ग्रंथके पढैया थापे [illegible] [illegible]; ऐसी इरबुद्धि [illegible] पांचो [illegible], फुली [illegible], उदित उदार उर आनद लहतु है; [illegible] तेतो पोषे एकएक अंग, जैनी जिनपंथी सरबंगी नै गहतु है ॥ ९३ ॥

अर्थः–वेद पाठी के० वेदांती जीव वस्तुने ब्रह्म मानीने निश्चय स्वरूपने ग्रहेछे. एटले एक अद्वैत मत धारेछे. मिमांसक के० यज्ञना करनार जीवने कर्मरूप मानेछे, तेथी उदयरूप थया जे संस्कार तेनुं ग्रहण करेछे. बौधमती जीवने बुद्धमानीने क्षणभंगुर पणाथी सूक्ष्म स्वभाव साधेछे, तेथी वस्तुना स्वभावनेज कर्त्ता मानेछे. शिवमती जे वैशेषिक ते जीवने कालरूप मानेछे, अने शिवने कर्त्ता मानेछे. न्याय ग्रंथना भणनारा प्रमाणादिक सोल पदार्थने मानेछे, शुद्ध जीवनेज कर्त्ता मानीने उद्यमनी उदीरणामां चित्तने आनंद करी मग्न रहेछे, एम ए पांचे दर्शन वस्तु स्वभावादिक पांच नयना एक एक अंग पोषेछे, एटले एकांत पक्ष ग्रहेछे. अने जे जैन मार्ग केहेवाय छे, तेतो सर्वांगी सर्व नय ग्रहण करेछे ॥ ९३ ॥

हवे जे मत स्थापनामां जुदी जुदी बुद्धि कही ते सर्व एक छे, एवुं जणावेछेः–

अथ मत स्थापना एकत्वी कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– निहचै अभेद अंग उदै गुनकी तरंग, उद्यमकी रीति लिये उद्धता सकति है; परजायरूपको प्रवान सूछम सुभाउ, कालकीसी ढाल परिनाम चक्र गति है; याही भांति आतम दरबके अनेक अंग, एक माने एककों न माने सो कुमति है; टेक डारि एकमे अनेक खोजे सो सुबुद्धि, खोजी जीवे वादी मरे साची कहवति है ॥ ९४ ॥

अर्थः–सर्व जीवमां लक्षण भेद नथी एवुं निश्चय अंग ते साचो तरतम योगे गुणना तरंग उठी रह्या छे तेथी उदय अंग साचो छे, अने जीवनी उद्धत शक्ति छे. त्यां ते प्रवर्त्ते छे, तेथी उद्यम अंगवडे कर्त्तापणुं साचुं छे, अने पर्याय क्षण क्षणमा जुदा जुदा छे, तेनारूपतुं प्रमाण सूक्ष्म छे. तेथी बौध सूक्ष्म स्वभावने साधेछे, ते पण सांचु अने परिणामनी गति छे, ते फरता चक्रनी शक्ति छे, ते काल द्रव्यनी ढाल छे तेथी

ईहां कालने कर्त्ता कह्यो ते पण साचो छे, एरीते आत्मद्रव्यमां अनेक अंग पामीये पण एमांथी एकज अंग माने अथवा एक अंग न माने तेनुं नाम कुमति छे, जे एकांत पक्ष छोडीने एक वस्तुमां अनेक अंग खोजे तेनुं नाम सुबुद्धि कहीए जेम के खोजी जीवे ने वादी मरे ए केहेवत छे, ते साची छे ॥ ए४ ॥

हवे स्याद्वादनुं रूप कहेछेः–अथ स्याद्वाद स्वरूप कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– एकमें अनेक है अनेकहीमें एक है सु, एक न अनेक कछु कह्यो न परतु है; करता अकरता है जोगता अजोगता है उपजे न उपजिति मूए न मरतु है; बोलत विचारत न बोले न विचारे कछु, जेषको न जाजन पै जेखसो धरतु है; ऐसो प्रजु चेतन अचेतनकी संगतीसो उलट पलट नट बाजीसी करतु है ॥ एए ॥

अर्थः– एक द्रव्यमां अनेक पर्याय छे, अने अनेक पर्यायमां एक द्रव्य छे, एथी हर कोई वस्तु एक छे, अथवा अनेकज छे, एम कांई केहेवातुं नथी. व्यवहारमां कर्त्ता छे, निश्चयमां अकर्त्ता छे, व्हवहारथी जोक्ता छे, निश्चयथी अजोक्ता छे, व्यवहारथी उपजे छे, निश्चयथी उत्पत्ति नथी, व्यवहारथी मुउं, ने निश्चयथी नथी मुउं, व्यवहारथी बोलेछे, विचारेछे, ने निश्चयनयथी कांइ बोले पण नही, ने विचारे पण नही, अविकल्पी छे, निश्चयथी जेषनुं जाजन के० स्थानक नथी, व्यवहारथी जेखनो धरनार छे. एवो चेतनवंत जे ईश्वर छे, ते पौजलिक अचेतननि संगतीथी उलट पालट थई रह्योछे, जाणे नटनी बाजीनो खेल करतो होय नी तेम खेल करेछे. ॥ एए ॥

अथ अनुजव व्यवस्था कथनंः–

॥ दोहरा ॥– नट बाजी विकलप दसा, नाही अनुजौ जोग; केवल अनुजौ करनको, निरविकलप उपयोग. ॥ ए६ ॥

अर्थः– अनुजवमां आत्मद्रव्यनी जे अवस्था पामिये ते कहेछे. पूर्वे कही जे नट सरखी जीवनी उलट पालट बाजी छे ते तो विकल्प दशा छे. ए दशा अनुजवमां योग्य नथी, निःकेवल अनुजव करवाने निर्विकल्प उपयोग आपवो तेज सत्य छे. ॥ ए६ ॥

हवे अनुजवमां निर्विकल्प उपयोग आपवो तेनुं दृष्टांत कहेछेः–

अथ अनुजौ दृष्टांत कथनंः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–जेसे काहु चतुर संवारी है मुगतमाल, मालाकी क्रियामें नाना जांतिको विज्ञान है; क्रियाको विकलप न देखे पहिरन वालो, मोतीनकी शोजमें मगन सुखवान है; तेसे न करे न जुजे अथवा करे सु जुजे, उर करे उर जुजे

सब नै प्रवान है; यद्यपि तथापि वीकलप विधि त्याग जोग, निरविकलप अनुभौ अमृत पान है. ॥ ८७ ॥

अर्थः—जेम कोई चतुर पुरुषे मोतीनी माला संभारीने बनावी ने तेमां भात भातनुं विज्ञान छे, पण ते मालानो पहेरनारो तेनी क्रियानो विकल्प जोतो नथी, पण मोतीनी शोभाथी मगन ने सुखवान थई रहे छे. जेम मोतीनी मालामां अनेक विज्ञान छे, तेम अही पण अनेक विकल्प छे, आत्मा कर्त्ता नथी, भोक्ता नथी, अथवा कर्त्ता छे, भोक्ता छे, अथवा राग द्वेषादिक करनारा बीजा छे, अने भोगवनारा बीजा छे; ए सर्व नय प्रमाण छे. यद्यपि ए सर्व नय प्रमाण छे, तथापि ए सर्व विकल्प विधि त्यागवा योग्य छे. केमके अनुभव जे छे तेतो निर्विकल्प छे अने अमृतपान समान छे, उपादेय छे. ॥ ८७ ॥

हवे स्याद्वादी आत्माने कर्त्ता जे नयथी मानेछे ते कहेछेः—अथ कर्त्ताकथनः—

॥ दोहराः ॥— दरब करम करता अलख, यहु विवहार कहाउ; निहचे जोजे सो दरब, तेसो ताको भाउ. ॥ ८८ ॥

अर्थः—पुद्गल द्रव्यरूप कर्मनो कर्त्ता अलख पुरुष आत्मा छे, ए व्यवहारमां केहेवाई शके छे, निश्चय नयमां तो ए वात छे के जेवुं जे द्रव्य होय तेवुं तेनुं भाव स्वरूप होय, एथी पुद्गल द्रव्यनी क्रिया पुद्गलवडेज बनेछे. ॥ ८८ ॥

हवे जेवुं विपरीतपणुं बुद्धिमां भासेछे, तेवुं कहेछेः—अथ विपरीत बुद्धिकथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— ज्ञानको सहज ज्ञेयाकाररूप परिनमे, यद्यपि तथापि ज्ञान ज्ञान रूप कह्यो है; ज्ञेयज्ञेय रूप यों अनादिहीकी मरजाद, काहु वस्तु काहुको सुभाउ नहि गह्यो है; एते परि कोउ मिथ्या मति कहे ज्ञेयाकार प्रति भासनिसों ज्ञान अशुद्ध व्है रह्यो है; याहि दुरबुद्धिसों विकल भयो डोलत है, समुझे न धरम यों भर्ममाहि वह्यो है ॥ ८९ ॥

अर्थः—ज्ञानने ए सहज स्वभाव छे के, घट पट प्रमुख ज्ञेय के० जाणवाजोग जे पदार्थ छे, तेनो जे आकार छे, तेजरूपे आत्मानुं ज्ञान परिणमे, यद्यपि ए वात प्रमाण छे तो पण ज्ञान जे छे, ते ज्ञानरूपज कहेवाय पण ज्ञेयरूप न कहेवाय अने जे ज्ञेय पदार्थ छे ते ज्ञानमां परिणम्यो छे तोपण ज्ञेयरूपज केहेवाय, पण ज्ञानरूप न केहेवाय एवी अनादि कालनी मर्यादा छे, कोई वस्तु बीजी वस्तुनो स्वभाव ग्रहण करे नही, तेम जुदो जुदो स्वभावपण धारण करे नही, एवी मर्यादाबंध वातछे, तेम छतां कोई वैशेषिक प्रमुख मिथ्यामति कहेछे, के ज्ञेय पदार्थना आकार प्रति भासे छे, तेथी ज्ञान पदार्थ अशुद्ध थई रह्यो छे. ज्यारे ए अशुद्धपणुं मटी जशे तारे मुक्तिथशे, एज दुष्ट

बुद्धिथी मिथ्यात्व मोहनो विकल्प थयो, तेथी अंहि तहिं विकल थईने डोले छे, अने धर्मके० वस्तुनो स्वभाव जाणतो नथी. तेथी भ्रममां वह्यो फिरे छे. ॥ ९९ ॥

हवे सर्व पदार्थ पोताना स्वभावमां व्यापीरह्याछे ते कहेछेः–अथव्यापकताकथनः–

॥ चोपाईः ॥–सकल वस्तु जगमें असहाई, वस्तु वस्तुसों मिले न काई; जीव वस्तु जाने जग जेती, सोऊ भिन्न रहे सबसेती ॥ ४०० ॥

अर्थः–जगत्नेविषे सर्व भाव असहायपणे वर्त्ते छे. कोई कोईनो सहाय कारी नथी, एज अर्थ प्रगट पणे कहे छे, के एक वस्तु बीजी विलक्षण वस्तु साथे मळे नही. जगत्मां जेटली वस्तु छे, तेटलीने जीव जाणे छे. एटले सर्व ज्ञेय वस्तु जीवना ज्ञानमां परिणमे छे, तोपण जीव सर्व वस्तुथी जुदोज रहे छे, एम पोतपोतानां जुदां लक्षण छे तेथी जुदां रहेछे ॥ ४०० ॥

हवे व्यवहारनी केहेवत देखाडेछेः–अथ व्यवहार कथनंः–

॥ दोहराः ॥– करम करै फल भोगवै, जीव अज्ञानी कोइ; यह कथनी व्यवहार की वस्तु स्वरूप न होइ. ॥ ४०१ ॥

अर्थः–कोई अज्ञानी जीव छे,ते कर्मने करेछे अने तेनुं फल पण भोगवेछे, ए केहेवत व्यवहारमां छे. पण जेवुं वस्तुनुं स्वरूप छे, तेवी केहेवत नथी ॥ ४०१ ॥

हवे व्यवहारने प्रमाण करे एवी विपरीत बुद्धिनुं वर्णन करे छेः–

अथ विपरीत बुद्धि वर्ननंः–

॥ कवित्त छंदः–॥ ज्ञेआकार ज्ञानकी परिनति, पैं वह ज्ञान ज्ञेय नहि होइ; ज्ञेय रूप खट दरव भिन्न पद, ज्ञानरूप आतम पदसोइ; जाने भेद भाउ सुविचछन गुन लछन सम्यग् दृग जोइ; मूरख कहे ज्ञान महि आकृति, प्रगट कलंक लखे नहिकोइ॥२॥

अर्थः–जेवो ज्ञेय वस्तुनो आकार छे, तेवी ज्ञाननी परिणती छे. एटले ज्ञान घट पटादिक ज्ञेयना आकार परिणाम छे, पण ज्ञान छे ते ज्ञेय रूप न थाय. जगत्मां जे ज्ञेय वस्तु छे ते छ द्रव्य छे तेतो भिन्न पद के० जूदा जूदा स्वभावथी केहेवा योग्य छे, अने जे आत्मापणुं कहिये तेतो ज्ञानरूप छे एवो भावनो भेद छे, ते गुण लक्षण छे लखीने जे भलो विचक्षण अध्यात्मनो वेत्ता सम्यग् दृष्टी होय तेज जाणे. पण वैशेषिक मति जेवो मूर्ख होय ते ज्ञानमां आकार विकल्प जोईने कहे, अहो! आ ज्ञानमां आकार भासे छे तेतो प्रगट कलंक छे. तेने कोई केम लखे नही ? ॥ २ ॥

हवे मिथ्यामति जीव पोतानी मतिने दृढ करेछेः–अथ मिथ्यामति कथनः–

॥ चोपाईः ॥–निराकार जो ब्रह्म कहावे; सो साकार नाम क्यों पावे; ज्ञेयाका ज्ञान जबताई; पूरन ब्रह्म नहि तबतांई ॥ ३ ॥ ज्ञेयाकार ब्रह्म मल माने; नास करनको उ

दिम ठाने; वस्तु सुजाव मिटे नहि क्योंही; ताते षेद करे सठयोंही ॥ ४ ॥ दोहराः ॥ मूढ मरम जाने नही, गहे एकांत कुपक्ष; स्याद्वाद सरबंगमें, माने दक्ष प्रत्यक्ष॥५॥

अर्थः—ब्रह्मतो निराकारज छे, ते साकार नाम केम धारण करे, जो ब्रह्मने आकार मानीये तो साकार केवुं जोये, ते केम बने, ज्यांसुधी ज्ञेयनो आकार ज्ञानमां प्रति जासे छे, त्यांसुधी पूर्ण ब्रह्म न केहेवाय ॥ ३ ॥ ज्ञेय वस्तुनो जे आकार के० प्रति जासछे ते ब्रह्मने मलरूप माने छे, ते मलनो नाश करवाने उद्यम करे, जे वस्तुनो जेवो स्व जाव होय तेवोज रहे पण कदी मटे नही, तेथी मूर्खजे शठ लोकछे ते श्रमथो जूठो द्वेष करे छे ॥ ४ ॥ जे मूर्ख छे ते मर्मनी वातने न उलखे ने एकांत पक्ष जे जे कुपक्ष छे तेनेग्रहे अने जे डाह्यो पुरुष छे, ते स्याद्वाद मतना आश्रयथी सर्वांगमय प्रत्यक्ष पणे माने, एटले निराकार साकार सर्व नय माने ॥ ५ ॥

हवे स्याद्वादने ग्रहण करनार जेसम्यक्त्वी छे तेनी स्तुति करे छेः—अथसम्यक्त्व स्तुतिः—

॥ दोहराः ॥—शुद्ध दरब अनुजौ करे, शुद्ध दृष्टि घटमांहि; ताते सम्यग्वंत नर, सहज उछेदक नांहि ॥ ६ ॥

अर्थः—सम्यक्त्वीना हृदयमां जे अनुजव छे, तेज शुद्ध द्रव्यने शुद्ध करे छे. केमके, हृदयमां वस्तु स्वजाव जाणवाथी शुद्ध दृष्टि छे, तेथी जे सम्यक्त्ववंत पुरुष छे, ते स हज स्वजावनो उछेदक थतो नथी, एटले सहज जावनो उछेद मानतो नथी ॥ ६ ॥

हवे परवस्तुमां परद्रव्यनुं अव्यापक पणुं दृष्टांतवडे दृढ करेछेः—

अथ अव्यापक द्रव्य कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसे चंदकीरन प्रगटि जूमि सेत करे, जूमिसीत होति सदा जोतिसी रहती है; तैसे ज्ञान सकति प्रकासे हेय उपादेय, ज्ञेयाकार दीसे पै न ज्ञेयकों गहती है; शुद्ध वस्तु शुद्ध परजायरूप परिनमै, सत्ता परवान मांहि ढाहे न ढहती है; सोतो औररूप कबहो न होई सरब था, निहचे अनादि जिनवा नी यों कहती है ॥ ७ ॥

अर्थः—जेम शरद्पुनमनी रात्री समे चंद्रना किरण प्रकाश वडे पृथ्विने श्वेत रूप करेछे, पण ते चंद्रमानी ज्योति कइं पृथ्वी बनती नथी, सदा ज्योतिरूप रहेछे, तेम ज्ञान शक्ति एवी छे के जे हेय उपादेय वस्तुने प्रकाशे त्यारे ज्ञान, ज्ञेय वस्तुने आकारे देखायछे पण ज्ञेय वस्तुनुं स्वरूप ग्रहण करे नही. केमके, जे शुद्ध वस्तु छे ते शुद्ध पर्यायरूप पणेज परिणमे अने जेनी पोतानी सत्ताछे ते जेटलामां व-स्तुनुं सद्रूप पणुं छे, तेटला प्रमाण मांहे शुद्ध पर्यायनेज परिणमे छे, पण ए वस्तुनुं

स्वरूप ढांक्युं रहे नही, तेतो शुद्ध वस्तु कोईनी संगतीथी सर्व प्रकारे बीजे रूपे न थाय ए वात निश्चयमां छे, एवी अनादि कालनी जिनवाणी कहेछे ॥ ७ ॥

हवे वस्तुनुं यथार्थ स्वरूप कहे छेः—अथ यथा स्वरूप कथनः—

॥ सवैया तेईसाः ॥— राग विरोध उदे तबलों जबलों यह जीव मृषा मग धावे; ज्ञान जग्यो जब चेतनको तब कर्म दशा पररूप कहावे; कर्म विलेछि करे अनुभो तब मोह मिथ्यात प्रवेश न पावे; मोह गये उपजे सुख केवल सिद्ध भयो जगमांहि न आवे ॥ ८ ॥

अर्थः—ज्यांसुधी आ जीव मिथ्यात्व मार्गमां दोडे छे, त्यां सुधी राग द्वेषनो उदय छे, अने तेथी सत्य मार्गने पामतो नथी. ज्यारे शुद्ध चेतन वस्तुनुं ज्ञान जाग्युं त्यारे तो कर्म दशा जे छे ते पररूप जणाय, अने आत्मा तेथी जुदो जोवामां आवे. ज्यां चेतननो अनुभव छे त्यां सत्यार्थ पणे जाणवुं होय ते कर्मनुं विलक्षण पणुं करे. एटले भेद विज्ञानवडे भिन्न लक्षण पणे जाणे, अने त्यां मोहरूप मिथ्यात्व प्रवेश करी शके नही. मोह गयाथी सुख समाधिमां केवल ज्ञान प्रगटे अने त्यारे जीव सिद्ध थाय अने फरीथी जगत्ने विषे आवे नही ॥ ८ ॥

हवे जेम अनुक्रमे वस्तु स्वरूपने प्रगट पणे स्वभावने वधारे ते कहेछेः—

अथ अनुक्रम वस्तु स्वरूप वर्द्धमानता कथनंः—

॥ छपय छंदः ॥—जीव करम संयोग, सहज मिथ्यात रूप धर; राग दोष परिनत, प्रभाव जाने न आपापर; तम मिथ्यात्व मिटिगयो,भयो समकित उदोत ससि;राग दोष कछु वस्तु, नाहि छिनु माहि गये नसि; अनुभी अभ्यासि सुखराशी रमि, भयो निपुन तारन तरन, पूरन प्रकाशनिहचछि निरखी, बनारसी बंदत चरन ॥ ९ ॥

अर्थः—अनादि कालनो जीवने कर्म साथे संयोग छे. तेथी सहज संबंधे मिथ्यात्व स्थिति रूप धारी जीव छे, अने क्यारेक जीव रागमां परिणम्यो रहेछे, अने क्यारेक द्वेषनी परिणतिना प्रभावथी पोताने तथा परने जाणतो नथी. एवामां क्यारेक मिथ्या स्वरूप अंधकार मटी गयो ने समकितरूप चंद्रमानो प्रकाश थयो तेथी खबर पडीके रागद्वेष कंई वस्तु नथी, एटले भली वस्तु नथी, एम जाणी एना अनादरथी राग द्वेष क्षणमां नाश पाम्या अने ते पछी पोताना अनुभवनो अभ्यास कीधो, तेवारे तो सहज समाधिरूप सुखराशिमां रमी रह्यो. एरीते निपुण सर्व ज्ञानी, तरण तारण समर्थ प्रभु थयो. हवे ए पूर्ण प्रकाश अनंत काल लगी निश्चय थयो तेना ध्यानने निरखी बनारसीदास ते प्रभुना चरणने नित्य प्रते वंदेछे. ॥ ९ ॥

रागद्वेषना हेतुनुं शिष्य प्रश्न करछे. गुरु उत्तर आपेछेः—अथ प्रश्नोत्तर कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कोउ शिष्य कहे स्वामी राग दोष परिनाम ताको मूल प्रेरक कहहु तुम कोनहैं; पुग्गल करमजोग किधो इंद्रिनिको जोग; किधो धन किधो परिजन किधौं जोन है; गुरु कहे छहों दर्व अपने अपनेरूप, सबनिको सदा असहाई परीनोन है; कोउ दर्व काहु को न प्रेरक कदाचिताते, राग दोष मोह मृषामदिरा अचोन है ॥ १० ॥

अर्थः—कोइ शिष्य आचार्यने विनय पुर्वक पुछवा लाग्यो के अहो स्वामी, आत्माने राग द्वेष परिणाम उपजे छे. तेनो प्रेरक निश्चय पणे तमे कोने ठरावो छे? एटले आत्माने पौद्गलिक कर्मनो योग छे, तेज इहां हेतु छे, के पंचेंद्रियनो जोगहेतुछे के धन हेतु छे, के परिवार हेतु छे, अथवा मंदीर हेतु छे,? इत्यादिकोमांथी राग द्वेष परिणामनो हेतु कोण छे, ते कहो. गुरु कहे छे, हे! शिष्य, ए पुद्गल संबंध हेतु नथी, तेम द्रव्य इंद्रिय छे, तेतो पोतपोताने रूपे पोतपोतानी सत्तामां रहे छे, अने सर्व द्रव्योनुं परिणमन सदा असहाई छे, कोई कोईनुं सहाय करतुं नथी. तेथी कोई काले कोई द्रव्य कोईनुं प्रेरक एटले हेतु नथी, माटे राग द्वेष परिणामनो हेतु तो मिथ्यात्व मोहकर्मरूप मदिरानी अचौन के० उद्धतपणुं छे ॥ १० ॥

हवे कोई मूर्ख राग द्वेष परिणामनुं प्रेरक पुद्गलनुं बल छे एम कहेछे, तेने गुरु समजावे छेः— अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनंः—

॥ दोहराः ॥— कोऊ मूरख यों कहे, राग दोष परिनाम; पुद्गलकी जोरावरी, वरते आतम राम ॥ ११ ॥ ज्यों ज्यों पुग्गल बल करे, धरि धरि कर्मज भेष; राग दोषको परिनमन, त्यों त्यों होइ विशेष ॥ १२ ॥ इहविधि जो विपरीत पख, गहे सद्दहे कोई; सो नर राग विरोधसों, कबहू भिन्न न होइ ॥ १३ ॥ सुगुरु कहे जगमें रहे, पुग्गल संग सदीव; सहज शुद्ध परिनमनको, औसर लहे न जीव ॥ १४ ॥ ताते चिद्भावनविषे, समरथ चेतन राउ; राग विरोध मिथ्यातमें, सम्यकमेंसिव भाउ ॥ १५ ॥

अर्थः—कोई मूर्ख लोक एम कहेछे के, आत्मारामविषे जे राग द्वेष परिणाम छे, ते पुद्गलनी जोरावरीथी छे, एटले एज पुद्गलनुं जोर छे ॥ ११ ॥ जेम जेम कर्म भेख धारीने एटले कर्म वर्गनारूप धारीने पुद्गल द्रव्य आपणुं बल विस्तारेछे, तेम तेम रागद्वेषनुं परिणाम विशेषरूपे थाय छे, एम आत्मनेविषे देखाय छे, ए सांख्यमतिनुं केहेवुं छे ॥ १२ ॥ ए रीते जे सांख्यमतिवाला आवुं विपरीत ग्रहण करेछे, अने सद्दहेछे, ते पुरुष राग द्वेषथी एवी श्रद्धावडे पण कदी जुदो थाय नही ॥ १३ ॥ हवे सद्गुरु कहेछे, अरे! प्राणी! जगत्मां पुद्गलना संगमां जीव सदा रहेछे. अनादिथी ए पु

ज्ञलने जीवनुं संश्लेषपणुं छे, तेथी सहज शुद्ध परिणामवाळो जीव अवसर न पामे, एटले पोतानुं शुद्ध परिणाम ग्रहिशके नही ॥ १४ ॥ चेतनराय जे छे ते चिद्भावने विषे एटले ज्ञान भावविषे समर्थ छे, एटले जाणपणाना कार्यमां समर्थ छे, अने मिथ्यामति निमग्नताथी जाणपणामां राग द्वेष परिणाम देखाय छे, अनेजीव सम्यग् भावमां रहेछे, त्यारे शिव भाव उपजेछे ॥ १५ ॥

हवे ज्ञान भावमां पुद्गलनो भाव व्यापी शकतो नथी तेथी परभावनुं अव्यापक पणु कहेछेः–अथ अव्यापकता कथनः–

॥ दोहराः॥–ज्यों दीपक रजनी समै, चिहु दिसि करे उदोत; प्रगटे घट पट रूप में, घट पट रूप न होत ॥ १६ ॥ त्यों सु ज्ञान जाने सकल, ज्ञेय वस्तुको मर्म; ज्ञेयाकृति परिनमन पे, तजै न आतम धर्म ॥ १७ ॥ ज्ञान धर्म अविचल सदा, गहे विकार न कोइ; राग विरोध विमोह मय कबहु भूलि न होइ ॥ १८ ॥ ऐसी महीमा ज्ञानकी, निहचै है घटमांहि; मूरख मिथ्या दृष्टिसों, सहज विलोके नांहि ॥ १९ ॥

अर्थः– जेम दीवो रात्रे चारे दिशाने प्रकाशमान करेछे, अने तेथी घटपटादिक पदार्थ प्रगटेछे, पण दीपकनो प्रकाश घटपटरूप थतो नथी. ॥१६॥ तेम सुज्ञान जे छे,ते सर्व ज्ञेय वस्तुनो मर्म जाणेछे. तेना ज्ञानमां ज्ञेय पदार्थनो आकार पण परिणमेछे तो पण ज्ञान जे छे ते आत्म धर्म शुद्ध पणु छांडतुं नथी ॥ १७ ॥ ज्ञान धर्मथी जाणपणुं ते सदा अविचल छे. ए जाणपणामां कोई विकार प्रवेश करे नही. राग द्वेषमोहमां जीव वहेछे खरो, तोपण जाणपणाने कही भूलतो नथी ॥ १८ ॥ एवो ज्ञाननो महिमा निश्चे स्वरूपे घटमां छे. पण मूरख मिथ्या दृष्टि सहज स्वरूपने विलोकतो नथी ॥ १९ ॥

हवे अनादिकालथी जीवनो मूढ स्वभाव छे ते कहेछेः–अथ मूढ स्वभाव कथनः–

॥दोहराः॥– परसुभावमें मगन व्है, ठाने राग विरोध; धरै परिग्रह धारना, करे न आतम सोध ॥ २० ॥

अर्थः– शुद्ध चेतन स्वभावथी बीजा स्वभाव जे छे ते पर स्वभाव छे, तेमां मग्न थईने राग द्वेषमां ठेरी रह्योछे, अने एज राग द्वेषथी परिग्रहनी धारणा धरेछे पण आत्मद्रव्यनो सोध करे नही ॥ २० ॥

हवे मूढने कुबुद्धि अने पंडितने सुबुद्धि होय ते कहेछेः–अथ कुबुद्धि तथासुबुद्धिविवरनः-

॥चौपाईः॥– मूरखके घट दुरमति भासी; पंडित हिए सुमति परगासी; दुरमति कुबजा करम कमावे; सुमति राधिका राम रमावे ॥ २१ ॥ दोहराः॥–कुब्जा कारी कूबरी, करे जगतमें खेद; अलख अराधे राधिका, जाने निज पर भेद ॥ २२ ॥

अर्थः- मूर्ख प्राणीना घटमां दुर्मति वासी रहीछे, अने पंडितना हैयामां सुबुद्धि प्रकाश थई रही छे. दुर्बुद्धि जे छे ते कंसराजानी दासी जे कुब्जा तेना सरखी छे. ते कर्मनी कमाई करेछे; अने सुबुद्धि जे छे ते राधिका सरखी छे. ते आत्माराम नाथ कने रमाडनारी छे ॥ २१ ॥ कुब्जा दासी काली अने कुबडी छे, ते जगत्मां खेद प्रयास उपजावे एवा काम करनारी छे, अने सुबुद्धि राधिका जे छे, तेतो अलख ना थकनेज आराधे छे. अने एज माहारो श्रेष्ठ इष्ट नायक छे, अने बीजा सर्व पर छे; एवो भेद जाणे छे ॥ २२ ॥

हवे कुबुद्धि अने कुब्जानुं एकसरखुं वर्णन करेछेः- अथ कुबुद्धि यथाः-

॥सवैया इकतीसा॥-कुटिल कुरूप अंग लगी है पराए संग, अपनो प्रवान करि आपुहि बिकाई है; गहे गति अंधकीसी सकती कमंधकीसी, बंधको बढाउ करे धंध हीमें धाई है; रांडकीसी रीति लिए, मांड कीसी मतवारी, सांड ज्यों सुछंद डोले भांडकीसी जाई है; घरको न जाने भेद करे पराधिन खेद, याते दुर्बुद्धि दासी कुब जा कहाई है ॥ २३ ॥

अर्थः- जे कुबुद्धि छे ते मायाथी कुटील छे, तेज कुब्जा कुरूप अंग वालीछे, अने कुबुद्धि पारका संगमां लागी रहेछे, तेम कुब्जा पण एवीछे. कुबुद्धि पोताना अशुद्ध प्रमाण वडे पोतेज परवश थईछे, अने कुब्जा पण तेम वेचाईछे. कबंध एटले मस्तक विना लडाई करे तेनी शक्ति बेफाम होयछे, ते आंधलानी माफक गति लई डोलतो फिरेछे तेम कुबुद्धि ने कुब्जापण माथा विनानी फिरेछे अने दुर्बुद्धि छे ते कर्मना बंधने वधारेछे, ने धंध के० राग द्वेष विग्रहमां दोडेछे, तेम दासी पण पारका घर धंधामां दोडती फरेछे. कुबुद्धि पोताना नायकने ओलखती नथी, तेथी रांड जेवी रीती राखेछे, तेम दासीपण नायकविना रांडनी रीतेछे. वली सोहागननी रीते मतवारी थकी फरेछे. जेम सांढ जनावर स्वछंदे डोलेछे, अने भांडनी छोकरी लाज विनानी होयछे, तेवी ए कुब्जा दासी छे. जेम कुबुद्धि पोताना घरनो भेद जे ज्ञानादिक वित्त छे ते जाणे नही, तेम दासी पण घरनो भेद जाणे नही, ने पराधीन थकी खेद करया करे माटे दुर्बुद्धिरूप दासी ते कुब्जा दासी सरखीछे ॥ २३ ॥

हवे सुबुद्धि अने राधिका ए बेनुं एक स्वरूप कही देखाडेछेः-अथ सुबुद्धि यथाः-

॥सवैया इकतीसा॥- रूपकी रसीली भ्रम कुलफकी कीली सीली, सुधाके समुद्र झीली सीली सुखदाई है; प्राची ज्ञान भानकी अजाची है निदानकी, सुराची नरवाची ठोर साची ठकुराई है; धामकी खबर दार, रामकी रमन हार, राधा रस पंथ निमें ग्रंथनि मेगाई है; संतनिकी मानी निरवानी नूरकी निसानी याते सदबुद्धि रानी रा

धिका कहाई है. ॥२४॥ दोहराः ॥– वह कुब्जा वह राधिका, दोउ गती मति मान; वह अधिकारनि करमकी, यह विवेककी खान. ॥ २५ ॥ दरब करम पुद्गल दसा, जाव कर्म मति वक्र; जो सुज्ञानको परिनमन, सो विवेक गुनचक्र. ॥ २६ ॥

अर्थः– सुबुद्धि आत्मरूपनी रसीली छे. अने राधा पण रूपनी रसीली छे, अने भ्रमरूप तालाने खोलवानी कुंची छे. सुबुद्धि शील रूप सुधा समुद्रमां झली रहेछे अने राधा पण तेवी छे, एम ए बेउ शील प्रकृतीयेकरी महा सुखदायी छे, ज्ञानरूप ज्ञानुनो उदय करवाने प्राची के० पूर्व दिशा जेवीछे, निदाननी जाचनारी नथी, एटले निश्चेहीपणे सुबुद्धि अने राधिका छे. निरवाची के० वचन गोचर नथी, एवे ठेकाणे राची रहेछे, जेनी साची ईश्वरता छे धाम के० जे पोतानुं आत्म घर तेनी खबरदार छे, जेनी साथे रमी रहीछे ते राम एटले पोताना इष्टनी साथे रमनारी छे. राधा रस पंथ एटले राधावल्लभजीना मार्गना रसग्रंथमां राधानामे ईश्वरनी प्यारी छे, तेवीज सुबुद्धि पण छे. एवी संतजननी मानीती छे अने स्वस्थपणे रेहेनारी अने नूर के० शोभानी निशाणी छे एवी सुबुद्धि वर्त्तेछे, माटे सुबुद्धिने राधिका राणी कहेवी ॥ २४ ॥ ए रीते कुबुद्धि कुब्जा थई अने सुबुद्धि राधिका थई, ए बे पोतपोतानी गति अने मति लीधी रहेछे. ते कुबुद्धि जे कुब्जा तेतो कर्म बंधनी अधिकारणी छे, अने सुबुद्धि राधिका तो विवेकनी खाण छे. ॥ २५ ॥ ज्ञानावरणीय आदिक द्रव्य कर्म छे. ते पुद्गल रूप छे अने मतिनी वक्रता छे ते भाव कर्म जाणीए, जे सुज्ञाननो परिणमन होय तेने विवेक गुणनुं चक्र कहीए ॥ २६ ॥

हवे भाव कर्मना चक्रनी उपर दृष्टांत कहेछेः– अथ कर्म चक्र यथाः–

॥कवित्त छंदः॥– जैसे नर खेलार चोपरको, लाभ विचार करे चित चाउ; धरि संभारि सा बुद्धि बलसों, पासाको कुछु परे सुदाउ; तैसें जगत जीव स्वारथको करि उद्यम चिंतवे उपाउ; लिख्यो ललाट होइ सोई फल, कर्म चक्रको यही सुभाउ ॥ २७ ॥

अर्थः– जेम कोई चोपटनो खेल करे, ते पुरुष चित्तमां लाभ विचारी खेलवानो चाह राखे, एहले होंस राखे, पोतानी बुद्धि बलने जुग प्रमुखनो यत्न राखीने त्रिक चोक प्रमुख दाव उपर सारी संभाल राखीने रमे, पण दाव तो पासाने आधीन छे. तेम जगतनो जीव उद्यम करीने पोताना स्वारथनो उपाय चिंतवे, पण पोताना ललाटमां लिख्युं होय तेज फल थाय,कर्म चक्र उदय माफक थाय एनो एज स्वभावछे२७

हवे विवेक चक्र उपर दृष्टांत कहे छेः– अथ विवेक चक्र यथाः–

॥कवित्त छंदः॥– जैसे नर खेलार सतरंजको, समुझे सब सतरंजकी घात; चले चाल निरखे दोउ दल, मोह राग न विचारे मात, तैसे साधु निपुन शिव पथमे लक्षन

लखे तजे उतपात; साधे पुन्य चिंतवे अजे पद, यह सुविवेक चक्रकी वात ॥ २७ ॥ ॥दोहराः॥– सतरँज खेले राधिका, कुबजा खेले सारि; याके निसिदिन जीतवो, वाके निसिदिन हारि ॥ २९ ॥ दोहराः– जाके उर कुबजा बसे, सोई अलख अजान; जा के हिरदे राधिका, सो बुध सम्यक वान ॥ ३० ॥

अर्थः–जेम कोईमाणस सेतरंजनो रमनार सेतरंजना खेलनी सर्व धात के० युक्ति अने दाव समजेछे, पोताना पराया दल उदर नजर राखी चाल चाले, पोताना पारका वजीर हाथी प्रमुख मोहोरा गणतिमां राखी मनमां परने मांत करवानुं विचारेछे, तेम साधु लोक पंडित छे, ते मोक्ष मार्गमां खेले; लक्षणथी वस्तुने जोय; तेमां उत्पातरूप कार्य होय ते छांडी दे, अने पोतानुं साधन करे, चित्तमां अजेद पद विचारे ए विवेक चक्रनी वात छे ॥२७॥ सुबुद्धि राधिका ते सेतरंज खेली रही छे, अने कुमति कुब्जा पासा सरखो खेल खेलेछे. तेमां आ सुमति राधिका तेनुं विवेक चक्रमां रातदिन जितवुं थायछे. अने कुमति कुब्जा ते कर्म चक्रमां रातदिन हारेछे ॥२९॥ जेनां हैयामां कुमति कुब्जा वसे, तेतो अलख आत्माना अजाण छे; अने जेना हैयामां सुमति राधिका वसेछे, तेज समकितवंत बुद्ध कहेतां ज्ञाता कहिये ॥ ३० ॥

हवे ज्यां शुद्धज्ञान छे त्यां शुद्धक्रिया थाय ते कहेछेः–अथ ज्ञानक्रिया सहकार कथनः–

॥सवैया इकतीसाः॥–जहां शुद्ध ज्ञानकी कला उद्योत दीसे तहां, सुद्ध परवान शुद्ध चारित्रको अंस है; ता कारन ज्ञानी सब जाने ज्ञेय वस्तु मर्म, वैराग विलास धर्म वाको सरवंस है; राग दोष मोहकी दसासों जिन्न रहे याते, सर्वथा त्रिकाल कर्मजालको विध्वंस है; निरुपाधि आतम समाधिमें विराजे ताते, कहिये प्रगट पूरन परमहंस है; ॥ ३१ ॥ दोहराः–ज्ञायक जाव जहां तहां, शुद्ध चरनकी चाल; ताते ज्ञान विराग मल, सिव साधे सम काल. ॥ ३२ ॥

अर्थः–जे प्राणीविषे जे शुद्ध ज्ञाननी कलानो उद्योत देखायछे, ते प्राणीविषे तेज वखतमां आत्मानी शुद्धता प्रमाण करीने शुद्ध चारित्रनो पण अंस थाय ते कारणथी जे ज्ञाता होय तेतो ज्ञेय के० हेय उपादेयरूप सर्व जाणवा योग्य वस्तुनो मर्म जाणे, त्यारे ते हेयने छांडे अने उपादेयरूप सर्व जाणवुं तेने ग्रहे छे, एवो वैराग्यना विलासनो स्वजाव सर्व अंशे करी प्रगट थाय. अने वैराग्य आव्याथी राग द्वेष मोहनी दशाथी प्राणी जिन्न रहेछे, तेथी पूर्वकृत कर्मनी निर्जरा थायछे, अने वर्त्तमानकालमां कर्म न बांधे, जे प्रकृति छुटी गई ते आगामिक कालमां बांधे नही, एम सर्वथा प्रकारे कर्मजालनो विध्वंस थाय. तेवारे राग द्वेषादिक उपाधि रहित आत्म समाधिमां विराजे तेथी तेने पूरण परमहंस प्रगटपणे कहिये ॥ ३१ ॥ ज्यां ज्ञायक जाव

छे त्यां शुद्ध चारित्रनी चाल पामिये तेथी ज्ञान अने वैराग्य मलीने समकाले शिवमार्ग साधे छे ॥ ३२ ॥

हवे ज्ञानक्रिया उपर अंध पंगुनुं दृष्टांत देछेः– अथ ज्ञान क्रियाको दृष्टांतः–

॥दोहराः॥–यथा अंधके कंध परि, चढै पंगु नर कोइ; वाके दृग् वाके चरण, होहि पथिक मिलि दोइ, ॥३३॥ जहां ज्ञान किरिया मिले, तहां मोक्ष मग सोइ; वह जानै पदको मरम, वह पथमें थिर होइ. ॥ ३४ ॥

अर्थः–कोई पांगलो नर जेम कोई आंधलाना खजा उपर चढवाथी, पांगलानी आंख अने ते आंधलाना पगथी चाले, त्यारे पंथ मार्ग होय तो बनेना मलवाथी गमन थाय, हालवुं चालवुं बने, तेम ज्ञान वैराग्य मलेथी मोक्षमार्गें चलाय ॥३३॥ ज्यां ज्ञा अने क्रिया ए बे एकठा थई रहे त्यां मोक्षनो मार्ग थाय. एटले ज्ञानथी वस्तुनो मर्म जाणे अने क्रियाथी पोताना वस्तुस्वजावमां स्थिर थाय ॥ ३४ ॥

हवे ज्ञान अने क्रियानुं जेवुं स्वरूप छे तेवुं कहे छेः– अथ ज्ञानक्रियाको स्वरूपः–

॥दोहराः॥– ज्ञान जीवकी सजगता, करम जीवकी जूल; ज्ञान मोक्ष अंकूर है, करम जगतको मूल. ॥ ३५ ॥ ज्ञान चेतनाके जगे, प्रगटे केवल राम; कर्म चेतनामें वसे, कर्म बंध परिनाम. ॥ ३६ ॥

अर्थः– ज्ञान छे ते जीवनी सजगता छे एटले जीवने जगावे छे; कर्म के० क्रिया कार्य करवो ते जीवनी जूल छे, त्यां ज्ञान छे ते मोक्षनो अंकूर छे, एटले मोक्षनो हेतु छे, क्रिया कार्य करवो तेतो जवभ्रमणनुं मूल छे ॥ ३५॥ चेतना बे प्रकारनी पूर्वे कही छे. तेमां ज्ञानचेतनाना जागवाथी केवल राम प्रगटे ते शुद्ध परमात्मा प्रगटे छे, अने बीजी कर्मचेतना कहिए तेमां आत्मानो बंधपरिणाम उपजे छे. ॥ ३६ ॥

हवे ज्ञाननो प्रजाव अने क्रियानो प्रजाव जिन्न जिन्न कही देखाडे छेः–

अथ ज्ञानक्रियाको प्रजाव जिन्न कथनः–

॥ चोपाईः॥–जबलग ज्ञान चेतना जारी; तब लग जीव विकल संसारी, जब घट ज्ञान चेतना जागी, तब समकिती सहज वैरागी. ॥ ३७ ॥ सिद्ध समान रूप निज जाने; पर संजोग जव परमाने; शुद्धातम अनुजो अज्यासे, त्रिविध करमकी ममता नासे. ॥ ३८ ॥

अर्थः–ज्यांलगी क्रिया परिणामे करीने ज्ञान चेतना जारी थई एटले चेतना कर्मरूप थई, त्यांलगी तो संसारी जीव विकलरूप थई रह्यो छे अने ज्यारे घटमां ज्ञानचेतना जागृतरूप थई, त्यारे ते समकिती कहेवाय छे; तेने सहज वैरागी कहिए. ॥ ३७ ॥ अने ज्ञान चेतनाना जाणवाथी पोताना रूपने निश्चय सिद्धसमान

जाणे, अने पर पुद्गलना संयोगथी जे भाव उपजे, तेने तो पररूप माने, शुद्धात्मना अनुभवनो अभ्यास राखे; द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म एवी त्रण जातिनां कर्मनी ममता गमावे. ॥ ३८ ॥

हवे ज्ञाता थईने जे पूर्वकालविषे कर्म कीधांछे तेनी आलोयणाले, अने पोतानी विगत कहेछेः—अथ ज्ञाता पूर्व कृतकर्म आलोचन कथनः—

॥ दोहराः ॥— ज्ञानवंत अपनी कथा, कहे आपसों आप; में मिथ्यात दसाविषे, कीने बहु विधि पाप. ॥ ३९ ॥ सवैया इकतीसाः ॥—हिरदे हमारे महा मोहकी विकलताही, ताते हम करुना न कीनी जीव घातकी; आप पाप कीने औरनकों उपदेश दीने, हूती अनुमोदना हमारे याही बातकी; मन वच कायमें मगन व्हे कमाए कर्म, धाए भ्रम जालमें कहाए हम पातकी; ज्ञानके उदे भए हमारी दशा एसी भई, जेसी भान भासत अवस्था होत प्रातकी. ॥ ४० ॥

अर्थः— ज्ञान चेतना जागतां ज्ञानवंत पोतानी कथा पोतानी मेले करे के में पूर्व कालमां मिथ्यात्व दशामां बहु जातनां पाप कीधां छे. ॥ ३९ ॥ हमारा हैयामां पूर्व कालविषे महामोहनी विकलता थई, तेथी अमें जीव घातनी करुणा न कीधी, ने निर्दयदशा राखी, पोतानी कायाथी तो पोतेज पाप कीधां अने बीजाने वचने करी पापनो उपदेश दीधो; अथवा कोईने पाप करतो देखीने में तेनी अनुमोदना करी एवी रीते मन वचन कायाना अशुद्ध व्यवहारमां मग्न थईने कर्मनी कमाणी करी मिथ्या जालमां एवी रीते दोड्या, तेथी अमे पातकी केहेवाइए छैयें; हवे ज्ञाननो उदयथतां हमारी दिशा एवी थई के जेम सूर्यना भासवाथी प्रभात कालनी अवस्था ज्योतवंत थाय, तेम हमारी पण एवी अवस्था थई ॥ ४० ॥

हवे ज्ञाता ज्ञानना प्रभावथी जेवी आपणी अवस्था जाणे तेवी कहेछे.

अथ ज्ञाता ज्ञान प्रभाव कथनः—

॥सवैया इकतीसाः ॥— ज्ञान भान भासत प्रवान ज्ञानवान कहे, करुना निधान अमलान मेरो रूप है; कालसों अतीत कर्म चालसों अभीत जोग, जालसों अजीत जाकी महिमा अनुप है; मोहको विलास यह जगतको वास मेंतो, जगतसों शुन्य पाप पुन्य अंध कूप है; पाप किन कियो कौन करे करिहे सु कोन, क्रियाको विचार सुपनेकी धोर धूप है ॥ ४१ ॥

अर्थः—ज्ञानरूप सूर्यनो प्रकाश होवाथी प्रमाण ज्ञानवान के० ज्ञाता पुरुष एम कहेछे के, मारुं स्वरूप करुणा निधान छे. तथा सर्वेनुं पोताना जेवुं स्वरूप जाणी ने सर्वेनो हित वत्सल छे. अने अम्लान कहेता निर्मल छे, कालने वश नथी एटले

शाश्वत छे. कर्म चालनो तेने जय नथी, एटले कर्म जेना स्वजावनो नाश करी शके नही, मन वचन अने कायना योगनी जाल तेथी जे अजित छे, अने आ जगत्नो वास छे, तेतो मोहतोविलासछे, पण मारो विलास नथी. जगत् कहिये जवज्रमण तेथी हुं शून्य छुं, गति कर्म जगत् करेछे, तेतो मारा स्वरूपमां पाप पुण्य अंधकूप समान छे, एथी पाप कोणे कीधुं, हवे कोण करे छे, आगल कोण करशे; आजे क्रियानो विचार दिगामां आवेछे, तेतो स्वप्नानी दोरधाव समान मिथ्याव्यवहार छे ॥ ४१ ॥

हवे मिथ्या परिणामनुं वर्णन करेछेः—अथ मिथ्यात्व परिणाम वर्णनः—

॥ दोहराः ॥— मैं यों कीनों यों करों, अब यह मेरो काम, मन वच कायामें बसे, ए मिथ्यात परिनाम, ॥४२॥ मन वच काया करम फल, करम दशा जड अंग; दरवित पुज्ञल पिंडमें, जावित जरम तरंग ॥ ४३ ॥ तांते जावित धरमसो, करम सुजाव अपूठ; कोंन करावे को करे, कोसर लहे सब जूठ ॥ ४४ ॥

अर्थः— मैं आवुं कीधुं, आम करुंछु, हवे आ मारुं काम छे, ते कहुछु, एरीते ज्ञान चेतना जाग्याविना मन वचन कायामां मिथ्या परिणाम वसेछे, ॥ ४२ ॥ आ जे मन वचन कायाना जोग छे, ते कर्मनुं फल छे, अने कर्मनी दशा जडरूप अंग छे, ए जे मन वचन काया छे, ते पुज्ञल द्रव्यनो पिंड छे, तेथी आ मिथ्या तरंग जाव उपजे छे. ॥४३॥ तेमाटे आत्मानो जावित धर्म एटले शुद्ध जाणपणुं तेथी मिथ्या तरंगरूप कर्म स्वजाव विपरीत छे तेने करावे कोण अने करे कोण? अने सरल कोण छे एटले अनुमोदे कोण ए प्रपंच सर्व जुगछे, ॥ ४४ ॥

हवे आ जोगथी क्रिया होय तेनी निंदा करेछेः— अथ क्रियाकी निंदा कथनः—

॥ दोहराः ॥—करनी हित हरनी सदा; मुकति वितरनी नांहि; गनी बंध पद्धति विषे, सनी महा डुष मांहि, ॥ ४५ ॥ सवैया इकतीसाः॥— करनीकी धरनीमें माहा मोह राजा बसे, करनी अज्ञानजाव राकसकी पुरीहै, करनी करम काया पुग्गलकी प्रती छाया, करनी प्रगट माया मिसरीकी छुरी है, करनीके जालमें उरझि रह्यो चिदानंद, करनीकी उट ज्ञान जान डुति डुरी है; आचारज कहें करनीसों विवहारी जीव करनी सदीव निहचे सरूप बुरी हैं ॥ ४६ ॥

अर्थः— करणी जे क्रिया छे ते सदा अहितनी करनारी छे, मुक्तिने देवा वाली नथी, आ क्रियाने आगममां तो बंध पद्धतिमांज गणी छे, तेथी क्रिया महा डुख सहित छे. ॥ ४५ ॥ क्रियानी जूमिमां महा मोह राजा वसेछे, अने क्रिया छे ते तो अज्ञान जाव राक्षसनी नगरी छे. एटले क्रियामां अज्ञान राक्षस रही शकेछे. अने ए क्रिया छे ते तो कर्मनो पडछायो छे, अने काय योगनो पडछायो छे. अने पुज्ञलनो प

रुंधायो छे. क्रिया छे ते प्रगट माया जाल छे, तथा ते साकरनी छरी छे, मीठास आ पी मारेछे. आ करणीनी जालमां चिदानंद परमात्मा छरजी के० मग्न थई रह्यो छे, अने क्रियाना ओथे ज्ञानरूप सूर्यनी ज्योति छपी रही छे. श्री आचार्य कहेछे के क्रिया करतो थको जीव व्यवहारीज कहिए. पण निश्चय रूपे देखवाथी क्रिया सदा सर्वदा बुरी छे, एटले खोटी छे. ॥ ४६ ॥

हवे पोतानी समज पामे तेने ज्ञाता कहेछेः— अथ ज्ञाता कथनः—

॥चौपाईः॥— मृषा मोहकी परिनति फैली, तातें करम चेतना मैली; ज्ञान होत हम समुझी एती, जीव सदीव जिन्न परसेती ॥ ४४ ॥ दोहराः॥—जीव अनादि सरूप मम, करम रहित निरुपाधि; अविनाशी अशरन सदा, सुखमय सिद्ध समाधि ॥ ४८ ॥

अर्थः— अमारामां पहेला मिथ्या मोहनी परिनति फेलाई छे, एटले मोहथी अशुद्ध थई, त्यारे फेलाणी. तेनो उदय गाढो थयो, तेथी चेतना शुद्ध हती पण अशुद्ध थई, कर्मसहित चेतना मलीन थई. हवे ज्ञान चेतना प्रगट थतां अमे एटली वात जाणी, के जे जीव छे ते निश्चये परजोगथी न्यारो छे ॥४३॥ अनादि कालथी जे जीव प्राणधारी कहेवायछे, ते मारुं स्वरूप छे. ते स्वरूप केवुं छे ते कहेछे. कर्म रहित छे; अने संयोगादिक उपाधि रहित छे; वली विनाश न पामे, सदा ईश्वर छे; कोईनुं शरण न राखे, अने आ स्वरूप सिद्धसमाधिना सुखमय छे ॥ ४८ ॥

हवे ज्ञानस्वरूप कर्म उपाधिथी जिन्नछे ते कहेछेः— अथ ज्ञान स्वरूपी कथनः—

॥चौपाईः॥— मैं त्रिकाल करणीसों न्यारा, चिदविलास पद जगत उज्यारा; राग विरोध मोह मम नांही, मेरो अवलंबन मुझमांही ॥४ए॥ सवैया तेइसाः॥— सम्यकवंत कहे अपने गुनमें नित राग विरोधसुँ रीतो, मैं करतूति करों निरवंछक, मोह विषे रस लागत तीतो; सुद्ध सुचेतनको अनुजौ करि, मैं जग मोह महा जड जीतो, मोष समीप जयो अब मो कहुं काल अनंत इही विधि बीतो ॥ ५० ॥ दोहराः॥— कहे विचछन में सदा, रह्यो ज्ञान रस राचि; सुद्धातम अनुजूति सों, खलित न होइ कदाचि ॥ ५१ ॥ पूर्व करम विष तरु जए, उदे जोग फल फूल; में इन्हको नहिं जोगता, सहज होहुं निरमूल ॥ ५२ ॥

अर्थः— हुं त्रणे कालमां क्रिया करणीथी न्यारो छुं. मारे कर्मथी संग नथी तो क्रियाथी संगती केम थाय ? मारुं पद के० स्वरूप, चिद्‌विलास के० ज्ञानविलास छे, ते जगत्‌मां अजवालु छे. अने राग द्वेष मोहजाव वर्त्ते छे, तेतो मारुं स्वरूप नथी. मारो अवलंब आधार मारा स्वरूपमां छे ॥ ४ए ॥ समकिती जीव पोताना गुण कहेछे. हुं नित्य प्रत्ये राग द्वेष मोहथी, रीतो के० रिक्त एटले रहित छुं. हुं जे क्रि

था करुंछुं ते राग द्वेष विना वांछारहित करुंछुं. अने जे ए विषय रस छे ते, मोहती तो के० मने तिक्त लागेछे एटले कडवो लागेछे. पोतानी शुद्ध चेतनानो अनुभव करीने में जगत्मां मोहरूप महासुभट जीत्यो. मारुं एवुं स्वरूप पामीने हुं मोक्षने सन्मुख थयो, हवे मने एवी रीतथीज अनंत काल वीतो! एटले अनंत काल लगे एवोज रहुं ए आशंसा छे ॥ ५० ॥ विचक्षण ज्ञानी पुरुष आशंसा करीने कहे के हुं सदा ज्ञान रसमां राची रहुं अने हुं शुद्ध आत्मना अनुभवथी कोइ पण कालमां स्खलित न थाउं! ॥ ५१ ॥ ए पूर्वे कृत पुण्य पापरूप जे कर्म छे, ते विष वृक्ष जाणवा अने ते कर्मना उदयनो जे भोग छे ते विष वृक्षनां फल फुल छे. हुं आ उदय भोगनो भोक्ता नथी. राग द्वेषथी रहित छुं. अनादिकालना साथे लागेला विषय भोग छे तेसहज निर्मूल थाय ॥ ५२ ॥

हवे उदासीनताने वैराग्य कहिये तेनो महिमा कहेछेः—अथ वैराग्यमहिमाकथनः—

॥दोहराः॥—जो पूरव कृत कर्म फल, रुचिसों भुंजे नांहि; मगन रहे आठो पहुर, शुद्धातम पदमांहि ॥ ५३ ॥ सो बुध कर्मदसा रहित, पावे मोष तुरंत; भुंजे परम समाधि सुख, आगम काल अनंत ॥ ५४ ॥

अर्थः— जे पूर्वकालमां कर्म कर्युं, तेनुं फल उदय थयुं, ते फलथी रुचि लगाडी भोगवे नही अने आठे प्रहर शुद्ध आत्मपदमां मग्न रहे ॥ ५३ ॥ तेज पंडित कर्म दशा रहित थईने तरत मोक्षपद पामे, ते पछी आगामिक कालमां अनंत काल लगी परम समाधिनुं सुख भोगवे ॥ ५४ ॥

हवे ज्ञानि पुरुषनो क्रमे क्रमे महिमा वधे ते कहेछेः— ज्ञानी पुरुष महिमा कथनः—

॥छप्पय छंदः॥— जो पूरव कृतकर्म, विरष विष फल नहि भुंजे; जोग जुगतिकारज करंत ममता न प्रजुंजे; राग विरोध निरोध संग विकलप सबि छंडे, शुद्धातम अनुभौ अभ्यासि सिव नाटक मंडे; जो ज्ञानवंत इह मग चलत, पूरत व्है केवल लहे; सो परम अतींद्रिय सुखविषे, मगन रूप संतत रहे ॥ ५५ ॥

अर्थः— जो ज्ञाता थईने पूर्व कृतकर्म रूप वृक्षना विष फलने भोगवे नही एटले इष्ट फलथी रति न उपजे, अनिष्ट फलथी अरति न उपजे एवो ज्ञाता जे छे, ते मन वचन कायाना योगे करी युक्त छे, तेथी जोगनी गति के० प्रवृत्तिये कार्य करेछे, पण कार्यविषे ममता प्रजुंजे नही, एरीते राग द्वेषनो निरोध करीने योगना संगथी जे विकल्प उठेछे, ते सर्व छांडे, शुद्ध आत्माना अनुभवनो अभ्यास करीने शिवनाटक के० जे थकी जीवन्मुक्ति होय एवुं नाटक मांडे. जो ज्ञानवंत पुरुष एहिज मार्गे चा

छे तो पूर्ण स्वभाव पामीने केवल ज्ञान पामे. पछी केवल ज्ञान पामीने उत्कृष्ट अ तींद्रिय सुखनेविषे निरंतर मग्न रहे. ॥ ५५ ॥

हवे शुद्ध आत्मा द्रव्य छे तेनुं वर्णन करेछेः—अथ शुद्ध आत्मदर्वेवर्नेनः—

॥ सवैया इकतीसा॥— निरभै निराकूल निगम वेद निरभेद, जाके परगासमें जग त माईयतु है; रूप रस गंध फास पुदगलको विलास, तासों उदवंश जाको जश गा इयतु है, विग्रहसों विरत परिग्रहसें न्यारो सदा, जामें जोग निग्रहको चिन्ह पाइ यतु है; सो है ज्ञान परवान चेतन निधान ताहि, अविनाशी ईश मानी सीस नाइ यतु है; ॥ ५६ ॥ जैसो नर भेदरूप निहचें अतीत हुंतो, तेसो निरभेद अब भेदको न गहेगो; दोसे कर्म रहित सहित सुख समाधान, पायो निज थान फिरि बाहिर न वहेगो; कबहु कदाचि अपनो सुभाव त्यागि करि, राग रस राचिके न परवस्तु गहेगो; अमलान ज्ञान विद्यमान परगट भयो, याही भांति आगम अनंत काल र हेगो ॥ ५७ ॥ जबहितें चेतन विभावसों उलटि आपु समों पाइ अपनो सुभाव ग हि लीनो है; तबहीते जोजो लेन जोग सो से सब लीनो, जो जो त्याग जोग सो सो सब छांडि दीनो है; लेवेकौ न रही ठोर त्यागिवेकों नांही और, बाकी कहा उ बर्यो जु कारज नवीनो है; संग त्यागि अंग त्यागि वचन तरंग त्यागि, मन त्यागि बुद्धि त्यागि आपा सुद्ध कीनो है ॥ ५८ ॥

अर्थः—जे निर्भय केहेवाय छे, निराकुल केहेवाय छे, निगम के० उत्कृष्ट अर्थ केहे वाय छे, वेद के० ज्ञानरूप केहेवाय छे, जेनो भेद नथी एवो प्रकाशवंत पदार्थ छे; जे मां सर्व जगत् शमाय छे; अने जे ए रूप रस गंध स्पर्श जे विनाशी पदार्थो छे, तेतो पुद्गलनो विलास छे, तेना उदवंस के० तेथी रहित जे छे तेनो जसगाइए छे. वली जे विग्रह के० शरीर तेथी विरत के० रहित अने द्रव्यभावरूप परिग्रह तेथी जुदो छे, जेमां सदाय त्रणे योगथी रहित पणानुं चिन्ह के० लक्षण पामीए छे, एवो पदार्थ तो ज्यां ज्ञान छे त्यां ते पदार्थ छे. तेथी ज्ञान प्रमाण छे. अने चेतनानो निधान छे. तेने अविनाशी ईश्वर मानीने मस्तक नमावीए छे ॥ ५६ ॥ हवे बीजुं पण शुद्धात्म द्रव्य सिद्धनुं वर्णन करेछेः—अतीत कालमां पण शुद्धात्म द्रव्य निश्चय नयथी अभेद रूप हतुं अने व्यहारनये भेदरूप हतुं. हवे केवल रूप पामिने निर्भेद के० भेद र हित जाणीए. हवे एवी दशामां कोण मूर्ख भेद ठरावशे ? नैयायिक लोक जे पोता नी प्ररूपणामां समाधियोगआत्माने कर्म रहित मानीने फरी संसारमां अवतार मानीने तेने नमस्कार करेछे, पण जे कर्म रहित थयो, सुख समाधान सहित थयो, पोतानुं स्थानक पाम्यो, ते पाछो बाह्य संकटमां केम पडशे? जेम धरतीनो भार उता

रवा ईश्वर अवतार लेइने दुःख पामेछे एवुं मिथ्यादृष्टिनी केहेवतमांछे, पण जीव शुद्ध थईने फरी राग रसमां राचिने कोई कालमां आपणो स्वभाव त्याग करीने पर वस्तु ने ग्रहे नही. केमके अम्लान ज्ञान के० जे फरी करमाय नही एवुं ज्ञान विद्यमान कालविषे प्रगट थयुं तेतो आगामिक कालमां अनंत काल लगी रहेशे॥५७॥ हवे फरीथी अवतार लेवाना कारणनो अभाव कहेछेः— अनादिकालथी चेतन मिथ्यात्व भावरूप विभावमां रमि रह्यो हतो ते समयप्रस्ताव पामीने, विभावथी उपरांठो थई पोतानो शुद्ध स्वभाव हतो ते पोतेज लइ लीधो, तेथी ज्ञान दर्शनादिक भाव लेवा योग्य हतो ते लीधो, अने राग द्वेषादिक भाव त्यागवाजोग हतो ते सर्व त्यागी दीधो; ते लेवानुं बीजुं ठेकाणुं रह्युं नही, अने त्यागवानुं पण बीजुं ठेकाणुं रह्युं नही. हवे इहां बाकी नवुं कार्य करवानुं शुं रह्युंछेके जे कार्य करवाने फरी अवतार लेवो पडे? जे उपाधिसंग हतो तेतो सर्व त्यजीने एटले अंग त्याग के० काय योग त्यागिने, वचन तरंग त्याग के० वचन योग त्यागीने तथा मनोयोग त्यागिने बुद्धि त्याग के० विकल्प त्यागीने आत्माने शुद्ध करी लीधो ॥ ५८ ॥

हवे बाह्य भेष धरवो ते द्रव्यलिंग कहिए ते एकांतपणे मोक्षनुं कारण नथी ते कहेछेः— अथ एकांत द्रव्यलिंगीकी निंदाः—

॥ दोहराः॥— शुद्ध ज्ञानके देह नहिं, मुद्रा भेष न कोइ; ताते कारन मोषको, दरवलिंगि नहि होइ ॥ ५९ ॥ द्रव्य लिंग न्यारो प्रगट, कला बचन विन्यान; अष्ट महारिधि अष्ट सिधि, एक होहि न ज्ञान ॥ ६० ॥

अर्थः— आत्मा तो शुद्ध ज्ञानमय छे. अने शुद्ध ज्ञानने देह नथी, अने ज्यारे देह नथी त्यारे ज्ञान ने मुद्रा भेष पण कोइ नथी. तेथी मोक्षनुं कारण द्रव्य लिंग होय नही. एटले भेष लीधे मुक्ति नथी ॥ ५९ ॥ ज्ञानथी द्रव्यलिंग तो प्रगट पणे जुदुंज छे. कलाविज्ञान, वचन विज्ञान, ते ज्ञानथी न्यारां छे. तथा आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, बुद्धि, उपयोग, संग्रह संलीनता, ए अष्ट महा रिद्धि छे. अने अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशित्व, वशित्व, ए अष्टमहा सिद्धि छे. ते पण ज्ञान नथी ॥ ६० ॥

हवे एटलां महिमावंत स्थानक छे, तो पण ए ज्ञाननां स्थानक नथी ते कहेछेः—

अथ ज्ञान अभाव स्थानक कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—भेषमें न ज्ञान नहि ज्ञान गुरु वर्त्तनमें, मंत्र जंत्र तंत्रमें न ज्ञानकी कहानी है; ग्रंथमें न ज्ञान नहिं ज्ञान कवि चातुरीमें बातनिमें, ज्ञान नहीं ज्ञान कहा बानी है; तातें भेष गुरुता कवित्त ग्रंथ मंत्र बात, इनतें अतीत ज्ञान चे

तना निसानी है, ज्ञानहीमें ज्ञाननही ज्ञान ठौरठौर कहू, जाके घट ज्ञान सोइ ज्ञानको निदानी है ॥ ६१ ॥

अर्थः— वेषमां ज्ञान न पामीए अने गुरुवाई के० गर्वपणुं महोटाइ पणुं तेमां पण ज्ञाननुं स्थानक नथी अने मंत्र, तंत्र, यंत्रमां ज्ञाननी कहेणी नथी तथा ग्रंथ शास्त्र पढवाथी पण ज्ञान प्राप्त थतुं नथी; कवितामां, चातुर्यतामां ज्ञान नथी. वातनी चतुराइमां ज्ञान नथी; अने जे वाणी छे ते शुं ज्ञान छे? अर्थात् वाणी पण ज्ञान नथी. माटे भेख, गुरुताइ, कविताई, ग्रंथ, मंत्र, यंत्र, तंत्र, वात ए सर्वथी अतीत के० जुदीज ज्ञान वस्तु छे, ते चेतननी सहिनाणी छे. ज्ञानतो क्यारे जाणवुं, के जे अशुद्ध पणे होय तेतो ज्ञान न कहेवाय, माटे पूर्वे जे स्थानक कह्यां तेथी जूदीज कोइ ज्ञान वस्तु छे, माटें जेना घटमा ज्ञान प्रगटयुं, तेज ज्ञाननुं मूलकारण छे ॥ ६१ ॥

हवे जेपूर्वे वेष प्रमुखना धारक कह्या तेनी मूढता कहि देखाडे छेः—

अथ भेषादि धारक मूढ यहु कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— भेष धरे लोगनिकों वंचे सो धरम ठग, गुरु सो कहावे गुरु वाई जाते चहियें; मंत्र तंत्र साधक कहावे गुनी जादूगर, पंडित कहावे पंडिताई जामें लहिये; कवित्तकी कलामें प्रवीन सो कहावे कवि, वात कही जाने सो पवारगीर कहिये; ए तो सब विषेके भिखारी मायाधारी जीव, इन्हकों विलोकिकें दयाल रूप रहिये ॥ ६२ ॥

अर्थः— वेष धरीने लोकोने ठगे, भरमावे ते धर्म ठग कहेवाय, एटले तेने गुरुतानी चाहना होय ते गुरु केहेवाय.मंत्र,यंत्र,तंत्रादिक गुणनो जे साधक होय ते जादूगर केहेवाय.अने जेमां पंडिताई रही छे,ते पंडित केहेवाय. कवित चातुरिनी कलामां जे प्रवीण होय तेतो कवि केहेवाय. वातो बनावी बनावीने कही जाणे ते पवारगर केहेवाय एटली अवस्थाना धरनारा छे. ते सर्व इंद्रियविषयना याचक मायाधारी जीव छे. तेने जोईने मनमां एवुं विचारिये के अहो! इति आश्चर्ये! ए बापडा केम पोतानो स्वार्थ खोयछे, एवी रीते तेना उपर दयालरूप थई रहेवुं ॥६२॥

हवे जीवना अनुभवनी योग्य दशा कहे छेः— अथ अनुभव जोगता कथनः—

॥ दोहराः॥— जो दयालता भाव सो, प्रगट ज्ञानको अंग; पैं तथापि अनुभौ दशा, वरते विगत तरंग ॥ ६३ ॥ दरशन ज्ञान चरण दशा, करे एक जो कोइ, थिर व्है साधे मोष मग, सुधी अनुभवी सोइ ॥ ६४ ॥

अर्थः— जे आत्माने शुद्ध दयालता भाव प्रगटेछे, तेतो ज्ञाननुं अंग प्रगट थयुं एम जाणीए. पण अनुभव दशा जे छे,ते तो विगततरंग के०विकल्प रहित वर्त्ते॥६३॥

वळी दर्शन ज्ञान चारित्रनी दशाने विकल्प रहित एकपणे आत्माने जुएछे, एज रीते स्थिररूप थइने मोक्ष मार्गने साधे छे तेनेज सुधी के०सुबुद्धिवंत अनुजववंत कहियें।।६४।।
हवे निःसंदेह शुद्ध स्वरूप पामवुं तेनो महिमा कहे छेः—अथ अनुजव महिमाकथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जोइ दृग् ज्ञान चरणातममें ठवि ठोर, जयो निरदोर पर वस्तुकों न परसे; सुद्धता विचारे ध्यावे शुद्धतामें केलि करे, सुद्धतामें थिर व्है अमृत धारा वरसे; त्यागी तन कष्ट व्है स्पष्ट अष्ट करमको, करे थान ज्रष्ट नष्ट करे ओर करसे; सोई विकलप विजई अलप कालमांहि, त्यागि जो विधान निरवान पद दरसे ॥ ६५ ॥

अर्थः— जे कोई दर्शन ज्ञान चारित्ररूपी आत्मानेविषे ज्ञानने ठेकाणे ठेरावीने वाट बांधे, त्यां निरदोर के० संशय रहित थईने परवस्तुनो स्पर्श न करे, त्यां निश्चय नय ग्रहण करीने शुद्धताज विचारे, शुद्धताज ध्यावे, अप्रमादि थईने शुद्धतामां केलि करे, शुक्ल ध्यानना प्रथम पायामां प्रवेशकरी शुद्धतामां थिर थईने महा आनंदरूप अमृतनी धारा वरषावे. आंही अवयवरूप लक्षण छे. तेथी शरीरना कष्टने त्यागेछे. लीनताथी शरीर कष्ट न जाणे त्यारे स्पष्ट थईने एटले वीर्य फोरवीने आठे कर्मनां स्थानने ज्रष्ट करे एटले कर्मोने सत्ता थकी चलायमान करे अने नष्ट करे के० निर्जरा करे ऐसे औरहुंकैसे के० ते जीव कर्मोने आकर्षिने निर्जरावे ते जीव विकल्प जालनो विजय करीने अल्प कालमांज जो विधान के० जवश्रेणिने त्यागी मोक्ष पद देखे एटले पामे ॥ ६५ ॥

हवे शिष्य पुछे छे के ए अनुजव पामवो महा विषम छे ते उपर गुरु शिक्षा देछेः—

अथ अनुजव शिक्षा कथनः—

॥ चौपाईः ॥—गुन परजैमे दृष्टि म दीजे; निरविकलप अनुजौ रस पीजे; आप समाइ आपमे लीजे; तनपा मेटि अपनपो कीजे ॥ ६६ ॥ दोहराः ॥—तजि विजाव हु इजे मगन, सुद्धातम पदमांहि; एक मोष मारग यहे, और दूसरो नांहि ॥ ६७ ॥

अर्थः—आत्माना गुण पर्याय अनेक छे, पण तेमां दृष्टि न देवी. मात्र निर्विकल्प द्रव्यनो अनुजव रस पीवो. आत्मा आधारमां आत्मानो समास करी लेवो एटले लय लगाडवी, एटले आपणे शरीर धारी छीए, ते दशानुं काय योग पणुं छे ते मटावी आत्म स्वरूप करीए ॥ ६६ ॥ आत्माना मूल स्वजाव विना बीजुं सर्व विजाव पणु छे, तेहने त्यजीने शुद्ध आत्माना चिदानंद स्वजावमांज मग्न थश्ये, एक अद्वितीय मोक्षनो मार्ग एज छे. तेथी बीजो कोइ मोक्षनो मार्ग नथी ॥ ६७ ॥

हवे शुद्ध आत्स्वरूपना अनुजवविना महाव्रत्ति पण ड्रव्यलिंगी जाणवा ते कहेछेः-
अथ ड्रव्यलिंगी व्यवस्था कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥-कइ मिथ्या दृष्टि जीव धारे जिन मुड्रा जेष, क्रियामें मगन रहे कहे हम जती है; अतुल अखंम मलरहित सदा उदोत, ऐसे ज्ञान जावसों विमुख मूढमति है; आगम संजाले दोष टाले विवहार जाले, पाले वृत्त यद्यपि तथापि अविरती हैं; आपुकों कहवे मोष मारगके अधिकारी मोषसों सदीव रुष्ट डुष्ट डुरगति है. ॥ ६७ ॥ दोहराः॥-जे विवहारी मूढ नर, परजे बुद्धी जीव, तिनको बाहिज कीयको, हे अवलंब सदीव. ॥ ६ए ॥

अर्थः-कैक जीव मिथ्या दृष्टि छे अने आचार्य उपदेश रसथी जिन मुड्राजेषधारी छे अने साधुनी क्रियामां मग्न रहेछे, अने पोताना मनथी अथवा कोईना पूछवाथी अमे जति छइये एम कहेछे एटले महाव्रत्ति छैये. अने जेनी तुलना नथी एवुं अखंड के० संपूर्ण विजाव मलरहित सदा प्रकाशवंत पोतानुं अनुजवरूप जे ज्ञान जाव छे तेथी विमुख छे माटे मूढमति छे. ते क्रिया करेछे, आगम सिद्धांत संजारेछे, अने आहारादिकना दोष टाली व्यवहारमां दृष्टि राखेछे, एम यद्यपि महावृत्त पाले छे, तोपण निश्चय नयथी ए अविरतीज कहीए. एवा जे जीवछे ते पोते मोक्ष मार्गना अधिकारी लोकमां कहेवायछे. मोक्षथी ए सदा रुठयाज रहेछे एटले अजव्यने पण क्रिया केवल नवमा ग्रैवेयकसुधी गति कही छे; पाछो ए डुख डुर्गतिमां पडेछे.॥६७॥ जे कोइ मूर्ख मनुष्य व्यवहारमांज रहे अने जे जीव पर्याय बुद्धिवंत छे ते शुज गतियो जीव होय तो जली एवी पर्याय बुद्धि धारेछे तेने तो बाह्य क्रियानुं अवलंबन सदाय कह्युंछे ॥ ६ए ॥

हवे व्यवहारे महामूढ छे तेनुं वर्णन करेछेः- अथ महामूढ बर्ननः-

॥ चोपाईः॥-जेसे मुगध धान पहिचाने; तुष तंडुलको जेद न जाने; तैसे मूढमती व्यवहारी; लखे न बंध मोष विधि न्यारी ॥७०॥ दोहराः॥-कुमति बाहिज दिष्टिसो, बाहिज क्रिया करत, माने मोष परंपरा, मनमें हरष धरंत ॥ ७१ ॥ शुद्धात्तम अनुजो कथा, कहे समकिती कोइ, सो सुनिके तासों कहे, यह सिवपंथ न होइ ॥ ७२ ॥

अर्थः-जेम कोइ मननो जोलो पुरुष छे ते धानने तो ओलखे पण तूस अने तंडुलमां जिन्नता छे ते न जाणे तेम, जे व्यवहारी मूढमति छे तेतो बंधविधि अने मोक्षविधि जूदो जूदो लखी शके नही; केवल विधि जाणे ॥ ७० ॥ जे कुमति होय ते पर्याय बुद्धिथी शाता वेदनीय पणे समाधि सुख जाणीने बाह्य द्रष्टिथी तेनी हेतुरूप बाह्यक्रिया करे अने बाह्यक्रियामां मग्न होय तो तेथी तेने निर्जरा मानीने मोक्ष

परंपरा माने अने मनमां आनंद पामे ॥ ३१ ॥ ते मूढने कोइ समकिती जीव शुद्ध आत्मानी अनुभव दशाने मोक्षनुं कारण कहे तो तेनुं वचन सांभलीने तेने एवुं कहे के ए रीतेतो मोक्षमार्ग थाय नही ॥ ३२ ॥

हवे मूढ तथा ज्ञानीनुं लक्षण कहेछेः—अथ मूढ तथा ज्ञानी लक्षण कथनः—

॥ कवितः॥— जिन्हके देह बुद्धि घट अंतर, मुनि मुद्रा धरि क्रिया प्रवानहि; ते हिय अंध वंधके करता, परम तत्वको भेद न जानहि; जिन्हके हिये सुमतिकी कनिका, वाहिज क्रिया भेष परमानहि; ते समकिती मोष मारग मुष, करि प्रस्थान भव स्थिति भानहि ॥ ३३ ॥

अर्थः— जेना हीयामां देह बुद्धि रहेछे एटले देहधारी ने पण भिन्नपणे जाणतो नथी अने मुनीश्वरनी मुद्रा धारिने क्रियानेज प्रमाण करेछे, तेतो हीयानो अंध छे अने बंधनो करनार छे अने परम तत्त्वके० मोक्ष तत्त्वना भेद ने जाणतो नथी अने जेना हैयामां सम्यग् दृष्टिने लीधे सुबुद्धिनी करणीका जागी तेतो बाह्य क्रियाने भेष रूप प्रमाण करेछे. तेनेतो समकिती कहीए;ते जीव मोक्षमार्ग ने सन्मुख प्रस्थान के० प्रयाण करीने भवस्थितिने निश्चयेभांजे छे ॥३३॥

हवे संक्षेपथी निःकेवल उपादेयरूप मोक्ष मार्गनो उपदेश देछेः—

अथ मोक्षको उपदेश संक्षेप मात्र कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— आचारिज कहे जिन वचनको विसतार, अगम अपार है कहेंगे हम कितनो!, वहुत वोलवेसों न मकसूद चुप भली, वोलीए सुवचन प्रयोजन है जितनो; नानारूप जलपसों नाना विकल्प उठे, ताते जेतो कारिज कथन भलो तितनो; शुद्ध परमातमको अनुभो अभ्यास कीजे, यहे मोष पंथ परमारथ है इतनो ॥ ३४ ॥ दोहराः ॥— सुद्धातम अनुभोक्रिया, शुद्ध ज्ञान दृग दौर, मुकति पंथ साधन वहै, वाग जाल सव और ॥ ३५ ॥

अर्थः—आचार्यजी शिष्यने कहे छे. अहो! शिष्य! जिनेश्वरनां वचननो विस्तार तो नय प्रमाण करीने अगम अपार छे. अमे केटलोक कहीए, आहीं बहु बोलवुं ते अमारी मकसुद नथी तेथी चुप रहेवुं तेज ठीक छे, अने जेटलुं प्रयोजन छे तेटलुंज बोलवुं पण नाना प्रकारनु जल्प के० बोलवुं कहिये तो नाना प्रकारना विकल्प उठेछे, तेथी जे एक कार्य छे तेपुरतुंज बोलवुं बस छे;शुद्ध परमात्म द्रव्यना अनुभव योगना अभ्यास करीए एज मोक्ष मार्ग जाणीए, बधी वातमां एटलोज परमार्थ छे ॥ ३४ ॥ जे क्रियाथी शुद्ध आत्मानो अनुभव थाय तेज क्रियाछे अने शुद्ध ज्ञान दृष्टिनी दोर तेज मुक्ति पथनुं कारण छे. बीजु सर्वे वचनाडंबरछे ॥ ३५ ॥

हवे शुद्ध जीव द्रव्यनुं वर्णनः— अथ शुद्ध जीव द्रव्य बर्ननः—

॥ दोहराः—॥ जगत चक्षु आनंदमय, ज्ञान चेतना भास; निर्विकल्प शाश्वत सुथिर, कीजे अनुभो तास. ॥ ७६ ॥ अचल अखंडित ज्ञानमय, पूरन वीतममत्व, ज्ञान गम्य बाधा रहित, सो है आतम तत्व. ॥ ७७ ॥

अर्थः— जे पदार्थ जगत्मां चक्षुजेवो छे अने आनंदमय छे,जेनी ज्योति ज्ञान अने चेतना छे, जेमां कोई विकल्प नथी, भेद नथी, अने शाश्वतो छे तथा स्थिर छे, जे पदार्थनो अनुभव करीए तो मुक्ति पामीए. ॥ ७६ ॥ जे कोईकाले पोताना स्वभावथी चलायमान थाय नही एवो अखंडित ज्ञानमयछे, संपूर्ण समाधिवंत अने ममत्व रहितछे, इंद्रिय ग्राह्य नही तेथी ज्ञान गम्य छे अने अछेद्य अभेद्यपणाथी बाधा रहित छे, तेज आत्म तत्व कहीए. ॥ ७७ ॥

॥इति श्री समयसार नाटक ग्रंथनो दशम सर्व विशुद्धि नामा द्वार बालाबोधरूप संपूर्ण थयो.॥

॥ दोहराः ॥— सरव विसुद्धी द्वार यह, कह्युं प्रगट शिवपंथ; कुंद कुंद मुनिराज कृत, पूरन भयो गरंथ. ॥ ७८ ॥

अर्थः— जे द्वारमां आत्मानी सर्व विशुद्धि पामिये तेज द्वार कह्युं, ते प्रगटपणे मोक्षनो मार्ग कह्यो छे. श्री सीमंधर स्वामीनी वाणी सांभलीने श्री कुंदकुंदाचार्ये आग्रंथ कीधो. एवी संप्रदाय वातछे, ते ग्रंथ संपूर्ण थयो. ॥७८॥

हवे ग्रंथ कर्त्तानुं नाम अने ग्रंथनो महिमा कहेछेः—अथ ग्रंथ व्यवस्था कथनः—

॥ चोपाईः ॥— कुंद कुंद मुनिराज प्रवीना; तिन्ह यह ग्रंथ इंहालों कीना; गाथा बद्ध सु प्राकृत बखानी; गुरु परंपरा रीति बखानी. ॥७९॥ भयो ग्रंथ जगमें विख्याता, सुनत महा सुख पावहि ज्ञाता; जे नवरस जगमांहि बखाने; ते सब रसमें सार समाने. ॥ ८० ॥ दोहराः—॥ प्रगट रूप संसारमें, नवरस नाटक होइ; नवरस गर्भित ज्ञानमें, विरला जाने कोइ ॥ ८१ ॥

अर्थः— कुंद कुंद नामे मुनिराज ते अध्यात्ममां प्रवीण थया, ते आचार्ये आ सर्व विशुद्धिनामा द्वार लगि आ ग्रंथ कीधो. ते ग्रंथ प्राकृत गाथाबद्ध भलीवाणी प्रकाशी आ वाणीने गुरु संप्रदायथी अमृतचंद्र आचार्ये वखाणी ॥ ७९ ॥ आ ग्रंथनी टीका व्याख्यान करवाथी कुंद कुंदाचार्यनो करेलो ग्रंथ जगत्मां विख्यात थयो, तेने सांभली ज्ञाता होय ते महासुख पामे. जगत्मां जे नवरस वखाण्या छे, ते सर्व रसमां सार रस ते ए समयसार नाटकमां समाई रह्याछे. ॥ ८० ॥ संसारमा ए वात प्रगट छे के जे नाटक होय ते नव रसमय होय, पण शांतरसमां जे ज्ञान छे, तेमां नवे

रस गर्भित छे. तेने तो कोई विरलाज जाणेछे.॥८१॥ हवे नव रसनुं वर्णन करतां नव रसनां नाम कहेछेः–अथ प्रथम नव रसके नामः–॥ कवित्त छंदः॥–प्रथम शृंगार वीर दूजो रस, करुना तृतिय जगत सुखदायक; हास्य चतुर्थ रुद्र रस पंचम, छठम सुरस बिभछ बिभायक; सत्तम भय अष्टम रस अदभुत, नवमो शांत रसनिको नायक; ए नवरस एई नव नाटक, जो जहां मगन सोइ तहां लायक ॥ ८२ ॥

अर्थः–प्रथम शृंगार रस,बीजो वीर रस,अने त्रीजो करुणा रस,ते जगत्मां सुखदायक छे.चोथो हास्य रस,पांचमो रौद्र रस,अने छठो बिभत्स रस, ते विभायक कहेतां चित्तनो भंग करनार छे. सातमो भय रस, आठमो अद्भुत रस, अनेनवमो शांत रस ते सर्व रसनो नायक छे. ए नव रस कहिए. ते नव रस नाटक रूप होय. जे प्राणी जे रसमां मग्न थई रह्यो छे तेने ते रस लायक छे. ॥ ८२ ॥

हवे नव रसना स्थाई भाव कहेछे;–अथ रस अवस्था कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–सोभामे सिंगार वसै वीर पुरुषारथमे, हियेमे कोमल करुना रस वखानिये; आनंदमे हास्य रुंड मुंडमे बिराजे रुद्र, बीभछ तहां जहां गिलान मन आनिये; चिंतामे भयानक अथाहतामे अदभुत, मायाको अरुचि तामे शांत रस मानिये; एई नव रस भवरूप एई भावरूप, इन्हको विलेछन सुदृष्टि जग जानिये. ॥ ८३ ॥

अर्थः–शोभामां शृंगार रसनो निवास छे. अर्थ साधन रूप पुरुषार्थमां वीर रसनो वास छे. हृदयनी कोमलतामां करुणा रसनो वास छे. आनंदनी प्राप्तिमां हास्य रसनो वास छे. रण संग्राममां रूंड मूंडपडेलां होय, त्यां रौद्र रसनो वास छे. कोई सुगामणु स्थानक जोई मनमां ग्लानी आवे, त्यां बिभत्स रसनो वास छे. चिंतामां भय रसनो वास छे. जे कोई अथाग अघटमान वस्तु जाणिए त्यां अद्भुत रसनो वास छे. ज्यां मायानी अरुचि होय तहां शांत रसनो वास प्रमाण कहिए. ए नव रस छे ते भवरूप के० संसार रूप पण छे, अने एहिज नव रस भाव के० उत्तम भावरूप पण छे; ए नव रसनो विलेछन के० विवेक जे छे ते तो जगत्मां सुदृष्टिथी जाणीए ॥८३॥

हवे एज नव रस भावरूप ज्ञानमां गर्भित छे ते एकज ठेकाणे देखाडे छेः–

अथ नव रस ज्ञान गर्भित एकीभूत कथनः–

॥ छपय छंदः॥– गुन विचार सिंगार, वीर उद्दिम उदार रुप; करुना सम रसरीति, हासहिरदे उछाह सुख; अष्ट करम दल दलन, रुद्र वरते तिहि थानक; तन विलेछ बीभछ, छंद दुखदसा भयानक; अदभुत अनंत बल चिंतवत, शांत सहज वैराग धुव; नव रस विलास परगास तब, जब सुबोध घट प्रगट हुव ॥ ८४ ॥

अर्थः— ज्ञानादिक गुणेकरी आत्म विजूषित देखिये त्यांतो शृंगार रस उपज्यो १, अने आत्मानेविषे निर्जरा प्रमुखनो उद्यम देखिये त्यांतो उदार प्रधान वीर रस छे २, ज्यारे आत्माने उपशम रसनी रीते देखिये त्यारे करुणा रस जाणीए ३, ज्यारे एने अनुजवमां उत्साह अने सुखउपजे छे ते तो हैयामां हास्य रस उपजे छे ४, महा बलवान आठ कर्मना अनंत प्रदेशी दल छे तेनो दलन करतां देखीए तो त्यां आत्मा रौद्र रसमयि थई रह्यो छे ५, ज्यारे पुजलनुं स्वरूप विचारीये छीए त्यारे बिज्ञत्स रस छे ६, ज्यारे आत्मा पोतानुं स्वरूप न जाणे अने दुंद दुःखदशामां पड्यो छे, त्यारे तो जय रसमां देखीए ७, अनंत वीर्यनुं ज्यारे चिंतवन करीए त्यारे तो आत्मा अद्नुत रस पामे ८, ज्यारे राग द्वेष निवारीने सहज वैराग्यने ध्रुव के० निश्चल धारे छे, त्यारे आत्मा शांत रसमय पामीए ए, ए नव प्रकारना जाव रसना विलास नो प्रकाशतो ज्यारे घटमां सुबुद्धि प्रगट थाय त्यारेज थाय. ॥ ७४ ॥

हवे कुंदकुंदाचार्यकृत आ ग्रंथ छे तेनी स्तुति करेछेः—अथ ग्रंथ स्तुतिः—

॥ चोपाईः ॥—जब सुबोध घटमें परगासे, तब रस बिरस विषमता नासे, नव रस लखे एक रसमांही, ताते बिरस जाव मिटि जांही. ॥७५॥ दोहरा—॥ सब रस गर्जित मूल रस, नाटक नाम गरंथ; जाके सुनत प्रवान जिय, समुझे पंथ कुपंथ. ॥ ७६ ॥

॥चोपाईः॥—वरते ग्रंथ जगत हित काजा, प्रगटे अमृतचंद मुनि राजा; तब तिन्ह ग्रंथ जानि अति नीका, रची बनाइ संसकृत टीका ॥ ७७॥ दोहराः ॥—सर्व विशुद्धि द्वारलों, आए करत बखान; तब आचारज जक्तिसों, करे ग्रंथ गुन ज्ञान. ॥ ७८ ॥

॥ चोपाईः ॥—अदनुत ग्रंथ अध्यातम बांनी, समुझे कोऊ विरला ज्ञानी, यामे स्यादवाद अधिकारा, ताको जो कीजे विसतारा ॥ ७ए ॥ तो गरंथ अति शोजा पावे वह मंदिर यह कलस कहावे, तब चित अमृत वचन गढखोले, अमृतचंद आचारज बोले ॥८०॥ दोहरा.—॥ कुंदकुंद नाटकविषे, कह्यो दरव अधिकार, स्यादवादने साधि मे, कहों अवस्था द्वार ॥ ८१ ॥ कहों मुकति पदकी कथा, कहों मुक्तिको पंथ, जैसे घृत कारज जहां, तहों कारन दधिपंथ ॥ ८२ ॥ अर्थ स्पष्ट ॥

॥ चोपाई ॥—अमृतचंद बोले मृदु बानी, स्यादवादकी सुनो कहानी, कोऊ कहै जीव जगमांहीं, कोऊ कहै जीव है नाही ॥ ८३ ॥ दोहराः ॥—एक रूप कोऊ कहै, कोऊ अगनित अंग; छिन जंगुर कोऊ कहै, कोऊ कहै अजंग ॥ ८४ ॥ नय अनंत इह विधि कही, मिले न काहू कोइ, जो सब नयसाधन करे, स्यादवाद है सोइ ॥ ८५ ॥ स्यादवाद अधिकार अब, कहों जैनको मूल, जाके जाने जगत जन, लहै जगत जलकूल ॥ ८६ ॥

अर्थः—हवे संगतनी वात कहेछेः—ज्यारे घटमां सुबोध प्रकाशे छे, त्यारे ए रसस हित छे अने ए विरस छे. एवो विषय ममता भाव छे, ते सर्व नाश पामेछे. एनो हेतु ए छे के जे नव रस छे तेने एक भाव रसमांज लखे के० जुवे, तेथी विरस भाव मटीने एकज रसमां आत्मानुं रहेवुं थाय. ॥ ८५ ॥ एम सर्व रसोमां गर्भित एक र समय थयलो एवो आ समयसारनाटक नामे ग्रंथ श्री कुंदकुंदाचार्यजीए कह्यो, जेना अर्थ भावने सांभलता प्रमाणिक जीव छे ते मार्ग कुमार्गनो विचार समजे. ॥ ८६ ॥ प्रथम जगत्वासी जीवोने हितकारी कार्यनो ग्रंथ प्रवर्त्तमान थयो ते पछी अमृत चंद नामा आचार्य प्रगट्या तेणे आ ग्रंथ अति श्रेष्ठ जाणीने आ ग्रंथनी टीका ब नावी, गाथानुं रहस्य लइने काव्य बंध कह्यो ते कहीएछीए. ॥ ८७ ॥ श्री अमृतचं दजी एज ग्रंथनुं व्याख्यान करता सर्व विशुद्धि द्वार सुधी आव्या. आंही ग्रंथ सं पूर्ण थयो जाणी श्री अमृतचंद्र आचार्य भक्तिना वशथी ग्रंथनुं गुण ज्ञान करे छे. ॥ ८८ ॥ आ ग्रंथ अध्यात्म वाणीमां अद्भुत थयो, पण आ ग्रंथने कोई विरला ज्ञान वंत पुरुष समजे. आ ग्रंथमां स्याद्वादनो अधिकार छे, ते अल्प बुद्धि स्थूलमतिने समजवो मुशकेल छे. तेथी ते स्याद्वादनो जो विस्तार करीये तो सारु. ॥ ८९ ॥ जे थकी आ ग्रंथ अति शोभा पामे एम विचारी आ ग्रंथरूप मंदिर तेना उपर स्याद्वा दनो विस्तार करिये तो ते कलशरूप थाय. त्यारे महारा चित्तमां अमृत जेवा वचन गढो के० धारण थइने खुले. एम दोष रहितनी परे श्री अमृतचंद आचार्य बोले छे के ॥९०॥ श्री कुंदकुंदाचार्यना करेला नाटक ग्रंथमां जीव अजीव द्रव्यनो अधिकार कह्यो. हवे हुं स्याद्वाद नयनी अवस्थानो द्वार कहुंछु, अने साध्य वस्तुनी अवस्था नो द्वार कहुंछुं. ॥ ९१ ॥ वाणुमां दोहरानो अर्थ सुलभ छे ॥ ९२ ॥ अमृतचंद आ चार्य एवी कोमल वाणी बोल्या के अहो ! शिष्य! स्याद्वादनी कथा हुं कहुंछुं ते सां भलो. कोई अस्तिवादि तो एम कहे छे के जगत्मां जीव वस्तु छे, अने कोई नास्ति वादी कहे छे के, जगत्मां जीव वस्तु नथी. ॥ ९३ ॥ कोई अद्वैत वादी ब्रह्मने एक रूप कहेछे. कोई नैयायिक वैशेषिक जीवने अगणितपणे कहेछे. कोई बौधमतीने लीधे जीवने क्षणभंगुर कहेछे; कोई सांख्यमतीने लीधे जीवने अभंगज कहेछे. ॥ ९४ ॥ अर्थ समजवाना मार्गने नय कहिए, ते समजवाना मार्ग अनंत छे; तेने लीधे नय पण अनंत कहिये; तेमां कोई नय कोई नयने मळे नही, विरोधी छे. हवे आंही जे सर्व नयनुं साधन करे, एटले सर्व नयने साचा साधिने देखाडे, तेने स्याद्वादि जाणीए. ॥ ९५ ॥ ते स्याद्वादनो अधिकार हवे हुं सर्व कहुं छुं. एज

स्याद्वाद आगमनुं मूल छे. जे स्याद्वादना जाण प्रवीण जगत्वासी लोक छे ते संसार जलधिनो कांठो पामेछे. ॥ ७६ ॥

हवे नयजालथी शिष्यने संदेह उपज्यो त्यारे प्रश्न करेछेः–अथ शिष्यप्रश्न गुरु उत्तर कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– शिष्य कहे स्वामी जीव स्वाधीन के पराधीन, जीव एक है किधौ अनेक मानि लीजिये; जीव हे सदीव किधौ नाहि है जगतमांहि ? जीव अविनस्वर के नस्वर कहीजिये; सतगुरु कहे जीव है सदीव निजाधीन, एक अविनस्वर दरव दृष्टि दीजिये, जीव पराधीन छिन नंगुर अनेकरूप, नांहि तहां जहां परजे प्रवान कीजीए. ॥ ७७ ॥

अर्थः–प्रथम शिष्य पुछेछे, स्वामी जीव स्वाधीन छे के पराधीन छे ? जीव एक छे के गणतिमां अनेक छे ? ए केम मनमां जाणवुं. अने जीव कहेवाय छे तो जगत्मां सदाछे के नथी, ए अस्तिपणानो संदेहछे, अने जीव अस्ति के० अविनाशी छे के विनाशी छे. हवे आवी रीतना प्रश्न उपर सद्गुरु कहेछे, के हे ! शिष्य ! जीव वस्तु जगत्मां छे, पण नास्ति न कहीए, अने ते जीव आपणे स्वाधीन छे. अने एकछे यद्यपि गणतीये अनेक छे, तो पण लक्षणथी एक छे. अविनाशी द्रव्य दृष्टि दीजे तो एम ज छे, अने जो पर्याय नय प्रमाण करीये तो जीव पराधीन छे, कर्माधीन छे. अने अवचित मरण देखतां क्षणनंगुर छे. गत्यादिक देखतां अनेकरूप छे. वली अजीव पदार्थ स्थापनानी अपेक्षाये नथी. अने जहां पर्याय प्रमाण छे तिहां एछे. ॥ ७७ ॥

हवे द्रव्य क्षेत्र काल नावे करीने सर्व वस्तुनुं अस्तिनास्तिपणुं कहेछेः–

अथ दरव क्षेत्र काल नाव अस्तिनास्ति कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– सर्व खेत्र काल नाव चारो नेद वस्तुहीमे, अपने चतुष्क वस्तु अस्तिरूप मानिये; परकेचतुष्कवस्तु नासति नियत अंग, ताको नेद दर्व परजाय मध्य जानिये; दरवतो वस्तु खेत्र सत्ता नूमिकाल चाल, सुनाव सहज मूल सकति बखानिये, याही नांती परविकलप बुद्धि कलपना, विवहार दृष्टि अंशनेद परवानिये. ॥ ७८ ॥ दोहराः ॥– हे नाही नाही सु है, है है नाही नाही; यह सरवंगी नय धनी, सबमाने सब मांहि. ॥ ७९ ॥

अर्थः–द्रव्य, क्षेत्र, काल, नाव ए चारे नेद वस्तुमां विचारीए. आंही आपणे वस्तु छे, ते अस्तिरूप मानीए. एटले स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, स्वनावथी विचारीए त्यारे तो सर्व वस्तु अस्तिरूपे छे, अने जो परवस्तुथी ए चारने विचारिये तो वस्तुनुं नास्तिस्वरूप नीपजे छे. एटले परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परनावथी सर्व वस्तु नास्तिरू

पे छे. नियत अंग के० निश्चयनयथी अस्ति छे तेनो भेद द्रव्य पर्यायथी जाणवो. ए चार भेदमां द्रव्यथी वस्तु कहीए; वस्तुनी सत्तानी भूमिने क्षेत्र कहिये; वस्तुनी परिणाम चालथी काल कहीए; सहजनी मूलशक्तिने स्वभाव कहीए. ए रीते बुद्धिनी कल्पना करीने परद्रव्य क्षेत्रादिकना जो विकल्प ग्रहण करिये. जेम के घट वस्तु ग्रहण करवाथी परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभावनी कल्पनाथी नास्ति छे. ए व्यवहार दृष्टिथी वस्तुना अंश भेद प्रमाण थाय. ॥ ए८ ॥ अने ए नथी एवुं कहेवामां स्वद्रव्यादिकनुं अस्तिपणुं लईने परद्रव्यादिकथी नास्तिपणुं लईए तथा ते छे नहि एम कहेवामां प्रथम परद्रव्यादिकनुं अस्तिपणुं ग्रहीए; छे अने नथीज एम केहेवामां फरी परद्रव्यादिकनुं केवल नास्तिपणुंज ग्रहण करिये छिये; एथी सात भांगा उपजे छे; आंही सर्वांग नयना धणी स्याद्वादी सर्व वस्तुमां सर्व भांगा माने छे. ॥ एए ॥

हवे चौद नयना भेदथी एकेक भेदे एकांत पक्षीनी जेवी केहेणी छे तेवी कहेछेः—

अथ चतुर्दश नय भेद एकांत पक्ष कथन नाम स्थापनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— ज्ञानको कारन ज्ञेय आतमा त्रिलोक मेय, ज्ञेयसों अनेक ज्ञान मेल ज्ञेय छांही है; जोलों ज्ञेय तोलों ज्ञान, सर्व दर्वमे विज्ञान, विनाज्ञेय छेत्र ज्ञान जीव वस्तु नांही है, देह नसे जीव नसे देह उपजत लसे, आतमा अचेतन है सत्ताअंसमांही है, जीव छिन भंगुर अज्ञायक सरूपी ज्ञान, ऐसी ऐसी एकंत अवस्था मूढ पाही है ॥ ५०० ॥

अर्थः—प्रथम चउद नयना नाम स्थापना कहेछेः—जे ज्ञेय वस्तुमां ज्ञान उपजेछे, तेथी ज्ञाननुं कारण ज्ञेय छे ए नाम छे, १. त्रण लोक प्रमाणे आत्मा छे, तेथी त्रिलोकमय एवुं नाम छे, २. जेम अनेक ज्ञेय छे, तेम ज्ञान पण अनेक छे. ते अनेक ज्ञान ए नामछे, ३. ज्ञानमां ज्ञेयनी छाया छे ते मेलवुं छे. तेथी मेलन ज्ञेय ए नाम छे, ४. ज्यां सुधी ज्ञेय छे त्यां सुधीज्ञान छे. ज्ञेय उपरांत ज्ञान नथी तेथी ज्यां लगी ज्ञेय ए नामछे ५. सर्व द्रव्य मयी विज्ञान छे. तेनु तेज नामछे. ६. ज्ञेय क्षेत्रने प्रमाणेज ज्ञान छे, तेथी ज्ञेय क्षेत्रमान ए नाम छे. ७. जीव वस्तु जगत्मां नथी. तेथीनास्ति जीव ए नाम छे, ८. देहनो नाश थवाथी जीवनो पण नाश, तेथी जीव नाश ए नामछे ए. देह उपजवाथी जीव विराजे छे, तेथी देह त्यां जीवोत्पाद ए नामछे १० आत्मा छे ते अचेतन पदार्थ छे तेथी अचेतन ज्ञाता ए नाम छे ११. सत्ताना अंश ते जीव कहिए छे, पण आत्मा अंश मात्रछे ए नाम छे १२. जीव छे, ते क्षणभंगुर छे तेथी एज नामछे १३. ज्ञान छे ते ज्ञायक स्वरूपमां नथी तेथी अज्ञायक ज्ञान ए नाम छे १४. एवी एवी एकांत अवस्था मूढ लोको पामे छे ए नयना भेद जाणवा ॥ ५०० ॥

हवे ज्ञाननुं कारण ज्ञेय. एजे प्रथम नय कह्यो तेनो प्रपंच करी देखाडेछे.

अथ ज्ञानको कारन ज्ञेय प्रथम नय यहु कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ मूढ कहे जैसे प्रथम समारि जीति, पीछे ताके पर सुचित्र आछो लेखिये; तैसे मूल कारन प्रगट घट पट जैसो, तैसो तहां [illegible] रूप कारज विशेषिये; ज्ञानी कहे जैसी वस्तु तैसोई सुजाव ताको, ताको [illegible] भिन्न भिन्न पद पेषिये; कारन कारज दोउ एकहीमे निहचे पे, तेरो मत स[illegible] हार दृष्टि देखीये ॥ ५०१ ॥

अर्थः—कोई मूढ मीमांसक [illegible] तने समारी होय तोपछी तेना उपर चित्र सारुं थाय, अने नरसी उपर नरसुं चित्र थाय; तेम ज्ञाननी उत्पत्तिनुं कारण मन छे, पण जेवो घटपट प्रमुख पदार्थ होय ते वुंज तिहांज्ञानरूप कार्य विशेष थाय छे, जो घटपदार्थ जाणवा योग्य होय तो घट ज्ञान होय, अने पट पदार्थमां पट ज्ञान होय, तेथी ज्ञाननुं कारण ज्ञेय छे, हवे तेने स्याद्वाद ज्ञानी एम कहेछे के, अहो जाई! जे जेवी वस्तु छे तेनो स्वजाव पण तेवो ज छे; जे ज्ञानपदार्थ छे तेनो स्वजाव जाणवानोज छे, अने जे ज्ञेयपदार्थ छे ते जाणवा योग्यज छे, आ अर्थ जेदथी ज्ञान अने ज्ञेय ए बने जुदा पद जाणवा. अहीं जे ज्ञेय कारणपणे कह्युं तेज ज्ञान विकल्पे कह्युं, तेथी घटपटादि जगत् छे ते जड पदार्थ दूर रह्या, अने ज्ञान छे तेज सामान्य पणे छे तेथी निश्चय नयथी तो ज्ञानमां ज्ञेय पामिये, पण व्यवहार दृष्टि आपतां तो तारुं मत पण साचुं छे ॥ ५०१ ॥

हवे बीजा एकांत नय आत्मा त्रिलोकमय छे तेनो प्रपंच देखाडे छेः—

अथ डुतिय नय आतमा त्रिलोक प्रमानयहु कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥—कोउ मिथ्यामति लोकालोक व्यापि ज्ञान मानि, समुझे त्रिलोक पिंड आतम दरव है; याहिते सुछंद जयो डोले मुष हु न बोले, कहे या जगतमे हमारोई खरब है; तासों ज्ञाता कहे जीव जगतसों जिन्न पै, जगतको विकासी तोहि याहीते गरव है; जो वस्तु सो वस्तु पररूपसों निराली सदा, निहचे प्रमान स्याद्वादमे सरव है; ॥ ५०२ ॥

अर्थः— कोई नैयायिक, वैशेषिक मिथ्याति छे. ते ज्ञानने लोकालोक व्यापी मानीने एवुं समजे छे के, जीवछे ते विज्ञाननो पिंड छे. अने विज्ञान छे ते लोकालोक व्यापी छे. तेथी आत्मद्रव्य त्रण लोक प्रमाण छे. तेथी पोताने सर्व व्यापी ईश्वर मानीने स्वछंद थको डोले छे. अजिमानमां चड्यो थको बीजाने मूर्ख मानीने कोईनी साथे मुखथी न बोले. जो बोले तो एम कहे के आ जगत्मां हमारीज खरब के०

पे छे. भिन्ना छे. हवे तेने स्याद्वाद ज्ञानी कहे छे के, अहो! भाई! जीव जे छे ते जगत्थी न्यारा छे पण तेना ज्ञानमां जगत्नोविकास छे तेथी ईश्वरपणानो गर्व चढ्योछे पण एवस्तु छे तेतो पोताना स्वरूपमांज रहे छे अने परस्वरूपथी सदा जुदी रहे छे तेथी कहत् अने आत्माने निश्चय नयना प्रमाणथी स्याद्वादमां सर्वथा विरोध पामिए.॥५०२॥
ए करवा त्रीजो एकांत नय ते ज्ञेयथी ज्ञाननो अनेक प्रपंच कहि देखाडेछेः–
दृष्टिथी व अथ तृतीय ज्ञेयसो अनेक ज्ञान कथनः–
स्यादिकवैया इकतीसाः॥–कोउ पशु ज्ञानकी अनंत विचित्राई देखे, ज्ञेयको अकार नानारूप विसतर्यो है; ताहीकों विचारी कहे ज्ञानकी अनेक सत्ता, गहिके एकंत पक्ष लोकनिसों लर्यो है; ताको भ्रम भंजवेकों ज्ञानवंत कहे ज्ञान, अगम अगाध निराबाध रस भर्यो है; ज्ञायक सुभाव परजाईसों अनेक भयो, जद्यपि तथापि एकतासों नहिं टर्यो है; ॥ ५०३ ॥

अर्थः–कोई पशु के० मूर्ख ज्ञाननी अनंत विचित्रता देखेछे. तेनो हेतु कहे छे. जगत्मां ज्ञेय वस्तु अनंत छे, तेना आकार अनंत छे. ते ज्ञानमां परिणमे छे तेथी ज्ञानपण नानाप्रकारथी विस्तारे छे, अने तेना नाना रूप विस्तारने विचारीने ज्ञाननी अनंत सत्ता माने छे. एवो एकांत पक्ष लईने प्रतिवादी लोकथी लडे छे. हवे स्याद्वादी ज्ञानवंत ते एकान्तपक्षीना भ्रम भांजवाने एम कहेछे के, अहो! भाई! तुं ज्ञानने ज्ञेयनो आकार परिणम्यो जाणीने केम भूले छे? ज्ञान छे ते अगम्य वस्तु छे; निराबाध रसथी भर्युं छे. ज्ञाननो ज्ञायक स्वभाव छे, तेथी यद्यपि पर्याय शक्ति ज्ञान अनेकरूप थयुं छे. तथापि ज्ञायक स्वभावथी ज्ञाननी एकताज छे. पण ते एकताथी ज्ञान टलतुं नथी. ॥ ५०३ ॥

हवे चोथा नयमां ज्ञाननेविषे ज्ञेयनी छायानो प्रपंच देखाडे छेः–

अथ चतुर्थ ज्ञेय छाया यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ कुधी कहे ज्ञानमांहि ज्ञेयको आकार, प्रतिभासि रह्यो है कलंक ताहि धोइए; जब ध्यान जलसों पखारिके धवल कीजे, तब निराकार शुद्ध ज्ञानमई होइए; तासों स्याद्वादी कहे ज्ञानको सुभाउ यहे, ज्ञेयको आकार वस्तु नांहि कहा खोइए; जैसे नाना रूप प्रतिबिंबकी झलक दीसे, जदपि तथापि आरसी विमल जोइए. ॥ ५०४ ॥

अर्थः–कोई कुधी के० कुबुद्धि वैशेषिक मतवालो एम कहे छे के, जो जगत्वासी जीवना ज्ञानमांज ज्ञेयनो आकार प्रतिभासे छे, ते आकार तो निराकार ज्ञाननुं कलंक उपजेछे. तेने धोई नाखवुं जोइए, तेथी निराकारनुं ध्यान लगाडवुं तेतो जल

थयुं, ते जलथी प्रक्षालीने ते ज्ञानने उज्वल करिये तेवारे निराकार शुद्ध ज्ञानमय थवाय छे, हवे आंही स्याद्वादी तेने कहे छे. अरे! जाई! ज्ञाननो एज स्वजाव छे, के ज्ञेयनो आकार वस्तुमां जासे तो आंही आकार गमावी नाखवानी शुं मतलब छे? जेम आरसीमां नाना रूप प्रतिबिंबनो फलकाट देखाय छे, तो पण आरसी निर्मल जोइए पण तेने प्रतिबिंबनुं कलंक कोई न कहे. ॥ ५०४ ॥

हवे पांचमो एकांतनय ते ज्यां लगे ज्ञेय त्यां लगे ज्ञान तेनो प्रपंच कही देखाडे छे,

अथ पंचम जौलों ज्ञेय तौलों ज्ञान यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ अज्ञ कहे ज्ञेयाकार ज्ञान परिनाम जौलों, विद्यमान तौलों ज्ञान प्रगट है; ज्ञेयके विनाश होत ज्ञानको विनास होइ, ऐसी वाके हिरदे मिथ्यातकी अलट है; तासों समकितवंत कहे अनुभौ कहान, परजे प्रवान ज्ञान नानाकार नट है; निरविकलप अविनस्वर दरव रूप, ज्ञानज्ञेय वस्तुसों अव्यापक अघट है. ॥ ५०५ ॥

अर्थः–कोई अजाण पुरुष एवुं कहेछे के जेवो ज्ञेयनो आकार तेवुं ज्ञाननुं परिणाम थायछे, तेथी ज्ञेय विद्यमान ज्यां लगी होय, त्यां लगी ज्ञान प्रगट रहेछे अने ज्ञेयनो विनाश थये ज्ञाननो पण विनाश थायछे, एवी वात मिथ्यामतीना हृदयमां मिथ्यानी अलट लागी रहेछे; हवे तेनाथी सम्यक्त्ववंत स्याद्वादी अनुजवनी कथा कहेछे. अरे! जाई! जेम कोई नट पुरुष छे ते नाना प्रकारना जेष धारीने नाना प्रकारनां नाम धरावेछे, तेम ज्ञानरूप नट नाना प्रकार धरीने पर्याय प्रमाणे बहुरूपी थायछे पण जेवुं नट द्रव्य एक छे तेवुं ज्ञान वस्तु पण निर्विकल्प एक छे, द्रव्यपणे अविनस्वर छे. अने ज्ञान वस्तु ते ज्ञेय वस्तुथी अव्यापक छे एटले ज्ञेयवस्तु ज्ञान वस्तुमां एकमेक न थाय तेथी ज्ञान ज्ञेयनी एकता अघटती छे ॥ ५०५ ॥

हवे छठा एकांतनय सर्व द्रव्यमयी आत्मानो प्रपंच कही देखाडे छेः–

अथ षष्टम सर्व दर्वमय आतमा यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥–कोउ मंद कहे धर्म अधर्म आकास काल, पुदगल जीव सब मेरो रूप जगमें; जाने न मरम निज माने आपा परवस्तु, बंधे दिढ करम धरम खोवे डगमे; समकिती जीव सुद्ध अनुजो अज्यासे ताते परको ममत्व त्याग करे पग पगमे; अपने सुजावमे मगन रहे आठों जाम, धारा वाही पंथिक करावे मोषमगमे ॥५०६॥

अर्थः–कोई मूर्ख ब्रह्माद्वैतवादी एवुं कहे छे के जो कोईना मतमां धर्म, अधर्म, आकाश, काल, जीव, पुद्गल ए छए द्रव्य कहेवाय छे ते सर्व ब्रह्म छे. तेथी मारुं पण रूप सर्व जगत्मां विस्तरि रह्युं छे. बीजो पदार्थ कोई नथी. आंही गुरु शिष्यने

कहे छे. अहो ! शिष्य ! एतो ब्रह्माद्वैतवादी मूढ मती छे, ते पोतानो धर्म जाण तो नथी; अने पर वस्तु छे तेने आत्मा जाणे छे. एवा मिथ्यात्वथी ए दृढ कर्म बांधे छे. अने जगत्मां पोतानो धर्म खोवे छे. पोतानो स्वभाव गमावे छे. जे सम किती जीव होय तेतो "सोहं" बीजना ध्यानथी शुद्ध अनुभवनो अभ्यास करे, तेथी आत्मतत्त्व शुद्धज पामे. अने पगले पगले परवस्तुनो त्याग करे, अने पोताना शुद्ध स्वभावमां आठे प्रहर मग्न रहे, तेथी ज्ञान धारामां वहेनारो मोक्ष मार्गमां चालनारो कहेवाय छे ॥ ६ ॥

हवे सातमो एकांत नय जे ज्ञेय क्षेत्र प्रमाण ज्ञान तेनो प्रपंच कहि देखाडेछेः–

अथ सप्तम ज्ञेय क्षेत्र प्रमाण ज्ञान यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ सठ कहे जेतो ज्ञेयरूप परवान, तेतो ज्ञान ताके कहुं अधिक न ओर है; तिहूं काल पर छेत्र व्यापी परनयो माने, आपा न पि छाने ऐसी मिथ्या दृग दौर है; जैन मती कहे जीव सत्ता परवान ज्ञान, ज्ञेयसों अ व्यापक जगत सिर मोर है; ज्ञानकी प्रभामे प्रतिबिंबित विविध ज्ञेय, जदपि तथापि थिति न्यारी न्यारी ठौर है ॥ ७ ॥

अर्थ– कोई मूर्ख एम कहे छे के जेटलुं ज्ञेय वस्तुना आकाररूपनुं प्रमाण छे एटले ज्ञेयनुं जेटलुं एक नाहानुं मोहोटुं प्रमाण छे, तेटलुं ज्ञाननुं प्रमाण छे; तेथी कंई वधारे बीजुं प्रमाण नथी. एम ज्ञानने त्रणे कालमां परक्षेत्र व्यापी अने पर वस्तुथी परिणम्यो, एटले ज्ञेयथी एक मेक थयो ज्ञानने माने छे. पण ज्ञानने आ त्मारूप जाणे नहीं; एवी मिथ्या दृष्टिनी दोर छे. हवे तेने जैनमती स्याद्वादी कहे छे, अहो! भाई! जेटला आकाश क्षेत्रमां जीव सत्ता छे तेटलाज प्रमाण ज्ञान छे. अने ज्ञान छे ते घट पटादिक ज्ञेय पदार्थथी अव्यापक छे एज जगत्ना मस्तके मुगट समान छे. जो पण ए ज्ञाननी प्रभामां नाना प्रकारना ज्ञेय पदार्थ प्रतिबिंबित थई रह्याछे, तोपण ज्ञाननी स्थिति जूदीज छे. अने ज्ञेयनी स्थिति पण जुदीज छे. अने ज्ञाननुंठेकाणुं आत्मा छे ते पण जुदोज छे, अने ज्ञेयना पृथिवी प्रमुख जे छे काणा छे ते पण जुदांज छे ॥ ७ ॥

हवे आठमो नय नास्तिकवादी एम कहे छे के वस्तु नथी एज एकांत नय छे. तेनो प्रपंच कही देखाडे छेः–अथ अष्टम नास्तिकवादी वस्तु नास्ति यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ शुन्यवादी कहे ज्ञेयके विनास होत, ज्ञानको विना श होइ कहो केसे जीजिये; ताते जीवितव्यताकी थिरता निमित्त अब, ज्ञेयाकार प रिनामनिको नास कीजिये; सत्यवादी कहे भैया हूंजे नांही षेदखिन, ज्ञेयसों विर

चि ज्ञान भिन्न मानी लीजीये; ज्ञानकी शकती साधि अनुभो दशा अराधि, करमकों त्यागिके परम रस पीजिये ॥ ८ ॥

अर्थः—कोई बौध मतिनो भेद शुंन्यवादी एम कहे छे के, ज्ञेय छते ज्ञान उपजे छे, अने ज्ञेयनो विनाश थए ज्ञाननो पण विनाश थाय छे. अहो! प्रतिवादी! तमेज कहो छो, के ज्ञान ते जीवनुं रूप छे. तो ज्ञाननो विनाश थएथी जीव पण विणसी जाय. तो जीववुं केम होय? तेनो उत्तर के जीवितव्यनी स्थिरताने कारण एटले शाश्वत जीव राखवा निमित्त ज्ञानमां जे ज्ञेयाकार परिणाम उपजे छे, तेनो नाश करिये तो जीवनी स्थिरता थाय, हवे ते उपर सत्यवादी जैनी कहे छे. अहो! भाई! एम खेदमां खिन्न के० आकुलव्याकुल न थवुं. ज्ञेयथी विरचिने उदासीन थईने ज्ञान वस्तु भिन्नज मानी लह्ये. ए ज्ञाननी ज्ञायक शक्ति छे, ते शक्तिनुं साधन करीने अनुभव दशामां ए ज्ञायकने आराधिने कर्मने त्यागी परम रस पीजीए ॥ ८ ॥

हवे नवमो एकांत नय देहनो नाश थातां जीवनो नाश तेनो प्रपंच कही देखाडेछेः—

अथ नवम देहके नाश होते जीवको नाश यह कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ क्रूर कहे काया जीव दोउ एक पिंरु, जब देह नसैगी तबहीं जीव मरेगो; छायाको सो छल किधों मायाकोसो परपंच, कायामें समाइ फिरि कायाकों न धरेगो; सुधी कहे देहसों अव्यापक सदीव जीव, समोपाइ परको ममत्व परिहरेगो; अपने सुभाउ आइ धारना धरामे धाइ, आपुमे मगन व्हेके आपा शुद्ध करेंगो. ॥ ९ ॥ दोहराः ॥— ज्यों तन कंचुकि त्यागसों, विनसे नांहि भुयंग; त्यों शरीरके नासते, अलख अखंमित अंग. ॥ १० ॥

अर्थः— कोई चार्वाक मती क्रूर एम कहे छे के, काया अने जीव बने एक पिंम छे, तेथी ज्यारे देह नाश पामशे त्यारे जीव पण नाश पामशे. जेम वृक्षनो विनाश थये तेनी छाया पण विनाश पामे छे, तेम काया अने जीवनी छायानो छल बनी रह्यो छे. अथवा इंद्रजालनी मायानो प्रपंच बनी रह्यो छे, तेथी ते कायामां समाइने एटले दीपकनी परे ओलवाइने पाछो कायाने धरशे नही. हवे तेने सुधी के० पंमित स्याद्वादी कहेछे, अहो! भाई! जीव छे ते देहथी सदा अव्यापक छे. एटले जीव देहपणे परिणम्यो नथी. आ जीव पोतानो समय प्रस्ताव पामीने परनो ममत्व छोमशे. त्यारे पोताना शुद्ध स्वभावमां आवीने, धारनाधरामेधाइके एटले स्थिरता रूप भूमिमां रहीने आप स्वरूपमां आपज मग्न थईने आत्मानी शुद्धता करशे ॥ ९ ॥ जेम सर्पना शरीर उपर कांचली आवे, ते कांचलीना तजवाथी भुजंग विणशे

नहीं, तेमज शरीरनो त्याग थतां अलष जीव छे ते अखंडित अंगे रहेछे पण जीवनो विनाश थतो नथी. ॥१०॥

हवे दशमो एकांत नय देह उपजवाथी जीव उपजे तेनो प्रपंच कही देखाडेछेः—

अथ दशम देह उपजत जीव उपजे यह कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ दुरबुद्धि कहे पहिले न हूंतो जीव, देह उपजत उपज्यो हे अब आइके; जोलों देह तोलों देहधारी फिर देह नसे, रहेगो अलष ज्योति ज्योतिमे समाइके; सदबुद्धी कहे जीव अनादिको देह धारी, जब ज्ञान, होइगो कबहीं काल पाइके; तबही सो पर तजि अपनो सरूप भजि, पावेगो परम पद करम नसाइके ॥ ११ ॥

अर्थः—कोई दुष्ट बुद्धि धरनार एक ममत्व वालो एम कहेछे के, पहेलो जीव हतो नहीं. अने पृथ्वी, जल, तेज, वायु, ए चार भूतना मिलापथी देह उपज्यो तेमां ज्ञान शक्तिरूप जीव आवी उपज्यो. हवे ज्यांसुधी देह वर्ते त्यांसुधी देहधारी नाम धरावे छे अने पाछो देहनो नाश थशे त्यारे अलख पुरुष ज्योति रूपी छे, ते ज्योति मां समाइ जाशे. हवे सद्बुद्धि स्याद्वादी कहेछे, अहो! भाई! जीव अनादि कालथी देह धारी मूर्त्तिक छे एटले नवो उपनो नथी. अने ए जीव कोई काले काललब्धि पामीने ज्ञानी थशे, त्यारे देहादिक पर वस्तुने त्यागिने पोताना स्वरूपने भजशे. पछी कर्मोनो नाश करीने परम पदने पामशे. ॥ ११ ॥

हवे अग्यारमो एकांत नय आत्मा अचेतन तेनो प्रपंच विस्तारथी कहे छेः—

अथ एकादशम आतमा अचेतन यह कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ पक्षपाती जीव कहे ज्ञेयके आकार, परिनयो ज्ञान ताते चेतना असत हे; ज्ञेय के नसत चेतनाको नास ता कारन, आतमा अचेतन त्रिकाल मेरे मत है; पंडित कहत ज्ञान सहज अखंडित हे, ज्ञेयको आकार धरे ज्ञेयसों विरत हे; चेतनाके नाश होत सत्ताको विनाश होय, याते ज्ञान चेतना प्रवान जीव तत हे ॥ १२ ॥

अर्थः—कोई पक्षपाती हठवादी जीव कहेछे, ज्ञान छे ते ज्ञेयनो आकार परिणम्यो होय, अने आकार परिणाम असत् छे, तेथी चेतना पण असत् छे. तेनो हेतु कहे छे; जुओ ज्ञेयनो नाश थाय त्यारे चेतनानो नाश थाय छे. जे सत् वस्तु होय तेनो तो विनाश क्यारे पण न थाय. ते कारणथी चेतना असत् थई तेथी त्रणे कालमां आत्मा अचेतन थयो एवो मारो मत छे. हवे पंडित स्याद्वादी कहे छे, अहो! भाई! ज्ञान वस्तु सहज स्वभावे अखंडित छे, अने ज्ञेयनो आकार धरेछे

तोपण ज्ञेयथी विरक्त छे. जेम आरसीमां आकार भासे तोपण ते आकाररूप आरसी न थाय, तेम. जो चेतना लक्षणनोपण नाश मानीए तो जीवनी सत्तानो पण नाश थाय, त्यारे जीव वस्तु पण असत् थाय, तेथी जीव तत्त्व जे छे ते ज्ञान चेतनाना प्रमाणथीज मानीए ॥ १२ ॥

हवे बारमो एकांत नय अंशप्रमाण जीव सत्तानो प्रपंच कही बतावे छेः–

अथ द्वादश अंस प्रमान यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥– कोउ महा मूरख कहत एक पिंममांहि, जहांलों अचित चित्त अंग लहलहे हे; जोगरूप भोग रूप नानाकार ज्ञेय रूप, जेते भेद करमके तेते जीव कहे हे; मतिमान कहे एक पिंडमांहि एक जीव, ताहीके अनंत भाव अंश फेली रहे हे; पुग्गलसों भिन्न कर्म जोगसो अखिन्न सदा, उपजे विनसे थिरता सुभाव गहे हे. ॥ १३ ॥

अर्थः–कोई बौधमती महा मूर्ख एम कहेछे के, एक शरीरमां ज्यां लगी अचित चित अंग के० घटपटादिक अचेतन विकल्प अथवा नर अमर तिर्यंचादि चेतन अंग ते सचित विकल्प चकचकी रह्याछे, योगपरिणामथी योगरूप, भोगपरिणामथी भोगरूप, एम ज्ञेयनां नानाप्रकार रूप जेटलां कर्म के० क्रियाना भेद थायछे, तेटलाने जीव संख्या कहेछे, एटले जीव सत्ता अंश प्रमाण थई. हवे बुद्धिवंत स्याद्वादी एम कहेछे के, अहो! भाई! एक पिंडमां एक जीव छे अने ते जीवना ज्ञान परिणामे करीने अनंत भाव भासनरूप अंश फेली रह्याछे. पण जीव छे, ते पुद्गलथी भिन्न छे, अने कर्मयोगथी अभिन्न के० निराकुल छे, तेमां भाव अंश अनंत उपजेछे, अने अनंत विणसे छे पण जीवतो स्थिरतारूपज ग्रही रह्यो छे ॥ १३ ॥

हवे तेरमो एकांतनय क्षणभंगुर जीवनो प्रपंच कही देखाडे छेः–

अथ त्रयोदश छिनभंगुर जीव यह कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ एक छिनवादी कहे एक पिंममांहि, एक जीव उपजत एक विनसतु हे; जाही समे अंतर नवीन उतपति हुइ, ताही समे प्रथम पुरातन वसतु हे; सरवंग वादी कहे जेसे जलवस्तु एक, सोइ जलविविध तरंगनि लसतु हे, तेसे एक आतम दरव गुनपरजेसों अनेक भयो पे एक रूप दरसतु हे ॥ १४ ॥

अर्थः–कोई एक क्षणवादी बौध एम कहेछे के एक पिंममां एक जीव उपजे छे, एक जीव विणसे छे. जे समे पिंडमां नवा जीवनी उत्पत्ति न थाय ते समे पेहलो पुराणो जीव छे ते वसे छे, पछी ते विणसेछे. एम शृंखलाबद्ध उपजे विणसे छे, तेने सर्वांगवादी जैनमती एम कहेछे के, अहो! भाई! जेम तलाव प्रमुख जलाश्रयमां

जल वस्तु एक छे तेज जल विविध तरंगे करी लसित के० जिन्न जिन्न देखाय छे, तेम एक आतमा द्रव्य छे ते गुण पर्यायथी अनेक रूप थयो छे तोपण द्रव्यार्थिक नये एक रूपेज देखीए छे. ॥ १४ ॥

हवे चउदमो एकांतनय ज्ञायक अज्ञायकनो प्रपंच कही बतावे छेः—

अथ चतुर्दशम अज्ञायक ज्ञायक नय यह कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोउ बाल बुद्धि कहे ज्ञायक सकति जोलों, तोलों ज्ञान अशुद्ध जगत मध्य जानिये; ज्ञायक सकति काल पाई मिटि जाई जब, तब अ विरोध बोध विमल वखांनिये; परम प्रवीन कहे एसी तो न बने वाही, जैसे बिनुं परगास सूरज न मानियें; तेसे विनुं ज्ञायक सकति न कहावे ज्ञान, यहतो न पछ परतक्ष परवानिये. ॥ १५ ॥

अर्थः—जेनी बाळकना जेवी तुछ बुद्धि छे, एवो कोई शून्यवादी तथागत कहेछे के, ज्यां लगी ज्ञानमां ज्ञायक शक्ति छे, त्यां लगी जगत्मां ज्ञान अशुद्ध कहेवायछे, तेनो एज परमार्थ छे, के जे ज्ञायकपणुं छे ते विकल्परूप छे. अने विकल्पथी ज्ञान अशुद्ध थाय छे, तेथी निर्विकल्प ज्ञान शुद्ध छे. ज्यारे जवितव्यताने वशथी पोतानो समय प्रस्ताव पामीने ज्ञायक शक्ति छे ते मटी जाय, त्यारेज विकल्पना विरोधथी रहित एवुं बोध के० ज्ञान ते विमल के० शुद्ध वखाणीए. हवे एने परम प्रवीण स्या द्वादी कहेछेः—अरे! जाई! जे तुं ज्ञायक एकतामां विकल्प मानीने शंका पामेछे, अने ज्ञायकपणुं अशुद्ध मानेछे, ए वात बने नही. जेम प्रकाशविना सूर्य मान्यो न जाय अने प्रकाशथीज सूर्य मान्यो जाय, तेम ज्ञायक शक्तिविना ज्ञानपण कहेवाय नही, जो तमे अनुमानप्रमाणथी तमारो पक्ष साधन करता नथी, तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी पण तमारो पक्ष प्रमाण कीधो न जाय, तेथी तमारो पक्षछेते पक्षाजास छे. ॥१५॥

हवे जेणे चउद एकांत नय हठावी दीधा एवो जे स्याद्वाद तेनी स्तुतिकरेछेः—

अथ स्यादवाद प्रशंसा कथनः—

॥ दोहराः ॥—इह विधि आतम ज्ञान हित, स्यादवाद परवान, जाके बचन वि चारसों, मूरख होइ सुजान ॥ १६ ॥ स्यादवाद आतम सदा, ता कारन बलवान, शिव साधक बाधा रहित, अषे अखंडित आन ॥ १७ ॥ स्यादवाद अधिकार यह, कह्यो अलप विसतार, अमृत चंद मुनिवर कहे, साधक साधि डुवार ॥ १८ ॥

अर्थः—आवी रीते आत्माना ज्ञाननो हितकारी स्याद्वाद मत छे, तेज प्रमाण जा णवो. जे स्याद्वादनी वचन युक्तिमां पूर्वे मूर्ख होय ते सुजाण थाय. ॥ १६ ॥ जे स्याद्वाद स्वरूप छे तेज आत्मानी दशा छे. ते कारणथी स्याद्वाद छे ते महा बलवान

छे, मोक्षनो साधक छे, अने कोई मुक्तिथी भांगे नही, तेथी ते बाधा रहित छे अक्ष य छे. अने सर्व नयमां फेलि रह्यो छे तेथी अखंडित एनी आण छे ॥ १७ ॥ श्री आ चार्य एम कहे छे के, आ कंईक स्याद्वादनो अधिकार अल्पविस्तारथी कह्यो. हवे श्री अमृतचंद आचार्य बारमो साध्य साधक द्वार कहे छे. ॥ १८ ॥

इति श्री समयसारना नाटकमां स्याद्वादनामा इग्यारमां द्वारनो अधिकार बालबोध सहित समाप्तः ॥

हवे साध्य वस्तु अने साधक वस्तुनुं स्वरूप देखाडे छेः—

अथ श्री साध्य साधक स्वरूप कथनः—

॥सवैया इकतीसाः॥—जोइ जीव वस्तु अस्ति प्रमेय अगुरु लघु, अजोगी अमूरतिक प रदेशवंत [illegible] १; उतपतिरूप नाशरूप अविचल रूप, रतनत्रयादि गुण भेदसों अनंत है; सोई जीव दरब प्रवान सदा एकरूप, ऐसो शुद्ध निहचे सुभाउ विरतंत है; स्यादवाद मांहि साधि पद अधिकार कह्यो, अब आगे कहिवेकों साधक सिधांत है ॥ १९ ॥

॥ दोहराः ॥—साधि शुद्ध केवल दशा, अथवा सिद्ध महंत; साधक अविरत आदिबुध, छीन मोह परजंत. ॥ २० ॥

अर्थः—जे कोई जीव वस्तु छे ते द्रव्यथी अस्तिपणे, प्रमेयपणे, अगुरु लघु पणे, अ जोगीपणे, अमूर्त्तिक पणे, प्रदेशवंत पणे, प्रवर्ते छे, तेमां जे नास्तिपणुं नही ते अ स्तिपणुं जाणवुं, अने प्रमाण ग्रहण करवा योग्य छे, तेथी प्रमेयपणुं छे. अपौद्गलिक पणाथी अगुरु लघुपणुं छे, इत्यादि धर्म छे. उत्पत्तिरूप पर्यायथी, विनाश रूप पर्या यथी, अविचलरूपथी, ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रय कहिए. इत्यादिक गुणोना भेदथी अनंत पणुं लीधो वर्त्ते छे. तेज जीवद्रव्य एकरूपज सदा प्रमाण छे. ते एकरूपने अ स्तित्व प्रमेयत्वादिक धर्मे करी आगल कह्यो तेज शुद्ध निश्चयनयथी एनो एवो स्व भाव वृत्तांत छे. तेज साध्य पद कह्युं एटले साधवालायक वस्तु ते स्याद्वाद अधि कारमां कही. हवे आगल एने साधवानो सिद्धांत साधकछे ॥ १९ ॥ शुद्ध केवलीनी दशाने साध्य वस्तु कहीए. अथवा महंत सिद्धपणुं ते साध्य वस्तु छे. अने चोथा अविरत गुणठाणाथी मांडीने बारमां क्षीणमोह गुणठाणा पर्यंत नव गुणठाणाना धणी जे बुध के० पंडित छे, ते सर्वेने साधक कहीए. ॥ २० ॥

हवे अविरत्यादि साधकनी व्यवस्था कहेछेः—अथ साधक व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जाको अधो अपूरव अनवर्त्ति करनको, भयो लाभ भई गु रु वचनकी बोहनी; जाके अनंतानुबंध क्रोध मान माया लोभ, अनादि मिथ्यात मि श्र समकित मोहनी; सातों परकिति खपी किंवा उपसमी जाके, जगी उरमांही स

मकित कला सोहनी; सोइ मोक्ष साधक कहायो ताके सरवंग, प्रगटी शगतिगुन थानक आरोहनी. ॥ २१ ॥ सोरठीः ॥–जाकी मुगति समीप, भई भव स्थिति घट गई; ताकी मनसा सीप, सुगुरु मेघ मुकता वचन. ॥ २२ ॥

अर्थः–जे जीवने अधो के० यथाप्रवर्त्ति करणनो अने अपूर्व करणनो तथा अनिवृत्त करणनो लाभ थयो, एटले ए सम्यक्त्व प्राप्तिनां त्रण करण छे तेनो लाभ थयो, अने जेने गुरु वचननी बोहनी थई एटले गुरु उपदेशनो लाभ थयो, तेथी अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अने लोभ तथा अनादिकालनी मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने सम्यक्त्व मोहनीय, ए सात प्रकृति जेनी क्षय थई, अथवा उपशमी अथवा सातेमां कंइ खपी कंइ उपशमी, एवी जेना हैयामां सुहामणी समकितनी कला जागी तेज जीव मोक्षनो साधनारो कहेवाय. तेना सर्व अंगमां एटले बाह्य अभ्यंतर अंगमां गुणस्थानक आरोहणी के० चढवानी शक्ति प्रगटी ॥ २१ ॥ जेने भवस्थितिना परिपाकथी मुक्ति समीप थई अने संसारनी स्थिति घटी गई, ते पुरुषनी मनसा शीप समान थई, त्यां सद्गुरु ते मेघ समान थयो, ते सद्गुरुनां वचन तेनी मनसारूप सीपमां अमौलिक मोती जेवां थयां थकां रुचे छे ॥ २२ ॥

हवे सद्गुरुने मेघनी उपमा कहीने स्तवे छेः–अथ गुरु प्रशंसाः–

॥ दोहराः ॥–ज्यों वरषे बरषा समे, मेघ अखंडित धार; त्यों सदगुरु बानी खिरे, जगत जीव हितकार ॥ २३ ॥

अर्थः–जेम वरसाद कालमां मेघ अखंडित धाराये वरसे, तेमज सद्गुरु होय ते जगत्वासी जीवने हित कारक अमृत वाणी खेरे छे ॥ २३ ॥

हवे सद्गुरुना उपदेश आक्षेपणी धर्म कथा कहे छेः–अथ उपदेश कथनः–

॥ सवैया तेइसाः॥–चेतनजी तुमजागि विलोकहुं लाग रहे कहों मायाकि तांई; आय कहींसुं कही तुम जाउगे माया रहेगि जहांकि तहांई; माया तुह्मारि न जाति न पाति न वंसकि वेली न अंसकि जांई; दासि किए बिनु लातनि मारत, एसि अनीति न कीजे गुसांई ॥ २४ ॥ दोहराः ॥–माया छाया एक है, घटे बढे छिनमांहि; इन्हकी संगति जे लगे, तिनहिं कहुं सुख नांहि ॥ २५ ॥ सवैया तेईसाः॥–लोगनिसों कछु नांतौं न तेरौं न तोसौं कबू इह लोगकौं नांतो; ए तो रहेरमि स्वारथकके रस, तू परमारथके रस मातो; ए तनसों तनमे तनसे जरू, चेतन तुं तनसों नित हातो; होहि सुखी अपनो बल तोरिके राग विराग विरोधको तांतो. ॥ २६ ॥ सोरठाः ॥–जे दुरबुद्धीजीव, ते उतंग पदवी चहे; जे समरसी सदीव, तिन्हकों कबू न चाहिए ॥२७॥ सवैया इकतीसाः॥–हांसीमें विषाद बसे विद्यामे विवाद

वसे, कायामें मरन गुरुवर्त्तनमें हीनता; सुचिमें गिलान वसे प्रापतिमें हानि वसे, जैमें हारि सुंदर दशामें छबि छीनता; रोग वसे भोगमें संयोगमें वियोग वसे, गुनमें गरव वसे सोवमांहि दीनता; और जगरीति जेती गर्भित असाता सेती, साताकी सहेली है अकेली उदासीनता ॥ २८ ॥ दोहराः ॥–जिहि उतंग चढि फिरि पतन, नहि उतंग वहिकूप; जिहि सुख अंतर भयवसे, सो सुख है दुखरूप ॥ २९ ॥ जो विलसे सुष संपदा, गये ताहि दुख होइ; जो धरती बहु त्रिणवती, जरे अगनिसों सोई ॥ ३० ॥ इति गुरुउपदेस समाप्तः ॥ दोहराः ॥–सवदमांहि सतगुरु कहै, प्रगटरूप जिन धर्म; सुनत विचक्षण सद्दहै, मूढन जानै मर्म ॥ ३१ ॥

अर्थः–अहो! जीव! चेतन! तमे मोह निद्रा तजोने जागो, अने सत्य स्वरूप देखीने मायारूप संपदाने शुं वलगी रह्याछो; पृथिवी प्रमुख अढार भारादीक जेछे तेमां तमें क्यांथी आव्या छो? अने कही दशामां जोशो? अने जेनी साथे तमे राची रह्याछो, तेतो मायाजाल संपदा ज्यांनी त्यां रहेशे. ए मायाजाल तमारी जाती नथी, तथा पाती नथी अने माया तमारा वंशनी वेली नथी, अने तमारा अंश के० एक देशनी पण कांई नथी, तेथी तमारे अने मायाने संबंध तो कोई पण नथी. अने तमे पोतानी करीने जाणोछो. तेथी ए कहेवत साची करो छो, के दासी कर्या वगर लात मारो छो, तेथी उत्पात थाशे. माटे हे! महंत पुरुषो! एवी अनीति न करवी ॥२४॥ माया अने छाया एक सरखीज छे. क्षणमां वधे छे अने क्षणमां घटे छे. तेथी ए मायानी संगते जे लागी रहेछे, तेने क्यारे पण सुख थातुं नथी ॥ २५ ॥ आ जे पुत्र कलत्रादिक तुं पोताना जाणे छे, तेतो पारका लोको जेवा छे, ए लोकोनी साथे तारो कांई नातो नथी. अने ए लोकोने पण ताहारी साथे कोई प्रकारनो नातो नथी. ए जे पुत्रकलत्रादि लोको छे तेतो पोताना स्वार्थना रसथी ताहारी साथे रमी रह्या छे, अने अरे! चेतन! तुं तो पोताना चेतनारूप परमार्थना रसमां राची रह्यो छुं. वली ए जे लोको छे ते तारा तनथी तन्मय थई रह्या छे, एटले तारा शरीरथी मोहित छे, अने ए शरीर तो जड छे अने तुं तो चेतन छे. तेथी ते जडथी तारी सदा भिन्नता छे. माटे राग अने द्वेष रूप मोह कर्मनो नातो तोडी पोतानुं वल फोरवीने सुखी था ॥ २६ ॥ जे जीव राग द्वेषथी दुष्ट बुद्धि थई रह्यो छे ते तो इंद्रादिकनी उंची पदवी चाहे छे, अने जे जीव सदाई समरसी भावमां रहे छे, ते ने कोई उंच पदवीनी चाहना थती नथी. ॥ २७ ॥ हांसीने सारी मानीए छे पण तेमां विषवाद वसे छे, विद्याने सारी जाणीए छीए पण तेमां विवाद झगडो वसे छे; कायाने सारी जाणीए छीए पण तेमां मरणदोष छे, गुरुताई के० वडाईने सारी जाणीए

छीए पण तेमां कोईकवारे हीणता छे; पवित्राई सारी जाणीए छीए, पण एने आदिके अंते दुगंछा उपजे छे; प्राप्ति सारी जाणीए छीए, पण तेनी साथे हाणीलागी रहीछे; जीतवुं भलुं छे पण तेनी साथे हारवुं लाग्युंज छे; ज्ञानीनी सुंदर दशा भली छे पण अंते कांति क्षीण थई जाय छे; भोगवुं सुख सारुं छे, पण तेमां रोगनी उत्पत्ति छे: इष्ट संयोग भलो छे पण तेनी साथे वियोगपण तैयार थई रहे छे; प्रीति भली छे पण तेनीसाथे अप्रीति पण उपजे छे; औदार्यादिक गुणमां गर्व अहंकार वसे छे; राज सेवा सारी छे, पण तेमां दीनपणुं वसे छे; अने बीजी जेटली जगत्वासी जीवोनी रीत सारी जाणीए छिए, तेतो सर्व अंतर्गर्भित अशाता सहित छे. तेथी एकली उदासीनताज शातानी साहेली छे. माटे समरस भावज श्रेष्ट छे ॥ २८ ॥ जे उंचे ठेकाणे चढीने पछी नीचे पडवुं थाय, ते उतंग ठेकाणुं न कहेवाय; पण ते ठेकाणुं कुवा जेवुं कहेवाय. तेम जे सुखना अंदर दुःख वसे छे ते सुख पण दुःखरूप कहे वाय छे ॥ २९ ॥ केमके सुख संपदा विलसे छे पण पछी तेना नाशथी दुःख थाय छे. जेम तृणोवाली धरती अग्निथी बळी जायछे, पण तृणविनानी धरती कोई रीते बलती नथी, ए दृष्टांते जाणी लेवुं ॥ ३० ॥ एरीते गुरु उपदेश सूचनिकामात्र संपूर्ण थयो; सद्गुरु जैनधर्मने प्रगट रूप शब्दमांज कहे छे, एटले वचनमां व खाणे छे. ते जैन धर्मने सांभली विचक्षण पुरुष होय ते सद्दहे छे, अने मूर्ख होय ते तेनो मर्म जाणे नहीः– ॥ ३१ ॥

हवे कोईकने उपदेशनी रुचिछे, अने कोईकने नथी तेनुं स्वरूप कहे छेः–

अथ उपदेश रुचि अरुचि कथनः–

॥ सवैया एकतिसाः॥–जेसे काहू नगरके वासी द्वै पुरुष भूले, तामें एक नर सुष्ट एक दुष्ट उरको; दोउ फिरे पुरके समीप परे कुवटमे, काहू और पंथिककों पूछे पंथ पुरको; सोतो कहे तुह्मारो नगर है तुमारे ढिग, मारग दिखावे समुझावे खोजपुरको; एते पर सुष्ट पहिचाने पें न माने दुष्ट, हिरदे प्रवान तेसे उपदेश गुरुको ॥ ३२ ॥

॥ सवैया इकतीसाः ॥–जेसे काहू जंगलमे पावसकी समो पाई, अपने सुभाई महा मेघ बरषतु है; आमल कषाय कटु तीषन मधूर षार, तेसो रस वाढे जहां जेसो दरषतु है; तेसो ज्ञानवंत नर ज्ञानकौ बखान करे, रसको उमाहो हैं न काहू परषतु हैं; वहे धुनि सुनि कोउ गहैं कोउ रहैं सोई, काहूकों विषाद होई कोउ ह रषतु है ॥ ३३ ॥ दोहराः ॥–गुरु उपदेश कहा करे, दुराराधि संसार; वसे सदा जा के उदर, जीव पंच परकार ॥ ३४ ॥

अर्थः–जेम कांई नगरना वासी बे पुरुष नगरमांथी निकलीने दिशा भूली गया.

ते बे पुरुषमां एक तो शुद्ध के० हैयाना सरल स्वजावनो हतो, अने एक हैयानो डुष्ट हतो. पढी ते बने पुरुष नगरनी समीपज फरवा लाग्या. पढी कोई बीजा वाटमार्गुने नगरनो मारग पूढवा लाग्या, त्यारे ते कहेवा लाग्यो जे तमारुं गाम तो तमारी समीप ढे, एम कही ते बनेने मारग देखाडे, अने एनी रीते पुर के० नगरने खोज करी समजावे, पण तेमां जे सरल हैयानो ढे, तेतो साचुं माने, पण डुष्ट हैयानो ढे ते माने नही, तेम गुरुनो उपदेश ढे तेपण पुरुषना हैया प्रमाणे ढे ॥ ३१ ॥ जेम कोई अरण्यमां वरसाद पोतानो समय पामीने स्वजावथी महा मेघ वरषे ढे. त्यारे आंबली प्रमुख खाटा रसवाला तथा बावल प्रमुख कषाएल रसवाला, अने लिंबडा प्रमुख कडवा रसवाला, जाल प्रमुख नींबरसवाला, जेठीमध प्रमुख मधुर रसवाला, अने लुण प्रमुख क्षाररस वालां काडोमां तेउना गुण प्रमाणे रस वृद्धि थाय ढे, तेम ज्ञानी आचार्य प्रमुख पोतानी वचन वर्गणा वचन योगे खिरे के० प्रकाशे ढे, ते ज्ञाननुं वखाण करतां पोताना अनुजव रसमां उमग थई रह्या ढे, पण ते वखते कोई योग्य अयोग्य श्रोतानी परीक्षा करता नथी, पढी ते श्रोता पुरुषोमां ते ज्ञाननी ध्वनि सांजलीने कोई तेनी वाणीने ग्रहे ढे, कोई सुई रहेढे, कोई निद्रा करे ढे, कोई मिथ्यादृष्टिने विषादपण थाय ढे, अने कोई सम्यग् दृष्टि हर्ष पण पामे ढे ॥३३॥ माटे गुरुनो उपदेश शुं करे? आ संसारी लोक डुराराध्य ढे, समजाववा कठण ढे, जे संसारना उदरमां पांच प्रकारनी श्रद्धावाला जीवो ढे, ते सदा वसीज रह्या ढे. ॥ ३४ ॥

हवे पांच प्रकारना जीवनां नाम कहे ढेः—अथ पंच प्रकार यथाः—

॥ दोहराः ॥—डूंघा प्रजु चुंघा चतुर, सूंघा रोचक शुद्ध, उंघा डुरबुद्धी विकल घूंघा घोर अबुद्ध ॥ ३५ ॥

अर्थः—एक तो डुंघा तेतो प्रजु स्वामी ढे; बीजा चुंघा के० चतुर ढे; त्रीजा सुंघा के० रुचिवंत ढे; चोथो उंघाके० डुष्ट डुर्बुद्धि ढे, अने विकल ढे; पाचमा घूंघा के० घोर कुबुद्धि ढे ॥ ३५ ॥

हवे डूंघानुं लक्षण कहे ढेः—अथ डूंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जाकी परम दशाविषे; करम कलंक न होइ; डूंघा अगम अगाध पद, वचन अगोचर सोइ ॥ ३६ ॥

अर्थः—जेनी उत्कृष्ट दशा वर्णवेली ढे, जेमां कोई कर्मरूप कलंक देखाय नही, एवुं जे अगम तथा अगाध पद ढे, एटले सिद्ध पद ढे जे वचननो विषय थई शके नही तेने डूंघा कहिये. ॥ ३६ ॥

हवे चुंघानुं लक्षण कहेछेः—अथ चुंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जे उदास व्है जगतसों, गहे परम रस पेम; सो चूंघा गुरुके बचन, चूंघे बालक जेम. ॥ ३७ ॥

अर्थः—जे जीव जगत्थी उदासी थई रहे छे, अने जे परम दशामां रही तेना प्रेम स्वादने ग्रहे छे, एटले उत्कृष्ट दशा आवे छे, तेतो गुरुनां वचनने बालकनी परे चुंघे छे, अने पुष्ट थाय छे, ते चुंघा कहेवाय छे. ॥ ३७ ॥

हवे सुंघानुं लक्षण कहेछेः—अथ सुंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जो सुवचन रुचिसों सुने, हिए दुष्टता नांहि; परमारथ समुझै नही, सो सुंघा जगमांहि. ॥ ३८ ॥

अर्थः—जे रुचिये करी आगमना अंग जे सुवचन तेने सांभले छे, जेना हृदयमां दुष्टता नथी, पण जे सूक्ष्म तत्त्वने समजे नही तेने जगत्मां सुंघा पुरुष कहीये.॥३८॥

हवे उंघानुं लक्षण कहेछेः—अथ उंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जाकों विकथा हित लगे, आगम अंग अनिष्ट; सो उंघा विषई विकल, दुष्ट रिष्ट पापिष्ट. ॥ ३९ ॥

अर्थः—जेने विकथानां वचन हितकारी लागे छे, अने आगम अंग अनिष्ट लागे छे, तेतो विकल विषयी जीव उंघा कहेवाय, दोषवंत रोषवंत पापकर्मी थई रहेछे.

हवे घूंघानुं लक्षण कहेछे.—अथ घूंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥—जाके श्रवन वचन नही, नहि मन सुरति विराम; जडता सो जड वत् भयो, घूंघा ताको नाम, ॥ ४० ॥ चोपाईः ॥—ढूंघा सिद्ध कहे सब कोऊ; सुंघा उंघा मूरख दोऊ; घूंघा घोर विकल संसारी; चुंघा जीव मोष अधिकारी. ॥ ४१ ॥ ॥ दोहराः ॥—चूंघा साधक मोषको, करे दोष दुःख नास; लहे पोष संतोष सों, वरनों लगन तास. ॥ ४२ ॥

अर्थः—जेने वचन नथी एटले जे एकेंद्रिय छे अने जेने श्रवण नथी एटले जे बेरिंद्रिय तेरिंद्रिय, चौरिंद्रिय छे, अने जेने मननी सुरता नथी एटले जे असंज्ञी छे, वली जेने विराम के० विरति नथी, अज्ञानरूप जडताथी जे जडरूप थई रह्या छे, तेने घुंघा कहीए. ॥ ४० ॥ ढुंघा पुरुषने तो सहु कोई सिद्ध कहे छे; सुंघा अने उंघा ए बंने मूर्ख छे; अने घूंघा होय तेतो अघोर अंधारामां विकल संसारी जीव छे; अने चुंघा जीव छे तेतो मोक्षना अधिकारी होय, अने मोक्षना वांछक होय ॥ ४१ ॥ चूंघा छे तेतो मोक्षनो साधक छे, दोष अने दुःखनो नाश करे छे, अने संतोषथी पुष्टता पामे छे, तेनुं लक्षण वरणवुं छुं. ॥ ४२ ॥

हवे मोक्ष साधकनुं उदाहरण कहेछेः—अथ साधक लक्षणः—

॥ दोहराः ॥—कृपा प्रसम संवेग दम, अस्ति जाव वैराग; ए लछन जाके हिये, सप्त व्यसनको त्याग. ॥ ४३ ॥

अर्थः—कृपा जे दया, तथा जे कषायना उदयनुं दबाववुं ते प्रशम अने संवेग ते मोक्षना अजिलाषनुं पद के० स्थानक, तथा दम ते इंद्रियदमन, आस्ति एटले जिनोक्त वचन उपर श्रद्धा, एहवो वैरागीजाव; एटलां लक्षण जेना हृदयमां रहे छे, अने सात व्यसननो जे त्याग करे तेज साधक होय.॥ ४३ ॥

हवे साते व्यसननां नाम कहेछेः—अथ सप्त व्यसन नामः—

॥ चोपाईः ॥—जूवा आमिष मदिरा दारी; आषेटक चोरी परनारी; एई सात व्यसन दुख दाई; दुरित मूल दुर्गतिके जाई. ॥ ४४ ॥ दोहराः ॥—दर्वित ए सातों व्यसन, दुराचार दुख धाम; जावित अंतर कलपना, मृषा मोह परिनाम. ॥ ४५ ॥

अर्थः—जुगार १, मांस जक्षण २, मदिरापान ३, वेश्या गमन ४, आखेटक के० शिकार खेलवो ५, चोरी करवी ६, परस्त्री गमन ७, ए सात व्यसन कहेवाय छे, ते संसारमां दुःखदाई छे. पापनां मूल छे अने दुर्गतिना जाई छे. ॥ ४४ ॥ ए जे क्रिया रूप साते व्यसन छे ते द्रव्यरूप छे. ए दुष्ट आचाररूप दुःख धाम के० दुःखनुं घर छे. अने जेना अंतरमां वृथा के० जूठा मोह परिणामनी कल्पना के० विचारणा ध्यावन थाय, ते जावित व्यसन कहीए. ॥ ४५ ॥

हवे जावित सात व्यसननी व्यवस्था कहेछेः—अथ जावित व्यसन व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—अशुजमें हारि शुज जीति यहे द्यूत कर्म, देहकी मगनताई यहे मांस जषिवो; मोहकी गहलसों अजाने यहे सुरापान, कुमतिकी रीति गनिकाको रस चाखिवो; निरदे व्है प्राण घात करिवो यहे सिकार, परनारी संग परबुद्धिको परषिवो; प्यारसों पराई सोंज गहीवेकी चाह चोरी, एई सातों व्यसन विडारि ब्रह्म लखिवो. ॥ ४६ ॥

अर्थः—अशुज कर्मना उदयथी हार मानिये अने शुज कर्मना उदयथी जीत मानिये तेतो जुगार खेलवो छे. देह उपर ममता रहे तेतो मांस जक्षण जाणवुं. मोह कर्मथी मूर्छित थई रह्याथी अजाण थई रह्यो होय तेज सुरापान व्यसन छे. कुबुद्धिनी रीते चालवुं तेतो वेश्याना रसनुं चाखवुं छे. निर्दय परिणाम राखीने प्राणघात करवो, तेज शिकार खेलवो छे. पररूप जे पुद्गलादिक तेनी बुद्धिने परखवी तेतो परनारी सेवा व्यसन छे. पारकी सोंज सामग्री उपर प्रीत राखीने प्यार मेल

ववानो चाह राखे तेज चोरी छे. ए जावित सात व्यसननुं विदारण करवाथी ब्रह्म लख्यो जाय छे. ॥ ४६ ॥

हवे मोक्षना साधकनी व्यवस्था कहेछेः—अथ साधक व्यवस्थाः—

॥ दोहराः ॥—विसन जाव जामे नही, पौरुष अगम अपार; किये प्रगट घट सिंधुमथि, चौदह रतन उदार. ॥ ४७ ॥

अर्थः—जेना चित्तमां व्यसनजाव पामिए नही, अने अगम अपार पुरुषातन पांमिए, तेणे घटरूप समुद्र मंथन करीने उदार के० अमुल्य चौदे रत्न प्रगट कीधां ॥४७॥

हवे जावित चौद रत्ननुं वर्णन करेछेः—अथ जावित चौद रतनको बरननः—

॥ सवैया इकतीसाः—लछमी सुबुद्धि, अनूजूति कउस्तुजमनि, वैराग कलपवृक्ष, संत सुवचन है; ऐरावत उद्यिम प्रतीतिरंजा उदेविष, कामधेनु निर्जरा सुधा प्रमोद घन है; ध्यान चाप प्रेमरीति मदिरा विवेक वैद्य शुद्धजाव चंद्रमा तुरंगरूप मन है; चौदह रतन ए प्रगट होइ जहां तहां ज्ञानके उदोत घट सिंधुको मथन है. ॥ ४८ ॥

॥ दोहराः ॥—किए अवस्थामे प्रगट, चौदह रतन रसाल, कबुं त्यागे कबुं संग्रहे, विधि निषेधकी चाल. ॥ ४९ ॥

अर्थः—सुबुद्धि उपनी तेतो लक्ष्मी उपनी १, आत्मानो अनुजव उपज्यो तेतो कौस्तुजमणि उपज्यो २, वैराग उपज्यो तेतो कल्पवृक्ष उग्युं ३, जाषा समिति उपजी तेतो शंख उपज्यो ४, उद्यम उपज्यो तेतो ऐरावत हाथी उपज्यो ५, प्रतीत उपजी तेतो रंजा उपजी ६, कर्मनो उदय तेतो विष उपज्युं ७, कर्म निर्जरा थइ तेतो कामधेनु उपजी ८, आनंद उपज्यो तेतो अमृतघन उपज्युं ९, ध्यान उपज्युं तेतो चाप के० सारंग धनुष उपज्युं १०, प्रेमरीत के० प्रेमनी लय उपनी तेतो मदीरा उपज्यो ११ विवेक उपज्यो तेतो धनवंतरि वैद्य उपन्यो १२, शुद्धजाव उपन्यो तेतो चंद्रमा उपन्यो. १३, मन शुद्ध थयुं तेतो सात मुखो अश्व उपन्यो. १४, ए चउद रत्नतो ज्यां ज्ञाननो उदय थवाथी पोताना ज्ञानरूप घट समुद्रनुं मंथन थाय छे, त्यां उपजे छे एम जाणवुं ॥ ४८ ॥ साधनी अवस्थामां ए चौदे रत्न रसाल हतां ते प्रगट कीधां, ए चौद रत्नमां विधि निषेधनी चालमां एटले हेय, उपादेयनी चालमां कंइक त्यागे छे अने कंइक संग्रह करेछे ॥ ४९ ॥

हवे जावित चउद रत्न तेमां आठ रत्न त्यागवा योग्यछे अने छ रत्न ग्रहण करवा योग्य छे ते कहेछेः—अथ अष्ट रत्न हेय षट् उपादेय कथनः—

॥ दोहराः ॥— रमा, संष विष धनु सुरा, वेद धेनु हय हेय, नति रंजा गज क

ल्पतरु, सुधा सोम आदेय ॥ ५० ॥ इह विधिजो परभाव विष, वमे रमे निजरूप, सो साधक शिवपंथको, चिद्विवेक चिद्रूप, ॥ ५१ ॥

अर्थः—रमाके० लक्ष्मि तेतो सुबुद्धि १, सुवचनशंष २, उदय विष ३, ध्यान धनुष ४, प्रेम रीत मदिरा ५, विवेक वैद्य ६, निर्जरा काम धेनु ७, मनशुद्धते घोडो ८, ए आठ अथिर छे तेमाटे छांडवा योग्य छे. अने अनुभव मणि १, प्रतीति रंभा २, उद्यम हाथी ३, वैराग्य कल्पवृक्ष ४, आनंद सुधा ५, शुद्ध भाव चंद्रमा ६, ए छ रत्न ग्रहण करवा योग्य छे. ॥५०॥ आ रीतिथी पररूप जे कर्मादिक भाव छे, तेज विषथयुं. तेनुं जे वमन करे छे, अने पोताना स्वरूपमां जे रमे छे तेज पुरुष मोक्ष मार्गनो साधक जाणीये. जे ज्ञान भावनो जाणनार अने ज्ञान स्वरूपी तेज साधक कहीए॥५१॥

हवे मोक्षपदना साधकनी व्यवस्था कहे छेः—अथ साधक व्यवस्था कथनः—

॥कवित्त छंदः॥—ज्ञानदृष्टि जिन्हके घट अंतर निरखे दरव सुगुन परजाइ, जिन्हके सहजरूप दिन दिन प्रति, स्यादवाद साधन अधिकाइ, जे केवल प्रतीत मारग मुषचिते चरन राषे ठहराई, ते प्रविण करिछिन मोह मल अविचल होइ परमपद पाइ ॥ ५२ ॥

अर्थः—जेना घट अंतरमां ज्ञाननी दृष्टि जागी तेथी द्रव्यने जे देखे जाणे, ते द्रव्यना गुण जाणे; गुणना पर्याय जाणे; अने जेने सहज रूपेज एटले भवितव्यतानापरिपाकथी दिन दिन प्रत्ये स्याद्वादनुं साधन अधिक थई रह्युं छे, अने जे केवलिना कहेला मारगने सन्मुख थई रहे, एज चित्त राखे अने एज मार्गवीषे चरण ठरावी राखे, ते प्रवीण पुरुष मोहरूप मलने क्षीण करी परम पद पामी अविचल थायछे ॥ ५२ ॥

हवे सम्यग् दृष्टिनी व्यवस्था अने मिथ्या दृष्टिनी व्यवस्था कहेछेः—

अथ सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि व्यस्थाः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—चाकसो फिरत जाकों संसार निकट आयो, पायो जिनि सम्यग् मिथ्यात नाश करिके; निरद्वंद मनसा सुभूमि साधि लिनी जिनि, कीनी मोष कारन अवस्था ध्यान धरिके; सोई शुद्ध अनुभो अभ्यासी अविनाश भयो, गयो ताको करम भरम रोग गरिके; मिथ्यामति आपनो सरूप न पिछाने तामे; डोले जग जालमे अनंत काल भरिके. ॥ ५३ ॥

अर्थः—जेम रात्रिनेविषे चकवो फिरतो फरतो रहे छे, तेम संसारमां फिरतां फिरतां जेनो अंत निकट आव्यो, जे सम्यक्त्व पाम्यो, मिथ्यात्वनो नाश करीने रागद्वेषादिक रहित एवी मनसारूप भली भूमिका जेणे साधि लीधी, अने ध्यान धरिने पोतानी अवस्था मोक्षपदना कारणरूपी जेणे कीधी, तेज सम्यग् दृष्टि शुद्ध अनुभवनो अभ्यासी थयो, एम कर्म रोगने गमावीने अविनाशी थयो, एटले एनांजन्म मर्ण टल्यां.

ए सिद्ध थयो, एवी सम्यग् दृष्टि पाम्याविना मिथ्यात्वी पोतानुं स्वरूप ओलखे नही. तेथी अनंतकाल भरिके के० लगी जगत्नी जालमां फोले ॥ ५३ ॥

हवे जे आत्मानो अनुभव पाम्यो तेनो विलास कहेछे:-अथ अनुभव विलासः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥-जे जीव दरवरूप तथा परजायरूप, दोउ नै प्रवान वस्तु सुद्धता गहत है; जे अशुद्धभावनिके त्यागी भए सरवथा विषेसों विमुष व्है विरागता चहत हैं; जो आहजभाव त्यागभाव दुहूं भावनिको, अनुभौ अभ्यास विषे एकता कहत है; तेई ज्ञान क्रियाके आराधक सहज मोष, मारगके साधक अबाधक महत है. ॥ ५४ ॥

अर्थः-जे कोई जीव द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक ए बे नय प्रमाण करीने वस्तुनी शुद्धताने ग्रहेछे, जे जीव रागद्वेष मोहथी आत्मामां जे अशुद्धभाव छे तेना सर्वथा त्यागी थया छे, तेथी पांच इंद्रियोना विषयथी विमुख थईने वैरागतामां जे वर्त्तवा लागेछे, अने जे भावित चौदे रत्नमां छ भाव रत्न ग्रहण करवा योग्य छे, अने आठ भाव रत्न त्यागवा योग्य छे, एटले आठ हेयने छ उपादेय छे, ते अनुभवना अभ्यासविषे बंने भावनी एकता करेछे, एटले जे द्रव्यमां दृष्टि रहे अने पर्यायमां दृष्टि न रहे, तेने एकता कहेछे. ते जीव ज्ञान क्रिया जे मोक्ष मार्गनुं कारण कह्युं छे तेना आराधक थया. अने सहजरूपमां मोक्ष मार्गना साधक थया; फरी तेने कर्म बाधा न होय, तेथी अबाधक थया महिमावंत थया, पूजनिक थया. ॥ ५४ ॥

हवे जे ज्ञान अने क्रियाने भिन्नभावे माने छे तेने एनी एकता कही देखाडे छेः-

अथ ज्ञान क्रिया एकता कथनः-

॥ दोहराः ॥-विनसि अनादि अशुद्धता, होइ शुद्धता पोष; ता परनतिकों बुध कहे, ज्ञान क्रियासों मोष ॥ ५५ ॥

अर्थः-अनादि कालनी जे अशुद्धता छे तेनो ज्यां विनाश थायछे त्यां शुद्धतानुं पोषण थायछे, एवी जे आत्मानी परिणति थाय तेज ज्ञाननी क्रिया कहेवायछे तेने बुध के० पंडित पुरुष एवुं कहेछे के ए ज्ञान क्रियाथी मोक्ष थाय, आंही ज्ञान तथा क्रियानी जे दुविधा लखेछे ते शब्दनयथी जाणवी. ॥ ५५ ॥

हवे ज्ञाननी व्यवहार नयथी थापना देखाडे छेः-अथ ज्ञान द्रव्य स्थापनाः-

॥ दोहराः ॥-जगी शुद्ध समकित कला, वगी मोषमग जोइ; वहे करम चूरन करे, क्रम क्रम पूरन होइ ॥ ५६ ॥ जाके घट एसी दशा, साधक ताको नाम; जेसे दीपक जो धरे, सो उजियारो धाम. ॥ ५७ ॥

अर्थः-जेणे शुद्ध समकितनी कला जाणी अने जे कला मोक्षना मुखमां जावा

लागी ते पुरुष कर्मने चूरण करीने क्रमे क्रमे पूरण थाय ॥ ५६ ॥ जेना घटमां एवी दशा थई रही ठे, ते पुरुषनुं साधक नाम कहेवाय. जेम दीवानुं अजवालुं थएथी घरमां पण अजवालुं थाय, तेम ज्ञानक्रिया तो मोक्ष साधक ठे, पण ज्ञानक्रियाने ध रतां पुरुष पण साधक थाय ॥ ५७ ॥

कहे ज्ञाननुं फल कहेठेः–अथ ज्ञानफल वर्ननः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–जाके घट अंतर मिथ्यात अंधकार गयो, जयो परगास शुद्ध समकीत जानकी; जाकी मोह निद्र घटी ममता पलक फीटी, जान्यो जिन मरम अवाची जगवानको; जाको ज्ञान तेज वग्यो उद्दिम उदार जग्यो, लग्यो सुष पोष समरस सुधा पानको, ताही सुविचक्षन को संसार निकट आयो, पायो तिनि मारग सुगम निरवानको ॥ ५८ ॥ जाके हिरदेमे स्यादवाद साधना करत, शुद्ध आतमाको अनुजौ प्रगट जयो है; जाकों संकलप विकलपके विकार मिटि, सदा काल एकी जाव रस परिनयो है; जिनि बंध विधि परिहार मोष अंगीकार, ऐसो सुविचार पढ सोउ ठांकि दियो है; जाकी ज्ञानमहिमा उदोत दिनदिन प्रति, सोइ जवसागर उलंघि पार गयो है ॥ ५९ ॥

अर्थः–जेना घटमां अनादिकालनो मिथ्यात्व अंधकार हतो ते गयो, अने शुद्ध सम्यक्त्व रूप सूर्यनो प्रकाश थयो, राग द्वेष मोह निद्रा जेनी घटी गई, ममतारूप पलक लागी हती ते फिटि गई, तेथी जिन अवाची जगवाननो एटले सिद्ध स्वरूपनो मर्म पाम्यो, जेनुं ज्ञानतेज वध्युं एटले प्रकाश थयो, प्रधान उद्यम जाग्यो अने उपशम रस रूप अमृत पानना सुखनो जेने पोष थयो, ते सुविचक्षण पुरुषने संसार निकट आव्यो, ते तो सुगम वातमां मुक्तिनो मारग पाम्यो ॥ ५८ ॥

जेना हृदयमां स्याद्वाद स्वरूपनी साधनाथी शुद्ध आत्मानो अनुजव प्रगट थयो अने जेने संकल्प विकल्पनो विकार बहु जातनो हतो ते मटीने सदा कालमां एक चेतना रस जे एकी जावपणुं ठे ते पणे परिणम्यो, तेणे करीने बंध विधिनो परिहार जे संवरनुं धरवुं ते जेने थयुंठे, अने निस्पृह दशाथी मोक्षनो जे अंगीकार तेना विचारनो पक्ष धार्यो ठे ते पक्ष ठांडी दीधोठे, जेना ज्ञाननो महिमा दिन दिन प्रते उद्योत थयोठे. तेज जीव जव समुद्र उतरीने पार पहोंच्यो एम जाणवुं. ॥ ५९ ॥

हवे अनुजवीनी व्यवस्था तेज उपादेय ठे ते कहे ठेः–अथ अनुजौ व्यवस्था कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः॥ –अस्तिरूप नासति अनेक एक थिररूप, अथिर इत्यादि नानारूप जीव कहिये; दीसे एक नैकी प्रतिक्षनी अपर दूजी नैकों नै दिषाइ वाद विवादमे रहिये; थिरता न होइ विकलपकी तरंगनिमे, चंचलता बढे अनु

जौ दशा न लहिये; तातें जीव अचल अबाधित अषंड एक, एसो पद साधिके समाधि सुख गहिये ॥ ६० ॥

अर्थः—कोई नयथी अस्तिरूप छे, कोई नयथी नास्तिरूप छे. कोई नयथी अनेक, कोई नयथी एक, कोई नयथी स्थिररूप, कोई नयथी अस्थिररूप, इत्यादि नाना प्रकारना स्वरूपथी जीव कहीए. अहीं एक नय जे स्वरूप साधे छे, त्यां ते नयनो प्रतिपक्षी केο उलटी रीते बीजो नय देखाय छे, तेतो पेला नयथी विपरीतपणुं साधे छे, तेथी जो एकांतनयपणुंज ग्रहीए अने ते उपर बीजो नय न देखाडीये तो वादविवाद थई जाय. तेथी नय भेद करवाथी कुविकल्पना तरंग उठेते तरंगथी चेतन स्थिर न थाय, अने चंचलतापणुं वधे तेथी अनुभव दशाग्रह्यो न जाय. माटे नयपक्ष तजीने अनुभव अभ्यासने कारणे जीव द्रव्य अचल छे, अबाधित छे, अखंड छे, एक छे, एवा स्वरूपनुं स्थानक साधिने सुख ग्रहण करिये ॥ ६० ॥

हवे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावे करीने आत्मानुं अखंडितपणुं कहे छेः—

अथ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जेसे एक पाकी आंबफल ताके चारि अंस, रसजाली गुठली छालक जब मानिये; यौं तो न बने पे एसे बने जेसें वहे फल, रूप, रस, गंध, फास, अषंड प्रवानिये; तेसे एक जीवकों दरव, षेत्र, काल, भाव, अंस भेद करि भिन्न भिन्न न वषानिये; दर्व रूप, षेतरूप, कालरूप, भावरूप, चारों रूप अलख अखंड सत्ता मानिये ॥६१॥

अर्थः—शिष्य कहेछे. हे! स्वामी! द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप वस्तुना चार अंश तमे कह्यो छो, त्यां एवुं दृष्टांत आपवुं के, एक आंबफल छे तेना रस, जाली एटले रेसो, गोटली अने छाल ए चार अंश छे, तेमज वस्तुना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव ए अंश होय के न होय? हवे गुरु कहे छे, हे! शिष्य! आहीं तुं अंशकेο खंड समज्यो तेथी ए दृष्टांत दीधुं. तेतो बने नही पण आंही अखंडपणामां चार अंश लाववा तेनुं दृष्टांत ए छे, के तेज आंब फल छे, तेमां रूप, रस, गंध ने स्पर्श ए चारे अखंडपणे प्रमाण करिए, ए चार रस छे, तेम एक जीवनुं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप अंशभेदे करीने रस जाली गोठलीने छाल ए खंड खंड वखाणीये नहीं. आंही जे साध्यरूप आत्मा सत्ता छे, ते द्रव्यथी अखंडितपणे, आत्मा द्रव्यरूप छे, अने क्षेत्रथी अखंडपणे असंख्यात प्रदेशाअवगाहपणे छे, कालथी अखंड त्रिकाल वर्त्तिछे, भावथी अखंड ज्ञायक भावपणे छे; एम जीवना चार अंश अखंडपणे मानीये ॥ ६१ ॥

हवे साध्यपदमां ज्ञान ज्ञेयतुं विशेष पणुं अने अविशेष पणुं कहेछे;–

अथ ज्ञान ज्ञेय वीशेष कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कोउ ज्ञानवान कहे ज्ञान तो हमारो रूप, ज्ञेय षटदर्व सो हमारो रूप नांही हे; एक नै प्रवान एसे दूजी अब कहों जेसे, सरस्वती अक्षर अरथ एक ठांही है; तेसे ज्ञाता मेरो नाम ज्ञान चेतना विराम, ज्ञेयरूप सकति अ नंतमुज पाही है; ताकारण वचनके भेद भेद कहों कोउ, ज्ञाता ज्ञान ज्ञेयको वि लास सत्ता मांही हे ॥६२॥ चोपाईः ॥ स्वपर प्रकाशक सकति हमारी; ताथे वचन भेद भ्रम भारी; ज्ञेय दसा द्विविधा परगासी; निज रूपा पररूपा भासी, ॥ ६३ ॥ ॥ दोहराः ॥–निजरूपा आतम सकति, पररूपा परवस्त, जिनि लखि लीनो पेच यह, तिनि लिख लियो समस्त ॥ ६४ ॥

अर्थः–कोई ज्ञानवंत प्राणी पोताना अनुभव प्रमाणथी एम कहेछे, के जे ज्ञान छे तेतो अमारुं रूप छे. अने जे षट् द्रव्य ज्ञेयछे तेतो अमारुं रूप नथी, तेथी ज्ञान अने ज्ञेय विशेषपणामां छे. गुरु कहे छे, एतो एकज नय प्रमाण छे. हवे बीजा नयथी जेम अविशेषपणुं थाय छे, तेम कहुं छु. जेम सरस्वती के० विद्यारूप अर्थ छे. तेम अक्षर के० विद्यारूप अर्थ एकठो रहे, तेम ज्ञाता ते तो माहारुं नाम थयुं. अने जे ज्ञान छे तेतो चेतनानो विराम के० प्रकार छे. अने जे ज्ञान ज्ञेय पणे परिणम्युं छे, ते तो ज्ञेयरूप शक्ति छे. एवी अनंत शक्ति महारीज पासे छे. ते कारणथी वचन भेद करीने ज्ञान अने ज्ञेयनो भेद कोई भले कहो, पण बीजो नय देखवाथी ज्ञाननो ने ज्ञेयनो विलास आत्मा सत्तामांज छे. तेथी अविशेष पणुं छे. ॥ ६२ ॥ जेथी हमारी शक्ति एवी छे जे पोतानो प्रकाश करे अने परनो पण प्रकाश करे तेथी स्वपर प्र काशक छे, तेथी ज्ञान अने ज्ञेय ए वचन भेदे जे भेद छे, तेज भारी भ्रम उपजा वेछे; पण वस्तु एक छे. ज्ञेय के० जे जाणवा योग्य तेतो दशा बे प्रकारे करीने कही. एक तो निजरूपा बीजी पर रूपा कही छे ॥ ६३ ॥ आंही जे निजरूप ज्ञेय दशाक हीए तेतो स्वरूप प्रकाशक आत्म शक्ति छे, अने जे बीजी पर रूप ज्ञेय दशा ते पर वस्तु छे. जेणे एवातनो पेच जाण्यो तेणे तो समस्त जाण्युं ॥ ६४ ॥

हवे एज पेच स्याद्वादमां जोइए ते स्याद्वादरूप वस्तुनुं वर्णन करेछेः–

अथ स्याद्वाद रूप वस्तु वर्णनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–करम अवस्थामे अशुद्धसो विलोकियत, करम कलंकसों रहित शुद्ध अंग हे; उभे नै प्रवान समकाल सुद्धासुद्धरूप, एसो परजाइ धारी जीव नाना रंग हे; एकही समेमें त्रिधारूप पे तथापि याकी, अखंडित चेतना सकति स

वंग हे; यहे स्याद्वाद याको भेद स्याद्वादी जाने, मूरख न माने जाकी हियो हग भंग हे. ॥ ६५ ॥ निहचे दरव द्रिष्टि दीजे तब एकरूप, गुन परनति भेद भावसों वहुत हे, असंष प्रदेश संयुगत सत्ता परवान, ज्ञानकी प्रभासों लोकाल्रोकमां न जुत हे, परजे तरंगनिके अंग छिनभंगुर हे, चेतना सकति सो अखंडीत अचुन हे, सोहे जीव जगति विनायक जगत सार, जाकी मौज महिमा अपार अदभुत हे. ॥ ६६ ॥ विभाव सकति परिनतिसों विकल दीसे, सुद्ध चेतना विचारते सहज संत हे; करम संयोग सो कहावे गतिको निवासी, निहचे सरूप सदा मुकत महंत हे; ज्ञायक सुभाव धरे लोकालोक परगासी, सत्ता परवान सत्ता परगास वंत हे; सोहे जीव जानत जहांन कौतुकी महान, जाके कीरति कहान अनादि अनंत हे. ॥ ६७ ॥

अर्थः—कार्मण शरीर सहित आत्मानी कर्म अवस्थामां दृष्टि दईए, तो आत्माने शुद्ध देखीए छीए. अने कर्म कलंक रहित केवल आत्मामांज दृष्टि दइए तो तो शुद्ध अंग छे. अने ए बेउनय समकालेज प्रमाण करीए तो शुद्धशुद्धरूप कह्युं जाय. एमां पर्यायनी धाराये करीने जीवना विचित्र प्रकार छे. शुद्ध अशुद्ध अने शुद्धाशुद्ध ए त्रणरूप आत्माना एकज समय पामीए,यद्यपि एम छे तथापि त्रणेरूपमां आत्मानी अखंडित चेतना शक्ति सर्व अंगमां भरि रहि छे, तेज स्याद्वाद कहीए, तेनो भेद जे स्याद्वादी होय, तेज जाणे, पण जेनुं हइयुं हगभंग के० सम्यग् दृष्टि रहित छे, ते मूर्ख एनो भेद न जाणे. ॥ ६५ ॥ निश्चयनयथी द्रव्य उपर दृष्टि आपिये तो आत्म द्रव्य एकरूप छे अने ए आत्म द्रव्यना गुण परिणतिरूप भेद भावथी जोइये तो आत्मा वहुरूपे छे अने आत्मानी सत्ता असंख्यात आकाश प्रदेश संयुक्त छे, अने ते सत्ताने प्रमाण आत्मा कह्यो जायछे. अने ज्ञाननी प्रभा विचारीएतो लोकालोक प्रमाण क्षेत्रथी संयुक्त आत्मा कह्यो जायछे, तथा क्षणक्षणमां पर्याय रूप तरंगना अंग विचारीएतो जीव क्षणभंगुरज कहेवाय छे, अने तेने चेतना शक्तिथी विचारीए तो सदा सर्वदा अखंडज कहेवाय, अने अच्युत कहेवाय छे. तेज जीव जगत्नो विनायक के० धणी अने जगत्मां सारभूत पदार्थ छे. जेना मोज अने महिमा अपार छे अने अद्भुत छे ॥ ६६ ॥ हवे बीजुं पण स्याद्वाद कहेछेः—राग द्वेषादिक विभाव शक्तिथी परिणम्यो देखीए तो आत्मा विकल देखाय छे; अने तेनी शुद्ध चेतनाज विचारीएतो सहज संतरूप दीसे छे; कर्म संयोग सहित आत्मा विचारीये तो चारे गतिनो वासी अने चोराशी लाख योनिनी दासी कहेवाय छे; अने निश्चयनयथी एवुं स्वरूप जो विचारीए तो सदा सर्वथा मुक्तिरूप महंत छे; अने जो एने ज्ञायक स्वभाव धारी विचारीए तो लोकालोक प्रकाशक अमेय कहेवाय; अने जो ए आत्मानी

प्रकाशवंत सत्ता विचारिये तो पोतानी सत्ता प्रमाण आत्मा होय; ते जीव वस्तु साध्य छे. जे जहांन के० जगतने जाणेछे, जे महोटो कौतुकी पुरुष छे, जेनी कीर्त्ति अने कथा अनादि अनंत काल लगी एवीज चालती आवेछे ॥ ६३ ॥

हवे साध्यरूप केवल दशानुं वर्णन करे छेः–अथ केवल दशा वर्ननः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–पंच परकार ज्ञानावरनको नास करि, प्रगटी प्रसिद्ध ज गमांहि जगमगी है; ज्ञायक प्रज्ञामे नाना ज्ञेयकी अवस्था धरि, अनेक भई पे ए कतामें रसपगी हैं; याही भांति रहेगो अनंत, काल परजंत, अनंत शकति फोरि अ नंत सों लगी है; नरदेह देवलमे केवलमें सरूप सुद्ध, ऐसी ज्ञान ज्योतिकी सिषा समाधि जागी है ॥ ६७ ॥

अर्थः–मति ज्ञानावरणीय प्रमुख पांच प्रकारना ज्ञानावरणीय कर्मनो नाश करीने प्रसिद्ध के० प्रत्यक्षपणे प्रगटी एवी जे ज्ञान ज्योतिनी सिषा जगत्मां जगमगी रही छे. ते ज्ञान ज्योतिनि शिषा पोतानी ज्ञायकपणारूप प्रज्ञामां नाना प्रकारना ज्ञे यनी अवस्था धरीने अनेक रूप थई छे, तेपण ज्ञायक पणानी जे एकता छे तेना रसथी मली रही छे. तेज रीते अनंत काल पर्यंत रहेशे. अने अनंत वीर्य फोर वीने अनंत पदथी लागी रहेशे. ज्यारे मनुष्यना देहरूप देवलमां शुद्ध केवल ज्ञान स्वरूपे एवी ज्ञान ज्योतिनी सिखा जेवी समाधि छे, ते जाग्रत थई एटले सर्व विषमता भाव मटि गयो ॥ ६७ ॥

हवे अमृतचंद्र आचार्य छे ते चंद्रमा छे. अने तेनी कलारूपि त्रण धारा छे, तेनुं जुदा जुदा अर्थथी वर्णन करे छेः–अथ अमृत चंद्र कलाके तीन अर्थ कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–अक्षर अरथमे मगन रहे सदा काल, महा सुख देवा जै सी सेवा काम गविकी; अमल अबाधित अलष गुन गावना है, पावना परम शुद्ध भावना है भविकी, मिथ्यात तिमर अपहार वर्द्धमान धारा, जैसी उभे जामलों कि रन दीपे रविकी; ऐसी है अमृत चंदकला त्रिधारूप धरे, अनुभो दशा गरंथ टीका बुद्धि कविकी ॥ ६ए ॥ दोहराः ॥–नाम साधि साधक कह्यो, द्वार द्वादशम ठीक, समय सार नाटक सकल, पूरन भयो सटीक ॥ ७० ॥

अर्थः– अमृतचंद्रनी अनुभव दशारूप कला छे, तेतो अक्षर अर्थमां के० मोक्ष प दार्थमां सदाकाल मग्न रहे छे, अने जेवी कामधेनुनी सेवा सुखदायक थाय तेवी सुखदायक छे; अने अमृतचंद्रनीग्रंथ टीकारूप कला छे तेज पाछला वर्णने करी यु क्त छे, अने अमृतचंद्र कविनी बुद्धि छे, तेतो अक्षर अर्थ के० शब्दार्थ तेमां मग्न रहे छे. आगल बीजुं वर्णन पूर्वली रीते जेम अमृतचंद्रनी अनुभव दशानी कला अने

अने ग्रंथनी टीकानी कला अने कविकला ए त्रणे कला अमल छे, अबाधित छे, अलख पुरुषनागुणनुं गायन करतीज रहे छे तेथी पावन छे, जव्यत्व पणानी परम शुद्ध जावना छे, अने ए त्रणेकला, मिथ्यात्वरूप अंधकारनी अपहरण करनार छे, अने चडते परिणामे छे; जेम चढता बे पोहोरो लगी सूर्यना किरण चढता चढता दीपे छे, तेम ए कलापण वधती वधती दीपे छे, एवी अमृतचंद्र आचार्यनी कला छे ते त्रण प्रकारनुं रूप धारण करे छे, एक तो अनुजवदशा, बीजी ग्रंथनी टीका करी ते अने त्रीजी काव्य बंध करतां कविकला कीधी ॥ ६ए ॥ साध्य साधक सामे बारमो द्वार ठीक कह्यो; अमृतचंद्र आचार्यनो करेलो कलशरूप समयसार नाटक ग्रंथ टीका समेत संपूर्ण थयो ॥ ७० ॥

॥ इतिश्री समयसार नाटकनो साध्य साधकनामा बारमोद्वार बालावबोधरूप संपूर्ण थयो ॥ ग्रंथाग्रंथ ७००० श्लोक मान छे. ॥

हवे ग्रंथनी अंते अमृतचंद्र आचार्य कवि आलोचनाकरेछेः–अथ कविआलोचनः–

॥ दोहराः ॥–अब कविजन पूरव दशा, कहै आपसों आप; सहज हरष मनमें धरै, करै न पछाताप. ॥ ७१ ॥ सवैया इकतिसाः ॥–जो मे आप छांमि दीनो पररूप गहि लीनो, कीनी न वसेरो तहां जहां मेरो थल है; जोगनिको जोगी रहि करमको कर्ता जयो, हिरदे हमारे राग दोष मोह मल है; ऐसी विपरीति चाल जई जो अतीत काल, सो तो मेरी क्रियाकी ममता ताको फल है; ज्ञान दृष्टि जासी जयो क्रियासों उदासी वह, मिथ्या मोह निद्रामे सुपनको सो छल है. ॥ ७२ ॥ दोहराः ॥–अमृतचंदमुनिराज कृत, पूरन जयो गरंथ; समयसार नाटक प्रगट, पंचमगतिकोपंथ. ॥ ७३ ॥

अर्थः–हवे कलसनो करनार कविछे, ते पोतानेज पोतानी पूर्वदशा कहेछे. पोताना मर्म जाणवाथी सहज हर्ष उपज्यो छे, ते आलोचनामां धारे छे, पण पस्तावो करतो नथी. ॥ ७१ ॥ अतीत काले जे महारो आत्मानो स्वजाव हतो ते मे छांमि दीधो, अने पर जे कर्मादिक पररूप हतो ते में लई लीधो, अने ज्यां समाधिविषे मारो निवास हतो, त्यां में वास न कीधो. पांच इंद्रियोना विषय जोगनो जोगी थईने कर्मनो कर्त्ता थयो, अमारा हैयामां राग द्वेषरूप महा मोह मल हतो, एवी उलटी चाले चाल्यो तेतो अतीत कालमां वात वीती; एवुं जे कार्य थयुं, तेतो मारी क्रियामां ममता राखी तेनुं फल थयुं; हवे तो ज्ञान दृष्टि जासी तेथी क्रियाथी उदासी थयो, अने जे अतीत कालमां अवस्था थई तेतो मोह मिथ्यात्व निद्रामां स्वपना जेवो खेल थयो. ॥ ७२ ॥ अमृतचंद आचार्यनो करेलो ग्रंथ संपूर्ण थयो; आ समयसार नाटक जे ग्रंथ छे ते प्रगट पणे पंचम गतिके० मुक्तिनो पंथ छे. ॥ ७३ ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक ग्रंथ अमृतचंद आचार्यकृत संपूर्णम् ॥

हवे बणारसीदास कहेछेः—

॥ दोहराः ॥—जाकी भगति प्रभावसों, कीनो ग्रंथ निवाहि; जिन प्रतिमा जिन सारषी, नमे बनारसी ताहि. ॥ ७४ ॥

अर्थः—जेनी भक्तिना प्रभावे करीने गहनार्थ ग्रंथहतो तेनो निर्वाहकीधो, एवी आकालमां जिन प्रतिमा जे श्रीजिनेश्वर सरषी छे तेने बणारसीदास नमेछे. ॥ ७४ ॥

हवे जेवा श्री जिनेश्वर देव महात्म्यवंत छे, तेवी जिन प्रतिमा पण महात्म्यवंत छे ते कहेछेः—अथ जिन प्रतिमा महात्म्य कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जाके मुख दरससों भगतके नैननिकों, थिरताकी वानी चढी चंचलता विनसी; मुद्रा देखे केवलीकी मुद्रा यादि आवे जहां, जाके आगे इंद्रकी विभूति दिसे तिनसी; जाको जस जपत प्रकास जगे हिरदेमे, सोई सुद्ध मती होइ हुती जो मलिनसी; कहत बनारसी सुमहिमा प्रगट जाकी, सोहे जिनकी छबी हे विद्यमान जिनसी ॥ ७५ ॥

अर्थः—श्री जिन प्रतिमाना मुख दर्शन थवाथी जे तेना भक्तजन छे तेना नयनने कंइ आगल सम्यग् दशा के० संवर दशा पामेली होय तेनी स्थिरतानी वाणी वधे अने जे भावपदार्थमां चंचलता होय तेनो नाश थाय. अने पद्मासन स्थित मुद्रा आकार ज्यां देखे, त्यां केवलीनी मुद्रा याद आवे छे; ते केवलीनी मुद्रा एम संभारवामां आवे छे के, जेनी आगल इंद्रनी संपदा छे ते तृण समान देखायछे, एटले चोसठ इंद्र महिमाकरेछे, अने ते दशा सांभलवामां आवे त्यारे त्यां जे केवलीना जश कहेवायछे, तेना गुणनो प्रकाश हैयामां जागेछे, अने त्यां जे पहेली मति सम्यग् दशामां मेली जेवी हती ते शुद्ध थई, तेथी वणारसीदास कहेछे के, जिन प्रतिमानो एवो प्रगट महिमा छे के ते विद्यमानजिनेश्वर समानज मानवी ॥ ७५ ॥

हवे जिनप्रतिमानो जे भक्तिवंत छे तेनुं वर्णन करेछेः—अथ प्रतिमा माने ताको वर्णनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जाके उर अंतर सुदृष्टिकी लहरि लसी, विनसी मिथ्यात मोह निद्राकी समारषी; सैली जिन सासनकी फली जाके घट भयो, गरवको त्यागी षट दरवको पारषी; आगमके अक्षर परे है जाके श्रवनमे, हिरदे भंडारमे समानी वानी आरषी; कहत बनारसी अलप भवस्थिति जाकी, सोइ जिन प्रतिमा प्रवाने जिन सारषी ॥ ७६ ॥

अर्थः—जेना हैयामां सम्यग् दर्शननी लेहेर विराजमान थई रही छे. अने मिथ्यात्व मोहनीय रूप निद्रानी मूर्छा ते विनास पामी छे, तथा जेना घटमांथी जिन शा

सननी शैली के० तत्त्व समजवामां अने तत्त्व समजणमां अहं बुद्धिरूप अभिमाननो त्याग थयोछे, अने जे छ ए द्रव्यने परखनारो छे, जेना श्रवणमां आगमना अक्षर पडे छे, एटले जे सिद्धांत सांभले छे, वली "ऋषेरियं आर्ष" आर्षित, ऋषि संबंधी वाणी ते जिनवाणी कहियें, ते जेना हृदयरूप भंडारमां समाणी छे, एटले भरी छे, तेमज वणारसी दास कहे छे के जेनी भवस्थिति अल्प आवी रही छे, तेज पुरुष जिन प्रतिमाने जिन सरिषी प्रमाण करेछे ॥ ७६ ॥

हवे वणारसी दास पोतानी कथनी कहेछेः–अथ वणारसी कथनः–

॥ चोपाईः ॥–जिन प्रतिमा जन दोष निकंदे; सीस नमाइ बनारसिवंदे; फिरि म नमांहि विचारे ऐसा; नाटक ग्रंथ परम पद जैसा ॥ ७७ ॥ परम तत्त्व परचे इस मांही; गुन थानककी रचना नांही; यामे गुनथानक रस आवे; तो गरंथ अति शोभा पावे ॥ ७८ ॥ दोहराः ॥–यह बिचारि संक्षेपसों, गुनथानक रस योज, बरनन करे बनारसी, कारन सिव पथ खोज ॥ ७९ ॥

अर्थः–जिन प्रतिमा छे तेज मनुष्यना राग द्वेष मिथ्यात्वनुं निकंदन करनार छे, तेथी वणारसीदास मस्तक नमावीने तेने वंदे छे. पछी बनारसीदास मनमां एम विचारे छे के, आ नाटक ग्रंथमां जेवुं परमपद छे तेवुं आहीं कहेछे ॥ ७७ ॥

आ ग्रंथनां उपादेयरूप परम तत्त्व, आत्म तत्त्वनो परिचय छे. पण गुणस्थानकनी रचना आ ग्रंथमां नथी. हवे जो आ ग्रंथमां गुणस्थानकनो रस आवे तो आ ग्रंथ सारी शोभा पामे ॥ ७८ ॥ ए प्रमाणे विचारीने संक्षेप मात्र गुण स्थानकना रसनी भीजनुं वणारसीदास वर्णन करें छे. ते वर्णन शिवपंथनुं कारण छे अने शिवपंथनी खोजना छे. ॥ ७९ ॥

हवे गुणस्थानकनुं स्वरूप छे तेवुं कहेछेः–अथ गुनथानक सरूप कथनः–

॥ दोहराः ॥–नियत एक विवहारसों, जीव चतुर्दश भेद; रंग जोग बहु विधि भयो, ज्युं पट सहज सुपेद. ॥ ८० ॥

अर्थः–निश्चे जीव एकरूप छे. अने व्यवहारनयथी जीव चौद भेदे छे. आहीं दृष्टांत आपेछे, जेम वस्त्र सहज रंगमां सफेद छे. पण रंगना जोगथी विचित्र प्रकारना रंगनुं थाय, तेम गुणस्थानकथी जीवनो तेवो भेद छे. ॥ ८० ॥

हवे चौद गुणस्थानकनां नाम कहेछेः–अथ चतुर्दश गुनथानक कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः–प्रथम मिथ्यात दूजो सासादन तीजो मिश्र, चतुरथो अव्रत पंचमो व्रतरंच है; छठो परमत्त सातमो अपरमतनाम, आठमो अपूरव करन सुख संच है; नौमो अनिवर्त्तभाव दशमो सूछमलोभ, एकादशमो सु उपसंत मोह वंच

है; द्वादशमो छीन मोह तेरहों सजोगी जिन, चौदहों अजोगी जाकी थिति अंक पंच है. ॥ ८१ ॥ दोहराः ॥–वरने सब गुन थानके, नाम चतुर्दश सार; अब वरनों मिथ्यातके जेद पंच परकार. ॥ ८२ ॥

अर्थः–प्रथम मिथ्यात, बीजा सास्वादन, त्रीजोमिश्र, चोथो अविरत, पांचमो रंच मात्र व्रत एटले देशव्रती, ढठो प्रमत्त, सातमो अप्रमत्त, एवां नाम ढे. आठमो अपूर्वकरण अथवा निवृत्ति बादर, ए बे नाम ढे. ते आंही सुखनो संचके० मिलाप ढे. नवमो अनिवृत्ति बादर, दशमो सूक्ष्म लोज, अग्यारमो उपशांत मोह, आंही मोहनी वंचना ढे एटले मोहथी बुटवुं ढे. बारमो क्षीण मोह कहीए, तेरमो सयोगी जिन, ते केवली थयो, चौदमो अजोगी जिन, जेनी स्थिति अ इ उ ऋ लृ ए पांच ऱ्हस्व अक्षर जेटली ढे. ॥ ८१ ॥ एम सर्व चउदे गुण स्थानना नामनुं सत्यार्थ वर्णन कीधुं ते शोजे ढे. हवे अनुक्रमे पहेला मिथ्यात्व गुणठाणाना पांच प्रकारथी पांच जेद ढे ते कहुंबुं. ॥ ८२ ॥

हवे पांच मिथ्यात्वनां नाम कहेढेः–अथ पंच मिथ्यावत्के नाम कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–प्रथम एकंत नाम मिथ्यात अजिग्रहीक, दूजो विपरित अजिनिवेसिक गोत है; तीजो विनै मिथ्यात अनाजिग्रह नाम जाको, चोथो संसे जहां चित जोरकोसो पोत हे; पंचमो अज्ञान अनाजोगिक गहलरूप, जाके उदे चेतन अचेतनसो होत है; ए पांचो मिथ्यात जमावे जीवकों जगतमें, इन्हके विनास समकितको उदोत है. ॥ ८३ ॥

अर्थः–पांच मिथ्यात्वमां पेहेलुं एकांत पक्षना ग्राही अजिग्रहिक नामे मिथ्यात्व ढे. बीजुं मिथ्यात्व पेहेला मिथ्यात्वथी विपरित ढे. तेनुं अजिनिवेसिक एवुं गोत के० नाम ढे, त्रीजुं विनय मिथ्यात्व, सर्वने पूजवुं ते ढे, जेनुं नामा अनाजिग्रहिक ढे, चोथुं संसयिक मिथ्यात्व ज्यां जमराना बचानी माफक, चित्त भ्रमण करतुं रहे, पांचमुं अज्ञान मिथ्यात्व, ए अनाजोगीक पणाथी अजाणपणे एकेंड्रियादिकमां गहलरूपि ढे. निद्रानी ढाकनुं स्वरूपी ढे. जेना उदयथी चेतन ढे ते अचेतन थई रह्युंढे. जेना नाम लीधा ते एज पांचे मिथ्यात्व जीवने जगत्मां जमावेढे. ए पांचे मिथ्यात्वनो विनाश थएथी समकितनो उद्योत थायढे ॥ ८३॥

हवे एकांतवादी अजिग्रहीक मिथ्यात्वनुं लक्षण कहेढेः–अथ एकांत यथाः–

॥ दोहराः ॥–जो इकंत नय पक्ष गहि, ढके करावे दक्ष, सो इकंत वादी पुरुष मृषावंत परतक्ष. ॥ ८४ ॥

अर्थः–साते नयमां हर कोई एक नयनो पक्ष ग्रहीने पोताना जाणपणामां छकी जायछे, अने दक्ष के० तत्ववेत्ता कहेवाय, ते एकांत मतनो स्थापक मीमांसक नैयायक प्रमुख पुरुष छे ते प्रत्यक्षपणे अभिग्रहीक मिथ्यात्वी छे ॥ ७४ ॥

हवे जाणपणामां तो कांईक अनेकांतपणुं छे, पण हठथकी विपरीत कहेछे माटे तेनुं लक्षण कहेछेः–अथ विपरीत यथाः–

॥ दोहराः ॥–ग्रंथ उकति पथ उछपे, थापे कुमत मुकीय, सुजस हेत गुरुता ग्रहे, सो विपरीती जीय ॥ ७५ ॥

अर्थः–ग्रंथमां जे कह्यो एवो मार्ग तेने उथापीने निन्हवादिक पोतानी कुमति थापे, पोतानी प्रसिद्धि थवाने माटे गुरुता के० आचार्यपणुं ग्रहेछे, ते जीव अनेकांतताथी विपरीत थयो तेने अभिनिवेशिक मिथ्यामती कहीए ॥ ७५ ॥

हवे जेनुं विनय मिथ्यात्व छे एवा अनभिग्रहिक मिथ्यात्वीनुं लक्षण कहेछेः–

अथ विनय मिथ्यात्व यथाः–

॥ दोहराः ॥–देव कुदेव सुगुरु कुगुरु, गिने समान जु कोइ; नमें भगतिसों सब निकों, विनय मिथ्याती सोइ ॥ ७६ ॥

अर्थः–सुदेवने अने कुदेवने सुगुरुने अने कुगुरुने जे कोइ समानज गणे छे, अने तामली तापसनीपरे परिणाम प्रवर्ज्या लेइने भक्तिथी सर्वेने नमेछे, पण गुणदोषनी खबर न होय ते विनय मिथ्यात्व कहिये ॥ ७६ ॥

हवे जेना जाणपणामां संदेह छे, ते संशय मिथ्यात्वी कहिये तेनुं लक्षण कहेछेः–

अथ संशय यथाः–

॥ दोहराः ॥–जो नाना विकलप गहे, रहे हिए हेरान; थिर व्हे तत्व न सद्दहे, सो जिय संसयवान ॥ ७७ ॥

अर्थः–जे अपार नय जाल देखिने जीवमां संशय राखे, नानाप्रकारना चित्त विकल्प ग्रहे अने हेरान थई रहेछे. स्थिरता राखीने तत्त्वने सर्दै नही तेज जीव संशयवंत मिथ्यात्वी कहीये ॥ ७७ ॥

हवे पांचमा अज्ञान मिथ्यात्वीनुं लक्षण कहेछेः–अथ अज्ञान यथाः–

॥ दोहराः ॥–जाको तन दुख दहलसों, सुरति होति नहिं रंच; गहल रूप वरते सदा, सो अज्ञान तिरयंच ॥ ७८ ॥ पंच भेद मिथ्यातके, कहे जिनागम जोइ; सादि अनादि सरूप अब, कहों अवस्था दोइ ॥ ७९ ॥

अर्थः–शरीरमां दुःखना दहेलथी जेने हेय उपादेयनी, रंचमात्र सुरता रेहेती नथी, मूर्छित रूपे जे सदा वर्त्ते छे, ते एकेंद्रियादिक तिर्यंच अज्ञान मिथ्यात्वी कहिये॥७८॥

श्री जिनेश्वरना आगम सिद्धांत जोईने मिथ्यात्वना पांच जेद कहेछेः–जेनी आदि पामीए तेतो आदि मिथ्यात्व कहीए, अने जेनी आदि न पामीए तेतो अनादि मिथ्यात्व कहिये, एवी एवी मिथ्यात्वनी अवस्थानुं स्वरूप हवे कहेछे ॥ ८९ ॥

प्रथम सादि मिथ्यात्वनुं लक्षण कहेछेः–अथ सादि यथाः–

॥ दोहराः ॥–जो मिथ्या दल उपसमे, ग्रंथ जेद बुद्धि होइ,
फिरि आवे मिथ्यातमें, सादि मिथ्याती सोइ ॥ ९० ॥

अर्थः–जे मिथ्यात्व मोहनीयना दलने उपशमावीने मिथ्यात्व ग्रंथी जेदीने ज्ञाता समकिती थईने पाछा मिथ्यात्वमां आवे ते सादि मिथ्यात्व कहीए. एना मिथ्यात्वमां हवे आदि थई तेथी सादि मिथ्यात्वी कहिये ॥ ९० ॥

हवे बीजुं अनादि मिथ्यात्वनुं लक्षण कहेछेः–अथ अनादि मिथ्यात्व कथनः–

॥ दोहराः ॥–जिनि गरंथि जेदी नही, ममता मगन सदीव; सो अनादि मिथ्यामती, विकल बहिर्मुख जीव. ॥ ९१ ॥

अर्थः–जे जीवे मिथ्यात्व ग्रंथी जेदी नथी अने सदासर्वदा काल लगण, ममता मांज मग्न रहे, ते जीव अनादि मिथ्यात्वी कहीए; अने जे बहिर्मुख रहे, जेने परमात्मा द्रव्यनी दृष्टि नथी, ते बहिर्मुख जीव कहीए. ॥ ५१ ॥

॥ इति श्री बणारसीदास कृत समयसार नाटकनेविषे प्रथम गुणस्थानकनो अधिकार संपूर्ण थयो.॥

॥ दोहराः ॥–कह्यो प्रथम गुण थान यह, मिथ्या मत अजिधान; अलप रूप अब वरनवुं, सासादन गुन थान. ॥ ९२ ॥

अर्थः–जेनुं मिथ्यात्व एवुं नाम छे, ते पेहेलुं गुणस्थानक सूचना मात्र कह्युं, हवे संक्षेप मात्र सास्वादन गुणस्थाननुं स्वरूप कहुंछुं. ॥ ९२ ॥

॥ सवैया इकतीसा; ॥–जैसे कोउ क्षुधित पुरुष खाइ खीर खांड, वोन करे पीछे के लगार स्वाद पावे हे; तैसे चढि चोथे पांचमे के छठें गुनथान, काहु उपसमीको कषाइ उदे आवे हे; ताहि समे तहां गिरे परधान दशा त्यागी, मिथ्यात अवस्थाकों अधोमुख व्हें धावे हे; बीच एक समे वा छ आवली प्रमान रहे, सोइ सासादन गुनथानक कहावे हे. ॥ ९३ ॥

अर्थः–जेम कोइ क्षुधावंत पुरुष छे ते खीरखांड खाय, पछी तेने वमन करेछे. ते वमनना पछी पण खीरखांडना जोजननो लगारेक स्वाद पामेछे. तेम कोइ जीव उपशम सम्यक्त्व पामीने चोथे अविरत गुणस्थाने रह्यो छे. अथवा उपशम सम्यक्त्व पामताज सरखो समान पांचमा गुणठाणें अथवा छठे गुणठाणे चढ्यो त्यां समकितनी

उज्वलता न थई, अने अनंतानुबंधी उपशमि कषाय हतो ते उदय थयो ते समयमां ते त्रणे गुणठाणाथकी ते उपशम सम्यक्त्वनी प्रधान दशा जे श्रेष्ट दशा तेने त्यागीने फरी मिथ्यात्व दशाने ऊंधे मुखे उलटो रहेछे, एटले मिथ्यात्व पामतामां अने सम्यक्त्व छूटतामां वच्चे एक समयकाल प्रमाणे अथवा उत्कृष्ट छ आवलिका प्रमाणे जे सम्यक्त्व अंश रहेछे तेनेज सास्वादन गुण स्थानक कहिए. ॥ ९३ ॥

॥ इति द्वितीय गुन थानक समाप्तः ॥

॥ दोहराः ॥–सासादन गुन थान यह, जयो समापत बीय; मिश्र नाम गुन थान अब, वरनन करों त्रितीय. ॥ ९४ ॥

अर्थः–आ बीजुं सास्वादन नामे गुणस्थान संपूर्ण थयुं. हवे त्रीजुं मिश्र गुनथाननुं वर्णन करुंछुं. ॥ ९४ ॥

॥ सवैया इकतीसाः ॥–उपसमी समकिती केतो सादि मिथ्यामती, दुहूनिको मिश्रीत मिथ्यात आइ गहे है; अनंतानुबंधी चोकरीको उदे नांही जामे, मिथ्यात समे प्रकृति मिथ्यात न रहेहे; जहां सद्दहन सत्यासत्यरूप समकाल, ज्ञान जाव मिथ्या जाव मिश्र धारा वहे हें; जाकी थिति अंतर मुहूरत वा एक समे, एसो मिश्र गुन थान आचारज कहे है. ॥ ९५ ॥

अर्थः–उपशम सम्यक्त्वि मिथ्यात्व, मिश्र,अने सम्यक्त्व रूप त्रण पुंज करीने ज्यारे मिश्र पुंजमां जीव वर्त्ते, अथवा सम्यक्त्वथी पडीने फरी मिथ्यात्वमां आवी सादि मिथ्यात्वी थईने मिश्र पुंज उदय थयाथी मिश्रमां वर्त्ते, ए बेउने मिश्र गुण स्थानक कहिये, केमके मिथ्यात्व सम्यक्त्व थको वर्त्ते छे. जेथी संसार अनंतो वधे ते अनंतानुबंधीनी चोकडी कहिए, तेनो जेमां उदय नथी अने मिथ्यापणुं शमे तथा उपशमेछे, त्यां मिथ्यात्वनी प्रकृतिनो उदय रहेतो नथी. ज्यां समकाले सत्यासत्यरूप श्रद्धा छे, एटले श्रद्धामां साचुं खोटुं बेउ छे, तिहां ज्ञान जाव छे, ते मिश्र धारामां वहेछे. अने मिथ्यात्व जाव पण सम्यक्त्व धाराथी मिश्रित धारा थकी वहेछे. जेनी उत्कृष्टि स्थिति अंतर्मुहूर्त्त कालनी छे, अथवा जघन्य एक समयनी छे. एनुं नाम त्रीजुं मिश्र नामे गुणठाणुं आचार्यजी कहेछे. ॥ ९५ ॥ ॥ इति तृतीय गुनस्थान समाप्तः ॥

॥ दोहराः ॥–मिश्र दशा पूरन जई, कही यथा मति जाषि; अब चतुर्थ गुनथान विधि, कहों जिनागम साषि, ॥ ९६ ॥

अर्थः–मिश्र गुणठाणानी जेवी दशा छे, ते जेवी पोतानी बुद्धि छे तेवी रीते जाषारूप कही ते संपूर्ण थई, हवे श्री जिनागमनी शाष लईने चोथा सम्यक्त्व गुणठाणानो विधि कहुंछुं ॥ ९६ ॥

हवे चोथा सम्यक्त्व गुणठाणानुं वर्णन करेछे:—अथ सम्यक्त्व वर्णनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—केई जीव समकित पाइ अर्ध पुज्गल, परावर्त्त काल तांई चोखे होई चित्तके; कोई एक अंतर मुहूरतमें ग्रंथि भेदि, मारग उलंघि सुख वेदे मोष वितके; ताते अंतरमुहूरतसों अर्द्ध पुज्गलसों, जेते समे होही तेते भेद समकितके; जाही समे जाको जब समकित होई सोई, तबहीसों गुन गहे दोष दहे इतके.॥९७॥

॥ दोहराः ॥—अथ अपूर्व अनवर्त्ति त्रिक, करन करे जो कोइ; मिथ्या ग्रंथि विदार गुन, प्रगटे समकित सोइ. ॥ ९८ ॥

अर्थः—सम्यक्त्व पामीने चित्तनो चोखो थईने अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त काल लगण संसारमां रहेछे,अने कोईक जीव तो एकज अंतमुहूर्त्त कालमां मिथ्यात्व ग्रंथी भेदी समक्त्व पामीने चारे गतिनो मार्ग उल्लंघन करी मोक्षरूप वित्तना सुख वेदे, पण संसारमां रहे नही, तेथी सम्यक्त्व पामीने जघन्य संसार स्थिति एक अंतर् मुहूर्त्तनी छे अने उत्कृष्ट संसार स्थिति अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनी थायछे, हवे एटली संसार स्थितिनी वचमां एक एक समयनी वृद्धि करता जेटला ते स्थितिना भेद थाय तेटला सम्यक्त्वना भेद पामीए. ए रीते सम्यक्त्वना घणा भेद पामिये; जे समये जेने सम्यक्त्व उदय होय ते समये ते जीव त्यारथी पोताना गुण ग्रहेछे; अने इतके के० ते संसार अवस्थाना दोषनुं दहन करेछे.॥९७॥ अथ के० यथाप्रवृत्ति करण, अपूर्व करण, अनिवृत्ति करण ते त्रणे करण जे कोई भव्यजीव करेछे त्यां कोईक वखते एक, आयुकर्मविना साते कर्मनी स्थिति अंत कोडा कोडी सागरोपम प्रमाण रहे, त्यारे यथाप्रवृत्ति करण थाय. पछी मिथ्यात्व ग्रंथी भेदवाथी अपूर्वकरण थाय, अने सम्यक्त्व प्रगटवाथी अनिवृत्तिकरण थाय, जे कोई एत्रणे करणे करी मिथ्यात्व ग्रंथी विदारीने सम्यक्त्व स्वरूप पामे तेज सम्यक्त्व कहिये ॥ ९८ ॥

हवे अष्ट प्रकारथी सम्यक्त्व विवरण करे छेः—अथ अष्टरूप कथनः—

॥ दोहराः ॥—समकित उतपति चिन्ह गुन, भूषण दोष विनास; अतीचार जुत अष्ट विधि, वरनों विवरन तास ॥ ९९ ॥

अर्थः—सम्यक्त्वनुं सरूप,१ सम्यक्त्वनी उत्पत्ति,२ सम्यक्त्वनुं चिन्ह,३सम्यक्त्वनो गुण, ४ सम्यक्त्वनुं भूषण, ५ सम्यक्त्वना दोष, ६ सम्यक्त्वनो विनाश,७ सम्यक्त्वना अतिचार, ८ ए सर्व आठ प्रकार थया, तेनो विवरो करुंछुं ॥ ९९ ॥

हवे प्रथम सम्यक्त्वनुं सरूप कहेछेः—अथ सम्यक्त्व यथाः—

॥ चोपाईः ॥—सत्य प्रतीति अवस्था जाकी; दिन दिन रीति गहे समताकी; छिन छिन करे सत्यको साको; समकित नाउ कहावे ताको ॥ ६०० ॥

अर्थः–सत्यमां जेनी प्रतीत छे, जे साचानेज सर्दहेछे, एवी जेनी अवस्थाछे अने दिवसे दिवसे वधती वधती क्षमा निर्लोजता प्रमुख समतानी रीत जे ग्रहण करेछे. एवुं सत्य कार्य पहेलां कदी न कर्युं, तेथी हवे क्षण क्षणमां सत्यनी साको के० महा कार्य जे करेछे, ते जावनुं नाम सम्यक्त्व कहीए॥ ६०० ॥

हवे सम्यक्त्वनी उत्पत्ति कहेछेः–अथ उत्पत्ति यथाः–

॥ दोहराः ॥–केतो सहज सुजावको, उपदेशे गुरु कोइ; चिहुं गतिसेती जीवकों, सम्यक दरशन होइ, ॥ १ ॥

अर्थः–नदीने किनारे उजा पाणीना कल्लोल आवता जाताना न्यायथी एटले सरिदुपल घोलना न्यायथी कोइने सहज स्वजावमांज समकित उपजे, कोईने गुरुना उपदेश थकी सम्यक्त्व उपजे. जे जीव चारे गतिमां शयन निद्रा करी रह्यो हतो तेने जे सम्यक्त्व उपजे छे, ते एवा एवा प्रकारथी उपजेछे ॥ १ ॥

हवे जेथी सम्यक्त्व उपज्युं जाणीए ते सम्यक्त्वनां लक्षण कहे छेः–अथ लछन यथाः–

॥ दोहराः ॥–आपा पर परचेविषे, उपजे नहिं संदेह; सहज प्रपंच रहित दशा, समकित लक्षण एह ॥ २ ॥

अर्थः–आत्मा अने आत्माथी बीजां जे कर्मादिकना पुद्गल छे, एटले बीजा पांचे द्रव्य तेना परिचय प्रतीतिमां, संदेह उपजे नही अने सहज स्वजावमां आत्मदशा ते मायाप्रपंच रहितथाय ए सम्यक्त्वनां लक्षण कहिये ॥ २ ॥

हवे सम्यक्त्वना गुण कहेछेः–अथ गुन यथाः–

॥ दोहराः ॥–करुना वछल सुजनता, आतमनिंदा पाठ; समता जगति विरागता, धरम राग गुन आठ ॥ ३ ॥

अर्थः–दया तथा सर्वनुं हित वांछक पणु, सर्व साथे मैत्री जाव राखवो, आत्मनिंदानुं पठन करवुं, इष्ट अनिष्ट उपर समजावे रहेवुं, देव गुरुनी जक्ति, वैरागरसमांज जिज्या थका रहेवुं, धर्मथी राग राखवो. ए [illegible]क्त्वना आठ गुण छे ॥ ३ ॥

हवे सम्यक्त्वनां पांच जूषण कहे छेः–अथ [illegible]च जूषण यथाः–

॥ दोहराः ॥–चित प्रजावना जावजुत, हेय उपादेयवानि; धीरज हरष प्रवीनता जूषन पंच बखानि ॥ ४ ॥

अर्थः–चित के० ज्ञान एटले जिन शासननो जेवी रीते प्रजाव वधे तेवा जावमां रहेवुं, हेय उपादेयना ज्ञानवंत थई धैर्यमां रहेवुं, सम्यक्त्वपामीने हर्ष राखवो,तत्त्वविचारमां प्रवीणता राखवी, ए पांच सम्यक्त्वनां जूषण वखाणिए ॥ ४ ॥

हवे सम्यक्त्वना पचीस दोष कहेछेः—अथ पंचवीस दोष यथाः—

॥ दोहराः ॥—अष्ट महामद अष्ट मल, षट् आयतन विशेष; तीन मूढता संजुगत, दोष पचीसी एष. ॥ ५ ॥

अर्थः—अष्ट महामद छे, अने आठ मल छे, छ आयतन विशेष छे, अने त्रण मूढता छे; ए सर्व एकठा करीए तो पचीस दोष थाय. ॥ ५ ॥

हवे आठ जातना मद कहेछेः—अथ अष्ट मद यथाः—

॥ दोहराः ॥—जाति लाभ कुल रूप तप, बल विद्या अधिकार; इन्हको गरव जु कीजिये, यह मद अष्ट प्रकार. ॥ ६ ॥

अर्थः—जातिमद, लाभमद, कुलमद, रूपमद, तपमद, बलमद, विद्यामद, तथा अधिकार के० ऐश्वर्यमद ए आठ वस्तुनो जे गर्व करवो तेज आठ प्रकारना मद कह्याछे. ॥ ६ ॥

हवे आठ प्रकारना मल कहे छेः—अथ अष्ट मल कथनः—

॥ चोपाईः ॥—आसंका अस्थिरता वांछा; ममता दृष्टि दशा दुरगंछा; वत्सल रहित दोष परभाषे; चित्त प्रभावना मांहि न राषे. ॥ ७ ॥

अर्थः—धर्म उपर अने जिनशासन वचन उपर शंका राखे, धर्ममां स्थिरता नहीं. स्वर्गादिकनी वांछाधरे, कुटुंबादिकविषे ममत्व भाव राखे, ए धर्म मलीन छे एवी दुगंछा करे, स्वामी वत्सल न करे, पारका दोष प्रकाशे, ज्ञान प्रमुख विविध प्रकारनी प्रभावनामां चित्त न राखे. ए आठ मल जाणवा ॥ ७ ॥

हवे छ आयतन दोष कहेछे ते छ स्थान मिथ्यात्वनां कहेछेः—अथ षडायतनयथाः—

॥ दोहराः॥ —कुगुरु कुदेव कुधर्म धर, कुगुरु कुदेव कुधर्म; इनकी करे सराहना, यह षडायतन कर्म. ॥ ८ ॥

अर्थः—कुगुने माननार, कुदेवने सेवनार, कुधर्मने माननार, कुगुरु प्रशंसा, कुदेव प्रशंसा, कुधर्म प्रशंसा, ए छएनी प्रशंसा करे ते आयतन कर्म दोष छे. ॥ ८ ॥

हवे त्रण मूढता दोष कहेछेः—अथ मूढत्रय यथा कथनः—

॥ दोहराः ॥—देव मूढ गुरु मूढता, धर्म मूढता पोष; आठ आठ षट तीनि मिलि, ए पचीस सब दोष. ॥ ९ ॥

अर्थः—सुदेव समजे नही ए पेली देव मूढता, सुगुरुने समजे नही ए बीजी गुरु मूढता, सुधर्मने समजे नही ए त्रीजी धर्म मूढता. ए अविद्यानो पोषक छे. एरीते आठ मद, आठ मल, छ आयतन, त्रण मूढता, सर्व मली पचीस दोष थया. ॥ ९ ॥

हवे पांच प्रकार सम्यक्त्वनो नाश करे ते कहेछेः–अथ नाश पंचक यथाः–

॥ दोहराः ॥–ज्ञान गर्व मतिमंदता, निठुर वचन उदगार; रुद्रजाव आलस दसा, नास पंच परकार. ॥ १० ॥

अर्थः–ज्ञानना गर्वथी, बुद्धिनी मंदताथी, कठण वचनना उदगार के० कहेवाथी, रौद्र जाव धरवाथी, आलसु पणाथी,एवी रीते पांच प्रकारे सम्यक्त्वनो नाश थायछे. हवे दिगंवर संप्रदायथी सम्यक्त्वना पांच अतिचार कहेछेः–अथ अतिचार पंचकयथाः–

॥ दोहराः ॥–लोग हास जय जोग रुचि, अग्रसोच थिति चेव; मिथ्या आगमकी जगति, मृषा दरसनी सेवा ॥११॥ चोपाईः ॥–अतीचार ए पंच प्रकारा; समल करहि समकितकी धारा; दूषन जूषन गति अनुसरनी; दसा आठ समकितकी बरनी ॥१२॥

अर्थः–सम्यक्त्वनी क्रियाथी मने लोक हसशे एवो मनमां जय राखे,पांच इंद्रियना विषयंजोगनी रुचि राखे,आगल महारुं शुं थाशे एवी पोतानी स्थितिनुं चिंतन करतो रहे, मिथ्यात्व दर्शनना जे आगम सिद्धांत छे तेनी जक्ति करे,पांचमुं मिथ्या दर्शननी सेवा करे ॥११॥ ए पांच प्रकारना अतिचार ते सम्यक्त्वनी उज्वल धाराने मल स हित करेछे, एवी दूषण गतिनी पाछल लागी अने जूषण गतिने पाछल लागी रहे ए समकितनी आठ दशाने वरणी ॥ ११ ॥

हवे जे सात प्रकृतिना क्षय अथवा उपशमथी सम्यक्त्व उपजे ते कहेछेः–

अथ सप्त प्रकृति यथाः–

॥ दोहराः ॥–प्रकृति सात अब मोहकी, कहों जिनागम जोइ; जिन्हको उदै नि वारिके, सम्यक दरशन होइ ॥ १३ ॥ सवैया इकतीसाः ॥–चारित मोहकी चारि मि थ्यातकी तीनि तामें,प्रथम प्रकृतिअनंतानुबंधी कोहनी;बीजी महामान रस जीजी माया जई तीजी, चोथी महालोज दसा परिगह पोहनी; पांचइ मिथ्यात मति छठी मिश्र परनति, सातई समे प्रकृति समकित मोहनी; एई षट बिंगवनितासी एक कुतियासी, सातो मोहप्रकृति कहावे सत्ता रोहनी ॥ १४ ॥

अर्थः–हवे मोहनीयनी सात प्रकृति श्री जिनेश्वरनुं आगम जोई कहुंछुं. जे सात प्रकृतिनो उदय निवारवाथी सम्यक्त्व दर्शन प्रगट थायछे ॥१३॥ मोहनीय कर्मनाबे जेद छेः–एकतो चारित्र मोहनीय,बीजी मिथ्यादर्शन मोहनीय,तेमां चारित्र मोहनीयनी चार प्रकृति, अने मिथ्या दर्शन मोहनीयनी त्रण प्रकृति मली सात प्रकृति छे; तेमां प्रथम प्रकृति अनंतानुं बंधी कोहनी के० क्रोधनी, बीजी प्रकृति महा अजिमानना रसमां जीनो थको रहे ते अनंतानुबंधी मान, अने त्रीजी प्रकृति महामायामय ते अनंतानुबंधी माया, चोथी प्रकृति महालोज दशामां परिग्रहनी पोषण करनार ए अ

नंतानुबंधी लोज, पांचमी प्रकृति मिथ्यात्व मोहनीय, उठी प्रकृति मिश्र परिणाम एटले मिश्र मोहनीय, सातमी प्रकृति जे छे ते पहेली छए प्रकृतिनुं सम थयुं एटले दबाई गई ते सातमी सम्यक्त मोहनीय जाणवी, एमां धुरली छ प्रकृतितो विंग वनितासी के० वाघणी जेवी छे. एनी गैल लागी तो कांइ बूटती नथी, अने एक सातमी प्रकृति कुतियासी के०कुत्तार्या जेवी छे. तेनोपण जरोसो नथी. ए साते मोह नीयनी प्रकृति ते जीवनासद्भावनी रोकनार छे.॥ १४ ॥

हवे साते प्रकृतिथी सम्यक्त्वना जेद उपजे ते कहे छेः—अथ सम्यक्त्व जेद कथनः—

॥ छप्पय छंदः ॥—सात प्रकृति उपसमहि, जासु सो उपसम मंमित; सात प्रकृति छय करन, हार छायकी अखंडित; सातमांहि कछु खिपहि, कछुक उपसम करि रक्खे; सो छय उपसमवंत, मिश्र समकित रस चक्खे; षट प्रकृति उपशमइवा खिपइ, अथ वा छय उपशम करे; सातई प्रकृति जाके उदय, सो वेदक समकित धरे ॥ १५ ॥

अर्थः—जेने ए सात प्रकृति उपसमी जाय तेतो उपसमी, पंमित के० ज्ञाता होय तेनुं नाम उपशम सम्यक्त्व कहीए;अने जे ए साते प्रकृतिनो क्षय करनार होय तेने क्षायकी कहीए, ते अखंमित क्षायक सम्यक्त्व होय, वली ए साते प्रकृतिमां कंई ख पावे, कंई उपशमावी राखे,तेतो उपशम लक्षण सहित,तेमां मिश्ररूप सम्यक्त्व रसने चाखे, ए साते प्रकृतिमां छ प्रकृति उपशमे अने सातमी सम्यक्त्व मोहनीय तो प्र कृति उदय आवी वेदे छे. अथवा छ प्रकृति क्षय थईछे अने सातमी वेदे छे. अथवा छ प्रकृतिमां कोई प्रकृतिनो क्षय थयो छे, अने कोइनो उपशम थयोछे, अने सातमी प्रकृति वेदे छे ते वेदक सम्यक्त्व धारी कहीए ॥ १५ ॥

हवे सर्वे सम्यक्त्वना नव जेद कहे छेः—अथ नवविधि सम्यक्त्व वर्ननंः—

॥ दोहराः ॥—छय उपसम वरते त्रिविध, वेदक चार प्रकार; छायक उपशम जुग लयुत, नौधा समकित धार ॥ १६ ॥

अर्थः—क्षयोपशमसमकित त्रण प्रकारनुं वर्त्ते छे.वेदक सम्यक्त्वना चार प्रकारे छे, क्षायक सम्यक्त्वनो एक प्रकार छे अने उपशम सम्यक्त्वनो एक प्रकार,ए क्षायकने उपशम बेहुना मलवाथी सर्व मली नव प्रकारनो सम्यक्त्वधारी थाय ॥१६॥

हवे क्षयोपशम सम्यक्त्वना त्रण प्रकार कहेछेः—अथ क्षयोपशम त्रयि यथाः—

॥ दोहराः ॥—चारि खिपहि त्रय उपसमहि, पण षय उपसम दोइ; षै षट उपसम एक यों, षय उपसम त्रिक होइ ॥ १७ ॥

अर्थः—साते प्रकृतिमां अनंतानुबंधीनी चोकमी खपी गइछे, अने त्रण दर्शन मोहनी उपसमी छे, तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहिए. अथवा चार अनंतानुबंधी अने मि

थ्यात्व मोहनीय ए पांच प्रकृति क्षय गईछे, अने बे उपशमी छे, तेने पण क्षयोपशम सम्यक्त्व कहीए; अथवा मिश्र मोहनीय लगण छ प्रकृति क्षय गई, अने सातमी उपश मावी छे, तोपण क्षयोपशम सम्यक्त्व कहीए; ए त्रण प्रकारे क्षयोपशम सम्यक्त्व थाय. हवे क्षयोपशम सहित सम्यक्त्व मोहनीय वेदवाथी जे क्षयोपशम वेदक नीपजे छे, तेना बे प्रकार छेः—अथ क्षयोपशम वेदक छिक यथा कथनः—

॥ दोहराः ॥—जहां चारि प्रकारती षिपहिं, छै उपसम इक वेद; षय उपसम वेदक दशा, तासु प्रथम यह भेद. ॥ १८ ॥ पंच षिपे इक उपसमै, इक वेदे जिहि ठौर, सो षयउपसम वेदकी, दशा डुतिय यह उर ॥ १९ ॥

अर्थः—ज्यां अनंतानुबंधी चार प्रकृति क्षय थाय छे; अने मिथ्यात्व अने मिश्र ए बेउ प्रकृति उपशमेछे, अने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदेछे, आवी दशामां जे क्षयो पशम सहित वेदक समकित थयुंछे, तेनो आ प्रथम भेद छे. ॥ १८ ॥ वली ज्यां चार अनंतानुबंधी अने मिथ्यात्व मोहनीय ए पांच प्रकृति खपीछे, अने एक मिश्र मोहनीय उपशमी छे, अने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे छे, त्यारे क्षयोपशम सहित वेदक समकितनी आ बीजी दशा थई. ॥ १९ ॥

हवे जे क्षायिक सहित वेदकछे, अने उपशमसहित वेदक छे, तेनो प्रकार कहे छेः—

अथ क्षायक वेदक उपशम वेदक यथा कथनः—

॥ दोहरा ॥—षय षट वेदे एक जो, ष्यायक वेदक सोइ, षट उपसम इक प्रकृति विद, उपसम वेदक होइ. ॥ २० ॥ खायक उपसमकी दशा, पूरव षट पदमांहि, कही प्रगट अब पुनरुकति, कारन बरनी नांहि. ॥ २१ ॥

अर्थः—ज्यां चारे अनंतानुबंधि अने मिथ्यात मोहनीय अने मिश्रमोहनीय ए छ प्रकृति खपी छे, अने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे छे, त्यारे क्षायिक वेदक सम्यक्त्व कहिये; अने ए जे पूर्वे छ प्रकृति कही ते जेणे उपशमावी छे, अने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे छे, त्यारे उपशम वेदक सम्यक्त्व कहिये. ॥ २० ॥ क्षयोपशम नामे जे सम्यक्त्व कहीए, तेनी दशा तो पाछला षट्पद के० छपय छंदमा कही छे, तेमां ए सातमां कं ईक उपशम करी राखे, एवुं प्रगट कहेलुं छे. तेथी आंहि फरी कहेवायाथी पुनरुक्ति दोष लागे ते कारणथी फरी वरणवी नथी. ॥ २१ ॥

हवे सम्यत्वना मूल भेद चार अने उत्तर भेद नव छे ते कहेछेः—अथ भेद विवरनः—

॥ दोहराः ॥—षय उपसम वेदक षिपक, उपसम समकित च्यारि; तीन च्यारि इक इक मिलत, सब नव भेद विसारि. ॥ २२ ॥

अर्थः—क्षयोपशम सम्यक्त्व, वेदक सम्यक्त्व, क्षायक सम्यक्त्व, उपशम सम्यक्त्व,

एवा मूल चार भेद समकितना थया. वली क्षयोपशमना त्रण भेद, वेदकना चार भेद अने क्षायकनो एक भेद, उपशमनो एक भेद, ए सर्व मली समकितना नव उत्तर भेद थाय. ॥ २२ ॥

हवे निश्चयादिक सम्यक्त्वनी व्यवस्था कहेछेः—अथ निश्चे व्यवहार सामान्यविशेषः—

॥ सोरठा ॥—अब निहचे विवहार, अरु सामान्य विशेष विधि; कहौं च्यारि परकारि, रचना समकित भूमिकी. ॥ २३ ॥ सवैया इकतीसाः ॥—मिथ्या मति गंठि भेद जगी निरमल ज्योति, जोगसौं अतीत सोहे निहचे प्रवानिये; वहे दुंद दसासौं कहावे जोग मुद्रा धरे, मति श्रुति ज्ञान भेद विवहार मानिये; चेतना चिहन पहिचान आपपर वेदे, पौरुष अलप ताते समान वखानिये; करे भेदाभेदकी विचार विसताररूप हेय गेय उपादेयसौं विशेष जानिये. ॥ २४ ॥ सोरठाः ॥—थिति सागर तेतीस, अंतर मुहुरत एक वा; अविरति समकिति रीस, यह चतुर्थ गुन थान इति ॥२५॥

अर्थः—हवे निश्चयथी अने व्यवहारथी सामान्य विशेषपणो कहेछे सम्यक्त्वनी भूमिनी चार प्रकारनी रचना छे ते कहेछे. ॥२३॥ प्रथम मिथ्यात्व ग्रंथी भेदिने जे आत्मानी निर्मल ज्योति जागी छे अने जे ज्योति मन, वचन, कायाना जोगथी अतीत छे तेतो सम्यक्त्व निश्चयनयथी प्रमाण करीए. बीजुं ते सम्यक्त्व द्वंद्व दशाथी वर्तमान थाय छे, एटले बहु विकल्पथी धामधुम दशाथी वर्ते छे. त्यारे तो एवुं कहेवाय छे के ए जोग मुद्रा धारी छे, आ मतिज्ञानी छे, आ श्रुत ज्ञानी छे. एवा भेद व्यवहारनयथी मानिये छे. त्रीजुं ए आत्माना चेतनारूप चिन्ह केº लक्षण जाणीने आत्म द्रव्य अने परद्रव्यने वेदे छे. परंतु अंतरायना उदयथी पुरुष पराक्रमअल्प छे, एटले अविरति छे. तेथी ए सामान्यपणे सम्यक्त्व कहीए. चोथुं गुण अने गुणिनो भेदाभेद विचार विस्ताररूप करेº जेम आत्मा गुणिछे; ज्ञानादिक गुण छे. तेना भेदाभेदनो विचार करवो, एवा हेय, ज्ञेय, उपादेयनो विचार राखवो. विशेषपणे सम्यक्त्व जाणिए. ॥ २४ ॥ अविरति सम्यक्त्वनी उत्कृष्टि तेत्रीस सागरोपम स्थिति अथवा जघन्यथी एक अंतर मुहूर्त्तनी स्थिति होय. अविरति सम्यक्त्वनी रहस्य मर्यादा एवे प्रकारे होय, ए चोथुं गुणस्थानक समाप्त थयुं. ॥ २५ ॥

हवे पांचमां गुणस्थानकना विवरणनो आरंभ करेछेः—अथ पंचमगुनथानक आरंभ.

॥ दोहराः ॥—अब वरनो इकवीस गुन, अरु बावीस अभक्ष्य; जिन्हके संग्रह त्यागसौं, सोहे श्रावक पक्ष्य. ॥ २६ ॥

अर्थः—तेमां प्रथम पांचमा गुणस्थानक लायक श्रावकना एकवीस गुण कहुंछुं.

अने बावीस अजक्ष छे ते कहुंछुं. जे गुणने संग्रह करवाथी अने जे अजक्षने त्याग वाथी श्रावकनो पक्ष गुणसंग्रहीत शोजायमान थाय ते कहुंछुं. ॥ २६ ॥

हवे श्रावकना एकवीस गुणनां नाम कहेछेः—अथ श्रावक इकवीसगुन कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—लज्जावंत दयावंत प्रसंत प्रतीतवंत, परदोषकों ढकैया पर उपकारी है; सोम दृष्टि गुन ग्राही गरिष्ट सबकों इष्ट, सीष्ट पक्षी मिष्टवादी दीरघ विचारी है; विशेषज्ञ रसज्ञ कृतज्ञ तज्ञ धरमज्ञ, नदीन न अजिमानी मध्य विवहारी है; स हजे विनीत पाप क्रियासों अतीत एसो, श्रावक पुनीत इकवीस गुन धारी है ॥ २७ ॥

अर्थः—लज्जावंत १, दयावंत २, शांतमूर्ति ३, प्रतीतवंत ४, परदोषनो ढांकनार ५, परउपकारी ६, सोमदृष्टि ७, गुणग्राहक ८, गुरुवाई ९, सर्वेनो वल्लज १०, शिष्टाचारनो पक्षी ११, मिष्टवचन बोलनार १२, उंडो विचार विचारे १३, विशेष ज्ञाननो जाणनार १४, शास्त्ररस जाणनार १५, करेला उपकारने जाणे १६, ते उपकारने जाणे १७, ध र्मने जाणनार १८, अदीनपणुं ग्रहे अजिमानी रहे नही १९, एवा मध्यम व्यवहारमां रहे, के जेथी सहज स्वजावे विनयवंत होय २०, अने पापक्रियाथी रहित होय २१, एवा पवित्र श्रावक एकवीश गुणना धारनार थाय. ॥ २७ ॥

हवे जघन्य श्रावकने बावीस वस्तु अजक्ष छेः—अथ बावीसअजक्ष वर्ननः—

॥ कवित्त छंदः—उरा घोरवरा निसजोजन, बहु बीजा वेगन संधान; पींपर वर उंबरि कठूंबरी, पाकर जोफल होइ अजान; कंद मूल माटी विष आमिष, मधु माषन अरु मदिरापान; फल अति तुछ तुसार चलित रस, जिनमत ए बावीस अषान. ॥ २८ ॥

अर्थः—गमोरा हेमा करहा १, काचा धोलनां वमा २, रात्री जोजन ३, बहु बीज फल ते दाकम प्रमुख ४, वेगण ५, अथाणुं पाणीमांहेलुं ६, पीपलनी पीपी ७, वम वृक्षनां फल ८, घोलरनां फल ९, कठुंबरनां फल १०, पाकरीनां फल ११, अजाण्यां फल १२, कंदमूलनी जाति सर्व १३, माटीनीजाति १४, अफीमप्रमुख १५, मांस १६. मधु १७, मांखण १८, मदिरापान १९, बहु तुछ फल काचुं फल २०, हीम २१, जेनो वर्ण, रस, गंध, स्पर्श फरी गयो होय ते चलित रस २२, ए बावीस वस्तु श्री जिनेश्वरना मत धारीने अजक्ष छे. ते खावी नही ॥ २८ ॥

॥ दोहराः ॥—अब पंचम गुन थानकी, रचना वरनों अल्प;
जामे एकादश दशा, प्रतिमा नाम विकल्प. ॥ २९ ॥

अर्थः—हवे देशविरतीनामे पांचमा गुनथानननी रचना अल्पमात्र वर्णवुं छुं. संक्षेपमात्र करीने ते गुणथानमां अग्यार प्रतिमा धारी छे. प्रतिमा एवुं नाम चारित्र विकल्पनुं छे.॥२९॥

हवे अगीआर प्रतिमानां यथार्थनाम कहेछेः—अथ एकादश प्रतिमा नामकथनः—

॥ सवैया इकतीसा: ॥–दंसन विशुद्धकारी बारह विरतधारी, सामायक चारी पर्व पोसह विधि वहे; सचित्तको परिहारी दिवा अफरस नारी, आठो जाम ब्रह्मचारी निरारंनी व्है रहे; पाप परिग्रह छंडे पापकी न शिक्षा मंडे, कोउ याके निमित्त करे सो वस्त न गहे; एते देस व्रतके धरैया समकिती जीव, ग्यारह प्रतिमा तिन्हे नगवंतजी कहे ॥ ३० ॥

अर्थः–दर्शन विशुद्धिनी करनारी दर्शन प्रतिमा १, बारे व्रतनी धारनारी विरति प्रतिमा २, ज्यां सामायिकनो उच्चार छे ते सामायिक प्रतिमा. ३, ज्यां पर्व आव्याथी पोसह करवो ते पोसहप्रतिमा ४, ज्यां सचित्त वस्तुनो परिहार करिये ते सचित्त परिहार प्रतिमा ५, ज्यां दिवसे स्त्री स्पर्श न करवो ते दिवस अस्पर्श प्रतिमा ६, आठे प्रहर ब्रह्मचर्यमां रहेवुं ते ब्रह्मचर्य प्रतिमा ७, सर्व आरंनो ज्यां त्याग करवो ते निरारंनी प्रतिमा ८, परिग्रहने त्यागवो ते परिग्रह त्याग प्रतिमा ए, ज्यां पापोपदेश न देवो ते पापोपदेश त्याग प्रतिमा १०, कोई आपणा निमित्त आहारादिक वस्तु करे ते ले नही ते उद्देशिक त्याग प्रतिमा ११, ए अगीयार प्रकारे करीने देश विरत धारी सम्यक्त्वि जीव कहाछे. तेनी आ इग्यार प्रतिमारूप प्रतिज्ञा नगवंतजी कहे छे ॥ ३० ॥

हवे ए प्रतिमानो अर्थ कहेछेः–अथ प्रतिमा कथनः

॥ दोहरा ॥ संयम अंस जग्यो जहां, नोग अरुचि परिनाम; उदे प्रतिज्ञाको नयो प्रतिमा ताको नाम. ॥ ३१ ॥

अर्थः–जहां संयम चारित्रनो अंस जाग्यो अने नोग अरूचिना परिणाम थया, त्यां कोई प्रतिज्ञानो उदय थयो तेनुं नाम प्रतिमा कहीए. ॥ ३१ ॥

हवे प्रथम दर्शन प्रतिमानुं विवरण करेछेः–अथ प्रथम प्रतिमा यथाः–

॥ दोहराः ॥– आठ मूलगुण संग्रहे, कुवसन क्रिया न कोइ; दर्शन गुन निर्मल करे; दर्शन प्रतिमा सोइ ॥ ३२ ॥

अर्थः–आहीं पेहेला कह्या छे करुणा वत्सल, सुजनता इत्यादिक सम्यक्त्वना आठ मूल गुण छे तेनो संग्रह करे, ज्यां साते व्यसननी क्रिया नथी एवा सम्यक्त्व दर्शनना गुण निर्मल करे, तेज दर्शन प्रतिमा कही. इहां व्रत नथी एनो काल एक मासनो छे ॥३२॥

हवे बीजी प्रतिमानो विवरो कहेछेः–अथ द्वितीय प्रतिमा यथाः–

॥ दोहराः ॥–पंच अनुव्रत आदरे, तीन गुण व्रत पाल; सिक्षा व्रत च्यारों धरे, यह व्रत प्रतिमा चाल. ॥ ३३ ॥

अर्थः—पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने सामायिक धारे १, पोसह धारे २, देशा वकासिक करे ३, अतिथि संविभाग करे ए चार शिक्षाव्रत धारे, ते व्रत प्रतिमा, जाणवी. तेनो काल बे महीनानो छे. ॥ ३३ ॥

हवे त्रीजी सामायिक प्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ तृतीय प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—दर्वभाव विधि संजुगत, हिये प्रतिज्ञा टेक; तजि ममता समता गहे, अंतर मुहुरत एक, ॥ ३४ ॥ चोपाईः॥—जो अरिमित्र समान विचारे, आरत रूद्र कु ध्यान निवारै; संजमसहित भावना भावे; सो सामायकवंत कहावे. ॥ ३५ ॥

अर्थः—दश दोष वचनना टालवा, बार दोष कायाना टालवा, ए द्रव्यविधि अने दश दोष मनना टालवा ते भावविधि जाणवो. तेणे करीने संयुक्त; अने हैयामां एक शो आठ पंचपरमेष्टी मंत्रनुं स्मरण लागी रहे, एम बीजी पण कोई प्रतिज्ञानी टेक राखीने, ममता तजीने, समता ग्रहण करवी, एम एक अंतर्मुहूर्त्त काल पर्यंत सामायिक चारित्र थाय ॥ ३४ ॥ जे कोई शत्रु मित्रने समान विचारे, आर्त्तध्यान रौद्रध्यानतुं निवारण करे, पंच संवर सहित थाय, बार भावना भावे, तेज सामायिकधारी श्रावक कहिए; ए त्रीजी प्रतिमा त्रण मासनी होय ॥ ३५ ॥

हवे चोथी पोसह प्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ चतुर्थ प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—सामायक कीसी दसा, चार पहर लों होइ;
अथवा आठ पहर रहे, पोसह प्रतिमा सोइ. ॥ ३६ ॥

अर्थः—जे पूर्वे सामायिकनी दशा कहीछे तेवी दशा चार प्रहर लगी होय, अथवा तेवी दशा आठ प्रहर लगी रहे, तेज पोसह प्रतिमा धारी श्रावक कहीए. ए चार मासनी प्रतिमा जाणवी इहां आठम, चउदश, अमास, पूनमने दहाडे तथा पर्वदिन आवेथी पोसह करे ॥ ३६ ॥

हवे पांचमी सचित्त परिहार प्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ पंचमी प्रतिमायथाः—

॥ दोहराः ॥—जो सचित्त भोजन तजे, पीवे प्रासुक नीर;
सो सचित्त त्यागी पुरुष, पंच प्रतिज्ञागीर ॥ ३७ ॥

अर्थः—जे सचित्त भोजननो त्याग करे अने फासु जल पीए, ए रीते जे पुरुष सचित्त वस्तुनो त्याग करे, ए पेहेली प्रतिमाथी एटली वधती, क्रिया करे तेतो पांचमी प्रतिमानो धरनार जाणवो. ए प्रतिमा पांच मास सुधी रहे. ॥ ३७ ॥

हवे छठी ब्रह्मचर्यप्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ षष्टि प्रतिमा यथाः—

॥ चोपाईः ॥—जो दिन ब्रह्मचर्यव्रत पाले; तिथि आए निसि द्यौस संभाले;
गहि नौवाडी करै व्रत रक्षा; सो षट प्रतिमा साधक अक्षा ॥ ३८ ॥

अर्थः-सचित्तनो परिहारि तो प्रथमनीज रीते छे. अने दिवसे ब्रह्मचर्य वधारे पाळे. अने पंचमी आदिपर्व आवे दिवसरात्रिमां एटले आठ प्रहर ब्रह्मचर्य पाळे त्यां नववाडे करीने ब्रह्मचर्यवृत्तनी रक्षा करे, ते पुरुष छठी प्रतिमानो साधनहार होय ते छमास लगणनी जाणवी ॥ ३८ ॥

हवे सातमी ब्रह्मचर्य प्रतिमानो विवरो कहे छेः-अथ सप्तमी प्रतिमा यथाः-

॥ चोपाई ॥-जो नववाडि सहित विधि साधे; निशिदिन ब्रह्मचर्य आराधे; सो सप्तम प्रतिमाधर ज्ञाता; शील शिरोमनि जगत विख्याता ॥ ३९ ॥

अर्थः-जे श्रावक नववाड सहित जे ब्रह्मचर्यवृत्तनो विधि छे, ते विधियें रात दिवस ब्रह्मचर्यने आराधतो रहे, अने जे आगल छ प्रतिमानी क्रिया कही छे तेने तो लीधो रह्या छे. एवो जे श्रावक छे, तेतो सातमी ब्रह्मचर्य प्रतिमानो धरनार ज्ञानी पुरुषशील शिरोमणि जगत्मां प्रख्याति पामेलो जाणवो ॥ ३९ ॥

हवे आंही प्रसंगथी नव वाडनो विवरो कहे छेः-अथनौवाडि यथाः-

॥ कवित्तछंदः ॥-तियथलवास प्रेमरुचि निरषन, देपरीछ जाषन मधुवेन; पूरवजोगकेलि रसचिंतन, गुरु आहार लेत चितचेन; करि सुचि तन सिंगर बनावत, तियपरजंक मध्यसुखसेन;मनमथ कथा उदरि जरि जरि जोजन,ए नववाडि जान मतजेन॥४०॥

अर्थः-ज्या स्त्रीउं वसे त्यां वास न करवो, प्रेमरुचि राखीने स्त्रीना अंगोपांग देखवां नहीं, दृष्टिदोषनुं निवारण करीने, आडो पमदो आपीने स्त्रीना मधुर वचन सांजले नहीं, पूर्व कालमां जे जोग क्रीडा करी होय तेनो रस चिंतवे नहीं, चित्तना चेनने अर्थे घृतादिक सहित गरिष्ट आहार लेहीं, स्नान मज्जनथी शरीरने पवित्र करीने शृंगार शोजा सजे नहीं, स्त्रीने सुवाना पलंगमां सुखसेन करे नहीं, मन्मथ जे कंदर्प तेनी कथा कहे नहीं, पेट जरीने जोजन न करे, ए नव वाडो जैन मतमां जाणवी. ए बहुज आनंद कारी छे ॥ ४० ॥

हवे आठमी निरारंज प्रतिमानो विवरो कहे छेः-अथ अष्टमी प्रतिमा यथाः-

॥ दोहराः ॥-जो विवेक विधि आदरे, करे न पापारंज; सो अष्टम प्रतिमा धनी, कुगति विजे रन थंज ॥ ४१ ॥

अर्थः-जे कोई श्रावक पाछली सर्व क्रिया करतो थको विवेक सहित विधि विशेष आदरे, अने पापनो आरंज पोताना हाथे न करे तेतो आठमी निरारंज प्रतिमानो धरनार श्रावक कुगतिना विजयनो रणथंज रूप थई रह्यो छे ४१ ॥

हवे नवमी परिग्रह प्रतिमानो विवरो कहे छेः—अथ नवमी प्रतिमा यथाः—

॥ चोपाईः ॥—जो दसधा परिग्रहको त्यागी; सुख संतोष सहज वैरागी; समरस संचित किंचित ग्राही; सो श्रावक नौ प्रतिमा वाही ॥ ४२ ॥

अर्थः—नवविध परिग्रहनो त्यागी होय, सुख संतोष सहित वैरागी होय, उपशम रसथी भींज्यो रहेतो होय, किंचित् ग्राही कहेतां कंईएक अशन वशननुं ग्रहण करनारो होय अने बीजी क्रिया सर्वे आठमी प्रतिमानी परे होय, ते श्रावक नवमी प्रतिमानो धरनार होय. ए प्रतिमा नवमास लगी रहे ॥ ४२ ॥

हवे दसमी पापोपदेश त्याग प्रतिमा कहेछेः—अथ दसमी प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—परकों पापारंजको, जो न देइ उपदेश; सो दशमी प्रतिमासहित, श्रावक विगत कलेश. ॥ ४३ ॥

अर्थः—नवमी प्रतिमा लगण गृह कुटुंब परिवारने कदाच् पापनो उपदेशआपे, पण आहीं पापारंजनो उपदेश त्यागे ते श्रावकने दशमी प्रतिमासहित जाणिये. तेज श्रावक क्लेश रहित थयो एम जाणवुं. ॥ ४३ ॥

हवे अग्यारमी उचित्तग्राही प्रतिमानो विवरो कहेछेः—अथ अग्यारमी प्रतिमा यथाः—

॥ चोपाईः ॥—जो सुछंद वरते तजि डेरा, मठमंडपमहिं करे वसेरा; उचित आहार उदंड विहारी; सो एकादश प्रतिमा धारी. ॥ ४४ ॥

अर्थः—जे आपणां घर बार डेरा छांडीने स्वछंदे वर्त्ते, अने मठ मंडपमां वास करे, आधाकर्मि आहार त्यागे, योग्य आहार ले अने उद्दंड व्यवहारी थइ साधु जेवो थाय, ते अगीआरमी प्रतिमानो धरनार थाय. ए श्रावकनी करणी छे. ॥ ४४ ॥

हवे अग्यारमी प्रतिमानी व्यवस्था कहेछेः—अथ एकादश प्रतिमा यथाः—

॥ दोहराः ॥—एकादश प्रतिमा दशा, कही देशव्रत मांहिं; वही अनुक्रममूलसों, गही सु छूटी नांहि ॥ ४५ ॥

अर्थः—ए अगीआर प्रतिमानी दशा पांचमा देशविरति गुणस्थानकमांहे कही. हवे प्रथमथी जे आगलनी प्रतिमाउं ग्रहण करेली छे तेतो अनुक्रमे ग्रहीज रह्यो छे, पण तेथी छुटो नथी अने चढति चढति क्रिया करतो रहेछे ॥ ४५ ॥

हवे अग्यार प्रतिमाधारीमां जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट, दशा कहेछेः—

अथ जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट दशा कथनः—

॥ दोहराः ॥—षट प्रतिमा ताईं जघन, मध्यम नव परजंत; उत्तम दशमी ग्यारमी, इति प्रतिमा विरतंत ॥ ४६ ॥

अर्थः—छठी दिवस ब्रह्मचर्य प्रतिमा लगण जघन्य श्रावक होय, अने नवमी परिग्रह त्याग प्रतिमा लगण मध्यम श्रावक थाय, दशमी अगीआरमी प्रतिमानो धणी उत्तम श्रावक होय. एटले प्रतिमानुं वृत्तांत कह्युं ॥४५॥ इतिप्रतिमा अधिकार समाप्त॥

हवे पांचमा गुणस्थाननी स्थिति कहेछेः—अथ पंचम गुनस्थानक स्थितिः—

॥ चोपाईः ॥—एक कोटि पूरव गनिलीजे; तामें आठ वरष घट कीजे; यह उत्कृष्ट काल थिति जाकी, अंतरमुहुर्त्त जघन्य दसाकी ॥ ४६ ॥

अर्थः—एक कोटि पूर्ववर्षनी संख्या कीजे, तेमां आठ वर्ष घटाडीए. पछी जे वर्ष रहे ते देश व्रति गुणस्थानकनी उत्कृष्ट कालस्थिति जाणवी, अने आदेशव्रत्ति गुणस्थाननी जघन्यदशानी स्थिति एक अंतर्मुहूर्त्त कालमान होय ॥ ४६ ॥

हवे एक पूर्वकालनी वर्षसंख्या कहे छेः—अथ पूर्वसंख्या कथनः—

॥ दोहराः ॥—सत्तरि लाख करोड मिति, छप्पन सहस करोडि; एते वरष मिलाइ करि, पूरव संख्या जोडि. ॥ ४७ ॥

अर्थः—सिंतेरलाख कोटि वर्ष एटली मिती के० प्रमाणता उपर छपन हजार कोटि वर्ष मेलवीये त्यारे पूर्वकालनी जोडिनी वर्ष संख्या थाय, तेना ७०५६००००००००००. एटला अंक थाय. लोक व्यवहारमां सात पद्म पांच खर्व साठ अब्ज कहिए. ॥ ४७ ॥

हवे अंतर्मुहूर्त्त कालनुं जघन्य उत्कृष्ट प्रमाण कहुंछुं—अथ अंतमुहुरतप्रमान

॥ दोहराः॥—अंतर मुहुरत द्वै घरी, कछुक घाटि उतकृष्ट; एक समे कवाउली, अंत मुहुर्त्त कनिष्ट. ॥ ४८ ॥ यह पंचम गुनथानकी, रचना कही विचित्र; अब छठम गुन थानकी, दसा कहुं सुनु मित्र ॥ ५० ॥

अर्थः—वेघडीमां एक समय ओछो थाय, त्यारेतो उत्कृष्ट अंतमुहूर्त्त थाय अने एक आवलिने एक समय ते कनिष्ट के० जघन्य अंतमुहूर्त्त काल होय. ए दिगंबर संप्रदायथी छे ॥ ४८ ॥ एम देशव्रति पांचमा गुणस्थाननी विचित्र रचना कहीछे. हवे हे ! मित्र ! छठा गुणस्थाननी दशा कहुंछुं ते सांभलो ॥ ५० ॥

हवे प्रमत्तनामे छठा गुणठाणानी अवस्था कहुंछुं—अथ प्रमत्तगुनस्थानकः—

॥ दोहराः ॥—पंच प्रमाद दशा धरे, अठाइस गुनवान; थविर कल्प जिन कल्प जुत, है प्रमत्त गुनथान. ॥ ५१ ॥

अर्थः—धर्मरागादी पांच प्रमादनी दशा धारेछे. अने साधुना अठ्यावीस गुणो धारे छे. आंही अठयावीस गुण कह्या ते दिगंबर संप्रदायथी. थिवर कल्पथी थिवरनो आचार अने अने जिनकल्पथी जिननो आचार तेणेकरी युक्त छे. एम प्रमत्त गुण स्थान होय

हवे पांच प्रमादनां नामनी गणत्री करेछेः—अथ पंच प्रमाद यथाः—

॥ दोहराः ॥—धरमराग विकथा वचन, निद्राविषय कषाइ; पंच प्रमाद दसासहित, परमादी मुनि राइ. ॥ ५२ ॥

अर्थः—धर्मउपर राग राखे, विकथा वचन बोले, निद्रासेवे, रस ते इंद्रियप्रमुखना विषय सेवे, कषाय सेवे, ए दशासहितजे मुनिराज होय ते प्रमादी कहीए. ॥ ५२ ॥

हवे श्री मुनिराजना अगावीस मूल गुण कहेछेः—अथ अठाइस मूलगुन कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—पंच महाव्रत पाले पंच समिती संभाले, पंच इंद्रि जीति जयो जोगी चित चेनको; षट आवशक क्रिया दर्वित भावित साधे, प्रासुक धरा मे एक आसन है सेनको; मंजन न करे केस लुंचे तन वस्त्र मुंचे, त्यागे दंतधावन पें सुगंध स्वास चेनको; ठाढो करषे आहार, लघु भुंजी एकवार, अठाइस मूल गुन धारो जती जैनको ॥ ५३ ॥

अर्थः—"सव्वाउ पाणाइ वायाउवेरमणं" इत्यादिक पंच महाव्रत पाले; इर्यासमिति प्रमुख पांच समिति संभालीने करे अने पांच इंद्रियनो जीतनार एटले जेने इंद्रियोना विषय सेवतां चित्तमां चेन न उपजे, तेथी विषयोनो त्यागी थाय. सामायिक प्रमुख ठ आवश्यकक्रिया ठे, ते द्रव्यथी पण साधे अने भावथी पण साधे, ए २१ गुण थया. फासू पृथ्वी प्रमुख शय्यामां प्रमाणोपेत एक शयन आसन राखे, ए २२ गुन थया. स्नान न करे, केश लोच करे, शरीरविषे वस्त्रनो त्याग करे, दांतण नकरे, श्वासवदननो सुगंध मूखलुण प्रमुख नले, उभो उभो आहारकरे लघुता के० अंतप्रांत आहार भुंजे, तेपण एक टंक खाय. ए अठावीस मूल गुणनो धरनार जैन दर्शनी जती होय ॥ ५३ ॥

ए दिगंबर संप्रदायथी गुण कह्या ठे.

हवे पांच महाव्रत कहेछेः—अथ पंचव्रत यथाः—

॥ दोहराः॥ —हिंसा मृषा अदत्त धन, मैथुन परिग्रह साज;<br>
किंचित त्यागी अनुव्रती, सवि त्यागी मुनिराज. ॥ ५४ ॥

अर्थः—जीवघात, असत्य, चोरी, मैथुन, परिग्रहसामग्री ए पांचे आश्रवने किंचित् त्यागे, ते अणुव्रती श्रावक कहिए अने सर्वथा त्यागे ते मुनिराज कहिए ॥ ५४ ॥

हवे पांच प्रकारनी समिति एटले सावधानपणुं कहेछेः—अथ पंच समिति यथाः—

॥ दोहराः ॥—चले निरषि भाषे उचित, भषे अदोष आहार;<br>
लेइ निरखि डारे निरखि, समिति पंच परकार ॥ ५५ ॥

अर्थः—जोईने चाले ते इर्या समिति; योग्य वचन बोले ते भाषा समिति; दूषणर

हित आहार लीए ते एषणा समिति; वस्त्र पात्र निरषीने ले ते आदानसमिति; मलमूत्रादिक जोइने परठवे ते पारीठावणीया समिति. ए पांच प्रकारे समिति ॥ ५५ ॥

हवे जे अवश्य करीए ते आवश्यक कहीए तेनां नाम कहेछे,—अथषडावश्यकयथाः—

॥ दोहराः ॥—समता वंदन थुति करन, पडिकमणुं सज्झाउ, काउसग्ग मुद्राधरन ए षडावसिक भाउ. ॥ ५६ ॥

अर्थः—सामायिक धरवुं १, गुरुवंदना करवी २, चोवीशजिनेश्वरनी स्तुति करवी ३, अतिचारथी निवर्त्तवुं ते पडिकमणुं ४, स्वाध्याय करवो ५, काउसग्गमुद्रा धरवी. हे! भाइ! ए छ आवश्यक कहीए. ॥ ५६ ॥

हवे थिवर कल्प अने जिनकल्पनो भेद कहेछेः—अथ स्थिविर कल्पी जिनकल्पीः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—थविर कलपी जिनकलपी दुविध मुनि, दोउ वनवासी दोउ नगन रहत है; दोउ अठाइस मूल गुन के धरैया दोउ सरव तियागी व्है विरागता गहत है; थविर कलपिते जिन्हके सिष्य साषा होई, बेठके सभामे धर्म देसना कहत है; एकाकी सहज जिन कलपी तपस्वी घोर, उदेंकी मरोरसुं परिसह सहत है. ॥ ५७ ॥

अर्थः—थिवर कल्पी अने जिन कल्पी ए बे प्रकारना मुनीश्वर होय. ए बे वनवासमां रहे. अने बेहु नागारहे; ए बे अठावीस मूल गुणना धारनार ए बे सर्वस्व के० सर्व परिग्रहना त्यागी थईने वैरागभाव धरे. एवा कह्या पण ते बेमां स्थिवरकल्पी ते कहीए जेने शिष्य शाषा होय, अने सभामां बेसिने धर्म देशना करे अने जे जिन कल्पी होय ते एकाकी होय, घोरतपस्वी होय. अने कर्म उदयनी मरोरथी जे परिषह उपजे छे ते सहन करे, ए दिगंबर संप्रदायिक वचनो छे. ॥ ५७ ॥

हवे प्रसंगथी बावीस परिषह साधुने सवहा योग्य तेनां नाम कहेछेः—

अथ बावीस परीषह यथा कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—ग्रीषममे धुप थिति सीतमे अंक पचीत, भूषेधरेधीर प्यासे नीर न चहतु है; डंस मसकादिसौं न डरे भूमि सैन करे, वध बंध विथामे अडोल व्है रहतु है; चर्या दुख भरे तिन फाससौं न थरहरे, मल दुरगंधकी गिलान न गहतु है; रोनगकौ न करे इलाज एसो मुनिराज, वेदनीके उदे ए परिसह सहतु है. ॥५८॥

अर्थः—उष्ण कालमां तडकामां आताप सहे, शीत कालमां शीत सहेवाथी चित्तमां कंपे नही, भुख्यो छतां धीरज राखे, अनेषणी ग्रहे नही, प्यासवंत थको सदोष पाणीनी चाहना करे नही, नागा शरीरने डांस मसकादि करडे तोपण डरे नही, धरतिये शय्या करे, मरणांत कष्ट आवे भातभातना वध बंधनादिक कष्ट तेथी अडोल रहे, पण चलायमान न थाय, चर्या के० विहारनुं दुःख भरे, तदरीते विहारमां तथा सय

नासनमां कठोर त्रण स्पर्शथी थरहरे नही, मेलनी दुर्गंध छे, तेनी दुगंछा न करे, रोगनी वेदना सहे पण तेनो इलाज न करे, एवा मुनिराज होय ते वेदनीय कर्मना उदयथी ए इग्यार परिषह उपजे छे तेने सहे छे. ॥ ५८ ॥

॥ कुंडलीयाः ॥–एते संकट मुनि सहे, चारित मोह उदोत; लज्जा संकुच दुःष धरे, नगन दिगंबर होत; नगन दिगंबर होत, श्रोत रति स्वाद न सेवे; त्रियसनमुख द्दग रोकि, मान अपमान न वेवे; थिर व्है निर्भय रहे सहे कुवचन जग चेते; भिक्षुक पद संग्रहे, लहे मुनि संकट एते. ॥ ५९ ॥ दोहराः ॥–अल्प ज्ञान लघुता लखे, मति उतकरष विलोइ, ज्ञानावरन उदोत मुनि; सहे परीसह दोइ ॥ ६० ॥ सहे अदरसन दुरदसा, दरसन मोह उदोत; रोकेउमंग अलाभकी, अंतरायके होत. ॥ ६१ ॥

अर्थः–हवे चारित्र मोहनीयना उदय थवाथी मुनिराज संकट सहेछे. ते संकटनी गणतरी कहेछे. नगन दिगंबर थई जे लज्जाथी संकोच दुःख उपजे छे तेने धरे. एटले संकटथी न भागे १, वली नगन दिगंबर थइ श्रोत के० इंद्रीयना रति स्वादने न सेवे, २, स्त्रीना हाव भावथी चुके नही ३, कोइ सत्कार करे कोइ सत्कार न करे तेउपर विषम भाव लावे नही ४, कोइ भयथी भागे नही स्थिर रहे निर्भय रहे ५, जगत्मां जे कंइ कुवचन छे, आक्रोशनां वचन छे ते सर्व सहन करे ६, भिक्षा ग्रहणथी भिक्षुक पद संग्रहे पण ते संकटथी भाजे नही, ए सात संकट चारित्र मोहनीयना उदयथी मुनि लहेछे ते सहन करे छे ॥ ५९ ॥ हवे भणयाविना अल्पज्ञानथी सर्वमां पोतानी लघुता थाय ते सहन करे; पोतानी मतिना उत्कर्षथी उत्कृष्टपणुं जोइने गुरुता सहे २, एम ज्ञानावरणीय कर्मनो उदय थातां अज्ञान परिषह अने प्रज्ञापरिषह एवे परिषह उपजे छे ते सहन करे ॥ ६० ॥ दर्शन मोहनीयना उदय थवाथी सम्यग् दर्शननी मलिनता उपजे, तेनी दुष्ट दशा सम्यग् दर्शनथी न भागे, अंतराय कर्मनो उदय थवाथी जे लाभनो उमंग रोकी रहे तेथी अलाभने सहन करे. ए बावीस परिसह कह्या ॥ ६१ ॥

हवे जे कर्मथी जे परिसह उपजे ते कहे छे. अथ बावीस परिषह विवरननः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–एकादश वेदनीकी चारित मोहकी सात, ज्ञानावरनीकी दोइ एक अंतरायकी; दंसन मोहकी एक द्वाविंसति बाधा सब, केई मनसाकी केइ वाकी केई कायकी; काहुकों अलप काहूसों बहोत उनी साता, एकहीं समेमें उदे आवे असहायकी; चर्याथित सज्जामांहि एक सीत उसमांहि, एक दोइहोहि तीनि नांही समुदायकी ॥ ६२ ॥ ॥ दोहराः ॥–नानाविध संकटदशा, सहिसाधे शिवपंथ, थिविरकल्प जिन कल्पधर, दोऊ सम निगरंथ ॥ ६३ ॥

अर्थः– अग्यार संकट तो वेदनीय कर्मना उदयथी उपजे छे. चारित्र मोहनीय कर्मथी सात बाधा उपजे छे. ज्ञानावरणनी करेली बे बाधा उपजे छे. अंतरायनी कीधी एक बाधा उपजेछे. दर्शन मोहनीयनी करेली एक बाधा उपजे छे. सर्व मली बावीस बाधा थइ. ते बावीसने परिषह कहीए. बाधामां कोई मननी छे, कोइ वचननी छे, कोइ कायानी छे; आ बावीस बाधामांहेली कोइने अल्प एक बे उपजे; कोइने बहु उपजे, तो एकज समे ओगणीस बाधानो उदय थाय. तेमां असहायनी के० जे बाधा बाधासाथेज बोलेछे पण साथे बने नही त्यारे तेमां एकज बाधा एक समे थई ते असहायनी कहीए. जेम चर्यापरिषह चालवाथी उपजे छे; निषेद्या परिषह रहेवाथी उपजेछे; शय्या परिषह रहेवाथी उपजे छे. अने शितबाधा तथा उष्ण बाधामां एक समयमां एकज बाधा उपजे तेथी आ पांच परिषहमां एक अथवा बे अथवा त्रण एक समयमां थाय, पण समुदायरूप पांचे न थाय ॥ ६२ ॥ इति परिसह अधिकार समाप्त थयो ॥

अर्थः–एवां नाना प्रकारना संकट छे तेनी दशा सहन करीने मुक्तिमार्ग साधे, तेथी थिविर कल्पना धरनार अने जिन कल्पना धरनार ए बेहु निग्रंथ समान छे॥६३॥

हवे थिवर कल्पमां अने जिनकल्पमां कंइ तफावत छे ते कहेछेः–

अथ स्थिविरकल्प जिनकल्प तारतम्य कथनः–

॥ दोहराः ॥– जो मुनि संगतिमें रहे, थविरकल्प सो जानि; एकाकी जाकी दसा सो जिनकल्प बखानि ॥ ६४ ॥ ॥ चोपाईः ॥– थविर कलप मुनि कछुक सरागी; जिन कलपी महांत विरागी; इति प्रमत्त गुनथानक धरनी; पूरन भई जथारथ वरनी ॥६५॥

अर्थः– जे मुनीश्वर गछना गणनी संगतमां रहेछे, तेतो थिवर कल्पी जाणीए. जेने गणनी निश्रा नथी, जेनी एकाकी दशा छे तेतो जिनकल्पी कहिए ॥ ६४ ॥ ए बेउ निग्रंथमां थिवरकल्पनो धरनार कइक सराग दशामां छे, अने जे जिनकल्पी छे ते महावैरागी छे. एटले प्रमत्त गुणठाणानी जे भूमिका बांधी अने यथार्थ साचपणे वरणी ते पूर्ण थई ॥ ६५ ॥

हवे सातमा गुणस्थाननु वर्णन करेछेः– अथ सप्तम गुणथानक वर्ननंः–

॥ चोपाईः–॥ अब बरनो सत्तम विसरामा; अप्रमत्त गुनथानक नामा; जहां प्रमाद क्रिया विधि नासे; धर्मध्यान थिरता परगासे ॥ ६६ ॥ दोहराः–प्रथम करनचारित्रको जासु अंत पद होइ, जहां आहार विहार नहि, अप्रमत्त है सोइ ॥ ६७ ॥

अर्थः– मुक्तिरूप मंदिरमां चढतां ते सातमो विसामो छे, अने अप्रमत्त गुणस्थानक जेनुं नाम छे ते हवे वखाणे छे जे गुणस्थानमां धर्मरागादिकेकरी प्रमादनो

विधि नासेछे, जे पूर्वेला गुणस्थानकमां धर्मध्यान चंचल हतुं, ते आंही स्थिरपणे प्रकाश करेछे ॥ ६६ ॥ प्रथम गुणस्थानना अंतपदमां एटले छेला समयमां चारित्रमोहनीय कर्मने भेदवानो यथा प्रवृत्तिनामे प्रथम करण थयुं. आंही धर्मध्याननी स्थिरता एवी छे के ज्यां आहार विहार क्रिया नथी. ते अप्रमत्त गुणस्थानक होय. ए वचन दिगंबर संप्रदायनुं छे ॥ ६७ ॥

हवे आठमा गुणस्थानकनुं वर्णन कहेछेः—अथ अष्टम गुणस्थानक वर्ननंः—

॥ चोपाईः॥— अब बरनों अष्टम गुनथाना, नाम अपूरव करन बखानां, कछुक मोह उपसम करि राखे, अथवा किंचित क्षयकरि नाखे ॥ ६८ ॥ जो परिनाम भये नहि कबहीं, तिन्हको उदो देखिये जबहीं, तब अष्टम गुनथानक होई, चारित करन दूसरो सोई ॥ ६९ ॥

अर्थः— जेनुं नाम अपूर्व करण वखाणीए छीए, हवे आंही श्रेणि चढवामां जे उपशमीक थको चढेछे तेतो आंही कंइक मोहने उपशमावी राखेछे, अथवा जे क्षपक थको चढे छे तेतो आंही चारित्र मोहनो कंइक क्षय करि नांखेछे ॥ ६९ ॥ एवुं जे परिणाम पेहेलां कोइ कालमां थयुं नथी ते परिणामनुं ज्यारे प्रगट पणुं देखियेछीए, त्यारेतो आठमुं गुणस्थानक होय. तेने छेले समये चारित्र मोहनीय कर्म भेदवाने अपूर्व करण नामे बीजुं करण होय तेनुं नाम निवृत्ति पण छे ॥ ६९ ॥

हवे नवमा गुणस्थाननुं वर्णन करेछेः— अथ नवम गुणस्थानक वर्णनंः—

॥चोपाईः॥— अब अनवर्त्ति करन सुनुं भाई, जहां भाव थिरता अधिकाई; पूरव भाव चलाचल जेते, सहज अडोल भए सब तेते ॥ ७० ॥ जहां न भाव उलटि अध आवे; सो नवमो गुनथान कहावे; चारित मोह जहां बहु छीजा; सो है चरण करण पद तीजा ॥ ७१ ॥

अर्थः— प्रथम अनिवृत्ति करण गुणस्थाननो व्यवहार कहुं छुं ते सांभलो. जे गुणस्थानकनेविषे स्थिरता भावनी अधिकाई छे. अने पूर्वभाव कषायना उदयथी जेटला चलाचल भाव होय तेवा सर्व आंही सहज अडोल थया छे ॥ ७० ॥ ज्यां भावथी चढीने फरी तिहांथी पडी नीचेना गुणस्थानकें न आवे. एवो अनिवृत्ति कहेवाय, ज्यां चारित्र मोहनीय कर्म घणुंज तुटी गयुं छे तेज ए चारित्र मोहनीय कर्म भेदवानुं त्रीजुं अनिवृत्ति करण थयुं ॥ ७१ ॥

हवे दशमु गुन स्थानक कहु छुंः— अथ दशम गुनथानक वर्ननंः—

॥चोपाईः॥—कहौं दशम गुन थान दुसाखा; जहां सूछम शिवकी अभिलाषा; सूछम लोभ दसा जहां लहिए; सूछम संपराय सो कहिए ॥ ७२ ॥

अर्थः— ज्यां उपशमिक अने क्षपक एवी बे शाखा वर्त्ते छे, जे गुण स्थानमां सूक्ष्म शिव पदवीनी अभिलाषा छे एवी ज्यां सूक्ष्म लोभ दशा पामियें, ते सूक्ष्म संपराय कहीए. संपराय एवुं कषायनुं नाम छे ॥ ७२ ॥

हवे अग्यारमुं उपशांत मोह नामे गुणथान कहुंछुं:— अने तेनी प्रभुतानुं प्रमाण कहुंछुं. अथ एकादशम गुनथान वर्ननः—

॥चोपाईः— अब उपसंतमोह गुनथाना; कहौं तासु प्रभुता परवाना; जहां मोह उपसमे न भासे; जथाख्यात चारित परगासे ॥ ७३ ॥ दोहराः—जाहि फरसके जीव गिरि, परै करै गुन रद्द; सो एकादसमी दसा, उपसमकी सरहद्द ॥ ७४ ॥

अर्थः— जे गुणस्थानमां मोहनीय कर्म सर्वे उपशमी जाय, पण उदयमां भासे नही अने यथाख्यात चारित्रनो प्रकाश थइने जेवुं निसंग आत्मानु सहज रूप छे तेवुं प्रगटेछे ॥ ७३ ॥ जे उपशम श्रेणि चढिने जे गुणस्थानने फरसीने अवश्य जीव तिहांथी पडे अने जे गुण प्रगटे ते सर्वे रद करे, ए अगीयारमी दशा थई, एटले उपशांत मोह गुणस्थानक थयुं. एटले उपशमनी मर्यादा थई ॥ ७४ ॥

हवे बारमां क्षीणमोह गुनस्थाननुं वर्णन करुंछुं:—अथ द्वादश गुनथानक वर्ननं:—

॥चोपाईः॥— ज्ञान निकट जहां आवे; तहां जीव सब मोह खिपावे; प्रगटे यथाख्यात परधाना; सोद्वादशम छीन गुन थाना ॥ ७५ ॥

अर्थः—जे गुणस्थानने केवल ज्ञान निकट आवे छे, अने त्यां जीव सर्व मोहनीय कर्म खपावीने बीजा पण घाती कर्म सर्वे खपावे, अने ज्यां प्रधान उत्कृष्ट यथा ख्यात चारित्र प्रगटे एवा प्रकारथी जे छे ते बारमुं क्षीण मोह गुणस्थानक कहीए ॥ ७६ ॥

हवे आंही लगण पाछला छगाथी मांडी सात गुणस्थानमां उपशम श्रेणिनी अपेक्षाये जेकाल स्थिति छे ते कहेछेः—अथ षष्ट गुनथानक स्थितिकथन उपशम श्रेणिक अपेक्षाये

॥ दोहराः ॥—षट सत्तम अठम नवम; दश एकादश बार, अंतर मुहुरत एक वा, एक समे थिति धार. ॥ ७६ ॥ छीन मोह पूरन भयो, करि चूरन चित चाल; अब सजोग गुण थानकी, बरनों दसा रसाल. ॥ ७७ ॥

अर्थः—छठुं, सातमुं, आठमुं, नवमुं, दशमुं, अग्यारमुं, बारमुं, ए सात जे गुणस्थान छे, तेनी स्थिति एक अंतर मुहूर्त्तनी छे. अथवा सात गुनस्थाननी जघन्य एक समयनी स्थिति धारो. ॥७६॥ मोहमय जे चित्तनी चाल हती तेनुं चूर्ण करीने क्षीण मोह गुणस्थानक पूरण थयुं. हवे सजोगी गुन थानकनी रसाल दशानुं वर्णन करुंछुं ॥ ७७ ॥

हवे तेरमा गुणथाननुं वर्णन करुछुं:—अथ त्रयोदश गुन स्थानक वर्ननः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जाकी दुःख दाता घाती चोकरी विनसगई, चोकरी अघा

ती जरी जेवरी समान है; प्रगट जयो अनंत दंसन अनंत ज्ञान, वीरज अनंत सुख सत्ता समाधान है; जामे आउ नाम गोत वेदनी प्रकृति ऐसी एक्यासी चोरासी वा पंचासी परवान है; सो है जिन केवली जगत वासी जगवान, ताकी जो अवस्था सो सजोगी गुन थान है. ॥ ७८ ॥

अर्थः–आत्माना गुणना घातना करनार एवा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय, ए घाती कर्मनी चोकडी दुःख दाता हती ते जेनी विनाश थई गई, अने जे आत्माना गुणनो घात न करे एवा वेदनीय, आयु, नाम, अने गोत्र, ए चार अघाति कर्मनी चोकडी रही ते बलेली दोरी समान रही छे. दर्शनावरणीय कर्मक्षय थयाथी ज्यां अनंत केवल दर्शन प्रगट थयुं, अने ज्ञानावरणीय क्षय थयाथी ज्या केवल ज्ञान प्रगट्युं, अंतराय कर्म क्षय थयाथी अनंत वीर्य प्रगट्युं, मोहनीय कर्म क्षय थयाथी अनंत सुखसत्ता अने समाधि प्रगट्या अने जेमां आयु कर्म, नामकर्म, गोत्रकर्म, वेदनीयकर्म, एचारनी सर्व (८५) प्रकृति रही छे. तेमां कोईने आहारिक शरीर, आहारक अंगोपांग, आहारक संघातन, आहारक बंधन, तथा जिननामविना, (८०) प्रकृती रही छे अने कोईने जिननाम सहित छे, तेथी (८१) रही छे तथा काईने आहारक चतुष्कछे अने जिननामनथी माटे (८४) छे तथा कोईने जिननाम सहित (८५) प्रकृतिनुं प्रमाण छे. एवी दशानो धरनार जे छे ते जिन होय केवली होय, जगत्नो जगवान् होय, तेनी जे अवस्था छे तेनेज सयोगी गुणस्थानक कहीए. ॥ ७८ ॥

हवे सजोगी गुणस्थानकवालानी मुद्रा देखाडेछेः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–जो अडोल परजंक मुद्रा धारी सरवथा अथवा सुकाउसग्ग मुद्रा थिरपाल है; खेत सपरस कर्म प्रकृतिके उदे आए, बिना डग जरे अंतरिक्ष जाकी चाल है; जाकी थिति पूरव करोडि आठवर्ष घाट, अंतरमुहुरति जघन्य जग जाल है; सो है देव अठारह दूषन रहित ताकों बनारसी कहे मेरी वंदना त्रिकाल है.॥७९॥

अर्थः–जे अडोलपणे सर्वथा प्रकारे पर्यंक मुद्रा धारी होय एटले पद्मासनवालीने सदा सर्वदा बेसेछे, अथवा काउसग्गमुद्रा स्थिरपणे पाले ए वचन दिगंबर संप्रदायनुं छे, अने क्षेत्र स्पर्श रूप जे कर्म प्रकृति छे तेनो उदय थयाथी केवली विहार करेछे पण बीजापुरुषनीपेठे चाले नहिं पण केवली डगलुं जर्याविनाज आकाशमां अधर चाले चाले. ए परूपणा दिगंबर संप्रदायनी छे. जे सयोगी गुण स्थाननी स्थिति आठ वर्षे न्यून पूर्वकोटी वर्षनी थाय केमके जन्मथी आठ वर्षलगी केवलज्ञान उपजतुं नथी, अने आ गुनथानानी जघन्यस्थिति एक अंतरमुहूर्त्तनी थाय. जगत्जालमां ए

टलुंज रहेवुं होय. आंही जे एवी अवस्थानो धरनार होय तेतो अढार दूषण रहित देवाधिदेव थाय. बनारसीदास कहेछे के तेने मारी त्रिकाल वंदनाछे ॥ ७ए ॥

हवे अढार दूषणनां नाम कहेछेः—अथ अठारस दोष कथनः—

॥ कुंमलीयाः ॥—दूषन अठारह रहित, सो केवलि संजोग; जनम मरण जाके नहीं, नहिं निंद्रा भय रोग; नहिं निंद्रा भय रोग, सोग विस्मय न मोहमति; जरा खेद परस्वेद, नाहिं मद वैर विषे रति; चिंता नांही सनेह, नाहिं जह प्यास न भूषन; थिर समाधि सुख सहित अठारह दूषन. ॥ ८० ॥ —वानी जहां निरक्षरी, सप्तधातु मल नांहि; केस रोम नख नहि बढे, परम उदारिक मांहि; परम उदारिक मांहि, जांहि इंद्रिय विकार नसि, जथाख्यात चारित प्रधान थिर सुकल ध्यान ससि; लोकालोक प्रकास, करन केवल रजधानी; सो तेरम गुनथान; जहां अतिशयमय वानी. ॥ ८१ ॥ दोहराः ॥—यह सजोग गुनथानकी, रचना कही अनूप; अब अयोग केवल कथा, कहों यथारथ रूप ॥ ८२ ॥

अर्थः—जे अढार दूषणथी रहित ते सजोगी केवली कहिए १,जेने जन्म नथी, मरण नथी२,निंद्रा नथी३,भय नथी४,रोग नथी५, शोक नथी ६, विस्मय नथी ७,मोहमति नथी. जरानो खेद नथीए, परसेवो नथी १०,मद नथी११,वैर नथी १२, विषय उपररति नथी १३, चिंता नथी १४, स्नेह नथी १५, जेने तरस लागे नही १६, भूख लागे नही १७, अस्थिरपणुं नथी १८, तेथी समाधिसुख सहित स्थिररूप थायछे, एवा अढार दूषण रहित छे. ए अढार दोष दिगंबर संप्रदायथी छे. सिद्धांत संप्रदायमां १८ दूषण जुदां कह्यां छे. ॥ ८० ॥ आ गुणस्थानननी अवस्थामां निरक्षरी वाणी होय ने मस्तकमां ॐकार ध्वनिरूप होयछे; अने शरीरमां सात धातु अने सात धातुना मल थता नथी. ए दिगंबर संप्रदायथी कहेलुं छे. अने जेना शरीरमां केश, रोम, नखनी वृद्धि थती नथी, एतो उदारीक शरीरमां पण एटला दोष नथी, तेथी देवाधिदेव परम उदारीक शरीरमांज कहिए; ज्यां इंद्रियविकार नासी गयाछे, ने ज्यां प्रधान उत्कृष्ट यथाख्यात चारित्र प्रगट थयुं छे, ज्यां शुक्ल ध्यानरूप चंद्रमा स्थिररूप थयोछे, अने ज्यां लोकालोकना प्रकाशनी करनारी केवल ज्ञानरूप राजधानी बिराजी रही छे; ते तेरमुं सजोगी गुणस्थानक कहिए, ज्यां पांतरीश अतिशयमय वाणी छे ॥ ८१ ॥ ए सयोगी गुणथाननी सर्वेथी अधिक अनूप रचना कहीछे. हवे अयोगी केवलीनी दशा यथार्थरूप के० जेवीरीते बनीछे तेवी रीतनी कहुंछुं. ॥ ८२ ॥

हवे चौदमा अयोगी गुणस्थाननुं वर्णन कहुंछु.—अथ चतुर्दश गुनस्थानक वर्ननं.—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जहां काहू जीवकों असाता उदे साता नांहि, काहूकों अ

साता नांहि साता उदे पाइये; मन वच कायसों अतीत भयो जहां जीव जाको जस गीत जग जीत रूप गाइये; जामे कर्म प्रकृतिकी सत्ता जागी जिनकीसी, अंतकाल द्वैसमेमें सकल खिपाइये; जाकी थिति पंच लघु अक्षर प्रवान सोइ, चौदहो अयोगी गुन थाना ठहराइये. ॥ ७३ ॥

अर्थः—जे गुणस्थानमां कोई जीवने अशाता वेदनीयनो उदय छे अने शाता वेदनीयनो उदय नथी, एटले शाता वेदनीय सत्तारूप छे, अने कोइने शातावेदनीयनो उदय छे, अने अशाता दुःखरूप उदयमां नथी, एटले सत्तामां छे. अने ज्यां शैलेसी करण करीने मनोयोग, वचनयोग, काया योगथी जीव अतीत एटले रहित थयो. जेना जशनु वर्णन जगत्ने जीतवा रूप गाइए छीए एटलुं छे अने जेमां जोगी जन केसी के० सजोगी केवलीनी रीते कर्म प्रकृतिनी सत्ता रहिछे. ते अंतकालमां अनंत बे समयमां समस्त खपावेछे. अने जे गुणस्थानकनी स्थिति पंच लघु अक्षर अ, इ, उ, ऋ ऌ ए अक्षर कहेतां जेटलो काल प्रमाण होय एटलो काल प्रमाण स्थिति छे तेज चौदमुं अयोगी ठेरावीए. ॥ ७३ ॥

॥ इति श्री चतुर्दश गुणस्थानक अधिकार बालावोधरूप समाप्तः ॥

॥ दोहरा ॥—चौदहगुनथानक दशा, जगवासी जियभूल; आश्रव संवर भाव द्वै, बंध मोक्षके मूल. ॥ ७४ ॥

अर्थः—जगत्वासी जीव अशुद्ध थको भूलमां पड्यो छे तेनी ए चौद गुणस्थानकथी चौद दशा थाय छे. आंही तत्त्व दृष्टिमां जोतां जे आश्रव संवर भाव छे तेज बंध मोक्षना मूल छे; एटले आश्रव बंधनुं मूल छे अने संवर मोक्षनुं मूलछे. हवे आश्रव संवरनी जुदी जूदी अवस्था कहेछे. अथ आश्रव संवर व्यवस्था कथन. ॥ ७४ ॥

॥ चोपाई ॥—आश्रव संवर परनति जोलों; जगत निवासि चेतना तोलों; आश्रव संवर विधि विवहारा; दोऊ भवपथ शिवपथ धारा. ॥ ७५ ॥ आश्रव रूप बंध उतपाता, संवर ज्ञान मोष पद दाता; जा संवरसों आश्रव छीजे, ताकों नमस्कार अब कीजे. ॥ ७६ ॥

अर्थः—ज्यां सुधी आश्रव संवरनुं परिणाम परिणमे छे, त्यांसुधी चेतन रूप ईश्वर जगत् निवासी थई रह्योछे. आंही आश्रवनो विधि छे ते व्यवहारमां छे. अने संवरनो विधि छे ते पण व्यवहारमां छे. ए उभौ के० बे व्यवहार पंथ ते संसार मार्गनी धारा अने मोक्ष मार्गनी धारा पण छे. ॥ ७५ ॥ संसारमां जे बंधरूप उत्पात छे, ते तो आश्रवरूप छे. अने जे मोक्षपदनो दाता ज्ञान छे ते संवर रूप छे. जे संवरथी आश्रव क्षय थयो होय तेने हवे नमस्कार करीए छीए. ॥ ७६ ॥

हवे ग्रंथनी अंते मंगलाचरण रूप संवर रूपी ज्ञानने नमस्कार करेछे:—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जगतके प्रानी जीवव्हैरह्यो गुमानी एसो, आश्रव असुर दुःख दानी महा जीम हे; ताको परताप खंमिवेको परगट जयो, धर्मको धरैया कर्म रोगको हकीम हे; जाके परजाव आगे जागे परजाव सब, नागर नवल सुख सागरकी सीमहे; संवरको रूप धरे साधे शिवराह एसो, ज्ञानी पातसाह ताकों मेरी तसमील हे. ॥७७॥

अर्थः—जगत्ना वासी जेटला प्राणी छे, ते सर्वेने जीतीने जे गुमानी थई रह्यो, एवो आश्रवरूप जे असुर छे, ते महा दुःखदायक छे. तेनो प्रताप खंमवाने जे ज्ञान रूप बादशाह प्रगट थयो छे ते केवो छे के धर्मनो धारण करनारो छे. अने कर्मरूप रोग गमाववानो हकीम छे.जे ज्ञान बादशाहना प्रजाव आगल काम क्रोधादिक राग द्वेषरूप पुजलना जाव छे ते सर्व नासी जाय छे; अने नागर के० चतुर छे, जे पेहेलां कोइ वारे न पामेलो एवो जे नवो सुख समुद्र ते लगण जेनी सीम छे. संवररूपनो धरनार अने मुक्तिमार्गनो साधनार एवो जे ज्ञानरूपी बादशाह छे, तेने महारी स लाम छे. एटले नाटक करीने ज्ञान बादशाहने मुजरो कीधो छे. ॥ ७७ ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक बालावबोधरूप अर्थ सहीत समाप्त थयो. ॥

॥ चोपई ॥—जयो ग्रंथ संपूरन जाषा, बरनी गुनथानककी साषा; बरनन ओर कहांलों कहिये, जथा सकति कही चुप व्हे रहीये ॥ ७८ ॥ लिहए पार न ग्रंथ उ दधिका; ज्यों ज्यों कहिये त्यों त्यों अधिका; ताते नाटक अगम अपारा; अलप कवीसुरकी मतिधारा ॥ ७९ ॥

॥ दोहराः ॥—समयसार नाटक अकथ, कविकी मति लघु होइ; ताते कहत ब नारसी, पूरन कथे न कोइ. ॥ ८० ॥

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जेसे कोउ एकाकी सुजट पराक्रम करि, जीते केही जां तिचक्री कटक सों लरनो; जेसे कोउ परविन हारू जुज जारु नर, तरे केसे स्वयंजू रमन सिंधु तरनो; जेसें काउ उद्दिमी उछाह मनमांहि धरे, करे केसे कारज वि धाताको सो करनो; तेसे तुछ मती मोरी तामें कविकला थोरी, नाटक अपारमे क हांलों याहि बरनो ? ॥ ८१ ॥

अथ जीव महीमा कथनः—

॥सवैया इकतीसाछंदः॥—जेसे वटवृक्ष एक तामें फल हे अनेक, फल फल बहू बीज बीज बीज वट है, वटमांहि फल फलमांहि बीज तामे बट, कीजे जो विचार तो अ नंतता अघट है; तेसे एक सत्तामें अनंत गुण परजाय;प्रजामें अनंत नृत्य नृत्यमें अनंत ठट है; ठटमे अनंत कला कलामें अनत रूप, रूपमें अनंत सत्ता एसो जीव नट है.॥८२॥

॥ दोहराः ॥–ब्रह्म ज्ञान आकाशमें, उरे समति षग होइ; जथा सकति उद्दिम धरे, पार न पावे कोइ. ॥ ९३ ॥

॥ चोपाई ॥–ब्रह्म ज्ञान नज अंत न पावे; सुमति परोछ कहालों धावे; जिहि विधि समयसार जिनी कीनो; तिन्हके नाम धरे अब तीनो. ॥ ९४ ॥

अथ कवि त्रयी कथन नामः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–कुंदकुंदाचारज प्रथम गाथा बद्ध करे, सामेसार नाटक विचारी नाम दयो है; ताहीके परंपरा अमृतचंद भये तिन्ह, संसकृत कलस समारि सुख लयो है; प्रगटयो बनारसी गृहस्थ सिरीमाल अबकिये हे कवित्त हिए बोध बीज बयो है; शबद अनादि तामें अरथ अनादि जीव, नाटक अनादियों अनादि हिको भयो है. ॥ ९५ ॥

अथ कविव्यवस्था कथनः–

॥ चोपाई ॥–अब कछु कहुं यथारथ वानी; सुकवि कुकविकी कथा कहानी; प्रथम सुकवी कहावे सोई; परमारथ रस वरने जोई. ॥ ९६ ॥ कलपित बात हीए नहिं आने; गुरु परंपरा रीति वखाने; सत्यारथ सैली नहि छंडे; मृषा वादसों प्रीति न मंडे. ॥९७॥

॥ दोहराः ॥–छंद सवद अक्षर अरथ, कहे सिद्धांत प्रवान; जो इहि विधि रचना रचे सो हे सुकवि सुजान ॥ ९८ ॥

॥ चोपाईः ॥–अब सुनु कुकवि कहुं है जेसा; अपराधी हिय अंध अनेसा; मृषा भाव रस वरने हितसों; नई उकति नहि उपजे चितसों. ॥ ९९ ॥ ख्याति लाभ पूजा मन आने; परमारथ पथ भेद न जाने; वानी जीव एक करि बूझे; जाको चित जड ग्रंथि न सुझे. ॥ ३०० ॥ वानी लीन भयो जग डोले, वानी ममता त्यागि न बोले; हे अनादि वानी जगमांही; कुकवि बात यह समुझे नांही. ॥ ३०१ ॥

अथ वानी व्यवस्था कथनः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–जेसे काहू देसमें सलिलधार कारंजकी, नदीसों निकसि-फिरि नदीमें समानी हे; नगरमें ठौर ठौर फेली रही चहू ओर, जाके ढिग वहे सोई कहे मेरो पानी हे; त्योंही घट सदन सदनमे अनादि ब्रह्म, वदन वदनमें अनादिहींकी वानी हे; करम कलोलसों उसासकी बयारि वाजे, तासों कहे मेरी धुनि एसो मूढ प्रानी हे. ॥ ३०२ ॥

॥ दोहराः ॥–एसे मूढ कुकवि कुधी, गहे मृषा पथ दोर; रहे मगन अभिमानमें, कहे ओरकी ओर. ॥ ३०३ ॥ वस्तु सरूप लखे नही, बाहिज दृष्टि प्रमान; मृषा विलास विलोकके, करे मृषा, गुन गान. ॥ ३०४ ॥

अथ मृषा गुन गान यथाः–

॥ सवैया इकतीसाः ॥–मांसको गरंथि कुच कंचन कलस कहे, कहे मुख चंद जो रुलेखमाको घरु हे; हाडके दशन आहि हीरा मोती कहे ताहि, मांसके अधर ओंठ कहे बिंब फरु हे; हाड दंड भुजा कहै कौलनाल काम जुधा, हाडहीके थंभा जंघा कहे रंभा तरु हे; योंही जूठी जुगति बनावे औ कहावे कवि, एते पर कहे हम सारदाको वरु हे. ॥ ३०५ ॥

॥ चोपाईः ॥–मिथ्यावंत कुकवि जे प्रानी, मिथ्या तिनकी भाषित वानी, मिथ्या वंत सुकवि जो होई, वचन प्रवान करे सब कोई. ॥ ३०६ ॥

॥ दोहराः॥ वचन प्रवान करे सुकवि, पुरुष हूवे परवान, दोऊ अंग प्रवान जो, सोहे सहज सुजान. ॥ ३०७ ॥

॥ अथ समयसार नाटकव्यवस्था कथनः– ॥

॥ चोपाईः ॥–अब यह बात कहों हे जैसे; नाटक भाषा भयो सु एसे, कुंद कुंद मुनि मूल उधरता, अमृतचंद टीकाके करता. ॥ ३०८ ॥ समेसार नाटक सुख दानी, टीका सहित संसकृतवानी, पंडित पढै दृढमती बुजे, अलपमतीकों अरथ न सूजे. ॥ ३०९ ॥ पांडे राजमल्ल जिनधर्मी, समयसार नाटकके कर्मी, तिन्ह गरंथकी टीका कीनी, बालाबोध सुगम करि दीनी. ॥३१०॥ इहि विधि बोधवचनिका फैली, समैपाइ अध्यातमशैली; प्रकटी जगतमांहि जिनवानी, घर घर नाटक कथा बषानी. ॥ ३११ ॥ नगर आगरामांहि विख्याता, कारन पाइ भए बहुज्ञाता, पंच पुरुष अति निपुन प्रवीने, निसिदिन ज्ञानकथा रस भीने. ॥ ३१२ ॥

॥ दोहराः ॥–रूपचंद पंडित प्रथम, दुतिय चतुर्भुज नाम, तृतिय भगौती दास नर, कौंरपाल गुनधाम. ३१३ ॥ धर्मदास ए पंच जब, मिलि बेसे इक ठोर; परमारथ चरचा करे,इन्हके कथा न और. ॥ ३१४ ॥ नाटक रस सुने, कबहूं ओर सिद्धांत, कबहूं बिंग बनाइके, कहे बोध बिरतंत. ॥ ३१५ ॥

अथ बिंगयथाः–

॥ दोहराः ॥–चित चकोर वरु धरम धरु, सुमति भगौती दास, चतुर भाव थिरता भए, रूपचंद परगास. ॥ ३१६ ॥ इहि विधि ज्ञान प्रगट भयो, नगर आगरे मांहि, देसदेस महि विस्तार्यो, मृषा देशमहि नांहि. ॥ ३१७ ॥

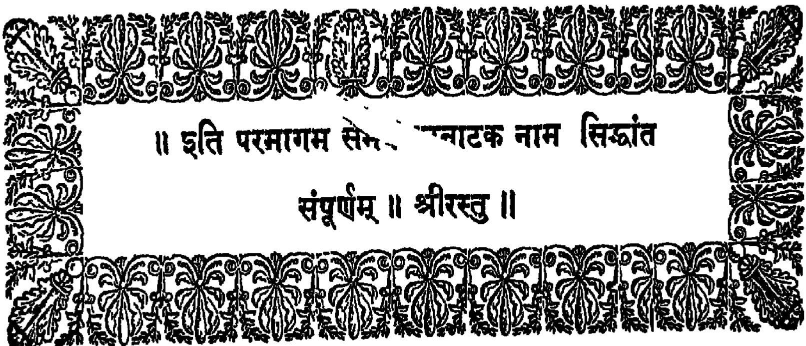
॥ चोपाईः ॥–जहां तहां जिनवानी फेली, लखे न सो जाकी मति मेली, जाके सहज बोध उतपाता, सो ततकाल लखे यह बाता. ॥ ३१८ ॥

॥ दोहराः ॥–घटघट अंतर जिन वसे, घटघट अंतर जैन, मत मदिराके पान सों मतवाला समुझे न. ॥ ७१९ ॥

॥ चोपाईः ॥–वहुत वढाउ कहांलो कीजे, कारजरूप वात कहि लीजे, नगर आगरा माहे विष्याता, वनारसी नामे लघु ज्ञाता. ॥ ७२० ॥ तामे कवित कला चतुराई, कृपा करे ए पंचो भाई, ए परपंच रहित हिय खोले, ते बनारसीसों हसि बोले. ॥ ७२१ ॥ नाटक समैसार हित जीका, सुगमरूप राजमली टीका, कवित बद्ध रचना जो होई, भाषा ग्रंथ पढे सब कोई. ॥ ७२२ ॥ तव बनारसी मनमहि आनी, कीजे तो प्रगटे जिनवानी, पंच पुरुषकी आज्ञा लीनी, कवित बंधकी रचना कीनी. ॥७२३॥ सोरहसे तिरानवे (१६९३) विते, आसुमास सित पक्ष वितीते,तिथि तेरसि रविवार प्रवीना ता दीन ग्रंथ समापत कीना. ॥ ७२४ ॥ दोहरा ॥ सुख निधान सकबंध नर, साहिब साहि किरान, सहस साहि सिर मुकुटमनि, साह जहां सुलतान. ॥७२५॥ जाके राज सुचेनसों, कीनों आगमसार, इति भीती व्यापी नही, यह उनको उपकार. ॥ ७२६ ॥

॥ अब सवका ठीक कथनः– ॥

॥ सवेया इकतीसा ॥– तीनसे दसोत्तर सोरठा दोहा छंद दोउ,जुगलसे तेतालीस इकतीसा आने हैं; छासी सु चोपईये सेंतीस तेइ सेसवैये, वीस छप्पे अठारह कवित्त वषाने हैं; सात फुनिही अडिल्ले चारि कुंडलिये मिले, सकल सातसें सत्ताईस ठीकठाने हैं; वत्तीस अक्षरके सलोक कीने ताके ग्रंथ संख्या सत्रहसे सातअधिकाने है. ॥ ७२७ ॥ दोहराः–॥समयसार आतम दरव, नाटक भाव अनंत; सोहे आगम नाममें, परमारथ विरतंत. ॥ ७२८ ॥



# जाहेरखबर.

अमारा तरफथी हालमां नीचेनां पुस्तको छपायांछे; तथा छपाय छे.

| | किम्मत. रू. आ. पा. |
|---|---|
| प्रकरण रत्नाकर भाग. १ (बीजी आवृत्ति) | ६– ८–० |
| (जेमां साडात्रणसोगाथानुं स्तवन, आगमसार, आनंदघनचोविशी, नयचक्रसार, द्रव्यगुणपर्यायनोरास, योगदृष्टि समुच्चय, अध्यात्मसार, समाधिशतक, समताशतक, दिक्पटचोराशीबोल, चिंतामणिस्तोत्र, तथा समयसार ए अद्भुत ग्रंथोनो समावेश कर्योछे) | |
| प्रकरणरत्नाकर भाग १ लानो प्रथम कटको. | |
| (जेमां साडात्रणसोगानुं स्तवन तथा आगमसारछे). | २– ०–० |
| " बीजो " | |
| (जेमां नयचक्रसार, तथा आनंदघन चोविशीछे) | २– ४–० |
| " त्रीजो " | |
| (जेमां योगदृष्टि सझाय, अध्यात्मसार वगरेछे) | २– ०–० |
| " चोथो " | |
| (जेमां समयसार छे) | ३– ०–० |
| श्री वैराग्य कल्पलता (श्री यशोविजयजी कृत) | ३– ०–० |
| श्री भद्रबाहु संहिता (अपूर्वज्योतिषग्रंथ–श्री भद्रबाहु स्वामी कृत) | १– ०–० |
| श्री प्रतिमाशतक (श्री यशोविजयजी कृत) | ०–१२–० |
| श्री मागधीभाषानुंव्याकरण–ढुंढिकानांभाषांतरसाथे उत्तरार्ध | ३– ८–० |
| श्री उपदेशप्रासाद (प्रास्ताविक श्लोक साथे) प्रथम खंड. | २– ०–० |
| श्री उपदेश तरंगिणी–अनेक कथाउ साथे (श्रीरत्नमंदिरगणिकृत) | १– ४–० |
| श्री अर्हन्नीति–(जैनन्यायलोकव्यवहार श्री हेमचंद्राचार्य कृत) | १– ४–० |
| श्री वैराग्यशतक–(अनेक कथाउ साथे) भाषांतर | १– ४–० |
| श्री योगशास्त्र (मूल–टीका बालावबोधसाथे श्री हेमचंद्राचार्य कृत) | ३– ४–० |
| श्री धर्मसर्वस्वाधिकार (अद्भुतग्रंथ श्रीजयशेखर सूरिकृत) | ०– ९–० |
| श्री चंदराजानो रास. अर्थसाथे. (१५०) रंगीन चित्रोसाथे. (छपाय छे) | ४– ०–० |

मुंबइ–मांडवी–शाकगली

शा० भीमसिंह माणक.